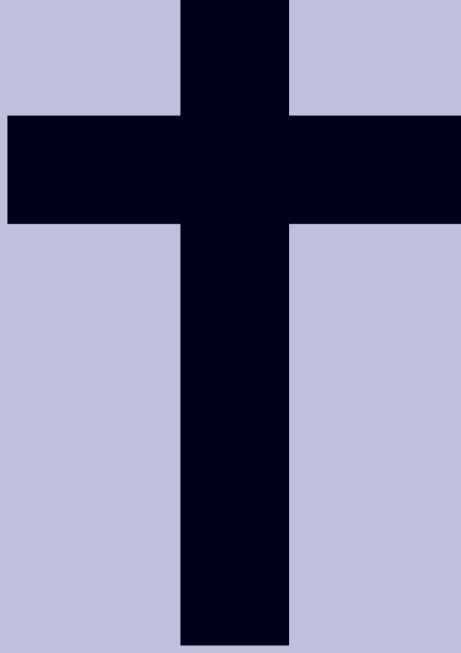


इंडियन रवाइज्ड  
वर्जन (IRV) हृदल -  
2019



The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language  
of India

**इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी - 2019**  
**The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language of India**

copyright © 2017, 2018, 2019 Bridge Connectivity Solutions

Language: मानक हिन्दी (Hindi)

Translation by: Bridge Connectivity Solutions

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents.

For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-04-11

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 11 Apr 2023  
38a51cad-1000-51f5-b603-a89990bf4b77

## Contents

उत्पत्ति . . . . .	1
निर्गमन . . . . .	63
लेव्यव्यवस्था . . . . .	112
गिनती . . . . .	147
व्यवस्थाविवरण . . . . .	196
यहोशू . . . . .	240
न्यायियों . . . . .	267
रूत . . . . .	294
1 शमूएल . . . . .	299
2 शमूएल . . . . .	336
1 राजाओं . . . . .	367
2 राजाओं . . . . .	402
1 इतिहास . . . . .	436
2 इतिहास . . . . .	469
एज़्रा . . . . .	509
नेहम्याह . . . . .	521
एस्तेर . . . . .	538
अय्यूब . . . . .	547
भजन संहिता . . . . .	582
नीतिवचन . . . . .	673
सभोपदेशक . . . . .	703
श्रेष्ठगीत . . . . .	713
यशायाह . . . . .	720
यिर्मयाह . . . . .	780
विलापगीत . . . . .	845
यहेजकेल . . . . .	852
दानिय्येल . . . . .	909
होशे . . . . .	928
योएल . . . . .	938
आमोस . . . . .	942
ओबद्याह . . . . .	949
योना . . . . .	951
मीका . . . . .	954
नहूम . . . . .	960
हबक्कूक . . . . .	963
सपन्याह . . . . .	967
हागै . . . . .	970
जकर्याह . . . . .	973
मलाकी . . . . .	984
मत्ती . . . . .	988
मरकुस . . . . .	1027
लूका . . . . .	1051
यूहन्ना . . . . .	1093
प्रेरितों के काम . . . . .	1125
रोमियों . . . . .	1165

NT

1 कुरिन्थियों . . . . .	1183
2 कुरिन्थियों . . . . .	1200
गलातियों . . . . .	1212
इफिसियों . . . . .	1219
फिलिप्पियों . . . . .	1226
कुलुस्सियों . . . . .	1231
1 थिस्सलुनीकियों . . . . .	1236
2 थिस्सलुनीकियों . . . . .	1240
1 तीमुथियुस . . . . .	1243
2 तीमुथियुस . . . . .	1248
तीतुस . . . . .	1252
फिलेमोन . . . . .	1255
इब्रानियों . . . . .	1257
याकूब . . . . .	1271
1 पतरस . . . . .	1276
2 पतरस . . . . .	1282
1 यूहन्ना . . . . .	1286
2 यूहन्ना . . . . .	1291
3 यूहन्ना . . . . .	1292
यहूदा . . . . .	1294
प्रकाशितवाक्य . . . . .	1296

## उत्पत्ति

११११

यहूदी परम्परा और बाइबल के अन्य लेखकों के अनुसार पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकें जिन्हें पेन्टाटचूक कहते हैं उनका लेखक मूसा है, जो इस्राएल का नबी और छुड़ानेवाला था। मिस्र के राजसी परिवार में मूसा का शिक्षण (प्रेरि. 7:22) और यहोवा (इब्री भाषा में परमेश्वर का नाम) के साथ उसका घनिष्ठ सम्बंध इस विचार का समर्थन करता है। स्वयं यीशु ने (यूह. 5:45-47) और उसके समय के फरीसियों और शास्त्रियों ने भी (मत्ती 19:7; 22:24) मूसा को इसका लेखक माना है।

११११ ११११ १११ ११११११

1446 - 1405 ई. पू.

यह एक सम्भावना है कि जिस वर्ष इस्राएल ने सीनै के जंगलों में छावनी डाली थी, उस समय मूसा ने इस पुस्तक को लिखा।

११११११

इस पुस्तक के श्रोतागण मिस्र की बंधुआई से निकलकर कनान अर्थात् प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने से पहले के आरम्भिक इस्राएली रहे होंगे।

११११११११

मूसा ने इस पुस्तक को अपनी इस्राएली जाति के “पारिवारिक इतिहास” को दर्शाने के लिए लिखा था। उत्पत्ति की पुस्तक लिखने में मूसा का उद्देश्य यह दर्शाना था कि इस्राएली जाति किस प्रकार मिस्र की बंधुआई में पड़ गई थी (1:8), और यह भी कि वह देश जिसमें वे प्रवेश करने जा रहे थे उनका “प्रतिज्ञात देश” क्यों था (17:8), और वह यह भी दर्शाता है कि इस्राएल के साथ जो कुछ हुआ उन सब पर परमेश्वर की प्रभुता थी, और मिस्र में उनकी बंधुआई संयोग से होनेवाली घटना नहीं बल्कि परमेश्वर की बड़ी योजना का एक भाग थी (15:13-16, 50:20), और यह दर्शाना कि अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर वही परमेश्वर है जिसने जगत की रचना की (3:15-16)। इस्राएल का परमेश्वर अनेक देवताओं में से कोई एक नहीं, बल्कि आकाश और पृथ्वी का बनानेवाला परमप्रधान सृष्टिकर्ता है।

\* 1:3 “१११११११ ११,” पहले दिन का कार्य उजियाले को अस्तित्व में लाना था। यहाँ स्पष्ट रूप से योजना, पिछले पद बताए गए एक दोष, अर्थात् अंधकार को दूर करना है। † 1:4 ११११११११ ११ ११११११११ ११ १११११ ११ १११११ ११ १११११ ११ परमेश्वर अपने कार्य पर विचार करता है, और उस कार्य के उत्तमता के बोध से तृप्ति की भावना प्राप्त करता है। ‡ 1:6 १११ १११११११११ ११ १११११: इससे हम यह सीखते हैं कि वह न केवल है, बल्कि ऐसा है जो अपनी इच्छा को व्यक्त कर सकता है और अपने सृजे हुएओं के साथ बातचीत कर सकता है। वह न केवल अपनी सृष्टि के द्वारा प्रगट होता है बल्कि स्वयं भी अपने को प्रगट करता है।

१११ ११११

आरम्भ

रूपरेखा

1. सृष्टि की रचना — 1:1-2:25
2. मनुष्य का पाप में पतन — 3:1-24
3. आदम की पीढ़ी — 4:1-6:8
4. नूह की पीढ़ी — 6:9-11:32
5. अब्राहम का वृत्तान्त — 12:1-25:18
6. इसहाक और उसके पुत्रों का वृत्तान्त — 25:19-36:43
7. याकूब की पीढ़ी — 37:1-50:26

१११११११ ११ १११११११

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (११११११. 1:10, ११११११. 11:3)

2 पृथ्वी बडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अधियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। (2 १११११. 4:6)

११११ १११—११११११११

3 तब परमेश्वर ने कहा, “११११११११ ११,”\* तो उजियाला हो गया।

4 और १११११११११ ११ १११११११११ ११ १११११ ११ ११११११ ११†; और परमेश्वर ने उजियाले को अधियारे से अलग किया।

5 और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अधियारे को रात कहा। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया।

११११११ १११—१११११

6 ११११ ११११११११११ ११ ११११‡, “जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए।”

7 तब परमेश्वर ने एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग-अलग किया; और वैसा ही हो गया।

8 और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया।

११११११ १११—१११११ १११११ ११ १११११-१११११

9 फिर परमेश्वर ने कहा, “आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे,” और वैसा ही हो गया। (2 १११. 3:5)

10 और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा, तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

11 फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे-छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक-एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें,” और वैसा ही हो गया। (1 [2][2][2][2]. 15:38)

12 इस प्रकार पृथ्वी से हरी घास, और छोटे-छोटे पेड़ जिनमें अपनी-अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक-एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगें; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

13 तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया।

[2][2][2][2] [2][2]—[2][2][2] [2] [2][2][2][2][2] [2]

14 फिर परमेश्वर ने कहा, “दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों;

15 और वे ज्योतियाँ आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें,” और वैसा ही हो गया।

16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई; उनमें से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया; और तारागण को भी बनाया।

17 परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में इसलिए रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें,

18 तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अंधियारे से अलग करें; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

19 तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया।

[2][2][2][2][2] [2][2]—[2][2][2][2][2] [2] [2][2][2][2]

20 फिर परमेश्वर ने कहा, “जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें।”

21 इसलिए परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े-बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिनसे जल बहुत ही भर गया और एक-एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

22 [2][2][2][2][2][2] [2] [2] [2][2][2] [2][2][2] [2][2][2] [2][2], “फूलो-फलो, और समुद्र के जल में भर जाओ, और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें।”

23 तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पाँचवाँ दिन हो गया।

[2][2][2][2] [2][2]—[2][2][2] [2] [2][2][2][2][2] [2]

24 फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से एक-एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात् घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वन पशु, जाति-जाति के अनुसार उत्पन्न हों,” और वैसा ही हो गया।

25 इस प्रकार परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति-जाति के वन-पशुओं को, और जाति-जाति के घरेलू पशुओं को, और जाति-जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

26 फिर परमेश्वर ने कहा, “हम [2][2][2][2][2]\* को [2][2][2] [2][2][2][2][2] [2] [2][2][2][2][2]† अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।” ([2][2][2][2]. 3:9)

27 तब परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा, अपने ही स्वरूप में परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की; नर और नारी के रूप में उसने मनुष्यों की सृष्टि की। ([2][2][2][2] 19:4, [2][2]. 10:6, [2][2][2][2][2]. 17:29, 1 [2][2][2][2]. 11:7, [2][2][2][2]. 3:10, 1 [2][2][2][2]. 2:13)

28 और परमेश्वर ने उनको आशीष दी; और उनसे कहा, “फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।”

29 फिर परमेश्वर ने उनसे कहा, “सुनो, जितने बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं; ([2][2][2]. 14:2)

30 और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिनमें जीवन का प्राण है, उन सब के खाने के लिये मैंने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं,” और वैसा ही हो गया।

31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवाँ दिन हो गया। (1 [2][2][2][2]. 4:4)

§ 1:22 [2][2][2][2][2][2] [2] [2] [2][2][2] [2][2][2] [2][2][2] [2]: आशीष देने का अर्थ कामना करना है और यहाँ परमेश्वर के सन्दर्भ में इसका अर्थ आशीष पानेवाले के लिए कुछ अच्छा करने का संकल्प लेना। \* 1:26 [2][2][2][2][2]: मनुष्य नई प्रजाति है, वह विशेष रूप से इस पृथ्वी के अन्य प्रकार के जीवों से भिन्न है। † 1:26 [2][2][2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2]: अर्थात् अपनी समानता में। मनुष्य का स्वर्ग से सम्बंध है और इस पृथ्वी का कोई भी प्राणी नहीं है

## 2

2:2-2:15

1 इस तरह आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।

2 और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से 2:2-2:15\* (2:2-2:15) 4:4)

3 और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम लिया।

4 आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।

5 तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था।

6 लेकिन कुहरा पृथ्वी से उठता था जिससे सारी भूमि सिंच जाती थी।

2:16-2:24

7 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया। (1 2:16-2:24) 15:45)

8 और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर, अदन में एक वाटिका लगाई; और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।

9 और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। (2:7, 2:16-2:24) 2:7, 2:16-2:24) 22:14)

10 उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार नदियों में बँट गई। (2:10-2:14) 22:2)

11 पहली नदी का नाम पीशोन है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहाँ सोना मिलता है घेरे हुए है।

12 उस देश का सोना उत्तम होता है; वहाँ मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं।

13 और दूसरी नदी का नाम गीहोन है; यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है।

14 और तीसरी नदी का नाम हिदेकेल है; यह वही है जो अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है।

15 तब यहोवा 2:16-2:24) 2:16-2:24) 2:16-2:24) अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रखवाली करे।

16 और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, “तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है;

17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।”

18 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, “2:16-2:24) 2:16-2:24) 2:16-2:24); मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उसके लिये उपयुक्त होगा।” (1 2:16-2:24) 11:9)

19 और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के जंगली पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या-क्या नाम रखता है; और जिस-जिस जीवित प्राणी का जो-जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया।

20 अतः आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के जंगली पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके।

21 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह माँस भर दिया। (1 2:16-2:24) 11:8)

22 और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। (1 2:16-2:24) 2:13)

23 तब आदम ने कहा, “अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे माँस में का माँस है; इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।”

24 इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने

\* 2:2 2:2-2:15 परमेश्वर का विश्राम थकान के कारण नहीं परन्तु अपना कार्य समाप्त करने से है। वह अपनी शक्ति को फिर से प्राप्त करके तरोताजा नहीं हुआ बल्कि अपने सामने समाप्त कार्य को देखने की तृप्ति से हुआ। † 2:15 2:2-2:15) 2:2-2:15) 2:2-2:15) वही सर्व-सामर्थी हाथ जिसने उसे बनाया था, उसने अब भी उसे थाम रखा था, और उसने उसे वाटिका में रखा। उसने वह वाटिका उसे विश्राम करने या उसमें वास करने के लिए दी, जो एक शान्ति और विश्रान्ति का स्थान था। ‡ 2:18 2:16-2:24) 2:16-2:24) 2:16-2:24) परमेश्वर ने मनुष्य को समाजिक प्राणी बनाया, कि वह न केवल अपने से बड़ों के साथ बातचीत करे बल्कि समान लोगों के साथ भी करे। उसे एक साथी चाहिए था जिसके साथ वह बातचीत कर सके और परमेश्वर ने उसकी इस जरूरत की पूर्ति करने का निर्णय किया।

रहेंगे। (22:19, 22:10:7,8, 22:5:31)

25 आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर वे लज्जित न थे।

### 3

22:19, 22:10:7,8, 22:5:31

1 यहोवा परमेश्वर ने जितने जंगली पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, “क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, ‘तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?’” (22:12:9, 22:20:2)

2 स्त्री ने सर्प से कहा, “इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं;

3 पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न ही उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।”

4 तब सर्प ने स्त्री से कहा, “तुम निश्चय न मरोगे

5 वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।”

6 अतः 22:19, 22:10:7,8, 22:5:31\* कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया। (1 22:2:14)

7 तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़कर लंगोट बना लिये।

22:19, 22:10:7,8, 22:5:31

8 तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए।

9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, “तू कहाँ है?”

10 उसने कहा, “मैं तेरा शब्द वाटिका में सुनकर डर गया, 22:19, 22:10:7,8, 22:5:31; इसलिए छिप गया।”

11 यहोवा परमेश्वर ने कहा, “किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे मना किया था, क्या तूने उसका फल खाया है?”

\* 3:6 22:19, 22:10:7,8, 22:5:31: स्त्री ने फल देखा और यह सम्भव था की उसने परीक्षा लेनेवाले के द्वारा बताई बातों से उत्साहित होकर उस फल को मनोहरता की आँखों से देखा। † 3:10 22:19, 22:10:7,8, 22:5:31: इस कथन में उसके द्वारा अपने विचारों को परमेश्वर से छिपाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति दिखाई देती है। नंगाई का जिक्र है, परन्तु उस आज्ञा उल्लंघन का नहीं जिससे यह बात आई। ‡ 3:20 22:19, 22:10:7,8, 22:5:31: इब्रानी भाषा में हव्वा का अर्थ है “जीवन”

12 आदम ने कहा, “जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।”

13 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, “तूने यह क्या किया है?” स्त्री ने कहा, “सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।” (22:7:11, 2 22:11:3, 1 22:2:14)

14 तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, “तूने जो यह किया है इसलिए तू सब घरेलू पशुओं, और सब जंगली पशुओं से अधिक श्रापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा;

15 और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।”

16 फिर स्त्री से उसने कहा, “मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बच्चे उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।” (1 22:5:22, 22:3:18)

17 और आदम से उसने कहा, “तूने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैंने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तूने खाया है, इसलिए भूमि तेरे कारण श्रापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; (22:6:8)

18 और वह तेरे लिये काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा;

19 और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।”

20 आदम ने अपनी पत्नी का नाम 22:22:5 रखा; क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की मूलमाता वही हुई।

21 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के वस्त्र बनाकर उनको पहना दिए।

22 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिए अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।” (22:2:7, 22:22:2,14,19, 22:3:24, 22:2:7)







24 हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। (11:5)

25 जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, तब उसने लेमेक को जन्म दिया।

26 लेमेक के जन्म के पश्चात् मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

27 इस प्रकार मतूशेलह की कुल आयु नौ सौ उनहत्तर वर्ष की हुई; तत्पश्चात् वह मर गया।

28 जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, तब उससे एक पुत्र का जन्म हुआ।

29 उसने यह कहकर उसका नाम नूह रखा, कि “यहोवा ने जो पृथ्वी को श्राप दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे काम में, और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं, हमें शान्ति देगा।”

30 नूह के जन्म के पश्चात् लेमेक पाँच सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

31 इस प्रकार लेमेक की कुल आयु सात सौ सतहत्तर वर्ष की हुई; तत्पश्चात् वह मर गया।

32 और नूह पाँच सौ वर्ष का हुआ; और नूह से शेम, और हाम और येपेत का जन्म हुआ।

## 6

1 फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियाँ उत्पन्न हुईं,

2 तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं; और उन्होंने जिस-जिसको चाहा उनसे ब्याह कर लिया।

3 तब यहोवा ने कहा, “मेरा आत्मा मनुष्य में सदा के लिए निवास न करेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है; उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।”

4 उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात् जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए, वे पुत्र

शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है।

5 यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। (53:2)

6 और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ।

7 तब यहोवा ने कहा, “क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ।”

8 परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।

9 नूह की वंशावली यह है। धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था; और नूह परमेश्वर ही के साथ-साथ चलता रहा।

10 और नूह से शेम, और हाम, और येपेत नामक, तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

11 उस समय थी, और उपद्रव से भर गई थी।

12 और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना-अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था।

13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, “सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिए मैं उनको पृथ्वी समेत नाश कर डालूँगा।

14 इसलिए तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले, उसमें कोठरियाँ बनाना, और भीतर-बाहर उस पर राल लगाना।

15 इस ढंग से तू उसको बनाना: जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊँचाई तीस हाथ की हो।

16 जहाज में एक खिड़की बनाना, और उसके एक हाथ ऊपर से उसकी छत बनाना, और जहाज की एक ओर एक द्वार रखना, और जहाज में पहला, दूसरा, तीसरा खण्ड बनाना।

\* 6:7 यह वर्तमान मनुष्यजाति को मिटा देने का निर्णय था। † 6:9 यहाँ नूह का चित्रण “धर्मी” और “खरे” पुरुष के रूप में किया है। यह स्मरण रखें कि पहले ही से उस पर परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि बनी थी। ‡ 6:11 नूह के विपरीत, बाकी सब मानवजाति भ्रष्ट थी—पाप से पूरी तरह से विकृत। “वह उपद्रव से भर गई थी”। § 6:18 बाइबल में यहाँ परमेश्वर और मनुष्य के बीच वाचा का पहली बार जिक्र आता है। वाचा दो लोगों के बीच एक गम्भीर प्रतिज्ञा है, जिसमें प्रत्येक अपने-अपने भाग को करने के लिए वचनबद्ध है।





4 पर माँस को प्राण समेत अर्थात् लहू समेत [2][2][2] [2][2][2][2]†। (2[2][2][2]. 12:23)

5 और निश्चय मैं तुम्हारा लहू अर्थात् प्राण का बदला लूँगा: सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लूँगा; मनुष्य के प्राण का बदला मैं एक-एक के भाई-बन्धु से लूँगा।

6 जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। (2[2][2][2]. 24:17)

7 और तुम तो फूलो-फलो और बढ़ो और पृथ्वी पर बहुतायत से सन्तान उत्पन्न करके उसमें भर जाओ।”

[2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]

8 फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा,

9 “सुनो, मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश होगा, उसके साथ भी वाचा बाँधता हूँ;

10 और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं, क्या पक्षी क्या घरेलू पशु, क्या पृथ्वी के सब जंगली पशु, पृथ्वी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं।

11 और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बाँधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नाश न होंगे और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा।”

12 फिर परमेश्वर ने कहा, “जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग-युग की पीढ़ियों के लिये बाँधता हूँ; उसका यह चिन्ह है:

13 कि मैंने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा।

14 और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊँ तब बादल में धनुष दिखाई देगा।

15 तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के साथ बंधी है; उसको मैं स्मरण करूँगा, तब ऐसा जल-प्रलय फिर न होगा जिससे सब प्राणियों का विनाश हो।

16 बादल में जो धनुष होगा मैं उसे देखकर यह सदा की वाचा स्मरण करूँगा, जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बंधी है।”

† 9:4 [2][2][2] [2][2][2][2]: किसी पशु को खाने के लिए इस्तेमाल करने से पहले उसको मारना जरूरी है और जब तक उसकी नसों में लहू बहता है उसमें जीवन रहता है, इसलिए इससे पहले उसका माँस खाया जाए उसके प्राण लहू निकालना जरूरी है। ‡ 9:17 [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]: परमेश्वर यहाँ नूह का ध्यान बादल में धनुष की ओर आकर्षित करता है, जो उस समय वास्तव में आकाश में था, और उस कुल पिता को प्रतिज्ञा का आश्वासन देता है। \* 10:2 [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]: येपेत का नाम पहले आता है क्योंकि शायद वह सबसे बड़ा भाई था (उत्पत्ति 9:24; उत्पत्ति 10:21) और उसके वंशज बहुत थे और सब स्थानों में फैल गए थे।

17 फिर परमेश्वर ने नूह से कहा, “जो वाचा मैंने पृथ्वी भर के सब प्राणियों के साथ बाँधी है, [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2]।”

[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]

18 नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले, वे शेम, हाम और येपेत थे; और हाम कनान का पिता हुआ।

19 नूह के तीन पुत्र ये ही हैं, और इनका वंश सारी पृथ्वी पर फैल गया।

20 नूह किसानी करने लगा: और उसने दाख की बारी लगाई।

21 और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ; और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया।

22 तब कनान के पिता हाम ने, अपने पिता को नंगा देखा, और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बता दिया।

23 तब शेम और येपेत दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कंधों पर रखा और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढाँप दिया और वे अपना मुख पीछे किए हुए थे इसलिए उन्होंने अपने पिता को नंगा न देखा।

24 जब नूह का नशा उतर गया, तब उसने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उसके साथ क्या किया है।

25 इसलिए उसने कहा,

“कनान श्रापित हो:

वह अपने भाई-बन्धुओं के दासों का दास हो।”

26 फिर उसने कहा,

“शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है,

और कनान शेम का दास हो।

27 परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए;

और वह शेम के तम्बुओं में बसे,

और कनान उसका दास हो।”

28 जल-प्रलय के पश्चात् नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा।

29 इस प्रकार नूह की कुल आयु साढ़े नौ सौ वर्ष की हुई; तत्पश्चात् वह मर गया।

## 10

[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2]

1 नूह के पुत्र शेम, हाम और येपेत थे; उनके पुत्र जल-प्रलय के पश्चात् उत्पन्न हुए: उनकी वंशावली यह है।

22222 22 22222

2 22222 22 22222\*: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास हुए।

3 और गोमेर के पुत्र: अश्कनज, रीपत और तोगर्मा हुए।

4 और यावान के वंश में एलीशा और तर्शीश, और किक्ती, और दोदानी लोग हुए।

5 इनके वंश अन्यजातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बँट गए कि वे भिन्न-भिन्न भाषाओं, कुलों, और जातियों के अनुसार अलग-अलग हो गए।

222 22 22222

6 फिर 222 22 22222†: कूश, मिस्र, पूत और कनान हुए।

7 और कूश के पुत्र सबा, हवीला, सबता, रामाह, और सब्तका हुए। और रामाह के पुत्र शेबा और ददान हुए।

8 कूश के वंश में निम्नोद भी हुआ; पृथ्वी पर पहला वीर वही हुआ है।

9 वही यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेवाला ठहरा, इससे यह कहावत चली है; “निम्नोद के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेवाला।”

10 उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबेल, एरेख, अक्कद, और कलने से हुआ।

11 उस देश से वह निकलकर अश्शूर को गया, और नीनवे, रहोबोतीर और कालह को,

12 और नीनवे और कालह के बीच जो रेसेन है, उसे भी बसाया; बड़ा नगर यही है।

13 मिस्र के वंश में लूदी, अनामी, लहाबी, नप्तूही,

14 और पत्रूसी, कसलूही, और कप्तोरी लोग हुए, कसलूहियों में से तो पलिशती लोग निकले।

15 कनान के वंश में उसका ज्येष्ठ पुत्र सीदोन, तब हित्त,

16 यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी,

17 हिब्बी, अर्की, सीनी,

18 अर्वदी, समारी, और हमाती लोग भी हुए; फिर कनानियों के कुल भी फैल गए।

19 और कनानियों की सीमा सीदोन से लेकर गरार के मार्ग से होकर गाज़ा तक और फिर सदोम और गमोरा और अदमा और सबोयीम के मार्ग से होकर लाशा तक हुआ।

† 10:6 222 22 22222: हाम तीनों भाइयों में सबसे छोटा था (उत्पत्ति 9:24) और उसे यहाँ इसलिए रखा है क्योंकि सच्चे परमेश्वर से दूर होने में येपेत के साथ सहमत था। \* 11:2 22222: बाबेल देश कई नामों से जाना जाता था, शिनार उनमें से एक है।

20 हाम के वंश में ये ही हुए; और ये भिन्न-भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों, और जातियों के अनुसार अलग-अलग हो गए।

222 22 22222

21 फिर शेम, जो सब एबेरवंशियों का मूलपुरुष हुआ, और जो येपेत का ज्येष्ठ भाई था, उसके भी पुत्र उत्पन्न हुए।

22 शेम के पुत्र: एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और अराम हुए।

23 अराम के पुत्र: ऊस, हूल, गेतेर और मश हुए।

24 और अर्पक्षद ने शेलह को, और शेलह ने एबेर को जन्म दिया।

25 और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बँट गई, और उसके भाई का नाम योक्तान था।

26 और योक्तान ने अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह,

27 हदोराम, ऊजाल, दिक्ला,

28 ओबाल, अबीमाएल, शेबा,

29 ओपीर, हवीला, और योबाब को जन्म दिया: ये ही सब योक्तान के पुत्र हुए।

30 इनके रहने का स्थान मेशा से लेकर सपारा, जो पूर्व में एक पहाड़ है, उसके मार्ग तक हुआ।

31 शेम के पुत्र ये ही हुए; और ये भिन्न-भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों और जातियों के अनुसार अलग-अलग हो गए।

32 नूह के पुत्रों के घराने ये ही हैं: और उनकी जातियों के अनुसार उनकी वंशावलियाँ ये ही हैं; और जल-प्रलय के पश्चात् पृथ्वी भर की जातियाँ इन्हीं में से होकर बँट गईं।

## 11

2222 222 22222222

1 सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा, और एक ही बोली थी।

2 उस समय लोग पूर्व की ओर चलते-चलते 2222222\* देश में एक मैदान पाकर उसमें बस गए।

3 तब वे आपस में कहने लगे, “आओ, हम ईंटें बना-बनाकर भली भाँति आग में पकाएँ।” और उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंट से, और मिट्टी के गारे के स्थान में चूने से काम लिया।

4 फिर उन्होंने कहा, “आओ, हम एक नगर और एक मीनार बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हमको सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।”

5 जब लोग नगर और गुम्मत बनाने लगे; तब उन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया।

6 और यहोवा ने कहा, “मैं क्या देखता हूँ, कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जो कुछ वे करने का यत्न करेंगे, उसमें से कुछ भी उनके लिये अनहोना न होगा।

7 इसलिए आओ, हम उतरकर उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।”

8 इस प्रकार यहोवा ने उनको वहाँ से सारी पृथ्वी के ऊपर [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#); और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया।

9 इस कारण उस नगर का नाम बाबेल पड़ा; क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, वह यहोवा ने वहीं डाली, और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।

[\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\] \[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

10 शेम की वंशावली यह है। जल-प्रलय के दो वर्ष पश्चात् जब शेम एक सौ वर्ष का हुआ, तब उसने अर्पक्षद को जन्म दिया।

11 और अर्पक्षद के जन्म के पश्चात् शेम पाँच सौ वर्ष जीवित रहा; और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

12 जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का हुआ, तब उसने शेलह को जन्म दिया।

13 और शेलह के जन्म के पश्चात् अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

14 जब शेलह तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा एबेर का जन्म हुआ।

15 और एबेर के जन्म के पश्चात् शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

16 जब एबेर चौतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा पेलेग का जन्म हुआ।

17 और पेलेग के जन्म के पश्चात् एबेर चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

18 जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा रू का जन्म हुआ।

19 और रू के जन्म के पश्चात् पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

20 जब रू बत्तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा सरूग का जन्म हुआ।

21 और सरूग के जन्म के पश्चात् रू दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

22 जब सरूग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा नाहोर का जन्म हुआ।

23 और नाहोर के जन्म के पश्चात् सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

24 जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा तेरह का जन्म हुआ;

25 और तेरह के जन्म के पश्चात् नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

26 जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ, तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर, और हारान उत्पन्न हुए।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

27 तेरह की वंशावली यह है: तेरह ने अब्राम, और नाहोर, और हारान को जन्म दिया; और हारान ने लूत को जन्म दिया।

28 और हारान अपने पिता के सामने ही, कसदियों के ऊर नाम नगर में, जो उसकी जन्म-भूमि थी, मर गया।

29 अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की पत्नी का नाम सारै, और नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था। यह उस हारान की बेटि थी, जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था।

30 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\]](#); उसके सन्तान न हुई।

31 और तेरह अपने पुत्र अब्राम, और अपने पोते लूत, जो हारान का पुत्र था, और अपनी बहू सारै, जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी, इन सभी को लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नामक देश में पहुँचकर वहीं रहने लगा।

32 जब तेरह दो सौ पाँच वर्ष का हुआ, तब वह हारान देश में मर गया।

† 11:8 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#): वे एक दूसरे की भाषा को समझ नहीं पा रहे थे, उन्होंने व्यवहारिक रूप से अपने आपको एक दूसरे से अलग महसूस किया। बातचीत और कार्य में एक होना अब असंभव हो गया था। ‡ 11:30 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\] \[2\]\[2\]\[2\]\[2\] \[2\]\[2\]](#): इस कथन से यह स्पष्ट है कि प्रवासन के समय अब्राम के विवाह को बहुत समय हो चुका था।

## 12

उत्पत्ति 12:1-12

1 उत्पत्ति 12:1-12\* “अपने देश, और अपनी जन्म-भूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। (उत्पत्ति 12:1-12) 7:3, उत्पत्ति 11:8)

2 और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा।

3 और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।” (उत्पत्ति 12:3-12) 3:25, उत्पत्ति 3:8)

4 यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूत भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था।

5 इस प्रकार अब्राम अपनी पत्नी सारै, और अपने भतीजे लूत को, और जो धन उन्होंने इकट्ठा किया था, और जो प्राणी उन्होंने हारान में प्राप्त किए थे, सब को लेकर कनान देश में जाने को निकल चला; और वे कनान देश में आ गए। (उत्पत्ति 12:1-12) 7:4)

6 उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शेकेम में, जहाँ मोरे का बांज वृक्ष है पहुँचा। उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे।

7 तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, “यह देश मैं तेरे वंश को दूँगा।” और उसने वहाँ यहोवा के लिये, जिसने उसे दर्शन दिया था, एक वेदी बनाई। (उत्पत्ति 12:1-12) 3:16)

8 फिर वहाँ से आगे बढ़कर, वह उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिसके पश्चिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर आई है; और वहाँ भी उसने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई: और यहोवा से प्रार्थना की।

9 और अब्राम आगे बढ़ करके दक्षिण देश की ओर चला गया।

उत्पत्ति 12:13-12

10 उस देश में अकाल पड़ा: इसलिए अब्राम मिस्र देश को चला गया कि वहाँ परदेशी होकर रहे क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था।

\* 12:1 उत्पत्ति 12:1-12 उत्पत्ति 12:1-12: अब्राम की बुलाहट में आज्ञा और प्रतिज्ञा दोनों हैं। † 12:15 उत्पत्ति 12:15-12: सारै की सुन्दरता की प्रशंसा की गई, और, क्योंकि यह बताया गया था कि वह अकेली है, इसलिए उसे फिरौन की पत्नी होने के लिए चुना गया; जबकि उसके भाई के रूप में अब्राम को भेंट दी गई। ‡ 12:17 उत्पत्ति 12:17-12: ईश्वरीय हस्तक्षेप का सम्बंधित लोगों पर उचित प्रभाव पड़ा। जब फिरौन को दण्ड मिला, तो यह निष्कर्ष निकलता है कि वह स्वर्ग की दृष्टि में इस विषय में दोषी था।

11 फिर ऐसा हुआ कि मिस्र के निकट पहुँचकर, उसने अपनी पत्नी सारै से कहा, “सुन, मुझे मालूम है, कि तू एक सुन्दर स्त्री है;

12 और जब मिस्री तुझे देखेंगे, तब कहेंगे, ‘यह उसकी पत्नी है,’ इसलिए वे मुझ को तो मार डालेंगे, पर तुझको जीवित रख लेंगे।

13 अतः यह कहना, ‘मैं उसकी बहन हूँ,’ जिससे तेरे कारण मेरा कल्याण हो और मेरा प्राण तेरे कारण बचे।”

14 फिर ऐसा हुआ कि जब अब्राम मिस्र में आया, तब मिस्रियों ने उसकी पत्नी को देखा कि वह अति सुन्दर है।

15 और मिस्र के राजा फिरौन के हाकिमों ने उसको देखकर फिरौन के सामने उसकी प्रशंसा की: इसलिए उत्पत्ति 12:17-12: †

16 और फिरौन ने उसके कारण अब्राम की भलाई की; और उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, दास-दासियाँ, गदहे-गदहियाँ, और ऊँट मिले।

17 तब उत्पत्ति 12:17-12: †

18 तब फिरौन ने अब्राम को बुलवाकर कहा, “तूने मेरे साथ यह क्या किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है?

19 तूने क्यों कहा कि वह तेरी बहन है? मैंने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिये लिया; परन्तु अब अपनी पत्नी को लेकर यहाँ से चला जा।”

20 और फिरौन ने अपने आदमियों को उसके विषय में आज्ञा दी और उन्होंने उसको और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति समेत जो उसका था, विदा कर दिया।

## 13

उत्पत्ति 13:1-12

1 तब अब्राम अपनी पत्नी, और अपनी सारी सम्पत्ति लेकर, लूत को भी संग लिये हुए, मिस्र को छोड़कर कनान के दक्षिण देश में आया।

2 अब्राम भेड़-बकरी, गाय-बैल, और सोने-चाँदी का बड़ा धनी था।

3 फिर वह दक्षिण देश से चलकर, बेतेल के पास उसी स्थान को पहुँचा, जहाँ पहले उसने अपना तम्बू खड़ा किया था, जो बेतेल और आई के बीच में है।



4 यह स्थान उस वेदी का है, जिसे उसने पहले बनाया था, और वहाँ अब्राहम ने फिर यहोवा से प्रार्थना की।

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

5 लूत के पास भी, जो अब्राहम के साथ चलता था, भेड-बकरी, गाय-बैल, और ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ\*।

6 इसलिए उस देश में उन दोनों के लिए पर्याप्त स्थान न था कि वे इकट्ठे रहें क्योंकि उनके पास बहुत सम्पत्ति थी इसलिए वे इकट्ठे न रह सके।

7 सो अब्राहम, और लूत की भेड-बकरी, और गाय-बैल के चरवाहों में झगडा हुआ। उस समय कनानी, और परिज्जी लोग, उस देश में रहते थे।

8 तब अब्राहम लूत से कहने लगा, “मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगडा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई-बन्धु हैं।

9 क्या सारा देश तेरे सामने नहीं? सो मुझसे अलग हो, यदि तू बाई ओर जाए तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा; और यदि तू दाहिनी ओर जाए तो मैं बाई ओर जाऊँगा।”

10 तब लूत ने आँख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा कि वह सब सिंची हुई है। जब तक यहोवा ने सदोम और गमोरा को नाश न किया था, तब तक सोअर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की वाटिका, और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी।

11 सो लूत अपने लिये यरदन की सारी तराई को चुन के पूर्व की ओर चला, और वे एक दूसरे से अलग हो गये।

12 अब्राहम तो कनान देश में रहा, पर ⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ; और अपना तम्बू सदोम के निकट खडा किया।

13 सदोम के लोग यहोवा की दृष्टि में बड़े दुष्ट और पापी थे।

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

14 जब लूत अब्राहम से अलग हो गया तब उसके पश्चात् ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ, “आँख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहाँ से उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, चारों ओर दृष्टि कर।

15 क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग-युग के लिये दूँगा। (ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ. 7:5)

16 और मैं तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों के समान बहुत करूँगा, यहाँ तक कि जो कोई पृथ्वी की

धूल के किनकों को गिन सकेगा वही तेरा वंश भी गिन सकेगा।

17 उठ, इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर; क्योंकि मैं उसे तुझी को दूँगा।”

18 इसके पश्चात् अब्राहम अपना तम्बू उखाड़कर, ममे के बांजवृक्षों के बीच जो हेब्रोन में थे, जाकर रहने लगा, और वहाँ भी यहोवा की एक वेदी बनाई।

## 14

ⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂ

1 शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक, और एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, और गोयीम के राजा तिदाल के दिनों में ऐसा हुआ,

2 कि उन्होंने सदोम के राजा बेरा, और गमोरा के राजा बिर्शा, और अदमा के राजा शिनाब, और सबोयीम के राजा शेमेबेर, और बेला जो सोअर भी कहलाता है, इन राजाओं के विरुद्ध युद्ध किया।

3 इन पाँचों ने सिद्दीम नामक तराई में, जो खारे नदी के पास है, एका किया।

4 बारह वर्ष तक तो ये कदोर्लाओमेर के अधीन रहे; पर तेरहवें वर्ष में उसके विरुद्ध उठे।

5 चौदहवें वर्ष में कदोर्लाओमेर, और उसके संगी राजा आए, और अशतारोत्कनम में रापाइयों को, और हाम में जूजियों को, और शावे-किर्यातैम में एमियों को,

6 और सेईर नामक पहाड़ में होरियों को, मारते-मारते उस एल्पारान तक जो जंगल के पास है, पहुँच गए।

7 वहाँ से वे लौटकर एन्मिशपात को आए, जो कादेश भी कहलाता है, और अमालेकियों के सारे देश को, और उन एमोरियों को भी जीत लिया, जो हसासोन्तामार में रहते थे।

8 तब सदोम, गमोरा, अदमा, सबोयीम, और बेला, जो सोअर भी कहलाता है, इनके राजा निकले, और सिद्दीम नामक तराई में, उनके साथ युद्ध के लिये पाँति बाँधी:

9 अर्थात् एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक, इन चारों के विरुद्ध उन पाँचों ने पाँति बाँधी।

10 सिद्दीम नामक तराई में जहाँ लसार मिट्टी के गड्डे ही गड्डे थे; सदोम और गमोरा के राजा भागते-भागते उनमें गिर पड़े, और जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए।

\* 13:5 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ: परिवारों के बारे में बताने का इब्रानी लोगों का यह एक तरीका है † 13:12 ⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: यह सम्भव है कि जब वह अब्राहम से अलग हुआ, उस समय वह कुँवारा था, और इसलिए उसने सदोम की स्त्री से विवाह किया। यदि ऐसा है तो वह इन सब घटनाक्रम के जाल में फँस गया और अधर्मियों के साथ मिल गया। ‡ 13:14 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: वह मनुष्य जिसे परमेश्वर ने चुना था, वह अब्राहम है और परमेश्वर उसे आशीष देता है।

11 तब वे सदोम और गमोरा के सारे धन और भोजनवस्तुओं को लूट-लाट कर चले गए।

12 और अब्राम का भतीजा लूत, जो सदोम में रहता था; उसको भी धन समेत वे लेकर चले गए।

13 तब एक जन जो भागकर बच निकला था उसने जाकर इब्री अब्राम को समाचार दिया; अब्राम तो एमोरी मग्ने, जो एशकोल और आनेर का भाई था, उसके बांजवृक्षों के बीच में रहता था; और ये लोग अब्राम के संग वाचा बाँधे हुए थे।

उत्पत्ति 14:11-12

14 यह सुनकर कि उसका भतीजा बन्दी बना लिया गया है, अब्राम ने अपने तीन सौ अठारह प्रशिक्षित, युद्ध कौशल में निपुण दासों को लेकर जो उसके कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, अस्त्र-शस्त्र धारण करके दान तक उनका पीछा किया।

15 और अपने दासों के अलग-अलग दल बाँधकर रात को उन पर चढ़ाई करके उनको मार लिया और होबा तक, जो दमिश्क की उत्तर की ओर है, उनका पीछा किया।

16 और वह सारे धन को, और अपने भतीजे लूत, और उसके धन को, और स्त्रियों को, और सब बन्दियों को, लौटा ले आया।

17 जब वह कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं को जीतकर लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे नामक तराई में, जो राजा की तराई भी कहलाती है, उससे भेंट करने के लिये आया।

उत्पत्ति 14:13-15

18 तब शालेम <sup>†</sup> उत्पत्ति 14:18-19\*<sup>\*</sup>, जो परमप्रधान परमेश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया।

19 और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, “परमप्रधान परमेश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।

20 और धन्य है परमप्रधान परमेश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वंश में कर दिया है।” तब अब्राम ने उसको सब का दशमांश दिया।

21 तब सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, “प्राणियों को तो मुझे दे, और धन को अपने पास रख।”

22 अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, “परमप्रधान परमेश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है,

23 उसकी <sup>†</sup> उत्पत्ति 15:1-2\*<sup>\*</sup>, कि जो कुछ तेरा है उसमें से न तो मैं एक सूत, और न जूती का बन्धन, न कोई और वस्तु लूँगा; कि तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम मेरे ही कारण धनी हुआ।

24 पर जो कुछ इन जवानों ने खा लिया है और उनका भाग जो मेरे साथ गए थे; अर्थात् आनेर, एशकोल, और मग्ने मैं नहीं लौटाऊँगा वे तो अपना-अपना भाग रख लें।”

## 15

उत्पत्ति 15:1-2

1 इन बातों के पश्चात् यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुँचा “हे अब्राम, मत डर; मैं तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल हूँ।”

2 अब्राम ने कहा, “हे प्रभु यहोवा, मैं तो <sup>†</sup> उत्पत्ति 15:3\*<sup>\*</sup> हूँ, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्कवासी एलीएजेर होगा, अतः तू मुझे क्या देगा?”

3 और अब्राम ने कहा, “मुझे तो तूने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूँ, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा।”

4 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, “यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा।”

5 और उसने उसको बाहर ले जाकर कहा, “आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?” फिर उसने उससे कहा, “तेरा वंश ऐसा ही होगा।” (उत्पत्ति 15:4:18)

6 <sup>†</sup> उत्पत्ति 15:6-7\*<sup>\*</sup>; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धार्मिकता गिना। (उत्पत्ति 15:4:3)

7 और उसने उससे कहा, “मैं वही यहोवा हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझको इस देश का अधिकार दूँ।”

8 उसने कहा, “हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूँ कि मैं इसका अधिकारी होऊँगा?”

9 यहोवा ने उससे कहा, “मेरे लिये तीन वर्ष की एक बछिया, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का

\* 14:18 <sup>†</sup> उत्पत्ति 14:18-19\*<sup>\*</sup>: शालेम का राजा जिसका नाम धार्मिकता का राजा था, वह रोटी और दाखमधु लाया। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ था, जो इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर ने अपनी दया का हाथ आगे बढ़ाया हुआ है, और मनुष्य विश्वास के हाथ से उस तक पहुँचता है। † 14:23 <sup>†</sup> उत्पत्ति 14:23-24\*<sup>\*</sup>: अब्राम के लिए यह गम्भीर मामला था। या तो पहले, या वहीं पर, उसने परमेश्वर के सामने यह शपथ ली कि वह सदोम की सम्पत्ति को हाथ भी नहीं लगाएगा। \* 15:2 <sup>†</sup> उत्पत्ति 15:2-3\*<sup>\*</sup>: अब्राम अब भी निर्वंश और भूमिहीन है, और परमेश्वर ने इस विषय में की गई अपनी प्रतिज्ञाओं के विषय में अब तक कुछ भी करने का संकेत नहीं दिया था। † 15:6 <sup>†</sup> उत्पत्ति 15:6-7\*<sup>\*</sup>: अब्राम ने यहोवा पर, उसकी प्रतिज्ञा पर विश्वास किया, जबकि वर्तमान में कुछ भी नहीं था और तर्कसंगत अवरोध उसके सामने थे।



जीवित रही?”

14 इस कारण उस कुएँ का नाम बएर-लहई-रोई कुआँ पड़ा; वह तो कादेश और बेरेद के बीच में है।

15 हागार को अब्राहम के द्वारा एक पुत्र हुआ; और अब्राहम ने अपने पुत्र का नाम, जिसे हागार ने जन्म दिया था, इश्माएल रखा।

16 जब हागार ने अब्राहम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राहम छियासी वर्ष का था।

## 17

उत्पत्ति 17:1-17

1 जब अब्राहम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।

2 मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा।”

3 तब उत्पत्ति 17:1-17\* और परमेश्वर उससे यह बातें करता गया,

4 “देख, मेरी वाचा तेरे साथ बंधी रहेगी, इसलिए तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा।

5 इसलिए अब से तेरा नाम अब्राहम न रहेगा परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैंने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है।

6 मैं तुझे अत्यन्त फलवन्त करूँगा, और तुझको जाति-जाति का मूल बना दूँगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।

7 और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग-युग की वाचा बाँधता हूँ, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा।

8 और मैं तुझको, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को भी, यह सारा कनान देश, जिसमें तू परदेशी होकर रहता है, इस रीति दूँगा कि वह युग-युग उनकी निज भूमि रहेगी, और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा।”

9 फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “तू भी मेरे साथ बाँधी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी-अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे।

10 मेरे साथ बाँधी हुई वाचा, जिसका पालन तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को करना पड़ेगा, वह यह है: तुम में से एक-एक पुरुष का खतना हो।

\* 17:3 उत्पत्ति 17:1-17:17: यह आदरपूर्ण भक्ति का सबसे दीन स्वरूप है, जिसमें आराधक अपने घुटने और कोहनी के बल पर अपना माथा जमीन पर टिकाता है। † 17:12 उत्पत्ति 17:12: खतना करने का दिन, आठवाँ दिन है सात सिद्धता की संख्या है। इसलिए सात दिन को सिद्धता और विशिष्टता के रूप में दिखा जाता है। ‡ 17:15 उत्पत्ति 17:15, उत्पत्ति 17:15-17:17: खतना करने का दिन, आठवाँ दिन है सात सिद्धता की संख्या है। इसलिए सात दिन को सिद्धता और विशिष्टता के रूप में दिखा जाता है।

11 तुम अपनी-अपनी खलड़ी का खतना करा लेना: जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा।

12 पीढ़ी-पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो, अथवा परदेशियों को रूपा देकर मोल लिया जाए, ऐसे सब पुरुष भी जब उत्पत्ति 17:12 के हो जाएँ, तब उनका खतना किया जाए।

13 जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए, उसका खतना अवश्य ही किया जाए; इस प्रकार मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग-युग रहेगी।

14 जो पुरुष खतनारहित रहे, अर्थात् जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बाँधी हुई वाचा को तोड़ दिया।”

उत्पत्ति 17:18-21

15 फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “तेरी जो पत्नी उत्पत्ति 17:18, उत्पत्ति 17:19, उत्पत्ति 17:20, उत्पत्ति 17:21, उत्पत्ति 17:22, उत्पत्ति 17:23 होगा।

16 मैं उसको आशीष दूँगा, और तुझको उसके द्वारा एक पुत्र दूँगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूँगा, कि वह जाति-जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य-राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।”

17 तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, और मन ही मन कहने लगा, “क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगी और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?”

18 और अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, “इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है।”

19 तब परमेश्वर ने कहा, “निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना; और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बाँधूँगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के लिये युग-युग की वाचा होगी। (उत्पत्ति 17:19, 4:7,8)

20 इश्माएल के विषय में भी मैंने तेरी सुनी है; मैं उसको भी आशीष दूँगा, और उसे फलवन्त करूँगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूँगा; उससे बारह प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊँगा।

21 परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूँगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न

होगा।”

22 तब परमेश्वर ने अब्राहम से बातें करनी बन्द की और उसके पास से ऊपर चढ़ गया।

23 तब अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल को लिया और, उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके रुपये से मोल लिये गए थे, अर्थात् उसके घर में जितने पुरुष थे, उन सभी को लेकर उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी खलड़ी का खतना किया।

24 जब अब्राहम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्यानवे वर्ष का था।

25 और जब उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ तब वह तेरह वर्ष का था।

26 अब्राहम और उसके पुत्र इश्माएल दोनों का खतना एक ही दिन हुआ।

27 और उसके घर में जितने पुरुष थे जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का खतना उसके साथ ही हुआ।

## 18

उत्पत्ति 18:1-19:1

1 अब्राहम ममे के बांजवृक्षों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे **उत्पत्ति 18:1**।

2 उसने आँख उठाकर दृष्टि की तो क्या देखा, कि तीन पुरुष उसके सामने खड़े हैं। जब उसने उन्हें देखा तब वह उनसे भेंट करने के लिये तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर दण्डवत् की और कहने लगा,

3 “हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ, कि अपने दास के पास से चले न जाना।

4 मैं थोड़ा सा जल लाता हूँ और आप अपने पाँव धोकर इस वृक्ष के तले विश्राम करें।

5 फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊँ, और उससे आप अपने-अपने जीव को तृप्त करें; तब उसके पश्चात् आगे बढ़ें क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिए पधारे हैं।” उन्होंने कहा, “जैसा तू कहता है वैसा ही कर।”

6 तब अब्राहम तुरन्त तम्बू में सारा के पास गया और कहा, “तीन सआ मैदा जल्दी से गूँध, और फुलके बना।”

7 फिर अब्राहम गाय-बैल के झुण्ड में दौड़ा, और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया, और उसने जल्दी से उसको पकाया।

\* **18:1** **उत्पत्ति 18:1**: प्रभु अब्राहम से मिलने आता है और सारा के पुत्र के जन्म का आश्वसन देता है। † **18:20** **उत्पत्ति 18:20**: ईश्वरीय प्रक्रिया के हर कदम पर न्याय है। परमेश्वर पृच्छताछ करने और परिस्थिति अनुसार कार्य करने के लिए नीचे उतरा। वे पुरुष सन्देश सुनाकर चले गए लेकिन अब्राहम अब भी परमेश्वर के सामने खड़ा है।

8 तब उसने दही, और दूध, और बछड़े का माँस, जो उसने पकवाया था, लेकर उनके आगे परोस दिया; और आप वृक्ष के तले उनके पास खड़ा रहा, और वे खाने लगे। **(उत्पत्ति 18:2)**

उत्पत्ति 18:3-19:1

9 उन्होंने उससे पूछा, “तेरी पत्नी सारा कहाँ है?” उसने कहा, “वह तो तम्बू में है।”

10 उसने कहा, “मैं वसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर आऊँगा; और तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा।” सारा तम्बू के द्वार पर जो अब्राहम के पीछे था सुन रही थी। **(उत्पत्ति 18:9)**

11 अब्राहम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे; और सारा का मासिक धर्म बन्द हो गया था। **(उत्पत्ति 18:11)**

12 इसलिए सारा मन में हँसकर कहने लगी, “मैं तो बूढ़ी हूँ, और मेरा स्वामी भी बूढ़ा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा?”

13 तब यहोवा ने अब्राहम से कहा, “सारा यह कहकर क्यों हँसी, कि क्या मेरे, जो ऐसी बुढ़िया हो गई हूँ, सचमुच एक पुत्र उत्पन्न होगा?”

14 क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है? नियत समय में, अर्थात् वसन्त ऋतु में, मैं तेरे पास फिर आऊँगा, और सारा के पुत्र उत्पन्न होगा।”

15 तब सारा डर के मारे यह कहकर मुकर गई, “मैं नहीं हँसी।” उसने कहा, “नहीं; तू हँसी तो थी।” **(1 उत्पत्ति 18:15)**

उत्पत्ति 18:16-19:1

16 फिर वे पुरुष वहाँ से चलकर, सदोम की ओर दृष्टि की; और अब्राहम उन्हें विदा करने के लिये उनके संग-संग चला।

17 तब यहोवा ने कहा, “यह जो मैं करता हूँ उसे क्या अब्राहम से छिपा रखूँ?”

18 अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी। **(उत्पत्ति 18:18, 18:25, उत्पत्ति 18:19, उत्पत्ति 18:19)**

19 क्योंकि मैं जानता हूँ, कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धार्मिकता और न्याय करते रहें, ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करे।”

20 फिर यहोवा ने कहा, “सदोम और गमोरा के विरुद्ध ~~कदाचित्~~ बढ़ गई है, और उनका पाप बहुत भारी हो गया है;

21 इसलिए मैं उतरकर देखूँगा, कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुँची है, उन्होंने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं; और न किया हो तो मैं उसे जान लूँगा।” (~~कदाचित्~~ 18:5)

22 तब वे पुरुष वहाँ से मुड़कर सदोम की ओर जाने लगे; पर अब्राहम यहोवा के आगे खड़ा रह गया।

23 तब अब्राहम उसके समीप जाकर कहने लगा, “क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्मी भी नाश करेगा?”

24 कदाचित् उस नगर में पचास धर्मी हों तो क्या तू सचमुच उस स्थान को नाश करेगा और उन पचास धर्मियों के कारण जो उसमें हों न छोड़ेगा?

25 इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे। क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?”

26 यहोवा ने कहा, “यदि मुझे सदोम में पचास धर्मी मिलें, तो उनके कारण उस सारे स्थान को छोड़ूँगा।”

27 फिर अब्राहम ने कहा, “हे प्रभु, सुन मैं तो मिट्टी और राख हूँ; तो भी मैंने इतनी ढिठाई की कि तुझ से बातें करूँ।

28 कदाचित् उन पचास धर्मियों में पाँच घट जाएँ; तो क्या तू पाँच ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा?” उसने कहा, “यदि मुझे उसमें पैंतालीस भी मिलें, तो भी उसका नाश न करूँगा।”

29 फिर उसने उससे यह भी कहा, “कदाचित् वहाँ चालीस मिलें।” उसने कहा, “तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा न करूँगा।”

30 फिर उसने कहा, “हे प्रभु, क्रोध न कर, तो मैं कुछ और कहूँ: कदाचित् वहाँ तीस मिलें।” उसने कहा, “यदि मुझे वहाँ तीस भी मिलें, तो भी ऐसा न करूँगा।”

31 फिर उसने कहा, “हे प्रभु, सुन, मैंने इतनी ढिठाई तो की है कि तुझ से बातें करूँ: कदाचित् उसमें बीस मिलें।” उसने कहा, “मैं बीस के कारण भी उसका नाश न करूँगा।”

32 फिर उसने कहा, “हे प्रभु, क्रोध न कर, मैं एक ही बार और कहूँगा: कदाचित् उसमें दस मिलें।” उसने कहा, “तो मैं दस के कारण भी उसका नाश न करूँगा।”

33 जब यहोवा अब्राहम से बातें कर चुका, तब चला गया: और अब्राहम अपने घर को लौट गया।

## 19

~~कदाचित्~~ ~~कदाचित्~~

1 साँझ को वे ~~कदाचित्~~ ~~कदाचित्~~\* सदोम के पास आए; और लूत सदोम के फाटक के पास बैठा था। उनको देखकर वह उनसे भेंट करने के लिये उठा; और मुँह के बल झुककर दण्डवत् कर कहा;

2 “हे मेरे प्रभुओं, अपने दास के घर में पधारिए, और रात भर विश्राम कीजिए, और अपने पाँव धोइये, फिर भोर को उठकर अपने मार्ग पर जाइए।” उन्होंने कहा, “नहीं; हम चौक ही में रात बिताएँगे।”

3 और उसने उनसे बहुत विनती करके उन्हें मनाया; इसलिए वे उसके साथ चलकर उसके घर में आए; और उसने उनके लिये भोजन तैयार किया, और बिना खमीर की रोटियाँ बनाकर उनको खिलाई।

4 उनके सो जाने के पहले, सदोम नगर के पुरुषों ने, जवानों से लेकर बूढ़ों तक, वरन् चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया;

5 और लूत को पुकारकर कहने लगे, “जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं वे कहाँ हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उनसे भोग करें।”

6 तब लूत उनके पास द्वार के बाहर गया, और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा,

7 “हे मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो।

8 सुनो, मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होंने अब तक पुरुष का मुँह नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊँ, और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो: पर इन पुरुषों से कुछ न करो; क्योंकि ये मेरी छत के तले आए हैं।”

9 उन्होंने कहा, “हट जा!” फिर वे कहने लगे, “तू एक परदेशी होकर यहाँ रहने के लिये आया पर अब न्यायी भी बन बैठा है; इसलिए अब हम उनसे भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे।” और वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आए।

10 तब उन अतिथियों ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने पास घर में खींच लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया।

11 और उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अंधा कर दिया, अतः वे द्वार को टटोलते-टटोलते थक गए।

~~कदाचित्~~ ~~कदाचित्~~ ~~कदाचित्~~ ~~कदाचित्~~

12 फिर उन अतिथियों ने लूत से पूछा, “यहाँ तेरा और कौन-कौन हैं? दामाद, बेटे, बेटियाँ, और नगर में तेरा जो कोई हो, उन सभी को लेकर इस स्थान से निकल जा।

\* 19:1 ~~कदाचित्~~ ~~कदाचित्~~: ये वे दो पुरुष हैं जो अब्राहम को यहोवा के पास छोड़कर आए थे।

13 क्योंकि हम यह स्थान नाश करने पर हैं, इसलिए कि इसकी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है; और यहोवा ने हमें इसका सत्यानाश करने के लिये भेज दिया है।”

14 तब लूत ने निकलकर अपने दामादों को, जिनके साथ उसकी बेटियों की सगाई हो गई थी, समझाकर कहा, “उठो, इस स्थान से निकल चलो; क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश करने पर है।” उसके दामाद उसका मजाक उड़ाने लगे। (17:28,29)

15 जब पौ फटने लगी, तब दूतों ने लूत से जल्दी करने को कहा और बोले, “उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहाँ हैं ले जा: नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा।”

16 पर वह विलम्ब करता रहा, इस पर उन पुरुषों ने उसका और उसकी पत्नी, और दोनों बेटियों के हाथ पकड़े; क्योंकि यहोवा की दया उस पर थी: और उसको निकालकर नगर के बाहर कर दिया। (2:7)

17 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उनको बाहर निकाला, तब उसने कहा, “अपना प्राण लेकर भाग जा; पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा।”

18 लूत ने उनसे कहा, “हे प्रभु, ऐसा न कर!”

19 देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है, और तूने इसमें बड़ी कृपा दिखाई, कि मेरे प्राण को बचाया है; पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि कोई विपत्ति मुझ पर आ पड़े, और मैं मर जाऊँ।

20 देख, वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहाँ भाग सकता हूँ, और वह छोटा भी है। मुझे वहीं भाग जाने दे, क्या वह नगर छोटा नहीं है? और मेरा प्राण बच जाएगा।”

21 उसने उससे कहा, “देख, मैंने इस विषय में भी तेरी विनती स्वीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तूने की है, उसको मैं नाश न करूँगा।

22 फुर्ती से वहाँ भाग जा; क्योंकि जब तक तू वहाँ न पहुँचे तब तक मैं कुछ न कर सकूँगा।” इसी कारण उस नगर का नाम पड़ा।

17:28,29

23 लूत के सोअर के निकट पहुँचते ही सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ।

24 तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और गमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई; (17:29)

25 और उन नगरों को और सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत नाश कर दिया।

26 लूत की पत्नी ने जो उसके पीछे थी पीछे मुड़कर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई।

27 भोर को अब्राहम उठकर उस स्थान को गया, जहाँ वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था;

28 और सदोम, और गमोरा, और उस तराई के सारे देश की ओर आँख उठाकर क्या देखा कि उस देश में से धधकती हुई भट्टी का सा धुआँ उठ रहा है।

29 और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिनमें लूत रहता था, उलट-पुलट कर नाश किया, तब लूत को उस घटना से बचा लिया।

17:28,29

30 लूत ने सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था; इसलिए वह और उसकी दोनों बेटियाँ वहाँ एक गुफा में रहने लगे।

31 तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए।

32 इसलिए आ, हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर, उसके साथ सोएँ, जिससे कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें।”

33 अतः उन्होंने उसी दिन-रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई; पर उसने न जाना, कि वह कब लेटी, और कब उठ गई।

34 और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, “देख, कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई; इसलिए आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएँ; तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें।”

35 अतः उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, और छोटी बेटी जाकर उसके पास लेट गई; पर उसको उसके भी सोने और उठने का ज्ञान न था।

36 इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हुईं।

† 19:22 17:28,29: अर्थात् “छोटा स्थान” ‡ 19:29 17:28,29: अब्राहम उठकर देखता है कि जिस नगर के लिए उसने इतनी विनती की उसका क्या हुआ; और वह दूर से उस नगर से उठते धुएँ को देखता है। परमेश्वर ने अब्राहम को याद किया, जो लूत का चाचा था, और शायद उसके मन में उसकी वह विनती रही होगी, जिसके कारण परमेश्वर ने लूत को उस भयानक विनाश से बचा लिया।

37 बड़ी एक पुत्र जनी और उसका नाम मोआब रखा; वह मोआब नामक जाति का जो आज तक है मूलपिता हुआ।

38 और छोटी भी एक पुत्र जनी, और उसका नाम बेनअम्मी रखा; वह अम्मोनवंशियों का जो आज तक है मूलपिता हुआ।

## 20

????????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 फिर अब्राहम वहाँ से निकलकर दक्षिण देश में आकर कादेश और शूर के बीच में ठहरा, और गरार में रहने लगा।

2 और अब्राहम अपनी पत्नी सारा के विषय में कहने लगा, “वह मेरी बहन है,” इसलिए गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजकर सारा को बुलवा लिया।

3 रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर कहा, “सुन, जिस स्त्री को तूने रख लिया है, उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि वह सुहागिन है।”

4 परन्तु अबीमेलेक उसके पास न गया था; इसलिए उसने कहा, “हे प्रभु, क्या तू निर्दोष जाति का भी घात करेगा?”

5 क्या उसी ने स्वयं मुझसे नहीं कहा, ‘वह मेरी बहन है?’ और उस स्त्री ने भी आप कहा, ‘वह मेरा भाई है,’ मैंने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से यह काम किया।”

6 परमेश्वर ने उससे स्वप्न में कहा, “हाँ, मैं भी जानता हूँ कि अपने मन की खराई से तूने यह काम किया है और मैंने तुझे रोक भी रखा कि तू मेरे विरुद्ध पाप न करे; इसी कारण मैंने तुझको उसे छूने नहीं दिया।

7 इसलिए अब उस पुरुष की पत्नी को उसे लौटा दे; क्योंकि **22 222 22\***, और तेरे लिये प्रार्थना करेगा, और तू जीता रहेगा पर यदि तू उसको न लौटाए तो जान रख, कि तू, और तेरे जितने लोग हैं, सब निश्चय मर जाएँगे।”

8 सवेरे अबीमेलेक ने तड़के उठकर अपने सब कर्मचारियों को बुलवाकर ये सब बातें सुनाई; और वे लोग बहुत डर गए।

9 तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलवाकर कहा, “तूने हम से यह क्या किया है? और मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तूने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल

दिया है? तूने मेरे साथ वह काम किया है जो उचित न था।”

10 फिर अबीमेलेक ने अब्राहम से पूछा, “तूने क्या समझकर ऐसा काम किया?”

11 अब्राहम ने कहा, “मैंने यह सोचा था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; इसलिए ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे।

12 इसके अतिरिक्त सचमुच वह मेरी बहन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर वह मेरी पत्नी हो गई।

13 और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैंने उससे कहा, ‘इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि हम दोनों जहाँ-जहाँ जाएँ वहाँ-वहाँ तू मेरे विषय में कहना कि यह मेरा भाई है।’”

14 तब अबीमेलेक ने भेड़-बकरी, गाय-बैल, और दास-दासियाँ लेकर अब्राहम को दीं, और उसकी पत्नी सारा को भी उसे लौटा दिया।

15 और अबीमेलेक ने कहा, “देख, मेरा देश तेरे सामने है; जहाँ तुझे भाए वहाँ रह।”

16 और सारा से उसने कहा, “देख, मैंने तेरे भाई को रूपे के एक हजार टुकड़े दिए हैं। देख, तेरे सारे संगियों के सामने वही तेरी आँखों का परदा बनेगा, और सभी के सामने तू ठीक होगी।”

17 तब **22222222 22 22222 22 2222222222 22†**, और यहोवा ने अबीमेलेक, और उसकी पत्नी, और दासियों को चंगा किया और वे जनने लगीं।

18 क्योंकि यहोवा ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था।

## 21

22222 22 2222

1 यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही **2222 22 22222 22222 2222 2222 2222 2222 22 22222222 2222\***।

2 सारा अब्राहम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उससे ठहराया था, एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

3 अब्राहम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा। (**222222 1:2, 22222 3:34**)

\* **20:7** **22 2222 22**: यहाँ परमेश्वर द्वारा अब्राहम को नबी की उपाधि मिली। नबी परमेश्वर का व्यक्ता होता है जो परमेश्वर की बातों को अधिकार के साथ बोलता है। † **20:17** **22222222 22 222222 22 2222222222 22**: ये पद अबीमेलेक के लिए अब्राहम की मध्यस्थता को बताते हैं और यह कि किस प्रकार वह मरने की कगार पर था। \* **21:1** **2222 22 22222 22222 22222 2222 2222 2222 22 22222222 2222**: परमेश्वर सारा के प्रति अपनी प्रतिज्ञा में विश्वासयोग्य रहा। प्रतिज्ञा के अनुसार इसहाक का जन्म हुआ।





30 उसने कहा, “तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से ले कि मैंने यह कुआँ खोदा है।”

31 उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में शपथ खाई, इसी कारण उसका नाम बेशेबा पडा।

32 जब उन्होंने बेशेबा में परस्पर वाचा बाँधी, तब अबीमेलक और उसका सेनापति पीकोल, उठकर पलिशतियों के देश में लौट गए।

33 फिर अब्राहम ने बेशेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया, और वहाँ यहोवा से जो सनातन परमेश्वर है, प्रार्थना की।

34 अब्राहम पलिशतियों के देश में बहुत दिनों तक परदेशी होकर रहा।

## 22

?????????? ?? ???????????

1 इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, ??????????? ?? ?? ?????? ?????? ??????????? ??\*, “हे अब्राहम!” उसने कहा, “देख, मैं यहाँ हूँ।” (????????? 11:17)

2 उसने कहा, “अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढा।”

3 अतः अब्राहम सवरे तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली; तब निकलकर उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी।

4 तीसरे दिन अब्राहम ने आँखें उठाकर उस स्थान को दूर से देखा।

5 और उसने अपने सेवकों से कहा, “गदहे के पास यहीं ठहरे रहो; यह लडका और मैं वहाँ तक जाकर, और दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे पास लौट आऊँगे।”

6 तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पडे।

7 इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा, “हे मेरे पिता,” उसने कहा, “हे मेरे पुत्र, क्या बात है?” उसने कहा, “देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिये भेड कहाँ है?”

8 अब्राहम ने कहा, “हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड का उपाय आप ही करेगा।” और वे दोनों संग-संग आगे चलते गए।

9 जब वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुँचे; तब अब्राहम ने वहाँ वेदी बनाकर लकड़ी को चुन-चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बाँधकर वेदी पर रखी लकड़ियों के ऊपर रख दिया। (????????? 2:21)

10 फिर अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे।

11 तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकारकर कहा, “हे अब्राहम, हे अब्राहम!” उसने कहा, “देख, मैं यहाँ हूँ।”

12 उसने कहा, “उस लडके पर हाथ मत बढ़ा, और न उसे कुछ कर; क्योंकि तूने जो मुझसे अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोडा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।”

13 तब अब्राहम ने आँखें उठाई, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेढा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाकर उस मेढे को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढाया।

14 अब्राहम ने उस स्थान का नाम ?????????? ?????????? रखा, इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है, “यहोवा के पहाड़ पर प्रदान किया जाएगा।”

15 फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से अब्राहम को पुकारकर कहा,

16 “यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तूने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोडा; (????????? 1:73,74)

17 इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र तट के रेतकणों के समान अनगिनत करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा; (????????? 6:13,14)

18 और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तूने मेरी बात मानी है।”

19 तब अब्राहम अपने सेवकों के पास लौट आया, और वे सब बेशेबा को संग-संग गए; और अब्राहम बेशेबा में रहने लगा।

?????????? ?? ??????????

\* 22:1 ?????????? ?? ?? ?????? ?????? ??????????? ??: परमेश्वर अपनी इच्छा के प्रति अब्राहम की पूरी आज्ञाकारिता की परीक्षा लेता है।

† 22:14 ?????????? ??????: अर्थात् “परमेश्वर प्रदान करेगा।”

20 इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि अब्राहम को यह सन्देश मिला, “मिल्का के तेरे भाई नाहोर से सन्तान उत्पन्न हुई हैं।”

21 मिल्का के पुत्र तो ये हुए, अर्थात् उसका जेटा ऊस, और ऊस का भाई बूज, और कमूएल, जो अराम का पिता हुआ।

22 फिर केसेद, हज़ो, पिल्दाश, यिद्लाप, और बतूएल।

23 इन आठों को मिल्का ने अब्राहम के भाई नाहोर के द्वारा जन्म दिया। और बतूएल से रिबका उत्पन्न हुई।

24 फिर नाहोर के रूमा नामक एक रखैल भी थी; जिससे तेबह, गहम, तहश, और माका, उत्पन्न हुए।

## 23

१११११ ११ ११११११ ११ ११११११ १११११

1 सारा तो एक सौ सताईस वर्ष की आयु को पहुँची; और जब सारा की इतनी आयु हुई;

2 तब वह किर्यतअर्बा में मर गई। यह तो कनान देश में है, और हेब्रोन भी कहलाता है। इसलिए अब्राहम सारा के लिये रोने-पीटने को वहाँ गया।

3 तब अब्राहम शव के पास से उठकर हित्तियों से कहने लगा,

4 “मैं तुम्हारे बीच अतिथि और परदेशी हूँ; मुझे अपने मध्य में कब्रिस्तान के लिये ऐसी भूमि दो जो मेरी निज की हो जाए, कि मैं अपने मृतक को गाड़कर अपनी आँख से दूर करूँ।”

5 हित्तियों ने अब्राहम से कहा,

6 “हे हमारे प्रभु, हमारी सुन; तू तो हमारे बीच में बड़ा प्रधान है। हमारी कब्रों में से जिसको तू चाहे उसमें अपने मृतक को गाड़; हम में से कोई तुझे अपनी कब्र के लेने से न रोकेगा, कि तू अपने मृतक को उसमें गाड़ने न पाए।”

7 तब अब्राहम उठकर खड़ा हुआ, और हित्तियों के सामने, जो उस देश के निवासी थे, दण्डवत् करके कहने लगा,

8 “यदि तुम्हारी यह इच्छा हो कि मैं अपने मृतक को गाड़कर अपनी आँख से दूर करूँ, तो मेरी प्रार्थना है, कि १११११ ११ ११११११ १११११११\* से मेरे लिये विनती करो,

9 कि वह अपनी मकपेलावाली गुफा, जो उसकी भूमि की सीमा पर है; उसका पूरा दाम लेकर मुझे दे दे, कि वह तुम्हारे बीच कब्रिस्तान के लिये मेरी निज भूमि हो जाए।”

\* 23:8 १११११ ११ ११११११ १११११११: अब्राहम अब सोहर के पुत्र एप्रोन से मकपेला की भूमि को खरीदने का विशेष प्रस्ताव रखता है। अब्राहम बड़ी सावधानी के साथ उस व्यक्ति के पास जाता है जिससे वह व्यवहार करना चाहता था।

10 एप्रोन तो हित्तियों के बीच वहाँ बैठा हुआ था, इसलिए जितने हित्ती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते थे, उन सभी के सामने उसने अब्राहम को उत्तर दिया,

11 “हे मेरे प्रभु, ऐसा नहीं, मेरी सुन; वह भूमि मैं तुझे देता हूँ, और उसमें जो गुफा है, वह भी मैं तुझे देता हूँ; अपने जातिभाइयों के सम्मुख मैं उसे तुझको दिए देता हूँ; अतः अपने मृतक को कब्र में रख।”

12 तब अब्राहम ने उस देश के निवासियों के सामने दण्डवत् किया।

13 और उनके सुनते हुए एप्रोन से कहा, “यदि तू ऐसा चाहे, तो मेरी सुन उस भूमि का जो दाम हो, वह मैं देना चाहता हूँ; उसे मुझसे ले ले, तब मैं अपने मुर्दे को वहाँ गाड़ूँगा।”

14 एप्रोन ने अब्राहम को यह उत्तर दिया,

15 “हे मेरे प्रभु, मेरी बात सुन; उस भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल रूपा है; पर मेरे और तेरे बीच में यह क्या है? अपने मुर्दे को कब्र में रख।”

16 अब्राहम ने एप्रोन की मानकर उसको उतना रूपा तौल दिया, जितना उसने हित्तियों के सुनते हुए कहा था, अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल जो व्यापारियों में चलते थे।

17 इस प्रकार एप्रोन की भूमि, जो मग्ने के सम्मुख मकपेला में थी, वह गुफा समेत, और उन सब वृक्षों समेत भी जो उसमें और उसके चारों ओर सीमा पर थे,

18 जितने हित्ती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते थे, उन सभी के सामने अब्राहम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई।

19 इसके पश्चात् अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा को उस मकपेलावाली भूमि की गुफा में जो मग्ने के अर्थात् हेब्रोन के सामने कनान देश में है, मिट्टी दी।

20 इस प्रकार वह भूमि गुफा समेत, जो उसमें थी, हित्तियों की ओर से कब्रिस्तान के लिये अब्राहम के अधिकार में पूरी रीति से आ गई।

## 24

११११११ ११ ११११११ ११ ११११११

1 अब्राहम अब वृद्ध हो गया था और उसकी आयु बहुत थी और यहोवा ने सब बातों में उसको आशीष दी थी।

2 अब्राहम ने १११११ ११ ११११ ११, ११ १११११ ११ ११११११११११ ११ १११११ १११११ ११११११११११ ११

24:2, 24:3, कहा, “अपना हाथ मेरी जाँघ के नीचे रख;

3 और मुझसे आकाश और पृथ्वी के 24:2, 24:3, कि तू मेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से, जिनके बीच मैं रहता हूँ, किसी को न लाएगा।

4 परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिये एक पत्नी ले आएगा।”

5 दास ने उससे कहा, “कदाचित् वह स्त्री इस देश में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहाँ से तू आया है ले जाना पड़ेगा?”

6 अब्राहम ने उससे कहा, “चौकस रह, मेरे पुत्र को वहाँ कभी न ले जाना।”

7 स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा, जिसने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म-भूमि से ले आकर मुझसे शपथ खाकर कहा कि “मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा; वही अपना दूत तेरे आगे-आगे भेजेगा, कि तू मेरे पुत्र के लिये वहाँ से एक स्त्री ले आए।

8 और यदि वह स्त्री तेरे साथ आना न चाहे तब तो तू मेरी इस शपथ से छूट जाएगा; पर मेरे पुत्र को वहाँ न ले जाना।”

9 तब उस दास ने अपने स्वामी अब्राहम की जाँघ के नीचे अपना हाथ रखकर उससे इस विषय की शपथ खाई।

10 तब वह दास अपने स्वामी के ऊँटों में से दस ऊँट छाँटकर उसके सब उत्तम-उत्तम पदार्थों में से कुछ कुछ लेकर चला; और अरमनहरैम में नाहोर के नगर के पास पहुँचा।

11 और उसने ऊँटों को नगर के बाहर एक कुएँ के पास बैठाया। वह संध्या का समय था, जिस समय स्त्रियाँ जल भरने के लिये निकलती हैं।

12 वह कहने लगा, “हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा, आज मेरे कार्य को सिद्ध कर, और मेरे स्वामी अब्राहम पर करुणा कर।

13 देख, मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूँ; और नगरवासियों की बेटियाँ जल भरने के लिये निकली आती हैं

14 इसलिए ऐसा होने दे कि जिस कन्या से मैं कहूँ, ‘अपना घड़ा मेरी ओर झुका, कि मैं पीऊँ,’ और वह कहे, ‘ले, पी ले, बाद में मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी,’ यह

वही हो जिसे तूने अपने दास इसहाक के लिये ठहराया हो; इसी रीति मैं जान लूँगा कि तूने मेरे स्वामी पर करुणा की है।”

15 और ऐसा हुआ कि जब वह कह ही रहा था कि रिबका, जो अब्राहम के भाई नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र, बतूएल की बेटी थी, वह कंधे पर घड़ा लिये हुए आई।

16 वह अति सुन्दर, और कुमारी थी, और किसी पुरुष का मुँह न देखा था। वह कुएँ में सोते के पास उतर गई, और अपना घड़ा भरकर फिर ऊपर आई।

17 तब वह दास उससे भेंट करने को दौड़ा, और कहा, “अपने घड़े में से थोड़ा पानी मुझे पिला दे।”

18 उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, ले, पी ले,” और उसने फुर्ती से घड़ा उतारकर हाथ में लिये-लिये उसको पानी पिला दिया।

19 जब वह उसको पिला चुकी, तब कहा, “मैं तेरे ऊँटों के लिये भी तब तक पानी भर-भर लाऊँगी, जब तक वे पी न चुकें।”

20 तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौद में उण्डेलकर फिर कुएँ पर भरने को दौड़ गई; और उसके सब ऊँटों के लिये पानी भर दिया।

21 और वह पुरुष उसकी ओर चुपचाप अचम्भे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सफल किया है कि नहीं।

22 जब ऊँट पी चुके, तब उस पुरुष ने आधा तोला सोने का एक नत्थ निकालकर उसको दिया, और दस तोले सोने के कंगन उसके हाथों में पहना दिए;

23 और पूछा, “तू किसकी बेटी है? यह मुझ को बता। क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान है?”

24 उसने उत्तर दिया, “मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूँ।”

25 फिर उसने उससे कहा, “हमारे यहाँ पुआल और चारा बहुत है, और टिकने के लिये स्थान भी है।”

26 तब 24:2, 24:3, 24:4, 24:5, 24:6, 24:7, 24:8, 24:9, 24:10, 24:11, 24:12, 24:13, 24:14, 24:15, 24:16, 24:17, 24:18, 24:19, 24:20, 24:21, 24:22, 24:23, 24:24, 24:25, 24:26, 24:27, 24:28, 24:29, 24:30, 24:31, 24:32, 24:33, 24:34, 24:35, 24:36, 24:37, 24:38, 24:39, 24:40, 24:41, 24:42, 24:43, 24:44, 24:45, 24:46, 24:47, 24:48, 24:49, 24:50, 24:51, 24:52, 24:53, 24:54, 24:55, 24:56, 24:57, 24:58, 24:59, 24:60, 24:61, 24:62, 24:63, 24:64, 24:65, 24:66, 24:67, 24:68, 24:69, 24:70, 24:71, 24:72, 24:73, 24:74, 24:75, 24:76, 24:77, 24:78, 24:79, 24:80, 24:81, 24:82, 24:83, 24:84, 24:85, 24:86, 24:87, 24:88, 24:89, 24:90, 24:91, 24:92, 24:93, 24:94, 24:95, 24:96, 24:97, 24:98, 24:99, 24:100, 24:101, 24:102, 24:103, 24:104, 24:105, 24:106, 24:107, 24:108, 24:109, 24:110, 24:111, 24:112, 24:113, 24:114, 24:115, 24:116, 24:117, 24:118, 24:119, 24:120, 24:121, 24:122, 24:123, 24:124, 24:125, 24:126, 24:127, 24:128, 24:129, 24:130, 24:131, 24:132, 24:133, 24:134, 24:135, 24:136, 24:137, 24:138, 24:139, 24:140, 24:141, 24:142, 24:143, 24:144, 24:145, 24:146, 24:147, 24:148, 24:149, 24:150, 24:151, 24:152, 24:153, 24:154, 24:155, 24:156, 24:157, 24:158, 24:159, 24:160, 24:161, 24:162, 24:163, 24:164, 24:165, 24:166, 24:167, 24:168, 24:169, 24:170, 24:171, 24:172, 24:173, 24:174, 24:175, 24:176, 24:177, 24:178, 24:179, 24:180, 24:181, 24:182, 24:183, 24:184, 24:185, 24:186, 24:187, 24:188, 24:189, 24:190, 24:191, 24:192, 24:193, 24:194, 24:195, 24:196, 24:197, 24:198, 24:199, 24:200, 24:201, 24:202, 24:203, 24:204, 24:205, 24:206, 24:207, 24:208, 24:209, 24:210, 24:211, 24:212, 24:213, 24:214, 24:215, 24:216, 24:217, 24:218, 24:219, 24:220, 24:221, 24:222, 24:223, 24:224, 24:225, 24:226, 24:227, 24:228, 24:229, 24:230, 24:231, 24:232, 24:233, 24:234, 24:235, 24:236, 24:237, 24:238, 24:239, 24:240, 24:241, 24:242, 24:243, 24:244, 24:245, 24:246, 24:247, 24:248, 24:249, 24:250, 24:251, 24:252, 24:253, 24:254, 24:255, 24:256, 24:257, 24:258, 24:259, 24:260, 24:261, 24:262, 24:263, 24:264, 24:265, 24:266, 24:267, 24:268, 24:269, 24:270, 24:271, 24:272, 24:273, 24:274, 24:275, 24:276, 24:277, 24:278, 24:279, 24:280, 24:281, 24:282, 24:283, 24:284, 24:285, 24:286, 24:287, 24:288, 24:289, 24:290, 24:291, 24:292, 24:293, 24:294, 24:295, 24:296, 24:297, 24:298, 24:299, 24:300, 24:301, 24:302, 24:303, 24:304, 24:305, 24:306, 24:307, 24:308, 24:309, 24:310, 24:311, 24:312, 24:313, 24:314, 24:315, 24:316, 24:317, 24:318, 24:319, 24:320, 24:321, 24:322, 24:323, 24:324, 24:325, 24:326, 24:327, 24:328, 24:329, 24:330, 24:331, 24:332, 24:333, 24:334, 24:335, 24:336, 24:337, 24:338, 24:339, 24:340, 24:341, 24:342, 24:343, 24:344, 24:345, 24:346, 24:347, 24:348, 24:349, 24:350, 24:351, 24:352, 24:353, 24:354, 24:355, 24:356, 24:357, 24:358, 24:359, 24:360, 24:361, 24:362, 24:363, 24:364, 24:365, 24:366, 24:367, 24:368, 24:369, 24:370, 24:371, 24:372, 24:373, 24:374, 24:375, 24:376, 24:377, 24:378, 24:379, 24:380, 24:381, 24:382, 24:383, 24:384, 24:385, 24:386, 24:387, 24:388, 24:389, 24:390, 24:391, 24:392, 24:393, 24:394, 24:395, 24:396, 24:397, 24:398, 24:399, 24:400, 24:401, 24:402, 24:403, 24:404, 24:405, 24:406, 24:407, 24:408, 24:409, 24:410, 24:411, 24:412, 24:413, 24:414, 24:415, 24:416, 24:417, 24:418, 24:419, 24:420, 24:421, 24:422, 24:423, 24:424, 24:425, 24:426, 24:427, 24:428, 24:429, 24:430, 24:431, 24:432, 24:433, 24:434, 24:435, 24:436, 24:437, 24:438, 24:439, 24:440, 24:441, 24:442, 24:443, 24:444, 24:445, 24:446, 24:447, 24:448, 24:449, 24:450, 24:451, 24:452, 24:453, 24:454, 24:455, 24:456, 24:457, 24:458, 24:459, 24:460, 24:461, 24:462, 24:463, 24:464, 24:465, 24:466, 24:467, 24:468, 24:469, 24:470, 24:471, 24:472, 24:473, 24:474, 24:475, 24:476, 24:477, 24:478, 24:479, 24:480, 24:481, 24:482, 24:483, 24:484, 24:485, 24:486, 24:487, 24:488, 24:489, 24:490, 24:491, 24:492, 24:493, 24:494, 24:495, 24:496, 24:497, 24:498, 24:499, 24:500, 24:501, 24:502, 24:503, 24:504, 24:505, 24:506, 24:507, 24:508, 24:509, 24:510, 24:511, 24:512, 24:513, 24:514, 24:515, 24:516, 24:517, 24:518, 24:519, 24:520, 24:521, 24:522, 24:523, 24:524, 24:525, 24:526, 24:527, 24:528, 24:529, 24:530, 24:531, 24:532, 24:533, 24:534, 24:535, 24:536, 24:537, 24:538, 24:539, 24:540, 24:541, 24:542, 24:543, 24:544, 24:545, 24:546, 24:547, 24:548, 24:549, 24:550, 24:551, 24:552, 24:553, 24:554, 24:555, 24:556, 24:557, 24:558, 24:559, 24:560, 24:561, 24:562, 24:563, 24:564, 24:565, 24:566, 24:567, 24:568, 24:569, 24:570, 24:571, 24:572, 24:573, 24:574, 24:575, 24:576, 24:577, 24:578, 24:579, 24:580, 24:581, 24:582, 24:583, 24:584, 24:585, 24:586, 24:587, 24:588, 24:589, 24:590, 24:591, 24:592, 24:593, 24:594, 24:595, 24:596, 24:597, 24:598, 24:599, 24:600, 24:601, 24:602, 24:603, 24:604, 24:605, 24:606, 24:607, 24:608, 24:609, 24:610, 24:611, 24:612, 24:613, 24:614, 24:615, 24:616, 24:617, 24:618, 24:619, 24:620, 24:621, 24:622, 24:623, 24:624, 24:625, 24:626, 24:627, 24:628, 24:629, 24:630, 24:631, 24:632, 24:633, 24:634, 24:635, 24:636, 24:637, 24:638, 24:639, 24:640, 24:641, 24:642, 24:643, 24:644, 24:645, 24:646, 24:647, 24:648, 24:649, 24:650, 24:651, 24:652, 24:653, 24:654, 24:655, 24:656, 24:657, 24:658, 24:659, 24:660, 24:661, 24:662, 24:663, 24:664, 24:665, 24:666, 24:667, 24:668, 24:669, 24:670, 24:671, 24:672, 24:673, 24:674, 24:675, 24:676, 24:677, 24:678, 24:679, 24:680, 24:681, 24:682, 24:683, 24:684, 24:685, 24:686, 24:687, 24:688, 24:689, 24:690, 24:691, 24:692, 24:693, 24:694, 24:695, 24:696, 24:697, 24:698, 24:699, 24:700, 24:701, 24:702, 24:703, 24:704, 24:705, 24:706, 24:707, 24:708, 24:709, 24:710, 24:711, 24:712, 24:713, 24:714, 24:715, 24:716, 24:717, 24:718, 24:719, 24:720, 24:721, 24:722, 24:723, 24:724, 24:725, 24:726, 24:727, 24:728, 24:729, 24:730, 24:731, 24:732, 24:733, 24:734, 24:735, 24:736, 24:737, 24:738, 24:739, 24:740, 24:741, 24:742, 24:743, 24:744, 24:745, 24:746, 24:747, 24:748, 24:749, 24:750, 24:751, 24:752, 24:753, 24:754, 24:755, 24:756, 24:757, 24:758, 24:759, 24:760, 24:761, 24:762, 24:763, 24:764, 24:765, 24:766, 24:767, 24:768, 24:769, 24:770, 24:771, 24:772, 24:773, 24:774, 24:775, 24:776, 24:777, 24:778, 24:779, 24:780, 24:781, 24:782, 24:783, 24:784, 24:785, 24:786, 24:787, 24:788, 24:789, 24:790, 24:791, 24:792, 24:793, 24:794, 24:795, 24:796, 24:797, 24:798, 24:799, 24:800, 24:801, 24:802, 24:803, 24:804, 24:805, 24:806, 24:807, 24:808, 24:809, 24:810, 24:811, 24:812, 24:813, 24:814, 24:815, 24:816, 24:817, 24:818, 24:819, 24:820, 24:821, 24:822, 24:823, 24:824, 24:825, 24:826, 24:827, 24:828, 24:829, 24:830, 24:831, 24:832, 24:833, 24:834, 24:835, 24:836, 24:837, 24:838, 24:839, 24:840, 24:841, 24:842, 24:843, 24:844, 24:845, 24:846, 24:847, 24:848, 24:849, 24:850, 24:851, 24:852, 24:853, 24:854, 24:855, 24:856, 24:857, 24:858, 24:859, 24:860, 24:861, 24:862, 24:863, 24:864, 24:865, 24:866, 24:867, 24:868, 24:869, 24:870, 24:871, 24:872, 24:873, 24:874, 24:875, 24:876, 24:877, 24:878, 24:879, 24:880, 24:881, 24:882, 24:883, 24:884, 24:885, 24:886, 24:887, 24:888, 24:889, 24:890, 24:891, 24:892, 24:893, 24:894, 24:895, 24:896, 24:897, 24:898, 24:899, 24:900, 24:901, 24:902, 24:903, 24:904, 24:905, 24:906, 24:907, 24:908, 24:909, 24:910, 24:911, 24:912, 24:913, 24:914, 24:915, 24:916, 24:917, 24:918, 24:919, 24:920, 24:921, 24:922, 24:923, 24:924, 24:925, 24:926, 24:927, 24:928, 24:929, 24:930, 24:931, 24:932, 24:933, 24:934, 24:935, 24:936, 24:937, 24:938, 24:939, 24:940, 24:941, 24:942, 24:943, 24:944, 24:945, 24:946, 24:947, 24:948, 24:949, 24:950, 24:951, 24:952, 24:953, 24:954, 24:955, 24:956, 24:957, 24:958, 24:959, 24:960, 24:961, 24:962, 24:963, 24:964, 24:965, 24:966, 24:967, 24:968, 24:969, 24:970, 24:971, 24:972, 24:973, 24:974, 24:975, 24:976, 24:977, 24:978, 24:979, 24:980, 24:981, 24:982, 24:983, 24:984, 24:985, 24:986, 24:987, 24:988, 24:989, 24:990, 24:991, 24:992, 24:993, 24:994, 24:995, 24:996, 24:997, 24:998, 24:999, 25:1, 25:2, 25:3, 25:4, 25:5, 25:6, 25:7, 25:8, 25:9, 25:10, 25:11, 25:12, 25:13, 25:14, 25:15, 25:16, 25:17, 25:18, 25:19, 25:20, 25:21, 25:22, 25:23, 25:24, 25:25, 25:26, 25:27, 25:28, 25:29, 25:30, 25:31, 25:32, 25:33, 25:34, 25:35, 25:36, 25:37, 25:38, 25:39, 25:40, 25:41, 25:42, 25:43, 25:44, 25:45, 25:46, 25:47, 25:48, 25:49, 25:50, 25:51, 25:52, 25:53, 25:54, 25:55, 25:56, 25:57, 25:58, 25:59, 25:60, 25:61, 25:62, 25:63, 25:64, 25:65, 25:66, 25:67, 25:68, 25:69, 25:70, 25:71, 25:72, 25:73, 25:74, 25:75, 25:76, 25:77, 25:78, 25:79, 25:80, 25:81, 25:82, 25:83, 25:84, 25:85, 25:86, 25:87, 25:88, 25:89, 25:90, 25:91, 25:92, 25:93, 25:94, 25:95, 25:96, 25:97, 25:98, 25:99, 25:100, 25:101, 25:102, 25:103, 25:104, 25:105, 25:106, 25:107, 25:108, 25:109, 25:110, 25:111, 25:112, 25:113, 25:114, 25:115, 25:116, 25:117, 25:118, 25:119, 25:120, 25:121, 25:122, 25:123, 25:124, 25:125, 25:126, 25:127, 25:128, 25:129, 25:130, 25:131, 25:132, 25:133, 25:134, 25:135, 25:136, 25:137, 25:138, 25:139, 25:140, 25:141, 25:142, 25:143, 25:144, 25:145, 25:146, 25:147, 25:148, 25:149, 25:150, 25:151, 25:152, 25:153, 25:154, 25:155, 25:156, 25:157, 25:158, 25:159, 25:160, 25:161, 25:162, 25:163, 25:164, 25:165, 25:166, 25:167, 25:168, 25:169, 25:170, 25:171, 25:172, 25:173, 25:174, 25:175, 25:176, 25:177, 25:178, 25:179, 25:180, 25:181, 25:182, 25:183, 25:184, 25:185, 25:186, 25:187, 25:188, 25:189, 25:190, 25:191, 25:192, 25:193, 25:194, 25:195, 25:196, 25:197, 25:198, 25:199, 25:200, 25:201, 25:202, 25:203, 25:204, 25:205, 25:206, 25:207, 25:208, 25:209, 25:210, 25:211, 25:212, 25:213, 25:214, 25:215, 25:216, 25:217, 25:218, 25:219, 25:220, 25:221, 25:222, 25:223, 25:224, 25:225, 25:226, 25:227, 25:228, 25:229, 25:230, 25:231, 25:232, 25:233, 25:234, 25:235, 25:236, 25:237, 25:238, 25:239, 25:240, 25:241, 25:242, 25:243, 25:244, 25:245, 25:246, 25:247, 25:248, 25:249, 25:250, 25:251, 25:252, 25:253, 25:254, 25:255, 25:256, 25:257, 25:258, 25:259, 25:260, 25:261, 25:262, 25:263, 25:264, 25:265, 25:266, 25:267, 25:268, 25:269, 25:270, 25:271, 25:272, 25:273, 25:274, 25:275, 25:276, 25:277, 25:278, 25:279, 25:280, 25:281, 25:282, 2

28 तब उस कन्या ने दौड़कर अपनी माता को इस घटना का सारा हाल बता दिया।

29 तब लाबान जो रिबका का भाई था, बाहर कुएँ के निकट उस पुरुष के पास दौड़ा गया।

30 और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नत्थ और अपनी बहन रिबका के हाथों में वे कंगन भी देखे, और उसकी यह बात भी सुनी कि उस पुरुष ने मुझसे ऐसी बातें कहीं; तब वह उस पुरुष के पास गया; और क्या देखा, कि वह सोते के निकट ऊँटों के पास खड़ा है।

31 उसने कहा, “हे यहोवा की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ तू क्यों बाहर खड़ा है? मैंने घर को, और ऊँटों के लिये भी स्थान तैयार किया है।”

32 इस पर वह पुरुष घर में गया; और लाबान ने ऊँटों की काठियाँ खोलकर पुआल और चारा दिया; और उसके और उसके साथियों के पाँव धोने को जल दिया।

33 तब अब्राहम के दास के आगे जलपान के लिये कुछ रखा गया; पर उसने कहा “मैं जब तक अपना प्रयोजन न कह दूँ, तब तक कुछ न खाऊँगा।” लाबान ने कहा, “कह दे।”

34 तब उसने कहा, “मैं तो अब्राहम का दास हूँ।

35 यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दी है; इसलिए वह महान पुरुष हो गया है; और उसने उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-रूपा, दास-दासियाँ, ऊँट और गदहे दिए हैं।

36 और मेरे स्वामी की पत्नी सारा के बुढ़ापे में उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ है; और उस पुत्र को अब्राहम ने अपना सब कुछ दे दिया है।

37 मेरे स्वामी ने मुझे यह शपथ खिलाई है, कि मैं उसके पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिनके देश में वह रहता है, कोई स्त्री न ले आऊँगा।

38 मैं उसके पिता के घर, और कुल के लोगों के पास जाकर उसके पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊँगा।”

39 तब मैंने अपने स्वामी से कहा, ‘कदाचित् वह स्त्री मेरे पीछे न आए।’

40 तब उसने मुझसे कहा, ‘यहोवा, जिसके सामने मैं चलता आया हूँ, वह तेरे संग अपने दूत को भेजकर तेरी यात्रा को सफल करेगा; और तू मेरे कुल, और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा।’

41 तू तब ही मेरी इस शपथ से छूटेगा, जब तू मेरे कुल के लोगों के पास पहुँचेगा; और यदि वे तुझे कोई स्त्री न दें, तो तू मेरी शपथ से छूटेगा।’

42 इसलिए मैं आज उस कुएँ के निकट आकर कहने लगा, ‘हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा, यदि तू मेरी इस यात्रा को सफल करता हो;

43 तो देख मैं जल के इस कुएँ के निकट खड़ा हूँ; और ऐसा हो, कि जो कुमारी जल भरने के लिये आए, और मैं उससे कहूँ, “अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला,”

44 और वह मुझसे कहे, “पी ले, और मैं तेरे ऊँटों के पीने के लिये भी पानी भर दूँगी,” वह वही स्त्री हो जिसको तूने मेरे स्वामी के पुत्र के लिये ठहराया है।’

45 मैं मन ही मन यह कह ही रहा था, कि देख रिबका कंधे पर घड़ा लिये हुए निकल आई; फिर वह सोते के पास उतरकर भरने लगी। मैंने उससे कहा, ‘मुझे पानी पिला दे।’

46 और उसने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतार के कहा, ‘ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी;’ इस प्रकार मैंने पी लिया, और उसने ऊँटों को भी पिला दिया।

47 तब मैंने उससे पूछा, ‘तू किसकी बेटी है?’ और उसने कहा, ‘मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूँ;’ तब मैंने उसकी नाक में वह नत्थ, और उसके हाथों में वे कंगन पहना दिए।

48 फिर मैंने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् किया, और अपने स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा, क्योंकि उसने मुझे ठीक मार्ग से पहुँचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उसके कुटुम्बी की पुत्री को ले जाऊँ।

49 इसलिए अब, यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझसे कहो; और यदि नहीं चाहते हो; तो भी मुझसे कह दो; ताकि मैं दाहिनी ओर, या बाईं ओर फिर जाऊँ।”

50 तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, “यह बात यहोवा की ओर से हुई है; इसलिए हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा।

51 देख, रिबका तेरे सामने है, उसको ले जा, और वह यहोवा के वचन के अनुसार, तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए।”

52 उनकी यह बात सुनकर, अब्राहम के दास ने भूमि पर गिरकर यहोवा को दण्डवत् किया।

53 फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने, और वस्त्र निकालकर रिबका को दिए; और उसके भाई और माता को भी उसने अनमोल-अनमोल वस्तुएँ दीं।

54 तब उसने अपने संगी जनों समेत भोजन किया, और रात वहीं बिताई। उसने तड़के उठकर कहा, “मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये विदा करो।”

55 रिबका के भाई और माता ने कहा, “कन्या को हमारे पास कुछ दिन, अर्थात् कम से कम दस दिन रहने दे; फिर उसके पश्चात् वह चली जाएगी।”

56 उसने उनसे कहा, “यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सफल किया है; इसलिए तुम मुझे मत रोको अब मुझे विदा कर दो, कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊँ।”

57 उन्होंने कहा, “हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं, और देखेंगे, कि वह क्या कहती है।”

58 और उन्होंने रिबका को बुलाकर उससे पूछा, “क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी?” उसने कहा, “हाँ मैं जाऊँगी।”

59 तब उन्होंने अपनी बहन रिबका, और उसकी दाई और अब्राहम के दास, और उसके साथी सभी को विदा किया।

60 और उन्होंने रिबका को आशीर्वाद देकर कहा, “हे हमारी बहन, तू हजारों लाखों की आदिमाता हो, और तेरा वंश अपने बैरियों के नगरों का अधिकारी हो।”

61 तब रिबका अपनी सहेलियों समेत चली; और ऊँट पर चढ़कर उस पुरुष के पीछे हो ली। इस प्रकार वह दास रिबका को साथ लेकर चल दिया।

62 इसहाक जो दक्षिण देश में रहता था, लहैरोई नामक कुएँ से होकर चला आता था।

63 साँझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था; और उसने आँखें उठाकर क्या देखा, कि ऊँट चले आ रहे हैं।

64 रिबका ने भी आँखें उठाकर इसहाक को देखा, और देखते ही ऊँट पर से उतर पड़ी।

65 तब उसने दास से पूछा, “जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने को चला आता है, वह कौन है?” दास ने कहा, “वह तो मेरा स्वामी है।” तब रिबका ने घूँघट लेकर अपने मुँह को ढाँप लिया।

66 दास ने इसहाक से अपने साथ हुई घटना का वर्णन किया।

67 तब इसहाक रिबका को अपनी माता सारा के तम्बू में ले आया, और उसको ब्याह कर उससे प्रेम किया। इस प्रकार इसहाक को माता की मृत्यु के पश्चात् शान्ति प्राप्त हुई।

## 25

उत्पत्ति 25:1-17

1 तब अब्राहम ने एक पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था।

2 उससे जिम्नान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक, और शूह उत्पन्न हुए।

3 योक्षान से शेबा और ददान उत्पन्न हुए; और ददान के वंश में अश्शूरी, लतूशी, और लुम्मी लोग हुए।

4 मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा, और एल्दा हुए, ये सब कतूरा की सन्तान हुए।

5 उत्पत्ति 25:5-17

6 पर अपनी रखैलियों के पुत्रों को, कुछ कुछ देकर अपने जीते जी अपने पुत्र इसहाक के पास से पूर्व देश में भेज दिया।

उत्पत्ति 25:18-22

7 अब्राहम की सारी आयु एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई।

8 अब्राहम का दीर्घायु होने के कारण अर्थात् पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया; और वह अपने लोगों में जा मिला।

9 उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने, हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की मग्ने के सम्मुखवाली भूमि में, जो मकपेला की गुफा थी, उसमें उसको मिट्टी दी;

10 अर्थात् जो भूमि अब्राहम ने हित्तियों से मोल ली थी; उसी में अब्राहम, और उसकी पत्नी सारा, दोनों को मिट्टी दी गई।

11 अब्राहम के मरने के पश्चात् उत्पत्ति 25:18-22

उत्पत्ति 25:23-28

12 अब्राहम का पुत्र इश्माएल जो सारा की मिस्री दासी हागार से उत्पन्न हुआ था, उसकी यह वंशावली है।

13 इश्माएल के पुत्रों के नाम और वंशावली यह है: अर्थात् इश्माएल का जेटा पुत्र नबायोत, फिर केदार, अदबएल, मिबसाम,

14 मिश्मा, दूमा, मस्सा,

15 हदद, तेमा, यतूर, नापीश, और केदमा।

16 इश्माएल के पुत्र ये ही हुए, और इन्हीं के नामों के अनुसार इनके गाँवों, और छावनियों के नाम भी पड़े; और ये ही बारह अपने-अपने कुल के प्रधान हुए।

17 इश्माएल की सारी आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई; तब उसके प्राण छूट गए, और वह अपने लोगों में जा मिला।

\* 25:5 उत्पत्ति 25:5-17: अब्राहम ने इसहाक को अपना वारिस बनाया (उत्प. 24:36)। अपने जीते जी उसने अपनी रखैलियों के पुत्रों को कुछ कुछ भाग देकर पूर्व देश की ओर भेज दिया। † 25:11 उत्पत्ति 25:11-17: यह पद बताता है कि परमेश्वर की वह आशीष जिसे अब्राहम ने अपनी मृत्यु तक पाया था, अब उसके पुत्र इसहाक को प्राप्त हुई हैं जो लहैरोई में रहता है।

18 और उसके वंश हवीला से शूर तक, जो मिस्र के सम्मुख अशूर के मार्ग में है, बस गए; और उनका भाग उनके सब भाई-बन्धुओं के सम्मुख पड़ा।

21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

19 अब्राहम के पुत्र इसहाक की वंशावली यह है: अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ;

20 और इसहाक ने चालीस वर्ष का होकर रिबका को, जो पद्मनराम के वासी, अरामी बतूएल की बेटी, और अरामी लावान की बहन थी, ब्याह लिया।

21 इसहाक की पत्नी तो बाँझ थी, इसलिए उसने उसके निमित्त यहोवा से विनती की; और यहोवा ने उसकी विनती सुनी, इस प्रकार उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई।

22 लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपटकर 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100। तब उसने कहा, “मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं कैसे जीवित रहूँगी?” और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई।

23 तब यहोवा ने उससे कहा, “तेरे गर्भ में दो जातियाँ हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग-अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा।”

24 जब उसके पुत्र उत्पन्न होने का समय आया, तब क्या प्रगट हुआ, कि उसके गर्भ में जुड़वे बालक हैं।

25 पहला जो उत्पन्न हुआ वह लाल निकला, और उसका सारा शरीर कम्बल के समान रोममय था; इसलिए उसका नाम एसाव रखा गया।

26 पीछे उसका भाई अपने हाथ से एसाव की एडी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ; और उसका नाम याकूब रखा गया। जब रिबका ने उनको जन्म दिया तब इसहाक साठ वर्ष का था।

27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

27 फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव तो वनवासी होकर चतुर शिकार खेलनेवाला हो गया, पर याकूब सीधा मनुष्य था, और तम्बुओं में रहा करता था।

28 इसहाक एसाव के अहेर का माँस खाया करता था, इसलिए वह उससे प्रीति रखता था; पर रिबका याकूब से प्रीति रखती थी।

29 एक दिन याकूब भोजन के लिये कुछ दाल पका रहा था; और एसाव मैदान से थका हुआ आया।

30 तब एसाव ने याकूब से कहा, “वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला, क्योंकि मैं थका हूँ।” इसी कारण उसका नाम एदोम भी पड़ा।

31 याकूब ने कहा, “अपना 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 आज मेरे हाथ बेच दे।”

32 एसाव ने कहा, “देख, मैं तो अभी मरने पर हूँ इसलिए पहलौटे के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा?”

33 याकूब ने कहा, “मुझसे अभी शपथ खा,” अतः उसने उससे शपथ खाई, और अपना पहलौटे का अधिकार याकूब के हाथ बेच डाला।

34 इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी; और उसने खाया पिया, तब उठकर चला गया। इस प्रकार एसाव ने अपना पहलौटे का अधिकार तुच्छ जाना।

## 26

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 उस देश में अकाल पड़ा, वह उस पहले अकाल से अलग था जो अब्राहम के दिनों में पड़ा था। इसलिए इसहाक गरार को पलिशतियों के राजा अबीमेलेक के पास गया।

2 वहाँ 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100\* कहा, “मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊँ उसी में रह।

3 तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूँगा, और तुझे आशीष दूँगा; और ये सब देश मैं तुझको, और तेरे वंश को दूँगा; और जो शपथ मैंने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूँगा।

4 और मैं तेरे वंश को आकाश के तारुगण के समान करूँगा; और मैं तेरे वंश को ये सब देश दूँगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी। (27:15:5)

5 क्योंकि अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैंने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया।”

6 इसलिए इसहाक गरार में रह गया।

‡ 25:22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: रिबका के गर्भ में दो बेटे थे, जो दो जातियों के मूलपिता होंगे, और जिनकी प्रवृत्ति और गंतव्य अलग-अलग होंगे। प्रकृति का क्रम उलट जाएगा, जो बड़ा है वह छोटे की सेवा करेगा। गर्भ में उनका संघर्ष उनके भविष्य के इतिहास की भूमिका थी। § 25:31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: याकूब पहलौटे के अधिकार को खरीदने के लिए तैयार था, क्योंकि वह सबसे शान्तिपूर्ण ऐसा तरीका था जिससे वह उस श्रेष्ठता को पा सकता था जो उसके लिए ठहराई गई थी। इसलिए उसने अपने इस प्रस्ताव में सावधानी और बुद्धिमानी से काम लिया। \* 26:2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: इसहाक अब उत्तराधिकारी था और इस प्रकार प्रतिज्ञा का वारिस भी था। अतः परमेश्वर उसके साथ बातचीत करता है, और उस कठिन परिस्थिति में उसके साथ रहने की प्रतिज्ञा करता है।

26:7-12

7 जब उस स्थान के लोगों ने उसकी पत्नी के विषय में पूछा, तब उसने यह सोचकर कि यदि मैं उसको अपनी पत्नी कहूँ, तो यहाँ के लोग रिबका के कारण 26:7-12 मुझ को मार डालेंगे, उत्तर दिया, “वह तो मेरी बहन है।”

8 जब उसको वहाँ रहते बहुत दिन बीत गए, तब एक दिन पलिशतियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झाँककर क्या देखा कि इसहाक अपनी पत्नी रिबका के साथ क्रीडा कर रहा है।

9 तब अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवाकर कहा, “वह तो निश्चय तेरी पत्नी है; फिर तूने क्यों उसको अपनी बहन कहा?” इसहाक ने उत्तर दिया, “मैंने सोचा था, कि ऐसा न हो कि उसके कारण मेरी मृत्यु हो।”

10 अबीमेलेक ने कहा, “तूने हम से यह क्या किया? ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी पत्नी के साथ सहज से कुकर्म कर सकता, और तू हमको पाप में फँसाता।”

11 इसलिए अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी, “जो कोई उस पुरुष को या उस स्त्री को छूएगा, वह निश्चय मार डाला जाएगा।”

26:13-15

12 फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में 26:13-15; और यहोवा ने उसको आशीष दी,

13 और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहाँ तक कि वह बहुत धनी पुरुष हो गया।

14 जब उसके भेड़-बकरी, गाय-बैल, और बहुत से दास-दासियाँ हुई, तब पलिशती उससे डाह करने लगे।

26:16-20

15 इसलिए जितने कुओं को उसके पिता अब्राहम के दासों ने अब्राहम के जीते जी खोदा था, उनको पलिशतियों ने मिट्टी से भर दिया।

16 तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, “हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।”

17 अतः इसहाक वहाँ से चला गया, और गरार की घाटी में अपना तम्बू खड़ा करके वहाँ रहने लगा।

18 तब जो कुएँ उसके पिता अब्राहम के दिनों में खोदे गए थे, और अब्राहम के मरने के पीछे पलिशतियों ने भर दिए थे, उनको इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे।

19 फिर इसहाक के दासों को घाटी में खोदते-खोदते बहते जल का एक सोता मिला।

20 तब गरार के चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा, “यह जल हमारा है।” इसलिए उसने उस कुएँ का नाम एसेक रखा; क्योंकि वे उससे झगड़े थे।

21 फिर उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा; और उन्होंने उसके लिये भी झगड़ा किया, इसलिए उसने उसका नाम सिल्ना रखा।

22 तब उसने वहाँ से निकलकर एक और कुआँ खुदवाया; और उसके लिये उन्होंने झगड़ा न किया; इसलिए उसने उसका नाम यह कहकर रहोबोत रखा, “अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूले-फलेंगे।”

26:23-25

23 वहाँ से वह बेशेबा को गया।

24 और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, “मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूँगा, और तेरा वंश बढ़ाऊँगा।”

25 तब उसने वहाँ एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहाँ इसहाक के दासों ने एक कुआँ खोदा।

26:26-28

26 तब अबीमेलेक अपने सलाहकार अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया।

27 इसहाक ने उनसे कहा, “तुम ने मुझसे बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था, अब मेरे पास क्यों आए हो?”

28 उन्होंने कहा, “हमने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है; इसलिए हमने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, अतः हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएँ;

29 कि जैसे हमने तुझे नहीं छुआ, वरन् तेरे साथ केवल भलाई ही की है, और तुझको कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा।”

30 तब उसने उनको भोज दिया, और उन्होंने खाया-पिया।

† 26:7-12: इसहाक नाटक करता है कि रिबका उसकी बहन है, क्योंकि उस स्थान के लोग उसकी सुन्दरता से मोहित थे। इसलिए उसे लगता है कि यदि उसने यह बताया कि वह उसकी पत्नी है तो उसकी जान को खतरा है। ‡ 26:12-15: सौ गुणा दुर्लभ था और केवल अति बहुतायत की उपज की स्थिति में ही इसे देखा जा सकता था। यहोवा ने “इसहाक को आशीष दी”। पराएँ देशवासी की भेड़-बकरियों, गाय-बैलों के झुण्ड और दास दासियों में वृद्धि को देखकर वहाँ के निवासी उससे डाह करने लगे।



31 सवेरे उन सभी ने तड़के उठकर आपस में शपथ खाई; तब इसहाक ने उनको विदा किया, और वे कुशल क्षेम से उसके पास से चले गए।

32 उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कुएँ का वृत्तान्त सुनाकर कहा, “हमको जल का एक सोता मिला है।”

33 तब उसने उसका नाम शिबा रखा; इसी कारण उस नगर का नाम आज तक बेशेबा पड़ा है।

□□□□ □□ □□□□□□□□

34 जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उसने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत, और हित्ती एलोन की बेटी बासमत को व्याह लिया;

35 और इन स्त्रियों के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ।

## 27

□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□

1 जब इसहाक बूढ़ा हो गया, और उसकी आँखें ऐसी धुंधली पड़ गईं कि उसको सूझता न था, तब उसने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा, “हे मेरे पुत्र,” उसने कहा, “क्या आज्ञा।”

2 उसने कहा, “सुन, मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ, और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा

3 इसलिए अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिये अहेर कर ले आ।

4 तब मेरी रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना, कि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी भरकर आशीर्वाद दूँ।”

5 तब एसाव अहेर करने को मैदान में गया। जब इसहाक एसाव से यह बात कह रहा था, तब □□□□□□\* सुन रही थी।

□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□

6 इसलिए उसने अपने पुत्र याकूब से कहा, “सुन, मैंने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना है,

7 ‘तू मेरे लिये अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहले आशीर्वाद दूँ।’

8 इसलिए अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और यह आज्ञा मान,

9 कि बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे-अच्छे बच्चे ले आ; और मैं तेरे पिता के लिये उसकी रूचि के अनुसार उनके माँस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊँगी।

10 तब तू उसको अपने पिता के पास ले जाना, कि वह उसे खाकर मरने से पहले तुझे आशीर्वाद दे।”

11 याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा, “सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरुष है, और मैं रोमहीन पुरुष हूँ।

12 कदाचित् मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, तो मैं उसकी दृष्टि में ठग ठहरूँगा; और आशीष के बदले श्राप ही कमाऊँगा।”

13 उसकी माता ने उससे कहा, “हे मेरे, पुत्र, श्राप तुझ पर नहीं मुझी पर पड़े, तू केवल मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे पास ले आ।”

14 तब याकूब जाकर उनको अपनी माता के पास ले आया, और माता ने उसके पिता की रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दिया।

15 तब रिबका ने अपने पहलौटे पुत्र एसाव के सुन्दर वस्त्र, जो उसके पास घर में थे, लेकर अपने छोटे पुत्र याकूब को पहना दिए।

16 और बकरियों के बच्चों की खालों को उसके हाथों में और उसके चिकने गले में लपेट दिया।

17 और वह स्वादिष्ट भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दे दी।

18 तब वह अपने पिता के पास गया, और कहा, “हे मेरे पिता,” उसने कहा, “क्या बात है? हे मेरे पुत्र, तू कौन है?”

19 याकूब ने अपने पिता से कहा, “मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूँ। मैंने तेरी आज्ञा के अनुसार किया है; इसलिए उठ और बैठकर मेरे अहेर के माँस में से खा, कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे।”

20 इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, “हे मेरे पुत्र, क्या कारण है कि वह तुझे इतनी जल्दी मिल गया?” उसने यह उत्तर दिया, “तेरे परमेश्वर यहोवा ने उसको मेरे सामने कर दिया।”

21 फिर इसहाक ने याकूब से कहा, “हे मेरे पुत्र, निकट आ, मैं तुझे टटोलकर जानूँ, कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है या नहीं।”

22 तब याकूब अपने पिता इसहाक के निकट गया, और उसने उसको टटोलकर कहा, “बोल तो याकूब का सा है, पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते हैं।”

23 और उसने उसको नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई के से रोंआर थे। अतः उसने उसको

\* 27:5 □□□□□: वह एसाव की वजाय याकूब को आशीषें दिलवाने की योजना बनाती है। याकूब के लिए उन आशीषों को प्राप्त करने के लिए जिन्हें उसने अपने मन में बैठा रखा था, वह भावनावश यह कदम उठाने को मजबूर हो जाती है, बिना कुछ सोचे या समझे कि जो वह कर रही है सही है या नहीं।



मैं तुझे वहाँ से बुलवा भेजूंगी। ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में मुझे तुम दोनों से वंचित होना पड़े?”

46 फिर रिबका ने इसहाक से कहा, “हिती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूँ; इसलिए यदि ऐसी हिती लड़कियों में से, जैसी इस देश की लड़कियाँ हैं, याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले, तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा?”

## 28

28:1-22

1 तब इसहाक ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया, और आज्ञा दी, “तू किसी कनानी लड़की को न ब्याह लेना।

2 पद्मनराम में अपने नाना बतूएल के घर जाकर वहाँ अपने मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना।

3 सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुझे आशीष दे, और फलवन्त करके बढ़ाए, और तू राज्य-राज्य की मण्डली का मूल हो।

4 वह तुझे और तेरे वंश को भी अब्राहम की सी आशीष दे, कि तू यह देश जिसमें तू परदेशी होकर रहता है, और जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था, उसका अधिकारी हो जाए।”

5 तब इसहाक ने याकूब को विदा किया, और वह पद्मनराम को अरामी बतूएल के पुत्र लाबान के पास चला, जो याकूब और एसाव की माता रिबका का भाई था।

28:23-32

6 जब एसाव को पता चला कि इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देकर पद्मनराम भेज दिया, कि वह वहीं से पत्नी लाए, और उसको आशीर्वाद देने के समय यह आज्ञा भी दी, “तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना,”

7 और याकूब माता-पिता की मानकर पद्मनराम को चल दिया।

8 तब एसाव यह सब देखकर और यह भी सोचकर कि कनानी लड़कियाँ मेरे पिता इसहाक को बुरी लगती हैं,

9 अब्राहम के पुत्र इश्माएल के पास गया, और इश्माएल की बेटी महलत को, जो नबायोत की बहन थी, ब्याह कर अपनी पत्नियों में मिला लिया।

28:33-42

\* 28:18 28:18-22: वह खम्भा उस घटना का स्मारक था तेल डालना, परमेश्वर के लिए पवित्र करने की क्रिया थी जो वहाँ प्रगट हुआ था। उसने उस स्थान का नाम बेटेल रखा, जिसका अर्थ है “परमेश्वर का घर”। † 28:19 28:19-22: अर्थात् “परमेश्वर का घर” ‡ 28:20 28:20-22: यह कोई शर्त नहीं थी जिसके आधार पर याकूब परमेश्वर को ग्रहण करेगा। यह केवल एक पुकार थी, ईश्वरीय आश्वासन को प्राप्त करने के प्रति धन्यवाद, “मैं तेरे संग रहूँगा”।

10 याकूब बेशेबा से निकलकर हारान की ओर चला।

11 और उसने किसी स्थान में पहुँचकर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; इसलिए उसने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना तकिया बनाकर रखा, और उसी स्थान में सो गया।

12 तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा है; और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते-उतरते हैं।

13 और यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है, “मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ; जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझको और तेरे वंश को दूँगा।

14 और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा: और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे।

15 और सुन, मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझको न छोड़ूँगा।” (28:13-14)

16 तब याकूब जाग उठा, और कहने लगा, “निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था।”

17 और भय खाकर उसने कहा, “यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।”

18 भोर को याकूब उठा, और अपने तकिये का पत्थर लेकर उसका 28:18-22\* खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल डाल दिया।

19 और उसने उस स्थान का नाम 28:18-22† रखा; पर उस नगर का नाम पहले लूज था।

20 याकूब ने यह मन्त्रत मानी, “28:20 28:20-22‡ इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहनने के लिये कपड़ा दे,

21 और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊँ; तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा।

22 और यह पत्थर, जिसका मैंने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा: और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।”

## 29

२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२

1 फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया, और पूर्वियों के देश में आया।

2 और उसने दृष्टि करके क्या देखा, कि मैदान में एक कुआँ है, और उसके पास भेड़-बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं; क्योंकि जो पत्थर उस कुएँ के मुँह पर धरा रहता था, जिसमें से झुण्डों को जल पिलाया जाता था, वह भारी था।

3 और जब सब झुण्ड वहाँ इकट्ठे हो जाते तब चरवाहे उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से लुढ़काकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाते, और फिर पत्थर को कुएँ के मुँह पर ज्यों का त्यों रख देते थे।

4 अतः याकूब ने चरवाहों से पूछा, “हे मेरे भाइयों, तुम कहाँ के हो?” उन्होंने कहा, “हम हारान के हैं।”

5 तब उसने उनसे पूछा, “क्या तुम नाहोर के पोते लाबान को जानते हो?” उन्होंने कहा, “हाँ, हम उसे जानते हैं।”

6 फिर उसने उनसे पूछा, “क्या वह कुशल से है?” उन्होंने कहा, “हाँ, कुशल से है और वह देख, उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियों को लिये हुए चली आती है।”

7 उसने कहा, “देखो, अभी तो दिन बहुत है, पशुओं के इकट्ठे होने का समय नहीं; इसलिए भेड़-बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ।”

8 उन्होंने कहा, “हम अभी ऐसा नहीं कर सकते, जब सब झुण्ड इकट्ठे होते हैं तब पत्थर कुएँ के मुँह से लुढ़काया जाता है, और तब हम भेड़-बकरियों को पानी पिलाते हैं।”

9 उनकी यह बातचीत हो रही थी, कि राहेल जो पशु चराया करती थी, अपने पिता की भेड़-बकरियों को लिये हुए आ गई।

10 अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को, और उसकी भेड़-बकरियों को भी देखकर याकूब ने निकट जाकर कुएँ के मुँह पर से पत्थर को लुढ़काकर अपने मामा लाबान की भेड़-बकरियों को पानी पिलाया।

11 तब याकूब ने राहेल को चूमा, और ऊँचे स्वर से रोया।

12 और याकूब ने राहेल को बता दिया, कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूँ, अर्थात् रिबका का पुत्र हूँ। तब उसने दौड़कर अपने पिता से कह दिया।

13 अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही लाबान उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको गले लगाकर

चूमा, फिर अपने घर ले आया। और याकूब ने लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया।

14 तब लाबान ने याकूब से कहा, “तू तो सचमुच मेरी हड्डी और माँस है।” और याकूब एक महीना भर उसके साथ रहा।

15 तब लाबान ने याकूब से कहा, “भाई-बन्धु होने के कारण तुझ से मुफ्त सेवा कराना मेरे लिए उचित नहीं है; इसलिए कह मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूँ?”

16 लाबान की दो बेटियाँ थी, जिनमें से बड़ी का नाम लिआ और छोटी का राहेल था।

17 लिआ के तो धुन्धली आँखें थीं, पर राहेल रूपवती और सुन्दर थी।

२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२२ २२२२ २२

18 इसलिए याकूब ने, जो राहेल से प्रीति रखता था, कहा, “मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सात वर्ष तेरी सेवा करूँगा।”

19 लाबान ने कहा, “उसे पराए पुरुष को देने से तुझको देना उत्तम होगा; इसलिए मेरे पास रह।”

20 अतः याकूब ने राहेल के लिये सात वर्ष सेवा की; और वे उसको राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े।

२२ २२ २२२२२ २२ २२२ २२२ २२ २२२२ २२२२

21 तब याकूब ने लाबान से कहा, “मेरी पत्नी मुझे दे, और मैं उसके पास जाऊँगा, क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है।”

22 अतः लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाकर इकट्ठा किया, और २२ २२२ २२२२\*।

23 साँझ के समय वह अपनी बेटी लिआ को याकूब के पास ले गया, और वह उसके पास गया।

24 लाबान ने अपनी बेटी लिआ को उसकी दासी होने के लिये अपनी दासी जिल्पा दी।

25 भोर को मालूम हुआ कि यह तो लिआ है, इसलिए उसने लाबान से कहा, “यह तूने मुझसे क्या किया है? मैंने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की, तो क्या राहेल के लिये नहीं की? फिर तूने मुझसे क्यों ऐसा छल किया है?”

26 लाबान ने कहा, “हमारे यहाँ ऐसी रीति नहीं, कि बड़ी बेटी से पहले दूसरी का विवाह कर दें।

२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२ २२२२ २२२२

27 “इसका सप्ताह तो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात वर्ष तक करेगा।”

\* 29:22 २२ २२२ २२२२: याकूब की लिआ: से धोखे से शादी करा दी गई, और फिर सात वर्ष और सेवा करके वह राहेल को भी प्राप्त कर लेता है।

28 याकूब ने ऐसा ही किया, और लिआ के सप्ताह को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल भी दी, कि वह उसकी पत्नी हो।

29 लाबान ने अपनी बेटी राहेल की दासी होने के लिये अपनी दासी बिल्हा को दिया।

30 तब याकूब राहेल के पास भी गया, और उसकी प्रीति लिआ से अधिक उसी पर हुई, और उसने लाबान के साथ रहकर सात वर्ष और उसकी सेवा की।

29:28-30:19

31 जब 29:28-30:19, तब उसने उसकी कोख खोली, पर राहेल बाँझ रही।

32 अतः लिआ गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने यह कहकर उसका नाम रूबेन रखा, “यहोवा ने मेरे दुःख पर दृष्टि की है, अब मेरा पति मुझसे प्रीति रखेगा।”

33 फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; तब उसने यह कहा, “यह सुनकर कि मैं अप्रिय हूँ यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया।” इसलिए उसने उसका नाम शिमोन रखा।

34 फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने कहा, “अब की बार तो मेरा पति मुझसे मिल जाएगा, क्योंकि उससे मेरे तीन पुत्र उत्पन्न हुए।” इसलिए उसका नाम लेवी रखा गया।

35 और फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने कहा, “अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूँगी।” इसलिए उसने उसका नाम यहूदा रखा; तब उसकी कोख बन्द हो गई। (29:28-30:19 1:2)

## 30

1 जब राहेल ने देखा कि याकूब के लिये मुझसे कोई सन्तान नहीं होती, तब वह अपनी बहन से डाह करने लगी और याकूब से कहा, “मुझे भी सन्तान दे, नहीं तो मर जाऊँगी।”

2 तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा, “क्या मैं परमेश्वर हूँ? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है।”

3 राहेल ने कहा, “अच्छा, मेरी दासी बिल्हा हाजिर है; उसी के पास जा, वह मेरे घुटनों पर जनेगी, और उसके द्वारा मेरा भी घर बसेगा।”

4 तब उसने उसे अपनी दासी बिल्हा को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो; और याकूब उसके पास गया।

5 और बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब से उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

6 तब राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुनकर मुझे एक पुत्र दिया।” इसलिए उसने उसका नाम दान रखा।

7 राहेल की दासी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और उत्पन्न हुआ।

8 तब राहेल ने कहा, “मैंने अपनी बहन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई।” अतः उसने उसका नाम नप्ताली रखा।

9 जब लिआ ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूँ, तब उसने अपनी दासी जिल्पा को लेकर याकूब की पत्नी होने के लिये दे दिया।

10 और लिआ की दासी जिल्पा के भी याकूब से एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

11 तब लिआ ने कहा, “अहो भाग्य!” इसलिए उसने उसका नाम गाद रखा।

12 फिर लिआ की दासी जिल्पा के याकूब से एक और पुत्र उत्पन्न हुआ।

13 तब लिआ ने कहा, “मैं धन्य हूँ; निश्चय स्त्रियाँ मुझे धन्य कहेंगी।” इसलिए उसने उसका नाम आशेर रखा।

14 गेहूँ की कटनी के दिनों में रूबेन को मैदान में 29:28-30:19\* मिले, और वह उनको अपनी माता लिआ के पास ले गया, तब राहेल ने लिआ से कहा, “अपने पुत्र के दूदाफलों में से कुछ मुझे दे।”

15 उसने उससे कहा, “तूने जो मेरे पति को ले लिया है क्या छोटी बात है? अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेना चाहती है?” राहेल ने कहा, “अच्छा, तेरे पुत्र के दूदाफलों के बदले वह आज रात को तेरे संग सोएगा।”

16 साँझ को जब याकूब मैदान से आ रहा था, तब लिआ उससे भेंट करने को निकली, और कहा, “तुझे मेरे ही पास आना होगा, क्योंकि मैंने अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल लिया।” तब वह उस रात को उसी के संग सोया।

17 तब परमेश्वर ने लिआ की सुनी, और वह गर्भवती हुई और याकूब से उसके पाँचवाँ पुत्र उत्पन्न हुआ।

18 तब लिआ ने कहा, “मैंने जो अपने पति को अपनी दासी दी, इसलिए परमेश्वर ने मुझे मेरी मजदूरी दी है।” इसलिए उसने उसका नाम इस्साकार रखा।

19 लिआ फिर गर्भवती हुई और याकूब से उसके छठवाँ पुत्र उत्पन्न हुआ।

† 29:31 29:28-30:19: अप्रिय हुई परमेश्वर की आँखें दुखियारों पर लगी रहती है, वह उसको सन्तान देकर उसके पति के प्यार की कमी की भरपाई करता है; जबकि राहेल बाँझ थी। \* 30:14 29:28-30:19: दूदाफल को “प्रेम फल” भी कहा जाता है, यह स्वाद में मीठा और सुगन्ध देता है, और माना जाता है कि इसके खाने से यौन इच्छाएँ उत्तेजित होती हैं और महिलाओं को गर्भवती होने में मदद करता है।

20 तब लिआ ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है; अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उससे छः पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं।” इसलिए उसने उसका नाम जबूलून रखा।

21 तत्पश्चात् उसके एक बेटी भी हुई, और उसने उसका नाम दीना रखा।

22 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED], और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली।

23 इसलिए वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; तब उसने कहा, “परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है।”

24 इसलिए उसने यह कहकर उसका नाम यूसुफ रखा, “परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा।”

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

25 जब राहेल से यूसुफ उत्पन्न हुआ, तब याकूब ने लाबान से कहा, “मुझे विदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊँ।

26 मेरी स्त्रियाँ और मेरे बच्चे, जिनके लिये मैंने तेरी सेवा की है, उन्हें मुझे दे कि मैं चला जाऊँ; तू तो जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा की है।”

27 लाबान ने उससे कहा, “यदि तेरी दृष्टि में मैंने अनुग्रह पाया है, तो यही रह जा; क्योंकि मैंने अनुभव से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है।”

28 फिर उसने कहा, “तू ठीक बता कि मैं तुझको क्या दूँ, और मैं उसे दूँगा।”

29 उसने उससे कहा, “तू जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे।

30 मेरे आने से पहले वे कितने थे, और अब कितने हो गए हैं; और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे आशीष दी है। पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊँगा?”

31 उसने फिर कहा, “मैं तुझे क्या दूँ?” याकूब ने कहा, “तू मुझे कुछ न दे; यदि तू मेरे लिये एक काम करे, तो मैं फिर तेरी भेड़-बकरियों को चराऊँगा, और उनकी रक्षा करूँगा।

32 मैं आज तेरी सब भेड़-बकरियों के बीच होकर निकलूँगा, और जो भेड़ या बकरी चित्तीवाली या चितकबरी हो, और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी चितकबरी और चित्तीवाली हो, उन्हें मैं अलग कर रखूँगा; और मेरी मजदूरी में वे ही ठहरेंगी।

33 और जब आगे को मेरी मजदूरी की चर्चा तेरे सामने चले, तब धर्म की यही साक्षी होगी; अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चितकबरी हो, और भेड़ों में से जो कोई काली न हो, यदि मेरे पास निकलें, तो चोरी की ठहरेंगी।”

34 तब लाबान ने कहा, “तेरे कहने के अनुसार हो।”

35 अतः उसने उसी दिन सब धारीवाले और चितकबरे बकरो, और सब चित्तीवाली और चितकबरी बकरियों को, अर्थात् जिनमें कुछ उजलापन था, उनको और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया।

36 और उसने अपने और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया; और याकूब लाबान की भेड़-बकरियों को चराने लगा।

37 तब याकूब ने चिनार, और बादाम, और अर्मान वृक्षों की हरी-हरी छड़ियाँ लेकर, उनके छिलके कहीं-कहीं छील के, उन्हें धारीदार बना दिया, ऐसी कि उन छड़ियों की सफेदी दिखाई देने लगी।

38 और तब छीली हुई छड़ियों को भेड़-बकरियों के सामने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया; और जब वे पानी पीने के लिये आईं तब गाभिन हो गईं।

39 छड़ियों के सामने गाभिन होकर, भेड़-बकरियाँ धारीवाले, चित्तीवाले और चितकबरे बच्चे जनीं।

40 तब याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग-अलग किया, और लाबान की भेड़-बकरियों के मुँह को चित्तीवाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया; और अपने झुण्डों को उनसे अलग रखा, और लाबान की भेड़-बकरियों से मिलने न दिया।

41 और जब जब बलवन्त भेड़-बकरियाँ गाभिन होती थीं, तब-तब याकूब उन छड़ियों को कठौतों में उनके सामने रख देता था; जिससे वे छड़ियों को देखती हुई गाभिन हो जाएँ।

42 पर जब निर्बल भेड़-बकरियाँ गाभिन होती थी, तब वह उन्हें उनके आगे नहीं रखता था। इससे निर्बल-निर्बल लाबान की रहीं, और बलवन्त-बलवन्त याकूब की हो गईं।

43 इस प्रकार वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया, और उसके बहुत सी भेड़-बकरियाँ, और दासियाँ और दास और ऊँट और गदहे हो गए।

## 31

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

† 30:22 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: परमेश्वर ने राहेल की ऐसे समय में सुधि ली जो उसके लिए उचित था, जब उसने उसे निर्भर रहने और धैर्य रखने का पाठ पढ़ा दिया। \* 31:1 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: परिस्थितियाँ ऐसी घटीं कि याकूब को अपनी पत्नियों को वहाँ से निकल जाने के लिए कहना पड़ा। उसकी धन-समृद्धि के कारण लाबान के पुत्र उसके बारे में बुरा कहने लगे और ईर्ष्या करने लगे। स्वयं लाबान भी दूर-दूर रहने लगा था।

1 फिर [REDACTED] [REDACTED] की ये बातें याकूब के सुनने में आई, “याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है, और हमारे पिता के धन के कारण उसकी यह प्रतिष्ठा है।”

2 और याकूब ने लाबान के चेहरे पर दृष्टि की और ताड़ लिया, कि वह उसके प्रति पहले के समान नहीं है।

3 तब यहोवा ने याकूब से कहा, “अपने पितरों के देश और अपनी जन्म-भूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूँगा।”

4 तब याकूब ने राहेल और लिआ को, मैदान में अपनी भेड़-बकरियों के पास बुलवाकर कहा,

5 “तुम्हारे पिता के चेहरे से मुझे समझ पड़ता है, कि वह तो मुझे पहले के समान अब नहीं देखता; पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग है।

6 और तुम भी जानती हो, कि मैंने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है।

7 फिर भी तुम्हारे पिता ने मुझसे छल करके मेरी मजदूरी को दस बार बदल दिया; परन्तु परमेश्वर ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया।

8 जब उसने कहा, ‘चित्तीवाले बच्चे तेरी मजदूरी ठहरेंगे,’ तब सब भेड़-बकरियाँ चित्तीवाले ही जनने लगीं, और जब उसने कहा, ‘धारीवाले बच्चे तेरी मजदूरी ठहरेंगे,’ तब सब भेड़-बकरियाँ धारीवाले जनने लगीं।

9 इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिए।

10 भेड़-बकरियों के गाभिन होने के समय मैंने स्वप्न में क्या देखा, कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं।

11 तब परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझसे कहा, ‘हे याकूब,’ मैंने कहा, ‘क्या आज्ञा।’

12 उसने कहा, ‘आँखें उठाकर उन सब बकरों को जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं, देख, कि वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता है, वह मैंने देखा है।

13 मैं उस बेतेल का परमेश्वर हूँ, जहाँ तूने एक खम्भे पर तेल डाल दिया था और मेरी मन्त्रत मानी थी। अब चल, इस देश से निकलकर अपनी जन्म-भूमि को लौट जा।”

14 तब [REDACTED] [REDACTED] ने उससे कहा, “क्या हमारे पिता के घर में अब भी हमारा कुछ भाग या अंश बचा है?”

15 क्या हम उसकी दृष्टि में पराए न ठहरीं? देख, उसने हमको तो बेच डाला, और हमारे रूपे को खा बैठा है।

16 इसलिए परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है, वह हमारा, और हमारे बच्चों का है; अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है, वही कर।”

17 तब याकूब ने अपने बच्चों और स्त्रियों को ऊँटों पर चढ़ाया;

18 और जितने पशुओं को वह पदनराम में इकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था, सब को कनान में अपने पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से, साथ ले गया।

19 लाबान तो अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिये चला गया था, और राहेल अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा ले गई।

20 अतः याकूब लाबान अरामी के पास से चोरी से चला गया, उसको न बताया कि मैं भागा जाता हूँ।

21 वह अपना सब कुछ लेकर भागा, और महानद के पार उतरकर अपना मुँह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया।

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

22 तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला कि याकूब भाग गया है।

23 इसलिए उसने अपने भाइयों को साथ लेकर उसका सात दिन तक पीछा किया, और गिलाद के पहाड़ी देश में उसको जा पकड़ा।

24 तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान के पास आकर कहा, “सावधान रह, तू याकूब से न तो भला कहना और न बुरा।”

25 और लाबान याकूब के पास पहुँच गया। याकूब अपना तम्बू गिलाद नामक पहाड़ी देश में खड़ा किए पड़ा था; और लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया।

26 तब लाबान याकूब से कहने लगा, “तूने यह क्या किया, कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया, जैसा कोई तलवार के बल से बन्दी बनाई गई हों?”

27 तू क्यों चुपके से भाग आया, और मुझसे बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया; नहीं तो मैं तुझे आनन्द के साथ मृदंग और वीणा बजवाते, और गीत गवाते विदा करता?

28 तूने तो मुझे अपने बेटे-बेटियों को चूमने तक न दिया? तूने मूर्खता की है।

† 31:14 [REDACTED] [REDACTED]: उसकी पत्नियाँ अपने पिता के स्वार्थपूर्ण रवैये पर अपने पति के विचारों से सहमत थीं, और वे उसके साथ वहाँ से चले जाने को तैयार हो गईं।

29 तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है; पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझसे बीती हुई रात में कहा, 'सावधान रह, याकूब से न तो भला कहना और न बुरा।'

30 भला, अब तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया, पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है?"

31 याकूब ने लाबान को उत्तर दिया, "मैं यह सोचकर डर गया था कि कहीं तू अपनी बेटियों को मुझसे छीन न ले।

32 जिस किसी के पास तू अपने देवताओं को पाए, वह जीवित न बचेगा। मेरे पास तेरा जो कुछ निकले, उसे भाई-बन्धुओं के सामने पहचानकर ले ले।" क्योंकि याकूब न जानता था कि राहेल गृहदेवताओं को चुरा ले आई है।

33 यह सुनकर लाबान, याकूब और लिआ और दोनों दासियों के तम्बुओं में गया; और कुछ न मिला। तब लिआ के तम्बू में से निकलकर राहेल के तम्बू में गया।

34 राहेल तो गृहदेवताओं को ऊँट की काठी में रखकर उन पर बैठी थी। लाबान ने उसके सारे तम्बू में टटोलने पर भी उन्हें न पाया।

35 राहेल ने अपने पिता से कहा, "हे मेरे प्रभु; इससे अप्रसन्न न हो, कि मैं तेरे सामने नहीं उठी; क्योंकि मैं मासिक धर्म से हूँ।" अतः उसके ढूँढ-ढाँढ करने पर भी गृहदेवता उसको न मिले।

36 तब याकूब क्रोधित होकर लाबान से झगड़ने लगा, और कहा, "मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है, कि तूने इतना क्रोधित होकर मेरा पीछा किया है?"

37 तूने जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा, तो तुझको अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला? कुछ मिला हो तो उसको यहाँ अपने और मेरे भाइयों के सामने रख दे, और वे हम दोनों के बीच न्याय करें।

38 इन बीस वर्षों से मैं तेरे पास रहा; इनमें न तो तेरी भेड़-बकरियों के गर्भ गिरे, और न तेरे मेढ़ों का माँस मैंने कभी खाया।

39 जिसे जंगली जन्तुओं ने फाड़ डाला उसको मैं तेरे पास न लाता था, उसकी हानि मैं ही उठाता था; चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को, तू मुझ ही से उसको ले लेता था।

40 मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे खा गया; और नींद मेरी आँखों से भाग जाती थी।

41 बीस वर्ष तक मैं तेरे घर में रहा; चौदह वर्ष तो मैंने तेरी दोनों बेटियों के लिये, और छः वर्ष तेरी भेड़-

बकरियों के लिये सेवा की; और तूने मेरी मजदूरी को दस बार बदल डाला।

42 मेरे पिता का परमेश्वर अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, जिसका भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता, तो निश्चय तू अब मुझे खाली हाथ जाने देता। मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे डाँटा।"

????? ?? ?????? ?? ??? ????????

43 लाबान ने याकूब से कहा, "ये बेटियाँ तो मेरी ही हैं, और ये पुत्र भी मेरे ही हैं, और ये भेड़-बकरियाँ भी मेरे ही हैं, और जो कुछ तुझे देख पड़ता है वह सब मेरा ही है परन्तु अब मैं अपनी इन बेटियों और इनकी सन्तान से क्या कर सकता हूँ?"

44 अब आ, मैं और तू दोनों आपस में वाचा बाँधें, और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे।"

45 तब याकूब ने एक पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया।

46 तब याकूब ने अपने भाई-बन्धुओं से कहा, "पत्थर इकट्ठा करो," यह सुनकर उन्होंने पत्थर इकट्ठा करके एक ढेर लगाया और वहीं ढेर के पास उन्होंने भोजन किया।

47 उस ढेर का नाम लाबान ने तो जैगर सहादुथा, पर याकूब ने गिलियाद रखा।

48 लाबान ने कहा, "यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा।" इस कारण उसका नाम गिलियाद रखा गया,

49 और मिस्पा भी; क्योंकि उसने कहा, "जब हम एक दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी देख-भाल करता रहे।

50 यदि तू मेरी बेटियों को दुःख दे, या उनके सिवाय और स्त्रियाँ ब्याह ले, तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा; पर देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी रहेगा।"

51 फिर लाबान ने याकूब से कहा, "इस ढेर को देख और इस खम्भे को भी देख, जिनको मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है।

52 यह ढेर और यह खम्भा दोनों इस बात के साक्षी रहें कि हानि करने की मनसा से न तो मैं इस ढेर को लाँघकर तेरे पास जाऊँगा, न तू इस ढेर और इस खम्भे को लाँघकर मेरे पास आएगा।

53 अब्राहम और नाहोर और उनके पिता; तीनों का जो परमेश्वर है, वही हम दोनों के बीच न्याय करे।" तब याकूब ने उसकी शपथ खाई जिसका भय उसका पिता इसहाक मानता था।

54 और याकूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया, और अपने भाई-बन्धुओं को भोजन करने के लिये बुलाया, तब उन्होंने भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई।



55 भोर को लाबान उठा, और अपने बेटे-बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद देकर चल दिया, और अपने स्थान को लौट गया।

## 32

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले।

2 उनको देखते ही याकूब ने कहा, “यह तो परमेश्वर का दल है।” इसलिए उसने उस स्थान का नाम महनैम रखा।

3 तब याकूब ने सेईर देश में, अर्थात् एदोम देश में, अपने भाई एसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिए।

4 और उसने उन्हें यह आज्ञा दी, “मेरे प्रभु एसाव से यह कहना; कि ????\* याकूब तुझ से यह कहता है, कि मैं लाबान के यहाँ परदेशी होकर अब तक रहा;

5 और मेरे पास गाय-बैल, गदहे, भेड़-बकरियाँ, और दास-दासियाँ हैं और मैंने अपने प्रभु के पास इसलिए सन्देश भेजा है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो।”

6 वे दूत याकूब के पास लौटकर कहने लगे, “हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है।”

7 तब याकूब बहुत डर गया, और संकट में पड़ा: और यह सोचकर, अपने साथियों के, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, और ऊँटों के भी अलग-अलग दो दल कर लिये,

8 कि यदि एसाव आकर पहले दल को मारने लगे, तो दूसरा दल भागकर बच जाएगा।

9 फिर याकूब ने कहा, “हे यहोवा, हे मेरे दादा अब्राहम के परमेश्वर, हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, तूने तो मुझसे कहा था कि अपने देश और जन्म-भूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूँगा:

10 तूने जो-जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, और अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे-ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूँ।

11 मेरी विनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा मैं तो उससे डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और माँ समेत लड़कों को भी मार डाले।

12 तूने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूँगा, और तेरे वंश को समुद्र के रेतकों के समान बहुत करूँगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जा सकते।”

13 उसने उस दिन की रात वहीं बिताई; और जो कुछ उसके पास था उसमें से अपने भाई एसाव की भेंट के लिये छाँट छाँटकर निकाला;

14 अर्थात् दो सौ बकरियाँ, और बीस बकरे, और दो सौ भेड़ें, और बीस मेढे,

15 और बच्चों समेत दूध देनेवाली तीस ऊँटनियाँ, और चालीस गायें, और दस बैल, और बीस गदहियाँ और उनके दस बच्चे।

16 इनको उसने झुण्ड-झुण्ड करके, अपने दासों को सौंपकर उनसे कहा, “मेरे आगे बढ़ जाओ; और झुण्डों के बीच-बीच में अन्तर रखो।”

17 फिर उसने अगले झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दी, “जब मेरा भाई एसाव तुझे मिले, और पूछने लगे, ‘तू किसका दास है, और कहाँ जाता है, और ये जो तेरे आगे-आगे हैं, वे किसके हैं?’

18 तब कहना, ‘यह तेरे दास याकूब के हैं। हे मेरे प्रभु एसाव, ये भेंट के लिये तेरे पास भेजे गए हैं, और वह आप भी हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।’”

19 और उसने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी, वरन् उन सभी को जो झुण्डों के पीछे-पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दी कि जब एसाव तुम को मिले तब इसी प्रकार उससे कहना।

20 और यह भी कहना, “तेरा दास याकूब हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।” क्योंकि उसने यह सोचा कि यह भेंट जो मेरे आगे-आगे जाती है, इसके द्वारा मैं उसके क्रोध को शान्त करके तब उसका दर्शन करूँगा; हो सकता है वह मुझसे प्रसन्न हो जाए।

21 इसलिए वह भेंट याकूब से पहले पार उतर गई, और वह आप उस रात को छावनी में रहा।

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

22 उसी रात को वह उठा और अपनी दोनों स्त्रियों, और दोनों दासियों, और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया।

23 उसने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया, वरन् अपना सब कुछ पार उतार दिया।

24 और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पौ फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।

\* 32:4 ???? ???? : पहले किए कार्यों क्षतिपूर्ति के लिए याकूब बड़ी दीनता और आदर के साथ अपने बड़े भाई से मिलता है, जहाँ वह अपने को “तेरा दास” और एसाव को “मेरे प्रभु” कहकर सम्बोधित करता है। वह उसे अपने सम्पत्ति के बारे में बताता है ताकि उसे पता चले कि वह उससे कुछ नहीं चाहता।

25 जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जाँघ की नस को छुआ; और याकूब की जाँघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई।

26 तब उसने कहा, “मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होनेवाला है।” याकूब ने कहा, “जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।”

27 और उसने याकूब से पूछा, “<sup>27:27</sup> <sup>27:28</sup> <sup>27:29</sup> <sup>27:30</sup> <sup>27:31</sup> <sup>27:32</sup> <sup>27:33</sup> <sup>27:34</sup> <sup>27:35</sup> <sup>27:36</sup> <sup>27:37</sup> <sup>27:38</sup> <sup>27:39</sup> <sup>27:40</sup> <sup>27:41</sup> <sup>27:42</sup> <sup>27:43</sup> <sup>27:44</sup> <sup>27:45</sup> <sup>27:46</sup> <sup>27:47</sup> <sup>27:48</sup> <sup>27:49</sup> <sup>27:50</sup> <sup>27:51</sup> <sup>27:52</sup> <sup>27:53</sup> <sup>27:54</sup> <sup>27:55</sup> <sup>27:56</sup> <sup>27:57</sup> <sup>27:58</sup> <sup>27:59</sup> <sup>27:60</sup> <sup>27:61</sup> <sup>27:62</sup> <sup>27:63</sup> <sup>27:64</sup> <sup>27:65</sup> <sup>27:66</sup> <sup>27:67</sup> <sup>27:68</sup> <sup>27:69</sup> <sup>27:70</sup> <sup>27:71</sup> <sup>27:72</sup> <sup>27:73</sup> <sup>27:74</sup> <sup>27:75</sup> <sup>27:76</sup> <sup>27:77</sup> <sup>27:78</sup> <sup>27:79</sup> <sup>27:80</sup> <sup>27:81</sup> <sup>27:82</sup> <sup>27:83</sup> <sup>27:84</sup> <sup>27:85</sup> <sup>27:86</sup> <sup>27:87</sup> <sup>27:88</sup> <sup>27:89</sup> <sup>27:90</sup> <sup>27:91</sup> <sup>27:92</sup> <sup>27:93</sup> <sup>27:94</sup> <sup>27:95</sup> <sup>27:96</sup> <sup>27:97</sup> <sup>27:98</sup> <sup>27:99</sup> <sup>27:100</sup> <sup>27:101</sup> <sup>27:102</sup> <sup>27:103</sup> <sup>27:104</sup> <sup>27:105</sup> <sup>27:106</sup> <sup>27:107</sup> <sup>27:108</sup> <sup>27:109</sup> <sup>27:110</sup> <sup>27:111</sup> <sup>27:112</sup> <sup>27:113</sup> <sup>27:114</sup> <sup>27:115</sup> <sup>27:116</sup> <sup>27:117</sup> <sup>27:118</sup> <sup>27:119</sup> <sup>27:120</sup> <sup>27:121</sup> <sup>27:122</sup> <sup>27:123</sup> <sup>27:124</sup> <sup>27:125</sup> <sup>27:126</sup> <sup>27:127</sup> <sup>27:128</sup> <sup>27:129</sup> <sup>27:130</sup> <sup>27:131</sup> <sup>27:132</sup> <sup>27:133</sup> <sup>27:134</sup> <sup>27:135</sup> <sup>27:136</sup> <sup>27:137</sup> <sup>27:138</sup> <sup>27:139</sup> <sup>27:140</sup> <sup>27:141</sup> <sup>27:142</sup> <sup>27:143</sup> <sup>27:144</sup> <sup>27:145</sup> <sup>27:146</sup> <sup>27:147</sup> <sup>27:148</sup> <sup>27:149</sup> <sup>27:150</sup> <sup>27:151</sup> <sup>27:152</sup> <sup>27:153</sup> <sup>27:154</sup> <sup>27:155</sup> <sup>27:156</sup> <sup>27:157</sup> <sup>27:158</sup> <sup>27:159</sup> <sup>27:160</sup> <sup>27:161</sup> <sup>27:162</sup> <sup>27:163</sup> <sup>27:164</sup> <sup>27:165</sup> <sup>27:166</sup> <sup>27:167</sup> <sup>27:168</sup> <sup>27:169</sup> <sup>27:170</sup> <sup>27:171</sup> <sup>27:172</sup> <sup>27:173</sup> <sup>27:174</sup> <sup>27:175</sup> <sup>27:176</sup> <sup>27:177</sup> <sup>27:178</sup> <sup>27:179</sup> <sup>27:180</sup> <sup>27:181</sup> <sup>27:182</sup> <sup>27:183</sup> <sup>27:184</sup> <sup>27:185</sup> <sup>27:186</sup> <sup>27:187</sup> <sup>27:188</sup> <sup>27:189</sup> <sup>27:190</sup> <sup>27:191</sup> <sup>27:192</sup> <sup>27:193</sup> <sup>27:194</sup> <sup>27:195</sup> <sup>27:196</sup> <sup>27:197</sup> <sup>27:198</sup> <sup>27:199</sup> <sup>27:200</sup> <sup>27:201</sup> <sup>27:202</sup> <sup>27:203</sup> <sup>27:204</sup> <sup>27:205</sup> <sup>27:206</sup> <sup>27:207</sup> <sup>27:208</sup> <sup>27:209</sup> <sup>27:210</sup> <sup>27:211</sup> <sup>27:212</sup> <sup>27:213</sup> <sup>27:214</sup> <sup>27:215</sup> <sup>27:216</sup> <sup>27:217</sup> <sup>27:218</sup> <sup>27:219</sup> <sup>27:220</sup> <sup>27:221</sup> <sup>27:222</sup> <sup>27:223</sup> <sup>27:224</sup> <sup>27:225</sup> <sup>27:226</sup> <sup>27:227</sup> <sup>27:228</sup> <sup>27:229</sup> <sup>27:230</sup> <sup>27:231</sup> <sup>27:232</sup> <sup>27:233</sup> <sup>27:234</sup> <sup>27:235</sup> <sup>27:236</sup> <sup>27:237</sup> <sup>27:238</sup> <sup>27:239</sup> <sup>27:240</sup> <sup>27:241</sup> <sup>27:242</sup> <sup>27:243</sup> <sup>27:244</sup> <sup>27:245</sup> <sup>27:246</sup> <sup>27:247</sup> <sup>27:248</sup> <sup>27:249</sup> <sup>27:250</sup> <sup>27:251</sup> <sup>27:252</sup> <sup>27:253</sup> <sup>27:254</sup> <sup>27:255</sup> <sup>27:256</sup> <sup>27:257</sup> <sup>27:258</sup> <sup>27:259</sup> <sup>27:260</sup> <sup>27:261</sup> <sup>27:262</sup> <sup>27:263</sup> <sup>27:264</sup> <sup>27:265</sup> <sup>27:266</sup> <sup>27:267</sup> <sup>27:268</sup> <sup>27:269</sup> <sup>27:270</sup> <sup>27:271</sup> <sup>27:272</sup> <sup>27:273</sup> <sup>27:274</sup> <sup>27:275</sup> <sup>27:276</sup> <sup>27:277</sup> <sup>27:278</sup> <sup>27:279</sup> <sup>27:280</sup> <sup>27:281</sup> <sup>27:282</sup> <sup>27:283</sup> <sup>27:284</sup> <sup>27:285</sup> <sup>27:286</sup> <sup>27:287</sup> <sup>27:288</sup> <sup>27:289</sup> <sup>27:290</sup> <sup>27:291</sup> <sup>27:292</sup> <sup>27:293</sup> <sup>27:294</sup> <sup>27:295</sup> <sup>27:296</sup> <sup>27:297</sup> <sup>27:298</sup> <sup>27:299</sup> <sup>27:300</sup> <sup>27:301</sup> <sup>27:302</sup> <sup>27:303</sup> <sup>27:304</sup> <sup>27:305</sup> <sup>27:306</sup> <sup>27:307</sup> <sup>27:308</sup> <sup>27:309</sup> <sup>27:310</sup> <sup>27:311</sup> <sup>27:312</sup> <sup>27:313</sup> <sup>27:314</sup> <sup>27:315</sup> <sup>27:316</sup> <sup>27:317</sup> <sup>27:318</sup> <sup>27:319</sup> <sup>27:320</sup> <sup>27:321</sup> <sup>27:322</sup> <sup>27:323</sup> <sup>27:324</sup> <sup>27:325</sup> <sup>27:326</sup> <sup>27:327</sup> <sup>27:328</sup> <sup>27:329</sup> <sup>27:330</sup> <sup>27:331</sup> <sup>27:332</sup> <sup>27:333</sup> <sup>27:334</sup> <sup>27:335</sup> <sup>27:336</sup> <sup>27:337</sup> <sup>27:338</sup> <sup>27:339</sup> <sup>27:340</sup> <sup>27:341</sup> <sup>27:342</sup> <sup>27:343</sup> <sup>27:344</sup> <sup>27:345</sup> <sup>27:346</sup> <sup>27:347</sup> <sup>27:348</sup> <sup>27:349</sup> <sup>27:350</sup> <sup>27:351</sup> <sup>27:352</sup> <sup>27:353</sup> <sup>27:354</sup> <sup>27:355</sup> <sup>27:356</sup> <sup>27:357</sup> <sup>27:358</sup> <sup>27:359</sup> <sup>27:360</sup> <sup>27:361</sup> <sup>27:362</sup> <sup>27:363</sup> <sup>27:364</sup> <sup>27:365</sup> <sup>27:366</sup> <sup>27:367</sup> <sup>27:368</sup> <sup>27:369</sup> <sup>27:370</sup> <sup>27:371</sup> <sup>27:372</sup> <sup>27:373</sup> <sup>27:374</sup> <sup>27:375</sup> <sup>27:376</sup> <sup>27:377</sup> <sup>27:378</sup> <sup>27:379</sup> <sup>27:380</sup> <sup>27:381</sup> <sup>27:382</sup> <sup>27:383</sup> <sup>27:384</sup> <sup>27:385</sup> <sup>27:386</sup> <sup>27:387</sup> <sup>27:388</sup> <sup>27:389</sup> <sup>27:390</sup> <sup>27:391</sup> <sup>27:392</sup> <sup>27:393</sup> <sup>27:394</sup> <sup>27:395</sup> <sup>27:396</sup> <sup>27:397</sup> <sup>27:398</sup> <sup>27:399</sup> <sup>27:400</sup> <sup>27:401</sup> <sup>27:402</sup> <sup>27:403</sup> <sup>27:404</sup> <sup>27:405</sup> <sup>27:406</sup> <sup>27:407</sup> <sup>27:408</sup> <sup>27:409</sup> <sup>27:410</sup> <sup>27:411</sup> <sup>27:412</sup> <sup>27:413</sup> <sup>27:414</sup> <sup>27:415</sup> <sup>27:416</sup> <sup>27:417</sup> <sup>27:418</sup> <sup>27:419</sup> <sup>27:420</sup> <sup>27:421</sup> <sup>27:422</sup> <sup>27:423</sup> <sup>27:424</sup> <sup>27:425</sup> <sup>27:426</sup> <sup>27:427</sup> <sup>27:428</sup> <sup>27:429</sup> <sup>27:430</sup> <sup>27:431</sup> <sup>27:432</sup> <sup>27:433</sup> <sup>27:434</sup> <sup>27:435</sup> <sup>27:436</sup> <sup>27:437</sup> <sup>27:438</sup> <sup>27:439</sup> <sup>27:440</sup> <sup>27:441</sup> <sup>27:442</sup> <sup>27:443</sup> <sup>27:444</sup> <sup>27:445</sup> <sup>27:446</sup> <sup>27:447</sup> <sup>27:448</sup> <sup>27:449</sup> <sup>27:450</sup> <sup>27:451</sup> <sup>27:452</sup> <sup>27:453</sup> <sup>27:454</sup> <sup>27:455</sup> <sup>27:456</sup> <sup>27:457</sup> <sup>27:458</sup> <sup>27:459</sup> <sup>27:460</sup> <sup>27:461</sup> <sup>27:462</sup> <sup>27:463</sup> <sup>27:464</sup> <sup>27:465</sup> <sup>27:466</sup> <sup>27:467</sup> <sup>27:468</sup> <sup>27:469</sup> <sup>27:470</sup> <sup>27:471</sup> <sup>27:472</sup> <sup>27:473</sup> <sup>27:474</sup> <sup>27:475</sup> <sup>27:476</sup> <sup>27:477</sup> <sup>27:478</sup> <sup>27:479</sup> <sup>27:480</sup> <sup>27:481</sup> <sup>27:482</sup> <sup>27:483</sup> <sup>27:484</sup> <sup>27:485</sup> <sup>27:486</sup> <sup>27:487</sup> <sup>27:488</sup> <sup>27:489</sup> <sup>27:490</sup> <sup>27:491</sup> <sup>27:492</sup> <sup>27:493</sup> <sup>27:494</sup> <sup>27:495</sup> <sup>27:496</sup> <sup>27:497</sup> <sup>27:498</sup> <sup>27:499</sup> <sup>27:500</sup> <sup>27:501</sup> <sup>27:502</sup> <sup>27:503</sup> <sup>27:504</sup> <sup>27:505</sup> <sup>27:506</sup> <sup>27:507</sup> <sup>27:508</sup> <sup>27:509</sup> <sup>27:510</sup> <sup>27:511</sup> <sup>27:512</sup> <sup>27:513</sup> <sup>27:514</sup> <sup>27:515</sup> <sup>27:516</sup> <sup>27:517</sup> <sup>27:518</sup> <sup>27:519</sup> <sup>27:520</sup> <sup>27:521</sup> <sup>27:522</sup> <sup>27:523</sup> <sup>27:524</sup> <sup>27:525</sup> <sup>27:526</sup> <sup>27:527</sup> <sup>27:528</sup> <sup>27:529</sup> <sup>27:530</sup> <sup>27:531</sup> <sup>27:532</sup> <sup>27:533</sup> <sup>27:534</sup> <sup>27:535</sup> <sup>27:536</sup> <sup>27:537</sup> <sup>27:538</sup> <sup>27:539</sup> <sup>27:540</sup> <sup>27:541</sup> <sup>27:542</sup> <sup>27:543</sup> <sup>27:544</sup> <sup>27:545</sup> <sup>27:546</sup> <sup>27:547</sup> <sup>27:548</sup> <sup>27:549</sup> <sup>27:550</sup> <sup>27:551</sup> <sup>27:552</sup> <sup>27:553</sup> <sup>27:554</sup> <sup>27:555</sup> <sup>27:556</sup> <sup>27:557</sup> <sup>27:558</sup> <sup>27:559</sup> <sup>27:560</sup> <sup>27:561</sup> <sup>27:562</sup> <sup>27:563</sup> <sup>27:564</sup> <sup>27:565</sup> <sup>27:566</sup> <sup>27:567</sup> <sup>27:568</sup> <sup>27:569</sup> <sup>27:570</sup> <sup>27:571</sup> <sup>27:572</sup> <sup>27:573</sup> <sup>27:574</sup> <sup>27:575</sup> <sup>27:576</sup> <sup>27:577</sup> <sup>27:578</sup> <sup>27:579</sup> <sup>27:580</sup> <sup>27:581</sup> <sup>27:582</sup> <sup>27:583</sup> <sup>27:584</sup> <sup>27:585</sup> <sup>27:586</sup> <sup>27:587</sup> <sup>27:588</sup> <sup>27:589</sup> <sup>27:590</sup> <sup>27:591</sup> <sup>27:592</sup> <sup>27:593</sup> <sup>27:594</sup> <sup>27:595</sup> <sup>27:596</sup> <sup>27:597</sup> <sup>27:598</sup> <sup>27:599</sup> <sup>27:600</sup> <sup>27:601</sup> <sup>27:602</sup> <sup>27:603</sup> <sup>27:604</sup> <sup>27:605</sup> <sup>27:606</sup> <sup>27:607</sup> <sup>27:608</sup> <sup>27:609</sup> <sup>27:610</sup> <sup>27:611</sup> <sup>27:612</sup> <sup>27:613</sup> <sup>27:614</sup> <sup>27:615</sup> <sup>27:616</sup> <sup>27:617</sup> <sup>27:618</sup> <sup>27:619</sup> <sup>27:620</sup> <sup>27:621</sup> <sup>27:622</sup> <sup>27:623</sup> <sup>27:624</sup> <sup>27:625</sup> <sup>27:626</sup> <sup>27:627</sup> <sup>27:628</sup> <sup>27:629</sup> <sup>27:630</sup> <sup>27:631</sup> <sup>27:632</sup> <sup>27:633</sup> <sup>27:634</sup> <sup>27:635</sup> <sup>27:636</sup> <sup>27:637</sup> <sup>27:638</sup> <sup>27:639</sup> <sup>27:640</sup> <sup>27:641</sup> <sup>27:642</sup> <sup>27:643</sup> <sup>27:644</sup> <sup>27:645</sup> <sup>27:646</sup> <sup>27:647</sup> <sup>27:648</sup> <sup>27:649</sup> <sup>27:650</sup> <sup>27:651</sup> <sup>27:652</sup> <sup>27:653</sup> <sup>27:654</sup> <sup>27:655</sup> <sup>27:656</sup> <sup>27:657</sup> <sup>27:658</sup> <sup>27:659</sup> <sup>27:660</sup> <sup>27:661</sup> <sup>27:662</sup> <sup>27:663</sup> <sup>27:664</sup> <sup>27:665</sup> <sup>27:666</sup> <sup>27:667</sup> <sup>27:668</sup> <sup>27:669</sup> <sup>27:670</sup> <sup>27:671</sup> <sup>27:672</sup> <sup>27:673</sup> <sup>27:674</sup> <sup>27:675</sup> <sup>27:676</sup> <sup>27:677</sup> <sup>27:678</sup> <sup>27:679</sup> <sup>27:680</sup> <sup>27:681</sup> <sup>27:682</sup> <sup>27:683</sup> <sup>27:684</sup> <sup>27:685</sup> <sup>27:686</sup> <sup>27:687</sup> <sup>27:688</sup> <sup>27:689</sup> <sup>27:690</sup> <sup>27:691</sup> <sup>27:692</sup> <sup>27:693</sup> <sup>27:694</sup> <sup>27:695</sup> <sup>27:696</sup> <sup>27:697</sup> <sup>27:698</sup> <sup>27:699</sup> <sup>27:700</sup> <sup>27:701</sup> <sup>27:702</sup> <sup>27:703</sup> <sup>27:704</sup> <sup>27:705</sup> <sup>27:706</sup> <sup>27:707</sup> <sup>27:708</sup> <sup>27:709</sup> <sup>27:710</sup> <sup>27:711</sup> <sup>27:712</sup> <sup>27:713</sup> <sup>27:714</sup> <sup>27:715</sup> <sup>27:716</sup> <sup>27:717</sup> <sup>27:718</sup> <sup>27:719</sup> <sup>27:720</sup> <sup>27:721</sup> <sup>27:722</sup> <sup>27:723</sup> <sup>27:724</sup> <sup>27:725</sup> <sup>27:726</sup> <sup>27:727</sup> <sup>27:728</sup> <sup>27:729</sup> <sup>27:730</sup> <sup>27:731</sup> <sup>27:732</sup> <sup>27:733</sup> <sup>27:734</sup> <sup>27:735</sup> <sup>27:736</sup> <sup>27:737</sup> <sup>27:738</sup> <sup>27:739</sup> <sup>27:740</sup> <sup>27:741</sup> <sup>27:742</sup> <sup>27:743</sup> <sup>27:744</sup> <sup>27:745</sup> <sup>27:746</sup> <sup>27:747</sup> <sup>27:748</sup> <sup>27:749</sup> <sup>27:750</sup> <sup>27:751</sup> <sup>27:752</sup> <sup>27:753</sup> <sup>27:754</sup> <sup>27:755</sup> <sup>27:756</sup> <sup>27:757</sup> <sup>27:758</sup> <sup>27:759</sup> <sup>27:760</sup> <sup>27:761</sup> <sup>27:762</sup> <sup>27:763</sup> <sup>27:764</sup> <sup>27:765</sup> <sup>27:766</sup> <sup>27:767</sup> <sup>27:768</sup> <sup>27:769</sup> <sup>27:770</sup> <sup>27:771</sup> <sup>27:772</sup> <sup>27:773</sup> <sup>27:774</sup> <sup>27:775</sup> <sup>27:776</sup> <sup>27:777</sup> <sup>27:778</sup> <sup>27:779</sup> <sup>27:780</sup> <sup>27:781</sup> <sup>27:782</sup> <sup>27:783</sup> <sup>27:784</sup> <sup>27:785</sup> <sup>27:786</sup> <sup>27:787</sup> <sup>27:788</sup> <sup>27:789</sup> <sup>27:790</sup> <sup>27:791</sup> <sup>27:792</sup> <sup>27:793</sup> <sup>27:794</sup> <sup>27:795</sup> <sup>27:796</sup> <sup>27:797</sup> <sup>27:798</sup> <sup>27:799</sup> <sup>27:800</sup> <sup>27:801</sup> <sup>27:802</sup> <sup>27:803</sup> <sup>27:804</sup> <sup>27:805</sup> <sup>27:806</sup> <sup>27:807</sup> <sup>27:808</sup> <sup>27:809</sup> <sup>27:810</sup> <sup>27:811</sup> <sup>27:812</sup> <sup>27:813</sup> <sup>27:814</sup> <sup>27:815</sup> <sup>27:816</sup> <sup>27:817</sup> <sup>27:818</sup> <sup>27:819</sup> <sup>27:820</sup> <sup>27:821</sup> <sup>27:822</sup> <sup>27:823</sup> <sup>27:824</sup> <sup>27:825</sup> <sup>27:826</sup> <sup>27:827</sup> <sup>27:828</sup> <sup>27:829</sup> <sup>27:830</sup> <sup>27:831</sup> <sup>27:832</sup> <sup>27:833</sup> <sup>27:834</sup> <sup>27:835</sup> <sup>27:836</sup> <sup>27:837</sup> <sup>27:838</sup> <sup>27:839</sup> <sup>27:840</sup> <sup>27:841</sup> <sup>27:842</sup> <sup>27:843</sup> <sup>27:844</sup> <sup>27:845</sup> <sup>27:846</sup> <sup>27:847</sup> <sup>27:848</sup> <sup>27:849</sup> <sup>27:850</sup> <sup>27:851</sup> <sup>27:852</sup> <sup>27:853</sup> <sup>27:854</sup> <sup>27:855</sup> <sup>27:856</sup> <sup>27:857</sup> <sup>27:858</sup> <sup>27:859</sup> <sup>27:860</sup> <sup>27:861</sup> <sup>27:862</sup> <sup>27:863</sup> <sup>27:864</sup> <sup>27:865</sup> <sup>27:866</sup> <sup>27:867</sup> <sup>27:868</sup> <sup>27:869</sup> <sup>27:870</sup> <sup>27:871</sup> <sup>27:872</sup> <sup>27:873</sup> <sup>27:874</sup> <sup>27:875</sup> <sup>27:876</sup> <sup>27:877</sup> <sup>27:878</sup> <sup>27:879</sup> <sup>27:880</sup> <sup>27:881</sup> <sup>27:882</sup> <sup>27:883</sup> <sup>27:884</sup> <sup>27:885</sup> <sup>27:886</sup> <sup>27:887</sup> <sup>27:888</sup> <sup>27:889</sup> <sup>27:890</sup> <sup>27:891</sup> <sup>27:892</sup> <sup>27:893</sup> <sup>27:894</sup> <sup>27:895</sup> <sup>27:896</sup> <sup>27:897</sup> <sup>27:898</sup> <sup>27:899</sup> <sup>27:900</sup> <sup>27:901</sup> <sup>27:902</sup> <sup>27:903</sup> <sup>27:904</sup> <sup>27:905</sup> <sup>27:906</sup> <sup>27:907</sup> <sup>27:908</sup> <sup>27:909</sup> <sup>27:910</sup> <sup>27:911</sup> <sup>27:912</sup> <sup>27:913</sup> <sup>27:914</sup> <sup>27:915</sup> <sup>27:916</sup> <sup>27:917</sup> <sup>27:918</sup> <sup>27:919</sup> <sup>27:920</sup> <sup>27:921</sup> <sup>27:922</sup> <sup>27:923</sup> <sup>27:924</sup> <sup>27:925</sup> <sup>27:926</sup> <sup>27:927</sup> <sup>27:928</sup> <sup>27:929</sup> <sup>27:930</sup> <sup>27:931</sup> <sup>27:932</sup> <sup>27:933</sup> <sup>27:934</sup> <sup>27:935</sup> <sup>27:936</sup> <sup>27:937</sup> <sup>27:938</sup> <sup>27:939</sup> <sup>27:940</sup> <sup>27:941</sup> <sup>27:942</sup> <sup>27:943</sup> <sup>27:944</sup> <sup>27:945</sup> <sup>27:946</sup> <sup>27:947</sup> <sup>27:948</sup> <sup>27:949</sup> <sup>27:950</sup> <sup>27:951</sup> <sup>27:952</sup> <sup>27:953</sup> <sup>27:954</sup> <sup>27:955</sup> <sup>27:956</sup> <sup>27:957</sup> <sup>27:958</sup> <sup>27:959</sup> <sup>27:960</sup> <sup>27:961</sup> <sup>27:962</sup> <sup>27:963</sup> <sup>27:964</sup> <sup>27:965</sup> <sup>27:966</sup> <sup>27:967</sup> <sup>27:968</sup> <sup>27:969</sup> <sup>27:970</sup> <sup>27:971</sup> <sup>27:972</sup> <sup>27:973</sup> <sup>27:974</sup> <sup>27:975</sup> <sup>27:976</sup> <sup>27:977</sup> <sup>27:978</sup> <sup>27:979</sup> <sup>27:980</sup> <sup>27:981</sup> <sup>27:982</sup> <sup>27:983</sup> <sup>27:984</sup> <sup>27:985</sup> <sup>27:986</sup> <sup>27:987</sup> <sup>27:988</sup> <sup>27:989</sup> <sup>27:990</sup> <sup>27:991</sup> <sup>27:992</sup> <sup>27:993</sup> <sup>27:994</sup> <sup>27:995</sup> <sup>27:996</sup> <sup>27:997</sup> <sup>27:998</sup> <sup>27:999</sup> <sup>27:1000</sup> <sup>27:1001</sup> <sup>27:1002</sup> <sup>27:1003</sup> <sup>27:1004</sup> <sup>27:1005</sup> <sup>27:1006</sup> <sup>27:1007</sup> <sup>27:1008</sup> <sup>27:1009</sup> <sup>27:1010</sup> <sup>27:1011</sup> <sup>27:1012</sup> <sup>27:1013</sup> <sup>27:1014</sup> <sup>27:1015</sup> <sup>27:1016</sup> <sup>27:1017</sup> <sup>27:1018</sup> <sup>27:1019</sup> <sup>27:1020</sup> <sup>27:1021</sup> <sup>27:1022</sup> <sup>27:1023</sup> <sup>27:1024</sup> <sup>27:1025</sup> <sup>27:1026</sup> <sup>27:1027</sup> <sup>27:1028</sup> <sup>27:1029</sup> <sup>27:1030</sup> <sup>27:1031</sup> <sup>27:103</sup>

17 परन्तु याकूब वहाँ से निकलकर [2][2][2][2][2][2] को गया, और वहाँ अपने लिये एक घर, और पशुओं के लिये झोंपड़े बनाए। इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत पड़ा।

[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2]

18 और याकूब जो पद्मनराम से आया था, उसने कनान देश के शेकेम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुँचकर नगर के सामने डेरे खड़े किए।

19 और भूमि के जिस खण्ड पर उसने अपना तम्बू खड़ा किया, उसको उसने शेकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों में मोल लिया। ([2][2][2]. 4:5, [2][2][2][2][2]. 7:16)

20 और वहाँ उसने एक वेदी बनाकर उसका नाम [2][2]-[2][2][2][2]-[2][2][2][2][2][2] रखा।

## 34

[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]

1 एक दिन लिआ की बेटी दीना, जो याकूब से उत्पन्न हुई थी, उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली।

2 तब उस देश के प्रधान हिब्बी हमोर के पुत्र शेकेम ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ कुकर्म करके उसको भ्रष्ट कर डाला।

3 तब उसका मन याकूब की बेटी दीना से लग गया, और उसने उस कन्या से प्रेम की बातें की, और उससे प्रेम करने लगा।

4 अतः शेकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, “मुझे इस लड़की को मेरी पत्नी होने के लिये दिला दे।”

5 और याकूब ने सुना कि शेकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है, पर उसके पुत्र उस समय पशुओं के संग मैदान में थे, इसलिए वह उनके आने तक चुप रहा।

6 तब शेकेम का पिता हमोर निकलकर याकूब से बातचीत करने के लिये उसके पास गया।

7 याकूब के पुत्र यह सुनते ही मैदान से बहुत उदास और क्रोधित होकर आए; क्योंकि शेकेम ने याकूब की बेटी के साथ कुकर्म करके इस्राएल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था, जिसका करना अनुचित था।

8 हमोर ने उन सबसे कहा, “मेरे पुत्र शेकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है, इसलिए उसे उसकी पत्नी होने के लिये उसको दे दो।

9 और हमारे साथ ब्याह किया करो; अपनी बेटियाँ हमको दिया करो, और हमारी बेटियों को आप लिया करो।

10 और हमारे संग बसे रहो; और यह देश तुम्हारे सामने पड़ा है; इसमें रहकर लेन-देन करो, और इसकी भूमि को अपने लिये ले लो।”

11 और शेकेम ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा, “यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि हो, तो जो कुछ तुम मुझसे कहो, वह मैं दूँगा।

12 तुम मुझसे कितना ही मूल्य या बदला क्यों न माँगो, तो भी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूँगा; परन्तु उस कन्या को पत्नी होने के लिये मुझे दो।”

13 तब यह सोचकर कि शेकेम ने हमारी बहन दीना को अशुद्ध किया है, [2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]\*,

14 “हम ऐसा काम नहीं कर सकते कि किसी खतनारहित पुरुष को अपनी बहन दें; क्योंकि इससे हमारी नामधराई होगी।

15 इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे कि हमारे समान तुम में से हर एक पुरुष का खतना किया जाए।

16 तब हम अपनी बेटियाँ तुम्हें ब्याह देंगे, और तुम्हारी बेटियाँ ब्याह लेंगे, और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे, और हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाएँगे।

17 पर यदि तुम हमारी बात न मानकर अपना खतना न कराओगे, तो हम अपनी लड़की को लेकर यहाँ से चले जाएँगे।”

18 उसकी इस बात पर हमोर और उसका पुत्र शेकेम प्रसन्न हुए।

19 और वह जवान जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता था, इस काम को करने में उसने विलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घराने में अधिक प्रतिष्ठित था।

20 इसलिए हमोर और उसका पुत्र शेकेम अपने नगर के फाटक के निकट जाकर नगरवासियों को यह समझाने लगे;

21 “वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहना चाहते हैं; अतः उन्हें इस देश में रहकर लेन-देन करने दो; देखो, यह देश उनके लिये भी बहुत है; फिर हम लोग उनकी बेटियों को ब्याह लें, और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें।

22 वे लोग केवल इस बात पर हमारे संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं कि उनके समान हमारे सब पुरुषों का भी खतना किया जाए।

‡ 33:20 [2][2]-[2][2][2][2][2]-[2][2][2][2][2][2]: अर्थात् परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर शक्तिशाली है \* 34:13 [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2]...[2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2]: जो “नहीं होना चाहिए था” और जिसे फिर से ठीक नहीं किया जा सकता उस अपराध की क्रोध-अग्नि से वे जल रहे थे। फिर भी वे परमशक्ति की उपस्थिति में हैं और इस कारण, वे छल का सहारा लेते हैं।

23 क्या उनकी भेड़-बकरियाँ, और गाय-बैल वरन् उनके सारे पशु और धन-सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी? इतना ही करें कि हम लोग उनकी बात मान लें, तो वे हमारे संग रहेंगे।”

24 इसलिए जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे, उन सभी ने हमोर की और उसके पुत्र शेकेम की बात मानी; और हर एक पुरुष का खतना किया गया, जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे।

25 तीसरे दिन, जब वे लोग पीड़ित पड़े थे, तब ऐसा हुआ कि शिमोन और लेवी नामक याकूब के दो पुत्रों ने, जो दीना के भाई थे, अपनी-अपनी तलवार ले उस नगर में निधड़क घुसकर सब पुरुषों को घात किया।

26 हमोर और उसके पुत्र शेकेम को उन्होंने तलवार से मार डाला, और दीना को शेकेम के घर से निकाल ले गए।

27 याकूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़कर नगर को इसलिए लूट लिया कि उसमें उनकी बहन अशुद्ध की गई थी।

28 उन्होंने भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और गदहे, और नगर और मैदान में जितना धन था ले लिया।

29 उस सब को, और उनके बाल-बच्चों, और स्त्रियों को भी हर ले गए, वरन् घर-घर में जो कुछ था, उसको भी उन्होंने लूट लिया।

30 तब याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, “तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मेरे प्रति घृणा उत्पन्न कराई है, इससे [222] [22] [2222] [2222] [222] [2222] [22], क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं, इसलिए अब वे इकट्ठे होकर मुझ पर चढ़ेंगे, और मुझे मार डालेंगे, तो मैं अपने घराने समेत सत्यानाश हो जाऊँगा।”

31 उन्होंने कहा, “क्या वह हमारी बहन के साथ वेश्या के समान बर्ताव करे?”

## 35

[22222] [22] [22222] [22222] [2222]

1 तब परमेश्वर ने याकूब से कहा, “यहाँ से निकलकर बेटेल को जा, और वहीं रह; और वहाँ परमेश्वर के लिये वेदी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया, जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था।”

† 34:30 [222] [22] [22222] [22222] [222] [2222] [22]: याकूब के सब पुत्रों ने मिलकर नगर को लूट लिया था। उन्होंने उनके सब पशुओं और धन को ले लिया और उनकी पत्नियों और बाल-बच्चों को बन्दी बना लिया। याकूब इस हिंसात्मक कार्य से बहुत परेशान था, जो उसकी नीति और उसकी दयालुता के विपरीत था। \* 35:2 [2222] [22222]: जो पराए लोगों या परदेश के देवता थे। इनमें वे देवता भी थे जिन्हें राहेल ने छिपाकर रखे थे।

† 35:3 [222] [222222222] [22] [22222] [22] [2222] [222222222]: जब वह दुविधा में और संकट में था तो परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आता है। वह उसे उस स्थान का स्मरण कराता है जहाँ वह पहले प्रगट हुआ था और उसे वहाँ एक वेदी बनाने का निर्देश देता है। ‡ 35:7 [222222222]: अर्थात् “बेटेल का परमेश्वर”

§ 35:10 [22] [222222222] [222222222]: नया नाम दिया जाना समुचित रूप से आत्मिक जीवन के नए किए जाने को व्यक्त करता है।

2 तब याकूब ने अपने घराने से, और उन सबसे भी जो उसके संग थे, कहा, “तुम्हारे बीच में जो [22222] [22222222] हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने-अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो;

3 और आओ, हम यहाँ से निकलकर बेटेल को जाएँ; वहाँ [2222] [222222222222] [22] [22222] [22] [22222] [2222222222]†, जिसने संकट के दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं चलता था, उसमें मेरे संग रहा।”

4 इसलिए जितने पराए देवता उनके पास थे, और जितने कुण्डल उनके कानों में थे, उन सभी को उन्होंने याकूब को दिया; और उसने उनको उस बांज वृक्ष के नीचे, जो शेकेम के पास है, गाड़ दिया।

5 तब उन्होंने कूच किया; और उनके चारों ओर के नगर निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया, कि उन्होंने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया।

6 याकूब उन सब समेत, जो उसके संग थे, कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेटेल भी कहलाता है।

7 वहाँ उसने एक वेदी बनाई, और उस स्थान का नाम [222222222222]‡ रखा; क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर वहीं प्रगट हुआ था।

8 और रिबका की दूध पिलानेहारी दाई दबोरा मर गई, और बेटेल के बांज वृक्ष के तले उसको मिट्टी दी गई, और उस बांज वृक्ष का नाम अल्लोनबक्कूत रखा गया।

9 फिर याकूब के पद्मनराम से आने के पश्चात् परमेश्वर ने दूसरी बार उसको दर्शन देकर आशीष दी।

10 और परमेश्वर ने उससे कहा, “अब तक तो तेरा नाम याकूब रहा है; पर आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा, [22] [222222222222] [222222222222]§” इस प्रकार उसने उसका नाम इस्राएल रखा।

11 फिर परमेश्वर ने उससे कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। तू फूले-फले और बढ़े; और तुझ से एक जाति वरन् जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।

12 और जो देश मैंने अब्राहम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूँ, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूँगा।”



13 रूएल के ये पुत्र हुए; अर्थात् नहत, जेरह, शम्मा, और मिज्जा एसाव की पत्नी बासमत के वंश में ये ही हुए।

14 ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी, और सिबोन की नातिन और अना की बेटी थी, उसके ये पुत्र हुए: अर्थात् उसने एसाव के द्वारा यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया।

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

15 एसाववंशियों के अधिपति ये हुए: अर्थात् एसाव के जेठे एलीपज के वंश में से तेमान अधिपति, ओमार अधिपति, सपो अधिपति, कनज अधिपति,

16 कोरह अधिपति, गाताम अधिपति, अमालेक अधिपति एलीपज वंशियों में से, एदोम देश में ये ही अधिपति हुए: और ये ही आदा के वंश में हुए।

17 एसाव के पुत्र रूएल के वंश में ये हुए; अर्थात् नहत अधिपति, जेरह अधिपति, शम्मा अधिपति, मिज्जा अधिपति रूएलवंशियों में से, एदोम देश में ये ही अधिपति हुए; और ये ही एसाव की पत्नी बासमत के वंश में हुए।

18 एसाव की पत्नी ओहोलीबामा के वंश में ये हुए; अर्थात् यूश अधिपति, यालाम अधिपति, कोरह अधिपति, अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी थी उसके वंश में ये ही हुए।

19 एसाव जो एदोम भी कहलाता है, उसके वंश ये ही हैं, और उनके अधिपति भी ये ही हुए।

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

20 सेईर जो होरी नामक जाति का था, उसके ये पुत्र उस देश में पहले से रहते थे; अर्थात् लोतान, शोबाल, सिबोन, अना,

21 दीशोन, एसेर, और दीशान: एदोम देश में सेईर के ये ही होरी जातिवाले अधिपति हुए।

22 लोतान के पुत्र, होरी, और हेमाम हुए; और लोतान की बहन तिम्ना थी।

23 शोबाल के ये पुत्र हुए: अर्थात् आल्वान, मानहत, एबाल, शपो, और ओनाम।

24 और सीदोन के ये पुत्र हुए: अय्या, और अना; यह वही अना है जिसको जंगल में अपने पिता सिबोन के गदहों को चराते-चराते गरम पानी के झरने मिले।

25 और अना के दीशोन नामक पुत्र हुआ, और उसी अना के ओहोलीबामा नामक बेटी हुई।

26 दीशोन के ये पुत्र हुए: हेमदान, एशबान, यित्रान, और करान।

27 एसेर के ये पुत्र हुए: बिल्हान, जावान, और अकान।

28 दीशान के ये पुत्र हुए: ऊस, और अरान।

29 होरियों के अधिपति ये हुए: लोतान अधिपति, शोबाल अधिपति, सिबोन अधिपति, अना अधिपति,

30 दीशोन अधिपति, एसेर अधिपति, दीशान अधिपति; सेईर देश में होरी जातिवाले ये ही अधिपति हुए।

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

31 फिर जब इस्राएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था, तब भी एदोम के देश में ये राजा हुए;

32 बोर के पुत्र बेला ने एदोम में राज्य किया, और उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा है।

33 बेला के मरने पर, बोस्रानिवासी जेरह का पुत्र योबाब उसके स्थान पर राजा हुआ।

34 योबाब के मरने पर, तेमानियों के देश का निवासी हूशाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

35 फिर हूशाम के मरने पर, बदद का पुत्र हदद उसके स्थान पर राजा हुआ यह वही है जिसने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार लिया, और उसकी राजधानी का नाम अबीत है।

36 हदद के मरने पर, मस्रेकावासी सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ।

37 फिर सम्ला के मरने पर, शाऊल जो महानद के तटवाले रहोबोत नगर का था, वह उसके स्थान पर राजा हुआ।

38 शाऊल के मरने पर, अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ।

39 अकबोर के पुत्र बाल्हानान के मरने पर, हदर उसके स्थान पर राजा हुआ और उसकी राजधानी का नाम पाऊ है; और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल है, जो मेज़ाहाब की नातिन और मत्रेद की बेटी थी।

40 फिर एसाववंशियों के अधिपतियों के कुलों, और स्थानों के अनुसार उनके नाम ये हैं तिम्ना अधिपति, अल्व्वा अधिपति, यतेत अधिपति,

41 ओहोलीबामा अधिपति, एला अधिपति, पीनोन अधिपति,

42 कनज अधिपति, तेमान अधिपति, मिबसार अधिपति,

43 मग्दीएल अधिपति, ईराम अधिपति एदोमवंशियों ने जो देश अपना कर लिया था, उसके निवास-स्थानों में उनके ये ही अधिपति हुए; और एदोमी जाति का मूलपुरुष एसाव है।

## 37

११११११ ११ १११११ ११११

1 याकूब तो कनान देश में रहता था, जहाँ उसका पिता परदेशी होकर रहा था।

2 और याकूब के वंश का वृत्तान्त यह है: यूसुफ सत्रह वर्ष का होकर अपने भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चराता था; और वह लड़का अपने पिता की पत्नी बिल्हा, और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था; और उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता के पास पहुँचाया करता था।

3 और इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़कर यूसुफ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था: और उसने उसके लिये रंग-बिरंगा अंगरखा बनवाया।

4 परन्तु जब उसके भाइयों ने देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक से बात भी नहीं करते थे।

११११११ ११ १११११११

5 ११११११ ११ ११ १११११११ १११११\* , और अपने भाइयों से उसका वर्णन किया; तब वे उससे और भी द्वेष करने लगे।

6 उसने उनसे कहा, “जो स्वप्न मैंने देखा है, उसे सुनो

7 हम लोग खेत में पूले बाँध रहे हैं, और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया।”

8 तब उसके भाइयों ने उससे कहा, “क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा? या क्या सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा?” इसलिए वे उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उससे और भी अधिक बैर करने लगे।

9 फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका भी यह वर्णन किया, “सुनो, मैंने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।”

10 इस स्वप्न का उसने अपने पिता, और भाइयों से वर्णन किया; तब उसके पिता ने उसको डाँटकर कहा, “यह कैसा स्वप्न है जो तूने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरकर दण्डवत् करेंगे?”

11 उसके भाई तो उससे डाह करते थे; पर उसके पिता ने उसके उस वचन को स्मरण रखा।

12 उसके भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराने के लिये शेकेम को गए।

13 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, “तेरे भाई तो शेकेम ही में भेड़-बकरी चरा रहे होंगे, इसलिए जा, मैं तुझे उनके पास भेजता हूँ।” उसने उससे कहा, “जो आज्ञा मैं हाजिर हूँ।”

14 उसने उससे कहा, “जा, अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल देख आ कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ।” अतः उसने उसको हेब्रोन की तराई में विदा कर दिया, और वह शेकेम में आया।

15 और किसी मनुष्य ने उसको मैदान में इधर-उधर भटकते हुए पाकर उससे पूछा, “तू क्या ढूँढता है?”

16 उसने कहा, “मैं तो अपने भाइयों को ढूँढता हूँ कृपा करके मुझे बता कि वे भेड़-बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?”

17 उस मनुष्य ने कहा, “वे तो यहाँ से चले गए हैं; और मैंने उनको यह कहते सुना, ‘आओ, हम दोतान को चलें।’” इसलिए यूसुफ अपने भाइयों के पीछे चला, और उन्हें दोतान में पाया।

११११११ ११ १११११११ ११ १११११ १११११ १११११

18 जैसे ही उन्होंने उसे दूर से आते देखा, तो उसके निकट आने के पहले ही उसे मार डालने की युक्ति की।

19 और वे आपस में कहने लगे, “देखो, वह स्वप्न देखनेवाला आ रहा है।

20 इसलिए आओ, हम उसको घात करके किसी गड्ढे में डाल दें, और यह कह देंगे, कि कोई जंगली पशु उसको खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का क्या फल होगा।”

21 यह सुनकर रूबेन ने उसको उनके हाथ से बचाने की मनसा से कहा, “हम उसको प्राण से तो न मारें।”

22 फिर रूबेन ने उनसे कहा, “लहू मत बहाओ, उसको जंगल के इस गड्ढे में डाल दो, और उस पर हाथ मत उठाओ।” वह उसको उनके हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुँचाना चाहता था।

23 इसलिए ऐसा हुआ कि जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा तब उन्होंने उसका रंग-बिरंगा अंगरखा, जिसे वह पहने हुए था, उतार लिया।

24 और यूसुफ को उठाकर गड्ढे में डाल दिया। वह गड्ढा सूखा था और उसमें कुछ जल न था।

25 तब वे रोटी खाने को बैठ गए; और आँखें उठाकर क्या देखा कि इश्माएलियों का एक दल ऊँटों पर सुगन्ध-द्रव्य, बलसान, और गन्धरस लादे हुए, गिलाद से मिस्र को चला जा रहा है।

\* 37:5 ११११११ ११ ११ १११११११ १११११: यूसुफ के सपनों ने उसके भाइयों के मन में द्वेष को उत्पन्न कर दिया। अपने स्वप्नों के विषय में अपने भाइयों को स्पष्ट रूप से बताना, उसकी निष्कल आत्मा को दर्शाती है।

26 तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, “अपने भाई को घात करने और उसका खून छिपाने से क्या लाभ होगा?

27 आओ, हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें, और अपना हाथ उस पर न उठाएँ, क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी ही हड्डी और माँस है।” और उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली।

28 तब मिद्यानी व्यापारी उधर से होकर उनके पास पहुँचे। अतः यूसुफ के भाइयों ने उसको उस गड्डे में से खींचकर बाहर निकाला, और इश्माएलियों के हाथ चाँदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया; और वे यूसुफ को मिस्र में ले गए। (27:27-28) 7:9)

29 रूबेन ने गड्डे पर लौटकर क्या देखा कि यूसुफ गड्डे में नहीं है; इसलिए उसने अपने वस्त्र फाड़े,

30 और अपने भाइयों के पास लौटकर कहने लगा, “लडका तो नहीं है; अब मैं किधर जाऊँ?”

31 तब उन्होंने 27:27-28 लिया, और एक बकरे को मारकर उसके लहू में उसे डुबा दिया।

32 और उन्होंने उस रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजकर यह सन्देश दिया; “यह हमको मिला है, अतः देखकर पहचान ले कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं।”

33 उसने उसको पहचान लिया, और कहा, “हाँ यह मेरे ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है; निःसन्देह यूसुफ फाड़ डाला गया है।”

34 तब याकूब ने अपने वस्त्र फाड़े और कमर में टाट लपेटा, और अपने पुत्र के लिये बहुत दिनों तक विलाप करता रहा।

35 और उसके सब बेटे-बेटियों ने उसको शान्ति देने का यत्न किया; पर उसको शान्ति न मिली; और वह यही कहता रहा, “मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊँगा।” इस प्रकार उसका पिता उसके लिये रोता ही रहा।

36 इस बीच मिद्यानियों ने यूसुफ को मिस्र में ले जाकर पोतीपर नामक, फ़िरौन के एक हाकिम, और अंगरक्षकों के प्रधान, के हाथ बेच डाला।

### 38

27:27-28

1 उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया, और हीरा नामक एक अदुल्लामवासी पुरुष के पास डेरा किया।

2 वहाँ यहूदा ने शूआ नामक एक कनानी पुरुष की बेटी को देखा; और उससे विवाह करके उसके पास गया।

3 वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहूदा ने उसका नाम एर रखा।

4 और वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ; और उसका नाम ओनान रखा गया।

5 फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शेला रखा गया; और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा कजीब में रहता था।

6 और यहूदा ने तामार नामक एक स्त्री से अपने जेठे एर का विवाह कर दिया।

7 परन्तु यहूदा का वह जेठा एर यहोवा के लेखे में दुष्ट था, इसलिए यहोवा ने उसको मार डाला।

8 तब यहूदा ने ओनान से कहा, “अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न कर।”

9 ओनान तो जानता था कि सन्तान मेरी न ठहरेगी; इसलिए ऐसा हुआ कि जब वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उसने भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया, जिससे ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले।

10 यह काम जो उसने किया उससे यहोवा अप्रसन्न हुआ और उसने उसको भी मार डाला।

11 तब यहूदा ने इस डर के मारे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों के समान शेला भी मरे, अपनी बहू तामार से कहा, “जब तक मेरा पुत्र शेला सयाना न हो जाए तब तक अपने पिता के घर में विधवा ही बैठी रह।” इसलिए तामार अपने पिता के घर में जाकर रहने लगी।

12 बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी, वह मर गई; फिर यहूदा शोक के दिन बीतने पर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतरनेवालों के पास तिम्नाह को गया।

13 और तामार को यह समाचार मिला, “तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लिये तिम्नाह को जा रहा है।”

14 तब उसने यह सोचकर कि शेला सयाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना विधवापन का पहरावा उतारा और घूँघट डालकर अपने को ढाँप लिया, और एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाह के मार्ग में है, जा बैठी।

† 37:31 27:27-28: उसके भाई अपना अपराध छिपाने की युक्ति बनाने लगे; और यूसुफ को मिस्र में बेच दिया। “यूसुफ फाड़ डाला गया” उस खून से सने अंगरखे को देखकर याकूब को तुरन्त निश्चय हो गया कि यूसुफ को कोई जंगली जानवर खा गया है।



15 जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुँह ढाँपे हुए थी।

16 वह मार्ग से उसकी ओर फिरा, और उससे कहने लगा, “मुझे अपने पास आने दे,” (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि वह उसकी बहू है।) और वह कहने लगी, “यदि मैं तुझे अपने पास आने दूँ, तो तू मुझे क्या देगा?”

17 उसने कहा, “मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूँगा।” तब उसने कहा, “भला उसके भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा?”

18 उसने पूछा, “मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊँ?” उसने कहा, “अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी।” तब उसने उसको वे वस्तुएँ दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई।

19 तब वह उठकर चली गई, और अपना घूँघट उतारकर अपना विधवापन का पहरावा फिर पहन लिया।

20 तब यहूदा ने बकरी का बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया कि वह रेहन रखी हुई वस्तुएँ उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको न मिली।

21 तब उसने वहाँ के लोगों से पूछा, “वह देवदासी जो एनैम में मार्ग की एक ओर बैठी थी, कहाँ है?” उन्होंने कहा, “यहाँ तो कोई देवदासी न थी।”

22 इसलिए उसने यहूदा के पास लौटकर कहा, “मुझे वह नहीं मिली; और उस स्थान के लोगों ने कहा, ‘यहाँ तो कोई देवदासी न थी।’”

23 तब यहूदा ने कहा, “अच्छा, वह बन्धक उसी के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएँगे; देख, मैंने बकरी का यह बच्चा भेज दिया था, पर वह तुझे नहीं मिली।”

24 लगभग तीन महीने के बाद यहूदा को यह समाचार मिला, “तेरी बहू तामार ने व्यभिचार किया है; वरन् वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है।” तब यहूदा ने कहा, “उसको बाहर ले आओ कि वह जलाई जाए।”

25 जब उसे बाहर निकाला जा रहा था, तब उसने, अपने ससुर के पास यह कहला भेजा, “जिस पुरुष की ये वस्तुएँ हैं, उसी से मैं गर्भवती हूँ,” फिर उसने यह भी कहलाया, “पहचान तो सही कि यह मुहर, और बाजूबन्द, और छड़ी किसकी हैं।”

26 यहूदा ने उन्हें पहचानकर कहा, “**22 22 222222 22 22222 22\***; क्योंकि मैंने उसका अपने पुत्र शेला से विवाह न किया।” और उसने उससे फिर कभी प्रसंग न किया।

27 जब उसके जनने का समय आया, तब यह जान पड़ा कि उसके गर्भ में जुड़वे बच्चे हैं।

28 और जब वह जनने लगी तब एक बालक का हाथ बाहर आया, और दाई ने लाल सूत लेकर उसके हाथ में यह कहते हुए बाँध दिया, “पहले यही उत्पन्न हुआ।”

29 जब उसने हाथ समेट लिया, तब उसका भाई उत्पन्न हो गया। तब उस दाई ने कहा, “तू क्यों बरबस निकल आया है?” इसलिए उसका नाम पेरेस रखा गया।

30 पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ, और उसका नाम जेरह रखा गया।

## 39

**2222222 22 22 222222**

1 जब यूसुफ मिस्र में पहुँचाया गया, तब पोतीपर नामक एक मिस्री ने, जो फ़िरौन का हाकिम, और अंगरक्षकों का प्रधान था, उसको इश्माएलियों के हाथ से जो उसे वहाँ ले गए थे, मोल लिया।

2 यूसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और **222222 22222 2222 22; 222222 22 2222 222222 22 2222\***। **(2222222. 7:9)**

3 और यूसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है। **(2222222. 7:9)**

4 तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया गया; फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बनाकर अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया।

5 जब से उसने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था, सब पर यहोवा की आशीष होने लगी।

6 इसलिए उसने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहाँ तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था।

यूसुफ सुन्दर और रूपवान था।

\* **38:26 22 22 222222 22 22222 22:** इस विषय में तामार यहूदा की तुलना में कम दोषी थी। क्योंकि यहूदा ने वासना में बहकर व्यभिचार किया था और उसके द्वारा अपने पुत्र शेला से तामार का विवाह नहीं करने के कारण तामार ने ऐसा किया था। \* **39:2 222222 22222 2222 22; 222222 22 2222 222222 22 2222:** यूसुफ धरेलू नौकर था। “और उसके स्वामी ने देखा।” वह सफलता जो यूसुफ के कार्यों में प्रगट होती थी इतनी प्रभावशाली थी कि दर्शाती थी कि परमेश्वर यहोवा उसके साथ है।



9 तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को यह बताने लगा: “मैंने स्वप्न में देखा, कि मेरे सामने एक दाखलता है;

10 और उस दाखलता में तीन डालियाँ हैं; और उसमें मानो कलियाँ लगीं हैं, और वे फूलीं और उसके गुच्छों में दाख लगकर पक गई।

11 और फ़िरौन का कटोरा मेरे हाथ में था; और मैंने उन दाखों को लेकर फ़िरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरे को फ़िरौन के हाथ में दिया।”

12 यूसुफ ने उससे कहा, “इसका फल यह है: तीन डालियों का अर्थ तीन दिन हैं

13 इसलिए अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर ऊँचा करेगा, और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा, और तू पहले के समान फ़िरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर दिया करेगा।

14 अतः जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण करना, और मुझ पर कृपा करके फ़िरौन से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से मुझे छुड़वा देना।

15 क्योंकि सचमुच इब्रानियों के देश से मुझे चुराकर लाया गया है, और यहाँ भी मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में डाला जाऊँ।”

16 यह देखकर कि उसके स्वप्न का फल अच्छा निकला, पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ से कहा, “मैंने भी स्वप्न देखा है, वह यह है: मैंने देखा कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं

17 और ऊपर की टोकरी में फ़िरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएँ हैं; और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं।”

18 यूसुफ ने कहा, “इसका फल यह है: तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है।

19 अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा, और पक्षी तेरे माँस को नोच-नोच कर खाएँगे।”

20 और तीसरे दिन फ़िरौन का जन्मदिन था, उसने अपने सब कर्मचारियों को भोज दिया, और उनमें से पिलानेहारों के प्रधान, और पकानेहारों के प्रधान दोनों को बन्दीगृह से निकलवाया।

21 पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से नियुक्त किया, और वह फ़िरौन के हाथ में कटोरा देने लगा।

22 पर पकानेहारों के प्रधान को उसने टंगवा दिया, जैसा कि यूसुफ ने उनके स्वप्नों का फल उनसे कहा था।

23 फिर भी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रखा; परन्तु [22] [22] [22]†।

## 41

[22] [22] [22] [22] [22]

1 पूरे दो वर्ष के बीतने पर फ़िरौन ने यह स्वप्न देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है।

2 और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी-मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं।

3 और, क्या देखा कि उनके पीछे और सात गायें, जो कुरूप और दुर्बल हैं, नदी से निकलीं; और दूसरी गायों के निकट नदी के तट पर जा खड़ी हुईं।

4 तब ये कुरूप और दुर्बल गायें उन सात सुन्दर और मोटी-मोटी गायों को खा गईं। तब फ़िरौन जाग उठा।

5 और वह फिर सो गया और दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठल में से सात मोटी और अच्छी-अच्छी बालें निकलीं।

6 और, क्या देखा कि उनके पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से मुड़ाई हुई निकलीं।

7 और इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया। तब फ़िरौन जागा, और उसे मालूम हुआ कि यह स्वप्न ही था।

8 भोर को फ़िरौन का [22] [22] [22] [22] [22]\*; और उसने मिस्र के सब ज्योतिषियों, और पंडितों को बुलवा भेजा; और उनको अपने स्वप्न बताए; पर उनमें से कोई भी उनका फल फ़िरौन को न बता सका।

[22] [22]

9 तब पिलानेहारों का प्रधान फ़िरौन से बोल उठा, “मेरे अपराध आज मुझे स्मरण आए:

10 जब फ़िरौन अपने दासों से क्रोधित हुआ था, और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को कैद कराके अंगरक्षकों के प्रधान के घर के बन्दीगृह में डाल दिया था;

11 तब हम दोनों ने एक ही रात में, अपने-अपने होनहार के अनुसार स्वप्न देखा;

12 और वहाँ हमारे साथ एक इब्री जवान था, जो अंगरक्षकों के प्रधान का दास था; अतः हमने उसको बताया, और उसने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा, हम में से एक-एक के स्वप्न का फल उसने बता दिया।

13 और जैसा-जैसा फल उसने हम से कहा था, वैसा ही हुआ भी, अर्थात् मुझ को तो मेरा पद फिर मिला, पर वह फांसी पर लटकाया गया।”

† 40:23 [22] [22] [22]: पिलानेहारे ने यूसुफ को स्मरण नहीं रखा। इस संसार में ऐसा अक्सर होता है। परन्तु एक जो स्वर्ग में है, वह उसे नहीं भूला। उसने उसे उचित समय में छुड़ाया। \* 41:8 [22] [22] [22] [22] [22]: बन्दीगृह में उन अधिकारियों के समान, वह इस एहसास से छुटकारा नहीं पा सका कि इन दोनों स्वप्न का सम्बंध भविष्य की किसी घटना से है।









वश में करके अपने दास बनाए, और हमारे गदहों को भी छीन ले।”

19 तब वे यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट जाकर घर के द्वार पर इस प्रकार कहने लगे,

20 “हे हमारे प्रभु, जब हम पहली बार अन्न मोल लेने को आए थे,

21 तब हमने सराय में पहुँचकर अपने बोरों को खोला, तो क्या देखा, कि एक-एक जन का पूरा-पूरा रुपया उसके बोरे के मुँह पर रखा है; इसलिए हम उसको अपने साथ फिर लेते आए हैं।

22 और दूसरा रुपया भी भोजनवस्तु मोल लेने के लिये लाए हैं; हम नहीं जानते कि हमारा रुपया हमारे बोरों में किसने रख दिया था।”

23 उसने कहा, “तुम्हारा कुशल हो, मत डरो: तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है, उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में धन दिया होगा, तुम्हारा रुपया तो मुझ को मिल गया था।” फिर उसने शिमोन को निकालकर उनके संग कर दिया।

24 तब उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में ले जाकर जल दिया, तब उन्होंने अपने पाँवों को धोया; फिर उसने उनके गदहों के लिये चारा दिया।

25 तब यह सुनकर, कि आज हमको यहीं भोजन करना होगा, उन्होंने यूसुफ के आने के समय तक, अर्थात् दोपहर तक, उस भेंट को इकट्ठा कर रखा।

26 जब यूसुफ घर आया तब वे उस भेंट को, जो उनके हाथ में थी, उसके सम्मुख घर में ले गए, और भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत् किया।

27 उसने उनका कुशल पूछा और कहा, “क्या तुम्हारा बूढ़ा पिता, जिसकी तुम ने चर्चा की थी, कुशल से है? क्या वह अब तक जीवित है?”

28 उन्होंने कहा, “हाँ तेरा दास हमारा पिता कुशल से है और अब तक जीवित है।” तब उन्होंने सिर झुकाकर फिर दण्डवत् किया।

29 तब उसने आँखें उठाकर और अपने सगे भाई बिन्यामीन को देखकर पूछा, “क्या तुम्हारा वह छोटा भाई, जिसकी चर्चा तुम ने मुझसे की थी, यही है?” फिर उसने कहा, “हे मेरे पुत्र, परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे।”

30 तब अपने भाई के स्नेह से मन भर आने के कारण और यह सोचकर कि मैं कहाँ जाकर रोऊँ, यूसुफ तुरन्त अपनी कोठरी में गया, और वहाँ रो पड़ा।

31 फिर अपना मुँह धोकर निकल आया, और अपने को शान्त कर कहा, “भोजन परोसो।”

32 तब उन्होंने उसके लिये तो अलग, और भाइयों के लिये भी अलग, और जो मिस्री उसके संग खाते थे, उनके लिये भी अलग, भोजन परोसा; इसलिए कि मिस्री इब्रियों के साथ भोजन नहीं कर सकते, वरन् मिस्री ऐसा करना घृणित समझते थे।

33 सो यूसुफ के भाई उसके सामने, बड़े-बड़े पहले, और छोटे-छोटे पीछे, अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार, क्रम से बैठाए गए; यह देख वे विस्मित होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे।

34 तब यूसुफ अपने सामने से भोजन-वस्तु उठा-उठाकर उनके पास भेजने लगा, और बिन्यामीन को अपने भाइयों से पाँचगुना भोजनवस्तु मिली। और उन्होंने [\[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\]](#)।

## 44

[\[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\]\[?\]](#)

1 तब उसने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी, “इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे, और एक-एक जन के रुपये को उसके बोरे के मुँह पर रख दे।

2 और मेरा चाँदी का कटोरा छोटे भाई के बोरे के मुँह पर उसके अन्न के रुपये के साथ रख दे।” यूसुफ की इस आज्ञा के अनुसार उसने किया।

3 सवेरे भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों समेत विदा किए गए।

4 वे नगर से निकले ही थे, और दूर न जाने पाए थे कि यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, “उन मनुष्यों का पीछा कर, और उनको पाकर उनसे कह, ‘तुम ने भलाई के बदले बुराई क्यों की है?’

5 क्या यह वह वस्तु नहीं जिसमें मेरा स्वामी पीता है, और जिससे वह शकुन भी विचारा करता है? तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया।”

6 तब उसने उन्हें जा पकड़ा, और ऐसी ही बातें उनसे कहीं।

7 उन्होंने उससे कहा, “हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्यों कहता है? ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे।

8 देख जो रुपया हमारे बोरों के मुँह पर निकला था, जब हमने उसको कनान देश से ले आकर तुझे लौटा दिया, तब भला, तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चाँदी या सोने की वस्तु कैसे चुरा सकते हैं?

9 तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए, और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जाएँ।”

† 43:34 [\[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\]](#): उन्होंने मनमाना खाया पिया कि आनन्द मना सके क्योंकि जिस प्रकार की कृपा उन पर हो रही उससे वे अपनी चिंताओं से मुक्त हो गए थे।







है।” पर २२२२ २२ २२ २२२२२२२ २ २२२२, २२ २२ २२२२ २२२ २२२ २ २२२२‡।

27 तब उन्होंने अपने पिता याकूब से यूसुफ की सारी बातें, जो उसने उनसे कहीं थीं, कह दीं; जब उसने उन गाड़ियों को देखा, जो यूसुफ ने उसके ले आने के लिये भेजी थीं, तब उसका चित्त स्थिर हो गया।

28 और इस्राएल ने कहा, “बस, मेरा पुत्र यूसुफ अब तक जीवित है; मैं अपनी मृत्यु से पहले जाकर उसको देखूँगा।”

## 46

२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२

1 तब इस्राएल अपना सब कुछ लेकर बेशेबा को गया, और वहाँ अपने पिता इसहाक के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया।

2 तब परमेश्वर ने इस्राएल से रात को दर्शन में कहा, “हे याकूब हे याकूब।” उसने कहा, “क्या आज्ञा।”

3 उसने कहा, “मैं परमेश्वर तेरे पिता का परमेश्वर हूँ, तू मिस्र में जाने से २२ २२\*; क्योंकि मैं तुझ से वहाँ एक बड़ी जाति बनाऊँगा।

4 मैं तेरे संग-संग मिस्र को चलता हूँ; और मैं तुझे वहाँ से फिर निश्चय ले आऊँगा; और यूसुफ अपने हाथ से तेरी आँखों को बन्द करेगा।”

5 तब याकूब बेशेबा से चला; और इस्राएल के पुत्र अपने पिता याकूब, और अपने बाल-बच्चों, और स्त्रियों को उन गाड़ियों पर, जो फ़िरौन ने उनके ले आने को भेजी थीं, चढ़ाकर चल पड़े।

6 वे अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, और कनान देश में अपने इकट्ठा किए हुए सारे धन को लेकर मिस्र में आए।

7 और याकूब अपने बेटे-बेटियों, पोते-पोतियों, अर्थात् अपने वंश भर को अपने संग मिस्र में ले आया।

२२२२२ २२ २२२२२२

8 याकूब के साथ जो इस्राएली, अर्थात् उसके बेटे, पोते, आदि मिस्र में आए, उनके नाम ये हैं याकूब का जेटा रूबेन था।

9 और रूबेन के पुत्र हनोक, पल्लू, हेस्रोन, और कर्मी थे।

10 शिमोन के पुत्र, यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर, और एक कनानी स्त्री से जन्मा हुआ शाऊल भी था।

11 लेवी के पुत्र गेशोन, कहात, और मरारी थे।

‡ 45:26 २२२२ २२ २२ २२२२२२२ २ २२२२, २२ २२ २२२२ २२२ २२२ २ २२२२: यह समाचार उसके लिए इतना अच्छा था कि वह उस पर तुरन्त विश्वास नहीं कर सका। परन्तु यूसुफ द्वारा कही बातों को, जिन्हें उन्होंने उसे बताया, और उन गाड़ियों को देखकर जो उसने भेजी थीं, उसे आखिरकार निश्चय हो गया कि यह अवश्य सच ही है। \* 46:3 २२ २२: इसका यह अर्थ है कि यह परमेश्वर की इच्छा में है कि वह मिस्र को जाए, और यह कि वहाँ वह सुरक्षित रहेगा।

12 यहूदा के एर, ओनान, शेला, परेस, और जेरह नामक पुत्र हुए तो थे; पर एर और ओनान कनान देश में मर गए थे; और परेस के पुत्र, हेस्रोन और हामूल थे।

13 इस्साकार के पुत्र, तोला, पुब्बा, योब और शिमोन थे।

14 जबूलून के पुत्र, सेरेद, एलोन, और यहलेल थे।

15 लिआ के पुत्र जो याकूब से पदनराम में उत्पन्न हुए थे, उनके बेटे पोते ये ही थे, और इनसे अधिक उसने उसके साथ एक बेटी दीना को भी जन्म दिया। यहाँ तक तो याकूब के सब वंशवाले तैंतीस प्राणी हुए।

16 फिर गाद के पुत्र, सपोन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी, और अरेली थे।

17 आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, और बरीआ थे, और उनकी बहन सेरह थी; और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल थे।

18 जिल्पा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी लिआ को दिया था, उसके बेटे पोते आदि ये ही थे; और उसके द्वारा याकूब के सोलह प्राणी उत्पन्न हुए।

19 फिर याकूब की पत्नी राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन थे।

20 और मिस्र देश में ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से यूसुफ के ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् मनश्शे और एप्रेम।

21 बिन्यामीन के पुत्र, बेला, बेकेर, अश्वेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पीम, हुप्पीम, और अर्द थे।

22 राहेल के पुत्र जो याकूब से उत्पन्न हुए उनके ये ही पुत्र थे; उसके ये सब बेटे-पोते चौदह प्राणी हुए।

23 फिर दान का पुत्र हूशीम था।

24 नप्ताली के पुत्र, यहसेल, गूनी, येसेर, और शिल्लेम थे।

25 बिल्हा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया, उसके बेटे पोते ये ही हैं; उसके द्वारा याकूब के वंश में सात प्राणी हुए।

26 याकूब के निज वंश के जो प्राणी मिस्र में आए, वे उसकी बहुओं को छोड़ सब मिलकर छियासठ प्राणी हुए।

27 और यूसुफ के पुत्र, जो मिस्र में उससे उत्पन्न हुए, वे दो प्राणी थे; इस प्रकार याकूब के घराने के जो प्राणी मिस्र में आए सो सब मिलकर सत्तर हुए।

२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२२२





6 और उनके पश्चात् तेरे जो सन्तान उत्पन्न हो, वह तेरे तो ठहरेंगे; परन्तु बँटवारे के समय वे अपने भाइयों ही के वंश में गिने जाएँगे।

7 जब मैं पद्दान से आता था, तब एप्राता पहुँचने से थोड़ी ही दूर पहले राहेल कनान देश में, मार्ग में, मेरे सामने मर गई; और मैंने उसे वहीं, अर्थात् एप्राता जो बैतलहम भी कहलाता है, उसी के मार्ग में मिट्टी दी।”

8 तब इस्राएल को यूसुफ के पुत्र देख पड़े, और उसने पूछा, “ये कौन हैं?”

9 यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “ये मेरे पुत्र हैं, जो परमेश्वर ने मुझे यहाँ दिए हैं।” उसने कहा, “उनको मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूँ।”

10 इस्राएल की आँखें बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई थीं, यहाँ तक कि उसे कम सूझता था। तब यूसुफ उन्हें उसके पास ले गया; और उसने उन्हें चूमकर गले लगा लिया।

11 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, “मुझे आशा न थी, कि मैं तेरा मुख फिर देखने पाऊँगा: परन्तु देख, परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है।”

12 तब यूसुफ ने उन्हें अपने पिता के घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुँह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की।

13 तब यूसुफ ने उन दोनों को लेकर, अर्थात् एप्रेम को अपने दाहिने हाथ से, कि वह इस्राएल के बाएँ हाथ पड़े, और मनश्शे को अपने बाएँ हाथ से, कि इस्राएल के दाहिने हाथ पड़े, उन्हें उसके पास ले गया।

14 तब इस्राएल ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर एप्रेम के सिर पर जो छोटा था, और अपना बायाँ हाथ बढ़ाकर मनश्शे के सिर पर रख दिया; उसने तो जान बूझकर ऐसा किया; नहीं तो जेठा मनश्शे ही था।

15 फिर उसने यूसुफ को आशीर्वाद देकर कहा, “परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादे अब्राहम और इसहाक चलते थे वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है; (22:1-2). 11:21)

16 और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वही अब इन लड़कों को आशीर्ष दे; और ये मेरे और मेरे बापदादे अब्राहम और इसहाक के कहलाएँ; और पृथ्वी में बहुतायत से बढ़ें।” (22:1-2). 11:21)

17 जब यूसुफ ने देखा कि मेरे पिता ने अपना दाहिना हाथ एप्रेम के सिर पर रखा है, तब यह बात उसको बुरी लगी; इसलिए उसने अपने पिता का हाथ इस मनसा से

पकड़ लिया, कि एप्रेम के सिर पर से उठाकर मनश्शे के सिर पर रख दे।

18 और यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “हे पिता, ऐसा नहीं; क्योंकि जेठा यही है; अपना दाहिना हाथ इसके सिर पर रख।”

19 उसके पिता ने कहा, “नहीं, सुन, हे मेरे पुत्र, मैं इस बात को भली भाँति जानता हूँ यद्यपि इससे भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान हो जाएगा, तो भी इसका छोटा भाई इससे अधिक महान हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियाँ निकलेंगी।”

20 फिर उसने उसी दिन यह कहकर उनको आशीर्वाद दिया, “इस्राएली लोग तेरा नाम ले लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे, ‘परमेश्वर तुझे एप्रेम और मनश्शे के समान बना दे,’” और उसने मनश्शे से पहले एप्रेम का नाम लिया।

21 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, “देख, मैं तो मरने पर हूँ परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा, और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुँचा देगा।

22 और मैं तुझको तेरे भाइयों से अधिक ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~\*, जिसको मैंने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है।” (22:1-2). 4:5)

## 49

~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~

1 फिर याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहकर बुलाया, इकट्ठे हो जाओ, मैं तुम को बताऊँगा, कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या-क्या बीतेगा।

2 हे याकूब के पुत्रों, इकट्ठे होकर सुनो, अपने पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ।

3 “हे रूबेन, तू मेरा जेठा, मेरा बल, और मेरे पौरुष का पहला फल है;

प्रतिष्ठा का उत्तम भाग, और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है।

4 तू जो जल के समान उबलनेवाला है, इसलिए दूसरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा;

क्योंकि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा,

तब तूने उसको अशुद्ध किया;

वह मेरे बिच्छौने पर चढ़ गया।

5 शिमोन और लेवी तो भाई-भाई हैं,

उनकी तलवारें उपद्रव के हथियार हैं।

\* 48:22 ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~ ~~22:1-2~~: अपनी मृत्यु के समय याकूब अपनी भावी पीढ़ी की प्रतिज्ञात देश में वापसी का आश्वासन देता है और यूसुफ को उसके भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता है, जिसके लिए वह कहता है कि मैंने इसे एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है।

6 हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़,  
हे मेरी महिमा, उनकी सभा में मत मिल;  
क्योंकि उन्होंने कोप से मनुष्यों को घात किया,  
और अपनी ही इच्छा पर चलकर बैलों को पंगु बनाया।  
7 धिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था;  
और उनके रोष को, जो निर्दय था;  
मैं उन्हें याकूब में अलग-अलग  
और इस्राएल में तितर-बितर कर दूँगा।  
8 हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे,  
तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा;  
तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे।  
9 **[2][2][2][2]**\* सिंह का बच्चा है।  
हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में गया है  
वह सिंह अथवा सिंहनी के समान दबकर बैठ गया;  
फिर कौन उसको छेड़ेगा। (**[2][2][2][2]. 5:5**)  
10 जब तक शीलो न आए  
तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा,  
न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा;  
और राज्य-राज्य के लोग **[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]**† हो जाएँगे।  
(**[2][2][2]. 11:52**)  
11 वह अपने जवान गदहे को दाखलता में,  
और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम  
जाति की दाखलता में बाँधा करेगा; (**[2][2][2][2]. 7:14,**  
**[2][2][2][2]. 22:14**)  
उसने अपने वस्त्र दाखमधु में,  
और अपना पहरावा दाखों के रस में धोया है।  
12 उसकी आँखें दाखमधु से चमकीली  
और उसके दाँत दूध से श्वेत होंगे।  
13 जबूलन समुद्र तट पर निवास करेगा,  
वह जहाजों के लिये बन्दरगाह का काम देगा,  
और उसका परला भाग सीदोन के निकट पहुँचेगा।  
14 इस्साकार एक बड़ा और बलवन्त गदहा है,  
जो पशुओं के बाड़ों के बीच में दबका रहता है।  
15 उसने एक विश्रामस्थान देखकर, कि अच्छा है,  
और एक देश, कि मनोहर है,  
अपने कंधे को बोझ उठाने के लिये झुकाया,  
और बेगारी में दास का सा काम करने लगा।  
16 दान इस्राएल का एक गोत्र होकर अपने  
जातिभाइयों का न्याय करेगा।  
17 दान मार्ग में का एक साँप,  
और रास्ते में का एक नाग होगा,  
जो घोड़े की नली को डसता है,

जिससे उसका सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है।  
18 हे यहोवा, मैं तुझी से उद्धार पाने की बाट जोहता  
आया हूँ।  
19 गाद पर एक दल चढ़ाई तो करेगा;  
पर वह उसी दल के पिछले भाग पर छापा मारेगा।  
20 आशेर से जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम होगा,  
और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट भोजन दिया करेगा।  
21 नप्ताली एक छूटी हुई हिरनी है;  
वह सुन्दर बातें बोलता है।  
22 यूसुफ बलवन्त लता की एक शाखा है,  
वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा  
है;  
उसकी डालियाँ दीवार पर से चढ़कर फैल जाती हैं।  
23 धनुर्धारियों ने उसको खेदित किया,  
और उस पर तीर मारे,  
और उसके पीछे पड़े हैं।  
24 पर उसका धनुष दृढ़ रहा,  
और उसकी बाँह और हाथ याकूब के  
उसी शक्तिमान परमेश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीले हुए,  
जिसके पास से वह चरवाहा आएगा,  
जो इस्राएल की चट्टान भी ठहरेगा।  
25 यह तेरे पिता के उस परमेश्वर का काम है,  
जो तेरी सहायता करेगा,  
उस सर्वशक्तिमान का जो तुझे  
ऊपर से आकाश में की आशीषें,  
और नीचे से गहरे जल में की आशीषें,  
और स्तनों, और गर्भ की आशीषें देगा।  
26 तेरे पिता के आशीर्वाद  
मेरे पितरों के आशीर्वादों से अधिक बढ़ गए हैं  
और सनातन पहाड़ियों की मनचाही वस्तुओं  
के समान बने रहेंगे वे यूसुफ के सिर पर,  
जो अपने भाइयों से अलग किया गया था,  
उसी के सिर के मुकुट पर फूले फलेंगे।  
27 बिन्यामीन फाड़नेवाला भेड़िया है,  
सवेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा,  
और साँझ को लूट बाँट लेगा।”  
28 इस्राएल के बारहों गोत्र ये ही हैं और उनके पिता  
ने जिस-जिस वचन से उनको आशीर्वाद दिया, वे ये  
ही हैं; एक-एक को उसके आशीर्वाद के अनुसार उसने  
आशीर्वाद दिया।

**[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]**

\* **49:9** **[2][2][2][2]**: शारीरिक शक्ति में यहूदा की तुलना जंगल के राजा, सिंह से की जाती है। † **49:10** **[2][2][2][2]** **[2][2][2][2]**: न केवल इस्राएल की सन्तान, बल्कि आदम की सब सन्तान अंत में शान्ति के राजकुमार को दण्डवत् करेंगी। यह स्त्री का वंश है जो उस सर्प के सिर को कुचलेगा, यह अब्राहम का वंशज होगा।









13 तो भी मिस्रियों ने इस्राएलियों से कठोरता के साथ सेवा करवाई;

14 और उनके जीवन को गारे, ईंट और खेती के भाँति-भाँति के काम की कठिन सेवा से दुःखी कर डाला; जिस किसी काम में वे उनसे सेवा करवाते थे उसमें वे कठोरता का व्यवहार करते थे।

15 शिप्रा और पूआ नामक दो इब्री दाइयों को मिस्र के राजा ने आज्ञा दी,

16 “जब तुम इब्री स्त्रियों को बच्चा उत्पन्न होने के समय [2:22] पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो, तो उसे मार डालना; और बेटा हो, तो जीवित रहने देना।”

17 परन्तु वे दाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिए मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थीं।

18 तब मिस्र के राजा ने उनको बुलवाकर पूछा, “तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो?” ([2:22] 7:19)

19 दाइयों ने फ़िरौन को उतर दिया, “इब्री स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि दाइयों के पहुँचने से पहले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता है।”

20 इसलिए परमेश्वर ने दाइयों के साथ भलाई की; और वे लोग बढ़कर बहुत सामर्थी हो गए।

21 इसलिए कि दाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं उसने उनके [2:22]।

22 तब फ़िरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, “इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभी को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रख छोड़ना।” ([2:22] 7:19)

## 2

[2:22] [2:22]

1 लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक लेवी वंश की स्त्री को ब्याह लिया।

2 वह स्त्री गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। ([2:22] 7:20, [2:22] 11:23)

3 जब वह उसे और छिपा न सकी तब उसके लिये [2:22] लेकर, उस पर चिकनी

† 1:16 [2:22] [2:22]: दो पत्थर: इस शब्द का अर्थ है बैठने का एक विशेष आसन है, जैसा स्मारकों में दर्शाया जाता है। ‡ 1:21 [2:22]

[2:22]: उन्होंने इब्री पुरुषों से विवाह किया और इस्राएल की माता ठहरीं।

† 2:6 [2:22] [2:22]: उसकी भावनाओं का जिक्र करने का विशेष कारण है, क्योंकि इसी के कारण उस राजकुमारी ने अपने पिता की आज्ञा के बावजूद उस बालक को बचाया और उसे गोद लिया। ‡ 2:10 [2:22]: राजकुमारी ने बालक का नाम मूसा, अर्थात् “पुत्र” या “निकाला हुआ” रखा, क्योंकि उसने उसे पानी में से निकाला था।

मिट्टी और राल लगाकर, उसमें बालक को रखकर नील नदी के किनारे कांसों के बीच छोड़ आई।

4 उस बालक की बहन दूर खड़ी रही, कि देखे उसका क्या हाल होगा।

5 तब फ़िरौन की बेटा नहाने के लिये नदी के किनारे आई; उसकी सखियाँ नदी के किनारे-किनारे टहलने लगीं; तब उसने कांसों के बीच टोकरी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिये भेजा। ([2:22] 7:21)

6 तब उसने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक है; तब [2:22] और उसने कहा, “यह तो किसी इब्री का बालक होगा।”

7 तब बालक की बहन ने फ़िरौन की बेटा से कहा, “क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊँ जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करे?”

8 फ़िरौन की बेटा ने कहा, “जा।” तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई।

9 फ़िरौन की बेटा ने उससे कहा, “तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूँगी।” तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी।

10 जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फ़िरौन की बेटा के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उसने यह कहकर उसका नाम [2:22] रखा, “मैंने इसको जल से निकाला था।”

[2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

11 उन दिनों में ऐसा हुआ कि जब मूसा जवान हुआ, और बाहर अपने भाई-बन्धुओं के पास जाकर उनके दुःखों पर दृष्टि करने लगा; तब उसने देखा कि कोई मिस्री जन मेरे एक इब्री भाई को मार रहा है।

12 जब उसने इधर-उधर देखा कि कोई नहीं है, तब उस मिस्री को मार डाला और रेत में छिपा दिया।

13 फिर दूसरे दिन बाहर जाकर उसने देखा कि दो इब्री पुरुष आपस में मारपीट कर रहे हैं; उसने अपराधी से कहा, “तू अपने भाई को क्यों मारता है?”

14 उसने कहा, “किसने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जिस भाँति तूने मिस्री को घात किया क्या उसी भाँति तू मुझे भी घात करना चाहता है?” तब

† 1:16 [2:22] [2:22]: दो पत्थर: इस शब्द का अर्थ है बैठने का एक विशेष आसन है, जैसा स्मारकों में दर्शाया जाता है। ‡ 1:21 [2:22] [2:22]: उन्होंने इब्री पुरुषों से विवाह किया और इस्राएल की माता ठहरीं। \* 2:3 [2:22] [2:22] [2:22]: मिस्री लोग सरकारों का प्रयोग साधारणतः हलकी और तेज नाव बनाने के लिए करते थे। † 2:6 [2:22] [2:22] [2:22]: उसकी भावनाओं का जिक्र करने का विशेष कारण है, क्योंकि इसी के कारण उस राजकुमारी ने अपने पिता की आज्ञा के बावजूद उस बालक को बचाया और उसे गोद लिया। ‡ 2:10 [2:22]: राजकुमारी ने बालक का नाम मूसा, अर्थात् “पुत्र” या “निकाला हुआ” रखा, क्योंकि उसने उसे पानी में से निकाला था।

मूसा यह सोचकर डर गया, “निश्चय वह बात खुल गई है।”

15 जब फिरौन ने यह बात सुनी तब मूसा को घात करने की योजना की। तब मूसा फिरौन के सामने से भागा, और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा; और वह वहाँ एक कुएँ के पास बैठ गया। (22:27. 11:27)

16 मिद्यान के याजक की सात बेटियाँ थीं; और वे वहाँ आकर जल भरने लगीं कि कुठौतों में भरकर अपने पिता की भेड़-बकरियों को पिलाएँ।

17 तब चरवाहे आकर उनको हटाने लगे; इस पर मूसा ने खड़े होकर उनकी सहायता की, और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया।

18 जब वे अपने पिता 22:28 के पास फिर आईं, तब उसने उनसे पूछा, “क्या कारण है कि आज तुम ऐसी फुर्ती से आई हो?”

19 उन्होंने कहा, “एक मिस्री पुरुष ने हमको चरवाहों के हाथ से छुड़ाया, और हमारे लिये बहुत जल भरकर भेड़-बकरियों को पिलाया।”

20 तब उसने अपनी बेटियों से पूछा, “वह पुरुष कहाँ है? तुम उसको क्यों छोड़ आई हो? उसको बुला ले आओ कि वह भोजन करे।”

21 और मूसा उस पुरुष के साथ रहने को प्रसन्न हुआ; उसने उसे अपनी बेटी सिप्पोरा को ब्याह दिया।

22 और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, तब मूसा ने यह कहकर, “मैं अन्य देश में परदेशी हूँ,” उसका नाम गेशोम रखा। (22:29. 7:6)

23 बहुत दिनों के बीतने पर मिस्र का राजा मर गया। और इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी-लम्बी साँस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दुहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुँची।

24 और परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, और इसहाक, और याकूब के साथ बाँधी थी, स्मरण किया। (22:34. 7:34)

25 और परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि करके उन पर 22:35 22:35\*।

### 3

22:35 22:35 22:35 22:35

1 मूसा अपने ससुर यित्रो नामक मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियों को चराता था; और वह उन्हें जंगल की

§ 2:18 22:35: इस नाम का अर्थ “परमेश्वर का मित्र” है। \* 2:25 22:35 22:35: इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को सुनकर, विशेषकर उनके विश्वास और सन्ताप के पीछे छिपी हुई उनकी पीड़ा को देखा और उसे उन पर तरस आया। \* 3:2 22:35 22:35: मूसा ने जो देखा वह झाड़ी में आग की लौ थी, और उसे उसमें परमेश्वर की उपस्थिति का बोध हुआ। † 3:5 22:35 22:35 22:35 22:35: अतः पवित्रस्थानों को आदर दिया जाना, परमेश्वर की आज्ञा पर निर्भर है। ‡ 3:5 22:35 22:35: वह भूमि परमेश्वर की उपस्थिति से पवित्र हो गई थी।

पश्चिमी ओर होरेब नामक परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया।

2 और 22:35 22:35\* ने एक कँटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उसने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। (22:35. 12:26, 22:35 20:37)

3 तब मूसा ने कहा, “मैं उधर जाकर इस बड़े अचम्भे को देखूँगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।” (22:35. 7:30,31)

4 जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, “हे मूसा, हे मूसा!” मूसा ने कहा, “क्या आज्ञा।”

5 उसने कहा, “इधर पास मत आ, और अपने 22:35 22:35 22:35 22:35, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह 22:35 22:35 है।” (22:35. 7:33)

6 फिर उसने कहा, “मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ।” तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुँह ढाँप लिया। (22:35 22:32, 22:35. 12:26, 22:35 20:37)

7 फिर यहोवा ने कहा, “मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है उसको भी मैंने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैंने चिन्त लगाया है;

8 इसलिए अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है, अर्थात् कनानी, हिती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के स्थान में पहुँचाऊँ।

9 इसलिए अब सुन, इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्रियों का उन पर अंधेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है,

10 इसलिए आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।” (22:35. 7:34)

11 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, “मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ, और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊँ?”

12 उसने कहा, “निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा; और इस बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूँ, तेरे लिए यह चिन्ह होगा; कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे।” (22:7)

13 मूसा ने परमेश्वर से कहा, “जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे यह कहूँ, ‘तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,’ तब यदि वे मुझसे पूछें, ‘उसका क्या नाम है?’ तब मैं उनको क्या बताऊँ?”

14 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं जो हूँ सो हूँ।” फिर उसने कहा, “तू इस्राएलियों से यह कहना, ‘जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’” (22:11-17)

15 फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, “तू इस्राएलियों से यह कहना, ‘तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी-पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।’” (22:22-26)

16 इसलिए अब जाकर इस्राएली पुरनियों को इकट्ठा कर, और उनसे कह, ‘तुम्हारे पूर्वज अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह कहा है कि मैंने तुम पर और तुम से जो बर्ताव मिस्र में किया जाता है उस पर भी चिन्त लगाया है;’

17 और मैंने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दुःखों में से निकालकर कनानी, हिती, एमोरी, परिज्जी हिब्बी, और यबूसी लोगों के देश में ले चलूँगा, जो ऐसा देश है कि जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है।

18 तब वे तेरी मानेंगे; और तू इस्राएली पुरनियों को संग लेकर मिस्र के राजा के पास जाकर उससे यह कहना, ‘इब्रियों के परमेश्वर, यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है; इसलिए अब हमको तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएँ।’

19 मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा वरन् बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने न देगा। (22:27-28)

20 इसलिए मैं हाथ बढ़ाकर उन सब आश्चर्यकर्मों से जो मिस्र के बीच करूँगा उस देश को मारूँगा; और उसके पश्चात् वह तुम को जाने देगा।

21 तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह

करवाऊँगा; और जब तुम निकलोगे तब खाली हाथ न निकलोगे।

22 वरन् तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन, और अपने-अपने घर में रहनेवाली से सोने चाँदी के गहने, और वस्त्र माँग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहनाना; इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे।”

## 4

22:27 22:28 22:29 22:30 22:31

1 तब मूसा ने उत्तर दिया, “वे मुझ पर विश्वास न करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन् कहेंगे, ‘यहोवा ने तुझको दर्शन नहीं दिया।’”

2 यहोवा ने उससे कहा, “तेरे हाथ में वह क्या है?” वह बोला, “22:27\*।”

3 उसने कहा, “उसे भूमि पर डाल दे।” जब उसने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा।

4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “हाथ बढ़ाकर उसकी पूँछ पकड़ ले, ताकि वे लोग विश्वास करें कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अर्थात् अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझको दर्शन दिया है।”

5 जब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई।

6 फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा, “अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप।” अतः उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है।

7 तब उसने कहा, “अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढाँप।” और उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया; और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है कि वह फिर सारी देह के समान हो गया।

8 तब यहोवा ने कहा, “यदि वे तेरी बात पर विश्वास न करें, और पहले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह पर विश्वास करेंगे।

9 और यदि वे इन दोनों चिन्हों पर विश्वास न करें और तेरी बात को न मानें, तब तू नील नदी से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना; और जो जल तू नदी से निकालेगा वह सूखी भूमि पर लहू बन जाएगा।”

(22:29-31)

\* 4:2 22:27: यहाँ लाठी शब्द का अभिप्राय उस बड़ी लाठी से है जो उन लोगों के हाथ में होती थी जिनके पास अधिकार का पद होता था। † 4:10 22:27 22:28 22:29 22:30 22:31: इसका अर्थ शब्द ढूँढ़ने और उन्हें बोलने में कठिनाई का होना है।

10 मूसा ने यहोवा से कहा, “हे मेरे प्रभु, मैं [REDACTED] नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ।”

11 यहोवा ने उससे कहा, “मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? और मनुष्य को गूँगा, या बहरा, या देखनेवाला, या अंधा, मुझे यहोवा को छोड़ कौन बनाता है?”

12 अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखाता जाऊँगा।”

13 उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, कृपया तू किसी अन्य व्यक्ति को भेज।”

14 तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उसने कहा, “क्या तेरा भाई लेवीय [REDACTED] नहीं है? मुझे तो निश्चय है कि वह बोलने में निपुण है, और वह तुझ से भेंट करने के लिये निकल भी गया है, और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा।

15 इसलिए तू उसे ये बातें सिखाना; और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा वह तुम को सिखाता जाऊँगा।

16 वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा; वह तेरे लिये मुँह और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा।

17 और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्हों को दिखाना।”

[REDACTED]

18 तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और उससे कहा, “मुझे विदा कर, कि मैं मिस्र में रहनेवाले अपने भाइयों के पास जाकर देखूँ कि वे अब तक जीवित हैं या नहीं।” यित्रो ने कहा, “कुशल से जा।”

19 और यहोवा ने मिद्यान देश में मूसा से कहा, “मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं।” ( [REDACTED] 2:20)

20 तब मूसा अपनी पत्नी और बेटों को गदहे पर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर [REDACTED] को हाथ में लिये हुए लौटा।

21 और यहोवा ने मूसा से कहा, “जब तू मिस्र में पहुँचे तब सावधान हो जाना, और जो चमत्कार मैंने तेरे वश में किए हैं उन सभी को फ़िरौन को दिखलाना; परन्तु मैं

उसके मन को हठीला करूँगा, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। ( [REDACTED] 9:18)

22 और तू फ़िरौन से कहना, ‘यहोवा यह कहता है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन् मेरा पहलौठा है,

23 और मैं जो तुझ से कह चुका हूँ, कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे; और तूने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन् तेरे पहलौठे को घात करूँगा।’ ”

24 तब ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा।

25 तब सिप्पोरा ने एक तेज चकमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला, और मूसा के पाँवों पर यह कहकर फेंक दिया, “निश्चय तू [REDACTED]”

26 तब उसने उसको छोड़ दिया। और उसी समय खतने के कारण वह बोली, “तू लहू बहानेवाला पति है।”

[REDACTED]

27 तब यहोवा ने हारून से कहा, “मूसा से भेंट करने को जंगल में जा।” और वह गया, और परमेश्वर के पर्वत पर उससे मिला और उसको चूमा।

28 तब मूसा ने हारून को यह बताया कि यहोवा ने क्या-क्या बातें कहकर उसको भेजा है, और कौन-कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे दी है।

29 तब मूसा और हारून ने जाकर इस्राएलियों के सब पुरनियों को इकट्ठा किया।

30 और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थीं वह सब हारून ने उन्हें सुनाई, और लोगों के सामने वे चिन्ह भी दिखलाए।

31 और लोगों ने उन पर विश्वास किया; और यह सुनकर कि यहोवा ने इस्राएलियों की सुधि ली और उनके दुःखों पर दृष्टि की है, उन्होंने सिर झुकाकर दण्डवत् किया। ( [REDACTED] 3:15,18)

## 5

[REDACTED]

1 इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फ़िरौन से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें।’ ”

‡ 4:14 [REDACTED]: हारून के पास बोलने की इच्छा और सामर्थ्य दोनों थी। यहाँ हारून को लेवीय कहा गया है। § 4:20 [REDACTED]

[REDACTED]: मूसा की लाठी आश्चर्यकर्मों द्वारा पवित्र ठहरी और वह परमेश्वर की लाठी बन गई। (निर्ग. 4:2) \* 4:25 [REDACTED]

[REDACTED]: उनके बीच विवाह के बंधन पर अब लहू बहाने के द्वारा मुहर लगी। उस विधि को पूरा करके, सिप्पोरा ने अपने पति को पुनः पा लिया; उसके बेटे के लहू के द्वारा उसने अपने पति के जीवन को खरीद लिया। \* 5:2 [REDACTED]: या तो फ़िरौन ने यहोवा का नाम नहीं सुना था, या वह उसे परमेश्वर के रूप में नहीं पहचानता था।

2 फिरौन ने कहा, “यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूँ? [2:22 2:22-2:22 2:22 2:22-2:22]\*, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूँगा।”

3 उन्होंने कहा, “इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट की है; इसलिए हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें, ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाए या तलवार चलवाए।”

4 मिस्र के राजा ने उनसे कहा, “हे मूसा, हे हारून, तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाना चाहते हो? तुम जाकर अपने-अपने बोझ को उठाओ।”

5 और फिरौन ने कहा, “सुनो, इस देश में वे लोग बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको उनके परिश्रम से विश्राम दिलाना चाहते हो!”

[2:22-2:22 2:22-2:22 2:22-2:22 2:22 2:22-2:22]

6 फिरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करवाने वालों को जो उन लोगों के ऊपर थे, और उनके सरदारों को यह आज्ञा दी,

7 “तुम जो अब तक ईंटें बनाने के लिये लोगों को पुआल दिया करते थे वह आगे को न देना; वे आप ही जाकर अपने लिये पुआल इकट्ठा करें।

8 तो भी जितनी ईंटें अब तक उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उनसे बनवाना, ईंटों की गिनती कुछ भी न घटाना; क्योंकि वे आलसी हैं; इस कारण वे यह कहकर चिल्लाते हैं, ‘हम जाकर अपने परमेश्वर के लिये बलिदान करें।’

9 उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा करवाई जाए कि वे उसमें परिश्रम करते रहें और झूठी बातों पर ध्यान न लगाएँ।”

10 तब लोगों के परिश्रम कराने वालों ने और सरदारों ने बाहर जाकर उनसे कहा, “फिरौन इस प्रकार कहता है, मैं तुम्हें पुआल नहीं दूँगा।

11 तुम ही जाकर जहाँ कहीं पुआल मिले वहाँ से उसको बटोरकर ले आओ; परन्तु तुम्हारा काम कुछ भी नहीं घटाया जाएगा।”

12 इसलिए वे लोग सारे मिस्र देश में तितर-बितर हुए कि पुआल के बदले खूँटी बटोरें।

13 परिश्रम करनेवाले यह कह-कहकर उनसे जल्दी करते रहे कि जिस प्रकार तुम पुआल पाकर किया करते थे उसी प्रकार अपना प्रतिदिन का काम अब भी पूरा करो।

14 और इस्राएलियों में से जिन सरदारों को फिरौन के परिश्रम कराने वालों ने उनका अधिकारी ठहराया था,

उन्होंने मार खाई, और उनसे पूछा गया, “क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती के अनुसार पहले के समान कल और आज पूरी नहीं कराई?”

15 तब इस्राएलियों के सरदारों ने जाकर फिरौन की दुहाई यह कहकर दी, “तू अपने दासों से ऐसा बर्ताव क्यों करता है?

16 तेरे दासों को पुआल तो दिया ही नहीं जाता और वे हम से कहते रहते हैं, ‘ईंटें बनाओ, ईंटें बनाओ,’ और तेरे दासों ने भी मार खाई है; परन्तु दोष तेरे ही लोगों का है।”

17 फिरौन ने कहा, “[2:22 2:22-2:22 2:22, 2:22-2:22]; इसी कारण कहते हो कि हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने दे।

18 अब जाकर अपना काम करो; और पुआल तुम को नहीं दिया जाएगा, परन्तु ईंटों की गिनती पूरी करनी पड़ेगी।”

19 जब इस्राएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी कि उनकी ईंटों की गिनती न घटेगी, और प्रतिदिन उतना ही काम पूरा करना पड़ेगा, तब वे जान गए कि उनके संकट के दिन आ गए हैं।

20 जब वे फिरौन के सम्मुख से बाहर निकल आए तब मूसा और हारून, जो उनसे भेंट करने के लिये खड़े थे, उन्हें मिले।

21 और उन्होंने मूसा और हारून से कहा, “यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे, क्योंकि तुम ने हमको फिरौन और उसके कर्मचारियों की दृष्टि में घृणित ठहराकर हमें घात करने के लिये उनके हाथ में तलवार दे दी है।”

[2:22-2:22 2:22 2:22-2:22-2:22 2:22 2:22-2:22]

22 तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा, “हे प्रभु, तूने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की? और तूने मुझे यहाँ क्यों भेजा?

23 जब से मैं तेरे नाम से फिरौन के पास बातें करने के लिये गया तब से उसने इस प्रजा के साथ बुरा ही व्यवहार किया है, और तूने अपनी प्रजा का कुछ भी छुटकारा नहीं किया।”

## 6

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अब तू देखेगा कि मैं फिरौन से क्या करूँगा; जिससे वह उनको बरबस निकालेगा, वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा।”

[2:22-2:22-2:22 2:22 2:22-2:22-2:22 2:22 2:22-2:22]

† 5:17 [2:22 2:22-2:22 2:22, 2:22-2:22]: यहाँ पुरानी मिस्री भाषा का उपयोग है जो आलस की अवमानना को दर्शाती है। आरोप आक्रामक और सीधा था।

\* 6:2 [2:22 2:22-2:22 2:22]: इसका अर्थ यह प्रतीत होता है मैं यहोवा हूँ, और मैंने अपने को अब्राहम, इसहाक, और याकूब पर प्रगट किया था।

2 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)”;

3 मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम से अब्राहम, इसहाक, और याकूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट न हुआ।

4 और मैंने उनके साथ अपनी वाचा दृढ़ की है, अर्थात् कनान देश जिसमें वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूँ।

5 इस्राएली जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं उनका कराहना भी सुनकर मैंने अपनी वाचा को स्मरण किया है।

6 इस कारण तू इस्राएलियों से कह, मैं यहोवा हूँ, और तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूँगा, और उनके दासत्व से तुम को छुड़ाऊँगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूँगा, **([\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#). 13:17)**

7 और मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा; और तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया।

8 और जिस देश के देने की शपथ मैंने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से खाई थी उसी में मैं तुम्हें पहुँचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूँगा। मैं तो यहोवा हूँ।”

9 ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को सुनाई; परन्तु उन्होंने मन की बेचैनी और दासत्व की क्रूरता के कारण उसकी न सुनी।

10 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

11 “तू जाकर मिस्र के राजा फ़िरौन से कह कि इस्राएलियों को अपने [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]](#)।”

12 और मूसा ने यहोवा से कहा, “देख, इस्राएलियों ने मेरी नहीं सुनी; फिर फ़िरौन मुझ भद्दे बोलनेवाले की कैसे सुनेगा?”

13 तब यहोवा ने मूसा और हारून को इस्राएलियों और मिस्र के राजा फ़िरौन के लिये आज्ञा इस अभिप्राय से दी कि वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले जाएँ।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

14 उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं: इस्राएल का पहलौटा रूबेन के पुत्र: हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी थे; इन्हीं से रूबेन के कुल निकले।

15 और शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, और सोहर थे, और एक कनानी स्त्री का बेटा शाऊल भी था; इन्हीं से शिमोन के कुल निकले।

16 लेवी के पुत्र जिनसे उनकी वंशावली चली है, उनके नाम ये हैं: अर्थात् गेशॉन, कहात और मरारी, और लेवी की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई।

17 गेशॉन के पुत्र जिनसे उनका कुल चला: लिब्नी और शिमी थे।

18 कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल थे, और कहात की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई।

19 मरारी के पुत्र: महली और मूशी थे। लेवियों के कुल जिनसे उनकी वंशावली चली ये ही हैं।

20 अम्राम ने अपनी फूफी [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) को ब्याह लिया और उससे हारून और मूसा उत्पन्न हुए, और अम्राम की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई।

21 यिसहार के पुत्र: कोरह, नेपेग और जिक्की थे।

22 उज्जीएल के पुत्र: मीशाएल, एलसाफान और सित्री थे।

23 हारून ने अम्मीनादाब की बेटी, और नहशोन की बहन एलीशेबा को ब्याह लिया; और उससे नादाब, अबीहू, और ईतामार उत्पन्न हुए।

24 कोरह के पुत्र: अस्सीर, एलकाना और अबीआसाप थे; और इन्हीं से कोरहियों के कुल निकले।

25 हारून के पुत्र एलीआजर ने पूतीएल की एक बेटी को ब्याह लिया; और उससे पीनहास उत्पन्न हुआ। जिनसे उनका कुल चला। लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही हैं।

26 हारून और मूसा वे ही हैं जिनको यहोवा ने यह आज्ञा दी: “इस्राएलियों को दल-दल करके उनके जत्थों के अनुसार मिस्र देश से निकाल ले आओ।”

27 ये वही मूसा और हारून हैं जिन्होंने मिस्र के राजा फ़िरौन से कहा कि हम इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले जाएँगे।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

28 जब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा से यह बात कही,

29 “मैं तो यहोवा हूँ; इसलिए जो कुछ मैं तुम से कहूँगा वह सब मिस्र के राजा फ़िरौन से कहना।”

30 परन्तु मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया, “मैं तो बोलने में भद्दा हूँ; और फ़िरौन कैसे मेरी सुनेगा?”

† 6:11 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]](#): मूसा अब तीन दिन की यात्रा पर जाने की अनुमति नहीं माँगता जो शायद मिस्र की सीमाओं में ही होती, बल्कि वह उस देश से निकल जाने की माँग करता है। ‡ 6:20 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#): इस नाम का अर्थ है यहोवा की महिमा।





25 जब यहोवा ने नील नदी को मारा था तब से सात दिन हो चुके थे।

## 8

22:22-23 - 22:24-25 22:26-27

1 तब यहोवा ने फिर मूसा से कहा, “फ़िरौन के पास जाकर कह, ‘यहोवा तुझे से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे जिससे वे मेरी उपासना करें।

2 परन्तु यदि उन्हें जाने न देगा तो सुन, मैं मेंढक भेजकर तेरे सारे देश को हानि पहुँचानेवाला हूँ।

3 और नील नदी मेंढकों से भर जाएगी, और वे तेरे भवन में, और तेरे बिछौने पर, और तेरे कर्मचारियों के घरों में, और तेरी प्रजा पर, वरन् तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी चढ़ जाएँगे।

4 और तुझ पर, और तेरी प्रजा, और तेरे कर्मचारियों, सभी पर मेंढक चढ़ जाएँगे।”

5 फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी, “हारून से कह दे, कि नदियों, नहरों, और झीलों के ऊपर लाठी के साथ अपना हाथ बढ़ाकर मेंढकों को मिस्र देश पर चढ़ा ले आए।”

6 तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया; और मेंढकों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा लिया।

7 और जादूगर भी अपने तंत्र-मंत्रों से उसी प्रकार मिस्र देश पर मेंढक चढ़ा ले आए।

8 तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, “यहोवा से विनती करो कि वह मेंढकों को मुझसे और मेरी प्रजा से दूर करे; और मैं इस्राएली लोगों को जाने दूँगा। जिससे वे यहोवा के लिये बलिदान करें।”

9 तब मूसा ने फ़िरौन से कहा, “इतनी बात के लिये तू मुझे आदेश दे कि अब मैं तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के निमित्त कब विनती करूँ, कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढकों को दूर करे, और वे केवल नील नदी में पाए जाएँ?”

10 उसने कहा, “कल।” उसने कहा, “तेरे वचन के अनुसार होगा, जिससे तुझे यह ज्ञात हो जाए कि हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कोई दूसरा नहीं है।

11 और मेंढक तेरे पास से, और तेरे घरों में से, और तेरे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर होकर केवल नील नदी में रहेंगे।”

12 तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास से निकल गए; और मूसा ने उन मेंढकों के विषय यहोवा की दुहाई दी जो उसने फ़िरौन पर भेजे थे।

13 और यहोवा ने मूसा के कहने के अनुसार किया; और मेंढक घरों, आँगनों, और खेतों में मर गए।

14 और लोगों ने इकट्ठे करके उनके ढेर लगा दिए, और सारा देश दुर्गन्ध से भर गया।

15 परन्तु जब फ़िरौन ने देखा कि अब आराम मिला है तब यहोवा के कहने के अनुसार उसने फिर अपने मन को कठोर किया, और उनकी न सुनी।

22:28-29 - 22:30-31 22:32-33

16 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून को आज्ञा दे, तू अपनी लाठी बढ़ाकर 22:32 22:33\* पर मार, जिससे वह मिस्र देश भर में कुटकियाँ बन जाएँ।”

17 और उन्होंने वैसा ही किया; अर्थात् हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियाँ हो गईं वरन् सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियाँ बन गईं।

18 तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र-मंत्रों के बल से हम भी कुटकियाँ ले आएँ, परन्तु यह उनसे न हो सका। और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर कुटकियाँ बनी ही रहीं।

19 तब जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, “यह तो 22:34 22:35† का काम है।” तो भी यहोवा के कहने के अनुसार फ़िरौन का मन कठोर होता गया, और उसने मूसा और हारून की बात न मानी।

22:36-37 - 22:38-39 22:40-41

20 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “सवेरे उठकर फ़िरौन के सामने खड़ा होना, वह तो जल की ओर आएगा, और उससे कहना, ‘यहोवा तुझे से यह कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।

21 यदि तू मेरी प्रजा को न जाने देगा तो सुन, मैं तुझ पर, और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर, और तेरे घरों में झुण्ड के झुण्ड डांस भेजूँगा; और मिस्रियों के घर और उनके रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी।

22 उस दिन मैं गोशेन देश को जिसमें मेरी प्रजा रहती है अलग करूँगा, और उसमें डांसों के झुण्ड न होंगे; जिससे तू जान ले कि पृथ्वी के बीच मैं ही यहोवा हूँ।

23 और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊँगा। यह चिन्ह कल होगा।”

\* 8:16 22:22 22:23: इससे पहले की दो विपत्तियाँ नील नदी पर पड़ी थीं। यह विपत्ति उस भूमि पर पड़ी जिससे वे मिस्र में पूजते थे और देवताओं का पिता मानते थे। † 8:19 22:32 22:33: इसका यह अर्थ यह नहीं कि जादूगरों ने यहोवा को अद्भुत कार्य करनेवाले परमेश्वर के रूप में पहचाना था। सम्भव है कि उन्होंने उसका ऐसे ईश्वर के रूप में जिक्र किया जो उनके अपने रक्षकों का बैरी है।

24 और यहोवा ने वैसा ही किया, और फिरौन के भवन, और उसके कर्मचारियों के घरों में, और सारे मिस्र देश में डांसों के झुण्ड के झुण्ड भर गए, और डांसों के मारे वह देश नाश हुआ।

25 तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, “तुम जाकर [2222] [22222222] [22] [2222] इसी देश में बलिदान करो।”

26 मूसा ने कहा, “ऐसा करना उचित नहीं; क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मिस्रियों की घृणित वस्तु बलिदान करेंगे; और यदि हम मिस्रियों के देखते उनकी घृणित वस्तु बलिदान करें तो क्या वे हमको पथरवाह न करेंगे?”

27 हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही बलिदान करेंगे।”

28 फिरौन ने कहा, “मैं तुम को जंगल में जाने दूँगा कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जंगल में बलिदान करो; केवल बहुत दूर न जाना, और मेरे लिये विनती करो।”

29 तब मूसा ने कहा, “सुन, मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से विनती करूँगा कि डांसों के झुण्ड तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के पास से कल ही दूर हों; पर फिरौन आगे को कपट करके हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने देने के लिये मना न करे।”

30 अतः मूसा ने फिरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा से विनती की।

31 और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसों के झुण्डों को फिरौन, और उसके कर्मचारियों, और उसकी प्रजा से दूर किया; यहाँ तक कि एक भी न रहा।

32 तब फिरौन ने इस बार भी अपने मन को कठोर किया, और उन लोगों को जाने न दिया।

## 9

[222222] [22222222] - [222222] [22] [22222222]

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाकर कह, ‘इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि मेरी उपासना करें।’

2 और यदि तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकड़े रहे,

3 तो सुन, तेरे जो घोड़े, गदहे, ऊँट, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदि पशु मैदान में हैं, उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहुत भारी मरी होगी।

‡ 8:25 [2222] [22222222] [22] [2222]: अब फिरौन उस परमेश्वर के अस्तित्व को और उसके सामर्थ्य को स्वीकारता है, जिसके विषय वह कहता था कि नहीं जानता। \* 9:8 [22222] [222] [22] [22-22] [22222222] [222]: यह क्रिया स्पष्ट रूप से प्रतीकात्मक थी, उस राख को आकाश की ओर उड़ाना था, और इस प्रकार मिस्र के देवताओं को चुनौती देनी थी।

4 परन्तु यहोवा इस्राएलियों के पशुओं में और मिस्रियों के पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा कि जो इस्राएलियों के हैं उनमें से कोई भी न मरेगा।”

5 फिर यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया, “मैं यह काम इस देश में कल करूँगा।”

6 दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया; और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा।

7 और फिरौन ने लोगों को भेजा, पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। तो भी फिरौन का मन कठोर हो गया, और उसने उन लोगों को जाने न दिया।

[222222] [22222222] - [22222222] [22] [22222222] [22] [22222222]

8 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, “तुम दोनों [222222] [2222] [22] [22-22] [22222222] [2222]\* ले लो, और मूसा उसे फिरौन के सामने आकाश की ओर उड़ा दे।

9 तब वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन जाएगी।”

10 इसलिए वे भट्टी में की राख लेकर फिरौन के सामने खड़े हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन गई।

11 उन फोड़ों के कारण जादूगर मूसा के सामने खड़े न रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिस्रियों के वैसे ही जादूगरों के भी निकले थे।

12 तब यहोवा ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया, और जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, उसने उसकी न सुनी। (2222. 9:18)

[22222222] [22222222] - [222222] [22] [22222222]

13 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “सवेरे उठकर फिरौन के सामने खड़ा हो, और उससे कह, ‘इब्रियों का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।’

14 नहीं तो अब की बार मैं तुझ पर, और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियाँ डालूँगा, जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है।

15 मैंने तो अभी हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारा होता, और तू पृथ्वी पर से सत्यानाश हो गया होता;

16 परन्तु सचमुच [2][2][2][2] [2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊँ, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ। (2:17)

17 क्या तू अब भी मेरी प्रजा के सामने अपने आपको बड़ा समझता है, और उन्हें जाने नहीं देता?

18 सुन, कल मैं इसी समय ऐसे भारी-भारी ओले बरसाऊँगा, कि जिनके तुल्य मिस्र की नींव पड़ने के दिन से लेकर अब तक कभी नहीं पड़े।

19 इसलिए अब लोगों को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान में जो कुछ तेरा है सब को फुर्ती से आड़ में छिपा ले; नहीं तो जितने मनुष्य या पशु मैदान में रहें और घर में इकट्ठे न किए जाएँ उन पर ओले गिरेंगे, और वे मर जाएँगे।”

20 इसलिए फिरौन के कर्मचारियों में से जो लोग यहोवा के वचन का भय मानते थे उन्होंने तो अपने-अपने सेवकों और पशुओं को घर में हाँक दिया।

21 पर जिन्होंने यहोवा के वचन पर मन न लगाया उन्होंने अपने सेवकों और पशुओं को मैदान में रहने दिया।

22 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों, पशुओं और खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें।”

23 तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया; और यहोवा की सामर्थ्य से मेघ गरजने और ओले बरसने लगे, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाएँ।

24 जो ओले गिरते थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी, और वे ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी न गिरे थे। (2:8-7, 2:11-19)

25 इसलिए मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलों से मारे गए, और ओलों से खेत की सारी उपज नष्ट हो गई, और मैदान के सब वृक्ष भी टूट गए।

26 केवल गोशेन प्रदेश में जहाँ इस्राएली बसते थे ओले नहीं गिरे।

27 तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवा भेजा और उनसे कहा, “इस बार मैंने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं।

28 मेघों का गरजना और ओलों का बरसना तो बहुत हो गया; अब यहोवा से विनती करो; तब मैं तुम लोगों को जाने दूँगा, और तुम न रोके जाओगे।”

29 मूसा ने उससे कहा, “नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊँगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले फिर न गिरेंगे, इससे तू जान लेगा कि [2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2]।

30 तो भी मैं जानता हूँ, कि न तो तू और न तेरे कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे।”

31 सन और जौ तो ओलों से मारे गए, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे।

32 पर गेहूँ और कठिया गेहूँ जो बढ़े न थे, इस कारण वे मारे न गए।

33 जब मूसा ने फिरौन के पास से नगर के बाहर निकलकर यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादल का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हुआ, और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पड़ा।

34 यह देखकर कि मेंह और ओलों और बादल का गरजना बन्द हो गया फिरौन ने अपने कर्मचारियों समेत फिर अपने मन को कठोर करके पाप किया।

35 इस प्रकार फिरौन का मन हठीला होता गया, और उसने इस्राएलियों को जाने न दिया; जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया था।

## 10

[2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] - [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने उसके और उसके कर्मचारियों के मन को इसलिए कठोर कर दिया है कि अपने चिन्ह उनके बीच में दिखलाऊँ,

2 और तुम लोग अपने बेटों और पोतों से इसका वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियों को कैसे उपहास में उड़ाया और अपने क्या-क्या चिन्ह उनके बीच प्रगट किए हैं; जिससे तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।”

3 तब मूसा और हारून ने फिरौन के पास जाकर कहा, “इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि तू कब तक मेरे सामने दीन होने से संकोच करता रहेगा? मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें।

4 यदि तू मेरी प्रजा को जाने न दे तो सुन, कल मैं तेरे देश में [2][2][2][2][2][2][2][2]\* ले आऊँगा।

5 और वे धरती को ऐसा छा लेंगी कि वह देख न पड़ेगी; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है उसको

† 9:16 [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]: परमेश्वर ने अपना उद्देश्य पूरा होने तक के लिए फिरौन जीवित और धामे रखा। ‡ 9:29 [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]: इस घोषणा का सीधा सम्बंध मिस्र के अंधविश्वास से है। \* 10:4 [2][2][2][2][2][2][2][2]: मिस्र में टिड्डियों का होना इतनी सामान्य बात नहीं थी, फिर भी वह भयंकर विनाश के लिए जानी जाती थीं।

वे चट कर जाएंगी, और तुम्हारे जितने वृक्ष मैदान में लगे हैं उनको भी वे चट कर जाएंगी,

6 और वे तेरे और तेरे सारे कर्मचारियों, यहाँ तक सारे मिश्रियों के घरों <sup>10:6</sup>; इतनी टिड्डियाँ तेरे बापदादों ने या उनके पुरखाओं ने जब से पृथ्वी पर जन्मे तब से आज तक कभी न देखीं।” और वह मुँह फेरकर फिरौन के पास से बाहर गया।

7 तब फिरौन के कर्मचारी उससे कहने लगे, “वह जन कब तक हमारे लिये फंदा बना रहेगा? उन मनुष्यों को जाने दे कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें; क्या तू अब तक नहीं जानता कि सारा मिश्र नाश हो गया है?”

8 तब मूसा और हारून फिरौन के पास फिर बुलवाए गए, और उसने उनसे कहा, “चले जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो; परन्तु वे जो जानेवाले हैं, कौन-कौन हैं?”

9 मूसा ने कहा, “हम तो बेटों-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन् बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब जाएँगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्व करना है।”

10 उसने इस प्रकार उनसे कहा, “यहोवा तुम्हारे संग रहे जबकि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने देता हूँ; देखो, <sup>10:10</sup>।

11 नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तुम पुरुष ही जाकर यहोवा की उपासना करो, तुम यही तो चाहते थे।” और वे फिरौन के सम्मुख से निकाल दिए गए।

12 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “मिश्र देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि टिड्डियाँ मिश्र देश पर चढ़कर भूमि का जितना अन्न आदि ओलों से बचा है सब को चट कर जाएँ।”

13 अतः मूसा ने अपनी लाठी को मिश्र देश के ऊपर बढ़ाया, तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई; और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई में टिड्डियाँ आईं।

14 और टिड्डियों ने चढ़कर मिश्र देश के सारे स्थानों में बसेरा किया, उनका दल बहुत भारी था, वरन् न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियाँ आई थीं, और न उनके पीछे ऐसी फिर आएंगी।

15 वे तो सारी धरती पर छा गईं, यहाँ तक कि देश में अंधकार छा गया, और उसका सारा अन्न आदि और वृक्षों के सब फल, अर्थात् जो कुछ ओलों से बचा था, सब को उन्होंने चट कर लिया; यहाँ तक कि मिश्र देश

भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत में अनाज रह गया।

16 तब फिरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, “मैंने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है।

17 इसलिए अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो, और अपने परमेश्वर यहोवा से विनती करो कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे।”

18 तब मूसा ने फिरौन के पास से निकलकर यहोवा से विनती की।

19 तब यहोवा ने बहुत प्रचण्ड पश्चिमी हवा बहाकर टिड्डियों को उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया, और मिश्र के किसी स्थान में एक भी टिड्डी न रह गई।

20 तो भी यहोवा ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया, जिससे उसने इस्राएलियों को जाने न दिया।

<sup>10:21</sup> - <sup>10:22</sup>

21 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि मिश्र देश के ऊपर <sup>10:21</sup> छा जाए, ऐसा अंधकार कि टटोला जा सके।”

22 तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और सारे मिश्र देश में तीन दिन तक घोर अंधकार छाया रहा।

23 तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने स्थान से उठा; परन्तु सारे इस्राएलियों के घरों में उजियाला रहा।

24 तब फिरौन ने मूसा को बुलवाकर कहा, “तुम लोग जाओ, यहोवा की उपासना करो; अपने बालकों को भी संग ले जाओ; केवल अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल को छोड़ जाओ।”

25 मूसा ने कहा, “तुझको हमारे हाथ मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने पड़ेंगे, जिन्हें हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये चढ़ाएँ।

26 इसलिए हमारे पशु भी हमारे संग जाएँगे, उनका एक खुर तक न रह जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हमको अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा, और हम जब तक वहाँ न पहुँचें तब तक नहीं जानते कि क्या-क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी।”

27 पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया, जिससे उसने उन्हें जाने न दिया।

28 तब फिरौन ने उससे कहा, “मेरे सामने से चला जा; और सचेत रह; मुझे अपना मुख फिर न दिखाना;

† 10:6 <sup>10:6</sup>: उस समय टिड्डियाँ घरों की छतों पर, आँगनों में और यहाँ तक कि घर के भीतर भी भर जाएँगीं। ‡ 10:10 <sup>10:10</sup>

<sup>10:10</sup>: तुम्हारे इरादे बुरे हैं। जितना हो सके उतना दण्ड मिले। § 10:21 <sup>10:21</sup>: यह दण्ड विशेष रूप से मिश्रियों की धार्मिक भावनाओं को प्रभावित करती है, जिनकी उपासना का मुख्य केंद्र सूर्य-देवता था।

क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुँह दिखलाए उसी दिन तू मारा जाएगा।”

29 मूसा ने कहा, “तूने ठीक कहा है; मैं तेरे मुँह को फिर कभी न देखूँगा।”

## 11

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “एक और विपत्ति मैं

फ़िरौन और मिस्र देश पर डालता हूँ, उसके पश्चात् 2 और जब वह जाने देगा तब तुम सभी को निश्चय निकाल देगा।

2 मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना कि एक-एक पुरुष अपने-अपने पड़ोसी, और एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन से सोने-चाँदी के गहने माँग ले।”

3 तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। और इससे अधिक वह पुरुष मूसा मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान था।

4 फिर मूसा ने कहा, “यहोवा इस प्रकार कहता है, कि आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूँगा।

5 तब मिस्र में सिंहासन पर विराजनेवाले फ़िरौन से लेकर चक्की पीसनेवाली दासी तक के पहलौटे; वरन् पशुओं तक के सब पहलौटे मर जाएँगे।

6 और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहाँ तक कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा।

7 पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई 8 तब तेरे ये सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत् करके यह कहेंगे, ‘अपने सब अनुचरों समेत निकल जा।’ और उसके पश्चात् मैं निकल जाऊँगा।” यह कहकर मूसा बड़े क्रोध में फ़िरौन के पास से निकल गया।

9 यहोवा ने मूसा से कह दिया था, “फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा; क्योंकि मेरी इच्छा है कि मिस्र देश में बहुत से चमत्कार करूँ।”

10 मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये सब चमत्कार किए; पर यहोवा ने फ़िरौन का मन और कठोर

कर दिया, इसलिए उसने इस्राएलियों को अपने देश से जाने न दिया।

## 12

1 फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से

कहा, 2 “यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात् वर्ष का पहला महीना यही ठहरे।

3 इस्राएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे 4 और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों, तो वह अपने सबसे निकट रहनेवाले पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रखे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मेम्ने का हिसाब करना।

5 तुम्हारा मेम्ना 6 और पहले वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से। 7 और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन सूर्यास्त के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें।

8 और वे उसके माँस को उसी रात आग में भूनकर 9 उसको सिर, पैर, और अंतड़ियाँ समेत आग में भूनकर खाना, कच्चा या जल में कुछ भी पकाकर न खाना। 10 और उसमें से कुछ सवेरे तक न रहने देना, और यदि कुछ सवेरे तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। 11 और उसके खाने की यह विधि है; कि कमर बाँधे, पाँव में जूती पहने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का फसह होगा।

12 क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में से होकर जाऊँगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के

\* 11:1 तब आखिरकार वह तुम्हें बाल-बच्चों, गाय-बैलों और सब सम्पत्ति के साथ जाने देगा।

† 11:7 यह कहावत अकस्मात् खतरे से स्वतंत्र रहने और हमले से बचे रहने के बारे में बताती है। \* 12:3 इब्रानी शब्द व्यापक है; इसका अर्थ भेड़, या बकरी, नर अथवा मादा से है। † 12:5 यह सामान्य नियम के अनुसार है, यद्यपि इस मामले में एक विशेष कारण है, क्योंकि मेम्ना प्रत्येक घराने के पहलौटे पुत्र के स्थान पर था। ‡ 12:8 यह वहाँ से शीघ्र निकलने के सन्दर्भ में था; जब खमीर की प्रक्रिया के लिए कोई समय नहीं था। § 12:8 यह इस्राएलियों द्वारा सहे दुःखों का प्रतीक था।

पहिलौठों को मारूँगा; और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूँगा; मैं तो यहोवा हूँ।

13 और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूँगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे।

14 और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये पर्व करके मानना; वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्व माना जाए।

???????? ???? ?

15 “सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, उनमें से पहले ही दिन अपने-अपने घर में से खमीर उठा डालना, वरन् जो पहले दिन से लेकर सातवें दिन तक कोई खमीरी वस्तु खाए, वह प्राणी इस्राएलियों में से नाश किया जाए।

16 पहले दिन एक पवित्र सभा, और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा करना; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए; केवल जिस प्राणी का जो खाना हो उसके काम करने की आज्ञा है।

17 इसलिए तुम बिना खमीर की रोटी का पर्व मानना, क्योंकि उसी दिन मानो मैंने तुम को दल-दल करके मिस्र देश से निकाला है; इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर माना जाए।

18 पहले महीने के चौदहवें दिन की साँझ से लेकर इक्कीसवें दिन की साँझ तक तुम अखमीरी रोटी खाया करना।

19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न रहे, वरन् जो कोई किसी खमीरी वस्तु को खाए, चाहे वह देशी हो चाहे परदेशी, वह प्राणी इस्राएलियों की मण्डली से नाश किया जाए।

20 कोई खमीरी वस्तु न खाना; अपने सब घरों में बिना खमीर की रोटी खाया करना।”

???????? ???? ? ? ?

21 तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा, “तुम अपने-अपने कुल के अनुसार एक-एक मेम्ना अलग कर रखो, और फसह का पशुबलि करना।

22 और उसका लहू जो तसले में होगा उसमें जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी तसले में के लहू से द्वार के चौखट के सिरे और दोनों ओर पर कुछ लगाना; और भोर तक तुम में से कोई घर से बाहर न निकले।

23 क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा; इसलिए जहाँ-जहाँ वह चौखट के सिरे,

और दोनों ओर पर उस लहू को देखेगा, वहाँ-वहाँ वह उस द्वार को छोड़ जाएगा, और नाश करनेवाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिये न जाने देगा।

24 फिर तुम इस विधि को अपने और अपने वंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो।

25 जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपने कहने के अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो, तब वह काम किया करना।

26 और जब तुम्हारे लड़के वाले तुम से पूछें, ‘इस काम से तुम्हारा क्या मतलब है?’

27 तब तुम उनको यह उत्तर देना, ‘यहोवा ने जो मिस्रियों के मारने के समय मिस्र में रहनेवाले हम इस्राएलियों के घरों को छोड़कर हमारे घरों को बचाया, इसी कारण उसके फसह का यह बलिदान किया जाता है।’ तब लोगों ने सिर झुकाकर दण्डवत् किया।

28 और इस्राएलियों ने जाकर, जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हारून को दी थी, उसी के अनुसार किया।

???????? ???? ? - ???? ? ? ?

29 ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फ़िरौन से लेकर गट्टे में पड़े हुए बँधुए तक सब के पहिलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला।

30 और फ़िरौन रात ही को उठ बैठा, और उसके सब कर्मचारी, वरन् सारे मिस्री उठे; और मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई मरा न हो।

31 तब फ़िरौन ने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, “तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ; और अपने कहने के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो।

32 अपने कहने के अनुसार अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को साथ ले जाओ; और मुझे आशीर्वाद दे जाओ।”

33 और मिस्री जो कहते थे, ‘हम तो सब मर मिटे हैं;’ उन्होंने इस्राएली लोगों पर दबाव डालकर कहा, ‘देश से झटपट निकल जाओ।’

34 तब उन्होंने अपने गुँधे-गुँधाए आटे को बिना खमीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों में बाँधकर अपने-अपने कंधे पर डाल लिया।

35 इस्राएलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियों से सोने-चाँदी के गहने और वस्त्र माँग लिए।

36 और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया कि उन्होंने जो-जो माँगा वह सब उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया।









6 हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ  
हे यहोवा,

तेरा दाहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है।

7 तू अपने विरोधियों को अपने महाप्रताप से गिरा देता  
है;

तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे के समान भस्म हो  
जाते हैं।

8 तेरे नथनों की साँस से जल एकत्र हो गया,

धाराएँ ढेर के समान थम गईं;

समुद्र के मध्य में गहरा जल जम गया।

9 शत्रु ने कहा था,

मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा,

मैं लूट के माल को बाँट लूँगा,

उनसे मेरा जी भर जाएगा।

मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उनको नाश  
कर डालूँगा।

10 तूने अपने श्वास का पवन चलाया,

तब समुद्र ने उनको ढाँप लिया;

वे समुद्र में सीसे के समान डूब गए।

11 हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है?

तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी,

और अपनी स्तुति करनेवालों के भय के योग्य,

और आश्चर्यकर्मों का कर्ता है।

12 तूने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया,

और पृथ्वी ने उनको निगल लिया है।

13 अपनी करुणा से तूने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की  
अगुआई की है,

अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवास-स्थान को ले  
चला है।

14 देश-देश के लोग सुनकर काँप उठेंगे;

पलिशतियों के प्राणों के लाले पड़ जाएँगे।

15 एदोम के अधिपति व्याकुल होंगे;

थरथरा उठेंगे;

सब कनान निवासियों के मन पिघल जाएँगे।

16 उनमें डर और घबराहट समा जाएगा;

तेरी बाँह के प्रताप से वे पत्थर के समान अबोल होंगे,  
जब तक, हे यहोवा, तेरी प्रजा के लोग निकल न जाएँ,  
जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको तूने मोल लिया है

पार न निकल जाएँ।

17 तू उन्हें पहुँचाकर अपने निज भागवाले पहाड़ पर  
बसाएगा,

यह वही स्थान है,

हे यहोवा जिसे तूने अपने निवास के लिये बनाया,

और वही पवित्रस्थान है जिसे,

हे प्रभु, तूने आप ही स्थिर किया है।

18 यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।”

19 यह गीत गाने का कारण यह है, कि फ़िरौन के घोड़े  
रथों और सवारों समेत समुद्र के बीच में चले गए, और  
यहोवा उनके ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया; परन्तु  
इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले  
गए।

20 तब हारून की बहन

ने हाथ में डफ़ लिया; और सब स्त्रियाँ डफ़ लिए नाचती  
हुई उसके पीछे हो लीं।

21 और मिर्याम उनके साथ यह टेक गाती गई कि:

“यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा  
है;

घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है।”

22 तब मूसा इस्राएलियों को लाल समुद्र से आगे ले

गया, और वे शूर नामक जंगल में आए; और जंगल में  
जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला।

23 फिर मारा नामक एक स्थान पर पहुँचे, वहाँ का  
पानी खारा था, उसे वे न पी सके; इस कारण उस स्थान  
का नाम मारा पड़ा।

24 तब वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध बड़बड़ाने लगे,  
“हम क्या पीएँ?”

25 तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा  
ने उसे एक पौधा बता दिया, जिसे जब उसने पानी में  
डाला, तब वह पानी मीठा हो गया। वहीं यहोवा ने उनके  
लिये एक विधि और नियम बनाया, और वहीं उसने यह  
कहकर उनकी परीक्षा की,

26 “यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन  
मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे,  
और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए और उसकी सब  
विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्रियों पर भेजे  
हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारा  
चंगा करनेवाला यहोवा हूँ।”

27 तब वे को आए, जहाँ पानी के बारह सोते  
और सत्तर खजूर के पेड़ थे; और वहाँ उन्होंने जल के  
पास डेरे खड़े किए।

† 15:15 15:15-15:15: मोआवियों के अगुए बड़े डील-डौल और शारीरिक शक्ति वाले थे। ‡ 15:20 15:20-15:20: मरियम और हारून ने ईश्वरीय प्रकाशन को प्राप्त किया था। इस शब्द का प्रयोग यहाँ पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित शब्दों को बोलने के अभिप्राय से किया गया है। § 15:27 15:27: धरंदेल की घाटी, जो हवारा से दक्षिण की ओर दो घंटे की यात्रा पर है।

## 16

११११११ ११ ११११११

1 फिर एलीम से कूच करके इस्राएलियों की सारी मण्डली, मिस्र देश से निकलने के बाद दूसरे महीने के पंद्रहवे दिन को, सीन नामक जंगल में, जो एलीम और सीनै पर्वत के बीच में है, आ पहुँची।

2 जंगल में इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा और हारून के विरुद्ध बुड़बुड़ाने लगे।

3 और इस्राएली उनसे कहने लगे, “जब हम मिस्र देश में माँस की हाँडियों के पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे, तब यदि हम ११११११ ११ ११११ ११\* मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था; पर तुम हमको इस जंगल में इसलिए निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को भूखा मार डालो।”

4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजनवस्तु बरसाऊँगा; और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करेंगे, इससे मैं उनकी परीक्षा करूँगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं।

5 और ऐसा होगा कि छठवें दिन वह भोजन और दिनों से दूना होगा, इसलिए जो कुछ वे उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रखें।”

6 तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा, “साँझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है।

7 और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा, क्योंकि तुम जो यहोवा पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं कि तुम हम पर बुड़बुड़ाते हो?”

8 फिर मूसा ने कहा, “यह तब होगा जब यहोवा साँझ को तुम्हें खाने के लिये माँस और भोर को रोटी मनमाने देगा; क्योंकि तुम जो उस पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं? तुम्हारा बुड़बुड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है।”

9 फिर मूसा ने हारून से कहा, “इस्राएलियों की सारी मण्डली को आज्ञा दे, कि यहोवा के सामने वरन् उसके समीप आए, क्योंकि उसने उनका बुड़बुड़ाना सुना है।”

10 और ऐसा हुआ कि जब हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा था, कि उन्होंने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया।

11 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

12 “इस्राएलियों का बुड़बुड़ाना मैंने सुना है; उनसे कह दे, कि सूर्यास्त के समय तुम माँस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

13 तब ऐसा हुआ कि साँझ को ११११११११† आकर सारी छावनी पर बैठ गई; और भोर को छावनी के चारों ओर ओस पड़ी।

14 और जब ओस सूख गई तो वे क्या देखते हैं, कि जंगल की भूमि पर छोटे-छोटे छिलके पाले के किनकों के समान पड़े हैं।

15 यह देखकर इस्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, वे आपस में कहने लगे यह तो मन्ना है। तब मूसा ने उनसे कहा, “यह तो वही भोजनवस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है।

16 जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है, कि तुम उसमें से अपने-अपने खाने के योग्य बटोरा करना, अर्थात् अपने-अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य के पीछे एक-एक ओमेर बटोरना; जिसके डेरे में जितने हों वह उन्हीं के लिये बटोरा करे।”

17 और इस्राएलियों ने वैसा ही किया; और किसी ने अधिक, और किसी ने थोड़ा बटोर लिया।

18 जब उन्होंने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक था उसके कुछ अधिक न रह गया, और जिसके पास थोड़ा था उसको कुछ घटी न हुई; क्योंकि एक-एक मनुष्य ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था।

19 फिर मूसा ने उनसे कहा, “कोई इसमें से कुछ सवेरे तक न रख छोड़े।”

20 तो भी उन्होंने मूसा की बात न मानी; इसलिए जब किसी किसी मनुष्य ने उसमें से कुछ सवेरे तक रख छोड़ा, तो उसमें कीड़े पड़ गए और वह बसाने लगा; तब मूसा उन पर क्रोधित हुआ।

21 वे भोर को प्रतिदिन अपने-अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे, और जब धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था।

22 फिर ऐसा हुआ कि छठवें दिन उन्होंने दूना, अर्थात् प्रति मनुष्य के पीछे दो-दो ओमेर बटोर लिया, और मण्डली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया।

23 उसने उनसे कहा, “यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि १११‡ पवित्र विश्राम, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा; इसलिए तुम्हें जो तंदूर में पकाना हो उसे पकाओ, और जो सिझाना हो उसे

\* 16:3 ११११११ ११ ११११ ११: यह स्पष्ट रूप से मिस्र की महा विपत्तियों, विशेष रूप से अंतिम महाविपत्ति की ओर संकेत करता है, जो मिस्रियों पर पड़ी। † 16:13 ११११११११: ये पक्षी दक्षिण दिशा से वसन्त ऋतु में बड़ी संख्या में आते हैं यह लाल समुद्र के आस-पास सबसे अधिक पाए जाते हैं। ‡ 16:23 १११: कल अवश्य विश्राम का दिन है, इसे सब्त के दिन अर्थात् यहोवा के पवित्र दिन के रूप में माना जाए।

सिद्धाओ, और इसमें से जितना बचे उसे सवेरे के लिये रख छोड़ो।”

24 जब उन्होंने उसको मूसा की इस आज्ञा के अनुसार सवेरे तक रख छोड़ा, तब न तो वह बसाया, और न उसमें कीड़े पड़े।

25 तब मूसा ने कहा, “आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्रामदिन है; इसलिए आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा।

26 छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे; परन्तु सातवाँ दिन तो विश्राम का दिन है, उसमें वह न मिलेगा।”

27 तो भी लोगों में से कोई-कोई सातवें दिन भी बटोरने के लिये बाहर गए, परन्तु उनको कुछ न मिला।

28 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे?

29 देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है; इसलिए [222] [2222-2222] [2222] [2222]S रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना।”

30 अतः लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।

31 इस्राएल के घराने ने उस वस्तु का नाम मन्ना रखा; और वह धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पूए का सा था।

32 फिर मूसा ने कहा, “यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है, कि इसमें से ओमेर भर अपने वंश की पीढ़ी-पीढ़ी के लिये रख छोड़ो, जिससे वे जानें कि यहोवा हमको मिस्र देश से निकालकर जंगल में कैसी रोटी खिलाता था।”

33 तब मूसा ने हारून से कहा, “एक पात्र लेकर उसमें ओमेर भर लेकर उसे यहोवा के आगे रख दे, कि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये रखा रहे।”

34 जैसी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसी के अनुसार हारून ने उसको साक्षी के सन्दूक के आगे रख दिया, कि वह वहीं रखा रहे।

35 इस्राएली जब तक बसे हुए देश में न पहुँचे तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे; वे जब तक कनान देश की सीमा पर नहीं पहुँचे तब तक मन्ना खाते रहे।

36 एक ओमेर तो एपा का दसवाँ भाग है।

## 17

[222222] [22] [22222] [222222222]

§ 16:29 [222] [2222-2222] [2222] [2222]: उन्हें मन्ना इकट्ठा करने के लिए अपने स्थान से दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु ने उन्हें यह सब एक आशीष और सौभाग्य के रूप में दी; यह मनुष्य के लिए बनाया गया था। \* 17:2 [22222] [22] [22222222] [22222] [2222] [22]: यह इस्राएलियों के इस मुख्य स्वभाव का चित्रण करता है कि जब भी ऐसे आश्चर्यकर्म हुए, जिनसे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हुई, उससे उनमें विश्वास करने की आदत नहीं बन पाई। † 17:7 [222222]: अर्थात् परीक्षा ‡ 17:7 [222222]: अर्थात् विवाद § 17:9 [222222]: उसका मूल नाम होशे था, यहाँ मूसा के इस महान शिष्य और उत्तराधिकारी का पहला जिक्र है। \* 17:10 [2222]: वह परमेश्वर के तम्बू का महान कारीगर और शिल्पकार

1 फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नामक जंगल से निकल चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहाँ उन लोगों को पीने का पानी न मिला।

2 इसलिए वे मूसा से वाद-विवाद करके कहने लगे, “हमें पीने का पानी दे।” मूसा ने उनसे कहा, “तुम मुझसे क्यों वाद-विवाद करते हो? और [222222] [22] [222222222] [222222] [22222] [22]\*?”

3 फिर वहाँ लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, “तू हमें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?”

4 तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी, और कहा, “इन लोगों से मैं क्या करूँ? ये सब मुझे पथरवाह करने को तैयार हैं।”

5 यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तूने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल।

6 देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उसमें से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएँ।” तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।

7 और मूसा ने उस स्थान का नाम [22222222] और [22222222] रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहाँ वाद-विवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, “क्या यहोवा हमारे बीच है या नहीं?”

[222222222222] [22] [222222]

8 तब अमालेकी आकर रपीदीम में इस्राएलियों से लड़ने लगे।

9 तब मूसा ने [22222222]S से कहा, “हमारे लिये कई एक पुरुषों को चुनकर छाँट ले, और बाहर जाकर अमालेकियों से लड़; और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।”

10 मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से लड़ने लगा; और मूसा, हारून, और [2222]\* पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए।

11 और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था; परन्तु जब जब वह उसे नीचे करता तब-तब अमालेक प्रबल होता था।

12 और जब मूसा के हाथ भर गए, तब उन्होंने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर बैठ गया, और हारून और हूर एक-एक ओर में उसके हाथों को सम्भाले रहे; और उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे।

13 और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के बल से हरा दिया।

14 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा डालूँगा।”

15 तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम ‘<sup>17:15</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~’ रखा;

16 और कहा, “यहोवा ने शपथ खाई है कि यहोवा अमालेकियों से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा।”

## 18

<sup>18:1</sup> ~~यहोवा ने मूसा को~~ <sup>18:2</sup> ~~कहा~~ <sup>18:3</sup> ~~कि~~ <sup>18:4</sup> ~~तू~~ <sup>18:5</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:6</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:7</sup> ~~कर~~ <sup>18:8</sup> ~~सकता~~ <sup>18:9</sup> ~~है~~ <sup>18:10</sup> ~~कि~~ <sup>18:11</sup> ~~तू~~ <sup>18:12</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:13</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:14</sup> ~~कर~~ <sup>18:15</sup> ~~सकता~~ <sup>18:16</sup> ~~है~~ <sup>18:17</sup> ~~कि~~ <sup>18:18</sup> ~~तू~~ <sup>18:19</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:20</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:21</sup> ~~कर~~ <sup>18:22</sup> ~~सकता~~ <sup>18:23</sup> ~~है~~ <sup>18:24</sup> ~~कि~~ <sup>18:25</sup> ~~तू~~ <sup>18:26</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:27</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:28</sup> ~~कर~~ <sup>18:29</sup> ~~सकता~~ <sup>18:30</sup> ~~है~~ <sup>18:31</sup> ~~कि~~ <sup>18:32</sup> ~~तू~~ <sup>18:33</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:34</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:35</sup> ~~कर~~ <sup>18:36</sup> ~~सकता~~ <sup>18:37</sup> ~~है~~ <sup>18:38</sup> ~~कि~~ <sup>18:39</sup> ~~तू~~ <sup>18:40</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:41</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:42</sup> ~~कर~~ <sup>18:43</sup> ~~सकता~~ <sup>18:44</sup> ~~है~~ <sup>18:45</sup> ~~कि~~ <sup>18:46</sup> ~~तू~~ <sup>18:47</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:48</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:49</sup> ~~कर~~ <sup>18:50</sup> ~~सकता~~ <sup>18:51</sup> ~~है~~ <sup>18:52</sup> ~~कि~~ <sup>18:53</sup> ~~तू~~ <sup>18:54</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:55</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:56</sup> ~~कर~~ <sup>18:57</sup> ~~सकता~~ <sup>18:58</sup> ~~है~~ <sup>18:59</sup> ~~कि~~ <sup>18:60</sup> ~~तू~~ <sup>18:61</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:62</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:63</sup> ~~कर~~ <sup>18:64</sup> ~~सकता~~ <sup>18:65</sup> ~~है~~ <sup>18:66</sup> ~~कि~~ <sup>18:67</sup> ~~तू~~ <sup>18:68</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:69</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:70</sup> ~~कर~~ <sup>18:71</sup> ~~सकता~~ <sup>18:72</sup> ~~है~~ <sup>18:73</sup> ~~कि~~ <sup>18:74</sup> ~~तू~~ <sup>18:75</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:76</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:77</sup> ~~कर~~ <sup>18:78</sup> ~~सकता~~ <sup>18:79</sup> ~~है~~ <sup>18:80</sup> ~~कि~~ <sup>18:81</sup> ~~तू~~ <sup>18:82</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:83</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:84</sup> ~~कर~~ <sup>18:85</sup> ~~सकता~~ <sup>18:86</sup> ~~है~~ <sup>18:87</sup> ~~कि~~ <sup>18:88</sup> ~~तू~~ <sup>18:89</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:90</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:91</sup> ~~कर~~ <sup>18:92</sup> ~~सकता~~ <sup>18:93</sup> ~~है~~ <sup>18:94</sup> ~~कि~~ <sup>18:95</sup> ~~तू~~ <sup>18:96</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:97</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:98</sup> ~~कर~~ <sup>18:99</sup> ~~सकता~~ <sup>18:100</sup> ~~है~~

1 जब मूसा के ससुर मिद्यान के याजक यित्रो ने यह सुना, कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल के लिये क्या-क्या किया है, अर्थात् यह कि किस रीति से यहोवा इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आया।

2 तब मूसा के ससुर यित्रो मूसा की पत्नी सिप्पोरा को, जो पहले अपने पिता के घर भेज दी गई थी,

3 और उसके दोनों बेटों को भी ले आया; इनमें से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेशोम रखा था, “मैं अन्य देश में परदेशी हुआ हूँ।”

4 और दूसरे का नाम उसने यह कहकर <sup>17:15</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~\* रखा, “मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया।”

5 मूसा की पत्नी और पुत्रों को उसका ससुर यित्रो संग लिए मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया, जहाँ परमेश्वर के पर्वत के पास उसका डेरा पड़ा था।

6 और आकर उसने मूसा के पास यह कहला भेजा, “मैं तेरा ससुर यित्रो हूँ, और दोनों बेटों समेत तेरी पत्नी को तेरे पास ले आया हूँ।”

7 तब मूसा अपने ससुर से भेंट करने के लिये निकला, और उसको दण्डवत् करके चूमा; और वे परस्पर कुशलता पूछते हुए डेरे पर आ गए।

8 वहाँ मूसा ने अपने ससुर से वर्णन किया कि यहोवा ने इस्राएलियों के निमित्त फ़िरौन और मिस्रियों से क्या-क्या किया, और इस्राएलियों ने मार्ग में क्या-क्या कष्ट उठाया, फिर यहोवा उन्हें कैसे-कैसे छुड़ाता आया है।

9 तब यित्रो ने उस समस्त भलाई के कारण जो यहोवा ने इस्राएलियों के साथ की थी कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाया था, मगन होकर कहा,

10 “धन्य है यहोवा, जिसने तुम को फ़िरौन और मिस्रियों के वश से छुड़ाया, जिसने तुम लोगों को मिस्रियों की मुट्टी में से छुड़ाया है।

11 अब मैंने जान लिया है कि यहोवा <sup>17:15</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~ है; वरन् उस विषय में भी जिसमें उन्होंने इस्राएलियों के साथ अहंकारपूर्ण व्यवहार किया था।”

12 तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और हारून इस्राएलियों के सब पुरनियों समेत मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर के आगे भोजन करने को आया।

<sup>18:13</sup> ~~यहोवा ने मूसा को~~ <sup>18:14</sup> ~~कहा~~ <sup>18:15</sup> ~~कि~~ <sup>18:16</sup> ~~तू~~ <sup>18:17</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:18</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:19</sup> ~~कर~~ <sup>18:20</sup> ~~सकता~~ <sup>18:21</sup> ~~है~~ <sup>18:22</sup> ~~कि~~ <sup>18:23</sup> ~~तू~~ <sup>18:24</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:25</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:26</sup> ~~कर~~ <sup>18:27</sup> ~~सकता~~ <sup>18:28</sup> ~~है~~ <sup>18:29</sup> ~~कि~~ <sup>18:30</sup> ~~तू~~ <sup>18:31</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:32</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:33</sup> ~~कर~~ <sup>18:34</sup> ~~सकता~~ <sup>18:35</sup> ~~है~~ <sup>18:36</sup> ~~कि~~ <sup>18:37</sup> ~~तू~~ <sup>18:38</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:39</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:40</sup> ~~कर~~ <sup>18:41</sup> ~~सकता~~ <sup>18:42</sup> ~~है~~ <sup>18:43</sup> ~~कि~~ <sup>18:44</sup> ~~तू~~ <sup>18:45</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:46</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:47</sup> ~~कर~~ <sup>18:48</sup> ~~सकता~~ <sup>18:49</sup> ~~है~~ <sup>18:50</sup> ~~कि~~ <sup>18:51</sup> ~~तू~~ <sup>18:52</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:53</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:54</sup> ~~कर~~ <sup>18:55</sup> ~~सकता~~ <sup>18:56</sup> ~~है~~ <sup>18:57</sup> ~~कि~~ <sup>18:58</sup> ~~तू~~ <sup>18:59</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:60</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:61</sup> ~~कर~~ <sup>18:62</sup> ~~सकता~~ <sup>18:63</sup> ~~है~~ <sup>18:64</sup> ~~कि~~ <sup>18:65</sup> ~~तू~~ <sup>18:66</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:67</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:68</sup> ~~कर~~ <sup>18:69</sup> ~~सकता~~ <sup>18:70</sup> ~~है~~ <sup>18:71</sup> ~~कि~~ <sup>18:72</sup> ~~तू~~ <sup>18:73</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:74</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:75</sup> ~~कर~~ <sup>18:76</sup> ~~सकता~~ <sup>18:77</sup> ~~है~~ <sup>18:78</sup> ~~कि~~ <sup>18:79</sup> ~~तू~~ <sup>18:80</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:81</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:82</sup> ~~कर~~ <sup>18:83</sup> ~~सकता~~ <sup>18:84</sup> ~~है~~ <sup>18:85</sup> ~~कि~~ <sup>18:86</sup> ~~तू~~ <sup>18:87</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:88</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:89</sup> ~~कर~~ <sup>18:90</sup> ~~सकता~~ <sup>18:91</sup> ~~है~~ <sup>18:92</sup> ~~कि~~ <sup>18:93</sup> ~~तू~~ <sup>18:94</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:95</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:96</sup> ~~कर~~ <sup>18:97</sup> ~~सकता~~ <sup>18:98</sup> ~~है~~ <sup>18:99</sup> ~~कि~~ <sup>18:100</sup> ~~तू~~ <sup>18:101</sup> ~~अकेला~~ <sup>18:102</sup> ~~नहीं~~ <sup>18:103</sup> ~~कर~~ <sup>18:104</sup> ~~सकता~~ <sup>18:105</sup> ~~है~~

13 दूसरे दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा, और भोर से साँझ तक लोग मूसा के आस-पास खड़े रहे।

14 यह देखकर कि मूसा लोगों के लिये क्या-क्या करता है, उसके ससुर ने कहा, “यह क्या काम है जो तू लोगों के लिये करता है? क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है, और लोग भोर से साँझ तक तेरे आस-पास खड़े रहते हैं?”

15 मूसा ने अपने ससुर से कहा, “इसका कारण यह है कि लोग मेरे पास <sup>17:15</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~ आते हैं।

16 जब जब उनका कोई मुकद्दमा होता है तब-तब वे मेरे पास आते हैं और मैं उनके बीच न्याय करता, और परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें समझाता हूँ।”

17 मूसा के ससुर ने उससे कहा, “जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं।

18 और इससे तू क्या, वरन् ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय थक जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता।

19 इसलिए अब मेरी सुन ले, मैं तुझको सम्मति देता हूँ, और परमेश्वर तेरे संग रहे। तू तो इन लोगों के लिये परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके मुकद्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुँचा दिया कर।

† 17:15 <sup>17:15</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~: स्पष्ट रूप से इसका अर्थ यह है कि यहोवा का नाम वह सच्चा ध्वज है जिसके नीचे विजय निश्चित है। \* 18:4 <sup>18:4</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~: अर्थात् “परमेश्वर मेरा सहायक है” † 18:11 <sup>18:11</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~: ये शब्द इस तथ्य को प्रगट करते हैं कि यहोवा का सामर्थ्य और तेज अतुल्य है। ‡ 18:15 <sup>18:15</sup> ~~यहोवा मेरा सहायक है~~: लोग बिना संदेह किए मूसा के निर्णयों को परमेश्वर की इच्छा के रूप में ग्रहण करते थे।



17 तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया; और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए।

18 और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धुएँ से भर गया; और उसका धुआँ भट्टे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था।

19 फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया।

20 और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा; और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया और मूसा ऊपर चढ़ गया।

21 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “नीचे उतरकर लोगों को चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़कर यहोवा के पास देखने को घुसँ, और उनमें से बहुत नाश हो जाएँ।

22 और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े।”

23 मूसा ने यहोवा से कहा, “वे लोग सीनै पर्वत पर नहीं चढ़ सकते; तूने तो आप हमको यह कहकर चिताया कि पर्वत के चारों ओर बाड़ा बाँधकर उसे पवित्र रखो।”

24 यहोवा ने उससे कहा, “उतर तो जा, और हारून समेत तू ऊपर आ; परन्तु याजक और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास बाड़ा तोड़कर न चढ़ आएँ, कहीं ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े।”

25 अतः ये बातें मूसा ने लोगों के पास उतरकर उनको सुनाई।

## 20

११ ११११११११

1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,

2 “मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।

3 “तू १११११ १११११\* दूसरों को परमेश्वर करके न मानना।

4 “तू अपने लिये कोई १११११११† खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है।

5 तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन

रखनेवाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ,

6 और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा किया करता हूँ।

7 “तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा।

8 “तू ११११११११११ ११ १११११११ ११११११ ११ १११११ ११११११ १११११†।

9 छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना;

10 परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भाँति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो।

11 क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।

12 “तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।

13 “तू खून न करना।

14 “तू व्यभिचार न करना।

15 “तू चोरी न करना।

16 “तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

17 “तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की पत्नी का लालच करना, और न किसी के दास-दासी, या बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।”

११११११ ११ ११११११ १११११

18 और सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे के शब्द सुनते, और धुआँ उठते हुए पर्वत को देखते रहे, और देखके, काँपकर दूर खड़े हो गए;

19 और वे मूसा से कहने लगे, “तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे; परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।”

20 मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत; क्योंकि परमेश्वर इस निमित्त आया है कि तुम्हारी परीक्षा करे, और उसका भय तुम्हारे मन में बना रहे, कि तुम पाप न करो।”

\* 20:3 १११११ १११११: इसका अर्थ था कि यहोवा के अतिरिक्त किसी और को ईश्वर न मानना। † 20:4 ११११११११: पहली आज्ञा किसी भी दृश्य या अदृश्य झूठे देवता को ईश्वर करके मानने की मनाही करता है, यहाँ किसी भी तरह की मूर्ति की उपासना करने को वर्जित ठहराया गया है।

‡ 20:8 ११११११११११ ११ ... ११११११ १११११: शब्द स्मरण रखना का अभिप्राय अपने मन में रखना भी हो सकता है।



21 और वे लोग तो दूर ही खड़े रहे, परन्तु मूसा उस घोर अंधकार के समीप गया जहाँ परमेश्वर था।

22 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू इस्राएलियों को मेरे ये वचन सुना, कि तुम लोगों ने तो आप ही देखा है कि मैंने तुम्हारे साथ आकाश से बातें की हैं।

23 तुम मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, अर्थात् अपने लिये चाँदी या सोने से देवताओं को न गढ़ लेना।

24 मेरे लिये मिट्टी की एक वेदी बनाना, और अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के होमबलि और मेलबलि को उस पर चढ़ाना; जहाँ-जहाँ मैं अपने नाम का स्मरण कराऊँ वहाँ-वहाँ मैं आकर तुम्हें आशीष दूँगा।

25 और यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना; क्योंकि जहाँ तुम ने उस पर अपना हथियार लगाया वहाँ तू उसे अशुद्ध कर देगा।

26 और मेरी वेदी पर सीढ़ी से कभी न चढ़ना, कहीं ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर नंगा देख पड़े।”

## 21

1 फिर जो नियम तुझे उनको समझाने हैं वे ये हैं।

2 “जब तुम कोई [21:22] \*मोल लो, तब वह छः वर्ष तक सेवा करता रहे, और सातवें वर्ष स्वतंत्र होकर सेंट-मेंत चला जाए।

3 यदि वह अकेला आया हो, तो अकेला ही चला जाए; और यदि पत्नी सहित आया हो, तो उसके साथ उसकी पत्नी भी चली जाए।

4 यदि उसके स्वामी ने उसको पत्नी दी हो और उससे उसके बेटे या बेटियाँ उत्पन्न हुई हों, तो उसकी पत्नी और बालक उस स्वामी के ही रहें, और वह अकेला चला जाए।

5 परन्तु यदि वह दास दृढ़ता से कहे, मैं अपने स्वामी, और अपनी पत्नी, और बालकों से प्रेम रखता हूँ; इसलिए मैं स्वतंत्र होकर न चला जाऊँगा;”

6 तो उसका स्वामी उसको परमेश्वर के पास ले चले; फिर उसको द्वार के किवाड़ या बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करें; तब वह [21:24] उसकी सेवा करता रहे।

7 “यदि कोई अपनी बेटि को दासी होने के लिये बेच डालें, तो वह दासी के समान बाहर न जाए।

\* 21:2 [21:22] [21:22]: इब्री को या तो ऋण न चुका पाने की स्थिति में (लैव्य.25:39), या चोरी करने (निर्ग.22:3), के परिणामस्वरूप दास के रूप में बेचा जा सकता था। परन्तु उसका दासत्व छः वर्ष से अधिक नहीं हो सकता था। † 21:6 [21:22]: सम्भवतः अगले जुबली वर्ष तक के लिए है, जब हर एक इब्री को स्वतंत्र किया जाता था।

8 यदि उसका स्वामी उसको अपनी पत्नी बनाए, और फिर उससे प्रसन्न न रहे, तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे; उसका विश्वासघात करने के बाद उसे विदेशी लोगों के हाथ बेचने का उसको अधिकार न होगा।

9 यदि उसने उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो, तो उससे बेटे का सा व्यवहार करे।

10 चाहे वह दूसरी पत्नी कर ले, तो भी वह उसका भोजन, वस्त्र, और संगति न घटाए।

11 और यदि वह इन तीन बातों में घटी करे, तो वह स्त्री सेंट-मेंत बिना दाम चुकाए ही चली जाए।

12 “जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।

13 यदि वह उसकी घात में न बैठा हो, और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उसके हाथ में पड़ गया हो, तो ऐसे मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं एक स्थान ठहराऊँगा जहाँ वह भाग जाए।

14 परन्तु यदि कोई ढिंढाई से किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे, तो उसको मार डालने के लिये मेरी वेदी के पास से भी अलग ले जाना।

15 “जो अपने पिता या माता को मारे-पीटे वह निश्चय मार डाला जाए।

16 “जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके पास पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।

17 “जो अपने पिता या माता को श्राप दे वह भी निश्चय मार डाला जाए।

18 “यदि मनुष्य झगड़ते हों, और एक दूसरे को पत्थर या मुक्के से ऐसा मारे कि वह मरे नहीं परन्तु बिछरने पर पड़ा रहे,

19 तो जब वह उठकर लाठी के सहारे से बाहर चलने फिरने लगे, तब वह मारनेवाला निर्दोष ठहरे; उस दशा में वह उसके पड़े रहने के समय की हानि भर दे, और उसको भला चंगा भी करा दे।

20 “यदि कोई अपने दास या दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए।

21 परन्तु यदि वह दो एक दिन जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न दिया जाए; क्योंकि वह दास उसका धन है।

22 “यदि मनुष्य आपस में मारपीट करके किसी गर्भवती स्त्री को ऐसी चोट पहुँचाए, कि उसका गर्भ

गिर जाए, परन्तु और कुछ हानि न हो, तो मारनेवाले से उतना दण्ड लिया जाए जितना उस स्त्री का पति पंच की सम्मति से ठहराए।

23 परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राण के बदले प्राण का,

24 और आँख के बदले आँख का, और दाँत के बदले दाँत का, और हाथ के बदले हाथ का, और पाँव के बदले पाँव का,

25 और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो।

26 “जब कोई अपने दास या दासी की आँख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे स्वतंत्र करके जाने दे।

27 और यदि वह अपने दास या दासी को मारकर उसका दाँत तोड़ डाले, तो वह उसके दाँत के बदले उसे स्वतंत्र करके जाने दे।

२२२ २२२२२२२२ २२२२२२२२ २२२२

28 “यदि बैल किसी पुरुष या स्त्री को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो वह बैल तो निश्चय पथरवाह करके मार डाला जाए, और उसका माँस खाया न जाए; परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष ठहरे।

29 परन्तु यदि उस बैल की पहले से सींग मारने की आदत पड़ी हो, और उसके स्वामी ने जताए जाने पर भी उसको न बाँध रखा हो, और वह किसी पुरुष या स्त्री को मार डाले, तब तो वह बैल पथरवाह किया जाए, और उसका स्वामी भी मार डाला जाए।

30 यदि उस पर छुड़ौती ठहराई जाए, तो प्राण छुड़ाने को जो कुछ उसके लिये ठहराया जाए उसे उतना ही देना पड़ेगा।

31 चाहे बैल ने किसी बेटे को, चाहे बेटे को मारा हो, तो भी इसी नियम के अनुसार उसके स्वामी के साथ व्यवहार किया जाए।

32 यदि बैल ने किसी दास या दासी को सींग मारा हो, तो बैल का स्वामी उस दास के स्वामी को तीस शेकेल रूपा दे, और वह बैल पथरवाह किया जाए।

33 “यदि कोई मनुष्य गड्ढा खोलकर या खोदकर उसको न ढाँपे, और उसमें किसी का बैल या गदहा गिर पड़े,

34 तो जिसका वह गड्ढा हो वह उस हानि को भर दे; वह पशु के स्वामी को उसका मोल दे, और लोथ गड्ढेवाले की ठहरे।

35 “यदि किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसी चोट लगाए, कि वह मर जाए, तो वे दोनों मनुष्य जीवित बैल को बेचकर उसका मोल आपस में आधा-आधा बाँट लें; और लोथ को भी वैसा ही बाँटें।

36 यदि यह प्रगट हो कि उस बैल की पहले से सींग मारने की आदत पड़ी थी, पर उसके स्वामी ने उसे बाँध नहीं रखा, तो निश्चय वह बैल के बदले बैल भर दे, पर लोथ उसी की ठहरे।

## 22

२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२

1 “यदि कोई मनुष्य बैल, या भेड़, या बकरी चुराकर उसका घात करे या बेच डाले, तो वह बैल के बदले पाँच बैल, और भेड़-बकरी के बदले चार भेड़-बकरी भर दे।

2 यदि चोर सेंध लगाते हुए पकड़ा जाए, और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए, तो उसके खून का दोष न लगे;

3 यदि सूर्य निकल चुके, तो उसके खून का दोष लगे; अवश्य है कि वह हानि को भर दे, और यदि उसके पास कुछ न हो, तो वह चोरी के कारण बेच दिया जाए।

4 यदि चुराया हुआ बैल, या गदहा, या भेड़ या बकरी उसके हाथ में जीवित पाई जाए, तो वह उसका दूना भर दे।

२२२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२

5 “यदि कोई अपने पशु से किसी का खेत या दाख की बारी चराए, अर्थात् अपने पशु को ऐसा छोड़ दे कि वह पराए खेत को चर ले, तो वह अपने खेत की और अपनी दाख की बारी की उत्तम से उत्तम उपज में से उस हानि को भर दे।

6 “यदि कोई आग जलाए, और वह काँटों में लग जाए और फूलों के ढेर या अनाज या खड़ा खेत जल जाए, तो जिसने आग जलाई हो वह हानि को निश्चय भर दे।

२२२२ २२२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२

7 “यदि कोई दूसरे को रुपये या सामग्री की धरोहर धरे, और वह उसके घर से चुराई जाए, तो यदि चोर पकड़ा जाए, तो दूना उसी को भर देना पड़ेगा।

8 और यदि चोर न पकड़ा जाए, तो घर का स्वामी परमेश्वर के पास लाया जाए कि निश्चय हो जाए कि उसने अपने भाई-बन्धु की सम्पत्ति पर हाथ लगाया है या नहीं।

9 चाहे बैल, चाहे गदहे, चाहे भेड़ या बकरी, चाहे वस्त्र, चाहे किसी प्रकार की ऐसी खोई हुई वस्तु के विषय अपराध क्यों न लगाया जाए, जिसे दो जन अपनी-अपनी कहते हों, तो दोनों का मुकद्दमा परमेश्वर के पास आए; और जिसको परमेश्वर दोषी ठहराए वह दूसरे को दूना भर दे।

10 “यदि कोई दूसरे को गदहा या बैल या भेड़-बकरी या कोई और पशु रखने के लिये सौंपे, और किसी के बिना देखे वह मर जाए, या चोट खाए, या हाँक दिया जाए,

11 तो उन दोनों के बीच यहोवा की शपथ खिलाई जाए, ‘मैंने इसकी सम्पत्ति पर हाथ नहीं लगाया;’ तब सम्पत्ति का स्वामी इसको सच माने, और दूसरे को उसे कुछ भी भर देना न होगा।

12 यदि वह सचमुच उसके यहाँ से चुराया गया हो, तो वह उसके स्वामी को उसे भर दे।

13 और यदि वह फाड़ डाला गया हो, तो वह फाड़े हुए को प्रमाण के लिये ले आए, तब उसे उसको भी भर देना न पड़ेगा।

14 “फिर यदि कोई दूसरे से पशु माँग लाए, और उसके स्वामी के संग न रहते उसको चोट लगे या वह मर जाए, तो वह निश्चय उसकी हानि भर दे।

15 यदि उसका स्वामी संग हो, तो दूसरे को उसकी हानि भरना न पड़े; और यदि वह भाड़े का हो तो उसकी हानि उसके भाड़े में आ गई।

\*\*\*\*\*

16 “यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उसके संग कुकर्म करे, तो वह निश्चय उसका मोल देकर उसे ब्याह ले।

17 परन्तु यदि उसका पिता उसे देने को बिल्कुल इन्कार करे, तो कुकर्म करनेवाला कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार रुपये तौल दे।

18 “तू **22:22-22:22 22:22222222\*** को जीवित रहने न देना।

19 “जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए।

20 “जो कोई यहोवा को छोड़ किसी और देवता के लिये बलि करे वह सत्यानाश किया जाए।

21 “तुम परदेशी को न सताना और न उस पर अंधेर करना क्योंकि मिस्र देश में तुम भी परदेशी थे।

22 किसी विधवा या अनाथ बालक को दुःख न देना।

23 यदि तुम ऐसों को किसी प्रकार का दुःख दो, और वे कुछ भी मेरी दुहाई दें, तो मैं निश्चय उनकी दुहाई सुनूँगा;

24 तब मेरा क्रोध भड़केगा, और मैं तुम को तलवार से मरवाऊँगा, और तुम्हारी पत्नियाँ विधवा और तुम्हारे बालक अनाथ हो जाएँगे।

\* **22:18** **22:22-22:22 22:22222222**: जादू-टोना करना यहोवा के विरुद्ध विद्रोह था, और इसके लिए मृत्युदण्ड निर्धारित था। † **22:29** **22:22 22:22 22:22222222 22:22222222**: उपज का पहला फल देना आरम्भ से चली आ रही रीति थी और इसका सम्बंध बलिदान चढ़ाने की आरम्भिक क्रियाओं से था।

25 “यदि तू मेरी प्रजा में से किसी दीन को जो तेरे पास रहता हो रुपये का ऋण दे, तो उससे महाजन के समान ब्याज न लेना।

26 यदि तू कभी अपने भाई-बन्धु के वस्त्र को बन्धक करके रख भी ले, तो सूर्य के अस्त होने तक उसको लौटा देना;

27 क्योंकि वह उसका एक ही ओढ़ना है, उसकी देह का वही अकेला वस्त्र होगा; फिर वह किसे ओढ़कर सोएगा? और जब वह मेरी दुहाई देगा तब मैं उसकी सुनूँगा, क्योंकि मैं तो करुणामय हूँ।

28 “परमेश्वर को श्राप न देना, और न अपने लोगों के प्रधान को श्राप देना।

29 “अपने खेतों की उपज और फलों के रस में से कुछ **22:22 22:22 22:22 22:222222 22:222222\*** अपने बेटों में से पहलौटे को मुझे देना।

30 वैसे ही अपनी गायों और भेड़-बकरियों के पहलौटे भी देना; सात दिन तक तो बच्चा अपनी माता के संग रहे, और आठवें दिन तू उसे मुझे दे देना।

31 “तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य बनना; इस कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा मिले उसका माँस न खाना, उसको कुत्तों के आगे फेंक देना।

## 23

\*\*\*\*\*

1 “झूठी बात न फैलाना। अन्यायी साक्षी होकर दुष्ट का साथ न देना।

2 बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना; और न उनके पीछे फिरकर मुकद्दमे में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना;

3 और कंगाल के मुकद्दमे में उसका भी पक्ष न करना।

4 “यदि तेरे शत्रु का बैल या गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना।

5 फिर यदि तू अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिये छुड़ाने के लिये तेरा मन न चाहे, तो भी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा लेना।

6 “तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना।

7 झूठे मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊँगा।

8 घूस न लेना, क्योंकि घूस देखनेवालों को भी अंधा कर देता, और धर्मियों की बातें पलट देता है।

9 “परदेशी पर अंधेर न करना; तुम तो परदेशी के मन की बातें जानते हो, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे।

222222 2222 22 222222 2222

10 “छः वर्ष तो अपनी भूमि में बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना;

11 परन्तु सातवें वर्ष में उसको पड़ती रहने देना और वैसा ही छोड़ देना, तो तेरे भाई-बन्धुओं में के दरिद्र लोग उससे खाने पाएँ, और जो कुछ उनसे भी बचे वह जंगली पशुओं के खाने के काम में आए। और अपनी दाख और जैतून की बारियों को भी ऐसे ही करना।

12 छः दिन तक तो अपना काम-काज करना, और सातवें दिन विश्राम करना; कि तेरे बैल और गदहे सुस्ताएँ, और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंडा कर सके।

13 और जो कुछ मैंने तुम से कहा है उसमें सावधान रहना; और दूसरे देवताओं के नाम की चर्चा न करना, वरन् वे तुम्हारे मुँह से सुनाई भी न दें।

222 222222 2222

14 “प्रतिवर्ष तीन बार मेरे लिये पर्व मानना।

15 अखमीरी रोटी का पर्व मानना; उसमें मेरी आज्ञा के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए। और मुझ को कोई खाली हाथ अपना मुँह न दिखाए।

16 और जब तेरी बोई हुई खेती की पहली उपज तैयार हो, तब कटनी का पर्व मानना। और वर्ष के अन्त में जब तू परिश्रम के फल बटोरकर ढेर लगाए, तब बटोरन का पर्व मानना।

17 प्रतिवर्ष तीनों बार तेरे सब पुरुष प्रभु यहोवा को अपना मुँह दिखाएँ।

18 “मेरे बलिपशु का लहू खमीरी रोटी के संग न चढ़ाना, और न मेरे 2222 22 222222 222222\* में से कुछ सवेरे तक रहने देना।

19 अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना।

222222222222 22 22222222

20 “सुन, मैं एक दूत तेरे आगे-आगे भेजता हूँ जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैंने तैयार किया है उसमें तुझे पहुँचाएगा।

21 उसके सामने सावधान रहना, और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिए कि उसमें मेरा नाम रहता है।

22 और यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूँ वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूँगा।

23 इस रीति मेरा दूत तेरे आगे-आगे चलकर तुझे एमोरी, हिती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के यहाँ पहुँचाएगा, और 2222 222222 2222222222 22 2222222222†।

24 उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन् उन मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगों की लाटों के टुकड़े-टुकड़े कर देना।

25 तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।

26 तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बाँझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूँगा।

27 जितने लोगों के बीच तू जाएगा उन सभी के मन में मैं अपना भय पहले से ऐसा समवा दूँगा कि उनको व्याकुल कर दूँगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊँगा।

28 और मैं तुझ से पहले 22222222‡ को भेजूँगा जो हिब्बी, कनानी, और हिती लोगों को तेरे सामने से भगाकर दूर कर दूँगी।

29 मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में तो न निकाल दूँगा, ऐसा न हो कि देश उजाड़ हो जाए, और जंगली पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें।

30 जब तक तू फूल-फलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले तब तक मैं उन्हें तेरे आगे से थोड़ा-थोड़ा करके निकालता रहूँगा।

31 मैं लाल समुद्र से लेकर पलिशितियों के समुद्र तक और जंगल से लेकर फरात तक के देश को तेरे वश में कर दूँगा; मैं उस देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने सामने से बरबस निकालेगा।

32 तू न तो उनसे वाचा बाँधना और न उनके देवताओं से।

33 वे तेरे देश में रहने न पाएँ, ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएँ; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।”

\* 23:18 2222 22 222222 222222: मेरे भोज का उत्तम भाग, अर्थात् फसह का मेम्ना। † 23:23 222 2222 2222222222 22 22222222: कनानियों का राष्ट्रीय अस्तित्व वास्तव में “पूरी तरह से” नष्ट करना था, और उनकी मूर्तिपूजा के नामों-निशान को मिटा देना अवश्य था। ‡ 23:28 22222222: इस शब्द का प्रयोग यहाँ रूपक के रूप में किया गया है अर्थात् जिससे भय और निरुत्साह उत्पन्न हो।





40 और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।

## 26

?????? ?????

1 “फिर ????-????\* के लिये दस पर्दे बनवाना; इनको बटी हुई सनीवाले और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ बनवाना।

2 एक-एक पर्दे की लम्बाई अट्टाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; सब पर्दे एक ही नाप के हों।

3 पाँच पर्दे एक दूसरे से जुड़े हुए हों; और फिर जो पाँच पर्दे रहेंगे वे भी एक दूसरे से जुड़े हुए हों।

4 और जहाँ ये दोनों पर्दे जोड़े जाएँ वहाँ की दोनों छोरों पर नीले-नीले फंदे लगवाना।

5 दोनों छोरों में पचास-पचास फंदे ऐसे लगवाना कि वे आमने-सामने हों।

6 और सोने के पचास अंकड़े बनवाना; और परदों के छल्लों को अंकड़ों के द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुड़वाना कि निवास-स्थान मिलकर एक ही हो जाए।

7 “फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम देने के लिये बकरी के बाल के ग्यारह पर्दे बनवाना।

8 एक-एक पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; ग्यारहों पर्दे एक ही नाप के हों।

9 और पाँच पर्दे अलग और फिर छः पर्दे अलग जुड़वाना, और छठवें पर्दे को तम्बू के सामने मोड़कर दुहरा कर देना।

10 और तू पचास अंकड़े उस पर्दे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही अंकड़े दूसरी ओर के पर्दे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनवाना।

11 और पीतल के पचास अंकड़े बनाना, और अंकड़ों को फंदों में लगाकर तम्बू को ऐसा जुड़वाना कि वह मिलकर एक ही हो जाए।

12 और तम्बू के परदों का लटका हुआ भाग, अर्थात् जो आधा पट रहेगा, वह निवास की पिछली ओर लटका रहे।

13 और तम्बू के परदों की लम्बाई में से हाथ भर इधर, और हाथ भर उधर निवास को ढाँकने के लिये उसकी दोनों ओर पर लटका हुआ रहे।

14 फिर तम्बू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढों की खालों का एक ओढ़ना और उसके ऊपर सुइसों की खालों का भी एक ओढ़ना बनवाना।

15 “फिर निवास को खड़ा करने के लिये बबूल की लकड़ी के तख्ते बनवाना।

16 एक-एक तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो।

17 एक-एक तख्ते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो-दो चूले हों; निवास के सब तख्तों को इसी भाँति से बनवाना।

18 और निवास के लिये जो तख्ते तू बनवाएगा उनमें से बीस तख्ते तो दक्षिण की ओर के लिये हों;

19 और बीसों तख्तों के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे उसके चूलों के लिये दो-दो कुर्सियाँ।

20 और निवास की दूसरी ओर, अर्थात् उत्तर की ओर बीस तख्ते बनवाना।

21 और उनके लिये चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ हों।

22 और निवास की पिछली ओर, अर्थात् पश्चिम की ओर के लिए छः तख्ते बनवाना।

23 और पिछले भाग में निवास के कोनों के लिये दो तख्ते बनवाना;

24 और ये नीचे से दो-दो भाग के हों और दोनों भाग ऊपर के सिरे तक एक-एक कडे में मिलाए जाएँ; दोनों तख्तों का यही रूप हो; ये तो दोनों कोनों के लिये हों।

25 और आठ तख्ते हों, और उनकी चाँदी की सोलह कुर्सियाँ हों; अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ हों।

26 “फिर बबूल की लकड़ी के बेंडे बनवाना, अर्थात् निवास की एक ओर के तख्तों के लिये पाँच,

27 और निवास की दूसरी ओर के तख्तों के लिये पाँच बेंडे, और निवास का जो भाग पश्चिम की ओर पिछले भाग में होगा, उसके लिये पाँच बेंडे बनवाना।

28 बीचवाला बेंडा जो तख्तों के मध्य में होगा वह तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचे।

29 फिर तख्तों को सोने से मढ़वाना, और उनके कडे जो बेंडों के घरों का काम देंगे उन्हें भी सोने के बनवाना; और बेंडों को भी सोने से मढ़वाना।

30 और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया गया है।

?????? ???? ? ???? ???? ???? ?

31 “फिर नीले, बैंगनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का एक बीचवाला परदा बनवाना; वह कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ बने।

\* 26:1 ????-????: स्वयं निवास-स्थान में करूबों के चित्र कढ़े हुए बटे महीन मलमल के कपड़े के पर्दे थे, और पवित्रस्थान तथा अति पवित्रस्थान को खड़ा करने के लिए तख्तों का ढाँचा था।

32 और उसको सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खम्भों पर लटकाना, इनकी अंकड़ियाँ सोने की हों, और ये चाँदी की चार कुर्सियों पर खड़ी रहें।

33 और बीचवाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर, उसकी आड़ में साक्षीपत्र का सन्दूक भीतर ले जाना; सो वह बीचवाला परदा तुम्हारे लिये पवित्रस्थान को परमपवित्र स्थान से अलग किए रहे।

34 फिर परमपवित्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को रखना।

35 और उस पर्दे के बाहर निवास के उत्तर की ओर मेज रखना; और उसके दक्षिण की ओर मेज के सामने दीवट को रखना।

27:27-28 27:29 27:30 27:31 27:32

36 “फिर तम्बू के द्वार के लिये नीले, बैंगनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का 27:33 27:34 27:35 एक परदा बनवाना।

37 और इस पर्दे के लिये बबूल के पाँच खम्भे बनवाना, और उनको सोने से मढ़वाना; उनकी कड़ियाँ सोने की हों, और उनके लिये पीतल की पाँच कुर्सियाँ ढलवा कर बनवाना।

## 27

27:1 27:2 27:3 27:4 27:5 27:6 27:7 27:8 27:9 27:10 27:11 27:12 27:13 27:14 27:15 27:16 27:17 27:18 27:19 27:20 27:21 27:22 27:23 27:24 27:25 27:26 27:27 27:28 27:29 27:30 27:31 27:32 27:33 27:34 27:35

1 “फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की, पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनवाना; वेदी चौकोर हो, और उसकी ऊँचाई तीन हाथ की हो।

2 और उसके चारों कोनों पर चार 27:17\* बनवाना; वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों, और उसे पीतल से मढ़वाना।

3 और उसकी राख उठाने के पात्र, और फावड़ियाँ, और कटोरे, और काँटे, और अँगीठियाँ बनवाना; उसका कुल सामान पीतल का बनवाना।

4 और उसके पीतल की जाली की एक झंझरी बनवाना; और उसके चारों सिरों में पीतल के चार कड़े लगवाना।

5 और उस झंझरी को वेदी के चारों ओर की कँगनी के नीचे ऐसे लगवाना कि वह वेदी की ऊँचाई के मध्य तक पहुँचे।

6 और वेदी के लिये बबूल की लकड़ी के डंडे बनवाना, और उन्हें पीतल से मढ़वाना।

7 और डंडे कड़ों में डाले जाएँ, कि जब जब वेदी उठाई जाए तब वे उसकी दोनों ओर पर रहें।

8 वेदी को तख्तों से खोखली बनवाना; जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई गई है वैसी ही बनाई जाए।

27:36 27:37 27:38 27:39 27:40

9 “फिर निवास के आँगन को बनवाना। उसकी दक्षिण ओर के लिये तो बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के सब पर्दों को मिलाए कि उसकी लम्बाई सौ हाथ की हो; एक ओर पर तो इतना ही हो।

10 और उनके बीस खम्भे बनें, और इनके लिये पीतल की बीस कुर्सियाँ बनें, और खम्भों के कुण्डे और उनकी पट्टियाँ चाँदी की हों।

11 और उसी भाँति आँगन की उत्तर ओर की लम्बाई में भी सौ हाथ लम्बे पर्दे हों, और उनके भी बीस खम्भे और इनके लिये भी पीतल के बीस खाने हों; और उन खम्भों के कुण्डे और पट्टियाँ चाँदी की हों।

12 फिर आँगन की चौड़ाई में पश्चिम की ओर पचास हाथ के पर्दे हों, उनके खम्भे दस और खाने भी दस हों।

13 पूरब की ओर पर आँगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो।

14 और आँगन के द्वार की एक ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, और उनके खम्भे तीन और खाने तीन हों।

15 और दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, उनके भी खम्भे तीन और खाने तीन हों।

16 आँगन के द्वार के लिये एक परदा बनवाना, जो नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो, उसके खम्भे चार और खाने भी चार हों।

17 आँगन के चारों ओर के सब खम्भे चाँदी की पट्टियों से जुड़े हुए हों, उनके कुण्डे चाँदी के और खाने पीतल के हों।

18 आँगन की लम्बाई सौ हाथ की, और उसकी चौड़ाई बराबर पचास हाथ की और उसकी कनात की ऊँचाई पाँच हाथ की हो, उसकी कनात बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की बने, और खम्भों के खाने पीतल के हों।

19 निवास के भाँति-भाँति के बर्तन और सब सामान और उसके सब खूँटे और आँगन के भी सब खूँटे पीतल ही के हों।

27:41 27:42 27:43 27:44 27:45

20 “फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देना, कि मेरे पास दीवट के लिये 27:46 27:47 27:48 27:49 27:50 27:51 27:52 27:53 27:54 27:55 ले आना, जिससे दीपक नित्य जलता रहे।

† 26:36 27:1 27:2 27:3 27:4 27:5 27:6 27:7 27:8 27:9 27:10 27:11 27:12 27:13 27:14 27:15 27:16 27:17 27:18 27:19 27:20 27:21 27:22 27:23 27:24 27:25 27:26 27:27 27:28 27:29 27:30 27:31 27:32 27:33 27:34 27:35 27:36 27:37 27:38 27:39 27:40 27:41 27:42 27:43 27:44 27:45 27:46 27:47 27:48 27:49 27:50 27:51 27:52 27:53 27:54 27:55: निवास-स्थान में प्रवेश करने का और आँगन के द्वार (निर्ग 27:16) का परदा एक ही सामग्री का होना चाहिए, लेकिन उन पर सुई से कढ़ाई का काम होना चाहिए, ऐसा न हो जो करघा पर संख्या में बना हो। \* 27:2 27:3: ये सींग ऊपर की ओर संकेत करनेवाले स्मारक थे जो या तो छोटे सींग के थे या बैल के सींग के। † 27:20 27:21 27:22 27:23 27:24 27:25 27:26 27:27 27:28 27:29 27:30 27:31 27:32 27:33 27:34 27:35: यह तेल सबसे उत्तम श्रेणी का तेल था। इसे कूटा हुआ इसलिए कहते थे, क्योंकि इस तेल को खरल या चक्की में कूटकर और पीसकर निकाला जाता था।



21 [२२२२२२२२२२ २२२२२२ २२२२], उस बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा, हारून और उसके पुत्र दीवट साँझ से भोर तक यहोवा के सामने सजा कर रखें। यह विधि इस्राएलियों की पीढ़ियों के लिये सदैव बनी रहेगी।

## 28

[२२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२२२]

1 “फिर तू इस्राएलियों में से अपने भाई हारून, और [२२२२२२, २२२२२२]\*, एलीआजर और ईतामार नामक उसके पुत्रों को अपने समीप ले आना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें।

2 और तू अपने भाई हारून के लिये वैभव और शोभा के निमित्त पवित्र वस्त्र बनवाना।

3 और जितनों के हृदय में बुद्धि है, जिनको मैंने बुद्धि देनेवाली आत्मा से परिपूर्ण किया है, उनको तू हारून के वस्त्र बनाने की आज्ञा दे कि वह मेरे निमित्त याजक का काम करने के लिये पवित्र बनें।

4 और जो वस्त्र उन्हें बनाने होंगे वे ये हैं, अर्थात् सीनाबन्ध; और एपोद, और बागा, चार खाने का अंगरखा, पुरोहित का टोप, और कमरबन्द; ये ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और उसके पुत्रों के लिये बनाएँ जाएँ कि वे मेरे लिये याजक का काम करें।

5 और वे सोने और नीले और बैंगनी और लाल रंग का और सूक्ष्म सनी का कपड़ा लें।

[२२२२ २२ २२२२२२]

6 “वे [२२२२२२] को सोने, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बनाएँ, जो कि निपुण कढ़ाई के काम करनेवाले के हाथ का काम हो।

7 और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों कंधों के सिरे आपस में मिले रहें।

8 और एपोद पर जो काढा हुआ पटुका होगा उसकी बनावट उसी के समान हो, और वे दोनों बिना जोड़ के हों, और सोने और नीले, बैंगनी और लाल रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े के हों।

9 फिर दो सुलैमानी मणि लेकर उन पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना,

10 उनके नामों में से छः तो एक मणि पर, और शेष छः नाम दूसरे मणि पर, इस्राएल के पुत्रों की उत्पत्ति के अनुसार खुदवाना।

11 मणि गढ़नेवाले के काम के समान जैसे छापा खोदा जाता है, वैसे ही उन दो मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना; और उनको सोने के खानों में जड़वा देना।

12 और दोनों मणियों को एपोद के कंधों पर लगवाना, वे इस्राएलियों के निमित्त स्मरण दिलवाने वाले मणि ठहरेंगे; अर्थात् हारून उनके नाम यहोवा के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये लगाए रहे।

13 “फिर सोने के खाने बनवाना,

14 और डोरियों के समान गूँथे हुए दो जंजीर शुद्ध सोने के बनवाना; और गूँथे हुए जंजीरों को उन खानों में जड़वाना।

[२२२२२२२२२ २२ २२२२२२]

15 “फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना; एपोद के समान सोने, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की उसे बनवाना।

16 वह चौकोर और दोहरी हो, और उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक-एक बिलांद की हो।

17 और उसमें चार पंक्ति मणि जड़ाना। पहली पंक्ति में तो माणिक्य, पद्मराग और लालड़ी हों;

18 दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि और हीरा;

19 तीसरी पंक्ति में लशम, सूर्यकांत और नीलम;

20 और चौथी पंक्ति में फीरोजा, सुलैमानी मणि और यशब हों; ये सब सोने के खानों में जड़े जाएँ।

21 और इस्राएल के पुत्रों के जितने नाम हैं उतने मणि हों, अर्थात् उनके नामों की गिनती के अनुसार बारह नाम खुदें, बारहों गोत्रों में से एक-एक का नाम एक-एक मणि पर ऐसे खुदे जैसे छापा खोदा जाता है।

22 फिर चपरास पर डोरियों के समान गूँथे हुए शुद्ध सोने की जंजीर लगवाना;

23 और चपरास में सोने की दो कड़ियाँ लगवाना, और दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगवाना।

24 और सोने के दोनों गूँथे जंजीरों को उन दोनों कड़ियों में जो चपरास के सिरों पर होंगी लगवाना;

25 और गूँथे हुए दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को दोनों खानों में जड़वा के एपोद के दोनों कंधों के बंधनों पर उसके सामने लगवाना।

26 फिर सोने की दो और कड़ियाँ बनवाकर चपरास के दोनों सिरों पर, उसकी उस कोर पर जो एपोद के भीतर की ओर होगी लगवाना।

27 फिर उनके सिवाय सोने की दो और कड़ियाँ बनवाकर एपोद के दोनों कंधों के बंधनों पर, नीचे से उनके

‡ 27:21 [२२२२२२२२२२ २२२२२२ २२२२]: इसके साथ जो विचार जुड़ा है वह, यहोवा का मूसा के साथ, या याजकों के साथ या तम्बू के प्रवेश-द्वार पर इकट्ठा हुई लोगों की मण्डली के साथ मिलने से है। \* 28:1 [२२२२२, २२२२२]: हारून के दो बड़े बेटे अपने पिता और सत्तर प्राचीनों के साथ थे जब वे पहाड़ी पर कुछ दूर तक मूसा के साथ गए। † 28:6 [२२२२]: ऐसा वस्त्र जिस कंधों पर पहना जाता था और यह महायाजकों का पहनावों में विशेष था।

सामने और उसके जोड़ के पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगवाना।

28 और चपरास अपनी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से बाँधी जाए, इस रीति वह एपोद के काढ़े हुए पटुके पर बनी रहे, और चपरास एपोद पर से अलग न होने पाए।

29 और जब जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब-तब वह न्याय की चपरास पर अपने हृदय के ऊपर इस्राएलियों के नामों को लगाए रहे, जिससे यहोवा के सामने उनका स्मरण नित्य रहे।

30 और तू न्याय की चपरास में ~~???? ?~~ ~~????????????~~ को रखना, और जब जब हारून यहोवा के सामने प्रवेश करे, तब-तब वे उसके हृदय के ऊपर हों; इस प्रकार हारून इस्राएलियों के लिये यहोवा के न्याय को अपने हृदय के ऊपर यहोवा के सामने नित्य लगाए रहे।

~~???? ???? ???? ?~~

31 “फिर एपोद के बागे को सम्पूर्ण नीले रंग का बनवाना।

32 उसकी बनावट ऐसी हो कि उसके बीच में सिर डालने के लिये छेद हो, और उस छेद के चारों ओर बस्तर के छेद की सी एक बुनी हुई कोर हो कि वह फटने न पाए।

33 और उसके नीचेवाले घेरे में चारों ओर नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनवाना, और उनके बीच-बीच चारों ओर सोने की घंटियाँ लगवाना,

34 अर्थात् एक सोने की घंटी और एक अनार, फिर एक सोने की घंटी और एक अनार, इसी रीति बागे के नीचेवाले घेरे में चारों ओर ऐसा ही हो।

35 और हारून उस बागे को सेवा टहल करने के समय पहना करे, कि जब जब वह पवित्रस्थान के भीतर यहोवा के सामने जाए, या बाहर निकले, तब-तब उसका शब्द सुनाई दे, नहीं तो वह मर जाएगा।

36 “फिर शुद्ध सोने का एक टीका बनवाना, और जैसे छापे में वैसे ही उसमें ये अक्षर खोदे जाएँ, अर्थात् ‘यहोवा के लिये पवित्र।’

37 और उसे नीले फीते से बाँधना; और वह पगड़ी के सामने के हिस्से पर रहे।

38 और वह हारून के माथे पर रहे, इसलिए कि इस्राएली जो कुछ पवित्र ठहराएँ, अर्थात् जितनी पवित्र वस्तुएँ भेंट में चढ़ावे उन पवित्र वस्तुओं का ~~????~~ ~~??????~~ ~~????~~ ~~§~~, और वह नित्य उसके माथे पर रहे, जिससे यहोवा उनसे प्रसन्न रहे।

39 “अंगरखे को सूक्ष्म सनी के कपड़े का चारखाना बुनवाना, और एक पगड़ी भी सूक्ष्म सनी के कपड़े की बनवाना, और बेलबूटे की कढ़ाई का काम किया हुआ एक कमरबन्द भी बनवाना।

40 “फिर हारून के पुत्रों के लिये भी अंगरखे और कमरबन्द और टोपियाँ बनवाना; ये वस्त्र भी वैभव और शोभा के लिये बनें।

41 अपने भाई हारून और उसके पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहनाकर उनका अभिषेक और संस्कार करना, और उन्हें पवित्र करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें।

42 और उनके लिये सनी के कपड़े की जाँघिया बनवाना जिनसे उनका तन ढँपा रहे; वे कमर से जाँघ तक की हों;

43 और जब जब हारून या उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें, या पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को वेदी के पास जाएँ तब-तब वे उन जाँघियों को पहने रहें, न हो कि वे पापी ठहरें और मर जाएँ। यह हारून के लिये और उसके बाद उसके वंश के लिये भी सदा की विधि ठहरे।

## 29

~~???????? ? ? ???? ???? ?~~

1 “उन्हें पवित्र करने को जो काम तुझे उनसे करना है कि वे मेरे लिये याजक का काम करें वह यह है: एक निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेंढे लेना,

2 और अखमीरी रोटी, और तेल से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियाँ भी लेना। ये सब गेहूँ के मैदे के बनवाना।

3 इनको एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दोनों मेंढों समेत समीप ले आना।

4 फिर हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार के समीप ले आकर जल से नहलाना।

5 तब उन वस्त्रों को लेकर हारून को अंगरखा और एपोद का बागा पहनाना, और एपोद और चपरास बाँधना, और एपोद का काढ़ा हुआ पटुका भी बाँधना;

6 और उसके सिर पर पगड़ी को रखना, और पगड़ी पर पवित्र मुकुट को रखना।

7 तब अभिषेक का तेल ले उसके सिर पर डालकर उसका अभिषेक करना।

8 फिर उसके पुत्रों को समीप ले आकर उनको अंगरखे पहनाना,

9 और उसके अर्थात् हारून और उसके पुत्रों के कमर बाँधना और उनके सिर पर टोपियाँ रखना; जिससे

‡ 28:30 ~~???? ? ? ???? ?~~: वे मिश्र से लाए बहुमूल्य पत्थर थे, और उनके द्वारा ईश्वरीय इच्छा प्रगट होती थी। § 28:38 ~~???? ???? ?~~ ~~???? ?~~: जिन पापों की यहाँ बात हो रही है उसका अर्थ उन पापों से नहीं जो किए गए, परन्तु पृथ्वी की हर बातों में परमेश्वर से अलगाव की उस अवस्था से है जो मेल-मिलाप और शुद्ध किए जाने को जरूरी बनाता है।

याजक के पद पर सदा उनका हक़ रहे। इसी प्रकार हारून और उसके पुत्रों का संस्कार करना।

10 “तब बछड़े को मिलापवाले तम्बू के सामने समीप ले आना। और हारून और उसके पुत्र बछड़े के सिर पर अपने-अपने हाथ रखें,

11 तब उस बछड़े को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलिदान करना,

12 और बछड़े के लहू में से कुछ लेकर अपनी उँगली से वेदी के सींगों पर लगाना, और शेष सब लहू को वेदी के पाए पर उण्डेल देना,

13 और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं, और जो झिल्ली कलेजे के ऊपर होती है, उनको और दोनों गुदों को उनके ऊपर की चर्बी समेत लेकर सब को वेदी पर जलाना।

14 परन्तु बछड़े का माँस, और खाल, और गोबर, छावनी से बाहर आग में जला देना; क्योंकि यह पापबलि होगा।

15 “फिर एक मेढ़ा लेना, और हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर अपने-अपने हाथ रखें,

16 तब उस मेढ़े को बलि करना, और उसका लहू लेकर वेदी पर चारों ओर छिड़कना।

17 और उस मेढ़े को टुकड़े-टुकड़े काटना, और उसकी अंतड़ियों और पैरों को धोकर उसके टुकड़ों और सिर के ऊपर रखना,

18 तब उस पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाना; वह तो यहोवा के लिये होमबलि होगा; वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिये हवन होगा।

19 “फिर दूसरे मेढ़े को लेना; और हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर अपने-अपने हाथ रखें,

20 तब उस मेढ़े को बलि करना, और उसके लहू में से कुछ लेकर हारून और उसके पुत्रों के दाहिने कान के सिर पर, और उनके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगूठों पर लगाना, और लहू को वेदी पर चारों ओर छिड़क देना।

21 फिर वेदी पर के लहू, और अभिषेक के तेल, इन दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़क देना; तब वह अपने वस्त्रों समेत और उसके पुत्र भी अपने-अपने वस्त्रों समेत पवित्र हो जाएँगे।

22 तब मेढ़े को संस्कारवाला जानकर उसमें से चर्बी और मोटी पूँछ को, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं उसको, और कलेजे पर की झिल्ली को, और चर्बी समेत दोनों गुदों को, और दाहिने पुट्टे को लेना,

23 और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी होगी उसमें से भी एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक पपड़ी लेकर,

24 इन सब को हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखकर हिलाए जाने की भेंट ठहराकर यहोवा के आगे हिलाया जाए।

25 तब उन वस्तुओं को उनके हाथों से लेकर होमबलि की वेदी पर जला देना, जिससे वह यहोवा के सामने सुखदायक सुगन्ध ठहरे; वह तो यहोवा के लिये हवन होगा।

26 “फिर हारून के संस्कार को जो मेढ़ा होगा उसकी छाती को लेकर हिलाए जाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाना; और वह तेरा भाग ठहरेगा।

27 और हारून और उसके पुत्रों के संस्कार का जो मेढ़ा होगा, उसमें से हिलाए जाने की भेंटवाली छाती जो हिलाई जाएगी, और उठाए जाने का भेंटवाला पुट्टा जो उठाया जाएगा, इन दोनों को पवित्र ठहराना।

28 और ये सदा की विधि की रीति पर इस्राएलियों की ओर से उसका और उसके पुत्रों का भाग ठहरे, क्योंकि ये उठाए जाने की भेंटें ठहरी हैं; और यह इस्राएलियों की ओर से उनके मेलबलियों में से यहोवा के लिये उठाए जाने की भेंट होगी।

29 “हारून के जो पवित्र वस्त्र होंगे वह उसके बाद उसके बेटे पोते आदि को मिलते रहें, जिससे उन्हीं को पहने हुए उनका अभिषेक और संस्कार किया जाए।

30 उसके पुत्रों के जो उसके स्थान पर याजक होगा, वह जब पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को मिलापवाले तम्बू में पहले आए, तब उन वस्त्रों को सात दिन तक पहने रहें।

31 “फिर याजक के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उसे लेकर उसका माँस किसी पवित्रस्थान में पकाना;

32 तब हारून अपने पुत्रों समेत उस मेढ़े का माँस और टोकरी की रोटी, दोनों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाए।

33 जिन पदार्थों से उनका संस्कार और उन्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा उनको तो वे खाएँ, परन्तु पराए कुल का कोई उन्हें न खाने पाए, क्योंकि वे पवित्र होंगे।

34 यदि संस्कारवाले माँस या रोटी में से कुछ सवेरे तक बचा रहे, तो उस बचे हुए को आग में जलाना, वह खाया न जाए; क्योंकि वह पवित्र होगा।

35 “मैंने तुझे जो-जो आज्ञा दी हैं, उन सभी के अनुसार तू हारून और उसके पुत्रों से करना; और सात दिन तक उनका संस्कार करते रहना,









आगे-आगे चलेगा। परन्तु जिस दिन मैं दण्ड देने लगूँगा उस दिन उनको इस पाप का भी दण्ड दूँगा।”

35 अतः यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति भेजी, क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्हीं ने बनवाया था।

### 33

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “तू उन लोगों को जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है संग लेकर उस देश को जा, जिसके विषय मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर कहा था, ‘मैं उसे तुम्हारे वंश को दूँगा।’

2 और मैं तेरे आगे-आगे एक दूत को भेजूँगा और कनानी, एमोरी, हिती, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों को बरबस निकाल दूँगा।

3 तुम लोग उस देश को जाओ जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है; परन्तु तुम हठीले हो, इस कारण मैं तुम्हारे बीच में होकर न चलूँगा, ऐसा न हो कि मैं मार्ग में तुम्हारा अन्त कर डालूँ।”

4 यह बुरा समाचार सुनकर वे लोग विलाप करने लगे; और कोई अपने गहने पहने हुए न रहा।

5 क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था, “इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, ‘तुम लोग तो हठीले हो; जो मैं पल भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलूँ, तो तुम्हारा अन्त कर डालूँगा। इसलिए अब अपने-अपने गहने अपने अंगों से उतार दो, कि मैं जानूँ कि तुम्हारे साथ क्या करना चाहिए।’”

6 तब इस्राएली होरेब पर्वत से लेकर आगे को अपने गहने उतारे रहे।

7 मूसा तम्बू को

कराया करता था, और उसको मिलापवाला तम्बू कहता था। और जो कोई यहोवा को ढूँढता वह उस मिलापवाले तम्बू के पास जो छावनी के बाहर था निकल जाता था।

8 जब जब मूसा तम्बू के पास जाता, तब-तब सब लोग उठकर अपने-अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते, और जब तक मूसा उस तम्बू में प्रवेश न करता था तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे।

9 जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खम्भा उतरकर तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था।

10 और सब लोग जब बादल के खम्भे को तम्बू के द्वार पर ठहरा देखते थे, तब उठकर अपने-अपने डेरे के द्वार पर से दण्डवत् करते थे।

11 और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने-सामने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में फिर लौट आता था, पर यहोशू नामक एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ था, वह तम्बू में से न निकलता था।

12 और मूसा ने यहोवा से कहा, “सुन तू मुझसे कहता है, ‘इन लोगों को ले चल;’ परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा। तो भी तूने कहा है, ‘तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है, और तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है।’

13 और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिससे जब मैं तेरा ज्ञान पाऊँ तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है।”

14 यहोवा ने कहा, “मैं आप चलूँगा और तुझे विश्राम दूँगा।”

15 उसने उससे कहा, “यदि तू आप न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले जा।

16 यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इससे नहीं कि

17 यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तूने की है करूँगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।”

18 उसने कहा, “

19 उसने कहा, “मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी दिखाऊँगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।”

\* 33:7 जिससे लोगों को यह महसूस हो कि वे ईश्वरीय उपस्थिति द्वारा सुरक्षा के घिरे में हैं। यह तम्बू यहोवा से मिलने का स्थान था। † 33:16 केवल यही वह बात थी जो उन्हें अन्यजातियों से अलग बनाती थी। ‡ 33:18 यहोवा के विश्वासयोग्य दास ने भक्तिपूर्ण आत्मा के साथ अपने स्वामी, अपने परमेश्वर से और घनिष्ठता की विनती की।

§ 33:19 यहोवा ने अपनी इच्छा बताई जो उस अनुग्रह का आधार थी जिसे वह इस्राएलियों पर प्रगट करने को था।



20 फिर उसने कहा, “तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।”

21 फिर यहोवा ने कहा, “सुन, मेरे पास एक स्थान है, तू उस चट्टान पर खड़ा हो;

22 और जब तक मेरा तेज तेरे सामने होकर चलता रहे तब तक मैं तुझे चट्टान के दरार में रखूँगा, और जब तक मैं तेरे सामने होकर न निकल जाऊँ तब तक अपने हाथ से तुझे ढाँपे रहूँगा;

23 फिर मैं अपना हाथ उठा लूँगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।”

## 34

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “पहली तख्तियों के समान पत्थर की दो और तख्तियाँ गढ़ ले; तब जो वचन उन पहली तख्तियों पर लिखे थे, जिन्हें तूने तोड़ डाला, वे ही वचन मैं उन तख्तियों पर भी लिखूँगा।

2 और सवेरे तैयार रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे सामने खड़ा होना।

3 तेरे संग कोई न चढ़ पाए, वरन् पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे; और न भेड़-बकरी और गाय-बैल भी पर्वत के आगे चरने पाएँ।”

4 तब मूसा ने पहली तख्तियों के समान दो और तख्तियाँ गढ़ीं; और भोर को सवेरे उठकर अपने हाथ में पत्थर की वे दोनों तख्तियाँ लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार पर्वत पर चढ़ गया।

5 तब यहोवा ने बादल में उतरकर उसके संग वहाँ खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया।

6 और यहोवा उसके सामने होकर यह प्रचार करता हुआ चला, “यहोवा, यहोवा, परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य,

7 हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।”

8 तब मूसा ने फुर्ती कर पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत् किया।

9 और उसने कहा, “हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो प्रभु, हम लोगों के बीच में होकर चले, ये

लोग हठीले तो हैं, तो भी हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कर, और हमें अपना निज भाग मानकर ग्रहण कर।”

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

10 उसने कहा, “सुन, मैं एक वाचा बाँधता हूँ। तेरे सब लोगों के सामने मैं ऐसे आश्चर्यकर्म करूँगा जैसा पृथ्वी पर और सब जातियों में कभी नहीं हुए; और वे सारे लोग जिनके बीच तू रहता है यहोवा के कार्य को देखेंगे; क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने पर हूँ वह भययोग्य काम है।

11 जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूँ उसे तुम लोग मानना। देखो, मैं तुम्हारे आगे से एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों को निकालता हूँ।

12 इसलिए सावधान रहना कि जिस देश में तू जानेवाला है उसके निवासियों से वाचा न बाँधना; कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे लिये फंदा ठहरे।

13 वरन् ☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞☞☞\*, उनकी लाठों को तोड़ डालना, और उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को काट डालना;

14 क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को परमेश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला परमेश्वर है,

15 ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बाँधे, और वे अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करें, और उनके लिये बलिदान भी करें, और कोई तुझे नेवता दे और तू भी उसके बलिपशु का प्रसाद खाए,

16 और तू उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिये लाए, और उनकी बेटियाँ जो आप अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने को व्यभिचार करवाएँ।

17 “तुम देवताओं की मूर्तियाँ ढालकर न बना लेना।

18 “अखमीरी रोटी का पर्व मानना। उसमें मेरी आज्ञा के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना; क्योंकि तू मिस्र से अबीब महीने में निकल आया।

19 हर एक पहलौठा मेरा है; और क्या बछड़ा, क्या मेम्ना, तेरे पशुओं में से जो नर पहलौठे हों वे सब मेरे ही हैं।

20 और गदही के पहलौठे के बदले मेम्ना देकर उसको छुड़ाना, यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ देना। परन्तु अपने सब पहलौठे बेटों को बदला देकर छुड़ाना। मुझे कोई खाली हाथ अपना मुँह न दिखाए।

\* 34:13 ☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: सम्भवतः अशरारोत देवी का नाम था, और अशेरा उसका चिन्ह था। सम्भवतः उसका चित्रण किसी रूप में लकड़ी से बनाया जाता था।

21 “छः दिन तो परिश्रम करना, परन्तु सातवें दिन विश्राम करना; वरन् हल जोतने और लवने के समय में भी विश्राम करना।

22 और तू सप्ताहों का पर्व मानना जो पहले लवे हुए गेहूँ का पर्व कहलाता है, और वर्ष के अन्त में बटोरन का भी पर्व मानना।

23 वर्ष में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपने मुँह दिखाएँ।

24 मैं तो अन्यजातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरी सीमाओं को बढ़ाऊँगा; और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपना मुँह दिखाने के लिये वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा।

25 “मेरे बलिदान के लहू को खमीर सहित न चढ़ाना, और न फसह के पर्व के बलिदान में से कुछ सवरे तक रहने देना।

26 अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाना।”

27 और यहोवा ने मूसा से कहा, “ये वचन लिख ले; क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं तेरे और इस्राएल के साथ वाचा बाँधता हूँ।”

28 मूसा तो वहाँ यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक न तो उसने रोटी खाई और न पानी पिया। और उसने उन तस्खियों पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएँ लिख दीं।

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞

29 जब मूसा साक्षी की दोनों तस्खियाँ हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतरा आता था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण ☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसके चेहरे से किरणें निकल रही हैं।

30 जब हारून और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा कि उसके चेहरे से किरणें निकलती हैं, तब वे उसके पास जाने से डर गए।

31 तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून मण्डली के सारे प्रधानों समेत उसके पास आया, और मूसा उनसे बातें करने लगा।

32 इसके बाद सब इस्राएली पास आए, और जितनी आज्ञाएँ यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसके साथ बात करने के समय दी थीं, वे सब उसने उन्हें बताईं।

33 जब तक मूसा उनसे बात न कर चुका तब तक अपने मुँह पर ओढ़ना डाले रहा।

† 34:29 ☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: अनन्त महिमा की चमक, यद्यपि मूसा ने उसको परिवर्तित रूप में देखा था, फिर भी वह उसके चेहरे से इतना चमक रही थी।

34 और जब जब मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उसके सामने जाता तब-तब वह उस ओढ़नी को निकलते समय तक उतारे हुए रहता था; फिर बाहर आकर जो-जो आज्ञा उसे मिलती उन्हें इस्राएलियों से कह देता था।

35 इस्राएली मूसा का चेहरा देखते थे कि उससे किरणें निकलती हैं; और जब तक वह यहोवा से बात करने को भीतर न जाता तब तक वह उस ओढ़नी को डाले रहता था।

## 35

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞

1 मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली इकट्ठा करके उनसे कहा, “जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे ये हैं।

2 छः दिन तो काम-काज किया जाए, परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे लिये पवित्र और यहोवा के लिये पवित्र विश्राम का दिन ठहरे; उसमें जो कोई काम-काज करे वह मार डाला जाए;

3 वरन् विश्राम के दिन तुम अपने-अपने घरों में आग तक न जलाना।”

☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

4 फिर मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहा, “जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है।

5 तुम्हारे पास से यहोवा के लिये भेंट ली जाए, अर्थात् जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा की भेंट करके ये वस्तुएँ ले आएँ; अर्थात् सोना, रुपा, पीतल;

6 नीले, बैंगनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा; बकरी का बाल,

7 लाल रंग से रंगी हुई मेढों की खालें, सुइसों की खालें; बबूल की लकड़ी,

8 उजियाला देने के लिये तेल, अभिषेक का तेल, और धूप के लिये सुगन्ध-द्रव्य,

9 फिर एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये मणि।

10 “तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस-जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने दी है वे सब बनाएँ।

11 अर्थात् तम्बू, और आवरण समेत निवास, और उसकी घुंडी, तस्ते, बेंडे, खम्भे और कुर्सियाँ;

12 फिर डंडों समेत सन्दूक, और प्रायश्चित का ढकना, और बीचवाला परदा;

13 डंडों और सब सामान समेत मेज, और भेंट की रोटियाँ;

14 सामान और दीपकों समेत उजियाला देनेवाला दीवट, और उजियाला देने के लिये तेल;

15 डंडों समेत धूपवेदी, अभिषेक का तेल, सुगन्धित धूप, और निवास के द्वार का परदा;

16 पीतल की झंझरी, डंडों आदि सारे सामान समेत होमवेदी, पाए समेत हौदी;

17 खम्भों और उनकी कुर्सियों समेत आँगन के पर्दे, और आँगन के द्वार के पर्दे;

18 निवास और आँगन दोनों के खूँटे, और डोरियाँ;

19 पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र, और याजक का काम करने के लिये हारून याजक के [२२२२२२ २२२२२२]\*, और उसके पुत्रों के वस्त्र भी।”

[२२२२२ २२२२२२ २२२२ २२२२]

20 तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा के सामने से लौट गई।

21 और जितनों को उत्साह हुआ, और जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे मिलापवाले तम्बू के काम करने और उसकी सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेंट ले आने लगे।

22 क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू, नथनी, मुंदरी, और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भाँति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए।

23 और जिस-जिस पुरुष के पास नीले, बैंगनी या लाल रंग का कपड़ा या सूक्ष्म सनी का कपड़ा, या बकरी का बाल, या लाल रंग से रंगी हुई मेढों की खालें, या सुइसों की खालें थीं वे उन्हें ले आए।

24 फिर जितने चाँदी, या पीतल की भेंट के देनेवाले थे वे यहोवा के लिये वैसी भेंट ले आए; और जिस जिसके पास सेवकाई के किसी काम के लिये बबूल की लकड़ी थी वे उसे ले आए।

25 और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत कात-कातकर नीले, बैंगनी और लाल रंग के, और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को ले आईं।

26 और जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्होंने बकरी के बाल भी काते।

27 और प्रधान लोग एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि, और जड़ने के लिये मणि,

28 और उजियाला देने और अभिषेक और धूप के सुगन्ध-द्रव्य और तेल ले आए।

\* 35:19 [२२२२२२ २२२२२२]: सेवकार्य के वस्त्र, जिसे पहनकर तम्बू में नहीं बल्कि पवित्रस्थान में सेवा की जाए। † 35:35 [२२२२२२]: उसने सुई से काम किया। उसने सुई से या तो रंगीन धागों से या रंगीन कपड़ों के टुकड़ों से बनावट दी।

29 जिस-जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसके लिये जो कुछ आवश्यक था, उसे वे सब पुरुष और स्त्रियाँ ले आईं, जिनके हृदय में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी। इस प्रकार इस्राएली यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेंट ले आए।

[२२२२२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२२]

30 तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा सुनो, “यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता है, नाम लेकर बुलाया है।

31 और उसने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है,

32 कि वह कारीगरी की युक्तियाँ निकालकर सोने, चाँदी, और पीतल में,

33 और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी पर नक्काशी करने में, वरन् बुद्धि से सब भाँति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके।

34 फिर यहोवा ने उसके मन में और दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दी है।

35 इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है, कि वे नक्काशी करने और गढ़ने और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में [२२२२२२२] और बुनने, वरन् सब प्रकार की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने में सब भाँति के काम करें।

## 36

1 “बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो, कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये सब प्रकार का काम करना जानें, वे सब यह काम करें।”

[२२२२२२ २२२२२२२ २२२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२]

2 तब मूसा ने बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमानों को जिनके हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था, अर्थात् जिस-जिसको पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था उन सभी को बुलवाया।

3 और इस्राएली जो-जो भेंट पवित्रस्थान की सेवकाई के काम और उसके बनाने के लिये ले आए थे, उन्हें उन पुरुषों ने मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग प्रति भोर को उसके पास भेंट अपनी इच्छा से लाते रहे;



और उसने उनके लिये चाँदी की चार कुर्सियाँ ढालीं।

37 उसने तम्बू के द्वार के लिये भी नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ परदा बनाया।

38 और उसने घुंडियों समेत उसके पाँच खम्भे भी बनाए, और उनके सिरों और जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उनकी पाँच कुर्सियाँ पीतल की बनाईं।

## 37

????? ?? ????????? ?????? ??????

1 फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी का ?????????\* बनाया; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी।

2 उसने उसको भीतर बाहर शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसके चारों ओर सोने की बाड़ बनाई।

3 और उसके चारों पायों पर लगाने को उसने सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े एक ओर और दो कड़े दूसरी ओर लगे।

4 फिर उसने बबूल के डंडे बनाए, और उन्हें सोने से मढ़ा,

5 और उनको सन्दूक के दोनों ओर के कड़ों में डाला कि उनके बल सन्दूक उठाय जाए।

6 फिर उसने शुद्ध सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को बनाया; उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी।

7 और उसने सोना गढ़कर दो करूब प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर बनाए;

8 एक करूब तो एक सिरे पर, और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर बना; उसने उनको प्रायश्चित्त के ढकने के साथ एक ही टुकड़े के दोनों सिरों पर बनाया।

9 और करूबों के पंख ऊपर से फैले हुए बने, और उन पंखों से प्रायश्चित्त का ढकना ढँपा हुआ बना, और उनके मुख आमने-सामने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किए हुए बने।

????????? ?????? ?? ????????? ??????

10 फिर उसने बबूल की लकड़ी की मेज को बनाया; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी;

11 और उसने उसको शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसमें चारों ओर शुद्ध सोने की एक बाड़ बनाई।

12 और उसने उसके लिये चार अंगुल चौड़ी एक पटरी, और इस पटरी के लिये चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई।

13 और उसने मेज के लिये सोने के चार कड़े ढालकर उन चारों कोनों में लगाया, जो उसके चारों पायों पर थे।

14 वे कड़े पटरी के पास मेज उठाने के डंडों के खानों का काम देने को बने।

15 और उसने मेज उठाने के लिये डंडों को बबूल की लकड़ी के बनाया, और सोने से मढ़ा।

16 और उसने मेज पर का सामान अर्थात् परात, धूपदान, कटोरे, और उण्डेलने के बर्तन सब शुद्ध सोने के बनाए।

?????? ?? ?????? ?? ????????? ??????

17 फिर उसने ????????? ?????? ????????? ?????? ????????? ?????? ?????? ?????? ?????? ??????; उसके पुष्पकोष, गाँठ, और फूल सब एक ही टुकड़े के बने।

18 और दीवट से निकली हुई छः डालियाँ बनीं; तीन डालियाँ तो उसकी एक ओर से और तीन डालियाँ उसकी दूसरी ओर से निकली हुई बनीं।

19 एक-एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन-तीन पुष्पकोष, एक-एक गाँठ, और एक-एक फूल बना; दीवट से निकली हुई, उन छहों डालियों का यही आकार हुआ।

20 और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के समान अपनी-अपनी गाँठ और फूल समेत चार पुष्पकोष बने।

21 और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो-दो डालियों के नीचे एक-एक गाँठ दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनी।

22 गाँठें और डालियाँ सब दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं; सारा दीवट गढ़े हुए शुद्ध सोने का और एक ही टुकड़े का बना।

23 और उसने दीवट के सातों दीपक, और गुलतराश, और गुलदान, शुद्ध सोने के बनाए।

24 उसने सारे सामान समेत दीवट को किक्कार भर सोने का बनाया।

????????????? ?? ????????? ??????

25 फिर उसने बबूल की लकड़ी की धूपवेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की थी; वह चौकोर बनी, और उसकी ऊँचाई दो हाथ की थी; और उसके सींग उसके साथ बिना जोड़ के बने थे

\* 37:1 ??????: सन्दूक पवित्रस्थान का केंद्र था। इसमें साक्षीपत्र अर्थात् ईश्वरीय व्यवस्था की पाटियाँ, अर्थात् यहोवा और उसके लोगों के बीच वाचा के नियम थे। † 37:17 ?????? ?????? ?????????? ?????? ?? ?????????? ?????? ?????? ?? ??????: इसका उद्देश्य सात दीवटों को सम्भालना था।

26 ऊपरवाले पल्लों, और चारों ओर के बाजुओं और सींगों समेत उसने उस वेदी को शुद्ध सोने से मढ़ा; और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई,

27 और उस बाड़ के नीचे उसके दोनों पल्लों पर उसने सोने के दो कड़े बनाए, जो उसके उठाने के डंडों के खानों का काम दें।

28 और डंडों को उसने बबूल की लकड़ी का बनाया, और सोने से मढ़ा।

29 और उसने अभिषेक का पवित्र तेल, और सुगन्ध-द्रव्य का धूप गंधी की रीति के अनुसार बनाया।

## 38

?????? ?? ?????

1 फिर उसने बबूल की लकड़ी की होमबलि के लिये वेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई पाँच हाथ और चौड़ाई पाँच हाथ की थी; इस प्रकार से वह चौकोर बनी, और ऊँचाई तीन हाथ की थी।

2 और उसने उसके चारों कोनों पर उसके चार सींग बनाए, वे उसके साथ बिना जोड़ के बने; और उसने उसको पीतल से मढ़ा।

3 और उसने वेदी का सारा सामान, अर्थात् उसकी हाँड़ियों, फावड़ियों, कटोरों, काँटों, और करछों को बनाया। उसका सारा सामान उसने पीतल का बनाया।

4 और वेदी के लिये उसके चारों ओर की कँगनी के तले उसने पीतल की जाली की एक झंझरी बनाई, वह नीचे से वेदी की ऊँचाई के मध्य तक पहुँची।

5 और उसने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये चार कड़े ढाले, जो डंडों के खानों का काम दें।

6 फिर उसने डंडों को बबूल की लकड़ी का बनाया, और पीतल से मढ़ा।

7 तब उसने डंडों को वेदी की ओर के कड़ों में वेदी के उठाने के लिये डाल दिया। वेदी को उसने तख्तों से खोखली बनाया।

????? ?? ?????

8 उसने हौदी और उसका पाया दोनों पीतल के बनाए, यह ?????????? ?????? ?? ?????? ?? ?????? ?????????? ?????????? के पीतल के दर्पणों के लिये बनाए गए।

????????????????? ?? ?????

9 फिर उसने आँगन बनाया; और दक्षिण की ओर के लिये आँगन के पर्दे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के थे, और सब मिलाकर सौ हाथ लम्बे थे;

10 उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस कुर्सियाँ बनीं; और खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने की छड़ें चाँदी की बनीं।

11 और उत्तर की ओर के लिये भी सौ हाथ लम्बे पर्दे बने; और उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस ही कुर्सियाँ बनीं, और खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने की छड़ें चाँदी की बनीं।

12 और पश्चिम की ओर के लिये सब पर्दे मिलाकर पचास हाथ के थे; उनके लिए दस खम्भे, और दस ही उनकी कुर्सियाँ थीं, और खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने की छड़ें चाँदी की थीं।

13 और पूरब की ओर भी वह पचास हाथ के थे।

14 आँगन के द्वार के एक ओर के लिये पन्द्रह हाथ के पर्दे बने; और उनके लिये तीन खम्भे और तीन कुर्सियाँ थीं।

15 और आँगन के द्वार के दूसरी ओर भी वैसा ही बना था; और आँगन के दरवाजे के इधर और उधर पन्द्रह-पन्द्रह हाथ के पर्दे बने थे; और उनके लिये तीन ही तीन खम्भे, और तीन ही तीन इनकी कुर्सियाँ भी थीं।

16 आँगन के चारों ओर सब पर्दे सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने हुए थे।

17 और खम्भों की कुर्सियाँ पीतल की, और घुंडियाँ और छड़ें चाँदी की बनीं, और उनके सिरे चाँदी से मढ़े गए, और आँगन के सब खम्भे चाँदी के छड़ों से जोड़े गए थे।

18 आँगन के द्वार के पर्दे पर बेलबूटे का काम किया हुआ था, और वह नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का; और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने थे; और उसकी लम्बाई बीस हाथ की थी, और उसकी ऊँचाई आँगन की कनात की चौड़ाई के समान पाँच हाथ की बनी।

19 और उनके लिये चार खम्भे, और खम्भों की चार ही कुर्सियाँ पीतल की बनीं, उनकी घुंडियाँ चाँदी की बनीं, और उनके सिरे चाँदी से मढ़े गए, और उनकी छड़ें चाँदी की बनीं।

20 और निवास और आँगन के चारों ओर के सब खूँटे पीतल के बने थे।

????????? ?? ?????

21 साक्षीपत्र के निवास का सामान जो लेवियों के सेवाकार्य के लिये बना; और जिसकी गिनती हारून याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूसा के कहने से हुई थी, उसका वर्णन यह है।

\* 38:8 ?????????? ?????? ?? ?????? ?? ?????? ?????????? ?????????? वे स्त्रियाँ जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठी होती थीं और भक्त स्त्रियाँ थीं। पवित्रस्थान में इस्तेमाल करने के लिए अपने दर्पणों को देना इन स्त्रियों के लिए योग्य बलिदान था।

22 जिस-जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसको यहूदा के गोत्रवाले बसलेल ने, जो हूर का पोता और ऊरी का पुत्र था, बना दिया।

23 और उसके संग दान के गोत्रवाले, अहीसामाक का पुत्र, ओहोलीआब था, जो नक्काशी करने और काढ़नेवाला और नीले, बैंगनी और लाल रंग के और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई करनेवाला निपुण कारीगर था।

24 पवित्रस्थान के सारे काम में जो भेंट का सोना लगा वह पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से उनतीस किककार, और सात सौ तीस शेकेल था।

25 और मण्डली के गिने हुए लोगों की भेंट की चाँदी पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से सौ किककार, और सत्रह सौ पचहत्तर शेकेल थी।

26 अर्थात् जितने बीस वर्ष के और उससे अधिक आयु के गिने गए थे, वे छः लाख तीन हजार साठे पाँच सौ पुरुष थे, और एक-एक जन की ओर से पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल, जो एक बेका होता है, मिला।

27 और वह सौ किककार चाँदी पवित्रस्थान और बीचवाले पर्दे दोनों की कुर्सियों के ढालने में लग गई; सौ किककार से सौ कुर्सियाँ बनीं, एक-एक कुर्सी एक किककार की बनी।

28 और सत्रह सौ पचहत्तर शेकेल जो बच गए उनसे खम्भों की घुंडियाँ बनाई गईं, और खम्भों की चोटियाँ मढ़ी गईं, और उनकी छड़ें भी बनाई गईं।

29 और भेंट का पीतल सत्तर किककार और दो हजार चार सौ शेकेल था;

30 इससे मिलापवाले तम्बू के द्वार की कुर्सियाँ, और पीतल की वेदी, पीतल की झंझरी, और वेदी का सारा सामान;

31 और आँगन के चारों ओर की कुर्सियाँ, और उसके द्वार की कुर्सियाँ, और निवास, और आँगन के चारों ओर के खूँटे भी बनाए गए।

## 39

☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞

1 फिर उन्होंने नीले, बैंगनी और लाल रंग के काढ़े हुए कपड़े पवित्रस्थान की सेवा के लिये, और हारून के लिये भी पवित्र वस्त्र बनाए; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞

\* 39:2 ☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞: एपोद में कपड़े के दो टुकड़े लगे होते हैं, एक पीछे की ओर और एक आगे की ओर, जिसे कंधों की पट्टियों द्वारा जोड़ा जाता है, सूक्ष्म मलमल के कपड़े से बना एपोद न केवल याजकों के लिए बल्कि अस्थाई रूप से पवित्रस्थान में सेवा करनेवालों के लिए भी एक सम्मानीय वस्त्र था। † 39:8 ☞☞☞☞☞☞: सीनाबन्ध" के लिए इस्तेमाल हुआ इब्रानी शब्द का अर्थ केवल आभूषण प्रतीत होता है। सीनाबन्ध का सम्बन्ध केवल वस्त्र में उसके स्थान से है।

2 और उसने ☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞\*, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया।

3 और उन्होंने सोना पीट-पीटकर उसके पत्तर बनाए, फिर पत्तरो को काट-काटकर तार बनाए, और तारों को नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े में, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया।

4 एपोद के जोड़ने को उन्होंने उसके कंधों पर के बन्धन बनाए, वह अपने दोनों सिरों से जोड़ा गया।

5 और उसे कसने के लिये जो काढ़ा हुआ पटुका उस पर बना, वह उसके साथ बिना जोड़ का, और उसी की बनावट के अनुसार, अर्थात् सोने और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

6 उन्होंने सुलैमानी मणि काटकर उनमें इस्राएल के पुत्रों के नाम, जैसा छापना खोदा जाता है वैसे ही खोदे, और सोने के खानों में जड़ दिए।

7 उसने उनको एपोद के कंधे के बन्धनों पर लगाया, जिससे इस्राएलियों के लिये स्मरण करानेवाले मणि ठहरें; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞

8 उसने ☞☞☞☞☞☞\* को एपोद के समान सोने की, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े की, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े में बेलबूटे का काम किया हुआ बनाया।

9 चपरास तो चौकोर बनी; और उन्होंने उसको दोहरा बनाया, और वह दोहरा होकर एक बित्ता लम्बा और एक बित्ता चौड़ा बना।

10 और उन्होंने उसमें चार पंक्तियों में मणि जड़े। पहली पंक्ति में माणिक्य, पद्मराग, और लालड़ी जड़े गए;

11 और दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि, और हीरा,

12 और तीसरी पंक्ति में लशम, सूर्यकांत, और नीलम;

13 और चौथी पंक्ति में फीरोजा, सुलैमानी मणि, और यशब जड़े; ये सब अलग-अलग सोने के खानों में जड़े गए।

14 और ये मणि इस्राएल के पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार बारह थे; बारहों गोत्रों में से एक-एक का नाम जैसा छापना खोदा जाता है वैसे ही खोदा गया।

15 और उन्होंने चपरास पर डोरियों के समान गूँथे हुए शुद्ध सोने की जंजीर बनाकर लगाई;

16 फिर उन्होंने सोने के दो खाने, और सोने की दो कड़ियाँ बनाकर दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगाया;

17 तब उन्होंने सोने की दोनों गूँथी हुई जंजीरों को चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में लगाया।

18 और गूँथी हुई दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को उन्होंने दोनों खानों में जड़ के, एपोद के सामने दोनों कंधों के बन्धनों पर लगाया।

19 और उन्होंने सोने की और दो कड़ियाँ बनाकर चपरास के दोनों सिरों पर उसकी उस कोर पर, जो एपोद के भीतरी भाग में थी, लगाई।

20 और उन्होंने सोने की दो और कड़ियाँ भी बनाकर एपोद के दोनों कंधों के बन्धनों पर नीचे से उसके सामने, और जोड़ के पास, एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाई।

21 तब उन्होंने चपरास को उसकी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से ऐसा बाँधा, कि वह एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे, और चपरास एपोद से अलग न होने पाए; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

?????????? ?? ?????? ??????

22 फिर एपोद का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया गया।

23 और उसकी बनावट ऐसी हुई कि उसके बीच बस्तर के छेद के समान एक छेद बना, और छेद के चारों ओर एक कोर बनी, कि वह फटने न पाए।

24 और उन्होंने उसके नीचेवाले घेरे में नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनाए।

25 और उन्होंने शुद्ध सोने की घंटियाँ भी बनाकर बागे के नीचेवाले घेरे के चारों ओर अनारों के बीचों बीच लगाई;

26 अर्थात् बागे के नीचेवाले घेरे के चारों ओर एक सोने की घंटी, और एक अनार फिर एक सोने की घंटी, और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहने हुए सेवा टहल करें; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

27 फिर उन्होंने हारून, और उसके पुत्रों के लिये बुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के अंगरखे,

28 और सूक्ष्म सनी के कपड़े की पगड़ी, और सूक्ष्म सनी के कपड़े की सुन्दर टोपियाँ, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की जाँघिया,

29 और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले, बैंगनी और लाल रंग की कढ़ाई का काम की हुई पगड़ी; इन सभी को जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी वैसा ही बनाया।

30 फिर उन्होंने पवित्र मुकुट की पटरी शुद्ध सोने की बनाई; और जैसे छापे में वैसे ही उसमें ये अक्षर खोदे गए, अर्थात् 'यहोवा के लिये पवित्र।'

31 और उन्होंने उसमें नीला फीता लगाया, जिससे वह ऊपर पगड़ी पर रहे, जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

?????????? ?? ?????? ??????

32 इस प्रकार मिलापवाले तम्बू के निवास का सब काम समाप्त हुआ, और जिस-जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इस्राएलियों ने उसी के अनुसार किया।

33 तब वे निवास को मूसा के पास ले आए, अर्थात् घुंडियाँ, तख्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सियाँ आदि सारे सामान समेत तम्बू;

34 और लाल रंग से रंगी हुई मेढों की खालों का ओढ़ना, और सुइसों की खालों का ओढ़ना, और बीच का परदा;

35 डंडों सहित साक्षीपत्र का सन्दूक, और प्रायश्चित का ढकना;

36 सारे सामान समेत मेज, और भेंट की रोटी;

37 सारे सामान सहित दीवट, और उसकी सजावट के दीपक और उजियाला देने के लिये तेल;

38 सोने की वेदी, और अभिषेक का तेल, और सुगन्धित धूप, और तम्बू के द्वार का परदा;

39 पीतल की झंझरी, डंडों और सारे सामान समेत पीतल की वेदी; और पाए समेत हौदी;

40 खम्भों और कुर्सियों समेत आँगन के पर्दे, और आँगन के द्वार का परदा, और डोरियाँ, और खूँटे, और मिलापवाले तम्बू के निवास की सेवा का सारा सामान;

41 पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये बेल बूटा काढ़े हुए वस्त्र, और हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र जिन्हें पहनकर उन्हें याजक का काम करना था।

42 अर्थात् जो-जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने सब काम किया।

43 तब मूसा ने सारे काम का निरीक्षण करके देखा कि उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया है। और मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

## 40

????????????????? ?????? ?????????? ?????? ??

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 "पहले महीने के पहले दिन को तू मिलापवाले तम्बू के निवास को खड़ा कर देना।



3 और उसमें साक्षीपत्र के सन्दूक को रखकर बीचवाले पर्दे की ओट में कर देना।

4 और मेज को भीतर ले जाकर जो कुछ उस पर सजाना है उसे सजा देना; तब दीवट को भीतर ले जाकर उसके दीपकों को जला देना।

5 और साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सोने की वेदी को जो धूप के लिये है उसे रखना, और निवास के द्वार के पर्दे को लगा देना।

6 और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार के सामने होमवेदी को रखना।

7 और मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच हौदी को रखकर उसमें जल भरना।

8 और चारों ओर के आँगन की कनात को खड़ा करना, और उस आँगन के द्वार पर पर्दे को लटका देना।

9 और अभिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उसमें होगा सब कुछ का अभिषेक करना, और सारे सामान समेत उसको पवित्र करना; तब वह पवित्र ठहरेगा।

10 सब सामान समेत होमवेदी का अभिषेक करके उसको पवित्र करना; तब वह परमपवित्र ठहरेगी।

11 पाए समेत हौदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र करना।

12 तब हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जाकर जल से नहलाना,

13 और हारून को पवित्र वस्त्र पहनाना, और उसका अभिषेक करके उसको पवित्र करना कि वह मेरे लिये याजक का काम करे।

14 और उसके पुत्रों को ले जाकर अंगरखे पहनाना,

15 और जैसे तू उनके पिता का अभिषेक करे वैसे ही उनका भी अभिषेक करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें; और उनका अभिषेक उनकी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये उनके सदा के याजकपद का चिन्ह ठहरेगा।”

???????????? ???? ? ? ???? ???? ???? ?

16 और मूसा ने जो-जो आज्ञा यहोवा ने उसको दी थी उसी के अनुसार किया।

17 और दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन को निवास खड़ा किया गया।

18 मूसा ने निवास को खड़ा करवाया और उसकी कुर्सियाँ धर उसके तख्ते लगाकर उनमें बेंडे डाले, और उसके खम्भों को खड़ा किया;

19 और उसने निवास के ऊपर तम्बू को फैलाया, और तम्बू के ऊपर उसने ओढ़ने को लगाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

20 और उसने साक्षीपत्र को लेकर सन्दूक में रखा, और सन्दूक में डंडों को लगाकर उसके ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को रख दिया;

21 और उसने सन्दूक को निवास में पहुँचाया, और बीचवाले पर्दे को लटकवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके अन्दर किया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

22 और उसने मिलापवाले तम्बू में निवास के उत्तर की ओर बीच के पर्दे से बाहर मेज को लगवाया,

23 और उस पर उसने यहोवा के सम्मुख रोटी सजा कर रखी; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

24 और उसने मिलापवाले तम्बू में मेज के सामने निवास की दक्षिण ओर दीवट को रखा,

25 और उसने दीपकों को यहोवा के सम्मुख जला दिया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

26 और उसने मिलापवाले तम्बू में बीच के पर्दे के सामने सोने की वेदी को रखा,

27 और उसने उस पर सुगन्धित धूप जलाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

28 और उसने निवास के द्वार पर पर्दे को लगाया।

29 और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार पर होमवेदी को रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

30 और उसने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच हौदी को रखकर उसमें धोने के लिये जल डाला,

31 और मूसा और हारून और उसके पुत्रों ने उसमें अपने-अपने हाथ पाँव धोए;

32 और जब जब वे मिलापवाले तम्बू में या वेदी के पास जाते थे तब-तब वे हाथ पाँव धोते थे; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

33 और उसने निवास के चारों ओर और वेदी के आस-पास आँगन की कनात को खड़ा करवाया, और आँगन के द्वार के पर्दे को लटका दिया। इस प्रकार मूसा ने सब काम को पूरा किया।

???????????? ???? ? ? ???? ???? ???? ?

34 तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गया।

35 और बादल मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गया, इस कारण मूसा उसमें प्रवेश न कर सका।

36 इस्राएलियों की सारी यात्रा में ऐसा होता था, कि जब जब वह बादल निवास के ऊपर से उठ जाता तब-तब वे कूच करते थे।

37 और यदि वह न उठता, तो जिस दिन तक वह न उठता था उस दिन तक वे कूच नहीं करते थे।

38 इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभी को दिखाई दिया करती थी।



13 वह उसकी अंतडियों और पैरों को जल से धोए। और याजक वेदी पर जलाए कि वह होमबलि हो और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।

14 “यदि वह यहोवा के लिये पक्षियों की होमबलि चढ़ाए, तो पंडुको या कबूतरों का चढ़ावा चढ़ाए।

15 याजक उसको वेदी के समीप ले जाकर उसका गला मरोड़कर सिर को धड़ से अलग करे, और वेदी पर जलाए; और उसका सारा लहू उस वेदी के बाजू पर गिराया जाए;

16 और वह उसकी [22-22222 22 22 22222]† निकालकर वेदी के पूरब की ओर से राख डालने के स्थान पर फेंक दे;

17 और वह उसको पंखों के बीच से फाड़े, पर अलग-अलग न करे। तब याजक उसको वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।

## 2

[2222222 22 22222]

1 “जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे, तो वह मैदा चढ़ाए; और उस पर तेल डालकर उसके ऊपर लोबान रखे;

2 और वह उसको हारून के पुत्रों के पास जो याजक हैं लाए। और अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से इस तरह अपनी मुट्ठी भरकर निकाले कि सब लोबान उसमें आ जाए; और याजक उन्हें स्मरण दिलानेवाले भाग के लिये वेदी पर जलाए कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धित हवन ठहरे।

3 और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उसके पुत्रों का ठहरे; यह यहोवा के हवनों में से [22222222222 2222]\* होगा।

4 “जब तू अन्नबलि के लिये तंदूर में पकाया हुआ चढ़ावा चढ़ाए, तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलकों, या तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी रोटियों का हो।

5 और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि हो, तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे का हो;

6 उसको टुकड़े-टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तब वह अन्नबलि हो जाएगा।

7 और यदि तेरा चढ़ावा कढ़ाही में तला हुआ अन्नबलि हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए।

8 और जो अन्नबलि इन वस्तुओं में से किसी का बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना; और जब वह याजक के पास लाया जाए, तब याजक उसे वेदी के समीप ले जाए।

9 और याजक अन्नबलि में से स्मरण दिलानेवाला भाग निकालकर वेदी पर जलाए कि वह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे;

10 और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उसके पुत्रों का ठहरे; वह यहोवा के हवनों में परमपवित्र भाग होगा।

11 “कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ खमीर मिलाकर बनाया न जाए; तुम कभी हवन में यहोवा के लिये खमीर और मधु न जलाना।

12 तुम इनको पहली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढ़ाना, पर वे सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर चढ़ाए न जाएँ।

13 फिर अपने सब अन्नबलियों को नमकीन बनाना; और अपना कोई अन्नबलि अपने परमेश्वर के साथ बंधी हुई [22222 22 22222]\* से रहित होने न देना; अपने सब चढ़ावों के साथ नमक भी चढ़ाना।

14 “यदि तू यहोवा के लिये पहली उपज का अन्नबलि चढ़ाए, तो अपनी पहली उपज के अन्नबलि के लिये आग में भुनी हुई हरी-हरी बालें, अर्थात् हरी-हरी बालों को मींजकर निकाल लेना, तब अन्न को चढ़ाना।

15 और उसमें तेल डालना, और उसके ऊपर लोबान रखना; तब वह अन्नबलि हो जाएगा।

16 और याजक मींजकर निकाले हुए अन्न को, और तेल को, और सारे लोबान को स्मरण दिलानेवाला भाग करके जला दे; वह यहोवा के लिये हवन ठहरे।

## 3

[2222222 22 22222]

1 “यदि उसका चढ़ावा मेलबलि का हो, और यदि वह गाय-बैलों में से किसी को चढ़ाए, तो चाहे वह पशु नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह यहोवा के आगे चढ़ाए।

2 और वह अपना हाथ अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़कें।

† 1:16 [22-22222 22 22 22222]: अर्थात् भोजन जो उसकी गल-थैली में है \* 2:3 [2222222222 2222]: सब चढ़ावे पवित्र थे परन्तु वह परमपवित्र था जिसका प्रत्येक अंश वेदी या पुरोहितों के उपयोग के लिये समर्पित था। † 2:13 [22222 22 22222]: प्रत्येक पशुबलि में नमक होना आवश्यक था। यह एक प्रतीक था जो होमबलि की वेदी से कभी अलग नहीं होना था जो उनके लिये यहोवा के अविनाशी प्रेम को दर्शाता था।

3 वह मेलबलि में से यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात् जिस चर्बी से अंतडियाँ ढपी रहती हैं, और जो चर्बी उनमें लिपटी रहती है वह भी,

4 और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह अलग करे।

5 तब हारून के पुत्र इनको वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जलाएँ, जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर है, कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।

6 “यदि यहोवा के मेलबलि के लिये उसका चढ़ावा भेड़-बकरियों में से हो, तो चाहे वह नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह चढ़ाए।

7 यदि वह <sup>†</sup> चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के सामने चढ़ाए,

8 और वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़के।

9 तब मेलबलि को यहोवा के लिये हवन करे, और उसकी <sup>†</sup> वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चर्बी से अंतडियाँ ढपी रहती हैं, और जो चर्बी उनमें लिपटी रहती है,

10 और दोनों गुर्दे, और जो चर्बी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह अलग करे।

11 और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह यहोवा के लिये हवन रूपी भोजन ठहरे।

12 “यदि वह बकरा या बकरी चढ़ाए, तो उसे यहोवा के सामने चढ़ाए।

13 और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसको मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़के।

14 तब वह उसमें से अपना चढ़ावा यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाए, और जिस चर्बी से अंतडियाँ ढपी रहती हैं, और जो चर्बी उनमें लिपटी रहती है वह भी,

15 और दोनों गुर्दे और जो चर्बी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह अलग करे।

16 और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह हवन रूपी भोजन है जो सुखदायक सुगन्ध के लिये होता है; क्योंकि सारी चर्बी यहोवा की है।

17 यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरेगी कि तुम चर्बी और लहू कभी न खाओ।” (15:20,29)

## 4

<sup>†</sup>

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य उन कामों में से जिनको यहोवा ने मना किया है, किसी काम को <sup>†</sup>;

3 और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे, जिससे प्रजा दोषी ठहरे, तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ाए।

4 वह उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर उसके सिर पर हाथ रखे, और उस बछड़े को यहोवा के सामने बलि करे।

5 और अभिषिक्त याजक बछड़े के लहू में से कुछ लेकर मिलापवाले तम्बू में ले जाए;

6 और याजक अपनी उँगली लहू में डुबो-डुबोकर और उसमें से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा के सामने सात बार छिड़के।

7 और याजक उस <sup>†</sup> और लेकर सुगन्धित धूप की वेदी के सींगों पर जो मिलापवाले तम्बू में है यहोवा के सामने लगाए; फिर बछड़े के सब लहू को वेदी के पाए पर होमबलि की वेदी जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उण्डेल दे।

8 फिर वह पापबलि के बछड़े की सब चर्बी को उससे अलग करे, अर्थात् जिस चर्बी से अंतडियाँ ढपी रहती हैं, और जितनी चर्बी उनमें लिपटी रहती है,

9 और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह ऐसे अलग करे,

10 जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से अलग किए जाते हैं, और याजक इनको होमबलि की वेदी पर जलाए।

11 परन्तु उस बछड़े की खाल, पाँव, सिर, अंतडियाँ, गोबर,

12 और सारा माँस, अर्थात् समूचा बछड़ा छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में, जहाँ राख डाली जाएगी, ले जाकर लकड़ी पर रखकर आग से जलाए; जहाँ राख डाली जाती है वह वहीं जलाया जाए।

\* 3:7 <sup>†</sup>: देखे टिप्पणी निर्गमन 12:3. † 3:9 <sup>†</sup>: उस पूर्वी क्षेत्र में एक प्रकार की भेड़ जिसे कृत्रिम उपायों से मोटा किया जाता था। \* 4:2 <sup>†</sup>: यह एक स्पष्ट आज्ञा थी कि जिसे अपने पाप का बोध है, वह पापबलि चढ़ाए। † 4:7 <sup>†</sup>: छिड़काव और लेप के बाद का बचा हुआ रक्त इस प्रकार वितरित किया जाए जो परमेश्वर की सेवा के शिष्टाचार के अनुकूल है।

13 “यदि इस्राएल की सारी मण्डली अज्ञानता के कारण पाप करे और वह बात मण्डली की आँखों से छिपी हो, और वे यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध कुछ करके दोषी ठहरे हों;

14 तो जब उनका किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक बछड़े को पापबलि करके चढ़ाए। वह उसे मिलापवाले तम्बू के आगे ले जाए,

15 और मण्डली के वृद्ध लोग अपने-अपने हाथों को यहोवा के आगे बछड़े के सिर पर रखें, और वह बछड़ा यहोवा के सामने बलि किया जाए।

16 तब अभिषिक्त याजक बछड़े के लहू में से कुछ मिलापवाले तम्बू में ले जाए;

17 और याजक अपनी उँगली लहू में डुबो-डुबोकर उसे बीचवाले पर्दे के आगे सात बार यहोवा के सामने छिड़के।

18 और उसी लहू में से वेदी के सींगों पर जो यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू में है लगाए; और बचा हुआ सब लहू होमबलि की वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उण्डेल दे।

19 और वह बछड़े की कुल चर्बी निकालकर वेदी पर जलाए।

20 जैसे पापबलि के बछड़े से किया था वैसे ही इससे भी करे; इस भाँति याजक इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करे, तब उनका पाप क्षमा किया जाएगा।

21 और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भाँति जलाए जैसे पहले बछड़े को जलाया था; यह तो मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा।

22 “जब कोई प्रधान पुरुष पाप करके, अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा कि किसी आज्ञा के विरुद्ध भूल से कुछ करके दोषी हो जाए,

23 और उसका पाप उस पर प्रगट हो जाए, तो वह एक निर्दोष बकरा बलिदान करने के लिये ले आए;

24 और बकरे के सिर पर अपना हाथ रखे, और बकरे को उस स्थान पर बलि करे जहाँ होमबलि पशु यहोवा के आगे बलि किए जाते हैं; यह पापबलि ठहरेगा।

25 तब याजक अपनी उँगली से पापबलि पशु के लहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसका लहू होमबलि की वेदी के पाए पर उण्डेल दे।

26 और वह उसकी कुल चर्बी को मेलबलि की चर्बी के समान वेदी पर जलाए; और याजक उसके पाप के विषय में प्रायश्चित्त करे, तब वह क्षमा किया जाएगा।

27 “यदि साधारण लोगों में से कोई अज्ञानता से पाप

करे, अर्थात् कोई ऐसा काम जिसे यहोवा ने मना किया हो करके दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर प्रगट हो जाए,

28 तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिये ले आए;

29 और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और होमबलि के स्थान पर पापबलि पशु का बलिदान करे।

30 और याजक उसके लहू में से अपनी उँगली से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसके सब लहू को उसी वेदी के पाए पर उण्डेल दे।

31 और वह उसकी सब चर्बी को मेलबलि पशु की चर्बी के समान अलग करे, तब याजक उसको वेदी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए; और इस प्रकार याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसे क्षमा मिलेगी।

32 “यदि वह पापबलि के लिये एक मेम्ना ले आए, तो वह निर्दोष मादा हो,

33 और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और उसको पापबलि के लिये वहीं बलिदान करे जहाँ होमबलि पशुबलि किया जाता है।

34 तब याजक अपनी उँगली से पापबलि के लहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसके सब लहू को वेदी के पाए पर उण्डेल दे।

35 और वह उसकी सब चर्बी को मेलबलिवाले मेम्ने की चर्बी के समान अलग करे, और याजक उसे वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; और इस प्रकार याजक उसके पाप के लिये प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा।

## 5

⚠⚠⚠⚠⚠ ⚠⚠ ⚠⚠⚠⚠

1 “यदि कोई साक्षी होकर ऐसा पाप करे कि शपथ खिलाकर पूछने पर भी कि क्या तूने यह सुना अथवा जानता है, और वह बात प्रगट न करे, तो उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा।

2 अथवा यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध जंगली पशु की, चाहे अशुद्ध घरेलू पशु की, चाहे अशुद्ध रेंगनेवाले जीव-जन्तु की लोथ हो, तो वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा।

3 अथवा यदि कोई मनुष्य किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी भी प्रकार की क्यों न हो जिससे लोग अशुद्ध हो जाते हैं तो जब वह उस बात को जान लेगा तब वह दोषी ठहरेगा।

\* 5:4 ⚠⚠⚠⚠⚠: अर्थात् लापरवाही से या आवेश में आकर खाई गई शपथ जो शीघ्र भूली गई।

4 अथवा यदि कोई बुरा या भला करने को बिना सोचे समझे [2][2][2][2]\*, चाहे किसी प्रकार की बात वह बिना सोचे-विचारे शपथ खाकर कहे, तो ऐसी बात में वह दोषी उस समय ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा।

5 और जब वह इन बातों में से किसी भी बात में दोषी हो, तब जिस विषय में उसने पाप किया हो वह उसको मान ले,

6 और वह यहोवा के सामने अपना दोषबलि ले आए, अर्थात् उस पाप के कारण वह एक मादा भेड़ या बकरी पापबलि करने के लिये ले आए; तब याजक उस पाप के विषय उसके लिये प्रायश्चित्त करे।

7 “पर यदि उसे भेड़ या बकरी देने की सामर्थ्य न हो, तो अपने पाप के कारण दो पिण्डुक या कबूतरी के दो बच्चे दोषबलि चढ़ाने के लिये यहोवा के पास ले आए, उनमें से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये।

8 वह उनको याजक के पास ले आए, और याजक पापबलि वाले को पहले चढ़ाए, और उसका सिर गले से मरोड़ डालें, पर अलग न करे,

9 और वह पापबलि पशु के लहू में से कुछ वेदी के बाजू पर छिड़के, और जो लहू शेष रहे वह वेदी के पाए पर उण्डेला जाए; वह तो पापबलि ठहरेगा।

10 तब दूसरे पक्षी को वह नियम के अनुसार होमबलि करे, और याजक उसके पाप का प्रायश्चित्त करे, और तब वह क्षमा किया जाएगा।

11 “यदि वह दो पिण्डुक या कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके, तो वह अपने पाप के कारण अपना चढ़ावा एपा का दसवाँ भाग मैदा पापबलि करके ले आए; उस पर न तो वह तेल डाले, और न लोबान रखे, क्योंकि वह पापबलि होगा ([2][2][2][2] 2:24)

12 वह उसको याजक के पास ले जाए, और याजक उसमें से अपनी मुट्टी भर स्मरण दिलानेवाला भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; वह तो पापबलि ठहरेगा।

13 और इन बातों में से किसी भी बात के विषय में जो कोई पाप करे, याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तब वह पाप क्षमा किया जाएगा। और इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष के समान याजक का ठहरेगा।”

14 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

15 “यदि कोई [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2]\* के विषय में भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष मेढ्रा दोषबलि के लिये ले आए; उसका दाम पवित्रस्थान के

शेकेल के अनुसार उतने ही शेकेल चाँदी का हो जितना याजक ठहराए।

16 और जिस पवित्र वस्तु के विषय उसने पाप किया हो, उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर याजक को दे; और याजक दोषबलि का मेढ्रा चढ़ाकर उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसका पाप क्षमा किया जाएगा।

17 यदि कोई ऐसा पाप करे, कि उन कामों में से जिन्हें यहोवा ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह उसके अनजाने में हुआ हो, तो भी वह दोषी ठहरेगा, और उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा।

18 इसलिए वह एक निर्दोष मेढ्रा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने दाम का हो जितना याजक ठहराए, और याजक उसके लिये उसकी उस भूल का जो उसने अनजाने में की हो प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा।

19 यह दोषबलि ठहरे; क्योंकि वह मनुष्य निःसन्देह यहोवा के सम्मुख दोषी ठहरेगा।”

## 6

[2][2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2][2]

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी ठहरे, जैसा कि धरोहर, या लेन-देन, या लूट के विषय में अपने भाई से छल करे, या उस पर अत्याचार करे,

3 या पड़ी हुई वस्तु को पाकर उसके विषय झूठ बोले और झूठी शपथ भी खाए; ऐसी कोई भी बात क्यों न हो जिसे करके मनुष्य पापी ठहरते हैं,

4 तो जब वह ऐसा काम करके दोषी हो जाए, तब जो भी वस्तु उसने लूट, या अत्याचार करके, या धरोहर, या पड़ी पाई हो;

5 चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिसके विषय में उसने झूठी शपथ खाई हो; तो वह उसको पूरा-पूरा लौटा दे, और पाँचवाँ भाग भी बढ़ाकर भर दे, जिस दिन यह मालूम हो कि वह दोषी है, उसी दिन वह उस वस्तु को उसके स्वामी को लौटा दे।

6 और वह यहोवा के सम्मुख अपना दोषबलि भी ले आए, अर्थात् एक निर्दोष मेढ्रा दोषबलि के लिये याजक के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए।

7 इस प्रकार याजक उसके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे, और जिस काम को करके वह दोषी हो गया है उसकी क्षमा उसे मिलेगी।”

[2][2][2][2]-[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2]

† 5:15 [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2]: सार्वजनिक उपासना से सम्बंधित कोई भी वस्तु जिससे पवित्रस्थान की हानि हो

8 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

9 “हारून और उसके पुत्रों को आज्ञा देकर यह कह कि होमबलि की व्यवस्था यह है: होमबलि ईंधन के ऊपर रात भर भोर तक वेदी पर पड़ा रहे, और वेदी की अग्नि वेदी पर जलती रहे।

10 और याजक अपने सनी के वस्त्र और अपने तन पर अपनी सनी की जाँधिया पहनकर होमबलि की राख, जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह जाए, उसे उठाकर वेदी के पास रखे।

11 तब वह अपने ये वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र पहनकर राख को छावनी से बाहर किसी शुद्ध स्थान पर ले जाए।

12 वेदी पर अग्नि जलती रहे, और कभी बुझने न पाए; और याजक प्रतिदिन भोर को उस पर लकड़ियाँ जलाकर होमबलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजा कर धर दे, और उसके ऊपर मेलबलियों की चर्बी को जलाया करे।

13 ~~22222 22 22 2222222 22222 2222~~\*; वह कभी बुझने न पाए।

~~22222222~~

14 “अन्नबलि की व्यवस्था इस प्रकार है: हारून के पुत्र उसको वेदी के आगे यहोवा के समीप ले आएँ।

15 और वह अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से मुट्ठी भर और उस पर का सब लोबान उठाकर अन्नबलि के स्मरणार्थ इस भाग को यहोवा के सम्मुख सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर जलाए।

16 और उसमें से जो शेष रह जाए उसे हारून और उसके पुत्र खाएँ; वह बिना खमीर पवित्रस्थान में खाया जाए, अर्थात् वे मिलापवाले तम्बू के आँगन में उसे खाएँ। (1 ~~22222~~. 9:13)

17 वह खमीर के साथ पकाया न जाए; क्योंकि मैंने अपने हृदय में से उसको उनका निज भाग होने के लिये उन्हें दिया है; इसलिए जैसा पापबलि और दोषबलि परमपवित्र हैं वैसा ही वह भी है।

18 तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में हारून के वंश के सब पुरुष उसमें से खा सकते हैं, यहोवा के हवनों में से यह उनका भाग सदैव बना रहेगा; जो कोई उन हवनों को छूए वह पवित्र ठहरेगा।”

~~2222222 22 222222222~~

19 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

20 “जिस दिन हारून का अभिषेक हो उस दिन वह अपने पुत्रों के साथ यहोवा को यह चढ़ावा चढ़ाए; अर्थात् एपा का दसवाँ भाग मैदा नित्य अन्नबलि में

चढ़ाए, उसमें से आधा भोर को और आधा संध्या के समय चढ़ाए।

21 वह तवे पर तेल के साथ पकाया जाए; जब वह तेल से तर हो जाए तब उसे ले आना, इस अन्नबलि के पके हुए टुकड़े यहोवा के सुखदायक सुगन्ध के लिये चढ़ाना।

22 हारून के पुत्रों में से जो भी उस याजकपद पर अभिषिक्त होगा, वह भी उसी प्रकार का चढ़ावा चढ़ाया करे; यह विधि सदा के लिये है, कि यहोवा के सम्मुख वह सम्पूर्ण चढ़ावा जलाया जाए।

23 याजक के सम्पूर्ण अन्नबलि भी सब जलाए जाएँ; वह कभी न खाया जाए।”

~~22222222~~

24 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

25 “हारून और उसके पुत्रों से यह कह कि पापबलि की व्यवस्था यह है: जिस स्थान में होमबलि पशु वध किया जाता है उसी में पापबलि पशु भी यहोवा के सम्मुख बलि किया जाए; वह परमपवित्र है।

26 जो याजक पापबलि चढ़ाए वह उसे खाए; वह पवित्रस्थान में, अर्थात् मिलापवाले तम्बू के आँगन में खाया जाए। (1 ~~222222~~. 9:13)

27 जो कुछ उसके माँस से छू जाए, वह पवित्र ठहरेगा; और यदि उसके लहू के छींटे किसी वस्त्र पर पड़ जाएँ, तो उसे किसी पवित्रस्थान में धो देना।

28 और वह ~~22222222 22 2222222~~ जिसमें वह पकाया गया हो तोड़ दिया जाए; यदि वह पीतल के पात्र में उबाला गया हो, तो वह माँजा जाए, और जल से धो लिया जाए।

29 याजकों में से सब पुरुष उसे खा सकते हैं; वह परमपवित्र वस्तु है।

30 पर जिस पापबलि पशु के लहू में से कुछ भी लहू मिलापवाले तम्बू के भीतर पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने को पहुँचाया जाए उसका माँस कभी न खाया जाए; वह आग में जला दिया जाए।

## 7

~~22222222~~

1 “फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है। वह परमपवित्र है;

2 जिस स्थान पर होमबलि पशु का वध करते हैं उसी स्थान पर दोषबलि पशु भी बलि करें, और उसके लहू को याजक वेदी पर चारों ओर छिड़के।

\* 6:13 ~~22222 22 22 2222222 22222 2222~~: यह आनवरत उपासना का प्रतीक था जो यहोवा उसकी प्रजा से चाहता था। यह अमूल रूप से उसके चढ़ावों से जुड़ी थी। † 6:28 ~~22222222 22 2222222~~: जो पात्र एक बार पवित्र कर दिया गया वह अन्य किसी काम में नहीं लिया जा सकता था।



3 और वह उसमें की सब चर्बी को चढ़ाए, अर्थात् उसकी मोटी पूँछ को, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं वह भी,

4 और दोनों गुर्दे और जो चर्बी उनके ऊपर और कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली; इन सभी को वह अलग करे;

5 और याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिये हवन करे; तब वह दोषबलि होगा।

6 याजकों में के सब पुरुष उसमें से खा सकते हैं; वह किसी पवित्रस्थान में खाया जाए; क्योंकि वह परमपवित्र है। (1 [22222]. 10:18)

7 जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन दोनों की एक ही व्यवस्था है; जो याजक उन बलियों को चढ़ा के प्रायश्चित्त करे वही उन वस्तुओं को ले ले।

8 और जो याजक किसी के लिये होमबलि को चढ़ाए उस होमबलि पशु की खाल को वही याजक ले ले।

9 और तंदूर में, या कढ़ाही में, या तवे पर पके हुए सब अन्नबलि उसी याजक की होंगी जो उन्हें चढ़ाता है। ([222222]. 2:3,10, [2222]. 18:9, [2222]. 44:29)

10 और सब अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हुए हों चाहे रूखे हों, वे हारून के सब पुत्रों को एक समान मिले।

[2222222]

11 “मेलबलि की जिसे कोई यहोवा के लिये चढ़ाए व्यवस्था यह है:

12 यदि वह उसे धन्यवाद के लिये चढ़ाए, तो धन्यवाद-बलि के साथ तेल से सने हुए अखमीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी रोटियाँ, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर चढ़ाए। ([222222]. 13:15)

13 और वह अपने धन्यवादवाले मेलबलि के साथ अखमीरी रोटियाँ, भी चढ़ाए।

14 और ऐसे एक-एक चढ़ावे में से वह एक-एक रोटी यहोवा को उठाने की भेंट करके चढ़ाए; वह मेलबलि के लहू के छिड़कनेवाले याजक की होगी।

15 और उस धन्यवादवाले मेलबलि का माँस बलिदान चढ़ाने के दिन ही खाया जाए; उसमें से कुछ भी भोर तक शेष न रह जाए। (1 [22222]. 10:18)

16 पर यदि उसके बलिदान का चढ़ावा [222222] [22] [22] [222222222222] [22] [22]\*, तो उस बलिदान को जिस

दिन वह चढ़ाया जाए उसी दिन वह खाया जाए, और उसमें से जो शेष रह जाए वह दूसरे दिन भी खाया जाए।

17 परन्तु जो कुछ बलिदान के माँस में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए।

18 और उसके मेलबलि के माँस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो वह ग्रहण न किया जाएगा, और न उसके हित में गिना जाएगा; वह घृणित कर्म समझा जाएगा, और जो कोई उसमें से खाए उसका अधर्म उसी के सिर पर पड़ेगा।

19 “फिर जो माँस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह न खाया जाए; वह आग में जला दिया जाए। फिर मेलबलि का माँस जितने शुद्ध हों वे ही खाएँ,

20 परन्तु जो अशुद्ध होकर यहोवा के मेलबलि के माँस में से कुछ खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए।

21 और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को छूकर यहोवा के मेलबलि पशु के माँस में से खाए, तो वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए, चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु या अशुद्ध पशु या कोई भी अशुद्ध और घृणित वस्तु हो।”

[22222222] [2222] [22] [2222222]

22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

23 “इस्राएलियों से इस प्रकार कह: तुम लोग न तो बैल की कुछ [22222222] खाना और न भेड़ या बकरी की।

24 और जो पशु स्वयं मर जाए, और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए, उसकी चर्बी और अन्य काम में लाना, परन्तु उसे किसी प्रकार से खाना नहीं।

25 जो कोई ऐसे पशु की चर्बी खाएगा जिसमें से लोग कुछ यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाया करते हैं वह खानेवाला अपने लोगों में से नाश किया जाएगा।

26 और तुम अपने घर में किसी भाँति का लहू, चाहे पक्षी का चाहे पशु का हो, न खाना।

27 हर एक प्राणी जो किसी भाँति का लहू खाएगा वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा।”

28 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

29 “इस्राएलियों से इस प्रकार कह: जो यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ाए वह उसी मेलबलि में से यहोवा के पास भेंट ले आए;

30 वह अपने ही हाथों से यहोवा के [22222222] को, अर्थात् छाती समेत चर्बी को ले आए कि छाती हिलाने की भेंट करके यहोवा के सामने हिलाई जाए।

\* 7:16 [222222] [22] [22] [222222222222] [22] [22]: मन्नत का चढ़ावा मेलबलि प्रतीत होता है जो एक निश्चित शर्त पर शपथ आधारित होता था। स्वेच्छाबलि ईश्वर भक्त हृदय की भेंट जो परमेश्वर और मनुष्य के साथ मेल के आनन्द के निमित्त होती थी, जिसका कोई बाहरी अवसर नहीं था।

† 7:23 [222222]: उपासकों को यहोवा की वेदी पर चढ़ाए गए अपने ही भोजन में से खाना वजित था, न ही जो पुरोहितों का अंश था - (लैव्य 7:33-36) ‡ 7:30 [222222]: यह सामान्य चढ़ावा प्रतीत होता है। अनेक बार इधर-उधर हिलाना।

31 और याजक चर्बी को तो वेदी पर जलाए, परन्तु छाती हारून और उसके पुत्रों की होगी।

32 फिर तुम अपने मेलबलियों में से दाहिनी जाँघ को भी उठाने की भेंट करके याजक को देना;

33 हारून के पुत्रों में से जो मेलबलि के लहू और चर्बी को चढ़ाए दाहिनी जाँघ उसी का भाग होगा।

34 क्योंकि इस्राएलियों के मेलबलियों में से हिलाने की भेंट की छाती और उठाने की भेंट की जाँघ को लेकर मैंने याजक हारून और उसके पुत्रों को दिया है, कि यह सर्वदा इस्राएलियों की ओर से उनका हक बना रहे।

35 “जिस दिन हारून और उसके पुत्र यहोवा के समीप याजकपद के लिये लाए गए, उसी दिन यहोवा के हव्यों में से उनका यही अभिषिक्त भाग ठहराया गया;

36 अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उनका अभिषेक किया उसी दिन उसने आज्ञा दी कि उनको इस्राएलियों की ओर से ये भाग नित्य मिला करें; उनकी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये उनका यही हक ठहराया गया।” (27:13-15)

37 होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों के संस्कार बलि, और मेलबलि की व्यवस्था यही है; (27:16-18)

38 जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या-क्या चढ़ावा चढ़ाएँ, तब उसने उनको यही व्यवस्था दी थी।

## 8

27:13-15 27:16-18 27:19-21 27:22-24 27:25-27 27:28-30

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “तू हारून और उसके पुत्रों के वस्त्रों, और अभिषेक के तेल, और पापबलि के बछड़े, और दोनों मेढों, और अखमीरी रोटी की टोकरी को

3 मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले आ, और वहीं सारी मण्डली को इकट्ठा कर।”

4 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा हुई।

5 तब मूसा ने मण्डली से कहा, “जो काम करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है।”

6 फिर मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को समीप ले जाकर 27:28 27:29 27:30\*।

7 तब उसने उनको अंगरखा पहनाया, और कमरबन्ध लपेटकर बागा पहना दिया, और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पट्टे से एपोद को बाँधकर कस दिया।

8 और उसने चपरास लगाकर चपरास में ऊरीम और तुम्मीम रख दिए।

9 तब उसने उसके सिर पर पगड़ी बाँधकर पगड़ी के सामने सोने के टीके को, अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

10 तब मूसा ने अभिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उसमें था उन सब का भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया।

11 और उस तेल में से कुछ उसने वेदी पर 27:31 27:32 छिड़का, और सम्पूर्ण सामान समेत वेदी का और पाए समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया।

12 और उसने अभिषेक के तेल में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उसका अभिषेक करके उसे पवित्र किया।

13 फिर मूसा ने हारून के पुत्रों को समीप ले आकर, अंगरखे पहनाकर, कमरबन्ध बाँध के उनके सिर पर टोपी रख दी, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

14 तब वह पापबलि के बछड़े को समीप ले गया; और हारून और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ पापबलि के बछड़े के सिर पर रखे।

15 तब वह बलि किया गया, और मूसा ने लहू को लेकर उँगली से 27:33 27:34 27:35 27:36 27:37 27:38 27:39, और लहू को वेदी के पाए पर उण्डेल दिया, और उसके लिये प्रायश्चित्त करके उसको पवित्र किया। (27:40 9:21)

16 और मूसा ने अंतडियों पर की सब चर्बी, और कलेजे पर की झिल्ली, और चर्बी समेत दोनों गुदों को लेकर वेदी पर जलाया।

17 परन्तु बछड़े में से जो कुछ शेष रह गया उसको, अर्थात् गोबर समेत उसकी खाल और माँस को उसने छावनी से बाहर आग में जलाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

18 फिर वह होमबलि के मेढे को समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ मेढे के सिर पर रखे।

19 तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसका लहू वेदी पर चारों ओर छिड़का। (27:41 9:21)

20 तब मेढा टुकड़े-टुकड़े किया गया, और मूसा ने सिर और चर्बी समेत टुकड़ों को जलाया।

21 तब अंतडियाँ और पाँव जल से धोये गए, और मूसा ने पूरे मेढे को वेदी पर जलाया, और वह सुखदायक

\* 8:6 27:28 27:29 27:30: मूसा ने उनका पूर्ण स्नान करवाया, केवल हाथ-पैर नहीं जैसे वे दैनिक सेवा में करते थे। † 8:11 27:31 27:32: होमबलि की वेदी तेल के इस सात गुणा छिड़काव द्वारा पृथक की गई थी। ‡ 8:15 27:33 27:34 27:35 27:36 27:37 27:38 27:39: वेदी अभिषेक के तेल से पवित्र की गई थी जैसे पुरोहितों को पवित्र किया जाता था जो वहाँ सेवा करते थे। अब वह उन्हीं के सदृश्य रक्त से पवित्र की गई थी।

सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

22 फिर वह दूसरे मेढ़े को जो संस्कार का मेढ़ा था समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे।

23 तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसके लहू में से कुछ लेकर हारून के दाहिने कान के सिरे पर और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगूठों पर लगाया।

24 और वह हारून के पुत्रों को समीप ले गया, और लहू में से कुछ एक-एक के दाहिने कान के सिरे पर और दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगूठों पर लगाया; और मूसा ने लहू को वेदी पर चारों ओर छिड़का।

25 और उसने चर्बी, और मोटी पूँछ, और अंतड़ियों पर की सब चर्बी, और कलेजे पर की झिल्ली समेत दोनों गुर्दे, और दाहिनी जाँघ, ये सब लेकर अलग रखे;

26 और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे रखी गई थी उसमें से एक अखमीरी रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक पपड़ी लेकर चर्बी और दाहिनी जाँघ पर रख दी;

27 और ये सब वस्तुएँ हारून और उसके पुत्रों के हाथों पर रख दी गईं, और हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के सामने हिलाई गईं।

28 तब मूसा ने उन्हें फिर उनके हाथों पर से लेकर उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया, यह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये संस्कार की भेंट और यहोवा के लिये हव्य था।

29 तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाया; और संस्कार के मेढ़े में से मूसा का भाग यही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

30 तब मूसा ने अभिषेक के तेल और वेदी पर के लहू, दोनों में से कुछ लेकर हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़का; और उसने वस्त्रों समेत हारून को भी पवित्र किया।

31 तब मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, “माँस को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पकाओ, और उस रोटी को जो संस्कार की टोकरी में है वहीं खाओ, जैसा मैंने आज्ञा दी है कि हारून और उसके पुत्र उसे खाएँ।

32 और माँस और रोटी में से जो शेष रह जाए उसे आग में जला देना।

33 और जब तक तुम्हारे संस्कार के दिन पूरे न हों तब तक, अर्थात् सात दिन तक मिलापवाले तम्बू के द्वार

के बाहर न जाना, क्योंकि वह सात दिन तक तुम्हारा संस्कार करता रहेगा।

34 जिस प्रकार आज किया गया है वैसा ही करने की आज्ञा यहोवा ने दी है, जिससे तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए।

35 इसलिए तुम मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक दिन-रात ठहरे रहना, और यहोवा की आज्ञा को मानना, ताकि तुम मर न जाओ; क्योंकि ऐसी ही आज्ञा मुझे दी गई है।”

36 तब यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उसने मूसा के द्वारा दी थीं हारून और उसके पुत्रों ने किया।

## 9

**2222222 2222222 (222-222222)**

1 आठवें दिन मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को और इस्राएली पुरनियों को बुलवाकर हारून से कहा,

2 “पापबलि के लिये एक निर्दोष बछड़ा, और होमबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा लेकर यहोवा के सामने भेंट चढ़ा।

3 और इस्राएलियों से यह कह, ‘तुम पापबलि के लिये एक बकरा, और होमबलि के लिये एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा लो, जो एक वर्ष के हों और निर्दोष हों,

4 और मेलबलि के लिये यहोवा के सम्मुख चढ़ाने के लिये एक बैल और एक मेढ़ा, और तेल से सने हुए मैदे का एक अन्नबलि भी ले लो; क्योंकि आज यहोवा तुम को दर्शन देगा।”

5 और जिस-जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले तम्बू के आगे ले आए; और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के सामने खड़ी हुई।

6 तब मूसा ने कहा, “यह वह काम है जिसके करने के लिये यहोवा ने आज्ञा दी है कि तुम उसे करो; और यहोवा की महिमा का तेज तुम को दिखाई पड़ेगा।”

7 तब मूसा ने हारून से कहा, “यहोवा की आज्ञा के अनुसार वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ाकर अपने और सब जनता के लिये प्रायश्चित्त कर और जनता के चढ़ावे को भी चढ़ाकर उनके लिये प्रायश्चित्त कर।” **(2222222. 5:3)**

8 इसलिए हारून ने वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि के बछड़े को बलिदान किया।

9 और हारून के पुत्र लहू को उसके पास ले गए, तब उसने अपनी उँगली को लहू में डुबाकर वेदी के सींगों पर लहू को लगाया, और शेष लहू को वेदी के पाए पर उण्डेल दिया;

10 और पापबलि में की चर्बी और गुदों और कलेजे पर की झिल्ली को उसने वेदी पर जलाया, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

11 और माँस और खाल को उसने छावनी से बाहर आग में जलाया।

12 तब होमबलि पशु को बलिदान किया; और हारून के पुत्रों ने लहू को उसके हाथ में दिया, और उसने उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया।

13 तब उन्होंने होमबलि पशु को टुकड़े-टुकड़े करके सिर सहित उसके हाथ में दे दिया और उसने उनको वेदी पर जला दिया।

14 और उसने अंतड़ियों और पाँवों को धोकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया।

15 तब उसने [२२२२२२ २२ २२२२२२२ २२]\* आगे लेकर और उस पापबलि के बकरे को जो उनके लिये था लेकर उसका बलिदान किया, और पहले के समान उसे भी पापबलि करके चढ़ाया।

16 और उसने होमबलि को भी समीप ले जाकर विधि के अनुसार चढ़ाया।

17 और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उसमें से मुट्ठी भर वेदी पर जलाया, यह भोर के होमबलि के अलावा चढ़ाया गया।

18 बैल और मेढा, अर्थात् जो मेलबलि पशु जनता के लिये थे वे भी बलि किए गए; और हारून के पुत्रों ने लहू को उसके हाथ में दिया, और उसने उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया;

19 और उन्होंने बैल की चर्बी को, और मेढे में से मोटी पूँछ को, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं उसको, और गुदों सहित कलेजे पर की झिल्ली को भी उसके हाथ में दिया;

20 और उन्होंने चर्बी को छातियों पर रखा; और उसने वह चर्बी वेदी पर जलाई,

21 परन्तु छातियों और दाहिनी जाँघ को हारून ने मूसा की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के सामने हिलाया।

22 तब हारून ने लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद दिया; और पापबलि, होमबलि, और मेलबलियों को चढ़ाकर वह नीचे उतर आया।

23 तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए, और निकलकर [२२२२२२ २२ २२२२२२२२२ २२२२]; तब यहोवा का तेज सारी जनता को दिखाई दिया।

24 और यहोवा के सामने से आग निकली चर्बी सहित होमबलि को वेदी पर भस्म कर दिया; इसे देखकर जनता ने जय जयकार का नारा लगाया, और अपने-अपने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

## 10

[२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२]

1 तब [२२२२२२ २२ २२२२२२]\* नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना-अपना धूपदान लिया, और उनमें आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस अनुचित आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया।

2 तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए।

3 तब मूसा ने हारून से कहा, “यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे।” और हारून चुप रहा।

4 तब मूसा ने मीशाएल और एलसाफान को जो हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे बुलाकर कहा, “निकट आओ, और अपने भतीजों को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर छावनी के बाहर ले जाओ।”

5 मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उनको अंगरखों सहित उठाकर छावनी के बाहर ले गए।

6 तब मूसा ने हारून से और उसके पुत्र एलीआजर और ईतामार से कहा, “[२२२ २२२ २२२२ २२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२२], और न अपने वस्त्रों को फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम भी मर जाओ, और सारी मण्डली पर उसका क्रोध भड़क उठे; परन्तु इस्राएल के सारे घराने के लोग जो तुम्हारे भाई-बन्धु हैं वह यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें।

7 और तुम लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है।” मूसा के इस वचन के अनुसार उन्होंने किया।

[२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२२२ २२२२]

8 फिर यहोवा ने हारून से कहा,

\* 9:15 [२२२२२ २२ २२२२२२ २२]: प्रधान पुरोहित द्वारा चढ़ाए गए चढ़ावों की इस प्रथम शृंखला में चढ़ावे अपने नियुक्त क्रम में आते हैं। प्रथम पापबलि प्रायश्चित हेतु, होमबलि-यहोवा के अधीन देह-प्राण और आत्मा का समर्पण और अन्त में मेलबलि न्यायोचित एवं पवित्र किए गए लोगों के लिये कृपा पूर्ण सहभागिता को दर्शाने के लिये। † 9:23 [२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२]: विधान के मध्यस्थ एवं प्रधान पुरोहित का संयोजित आशीर्वाद पवित्रीकरण और आरंभ का विधिवत् निष्पादन था। \* 10:1 [२२२२२ २२ २२२२२]: हारून के जेठे पुत्र जो मूसा के साथ सीनै पर्वत पर चढ़नेवालों में थे उन्हें दूर ही से उपासना करनी थी, “परमेश्वर के निकट” नहीं आना था। † 10:6 [२२२ २२२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२२]: उनकी प्रथा में बाल लम्बे रखना या जो सिर पर और मुँह पर बिखराए जाते थे।

9 “जब जब तू या तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में आएँ तब-तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पीए हो न और किसी प्रकार का मद्य, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यह विधि प्रचलित रहे,

10 जिससे तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सको;

11 और इस्राएलियों को उन सब विधियों को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको बता दी है।”

12 फिर मूसा ने हारून से और उसके बचे हुए दोनों पुत्र एलीआजर और ईतामार से भी कहा, “यहोवा के हव्य में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास बिना खमीर खाओ, क्योंकि वह परमपवित्र है;

13 और तुम उसे किसी पवित्रस्थान में खाओ, वह यहोवा के हव्य में से तेरा और तेरे पुत्रों का हक्र है; क्योंकि मैंने ऐसी ही आज्ञा पाई है।

14 तब हिलाई हुई भेंट की छाती और उठाई हुई भेंट की जाँघ को तुम लोग, अर्थात् तू और तेरे बेटे-बेटियाँ सब किसी शुद्ध स्थान में खाओ; क्योंकि वे इस्राएलियों के मेलबलियों में से तुझे और तेरे बच्चों का हक्र ठहरा दी गई हैं।

15 चर्बी के हव्यों समेत जो उठाई हुई जाँघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के सामने हिलाने के लिये आया करेगी, ये भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सर्वदा की विधि की व्यवस्था से तेरे और तेरे बच्चों के लिये हैं।”

16 फिर मूसा ने पापबलि के बकरे की खोजबीन की, तो क्या पाया कि वह जलाया गया है, इसलिए एलीआजर और ईतामार जो हारून के पुत्र बचे थे उनसे वह क्रोध में आकर कहने लगा,

17 “पापबलि जो परमपवित्र है और जिसे यहोवा ने तुम्हें इसलिए दिया है कि तुम मण्डली के अधर्म का भार अपने पर उठाकर उनके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करो, तुम ने उसका माँस पवित्रस्थान में क्यों नहीं खाया?

18 देखो, उसका लहू पवित्रस्थान के भीतर तो लाया ही नहीं गया, निःसन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उसके माँस को पवित्रस्थान में खाते।”

19 इसका उत्तर हारून ने मूसा को इस प्रकार दिया, “देख, आज ही उन्होंने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के सामने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियाँ आ पड़ी हैं! इसलिए यदि मैं आज पापबलि का माँस

खाता तो क्या यह बात यहोवा के सम्मुख भली होती?”

20 जब मूसा ने यह सुना तब उसे संतोष हुआ।

## 11

फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 “इस्राएलियों से कहो: जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभी में से **कुछ न खाना, अर्थात् ऊँट, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिए वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है।** (लैव्यवस्था 9:10)

3 पशुओं में से जितने चिरे या फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो।

4 परन्तु पागुर करनेवाले या फटे खुरवालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात् ऊँट, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिए वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है।

5 और चट्टानी बिज्जू, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है।

6 और खरगोश, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिए वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है।

7 और सूअर, जो चिरे अर्थात् फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिए वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है।

8 इनके माँस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं; ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध है।

फिर जितने जलजन्तु हैं उनमें से तुम इन्हें खा सकते हो,

9 “फिर जितने जलजन्तु हैं उनमें से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात् समुद्र या नदियों के जलजन्तुओं में से जितनों के पंख और चोंयेटे होते हैं उन्हें खा सकते हो।

10 और जलचरी प्राणियों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोंयेटे के समुद्र या नदियों में रहते हैं वे सब तुम्हारे लिये घृणित हैं।

11 वे तुम्हारे लिये घृणित ठहरें; तुम उनके माँस में से कुछ न खाना, और उनकी लोथों को अशुद्ध जानना।

12 जल में जिस किसी जन्तु के पंख और चोंयेटे नहीं होते वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है।

फिर पक्षियों में से इनको अशुद्ध जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाए न जाएँ, अर्थात् उकाब, हडफोड़, कुर,

13 “फिर पक्षियों में से इनको अशुद्ध जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाए न जाएँ, अर्थात् उकाब, हडफोड़, कुर,

14 चील, और भाँति-भाँति के बाज,

15 और भाँति-भाँति के सब काग,

\* 11:2 **कुछ न खाना, अर्थात् ऊँट, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिए वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है।** ये पशु सब प्राणियों में से खाए जा सकते हैं। अर्थात् बड़े पशुओं में चौपाए पक्षियों और रंगनेवालों से भिन्न हैं। उत्प.1:24. चौपायों में से केवल वे जिनके खुर कटे हों और पागुर करते हों।

16 शुतुमुर्ग, तखमास, जलकुक्कट, और भाँति-भाँति के शिकरे,

17 हवासिल, हाडगील, उल्लू,

18 राजहँस, धनेश, गिन्द,

19 सारस, भाँति-भाँति के बगुले, टिटीहरी और चमगादड़।

११:१६-१९

20 “जितने पंखवाले कीड़े चार पाँवों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।

21 पर रेंगनेवाले और पंखवाले जो चार पाँवों के बल चलते हैं, जिनके भूमि पर कूदने फाँदने को टाँगें होती हैं उनको तो खा सकते हो।

22 वे ये हैं, अर्थात् भाँति-भाँति की टिड्डी, भाँति-भाँति के फनगे, भाँति-भाँति के झींगुर, और भाँति-भाँति के टिड्डे।

23 परन्तु और सब रेंगनेवाले पंखवाले जो चार पाँव वाले होते हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।

११:२०-२३

24 “इनके कारण तुम ११:२०-२३† ठहरोगे; जिस किसी से इनकी लोथ छू जाए वह साँझ तक अशुद्ध ठहरे।

25 और जो कोई इनकी लोथ में का कुछ भी उठाए वह अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे। (११:२०-२३: 9:10)

26 फिर जितने पशु चिरे खुर के होते हैं परन्तु न तो बिलकुल फटे खुर और न पागुर करनेवाले हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरेगा।

27 और चार पाँव के बल चलनेवालों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे।

28 और जो कोई उनकी लोथ उठाए वह अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे; क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।

29 “और जो पृथ्वी पर रेंगते हैं उनमें से ये रेंगनेवाले तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, अर्थात् नेवला, चूहा, और भाँति-भाँति के गोह,

30 और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा, और गिरगिट।

31 सब रेंगनेवालों में से ये ही तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई इनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे।

32 और इनमें से किसी की लोथ जिस किसी वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे, चाहे वह काठ का कोई

पात्र हो, चाहे वस्त्र, चाहे खाल, चाहे बोरा, चाहे किसी काम का कैसा ही पात्र आदि क्यों न हो; वह जल में डाला जाए, और साँझ तक अशुद्ध रहे, तब शुद्ध समझा जाए।

33 और यदि मिट्टी का कोई पात्र हो जिसमें इन जन्तुओं में से कोई पड़े, तो उस पात्र में जो कुछ हो वह अशुद्ध ठहरे, और पात्र को तुम तोड़ डालना।

34 उसमें जो खाने के योग्य भोजन हो, जिसमें पानी का छुआव हो वह सब अशुद्ध ठहरे; फिर यदि ऐसे पात्र में पीने के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे।

35 और यदि इनकी लोथ में का कुछ तंदूर या चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध ठहरे, और तोड़ डाला जाए; क्योंकि वह अशुद्ध हो जाएगा, वह तुम्हारे लिये भी अशुद्ध ठहरे।

36 परन्तु सोता या तालाब जिसमें जल इकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे; परन्तु जो कोई इनकी लोथ को छूए वह अशुद्ध ठहरे।

37 और यदि इनकी लोथ में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिये हो पड़े, तो वह बीज शुद्ध रहे;

38 पर यदि बीज पर जल डाला गया हो और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़ जाए, तो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरे।

39 फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दी गई है यदि उनमें से कोई पशु मरे, तो जो कोई उसकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे।

40 और उसकी लोथ में से जो कोई कुछ खाए वह अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई उसकी लोथ उठाए वह भी अपने वस्त्र धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे।

११:२४-२६

41 “सब प्रकार के पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु घिनौने हैं; वे खाए न जाएँ।

42 पृथ्वी पर सब रेंगनेवालों में से जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते हैं, या अधिक पाँव वाले होते हैं, उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे घिनौने हैं।

43 तुम किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा अपने आपको घिनौना न करना; और न उनके द्वारा अपने को अशुद्ध करके अपवित्र ठहराना।

44 क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; इस कारण अपने को शुद्ध करके ११:२४-२६, ११:२४, ११:२४-२६‡। इसलिए तुम किसी प्रकार के

† 11:24 ११:२४: यदि सही समय पर आवश्यक शोधन न किया गया, लापरवाही या भूल जाने के कारण, तो पापबलि चढ़ाना आवश्यक था।

‡ 11:44 ११:४४, ११:४४, ११:४४-४६, ११:४४-४६, ११:४४-४६: पृथक्करण को बनाए रखने का आधार इब्रानियों के लिये यहोवा की विशेष प्रजा होने का आह्वान था कि उन्हें उस वाचा का स्मरण करवाया जाए जो उन्हें संसार की अन्यजातियों से अलग करती थी।

रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आपको अशुद्ध न करना। (1 2:16)

45 क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिए निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; इसलिए तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

46 “पशुओं, पक्षियों, और सब जलचरी प्राणियों, और पृथ्वी पर सब रेंगनेवाले प्राणियों के विषय में यही व्यवस्था है,

47 कि शुद्ध अशुद्ध और भक्ष्य और अभक्ष्य जीवधारियों में भेद किया जाए।”

## 12

2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से कह: जो स्त्री गर्भवती हो और उसके लड़का हो, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जिस प्रकार वह ऋतुमती होकर अशुद्ध रहा करती।

3 और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। (2:59, 2:21, 2:22, 2:23, 2:24, 2:25, 2:26, 2:27, 2:28, 2:29, 2:30, 2:31, 2:32, 2:33, 2:34, 2:35, 2:36, 2:37, 2:38, 2:39, 2:40, 2:41, 2:42, 2:43, 2:44, 2:45, 2:46, 2:47, 2:48, 2:49, 2:50, 2:51, 2:52, 2:53, 2:54, 2:55, 2:56, 2:57, 2:58, 2:59, 2:60, 2:61, 2:62, 2:63, 2:64, 2:65, 2:66, 2:67, 2:68, 2:69, 2:70, 2:71, 2:72, 2:73, 2:74, 2:75, 2:76, 2:77, 2:78, 2:79, 2:80, 2:81, 2:82, 2:83, 2:84, 2:85, 2:86, 2:87, 2:88, 2:89, 2:90, 2:91, 2:92, 2:93, 2:94, 2:95, 2:96, 2:97, 2:98, 2:99, 2:100)

4 फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करनेवाले रूधिर में तैंतीस दिन रहे; और जब तक उसके रूधिर पूरे न हों तब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए, और न पवित्रस्थान में प्रवेश करे।

5 और यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे; और फिर छियासठ दिन तक अपने शुद्ध करनेवाले रूधिर में रहे।

6 “जब उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों, तब चाहे उसके बेटा हुआ हो चाहे बेटा, वह होमबलि के लिये भेड़ का बच्चा, और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा या पिण्डुकी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए। (2:22)

7 तब याजक उसको यहोवा के सामने भेंट चढ़ाकर उसके लिये प्रायश्चित्त करे; और वह अपने रूधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी। जिस स्त्री के लड़का या लड़की उत्पन्न हो उसके लिये यही व्यवस्था है।

8 और यदि उसके पास भेड़ या बकरी देने की पूँजी न हो, तो दो पिण्डुकी या कबूतरी के दो बच्चे, एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे; और याजक

उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी।” (2:24)

## 13

2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 “जब किसी मनुष्य के शरीर के चर्म में सूजन या पपड़ी या दाग हो, और इससे उसके चर्म में कोढ़ की व्याधि के समान कुछ दिखाई पड़े, तो उसे हारून याजक के पास या उसके पुत्र जो याजक हैं, उनमें से किसी के पास ले जाएँ।

3 जब याजक उसके चर्म की व्याधि को देखे, और यदि उस व्याधि चर्म से गहरी दिखाई पड़े, तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है; और याजक उस मनुष्य को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए।

4 पर यदि वह दाग उसके चर्म में उजला तो हो, परन्तु चर्म से गहरा न देख पड़े, और न वहाँ के रोएँ उजले हो गए हों, तो याजक उसको सात दिन तक बन्द करके रखे;

5 और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि जैसी की तैसी बनी रहे और उसके चर्म में न फैली हो, तो याजक उसको और भी सात दिन तक बन्द करके रखे;

6 और सातवें दिन याजक उसको फिर देखे, और यदि देख पड़े कि व्याधि की चमक कम है और व्याधि चर्म पर फैली न हो, तो याजक उसको शुद्ध ठहराए; क्योंकि उसके तो चर्म में पपड़ी है; और वह अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाए।

7 पर यदि याजक की उस जाँच के पश्चात् जिसमें वह शुद्ध ठहराया गया था, वह पपड़ी उसके चर्म पर बहुत फैल जाए, तो वह फिर याजक को दिखाया जाए;

8 और यदि याजक को देख पड़े कि पपड़ी चर्म में फैल गई है, तो वह उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ ही है।

9 “यदि कोढ़ की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो, तो वह याजक के पास पहुँचाया जाए;

10 और याजक उसको देखे, और व्याधि चर्म पर फैली न हो, तो याजक उसको शुद्ध ठहराए; और उसके कारण रोएँ भी उजले हो गए हों, और उस सूजन में बिना चर्म का माँस हो,

\* 12:4 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100 लैव्य विधान विशेष करके माता को अशुद्ध ठहराता था, सन्तान को किसी भी रूप में नहीं। † 12:6 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100 अर्थात् एक वर्ष से अधिक नहीं जबकि “एक वर्ष” का बालक वह था जिसका एक वर्ष पूरा हुआ हो। \* 13:3 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100 कोढ़ के दाग में प्राकृतिक रोएँ उजले हो गए हैं तो वह सदैव ही प्ररूपी माना जाता है। † 13:10 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100 इस प्रकार का लक्षण रोग का अधिक विकसित चर्म है। इस अभिव्यक्ति से प्रगत होता है कि वह एक खुला घाव है।

11 तो याजक जाने कि उसके चर्म में पुराना कोढ़ है, इसलिए वह उसको अशुद्ध ठहराए; और बन्द न रखे, क्योंकि वह तो अशुद्ध है।

12 और यदि कोढ़ किसी के चर्म में फूटकर यहाँ तक फैल जाए, कि जहाँ कहीं याजक देखे रोगी के सिर से पैर के तलवे तक कोढ़ ने सारे चर्म को छा लिया हो,

13 तो याजक ध्यान से देखे, और यदि कोढ़ ने उसके सारे शरीर को छा लिया हो, तो वह उस व्यक्ति को शुद्ध ठहराए; और उसका शरीर जो बिलकुल उजला हो गया है वह शुद्ध ही ठहरे।

14 पर जब उसमें चर्महीन माँस देख पड़े, तब तो वह अशुद्ध ठहरे।

15 और याजक चर्महीन माँस को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वैसा चर्महीन माँस अशुद्ध ही होता है; वह कोढ़ है।

16 पर यदि वह चर्महीन माँस फिर उजला हो जाए, तो वह मनुष्य याजक के पास जाए,

17 और याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि फिर से उजली हो गई हो, तो याजक रोगी को शुद्ध जाने; वह शुद्ध है।

18 “फिर यदि किसी के चर्म में फोड़ा होकर चंगा हो गया हो,

19 और फोड़े के स्थान में उजली सी सूजन या लाली लिये हुए उजला दाग हो, तो वह याजक को दिखाया जाए;

20 और याजक उस सूजन को देखे, और यदि वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, और उसके रोएँ भी उजले हो गए हों, तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है जो फोड़े में से फूटकर निकली है।

21 परन्तु यदि याजक देखे कि उसमें उजले रोएँ नहीं हैं, और वह चर्म से गहरी नहीं, और उसकी चमक कम हुई है, तो याजक उस मनुष्य को सात दिन तक बन्द करके रखे।

22 और यदि वह व्याधि उस समय तक चर्म में सचमुच फैल जाए, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है।

23 परन्तु यदि वह दाग न फैले और अपने स्थान ही पर बना रहे, तो वह फोड़े का दाग है; याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए।

24 “फिर यदि किसी के चर्म में जलने का घाव हो, और उस जलने के घाव में चर्महीन दाग लाली लिये हुए उजला या उजला ही हो जाए,

25 तो याजक उसको देखे, और यदि उस दाग में के रोएँ उजले हो गए हों और वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, तो वह कोढ़ है; जो उस जलने के दाग में से फूट निकला है; याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसमें कोढ़ की व्याधि है।

26 पर यदि याजक देखे, कि दाग में उजले रोएँ नहीं और न वह चर्म से कुछ गहरा है, और उसकी चमक कम हुई है, तो वह उसको सात दिन तक बन्द करके रखे,

27 और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैल गई हो, तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसको कोढ़ की व्याधि है।

28 परन्तु यदि वह दाग चर्म में नहीं फैला और अपने स्थान ही पर जहाँ का तहाँ बना हो, और उसकी चमक कम हुई हो, तो वह जल जाने के कारण सूजा हुआ है, याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; क्योंकि वह दाग जल जाने के कारण से है।

29 “फिर यदि किसी पुरुष या स्त्री के सिर पर, या पुरुष की दाढ़ी में व्याधि हो,

30 तो याजक व्याधि को देखे, और यदि वह चर्म से गहरी देख पड़े, और उसमें भूरे-भूरे पतले बाल हों, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; वह व्याधि सेंहुआ, अर्थात् सिर या दाढ़ी का कोढ़ है।

31 और यदि याजक सेंहुएँ की व्याधि को देखे, कि वह चर्म से गहरी नहीं है और उसमें काले-काले बाल नहीं हैं, तो वह सेंहुएँ के रोगी को सात दिन तक बन्द करके रखे,

32 और सातवें दिन याजक व्याधि को देखे, तब यदि वह सेंहुआ फैला न हो, और उसमें भूरे-भूरे बाल न हों, और सेंहुआ चर्म से गहरा न देख पड़े,

33 तो यह मनुष्य मुँडा जाए, परन्तु जहाँ सेंहुआ हो वहाँ न मुँडा जाए; और याजक उस सेंहुएँ वाले को और भी सात दिन तक बन्द करे;

34 और सातवें दिन याजक सेंहुएँ को देखे, और यदि वह सेंहुआ चर्म में फैला न हो और चर्म से गहरा न देख पड़े, तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; और वह अपने वस्त्र धोकर शुद्ध ठहरे।

35 पर यदि उसके शुद्ध ठहरने के पश्चात् सेंहुआ चर्म में कुछ भी फैले,

36 तो याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैला हो, तो याजक भूरे बाल न ढूँढे, क्योंकि वह मनुष्य अशुद्ध है।

37 परन्तु यदि उसकी दृष्टि में वह सेंहुआ जैसे का तैसा बना हो, और उसमें काले-काले बाल जमे हों, तो







29 और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करने को उसके सिर पर डाल दे।

30 तब वह पंडुक या कबूतरी के बच्चों में से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए,

31 अर्थात् जो पक्षी वह ला सका हो, उनमें से वह एक को पापबलि के लिये और अन्नबलि समेत दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए; इस रीति से याजक शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे।

32 जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो, और उसके इतनी पूँजी न हो कि वह शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके, तो उसके लिये यही व्यवस्था है।” (२२: 1:44, २२:२२ 5:14, २२:२२ 8:4)

२२ २२२ २२२ २२२२२२ २२ २२२२ २२२२

33 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

34 “जब तुम लोग कनान देश में पहुँचो, जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिये तुम्हें देता हूँ, उस समय यदि मैं कोढ़ की व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर में दिखाऊँ,

35 तो जिसका वह घर हो वह आकर याजक को बता दे कि मुझे ऐसा देख पड़ता है कि घर में मानो कोई व्याधि है।

36 तब याजक आज्ञा दे कि उस घर में व्याधि देखने के लिये मेरे जाने से पहले उसे खाली करो, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे; और इसके बाद याजक घर देखने को भीतर जाए।

37 तब वह उस व्याधि को देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर हरी-हरी या लाल-लाल मानो खुदी हुई लकीरों के रूप में हो, और ये लकीरें दीवार में गहरी देख पड़ती हों,

38 तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर को सात दिन तक बन्द कर रखे।

39 और सातवें दिन याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर फैल गई हो,

40 तो याजक आज्ञा दे कि जिन पत्थरों को व्याधि है उन्हें निकालकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में फेंक दें;

41 और वह घर के भीतर ही भीतर चारों ओर खुरचवाए, और वह खुरचन की मिट्टी नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाए;

42 और उन पत्थरों के स्थान में और दूसरे पत्थर लेकर लगाएँ और याजक ताजा गारा लेकर घर की जुड़ाई करे।

43 “यदि पत्थरों के निकाले जाने और घर के खुरचे और पुताई जाने के बाद वह व्याधि फिर घर में फूट निकले,

44 तो याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है; वह अशुद्ध है।

45 और वह सब गारे समेत पत्थर, लकड़ी और घर को खुदवाकर गिरा दे; और उन सब वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फिकवा दे।

46 और जब तक वह घर बन्द रहे तब तक यदि कोई उसमें जाए तो वह साँझ तक अशुद्ध रहे;

47 और जो कोई उस घर में सोए वह अपने वस्त्रों को धोए; और जो कोई उस घर में खाना खाए वह भी अपने वस्त्रों को धोए।

48 “पर यदि याजक आकर देखे कि जब से घर लेसा गया है तब से उसमें व्याधि नहीं फैली है, तो यह जानकर कि वह व्याधि दूर हो गई है, घर को शुद्ध ठहराए।

49 और उस घर को पवित्र करने के लिये दो पक्षी, देवदार की लकड़ी, लाल रंग का कपड़ा और जूफा लाए,

50 और एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलिदान करे,

51 तब वह देवदार की लकड़ी, लाल रंग के कपड़े और जूफा और जीवित पक्षी इन सभी को लेकर बलिदान किए हुए पक्षी के लहू में और बहते हुए जल में डुबा दे, और उस घर पर सात बार छिड़के।

52 इस प्रकार वह पक्षी के लहू, और बहते हुए जल, और जीवित पक्षी, और देवदार की लकड़ी, और जूफा और लाल रंग के कपड़े के द्वारा घर को पवित्र करे;

53 तब वह जीवित पक्षी को नगर से बाहर मैदान में छोड़ दे; इसी रीति से वह घर के लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा।”

54 सब भाँति के कोढ़ की व्याधि, और सेंहुएँ,

55 और वस्त्र, और घर के कोढ़,

56 और सूजन, और पपड़ी, और दाग के विषय में,

57 शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की शिक्षा देने की व्यवस्था यही है। सब प्रकार के कोढ़ की व्यवस्था यही है।

## 15

२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२२२ २२२२२

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 “इस्राएलियों से कहो कि जिस-जिस पुरुष के प्रमेह हो, तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध ठहरे।

3 वह चाहे बहता रहे, चाहे बहना बन्द भी हो, तो भी उसकी अशुद्धता बनी रहेगी।





मिलापवाले तम्बू में न रहे।

18 फिर वह निकलकर उस वेदी के पास जो यहोवा के सामने है जाए और उसके लिये प्रायश्चित्त करे, अर्थात् बछड़े के लहू और बकरे के लहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए।

19 और उस लहू में से कुछ अपनी उँगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़ककर उसे इस्राएलियों की भाँति-भाँति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे।

?????????? ?? ?????

20 “जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुके, तब जीवित बकरे को आगे ले आए;

21 और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेजकर छुड़ा दे। (?????? 10:4)

22 वह बकरा उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निर्जन देश में उठा ले जाएगा; इसलिए वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे।

23 “तब हारून मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी के वस्त्रों को पहने हुए उसने अति पवित्रस्थान में प्रवेश किया था उन्हें उतारकर वहीं पर रख दे।

24 फिर वह किसी पवित्रस्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहन ले, और बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर अपने और जनता के लिये प्रायश्चित्त करे।

25 और पापबलि की चर्बी को वह वेदी पर जलाए।

26 और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल के लिये छोड़कर आए वह भी अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे।

27 और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिनका लहू पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने के लिये पहुँचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुँचाए जाएँ; और उनका चमड़ा, माँस, और गोबर आग में जला दिया जाए।

28 और जो उनको जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश करने पाए।

???? ?? ?????????????????? ?? ????? ?????

\* 17:4 ?????????????????? ?????????? उस पर रक्तपात का दोष होगा अर्थात् उसने वह नियम विरोधी रक्तपात का दोषी ठहरेगा।

29 “तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम उपवास करना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहनेवाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम-काज न करे;

30 क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे।

31 यह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन उपवास करना और किसी प्रकार का काम-काज न करना; यह सदा की विधि है।

32 और जिसका अपने पिता के स्थान पर याजकपद के लिये अभिषेक और संस्कार किया जाए वह याजक प्रायश्चित्त किया करे, अर्थात् वह सनी के पवित्र वस्त्रों को पहनकर,

33 पवित्रस्थान, और मिलापवाले तम्बू, और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे; और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिये भी प्रायश्चित्त करे।

34 और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि होगी, कि इस्राएलियों के लिये प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए।” यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी, हारून ने किया।

## 17

?????????? ?? ?????

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “हारून और उसके पुत्रों से और सब इस्राएलियों से कह कि यहोवा ने यह आज्ञा दी है:

3 इस्राएल के घराने में से कोई मनुष्य हो जो बैल या भेड़ के बच्चे, या बकरी को, चाहे छावनी में चाहे छावनी से बाहर घात करके

4 मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के निवास के सामने यहोवा को चढ़ाने के निमित्त न ले जाए, तो उस मनुष्य को लहू बहाने का दोष लगेगा; और वह मनुष्य जो ????? ?????????????????? ??????????\*, वह अपने लोगों के बीच से नष्ट किया जाए।

5 इस विधि का यह कारण है कि इस्राएली अपने बलिदान जिनको वे खुले मैदान में वध करते हैं, वे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास, यहोवा के लिये ले जाकर उसी के लिये मेलबलि करके बलिदान किया करें;

6 और याजक लहू को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा की वेदी के ऊपर छिड़के, और चर्बी को उसके सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए।

7 वे जो बकरों के पूजक होकर व्यभिचार करते हैं, वे फिर अपने बलिपशुओं को उनके लिये बलिदान न करें। तुम्हारी पीढ़ियों के लिये यह सदा की विधि होगी।

8 “तू उनसे कह कि इस्राएल के घराने के लोगों में से या उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो होमबलि या मेलबलि चढ़ाए,

9 और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के लिये चढ़ाने को न ले आए; वह मनुष्य अपने लोगों में से नष्ट किया जाए।

10 “फिर इस्राएल के घराने के लोगों में से या उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो

खानेवाले के विमुख होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नष्ट कर डालूँगा।

11 क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैंने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के लिए लहू ही से प्रायश्चित्त होता है। (19:22-24. 9:22)

12 इस कारण मैं इस्राएलियों से कहता हूँ कि तुम में से कोई प्राणी लहू न खाए, और जो परदेशी तुम्हारे बीच रहता हो वह भी लहू कभी न खाए।”

13 “इस्राएलियों में से या उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई मनुष्य क्यों न हो, जो शिकार करके खाने के योग्य पशु या पक्षी को पकड़े, वह उसके लहू को उण्डेलकर धूलि से ढाँप दे।

14 क्योंकि शरीर का प्राण जो है वह उसका लहू ही है जो उसके प्राण के साथ एक है; इसलिए मैं इस्राएलियों से कहता हूँ कि किसी प्रकार के प्राणी के लहू को तुम न खाना, क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उनका लहू ही है; जो कोई उसको खाए वह नष्ट किया जाएगा। (22:27-29. 15:20-29)

15 और चाहे वह देशी हो या परदेशी हो, जो कोई किसी पशु का माँस खाए वह

अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे; तब वह शुद्ध होगा।

16 परन्तु यदि वह उनको न धोए और न स्नान करे, तो उसको अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा।”

## 18

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से कह कि

3 तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार, जिसमें तुम रहते थे, न करना; और कनान देश के कामों के अनुसार भी, जहाँ मैं तुम्हें ले चलता हूँ, न करना; और न उन देशों की विधियों पर चलना।

4 मेरे ही नियमों को मानना, और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

5 इसलिए तुम निरन्तर मानना; जो मनुष्य उनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा। मैं यहोवा हूँ। (19:22-24. 19:17, 20:28, 7:10, 10:5, 3:12)

6 “तुम में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिनी का तन उघाड़ने को उसके पास न जाए। मैं यहोवा हूँ।

7 अपनी माता का तन, जो तुम्हारे पिता का तन है, न उघाड़ना; वह तो तुम्हारी माता है, इसलिए तुम उसका तन न उघाड़ना।

8 अपनी सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे पिता ही का तन है। (19:22-24. 5:1)

9 अपनी बहन चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो, चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर, उसका तन न उघाड़ना।

10 अपनी पोती या अपनी नातिन का तन न उघाड़ना, उनकी देह तो मानो तुम्हारी ही है।

11 तुम्हारी सौतेली बहन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई, वह तुम्हारी बहन है, इस कारण उसका तन न उघाड़ना।

12 अपनी फूफी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिनी है।

13 अपनी मौसी का तन न उघाड़ना; क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिनी है।

† 17:10 इस गद्यांश में निषेध के दो पृथक आधार दिए गए हैं। (1) जीवनदायक द्रव्य की उसकी प्रकृति (2) बलि चढ़ाने की उपासना में उसका अभिषेक। ‡ 17:15 यह नियम उस तथ्य पर आधारित है जिसमें वन पशु द्वारा मारा गया पशु या जो स्वयं मर गया हो उसमें अब भी रक्त रह गया है। \* 18:2 विधान के इन अंशों में इस चेतावनी का बार बार दोहराया जाने का उद्देश्य था कि इस्राएली परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को जीवन के सामान्य कामों में भी संजोए रखें।

† 18:5 जो मनुष्य “नियमों” का पालन करता है वह सच्चा जीवन पाएगा। ऐसा जीवन जो उसे आज्ञाकारिता के द्वारा यहोवा से जोड़ता है।







2 “इस्राएलियों से कह कि इस्राएलियों में से, या इस्राएलियों के बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई क्यों न हो, जो अपनी कोई सन्तान **[22:22]**\* को बलिदान करे वह निश्चय मार डाला जाए; और जनता उसको पथरवाह करे।

3 मैं भी उस मनुष्य के विरुद्ध होकर, उसको उसके लोगों में से इस कारण नाश करूँगा, कि उसने अपनी सन्तान मोलेक को देकर मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया।

4 और यदि कोई अपनी सन्तान मोलेक को बलिदान करे, और जनता उसके विषय में आनाकानी करे, और उसको मार न डाले,

5 तब तो मैं स्वयं उस मनुष्य और उसके घराने के विरुद्ध होकर उसको और जितने उसके पीछे होकर मोलेक के साथ व्यभिचार करें उन सभी को भी उनके लोगों के बीच में से नाश करूँगा।

6 “फिर जो मनुष्य ओझाओं या भूत साधनेवालों की ओर फिरके, और उनके पीछे होकर व्यभिचारी बने, तब मैं उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नाश कर दूँगा।

7 इसलिए तुम अपने आपको पवित्र करो; और पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। **(1 [22]:16)**

8 और तुम मेरी विधियों को मानना, और उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।

**[22:22] [22] [22] [22]**

9 “कोई क्यों न हो, जो अपने पिता या माता को श्राप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उसने अपने पिता या माता को श्राप दिया है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा। **([22:22] 15:4, [22]: 7:10)**

10 फिर यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे, तो जिसने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिणी दोनों निश्चय मार डालें जाएँ। **([22:22]: 8:5)**

11 यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए, वह अपने पिता ही का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; इसलिए वे दोनों निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।

12 यदि कोई अपनी बहू के साथ सोए, तो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएँ; क्योंकि वे उलटा काम करनेवाले ठहरेंगे, और उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।

13 यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष से प्रसंग करे, तो वे दोनों घिनौना काम करनेवाले ठहरेंगे;

इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। **([22:22]: 1:27)**

14 यदि कोई अपनी पत्नी और अपनी सास दोनों को रखे, तो यह महापाप है; इसलिए वह पुरुष और वे स्त्रियाँ तीनों के तीनों आग में जलाए जाएँ, जिससे तुम्हारे बीच महापाप न हो।

15 फिर यदि कोई पुरुष पशुगामी हो, तो पुरुष और पशु दोनों निश्चय मार डाले जाएँ।

16 यदि कोई स्त्री पशु के पास जाकर उसके संग कुकर्म करे, तो तू उस स्त्री और पशु दोनों को घात करना; वे निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।

17 “यदि कोई अपनी बहन का, चाहे उसकी सगी बहन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन देखे, और उसकी बहन भी उसका नग्न तन देखे तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जातिभाइयों की आँखों के सामने नाश किए जाएँ; क्योंकि जो अपनी बहन का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा उसे अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा।

18 फिर यदि कोई पुरुष किसी ऋतुमती स्त्री के संग सोकर उसका तन उघाड़े, तो वह पुरुष उसके रूधिर के सोते का उघाड़नेवाला ठहरेगा, और वह स्त्री अपने रूधिर के सोते की उघाड़नेवाली ठहरेगी; इस कारण वे दोनों अपने लोगों के बीच में से नाश किए जाएँ।

19 अपनी मौसी या फूफी का तन न उघाड़ना, क्योंकि जो उसे उघाड़े वह अपनी निकट कुटुम्बिनी को नंगा करता है; इसलिए इन दोनों को अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा।

20 यदि कोई अपनी चाची के संग सोए, तो वह अपने चाचा का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; इसलिए वे दोनों अपने पाप के भार को उठाए हुए निर्वंश मर जाएँगे।

21 यदि कोई अपनी भाभी को अपनी पत्नी बनाए, तो इसे घिनौना काम जानना; और वह अपने भाई का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा, इस कारण वे दोनों निःसन्तान रहेंगे। **([22:22] 14:3,4)**

22 “तुम मेरी सब विधियों और मेरे सब नियमों को समझ के साथ मानना; जिससे यह न हो कि जिस देश में मैं तुम्हें लिये जा रहा हूँ वह तुम को उगल दे।

23 और जिस जाति के लोगों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ उनकी रीति-रस्म पर न चलना; क्योंकि उन लोगों ने जो ये सब कुकर्म किए हैं, इसी कारण मुझे उनसे घृणा हो गई है।

24 पर मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि तुम तो उनकी भूमि के अधिकारी होंगे, और मैं इस देश को जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं तुम्हारे अधिकार में





यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो, उसमें कोई भी दोष न हो।

22 जो अंधा या अंग का टूटा या लूला हो, अथवा उसमें रसौली या खौरा या खुजली हो, ऐसों को यहोवा के लिये न चढ़ाना, उनको वेदी पर यहोवा के लिये हव्य न चढ़ाना।

23 जिस किसी बैल या भेड़ या बकरे का कोई अंग अधिक या कम हो उसको स्वेच्छाबलि के लिये चढ़ा सकते हो, परन्तु मन्नत पूरी करने के लिये वह ग्रहण न होगा।

24 जिसके अण्ड दबे या कुचले या टूटे या कट गए हों उसको यहोवा के लिये न चढ़ाना, और अपने देश में भी ऐसा काम न करना।

25 फिर इनमें से किसी को तुम अपने परमेश्वर का भोजन जानकर किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाओ; क्योंकि उनमें दोष और कलंक है, इसलिए वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे।”

26 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

27 “जब बछड़ा या भेड़ या बकरी का बच्चा उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक अपनी माँ के साथ रहे; फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्य चढ़ावे के लिये ग्रहणयोग्य ठहरेगा।

28 चाहे गाय, चाहे भेड़ी या बकरी हो, उसको और उसके बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना।

29 और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद का मेलबलि चढ़ाओ, तो उसे इसी प्रकार से करना जिससे वह ग्रहणयोग्य ठहरे।

30 वह उसी दिन खाया जाए, उसमें से कुछ भी सवेरे तक रहने न पाए; मैं यहोवा हूँ।

31 “इसलिए तुम मेरी आज्ञाओं को मानना और उनका पालन करना; मैं यहोवा हूँ।

32 और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना, क्योंकि मैं इस्राएलियों के बीच अवश्य ही पवित्र माना जाऊँगा; मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ,

33 जो तुम को मिस्र देश से निकाल लाया है जिससे तुम्हारा परमेश्वर बना रहूँ; मैं यहोवा हूँ।”

## 23

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

\* 23:2 इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उसमें के खेत काटो, तब अपने-अपने पके खेत की पहली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना; † 23:3 और उसका पालन करना; मैं यहोवा हूँ।

2 “इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उसमें के खेत काटो, तब अपने-अपने पके खेत की पहली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना; और उसका पालन करना; मैं यहोवा हूँ।”

3 “छः दिन काम-काज किया जाए, पर सातवाँ दिन

रिज्जत का और पवित्र सभा का दिन है; उसमें किसी प्रकार का काम-काज न किया जाए; वह तुम्हारे सब घरों में यहोवा का विश्रामदिन ठहरे।

4 “फिर यहोवा के पर्व जिनमें से एक-एक के ठहराये

हुए समय में तुम्हें पवित्र सभा करने के लिये प्रचार करना होगा वे ये हैं।

5 पहले महीने के चौदहवें दिन को साँझ के समय यहोवा का फसह हुआ करे।

6 और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा के लिये अखमीरी रोटी का पर्व हुआ करे; उसमें तुम सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना।

7 उनमें से पहले दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना।

8 और सातों दिन तुम यहोवा को हव्य चढ़ाया करना; और सातवें दिन पवित्र सभा हो; उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना।”

9 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

10 “इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उसमें के खेत काटो, तब अपने-अपने पके खेत की पहली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना;

11 और वह उस पूले को यहोवा के सामने हिलाए कि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए; वह उसे विश्रामदिन के अगले दिन हिलाए।

12 और जिस दिन तुम पूले को हिलवाओ उसी दिन एक वर्ष का निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना।

13 और उसके साथ का अन्नबलि एपा के दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैदे का हो वह सुखदायक सुगन्ध के लिये यहोवा का हव्य हो; और उसके साथ का अर्घ हीन भर की चौथाई दाखमधु हो।

14 और जब तक तुम इस चढ़ावे को अपने परमेश्वर के पास न ले जाओ, उस दिन तक नये खेत में से न तो रोटी खाना और न भूना हुआ अन्न और न हरी बालें;

यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरानों में सदा की विधि ठहरे।

११-११-११-११-११ ११ ११-११-११

15 “फिर उस विश्रामदिन के दूसरे दिन से, अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई जानेवाली भेंट के पूले को लाओगे, उस दिन से पूरे सात विश्रामदिन गिन लेना;

16 सातवें विश्रामदिन के अगले दिन तक पचास दिन गिनना, और पचासवें दिन यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाना।

17 तुम अपने घरों में से एपा के दो दसवें अंश मैदे की दो रोटियाँ हिलाने की भेंट के लिये ले आना; वे खमीर के साथ पकाई जाएँ, और यहोवा के लिये पहली उपज ठहरें।

18 और उस रोटि के संग एक-एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक बछड़ा, और दो मेढे चढ़ाना; वे अपने-अपने साथ के अन्नबलि और अर्घ समेत यहोवा के लिये होमबलि के समान चढ़ाए जाएँ, अर्थात् वे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य ठहरें।

19 फिर पापबलि के लिये एक बकरा, और मेलबलि के लिये एक-एक वर्ष के दो भेड़ के बच्चे चढ़ाना।

20 तब याजक उनको पहली उपज की रोटि समेत यहोवा के सामने हिलाने की भेंट के लिये हिलाए, और इन रोटियों के संग वे दो भेड़ के बच्चे भी हिलाए जाएँ; वे यहोवा के लिये पवित्र, और याजक का भाग ठहरें।

21 और तुम उस दिन यह प्रचार करना, कि आज हमारी एक पवित्र सभा होगी; और परिश्रम का कोई काम न करना; यह तुम्हारे सारे घरानों में तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे। (११-११-११-११-११ 2:1, 1 ११-११-११-११-११ 16:8)

22 “जब तुम अपने देश में के खेत काटो, तब अपने खेत के कोनों को पूरी रीति से न काटना, और खेत में गिरी हुई बालों को न इकट्ठा करना; उसे गरीब और परदेशी के लिये छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

११-११-११-११-११ ११ ११-११-११

23 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

24 “इस्राएलियों से कह कि सातवें महीने के पहले दिन को तुम्हारे लिये परमविश्राम हो; उस दिन को स्मरण दिलाने के लिये नरसिंगे फूँके जाएँ, और एक पवित्र सभा इकट्ठी हो।

25 उस दिन तुम परिश्रम का कोई काम न करना, और यहोवा के लिये एक हव्य चढ़ाना।”

११-११-११-११-११ ११ ११-११-११

26 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

27 “उसी सातवें महीने का दसवाँ दिन प्रायश्चित का दिन माना जाए; वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन होगा, और उसमें तुम उपवास करना और यहोवा का हव्य चढ़ाना।

28 उस दिन तुम किसी प्रकार का काम-काज न करना; क्योंकि वह प्रायश्चित का दिन नियुक्त किया गया है जिसमें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने तुम्हारे लिये प्रायश्चित किया जाएगा।

29 इसलिए जो मनुष्य उस दिन उपवास न करे वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। (११-११-११-११-११ 3:23)

30 और जो मनुष्य उस दिन किसी प्रकार का काम-काज करे उस मनुष्य को मैं उसके लोगों के बीच में से नाश कर डालूँगा।

31 तुम किसी प्रकार का काम-काज न करना; यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे घराने में सदा की विधि ठहरे।

32 वह दिन तुम्हारे लिये परमविश्राम का हो, उसमें तुम उपवास करना; और उस महीने के नवें दिन की साँझ से अगली साँझ तक अपना विश्रामदिन माना करना।”

११-११-११-११-११ ११ ११-११-११

33 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

34 “इस्राएलियों से कह कि उसी सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन तक यहोवा के लिये झोपड़ियों का पर्व रहा करे। (११-११-११ 7:2)

35 पहले दिन पवित्र सभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना।

36 सातों दिन यहोवा के लिये हव्य चढ़ाया करना, फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो, और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना; वह महासभा का दिन है, और उसमें परिश्रम का कोई काम न करना। (११-११-११ 7:37)

37 “यहोवा के नियत पर्व ये ही हैं, इनमें तुम यहोवा को हव्य चढ़ाना, अर्थात् होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, और अर्घ, प्रत्येक अपने-अपने नियत समय पर चढ़ाया जाए और पवित्र सभा का प्रचार करना।

38 इन सभी से अधिक यहोवा के विश्रामदिनों को मानना, और अपनी भेंटों, और सब मन्त्रों, और स्वेच्छाबलियों को जो यहोवा को अर्पण करोगे चढ़ाया करना।

39 “फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को, जब तुम देश की उपज को इकट्ठा कर चुको, तब सात दिन तक यहोवा का पर्व मानना; पहले दिन परमविश्राम हो, और आठवें दिन परमविश्राम हो।

40 और पहले दिन तुम अच्छे-अच्छे वृक्षों की उपज, और खजूर के पत्ते, और घने वृक्षों की डालियाँ, और नदी

में के मजनू को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा के सामने सात दिन तक आनन्द करना।

41 प्रतिवर्ष सात दिन तक यहोवा के लिये पर्व माना करना; यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे, कि सातवें महीने में यह पर्व माना जाए।

42 सात दिन तक तुम **23:42** में रहा करना, अर्थात् जितने जन्म के इस्राएली हैं वे सब के सब झोपड़ियों में रहें,

43 “इसलिए कि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लोग जान रखें, कि जब यहोवा हम इस्राएलियों को मिस्र देश से निकालकर ला रहा था तब उसने उनको झोपड़ियों में टिकाया था; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

44 और मूसा ने इस्राएलियों को यहोवा के पर्व के नियत समय कह सुनाए।

## 24

**24:1**

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों को यह आज्ञा दे कि मेरे पास उजियाला देने के लिये कूट के निकाला हुआ जैतून का निर्मल तेल ले आना, कि **24:2**”

3 हारून उसको, मिलापवाले तम्बू में, साक्षीपत्र के बीचवाले पर्दे से बाहर, यहोवा के सामने नित्य साँझ से भोर तक सजा कर रखे; यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे।

4 वह दीपकों को सोने की दीवट पर यहोवा के सामने नित्य सजाया करे।

**24:5**

5 “तू मैदा लेकर बारह रोटियाँ पकवाना, प्रत्येक रोटी में एपा का दो दसवाँ अंश मैदा हो।

6 तब उनकी दो पंक्तियाँ करके, एक-एक पंक्ति में छः छः रोटियाँ, स्वच्छ मेज पर यहोवा के सामने रखना।

7 और एक-एक पंक्ति पर **24:7** रखना कि वह रोटी स्मरण दिलानेवाली वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो।

8 प्रति विश्रामदिन को वह उसे नित्य यहोवा के सम्मुख क्रम से रखा करे, यह सदा की वाचा की रीति इस्राएलियों की ओर से हुआ करे।

9 और वह हारून और उसके पुत्रों की होंगी, और वे उसको किसी पवित्रस्थान में खाएँ, क्योंकि वह यहोवा

के हव्यों में से सदा की विधि के अनुसार हारून के लिये परमपवित्र वस्तु ठहरी है।”

**24:10**

10 उन दिनों में किसी इस्राएली स्त्री का बेटा, जिसका पिता मिस्री पुरुष था, इस्राएलियों के बीच चला गया; और वह इस्राएली स्त्री का बेटा और एक इस्राएली पुरुष छावनी के बीच आपस में मारपीट करने लगे,

11 और वह इस्राएली स्त्री का बेटा यहोवा के नाम की निन्दा करके श्राप देने लगा। यह सुनकर लोग उसको मूसा के पास ले गए। उसकी माता का नाम शलोमीत था, जो दान के गोत्र के दिब्री की बेटा थी।

12 उन्होंने उसको हवालात में बन्द किया, जिससे यहोवा की आज्ञा से इस बात पर विचार किया जाए।

13 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

14 “तुम लोग उस श्राप देनेवाले को छावनी से बाहर ले जाओ; और जितनों ने वह निन्दा सुनी हो वे सब **24:14**, तब सारी मण्डली के लोग उस पर पथराव करें।

15 और तू इस्राएलियों से कह कि कोई क्यों न हो, जो अपने परमेश्वर को श्राप दे उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा।

16 यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय उस पर पथराव करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई यहोवा के नाम की निन्दा करें तो वह मार डाला जाए।

17 “फिर जो कोई किसी मनुष्य को जान से मारे वह निश्चय मार डाला जाए। (**24:17** 5:21)

18 और जो कोई किसी घरेलू पशु को जान से मारे वह उसका बदला दे, अर्थात् प्राणी के बदले प्राणी दे।

19 “फिर यदि कोई किसी दूसरे को चोट पहुँचाए, तो जैसा उसने किया हो वैसा ही उसके साथ भी किया जाए,

20 अर्थात् अंग-भंग करने के बदले अंग-भंग किया जाए, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, जैसी चोट जिसने किसी को पहुँचाई हो वैसी ही उसको भी पहुँचाई जाए। (**24:20** 5:38)

21 पशु का मार डालनेवाला उसका बदला दे, परन्तु मनुष्य का मार डालनेवाला मार डाला जाए।

22 तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

‡ 23:42 **23:42**: यहूदी परम्परा के अनुसार झोपड़ियों के त्योंहार में फूस की झोपड़ियों में रहना। \* 24:2 **24:2**: एक स्मृति के रूप में लोबान, वेदी की आग पर सबसे अधिक सम्भावना है “परमेश्वर के लिए आग द्वारा चढ़ाया गया एक भेंट था। † 24:7 **24:7**: एक स्मृति के रूप में लोबान, वेदी की आग पर सबसे अधिक सम्भावना है “परमेश्वर के लिए आग द्वारा चढ़ाया गया एक भेंट था। ‡ 24:14 **24:14**: अपराधी की अधार्मिकता के विरुद्ध, प्रतीक रूप में उसके सिर पर दोष डालना।

23 अतः मूसा ने इस्राएलियों को यह समझाया; तब उन्होंने उस श्राप देनेवाले को छावनी से बाहर ले जाकर उस पर पथराव किया। और इस्राएलियों ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

## 25

१११११ ११ १११११ ११११११११ ११ १११११

1 फिर यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से कह कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जो मैं तुम्हें देता हूँ, तब भूमि को यहोवा के लिये विश्राम मिला करे।

3 छः वर्ष तो अपना-अपना खेत बोया करना, और छहों वर्ष अपनी-अपनी दाख की बारी छाँट छाँटकर देश की उपज इकट्ठी किया करना;

4 परन्तु सातवें वर्ष भूमि को यहोवा के लिये १११११११११११११११११ १११११ १११११\*; उसमें न तो अपना खेत बोना और न अपनी दाख की बारी छाँटना।

5 जो कुछ काटे हुए खेत में अपने आप से उगें उसे न काटना, और अपनी बिन छाँटी हुई दाखलता की दाखों को न तोड़ना; क्योंकि वह भूमि के लिये परमविश्राम का वर्ष होगा।

6 भूमि के विश्रामकाल ही की उपज से तुम को, और तुम्हारे दास-दासी को, और तुम्हारे साथ रहनेवाले मजदूरों और परदेशियों को भी भोजन मिलेगा;

7 और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु हों उनका भी भोजन भूमि की सब उपज से होगा।

११११११ ११ १११११

8 “सात विश्रामवर्ष, अर्थात् सातगुना सात वर्ष गिन लेना, सातों विश्रामवर्षों का यह समय उनचास वर्ष होगा।

9 तब सातवें महीने के दसवें दिन को, अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन, जय जयकार के महाशब्द का नरसिंगा अपने सारे देश में सब कहीं फूँकवाना।

10 और उस १११११११११ १११११† को पवित्र करके मानना, और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष तुम्हारे यहाँ जुबली कहलाए; उसमें तुम अपनी-अपनी निज भूमि और अपने-अपने घराने में लौटने पाओगे।

11 तुम्हारे यहाँ वह पचासवाँ वर्ष जुबली का वर्ष कहलाए; उसमें तुम न बोना, और जो अपने आप उगें उसे भी न काटना, और न बिन छाँटी हुई दाखलता की दाखों को तोड़ना।

12 क्योंकि वह तो जुबली का वर्ष होगा; वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा; तुम उसकी उपज खेत ही में से ले लेकर खाना।

13 “इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी-अपनी निज भूमि को लौटने पाओगे।

14 और यदि तुम अपने भाई-बन्धु के हाथ कुछ बेचो या अपने भाई-बन्धु से कुछ मोल लो, तो तुम एक दूसरे पर उपद्रव न करना।

15 जुबली के बाद जितने वर्ष बीते हों उनकी गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक दूसरे से मोल लेना, और शेष वर्षों की उपज के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे।

16 जितने वर्ष और रहे उतना ही दाम बढ़ाना, और जितने वर्ष कम रहे उतना ही दाम घटाना, क्योंकि वर्ष की उपज की संख्या जितनी हो उतनी ही वह तेरे हाथ बेचेगा।

17 तुम अपने-अपने भाई-बन्धु पर उपद्रव न करना; अपने परमेश्वर का भय मानना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

१११११११ १११११ ११ १११११ ११११११११११

18 “इसलिए तुम मेरी विधियों को मानना, और मेरे नियमों पर समझ बूझकर चलना; क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे।

19 भूमि अपनी उपज उपजाया करेगी, और तुम पेट भर खाया करोगे, और उस देश में निडर बसे रहोगे।

20 और यदि तुम कहो कि सातवें वर्ष में हम क्या खाएँगे, न तो हम बोएँगे न अपने खेत की उपज इकट्ठा करेंगे?”

21 तो जानो कि मैं तुम को छठवें वर्ष में ऐसी आशीष दूँगा, कि भूमि की उपज तीन वर्ष तक काम आएगी।

22 तुम आठवें वर्ष में बोओगे, और पुरानी उपज में से खाते रहोगे, और नवें वर्ष की उपज जब तक न मिले तब तक तुम पुरानी उपज में से खाते रहोगे।

१११११११ १११११ ११ १११११

23 “भूमि सदा के लिये बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है; और उसमें तुम परदेशी और बाहरी होंगे।

24 लेकिन तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छुड़ाने देना।

25 “यदि तेरा कोई भाई-बन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियों में से जो सबसे निकट हो वह आकर अपने भाई-बन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले।

\* 25:4 १११११११११११११११ १११११ १११११: बोना, काटना, छाँटना, फल एकत्र करना विश्रामवर्ष के पक्ष में धारणा प्रदान करता है। † 25:10 १११११११११ १११११: जुबली वर्ष सम्भवतः प्रत्येक सातवें विश्रामवर्ष के साथ आता था और वह “पचासवाँ वर्ष” कहलाता था।





का दाम वर्षों की गिनती के अनुसार हो, अर्थात् वह दाम मजदूर के दिवसों के समान उसके साथ होगा।

51 यदि जुबली के वर्ष के बहुत वर्ष रह जाएँ, तो जितने रुपयों से वह मोल लिया गया हो उनमें से वह अपने छुड़ाने का दाम उतने वर्षों के अनुसार फेर दे।

52 यदि जुबली के वर्ष के थोड़े वर्ष रह गए हों, तो भी वह अपने स्वामी के साथ हिसाब करके अपने छुड़ाने का दाम उतने ही वर्षों के अनुसार फेर दे।

53 वह अपने स्वामी के संग उस मजदूर के समान रहे जिसकी वार्षिक मजदूरी ठहराई जाती हो; और उसका स्वामी उस पर तेरे सामने कठोरता से अधिकार न जताने पाए। (22:1) 4:1)

54 और यदि वह इन रीतियों से छुड़ाया न जाए, तो वह जुबली के वर्ष में अपने बाल-बच्चों समेत छूट जाए।

55 क्योंकि इस्राएली मेरे ही दास हैं; वे मिस्र देश से मेरे ही निकाले हुए दास हैं; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

## 26

26:1-26:19

1 “तुम अपने लिये 26:1-26:19\*”, और न कोई खुदी हुई मूर्ति या स्तम्भ अपने लिये खड़ा करना, और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापित करना; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

2 तुम मेरे विश्रामदिनों का पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना; मैं यहोवा हूँ।

3 “यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो,

4 तो मैं तुम्हारे लिये 26:1-26:19 26:1-26:19, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने-अपने फल दिया करेंगे;

5 यहाँ तक कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दाँवनी करते रहोगे, और बौने के समय भी भर पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिन्त बसे रहोगे।

6 और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूँगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डरानेवाला न होगा; और मैं उस देश में खतरनाक जन्तुओं को न रहने दूँगा, और तलवार तुम्हारे देश में न चलेगी।

\* 26:1 26:1-26:19: यहोवा की सार्वजनिक आराधना में अनिवार्य था, सबसे पहले सब प्रकार के प्रगट प्रतीक तथा सब मूर्तियों का निवारण।

† 26:4 26:1-26:19 26:1-26:19: आवधिक वर्षा जिस पर उस पवित्र देश की उर्वरता निर्भर करती थी, उसी की यहाँ चर्चा की गई है। वहाँ दो वर्ष काल थे जिन्हें धर्मशास्त्र में आरम्भिक वर्षा और उतर कालीन वर्षा कहा गया है। व्यव. 11:14

7 और तुम अपने शत्रुओं को मार भगा दोगे, और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएँगे।

8 तुम में से पाँच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे-आगे मारे जाएँगे;

9 और मैं तुम्हारी ओर कृपादृष्टि रखूँगा और तुम को फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूर्ण करूँगा।

10 और तुम रखे हुए पुराने अनाज को खाओगे, और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे।

11 और मैं तुम्हारे बीच अपना निवास-स्थान बनाए रखूँगा, और मेरा जी तुम से घृणा नहीं करेगा।

12 और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूँगा, और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूँगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे। (2 22:1) 6:16)

13 मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम को मिस्र देश से इसलिए निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो; और मैंने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला है, और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया है।

26:14-26:19

14 “यदि तुम मेरी न सुनोगे, और इन सब आज्ञाओं को न मानोगे,

15 और मेरी विधियों को निकम्मा जानोगे, और तुम्हारी आत्मा मेरे निर्णयों से घृणा करे, और तुम मेरी सब आज्ञाओं का पालन न करोगे, वरन् मेरी वाचा को तोड़ोगे,

16 तो मैं तुम से यह करूँगा; अर्थात् मैं तुम को बेचैन करूँगा, और क्षयरोग और ज्वर से पीड़ित करूँगा, और इनके कारण तुम्हारी आँखें धुंधली हो जाएँगी, और तुम्हारा मन अति उदास होगा। और तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे;

17 और मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हो जाऊँगा, और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे; और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार करेंगे, और जब कोई तुम को खदेड़ता भी न होगा तब भी तुम भागोगे।

18 और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुना ताड़ना और दूँगा,

19 और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ डालूँगा, और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और भूमि को



विधियों से घृणा थी।

44 इतने पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे, तब मैं उनको इस प्रकार नहीं छोड़ूँगा, और न उनसे ऐसी घृणा करूँगा कि उनका सर्वनाश कर डालूँ और अपनी उस वाचा को तोड़ दूँ जो मैंने उनसे बाँधी है; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ;

45 परन्तु मैं उनकी भलाई के लिये उनके पितरों से बाँधी हुई वाचा को स्मरण करूँगा, जिन्हें मैं अन्यजातियों की आँखों के सामने मिस्र देश से निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूँ; मैं यहोवा हूँ।”

46 जो-जो विधियाँ और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा ठहराई थीं वे ये ही हैं।

## 27

????? ?????? ??

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से यह कह कि जब कोई विशेष संकल्प माने, तो संकल्प किया हुआ मनुष्य तरे ठहराने के अनुसार यहोवा के होंगे;

3 इसलिए यदि वह बीस वर्ष या उससे अधिक और साठ वर्ष से कम अवस्था का पुरुष हो, तो उसके लिये पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पचास शेकेल का चाँदी ठहरे।

4 यदि वह स्त्री हो, तो तीस शेकेल ठहरे।

5 फिर यदि उसकी अवस्था पाँच वर्ष या उससे अधिक और बीस वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो बीस शेकेल, और लड़की के लिये दस शेकेल ठहरे।

6 यदि उसकी अवस्था एक महीने या उससे अधिक और पाँच वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो पाँच, और लड़की के लिये तीन शेकेल ठहरे।

7 फिर यदि उसकी अवस्था साठ वर्ष की या उससे अधिक हो, और वह पुरुष हो तो उसके लिये पन्द्रह शेकेल, और स्त्री हो तो दस शेकेल ठहरे।

8 परन्तु यदि कोई इतना कंगाल हो कि याजक का ठहराया हुआ दाम न दे सके, तो वह याजक के सामने खड़ा किया जाए, और याजक उसकी पूँजी ठहराए, अर्थात् जितना संकल्प करनेवाले से हो सके, याजक उसी के अनुसार ठहराए।

9 “फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा चढ़ाते हैं, यदि ऐसों में से कोई संकल्प किया जाए, तो जो पशु कोई यहोवा को दे वह पवित्र ठहरेगा।

10 वह उसे किसी प्रकार से न बदले, न तो वह बुरे के बदले अच्छा, और न अच्छे के बदले बुरा दे; और यदि वह उस पशु के बदले दूसरा पशु दे, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरेगे।

11 और जिन पशुओं में से लोग यहोवा के लिये चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसों में से यदि वह हो, तो वह उसको याजक के सामने खड़ा कर दे,

12 तब याजक पशु के गुण-अवगुण दोनों विचार कर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे।

13 पर यदि संकल्प करनेवाला उसे किसी प्रकार से छुड़ाना चाहे, तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उसमें उसका पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे।

14 “फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिये पवित्र ठहराकर संकल्प करे, तो याजक उसके गुण-अवगुण दोनों विचार कर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे।

15 और यदि घर का पवित्र करनेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जितना रुपया याजक ने उसका मोल ठहराया हो उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे, तब वह घर उसी का रहेगा।

16 “फिर यदि कोई अपनी निज भूमि का कोई भाग यहोवा के लिये पवित्र ठहराना चाहे, तो उसका मोल इसके अनुसार ठहरे, कि उसमें कितना बीज पड़ेगा; जितना भूमि में होमेर भर जौ पड़े उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे।

17 यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष ही में पवित्र ठहराए, तो उसका दाम तरे ठहराने के अनुसार ठहरे;

18 और यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष के बाद पवित्र ठहराए, तो जितने वर्ष दूसरे जुबली के वर्ष के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उसके लिये रुपये का हिसाब करे, तब जितना हिसाब में आए उतना याजक के ठहराने से कम हो।

19 और यदि खेत को पवित्र ठहरानेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जो दाम याजक ने ठहराया हो उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे, तब खेत उसी का रहेगा।

20 और यदि वह खेत को छुड़ाना न चाहे, या उसने उसको दूसरे के हाथ बेचा हो, तो खेत आगे को कभी न छुड़ाया जाए;

21 परन्तु जब वह खेत जुबली के वर्ष में छूटे, तब पूरी रीति से अर्पण किए हुए खेत के समान यहोवा के लिये पवित्र ठहरे, अर्थात् वह याजक ही की निज भूमि हो जाए।

22 फिर यदि कोई अपना मोल लिया हुआ खेत, जो

उसकी निज भूमि के खेतों में का न हो, यहोवा के लिये पवित्र ठहराए,

23 तो याजक जुबली के वर्ष तक का हिसाब करके उस मनुष्य के लिये जितना ठहराए उतना ही वह यहोवा के लिये पवित्र जानकर उसी दिन दे दे।

24 जुबली के वर्ष में वह खेत उसी के अधिकार में जिससे वह मोल लिया गया हो फिर आ जाए, अर्थात् जिसकी वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए।

25 जिस-जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उसका मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल के हिसाब से ठहरे: शेकेल बीस गेरा का ठहरे।

26 “परन्तु घरेलू पशुओं का पहलौटा, जो पहलौटा होने के कारण यहोवा का ठहरा है, उसको कोई पवित्र न ठहराए; चाहे वह बछड़ा हो, चाहे भेड़ या बकरी का बच्चा, वह यहोवा ही का है।

27 परन्तु यदि वह अशुद्ध पशु का हो, तो उसका पवित्र ठहरानेवाला उसको याजक के ठहराए हुए मोल के अनुसार उसका पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है; और यदि वह न छुड़ाया जाए, तो याजक के ठहराए हुए मोल पर बेच दिया जाए।

28 “परन्तु अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई ~~किसी भी~~ ~~किसी भी~~ ~~किसी भी~~ ~~किसी भी~~ ~~किसी भी~~\*, चाहे मनुष्य हो चाहे पशु, चाहे उसकी निज भूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची जाए और न छुड़ाई जाए; जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे।

29 मनुष्यों में से जो कोई मृत्युदण्ड के लिये अर्पण किया जाए, वह छुड़ाया न जाए; निश्चय वह मार डाला जाए।

30 “फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। (~~लेवी 23:23~~, ~~लेवी 11:42~~)

31 यदि कोई अपने दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो पाँचवाँ भाग बढ़ाकर उसको छुड़ाए।

32 और गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ, अर्थात् जो-जो पशु गिनने के लिये लाठी के तले निकल जानेवाले हैं उनका दशमांश, अर्थात् दस-दस पीछे एक-एक पशु यहोवा के लिये पवित्र ठहरे।

33 कोई उसके गुण-अवगुण न विचारे, और न उसको बदले; और यदि कोई उसको बदल भी ले, तो वह और

उसका बदला दोनों पवित्र ठहरे; और वह कभी छुड़ाया न जाए।”

34 जो आज्ञाएँ यहोवा ने इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा को दी थीं, वे ये ही हैं।

\* 27:28 ~~लेवी 23:23~~ ~~लेवी 11:42~~ ~~लेवी 23:23~~ ~~लेवी 11:42~~: विधान में इसका विशिष्ट अर्थ है, जो सामान्य उपयोग से पृथक कर दिया गया और एक प्रकार से यहोवा को दे दिया गया जिसमें दुर्दमनीयता या अदला बदली का अधिकार नहीं।

## गिनती

?????

यहूदी और मसीही परम्पराएँ वैश्विक रूप से मूसा को गिनती की पुस्तक का लेखक मानती हैं। इस पुस्तक में अनेक आंकड़े, जनगणना, गोत्रों और पुरोहितों से उठे नायक तथा अन्य संख्यात्मक आंकड़े हैं। इस पुस्तक में 38 वर्षों का वृत्तान्त है, अर्थात् निर्गमन के बाद दूसरे वर्ष से (जब इस्राएल सीनै पर्वत के निकट छावनी डाले हुए था) 40 वर्ष बाद, जब नई पीढ़ी प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने पर थी। इसके अतिरिक्त, इस पुस्तक में निर्गमन के बाद दूसरे वर्ष और 40 वें वर्ष की घटनाओं का मुख्य विवरण है, बीच के 38 वर्षों के बारे में वह मौन है, जब इस्राएल जंगल में भटक रहा था।

????? ????? ???? ???????

लगभग 1446 - 1405 ई. पू.

इस पुस्तक का वृत्तान्त उन घटनाओं से आरम्भ होता है जो इस्राएल द्वारा मिस्र से कूच करने के दूसरे वर्ष में घटी थी, जब वे सीनै पर्वत के निकट छावनी डाले हुए थे (1:1)।

????????

गिनती की पुस्तक इस्राएल के लिए लिखी गई थी कि प्रतिज्ञा के देश की ओर उनकी यात्रा का लेखा प्रस्तुत करे परन्तु यह पुस्तक बाइबल के भावी लेखकों के लिए भी है कि हमारी स्वर्ग की ओर यात्रा में परमेश्वर हमारे साथ है।

????????????

जब दूसरी पीढ़ी प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने पर थी तब मूसा ने यह पुस्तक लिखी थी (गिन. 33:2)। कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा के देश को अपनाने के लिए उस पीढ़ी को प्रोत्साहित करे। गिनती की पुस्तक में इस्राएल के प्रति परमेश्वर की शर्तरहित विश्वास-योग्यता दर्शाई गई है। पहली पीढ़ी ने तो वाचा की आशीषों को ठुकरा दिया था परन्तु परमेश्वर अपनी वाचा के निमित्त निष्ठावान था। इस्राएल के कुडकुडाने तथा विद्रोह के उपरान्त भी परमेश्वर उन्हें आशीष देता है और दूसरी पीढ़ी के लिए प्रतिज्ञा के देश की अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करता है।

???? ?????

यात्रा  
रूपरेखा

1. प्रतिज्ञा के देश के लिए कूच करने की तैयारी — 1:1-10:10

2. सीनै से कादेश की यात्रा — 10:11-12:16
3. विद्रोह के कारण विलम्ब — 13:1-20:13
4. कादेश से मोआब के मैदानों तक यात्रा — 20:14-22:1
5. मोआब में इस्राएल, प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार की आशा के साथ — 22:2-32:42
6. विभिन्न विषयों से सम्बंधित परिशिष्ट — 33:1-36:13

?????????????????? ?? ?????

1 इस्राएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन को, यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले तम्बू में, मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, एक-एक पुरुष की गिनती नाम ले लेकर करना।

3 जितने इस्राएली बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के हों, और जो युद्ध करने के योग्य हों, उन सभी को उनके दलों के अनुसार तू और हारून गिन ले।

4 और तुम्हारे साथ प्रत्येक गोत्र का एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुरुष हो।

5 तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं: रूबेन के गोत्र में से शदेऊर का पुत्र एलीसूर;

6 शिमोन के गोत्र में से सूरीशद्वै का पुत्र शलूमिःएल;

7 यहूदा के गोत्र में से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन;

8 इस्साकार के गोत्र में से सूआर का पुत्र नतनेल;

9 जबूलून के गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब;

10 यूसुफ वंशियों में से ये हैं, अर्थात् एप्रैम के गोत्र में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा, और मनश्शे के गोत्र में से पदासूर का पुत्र गम्लीःएल;

11 बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान;

12 दान के गोत्र में से अम्मीशद्वै का पुत्र अहीएजेर;

13 आशेर के गोत्र में से ओक्रान का पुत्र पगीःएल;

14 गाद के गोत्र में से दूःएल का पुत्र एल्यासाप;

15 नप्ताली के गोत्र में से एनान का पुत्र अहीरा।”

16 मण्डली में से जो पुरुष अपने-अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाए गए, वे ये ही हैं, और ये इस्राएलियों के हजारों में मुख्य पुरुष थे।

17 जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उनको साथ लेकर मूसा और हारून ने,

18 दूसरे महीने के पहले दिन सारी मण्डली इकट्ठी की, तब इस्राएलियों ने अपने-अपने कुल और अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु वालों के नामों की गिनती करवाकर अपनी-अपनी वंशावली लिखवाई;

19 जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार उसने सीनै के जंगल में उनकी गणना की।

20 और इस्राएल के पहलौठे ~~२२२२२२~~ ~~२२~~ ~~२२२२~~\* के जितने पुरुष अपने कुल और अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

21 और रूबेन के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हजार थे।

22 शिमोन के वंश के लोग जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे, और जो युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए।

23 और शिमोन के गोत्र के गिने हुए पुरुष उनसठ हजार तीन सौ थे।

24 गाद के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

25 और गाद के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैतालीस हजार साढ़े छः सौ थे।

26 यहूदा के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

27 और यहूदा के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौहत्तर हजार छः सौ थे।

28 इस्साकार के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

29 और इस्साकार के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौवन हजार चार सौ थे।

30 जबूलून के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

31 और जबूलून के गोत्र के गिने हुए पुरुष सत्तावन हजार चार सौ थे।

32 यूसुफ के वंश में से एप्रैम के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

33 और एप्रैम गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े चालीस हजार थे।

34 मनश्शे के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

35 और मनश्शे के गोत्र के गिने हुए पुरुष बत्तीस हजार दो सौ थे।

36 बिन्यामीन के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

37 और बिन्यामीन के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैतीस हजार चार सौ थे।

38 दान के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे अपने-अपने नाम से गिने गए:

39 और दान के गोत्र के गिने हुए पुरुष बासठ हजार सात सौ थे।

40 आशेर के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

41 और आशेर के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े इकतालीस हजार थे।

42 नप्ताली के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

43 और नप्ताली के गोत्र के गिने हुए पुरुष तिरपन हजार चार सौ थे।

44 इस प्रकार मूसा और हारून और इस्राएल के बारह प्रधानों ने, जो अपने-अपने पितरों के घराने के प्रधान थे, उन सभी को गिन लिया और उनकी गिनती यही थी।

45 अतः जितने इस्राएली बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे अपने पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए,

46 और वे सब गिने हुए पुरुष मिलाकर छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ थे।

~~२२२२२२~~ ~~२२२२२२२२~~ ~~२२~~ ~~२२२२~~ ~~२२२२२२~~

\* 1:20 ~~२२२२२२~~ ~~२२~~ ~~२२२२~~: यह पंजीकरण विशेष करके सेना के उद्देश्य से था

47 इनमें ~~22222222~~ अपने पितरों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए।

48 क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था,

49 “लेवीय गोत्र की गिनती इस्राएलियों के संग न करना;

50 परन्तु तू लेवियों को साक्षी के तम्बू पर, और उसके सम्पूर्ण सामान पर, अर्थात् जो कुछ उससे सम्बंध रखता है उस पर अधिकारी नियुक्त करना; और सम्पूर्ण सामान सहित निवास को वे ही उठाया करें, और वे ही उसमें सेवा टहल भी किया करें, और तम्बू के आस-पास वे ही अपने डेरे डाला करें। (~~22222222~~ 7:44)

51 और जब जब निवास को आगे ले जाना हो तब-तब लेवीय उसको गिरा दें, और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब-तब लेवीय उसको खड़ा किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए।

52 और इस्राएली अपना-अपना डेरा अपनी-अपनी छावनी में और अपने-अपने झण्डे के पास खड़ा किया करें;

53 पर लेवीय अपने डेरे साक्षी के तम्बू ही के चारों ओर खड़े किया करें, कहीं ऐसा न हो कि इस्राएलियों की मण्डली पर मेरा कोप भड़के; और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा किया करें।”

54 जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं, इस्राएलियों ने उन्हीं के अनुसार किया।

## 2

~~22222222222222 22 222222 22 22222~~

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 “इस्राएली मिलापवाले तम्बू के चारों ओर और उसके सामने अपने-अपने झण्डे और अपने-अपने पितरों के घराने के निशान के समीप अपने डेरे खड़े करें।

3 और जो पूर्व दिशा की ओर जहाँ सूर्योदय होता है, अपने-अपने दलों के अनुसार डेरे खड़े किया करें, वे ही यहूदा की छावनीवाले झण्डे के लोग होंगे, और उनका प्रधान अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन होगा,

4 और उनके दल के गिने हुए पुरुष चौहत्तर हजार छः सौ हैं।

5 उनके समीप जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार के गोत्र के हों, और उनका प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल होगा,

6 और उनके दल के गिने हुए पुरुष चौवन हजार चार सौ हैं।

7 इनके पास जबूलून के गोत्रवाले रहेंगे, और उनका प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब होगा,

8 और उनके दल के गिने हुए पुरुष सत्तावन हजार चार सौ हैं।

9 इस रीति से यहूदा की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख छियासी हजार चार सौ हैं। पहले ये ही कूच किया करें।

10 “दक्षिण की ओर रूबेन की छावनी के झण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर होगा,

11 और उनके दल के गिने हुए पुरुष साठे छियालीस हजार हैं।

12 उनके पास जो डेरे खड़े किया करें वे शिमोन के गोत्र के होंगे, और उनका प्रधान सूरीशद्वै का पुत्र शलूमीएल होगा,

13 और उनके दल के गिने हुए पुरुष उनसठ हजार तीन सौ हैं।

14 फिर गाद के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप होगा,

15 और उनके दल के गिने हुए पुरुष पैंतालीस हजार साठे छः सौ हैं।

16 रूबेन की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख इक्यावन हजार साठे चार सौ हैं। दूसरा कूच इनका हो।

17 “उनके पीछे और सब छावनियों के बीचों बीच लेवियों की छावनी समेत मिलापवाले तम्बू का कूच हुआ करे; जिस क्रम से वे डेरे खड़े करें उसी क्रम से वे अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने झण्डे के पास-पास चलें।

18 “पश्चिम की ओर एप्रैम की छावनी के झण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा होगा,

19 और उनके दल के गिने हुए पुरुष साठे चालीस हजार हैं।

20 उनके समीप मनश्शे के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल होगा,

21 और उनके दल के गिने हुए पुरुष बत्तीस हजार दो सौ हैं।

22 फिर बिन्यामीन के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान होगा,

† 1:47 ~~22222222~~: लेवी गोत्र की जनगणना की जाती है तब सब पुरुषों को गिना जाता है एक माह की आयु से ऊपर तक जैसा अन्य गोत्रों में नहीं किया जाता था।





16 यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे अनुसार उनको गिन लिया।

17 लेवी के पुत्रों के नाम ये हैं, अर्थात् गेशोन, कहात, और मरारी।

18 और गेशोन के पुत्र जिनसे उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् लिब्नी और शिमी।

19 कहात के पुत्र जिनसे उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल।

20 और मरारी के पुत्र जिनसे उसके कुल चले ये हैं, अर्थात् महली और मूशी। ये लेवियों के कुल अपने पितरों के घरानों के अनुसार हैं।

21 गेशोन से लिब्नियों और शिमियों के कुल चले; गेशोनवंशियों के कुल ये ही हैं।

22 इनमें से जितने पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी, उन सभी की गिनती साढ़े सात हजार थी।

23 गेशोनवाले कुल निवास के पीछे पश्चिम की ओर अपने डेरे डाला करें;

24 और गेशोनियों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान लाएल का पुत्र एल्यासाप हो।

25 और मिलापवाले तम्बू की जो वस्तुएँ गेशोनवंशियों को सौंपी जाएँ वे ये हों, अर्थात् निवास और तम्बू, और उसका आवरण, और मिलापवाले तम्बू के द्वार का परदा,

26 और जो आँगन निवास और वेदी के चारों ओर है उसके पर्दे, और उसके द्वार का परदा, और सब डोरियाँ जो उसमें काम आती हैं।

27 फिर कहात से अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों, और उज्जीएलियों के कुल चले; कहातियों के कुल ये ही हैं।

28 उनमें से जितने पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी उनकी गिनती आठ हजार छः सौ थी। उन पर पवित्रस्थान की देख-रेख का उत्तरदायित्व था।

29 कहातियों के कुल निवास-स्थान की उस ओर अपने डेरे डाला करें जो दक्षिण की ओर है;

30 और कहातियों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान उज्जीएल का पुत्र एलीसापान हो।

31 और जो वस्तुएँ उनको सौंपी जाएँ वे सन्दूक, मेज, दीवट, वेदियाँ, और पवित्रस्थान का वह सामान जिससे सेवा टहल होती है, और परदा; अर्थात् पवित्रस्थान में काम में आनेवाला सारा सामान हो।

32 और लेवियों के प्रधानों का प्रधान हारून याजक का पुत्र एलीआजर हो, और जो लोग पवित्रस्थान की सौंपी हुई वस्तुओं की देख-रेख करेंगे उन पर वही मुखिया ठहरे।

33 फिर मरारी से महलियों और मूशियों के कुल चले; मरारी के कुल ये ही हैं।

34 इनमें से जितने पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी उन सभी की गिनती छः हजार दो सौ थी।

35 और मरारी के कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान अबीहैल का पुत्र सूरीएल हो; ये लोग निवास के उत्तर की ओर अपने डेरे खड़े करें।

36 और जो वस्तुएँ मरारीवंशियों को सौंपी जाएँ कि वे उनकी देख-रेख करें, वे निवास के तख्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सियाँ, और सारा सामान; निदान जो कुछ उसके लगाने में काम आए;

37 और चारों ओर के आँगन के खम्भे, और उनकी कुर्सियाँ, खूँटे और डोरियाँ हों।

38 और जो मिलापवाले तम्बू के सामने, अर्थात् निवास के सामने, पूर्व की ओर जहाँ से सूर्योदय होता है, अपने डेरे डाला करें, वे मूसा और हारून और उसके पुत्रों के डेरे हों, और पवित्रस्थान की देख-रेख इस्राएलियों के बदले वे ही किया करें, और दूसरा जो कोई उसके समीप आए वह मार डाला जाए।

39 यहोवा की इस आज्ञा को पाकर एक महीने की या उससे अधिक आयु वाले जितने लेवीय पुरुषों को मूसा और हारून ने उनके कुलों के अनुसार गिना, वे सब के सब बाईस हजार थे।

???????? ?? ?????????? ?? ??? ?????

40 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्राएलियों के जितने पहलौटे पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक है, उन सभी को नाम ले लेकर गिन ले।

41 और मेरे लिये इस्राएलियों के सब पहिलौटों के बदले लेवियों को, और इस्राएलियों के पशुओं के सब पहिलौटों के बदले लेवियों के पशुओं को ले; मैं यहोवा हूँ।”

42 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्राएलियों के सब पहिलौटों को गिन लिया।

43 और सब पहलौटे पुरुष जिनकी आयु एक महीने की या उससे अधिक थी, उनके नामों की गिनती बाईस हजार दो सौ तिहत्तर थी।

44 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

45 “इस्राएलियों के सब पहिलौटों के बदले लेवियों को, और उनके पशुओं के बदले लेवियों के पशुओं को ले; और लेवीय मेरे ही हों; मैं यहोवा हूँ।

46 और इस्राएलियों के पहिलौटों में से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवियों से अधिक हैं, उनके छुड़ाने के लिये,

47 पुरुष पाँच शेकेल ले; वे पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से हों, अर्थात् बीस गेरा का शेकेल हो।

48 और जो रुपया उन अधिक पहिलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून और उसके पुत्रों को दे देना।”

49 अतः जो इस्राएली पहलौठे लेवियों के द्वारा छुड़ाए हुएओं से अधिक थे उनके हाथ से मूसा ने छुड़ौती का रुपया लिया।

50 और एक हजार तीन सौ पैसठ शेकेल रुपया पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से वसूल हुआ।

51 और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाए हुएओं का रुपया हारून और उसके पुत्रों को दे दिया।

## 4

११११११११ ११ ११११११११

1 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 “लेवियों में से कहातियों की, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, गिनती करो,

3 अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वालों में, जितने मिलापवाले तम्बू में काम-काज करने को भर्ती हैं।

4 और मिलापवाले तम्बू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों का यह काम होगा,

5 अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब-तब हारून और उसके पुत्र भीतर आकर, बीचवाले पर्दे को उतार कर उससे साक्षीपत्र के सन्दूक को ढाँप दें;

6 तब वे उस पर सुइसों की खालों का आवरण डालें, और उसके ऊपर सम्पूर्ण नीले रंग का कपड़ा डालें, और सन्दूक में ११११११ ११ ११११११\*।

7 फिर भेंटवाली रोटी की मेज पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों, धूपदानों, करछों, और उण्डेलने के कटोरों को रखें; और प्रतिदिन की रोटी भी उस पर हो;

8 तब वे उन पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर उसको सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और मेज के डंडों को लगा दें।

9 फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों, गुलतराशों, और गुलदानों समेत उजियाला देनेवाले दीवट को, और उसके सब तेल के पात्रों को, जिनसे उसकी सेवा टहल होती है, ढाँपें;

10 तब वे सारे सामान समेत दीवट को सुइसों की खालों के आवरण के भीतर रखकर डंडे पर धर दें।

11 फिर वे सोने की वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उसको सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और उसके डंडों को लगा दें;

12 तब वे सेवा टहल के सारे सामान को लेकर, जिससे पवित्रस्थान में सेवा टहल होती है, नीले कपड़े के भीतर रखकर सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और डंडे पर धर दें।

13 फिर वे वेदी पर से सब राख उठाकर वेदी पर बैंगनी रंग का कपड़ा बिछाएँ;

14 तब जिस सामान से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब, अर्थात् उसके करछे, काँटे, फावड़ियाँ, और कटोरे आदि, वेदी का सारा सामान उस पर रखें; और उसके ऊपर सुइसों की खालों का आवरण बिछाकर वेदी में डंडों को लगाएँ।

15 और जब हारून और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उसके सारे सामान को ढाँप चुकें, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिये आएँ, पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ। कहातियों के उठाने के लिये मिलापवाले तम्बू की ये ही वस्तुएँ हैं।

16 “जो वस्तुएँ हारून याजक के पुत्र एलीआजर को देख-रेख के लिये सौंपी जाएँ वे ये हैं, अर्थात् उजियाला देने के लिये तेल, और सुगन्धित धूप, और नित्य अन्नबलि, और अभिषेक का तेल, और सारे निवास, और उसमें की सब वस्तुएँ, और पवित्रस्थान और उसके सम्पूर्ण सामान।”

17 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

18 “कहातियों के कुलों के गोत्रों को लेवियों में से नाश न होने देना;

19 उसके साथ ऐसा करो, कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएँ, तब न मरें परन्तु जीवित रहें; इस कारण हारून और उसके पुत्र भीतर आकर एक-एक के लिये उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दें,

20 और वे पवित्र वस्तुओं के ११११११ ११ १११११ ११ ११११११ ११† भीतर आने न पाएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ।”

११११११११११११ ११ ११११११११

21 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

22 “गेशोनियों की भी गिनती उनके पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार कर;

23 तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को भर्ती हों उन सभी को गिन ले।

24 सेवा करने और भार उठाने में गेशोनियों के कुलवालों की यह सेवकाई हो;

\* 4:6 ११११११ ११ ११११११: वे उन सोने के छल्लों से कभी न निकाले जाएँ जिनके द्वारा वाचा का सन्दूक उठाया जाता था। † 4:20 ११११११ ११ ११११११ ११ ११११११ ११: पवित्र वस्तुओं को पल भर के लिए भी देखना

25 अर्थात् वे निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके आवरण, और इसके ऊपरवाले सुइसों की खालों के आवरण, और मिलापवाले तम्बू के द्वार के पर्दे,

26 और निवास, और वेदी के चारों ओर के आँगन के पर्दों, और आँगन के द्वार के पर्दे, और उनकी डोरियों, और उनमें काम में आनेवाले सारे सामान, इन सभी को वे उठाया करें; और इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह सब भी उनकी सेवकाई में आए।

27 और गेशोनियों के वंश की सारी सेवकाई हारून और उसके पुत्रों के कहने से हुआ करे, अर्थात् जो कुछ उनको उठाना, और जो-जो सेवकाई उनको करनी हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो।

28 मिलापवाले तम्बू में गेशोनियों के कुलों की यही सेवकाई ठहरे; और उन पर हारून याजक का पुत्र ईतामार अधिकार रखे।

२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२

29 “फिर मरारियों को भी तू उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लें;

30 तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को भर्ती हों, उन सभी को गिन ले।

31 और मिलापवाले तम्बू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उनको मिले वे ये हों, अर्थात् निवास के तख्ते, बेंडे, खम्भे, और कुर्सियाँ,

32 और चारों ओर आँगन के खम्भे, और इनकी कुर्सियाँ, खूटे, डोरियाँ, और भाँति-भाँति के काम का सारा सामान ढोने के लिये उनको सौंपा जाए उसमें से २२-२२ २२२२२२ २२ २२२ २२२२२ २२२ २२२ २२२।

33 मरारियों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी होगी वह यही है; वह हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे।”

२२२२२२२२ २२ २२२२२२

34 तब मूसा और हारून और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार,

35 तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की आयु के, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भर्ती हुए थे, उन सभी को गिन लिया;

36 और जो अपने-अपने कुल के अनुसार गिने गए, वे दो हजार साठे सात सौ थे।

37 कहातियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए, वे इतने ही थे; जो आज्ञा

यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसी के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।

38 गेशोनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए,

39 अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को दल में भर्ती हुए थे,

40 उनकी गिनती उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार दो हजार छः सौ तीस थी।

41 गेशोनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए, वे इतने ही थे; यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।

42 फिर मरारियों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए,

43 अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भर्ती हुए थे,

44 उनकी गिनती उनके कुलों के अनुसार तीन हजार दो सौ थी।

45 मरारियों के कुलों में से जिनको मूसा और हारून ने, यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी, गिन लिया वे इतने ही थे।

46 लेवियों में से जिनको मूसा और हारून और इस्राएली प्रधानों ने उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लिया,

47 अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को हाजिर होनेवाले थे,

48 उन सभी की गिनती आठ हजार पाँच सौ अस्सी थी।

49 ये अपनी-अपनी सेवा और बोझ ढोने के लिए यहोवा के कहने पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार वे गिने गए।

## 5

२२२२२२२ २२२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि वे सब कोढ़ियों को, और जितनों के प्रमेह हो, और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हों, उन सभी को छावनी से निकाल दें;

3 ऐसों को चाहे पुरुष हों, चाहे स्त्री, छावनी से निकालकर बाहर कर दें; कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी

‡ 4:32 २२-२२ २२२२२२ २२ २२२ २२२२ २२२ २२२ २२२: प्रत्येक वस्तु उसके ढोनेवाले का नाम लेकर सौंप दी जाए। ये वस्तुएँ मिलापवाले तम्बू का भारी सामान था

छावनी, जिसके बीच मैं निवास करता हूँ, उनके कारण अशुद्ध हो जाए।”

4 और इस्राएलियों ने वैसा ही किया, अर्थात् ऐसे लोगों को छावनी से निकालकर बाहर कर दिया; जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था इस्राएलियों ने वैसा ही किया।

5 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

6 “इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष या स्त्री

ऐसा कोई पाप करके जो लोग किया करते हैं यहोवा से विश्वासघात करे, और वह मनुष्य दोषी हो,

7 तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले; और पूरी क्षतिपूर्ति में पाँचवाँ अंश बढ़ाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे, जिसके विषय दोषी हुआ हो।

8 परन्तु यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए, तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर दिया जाए वह याजक का हो, और वह उस प्रायश्चित्तवाले मेढ्रे से अधिक हो जिससे <sup>5:14</sup> <sup>5:21</sup> <sup>5:23</sup> <sup>5:24</sup> <sup>5:25</sup> <sup>5:26</sup> <sup>5:27</sup> <sup>5:28</sup> <sup>5:29</sup> <sup>5:30</sup> <sup>5:31</sup> <sup>5:32</sup> <sup>5:33</sup> <sup>5:34</sup> <sup>5:35</sup> <sup>5:36</sup> <sup>5:37</sup> <sup>5:38</sup> <sup>5:39</sup> <sup>5:40</sup> <sup>5:41</sup> <sup>5:42</sup> <sup>5:43</sup> <sup>5:44</sup> <sup>5:45</sup> <sup>5:46</sup> <sup>5:47</sup> <sup>5:48</sup> <sup>5:49</sup> <sup>5:50</sup> <sup>5:51</sup> <sup>5:52</sup> <sup>5:53</sup> <sup>5:54</sup> <sup>5:55</sup> <sup>5:56</sup> <sup>5:57</sup> <sup>5:58</sup> <sup>5:59</sup> <sup>5:60</sup> <sup>5:61</sup> <sup>5:62</sup> <sup>5:63</sup> <sup>5:64</sup> <sup>5:65</sup> <sup>5:66</sup> <sup>5:67</sup> <sup>5:68</sup> <sup>5:69</sup> <sup>5:70</sup> <sup>5:71</sup> <sup>5:72</sup> <sup>5:73</sup> <sup>5:74</sup> <sup>5:75</sup> <sup>5:76</sup> <sup>5:77</sup> <sup>5:78</sup> <sup>5:79</sup> <sup>5:80</sup> <sup>5:81</sup> <sup>5:82</sup> <sup>5:83</sup> <sup>5:84</sup> <sup>5:85</sup> <sup>5:86</sup> <sup>5:87</sup> <sup>5:88</sup> <sup>5:89</sup> <sup>5:90</sup> <sup>5:91</sup> <sup>5:92</sup> <sup>5:93</sup> <sup>5:94</sup> <sup>5:95</sup> <sup>5:96</sup> <sup>5:97</sup> <sup>5:98</sup> <sup>5:99</sup> <sup>5:100</sup> <sup>5:101</sup> <sup>5:102</sup> <sup>5:103</sup> <sup>5:104</sup> <sup>5:105</sup> <sup>5:106</sup> <sup>5:107</sup> <sup>5:108</sup> <sup>5:109</sup> <sup>5:110</sup> <sup>5:111</sup> <sup>5:112</sup> <sup>5:113</sup> <sup>5:114</sup> <sup>5:115</sup> <sup>5:116</sup> <sup>5:117</sup> <sup>5:118</sup> <sup>5:119</sup> <sup>5:120</sup> <sup>5:121</sup> <sup>5:122</sup> <sup>5:123</sup> <sup>5:124</sup> <sup>5:125</sup> <sup>5:126</sup> <sup>5:127</sup> <sup>5:128</sup> <sup>5:129</sup> <sup>5:130</sup> <sup>5:131</sup> <sup>5:132</sup> <sup>5:133</sup> <sup>5:134</sup> <sup>5:135</sup> <sup>5:136</sup> <sup>5:137</sup> <sup>5:138</sup> <sup>5:139</sup> <sup>5:140</sup> <sup>5:141</sup> <sup>5:142</sup> <sup>5:143</sup> <sup>5:144</sup> <sup>5:145</sup> <sup>5:146</sup> <sup>5:147</sup> <sup>5:148</sup> <sup>5:149</sup> <sup>5:150</sup> <sup>5:151</sup> <sup>5:152</sup> <sup>5:153</sup> <sup>5:154</sup> <sup>5:155</sup> <sup>5:156</sup> <sup>5:157</sup> <sup>5:158</sup> <sup>5:159</sup> <sup>5:160</sup> <sup>5:161</sup> <sup>5:162</sup> <sup>5:163</sup> <sup>5:164</sup> <sup>5:165</sup> <sup>5:166</sup> <sup>5:167</sup> <sup>5:168</sup> <sup>5:169</sup> <sup>5:170</sup> <sup>5:171</sup> <sup>5:172</sup> <sup>5:173</sup> <sup>5:174</sup> <sup>5:175</sup> <sup>5:176</sup> <sup>5:177</sup> <sup>5:178</sup> <sup>5:179</sup> <sup>5:180</sup> <sup>5:181</sup> <sup>5:182</sup> <sup>5:183</sup> <sup>5:184</sup> <sup>5:185</sup> <sup>5:186</sup> <sup>5:187</sup> <sup>5:188</sup> <sup>5:189</sup> <sup>5:190</sup> <sup>5:191</sup> <sup>5:192</sup> <sup>5:193</sup> <sup>5:194</sup> <sup>5:195</sup> <sup>5:196</sup> <sup>5:197</sup> <sup>5:198</sup> <sup>5:199</sup> <sup>5:200</sup> <sup>5:201</sup> <sup>5:202</sup> <sup>5:203</sup> <sup>5:204</sup> <sup>5:205</sup> <sup>5:206</sup> <sup>5:207</sup> <sup>5:208</sup> <sup>5:209</sup> <sup>5:210</sup> <sup>5:211</sup> <sup>5:212</sup> <sup>5:213</sup> <sup>5:214</sup> <sup>5:215</sup> <sup>5:216</sup> <sup>5:217</sup> <sup>5:218</sup> <sup>5:219</sup> <sup>5:220</sup> <sup>5:221</sup> <sup>5:222</sup> <sup>5:223</sup> <sup>5:224</sup> <sup>5:225</sup> <sup>5:226</sup> <sup>5:227</sup> <sup>5:228</sup> <sup>5:229</sup> <sup>5:230</sup> <sup>5:231</sup> <sup>5:232</sup> <sup>5:233</sup> <sup>5:234</sup> <sup>5:235</sup> <sup>5:236</sup> <sup>5:237</sup> <sup>5:238</sup> <sup>5:239</sup> <sup>5:240</sup> <sup>5:241</sup> <sup>5:242</sup> <sup>5:243</sup> <sup>5:244</sup> <sup>5:245</sup> <sup>5:246</sup> <sup>5:247</sup> <sup>5:248</sup> <sup>5:249</sup> <sup>5:250</sup> <sup>5:251</sup> <sup>5:252</sup> <sup>5:253</sup> <sup>5:254</sup> <sup>5:255</sup> <sup>5:256</sup> <sup>5:257</sup> <sup>5:258</sup> <sup>5:259</sup> <sup>5:260</sup> <sup>5:261</sup> <sup>5:262</sup> <sup>5:263</sup> <sup>5:264</sup> <sup>5:265</sup> <sup>5:266</sup> <sup>5:267</sup> <sup>5:268</sup> <sup>5:269</sup> <sup>5:270</sup> <sup>5:271</sup> <sup>5:272</sup> <sup>5:273</sup> <sup>5:274</sup> <sup>5:275</sup> <sup>5:276</sup> <sup>5:277</sup> <sup>5:278</sup> <sup>5:279</sup> <sup>5:280</sup> <sup>5:281</sup> <sup>5:282</sup> <sup>5:283</sup> <sup>5:284</sup> <sup>5:285</sup> <sup>5:286</sup> <sup>5:287</sup> <sup>5:288</sup> <sup>5:289</sup> <sup>5:290</sup> <sup>5:291</sup> <sup>5:292</sup> <sup>5:293</sup> <sup>5:294</sup> <sup>5:295</sup> <sup>5:296</sup> <sup>5:297</sup> <sup>5:298</sup> <sup>5:299</sup> <sup>5:300</sup> <sup>5:301</sup> <sup>5:302</sup> <sup>5:303</sup> <sup>5:304</sup> <sup>5:305</sup> <sup>5:306</sup> <sup>5:307</sup> <sup>5:308</sup> <sup>5:309</sup> <sup>5:310</sup> <sup>5:311</sup> <sup>5:312</sup> <sup>5:313</sup> <sup>5:314</sup> <sup>5:315</sup> <sup>5:316</sup> <sup>5:317</sup> <sup>5:318</sup> <sup>5:319</sup> <sup>5:320</sup> <sup>5:321</sup> <sup>5:322</sup> <sup>5:323</sup> <sup>5:324</sup> <sup>5:325</sup> <sup>5:326</sup> <sup>5:327</sup> <sup>5:328</sup> <sup>5:329</sup> <sup>5:330</sup> <sup>5:331</sup> <sup>5:332</sup> <sup>5:333</sup> <sup>5:334</sup> <sup>5:335</sup> <sup>5:336</sup> <sup>5:337</sup> <sup>5:338</sup> <sup>5:339</sup> <sup>5:340</sup> <sup>5:341</sup> <sup>5:342</sup> <sup>5:343</sup> <sup>5:344</sup> <sup>5:345</sup> <sup>5:346</sup> <sup>5:347</sup> <sup>5:348</sup> <sup>5:349</sup> <sup>5:350</sup> <sup>5:351</sup> <sup>5:352</sup> <sup>5:353</sup> <sup>5:354</sup> <sup>5:355</sup> <sup>5:356</sup> <sup>5:357</sup> <sup>5:358</sup> <sup>5:359</sup> <sup>5:360</sup> <sup>5:361</sup> <sup>5:362</sup> <sup>5:363</sup> <sup>5:364</sup> <sup>5:365</sup> <sup>5:366</sup> <sup>5:367</sup> <sup>5:368</sup> <sup>5:369</sup> <sup>5:370</sup> <sup>5:371</sup> <sup>5:372</sup> <sup>5:373</sup> <sup>5:374</sup> <sup>5:375</sup> <sup>5:376</sup> <sup>5:377</sup> <sup>5:378</sup> <sup>5:379</sup> <sup>5:380</sup> <sup>5:381</sup> <sup>5:382</sup> <sup>5:383</sup> <sup>5:384</sup> <sup>5:385</sup> <sup>5:386</sup> <sup>5:387</sup> <sup>5:388</sup> <sup>5:389</sup> <sup>5:390</sup> <sup>5:391</sup> <sup>5:392</sup> <sup>5:393</sup> <sup>5:394</sup> <sup>5:395</sup> <sup>5:396</sup> <sup>5:397</sup> <sup>5:398</sup> <sup>5:399</sup> <sup>5:400</sup> <sup>5:401</sup> <sup>5:402</sup> <sup>5:403</sup> <sup>5:404</sup> <sup>5:405</sup> <sup>5:406</sup> <sup>5:407</sup> <sup>5:408</sup> <sup>5:409</sup> <sup>5:410</sup> <sup>5:411</sup> <sup>5:412</sup> <sup>5:413</sup> <sup>5:414</sup> <sup>5:415</sup> <sup>5:416</sup> <sup>5:417</sup> <sup>5:418</sup> <sup>5:419</sup> <sup>5:420</sup> <sup>5:421</sup> <sup>5:422</sup> <sup>5:423</sup> <sup>5:424</sup> <sup>5:425</sup> <sup>5:426</sup> <sup>5:427</sup> <sup>5:428</sup> <sup>5:429</sup> <sup>5:430</sup> <sup>5:431</sup> <sup>5:432</sup> <sup>5:433</sup> <sup>5:434</sup> <sup>5:435</sup> <sup>5:436</sup> <sup>5:437</sup> <sup>5:438</sup> <sup>5:439</sup> <sup>5:440</sup> <sup>5:441</sup> <sup>5:442</sup> <sup>5:443</sup> <sup>5:444</sup> <sup>5:445</sup> <sup>5:446</sup> <sup>5:447</sup> <sup>5:448</sup> <sup>5:449</sup> <sup>5:450</sup> <sup>5:451</sup> <sup>5:452</sup> <sup>5:453</sup> <sup>5:454</sup> <sup>5:455</sup> <sup>5:456</sup> <sup>5:457</sup> <sup>5:458</sup> <sup>5:459</sup> <sup>5:460</sup> <sup>5:461</sup> <sup>5:462</sup> <sup>5:463</sup> <sup>5:464</sup> <sup>5:465</sup> <sup>5:466</sup> <sup>5:467</sup> <sup>5:468</sup> <sup>5:469</sup> <sup>5:470</sup> <sup>5:471</sup> <sup>5:472</sup> <sup>5:473</sup> <sup>5:474</sup> <sup>5:475</sup> <sup>5:476</sup> <sup>5:477</sup> <sup>5:478</sup> <sup>5:479</sup> <sup>5:480</sup> <sup>5:481</sup> <sup>5:482</sup> <sup>5:483</sup> <sup>5:484</sup> <sup>5:485</sup> <sup>5:486</sup> <sup>5:487</sup> <sup>5:488</sup> <sup>5:489</sup> <sup>5:490</sup> <sup>5:491</sup> <sup>5:492</sup> <sup>5:493</sup> <sup>5:494</sup> <sup>5:495</sup> <sup>5:496</sup> <sup>5:497</sup> <sup>5:498</sup> <sup>5:499</sup> <sup>5:500</sup> <sup>5:501</sup> <sup>5:502</sup> <sup>5:503</sup> <sup>5:504</sup> <sup>5:505</sup> <sup>5:506</sup> <sup>5:507</sup> <sup>5:508</sup> <sup>5:509</sup> <sup>5:510</sup> <sup>5:511</sup> <sup>5:512</sup> <sup>5:513</sup> <sup>5:514</sup> <sup>5:515</sup> <sup>5:516</sup> <sup>5:517</sup> <sup>5:518</sup> <sup>5:519</sup> <sup>5:520</sup> <sup>5:521</sup> <sup>5:522</sup> <sup>5:523</sup> <sup>5:524</sup> <sup>5:525</sup> <sup>5:526</sup> <sup>5:527</sup> <sup>5:528</sup> <sup>5:529</sup> <sup>5:530</sup> <sup>5:531</sup> <sup>5:532</sup> <sup>5:533</sup> <sup>5:534</sup> <sup>5:535</sup> <sup>5:536</sup> <sup>5:537</sup> <sup>5:538</sup> <sup>5:539</sup> <sup>5:540</sup> <sup>5:541</sup> <sup>5:542</sup> <sup>5:543</sup> <sup>5:544</sup> <sup>5:545</sup> <sup>5:546</sup> <sup>5:547</sup> <sup>5:548</sup> <sup>5:549</sup> <sup>5:550</sup> <sup>5:551</sup> <sup>5:552</sup> <sup>5:553</sup> <sup>5:554</sup> <sup>5:555</sup> <sup>5:556</sup> <sup>5:557</sup> <sup>5:558</sup> <sup>5:559</sup> <sup>5:560</sup> <sup>5:561</sup> <sup>5:562</sup> <sup>5:563</sup> <sup>5:564</sup> <sup>5:565</sup> <sup>5:566</sup> <sup>5:567</sup> <sup>5:568</sup> <sup>5:569</sup> <sup>5:570</sup> <sup>5:571</sup> <sup>5:572</sup> <sup>5:573</sup> <sup>5:574</sup> <sup>5:575</sup> <sup>5:576</sup> <sup>5:577</sup> <sup>5:578</sup> <sup>5:579</sup> <sup>5:580</sup> <sup>5:581</sup> <sup>5:582</sup> <sup>5:583</sup> <sup>5:584</sup> <sup>5:585</sup> <sup>5:586</sup> <sup>5:587</sup> <sup>5:588</sup> <sup>5:589</sup> <sup>5:590</sup> <sup>5:591</sup> <sup>5:592</sup> <sup>5:593</sup> <sup>5:594</sup> <sup>5:595</sup> <sup>5:596</sup> <sup>5:597</sup> <sup>5:598</sup> <sup>5:599</sup> <sup>5:600</sup> <sup>5:601</sup> <sup>5:602</sup> <sup>5:603</sup> <sup>5:604</sup> <sup>5:605</sup> <sup>5:606</sup> <sup>5:607</sup> <sup>5:608</sup> <sup>5:609</sup> <sup>5:610</sup> <sup>5:611</sup> <sup>5:612</sup> <sup>5:613</sup> <sup>5:614</sup> <sup>5:615</sup> <sup>5:616</sup> <sup>5:617</sup> <sup>5:618</sup> <sup>5:619</sup> <sup>5:620</sup> <sup>5:621</sup> <sup>5:622</sup> <sup>5:623</sup> <sup>5:624</sup> <sup>5:625</sup> <sup>5:626</sup> <sup>5:627</sup> <sup>5:628</sup> <sup>5:629</sup> <sup>5:630</sup> <sup>5:631</sup> <sup>5:632</sup> <sup>5:633</sup> <sup>5:634</sup> <sup>5:635</sup> <sup>5:636</sup> <sup>5:637</sup> <sup>5:638</sup> <sup>5:639</sup> <sup>5:640</sup> <sup>5:641</sup> <sup>5:642</sup> <sup>5:643</sup> <sup>5:644</sup> <sup>5:645</sup> <sup>5:646</sup> <sup>5:647</sup> <sup>5:648</sup> <sup>5:649</sup> <sup>5:650</sup> <sup>5:651</sup> <sup>5:652</sup> <sup>5:653</sup> <sup>5:654</sup> <sup>5:655</sup> <sup>5:656</sup> <sup>5:657</sup> <sup>5:658</sup> <sup>5:659</sup> <sup>5:660</sup> <sup>5:661</sup> <sup>5:662</sup> <sup>5:663</sup> <sup>5:664</sup> <sup>5:665</sup> <sup>5:666</sup> <sup>5:667</sup> <sup>5:668</sup> <sup>5:669</sup> <sup>5:670</sup> <sup>5:671</sup> <sup>5:672</sup> <sup>5:673</sup> <sup>5:674</sup> <sup>5:675</sup> <sup>5:676</sup> <sup>5:677</sup> <sup>5:678</sup> <sup>5:679</sup> <sup>5:680</sup> <sup>5:681</sup> <sup>5:682</sup> <sup>5:683</sup> <sup>5:684</sup> <sup>5:685</sup> <sup>5:686</sup> <sup>5:687</sup> <sup>5:688</sup> <sup>5:689</sup> <sup>5:690</sup> <sup>5:691</sup> <sup>5:692</sup> <sup>5:693</sup> <sup>5:694</sup> <sup>5:695</sup> <sup>5:696</sup> <sup>5:697</sup> <sup>5:698</sup> <sup>5:699</sup> <sup>5:700</sup> <sup>5:701</sup> <sup>5:702</sup> <sup>5:703</sup> <sup>5:704</sup> <sup>5:705</sup> <sup>5:706</sup> <sup>5:707</sup> <sup>5:708</sup> <sup>5:709</sup> <sup>5:710</sup> <sup>5:711</sup> <sup>5:712</sup> <sup>5:713</sup> <sup>5:714</sup> <sup>5:715</sup> <sup>5:716</sup> <sup>5:717</sup> <sup>5:718</sup> <sup>5:719</sup> <sup>5:720</sup> <sup>5:721</sup> <sup>5:722</sup> <sup>5:723</sup> <sup>5:724</sup> <sup>5:725</sup> <sup>5:726</sup> <sup>5:727</sup> <sup>5:728</sup> <sup>5:729</sup> <sup>5:730</sup> <sup>5:731</sup> <sup>5:732</sup> <sup>5:733</sup> <sup>5:734</sup> <sup>5:735</sup> <sup>5:736</sup> <sup>5:737</sup> <sup>5:738</sup> <sup>5:739</sup> <sup>5:740</sup> <sup>5:741</sup> <sup>5:742</sup> <sup>5:743</sup> <sup>5:744</sup> <sup>5:745</sup> <sup>5:746</sup> <sup>5:747</sup> <sup>5:748</sup> <sup>5:749</sup> <sup>5:750</sup> <sup>5:751</sup> <sup>5:752</sup> <sup>5:753</sup> <sup>5:754</sup> <sup>5:755</sup> <sup>5:756</sup> <sup>5:757</sup> <sup>5:758</sup> <sup>5:759</sup> <sup>5:760</sup> <sup>5:761</sup> <sup>5:762</sup> <sup>5:763</sup> <sup>5:764</sup> <sup>5:765</sup> <sup>5:766</sup> <sup>5:767</sup> <sup>5:768</sup> <sup>5:769</sup> <sup>5:770</sup> <sup>5:771</sup> <sup>5:772</sup> <sup>5:773</sup> <sup>5:774</sup> <sup>5:775</sup> <sup>5:776</sup> <sup>5:777</sup> <sup>5:778</sup> <sup>5:779</sup> <sup>5:780</sup> <sup>5:781</sup> <sup>5:782</sup> <sup>5:783</sup> <sup>5:784</sup> <sup>5:785</sup> <sup>5:786</sup> <sup>5:787</sup> <sup>5:788</sup> <sup>5:789</sup> <sup>5:790</sup> <sup>5:791</sup> <sup>5:792</sup> <sup>5:793</sup> <sup>5:794</sup> <sup>5:795</sup> <sup>5:796</sup> <sup>5:797</sup> <sup>5:798</sup> <sup>5:799</sup> <sup>5:800</sup> <sup>5:801</sup> <sup>5:802</sup> <sup>5:803</sup> <sup>5:804</sup> <sup>5:805</sup> <sup>5:806</sup> <sup>5:807</sup> <sup>5:808</sup> <sup>5:809</sup> <sup>5:810</sup> <sup>5:811</sup> <sup>5:812</sup> <sup>5:813</sup> <sup>5:814</sup> <sup>5:815</sup> <sup>5:816</sup> <sup>5:817</sup> <sup>5:818</sup> <sup>5:819</sup> <sup>5:820</sup> <sup>5:821</sup> <sup>5:822</sup> <sup>5:823</sup> <sup>5:824</sup> <sup>5:825</sup> <sup>5:826</sup> <sup>5:827</sup> <sup>5:828</sup> <sup>5:829</sup> <sup>5:830</sup> <sup>5:831</sup> <sup>5:832</sup> <sup>5:833</sup> <sup>5:834</sup> <sup>5:835</sup> <sup>5:836</sup> <sup>5:837</sup> <sup>5:838</sup> <sup>5:839</sup> <sup>5:840</sup> <sup>5:841</sup> <sup>5:842</sup> <sup>5:843</sup> <sup>5:844</sup> <sup>5:845</sup> <sup>5:846</sup> <sup>5:847</sup> <sup>5:848</sup> <sup>5:849</sup> <sup>5:850</sup> <sup>5:851</sup> <sup>5:852</sup> <sup>5:853</sup> <sup>5:854</sup> <sup>5:855</sup> <sup>5:856</sup> <sup>5:857</sup> <sup>5:858</sup> <sup>5:859</sup> <sup>5:860</sup> <sup>5:861</sup> <sup>5:862</sup> <sup>5:863</sup> <sup>5:864</sup> <sup>5:865</sup> <sup>5:866</sup> <sup>5:867</sup> <sup>5:868</sup> <sup>5:869</sup> <sup>5:870</sup> <sup>5:871</sup> <sup>5:872</sup> <sup>5:873</sup> <sup>5:874</sup> <sup>5:875</sup> <sup>5:876</sup> <sup>5:877</sup> <sup>5:878</sup> <sup>5:879</sup> <sup>5:880</sup> <sup>5:881</sup> <sup>5:882</sup> <sup>5:883</sup> <sup>5:884</sup> <sup>5:885</sup> <sup>5:886</sup> <sup>5:887</sup> <sup>5:888</sup> <sup>5:889</sup> <sup>5:890</sup> <sup>5:891</sup> <sup>5:892</sup> <sup>5:893</sup> <sup>5:894</sup> <sup>5:895</sup> <sup>5:896</sup> <sup>5:897</sup> <sup>5:898</sup> <sup>5:899</sup> <sup>5:900</sup> <sup>5:901</sup> <sup>5:902</sup> <sup>5:903</sup> <sup>5:904</sup> <sup>5:905</sup> <sup>5:906</sup> <sup>5:907</sup> <sup>5:908</sup> <sup>5:909</sup> <sup>5:910</sup> <sup>5:911</sup> <sup>5:912</sup> <sup>5:913</sup> <sup>5:914</sup> <sup>5:915</sup> <sup>5:916</sup> <sup>5:917</sup> <sup>5:918</sup> <sup>5:919</sup> <sup>5:920</sup> <sup>5:921</sup> <sup>5:922</sup> <sup>5:923</sup> <sup>5:924</sup> <sup>5:925</sup> <sup>5:926</sup> <sup>5:927</sup> <sup>5:928</sup> <sup>5:929</sup> <sup>5:930</sup> <sup>5:931</sup> <sup>5:932</sup> <sup>5:933</sup> <sup>5:934</sup> <sup>5:935</sup> <sup>5:936</sup> <sup>5:937</sup> <sup>5:938</sup> <sup>5:939</sup> <sup>5:940</sup> <sup>5:941</sup> <sup>5:942</sup> <sup>5:943</sup> <sup>5:944</sup> <sup>5:945</sup> <sup>5:946</sup> <sup>5:947</sup> <sup>5:948</sup> <sup>5:949</sup> <sup>5:950</sup> <sup>5:951</sup> <sup>5:952</sup> <sup>5:953</sup> <sup>5:954</sup> <sup>5:955</sup> <sup>5:956</sup> <sup>5:957</sup> <sup>5:958</sup> <sup>5:959</sup> <sup>5:960</sup> <sup>5:961</sup> <sup>5:962</sup> <sup>5:963</sup> <sup>5:964</sup> <sup>5:965</sup> <sup>5:966</sup> <sup>5:967</sup> <sup>5:968</sup> <sup>5:969</sup> <sup>5:970</sup> <sup>5:971</sup> <sup>5:972</sup> <sup>5:973</sup> <sup>5:974</sup> <sup>5:975</sup> <sup>5:976</sup> <sup>5:977</sup> <sup>5:978</sup> <sup>5:979</sup> <sup>5:980</sup> <sup>5:981</sup> <sup>5:982</sup> <sup>5:983</sup> <sup>5:984</sup> <sup>5:985</sup> <sup>5:986</sup> <sup>5:987</sup> <sup>5:988</sup> <sup>5:989</sup> <sup>5:990</sup> <sup>5:991</sup> <sup>5:992</sup> <sup>5:993</sup> <sup>5:994</sup> <sup>5:995</sup> <sup>5:996</sup> <sup>5:997</sup> <sup>5:998</sup> <sup>5:999</sup> <sup>5:1000</sup>

9 और जितनी पवित्र की हुई वस्तुएँ इस्राएली उठाई हुई भेंट करके याजक के पास लाएँ, वे उसी की हों;

10 सब मनुष्यों की पवित्र की हुई वस्तुएँ याजक की ठहरें; कोई जो कुछ याजक को दे वह उसका ठहरे।”

11 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

12 “इस्राएलियों से कह, कि यदि किसी मनुष्य की

स्त्री बुरी चाल चलकर उससे विश्वासघात करे,

13 और कोई पुरुष उसके साथ कुकर्म करे, परन्तु यह बात उसके पति से छिपी हो और खुली न हो, और वह अशुद्ध हो गई, परन्तु न तो उसके विरुद्ध कोई साक्षी हो, और न कुकर्म करते पकड़ी गई हो;

14 और उसके पति के मन में संदेह उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो; या उसके मन में <sup>5:14</sup> <sup>5:21</sup> <sup>5:23</sup> <sup>5:24</sup> <sup>5:25</sup> <sup>5:26</sup> <sup>5:27</sup> <sup>5:28</sup> <sup>5:29</sup> <sup>5:30</sup> <sup>5:31</sup> <sup>5:32</sup> <sup>5:33</sup> <sup>5:34</sup> <sup>5:35</sup> <sup>5:36</sup> <sup>5:37</sup> <sup>5:38</sup> <sup>5:39</sup> <sup>5:40</sup> <sup>5:41</sup> <sup>5:42</sup> <sup>5:43</sup> <sup>5:44</sup> <sup>5:45</sup> <sup>5:46</sup> <sup>5:47</sup> <sup>5:48</sup> <sup>5:49</sup> <sup>5:50</sup> <sup>5:51</sup> <sup>5:52</sup> <sup>5:53</sup> <sup>5:54</sup> <sup>5:55</sup> <sup>5:56</sup> <sup>5:57</sup> <sup>5:58</sup> <sup>5:59</sup> <sup>5:60</sup> <sup>5:61</sup> <sup>5:62</sup> <sup>5:63</sup> <sup>5:64</sup> <sup>5:65</sup> <sup>5:66</sup> <sup>5:67</sup> <sup>5:68</sup> <sup>5:69</sup> <sup>5:70</sup> <sup>5:71</sup> <sup>5:72</sup> <sup>5:73</sup> <sup>5:74</sup> <sup>5:75</sup> <





23 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूआर के पुत्र नतनेल की यही भेंट थी।

24 और तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब यह भेंट ले आया,

25 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

26 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

27 होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

28 पापबलि के लिये एक बकरा;

29 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। हेलोन के पुत्र एलीआब की यही भेंट थी।

30 और चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर यह भेंट ले आया,

31 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

32 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

33 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

34 पापबलि के लिये एक बकरा;

35 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। शदेऊर के पुत्र एलीसूर की यही भेंट थी।

36 पाँचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशद्वै का पुत्र शलूमीएल यह भेंट ले आया,

37 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

38 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

39 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

40 पापबलि के लिये एक बकरा;

41 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूरीशद्वै के पुत्र शलूमीएल की यही भेंट थी।

42 और छठवें दिन गादियों का प्रधान दूएल का पुत्र एल्यासाप यह भेंट ले आया,

43 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

44 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

45 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

46 पापबलि के लिये एक बकरा;

47 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। दूएल के पुत्र एल्यासाप की यही भेंट थी।

48 सातवें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा यह भेंट ले आया,

49 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

50 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

51 होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

52 पापबलि के लिये एक बकरा;

53 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा की यही भेंट थी।

54 आठवें दिन मनशशेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेंट ले आया,

55 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

56 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

57 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

58 पापबलि के लिये एक बकरा;



59 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। पदासूर के पुत्र गम्म्लीएल की यही भेंट थी।

60 नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेंट ले आया,

61 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

62 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

63 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

64 पापबलि के लिये एक बकरा;

65 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। गिदोनी के पुत्र अबीदान की यही भेंट थी।

66 दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्वै का पुत्र अहीएजेर यह भेंट ले आया,

67 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

68 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

69 होमबलि के लिये बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

70 पापबलि के लिये एक बकरा;

71 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीशद्वै के पुत्र अहीएजेर की यही भेंट थी।

72 ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का पुत्र पगीएल यह भेंट ले आया।

73 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

74 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

75 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

76 पापबलि के लिये एक बकरा;

77 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। ओक्रान के पुत्र पगीएल की यही भेंट थी।

78 बारहवें दिन नप्तालियों का प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेंट ले आया,

79 अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

80 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

81 होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ्रा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

82 पापबलि के लिये एक बकरा;

83 और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ्रे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। एनान के पुत्र अहीरा की यही भेंट थी।

84 वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल के प्रधानों की ओर से उसके संस्कार की भेंट यही हुई, अर्थात् चाँदी के बारह परात, चाँदी के बारह कटोरे, और सोने के बारह धूपदान।

85 एक-एक चाँदी का परात एक सौ तीस शेकेल का, और एक-एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था; और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से ये सब चाँदी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल के थे।

86 फिर धूप से भरे हुए सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से दस-दस शेकेल के थे, वे सब धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे।

87 फिर होमबलि के लिये सब मिलाकर बारह बछड़े, बारह मेढ्रे, और एक-एक वर्ष के बारह भेड़ी के बच्चे, अपने-अपने अन्नबलि सहित थे; फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे;

88 और मेलबलि के लिये सब मिलाकर चौबीस बैल, और साठ मेढ्रे, और साठ बकरे, और एक-एक वर्ष के साठ भेड़ी के बच्चे थे। वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके संस्कार की भेंट यही हुई।

89 और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तम्बू में गया, तब उसने प्रायश्चित्त के ढकने पर से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करूबों के मध्य में से उसकी आवाज सुनी जो उससे बातें कर रहा था; और उसने (यहोवा) उससे बातें की।

## 8

११११११ ११ १११११ ११ १११११

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,





3 और जब वे दोनों फूँकी जाएँ, तब सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर तेरे पास इकट्ठी हो जाएँ।

4 यदि एक ही तुरही फूँकी जाए, तो प्रधान लोग जो इस्राएल के हजारों के मुख्य पुरुष हैं तेरे पास इकट्ठे हो जाएँ।

5 जब तुम लोग साँस बाँधकर फूँको, तो पूर्व दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो।

6 और जब तुम दूसरी बार साँस बाँधकर फूँको, तब दक्षिण दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो। उनके प्रस्थान करने के लिये वे साँस बाँधकर फूँकें।

7 जब लोगों को इकट्ठा करके सभा करनी हो तब भी फूँकना परन्तु साँस बाँधकर नहीं।

8 और ~~१०:१० १० १०:१० १० १०~~ जो याजक हैं वे उन तुरहियों को फूँका करें। यह बात तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सर्वदा की विधि रहे।

9 और जब तुम अपने देश में किसी सतानेवाले बैरी से लड़ने को निकलो, तब तुरहियों को साँस बाँधकर फूँकना, तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा, और तुम अपने शत्रुओं से बचाए जाओगे।

10 अपने आनन्द के दिन में, और अपने नियत पर्वों में, और महीनों के आदि में, अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ उन तुरहियों को फूँकना; इससे तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

~~१०:१० १० १०:१० १० १०~~

11 दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साक्षी के निवास के तम्बू पर से उठ गया,

12 तब इस्राएली सीनै के जंगल में से निकलकर प्रस्थान करके निकले; और बादल पारान नामक जंगल में ठहर गया।

13 उनका प्रस्थान यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी आरम्भ हुआ।

14 और सबसे पहले तो यहूदियों की छावनी के झण्डे का प्रस्थान हुआ, और वे दल बाँधकर चले; और उनका सेनापति अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था।

15 और इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर का पुत्र नतनेल था।

16 और जबूलूनियों के गोत्र का सेनापति हेलोन का पुत्र एलीआब था।

17 तब निवास का तम्बू उतारा गया, और गेशोनियों और मरारियों ने जो निवास के तम्बू को उठाते थे प्रस्थान किया।

18 फिर रूबेन की छावनी के झण्डे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति शदेऊर का पुत्र एलीसूर था।

19 और शिमोनियों के गोत्र का सेनापति सूरीशद्वै का पुत्र शलूमीएल था।

20 और गादियों के गोत्र का सेनापति दूएल का पुत्र एल्यासाप था।

21 तब कहातियों ने पवित्र वस्तुओं को उठाए हुए प्रस्थान किया, और उनके पहुँचने तक गेशोनियों और मरारियों ने निवास के तम्बू को खड़ा कर दिया।

22 फिर एप्रैमियों की छावनी के झण्डे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था।

23 और मनश्शेइयों के गोत्र का सेनापति पदासूर का पुत्र गम्लीएल था।

24 और बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी का पुत्र अबीदान था।

25 फिर दानियों की छावनी जो सब छावनियों के पीछे थी, उसके झण्डे का प्रस्थान हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अम्मीशद्वै का पुत्र अहीएजेर था।

26 और आशेरियों के गोत्र का सेनापति ओक्रान का पुत्र पगीएल था।

27 और नप्तालियों के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा था।

28 इस्राएली इसी प्रकार अपने-अपने दलों के अनुसार प्रस्थान करते, और आगे बढ़ा करते थे।

29 मूसा ने अपने ससुर रूएल मिद्यानी के पुत्र होबाब से कहा, “हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिसके विषय में यहोवा ने कहा है, मैं उसे तुम को दूँगा; इसलिए तू भी हमारे संग चल, और हम तेरी भलाई करेंगे; क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के विषय में भला ही कहा है।”

30 होबाब ने उसे उत्तर दिया, “मैं नहीं जाऊँगा; मैं अपने देश और कुटुम्बियों में लौट जाऊँगा।”

31 फिर मूसा ने कहा, “हमको न छोड़, क्योंकि जंगल में कहाँ-कहाँ डेरा खड़ा करना चाहिये, यह तुझे ही मालूम है, ~~१० १०:१० १० १०:१० १० १०~~।”

† 10:8 ~~१०:१० १० १०:१०~~: ये तुरहियां परमेश्वर की वाणी का चिन्ह थीं, अतः केवल पुरोहित उनको काम में लें। इस समय हारून के केवल दो ही पुत्र थे। ‡ 10:31 ~~१० १०:१० १० १०:१० १० १०~~: होबाब उन स्थानों को बताता था जहाँ पानी ईंधन तथा चारागाह थीं और उन्हें आँधियों की चेतावनी देता था

32 और यदि तू हमारे संग चले, तो निश्चय जो भलाई यहोवा हम से करेगा उसी के अनुसार हम भी तुझ से वैसा ही करेंगे।”

33 फिर इस्राएलियों ने यहोवा के पर्वत से प्रस्थान करके तीन दिन की यात्रा की; और उन तीनों दिनों के मार्ग में यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके लिये विश्राम का स्थान ढूँढता हुआ उनके आगे-आगे चलता रहा।

34 और जब वे छावनी के स्थान से प्रस्थान करते थे तब दिन भर यहोवा का बादल उनके ऊपर छाया रहता था।

35 और जब जब सन्दूक का प्रस्थान होता था तब-तब मूसा यह कहा करता था, “हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तितर-बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे सामने से भाग जाएँ।”

36 और जब जब वह ठहर जाता था तब-तब मूसा कहा करता था, “हे यहोवा, हजारों-हजार इस्राएलियों में लौटकर आ जा।”

## 11

1 फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; अतः यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी।

2 तब लोग मूसा के पास आकर चिल्लाए; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई,

3 और उस स्थान का नाम **पड़ा**, क्योंकि यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी थी।

4 फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी, वह बेहतर भोजन की लालसा करने लगी; और फिर इस्राएली भी रोने और कहने लगे, “हमें माँस खाने को कौन देगा? **(1 10:6)**

5 हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंट-मेंत खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी;

6 परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है, यहाँ पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता।”

7 मन्ना तो धनिये के समान था, और उसका रंग रूप मोती के समान था।

8 लोग इधर-उधर जाकर उसे बटोरते, और चक्की में पीसते या ओखली में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और

उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए के समान था।

9 और रात को छावनी में ओस पड़ती थी तब उसके साथ मन्ना भी गिरता था। **(6:31)**

10 और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने-अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना; और यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी उनका बुड़बुड़ाना बुरा लगा।

11 तब मूसा ने यहोवा से कहा, “तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है? और क्या कारण है कि मैंने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तूने इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला है?”

12 क्या ये सब लोग मेरी ही कोख में पड़े थे? क्या मैं ही ने उनको उत्पन्न किया, जो तू मुझसे कहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद में उठाए-उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाकर उस देश में ले जाऊँ, जिसके देने की शपथ तूने उनके पूर्वजों से खाई है?

13 मुझे इतना माँस कहाँ से मिले कि इन सब लोगों को दूँ? ये तो यह कह-कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमें माँस खाने को दे।

14 मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है।

15 और यदि तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिससे मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊँ।”

16 यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के पुरनिये और उनके सरदार हैं और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े हों।

17 तब मैं उतरकर तुझ से वहाँ बातें करूँगा; और उनमें समवाऊँगा; और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा।

18 और लोगों से कह, ‘कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें माँस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह-कहकर रोए हो, कि हमें माँस खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही में भले थे। इसलिए यहोवा तुम को माँस खाने को देगा, और तुम खाओगे।’

\* **11:3** **पड़ा**: अर्थात् जलना, जहाँ आग लगी थी उस स्थान का नाम “तबेरा” पड़ा। † **11:17** **मिलापवाले तम्बू**: अर्थात् आत्मा में से अलग करके अर्थात् वे उसी दिव्य वरदान में से जो तुम में है अपना भाग प्राप्त करेंगे।

19 फिर तुम एक दिन, या दो, या पाँच, या दस, या बीस दिन ही नहीं,

20 परन्तु महीने भर उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम को उससे घृणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य में है तुच्छ जाना है, और उसके सामने यह कहकर रोए हो कि हम मिस्र से क्यों निकल आए?”

21 फिर मूसा ने कहा, “जिन लोगों के बीच मैं हूँ उनमें से छः लाख तो प्यादे ही हैं; और तूने कहा है कि मैं उन्हें इतना माँस दूँगा, कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे।

22 क्या वे सब भेड़-बकरी गाय-बैल उनके लिये मारे जाएँ कि उनको माँस मिले? या क्या समुद्र की सब मछलियाँ उनके लिये इकट्ठी की जाएँ, कि उनको माँस मिले?”

23 यहोवा ने मूसा से कहा, “क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा कि मेरा वचन जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।”

24 तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाई; और उनके पुरनियों में से सत्तर पुरुष इकट्ठा करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए।

25 तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें की, और जो आत्मा उसमें था उसमें से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया; और जब वह आत्मा उनमें आया तब **22 2222222222222222 2222 2222** परन्तु फिर और कभी न की।

26 परन्तु दो मनुष्य छावनी में रह गए थे, जिसमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी आत्मा आया; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में भविष्यद्वाणी करने लगे।

27 तब किसी जवान ने दौड़कर मूसा को बताया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में भविष्यद्वाणी कर रहे हैं।

28 तब नून का पुत्र यहोशू, जो मूसा का टहलुआ और उसके चुने हुए वीरों में से था, उसने मूसा से कहा, “हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे।”

29 मूसा ने उससे कहा, “क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग भविष्यद्वाक्ता होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभी में समवा देता!” **(1 2222. 14:5)**

30 तब फिर मूसा इस्राएल के पुरनियों समेत छावनी में चला गया।

**22222 222 2222222**

31 तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आँधी आई, और वह समुद्र से बटेरें उड़ाकर छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई, कि वे इधर-उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊँचे तक छा गए।

32 और लोगों ने उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे; जिसने कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया।

33 माँस उनके मुँह ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा।

34 और उस स्थान का नाम किब्रोतहत्तावा पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने माँस की लालसा की थी उनको वहाँ मिट्टी दी गई। **(1 2222. 10:6)**

35 फिर इस्राएली किब्रोतहत्तावा से प्रस्थान करके हसेरोत में पहुँचे, और वहीं रहे।

## 12

**2222 22 2222222222 22 2222222**

1 मूसा ने एक कूशी स्त्री के साथ विवाह कर लिया था। इसलिए मिर्याम और हारून उसकी उस विवाहिता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे;

2 उन्होंने कहा, “क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं की?” उनकी यह बात यहोवा ने सुनी।

3 **2222 22 2222222 22 22 222222222 22 2222222222 22 2222 22222 22222 22222 2222222 22 22\***

4 इसलिए यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और मिर्याम से कहा, “तुम तीनों मिलापवाले तम्बू के पास निकल आओ।” तब वे तीनों निकल आए।

5 तब यहोवा ने बादल के खम्भे में उतरकर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मिर्याम को बुलाया; अतः वे दोनों उसके पास निकल आए।

6 तब यहोवा ने कहा, “मेरी बातें सुनो यदि तुम में कोई भविष्यद्वाक्ता हो, तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आपको प्रगट करूँगा, या स्वप्न में उससे बातें करूँगा।

7 परन्तु मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घराने में विश्वासयोग्य है।

‡ **11:25** **22 2222222222222222 2222 2222**: पवित्र आत्मा की असाधारण प्रेरणा से उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की या उसकी इच्छा प्रगट की।

\* **12:3** **2222**.... **2222 2222 2222 2222222 22 22**: इन शब्दों द्वारा व्यक्त किया गया है कि मूसा द्वारा बदला न लेने का क्या कारण था और परिणामस्वरूप परमेश्वर ने ऐसी शीघ्रता से हस्तक्षेप किया। † **12:8** **2222-22222 22 2222222222 2222**: मूसा सीधा परमेश्वर से वचन ग्रहण करता था न कि स्वप्न और दर्शन के माध्यम से।

8 उससे मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु ~~१२:१२-१२:१२~~ ~~१२:१२-१२:१२~~ ~~१२:१२~~ बातें करता हूँ; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। इसलिए तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे?”

9 तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया;

10 तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मिर्याम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। और हारून ने मिर्याम की ओर दृष्टि की, और देखा कि वह कोढ़िन हो गई है।

11 तब हारून मूसा से कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, हम दोनों ने जो मूर्खता की वरन् पाप भी किया, यह पाप हम पर न लगने दे।

12 और मिर्याम को उस ~~१२:१२-१२:१२~~ ~~१२:१२-१२:१२~~ न रहने दे, जिसकी देह अपनी माँ के पेट से निकलते ही अधगली हो।”

13 अतः मूसा ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, “हे परमेश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर।”

14 यहोवा ने मूसा से कहा, “यदि उसके पिता ने उसके मुँह पर थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती? इसलिए वह सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह फिर भीतर आने पाए।”

15 अतः मिर्याम सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही, और जब तक मिर्याम फिर आने न पाई तब तक लोगों ने प्रस्थान न किया।

16 उसके बाद उन्होंने हसेरोत से प्रस्थान करके पारान नामक जंगल में अपने डेरे खड़े किए।

## 13

~~१३:१-१३:१~~ ~~१३:१-१३:१~~ ~~१३:१~~

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “कनान देश जिसे मैं इस्राएलियों को देता हूँ, उसका भेद लेने के लिये पुरुषों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र के एक-एक प्रधान पुरुष हों।”

3 यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरुषों को पारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्राएलियों के प्रधान थे।

4 उनके नाम ये हैं रूबेन के गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्मू;

5 शिमोन के गोत्र में से होरी का पुत्र शापात;

6 यहूदा के गोत्र में से यपुत्रे का पुत्र कालेब;

7 इस्राकार के गोत्र में से यूसुफ का पुत्र यिगाल;

8 एप्रैम के गोत्र में से नून का पुत्र होशे;

9 बिन्यामीन के गोत्र में से रापू का पुत्र पलती;

10 जबूलून के गोत्र में से सोदी का पुत्र गद्दीएल;

11 यूसुफ वंशियों में, मनश्शे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी;

12 दान के गोत्र में से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल;

13 आशेर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर;

14 नप्ताली के गोत्र में से वोप्सी का पुत्र नहूबी;

15 गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र गूएल।

16 जिन पुरुषों को मूसा ने देश का भेद लेने के लिये भेजा था उनके नाम ये ही हैं। और नून के पुत्र होशे का नाम मूसा ने यहोशू रखा।

17 उनको कनान देश के भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा, “इधर से, अर्थात् दक्षिण देश होकर जाओ,

18 और पहाड़ी देश में जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है, और उसमें बसे हुए लोगों को भी देखो कि वे बलवान हैं या निर्बल, थोड़े हैं या बहुत,

19 और जिस देश में वे बसे हुए हैं वह कैसा है, अच्छा या बुरा, और वे कैसी-कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं, और तम्बुओं में रहते हैं या गढ़ अथवा किलों में रहते हैं,

20 और वह देश कैसा है, उपजाऊ है या बंजर है, और उसमें वृक्ष हैं या नहीं। और तुम हियाव बाँधे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना।” वह समय पहली पक्की दाखों का था।

21 इसलिए वे चल दिए, और सीन नामक जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में है, सारे देश को देख-भाल कर उसका भेद लिया।

22 वे दक्षिण देश होकर चले, और हेब्रोन तक गए; वहाँ अहीमन, शेशै, और तल्मै नामक अनाकवंशी रहते थे। हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहले बसाया गया था।

23 तब वे ~~१३:१३-१३:१३~~ ~~१३:१३-१३:१३~~ ~~१३:१३~~ तक गए, और वहाँ से एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए।

24 इस्राएली वहाँ से जो दाखों का गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया।

~~१३:१३-१३:१३~~ ~~१३:१३-१३:१३~~ ~~१३:१३~~

25 ~~१३:१३-१३:१३~~ ~~१३:१३-१३:१३~~ ~~१३:१३~~ वे उस देश का भेद लेकर लौट आए।

‡ 12:12 ~~१२:१२-१२:१२~~ ~~१२:१२-१२:१२~~ ~~१२:१२~~: कुष्ठ रोग एक जीवित मृत्यु से कम नहीं था, पूरे शरीर में थोड़ा-थोड़ा सा विघटन, ताकि एक के बाद एक अंग वास्तव में क्षय हो और अलग हो जाए। \* 13:23 ~~१३:२३-१३:२३~~ ~~१३:२३-१३:२३~~ ~~१३:२३~~: कुछ विचारक इसे हेब्रोन निकट उत्तर की समृद्ध तराई कहते हैं। † 13:25 ~~१३:२५-१३:२५~~ ~~१३:२५-१३:२५~~ ~~१३:२५~~: निःसन्देह इस बीच उन्होंने देश का निरीक्षण कर लिया था।







43 वहाँ तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो, इसलिए वह तुम्हारे संग नहीं रहेगा।”

44 परन्तु वे ढिंढाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे।

45 तब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए।

## 15

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से कह कि **12 1212 1212 1212** **12 1212** **1212 1212**”, जो मैं तुम्हें देता हूँ,

3 और यहोवा के लिये क्या होमबलि, क्या मेलबलि, कोई हव्य चढाओं, चाहे वह विशेष मन्त्रत पूरी करने का हो चाहे स्वेच्छाबलि का हो, चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो, या वह चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरियों में का हो, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो;

4 तब उस होमबलि या मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे यहोवा के लिये चौथाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढाना,

5 और चौथाई हीन दाखमधु अर्घ करके देना।

6 और मेढे के बलि के साथ तिहाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढाना;

7 और उसका अर्घ यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई हीन दाखमधु देना।

8 और जब तू यहोवा को होमबलि या किसी विशेष मन्त्रत पूरी करने के लिये बलि या मेलबलि करके बछड़ा चढाए,

9 तब बछड़े का चढानेवाला उसके संग आधा हीन तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढाए।

10 और उसका अर्घ आधा हीन दाखमधु चढाए, वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य होगा।

11 “एक-एक बछड़े, या मेढे, या भेड़ के बच्चे, या बकरी के बच्चे के साथ इसी रीति चढावा चढाया जाए।

12 तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार एक-एक के साथ ऐसा ही किया करना।

13 जितने देशी हों वे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढाते समय ये काम इसी रीति से किया करें।

**1212 1212 1212 1212 1212 1212**

14 “और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, या तुम्हारी किसी पीढी में तुम्हारे बीच कोई रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढाना चाहे, तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह भी करे।

15 मण्डली के लिये, अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो; तुम्हारी पीढी-पीढी में यह सदा की विधि ठहरे, कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लिये ठहरता है।

16 तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम है।”

17 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

18 “इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि जब तुम उस देश में पहुँचो जहाँ मैं तुम को लिये जाता हूँ,

19 और उस देश की उपज का अन्न खाओ, तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट चढाया करो।

20 अपने पहले गुँधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढाना; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना।

21 अपनी पीढी-पीढी में अपने पहले गुँधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना।

**1212 1212 1212 1212 1212 1212**

22 “फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो,

23 अर्थात् जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और आगे की तुम्हारी पीढी-पीढी में उस दिन से उसने जितनी आज्ञाएँ मूसा के द्वारा दी हैं,

24 उसमें यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला होमबलि करके एक बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढाए, और पापबलि करके एक बकरा चढाए।

25 तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करे, और उनकी क्षमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप भूल से हुआ, और उन्होंने अपनी भूल के लिये अपना चढावा, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना पापबलि उसके सामने चढाया।

\* 15:2 **1212 1212 1212 1212 1212 1212**: युवा पीढी के इस्राएलियों को आशा बन्धाई गई कि वे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश अवश्य करेंगे।

26 इसलिए इस्राएलियों की सारी मण्डली का, और उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह पाप क्षमा किया जाएगा, क्योंकि वह सब लोगों के अनजाने में हुआ।

27 फिर यदि कोई मनुष्य भूल से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए।

28 और याजक भूल से पाप करनेवाले मनुष्य के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे; अतः इस प्रायश्चित्त के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जाएगा।

29 जो कोई भूल से कुछ करे, चाहे वह इस्राएलियों में देशी हो, चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो, सब के लिये तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो।

30 “परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो मनुष्य ढिंढाई

से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए।

31 वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालनेवाला है, इसलिए वह मनुष्य निश्चय नाश किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा।”

32 जब इस्राएली जंगल में रहते थे, उन दिनों एक

मनुष्य विश्राम के दिन लकड़ी बीनता हुआ मिला।

33 और जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको मूसा और हारून, और सारी मण्डली के पास ले गए।

34 उन्होंने उसको हवालात में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये वह प्रगट नहीं किया गया था।

35 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पथरवाह करें।”

36 इस प्रकार जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर पथरवाह किया, और वह मर गया।

37 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

38 “इस्राएलियों से कह, कि अपनी पीढ़ी-पीढ़ी में अपने वस्त्रों के छोर पर झालर लगाया करना, और एक-एक छोर की झालर पर एक नीला फीता लगाया करना;

39 और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे, जिससे जब जब तुम उसे देखो तब-तब यहोवा की सारी आज्ञाएँ तुम को स्मरण आ जाएँ; और तुम उनका पालन करो, और तुम अपने-अपने मन और अपनी-अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो। (11:16, 23:5)

40 परन्तु तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके उनका पालन करो, और अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बनो।

41 मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

## 16

1 कोरह जो लेवी का परपोता, कहात का पोता, और

यिसहार का पुत्र था, वह एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन,

2 इन तीनों रूबेनियों से मिलकर मण्डली के ढाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी थे, उनको संग लिया;

3 और वे मूसा और हारून के विरुद्ध उठ खड़े हुए, और उनसे कहने लगे, “तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup> <sup>1001</sup> <sup>1002</sup> <sup>1003</sup> <sup>1004</sup> <sup>1005</sup> <sup>1006</sup> <sup>1007</sup> <sup>1008</sup> <sup>1009</sup> <sup>1010</sup> <sup>1011</sup> <sup>1012</sup> <sup>1013</sup> <sup>1014</sup> <sup>1015</sup> <sup>1016</sup> <sup>1017</sup> <sup>1018</sup> <sup>1019</sup> <sup>1020</sup> <sup>1021</sup> <sup>1022</sup> <sup>1023</sup> <sup>1024</sup> <sup>1025</sup> <sup>1026</sup> <sup>1027</sup> <sup>1028</sup> <sup>1029</sup> <sup>1030</sup> <sup>1031</sup> <sup>1032</sup> <sup>1033</sup> <sup>1034</sup> <sup>1035</sup> <sup>1036</sup> <sup>1037</sup> <sup>1038</sup> <sup>1039</sup> <sup>1040</sup> <sup>1041</sup> <sup>1042</sup> <sup>1043</sup> <sup>1044</sup> <sup>1045</sup> <sup>1046</sup> <sup>1047</sup> <sup>1048</sup> <sup>1049</sup> <sup>1050</sup> <sup>1051</sup> <sup>1052</sup> <sup>1053</sup> <sup>1054</sup> <sup>1055</sup> <sup>1056</sup> <sup>1057</sup> <sup>1058</sup> <sup>1059</sup> <sup>1060</sup> <sup>1061</sup> <sup>1062</sup> <sup>1063</sup> <sup>1064</sup> <sup>1065</sup> <sup>1066</sup> <sup>1067</sup> <sup>1068</sup> <sup>1069</sup> <sup>1070</sup> <sup>1071</sup> <sup>1072</sup> <sup>1073</sup> <sup>1074</sup> <sup>1075</sup> <sup>1076</sup> <sup>1077</sup> <sup>1078</sup> <sup>1079</sup> <sup>1080</sup> <sup>1081</sup> <sup>1082</sup> <sup>1083</sup> <sup>1084</sup> <sup>1085</sup> <sup>1086</sup> <sup>1087</sup> <sup>1088</sup> <sup>1089</sup> <sup>1090</sup> <sup>1091</sup> <sup>1092</sup> <sup>1093</sup> <sup>1094</sup> <sup>1095</sup> <sup>1096</sup> <sup>1097</sup> <sup>1098</sup> <sup>1099</sup> <sup>1100</sup> <sup>1101</sup> <sup>1102</sup> <sup>1103</sup> <sup>1104</sup> <sup>1105</sup> <sup>1106</sup> <sup>1107</sup> <sup>1108</sup> <sup>1109</sup> <sup>1110</sup> <sup>1111</sup> <sup>1112</sup> <sup>1113</sup> <sup>1114</sup> <sup>1115</sup> <sup>1116</sup> <sup>1117</sup> <sup>1118</sup> <sup>1119</sup> <sup>1120</sup> <sup>1121</sup> <sup>1122</sup> <sup>1123</sup> <sup>1124</sup> <sup>1125</sup> <sup>1126</sup> <sup>1127</sup> <sup>1128</sup> <sup>1129</sup> <sup>1130</sup> <sup>1131</sup> <sup>1132</sup> <sup>1133</sup> <sup>1134</sup> <sup>1135</sup> <sup>1136</sup> <sup>1137</sup> <sup>1138</sup> <sup>1139</sup> <sup>1140</sup> <sup>1141</sup> <sup>1142</sup> <sup>1143</sup> <sup>1144</sup> <sup>1145</sup> <sup>1146</sup> <sup>1147</sup> <sup>1148</sup> <sup>1149</sup> <sup>1150</sup> <sup>1151</sup> <sup>1152</sup> <sup>1153</sup> <sup>1154</sup> <sup>1155</sup> <sup>1156</sup>



35 तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला।

□□□□□□

36 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

37 “हारून याजक के पुत्र एलीआजर से कह कि उन धूपदानों को आग में से उठा ले; और आग के अंगारों को उधर ही छितरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं।

38 जिन्होंने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है, उनके धूपदानों के पत्तर पीट-पीट कर बनाए जाएँ जिससे कि वह वेदी के मढ़ने के काम आए; क्योंकि उन्होंने यहोवा के सामने रखा था; इससे वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इस्राएलियों के लिये एक निशान ठहरेगा।” (□□□□□□. 12:3)

39 इसलिए एलीआजर याजक ने उन पीतल के धूपदानों को, जिनमें उन जले हुए मनुष्यों ने धूप चढ़ाया था, लेकर उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिए,

40 कि इस्राएलियों को इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा, जो हारून के वंश का न हो, यहोवा के सामने धूप चढ़ाने को समीप न जाए, ऐसा न हो कि वह भी कोरह और उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उसको आज्ञा दी थी।

□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□

41 दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगी, “यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है।”

42 और जब मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्होंने मिलापवाले तम्बू की ओर दृष्टि की; और देखा, कि बादल ने उसे छा लिया है, और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है।

43 तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के सामने आए,

44 तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

45 “तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से हट जाओ, कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।” तब वे मुँह के बल गिरे।

46 और मूसा ने हारून से कहा, “धूपदान को लेकर उसमें वेदी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फुर्ती से जाकर उसके लिये प्रायश्चित्त कर; क्योंकि यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का है, और मरी फैलने लगी है।”

47 मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया; और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है, उसने धूप जलाकर लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया।

48 और वह मुदों और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई।

49 और जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे, उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे चौदह हजार सात सौ थे। (1 □□□□□□. 10:10)

50 तब हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया, और मरी थम गई।

## 17

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों से बातें करके उनके पूर्वजों के घरानों के अनुसार, उनके सब प्रधानों के पास से एक-एक छड़ी ले; और उन बारह छड़ियों में से एक-एक पर एक-एक के मूलपुरुष का नाम लिख,

3 और □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□\*। क्योंकि इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के एक-एक मुख्य पुरुष की एक-एक छड़ी होगी।

4 और उन छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ मैं तुम लोगों से मिला करता हूँ, रख दे।

5 और जिस पुरुष को मैं चुनूँगा उसकी छड़ी में कलियाँ फूट निकलेंगी; और इस्राएली जो तुम पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, वह बुड़बुड़ाना मैं अपने ऊपर से दूर करूँगा।”

6 अतः मूसा ने इस्राएलियों से यह बात कही; और उनके सब प्रधानों ने अपने-अपने लिए, अपने-अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार, एक-एक छड़ी उसे दी, सो बारह छड़ियाँ हुई; और उन छड़ियों में हारून की भी छड़ी थी।

7 उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के सामने रख दिया।

8 दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया; तो क्या देखा, कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी उसमें कलियाँ फूट निकली, उसमें कलियाँ लगीं, और फूल भी फूले, और □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□\*।

9 तब मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के सामने से निकालकर सब इस्राएलियों के पास ले गया; और उन्होंने अपनी-अपनी छड़ी पहचानकर ले ली।

\* 17:3 □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□: हारून के घराने की श्रेष्ठता को उचित ठहराना आवश्यक क्योंकि इस्राएली उन पर बुड़बुड़ाने लगे थे। † 17:8 □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□: शीघ्रता और निश्चितता जिससे परमेश्वर उद्देश्य पूर्ण होते हैं परमेश्वर की इच्छा पर।





7 तब वह अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, इसके बाद छावनी में तो आए, परन्तु साँझ तक अशुद्ध रहेगा।

8 और जो मनुष्य उसको जलाए वह भी जल से अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे।

9 फिर कोई शुद्ध पुरुष उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े; और वह राख इस्राएलियों की मण्डली के लिये [2222222222] [22 22222222222222 22] के लिये रखी रहे; वह तो पापबलि है। (222222. 9:13)

10 और जो मनुष्य बछिया की राख बटोरे वह अपने वस्त्र धोए, और साँझ तक अशुद्ध रहेगा। और यह इस्राएलियों के लिये, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी सदा की विधि ठहरे।

[22 22222 22 2222222222]

11 “जो किसी मनुष्य के शव को छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे;

12 ऐसा मनुष्य तीसरे दिन पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठहरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन अपने आपको पाप छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा।

13 जो कोई किसी मनुष्य का शव छूकर पाप छुड़ाकर अपने को पावन न करे, वह यहोवा के निवास-स्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, और वह मनुष्य इस्राएल में से नाश किया जाए; क्योंकि अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उसमें बनी रहेगी।

14 “यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है, कि जितने उस डेरे में रहें, या उसमें जाएँ, वे सब सात दिन तक अशुद्ध रहें।

15 और हर एक खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा न हो, वह अशुद्ध ठहरे।

16 और जो कोई मैदान में तलवार से मारे हुए को, या मृत शरीर को, या मनुष्य की हड्डी को, या किसी कब्र को छूए, तो सात दिन तक अशुद्ध रहे।

17 अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाए हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए;

18 तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डुबाकर जल को उस डेरे पर, और जितने पात्र और मनुष्य उसमें हों, उन पर छिड़के, और हड्डी के, या मारे

हुए के, या मृत शरीर को, या कब्र के छूनेवाले पर छिड़क दे;

19 वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के; और सातवें दिन वह उसके पाप छुड़ाकर उसको पावन करे, तब वह अपने वस्त्रों को धोकर और जल से स्नान करके साँझ को शुद्ध ठहरे। (222222. 9:13)

20 “जो कोई अशुद्ध होकर अपने पाप छुड़ाकर अपने को पावन न कराए, वह मनुष्य यहोवा के पवित्रस्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मण्डली के बीच में से नाश किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण से वह अशुद्ध ठहरेगा।

21 और यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के वह अपने वस्त्रों को धोए; और जो जन अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छूए वह भी साँझ तक अशुद्ध रहे।

22 और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध ठहरे; और जो मनुष्य उस वस्तु को छूए वह भी साँझ तक अशुद्ध रहे।”

## 20

[22222222 22 22222222]

1 पहले महीने में सारी इस्राएली मण्डली के लोग सीन नामक जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे; और वहाँ मिर्याम मर गई, और वहीं उसको मिट्टी दी गई।

[2222 22 222222 22 2222]

2 वहाँ मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; इसलिए वे मूसा और हारून के [22222222 22222222 2222]\*।

3 और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, “भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए!

4 और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाएँ?

5 और तुम ने हमको मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुँचाया है? यहाँ तो बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार, कुछ नहीं है, यहाँ तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है।” (222222. 3:8)

6 तब मूसा और हारून मण्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुँह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया।

† 19:9 [22222222 22 222222222222 22]: देखें टिप्पणी गिन 8:7. देने योग्य है। उसमें पिछली पीढ़ी से आई पारम्परिक सविनय विरोध का भाव था।

\* 20:2 [22222222 22222222 2222]: कुड़कुड़ाने वालों की भाषा ध्यान



7 तब यहोवा ने मूसा से कहा,

8 “उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिये जल निकालकर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।”

9 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके सामने से लाठी को ले लिया।

10 और मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, तब मूसा ने उससे कहा, “हे बलवा करनेवालों, सुनो; क्या हमको इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?”

11 तब मूसा ने हाथ उठाकर **20:11** **20:12** **20:13** **20:14** **20:15** **20:16** **20:17** **20:18** **20:19** **20:20** **20:21** **20:22** **20:23** **20:24** **20:25** **20:26** **20:27** **20:28** **20:29** **20:30** **20:31** **20:32** **20:33** **20:34** **20:35** **20:36** **20:37** **20:38** **20:39** **20:40** **20:41** **20:42** **20:43** **20:44** **20:45** **20:46** **20:47** **20:48** **20:49** **20:50** **20:51** **20:52** **20:53** **20:54** **20:55** **20:56** **20:57** **20:58** **20:59** **20:60** **20:61** **20:62** **20:63** **20:64** **20:65** **20:66** **20:67** **20:68** **20:69** **20:70** **20:71** **20:72** **20:73** **20:74** **20:75** **20:76** **20:77** **20:78** **20:79** **20:80** **20:81** **20:82** **20:83** **20:84** **20:85** **20:86** **20:87** **20:88** **20:89** **20:90** **20:91** **20:92** **20:93** **20:94** **20:95** **20:96** **20:97** **20:98** **20:99** **20:100**; और उसमें से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। **(1 20:4)**

12 परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, “तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिए तुम इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैंने उन्हें दिया है।”

13 उस सोते का नाम **20:13** पड़ा, क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा से झगड़ा किया था, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया।

**20:11** **20:12** **20:13** **20:14** **20:15** **20:16** **20:17** **20:18** **20:19** **20:20** **20:21** **20:22** **20:23** **20:24** **20:25** **20:26** **20:27** **20:28** **20:29** **20:30** **20:31** **20:32** **20:33** **20:34** **20:35** **20:36** **20:37** **20:38** **20:39** **20:40** **20:41** **20:42** **20:43** **20:44** **20:45** **20:46** **20:47** **20:48** **20:49** **20:50** **20:51** **20:52** **20:53** **20:54** **20:55** **20:56** **20:57** **20:58** **20:59** **20:60** **20:61** **20:62** **20:63** **20:64** **20:65** **20:66** **20:67** **20:68** **20:69** **20:70** **20:71** **20:72** **20:73** **20:74** **20:75** **20:76** **20:77** **20:78** **20:79** **20:80** **20:81** **20:82** **20:83** **20:84** **20:85** **20:86** **20:87** **20:88** **20:89** **20:90** **20:91** **20:92** **20:93** **20:94** **20:95** **20:96** **20:97** **20:98** **20:99** **20:100**

14 फिर मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे, “तेरा भाई इस्राएल यह कहता है, कि हम पर जो-जो क्लेश पड़े हैं वह तू जानता होगा;

15 अर्थात् यह कि हमारे पुरखा मिस्र में गए थे, और हम मिस्र में बहुत दिन रहे; और मिस्रियों ने हमारे पुरखाओं के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताव किया;

16 परन्तु जब हमने यहोवा की दुहाई दी तब उसने हमारी सुनी, और एक दूत को भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है; इसलिए अब हम कादेश नगर में हैं जो तेरी सीमा ही पर है।

17 अतः हमें अपने देश में से होकर जाने दे। हम किसी खेत या दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और कुओं का पानी न पीएँगे; सड़क ही सड़क से होकर चले जाएँगे, और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ, तब तक न दाएँ न बाएँ मुड़ेंगे।”

18 परन्तु एदोमियों के राजा ने उसके पास कहला भेजा, “तू मेरे देश में से होकर मत जा, नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा सामना करने को निकलूँगा।”

19 इस्राएलियों ने उसके पास फिर कहला भेजा, “हम सड़क ही सड़क से चलेंगे, और यदि हम और हमारे पशु तेरा पानी पीएँ, तो उसका दाम देंगे, हमको और कुछ नहीं, केवल पाँव-पाँव चलकर निकल जाने दे।”

20 परन्तु उसने कहा, “तू आने न पाएगा।” और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका सामना करने को निकल आया।

21 इस प्रकार एदोम ने इस्राएल को अपने देश के भीतर से होकर जाने देने से इन्कार किया; इसलिए इस्राएल उसकी ओर से मुड़ गए।

**20:11** **20:12** **20:13** **20:14** **20:15** **20:16** **20:17** **20:18** **20:19** **20:20** **20:21** **20:22** **20:23** **20:24** **20:25** **20:26** **20:27** **20:28** **20:29** **20:30** **20:31** **20:32** **20:33** **20:34** **20:35** **20:36** **20:37** **20:38** **20:39** **20:40** **20:41** **20:42** **20:43** **20:44** **20:45** **20:46** **20:47** **20:48** **20:49** **20:50** **20:51** **20:52** **20:53** **20:54** **20:55** **20:56** **20:57** **20:58** **20:59** **20:60** **20:61** **20:62** **20:63** **20:64** **20:65** **20:66** **20:67** **20:68** **20:69** **20:70** **20:71** **20:72** **20:73** **20:74** **20:75** **20:76** **20:77** **20:78** **20:79** **20:80** **20:81** **20:82** **20:83** **20:84** **20:85** **20:86** **20:87** **20:88** **20:89** **20:90** **20:91** **20:92** **20:93** **20:94** **20:95** **20:96** **20:97** **20:98** **20:99** **20:100**

22 तब इस्राएलियों की सारी मण्डली कादेश से कूच करके होर नामक पहाड़ के पास आ गई। **(20:13. 33:37, 21:4)**

23 और एदोम देश की सीमा पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

24 “हारून अपने लोगों में जा मिलेगा; क्योंकि तुम दोनों ने जो मरीबा नामक सोते पर मेरा कहना न मानकर मुझसे बलवा किया है, इस कारण वह उस देश में जाने न पाएगा जिसे मैंने इस्राएलियों को दिया है। **(20:13. 32:50)**

25 इसलिए तू हारून और उसके पुत्र एलीआजर को होर पहाड़ पर ले चल;

26 और हारून के वस्त्र उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहना; तब हारून वहीं मरकर अपने लोगों में जा मिलेगा।”

27 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; वे सारी मण्डली के देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए।

28 तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहनाए और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब मूसा और एलीआजर पहाड़ पर से उतर आए।

29 और जब इस्राएल की सारी मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण छूट गया है, तब इस्राएल के सब घराने के लोग उसके लिये तीस दिन तक रोते रहे। **(20:13. 50:3, 21:4. 34:8)**

## 21

**21:1** **21:2** **21:3** **21:4** **21:5** **21:6** **21:7** **21:8** **21:9** **21:10** **21:11** **21:12** **21:13** **21:14** **21:15** **21:16** **21:17** **21:18** **21:19** **21:20** **21:21** **21:22** **21:23** **21:24** **21:25** **21:26** **21:27** **21:28** **21:29** **21:30** **21:31** **21:32** **21:33** **21:34** **21:35** **21:36** **21:37** **21:38** **21:39** **21:40** **21:41** **21:42** **21:43** **21:44** **21:45** **21:46** **21:47** **21:48** **21:49** **21:50** **21:51** **21:52** **21:53** **21:54** **21:55** **21:56** **21:57** **21:58** **21:59** **21:60** **21:61** **21:62** **21:63** **21:64** **21:65** **21:66** **21:67** **21:68** **21:69** **21:70** **21:71** **21:72** **21:73** **21:74** **21:75** **21:76** **21:77** **21:78** **21:79** **21:80** **21:81** **21:82** **21:83** **21:84** **21:85** **21:86** **21:87** **21:88** **21:89** **21:90** **21:91** **21:92** **21:93** **21:94** **21:95** **21:96** **21:97** **21:98** **21:99** **21:100**

† **20:11** **20:12** **20:13** **20:14** **20:15** **20:16** **20:17** **20:18** **20:19** **20:20** **20:21** **20:22** **20:23** **20:24** **20:25** **20:26** **20:27** **20:28** **20:29** **20:30** **20:31** **20:32** **20:33** **20:34** **20:35** **20:36** **20:37** **20:38** **20:39** **20:40** **20:41** **20:42** **20:43** **20:44** **20:45** **20:46** **20:47** **20:48** **20:49** **20:50** **20:51** **20:52** **20:53** **20:54** **20:55** **20:56** **20:57** **20:58** **20:59** **20:60** **20:61** **20:62** **20:63** **20:64** **20:65** **20:66** **20:67** **20:68** **20:69** **20:70** **20:71** **20:72** **20:73** **20:74** **20:75** **20:76** **20:77** **20:78** **20:79** **20:80** **20:81** **20:82** **20:83** **20:84** **20:85** **20:86** **20:87** **20:88** **20:89** **20:90** **20:91** **20:92** **20:93** **20:94** **20:95** **20:96** **20:97** **20:98** **20:99** **20:100**: चट्टान पर लाठी मारना और दो बार मारना मूसा के उग्र रिस को प्रगट करता है परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक उनकी बार बार दोहराई जानेवाले दुराग्रह से थक चुका था वह रो पड़ता है इस्राएल के समक्ष परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में अपने दायित्व वहन में भी। ‡ **20:13** **20:14** **20:15** **20:16** **20:17** **20:18** **20:19** **20:20** **20:21** **20:22** **20:23** **20:24** **20:25** **20:26** **20:27** **20:28** **20:29** **20:30** **20:31** **20:32** **20:33** **20:34** **20:35** **20:36** **20:37** **20:38** **20:39** **20:40** **20:41** **20:42** **20:43** **20:44** **20:45** **20:46** **20:47** **20:48** **20:49** **20:50** **20:51** **20:52** **20:53** **20:54** **20:55** **20:56** **20:57** **20:58** **20:59** **20:60** **20:61** **20:62** **20:63** **20:64** **20:65** **20:66** **20:67** **20:68** **20:69** **20:70** **20:71** **20:72** **20:73** **20:74** **20:75** **20:76** **20:77** **20:78** **20:79** **20:80** **20:81** **20:82** **20:83** **20:84** **20:85** **20:86** **20:87** **20:88** **20:89** **20:90** **20:91** **20:92** **20:93** **20:94** **20:95** **20:96** **20:97** **20:98** **20:99** **20:100**: अर्थात् झगड़ा इस्राएलियों ने पानी के लिए मूसा से झगड़ा किया।

1 तब अराद का कनानी राजा, जो दक्षिण देश में रहता था, यह सुनकर कि जिस मार्ग से वे भेदिए आए थे उसी मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं, इस्राएल से लडा, और उनमें से कुछ को बन्धुआ कर लिया।

2 तब इस्राएलियों ने यहोवा से यह कहकर मन्नत मानी, “यदि तू सचमुच उन लोगों को हमारे वश में कर दे, तो हम उनके नगरों को सत्यानाश कर देंगे।”

3 इस्राएल की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उनके वश में कर दिया; अतः उन्होंने उनके नगरों समेत उनको भी सत्यानाश किया; इससे उस स्थान का नाम होर्मा रखा गया।

2222 22 222 2222

4 फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर-बाहर घूमकर जाएँ; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया।

5 इसलिए वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, “तुम लोग हमको मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुःखित हैं।”

6 अतः यहोवा ने उन लोगों में 222 22222222 22222\* भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। (1 2222. 10:9)

7 तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, “हमने पाप किया है, कि हमने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह साँपों को हम से दूर करे।” तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की।

8 यहोवा ने मूसा से कहा, “एक तेज विषवाले 2222 22 22222222 22222222† खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।”

9 अतः मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुआओं में से जिस-जिसने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया। (2222. 3:14)

222 222222 22 2222 22 22 2222222

10 फिर इस्राएलियों ने कूच करके ओबोत में डेरे डालें।

11 और ओबोत से कूच करके अबारीम में डेरे डालें, जो पूर्व की ओर मोआब के सामने के जंगल में है।

12 वहाँ से कूच करके उन्होंने जैरेद नामक नाले में डेरे डालें।

13 वहाँ से कूच करके उन्होंने अर्नोन नदी, जो जंगल में बहती और एमोरियों के देश से निकलती है, उसकी दूसरी ओर डेरे खड़े किए; क्योंकि अर्नोन मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब देश की सीमा ठहरी है।

14 इस कारण यहोवा के संग्राम नामक पुस्तक में इस प्रकार लिखा है,

“सूपा में वाहेब,

और अर्नोन की घाटी,

15 और उन घाटियों की ढलान जो आर नामक नगर की ओर है,

और जो मोआब की सीमा पर है।”

16 फिर वहाँ से कूच करके वे बैर तक गए; वहाँ वही कुआँ है जिसके विषय में यहोवा ने मूसा से कहा था, “उन लोगों को इकट्ठा कर, और मैं उन्हें पानी दूँगा।”

17 उस समय इस्राएल ने यह गीत गाया,

“हे कुएँ, उमड़ आ, उस कुएँ के विषय में गाओ!

18 जिसको हाकिमों ने खोदा,

और इस्राएल के रईसों ने अपने सोंटों और लाठियों से खोद लिया।”

फिर वे जंगल से मत्ताना को,

19 और मत्ताना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामोत को,

20 और बामोत से कूच करके उस तराई तक जो मोआब के मैदान में है, और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है पहुँच गए।

22222222 22 2222 22222 22 2222

21 तब इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूतों से यह कहला भेजा,

22 “हमें अपने देश में होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत या दाख की बारी में तो न जाएँगे; न किसी कुएँ का पानी पीएँगे; और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ तब तक सड़क ही से चले जाएँगे।”

23 फिर भी सीहोन ने इस्राएल को अपने देश से होकर जाने न दिया; वरन् अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का सामना करने को जंगल में निकल आया, और यहस को आकर उनसे लडा।

24 तब इस्राएलियों ने उसको तलवार से मार दिया, और अर्नोन से 22222222 2222‡ तक, जो अम्मोनियों की सीमा थी, उसके देश के अधिकारी हो गए; अम्मोनियों की सीमा तो दृढ़ थी।

\* 21:6 222 22222222 22222: उनके डसने का जलनशील प्रभाव दर्शाता है। † 21:8 2222 22 22222222 22222222: पीतल का साँप उनके दण्ड का दूयोतक था और उसे निहारना उनका पाप स्वीकरण और उसके दण्ड से मुक्ति की कामना करना तथा परमेश्वर द्वारा नियुक्त विषहरण के साधन में विश्वास दर्शाता है। ‡ 21:24 22222222 2222: अम्मोनियों की सन्तान के रब्बाह के अधीन पूर्व की ओर तब पश्चिम की ओर होती हुई यरदन तक पहुँचती है जो अम्मोन से 45 मील उत्तर में है।

25 इसलिए इस्राएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उनमें, अर्थात् [21:25-28] और उसके आस-पास के नगरों में रहने लगे।

26 हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था; उसने मोआब के पिछले राजा से लड़कर उसका सारा देश अर्नोन तक उसके हाथ से छीन लिया था।

27 इस कारण गूढ़ बात के कहनेवाले कहते हैं, “हेशबोन में आओ, सीहोन का नगर बसे, और दृढ़ किया जाए।

28 क्योंकि हेशबोन से आग, सीहोन के नगर से लौ निकली; जिससे मोआब देश का आर नगर, और अर्नोन के ऊँचे स्थानों के स्वामी भस्म हुए।

29 हे मोआब, तुझ पर हाय! कमोश देवता की प्रजा नाश हुई, उसने अपने बेटों को भगोड़ा, और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की दासी कर दिया।

30 हमने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन दीबोन तक नष्ट हो गया है, और हमने नोपह और मेदबा तक भी उजाड़ दिया है।”

31 इस प्रकार इस्राएल एमोरियों के देश में रहने लगा।

32 तब मूसा ने याजेर नगर का भेद लेने को भेजा; और उन्होंने उसके गाँवों को ले लिया, और वहाँ के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया।

[22:1-4]

33 तब वे मुड़कर बाशान के मार्ग से जाने लगे; और बाशान के राजा ओग ने उनका सामना किया, वह लड़ने को अपनी सारी सेना समेत एद्रेई में निकल आया।

34 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “उससे मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूँ; और जैसा तूने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी करना।”

35 तब उन्होंने उसको, और उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहाँ तक मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिकारी हो गए।

## 22

[22:1-12]

1 तब इस्राएलियों ने कूच करके यरीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किए।

2 और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा कि इस्राएल ने एमोरियों से क्या-क्या किया है।

3 इसलिए मोआब यह जानकर, कि इस्राएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यन्त डर गया; यहाँ तक कि मोआब इस्राएलियों के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ।

4 तब मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा, “अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है।” उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था;

5 और इसने पतोर नगर को, जो फरात के तट पर [22:5-12] के जातिभाइयों की भूमि थी, वहाँ बिलाम के पास दूत भेजे कि वे यह कहकर उसे बुला लाएँ, “सुन एक दल मिस्र से निकल आया है, और भूमि उनसे ढक गई है, और अब वे मेरे सामने ही आकर बस गए हैं।

6 इसलिए आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त श्राप दे, क्योंकि वे मुझसे अधिक बलवन्त हैं, तब सम्भव है कि हम उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं जानता हूँ कि जिसको तू आशीर्वाद देता है वह धन्य होता है, और जिसको तू श्राप देता है वह श्रापित होता है।”

7 तब मोआबी और मिद्यानी पुरनिये भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुँचकर बालाक की बातें कह सुनाई। (2 [22:15, 22:16]. 1:1)

8 उसने उनसे कहा, “आज रात को यहाँ टिको, और जो बात यहोवा मुझसे कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूँगा।” तब मोआब के हाकिम बिलाम के यहाँ ठहर गए।

9 तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा, “तेरे यहाँ ये पुरुष कौन हैं?”

10 बिलाम ने परमेश्वर से कहा, “सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है,

11 ‘सुन, जो दल मिस्र से निकल आया है उससे भूमि ढँप गई है; इसलिए आकर मेरे लिये उन्हें श्राप दे; सम्भव है कि मैं उनसे लड़कर उनको बरबस निकाल सकूँगा।’”

12 परमेश्वर ने बिलाम से कहा, “तू इनके संग मत जा; उन लोगों को श्राप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं।”

§ 21:25 [21:25-28]: एक खण्डहर नगर मृत सागर में यरदन के प्रवेश के पूर्व में स्थित। \* 22:5 [22:5-12]: वह पहले ही से किसी प्रकार के सच्चे परमेश्वर का उपासक था। और अपने परिवार में पवित्र एवं सच्चे धर्म की बात सीखी थीं।

13 भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा, “तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता।”

14 तब मोआबी हाकिम चले गए और बालाक के पास जाकर कहा, “बिलाम ने हमारे साथ आने से मना किया है।”

15 इस पर बालाक ने फिर और हाकिम भेजे, जो पहले से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे।

16 उन्होंने बिलाम के पास आकर कहा, “सिप्पोर का पुत्र बालाक यह कहता है, ‘मेरे पास आने से किसी कारण मना मत कर;’

17 क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूँगा, और जो कुछ तू मुझसे कहे वही मैं करूँगा; इसलिए आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त श्राप दे।”

18 बिलाम ने बालाक के कर्मचारियों को उत्तर दिया, “चाहे बालाक अपने घर को सोने चाँदी से भरकर मुझे दे दे, तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर व बढ़ाकर मानूँ।

19 इसलिए अब तुम लोग आज रात को यहीं टिके रहो, ताकि मैं जान लूँ, कि यहोवा मुझसे और क्या कहता है।”

20 और परमेश्वर ने रात को बिलाम के पास आकर कहा, “यदि वे पुरुष तुझे बुलाने आए हैं, तो तू उठकर उनके संग जा; परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी के अनुसार करना।”

21 तब बिलाम भोर को उठा, और अपनी गदही पर काठी बाँधकर मोआबी हाकिमों के संग चल पड़ा।

22 और उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और उसका विरोध करने के लिये मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गदही पर सवार होकर जा रहा था, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे।

23 और उस गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई; तब बिलाम ने गदही को मारा कि वह मार्ग पर फिर आ जाए।

24 तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में, जिसके दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ।

25 यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई कि बिलाम का पाँव दीवार से दब गया; तब उसने उसको फिर मारा।

26 तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकरे स्थान पर खड़ा हुआ, जहाँ न तो दाहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाईं ओर।

27 वहाँ यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये हुए बैठ गई; फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उसने गदही को लाठी से मारा।

28 तब यहोवा ने गदही का मुँह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, “मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?” (2 [22]: 2:16)

29 बिलाम ने गदही से कहा, “यह कि तूने मुझसे नटखटी की। यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता।”

30 गदही ने बिलाम से कहा, “क्या मैं तेरी वही गदही नहीं, जिस पर तू जन्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी?” वह बोला, “नहीं।”

31 तब यहोवा ने बिलाम की आँखें खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब वह झुक गया, और मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

32 यहोवा के दूत ने उससे कहा, “तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूँ, इसलिए कि तू मेरे सामने दुष्ट चाल चलता है;”

33 और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई। यदि वह मेरे सामने से हट न जाती, तो निःसन्देह मैं अब तक तुझको मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता।”

34 तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, “मैंने पाप किया है; मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मार्ग में खड़ा है। इसलिए अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूँ।”

35 यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, “इन पुरुषों के संग तू चला जा; परन्तु केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूँगा।” तब बिलाम उससे कहा गया।

36 यह सुनकर कि बिलाम आ रहा है, बालाक उससे भेंट करने के लिये मोआब के उस नगर तक जो उस देश के अर्नोनवाले सीमा पर है गया।

37 बालाक ने बिलाम से कहा, “क्या मैंने बड़ी आशा से तुझे नहीं बुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यों नहीं

† 22:22 [22:22] [22:22] जंगल में झन्झटियों की अगुआई करनेवाला और यहोवा की सेना का सेनापति जो यहोशू को दिखाई दिया था।

‡ 22:35 [22:35] [22:35] अनुमति ही नहीं एक आज्ञा बिलाम अब परमेश्वर का निष्ठावान सेवक न रहा, अपने सब कामों में उससे आगे अधीनस्थ हो गया कि वह परमेश्वर के उद्देश्य को साधन स्वरूप उपयोगी बनाए।











22 यहूदियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े छिहत्तर हजार पुरुष गिने गए।

23 इस्साकार के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् तोला, जिससे तोलियों का कुल चला; और पुव्वा, जिससे पुव्वियों का कुल चला;

24 और याशूब, जिससे याशूबियों का कुल चला; और शिम्रोन, जिससे शिम्रोनियों का कुल चला।

25 इस्साकारियों के कुल ये ही थे; इनमें से चौसठ हजार तीन सौ पुरुष गिने गए।

26 जबूलून के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सेरेद जिससे सेरेदियों का कुल चला; और एलोन, जिनसे एलोनियों का कुल चला; और यहलेल, जिससे यहलेलियों का कुल चला।

27 जबूलूनियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े साठ हजार पुरुष गिने गए।

28 यूसुफ के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे मनश्शे और एप्रैम थे।

29 मनश्शे के पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिससे माकीरियों का कुल चला; और माकीर से गिलाद उत्पन्न हुआ; और गिलाद से गिलादियों का कुल चला।

30 गिलाद के तो पुत्र ये थे; अर्थात् ईएजेर, जिससे ईएजेरियों का कुल चला;

31 और हेलेक, जिससे हेलेकियों का कुल चला और अस्त्रीएल, जिससे अस्त्रीएलियों का कुल चला; और शेकेम, जिससे शेकेमियों का कुल चला; और शमीदा, जिससे शमीदियों का कुल चला;

32 और हेपेर, जिससे हेपेरियों का कुल चला;

33 और हेपेर के पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, केवल बेटियाँ हुईं; इन बेटियों के नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिसा हैं।

34 मनश्शेवाले कुल तो ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे बावन हजार सात सौ पुरुष थे।

35 एप्रैम के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शूतेलह, जिससे शूतेलहियों का कुल चला; और बेकेर, जिससे बेकेरियों का कुल चला; और तहन जिससे तहनियों का कुल चला।

36 और शूतेलह के यह पुत्र हुआ; अर्थात् एरान, जिससे एरानियों का कुल चला।

37 एप्रैमियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े बत्तीस हजार पुरुष गिने गए। अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे।

38 और बिन्यामीन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् बेला जिससे बेलियों का कुल चला;

और अशबेल, जिससे अशबेलियों का कुल चला; और अहीराम, जिससे अहीरामियों का कुल चला;

39 और शपूपाम, जिससे शपूपामियों का कुल चला; और हूपाम, जिससे हूपामियों का कुल चला।

40 और बेला के पुत्र अर्द और नामान थे; और अर्द से अर्दियों का कुल, और नामान से नामानियों का कुल चला।

41 अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैतालीस हजार छः सौ पुरुष थे।

42 दान का पुत्र जिससे उनका कुल निकला यह था; अर्थात् शूहाम, जिससे शूहामियों का कुल चला। और दान का कुल यही था।

43 और शूहामियों में से जो गिने गए उनके कुल में चौसठ हजार चार सौ पुरुष थे।

44 आशेर के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यिम्ना, जिससे यिम्नियों का कुल चला; यिश्वी, जिससे यिश्वीयों का कुल चला; और बरीआ, जिससे बरीइयों का कुल चला।

45 फिर बरीआ के ये पुत्र हुए; अर्थात् हेबेर, जिससे हेबेरियों का कुल चला; और मल्कीएल, जिससे मल्कीएलियों का कुल चला।

46 और आशेर की बेटी का नाम सेरह है।

47 आशेरियों के कुल ये ही थे; इनमें से तिरपन हजार चार सौ पुरुष गिने गए।

48 नप्ताली के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यहसेल, जिससे यहसेलियों का कुल चला; और गूनी, जिससे गूनियों का कुल चला;

49 येसेर, जिससे येसेरियों का कुल चला; और शिल्लेम, जिससे शिल्लेमियों का कुल चला।

50 अपने कुलों के अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैतालीस हजार चार सौ पुरुष थे।

51 सब इस्राएलियों में से जो गिने गए थे वे ये ही थे; अर्थात् छः लाख एक हजार सात सौ तीस पुरुष थे।

52 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

53 “इनको, इनकी गिनती के अनुसार, वह भूमि इनका भाग होने के लिये बाँट दी जाए।

54 अर्थात् जिस कुल में अधिक हों उनको अधिक भाग, और जिसमें कम हों उनको कम भाग देना; प्रत्येक गोत्र को उसका भाग उसके गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए।

55 तो भी देश चिट्टी डालकर बाँटा जाए; इस्राएलियों के पितरों के एक-एक गोत्र का नाम, जैसे-जैसे निकले वैसे-वैसे वे अपना-अपना भाग पाएँ।

56 चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो, जो-जो भाग बाँटे जाएँ वह चिट्टी डालकर बाँटे जाएँ।”

57 फिर लेवियों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गए वे ये हैं; अर्थात् गेशोनियों से निकला हुआ गेशोनियों का कुल; कहात से निकला हुआ कहातियों का कुल; और मरारी से निकला हुआ मरारियों का कुल।

58 लेवियों के कुल ये हैं; अर्थात् लिब्णियों का, हेब्रोनियों का, महलियों का, मूशियों का, और कोरहियों का कुल। और कहात से अम्राम उत्पन्न हुआ।

59 और अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद है, वह लेवी के वंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में उत्पन्न हुई थी; और वह अम्राम से हारून और मूसा और उनकी बहन मिर्याम को भी जनी।

60 और हारून से नादाब, अबीहू, एलीआजर, और ईतामार उत्पन्न हुए।

61 नादाब और अबीहू तो उस समय मर गए थे, जब वे यहोवा के सामने ऊपरी आग ले गए थे।

62 सब लेवियों में से जो गिने गये, अर्थात् जितने पुरुष एक महीने के या उससे अधिक आयु के थे, वे तेईस हजार थे; वे इस्राएलियों के बीच इसलिए नहीं गिने गए, क्योंकि उनको देश का कोई भाग नहीं दिया गया था।

63 मूसा और एलीआजर याजक जिन्होंने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर इस्राएलियों को गिन लिया, उनके गिने हुए लोग इतने ही थे।

64 परन्तु जिन इस्राएलियों को मूसा और हारून याजक ने सीनै के जंगल में गिना था, उनमें से एक भी पुरुष इस समय के गिने हुएों में न था।

65 क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा था, “वे निश्चय जंगल में मर जाएँगे।” इसलिए यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उनमें से एक भी पुरुष नहीं बचा।

## 27

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद, जो हेपेर का पुत्र, और गिलाद का पोता, और मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था, उसकी बेटियाँ जिनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिसा हैं वे पास आईं।

2 और वे मूसा और एलीआजर याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं,

3 “हमारा पिता जंगल में मर गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी हुई थी, वह अपने ही पाप के कारण मरा; और उसके कोई पुत्र न था।

4 तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे।”

5 उनकी यह विनती मूसा ने यहोवा को सुनाई।

6 यहोवा ने मूसा से कहा,

7 “सलोफाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; इसलिए तू उनके चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात् उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे।

8 और इस्राएलियों से यह कह, ‘यदि कोई मनुष्य बिना पुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना।

9 और यदि उसके कोई बेटा भी न हो, तो उसका भाग उसके भाइयों को देना।

10 और यदि उसके भाई भी न हों, तो उसका भाग चाचाओं को देना।

11 और यदि उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से उसका जो कुटुम्बी सबसे समीप हो उनको उसका भाग देना कि वह उसका अधिकारी हो। इस्राएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी।”

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

12 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “इस अबारीम नामक पर्वत के ऊपर चढ़कर उस देश को देख ले जिसे मैंने इस्राएलियों को दिया है।

13 और जब तू उसको देख लेगा, तब अपने भाई हारून के समान तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा,

14 क्योंकि सीन नामक जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझसे बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया।” (यह मरीबा नामक सोता है जो सीन नामक जंगल के कादेश में है)

15 मूसा ने यहोवा से कहा,

16 “यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरुष को नियुक्त कर दे, (12:9)

17 जो उसके सामने आया-जाया करे, और उनका निकालने और बैठानेवाला हो; जिससे यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान न रहे।” (27:36, 28:6:34)

18 यहोवा ने मूसा से कहा, “तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह तो ऐसा पुरुष है जिसमें मेरा आत्मा बसा है;

19 और उसको एलीआजर याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने उसे आज्ञा दे।

20 और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिससे इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे।

21 और वह एलीआजर याजक के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआजर उसके लिये यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे; और वह इस्राएलियों की सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे, और उसी के कहने से लौट भी आया करे।”

22 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू को लेकर, एलीआजर याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके,

23 उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था।

## 28

28:1-28:28

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों को यह आज्ञा सुना, मेरा चढ़ावा, अर्थात् मुझे सुखदायक सुगन्ध देनेवाला मेरा हव्यरूपी भोजन, तुम लोग मेरे लिये उनके नियत समयों पर चढ़ाने के लिये स्मरण रखना।”

3 और तू उनसे कह: जो-जो तुम्हें यहोवा के लिये चढ़ाना होगा वे ये हैं; अर्थात् नित्य होमबलि के लिये एक-एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के नर बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करना।

4 एक बच्चे को भोर को और दूसरे को साँझ के समय चढ़ाना;

5 और भेड़ के बच्चे के साथ एक चौथाई हीन कूटकर निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवें अंश मैदा का अन्नबलि चढ़ाना।

6 यह नित्य होमबलि है, जो सीनै पर्वत पर यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया।

7 और उसका अर्घ प्रति एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौथाई हीन हो; मदिरा का 28:1-28:28\*।

8 और दूसरे बच्चे को साँझ के समय चढ़ाना; अन्नबलि और अर्घ समेत भोर के होमबलि के समान उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य करके चढ़ाना।

28:29-28:34

9 “फिर विश्रामदिन को दो निर्दोष भेड़ के एक वर्ष के नर बच्चे, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा अर्घ समेत चढ़ाना।

10 नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा प्रत्येक विश्रामदिन का यही होमबलि ठहरा है। (28:28:12:5)

28:35-28:41

11 “फिर अपने महीनों के आरम्भ में प्रतिमाह यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना; अर्थात् दो बछड़े, एक मेढा, और एक-एक वर्ष के निर्दोष भेड़ के सात नर बच्चे;

12 और बछड़े के साथ तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवाँ अंश मैदा, और उस एक मेढे के साथ तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा;

13 और प्रत्येक भेड़ के बच्चे के पीछे तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा, उन सभी को अन्नबलि करके चढ़ाना; वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा।

14 और उनके साथ ये अर्घ हों; अर्थात् बछड़े के साथ आधा हीन, मेढे के साथ तिहाई हीन, और भेड़ के बच्चे के साथ चौथाई हीन दाखमधु दिया जाए; वर्ष के सब महीनों में से प्रत्येक महीने का यही होमबलि ठहरे।

15 और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया जाए; यह नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए।

28:42-28:48

16 “फिर पहले महीने के चौदहवें दिन को 28:42-28:48 हुआ करे।

17 और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को पर्व लगा करे; सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई जाए।

18 पहले दिन पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए;

19 उसमें तुम यहोवा के लिये हव्य, अर्थात् होमबलि चढ़ाना; अतः दो बछड़े, एक मेढा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे हों; ये सब निर्दोष हों;

\* 28:7 28:1-28:28 28:29-28:34 28:35-28:41 28:42-28:48: मदिरा का अर्घ वेदी के चारों ओर उण्डेला जाता था या वेदी पर उण्डेला जाता था, अतः बलि का जो पशु था उसके ऊपर जो वेदी पर रखा होता था। (निर्गं. 30:9) † 28:16 28:29-28:34 28:35-28:41: फसह का चढ़ावा वैसा ही होता था जैसा नए चाँद का और त्यौहार के सात दिनों में से हर एक दिन किया जाना था।





२२२२\*, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुँह से निकला हो उसके अनुसार वह करे। (२२२२२२ 5:33)

3 और २२ २२२ २२२२२२ २२२२ २२२२२२२२ २२२२ २२२२ २२२२ २२ २२ २२२ २२२२ २२२२, २२२२ २२२२ २२ २२ २२२ २२२२ २२२२, २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२†, व अपने को वाचा से बाँधे,

4 तो यदि उसका पिता उसकी मन्नत या उसका वह वचन सुनकर, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, उससे कुछ न कहे; तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर बनी रहें, और कोई बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, वह भी स्थिर रहे।

5 परन्तु यदि उसका पिता उसकी सुनकर उसी दिन उसको मना करे, तो उसकी मन्नतें या और प्रकार के बन्धन, जिनसे उसने अपने आपको बाँधा हो, उनमें से एक भी स्थिर न रहे, और यहोवा यह जानकर, कि उस स्त्री के पिता ने उसे मना कर दिया है, उसका यह पाप क्षमा करेगा।

6 फिर यदि वह पति के अधीन हो और मन्नत माने, या बिना सोच विचार किए ऐसा कुछ कहे जिससे वह बन्धन में पड़े,

7 और यदि उसका पति सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे; तब तो उसकी मन्नतें स्थिर रहें, और जिन बन्धनों से उसने अपने आपको बाँधा हो वह भी स्थिर रहें।

8 परन्तु यदि उसका पति सुनकर उसी दिन उसे मना कर दे, तो जो मन्नत उसने मानी है, और जो बात बिना सोच-विचार किए कहने से उसने अपने आपको वाचा से बाँधा हो, वह टूट जाएगी; और यहोवा उस स्त्री का पाप क्षमा करेगा।

9 फिर विधवा या त्यागी हुई स्त्री की मन्नत, या किसी प्रकार की वाचा का बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, तो वह स्थिर ही रहे।

10 फिर यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्नत माने, या शपथ खाकर अपने आपको बाँधे,

11 और उसका पति सुनकर कुछ न कहे, और न उसे मना करे; तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर बनी रहें, और हर एक बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, वह स्थिर रहे।

12 परन्तु यदि उसका पति उसकी मन्नत आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे, तो उसकी मन्नतें आदि, जो कुछ उसके मुँह से अपने बन्धन के विषय निकला हो, उसमें से एक बात भी स्थिर न रहे; उसके पति ने सब तोड़ दिया है; इसलिए यहोवा उस स्त्री का वह पाप क्षमा करेगा।

† 30:3 २२ २२२ २२२२२२ ... २२२२ २२२२ २२ २२ २२२ २२२२ २२२२, २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२: यह सामान्यतः उसकी मंगनी या विवाह तक वह अपने पिता के अधिकार से अपने पति के अधिकाराधीन नहीं होती थी। \* 31:2 २२२२२२२२२२२२: मिद्यानी अलग किए गए थे। ऐसा ज्ञात होगा कि मिद्यानी ही थे जिन्होंने यह सकल्प किया था कि इस्राएल में भ्रष्टाचार फैलाएँ।

13 कोई भी मन्नत या शपथ क्यों न हो, जिससे उस स्त्री ने अपने जीव को दुःख देने की वाचा बाँधी हो, उसको उसका पति चाहे तो दृढ़ करे, और चाहे तो तोड़े;

14 अर्थात् यदि उसका पति दिन प्रतिदिन उससे कुछ भी न कहे, तो वह उसको सब मन्नतें आदि बन्धनों को जिनसे वह बंधी हो दृढ़ कर देता है; उसने उनको दृढ़ किया है, क्योंकि सुनने के दिन उसने कुछ नहीं कहा।

15 और यदि वह उन्हें सुनकर बहुत दिन पश्चात् तोड़ दे, तो अपनी स्त्री के अधर्म का भार वही उठाएगा।”

16 पति-पत्नी के बीच, और पिता और उसके घर में रहती हुई कुंवारी बेटों के बीच, जिन विधियों की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी वे ये ही हैं।

## 31

२२२२२२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२२

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “२२२२२२२२२२२२\* से इस्राएलियों का पलटा ले; उसके बाद तू अपने लोगों में जा मिलेगा।”

3 तब मूसा ने लोगों से कहा, “अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथियार धारण कराओ कि वे मिद्यानियों पर चढ़कर उनसे यहोवा का पलटा लें।

4 इस्राएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक-एक हजार पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो।”

5 तब इस्राएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक-एक हजार पुरुष चुने गये, अर्थात् युद्ध के लिये हथियार-बन्द बारह हजार पुरुष।

6 प्रत्येक गोत्र में से उन हजार-हजार पुरुषों को, और एलीआजर याजक के पुत्र पीनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा, और पीनहास के हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियां थीं जो साँस बाँध बाँधकर फूँकी जाती थीं।

7 और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार उन्होंने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को घात किया।

8 और शेष मारे हुआं को छोड़ उन्होंने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नामक मिद्यान के पाँचों राजाओं को घात किया; और बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया।

9 और इस्राएलियों ने मिद्यानी स्त्रियों को बाल-बच्चों समेत बन्दी बना लिया; और उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया।

10 और उनके निवास के सब नगरों, और सब छावनियों को फूँक दिया;

11 तब वे, क्या मनुष्य क्या पशु, सब बन्दियों और सारी लूट-पाट को लेकर

12 यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, मोआब के अराबा में, छावनी के निकट, मूसा और एलीआजर याजक और इस्राएलियों की मण्डली के पास आए।

????? ?? ???? ? ? ???? ?

13 तब मूसा और एलीआजर याजक और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उनका स्वागत करने को निकले।

14 और मूसा सहस्रपति-शतपति आदि, सेनापतियों से, जो युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर कहने लगा,

15 “क्या तुम ने सब स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया?

16 देखो, बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं स्त्रियों ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली।

17 इसलिए अब बाल-बच्चों में से हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो उन सभी को घात करो।

18 परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुँह न देखा हो उन सभी को तुम अपने लिये जीवित रखो।

19 और तुम लोग सात दिन तक छावनी के बाहर रहो, और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनों ने किसी मरे हुए को छुआ हो, वे सब अपने-अपने बन्दियों समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने-अपने को पाप छुड़ाकर पावन करें।

20 और सब वस्त्रों, और चमड़े की बनी हुई सब वस्तुओं, और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर लो।”

21 तब एलीआजर याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गए थे कहा, “व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह है:

22 सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन, और सीसा,

23 जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तो भी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में डुबाओ।

24 और सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोना, तब तुम शुद्ध ठहरोगे; और तब छावनी में आना।”

???? ? ? ???? ? ? ?

25 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

26 “एलीआजर याजक और मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को साथ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती कर;

27 तब उनको आधा-आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग मण्डली को दे।

28 फिर जो सिपाही युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से यहोवा के लिये, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ

29 पाँच सौ के पीछे एक को कर मानकर ले ले; और यहोवा की भेंट करके एलीआजर याजक को दे दे।

30 फिर इस्राएलियों के आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ, क्या किसी प्रकार का पशु हो, पचास के पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दे।” (27:27. 31:42-47, 27:27. 3:7,8, 25, 31, 36)

31 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी मूसा और एलीआजर याजक ने किया।

32 और जो वस्तुएँ सेना के पुरुषों ने अपने-अपने लिये लूट ली थीं उनसे अधिक की लूट यह थी; अर्थात् छः लाख पचहत्तर हजार भेड़-बकरियाँ,

33 बहत्तर हजार गाय बैल,

34 इकसठ हजार गदहे,

35 और मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुँह नहीं देखा था वह सब बत्तीस हजार थीं।

36 और इसका आधा, अर्थात् उनका भाग जो युद्ध करने को गए थे, उसमें भेड़-बकरियाँ तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार,

37 जिनमें से पौने सात सौ भेड़-बकरियाँ यहोवा का कर ठहरीं।

38 और गाय-बैल छत्तीस हजार, जिनमें से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे।

39 और गदहे साढ़े तीस हजार, जिनमें से इकसठ यहोवा का कर ठहरे।

40 और मनुष्य सोलह हजार जिनमें से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे।

41 इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलीआजर याजक को दिया।

42 इस्राएलियों की मण्डली का आधा भाग, जिसे मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरुषों के पास से अलग किया था

43 तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार भेड़-बकरियाँ

44 छत्तीस हजार गाय-बैल,

45 साढ़े तीस हजार गदहे,

46 और सोलह हजार मनुष्य हुए।







7 और एताम से कूच करके वे पीहहीरोत को मुड़ गए, जो बाल-सपोन के सामने है; और मिग्दोल के सामने डेरे खड़े किए।

8 तब वे पीहहीरोत के सामने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल में गए, और [2222] [2222] [2222]† में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले।

9 फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गए, और एलीम में जल के बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष मिले, और उन्होंने वहाँ डेरे खड़े किए।

10 तब उन्होंने एलीम से कूच करके लाल समुद्र के तट पर डेरे खड़े किए।

11 और लाल समुद्र से कूच करके सीन नामक जंगल में डेरे खड़े किए।

12 फिर सीन नामक जंगल से कूच करके उन्होंने दोपका में डेरा किया।

13 और दोपका से कूच करके आलूश में डेरा किया।

14 और आलूश से कूच करके रपीदीम में डेरा किया, और वहाँ उन लोगों को पीने का पानी न मिला।

15 फिर उन्होंने रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में डेरे डाले।

16 और सीनै के जंगल से कूच करके किब्रोतहत्तावा में डेरा किया।

17 और किब्रोतहत्तावा से कूच करके हसेरोत में डेरे डाले।

18 और हसेरोत से कूच करके रिन्त्मा में डेरे डाले।

19 फिर उन्होंने रिन्त्मा से कूच करके रिम्मोनपेरेस में डेरे खड़े किए।

20 और रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिब्ना में डेरे खड़े किए।

21 और लिब्ना से कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किए।

22 और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा किया।

23 और कहेलाता से कूच करके शेपेर पर्वत के पास डेरा किया।

24 फिर उन्होंने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया।

25 और हरादा से कूच करके मखेलोत में डेरा किया।

26 और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े किए।

27 और तहत से कूच करके तेरह में डेरे डाले।

28 और तेरह से कूच करके मिक्का में डेरे डाले।

29 फिर मिक्का से कूच करके उन्होंने हशमोना में डेरे डाले।

30 और हशमोना से कूच करके मोसेरोत में डेरे खड़े किए।

31 और मोसेरोत से कूच करके याकानियों के बीच डेरा किया।

32 और याकानियों के बीच से कूच करके होर्हग्गिदगाद में डेरा किया।

33 और होर्हग्गिदगाद से कूच करके योतबाता में डेरा किया।

34 और योतबाता से कूच करके अब्रोना में डेरे खड़े किए।

35 और अब्रोना से कूच करके एस्योनगेबेर में डेरे खड़े किए।

36 और एस्योनगेबेर से कूच करके उन्होंने सीन नामक जंगल के कादेश में डेरा किया।

37 फिर कादेश से कूच करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश की सीमा पर है, डेरे डाले।

38 वहाँ इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर चढ़ा, और वहाँ मर गया।

39 और जब हारून होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था।

40 और अराद का कनानी राजा, जो कनान देश के दक्षिण भाग में रहता था, उसने इस्राएलियों के आने का समाचार पाया।

41 तब इस्राएलियों ने होर पर्वत से कूच करके सलमोना में डेरे डाले।

42 और सलमोना से कूच करके पूनोन में डेरे डाले।

43 और पूनोन से कूच करके ओबोत में डेरे डाले।

44 और ओबोत से कूच करके अबारीम नामक डीहों में जो मोआब की सीमा पर हैं, डेरे डाले।

45 तब उन डीहों से कूच करके उन्होंने दीबोन-गाद में डेरा किया।

46 और दीबोन-गाद से कूच करके अल्मोनदिबलातैम में डेरा किया।

47 और अल्मोनदिबलातैम से कूच करके उन्होंने अबारीम नामक पहाड़ों में नबो के सामने डेरा किया।

48 फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर डेरा किया।

49 और उन्होंने मोआब के अराबा में बेल्यशीमोत से लेकर आबेलशित्तीम तक यरदन के किनारे-किनारे डेरे डाले।

[2222] [22] [2222222] [22] [22222222]

50 फिर मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, यहोवा ने मूसा से कहा,

† 33:8 [22222] [22222] [22222]: एताम से जुड़ा हुआ विशाल जंगल।

51 “इस्राएलियों को समझाकर कह: जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुँचो

52 तब उस देश के निवासियों को उनके देश से निकाल देना; और उनके सब नक्काशीदार पत्थरों को और ढली हुई मूर्तियों को नाश करना, और उनके सब पूजा के ऊँचे स्थानों को ढा देना।

53 और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उसमें निवास करना, क्योंकि मैंने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके अधिकारी हो।

54 और तुम उस देश को चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बाँट लेना; अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक, और जो थोड़ेवाले हैं उनको थोड़ा भाग देना; जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान के लिये निकले वही उसका भाग ठहरे; अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना-अपना भाग लेना।

55 परन्तु यदि तुम उस देश के निवासियों को अपने आगे से न निकालोगे, तो उनमें से जिनको तुम उसमें रहने दोगे, वे मानो तुम्हारी आँखों में काँटे और तुम्हारे पाँजरो में कीलें ठहरेंगे, और वे उस देश में जहाँ तुम बसोगे, तुम्हें संकट में डालेंगे।

56 और उनसे जैसा बर्ताव करने की मनसा मैंने की है वैसा ही तुम से करूँगा।”

## 34

ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ

1 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 “इस्राएलियों को यह आज्ञा दे: कि जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर की सीमा तक का कनान देश है, इसलिए जब तुम ⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ\* में पहुँचो,

3 तब तुम्हारा दक्षिणी प्रान्त सीन नामक जंगल से ले एदोम देश के किनारे-किनारे होता हुआ चला जाए, और तुम्हारी दक्षिणी सीमा खारे ताल के सिरे पर आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले;

4 वहाँ से तुम्हारी सीमा अक्रब्बीम नामक चढ़ाई के दक्षिण की ओर पहुँचकर मुड़े, और सीन तक आए, और कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर निकले, और हसरदार तक बढ़के अस्मोन तक पहुँचे;

5 फिर वह सीमा अस्मोन से घूमकर मिस्र के नाले तक पहुँचे, और उसका अन्त समुद्र का तट ठहरे।

6 “फिर पश्चिमी सीमा महासमुद्र हो; तुम्हारी पश्चिमी सीमा यही ठहरे।

7 “तुम्हारी उत्तरी सीमा यह हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से ले ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ† तक सीमा बाँधना;

8 और होर पर्वत से हमात की घाटी तक सीमा बाँधना, और वह सदाद पर निकले;

9 फिर वह सीमा जिप्रोन तक पहुँचे, और हसरेनान पर निकले; तुम्हारी उत्तरी सीमा यही ठहरे।

10 “फिर अपनी पूर्वी सीमा हसरेनान से शपाम तक बाँधना;

11 और वह सीमा शपाम से रिबला तक, जो ऐन के पूर्व की ओर है, नीचे को उतरते-उतरते किन्नेरेत नामक ताल के पूर्व से लग जाए;

12 और वह सीमा यरदन तक उतरकर खारे ताल के तट पर निकले। तुम्हारे देश की चारों सीमाएँ ये ही ठहरें।”

13 तब मूसा ने इस्राएलियों से फिर कहा, “जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिकारी होंगे, और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दी है, वह यही है;

14 परन्तु रूबेनियों और गादियों के गोत्र तो अपने-अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना-अपना भाग पा चुके हैं, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी अपना भाग पा चुके हैं;

15 अर्थात् उन ढाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास यरदन के पार पूर्व दिशा में, जहाँ सूर्योदय होता है, अपना-अपना भाग पा चुके हैं।”

ⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

16 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

17 “जो पुरुष तुम लोगों के लिये उस देश को बाँटेंगे उनके नाम ये हैं एलीआजर याजक और नून का पुत्र यहोशू।

18 और देश को बाँटने के लिये एक-एक गोत्र का एक-एक प्रधान ठहराना।

19 और इन पुरुषों के नाम ये हैं यहूदागोत्री यपुत्रे का पुत्र कालेब,

20 शिमोनगोत्री अम्मीहूद का पुत्र शमूएल,

21 बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र एलीदाद,

22 दान के गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र बुक्की,

23 यूसुफियों में से मनश्शेइयों के गोत्र का प्रधान एपोद का पुत्र हन्नीएल,

24 और एप्रैमियों के गोत्र का प्रधान शिप्तान का पुत्र कमूएल,

25 जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का पुत्र एलीसापान,

\* 34:2 ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ: यहाँ कनान नाम उस क्षेत्र को दिया गया है जो यरदन के पश्चिम का क्षेत्र है। † 34:7 ⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: लबानोन पर्वत का पश्चिम शिखर जिसकी लम्बाई 80 मील की है।





अधिकार में बना रहा ।

13 जो आज्ञाएँ और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दिए वे ये ही हैं ।



इसे तुम को और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को दूँगा, उसको अब जाकर अपने अधिकार में कर लो।”

9 “फिर उसी समय मैंने तुम से कहा, ‘मैं तुम्हारा भार

अकेला नहीं उठा सकता;

10 क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहाँ तक बढ़ाया है कि तुम गिनती में आज आकाश के तारों के समान हो गए हो। (2/2/2/2/2/2. 11:12)

11 तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुम को हजारगुणा और भी बढ़ाए, और अपने वचन के अनुसार तुम को आशीष भी देता रहे!

12 परन्तु तुम्हारे झंझट, और भार, और झगड़ों को मैं अकेला कहाँ तक सह सकता हूँ।

13 इसलिए तुम अपने-अपने गोत्र में से एक-एक बुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुरुष चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊँगा।

14 इसके उत्तर में तुम ने मुझसे कहा, ‘जो कुछ तू हम से कहता है उसका करना अच्छा है।’

15 इसलिए मैंने तुम्हारे गोत्रों के मुख्य पुरुषों को जो बुद्धिमान और प्रसिद्ध पुरुष थे चुनकर तुम पर मुखिया नियुक्त किया, अर्थात् हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के सरदार भी नियुक्त किए।

16 और उस समय मैंने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा दी, ‘तुम अपने भाइयों के मुकद्दमे सुना करो, और उनके बीच और उनके पड़ोसियों और परदेशियों के बीच भी धार्मिकता से न्याय किया करो। (2/2/2/2. 7:51)

17 न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना; जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना; किसी का मुँह देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है; और जो मुकद्दमा तुम्हारे लिये कठिन हो, वह मेरे पास ले आना, और मैं उसे सुनूँगा।’ (2/2/2/2. 2:9)

18 और मैंने उसी समय तुम्हारे सारे कर्तव्य तुम को बता दिए।

19 “हम हारेब से कूच करके अपने परमेश्वर यहोवा

की आज्ञा के अनुसार उस सारे बड़े और भयानक जंगल में होकर चले, जिसे तुम ने एमोरियों के पहाड़ी देश के मार्ग में देखा, और हम कादेशबर्ने तक आए।

20 वहाँ मैंने तुम से कहा, ‘तुम एमोरियों के पहाड़ी देश तक आ गए हो जिसको हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है।

21 देखो, उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने किए देता है, इसलिए अपने पितरों के परमेश्वर

यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपने अधिकार में ले लो; न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो।’

22 और तुम सब मेरे पास आकर कहने लगे, ‘हम अपने आगे पुरुषों को भेज देंगे, जो उस देश का पता लगाकर हमको यह सन्देश दें, कि कौन से मार्ग से होकर चलना होगा और किस-किस नगर में प्रवेश करना पड़ेगा?’

23 इस बात से प्रसन्न होकर मैंने तुम में से बारह पुरुष, अर्थात् हर गोत्र में से एक पुरुष चुन लिया;

24 और वे पहाड़ पर चढ़ गए, और एशकोल नामक नाले को पहुँचकर उस देश का भेद लिया।

25 और उस देश के फलों में से कुछ हाथ में लेकर हमारे पास आए, और हमको यह सन्देश दिया, ‘जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है वह अच्छा है।’

26 ‘तो भी तुम ने वहाँ जाने से मना किया, किन्तु अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध होकर

27 अपने-अपने डेरे में यह कहकर कुडकुडाने लगे, ‘यहोवा हम से बैर रखता है, इस कारण हमको मिस्र देश से निकाल ले आया है, कि हमको एमोरियों के वश में करके हमारा सत्यानाश कर डाले।’

28 हम किधर जाएँ? हमारे भाइयों ने यह कहकर हमारे मन को कच्चा कर दिया है कि वहाँ के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और वहाँ के नगर बड़े-बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं; और हमने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा है।’

29 मैंने तुम से कहा, ‘उनके कारण भय मत खाओ और न डरो।’

30 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है वह आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा, जैसे कि उसने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये किया;

31 फिर तुम ने जंगल में भी देखा कि जिस रीति कोई पुरुष अपने लड़के को उठाए चलता है, उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हमको इस स्थान पर पहुँचने तक, उस सारे मार्ग में जिससे हम आए हैं, उठाए रहा।’ (2/2/2/2/2/2. 13:18)

32 इस बात पर भी तुम ने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर विश्वास नहीं किया,

33 जो तुम्हारे आगे-आगे इसलिए चलता रहा कि डेरे डालने का स्थान तुम्हारे लिये ढूँढ़े, और रात को आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर चला, ताकि तुम को वह मार्ग दिखाए जिससे तुम चलो।

34 “परन्तु तुम्हारी वे बातें सुनकर यहोवा का कोप

भड़क उठा, और उसने यह शपथ खाई,





14 और हमारे कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी पार होने तक अड़तीस वर्ष बीत गए, उस बीच में यहोवा की शपथ के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा छावनी में से नाश हो गए।

15 और जब तक वे नाश न हुए तब तक यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिये उनके विरुद्ध बढ़ा ही रहा।

16 “जब सब योद्धा मरते-मरते लोगों के बीच में से नाश हो गए,

17 तब यहोवा ने मुझसे कहा,

18 ‘अब मोआब की सीमा, अर्थात् आर को पार कर;

19 और जब तू अम्मोनियों के सामने जाकर उनके निकट पहुँचे, तब उनको न सताना और न छोड़ना, क्योंकि मैं अम्मोनियों के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूँगा, क्योंकि मैंने उसे लूत के वंशजों के अधिकार में कर दिया है।

20 (वह देश भी रपाइयों का गिना जाता था, क्योंकि पुराने दिनों में रपाई, जिन्हें अम्मोनी <sup>2:20</sup> कहते थे, वे वहाँ रहते थे;

21 वे भी अनाकियों के समान बलवान और लम्बे-लम्बे और गिनती में बहुत थे; परन्तु यहोवा ने उनको अम्मोनियों के सामने से नाश कर डाला, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे;

22 जैसे कि उसने सेईर के निवासी एसावियों के सामने से होरियों को नाश किया, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया, और आज तक उनके स्थान पर वे आप निवास करते हैं।

23 वैसा ही अब्बियों को, जो गाज़ा नगर तक गाँवों में बसे हुए थे, उनको कप्तोरियों ने जो कप्तोर से निकले थे नाश किया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे।)

24 अब तुम लोग उठकर कूच करो, और अर्नोन के नाले के पार चलो: सुन, मैं देश समेत हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को तेरे हाथ में कर देता हूँ; इसलिए उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ करो, और उस राजा से युद्ध छेड़ दो।

25 और जितने लोग धरती पर रहते हैं उन सभी के मन में मैं आज ही के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट समवाने लगूँगा; वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे काँपेंगे और पीड़ित होंगे।’

26 “अतः मैंने <sup>2:26</sup> नामक जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन के पास मेल की ये बातें कहने को दूत भेजे:

27 ‘मुझे अपने देश में से होकर जाने दे; मैं राजपथ पर से चला जाऊँगा, और दाएँ और बाएँ हाथ न मुड़ूँगा।

28 तू रुपया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊँ, और पानी भी रुपया लेकर मुझ को देना कि मैं पीऊँ; केवल मुझे पाँव-पाँव चले जाने दे,

29 जैसा सेईर के निवासी एसावियों ने और आर के निवासी मोआबियों ने मुझसे किया, वैसा ही तू भी मुझसे कर, इस रीति मैं यरदन पार होकर उस देश में पहुँचूँगा जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है।’

30 परन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने हमको अपने देश में से होकर चलने न दिया; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसका चित्त कठोर और उसका मन हठीला कर दिया था, इसलिए कि उसको तुम्हारे हाथ में कर दे, जैसा कि आज प्रगट है।

31 और यहोवा ने मुझसे कहा, ‘सुन, मैं देश समेत सीहोन को तेरे वश में कर देने पर हूँ; उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ कर।’

32 तब सीहोन अपनी सारी सेना समेत निकल आया, और हमारा सामना करके युद्ध करने को यहस तक चढ़ आया।

33 और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया, और हमने उसको पुत्रों और सारी सेना समेत मार डाला।

34 और उसी समय हमने उसके सारे नगर ले लिए, और एक-एक बसे हुए नगर की स्त्रियों और बाल-बच्चों समेत यहाँ तक सत्यानाश किया कि कोई न छूटा;

35 परन्तु पशुओं को हमने अपना कर लिया, और उन नगरों की लूट भी हमने ले ली जिनको हमने जीत लिया था।

36 अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएर नगर से लेकर, और उस नाले में के नगर से लेकर, गिलाद तक कोई नगर ऐसा ऊँचा न रहा जो हमारे सामने ठहर सकता था; क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने सभी को हमारे वश में कर दिया।

37 परन्तु हम अम्मोनियों के देश के निकट, वरन् यब्बोक नदी के उस पार जितना देश है, और पहाड़ी देश के नगर जहाँ जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमको मना किया था, वहाँ हम नहीं गए।

### 3

<sup>2:20</sup>

<sup>2:26</sup>

† 2:20 <sup>2:20</sup>: यह विशालकाय मनुष्यों की एक जाति थी जिसे उत्प.14:5 में रपाई: कहा गया है। ‡ 2:26 <sup>2:26</sup>: यह वास्तव में दूरस्थ पूर्वी क्षेत्र: या जो रुबेन के गोत्र के नाम करके लेवियों को दिया गया था।



25 इसलिए मुझे पार जाने दे कि यरदन पार के उस उत्तम देश को, अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी [22222] [22222]।

26 [222222] [222222] [222222222] [22222] [222222] [222222] [22] [22222], और मेरी न सुनी; किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, 'बस कर; इस विषय में फिर कभी मुझसे बातें न करना।

27 पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा, और पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर दृष्टि करके उस देश को देख ले; क्योंकि तू इस यरदन के पार जाने न पाएगा।

28 और यहोशू को आज्ञा दे, और उसे ढाढ़स देकर दृढ़ कर; क्योंकि इन लोगों के आगे-आगे वही पार जाएगा, और जो देश तू देखेगा उसको वही उनका निज भाग करा देगा।

29 तब हम [222222222] के सामने की तराई में ठहरे रहे।

## 4

[22222] [22] [222222]

1 "अब, हे इस्राएल, जो-जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूँ उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिससे तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ।

2 जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो-जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना ([222222]. 22:18)

3 तुम ने तो अपनी आँखों से देखा है कि बालपोर के कारण यहोवा ने क्या-क्या किया; अर्थात् जितने मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिये थे उन सभी को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से सत्यानाश कर डाला;

4 परन्तु तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लिपटे रहे हो सब के सब आज तक जीवित हो।

5 सुनो, मैंने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम सिखाए हैं, कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो।

6 इसलिए तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशों के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियों

को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है।

7 देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब भी हम उसको पुकारते हैं? ([2222]. 3:2)

8 फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ?

9 "यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं ऐसा न हो कि जो-जो बातें तुम ने अपनी आँखों से देखीं उनको भूल जाओ, और वह जीवन भर के लिये तुम्हारे मन से जाती रहें; किन्तु तुम उन्हें अपने बेटों पोतों को सिखाना।

10 विशेष करके उस दिन की बातें जिसमें तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े थे, जब यहोवा ने मुझसे कहा था, 'उन लोगों को मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपने वचन सुनाऊँ, जिससे वे सीखें, ताकि जितने दिन वे पृथ्वी पर जीवित रहें उतने दिन मेरा भय मानते रहें, और अपने बाल-बच्चों को भी यही सिखाएँ।'

11 तब तुम समीप जाकर उस पर्वत के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से धधक रहा था, और उसकी लौ आकाश तक पहुँचती थी, और उसके चारों ओर अंधियारा और बादल, और घोर अंधकार छाया हुआ था। ([222222]. 12:18,19)

12 तब यहोवा ने उस आग के बीच में से तुम से बातें की; बातों का शब्द तो तुम को सुनाई पड़ा, परन्तु कोई रूप न देखा; केवल शब्द ही शब्द सुन पड़ा।

13 और उसने तुम को अपनी वाचा के दसों वचन बताकर उनके मानने की आज्ञा दी; और उन्हें पत्थर की दो पट्टियाँ पर लिख दिया।

14 और मुझ को यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दी, इसलिए कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो उसमें तुम उनको माना करो।

[222222222222] [22] [222222222] [222222222]

15 "इसलिए तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना। क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें की, तब तुम को कोई रूप न दिखाई पड़ा, ([2222]. 1:23)

† 3:25 [222222] [222222]: मूसा की प्रार्थना में उसकी एक मनोकामना थी कि वह परमेश्वर की आगे की भलाई एवं महिमा को देखे और जिस काम को आरम्भ करने की आज्ञा उसे दी गई थी उसे अधूरा छोड़ देने में वह संकोच कर रहा था। ‡ 3:26 [22222222] [222222] [2222222222] [22222] [222222]

[222222] [22] [22222]: उन लोगों के पापों के कारण मूसा की प्रार्थना को अस्वीकार किया गया। § 3:29 [222222]: पोर का घर यह नाम निःसन्देह, मोआबियों के देवता पोर के मन्दिर के कारण पड़ा था जो वहाँ था।

16 कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के,

17 चाहे पृथ्वी पर चलनेवाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़नेवाले किसी पक्षी के।

18 “चाहे भूमि पर रेंगनेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहनेवाली किसी मछली के रूप की कोई मूर्ति खोदकर बना लो,

19 या जब तुम आकाश की ओर आँखें उठाकर, सूर्य, चन्द्रमा, और तारों को, अर्थात् [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]\*, तब बहक कर उन्हें दण्डवत् करके उनकी सेवा करने लगो, जिनको तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिये रखा है।

20 और तुम को यहोवा लोहे के भट्टे के सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है, इसलिए कि तुम उसका प्रजारूपी निज भाग ठहरो, जैसा आज प्रगट है।

21 फिर तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझसे क्रोध करके यह शपथ खाई, ‘तू यरदन पार जाने न पाएगा, और जो उत्तम देश इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उन्हें उनका निज भाग करके देता है, उसमें तू प्रवेश करने न पाएगा।’

22 किन्तु मुझे इसी देश में मरना है, मैं तो यरदन पार नहीं जा सकता; परन्तु तुम पार जाकर उस उत्तम देश के अधिकारी हो जाओगे।

23 इसलिए अपने विषय में तुम सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उस वाचा को भूलकर, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से बाँधी है, किसी और वस्तु की मूर्ति खोदकर बनाओ, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को मना किया है।

24 क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करनेवाली आग है; वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है। ([2][2][2][2][2][2]. 12:29)

25 “यदि उस देश में रहते-रहते बहुत दिन बीत जाने पर, और अपने बेटे-पोते उत्पन्न होने पर, तुम बिगड़कर किसी वस्तु के रूप की मूर्ति खोदकर बनाओ, और इस रीति से अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई करके उसे अप्रसन्न कर दो,

26 तो मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी करके कहता हूँ, कि जिस देश के अधिकारी होने के लिये तुम यरदन पार जाने पर हो उसमें तुम जल्दी बिल्कुल नाश हो जाओगे; और बहुत दिन रहने न पाओगे, किन्तु पूरी रीति से नष्ट हो जाओगे।

27 और यहोवा तुम को देश-देश के लोगों में तितर-बितर करेगा, और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को

पहुँचाएगा उनमें तुम थोड़े ही से रह जाओगे।

28 और वहाँ तुम मनुष्य के बनाए हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते, और न सुनते, और न खाते, और न सूँघते हैं।

29 परन्तु वहाँ भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूँढोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूँढो।

30 अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियाँ तुम पर आ पड़ें, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना;

31 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु परमेश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बाँधी है उसको नहीं भूलेगा।

32 “जब से परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न करके पृथ्वी पर रखा तब से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछ, और आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक की बातें पूछ, क्या ऐसी बड़ी बात कभी हुई या सुनने में आई है?

33 क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से आती हुई सुनकर जीवित रही, जैसे कि तूने सुनी है?

34 फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के बीच से निकालने को कमर बाँधकर परीक्षा, और चिन्ह, और चमत्कार, और युद्ध, और बलवन्त हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किए, जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किए?

35 यह सब तुझको दिखाया गया, इसलिए कि तू जान ले कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई ही नहीं।

36 आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे; और पृथ्वी पर उसने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई, और उसके वचन आग के बीच में से आते हुए तुझे सुनाई पड़े।

37 और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन लिया, और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इसलिए निकाल लाया,

38 कि तुझ से बड़ी और सामर्थी जातियों को तेरे आगे से निकालकर तुझे उनके देश में पहुँचाए, और उसे तेरा निज भागकर दे, जैसा आज के दिन दिखाई पड़ता है;

\* 4:19 [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]: जिनका प्रकाश परमेश्वर ने सब जातियों के उपयोग एवं लाभ के लिये वितरित कर दिया था। अतः मनुष्य की सेवा के लिये स्थापित इन वस्तुओं को ईश्वर मानकर उनकी उपासना नहीं करनी थी।

39 इसलिए आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं। (1 [2][2][2][2] 8:4)

40 और तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ मानना, इसलिए कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरे दिन बहुत वरन् सदा के लिये हों।”

[2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]

41 तब मूसा ने यरदन के पार पूर्व की ओर तीन नगर अलग किए,

42 इसलिए कि जो कोई बिना जाने और बिना पहले से बैर रखे अपने किसी भाई को मार डाले, वह उनमें से किसी नगर में भाग जाए, और भागकर जीवित रहे

43 अर्थात् रूबेनियों का बेसेर नगर जो जंगल के समथर देश में है, और गादियों के गिलाद का रामोत, और मनश्शेइयों के बाशान का गोलन।

[2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]

44 फिर जो व्यवस्था मूसा ने इस्राएलियों को दी वह यह है

45 ये ही वे चेतावनियाँ और नियम हैं जिन्हें मूसा ने इस्राएलियों को उस समय कह सुनाया जब वे मिस्र से निकले थे,

46 अर्थात् यरदन के पार बेतपोर के सामने की तराई में, एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के देश में, जिस राजा को उन्होंने मिस्र से निकलने के बाद मारा।

47 और उन्होंने उसके देश को, और बाशान के राजा ओग के देश को, अपने वश में कर लिया; यरदन के पार सूर्योदय की ओर रहनेवाले एमोरियों के राजाओं के ये देश थे।

48 यह देश अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएर से लेकर सिय्योन पर्वत, जो हेर्मोन भी कहलाता है,

49 उस पर्वत तक का सारा देश, और पिसगा की ढलान के नीचे के अराबा के ताल तक, यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा है।

## 5

[2][2][2][2][2][2]

1 मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा, “हे इस्राएलियों, जो-जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ वे सुनो, इसलिए कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो।

2 हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बाँधी।

3 इस वाचा को यहोवा ने [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]\*, हम ही से बाँधा, जो यहाँ आज के दिन जीवित हैं।

4 यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आमने-सामने बातें की; ([2][2][2][2][2][2] 7:38)

5 उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े, इसलिए मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा। तब उसने कहा,

6 तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है, वह मैं हूँ।

7 भुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना।

8 तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है;

9 तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूँ,

10 और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया करता हूँ।

11 तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उनको निर्दोष न ठहराएगा। ([2][2][2][2][2][2] 5:33)

12 तू विश्रामदिन को मानकर पवित्र रखना, जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी। ([2][2] 2:27)

13 छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा काम-काज करना; ([2][2][2][2] 13:14)

14 परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है; उसमें न तू किसी भाँति का काम-काज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो; जिससे तेरा दास और तेरी दासी भी तेरे समान विश्राम करे। ([2][2][2][2] 12:2, [2][2][2][2] 23:56)

15 और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहाँ से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है।

\* 5:3 [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]: पितरों अर्थात् अब्राहम, इसहाक और याकूब (व्यव. 4:37) निःसन्देह परमेश्वर ने उनसे वाचा बाँधी थी पर वह वाचा नहीं जिसकी यहाँ चर्चा की गई है। सीनै पर्वत पर बाँधी गई इस वाचा के उत्तरदायित्व क्योंकि अब उस जाति को एक राष्ट्र बनाया गया था।

- 16 'अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला हो। (222222 15:4, 22. 7:10, 22. 10:19, 2222. 6:2-3)
- 17 'तू खून न करना। (222222 5:21, 222222. 2:11)
- 18 'तू व्यभिचार न करना। (222222 5:27, 222222. 2:11, 2222. 7:7, 2222. 13:9)
- 19 'तू चोरी न करना।
- 20 'तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना। (222222 18:20)
- 21 'तू न किसी की पत्नी का लालच करना, और न किसी के घर का लालच करना, न उसके खेत का, न उसके दास का, न उसकी दासी का, न उसके बैल या गदहे का, न उसकी किसी और वस्तु का लालच करना।'
- 22 यही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग, और बादल, और घोर अंधकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारकर कहा; और 22222 222222 22 2222 22 222222 । और उन्हें उसने पत्थर की दो पट्टियाओं पर लिखकर मुझे दे दिया।

2222222222 22 2222 22 222222 22 222222 222222

23 "जब पर्वत आग से दहक रहा था, और तुम ने उस शब्द को अंधियारे के बीच में से आते सुना, तब तुम और तुम्हारे गोत्रों के सब मुख्य-मुख्य पुरुष और तुम्हारे पुरनिए मेरे पास आए; (222222. 12:19)

24 और तुम कहने लगे, 'हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमको अपना तेज और अपनी महिमा दिखाई है, और हमने उसका शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना; आज हमने देख लिया कि यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तो भी मनुष्य जीवित रहता है। (222222. 19:19)

25 अब हम क्यों मर जाएँ? क्योंकि ऐसी बड़ी आग से हम भस्म हो जाएँगे; और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनें, तब तो मर ही जाएँगे। (222222. 12:19)

26 क्योंकि सारे प्राणियों में से कौन ऐसा है जो हमारे समान जीवित और अग्नि के बीच में से बोलते हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीवित बचा रहे? (222222. 4:33)

27 इसलिए तू समीप जा, और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुन ले; फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे हम से कहना; और हम उसे सुनेंगे और उसे मानेंगे।'

2222222222 22 222222 22 2222 222222

28 "जब तुम मुझसे ये बातें कह रहे थे तब यहोवा ने तुम्हारी बातें सुनीं; तब उसने मुझसे कहा, 'इन लोगों ने जो-जो बातें तुझ से कही हैं मैंने सुनी हैं; इन्होंने जो कुछ कहा वह ठीक ही कहा।

29 भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें, जिससे उनकी और उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे!

30 इसलिए तू जाकर उनसे कह दे, कि अपने-अपने डेरों को लौट जाओ।

31 परन्तु तू यहीं मेरे पास खड़ा रह, और मैं वे सारी आज्ञाएँ और विधियाँ और नियम जिन्हें तुझे उनको सिखाना होगा तुझ से कहूँगा, जिससे वे उन्हें उस देश में जिसका अधिकार मैं उन्हें देने पर हूँ मानें।' (22222. 3:19)

32 इसलिए तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चौकसी करना; न तो दाएँ मुड़ना और न बाएँ।

33 जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो, कि तुम जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और जिस देश के तुम अधिकारी होगे उसमें तुम बहुत दिनों के लिये बने रहो। (222222 1:6)

## 6

2222222222 22222222

1 "यह वह आज्ञा, और वे विधियाँ और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है, कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके अधिकारी होने को पार जाने पर हो;

2 और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता परमेश्वर यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर, जो मैं तुझे सुनाता हूँ, अपने जीवन भर चलते रहें, जिससे तू बहुत दिन तक बना रहे।

3 हे इस्राएल, सुन, और ऐसा ही करने की चौकसी कर; इसलिए कि तेरा भला हो, और तेरे पितरों के परमेश्वर

† 5:22 22222 22222 22 2222 2 2222: अब परमेश्वर ने अपनी भयानक वाणी में उनसे सीधा वार्तालाप नहीं किया, उसने अपने सब आदेश उन्हें मूसा के माध्यम से दिए। \* 6:3 22 2222 2222: जैसा परमेश्वर ने उनके पितरों से प्रतिज्ञा की थी कि वह देश दूध और मधु का है।







उनको अति व्याकुल करता रहेगा।

24 और वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में करेगा, और तू उनका भी नाम धरती पर से मिटा डालेगा; उनमें से कोई भी तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा, और अन्त में तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा।

25 उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या **22:22 22 22 22:22 22 22:22 22:22 22:22 2 22 22:22**, नहीं तो तू उसके कारण फंदे में फँसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं।

26 और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

## 8

**22:22:22:22 22 22:22:22 22:22**

1 “जो-जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूँ उन सभी पर चलने की चौकसी करना, इसलिए कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ।

2 और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्गों में से इसलिए ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या-क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं।

3 उसने तुझको नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा भी जानते थे, वही तुझको खिलाया; इसलिए कि वह तुझको सिखाए कि **22:22:22 22:22 22:22 22 22 22:22 22:22:22 22:22, 22:22:22 22-22 22:22 22:22:22 22 22:22\*** से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। **(22:22:22 4:4, 22:22 4:4, 1 22:22. 10:3)**

4 इन चालीस वर्षों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे पाँव फूले।

5 फिर अपने मन में यह तो विचार कर, कि जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको ताड़ना देता है। **(22:22:22. 12:7)**

6 इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके मार्गों पर चलना, और उसका भय मानते रहना।

7 क्योंकि तेरा परमेश्वर **22:22:22 22:22 22 22:22:22 22:22 22:22 22:22 22 22:22 22**, जो जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहरे-गहरे सोतों का देश है।

8 फिर वह गेहूँ, जौ, दाखलताओं, अंजीरों, और अनारों का देश है; और तेलवाले जैतून और मधु का भी देश है।

9 उस देश में अन्न की महँगी न होगी, और न उसमें तुझे किसी पदार्थ की घटी होगी; वहाँ के पत्थर लोहे के हैं, और वहाँ के पहाड़ों में से तू तांबा खोदकर निकाल सकेगा।

10 और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसे धन्य मानेगा।

**22:22:22:22 22 22:22:22:22 22 22 22:22:22**

11 “इसलिए सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो-जो आज्ञा, नियम, और विधि, मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे;

12 ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे-अच्छे घर बनाकर उनमें रहने लगे,

13 और तेरी गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की बढ़ती हो, और तेरा सोना, चाँदी, और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए,

14 तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझको दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है,

15 और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है, जहाँ तेज विषवाले सर्प और बिच्छू हैं, और जलरहित सूखे देश में उसने तेरे लिये चकमक की चट्टान से जल निकाला,

16 और तुझे जंगल में मन्ना खिलाया, जिसे तुम्हारे पुरखा जानते भी न थे, इसलिए कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके **22:22 22:22 22:22 22:22 22 22:22**।

17 और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे, कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई।

† 7:25 **22:22 22 22 22:22 22 22:22 22:22 22:22 2 22 22:22**: मूर्तियों पर चढ़ाया हुआ सोना चाँदी। \* 8:3 **22:22:22 22:22 22:22 22 22 22:22 ... 22:22 22:22:22 22 22:22**: उन्हें यह शिक्षा दी गई कि मनुष्य मात्र प्रकृति के पोषण से नहीं, बल्कि उस प्रकृति के माध्यम से सृजनहार परमेश्वर के द्वारा जीवित रहता है। † 8:7 **22:22 22:22 22 22:22:22 22:22 22:22 22 22:22 22**: प्रतिज्ञा देश की उर्वरता और उत्कृष्टता से इस्राएलियों को प्रोत्साहन मिला कि कनान वासियों के विरोध का सामना अधिक हर्ष के साथ करें। ‡ 8:16 **22:22 22:22 22:22 22:22 22 22:22**: यह परमेश्वर के व्यवहार का परिणाम था।







होकर उस देश में जिसके अधिकारी होने के लिये तुम पार जा रहे हो प्रवेश करके उसके अधिकारी हो जाओ,

9 और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ, जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को देने की शपथ यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, और उसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।

10 देखो, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहाँ से निकलकर आए हो, जहाँ तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पाँव से नालियाँ बनाकर सींचते थे;

11 परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सींचता है;

12 वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर लगी रहती है।

13 “यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें सुनाता हूँ ध्यान से सुनकर, अपने सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साथ, अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो और उसकी सेवा करते रहो,

14 तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के **222 22 2222 22222 22 22222 22 22222-2222 222 22 222222222\***, जिससे तू अपना अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल संचय कर सकेगा। **(2222. 5:7)**

15 और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊँगा, और तू पेट भर खाएगा और सन्तुष्ट रहेगा।

16 इसलिए अपने विषय में सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन धोखा खाएँ, और तुम बहक कर दूसरे देवताओं की पूजा करने लगो और उनको दण्डवत् करने लगो,

17 और यहोवा का कोप तुम पर भड़के, और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे, और भूमि अपनी उपज न दे, और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ।

18 इसलिए तुम मेरे ये वचन अपने-अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्ह के रूप में अपने हाथों पर बाँधना, और वे तुम्हारी आँखों के मध्य में टीके का काम दें।

19 और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी चर्चा करके अपने बच्चों को सिखाया करना।

20 और इन्हें अपने-अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना;

21 **222222 22 222 222 22 22222 222 222222 22 22222 22222222 22 222 22222 222 22, 22 222 222 22222222 22222, 22222 222 22 222222222 22222 222222222 2222**, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें।

22 इसलिए यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूँ पूरी चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसके सब मार्गों पर चलो, और उससे लिपटे रहो,

23 तो यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा, और तुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे।

24 जिस-जिस स्थान पर तुम्हारे पाँव के तलवे पड़ें वे सब तुम्हारे ही हो जाएँगे, अर्थात् जंगल से लबानोन तक, और फरात नामक महानद से लेकर पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारी सीमा होगी।

25 तुम्हारे सामने कोई भी खड़ा न रह सकेगा; क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पाँव पड़ेंगे उस सब पर रहनेवालों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उनमें डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा।

26 “सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और श्राप दोनों रख देता हूँ।

27 अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ मानो, तो तुम पर आशीष होगी,

28 और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूँ उसे तजकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम पर श्राप पड़ेगा।

29 और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको उस देश में पहुँचाए जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है, तब आशीष गिरिज्जीम पर्वत पर से और श्राप एबाल पर्वत पर से सुनाना। **(2222. 4:20)**

30 क्या वे यरदन के पार, सूर्य के अस्त होने की ओर, अराबा के निवासी कनानियों के देश में, गिलगाल के सामने, मोरे के बांजवृक्षों के पास नहीं है?

\* **11:14** **222 22 2222 22222 22222 22 22222 22 2222-2222 222 22 222222222**: आदि अर्थात् वसन्त ऋतु की वर्षा जो बोनो के समय होती है। † **11:21** **22222 22 ... 22222 222 22 222222222 22222 222222222 2222**: अतः इस्राएल के लिये कनान देश की प्रतिज्ञा सदाकालीन थी परन्तु शर्त आधारित भी थी।

31 तुम तो यरदन पार इसलिए जाने पर हो, कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसके अधिकारी हो जाओ; और तुम उसके अधिकारी होकर उसमें निवास करोगे;

32 इसलिए जितनी विधियाँ और नियम मैं आज तुम को सुनाता हूँ उन सभी के मानने में चौकसी करना।

## 12

12:1-12:12

1 “जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार में लेने को दिया है, उसमें जब तक तुम भूमि पर जीवित रहो तब तक इन विधियों और नियमों के मानने में चौकसी करना।

2 जिन जातियों के तुम अधिकारी होगे उनके लोग ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों या टीलों पर, या किसी भाँति के हरे वृक्ष के तले, जितने स्थानों में अपने देवताओं की उपासना करते हैं, उन सभी को तुम पूरी रीति से नष्ट कर डालना;

3 उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को आग में जला देना, और उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियों को काटकर गिरा देना, कि उस देश में से उनके नाम तक मिट जाएँ।

4 फिर 12:1-12:12, 12:13-12:14\*।

5 किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, 12:15-12:16, उसके उसी निवास-स्थान के पास जाया करना;

6 और वहीं तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंट, और मन्त्रत की वस्तुएँ, और स्वेच्छाबलि, और गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौटे ले जाया करना;

7 और वहीं तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने भोजन करना, और अपने-अपने घराने समेत उन सब कामों पर, जिनमें तुम ने हाथ लगाया हो, और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशीष मिली हो, आनन्द करना।

8 जैसे हम आजकल यहाँ जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना;

9 जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहाँ तुम अब तक तो नहीं पहुँचे।

10 परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे,

11 और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंट, और मन्त्रतों की सब उत्तम-उत्तम वस्तुएँ जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे, अर्थात् जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उन सभी को वहीं ले जाया करना।

12 और वहाँ तुम अपने-अपने बेटे-बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करना, और जो लेवीय तुम्हारे फाटकों में रहे वह भी आनन्द करे, क्योंकि उसका तुम्हारे संग कोई निज भाग या अंश न होगा।

13 और सावधान रहना कि तू अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाना; (12:17. 4:20)

14 परन्तु जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं अपने होमबलियों को चढ़ाया करना, और जिस-जिस काम की आज्ञा मैं तुझको सुनाता हूँ उसको वहीं करना।

15 “परन्तु तू अपने सब फाटकों के भीतर अपने जी की इच्छा और अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आशीष के अनुसार पशु मारकर खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे, जैसे कि चिकारे और हिरन का माँस।

16 परन्तु उसका लहू न खाना; उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना।

17 फिर अपने अन्न, या नये दाखमधु, या टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के पहलौटे, और अपनी मन्त्रतों की कोई वस्तु, और अपने स्वेच्छाबलि, और उठाई हुई भेंटें अपने सब फाटकों के भीतर न खाना;

18 उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उसी स्थान पर जिसको वह चुने अपने बेटे-बेटियों और दास दासियों के, और जो लेवीय तेरे फाटकों के भीतर रहेंगे उनके साथ खाना, और तू अपने परमेश्वर यहोवा के सामने अपने सब कामों पर जिनमें हाथ लगाया हो आनन्द करना।

19 और सावधान रह कि जब तक तू भूमि पर जीवित रहे तब तक लेवियों को न छोड़ना।

\* 12:4 12:1-12:12, 12:13-12:14: कनान वासियों का धर्म मानवीय था और उनकी उपासना विधि मानव रचित थी। वे अपने पूज्य स्थल पर्वतों पर बनाते थे, यह सोचकर कि वे स्वर्ग के निकट है परन्तु ऐसे अंधविश्वास सच्चे धर्म के योग्य न थे। † 12:5 12:15-12:16: अर्थात् मनुष्यों में अपनी दिव्य उपस्थिति प्रगट करे।







19 और जितने रेंगनेवाले जन्तु हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; वे खाए न जाएँ।

20 परन्तु सब शुद्ध पंखवालों का माँस तुम खा सकते हो।

21 “**22 2222 222222 22 22 222 222 222 2 2222†**; उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते हो, या किसी पराए के हाथ बेच सकते हो; परन्तु तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र प्रजा है। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना।

**222222 22 2222**

22 “बीज की सारी उपज में से जो प्रतिवर्ष खेत में उपजे उसका दशमांश अवश्य अलग करके रखना।

23 और जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसमें अपने अन्न, और नये दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौटे अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाया करना; जिससे तुम उसका भय नित्य मानना सीखोगे।

24 परन्तु यदि वह स्थान जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाएँ रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर हो, और इस कारण वहाँ की यात्रा तेरे लिये इतनी लम्बी हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएँ वहाँ न ले जा सके,

25 तो उसे बेचकर, रुपये को बाँध, हाथ में लिये हुए उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा,

26 और वहाँ गाय-बैल, या भेड़-बकरी, या दाखमधु, या मदिरा, या किसी भाँति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी रुपये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाकर आनन्द करना।

27 और अपने फाटकों के भीतर के लेवीय को न छोड़ना, क्योंकि तेरे साथ उसका कोई भाग या अंश न होगा।

28 “तीन-तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की उपज का सारा दशमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा कर रखना;

29 तब लेवीय जिसका तेरे संग कोई निज भाग या अंश न होगा वह, और जो परदेशी, और अनाथ, और विधवाएँ तेरे फाटकों के भीतर हों, वे भी आकर पेट भर

खाएँ; जिससे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे।

## 15

**222222 2222: 2222222 22 2222**

1 “सात-सात वर्ष बीतने पर तुम **2222222 2222 2222†**;

2 अर्थात् जिस किसी ऋण देनेवाले ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो, तो वह उसे छोड़ दे; और अपने पड़ोसी या भाई से उसको बरबस न भरवाए, क्योंकि **22222 22 222 22 22 2222222 22 222222 222 22†**।

3 **2222222 2222222 22 22 222 2222 2222 2222 22†**; परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उसे तू बिना भरवाए छोड़ देना।

4 तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा, क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है, कि तू उसका अधिकारी हो, उसमें वह तुझे बहुत ही आशीष देगा।

5 इतना अवश्य है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने, और इन सारी आज्ञाओं के मानने में जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ चौकसी करे।

6 तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा, और तू बहुत जातियों को उधार देगा, परन्तु तुझे उधार लेना न पड़ेगा; और तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा, परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने पाएँगी।

**2222222 22 2222 2222222**

7 “जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसके किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयों में से कोई तेरे पास दरिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठोर करना, और न अपनी मुट्ठी कड़ी करना; **(2222. 3:17)**

8 जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसकी जितनी आवश्यकता हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना।

9 **22222 22 22 22222 22 222 222 2222222 2222222 2 22222†**, कि सातवाँ वर्ष जो छुटकारे का वर्ष है वह निकट है, और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से क्रूर करके उसे कुछ न दे, और वह

† 14:21 **22 2222 222222 22 22 222 222 222 2 2222**: यहाँ उद्देश्य स्पष्ट है। ऐसा माँस न तो वे स्वयं खाएँ ना किसी को खाने के लिये दें। इसमें सम्पदा की हानि और आज्ञा के उल्लंघन की परीक्षा होती है। \* 15:1 **2222222 2222 2222**: अर्थात् ‘ऋण रद्द करना’ † 15:2 **22222 22 222 22 22 2222222 22 222222 222 22**: क्योंकि परमेश्वर द्वारा मुक्ति की घोषणा की जा चुकी है और इसमें मुक्ति के वर्ष की गंभीरता: की सार्वजनिक घोषणा का अभिप्राय निहित है। ‡ 15:3 **222222 2222222 22 22 222 2222 2222 2222 22**: परदेशी मनुष्य विश्रामवर्ष की सीमाओं में नहीं आता हैं अतः उसे ऋण मुक्ति और विशेषाधिकारों का लाभ प्राप्त नहीं है। § 15:9 **2222 22 22 22222 22 222 222 2222222 2222222 2 22222**: सावधान रहना कि छुटकारे का पर्व निकट देखकर किसी को ऋण देने में तेरे मन में बुराई न आए।

तेरे विरुद्ध यहोवा की दुहाई दे, तो यह तेरे लिये पाप ठहरेगा।

10 तू उसको अवश्य देना, और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे; क्योंकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिनमें तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष देगा।

11 तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएँगे, इसलिए मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ कि तू अपने देश में अपने दीन-दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना। (22:26:11, 22:14:7, 22:12:8)

22:26:11 22:14:7 22:12:8

12 “यदि तेरा कोई भाई-बन्धु, अर्थात् कोई इब्री या इब्रिन, तेरे हाथ बिके, और वह छः वर्ष तेरी सेवा कर चुके, तो सातवें वर्ष उसको अपने पास से स्वतंत्र करके जाने देना।

13 और जब तू उसको स्वतंत्र करके अपने पास से जाने दे तब उसे खाली हाथ न जाने देना;

14 वरन् अपनी भेड़-बकरियों, और खलिहान, और दाखमधु के कुण्ड में से बहुतायत से देना; तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दी हो उसी के अनुसार उसे देना।

15 और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छोड़ा लिया; इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूँ।

16 और यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता है, और तेरे संग आनन्द से रहता हो, और इस कारण तुझ से कहने लगे, ‘मैं तेरे पास से न जाऊँगा;’

17 तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना।

18 जब तू उसको अपने पास से स्वतंत्र करके जाने दे, तब उसे छोड़ देना तुझको कठिन न जान पड़े; क्योंकि उसने छः वर्ष 22:26:11 22:14:7 22:12:8\* तेरी सेवा की है। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझको आशीष देगा।

22:26:11 22:14:7 22:12:8

19 “तेरी गायों और भेड़-बकरियों के जितने पहलौटे नर हों उन सभी को अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र रखना; अपनी गायों के पहिलौटों से कोई काम न लेना, और न अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौटों का ऊन कतरना।

\* 15:18 22:26:11 22:14:7 22:12:8: उसने एक आम मजदूर से दो गुणा अधिक मजदूरी की है। \* 16:1 22:26:11 22:14:7 22:12:8: यह आदेश लागू करना अधिक आवश्यक था क्योंकि इसका मनाया जाना 39 वर्षों से अन्तर्विराम में था। † 16:2 22:26:11 22:14:7 22:12:8: फसह का त्यौहार जो सात दिन का होता था उसमें उचित बलि चढ़ाई जाए।

20 उस स्थान पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा तू यहोवा के सामने अपने-अपने घराने समेत प्रतिवर्ष उसका माँस खाना।

21 परन्तु यदि उसमें किसी प्रकार का दोष हो, अर्थात् वह लँगड़ा या अंधा हो, या उसमें किसी और ही प्रकार की बुराई का दोष हो, तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलि न करना।

22 उसको अपने फाटकों के भीतर खाना; शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य जैसे चिकारे और हिरन का माँस खाते हैं वैसे ही उसका भी खा सकेंगे।

23 परन्तु उसका लहू न खाना; उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना।

## 16

22:26:11 22:14:7 22:12:8

1 “अबीब महीने को स्मरण करके अपने परमेश्वर यहोवा के लिये 22:26:11 22:14:7 22:12:8\*; क्योंकि अबीब महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया।

2 इसलिए जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने को चुन लेगा, वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये भेड़-बकरियों और गाय-बैल 22:26:11 22:14:7 22:12:8\*।

3 उसके संग कोई खमीरी वस्तु न खाना; सात दिन तक अखमीरी रोटी जो दुःख की रोटी है खाया करना; क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली करके निकला था; इसी रीति से तुझको मिस्र देश से निकलने का दिन जीवन भर स्मरण रहेगा। (1 22:26:11. 5:8)

4 सात दिन तक तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर देखने में भी न आए; और जो पशु तू पहले दिन की संध्या को बलि करे उसके माँस में से कुछ सवेरे तक रहने न जाए।

5 फसह को अपने किसी फाटक के भीतर, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे बलि न करना।

6 जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये चुन ले केवल वहीं, वर्ष के उसी समय जिसमें तू मिस्र से निकला था, अर्थात् सूरज डूबने पर संध्याकाल को, फसह का पशुबलि करना।

7 तब उसका माँस उसी स्थान में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले भूनकर खाना; फिर सवेरे को उठकर अपने-अपने डेरे को लौट जाना।

8 छः दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना; और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये महासभा हो;

उस दिन किसी प्रकार का काम-काज न किया जाए।  
(**2: 41**)

**9** “फिर जब तू खेत में हँसुआ लगाने लगे, तब से

आरम्भ करके सात सप्ताह गिनना।

**10** तब अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष के अनुसार उसके लिये स्वेच्छाबलि देकर सप्ताहों का पर्व मानना;

**11** और उस स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले अपने-अपने बेटे-बेटियों, दास दासियों समेत तू और तेरे फाटकों के भीतर जो लेवीय हों, और जो-जो परदेशी, और अनाथ, और विधवाएँ तेरे बीच में हों, वे सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करें।

**12** और स्मरण रखना कि तू भी मिस्र में दास था; इसलिए इन विधियों के पालन करने में चौकसी करना।

**13** “तू जब अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में

से सब कुछ इकट्ठा कर चुके, तब झोपड़ियों का पर्व सात दिन मानते रहना;

**14** और अपने इस पर्व में अपने-अपने बेटे बेटियों, दास दासियों समेत तू और जो लेवीय, और परदेशी, और अनाथ, और विधवाएँ तेरे फाटकों के भीतर हों वे भी आनन्द करें।

**15** जो स्थान यहोवा चुन ले उसमें तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये सात दिन तक पर्व मानते रहना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी सारी बद्धती में और तेरे सब कामों में तुझको आशीष देगा; तू आनन्द ही करना।

**16** वर्ष में तीन बार, अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व, और सप्ताहों के पर्व, और झोपड़ियों के पर्व, इन तीनों पर्वों में तुम्हारे सब पुरुष अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान में जो वह चुन लेगा जाएँ। और देखो, खाली हाथ यहोवा के सामने कोई न जाए;

**17** सब पुरुष अपनी-अपनी पूँजी, और उस आशीष के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझको दी हो, दिया करें।

**18** “तू अपने एक-एक गोत्र में से, अपने सब फाटकों के भीतर जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको देता है

, जो लोगों का न्याय धार्मिकता से किया करें।

**19** तुम न्याय न बिगाड़ना; तू न तो पक्षपात करना; और न तो घूस लेना, क्योंकि घूस बुद्धिमान की आँखें अंधी कर देती है, और धर्मियों की बातें पलट देती है।

**20** जो कुछ नितान्त ठीक है उसी का पीछा करना, जिससे तू जीवित रहे, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसका अधिकारी बना रहे।

**21** “तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो वेदी बनाएगा

उसके पास किसी प्रकार की लकड़ी की बनी हुई अशरा का स्थापन न करना।

**22** और न कोई स्तम्भ खड़ा करना, क्योंकि उससे तेरा परमेश्वर यहोवा घृणा करता है।

## 17

**1** “तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये कोई बैल या भेड़-बकरी बलि न करना जिसमें **2: 22**; क्योंकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप घृणित है।

**2** “जो बस्तियाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, यदि उनमें से किसी में कोई पुरुष या स्त्री ऐसी पाई जाए, जिसने तेरे परमेश्वर यहोवा की वाचा तोड़कर ऐसा काम किया हो, जो उसकी दृष्टि में बुरा है,

**3** अर्थात् मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके पराए देवताओं की, या सूर्य, या चन्द्रमा, या आकाश के गण में से किसी की उपासना की हो, या उनको दण्डवत् किया हो,

**4** और यह बात तुझे बताई जाए और तेरे सुनने में आए; तब भली भाँति पूछपाछ करना, और यदि यह बात सच ठहरे कि इस्राएल में ऐसा घृणित कर्म किया गया है,

**5** तो जिस पुरुष या स्त्री ने ऐसा बुरा काम किया हो, उस पुरुष या स्त्री को बाहर अपने फाटकों पर ले जाकर ऐसा पथराव करना कि वह मर जाए।

**6** जो प्राणदण्ड के योग्य ठहरे वह एक ही की साक्षी से न मार डाला जाए, किन्तु दो या तीन मनुष्यों की साक्षी से मार डाला जाए। (**8:17, 1 9:5:19, 10:28**)

**7** उसके मार डालने के लिये सबसे पहले साक्षियों के हाथ, और उनके बाद और सब लोगों के हाथ उठें। इसी

‡ **16:18** मूसा के कूच करने का समय आ गया था और इस्राएली कनान देश में सर्वत्र फैल जाएँगे। अतः नागरिक एवं सामाजिक व्यवस्था तथा सुचारू प्रबन्ध हेतु स्थाई व्यवस्था की आवश्यकता थी। \* **17:1** यहाँ फिर से परमेश्वर के लिये दोषबलि पशु चढ़ाना वर्जित किया गया है (व्यव. 15:21) जिसके कारण परमेश्वर का अपमान होता है।





यहोवा से प्रेम रखे और सदा उसके मार्गों पर चलता रहे तो इन तीन नगरों से अधिक और भी तीन नगर अलग कर देना,

10 इसलिए कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके देता है, किसी निर्दोष का खून न बहाया जाए, और उसका दोष तुझ पर न लगे।

11 “परन्तु यदि कोई किसी से बैर रखकर उसकी घात में लगे, और उस पर लपककर उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए, और फिर उन नगरों में से किसी में भाग जाए,

12 तो उसके नगर के पुरनिये किसी को भेजकर उसको वहाँ से मँगाकर खून के पलटा लेनेवाले के हाथ में सौंप दें, कि वह मार डाला जाए।

13 उस पर तरस न खाना, परन्तु निर्दोष के खून का दोष इस्राएल से दूर करना, जिससे तुम्हारा भला हो।

2222 22222

14 “जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको देता है, उसका जो भाग तुझे मिलेगा, उसमें 2222 22 22222† जिसे प्राचीन लोगों ने ठहराया हो न हटाना।

222222 22 222222222 2222

15 “किसी मनुष्य के विरुद्ध किसी प्रकार के अधर्म या पाप के विषय में, चाहे उसका पाप कैसा ही क्यों न हो, एक ही जन की साक्षी न सुनना, परन्तु दो या तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे। (2222222 18:16)

16 यदि कोई झूठी साक्षी देनेवाला किसी के विरुद्ध यहोवा से फिर जाने की साक्षी देने को खड़ा हो,

17 तो 22 222222 2222222, 222222 222 222 222222222 222 222, 222222 22 22222222S, अर्थात् उन दिनों के याजकों और न्यायियों के सामने खड़े किए जाएँ;

18 तब न्यायी भली भाँति पूछताछ करें, और यदि इस निर्णय पर पहुँचें कि वह झूठा साक्षी है, और अपने भाई के विरुद्ध झूठी साक्षी दी है

19 तो अपने भाई की जैसी भी हानि करवाने की युक्ति उसने की हो वैसी ही तुम भी उसकी करना; इसी रीति से अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना।

20 तब दूसरे लोग सुनकर डरेंगे, और आगे को तेरे बीच फिर ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे।

† 19:14 2222 22 2222: जिस प्रकार मनुष्य की जान को पवित्र मानना था, उसी प्रकार उसकी जीविका को भी पवित्र मानना था। इस सम्बंध में एक निषेधाज्ञा दी गई थी जो पड़ोसी की भूमि के चिन्ह से छेड़-छाड़ करने के विरुद्ध थी। ‡ 19:17 22 222222 2222222, 22222 222 222 222222222 222 222: वादी और प्रतिवादी दोनों को व्यवस्थाविवरण में दिए गए प्रावधानों के अधीन न्यायियों के सामने प्रस्तुत किया जाए।

§ 19:17 222222 22 222222222: उनके न्यायी परमेश्वर के प्रतिनिधि थे, अतः उनसे झूठ बोलना परमेश्वर से झूठ बोलने के बराबर था। \* 20:1 222222, 22: कनानियों के पास ऐसी भयानक सेना शक्ति थी। इस्राएली अपनी सेना के साथ इनका सामना नहीं कर सकते थे परन्तु उनके पक्ष में सेनाओं का यहोवा था। अतः उन्हें उनसे डरने की आवश्यकता नहीं थी। † 20:10 22222 22222 22 222222222: जान और माल की हानि से बचने के अभिप्राय से ये निर्देश दिए गए थे।

21 और तू बिल्कुल तरस न खाना; प्राण के बदले प्राण का, आँख के बदले आँख का, दाँत के बदले दाँत का, हाथ के बदले हाथ का, पाँव के बदले पाँव का दण्ड देना। (222222 5:38)

## 20

222222 22 22222 22 22222

1 “जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और 222222, 222\*, और अपने से अधिक सेना को देखे, तब उनसे न डरना; तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझको मिस्र देश से निकाल ले आया है वह तेरे संग है।

2 और जब तुम युद्ध करने को शत्रुओं के निकट जाओ, तब याजक सेना के पास आकर कहें,

3 हे इस्राएलियों सुनो, आज तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करने को निकट आए हो; तुम्हारा मन कच्चा न हो; तुम मत डरो, और न थरथराओ, और न उनके सामने भय खाओ;

4 क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें बचाने के लिये तुम्हारे संग-संग चलता है।

5 फिर सरदार सिपाहियों से यह कहें, ‘तुम में से कौन है जिसने नया घर बनाया हो और उसका समर्पण न किया हो? तो वह अपने घर को लौट जाए, कहीं ऐसा न हो कि वह युद्ध में मर जाए और दूसरा मनुष्य उसका समर्पण करे।

6 और कौन है जिसने दाख की बारी लगाई हो, परन्तु उसके फल न खाए हों? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह संग्राम में मारा जाए, और दूसरा मनुष्य उसके फल खाए।

7 फिर कौन है जिसने किसी स्त्री से विवाह की बात लगाई हो, परन्तु उसको विवाह करके न लाया हो? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह युद्ध में मारा जाए, और दूसरा मनुष्य उससे विवाह कर ले।

8 इसके अलावा सरदार सिपाहियों से यह भी कहें, ‘कौन-कौन मनुष्य है जो डरपोक और कच्चे मन का है, वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसको देखकर उसके भाइयों का भी हियाव टूट जाए।’

9 और जब प्रधान सिपाहियों से यह कह चुकें, तब उन पर प्रधानता करने के लिये सेनापतियों को नियुक्त करें।

10 “जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उसके निकट जाए, तब पहले उससे [27:22] [27:22] [27] [27:22] दे।

11 और यदि वह संधि करना स्वीकार करे और तेरे लिये अपने फाटक खोल दे, तब जितने उसमें हों वे सब तेरे अधीन होकर तेरे लिये बेगार करनेवाले ठहरें।

12 परन्तु यदि वे तुझ से संधि न करें, परन्तु तुझ से लड़ना चाहें, तो तू उस नगर को घेर लेना;

13 और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उसमें के सब पुरुषों को तलवार से मार डालना।

14 परन्तु स्त्रियाँ और बाल-बच्चे, और पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना; और तेरे शत्रुओं की लूट जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना।

15 इस प्रकार उन नगरों से करना जो तुझ से बहुत दूर हैं, और जो यहाँ की जातियों के नगर नहीं हैं।

16 परन्तु जो नगर इन लोगों के हैं, जिनका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको ठहराने पर है, उनमें से [27:22] [27:22] [27] [27:22] [27] [27:22] [27];

17 परन्तु उनका अवश्य सत्यानाश करना, अर्थात् हित्तियों, एमोरियों, कनानियों, परिज्जियों, हिब्वियों, और यबूसियों को, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है;

18 ऐसा न हो कि जितने धिनौने काम वे अपने देवताओं की सेवा में करते आए हैं वैसा ही करना तुम्हें भी सिखाएँ, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करने लगे।

19 “जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर को जीतने के लिये उसे बहुत दिनों तक घेरे रहे, तब उसके वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश न करना, क्योंकि उनके फल तेरे खाने के काम आएँगे, इसलिए उन्हें न काटना। क्या मैदान के वृक्ष भी मनुष्य हैं कि तू उनको भी घेर रखे?

20 परन्तु जिन वृक्षों के विषय में तू यह जान ले कि इनके फल खाने के नहीं हैं, तो उनको काटकर नाश करना, और उस नगर के विरुद्ध उस समय तक घेराबन्दी किए रहना जब तक वह तेरे वश में न आ जाए।

## 21

[27:22] [27:22] [27] [27:22] [27] [27:22]

1 “यदि उस देश के मैदान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है किसी मारे हुए का शव पड़ा हुआ मिले, और उसको किसने मार डाला है यह पता न चले,

‡ 20:16 [27:22] [27:22] [27] [27:22] [27] [27:22]: कनानियों पर तो किसी भी प्रकार की दया नहीं दर्शाना, उनका पूरा सफाया करना।

\* 21:13 [27:22] [27:22] [27:22] [27] [27:22] [27:22] [27:22] [27:22]: मानवता के उद्देश्य से दिया गया निर्देश कि स्त्री अपने सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर नए बंधन के लिये तैयार हो जाए।

2 तो तेरे पुरनिये और न्यायी निकलकर उस शव के चारों ओर के एक-एक नगर की दूरी को नापें;

3 तब जो नगर उस शव के सबसे निकट ठहरे, उसके पुरनिये एक ऐसी बछिया ले ले, जिससे कुछ काम न लिया गया हो, और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो।

4 तब उस नगर के पुरनिये उस बछिया को एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न जोती और न बोई गई हो ले जाएँ, और उसी तराई में उस बछिया का गला तोड़ दें।

5 और लेवीय याजक भी निकट आएँ, क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उनको चुन लिया है कि उसकी सेवा टहल करें और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, और उनके कहने के अनुसार हर एक झगड़े और मारपीट के मुकद्दमे का निर्णय हो।

6 फिर जो नगर उस शव के सबसे निकट ठहरे, उसके सब पुरनिये उस बछिया के ऊपर जिसका गला तराई में तोड़ा गया हो अपने-अपने हाथ धोकर कहें, ([27:22] [27:22] 27:24)

7 ‘यह खून हमने नहीं किया, और न यह काम हमारी आँखों के सामने हुआ है।

8 इसलिए, हे यहोवा, अपनी छुड़ाई हुई इस्राएली प्रजा का पाप ढाँपकर निर्दोष खून का पाप अपनी इस्राएली प्रजा के सिर पर से उतार।’ तब उस खून के दोष से उनको क्षमा कर दिया जाएगा।

9 इस प्रकार वह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तू निर्दोष के खून का दोष अपने मध्य में से दूर करना।

[27:22] [27:22]

10 “जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे, और तू उन्हें बन्दी बना ले,

11 तब यदि तू बन्दियों में किसी सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए, और उससे ब्याह कर लेना चाहे,

12 तो उसे अपने घर के भीतर ले आना, और वह अपना सिर मुँड़ाएँ, नाखून कटाएँ,

13 और अपने बन्धन के वस्त्र उतारकर तेरे घर में महीने भर रहकर [27:22] [27:22] [27:22] [27] [27:22] [27:22] [27:22] [27:22]; उसके बाद तू उसके पास जाना, और तू उसका पति और वह तेरी पत्नी बने।

14 फिर यदि वह तुझको अच्छी न लगे, तो जहाँ वह जाना चाहे वहाँ उसे जाने देना; उसको रुपया लेकर







6 तू जीवन भर उनका कुशल और भलाई कभी न चाहना।

7 “किसी एदोमी से घृणा न करना, क्योंकि वह तेरा भाई है; किसी मिस्री से भी घृणा न करना, क्योंकि उसके देश में तू परदेशी होकर रहा था।

8 उनके [22 2222222 22222222 2222]\* वे यहोवा की सभा में आने पाएँ।

[222222 22 2222-22222]

9 “जब तू शत्रुओं से लड़ने को जाकर छावनी डाले, तब सब प्रकार की बुरी बातों से बचे रहना।

10 यदि तेरे बीच कोई पुरुष उस अशुद्धता से जो रात्रि को आप से आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो, तो वह छावनी से बाहर जाए, और छावनी के भीतर न आए;

11 परन्तु संध्या से कुछ पहले वह स्नान करे, और जब सूर्य डूब जाए तब छावनी में आए।

12 “छावनी के बाहर शौच-स्थान बनाना, और शौच के लिए वहीं जाया करना;

13 और तेरे पास के हथियारों में एक खनती भी रहे; और जब तू दिशा फिरने को बैठे, तब उससे खोदकर अपने मल को ढाँप देना।

14 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा, इसलिए तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये, ऐसा न हो कि वह तेरे मध्य में कोई अशुद्ध वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए।

[222222 2222]

15 “[22 222 2222 2222222 22 2222 22 222222 2222 2222 22] उसको उसके स्वामी के हाथ न पकड़ा देना;

16 वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाए; और तू उस पर अत्याचार न करना।

[22222222222222 22222222]

17 “इस्राएली स्त्रियों में से [222 22222222 2 222], और न इस्राएलियों में से कोई पुरुष ऐसा बुरा काम करनेवाला हो।

18 तू वेश्यापन की कमाई या कुत्ते की कमाई किसी मन्नत को पूरी करने के लिये अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न लाना; क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप ये दोनों की दोनों कमाई घृणित कर्म है।

[2222 22 222222]

\* 23:8 [22 2222222 22222222 2222]: एदोमी और मिस्रियों के परपोते। † 23:15 [22 222 2222 22222222 22 222 22 222222 2222 2222]: अन्यजाति स्वामी के पास से भागकर उनके देश में आ जाए। निश्चय ही वह शरणार्थी दण्ड से भागकर नहीं परन्तु अपने स्वामी के अत्याचार से बचकर भागा है। ‡ 23:17 [222 22222222 2 222]: मूर्तिपूजक जातियों में वेश्यावृत्ति धार्मिक अनुष्ठान थी विशेष करके अशरारोत की उपासना में।

19 “अपने किसी भाई को ब्याज पर ऋण न देना, चाहे रुपया हो, चाहे भोजनवस्तु हो, चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दी जाती है, उसे ब्याज पर न देना।

20 तू परदेशी को ब्याज पर ऋण तो दे, परन्तु अपने किसी भाई से ऐसा न करना, ताकि जिस देश का अधिकारी होने को तू जा रहा है, वहाँ जिस-जिस काम में अपना हाथ लगाए, उन सभी में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष दे।

[222222]

21 “जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्नत माने, तो उसे पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा, और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा। ([222222] 5:33)

22 परन्तु यदि तू मन्नत न माने, तो तेरा कोई पाप नहीं।

23 जो कुछ तेरे मुँह से निकले उसके पूरा करने में चौकसी करना; तू अपने मुँह से वचन देकर अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर यहोवा की जैसी मन्नत माने, वैसा ही स्वतंत्रता पूर्वक उसे पूरा करना।

[2222222 22 222222]

24 “जब तू किसी दूसरे की दाख की बारी में जाए, तब पेट भर मनमाने दाख खा तो खा, परन्तु अपने पात्र में कुछ न रखना।

25 और जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में जाए, तब तू हाथ से बालें तोड़ सकता है, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर हँसुआ न लगाना। ([222222] 12:1)

## 24

[2222 22 222222222222]

1 “यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। ([222222] 5:31)

2 और जब वह उसके घर से निकल जाए, तब दूसरे पुरुष की हो सकती है।

3 परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे, या वह दूसरा पुरुष जिसने उसको अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए,

4 तो उसका पहला पति, जिसने उसको निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने

पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना।

24:16 24:17 24:18 24:19 24:20

5 “जिस पुरुष का हाल ही में विवाह हुआ हो, वह सेना के साथ न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए; वह वर्ष भर अपने घर में स्वतंत्रता से रहकर अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे।

6 “कोई मनुष्य चक्की को या उसके ऊपर के पाट को बन्धक न रखे; क्योंकि वह तो मानो प्राण ही को बन्धक रखना है।

24:21 24:22 24:23 24:24

7 “यदि कोई अपने किसी इस्राएली भाई को दास बनाने या बेच डालने के विचार से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो ऐसा चोर मार डाला जाए; ऐसी बुराई को अपने मध्य में से दूर करना। (1 24:25. 5:13)

8 “कोढ़ की व्याधि के विषय में चौकस रहना, और जो कुछ लेवीय याजक तुम्हें सिखाएँ उसी के अनुसार यत्न से करने में चौकसी करना; जैसी आज्ञा मैंने उनको दी है वैसा करने में चौकसी करना।

9 स्मरण रख कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने, जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे, तब मार्ग में मिर्याम से क्या किया।

10 “जब तू अपने किसी भाई को कुछ उधार दे, तब बन्धक की वस्तु लेने के लिये उसके घर के भीतर न घुसना।

11 तू बाहर खड़ा रहना, और जिसको तू उधार दे वही बन्धक की वस्तु को तेरे पास बाहर ले आए।

12 और यदि वह मनुष्य कंगाल हो, तो उसका बन्धक अपने पास रखे हुए न सोना;

13 सूर्य अस्त होते-होते उसे वह बन्धक अवश्य फेर देना, इसलिए कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सो सके और तुझे आशीर्वाद दे; और यह तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में धार्मिकता का काम ठहरेगा।

14 “कोई मजदूर जो दीन और कंगाल हो, चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे तेरे देश के फाटकों के भीतर रहनेवाले परदेशियों में से हो, उस पर अंधेरा न करना;

15 यह जानकर कि वह दीन है और उसका मन मजदूरी में लगा रहता है, मजदूरी करने ही के दिन सूर्यास्त से पहले तू उसकी मजदूरी देना; ऐसा न हो कि वह तेरे

कारण यहोवा की दुहाई दे, और तू पापी ठहरे। (24:26 20:8)

16 “पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए; 24:27 24:28 24:29 24:30 24:31 24:32 24:33 24:34 24:35 24:36 24:37 24:38 24:39 24:40 24:41 24:42 24:43 24:44 24:45 24:46 24:47 24:48 24:49 24:50 24:51 24:52 24:53 24:54 24:55 24:56 24:57 24:58 24:59 24:60 24:61 24:62 24:63 24:64 24:65 24:66 24:67 24:68 24:69 24:70 24:71 24:72 24:73 24:74 24:75 24:76 24:77 24:78 24:79 24:80 24:81 24:82 24:83 24:84 24:85 24:86 24:87 24:88 24:89 24:90 24:91 24:92 24:93 24:94 24:95 24:96 24:97 24:98 24:99 24:100 24:101 24:102 24:103 24:104 24:105 24:106 24:107 24:108 24:109 24:110 24:111 24:112 24:113 24:114 24:115 24:116 24:117 24:118 24:119 24:120 24:121 24:122 24:123 24:124 24:125 24:126 24:127 24:128 24:129 24:130 24:131 24:132 24:133 24:134 24:135 24:136 24:137 24:138 24:139 24:140 24:141 24:142 24:143 24:144 24:145 24:146 24:147 24:148 24:149 24:150 24:151 24:152 24:153 24:154 24:155 24:156 24:157 24:158 24:159 24:160 24:161 24:162 24:163 24:164 24:165 24:166 24:167 24:168 24:169 24:170 24:171 24:172 24:173 24:174 24:175 24:176 24:177 24:178 24:179 24:180 24:181 24:182 24:183 24:184 24:185 24:186 24:187 24:188 24:189 24:190 24:191 24:192 24:193 24:194 24:195 24:196 24:197 24:198 24:199 24:200 24:201 24:202 24:203 24:204 24:205 24:206 24:207 24:208 24:209 24:210 24:211 24:212 24:213 24:214 24:215 24:216 24:217 24:218 24:219 24:220 24:221 24:222 24:223 24:224 24:225 24:226 24:227 24:228 24:229 24:230 24:231 24:232 24:233 24:234 24:235 24:236 24:237 24:238 24:239 24:240 24:241 24:242 24:243 24:244 24:245 24:246 24:247 24:248 24:249 24:250 24:251 24:252 24:253 24:254 24:255 24:256 24:257 24:258 24:259 24:260 24:261 24:262 24:263 24:264 24:265 24:266 24:267 24:268 24:269 24:270 24:271 24:272 24:273 24:274 24:275 24:276 24:277 24:278 24:279 24:280 24:281 24:282 24:283 24:284 24:285 24:286 24:287 24:288 24:289 24:290 24:291 24:292 24:293 24:294 24:295 24:296 24:297 24:298 24:299 24:300 24:301 24:302 24:303 24:304 24:305 24:306 24:307 24:308 24:309 24:310 24:311 24:312 24:313 24:314 24:315 24:316 24:317 24:318 24:319 24:320 24:321 24:322 24:323 24:324 24:325 24:326 24:327 24:328 24:329 24:330 24:331 24:332 24:333 24:334 24:335 24:336 24:337 24:338 24:339 24:340 24:341 24:342 24:343 24:344 24:345 24:346 24:347 24:348 24:349 24:350 24:351 24:352 24:353 24:354 24:355 24:356 24:357 24:358 24:359 24:360 24:361 24:362 24:363 24:364 24:365 24:366 24:367 24:368 24:369 24:370 24:371 24:372 24:373 24:374 24:375 24:376 24:377 24:378 24:379 24:380 24:381 24:382 24:383 24:384 24:385 24:386 24:387 24:388 24:389 24:390 24:391 24:392 24:393 24:394 24:395 24:396 24:397 24:398 24:399 24:400 24:401 24:402 24:403 24:404 24:405 24:406 24:407 24:408 24:409 24:410 24:411 24:412 24:413 24:414 24:415 24:416 24:417 24:418 24:419 24:420 24:421 24:422 24:423 24:424 24:425 24:426 24:427 24:428 24:429 24:430 24:431 24:432 24:433 24:434 24:435 24:436 24:437 24:438 24:439 24:440 24:441 24:442 24:443 24:444 24:445 24:446 24:447 24:448 24:449 24:450 24:451 24:452 24:453 24:454 24:455 24:456 24:457 24:458 24:459 24:460 24:461 24:462 24:463 24:464 24:465 24:466 24:467 24:468 24:469 24:470 24:471 24:472 24:473 24:474 24:475 24:476 24:477 24:478 24:479 24:480 24:481 24:482 24:483 24:484 24:485 24:486 24:487 24:488 24:489 24:490 24:491 24:492 24:493 24:494 24:495 24:496 24:497 24:498 24:499 24:500 24:501 24:502 24:503 24:504 24:505 24:506 24:507 24:508 24:509 24:510 24:511 24:512 24:513 24:514 24:515 24:516 24:517 24:518 24:519 24:520 24:521 24:522 24:523 24:524 24:525 24:526 24:527 24:528 24:529 24:530 24:531 24:532 24:533 24:534 24:535 24:536 24:537 24:538 24:539 24:540 24:541 24:542 24:543 24:544 24:545 24:546 24:547 24:548 24:549 24:550 24:551 24:552 24:553 24:554 24:555 24:556 24:557 24:558 24:559 24:560 24:561 24:562 24:563 24:564 24:565 24:566 24:567 24:568 24:569 24:570 24:571 24:572 24:573 24:574 24:575 24:576 24:577 24:578 24:579 24:580 24:581 24:582 24:583 24:584 24:585 24:586 24:587 24:588 24:589 24:590 24:591 24:592 24:593 24:594 24:595 24:596 24:597 24:598 24:599 24:600 24:601 24:602 24:603 24:604 24:605 24:606 24:607 24:608 24:609 24:610 24:611 24:612 24:613 24:614 24:615 24:616 24:617 24:618 24:619 24:620 24:621 24:622 24:623 24:624 24:625 24:626 24:627 24:628 24:629 24:630 24:631 24:632 24:633 24:634 24:635 24:636 24:637 24:638 24:639 24:640 24:641 24:642 24:643 24:644 24:645 24:646 24:647 24:648 24:649 24:650 24:651 24:652 24:653 24:654 24:655 24:656 24:657 24:658 24:659 24:660 24:661 24:662 24:663 24:664 24:665 24:666 24:667 24:668 24:669 24:670 24:671 24:672 24:673 24:674 24:675 24:676 24:677 24:678 24:679 24:680 24:681 24:682 24:683 24:684 24:685 24:686 24:687 24:688 24:689 24:690 24:691 24:692 24:693 24:694 24:695 24:696 24:697 24:698 24:699 24:700 24:701 24:702 24:703 24:704 24:705 24:706 24:707 24:708 24:709 24:710 24:711 24:712 24:713 24:714 24:715 24:716 24:717 24:718 24:719 24:720 24:721 24:722 24:723 24:724 24:725 24:726 24:727 24:728 24:729 24:730 24:731 24:732 24:733 24:734 24:735 24:736 24:737 24:738 24:739 24:740 24:741 24:742 24:743 24:744 24:745 24:746 24:747 24:748 24:749 24:750 24:751 24:752 24:753 24:754 24:755 24:756 24:757 24:758 24:759 24:760 24:761 24:762 24:763 24:764 24:765 24:766 24:767 24:768 24:769 24:770 24:771 24:772 24:773 24:774 24:775 24:776 24:777 24:778 24:779 24:780 24:781 24:782 24:783 24:784 24:785 24:786 24:787 24:788 24:789 24:790 24:791 24:792 24:793 24:794 24:795 24:796 24:797 24:798 24:799 24:800 24:801 24:802 24:803 24:804 24:805 24:806 24:807 24:808 24:809 24:810 24:811 24:812 24:813 24:814 24:815 24:816 24:817 24:818 24:819 24:820 24:821 24:822 24:823 24:824 24:825 24:826 24:827 24:828 24:829 24:830 24:831 24:832 24:833 24:834 24:835 24:836 24:837 24:838 24:839 24:840 24:841 24:842 24:843 24:844 24:845 24:846 24:847 24:848 24:849 24:850 24:851 24:852 24:853 24:854 24:855 24:856 24:857 24:858 24:859 24:860 24:861 24:862 24:863 24:864 24:865 24:866 24:867 24:868 24:869 24:870 24:871 24:872 24:873 24:874 24:875 24:876 24:877 24:878 24:879 24:880 24:881 24:882 24:883 24:884 24:885 24:886 24:887 24:888 24:889 24:890 24:891 24:892 24:893 24:894 24:895 24:896 24:897 24:898 24:899 24:900 24:901 24:902 24:903 24:904 24:905 24:906 24:907 24:908 24:909 24:910 24:911 24:912 24:913 24:914 24:915 24:916 24:917 24:918 24:919 24:920 24:921 24:922 24:923 24:924 24:925 24:926 24:927 24:928 24:929 24:930 24:931 24:932 24:933 24:934 24:935 24:936 24:937 24:938 24:939 24:940 24:941 24:942 24:943 24:944 24:945 24:946 24:947 24:948 24:949 24:950 24:951 24:952 24:953 24:954 24:955 24:956 24:957 24:958 24:959 24:960 24:961 24:962 24:963 24:964 24:965 24:966 24:967 24:968 24:969 24:970 24:971 24:972 24:973 24:974 24:975 24:976 24:977 24:978 24:979 24:980 24:981 24:982 24:983 24:984 24:985 24:986 24:987 24:988 24:989 24:990 24:991 24:992 24:993 24:994 24:995 24:996 24:997 24:998 24:999 24:1000

17 “किसी परदेशी मनुष्य या अनाथ बालक का न्याय न बिगाड़ना, और न किसी विधवा के कपड़े को बन्धक रखना;

18 और इसको स्मरण रखना कि तू मिस्र में दास था, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहाँ से छुड़ा लाया है; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ।

19 “जब तू अपने पक्के खेत को काटे, और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए, तो उसे लेने को फिर न लौट जाना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये पड़ा रहे; इसलिए कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझको आशीष दे।

20 जब तू अपने जैतून के वृक्ष को झाड़े, तब डालियों को दूसरी बार न झाड़ना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये रह जाए।

21 जब तू अपनी दाख की बारी के फल तोड़े, तो उसका दाना-दाना न तोड़ लेना; वह परदेशी, अनाथ और विधवा के लिये रह जाए।

22 और इसको स्मरण रखना कि तू मिस्र देश में दास था; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ।

## 25

25:1 25:2 25:3 25:4 25:5 25:6 25:7 25:8 25:9 25:10 25:11 25:12 25:13 25:14 25:15 25:16 25:17 25:18 25:19 25:20 25:21 25:22 25:23 25:24 25:25 25:26 25:27 25:28 25:29 25:30 25:31 25:32 25:33 25:34 25:35 25:36 25:37 25:38 25:39 25:40 25:41 25:42 25:43 25:44 25:45 25:46 25:47 25:48 25:49 25:50 25:51 25:52 25:53 25:54 25:55 25:56 25:57 25:58 25:59 25:60 25:61 25:62 25:63 25:64 25:65 25:66 25:67 25:68 25:69 25:70 25:71 25:72 25:73 25:74 25:75 25:76 25:77 25:78 25:79 25:80 25:81 25:82 25:83 25:84 25:85 25:86 25:87 25:88 25:89 25:90 25:91 25:92 25:93 25:94 25:95 25:96 25:97 25:98 25:99 25:100

1 “यदि मनुष्यों के बीच कोई झगडा हो, और वे न्याय करवाने के लिये न्यायियों के पास जाएँ, और वे उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएँ।

2 और यदि दोषी मार खाने के योग्य ठहरे, तो न्यायी उसको गिरवाकर अपने सामने जैसा उसका दोष हो उसके अनुसार कोड़े गिनकर लगवाए।

3 वह उसे 24:100 तक लगवा सकता है, इससे अधिक नहीं लगवा सकता; ऐसा न हो कि इससे अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई तेरी दृष्टि में तुच्छ ठहरे।

4 “दाँवते समय चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना। (1 24:101. 9:9)

25:101 25:102 25:103 25:104 25:105 25:106 25:107 25:108 25:109 25:110 25:111 25:112 25:113 25:114 25:115 25:116 25:117 25:118 25:119 25:120 25:121 25:122 25:123 25:124 25:125 25:126 25:127 25:128 25:129 25:130 25:131 25:132 25:133 25:134 25:135 25:136 25:137 25:138 25:139 25:140 25:141 25:142 25:143 25:144 25:145 25:146 25:147 25:148 25:149 25:150 25:151 25:152 25:153 25:154 25:155 25:156 25:157 25:158 25:159 25:160 25:161 25:162 25:163 25:164 25:165 25:166 25:167 25:168 25:169 25:170 25:171 25:172 25:173 25:174 25:175 25:176 25:177 25:178 25:179 25:180 25:181 25:182 25:183 25:184 25:185 25:186 25:187 25:188 25:189 25:190 25:191 25:192 25:193 25:194 25:195 25:196 25:197 25:198 25:199 25:200

\* 24:16 24:17 24:18 24:19 24:20 24:21 24:22 24:23 24:24 24:25 24:26 24:27 24:28 24:29 24:30 24:31 24:32 24:33 24:34 24:35 24:36 24:37 24:38 24:39 24:40 24:41 24:42 24:43 24:44 24:45 24:46 24:47 24:48 24:49 24:50 24:51 24:52 24:53 24:54 24:55 24:56 24:57 24:58 24:59 24:60 24:61 24:62 24:63 24:64 24:65 24:66 24:67 24:68 24:69 24:70 24:71 24:72 24:73 24:74 24:75 24:76 24:77 24:78 24:79 24:80 24:81 24:82 24:83 24:84 24:85 24:86 24:87 24:88 24:89 24:90 24:91 24:92 24:93 24:94 24:95 24:96 24:97 24:98 24:99 24:100 24:101 24:102 24:103 24:104 24:105 24:106 24:107 24:108 24:109 24:110 24:111 24:112 24:113 24:114 24:115 24:116 24:117 24:118 24:119 24:120 24:121 24:122 24:123 24:124 24:125 24:126 24:127 24:128 24:129 24:130 24:131 24:132 24:133 24:134 24:135 24:136 24:137 24:138 24:139 24:140 24:141 24:142 24:143 24:144 24:145 24:146 24:147 24:148 24:149 24:150 24:151 24:152 24:153 24:154 24:155 24:156 24:157 24:158 24:159 24:160 24:161 24:162 24:163 24:164 24:165 24:166 24:167 24:168 24:169 24:170 24:171 24:172 24:173 24:174 24:175 24:176 24:177 24:178 24:179 24:180 24:181 24:182 24:183 24:184 24:185 24:186 24:187 24:188 24:189 24:190 24:191 24:192 24:193 24:194 24:195 24:196 24:197 24:198 24:199 24:200 24:201 24:202 24:203 24:204 24:205 24:206 24:207 24:208 24:209 24:210 24:211 24:212 24:213 24:214 24:215 24:216 24:217 24:218 24:219 24:220 24:221 24:222 24:223 24:224 24:225 24:226 24:227 24:228 24:229 24:230 24:231 24:232 24:233 24:234 24:235 24:236 24:237 24:238 24:239 24:240 24:241 24:242 24:243 24:244 24:245 24:246 24:247 24:248 24:249 24:250 24:251 24:252 24:253 24:254 24:255 24:256 24:257 24:258 24:259 24:260 24:261 24:262 24:263 24:264 24:265 24:266 24:267 24:268 24:269 24:270 24:271 24:272 24:273 24:274 24:275 24:276 24:277 24:278 24:279 24:280 24:281 24:282 24

5 “जब कई भाई संग रहते हों, और उनमें से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाए; उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी कर ले, और उससे पति के भाई का धर्म पालन करे। (22: 24)

6 और जो पहला बेटा उस स्त्री से उत्पन्न हो वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे, जिससे कि उसका नाम इस्राएल में से मिट न जाए।

7 यदि उस स्त्री के पति के भाई को उससे विवाह करना न भाए, तो वह स्त्री नगर के फाटक पर वृद्ध लोगों के पास जाकर कहे, ‘मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम इस्राएल में बनाए रखने से मना कर दिया है, और मुझे से पति के भाई का धर्म पालन करना नहीं चाहता।’

8 तब उस नगर के वृद्ध लोग उस पुरुष को बुलवाकर उसको समझाएँ; और यदि वह अपनी बात पर अडा रहे, और कहे, ‘मुझे इससे विवाह करना नहीं भावता,’

9 तो उसके भाई की पत्नी उन वृद्ध लोगों के सामने उसके पास जाकर 22:24 22:24 22:24 22:24, और उसके मुँह पर थूक दे; और कहे, ‘जो पुरुष अपने भाई के वंश को चलाना न चाहे उससे इसी प्रकार व्यवहार किया जाएगा।’

10 तब इस्राएल में उस पुरुष का यह नाम पड़ेगा, अर्थात् जूती उतारे हुए पुरुष का घराना।

22:24 22:24

11 “यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों, और उनमें से एक की पत्नी अपने पति को मारनेवाले के हाथ से छुड़ाने के लिये पास जाए, और अपना हाथ बढ़ाकर उसके गुप्त अंग को पकड़े,

12 तो उस स्त्री का हाथ काट डालना; उस पर तरस न खाना।

13 “अपनी थैली में भाँति-भाँति के अर्थात् घटती-बढ़ती बटखरे न रखना।

14 अपने घर में भाँति-भाँति के, अर्थात् घटती-बढ़ती नपुए न रखना।

15 तेरे बटखरे और नपुए पूरे-पूरे और धर्म के हों; इसलिए कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरी आयु बहुत हो।

16 क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते हैं वे सब तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं।

22:24 22:24 22:24

17 “स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया,

18 अर्थात् उनको परमेश्वर का भय न था; इस कारण उसने जब तू मार्ग में थका-माँदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सबसे पीछे थे उन सभी को मारा।

19 इसलिए जब तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में, जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिकार में कर देता है, तुझे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दे, तब अमालेक का नाम धरती पर से मिटा डालना; और तुम इस बात को न भूलना।

## 26

26:1 26:1 26:1 26:1 26:1

1 “फिर जब तू उस देश में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके तुझे देता है पहुँचे, और उसका अधिकारी होकर उसमें बस जाए,

2 तब जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसकी भूमि की भाँति-भाँति की जो 26:1 26:1\* तू अपने घर लाएगा, उसमें से कुछ टोकरी में लेकर उस स्थान पर जाना, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले।

3 और उन दिनों के याजक के पास जाकर यह कहना, ‘मैं आज हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने स्वीकार करता हूँ, कि यहोवा ने हम लोगों को जिस देश के देने की हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी उसमें मैं आ गया हूँ।’

4 तब याजक तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के सामने रख दे।

5 तब तू अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार कहना, ‘26:1 26:1 26:1 26:1 26:1 जो मरने पर था; और वह अपने छोटे से परिवार समेत मिस्र को गया, और वहाँ परदेशी होकर रहा; और वहाँ उससे एक बड़ी, और सामर्थी, और बहुत मनुष्यों से भरी हुई जाति उत्पन्न हुई।

6 और मिस्रियों ने हम लोगों से बुरा बर्ताव किया, और हमें दुःख दिया, और हम से कठिन सेवा ली।

7 परन्तु हमने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा ने हमारी सुनकर हमारे दुःख-श्रम और अत्याचार पर दृष्टि की;

8 और यहोवा ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से अति भयानक चिन्ह और चमत्कार दिखलाकर हमको मिस्र से निकाल लाया;

† 25:9 22:24 22:24 22:24 22:24 22:24: मृतक की पत्नी और समादा का सम्पूर्ण अधिकार उस असहमत भाई से छीनने के लिये। \* 26:2 22:24 22:24: सम्पूर्ण पहली उपज कार्यकारी पुरोहित की होती थी। † 26:5 22:24 22:24 22:24 22:24 22:24: संदर्भ प्रसंग के द्वारा याकूब से है कि वह मूलपुरुष था क्योंकि उसमें अब्राहम का परिवार एक जाति में विकसित होने लगा था।

9 और हमें इस स्थान पर पहुँचाकर यह देश जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं हमें दे दिया है।

10 अब हे यहोवा, देख, जो भूमि तूने मुझे दी है उसकी पहली उपज मैं तेरे पास ले आया हूँ। तब तू उसे अपने परमेश्वर यहोवा के सामने रखना; और यहोवा को दण्डवत् करना;

11 और जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे, उनके कारण तू लेवीयों और अपने मध्य में रहनेवाले परदेशियों सहित आनन्द करना।

12 “तीसरे वर्ष जो दशमांश देने का वर्ष ठहरा है, जब तू अपनी सब भाँति की बढ़ती के दशमांश को निकाल चुके, तब उसे लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को देना, कि वे तेरे फाटकों के भीतर खाकर तृप्त हों;

13 और तू अपने परमेश्वर यहोवा से कहना, मैंने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओं को अपने घर से निकाला, और लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को दे दिया है; तेरी किसी आज्ञा को मैंने न तो टाला है, और न भूला है।

14 उन वस्तुओं में से मैंने शोक के समय नहीं खाया, और न उनमें से कोई वस्तु अशुद्धता की दशा में घर से निकाली, और [27:22-27:27]†; मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की सुन ली, मैंने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया है।

15 तू स्वर्ग में से जो तेरा पवित्र धाम है दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल को आशीष दे, और इस दूध और मधु की धाराओं के देश की भूमि पर आशीष दे, जिसे तूने हमारे पूर्वजों से खाई हुई शपथ के अनुसार हमें दिया है।

[27:28-27:33]

16 “आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको इन्हीं विधियों और नियमों के मानने की आज्ञा देता है; इसलिए अपने सारे मन और सारे प्राण से इनके मानने में चौकसी करना।

17 तूने तो आज यहोवा को अपना परमेश्वर मानकर यह वचन दिया है, कि मैं तेरे बताए हुए मार्गों पर चलूँगा, और तेरी विधियों, आज्ञाओं, और नियमों को माना करूँगा, और तेरी सुना करूँगा।

18 और यहोवा ने भी आज तुझको अपने वचन के अनुसार अपना प्रजारूपी निज धन-सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं को माना करे,

19 और कि वह अपनी बनाई हुई सब जातियों से अधिक प्रशंसा, नाम, और शोभा के विषय में तुझको प्रतिष्ठित करे, और तू उसके वचन के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे।”

## 27

[27:1-27:4]

1 फिर इस्राएल के वृद्ध लोगों समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, “जितनी आज्ञाएँ मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ उन सब को मानना।

2 और जब तुम यरदन पार होकर उस देश में पहुँचो, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब [27:5-27:10]‡, और उन पर चूना पोतना;

3 और पार होने के बाद उन पर इस [27:11-27:14]‡ लिखना, इसलिए कि जो देश तेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे देता है, और जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, उस देश में तू जाने पाए।

4 फिर जिन पत्थरों के विषय में मैंने आज आज्ञा दी है, उन्हें तुम यरदन के पार होकर एबाल पहाड़ पर खड़ा करना, और उन पर चूना पोतना।

5 और वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पत्थरों की एक वेदी बनाना, उन पर कोई औज़ार न चलाना।

6 अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी अनगढ़े पत्थरों की बनाकर उस पर उसके लिये होमबलि चढ़ाना;

7 और वहीं मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना, और अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख आनन्द करना।

8 और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के सब वचनों को स्पष्ट रीति से लिख देना।”

9 फिर मूसा और लेवीय याजकों ने सब इस्राएलियों से यह भी कहा, “हे इस्राएल, चुप रहकर सुन; आज के दिन तू अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा हो गया है।

10 इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानना, और उसकी जो-जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका पालन करना।”

[27:15-27:18]

11 फिर उसी दिन मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी,

† 26:14 [27:19-27:21]‡: समर्पित वस्तुओं को आनन्द और पवित्र उत्सव में काम में लेना था, न कि मृतकों के भोज में क्योंकि मृत्यु और मृत्यु से सम्बंधित सब बातें अशुद्ध मानी जाती थी। \* 27:2 [27:22-27:27]‡: पत्थर एक पृथक स्मारक थे जो उस तथ्य के गवाह थे कि उन पर उत्कीर्ण विधान और उसकी अनिवार्यताओं के पालन के आधार पर उन्होंने उस देश पर अधिकार किया। † 27:3 [27:28-27:33]‡: मूसा के माध्यम से परमेश्वर ने उनको जितने भी नियम दिए थे।

12 “जब तुम यरदन पार हो जाओ तब शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ, और बिन्यामीन, ये गिरिज्जीम पहाड़ पर खड़े होकर आशीर्वाद सुनाएँ।

13 और रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान, और नफ्ताली, ये एबाल पहाड़ पर खड़े होकर श्राप सुनाएँ।

14 तब लेवीय लोग सब इस्राएली पुरुषों से पुकारके कहें:

15 “श्रापित हो वह मनुष्य जो कोई मूर्ति कारीगर से खुदवाकर या ढलवा कर निराले स्थान में स्थापन करे, क्योंकि इससे यहोवा घृणा करता है।” तब सब लोग कहें, ‘[27:12]’।

16 “श्रापित हो वह जो अपने पिता या माता को तुच्छ जाने।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

17 “श्रापित हो वह जो किसी दूसरे की सीमा को हटाए।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

18 “श्रापित हो वह जो अंधे को मार्ग से भटका दे।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

19 “श्रापित हो वह जो परदेशी, अनाथ, या विधवा का न्याय बिगाड़े।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

20 “श्रापित हो वह जो अपनी सौतेली माता से कुकर्म करे, क्योंकि वह अपने पिता का ओढ़ना उधाड़ता है।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

21 “श्रापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म करे।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

22 “श्रापित हो वह जो अपनी बहन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, से कुकर्म करे।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

23 “श्रापित हो वह जो अपनी सास के संग कुकर्म करे।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

24 “श्रापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

25 “श्रापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये घुस ले।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

26 “श्रापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा न करे।” तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

## 28

[28:1-14]

1 “यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा।

2 फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे।

3 धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में।

4 धन्य हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं के बच्चे। [28:1-14] 1:42)

5 धन्य हो तेरी [28:1-14]\* और तेरा आटा गूँधने का पात्र।

6 धन्य हो तू भीतर आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते समय।

7 “यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएँगे; वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे, परन्तु तेरे सामने से सात मार्ग से होकर भाग जाएँगे।

8 तेरे खेतों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभी पर यहोवा आशीष देगा; इसलिए जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें वह तुझे आशीष देगा।

9 यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गों पर चले, तो वह अपनी शपथ के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा।

10 और पृथ्वी के देश-देश के सब लोग यह देखकर, कि तू यहोवा का कहलाता है, तुझ से डर जाएँगे।

11 और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा था, उसमें वह तेरी सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा।

12 यहोवा तेरे लिए अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा।

13 और यहोवा तुझको पूँछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ, तू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करे;

14 और जिन वचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ उनमें से किसी से दाएँ या बाएँ मुड़कर पराएँ देवताओं के पीछे न हो ले, और न उनकी सेवा करे।

[28:1-14]

15 “परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालन

‡ 27:15 [27:12]: आमीन शब्द बोलनेवालों के अंगीकार की पुष्टि करता है कि जिन वाक्यों के प्रति उन्होंने प्रतिक्रिया दिखाई सच, न्याय सम्भव और अचूक है। \* 28:5 [28:1-14]: पूर्व के देशों में टोकरी या धैला व्यक्तिगत आवश्यकता थी वस्तुओं को लेकर उठाने का एक पारम्परिक साधन था।

करने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब श्राप तुझ पर आ पड़ेंगे।

16 श्रापित हो तू नगर में, श्रापित हो तू खेत में।

17 श्रापित हो तेरी टोकरी और तेरा आटा गूँधने का पात्र।

18 श्रापित हो तेरी सन्तान, और भूमि की उपज, और गायों और भेड़-बकरियों के बच्चे।

19 श्रापित हो तू भीतर आते समय, और श्रापित हो तू बाहर जाते समय।

20 “फिर जिस-जिस काम में तू हाथ लगाए, उसमें यहोवा तब तक तुझको श्राप देता, और भयातुर करता, और धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाए, और शीघ्र नष्ट न हो जाए; यह इस कारण होगा कि तू यहोवा को त्याग कर दुष्ट काम करेगा।

21 और यहोवा ऐसा करेगा कि मरी तुझ में फैलकर उस समय तक लगी रहेगी, जब तक जिस भूमि के अधिकारी होने के लिये तू जा रहा है उस पर से तेरा अन्त न हो जाए।

22 यहोवा तुझको क्षयरोग से, और ज्वर, और दाह, और बड़ी जलन से, और तलवार, और झुलस, और गेरूई से मारेगा; और ये उस समय तक तेरा पीछा किए रहेंगे, जब तक तेरा सत्यानाश न हो जाए।

23 और तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का, और तेरे पाँव के तले भूमि लोहे की हो जाएगी।

24 यहोवा तेरे देश में पानी के बदले रेत और धूलि बरसाएगा; वह आकाश से तुझ पर यहाँ तक बरसेगी कि तेरा सत्यानाश हो जाएगा।

25 “यहोवा तुझको शत्रुओं से हरवाएगा; और तू एक मार्ग से उनका सामना करने को जाएगा, परन्तु सात मार्ग से होकर उनके सामने से भाग जाएगा; और पृथ्वी के सब राज्यों में मारा-मारा फिरेगा।

26 और तेरा शव आकाश के भाँति-भाँति के पक्षियों, और धरती के पशुओं का आहार होगा; और उनको कोई भगानेवाला न होगा।

27 यहोवा तुझको मिस्र के से फोड़े, और बवासीर, और दाद, और खुजली से ऐसा पीड़ित करेगा, कि तू चंगा न हो सकेगा।

28 यहोवा तुझे पागल और अंधा कर देगा, और तेरे मन को अत्यन्त घबरा देगा;

29 और जैसे अंधा अधियारे में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी में टटोलता फिरेगा, और तेरे काम-काज सफल न होंगे; और तू सदैव केवल अत्याचार सहता और लुटता ही रहेगा, और तेरा कोई छुड़ानेवाला न होगा।

30 तू स्त्री से ब्याह की बात लगाएगा, परन्तु दूसरा पुरुष उसको भ्रष्ट करेगा; घर तू बनाएगा, परन्तु उसमें बसने न पाएगा; दाख की बारी तू लगाएगा, परन्तु उसके फल खाने न पाएगा।

31 तेरा बैल तेरी आँखों के सामने मारा जाएगा, और तू उसका माँस खाने न पाएगा; तेरा गदहा तेरी आँख के सामने लूट में चला जाएगा, और तुझे फिर न मिलेगा; तेरी भेड़-बकरियाँ तेरे शत्रुओं के हाथ लग जाएँगी, और तेरी ओर से उनका कोई छुड़ानेवाला न होगा।

32 तेरे बेटे-बेटियाँ दूसरे देश के लोगों के हाथ लग जाएँगे, और उनके लिये चाव से देखते-देखते तेरी आँखें रह जाएँगी; और तेरा कुछ बस न चलेगा।

33 तेरी भूमि की उपज और तेरी सारी कमाई एक अनजाने देश के लोग खा जाएँगे; और सर्वदा तू केवल अत्याचार सहता और पिसता रहेगा;

34 यहाँ तक कि तू उन बातों के कारण जो अपनी आँखों से देखेगा पागल हो जाएगा।

35 यहोवा तेरे घुटनों और टाँगों में, वरन् नख से शीर्ष तक भी असाध्य फोड़े निकालकर तुझको पीड़ित करेगा।  
**(12/12/12. 16:2)**

36 “यहोवा तुझको उस राजा समेत, जिसको तू अपने ऊपर ठहराएगा, तेरे और तेरे पूर्वजों के लिए अनजानी एक जाति के बीच पहुँचाएगा; और उसके मध्य में रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना और पूजा करेगा।

37 और उन सब जातियों में जिनके मध्य में यहोवा तुझको पहुँचाएगा, वहाँ के लोगों के लिये तू चकित होने का, और दृष्टान्त और श्राप का कारण समझा जाएगा।

38 तू खेत में बीज तो बहुत सा ले जाएगा, परन्तु उपज थोड़ी ही बटोरेगा; क्योंकि टिड्डियाँ उसे खा जाएँगी।

39 तू दाख की बारियाँ लगाकर उनमें काम तो करेगा, परन्तु उनकी दाख का मधु पीने न पाएगा, वरन् फल भी तोड़ने न पाएगा; क्योंकि कीड़े उनको खा जाएँगे।

40 तेरे सारे देश में जैतून के वृक्ष तो होंगे, परन्तु उनका तेल तू अपने शरीर में लगाने न पाएगा; क्योंकि वे झड़ जाएँगे।

41 तेरे बेटे-बेटियाँ तो उत्पन्न होंगे, परन्तु तेरे रहेंगे नहीं; क्योंकि वे बन्धुवाई में चले जाएँगे।

42 तेरे सब वृक्ष और तेरी भूमि की उपज टिड्डियाँ खा जाएँगी।

43 जो परदेशी तेरे मध्य में रहेगा वह तुझ से बढ़ता जाएगा; और तू आप घटता चला जाएगा।



44 “वह तुझको उधार देगा, परन्तु तू उसको उधार न दे सकेगा; वह तो सिर और तू पूँछ ठहरेगा।

45 तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आज्ञाओं और विधियों के मानने को उसकी न सुनेगा, इस कारण ये सब श्राप तुझ पर आ पड़ेंगे, और तेरे पीछे पड़े रहेंगे, और तुझको पकड़ेंगे, और अन्त में तू नष्ट हो जाएगा।

46 और वे तुझ पर और तेरे वंश पर सदा के लिये बने रहकर चिन्ह और चमत्कार ठहरेंगे;

47 “तू जो सब पदार्थ की बहुतायत होने पर भी आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा नहीं करेगा,

48 इस कारण तुझको भूखा, प्यासा, नंगा, और सब पदार्थों से रहित होकर अपने उन शत्रुओं की सेवा करनी पड़ेगी जिन्हें यहोवा तेरे विरुद्ध भेजेगा; और जब तक तू नष्ट न हो जाए तब तक वह तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ डाल रखेगा।

49 यहोवा तेरे विरुद्ध दूर से, वरन् पृथ्वी के छोर से वेग से उड़नेवाले उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा जिसकी भाषा को तू न समझेगा;

50 उस जाति के लोगों का व्यवहार क्रूर होगा, वे न तो बूढ़ों का मुँह देखकर आदर करेंगे, और न बालकों पर दया करेंगे;

51 और वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज यहाँ तक खा जाएँगे कि तू नष्ट हो जाएगा; और वे तेरे लिये न अन्न, और न नया दाखमधु, और न टटका तेल, और न बछड़े, न मेम्ने छोड़ेंगे, यहाँ तक कि तू नाश हो जाएगा।

52 और वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए सारे देश के सब फाटकों के भीतर तुझे घेर रखेंगे; वे तेरे सब फाटकों के भीतर तुझे उस समय तक घेरेंगे, जब तक तेरे सारे देश में तेरी ऊँची-ऊँची और दृढ़ शहरपनाहें जिन पर तू भरोसा करेगा गिर न जाएँ।

53 तब घिर जाने और उस संकट के समय जिसमें तेरे शत्रु तुझको डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का माँस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको देगा खाएगा।

54 और तुझ में जो पुरुष कोमल और अति सुकुमार हो वह भी अपने भाई, और अपनी प्राणप्रिय, और अपने बचे हुए बालकों को क्रूर दृष्टि से देखेगा;

55 और वह उनमें से किसी को भी अपने बालकों के माँस में से जो वह आप खाएगा कुछ न देगा, क्योंकि घिर जाने और उस संकट में, जिसमें तेरे शत्रु तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे घेर डालेंगे, उसके पास कुछ न रहेगा।

56 और तुझ में जो स्त्री यहाँ तक कोमल और सुकुमार हो कि सुकुमारपन के और कोमलता के मारे भूमि पर पाँव धरते भी डरती हो, वह भी अपने प्राणप्रिय पति, और बेटे, और बेटों को,

57 अपनी खेरी, वरन् अपने जने हुए बच्चों को क्रूर दृष्टि से देखेगी, क्योंकि घिर जाने और उस संकट के समय जिसमें तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरकर रखेंगे, वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिपके खाएगी।

58 “यदि तू इन व्यवस्था के सारे वचनों का पालन करने में, जो इस पुस्तक में लिखे हैं, चौकसी करके उस आदरणीय और भययोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है भय न माने,

59 तो यहोवा तुझको और तेरे वंश को भयानक-भयानक दण्ड देगा, वे दुष्ट और बहुत दिन रहनेवाले रोग और भारी-भारी दण्ड होंगे।

60 और वह मिस्र के उन सब रोगों को फिर तेरे ऊपर लगा देगा, जिनसे तू भय खाता था; और वे तुझ में लगे रहेंगे।

61 और जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखे हैं, उन सभी को भी यहोवा तुझको यहाँ तक लगा देगा, कि तेरा सत्यानाश हो जाएगा।

62 और तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की न मानेगा, इस कारण आकाश के तारों के समान अनगिनत होने के बदले तुझ में से थोड़े ही मनुष्य रह जाएँगे।

63 और जैसे अब यहोवा को तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है, वैसे ही तब उसको तुम्हारा नाश वरन् सत्यानाश करने से हर्ष होगा; और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे।

64 और यहोवा तुझको पृथ्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तितर-बितर करेगा; और वहाँ रहकर तू अपने और अपने पुरखाओं के अनजाने काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा।

65 और उन जातियों में तू कभी चैन न पाएगा, और न तेरे पाँव को ठिकाना मिलेगा; क्योंकि वहाँ यहोवा ऐसा करेगा कि तेरा हृदय काँपता रहेगा, और तेरी आँखें धुंधली पड़ जाएँगी, और तेरा मन व्याकुल रहेगा;

66 और तुझको जीवन का नित्य सन्देह रहेगा; और तू दिन-रात थरथराता रहेगा, और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा।

67 तेरे मन में जो भय बना रहेगा, और तेरी आँखों को जो कुछ दिखता रहेगा, उसके कारण तू भोर को आह









6 हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगों,  
क्या तुम यहोवा को यह बदला देते हो?  
क्या वह तेरा पिता नहीं है, जिसने तुम को मोल लिया है?

उसने तुझको बनाया और स्थिर भी किया है।

7 प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण करो,  
पीढ़ी-पीढ़ी के वर्षों को विचारों;  
अपने बाप से पूछो, और वह तुम को बताएगा;  
अपने वृद्ध लोगों से प्रश्न करो, और वे तुझ से कह देंगे।

8 जब परमप्रधान ने एक-एक जाति को निज-निज भाग बाँट दिया,

और आदमियों को अलग-अलग बसाया,  
तब उसने देश-देश के लोगों की सीमाएँ इस्राएलियों की गिनती के अनुसार ठहराई। (22:22-27:26)

9 क्योंकि यहोवा का अंश उसकी प्रजा है;  
याकूब उसका नपा हुआ निज भाग है।

10 “उसने उसको जंगल में,  
और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया;

उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की,  
और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी।

11 जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला-हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर-ऊपर मण्डराता है,  
वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया।

12 यहोवा अकेला ही उसकी अगुआई करता रहा,  
और उसके संग कोई पराया देवता न था।

13 उसने उसको पृथ्वी के ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर सवार कराया,

और उसको खेतों की उपज खिलाई;  
उसने उसे चट्टान में से मधु  
और चकमक की चट्टान में से तेल चुसाया।

14 गायों का दही, और भेड़-बकरियों का दूध, मेम्नों की चर्बी,

बकरे और बाशान की जाति के मेद्रे,  
और गेहूँ का उत्तम से उत्तम आटा भी खाया;  
और तू दाखरस का मधु पिया करता था।

15 “परन्तु यशूरून मोटा होकर लात मारने लगा;  
तू मोटा और हष्ट-पुष्ट हो गया, और चर्बी से छा गया है;

तब उसने अपने सृजनहार परमेश्वर को तज दिया,  
और अपने उद्धार चट्टान को तुच्छ जाना।

16 उन्होंने पराए देवताओं को मानकर 22:22 22:22 22:22; 22:22 22:22; 22:22 22:22;

और घृणित कर्म करके उसको रिस दिलाई।

17 उन्होंने पिशाचों के लिये जो परमेश्वर न थे बलि चढ़ाए,

और उनके लिये वे अनजाने देवता थे,  
वे तो नये-नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रगट हुए थे,  
और जिनसे उनके पुरखा कभी डरे नहीं। (1 22:22 10:20)

18 जिस चट्टान से तू उत्पन्न हुआ उसको तू भूल गया,  
और परमेश्वर जिससे तेरी उत्पत्ति हुई उसको भी तू भूल गया है। (22:22 1:2)

19 “इन बातों को देखकर यहोवा ने उन्हें तुच्छ जाना,  
क्योंकि उसके बेटे-बेटियों ने उसे रिस दिलाई थी।

20 तब उसने कहा, मैं उनसे अपना मुख छिपा लूँगा,  
और देखूँगा कि उनका अन्त कैसा होगा,  
क्योंकि इस जाति के लोग बहुत टेढ़े हैं और धोखा देनेवाले पुत्र हैं। (22:22 17:17)

21 उन्होंने ऐसी वस्तु को जो परमेश्वर नहीं है मानकर,  
मुझ में जलन उत्पन्न की;  
और अपनी व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई।  
इसलिए मैं भी उनके द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं उनके मन में जलन उत्पन्न करूँगा;  
और एक मूर्ख जाति के द्वारा उन्हें रिस दिलाऊँगा। (22:22 11:11)

22 क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है,  
जो पाताल की तह तक जलती जाएगी,  
और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म हो जाएगी,  
और पहाड़ों की नींवों में भी आग लगा देगी।

23 “मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति भेजूँगा;  
और उन पर मैं अपने सब तीरों को छोड़ूँगा।

24 वे भूख से दुबले हो जाएँगे, और अंगारों से और कठिन महारोगों से ग्रसित हो जाएँगे;  
और मैं उन पर पशुओं के दाँत लगवाऊँगा,  
और धूलि पर रेंगनेवाले सर्पों का विष छोड़ दूँगा।

25 बाहर वे तलवार से मरेंगे,  
और कोठरियों के भीतर भय से;  
क्या कुंवारे और कुंवारियाँ, क्या दूध पीता हुआ बच्चा  
क्या पक्के बाल वाले, सब इसी प्रकार बर्बाद होंगे।

26 मैंने कहा था, कि मैं उनको दूर-दूर तक तितर-बितर करूँगा,

और मनुष्यों में से उनका स्मरण तक मिटा डालूँगा;

27 परन्तु मुझे शत्रुओं की छेड़-छाड़ का डर था,

‡ 32:16 22:22 22:22 22:22: यह भाषा विवाहित सम्बंध से ली गई है।

ऐसा न हो कि द्रोही इसको उलटा समझकर यह कहने लगे,

‘हम अपने ही बाहुबल से प्रबल हुए,  
और यह सब यहोवा से नहीं हुआ।’

28 “क्योंकि इस्राएल जाति युक्तिहीन है,  
और इनमें समझ है ही नहीं।

29 भला होता कि ये बुद्धिमान होते, कि इसको समझ लेते,

और अपने अन्त का विचार करते! (22:22 19:42)

30 यदि उनकी चट्टान ही उनको न बेच देती,  
और यहोवा उनको दूसरों के हाथ में न कर देता;  
तो यह कैसे हो सकता कि उनके हजार का पीछा एक मनुष्य करता,

और उनके दस हजार को दो मनुष्य भगा देते?

31 क्योंकि जैसी हमारी चट्टान है वैसी उनकी चट्टान नहीं है,

चाहे हमारे शत्रु ही क्यों न न्यायी हों।

32 क्योंकि उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली,

और गमोरा की दाख की बारियों में की है;  
उनकी दाख विषभरी और उनके गुच्छे कड़वे हैं;

33 उनका दाखमधु साँपों का सा विष  
और काले नागों का सा हलाहल है।

34 “क्या यह बात मेरे मन में संचित,  
और मेरे भण्डारों में मुहरबन्द नहीं है?

35 पलटा लेना और बदला देना मेरा ही काम है,  
यह उनके पाँव फिसलने के समय प्रगट होगा;  
क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन निकट है,  
और जो दुःख उन पर पड़नेवाले हैं वे शीघ्र आ रहे हैं।

(22:22 21:22, 22:22 12:19)

36 क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी प्रजा की शक्ति जाती रही,

और क्या बन्धुआ और क्या स्वाधीन, उनमें कोई बचा नहीं रहा,

तब यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा,  
और अपने दासों के विषय में तरस खाएगा।

37 तब वह कहेगा, उनके देवता कहाँ हैं,  
अर्थात् वह चट्टान कहाँ जिस पर उनका भरोसा था,

38 जो उनके बलिदानों की चर्बी खाते,  
और उनके तपावनों का दाखमधु पीते थे?

वे ही उठकर तुम्हारी सहायता करें,  
और तुम्हारी आड़ हों!

39 “इसलिए अब तुम देख लो कि मैं ही वह हूँ,  
और मेरे संग कोई देवता नहीं;

मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूँ;  
मैं ही घायल करता, और मैं ही चंगा भी करता हूँ;  
और मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा सकता।

40 क्योंकि 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22  
22:22 कहता हूँ,

क्योंकि मैं अनन्तकाल के लिये जीवित हूँ,

41 इसलिए यदि मैं बिजली की तलवार पर सान धरकर  
झलकाऊँ,

और न्याय अपने हाथ में ले लूँ, तो अपने द्रोहियों से  
बदला लूँगा,

और अपने बैरियों को बदला दूँगा।

42 मैं अपने तीरों को लहू से मतवाला करूँगा,

और मेरी तलवार माँस खाएगी—वह लहू,

मारे हुआँ और बन्दियों का,

और वह माँस, शत्रुओं के लम्बे बाल वाले प्रधानों का  
होगा।

43 “हे अन्यजातियों, उसकी प्रजा के साथ आनन्द  
मनाओ;

क्योंकि वह अपने दासों के लहू का पलटा लेगा,

और अपने द्रोहियों को बदला देगा,

और अपने देश और अपनी प्रजा के पाप के लिये  
प्रायश्चित देगा।”

22:22 22 22:22 22:22 22:22 22:22

44 इस गीत के सब वचन मूसा ने नून के पुत्र यहोशू  
समेत आकर लोगों को सुनाए।

45 जब मूसा ये सब वचन सब इस्राएलियों से कह  
चुका,

46 तब उसने उनसे कहा, “जितनी बातें मैं आज तुम  
से चिताकर कहता हूँ उन सब पर अपना-अपना मन  
लगाओ, और उनके अर्थात् इस व्यवस्था की सारी बातों  
के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने बच्चों को दो।

47 क्योंकि यह तुम्हारे लिये व्यर्थ काम नहीं, परन्तु  
तुम्हारा जीवन ही है, और ऐसा करने से उस देश में  
तुम्हारी आयु के दिन बहुत होंगे, जिसके अधिकारी होने  
को तुम यरदन पार जा रहे हो।”

22:22 22:22 22:22 22 22:22

48 फिर उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा,

49 “उस अबारीम पहाड़ की नबो नामक चोटी पर, जो  
मोआब देश में यरीहो के सामने है, चढ़कर कनान देश,  
जिसे मैं इस्राएलियों की निज भूमि कर देता हूँ, उसको  
देख ले।

50 तब जैसा तेरा भाई हारून होर पहाड़ पर मरकर अपने लोगों में मिल गया, वैसा ही तू इस पहाड़ पर चढ़कर मर जाएगा, और अपने लोगों में मिल जाएगा।

51 इसका कारण यह है, कि सीन जंगल में, कादेश के मरीबा नाम सोते पर, तुम दोनों ने मेरा अपराध किया, क्योंकि तुम ने इस्राएलियों के मध्य में मुझे पवित्र न ठहराया।

52 इसलिए वह देश जो मैं इस्राएलियों को देता हूँ, तू अपने सामने देख लेगा, परन्तु वहाँ जाने न पाएगा।”

### 33

1 जो आशीर्वाद 2\* मूसा ने अपनी मृत्यु से पहले इस्राएलियों को दिया वह यह है।

2 उसने कहा, “यहोवा सीनै से आया, और सेईर से उनके लिये उदय हुआ;

उसने पारान पर्वत पर से अपना तेज दिखाया, और लाखों पवित्रों के मध्य में से आया, उसके दाहिने हाथ से उनके लिये ज्वालामय विधियाँ निकलीं। (1:4)

3 वह निश्चय लोगों से प्रेम करता है; उसके सब पवित्र लोग तेरे हाथ में हैं; वे तेरे पाँवों के पास बैठे रहते हैं, एक-एक तेरे वचनों से लाभ उठाता है। (1:8)

4 मूसा ने हमें व्यवस्था दी, और वह याकूब की मण्डली का निज भाग ठहरी।

5 जब प्रजा के मुख्य-मुख्य पुरुष, और इस्राएल के सभी गोत्र एक संग होकर एकत्रित हुए, तब वह यशूरून में राजा ठहरा।

6 “रूबेन न मरे, वरन् जीवित रहे, तो भी उसके यहाँ के मनुष्य थोड़े हों।”

7 और यहूदा पर यह आशीर्वाद हुआ जो मूसा ने कहा, “हे यहोवा तू यहूदा की सुन, और उसे उसके 8। वह अपने लिये आप अपने हाथों से लडा, और तू ही उसके द्रोहियों के विरुद्ध उसका सहायक हो।”

8 फिर लेवी के विषय में उसने कहा, “तेरे तुम्मीम और ऊरीम तेरे भक्त के पास हैं, जिसको तूने मस्सा में परख लिया, और जिसके साथ मरीबा नामक सोते पर तेरा वाद-विवाद हुआ;

9 उसने तो अपने माता-पिता के विषय में कहा, ‘मैं उनको नहीं जानता;’ और न तो उसने अपने भाइयों को अपना माना, और न अपने पुत्रों को पहचाना।

क्योंकि उन्होंने तेरी बातें मानीं, और वे तेरी वाचा का पालन करते हैं। (10:37)

10 वे याकूब को तेरे नियम, और इस्राएल को तेरी व्यवस्था सिखाएँगे; और तेरे आगे धूप और तेरी वेदी पर सर्वांग पशु को होमबलि करेंगे।

11 हे यहोवा, उसकी सम्पत्ति पर आशीष दे, और उसके हाथों की सेवा को ग्रहण कर; उसके विरोधियों और बैरियों की कमर पर ऐसा मार, कि वे फिर न उठ सके।”

12 फिर उसने बिन्यामीन के विषय में कहा, “यहोवा का वह प्रिय जन, उसके पास निडर वास करेगा; और वह दिन भर उस पर छाया करेगा, और 13।” (2:13)

13 फिर यूसुफ के विषय में उसने कहा; “इसका देश यहोवा से आशीष पाए अर्थात् आकाश के अनमोल पदार्थ और ओस, और वह गहरा जल जो नीचे है,

14 और सूर्य के पकाए हुए अनमोल फल, और जो अनमोल पदार्थ मौसम के उगाए उगते हैं, 15 और प्राचीन पहाड़ों के उत्तम पदार्थ, और सनातन पहाड़ियों के अनमोल पदार्थ, 16 और पृथ्वी और जो अनमोल पदार्थ उसमें भरे हैं, और जो झाड़ी में रहता था उसकी प्रसन्नता। इन सभी के विषय में यूसुफ के सिर पर, अर्थात् उसी के सिर के चाँद पर जो अपने भाइयों से अलग हुआ था आशीष ही आशीष फले।

17 वह प्रतापी है, मानो गाय का पहलौठा है, और उसके सींग जंगली बैल के से हैं;

\* 33:1 परमेश्वर का जन पुराने नियम में उस मनुष्य को कहा जाता था जिसे अपरोक्ष प्रकाशन प्राप्त होता था। आवश्यक नहीं कि वह भविष्यद्वक्ता हो। † 33:7 याकूब की प्रतिज्ञा को ध्यान में रखकर मूसा प्रार्थना करता है कि यहूदा जो सब गोत्रों से आगे चलता था, वह सदैव विजयी होकर सुरक्षित घर लौटे। हाथ का अर्थ है कि इस काम को पूरा करने में परमेश्वर सहायता करें। ‡ 33:12 परमेश्वर से ऐसा सहयोग पाएगा जैसे एक पुत्र पिता के कंधों पर उठाया जाता है।



उनसे वह देश-देश के लोगों को, वरन् पृथ्वी के छोर तक  
के सब मनुष्यों को ढकेलेगा;  
वे एप्रैम के लाखों-लाख, और मनश्शे के हजारों-हजार  
हैं।”

18 फिर जबूलून के विषय में उसने कहा,

“हे जबूलून, तू बाहर निकलते समय,  
और हे इस्साकार, तू अपने डेरों में आनन्द करे।  
19 वे देश-देश के लोगों को पहाड़ पर बुलाएँगे;  
वे वहाँ धर्मयज्ञ करेंगे;  
क्योंकि वे समुद्र का धन,  
और रेत में छिपे हुए अनमोल पदार्थ से लाभ उठाएँगे।”

20 फिर गाद के विषय में उसने कहा,

“धन्य वह है जो गाद को बढ़ाता है!  
गाद तो सिंहनी के समान रहता है,  
और बाँह को, वरन् सिर के चाँद तक को फाड़ डालता  
है।

21 और उसने पहला अंश तो अपने लिये चुन लिया,  
क्योंकि वहाँ सरदार के योग्य भाग रखा हुआ था;  
तब उसने प्रजा के मुख्य-मुख्य पुरुषों के संग आकर  
यहोवा का ठहराया हुआ धर्म,  
और इस्राएल के साथ होकर उसके नियम का प्रतिपालन  
किया।”

22 फिर दान के विषय में उसने कहा,

“दान तो बाशान से कूदनेवाला सिंह का बच्चा है।”

23 फिर नप्ताली के विषय में उसने कहा,

“हे नप्ताली, तू जो यहोवा की प्रसन्नता से तृप्त,  
और उसकी आशीष से भरपूर है,  
तू पश्चिम और दक्षिण के देश का अधिकारी हो।”

24 फिर आशेर के विषय में उसने कहा,

“आशेर पुत्रों के विषय में आशीष पाए;  
वह अपने भाइयों में प्रिय रहे,  
और अपना पाँव तेल में डुबोए।  
25 तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे,  
और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो।

26 “हे यशूरून, परमेश्वर के तुल्य और कोई नहीं है,

वह तेरी सहायता करने को आकाश पर,  
और अपना प्रताप दिखाता हुआ  
आकाशमण्डल पर सवार होकर चलता है।

27 अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है,  
और नीचे सनातन भुजाएँ हैं।

वह शत्रुओं को तेरे सामने से निकाल देता,  
और कहता है, उनको सत्यानाश कर दे।

28 और इस्राएल निडर बसा रहता है,

अन्न और नये दाखमधु के देश में याकूब का सोता अकेला  
ही रहता है;

और उसके ऊपर के आकाश से ओस पड़ा करती है।

29 हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है!

हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है?

वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल,

और तेरे प्रताप के लिये तलवार है;

तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे,

और तू उनके ऊँचे स्थानों को रौंदेगा।”

## 34

1 फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर, जो

पिसगा की एक चोटी और यरीहो के सामने है, चढ़ गया;  
और यहोवा ने उसको दान तक का गिलाद नामक सारा  
देश,

2 और नप्ताली का सारा देश, और एप्रैम और मनश्शे  
का देश, और पश्चिम के समुद्र तक का यहूदा का सारा  
देश,

3 और दक्षिण देश, और सोअर तक की यरीहो नामक  
खजूरवाले नगर की तराई, यह सब दिखाया।

4 तब यहोवा ने उससे कहा, “जिस देश के विषय में  
मैंने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा  
था, कि मैं इसे तेरे वंश को दूँगा वह यही है। मैंने इसको  
तुझे साक्षात् दिखा दिया है, परन्तु तू पार होकर वहाँ  
जाने न पाएगा।”

5 तब <sup>34:5</sup> <sup>34:6</sup> <sup>34:7</sup> <sup>34:8</sup> <sup>34:9</sup> <sup>34:10</sup> <sup>34:11</sup> <sup>34:12</sup> <sup>34:13</sup> <sup>34:14</sup> <sup>34:15</sup> <sup>34:16</sup> <sup>34:17</sup> <sup>34:18</sup> <sup>34:19</sup> <sup>34:20</sup> <sup>34:21</sup> <sup>34:22</sup> <sup>34:23</sup> <sup>34:24</sup> <sup>34:25</sup> <sup>34:26</sup> <sup>34:27</sup> <sup>34:28</sup> <sup>34:29</sup> <sup>34:30</sup> <sup>34:31</sup> <sup>34:32</sup> <sup>34:33</sup> <sup>34:34</sup> <sup>34:35</sup> <sup>34:36</sup> <sup>34:37</sup> <sup>34:38</sup> <sup>34:39</sup> <sup>34:40</sup> <sup>34:41</sup> <sup>34:42</sup> <sup>34:43</sup> <sup>34:44</sup> <sup>34:45</sup> <sup>34:46</sup> <sup>34:47</sup> <sup>34:48</sup> <sup>34:49</sup> <sup>34:50</sup> <sup>34:51</sup> <sup>34:52</sup> <sup>34:53</sup> <sup>34:54</sup> <sup>34:55</sup> <sup>34:56</sup> <sup>34:57</sup> <sup>34:58</sup> <sup>34:59</sup> <sup>34:60</sup> <sup>34:61</sup> <sup>34:62</sup> <sup>34:63</sup> <sup>34:64</sup> <sup>34:65</sup> <sup>34:66</sup> <sup>34:67</sup> <sup>34:68</sup> <sup>34:69</sup> <sup>34:70</sup> <sup>34:71</sup> <sup>34:72</sup> <sup>34:73</sup> <sup>34:74</sup> <sup>34:75</sup> <sup>34:76</sup> <sup>34:77</sup> <sup>34:78</sup> <sup>34:79</sup> <sup>34:80</sup> <sup>34:81</sup> <sup>34:82</sup> <sup>34:83</sup> <sup>34:84</sup> <sup>34:85</sup> <sup>34:86</sup> <sup>34:87</sup> <sup>34:88</sup> <sup>34:89</sup> <sup>34:90</sup> <sup>34:91</sup> <sup>34:92</sup> <sup>34:93</sup> <sup>34:94</sup> <sup>34:95</sup> <sup>34:96</sup> <sup>34:97</sup> <sup>34:98</sup> <sup>34:99</sup> <sup>34:100</sup> <sup>34:101</sup> <sup>34:102</sup> <sup>34:103</sup> <sup>34:104</sup> <sup>34:105</sup> <sup>34:106</sup> <sup>34:107</sup> <sup>34:108</sup> <sup>34:109</sup> <sup>34:110</sup> <sup>34:111</sup> <sup>34:112</sup> <sup>34:113</sup> <sup>34:114</sup> <sup>34:115</sup> <sup>34:116</sup> <sup>34:117</sup> <sup>34:118</sup> <sup>34:119</sup> <sup>34:120</sup> <sup>34:121</sup> <sup>34:122</sup> <sup>34:123</sup> <sup>34:124</sup> <sup>34:125</sup> <sup>34:126</sup> <sup>34:127</sup> <sup>34:128</sup> <sup>34:129</sup> <sup>34:130</sup> <sup>34:131</sup> <sup>34:132</sup> <sup>34:133</sup> <sup>34:134</sup> <sup>34:135</sup> <sup>34:136</sup> <sup>34:137</sup> <sup>34:138</sup> <sup>34:139</sup> <sup>34:140</sup> <sup>34:141</sup> <sup>34:142</sup> <sup>34:143</sup> <sup>34:144</sup> <sup>34:145</sup> <sup>34:146</sup> <sup>34:147</sup> <sup>34:148</sup> <sup>34:149</sup> <sup>34:150</sup> <sup>34:151</sup> <sup>34:152</sup> <sup>34:153</sup> <sup>34:154</sup> <sup>34:155</sup> <sup>34:156</sup> <sup>34:157</sup> <sup>34:158</sup> <sup>34:159</sup> <sup>34:160</sup> <sup>34:161</sup> <sup>34:162</sup> <sup>34:163</sup> <sup>34:164</sup> <sup>34:165</sup> <sup>34:166</sup> <sup>34:167</sup> <sup>34:168</sup> <sup>34:169</sup> <sup>34:170</sup> <sup>34:171</sup> <sup>34:172</sup> <sup>34:173</sup> <sup>34:174</sup> <sup>34:175</sup> <sup>34:176</sup> <sup>34:177</sup> <sup>34:178</sup> <sup>34:179</sup> <sup>34:180</sup> <sup>34:181</sup> <sup>34:182</sup> <sup>34:183</sup> <sup>34:184</sup> <sup>34:185</sup> <sup>34:186</sup> <sup>34:187</sup> <sup>34:188</sup> <sup>34:189</sup> <sup>34:190</sup> <sup>34:191</sup> <sup>34:192</sup> <sup>34:193</sup> <sup>34:194</sup> <sup>34:195</sup> <sup>34:196</sup> <sup>34:197</sup> <sup>34:198</sup> <sup>34:199</sup> <sup>34:200</sup> <sup>34:201</sup> <sup>34:202</sup> <sup>34:203</sup> <sup>34:204</sup> <sup>34:205</sup> <sup>34:206</sup> <sup>34:207</sup> <sup>34:208</sup> <sup>34:209</sup> <sup>34:210</sup> <sup>34:211</sup> <sup>34:212</sup> <sup>34:213</sup> <sup>34:214</sup> <sup>34:215</sup> <sup>34:216</sup> <sup>34:217</sup> <sup>34:218</sup> <sup>34:219</sup> <sup>34:220</sup> <sup>34:221</sup> <sup>34:222</sup> <sup>34:223</sup> <sup>34:224</sup> <sup>34:225</sup> <sup>34:226</sup> <sup>34:227</sup> <sup>34:228</sup> <sup>34:229</sup> <sup>34:230</sup> <sup>34:231</sup> <sup>34:232</sup> <sup>34:233</sup> <sup>34:234</sup> <sup>34:235</sup> <sup>34:236</sup> <sup>34:237</sup> <sup>34:238</sup> <sup>34:239</sup> <sup>34:240</sup> <sup>34:241</sup> <sup>34:242</sup> <sup>34:243</sup> <sup>34:244</sup> <sup>34:245</sup> <sup>34:246</sup> <sup>34:247</sup> <sup>34:248</sup> <sup>34:249</sup> <sup>34:250</sup> <sup>34:251</sup> <sup>34:252</sup> <sup>34:253</sup> <sup>34:254</sup> <sup>34:255</sup> <sup>34:256</sup> <sup>34:257</sup> <sup>34:258</sup> <sup>34:259</sup> <sup>34:260</sup> <sup>34:261</sup> <sup>34:262</sup> <sup>34:263</sup> <sup>34:264</sup> <sup>34:265</sup> <sup>34:266</sup> <sup>34:267</sup> <sup>34:268</sup> <sup>34:269</sup> <sup>34:270</sup> <sup>34:271</sup> <sup>34:272</sup> <sup>34:273</sup> <sup>34:274</sup> <sup>34:275</sup> <sup>34:276</sup> <sup>34:277</sup> <sup>34:278</sup> <sup>34:279</sup> <sup>34:280</sup> <sup>34:281</sup> <sup>34:282</sup> <sup>34:283</sup> <sup>34:284</sup> <sup>34:285</sup> <sup>34:286</sup> <sup>34:287</sup> <sup>34:288</sup> <sup>34:289</sup> <sup>34:290</sup> <sup>34:291</sup> <sup>34:292</sup> <sup>34:293</sup> <sup>34:294</sup> <sup>34:295</sup> <sup>34:296</sup> <sup>34:297</sup> <sup>34:298</sup> <sup>34:299</sup> <sup>34:300</sup> <sup>34:301</sup> <sup>34:302</sup> <sup>34:303</sup> <sup>34:304</sup> <sup>34:305</sup> <sup>34:306</sup> <sup>34:307</sup> <sup>34:308</sup> <sup>34:309</sup> <sup>34:310</sup> <sup>34:311</sup> <sup>34:312</sup> <sup>34:313</sup> <sup>34:314</sup> <sup>34:315</sup> <sup>34:316</sup> <sup>34:317</sup> <sup>34:318</sup> <sup>34:319</sup> <sup>34:320</sup> <sup>34:321</sup> <sup>34:322</sup> <sup>34:323</sup> <sup>34:324</sup> <sup>34:325</sup> <sup>34:326</sup> <sup>34:327</sup> <sup>34:328</sup> <sup>34:329</sup> <sup>34:330</sup> <sup>34:331</sup> <sup>34:332</sup> <sup>34:333</sup> <sup>34:334</sup> <sup>34:335</sup> <sup>34:336</sup> <sup>34:337</sup> <sup>34:338</sup> <sup>34:339</sup> <sup>34:340</sup> <sup>34:341</sup> <sup>34:342</sup> <sup>34:343</sup> <sup>34:344</sup> <sup>34:345</sup> <sup>34:346</sup> <sup>34:347</sup> <sup>34:348</sup> <sup>34:349</sup> <sup>34:350</sup> <sup>34:351</sup> <sup>34:352</sup> <sup>34:353</sup> <sup>34:354</sup> <sup>34:355</sup> <sup>34:356</sup> <sup>34:357</sup> <sup>34:358</sup> <sup>34:359</sup> <sup>34:360</sup> <sup>34:361</sup> <sup>34:362</sup> <sup>34:363</sup> <sup>34:364</sup> <sup>34:365</sup> <sup>34:366</sup> <sup>34:367</sup> <sup>34:368</sup> <sup>34:369</sup> <sup>34:370</sup> <sup>34:371</sup> <sup>34:372</sup> <sup>34:373</sup> <sup>34:374</sup> <sup>34:375</sup> <sup>34:376</sup> <sup>34:377</sup> <sup>34:378</sup> <sup>34:379</sup> <sup>34:380</sup> <sup>34:381</sup> <sup>34:382</sup> <sup>34:383</sup> <sup>34:384</sup> <sup>34:385</sup> <sup>34:386</sup> <sup>34:387</sup> <sup>34:388</sup> <sup>34:389</sup> <sup>34:390</sup> <sup>34:391</sup> <sup>34:392</sup> <sup>34:393</sup> <sup>34:394</sup> <sup>34:395</sup> <sup>34:396</sup> <sup>34:397</sup> <sup>34:398</sup> <sup>34:399</sup> <sup>34:400</sup> <sup>34:401</sup> <sup>34:402</sup> <sup>34:403</sup> <sup>34:404</sup> <sup>34:405</sup> <sup>34:406</sup> <sup>34:407</sup> <sup>34:408</sup> <sup>34:409</sup> <sup>34:410</sup> <sup>34:411</sup> <sup>34:412</sup> <sup>34:413</sup> <sup>34:414</sup> <sup>34:415</sup> <sup>34:416</sup> <sup>34:417</sup> <sup>34:418</sup> <sup>34:419</sup> <sup>34:420</sup> <sup>34:421</sup> <sup>34:422</sup> <sup>34:423</sup> <sup>34:424</sup> <sup>34:425</sup> <sup>34:426</sup> <sup>34:427</sup> <sup>34:428</sup> <sup>34:429</sup> <sup>34:430</sup> <sup>34:431</sup> <sup>34:432</sup> <sup>34:433</sup> <sup>34:434</sup> <sup>34:435</sup> <sup>34:436</sup> <sup>34:437</sup> <sup>34:438</sup> <sup>34:439</sup> <sup>34:440</sup> <sup>34:441</sup> <sup>34:442</sup> <sup>34:443</sup> <sup>34:444</sup> <sup>34:445</sup> <sup>34:446</sup> <sup>34:447</sup> <sup>34:448</sup> <sup>34:449</sup> <sup>34:450</sup> <sup>34:451</sup> <sup>34:452</sup> <sup>34:453</sup> <sup>34:454</sup> <sup>34:455</sup> <sup>34:456</sup> <sup>34:457</sup> <sup>34:458</sup> <sup>34:459</sup> <sup>34:460</sup> <sup>34:461</sup> <sup>34:462</sup> <sup>34:463</sup> <sup>34:464</sup> <sup>34:465</sup> <sup>34:466</sup> <sup>34:467</sup> <sup>34:468</sup> <sup>34:469</sup> <sup>34:470</sup> <sup>34:471</sup> <sup>34:472</sup> <sup>34:473</sup> <sup>34:474</sup> <sup>34:475</sup> <sup>34:476</sup> <sup>34:477</sup> <sup>34:478</sup> <sup>34:479</sup> <sup>34:480</sup> <sup>34:481</sup> <sup>34:482</sup> <sup>34:483</sup> <sup>34:484</sup> <sup>34:485</sup> <sup>34:486</sup> <sup>34:487</sup> <sup>34:488</sup> <sup>34:489</sup> <sup>34:490</sup> <sup>34:491</sup> <sup>34:492</sup> <sup>34:493</sup> <sup>34:494</sup> <sup>34:495</sup> <sup>34:496</sup> <sup>34:497</sup> <sup>34:498</sup> <sup>34:499</sup> <sup>34:500</sup> <sup>34:501</sup> <sup>34:502</sup> <sup>34:503</sup> <sup>34:504</sup> <sup>34:505</sup> <sup>34:506</sup> <sup>34:507</sup> <sup>34:508</sup> <sup>34:509</sup> <sup>34:510</sup> <sup>34:511</sup> <sup>34:512</sup> <sup>34:513</sup> <sup>34:514</sup> <sup>34:515</sup> <sup>34:516</sup> <sup>34:517</sup> <sup>34:518</sup> <sup>34:519</sup> <sup>34:520</sup> <sup>34:521</sup> <sup>34:522</sup> <sup>34:523</sup> <sup>34:524</sup> <sup>34:525</sup> <sup>34:526</sup> <sup>34:527</sup> <sup>34:528</sup> <sup>34:529</sup> <sup>34:530</sup> <sup>34:531</sup> <sup>34:532</sup> <sup>34:533</sup> <sup>34:534</sup> <sup>34:535</sup> <sup>34:536</sup> <sup>34:537</sup> <sup>34:538</sup> <sup>34:539</sup> <sup>34:540</sup> <sup>34:541</sup> <sup>34:542</sup> <sup>34:543</sup> <sup>34:544</sup> <sup>34:545</sup> <sup>34:546</sup> <sup>34:547</sup> <sup>34:548</sup> <sup>34:549</sup> <sup>34:550</sup> <sup>34:551</sup> <sup>34:552</sup> <sup>34:553</sup> <sup>34:554</sup> <sup>34:555</sup> <sup>34:556</sup> <sup>34:557</sup> <sup>34:558</sup> <sup>34:559</sup> <sup>34:560</sup> <sup>34:561</sup> <sup>34:562</sup> <sup>34:563</sup> <sup>34:564</sup> <sup>34:565</sup> <sup>34:566</sup> <sup>34:567</sup> <sup>34:568</sup> <sup>34:569</sup> <sup>34:570</sup> <sup>34:571</sup> <sup>34:572</sup> <sup>34:573</sup> <sup>34:574</sup> <sup>34:575</sup> <sup>34:576</sup> <sup>34:577</sup> <sup>34:578</sup> <sup>34:579</sup> <sup>34:580</sup> <sup>34:581</sup> <sup>34:582</sup> <sup>34:583</sup> <sup>34:584</sup> <sup>34:585</sup> <sup>34:586</sup> <sup>34:587</sup> <sup>34:588</sup> <sup>34:589</sup> <sup>34:590</sup> <sup>34:591</sup> <sup>34:592</sup> <sup>34:593</sup> <sup>34:594</sup> <sup>34:595</sup> <sup>34:596</sup> <sup>34:597</sup> <sup>34:598</sup> <sup>34:599</sup> <sup>34:600</sup> <sup>34:601</sup> <sup>34:602</sup> <sup>34:603</sup> <sup>34:604</sup> <sup>34:605</sup> <sup>34:606</sup> <sup>34:607</sup> <sup>34:608</sup> <sup>34:609</sup> <sup>34:610</sup> <sup>34:611</sup> <sup>34:612</sup> <sup>34:613</sup> <sup>34:614</sup> <sup>34:615</sup> <sup>34:616</sup> <sup>34:617</sup> <sup>34:618</sup> <sup>34:619</sup> <sup>34:620</sup> <sup>34:621</sup> <sup>34:622</sup> <sup>34:623</sup> <sup>34:624</sup> <sup>34:625</sup> <sup>34:626</sup> <sup>34:627</sup> <sup>34:628</sup> <sup>34:629</sup> <sup>34:630</sup> <sup>34:631</sup> <sup>34:632</sup> <sup>34:633</sup> <sup>34:634</sup> <sup>34:635</sup> <sup>34:636</sup> <sup>34:637</sup> <sup>34:638</sup> <sup>34:639</sup> <sup>34:640</sup> <sup>34:641</sup> <sup>34:642</sup> <sup>34:643</sup> <sup>34:644</sup> <sup>34:645</sup> <sup>34:646</sup> <sup>34:647</sup> <sup>34:648</sup> <sup>34:649</sup> <sup>34:650</sup> <sup>34:651</sup> <sup>34:652</sup> <sup>34:653</sup> <sup>34:654</sup> <sup>34:655</sup> <sup>34:656</sup> <sup>34:657</sup> <sup>34:658</sup> <sup>34:659</sup> <sup>34:660</sup> <sup>34:661</sup> <sup>34:662</sup> <sup>34:663</sup> <sup>34:664</sup> <sup>34:665</sup> <sup>34:666</sup> <sup>34:667</sup> <sup>34:668</sup> <sup>34:669</sup> <sup>34:670</sup> <sup>34:671</sup> <sup>34:672</sup> <sup>34:673</sup> <sup>34:674</sup> <sup>34:675</sup> <sup>34:676</sup> <sup>34:677</sup> <sup>34:678</sup> <sup>34:679</sup> <sup>34:680</sup> <sup>34:681</sup> <sup>34:682</sup> <sup>34:683</sup> <sup>34:684</sup> <sup>34:685</sup> <sup>34:686</sup> <sup>34:687</sup> <sup>34:688</sup> <sup>34:689</sup> <sup>34:690</sup> <sup>34:691</sup> <sup>34:692</sup> <sup>34:693</sup> <sup>34:694</sup> <sup>34:695</sup> <sup>34:696</sup> <sup>34:697</sup> <sup>34:698</sup> <sup>34:699</sup> <sup>34:700</sup> <sup>34:701</sup> <sup>34:702</sup> <sup>34:703</sup> <sup>34:704</sup> <sup>34:705</sup> <sup>34:706</sup> <sup>34:707</sup> <sup>34:708</sup> <sup>34:709</sup> <sup>34:710</sup> <sup>34:711</sup> <sup>34:712</sup> <sup>34:713</sup> <sup>34:714</sup> <sup>34:715</sup> <sup>34:716</sup> <sup>34:717</sup> <sup>34:718</sup> <sup>34:719</sup> <sup>34:720</sup> <sup>34:721</sup> <sup>34:722</sup> <sup>34:723</sup> <sup>34:724</sup> <sup>34:725</sup> <sup>34:726</sup> <sup>34:727</sup> <sup>34:728</sup> <sup>34:729</sup> <sup>34:730</sup> <sup>34:731</sup> <sup>34:732</sup> <sup>34:733</sup> <sup>34:734</sup> <sup>34:735</sup> <sup>34:736</sup> <sup>34:737</sup> <sup>34:738</sup> <sup>34:739</sup> <sup>34:740</sup> <sup>34:741</sup> <sup>34:742</sup> <sup>34:743</sup> <sup>34:744</sup> <sup>34:745</sup> <sup>34:746</sup> <sup>34:747</sup> <sup>34:748</sup> <sup>34:749</sup> <sup>34:750</sup> <sup>34:751</sup> <sup>34:752</sup> <sup>34:753</sup> <sup>34:754</sup> <sup>34:755</sup> <sup>34:756</sup> <sup>34:757</sup> <sup>34:758</sup> <sup>34:759</sup> <sup>34:760</sup> <sup>34:761</sup> <sup>34:762</sup> <sup>34:763</sup> <sup>34:764</sup> <sup>34:765</sup> <sup>34:766</sup> <sup>34:767</sup> <sup>34:768</sup> <sup>34:769</sup> <sup>34:770</sup> <sup>34:771</sup> <sup>34:772</sup> <sup>34:773</sup> <sup>34:774</sup> <sup>34:775</sup> <sup>34:776</sup> <sup>34:777</sup> <sup>34:778</sup> <sup>34:779</sup> <sup>34:780</sup> <sup>34:781</sup> <sup>34:782</sup> <sup>34:783</sup> <sup>34:784</sup> <sup>34:785</sup> <sup>34:786</sup> <sup>34:787</sup> <sup>34:788</sup> <sup>34:789</sup> <sup>34:790</sup> <sup>34:791</sup> <sup>34:792</sup> <sup>34:793</sup> <sup>34:794</sup> <sup>34:795</sup> <sup>34:796</sup> <sup>34:797</sup> <sup>34:798</sup> <sup>34:799</sup> <sup>34:800</sup> <sup>34:801</sup> <sup>34:802</sup> <sup>34:803</sup> <sup>34:804</sup> <sup>34:805</sup> <sup>34:806</sup> <sup>34:807</sup> <sup>34:808</sup> <sup>34:809</sup> <sup>34:810</sup> <sup>34:811</sup> <sup>34:812</sup> <sup>34:813</sup> <sup>34:814</sup> <sup>34:815</sup> <sup>34:816</sup> <sup>34:817</sup> <sup>34:818</sup> <sup>34:819</sup> <sup>34:820</sup> <sup>34:821</sup> <sup>34:822</sup> <sup>34:823</sup> <sup>34:824</sup> <sup>34:825</sup> <sup>34:826</sup> <sup>34:827</sup> <sup>34:828</sup> <sup>34:829</sup> <sup>34:830</sup> <sup>34:831</sup> <sup>34:832</sup> <sup>34:833</sup> <sup>34:834</sup> <sup>34:835</sup> <sup>34:836</sup> <sup>34:837</sup> <sup>34:838</sup> <sup>34:839</sup> <sup>34:840</sup> <sup>34:841</sup> <sup>34</sup>

8 और इस्राएली मोआब के अराबा में मूसा के लिये तीस दिन तक रोते रहे; तब मूसा के लिये रोने और विलाप करने के दिन पूरे हुए।

१११११ ११ ११११११ ११ ११११११

9 और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी उसकी मानते रहे।

10 और मूसा के तुल्य ११११११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११११ ११११, जिससे यहोवा ने आमने-सामने बातें की,

11 और उसको यहोवा ने फिरौन और उसके सब कर्मचारियों के सामने, और उसके सारे देश में, सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा था,

12 और उसने सारे इस्राएलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के काम कर दिखाए।

‡ 34:10 ११११११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११: इसका संदर्भ विशेष करके मूसा द्वारा किए गए चमत्कारों से है जो उसने निर्गमन एवं जंगल में किए थे।



१२२२२२२; क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम को इस यरदन के पार उतरकर उस देश को अपने अधिकार में लेने के लिये जाना है जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे अधिकार में देनेवाला है।”

12 फिर यहोशू ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों से कहा,

13 “जो बात यहोवा के दास मूसा ने तुम से कही थी, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्राम देता है, और यही देश तुम्हें देगा, उसकी सुधि करो।

14 तुम्हारी स्त्रियाँ, बाल-बच्चे, और पशु तो इस देश में रहें जो मूसा ने तुम्हें यरदन के इस पार दिया, परन्तु तुम जो शूरवीर हो पाँति बाँधे हुए अपने भाइयों के आगे-आगे पार उतर चलो, और उनकी सहायता करो;

15 और जब यहोवा उनको ऐसा विश्राम देगा जैसा वह तुम्हें दे चुका है, और वे भी तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के दिए हुए देश के अधिकारी हो जाएँगे; तब तुम अपने अधिकार के देश में, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन के इस पार सूर्योदय की ओर तुम्हें दिया है, लौटकर इसके अधिकारी होंगे।”

16 तब उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, “जो कुछ तूने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहाँ कहीं तू हमें भेजे वहाँ हम जाएँगे।

17 जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे; इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसे ही तेरे संग भी रहे।

18 कोई क्यों न हो जो तेरे विरुद्ध बलवा करे, और जितनी आज्ञाएँ तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला जाएगा। परन्तु तू दृढ़ और हियाव बाँधे रह।”

## 2

११११११ ११ ११११ १११११ १११११

1 तब नून के पुत्र यहोशू ने दो भेदियों को शिक्तीम से चुपके से भेज दिया, और उनसे कहा, “जाकर उस देश और यरीहो को देखो।” तुरन्त वे चल दिए, और राहाब नामक किसी वेश्या के घर में जाकर सो गए।

2 तब किसी ने यरीहो के राजा से कहा, “आज की रात कई एक इस्राएली हमारे देश का भेद लेने को यहाँ आए हुए हैं।”

† 1:11 १११११-१११११ ११११ १११११ ११११११ ११ ११११: इस आज्ञा का उद्देश्य सम्भवतः यह था कि एक बार जब वे यरदन पार कर लेंगे तब मन्ना बरसना बन्द हो जाएगा। \* 2:4 ११११ १११११ १११११११ ११ ११ १११११ ११ ११११: राहाब ने जो कार्य किया वह परमेश्वर के उद्घोषित वचन एवं अंगीकार से कि उसकी इच्छा का विरोध करना व्यर्थ है वरन् दुष्टता है। † 2:6 ११११ ११ ११११११११११ ११ १११११११: वृक्षों के फूस की ‡ 2:14 ११११११११११ ११ ११११११ ११११११११ ११११११११११: यह एक प्रकार की शपथ थी परमेश्वर को पुकारा गया कि यदि उन्होंने राहाब का जीवन सुरक्षित रखने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की तो परमेश्वर उन्हें मृत्यु दे।

3 तब यरीहो के राजा ने राहाब के पास यह कहला भेजा, “जो पुरुष तेरे यहाँ आए हैं उन्हें बाहर ले आ; क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आए हैं।”

4 उस स्त्री ने दोनों पुरुषों को छिपा रखा; और इस प्रकार कहा, “मेरे पास कई पुरुष आए तो थे, परन्तु ११११ ११११११ ११११११११ १११ १११ १११११११ १११ १११\*”; (१११११११. 2:25)

5 और जब अंधेरा हुआ, और फाटक बन्द होने लगा, तब वे निकल गए; मुझे मालूम नहीं कि वे कहाँ गए; तुम फुर्ती करके उनका पीछा करो तो उन्हें जा पकड़ोगे।”

6 उसने उनको घर की छत पर चढ़ाकर ११११ १११ ११११११११११११ १११ ११११११११११११ छिपा दिया था जो उसने छत पर सजा कर रखी थी।

7 वे पुरुष तो यरदन का मार्ग ले उनकी खोज में घाट तक चले गए; और ज्यों ही उनको खोजनेवाले फाटक से निकले त्यों ही फाटक बन्द किया गया।

8 ये लेटने न पाए थे कि वह स्त्री छत पर इनके पास जाकर

9 इन पुरुषों से कहने लगी, “मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगों के मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं।

10 क्योंकि हमने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे सामने लाल समुद्र का जल सूखा दिया। और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नामक यरदन पार रहनेवाले एमोरियों के दोनों राजाओं का सत्यानाश कर डाला है।

11 और यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया, और तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है।

12 अब मैंने जो तुम पर दया की है, इसलिए मुझसे यहोवा की शपथ खाओ कि तुम भी मेरे पिता के घराने पर दया करोगे, और इसका सच्चा चिन्ह मुझे दो, (११११११११. 11:31)

13 कि तुम मेरे माता-पिता, भाइयों और बहनों को, और जो कुछ उनका है उन सभी को भी जीवित रख छोड़ो, और हम सभी का प्राण मरने से बचाओगे।”

14 तब उन पुरुषों ने उससे कहा, “यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे, तो ११११११११११११११ १११११११११ १११ १११११११ ११११११११ ११११११११११ जाए; और जब यहोवा



पड़ेंगे, उस समय यरदन का ऊपर से बहता हुआ जल थम जाएगा, और ढेर होकर ठहरा रहेगा।”

14 इसलिए जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरों से यरदन पार जाने को कूच किया, और याजक वाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के आगे-आगे चले,

15 और सन्दूक के उठानेवाले यरदन पर पहुँचे, और सन्दूक के उठानेवाले याजकों के पाँव यरदन के तट के जल में पड़े (22222 22 22 22 2222 22 222 22 22 222 2222 22 22 222-222 222 2222 22\*),

16 तब जो जल ऊपर की ओर से बहा आता था वह बहुत दूर, अर्थात् आदाम नगर के पास जो सारतान के निकट है रुककर एक ढेर हो गया, और दीवार सा उठा रहा, और जो जल अराबा का ताल, जो खारा ताल भी कहलाता है उसकी ओर बहा जाता था, वह पूरी रीति से सूख गया; और प्रजा के लोग यरीहो के सामने पार उतर गए।

17 और याजक यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाए हुए यरदन के बीचों बीच पहुँचकर स्थल पर स्थिर खड़े रहे, और सब इस्राएली स्थल ही स्थल पार उतरते रहे, अन्त में उस सारी जाति के लोग यरदन पार हो गए।

## 4

222222 22222

1 जब उस सारी जाति के लोग यरदन के पार उतर चुके, तब यहोवा ने यहोशू से कहा,

2 “प्रजा में से 2222 222222\*, अर्थात्-गोत्र पीछे एक-एक पुरुष को चुनकर यह आज्ञा दे,

3 ‘तुम यरदन के बीच में, जहाँ याजकों ने पाँव धरे थे वहाँ से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो, और जहाँ आज की रात पड़ाव होगा वहीं उनको रख देना।’”

4 तब यहोशू ने उन बारह पुरुषों को, जिन्हें उसने इस्राएलियों के प्रत्येक गोत्र में से छांटकर ठहरा रखा था,

5 बुलवाकर कहा, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सन्दूक के आगे यरदन के बीच में जाकर इस्राएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक-एक पत्थर उठाकर अपने-अपने कंधे पर रखो,

6 जिससे यह तुम लोगों के बीच चिन्ह ठहरे, और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पूछें, ‘इन पत्थरों का क्या मतलब है?’

7 तब तुम उन्हें यह उत्तर दो, कि यरदन का जल यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने से दो भाग हो गया

था; क्योंकि जब वह यरदन पार आ रहा था, तब यरदन का जल दो भाग हो गया। अतः वे पत्थर इस्राएल को सदा के लिये स्मरण दिलानेवाले ठहरेंगे।”

8 यहोशू की इस आज्ञा के अनुसार इस्राएलियों ने किया, जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा था वैसा ही उन्होंने इस्राएली गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह पत्थर यरदन के बीच में से उठा लिए; और उनको अपने साथ ले जाकर पड़ाव में रख दिया।

9 और यरदन के बीच, जहाँ याजक वाचा के सन्दूक को उठाए हुए अपने पाँव धरे थे वहाँ यहोशू ने बारह पत्थर खड़े कराए; वे आज तक वहीं पाए जाते हैं।

10 और याजक सन्दूक उठाए हुए उस समय तक यरदन के बीच खड़े रहे जब तक वे सब बातें पूरी न हो चुकीं, जिन्हें यहोवा ने यहोशू को लोगों से कहने की आज्ञा दी थी। तब सब लोग फुर्ती से पार उतर गए;

11 और जब सब लोग पार उतर चुके, तब याजक और यहोवा का सन्दूक भी उनके देखते पार हुए।

12 और रूबेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग मूसा के कहने के अनुसार इस्राएलियों के आगे पाँति बाँधे हुए पार गए;

13 अर्थात् कोई चालीस हजार पुरुष युद्ध के हथियार बाँधे हुए संग्राम करने के लिये यहोवा के सामने पार उतरकर यरीहो के पास के अराबा में पहुँचे।

14 उस दिन यहोवा ने सब इस्राएलियों के सामने यहोशू की महिमा बढ़ाई; और जैसे वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू का भी भय उसके जीवन भर मानते रहे।

15 और यहोवा ने यहोशू से कहा,

16 “साक्षी का सन्दूक उठानेवाले याजकों को आज्ञा दे कि यरदन में से निकल आएँ।”

17 तो यहोशू ने याजकों को आज्ञा दी, “यरदन में से निकल आओ।”

18 और ज्यों ही यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले याजक यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पाँव स्थल पर पड़े, त्यों ही यरदन का जल अपने स्थान पर आया, और पहले के समान तटों के ऊपर फिर बहने लगा।

19 पहले महीने के दसवें दिन को प्रजा के लोगों ने यरदन में से निकलकर यरीहो की पूर्वी सीमा पर गिलगाल में अपने डेरे डालें।

20 और जो बारह पत्थर यरदन में से निकाले गए थे, उनको यहोशू ने गिलगाल में खड़े किए।

‡ 3:15 22222 22 22 22 2222 22 222 22 22 222 2222 22 22 222-222 222 2222 22: अर्थात् वह ऊफान में थी, उसके तट जलमग्न थे। \* 4:2 2222 222222: गोत्रों को अपने-अपने प्रतिनिधि चुनने थे और उसका अनुभोदन यहोशू करेगा। (यहोशू. 4:4)

21 तब उसने इस्राएलियों से कहा, “आगे को जब तुम्हारे बाल-बच्चे अपने-अपने पिता से यह पूछें, ‘इन पत्थरों का क्या मतलब है?’

22 तब तुम यह कहकर उनको बताना, ‘इस्राएली यरदन के पार स्थल ही स्थल चले आए थे’।

23 क्योंकि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक हमारे सामने से हटाकर सूखा रखा था, वैसे ही उसने यरदन का भी जल तुम्हारे पार हो जाने तक तुम्हारे सामने से हटाकर सूखा रखा;

24 इसलिए कि पृथ्वी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है; और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।”

## 5

इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।

1 जब यरदन के पश्चिम की ओर रहनेवाले एमोरियों के सब राजाओं ने, और समुद्र के पास रहनेवाले कनानियों के सब राजाओं ने यह सुना, कि यहोवा ने इस्राएलियों के पार होने तक उनके सामने से यरदन का जल हटाकर सूखा रखा है, तब इस्राएलियों के डर के मारे उनका मन घबरा गया, और उनके जी में जी न रहा।

2 उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा, “चकमक की छुरियाँ बनवाकर इस्राएलीयों के डर के मारे उनका मन घबरा गया, और उनके जी में जी न रहा।”

3 तब यहोशू ने चकमक की छुरियाँ बनवाकर खलड़ियाँ नामक टीले पर इस्राएलियों का खतना कराया।

4 और यहोशू ने जो खतना कराया, इसका कारण यह है, कि जितने युद्ध के योग्य पुरुष मिस्र से निकले थे वे सब मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में मर गए थे।

5 जो पुरुष मिस्र से निकले थे उन सब का तो खतना हो चुका था, परन्तु जितने उनके मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उनमें से किसी का खतना न हुआ था।

6 क्योंकि इस्राएली तो चालीस वर्ष तक जंगल में फिरते रहे, जब तक उस सारी जाति के लोग, अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश न हो गए, क्योंकि उन्होंने यहोवा की न मानी थी; इसलिए यहोवा ने शपथ खाकर उनसे कहा था, कि जो देश मैंने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर तुम्हें देने को कहा था,

और उसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, वह देश मैं तुम को नहीं दिखाऊँगा।

7 तो उन लोगों के पुत्र जिनको यहोवा ने उनके स्थान पर उत्पन्न किया था, उनका खतना यहोशू से कराया, क्योंकि मार्ग में उनके खतना न होने के कारण वे खतनारहित थे।

8 और जब उस सारी जाति के लोगों का खतना हो चुका, तब वे चंगे हो जाने तक अपने-अपने स्थान पर छावनी में रहे।

9 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “उसे मैंने आज दूर किया है।” इस कारण उस स्थान का नाम आज के दिन तक पड़ा है।

10 सो इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।

11 और फसह के दूसरे दिन वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी और उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाने लगे।

12 और जिस दिन वे उस देश की उपज में से खाने लगे, उसी दिन सवेरे को मन्ना बन्द हो गया; और इस्राएलियों को आगे फिर कभी मन्ना न मिला, परन्तु उस वर्ष उन्होंने कनान देश की उपज में से खाया।

इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।

13 जब यहोशू यरीहो के पास था तब उसने अपनी आँखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष सामने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जाकर पूछा, “क्या तू हमारी ओर का है, या हमारे बैरियों की ओर का?”

14 उसने उत्तर दिया, “नहीं; मैं इस्राएलीयों का हूँ।” तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया, और उससे कहा, “अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?”

15 यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा, “अपनी जूती पाँव से उतार डाल, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है।” तब यहोशू ने वैसा ही किया।

## 6

इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।

\* 5:2 इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।  
† 5:9 इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।  
‡ 5:9 इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।  
§ 5:14 इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले रहे, और उन्होंने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना।

1 यरीहो के सब फाटक इस्राएलियों के डर के मारे लगातार बन्द रहे, और कोई बाहर भीतर आने-जाने नहीं पाता था।

2 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, “सुन, मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूँ।

3 सो तुम में जितने योद्धा हैं नगर को घेर लें, और उस नगर के चारों ओर एक बार घूम आएँ। और छः दिन तक ऐसा ही किया करना।

4 और सात याजक सन्दूक के आगे-आगे मेढों के सींगों के साथ नरसिंगे लिए हुए चलें; फिर सातवें दिन तुम नगर के चारों ओर सात बार घूमना, और याजक भी नरसिंगे फूँकते चलें।

5 और जब वे मेढों के सींगों के नरसिंगे देर तक फूँकते रहें, तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें; तब नगर की शहरपनाह नींव से गिर जाएगी, और सब लोग अपने-अपने सामने चढ़ जाएँ।”

6 सो नून के पुत्र यहोशू ने याजकों को बुलवाकर कहा, “वाचा के सन्दूक को उठा लो, और सात याजक यहोवा के सन्दूक के आगे-आगे मेढों के सींगों के साथ नरसिंगे लिए चलें।”

7 फिर उसने लोगों से कहा, “आगे बढ़कर नगर के चारों ओर घूम आओ; और हथियार-बन्द पुरुष यहोवा के सन्दूक के आगे-आगे चलें।”

8 और जब यहोशू ये बातें लोगों से कह चुका, तो वे सात याजक जो यहोवा के सामने सात नरसिंगे लिए हुए थे नरसिंगे फूँकते हुए चले, और यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके पीछे-पीछे चला।

9 और हथियार-बन्द पुरुष नरसिंगे फूँकनेवाले याजकों के आगे-आगे चले, और पीछेवाले सन्दूक के पीछे-पीछे चले, और याजक नरसिंगे फूँकते हुए चले।

10 और यहोशू ने लोगों को आज्ञा दी, “जब तक मैं तुम्हें जयजयकार करने की आज्ञा न दूँ, तब तक जयजयकार न करना, और न तुम्हारा कोई शब्द सुनने में आए, न कोई बात तुम्हारे मुँह से निकलने पाए; आज्ञा पाते ही जयजयकार करना।”

11 उसने यहोवा के सन्दूक को एक बार नगर के चारों ओर घुमवाया; तब वे छावनी में आए, और रात वहीं काटी।

12 यहोशू सवेरे उठा, और याजकों ने यहोवा का सन्दूक उठा लिया।

13 और उन सात याजकों ने मेढों के सींगों के साथ नरसिंगे लिए और यहोवा के सन्दूक के आगे-आगे फूँकते हुए चले; और उनके आगे हथियार-बन्द पुरुष चले, और पीछेवाले यहोवा के सन्दूक के पीछे-पीछे चले, और याजक नरसिंगे फूँकते चले गए।

14 इस प्रकार वे दूसरे दिन भी एक बार नगर के चारों ओर घूमकर छावनी में लौट आए। और इसी प्रकार उन्होंने छः दिन तक किया।

15 फिर [2][2][2][2][2] [2][2]\* वे बड़े तडके उठकर उसी रीति से नगर के चारों ओर सात बार घूम आए; केवल उसी दिन वे सात बार घूमे।

16 तब सातवीं बार जब याजक नरसिंगे फूँकते थे, तब यहोशू ने लोगों से कहा, “जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है।

17 और नगर और जो कुछ उसमें है [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] की वस्तु ठहरेगी; केवल राहाब वेश्या और जितने उसके घर में हों वे जीवित छोड़े जाएँगे, क्योंकि उसने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रखा था। ([2][2][2][2]. 2:25)

18 और तुम अर्पण की हुई वस्तुओं से सावधानी से अपने आपको अलग रखो, ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर बाद में उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार इस्राएली छावनी को भ्रष्ट करके उसे कष्ट में डाल दो।

19 सब चाँदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं, वे यहोवा के लिये पवित्र हैं, और उसी के भण्डार में रखे जाएँ।”

20 तब लोगों ने जयजयकार किया, और याजक नरसिंगे फूँकते रहे। और जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना तो फिर बड़ी ही ध्वनि से उन्होंने जयजयकार किया, तब शहरपनाह नींव से गिर पड़ी, और लोग अपने-अपने सामने से उस नगर में चढ़ गए, और नगर को ले लिया। ([2][2][2][2]. 11:30)

21 और क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या जवान, क्या बूढ़े, वरन् बैल, भेड़-बकरी, गदहे, और जितने नगर में थे, उन सभी को उन्होंने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला।

22 तब यहोशू ने उन दोनों पुरुषों से जो उस देश का भेद लेने गए थे कहा, “अपनी शपथ के अनुसार उस वेश्या के घर में जाकर उसको और जो उसके पास हों उन्हें भी निकाल ले आओ।”

\* 6:15 [2][2][2][2][2] [2][2]: अति सम्भव है कि सब्त के दिन। भोर के समय उठने का अभिप्राय था कि नगर के सात चक्कर घूमने थे। † 6:17 [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]: यरीहो, कनानियों का पहला नगर जो जीता गया, वह परमेश्वर के लिए प्रथम फल की भेंट था। राहाब और उसके परिवार को छोड़ प्रत्येक प्राणी का संहार किया गया जो यहोवा के लिए बलि था।



23 तब वे दोनों जवान भेदिण भीतर जाकर राहाब को, और उसके माता-पिता, भाइयों, और सब को जो उसके यहाँ रहते थे, वरन् उसके सब कुटुम्बियों को निकाल लाए, और इस्राएल की छावनी से बाहर बैठा दिया।

24 तब उन्होंने नगर को, और जो कुछ उसमें था, सब को आग लगाकर फूँक दिया; केवल चाँदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के थे, उनको उन्होंने यहोवा के भवन के भण्डार में रख दिया।

25 और यहोशू ने राहाब वेश्या और उसके पिता के घराने को, वरन् उसके सब लोगों को जीवित छोड़ दिया; और आज तक उसका वंश इस्राएलियों के बीच में रहता है, क्योंकि जो दूत यहोशू ने यरीहो के भेद लेने को भेजे थे उनको उसने छिपा रखा था। (यहोशू 11:31)

26 फिर उसी समय यहोशू ने इस्राएलियों के सम्मुख शपथ रखी, और कहा, “जो मनुष्य उठकर इस नगर यरीहो को फिर से बनाए वह यहोवा की ओर से श्रापित हो।

“जब वह उसकी नींव डालेगा तब तो उसका जेठा पुत्र मरेगा,

और जब वह उसके फाटक लगवाएगा तब उसका छोटा पुत्र मर जाएगा।”

27 और यहोवा यहोशू के संग रहा; और यहोशू की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई।

## 7

### यहोशू 7:1-2

1 परन्तु इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में यहोशू 7:1-2\* अर्थात् यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्मी का पुत्र था, उसने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया; इस कारण यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा।

2 यहोशू ने यरीहो से आई नामक नगर के पास, जो बेतावेन से लगा हुआ बेतेल की पूर्व की ओर है, कुछ पुरुषों को यह कहकर भेजा, “जाकर देश का भेद ले आओ।” और उन पुरुषों ने जाकर आई का भेद लिया।

3 और उन्होंने यहोशू के पास लौटकर कहा, “सब लोग वहाँ न जाएँ, कोई दो तीन हजार पुरुष जाकर आई को जीत सकते हैं; सब लोगों को वहाँ जाने का कष्ट न दें, क्योंकि वे लोग थोड़े ही हैं।”

4 इसलिए कोई तीन हजार पुरुष वहाँ गए; परन्तु आई के रहनेवालों के सामने से भाग आए,

\* 7:1 यहोशू 7:1-2: आकान ने ऐसा पाप किया था (यहोशू 6:19) उसने परमेश्वर को अर्पण की हुई कुछ वस्तुओं में से एक सुन्दर ओढना, चाँदी और सोने की ईंट छिपा ली थी। † 7:5 यहोशू 7:5: अर्थात् ‘पत्थर की खदान’ ‡ 7:10 यहोशू 7:10: परमेश्वर का उत्तर स्पष्ट था और उसमें झिड़की भी थी। यहोशू को असहाय नहीं रहना है, आपदा का कारण भी खोजना आवश्यक है।

5 तब आई के रहनेवालों ने उनमें से कोई छत्तीस पुरुष मार डाले, और अपने फाटक से यहोशू 7:1-2 तक उनका पीछा करके उतराई में उनको मारते गए। तब लोगों का मन पिघलकर जल सा बन गया।

6 तब यहोशू ने अपने वस्त्र फाड़े, और वह और इस्राएली वृद्ध लोग यहोवा के सन्दूक के सामने मुँह के बल गिरकर भूमि पर साँझ तक पड़े रहे; और उन्होंने अपने-अपने सिर पर धूल डाली।

7 और यहोशू ने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा, तू अपनी इस प्रजा को यरदन पार क्यों ले आया? क्या हमें एमोरियों के वश में करके नष्ट करने के लिये ले आया है? भला होता कि हम संतोष करके यरदन के उस पार रह जाते!”

8 हाय, प्रभु मैं क्या कहूँ, जब इस्राएलियों ने अपने शत्रुओं को पीठ दिखाई है!

9 क्योंकि कनानी वरन् इस देश के सब निवासी यह सुनकर हमको घेर लेंगे, और हमारा नाम पृथ्वी पर से मिटा डालेंगे; फिर तू अपने बड़े नाम के लिये क्या करेगा?”

10 यहोवा ने यहोशू से कहा, “यहोशू 7:1-2 यहोशू 7:1-2, तू क्यों इस भाँति मुँह के बल भूमि पर पड़ा है?”

11 इस्राएलियों ने पाप किया है; और जो वाचा मैंने उनसे अपने साथ बँधाई थी उसको उन्होंने तोड़ दिया है, उन्होंने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया, वरन् चोरी भी की, और छल करके उसको अपने सामान में रख लिया है।

12 इस कारण इस्राएली अपने शत्रुओं के सामने खड़े नहीं रह सकते; वे अपने शत्रुओं को पीठ दिखाते हैं, इसलिए कि वे आप अर्पण की वस्तु बन गए हैं। और यदि तुम अपने मध्य में से अर्पण की वस्तु सत्यानाश न कर डालोगे, तो मैं आगे को तुम्हारे संग नहीं रहूँगा।

13 उठ, प्रजा के लोगों को पवित्र कर, उनसे कह; सवेरे तक अपने-अपने को पवित्र कर रखो; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, “हे इस्राएल, तेरे मध्य में अर्पण की वस्तु है; इसलिए जब तक तू अर्पण की वस्तु को अपने मध्य में से दूर न करे तब तक तू अपने शत्रुओं के सामने खड़ा न रह सकेगा।”

14 इसलिए सवेरे को तुम गोत्र-गोत्र के अनुसार समीप खड़े किए जाओगे; और जिस गोत्र को यहोवा पकड़े वह एक-एक कुल करके पास आए; और जिस कुल को यहोवा पकड़े वह घराना-घराना करके पास आए;

फिर जिस घराने को यहोवा पकड़े वह एक-एक पुरुष करके पास आए।

15 तब जो पुरुष अर्पण की वस्तु रखे हुए पकड़ा जाएगा, वह और जो कुछ उसका हो सब आग में डालकर जला दिया जाए; क्योंकि उसने यहोवा की वाचा को तोड़ा है, और इस्राएल में अनुचित कर्म किया है।”

16 यहोशू सवेरे उठकर इस्राएलियों को गोत्र-गोत्र करके समीप ले गया, और यहूदा का गोत्र पकड़ा गया;

17 तब उसने यहूदा के परिवार को समीप किया, और जेरहवंशियों का कुल पकड़ा गया; फिर जेरहवंशियों के घराने के एक-एक पुरुष को समीप लाया, और जब्दी पकड़ा गया;

18 तब उसने उसके घराने के एक-एक पुरुष को समीप खड़ा किया, और यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्मी का पुत्र था, पकड़ा गया।

19 तब यहोशू आकान से कहने लगा, “हे मेरे बेटे, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का आदर कर, और उसके आगे अंगीकार कर; और जो कुछ तूने किया है वह मुझ को बता दे, और मुझसे कुछ मत छिपा।”

20 आकान ने यहोशू को उत्तर दिया, “सचमुच मैंने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, और इस प्रकार मैंने किया है,

21 कि जब मुझे लूट में बाबेल देश का एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ शेकेल चाँदी, और पचास शेकेल सोने की एक ईंट देख पड़ी, तब मैंने उनका लालच करके उन्हें रख लिया; वे मेरे डेरे के भीतर भूमि में गड़े हैं, और सब के नीचे चाँदी है।”

22 तब यहोशू ने दूत भेजे, और वे उस डेरे में दौड़े गए; और क्या देखा, कि वे वस्तुएँ उसके डेरे में गड़ी हैं, और सब के नीचे चाँदी है।

23 उनको उन्होंने डेरे में से निकालकर यहोशू और सब इस्राएलियों के पास लाकर यहोवा के सामने रख दिया।

24 तब सब इस्राएलियों समेत यहोशू जेरहवंशी आकान को, और उस चाँदी और ओढ़ने और सोने की ईंट को, और उसके बेटे-बेटियों को, और उसके बैलों, गदहों और भेड़-बकरियों को, और उसके डेरे को, अर्थात् जो कुछ उसका था उन सब को आकोर नामक तराई में ले गया।

25 तब यहोशू ने उससे कहा, “तूने हमें क्यों कष्ट दिया है? आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा।” तब सब

इस्राएलियों ने उस पर पथराव किया; और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्थर डाल दिए।

26 और उन्होंने उसके ऊपर **११** **११** **११** **११** **११** **११** **११** लगा दिया जो आज तक बना है; तब यहोवा का भडका हुआ कोप शान्त हो गया। इस कारण उस स्थान का नाम आज तक आकोर तराई पड़ा है।

## 8

**१** **१** **१** **१** **१** **१** **१** **१** **१** **१**

1 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “**१** **१**”, और तेरा मन कच्चा न हो; कमर बाँधकर सब योद्धाओं को साथ ले, और आई पर चढ़ाई कर; सुन, मैंने आई के राजा को उसकी प्रजा और उसके नगर और देश समेत तेरे वश में कर दिया है।

2 और जैसा तूने यरीहो और उसके राजा से किया वैसा ही आई और उसके राजा के साथ भी करना; केवल तुम पशुओं समेत उसकी लूट तो अपने लिये ले सकोगे; इसलिए उस नगर के पीछे की ओर अपने पुरुष घात में लगा दो।”

3 अतः यहोशू ने सब योद्धाओं समेत आई पर चढ़ाई करने की तैयारी की; और यहोशू ने तीस हजार पुरुषों को जो शूरवीर थे चुनकर रात ही को आज्ञा देकर भेजा।

4 और उनको यह आज्ञा दी, “सुनो, तुम उस नगर के पीछे की ओर घात लगाए बैठे रहना; नगर से बहुत दूर न जाना, और सब के सब तैयार रहना;

5 और मैं अपने सब साथियों समेत उस नगर के निकट जाऊँगा। और जब वे पहले के समान हमारा सामना करने को निकलें, तब हम उनके आगे से भागेंगे;

6 तब वे यह सोचकर, कि वे पहले की भाँति हमारे सामने से भागे जाते हैं, हमारा पीछा करेंगे; इस प्रकार हम उनके सामने से भागकर उन्हें नगर से दूर निकाल ले जाएँगे;

7 तब तुम घात में से उठकर नगर को अपना कर लेना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उसको तुम्हारे हाथ में कर देगा।

8 और जब नगर को ले लो, तब उसमें आग लगाकर फूँक देना, यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही काम करना; सुनो, मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।”

9 तब यहोशू ने उनको भेज दिया; और वे घात में बैठने को चले गए, और बेतेल और आई के मध्य में और आई की पश्चिम की ओर बैठे रहे; परन्तु यहोशू उस रात को लोगों के बीच टिका रहा।

§ 7:26 **११** **११** **११** **११** **११** **११** **११** **११** **११** **११** आकान के पाप और दण्ड का स्मारक \* 8:1 **१** **१** परमेश्वर यहोशू को उसकी निराशा से उबारता है यहोशू. 7:6 और उसे आज्ञा देता है कि आई नगर पर बड़ी सेना लेकर आक्रमण कर।



उस सन्दूक के इधर-उधर खड़े हुए, अर्थात् आधे लोग तो गिरिज्जीम पर्वत के, और आधे एबाल पर्वत के सामने खड़े हुए, जैसा कि यहोवा के दास मूसा ने पहले आज्ञा दी थी, कि इस्राएली प्रजा को आशीर्वाद दिए जाएँ। (22:20) 4:20)

34 उसके बाद उसने आशीष और श्राप की व्यवस्था के सारे वचन, जैसे-जैसे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वैसे-वैसे पढ़ पढ़कर सुना दिए।

35 जितनी बातों की मूसा ने आज्ञा दी थी, उनमें से कोई ऐसी बात नहीं रह गई जो यहोशू ने इस्राएल की सारी सभा, और स्त्रियों, और बाल-बच्चों, और उनके साथ रहनेवाले परदेशी लोगों के सामने भी पढ़कर न सुनाई।

## 9

22:22 22:22 22:22 22:22

1 यह सुनकर हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी, जितने राजा यरदन के इस पार पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, और लबानोन के सामने के महानगर के तट पर रहते थे,

2 वे एक मन होकर यहोशू और इस्राएलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए।

3 जब गिबोन के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरीहो और आई से क्या-क्या किया है,

4 तब उन्होंने छल किया, और राजदूतों का भेष बनाकर अपने गदहों पर पुराने बोरे, और पुराने फटे, और जोड़े हुए मदिरा के कुप्पे लादकर

5 अपने पाँवों में पुरानी पैबन्द लगी हुई जूतियाँ, और तन पर पुराने वस्त्र पहने, और अपने भोजन के लिये सूखी और फफूदी लगी हुई रोटी ले ली।

6 तब वे गिलगाल की छावनी में यहोशू के पास जाकर उससे और इस्राएली पुरुषों से कहने लगे, “हम दूर देश से आए हैं; इसलिए अब तुम हम से वाचा बाँधो।”

7 इस्राएली पुरुषों ने उन हिब्बियों से कहा, “क्या जाने तुम हमारे मध्य में ही रहते हो; फिर हम तुम से वाचा कैसे बाँधें?”

8 उन्होंने यहोशू से कहा, “हम तेरे दास हैं।” तब यहोशू ने उनसे कहा, “तुम कौन हो? और कहाँ से आए हो?”

9 उन्होंने उससे कहा, “तेरे दास बहुत दूर के देश से तेरे परमेश्वर यहोवा का नाम सुनकर आए हैं; क्योंकि

हमने यह सब सुना है, अर्थात् उसकी कीर्ति और जो कुछ उसने मिस्र में किया,

10 और जो कुछ उसने एमोरियों के दोनों राजाओं से किया जो यरदन के उस पार रहते थे, अर्थात् हेशबोन के राजा सीहोन से, और बाशान के राजा ओग से जो अशतारोत में था।

11 इसलिए हमारे यहाँ के वृद्ध लोगों ने और हमारे देश के सब निवासियों ने हम से कहा, कि मार्ग के लिये अपने साथ भोजनवस्तु लेकर उनसे मिलने को जाओ, और उनसे कहना, कि हम तुम्हारे दास हैं; इसलिए अब तुम हम से वाचा बाँधो।

12 जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस दिन तो हमने अपने-अपने घर से यह रोटी गरम और ताजी ली थी; परन्तु अब देखो, यह सूख गई है और इसमें फफूदी लग गई है।

13 फिर ये जो मदिरा के कुप्पे हमने भर लिये थे, तब तो नये थे, परन्तु देखो अब ये फट गए हैं; और हमारे ये वस्त्र और जूतियाँ बड़ी लम्बी यात्रा के कारण पुरानी हो गई हैं।”

14 तब उन पुरुषों ने 22:22 22:22 22:22 22:22\* उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया।

15 तब यहोशू ने उनसे मेल करके उनसे यह वाचा बाँधी, कि तुम को जीवित छोड़ेंगे; और मण्डली के प्रधानों ने उनसे शपथ खाई।

16 और उनके साथ वाचा बाँधने के तीन दिन के बाद उनको यह समाचार मिला; कि वे हमारे पड़ोस के रहनेवाले लोग हैं, और हमारे ही मध्य में बसे हैं।

17 तब इस्राएली कूच करके तीसरे दिन उनके नगरों को जिनके नाम गिबोन, कपीरा, बेरोत, और किर्यत्यारीम हैं पहुँच गए,

18 और इस्राएलियों ने उनको न मारा, क्योंकि मण्डली के प्रधानों ने उनके संग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई थी। तब सारी मण्डली के लोग प्रधानों के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे।

19 तब सब प्रधानों ने सारी मण्डली से कहा, “हमने उनसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई है, इसलिए अब उनको छू नहीं सकते।

20 हम उनसे यही करेंगे, कि उस शपथ के अनुसार हम उनको जीवित छोड़ देंगे, नहीं तो हमारी खाई हुई शपथ के कारण हम पर क्रोध पड़ेगा।”

21 फिर प्रधानों ने उनसे कहा, “वे जीवित छोड़े जाएँ।” अतः प्रधानों के इस वचन के अनुसार वे सारी

\* 9:14 22:22 22:22 22:22 22:22: इस्राएल के अगुओं ने गिबोनियों द्वारा परोसा भोजन खाया और उनके साथ शान्ति एवं मित्रता की संधी की उन्होंने परमेश्वर की इच्छा नहीं मानी।



14 न तो उससे पहले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिसमें यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो; क्योंकि यहोवा तो इस्राएल की ओर से लड़ता था।

15 तब यहोशू सारे इस्राएलियों समेत गिलगाल की छावनी को लौट गया।

16 वे पाँचों राजा भागकर मक्केदा के पास की गुफा में जा छिपे।

17 तब यहोशू को यह समाचार मिला, “पाँचों राजा मक्केदा के पास की गुफा में छिपे हुए हमें मिले हैं।”

18 यहोशू ने कहा, “गुफा के मुँह पर बड़े-बड़े पत्थर लुढ़काकर उनकी देख-भाल के लिये मनुष्यों को उसके पास बैठा दो;

19 परन्तु तुम मत ठहरो, अपने शत्रुओं का पीछा करके उनमें से जो-जो पिछड़ गए हैं उनको मार डालो, उन्हें अपने-अपने नगर में प्रवेश करने का अवसर न दो; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया है।”

20 जब यहोशू और इस्राएली उनका संहार करके उन्हें नाश कर चुके, और उनमें से जो बच गए वे अपने-अपने गढ़वाले नगर में घुस गए,

21 तब सब लोग मक्केदा की छावनी को यहोशू के पास कुशल क्षेम से लौट आए; और इस्राएलियों के विरुद्ध किसी ने जीभ तक न हिलाई।

22 तब यहोशू ने आज्ञा दी, “गुफा का मुँह खोलकर उन पाँचों राजाओं को मेरे पास निकाल ले आओ।”

23 उन्होंने ऐसा ही किया, और यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और एग्लोन के उन पाँचों राजाओं को गुफा में से उसके पास निकाल ले आए।

24 जब वे उन राजाओं को यहोशू के पास निकाल ले आए, तब यहोशू ने इस्राएल के सब पुरुषों को बुलाकर अपने साथ चलनेवाले योद्धाओं के प्रधानों से कहा, “निकट आकर अपने-अपने पाँव इन राजाओं की गर्दनो पर रखो” और उन्होंने निकट जाकर अपने-अपने पाँव उनकी गर्दनो पर रखे।

25 तब यहोशू ने उनसे कहा, “डरो मत, और न तुम्हारा मन कच्चा हो; हियाव बाँधकर दृढ़ हो; क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से जिनसे तुम लड़नेवाले हो ऐसा ही करेगा।”

26 इसके बाद यहोशू ने उनको मरवा डाला, और पाँच वृक्षों पर लटका दिया। और वे साँझ तक उन वृक्षों पर लटके रहे।

27 सूर्य डूबते-डूबते यहोशू से आज्ञा पाकर लोगों ने उन्हें उन वृक्षों पर से उतार के उसी गुफा में जहाँ वे छिप

गए थे डाल दिया, और उस गुफा के मुँह पर बड़े-बड़े पत्थर रख दिए, वे आज तक वहीं रखे हुए हैं।

28 उसी दिन यहोशू ने मक्केदा को ले लिया, और उसको तलवार से मारा, और उसके राजा का सत्यानाश किया; और जितने प्राणी उसमें थे उन सभी में से किसी को जीवित न छोड़ा; और जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था वैसा ही मक्केदा के राजा से भी किया।

29 तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत मक्केदा से चलकर लिब्ना को गया, और लिब्ना से लड़ा;

30 और यहोवा ने उसको भी राजा समेत इस्राएलियों के हाथ में कर दिया; और यहोशू ने उसको और उसमें के सब प्राणियों को तलवार से मारा; और उसमें से किसी को भी जीवित न छोड़ा; और उसके राजा से वैसा ही किया जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था।

31 फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लिब्ना से चलकर लाकीश को गया, और उसके विरुद्ध छावनी डालकर लड़ा;

32 और यहोवा ने लाकीश को इस्राएल के हाथ में कर दिया, और दूसरे दिन उसने उसको जीत लिया; और जैसा उसने लिब्ना के सब प्राणियों को तलवार से मारा था वैसा ही उसने लाकीश से भी किया।

33 तब गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने को चढ़ आया; और यहोशू ने प्रजा समेत उसको भी ऐसा मारा कि उसके लिये किसी को जीवित न छोड़ा।

34 फिर यहोशू ने सब इस्राएलियों समेत लाकीश से चलकर एग्लोन को गया; और उसके विरुद्ध छावनी डालकर युद्ध करने लगा;

35 और उसी दिन उन्होंने उसको ले लिया, और उसको तलवार से मारा; और उसी दिन जैसा उसने लाकीश के सब प्राणियों का सत्यानाश कर डाला था वैसा ही उसने एग्लोन से भी किया।

36 फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत एग्लोन से चलकर हेब्रोन को गया, और उससे लड़ने लगा;

37 और उन्होंने उसे ले लिया, और उसको और उसके राजा और सब गाँवों को और उनमें के सब प्राणियों को तलवार से मारा; जैसा यहोशू ने एग्लोन से किया था वैसा ही उसने हेब्रोन में भी किसी को जीवित न छोड़ा; उसने उसको और उसमें के सब प्राणियों का सत्यानाश कर डाला।

38 तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत घूमकर दबीर को गया, और उससे लड़ने लगा;

39 और राजा समेत उसे और उसके सब गाँवों को ले लिया; और उन्होंने उनको तलवार से घात किया, और जितने प्राणी उनमें थे सब का सत्यानाश कर डाला; किसी को जीवित न छोड़ा, जैसा यहोशू ने हेब्रोन और



20 क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी दया न करे; वरन् सत्यानाश कर डालें, इस कारण उसने उनके मन ऐसे कठोर कर दिए, कि उन्होंने इस्राएलियों का सामना करके उनसे युद्ध किया।

21 उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन् यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियों को नाश किया; यहोशू ने नगरों समेत उनका सत्यानाश कर डाला।

22 इस्राएलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया; केवल गाज़ा, गत, और अशदोद में कोई-कोई रह गए।

23 जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया; और उसे इस्राएल के गोत्रों और कुलों के अनुसार बाँट करके उन्हें दे दिया। और देश को लड़ाई से शान्ति मिली।

## 12

यहोशू 12:1-12

1 यरदन पार सूर्योदय की ओर, अर्थात् अर्नोन घाटी से लेकर हेर्मोन पर्वत तक के देश, और सारे पूर्वी अराबा के जिन राजाओं को इस्राएलियों ने मारकर उनके देश को अपने अधिकार में कर लिया था वे ये हैं;

2 एमोरियों का हेशबोनवासी राजा सीहोन, जो अर्नोन घाटी के किनारे के अरोएर से लेकर, और उसी घाटी के बीच के नगर को छोड़कर यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियों की सीमा है, आधे गिलाद पर,

3 और किन्नेरेत नामक ताल से लेकर बेत्यशीमोत से होकर अराबा के ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, पूर्व की ओर के अराबा, और दक्षिण की ओर पिसगा की ढलान के नीचे-नीचे के देश पर प्रभुता रखता था।

4 फिर बचे हुए रपाइयों में से बाशान के राजा ओग का देश था, जो अशतारोत और एद्रेई में रहा करता था,

5 और हेर्मोन पर्वत सल्का, और गशूरियों, और माकियों की सीमा तक कुल बाशान में, और हेशबोन के राजा सीहोन की सीमा तक आधे गिलाद में भी प्रभुता करता था।

6 इस्राएलियों और यहोवा के दास मूसा ने इनको मार लिया; और यहोवा के दास मूसा ने उनका देश रूबेनियों और गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को दे दिया।

यहोशू 12:13-14

\* 12:21 यहोशू 12:21: मनश्शे को दिया गया इस्साकार के क्षेत्र में लेवियों का एक नगर (यहोशू.21:25) † 12:22 यहोशू 12:22: जबूलन के क्षेत्र में एक लेवी नगर \* 13:1 यहोशू 13:1-2: यहोशू को सम्पूर्ण प्रतिज्ञा के देश के 12 गोत्रों में बंटवारे से रोका गया, इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर यहोशू के अधूरे कार्य को कनानियों का सफाया अपने समय में पूरा कर देगा। (दखें यहोशू. 11:23) † 13:2 यहोशू 13:2: दक्षिण पलिशतियों के क्षेत्र

7 यरदन के पश्चिम की ओर, लबानोन के मैदान में के बालगाद से लेकर सेईर की चढ़ाई के हालाक पहाड़ तक के देश के जिन राजाओं को यहोशू और इस्राएलियों ने मारकर उनका देश इस्राएलियों के गोत्रों और कुलों के अनुसार भाग करके दे दिया था वे ये हैं

8 हित्ती, और एमोरी, और कनानी, और परिज्जी, और हिब्बी, और यबूसी, जो पहाड़ी देश में, और नीचे के देश में, और अराबा में, और ढालू देश में और जंगल में, और दक्षिणी देश में रहते थे।

9 एक, यरीहो का राजा; एक, बेतेल के पास के आई का राजा;

10 एक, यरूशलेम का राजा; एक, हेब्रोन का राजा;

11 एक, यर्मूत का राजा; एक, लाकीश का राजा;

12 एक, एग्लोन का राजा; एक, गेजेर का राजा;

13 एक, दबीर का राजा; एक, गेदेर का राजा;

14 एक, होर्मा का राजा; एक, अराद का राजा;

15 एक, लिब्ना का राजा; एक, अदुल्लाम का राजा;

16 एक, मक्केदा का राजा; एक, बेतेल का राजा;

17 एक, तप्पूह का राजा; एक, हेपेर का राजा;

18 एक, अपेक का राजा; एक, लश्शारोन का राजा;

19 एक, मादोन का राजा; एक, हासोर का राजा;

20 एक, शिम्रोन्मरोन का राजा; एक, अक्षाप का राजा;

21 एक, यहोशू 12:21 का राजा; एक, मगिदो का राजा;

22 एक, केदेश का राजा; एक, कर्मेल में यहोशू 12:21 का राजा;

23 एक, दोर नामक ऊँचे देश के दोर का राजा; एक, गिलगाल के गोयीम का राजा;

24 और एक, तिसर्ता का राजा; इस प्रकार सब राजा इकतीस हुए।

## 13

यहोशू 13:1-2

1 यहोशू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया था; और यहोवा ने उससे कहा, "तू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया है, और यहोशू 13:1-2, जो इस्राएल के अधिकार में अभी तक नहीं आए।

2 ये देश रह गए हैं, अर्थात् पलिशतियों का सारा प्रान्त, और सारे यहोशू 13:2

3 (मिस्र के आगे शीहोर से लेकर उत्तर की ओर एक्रोन की सीमा तक जो कनानियों का भाग गिना जाता है; और पलिशतियों के पाँचों सरदार, अर्थात् गाज़ा,



अशदोद, अशकलोन, गत, और एक्रोन के लोग), और दक्षिणी ओर अब्बी भी,

4 फिर अपेक और एमोरियों की सीमा तक कनानियों का सारा देश और सीदोनियों का मारा नामक देश,

5 फिर ~~22222222 22 2222~~‡, और सूर्योदय की ओर हेर्मोन पर्वत के नीचे के बालगाद से लेकर हमात की घाटी तक सारा लबानोन,

6 फिर लबानोन से लेकर मिस्रपोतमैम तक सीदोनियों के पहाड़ी देश के निवासी। इनको मैं इस्राएलियों के सामने से निकाल दूँगा; इतना हो कि तू मेरी आज्ञा के अनुसार चिट्टी डाल डालकर उनका देश इस्राएल को बाँट दे।

7 इसलिए तू अब इस देश को नौ गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र को उनका भाग होने के लिये बाँट दे।”

8 रूबेनियों और गादियों को तो वह भाग मिल चुका था, जिसे मूसा ने उन्हें यरदन के पूर्व की ओर दिया था, क्योंकि यहोवा के दास मूसा ने उन्हीं को दिया था,

9 अर्थात् अर्नोन नामक घाटी के किनारे के अरोएर से लेकर, और उसी घाटी के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन तक मेदबा के पास का सारा चौरस देश;

10 और अम्मोनियों की सीमा तक हेशबोन में विराजनेवाले एमोरियों के राजा सीहोन के सारे नगर;

11 और गिलाद देश, और गशूरियों और माकावासियों की सीमा, और सारा हेर्मोन पर्वत, और सल्का तक सारा बाशान,

12 फिर अशतारोत और एद्रेई में विराजनेवाले उस ओग का सारा राज्य जो रपाइयों में से अकेला बच गया था; क्योंकि इन्हीं को मूसा ने मारकर उनकी प्रजा को उस देश से निकाल दिया था।

13 परन्तु इस्राएलियों ने गशूरियों और माकियों को उनके देश से न निकाला; इसलिए गशूरी और माकी इस्राएलियों के मध्य में आज तक रहते हैं।

14 और लेवी के गोत्रियों को उसने कोई भाग न दिया; क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उसी के हव्य उनके लिये भाग ठहरे हैं।

15 मूसा ने रूबेन के गोत्र को उनके कुलों के अनुसार दिया,

16 अर्थात् अर्नोन नामक घाटी के किनारे के अरोएर से लेकर और उसी घाटी के बीच के नगर को छोड़कर मेदबा के पास का सारा चौरस देश;

17 फिर चौरस देश में का हेशबोन और उसके सब गाँव; फिर दीबोन, बामोतबाल, बेतबाल्मोन,

18 यहस, कदेमोत, मेपात,

19 किर्यातैम, सिबमा, और तराई में के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेथश्शहर,

20 बेतपोर, पिसगा की ढलान और बेत्यशीमोत,

21 अर्थात् चौरस देश में बसे हुए हेशबोन में विराजनेवाले एमोरियों के उस राजा सीहोन के राज्य के सारे नगर जिन्हें मूसा ने मार लिया था। मूसा ने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नामक मिद्यान के प्रधानों को भी मार डाला था जो सीहोन के ठहराए हुए हाकिम और उसी देश के निवासी थे।

22 और इस्राएलियों ने उनके और मारे हुआओं के साथ बोर के पुत्र भावी कहनेवाले बिलाम को भी तलवार से मार डाला।

23 और रूबेनियों की सीमा यरदन का किनारा ठहरा। रूबेनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा।

24 फिर मूसा ने गाद के गोत्रियों को भी कुलों के अनुसार उनका निज भाग करके बाँट दिया।

25 तब यह ठहरा, अर्थात् याजेर आदि गिलाद के सारे नगर, और रब्बाह के सामने के अरोएर तक अम्मोनियों का आधा देश,

26 और हेशबोन से रामत-मिस्पे और बतोनीम् तक, और महनैम से दबीर की सीमा तक,

27 और तराई में बेतहारम, बेतनिम्ना, सुक्कोत, और सापोन, और हेशबोन के राजा सीहोन के राज्य के बचे हुए भाग, और किन्नेरेत नामक ताल के सिरे तक, यरदन के पूर्व की ओर का वह देश जिसकी सीमा यरदन है।

28 गादियों का भाग उनके कुलों के अनुसार नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा।

29 फिर मूसा ने मनश्शे के आधे गोत्रियों को भी उनका निज भागकर दिया; वह मनश्शेइयों के आधे गोत्र का निज भाग उनके कुलों के अनुसार ठहरा।

30 वह यह है, अर्थात् महनैम से लेकर बाशान के राजा ओग के राज्य का सब देश, और बाशान में बसी हुई याईर की साठों बस्तियाँ,

31 और गिलाद का आधा भाग, और अशतारोत, और एद्रेई, जो बाशान में ओग के राज्य के नगर थे, ये मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश का, अर्थात् माकीर के आधे वंश का निज भाग कुलों के अनुसार ठहरे।

32 जो भाग मूसा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर बाँट दिए वे ये ही हैं।

33 परन्तु लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया; इस्राएल का परमेश्वर यहोवा ही अपने वचन के अनुसार उनका भाग ठहरा।

‡ 13:5 ~~22222222 22 2222~~: गबाल के लोग (बिरोनुत के उत्तर में 22 मील येबेल:) वे पत्थर तराशनेवाले थे (1 राजा 5:18)

## 14

यहोशू 14:1-19

1 जो-जो भाग इस्राएलियों ने कनान देश में पाए, उन्हें एलीआजर याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों ने उनको दिया वे ये हैं। (यहोशू 13:19)

2 जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढे नौ गोत्रों के लिये दी थी, उसके अनुसार उनके भाग चिट्टी डाल डालकर दिए गए।

3 मूसा ने तो ढाई गोत्रों के भाग यरदन पार दिए थे; परन्तु लेवियों को उसने उनके बीच कोई भाग न दिया था।

4 यूसुफ के वंश के तो दो गोत्र हो गए थे, अर्थात् मनशे और एप्रेम; और उस देश में लेवियों को कुछ भाग न दिया गया, केवल रहने के नगर, और पशु आदि धन रखने को चराइयाँ उनको मिलीं।

5 जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसके अनुसार इस्राएलियों ने किया; और उन्होंने देश को बाँट लिया।

6 तब यहोशू के पास गिलगाल में आए; और कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब ने उससे कहा, “तू जानता होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा से मेरे और तेरे विषय में क्या कहा था।

7 जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश का भेद लेने के लिये कादेशबर्ने से भेजा था तब मैं चालीस वर्ष का था; और मैं सच्चे मन से उसके पास सन्देश ले आया।

8 और मेरे साथी जो मेरे संग गए थे उन्होंने तो प्रजा के लोगों का मन निराश कर दिया, परन्तु मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी रीति से बात मानी।

9 तब उस दिन यहोशू मुझसे कहा, ‘तूने पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा की बातों का अनुकरण किया है, इस कारण निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपने पाँव धर आया है वह सदा के लिये तेरा और तेरे वंश का भाग होगी।’

10 और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब से पैतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिनमें इस्राएली जंगल में घूमते फिरते रहे; उनमें यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है; और अब मैं पचासी वर्ष का हूँ।

11 जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है; युद्ध करने और भीतर बाहर

\* 14:6 यहूदा के गोत्र के अगुए यहोशू के पास आए। कालेब उनके साथ था इससे पूर्व कि गोत्रों में भूमि का बंटवारा किया जाए कालेब मूसा की प्रतिज्ञा के अनुसार अपना भाग सुरक्षित करना चाहता था। † 14:9 परमेश्वर ने शपथ खाई और उसकी प्रतिज्ञा शपथ से स्थापित की गई थी जो मूसा द्वारा व्यक्त की गई थी। \* 15:6 यह पत्थर पर्वत की ढलान पर खड़ा किया गया था। यह पर्वत यरदन की तराई के पश्चिम में है।

आने-जाने के लिये जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है।

12 इसलिए अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तूने तो उस दिन सुना होगा कि उसमें अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े-बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूँ।”

13 तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया; और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भागकर दिया।

14 इस कारण हेब्रोन कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग आज तक बना है, क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का पूरी रीति से अनुगामी था।

15 पहले हेब्रोन का नाम किर्यतअर्बा था; वह अर्बा अनाकियों में सबसे बड़ा पुरुष था। और उस देश को लड़ाई से शान्ति मिली।

## 15

यहोशू 15:1-47

1 यहूदियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार चिट्टी डालने से एदोम की सीमा तक, और दक्षिण की ओर सीन के जंगल तक जो दक्षिणी सीमा पर है ठहरा।

2 उनके भाग का दक्षिणी सीमा खारे ताल के उस सिरेवाले कोल से आरम्भ हुई जो दक्षिण की ओर बढ़ी है;

3 और वह अक्रब्बीम नामक चढ़ाई के दक्षिणी ओर से निकलकर सीन होते हुए कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर को चढ़ गयी, फिर हेस्रोन के पास हो अद्दार को चढ़कर कर्काआ की ओर मुड़ गयी,

4 वहाँ से अस्मोन होते हुए वह मिस्र के नाले पर निकली, और उस सीमा का अन्त समुद्र हुआ। तुम्हारी दक्षिणी सीमा यही होगी।

5 फिर पूर्वी सीमा यरदन के मुहाने तक खारा ताल ही ठहरी, और उत्तर दिशा की सीमा यरदन के मुहाने के पास के ताल के कोल से आरम्भ करके,

6 बेथोग्ला को चढ़ते हुए बेतराबा की उत्तर की ओर होकर रुबेनी तक चढ़ गया;

7 और वही सीमा आकोर नामक तराई से दबीर की ओर चढ़ गया, और उत्तर होते हुए गिलगाल की ओर झुकी जो तराई के दक्षिणी ओर की अदुम्मीम की चढ़ाई

के सामने है; वहाँ से वह एनशेमेश नामक सोते के पास पहुँचकर एनरोगेल पर निकला;

8 फिर वही सीमा हिन्नोम के पुत्र की तराई से होकर यबूस (जो यरूशलेम कहलाता है) उसकी दक्षिण की ओर से बढ़ते हुए उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, जो पश्चिम की ओर हिन्नोम की तराई के सामने और रपाईम की तराई के उत्तरी सिरे पर है;

9 फिर वही सीमा उस पहाड़ की चोटी से नेप्तोह नामक सोते को चला गया, और एप्रोन पहाड़ के नगरों पर निकला; फिर वहाँ से बाला को (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है) पहुँचा;

10 फिर वह बाला से पश्चिम की ओर मुड़कर सेईर पहाड़ तक पहुँचा, और यारीम पहाड़ (जो कसालोन भी कहलाता है) उसके उत्तरी ओर से होकर बेतशेमेश को उतर गया, और वहाँ से तिम्नाह पर निकला;

11 वहाँ से वह सीमा एक्रोन की उत्तरी ओर के पास होते हुए शिक्करोन गया, और बाला पहाड़ होकर यब्नेल पर निकला; और उस सीमा का अन्त समुद्र का तट हुआ।

12 और पश्चिम की सीमा महासमुद्र का तट ठहरा। यहूदियों को जो भाग उनके कुलों के अनुसार मिला उसकी चारों ओर की सीमा यही हुई।

13 और यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसने यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहूदियों के बीच भाग दिया, अर्थात् किर्यतअर्बा जो हेब्रोन भी कहलाता है (वह अर्बा अनाक का पिता था)।

14 और कालेब ने वहाँ से शेशै, अहीमन, और तल्मै नामक, अनाक के तीनों पुत्रों को निकाल दिया।

15 फिर वहाँ से वह दबीर के निवासियों पर चढ़ गया; पूर्वकाल में तो दबीर का नाम किर्यत्सेपेर था।

16 और कालेब ने कहा, “जो किर्यत्सेपेर को मारकर ले ले उससे मैं अपनी बेटी अकसा को ब्याह दूँगा।”

17 तब कालेब के भाई ओत्नीएल कनजी ने उसे ले लिया; और उसने उसे अपनी बेटी अकसा को ब्याह दिया।

18 जब वह उसके पास आई, तब उसने उसको पिता से [?] माँगने को उभारा, फिर वह अपने गदहे पर से उतर पड़ी, और कालेब ने उससे पूछा, “तू क्या चाहती है?”

19 वह बोली, “मुझे आशीर्वाद दे; तूने मुझे दक्षिण देश में की कुछ भूमि तो दी है, मुझे जल के सोते भी दे।” तब उसने ऊपर के सोते, नीचे के सोते, दोनों उसे दिए।

20 यहूदियों के गोत्र का भाग तो उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा।

21 यहूदियों के गोत्र के किनारे-वाले नगर दक्षिण देश में एदोम की सीमा की ओर ये हैं, अर्थात् कबसेल, एदेर, यागूर,

22 कीना, दीमोना, अदादा,

23 केदेश, हासोर, यित्नान,

24 जीप, तेलेम, बालोत,

25 हासोर्हदत्ता, करिय्योथेसोन (जो हासोर भी कहलाता है),

26 और अमाम, शेमा, मोलादा,

27 हसर्गद्दा, हेशमोन, बेत्पेलेत,

28 हसर्शूआल, बेशेबा, बिज्योत्या,

29 बाला, इय्यीम, एसेम,

30 एलतोलद, कसील, होर्मा,

31 सिकलग, मदमन्ना, सनसन्ना,

32 लबाओत, शिल्हीम, ऐन, और रिम्मोन; ये सब नगर उनतीस हैं, और इनके गाँव भी हैं।

33 तराई में ये हैं अर्थात् एश्ताओल, सोरा, अश्ना,

34 जानोह, एनगन्नीम, तप्पूह, एनाम,

35 यर्मूत, अदुल्लाम, सोको, अजेका,

36 शारैम, अदीतैम, गदेरा, और गदेरोतैम; ये सब चौदह नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं।

37 फिर सनान, हदाशा, मिगदलगद,

38 दिलान, मिस्पे, योक्तेल,

39 लाकीश, बोस्कत, एग्लोन,

40 कब्बोन, लहमास, कितलीश,

41 गदेरोत, बेतदागोन, नामाह, और मक्केदा; ये सोलह नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं।

42 फिर लिब्ना, एतेर, आशान,

43 इप्ताह, अश्ना, नसीब,

44 कीला, अकजीब और मारेशा; ये नौ नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं।

45 फिर नगरों और गाँवों समेत एक्रोन,

46 और एक्रोन से लेकर समुद्र तक, अपने-अपने गाँवों समेत जितने नगर अश्दोद की ओर हैं।

47 फिर अपने-अपने नगरों और गाँवों समेत अश्दोद और गाज़ा, वरन् मिस्त्र के नाले तक और महासमुद्र के तट तक जितने नगर हैं।

48 पहाड़ी देश में ये हैं अर्थात् शामीर, यत्तीर, सोको,

49 दन्ना, किर्यत्सन्ना (जो दबीर भी कहलाता है),

50 अनाब, एश्तमो, आनीम,

51 गोशेन, होलोन और गीलो; ये ग्यारह नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं।

† 15:18 [?] [?] [?] [?]: अकसा द्वारा एक परिचित खेत माँगा और कालेब ने उसे आशीष, अर्थात् सद्भावना स्वरूप दे दिया।

- 52 फिर अराब, दूमा, एशान,  
 53 यानीम, बेत्तप्पूह, अपेका,  
 54 हुमता, किर्यतअर्बा (जो हेब्रोन भी कहलाता है, और सीओर;) ये नौ नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं।  
 55 फिर माओन, कर्मेल, जीप, युत्ता,  
 56 यिज्जेल, योकदाम, जानोह,  
 57 कैन, गिबा, और तिम्नाह; ये दस नगर हैं और इनके गाँव भी हैं।  
 58 फिर हलहूल, बेतसूर, गदोर,  
 59 मरात, बेतनोत और एलतकोन; ये छः नगर हैं और इनके गाँव भी हैं।  
 60 फिर किर्यतबाल (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है) और रब्बाह; ये दो नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं।  
 61 जंगल में ये नगर हैं अर्थात् बेतराबा, मिद्दीन, सकाका;  
 62 निबशान, नमक का नगर और एनगदी, ये छः नगर हैं और इनके गाँव भी हैं।  
 63 यरूशलेम के निवासी यबूसियों को यहूदी न निकाल सके; इसलिए आज के दिन तक यबूसी यहूदियों के संग यरूशलेम में रहते हैं।

## 16

यहोशू 15:52-63

- 1 फिर यूसुफ की सन्तान का भाग चिट्टी डालने से ठहराया गया, उनकी सीमा यरीहो के पास की यरदन नदी से, अर्थात् पूर्व की ओर यरीहो के जल से आरम्भ होकर उस पहाड़ी देश से होते हुए, जो जंगल में हैं, बेतेल को पहुँचा;  
 2 वहाँ से वह लूज तक पहुँचा, और एरेकियों की सीमा से होते हुए अतारोत पर जा निकला;  
 3 और पश्चिम की ओर यपलेतियों की सीमा से उतरकर फिर नीचेवाले बेथोरोन की सीमा से होकर गेजेर को पहुँचा, और समुद्र पर निकला।  
 4 तब मनश्शे और एप्रैम नामक यूसुफ के दोनों पुत्रों की सन्तान ने अपना-अपना भाग लिया।  
 5 एप्रैमियों की सीमा उनके कुलों के अनुसार यह ठहरी; अर्थात् उनके भाग की सीमा पूर्व से आरम्भ होकर अत्रोतदार से होते हुए ऊपरवाले बेथोरोन तक पहुँचा;  
 6 और उत्तरी सीमा पश्चिम की ओर के मिकमतात से आरम्भ होकर पूर्व की ओर मुड़कर तानतशीलो को पहुँचा, और उसके पास से होते हुए यानोह तक पहुँचा;  
 7 फिर यानोह से वह अतारोत और नारा को उतरती हुई यरीहो के पास होकर यरदन पर निकली।

\* 17:1 यहोशू 17:1: पहलौटा, उसे यरदन के पर्व का भूखण्ड ही नहीं, यरदन के पश्चिम में अन्य गोत्रों के साथ भी भूभाग मिलना था।

8 फिर वही सीमा तप्पूह से निकलकर, और पश्चिम की ओर जाकर, काना की नदी तक होकर समुद्र पर निकली। एप्रैमियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा।

9 और मनश्शेइयों के भाग के बीच भी कई एक नगर अपने-अपने गाँवों समेत एप्रैमियों के लिये अलग किए गए।

10 परन्तु जो कनानी गेजेर में बसे थे उनको एप्रैमियों ने वहाँ से नहीं निकाला; इसलिए वे कनानी उनके बीच आज के दिन तक बसे हैं, और बेगारी में दास के समान काम करते हैं।

## 17

यहोशू 17:1-13

1 फिर यूसुफ के जेठे यहोशू\* के गोत्र का भाग चिट्टी डालने से यह ठहरा। मनश्शे का जेठा पुत्र गिलाद का पिता माकीर योद्धा था, इस कारण उसके वंश को गिलाद और बाशान मिला।

2 इसलिए यह भाग दूसरे मनश्शेइयों के लिये उनके कुलों के अनुसार ठहरा, अर्थात् अबीएजेर, हेलेक, अस्त्रीएल, शेकेम, हेपेर, और शमीदा; जो अपने-अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश में के पुरुष थे, उनके अलग-अलग वंशों के लिये ठहरा।

3 परन्तु हेपेर जो गिलाद का पुत्र, माकीर का पोता, और मनश्शे का परपोता था, उसके पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, बेटियाँ ही हुईं; और उनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिसा हैं।

4 तब वे एलीआजर याजक, नून के पुत्र यहोशू, और प्रधानों के पास जाकर कहने लगीं, यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, कि वह हमको हमारे भाइयों के बीच भाग दे। तो यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें उनके चाचाओं के बीच भाग दिया।

5 तब मनश्शे को, यरदन पार गिलाद देश और बाशान को छोड़, दस भाग मिले;

6 क्योंकि मनश्शेइयों के बीच में मनश्शेई स्त्रियों को भी भाग मिला। और दूसरे मनश्शेइयों को गिलाद देश मिला।

7 और मनश्शे की सीमा आशेर से लेकर मिकमतात तक पहुँची, जो शेकेम के सामने है; फिर वह दक्षिण की ओर बढ़कर एनतप्पूह के निवासियों तक पहुँची।

8 तप्पूह की भूमि तो मनश्शे को मिली, परन्तु तप्पूह नगर जो मनश्शे की सीमा पर बसा है वह एप्रैमियों का ठहरा।

9 फिर वहाँ से वह सीमा काना की नदी तक उतरकर उसके दक्षिण की ओर तक पहुँच गई; ये नगर यद्यपि मनश्शे के नगरों के बीच में थे तो भी एप्रैम के ठहरे; और मनश्शे की सीमा उस नदी के उत्तर की ओर से जाकर समुद्र पर निकली;

10 दक्षिण की ओर का देश तो एप्रैम को और उत्तर की ओर का मनश्शे को मिला, और उसकी सीमा समुद्र ठहरी; और वे उत्तर की ओर आशेर से और पूर्व की ओर इस्साकार से जा मिलीं।

11 और मनश्शे को, इस्साकार और आशेर अपने-अपने नगरों समेत बेतशान, यिबलाम, और अपने नगरों समेत दोर के निवासी, और अपने नगरों समेत एनदोर के निवासी, और अपने नगरों समेत तानाक की निवासी, और अपने नगरों समेत मगिदो के निवासी, ये तीनों जो ऊँचे स्थानों पर बसे हैं मिले।

12 परन्तु मनश्शेई उन नगरों के निवासियों को उनमें से नहीं निकाल सके; इसलिए कनानी उस देश में बसे रहे।

13 तो भी जब इस्राएली सामर्थी हो गए, तब कनानियों से बेगारी तो कराने लगे, परन्तु उनको पूरी रीति से निकाल बाहर न किया।

14 यूसुफ की सन्तान यहोशू से कहने लगी, “हम तो गिनती में बहुत हैं, क्योंकि अब तक यहोवा हमें आशीष ही देता आया है, फिर तूने हमारे भाग के लिये चिट्ठी डालकर क्यों एक ही अंश दिया है?”

15 यहोशू ने उनसे कहा, “यदि तुम गिनती में बहुत हो, और एप्रैम का पहाड़ी देश तुम्हारे लिये छोटा हो, तो परिज्जियों और रपाइयों का देश जो जंगल है उसमें जाकर पेड़ों को काट डालो।”

16 यूसुफ की सन्तान ने कहा, “वह पहाड़ी देश हमारे लिये छोटा है; और बेतशान और उसके नगरों में रहनेवाले, और यिज्जेल की तराई में रहनेवाले, जितने कनानी नीचे के देश में रहते हैं, उन सभी के पास लोहे के रथ हैं।”

17 फिर यहोशू ने, क्या एप्रैमी क्या मनश्शेई, अर्थात् यूसुफ के सारे घराने से कहा, “हाँ तुम लोग तो गिनती में बहुत हो, और तुम्हारी सामर्थ्य भी बड़ी है, इसलिए

18 पहाड़ी देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि वह जंगल तो है, परन्तु उसके पेड़ काट डालो, तब उसके आस-पास का देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि चाहे कनानी सामर्थी हों, और उनके पास लोहे के रथ भी हों,

तो भी तुम उन्हें वहाँ से निकाल सकोगे।”

## 18

१११ १११ ११ ११११११

1 फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली ने १११११\* में इकट्ठी होकर वहाँ मिलापवाले तम्बू को खड़ा किया; क्योंकि देश उनके वश में आ गया था। (१११११११. 7:45)

2 और इस्राएलियों में से सात गोत्रों के लोग अपना-अपना भाग बिना पाये रह गए थे।

3 तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, “जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, उसे अपने अधिकार में कर लेने में तुम कब तक ढिलाई करते रहोगे?”

4 अब प्रति गोत्र के पीछे तीन मनुष्य ठहरा लो, और मैं उन्हें इसलिए भेजूँगा कि वे चलकर देश में घूमें फिरें, और अपने-अपने गोत्र के भाग के प्रयोजन के अनुसार उसका हाल लिख लिखकर मेरे पास लौट आएँ।

5 और वे देश के सात भाग लिखें, यहूदी तो दक्षिण की ओर अपने भाग में, और यूसुफ के घराने के लोग उत्तर की ओर अपने भाग में रहें।

6 और तुम देश के सात भाग लिखकर मेरे पास ले आओ; और मैं यहाँ तुम्हारे लिये अपने परमेश्वर यहोवा के सामने चिट्ठी डालूँगा।

7 और लेवियों का तुम्हारे मध्य में कोई भाग न होगा, क्योंकि यहोवा का दिया हुआ याजकपद ही उनका भाग है; और गाद, रूबेन, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग यरदन के पूर्व की ओर यहोवा के दास मूसा का दिया हुआ अपना-अपना भाग पा चुके हैं।”

8 तब वे पुरुष उठकर चल दिए; और जो उस देश का हाल लिखने को चले उन्हें यहोशू ने यह आज्ञा दी, “जाकर देश में घूमो फिरो, और उसका हाल लिखकर मेरे पास लौट आओ; और मैं यहाँ शीलो में यहोवा के सामने तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूँगा।”

9 तब वे पुरुष चल दिए, और उस देश में घूमें, और उसके नगरों के सात भाग करके उनका हाल पुस्तक में लिखकर शीलो की छावनी में यहोशू के पास आए।

10 तब यहोशू ने शीलो में यहोवा के सामने उनके लिये चिट्ठियाँ डालीं; और वहीं यहोशू ने इस्राएलियों को उनके भागों के अनुसार देश बाँट दिया।

† 17:17 १११ ११ ११११ ११ ११ १११ १ १११११११: अर्थात् कनानियों को निकालने के बाद तुम को तुम्हारे सामने का दो गुणा भाग मिलेगा।

\* 18:1 ११११: मिलाप का तम्बू और उसकी पवित्र वस्तुएँ गिलगाल में यरदन के पास के एक सुरक्षित स्थान से हटाकर केन्द्रीय स्थान शीलो में लगाया गया।

11 बिन्यामीनियों के गोत्र की चिट्ठी उनके कुलों के अनुसार निकली, और उनका भाग यहूदियों और यूसुफियों के बीच में पड़ा।

12 और उनकी उत्तरी सीमा यरदन से आरम्भ हुई, और यरीहो की उत्तरी ओर से बढ़ते हुए पश्चिम की ओर पहाड़ी देश में होकर बेतावेन के जंगल में निकली;

13 वहाँ से वह लूज को पहुँची (जो बेतेल भी कहलाता है), और लूज की दक्षिणी ओर से होते हुए निचले बेथोरोन के दक्षिणी ओर के पहाड़ के पास हो अत्रोटदार को उतर गई।

14 फिर पश्चिमी सीमा मुड़कर बेथोरोन के सामने और उसकी दक्षिण ओर के पहाड़ से होते हुए किर्यतबाल नामक यहूदियों के एक नगर पर निकली (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है); पश्चिम की सीमा यही ठहरी।

15 फिर दक्षिण की ओर की सीमा पश्चिम से आरम्भ होकर किर्यत्यारीम के सिरे से निकलकर नेप्तोह के सोते पर पहुँची;

16 और उस पहाड़ के सिरे पर उतरी, जो हिन्नोम के पुत्र की तराई के सामने और रपाईम नामक तराई के उत्तरी ओर है; वहाँ से वह हिन्नोम की तराई में, अर्थात् यबूस के दक्षिणी ओर होकर एनरोगेल को उतरी;

17 वहाँ से वह उत्तर की ओर मुड़कर एनशेमेश को निकलकर उस गलीलोट की ओर गई, जो अदुम्मीम की चढ़ाई के सामने है, फिर वहाँ से वह रूबेन के पुत्र बोहन के पत्थर तक उतर गई;

18 वहाँ से वह उत्तर की ओर जाकर अराबा के सामने के पहाड़ की ओर से होते हुए अराबा को उतरी;

19 वहाँ से वह सीमा बेथोग्ला की उत्तरी ओर से जाकर खारे ताल की उत्तर ओर के कोल में यरदन के मुहाने पर निकली; दक्षिण की सीमा यही ठहरी।

20 और पूर्व की ओर की सीमा यरदन ही ठहरी। बिन्यामीनियों का भाग, चारों ओर की सीमाओं सहित, उनके कुलों के अनुसार, यही ठहरा।

21 बिन्यामीनियों के गोत्र को उनके कुलों के अनुसार ये नगर मिले, अर्थात् यरीहो, बेथोग्ला, एमेक्कसीस,

22 बेतराबा, समारैम, बेतेल,

23 अब्बीम, पारा, ओप्रा,

24 कपरम्मोनी, ओफनी और गेबा; ये बारह नगर और इनके गाँव मिले।

25 फिर गिबोन, <sup>†</sup> बेरोत,

26 मिस्ये, कपीरा, मोसा,

27 रेकेम, यिर्पेल, तरला,

28 सेला, एलेप, यबूस (जो यरूशलेम भी कहलाता है), गिबा और किर्यत; ये चौदह नगर और इनके गाँव उन्हें मिले। बिन्यामीनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा।

## 19

<sup>†</sup> <sup>\*</sup>

1 दूसरी चिट्ठी शिमोन के नाम पर, अर्थात् <sup>†</sup> <sup>\*</sup>; और उनका भाग यहूदियों के भाग के बीच में ठहरा।

2 उनके भाग में ये नगर हैं, अर्थात् बेशेबा, शेबा, मोलादा,

3 हसर्शूआल, बाला, एसेम,

4 एलतोलद, बतूल, होर्मा,

5 सिकलग, बेत्मर्काबोत, हसर्शूसा,

6 बेतलबाओत, और शारूहेन; ये तेरह नगर और इनके गाँव उन्हें मिले।

7 फिर ऐन, रिम्मोन, एतेर, और आशान, ये चार नगर गाँवों समेत;

8 और बालत्वेर जो दक्षिण देश का रामाह भी कहलाता है, वहाँ तक इन नगरों के चारों ओर के सब गाँव भी उन्हें मिले। शिमोनियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा।

9 शिमोनियों का भाग तो यहूदियों के अंश में से दिया गया; क्योंकि यहूदियों का भाग उनके लिये बहुत था, इस कारण शिमोनियों का भाग उन्हीं के भाग के बीच ठहरा।

10 तीसरी चिट्ठी जबूलूनियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। और उनके भाग की सीमा सारीद तक पहुँची;

11 और उनकी सीमा पश्चिम की ओर मरला को चढ़कर दब्बेशेत को पहुँची; और योकनाम के सामने के नाले तक पहुँच गई;

12 फिर सारीद से वह सूर्योदय की ओर मुड़कर किसलोत्ताबोर की सीमा तक पहुँची, और वहाँ से बढ़ते-बढ़ते दाबरात में निकली, और यापी की ओर जा निकली;

13 वहाँ से वह पूर्व की ओर आगे बढ़कर गथेपेर और इत्कासीन को गई, और उस रिम्मोन में निकली जो नेआ तक फैला हुआ है;

† 18:25 <sup>†</sup> अर्थात् बहुत ऊँचा सम्भवतः शमूएल का जन्म स्थान एवं निवास-स्थान।

\* 19:1 <sup>\*</sup> शिमोन का उत्तराधिकार यहूदा के भाग में से निकाला गया जो उस गोत्र की जन संख्या से अधिक था।

14 वहाँ से वह सीमा उसके उत्तर की ओर से मुड़कर हन्नातोन पर पहुँची, और यिप्तहेल की तराई में जा निकली;

15 कत्तात, नहलाल, शिमोन, यिदला, और बैतलहम; ये बारह नगर उनके गाँवों समेत उसी भाग के ठहरे।

16 जबूलूनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा; और उसमें अपने-अपने गाँवों समेत ये ही नगर हैं।

17 चौथी चिट्ठी इस्साकारियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली।

18 और उनकी सीमा यिज्जेल, कसुल्लोत, शूनेम

19 हपारैम, शीओन, अनाहरत,

20 रब्बीत, किश्योन, एबेस,

21 रेमेत, एनगन्नीम, एनहद्दा, और बेत्पस्सेस तक पहुँची।

22 फिर वह सीमा ताबोर, शहसूमा और बेतशेमेश तक पहुँची, और उनकी सीमा यरदन नदी पर जा निकली; इस प्रकार उनको सोलह नगर अपने-अपने गाँवों समेत मिले।

23 कुलों के अनुसार इस्साकारियों के गोत्र का भाग नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा।

24 पाँचवीं चिट्ठी आशेरियों के गोत्र के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली।

25 उनकी सीमा में हेल्कात, हली, बेतेन, अक्षाप,

26 अलाम्मेल्लेक, अमाद, और मिशाल थे; और वह पश्चिम की ओर कर्मेल तक और शीहोर्लिब्नात तक पहुँची;

27 फिर वह सूर्योदय की ओर मुड़कर बेतदागोन को गई, और जबूलून के भाग तक, और यिप्तहेल की तराई में उत्तर की ओर होकर बेतेमेक और नीएल तक पहुँची और उत्तर की ओर जाकर काबूल पर निकली,

28 और वह एब्रोन, रहोब, हम्मोन, और काना से होकर बडे सीदोन को पहुँची;

29 वहाँ से वह सीमा मुड़कर रामाह से होते हुए सोर नामक गढ़वाले नगर तक चली गई; फिर सीमा होसा की ओर मुड़कर और अकजीब के पास के देश में होकर समुद्र पर निकली,

30 उम्मा, अपेक, और रहोब भी उनके भाग में ठहरे; इस प्रकार बाईस नगर अपने-अपने गाँवों समेत उनको मिले।

31 कुलों के अनुसार आशेरियों के गोत्र का भाग नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा।

32 छठवीं चिट्ठी नप्तालियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली।

33 और उनकी सीमा हेलेप से, और सानन्नीम के बांज वृक्ष से, अदामीनेकेब और यब्नेल से होकर, और लक्कूम को जाकर यरदन पर निकली;

34 वहाँ से वह सीमा पश्चिम की ओर मुड़कर अजनोत्ताबोर को गई, और वहाँ से हुक्कोक को गई, और दक्षिण, और जबूलून के भाग तक, और पश्चिम की ओर आशेर के भाग तक, और सूर्योदय की ओर यहूदा के भाग के पास की यरदन नदी पर पहुँची।

35 और उनके गढ़वाले नगर ये हैं, अर्थात् सिद्दीम, सेर, हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत,

36 अदामा, रामाह, हासोर,

37 केदेश, एद्रेई, एन्हासोर,

38 यिरोन, मिगदलेल, होरेम, बेतनात, और बेतशेमेश; ये उन्नीस नगर गाँवों समेत उनको मिले।

39 कुलों के अनुसार नप्तालियों के गोत्र का भाग नगरों और उनके गाँवों समेत यही ठहरा।

40 सातवीं चिट्ठी कुलों के अनुसार दान के गोत्र के नाम पर निकली।

41 और उनके भाग की सीमा में सोरा, एशताओल, ईरशेमेश,

42 शालब्बीन, अय्यालोन, यितला,

43 एलोन, तिम्नाह, एक्रोन,

44 एलतके, गिब्बतोन, बालात,

45 यहूद, बनेबराक, गत्रिम्मोन,

46 मेयकोन, और रक्कोन ठहरे, और याफा के सामने की सीमा भी उनकी थी।

47 और दानियों का भाग इससे अधिक हो गया, अर्थात् दानी लेशेम पर चढ़कर उससे लड़े, और उसे लेकर तलवार से मार डाला, और उसको अपने अधिकार में करके उसमें बस गए, और अपने मूलपुरुष के नाम पर लेशेम का नाम दान रखा।

48 कुलों के अनुसार दान के गोत्र का भाग नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा।

49 जब देश का बाँटा जाना सीमाओं के अनुसार पूरा हो गया, तब इस्राएलियों ने नून के पुत्र यहोशू को भी अपने बीच में एक भाग दिया।

50 यहोवा के कहने के अनुसार उन्होंने उसको उसका माँगा हुआ नगर दिया, यह एप्रायम के पहाड़ी देश में का तिम्नत्सेरह है; और वह उस नगर को बसाकर उसमें रहने लगा।

51 जो-जो भाग एलीआजर याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियों के गोत्रों के घरानों के पूर्वजों के मुख्य-मुख्य पुरुषों ने शीलो में, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के सामने चिट्ठी डाल डालके बाँट दिए

वे ये ही हैं। इस प्रकार उन्होंने देश विभाजन का काम पूरा किया।

## 20

१११ १११११ ११ ११११११ ११११

1 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा,

2 “इस्राएलियों से यह कह, मैंने मूसा के द्वारा तुम से शरण नगरों की जो चर्चा की थी उसके अनुसार उनको ठहरा लो,

3 जिससे जो कोई भूल से बिना जाने किसी को मार डाले, वह उनमें से किसी में भाग जाए; इसलिए वे नगर खून के पलटा लेनेवाले से बचने के लिये तुम्हारे शरणस्थान ठहरें।

4 वह उन नगरों में से किसी को भाग जाए, और उस ११११ ११ १११११\* में से खड़ा होकर उसके पुरनियों को अपना मुकद्दमा कह सुनाए; और वे उसको अपने नगर में अपने पास टिका लें, और उसे कोई स्थान दें, जिसमें वह उनके साथ रहे।

5 और यदि खून का पलटा लेनेवाला उसका पीछा करे, तो वे यह जानकर कि उसने अपने पड़ोसी को बिना जाने, और पहले उससे बिना बैर रखे मारा, उस खूनी को उसके हाथ में न दें।

6 और जब तक वह मण्डली के सामने न्याय के लिये खड़ा न हो, और जब तक उन दिनों का महायाजक न मर जाए, तब तक वह उसी नगर में रहे; उसके बाद वह खूनी अपने नगर को लौटकर जिससे वह भाग आया हो अपने घर में फिर रहने पाए।”

7 और उन्होंने नप्ताली के पहाड़ी देश में गलील के केदेश को, और एप्रैम के पहाड़ी देश में शेकेम को, और यहूदा के पहाड़ी देश में किर्यतअर्बा को, (जो हेब्रोन भी कहलाता है) पवित्र ठहराया।

8 और यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर उन्होंने रूबेन के गोत्र के भाग में बेसेर को, जो जंगल में चौरस भूमि पर बसा हुआ है, और गाद के गोत्र के भाग में गिलाद के रामोत को, और मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान के गोलन को ठहराया।

9 सारे इस्राएलियों के लिये, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी, जो नगर इस मनसा से ठहराए गए कि जो कोई किसी प्राणी को भूल से मार डाले वह उनमें से किसी में भाग जाए, और जब तक न्याय के लिये मण्डली के सामने खड़ा न हो, तब तक खून का पलटा लेनेवाला उसे मार डालने न पाए, वे यह ही हैं।

\* 20:4 ११११ ११ १११११: हत्यारा ज्यों ही शरणनगर में समर्पण करे त्यों ही उस नगर के अगुए जाँच पड़ताल आरम्भ कर दें और उसे अस्थाई रूप से नगर में निवास करने दें।

## 21

१११११११ ११ १११११ ११ ११११ ११११

1 तब लेवियों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुष एलीआजर याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों के पास आकर

2 कनान देश के शीलो नगर में कहने लगे, “यहोवा ने मूसा के द्वारा हमें बसने के लिये नगर, और हमारे पशुओं के लिये उन्हीं नगरों की चराइयाँ भी देने की आज्ञा दी थी।”

3 तब इस्राएलियों ने यहोवा के कहने के अनुसार अपने-अपने भाग में से लेवियों को चराइयों समेत ये नगर दिए।

4 तब कहातियों के कुलों के नाम पर चिट्ठी निकली। इसलिए लेवियों में से हारून याजक के वंश को यहूदी, शिमोन, और बिन्यामीन के गोत्रों के भागों में से तेरह नगर मिले।

5 बाकी कहातियों को एप्रैम के गोत्र के कुलों, और दान के गोत्र, और मनश्शे के आधे गोत्र के भागों में से चिट्ठी डाल डालकर दस नगर दिए गए।

6 और गेशोनियों को इस्साकार के गोत्र के कुलों, और आशेर, और नप्ताली के गोत्रों के भागों में से, और मनश्शे के उस आधे गोत्र के भागों में से भी जो बाशान में था चिट्ठी डाल डालकर तेरह नगर दिए गए।

7 कुलों के अनुसार मरारियों को रूबेन, गाद, और जबूलून के गोत्रों के भागों में से बारह नगर दिए गए।

8 जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसके अनुसार इस्राएलियों ने लेवियों को चराइयों समेत ये नगर चिट्ठी डाल डालकर दिए।

9 उन्होंने यहूदियों और शिमोनियों के गोत्रों के भागों में से ये नगर जिनके नाम लिखे हैं दिए;

10 ये नगर लेवीय कहाती कुलों में से हारून के वंश के लिये थे; क्योंकि पहली चिट्ठी उन्हीं के नाम पर निकली थी।

11 अर्थात् उन्होंने उनको यहूदा के पहाड़ी देश में चारों ओर की चराइयों समेत किर्यतअर्बा नगर दे दिया, जो अनाक के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया और हेब्रोन भी कहलाता है।

12 परन्तु उस नगर के खेत और उसके गाँव उन्होंने यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसकी निज भूमि करके दे दिए।

13 तब उन्होंने हारून याजक के वंश को चराइयों समेत खूनी के शरणनगर हेब्रोन, और अपनी-अपनी चराइयों समेत लिब्ना,









8 परन्तु जैसे आज के दिन तक तुम अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति में लवलीन रहते हो, वैसे ही रहा करना।

9 यहोवा ने तुम्हारे सामने से बड़ी-बड़ी और बलवन्त जातियाँ निकाली हैं; और तुम्हारे सामने आज के दिन तक कोई ठहर नहीं सका। (23:27-28) 7:45

10 तुम में से एक मनुष्य हजार मनुष्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है।

11 इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की पूरी चौकसी करना।

12 क्योंकि यदि तुम किसी रीति यहोवा से फिरकर इन जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगे जो तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं, और इनसे ब्याह शादी करके इनके साथ समधियाना रिश्ता जोड़ो,

13 तो निश्चय जान लो कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियों को तुम्हारे सामने से नहीं निकालेगा; और ये तुम्हारे लिये जाल और फंदे, और तुम्हारे पांजरों के लिये कोड़े, और तुम्हारी आँखों में काँटे ठहरेंगी, और अन्त में तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है नष्ट हो जाओगे।

14 “सुनो, मैं तो अब सब संसारियों की गति पर जानेवाला हूँ, और तुम सब अपने-अपने हृदय और मन में जानते हो, कि जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही; वे सब की सब तुम पर घट गई हैं, उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।

15 तो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कही हुई सब भलाई की बातें तुम पर घटी हैं, वैसे ही यहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर लाएगा और तुम को इस अच्छी भूमि के ऊपर से, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, सत्यानाश कर डालेगा।

16 जब तुम उस वाचा को, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को आज्ञा देकर अपने साथ बन्धाया है, उल्लंघन करके पराए देवताओं की उपासना और उनको दण्डवत् करने लगे, तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उसने तुम को दिया है शीघ्र नष्ट हो जाओगे।”

## 24

24:1-12

1 फिर यहोशू ने इस्राएल के सब गोत्रों को शेकेम में इकट्ठा किया, और इस्राएल के वृद्ध लोगों, और मुख्य

पुरुषों, और न्यायियों, और सरदारों को बुलवाया; और वे परमेश्वर के सामने उपस्थित हुए।

2 तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि प्राचीनकाल में अब्राहम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा फरात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे।

3 और मैंने तुम्हारे मूलपुरुष अब्राहम को फरात के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया, और उसका वंश बढ़ाया। और उसे इसहाक को दिया;

4 फिर मैंने इसहाक को याकूब और एसाव दिया। और एसाव को मैंने सेईर नामक पहाड़ी देश दिया कि वह उसका अधिकारी हो, परन्तु याकूब बेटों-पोतों समेत मिस्र को गया।

5 फिर मैंने मूसा और हारून को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैंने मिस्र में किए उस देश को मारा; और उसके बाद तुम को निकाल लाया।

6 और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र में से निकाल लाया, और तुम समुद्र के पास पहुँचे; और मिस्रियों ने रथ और सवारों को संग लेकर लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया।

7 और जब तुम ने यहोवा की दुहाई दी तब उसने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच में अंधियारा कर दिया, और उन पर समुद्र को बहाकर उनको डुबा दिया; और जो कुछ मैंने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी आँखों से देखा; फिर तुम बहुत दिन तक जंगल में रहे।

8 तब मैं तुम को उन एमोरियों के देश में ले आया, जो यरदन के उस पार बसे थे; और वे तुम से लड़े और मैंने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया, और तुम उनके देश के अधिकारी हो गए, और मैंने उनका तुम्हारे सामने से सत्यानाश कर डाला।

9 फिर मोआब के राजा सिप्पोर का पुत्र बालाक उठकर इस्राएल से लड़ा; और तुम्हें श्राप देने के लिये बोर के पुत्र बिलाम को बुलवा भेजा,

10 परन्तु मैंने बिलाम की नहीं सुनी; वह तुम को आशीष ही आशीष देता गया; इस प्रकार मैंने तुम को उसके हाथ से बचाया।

11 तब तुम यरदन पार होकर यरीहो के पास आए, और जब यरीहो के लोग, और एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी, हिब्बी, और यबूसी तुम से लड़े, तब मैंने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया।

12 और मैंने तुम्हारे आगे बरौ को भेजा, और उन्होंने एमोरियों के दोनों राजाओं को तुम्हारे सामने से भगा दिया; देखो, यह तुम्हारी तलवार या धनुष का काम नहीं

हुआ।

13 फिर मैंने तुम्हें ऐसा देश दिया जिसमें तुम ने परिश्रम न किया था, और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था, और तुम उनमें बसे हो; और जिन दाख और जैतून के बगीचों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया था।

14 “इसलिए अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा फरात के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो।

15 और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो **22 2222 222**\* कि तुम किसकी सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा।”

16 तब लोगों ने उत्तर दिया, “यहोवा को त्याग कर दूसरे देवताओं की सेवा करनी हम से दूर रहे;

17 क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही है जो हमको और हमारे पुरखाओं को दासत्व के घर, अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया, और हमारे देखते बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म किए, और जिस मार्ग पर और जितनी जातियों के मध्य में से हम चले आते थे उनमें हमारी रक्षा की;

18 और हमारे सामने से इस देश में रहनेवाली एमोरी आदि सब जातियों को निकाल दिया है; इसलिए हम भी यहोवा की सेवा करेंगे, क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है।” **(22222222. 7:45)**

19 यहोशू ने लोगों से कहा, “तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है; वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न करेगा।

20 यदि तुम यहोवा को त्याग कर पराए देवताओं की सेवा करने लगोगे, तो यद्यपि वह तुम्हारा भला करता आया है तो भी वह फिरकर तुम्हारी हानि करेगा और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा।”

21 लोगों ने यहोशू से कहा, “नहीं; हम यहोवा ही की सेवा करेंगे।”

22 यहोशू ने लोगों से कहा, “तुम आप ही अपने साक्षी हो कि तुम ने यहोवा की सेवा करनी चुन ली है।” उन्होंने कहा, “हाँ, हम साक्षी हैं।”

23 यहोशू ने कहा, “अपने बीच में से पराए देवताओं को दूर करके अपना-अपना मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाओ।”

24 लोगों ने यहोशू से कहा, “हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे, और उसी की बात मानेंगे।”

25 तब यहोशू ने उसी दिन **22 222222 22 22222** **22222222**, और शेकेम में उनके लिये विधि और नियम ठहराया।

26 यह सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया; और एक बड़ा पत्थर चुनकर वहाँ उस बांज वृक्ष के तले खड़ा किया, जो यहोवा के पवित्रस्थान में था।

27 तब यहोशू ने सब लोगों से कहा, “सुनो, यह पत्थर हम लोगों का साक्षी रहेगा, क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हम से कहे हैं उन्हें इसने सुना है; इसलिए यह तुम्हारा साक्षी रहेगा, ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर से मुकर जाओ।”

28 तब यहोशू ने लोगों को अपने-अपने निज भाग पर जाने के लिये विदा किया।

**222222 22 22222222 22 22222**

29 इन बातों के बाद यहोवा का दास, नून का पुत्र यहोशू, एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया।

30 और उसको तिम्नत्सेरह में, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नामक पहाड़ के उत्तर में है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई।

31 और यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे-कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे।

32 फिर यूसुफ की हड्डियाँ जिन्हें इस्राएली मिस्र से ले आए थे वे शेकेम की भूमि के उस भाग में गाड़ी गईं, जिसे याकूब ने शेकेम के पिता हमोर के पुत्रों से एक सौ चाँदी के सिक्कों में मोल लिया था; इसलिए वह यूसुफ की सन्तान का निज भाग हो गया। **(22222. 4:5, 2222222222. 7:16)**

33 और हारून का पुत्र एलीआजर भी मर गया; और उसको एप्रैम के पहाड़ी देश में उस पहाड़ी पर मिट्टी दी गई, जो उसके पुत्र पीनहास के नाम पर गिबत्पीनहास कहलाती है और उसको दे दी गई थी।

\* **24:15 22 2222 22**: सच्चे दिल से एवं निष्ठावान परमेश्वर की सेवा हृदय के मुक्तभाव एवं स्वेच्छा से ही होती है। † **24:25 22 222222 22 22222 222222**: अर्थात् उसने सौने पर्वत पर बाँधी गई वाचा को दोहराया एवं नए रूप से अंगीकार करवाया जैसे मूसा ने पहले किया था (व्यव. 29:1)









पहाड़ से लेकर हम्रात की तराई तक लबानोन पर्वत में रहनेवाले हिब्वियों को।

4 ये इसलिए रहने पाए कि इनके द्वारा इस्राएलियों की बात में परीक्षा हो, कि जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा के द्वारा उनके पूर्वजों को दी थीं, उन्हें वे मानेंगे या नहीं।

5 इसलिए इस्राएली कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, हिब्वियों, और यबूसियों के बीच में बस गए; (22: 106:35)

6 तब वे उनकी बेटियाँ विवाह में लेने लगे, और अपनी बेटियाँ उनके बेटों को विवाह में देने लगे; और उनके देवताओं की भी उपासना करने लगे।

22:22:22 22 22:22:22

7 इस प्रकार इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर बाल नामक देवताओं और अशेरा नामक देवियों की उपासना करने लग गए।

8 तब यहोवा का क्रोध इस्राएलियों पर भड़का, और उसने उनको अरमनहरैम के राजा कूशन रिश्आतइम के अधीन कर दिया; सो इस्राएली आठ वर्ष तक कूशन रिश्आतइम के अधीन में रहे।

9 तब इस्राएलियों ने यहोवा की दुहाई दी, और उसने इस्राएलियों के छुटकारे के लिये कालेब के छोटे भाई ओत्नीएल नामक कनजी के पुत्र को ठहराया, और उसने उनको छुड़ाया।

10 22:22:22 22:22:22 22 22:22:22 22:22:22\*, और वह इस्राएलियों का न्यायी बन गया, और लड़ने को निकला, और यहोवा ने अराम के राजा कूशन रिश्आतइम को उसके हाथ में कर दिया; और वह कूशन रिश्आतइम पर जयवन्त हुआ। (22:22: 27:18)

11 तब चालीस वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही। तब कनजी का पुत्र ओत्नीएल मर गया।

22:22:22 22 22:22:22

12 तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; और यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल पर प्रबल किया, क्योंकि उन्होंने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया था।

13 इसलिए उसने अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने पास इकट्ठा किया, और जाकर इस्राएल को मार लिया; और खजूरवाले नगर को अपने वश में कर लिया।

14 तब इस्राएली अठारह वर्ष तक मोआब के राजा एग्लोन के अधीन रहे।

15 फिर इस्राएलियों ने यहोवा की दुहाई दी, और उसने गेरा के पुत्र एहूद नामक एक बिन्यामीनी को उनका छुड़ानेवाला ठहराया; वह बयंहत्था था। इस्राएलियों ने उसी के हाथ से मोआब के राजा एग्लोन के पास कुछ भेंट भेजी। (22: 78:34)

16 एहूद ने हाथ भर लम्बी एक दोधारी तलवार बनवाई थी, और उसको अपने वस्त्र के नीचे 22:22:22 22:22:22 22 22:22:22 22:22:22†।

17 तब वह उस भेंट को मोआब के राजा एग्लोन के पास जो बड़ा मोटा पुरुष था ले गया।

18 जब वह भेंट को दे चुका, तब भेंट के लानेवाले को विदा किया।

19 परन्तु वह आप गिलगाल के निकट की खुदी हुई मूरतों के पास लौट गया, और एग्लोन के पास कहला भेजा, “हे राजा, मुझे तुझ से एक भेद की बात कहनी है।” तब राजा ने कहा, “थोड़ी देर के लिये बाहर जाओ।” तब जितने लोग उसके पास उपस्थित थे वे सब बाहर चले गए।

20 तब एहूद उसके पास गया; वह तो अपनी एक हवादार अटारी में अकेला बैठा था। एहूद ने कहा, “परमेश्वर की ओर से मुझे तुझ से एक बात कहनी है।” तब वह गद्दी पर से उठ खड़ा हुआ। (22: 29:1, 22:22:22 6:9)

21 इतने में एहूद ने अपना बायाँ हाथ बढ़ाकर अपनी दाहिनी जाँघ पर से तलवार खींचकर उसकी तोंद में घुसेड़ दी;

22 और फल के पीछे मूठ भी पैठ गई, और फल चर्बी में धंसा रहा, क्योंकि उसने तलवार को उसकी तोंद में से न निकाला; वरन् वह उसके आर-पार निकल गई।

23 तब एहूद छज्जे से निकलकर बाहर गया, और अटारी के किवाड़ खींचकर उसको बन्द करके ताला लगा दिया।

24 उसके निकलकर जाते ही राजा के दास आए, तो क्या देखते हैं, कि अटारी के किवाड़ों में ताला लगा है; इस कारण वे बोले, “निश्चय वह हवादार कोठरी में लघुशंका करता होगा।”

25 वे बाट जोहते-जोहते थक गए; तब यह देखकर कि वह अटारी के किवाड़ नहीं खोलता, उन्होंने कुँजी लेकर किवाड़ खोले तो क्या देखा, कि उनका स्वामी भूमि पर मरा पड़ा है।

26 जब तक वे सोच विचार कर ही रहे थे तब तक एहूद

\* 3:10 22:22:22 22:22:22 22 22:22:22 22:22:22: यह न्यायियों का विशिष्ट पद है वे पवित्र आत्मा द्वारा बुलाए गए निर्देशित मुक्तिदाता थे। पवित्र आत्मा उन्हें असाधारण बुद्धि, साहस तथा शक्ति देता था कि अपने दिए गए काम को पूरा करें। † 3:16 22:22:22 22:22:22 22 22:22:22 22:22:22: बाएँ हाथ को काम में लेनेवाले के लिये। ऐसा प्रगट हो कि वह निहत्था है।

भाग निकला, और खुदी हुई मूरतों की परली ओर होकर सेइरे में जाकर शरण ली।

27 वहाँ पहुँचकर उसने एप्रैम के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूँका; तब इस्राएली उसके संग होकर पहाड़ी देश से उसके पीछे-पीछे नीचे गए।

28 और उसने उनसे कहा, “मेरे पीछे-पीछे चले आओ; क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे मोआबी शत्रुओं को तुम्हारे हाथ में कर दिया है।” तब उन्होंने उसके पीछे-पीछे जा के यरदन के घाटों को जो मोआब देश की ओर हैं ले लिया, और किसी को उतरने न दिया।

29 उस समय उन्होंने लगभग दस हजार मोआबियों को मार डाला; वे सब के सब हष्ट-पुष्ट और शूरवीर थे, परन्तु उनमें से एक भी न बचा।

30 इस प्रकार उस समय मोआब इस्राएल के हाथ के तले दब गया। तब अस्सी वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही। (2/2/2/2. 3:11)

31 उसके बाद अनात का पुत्र शमगर हुआ, उसने छः सौ पलिशती पुरुषों को बैल के पैने से मार डाला; इस कारण वह भी इस्राएल का छुड़ानेवाला हुआ। (2/2/2/2. 15:15, 2/2/2/2. 10:17, 1 2/2/2. 4:1)

## 4

2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2

1 जब एहूद मर गया तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।

2 इसलिए यहोवा ने उनको हासोर में विराजनेवाले कनान के राजा याबीन के अधीन कर दिया, जिसका सेनापति सीसरा था, जो अन्यजातियों के हरोशेत का निवासी था।

3 तब इस्राएलियों ने यहोवा की दुहाई दी; क्योंकि सीसरा के पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और वह इस्राएलियों पर बीस वर्ष तक बड़ा अंधेर करता रहा।

4 उस समय लप्पीदोत की स्त्री 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2 2/2\* इस्राएलियों का न्याय करती थी।

5 वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामाह और बेटेल के बीच में दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी, और इस्राएली उसके पास न्याय के लिये जाया करते थे।

6 उसने अबीनोअम के पुत्र 2/2/2/2/2/2† को केदेश नप्ताली में से बुलाकर कहा, “क्या इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नहीं दी, कि तू जाकर ताबोर पहाड़ पर चढ़, और नप्तालियों और जबूलूनियों में के दस हजार पुरुषों को संग ले जा?”

7 तब मैं याबीन के सेनापति सीसरा को रथों और भीड़भाड़ समेत कीशोन नदी तक तेरी ओर खींच ले आऊँगा; और उसको तेरे हाथ में कर दूँगा।”

8 बाराक ने उससे कहा, “यदि तू मेरे संग चलेगी तो मैं जाऊँगा, नहीं तो न जाऊँगा।”

9 उसने कहा, “निःसन्देह मैं तेरे संग चलूँगी; तो भी इस यात्रा से तेरी कुछ बढ़ाई न होगी, क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देगा।” तब दबोरा उठकर बाराक के संग केदेश को गई।

10 तब बाराक ने जबूलून और नप्ताली के लोगों को केदेश में बुलवा लिया; और उसके पीछे दस हजार पुरुष चढ़ गए; और दबोरा उसके संग चढ़ गई।

11 हेबेर नामक केनी ने उन केनियों में से, जो मूसा के साले होबाब के वंश के थे, अपने को अलग करके केदेश के पास के सानन्नीम के बांज वृक्ष तक जाकर अपना डेरा वहीं डाला था।

12 जब सीसरा को यह समाचार मिला कि अबीनोअम का पुत्र बाराक ताबोर पहाड़ पर चढ़ गया है,

13 तब सीसरा ने अपने सब रथ, जो लोहे के नौ सौ रथ थे, और अपने संग की सारी सेना को अन्यजातियों के हरोशेत से कीशोन नदी पर बुलवाया। (2/2/2/2. 4:7)

14 तब दबोरा ने बाराक से कहा, “उठ! क्योंकि आज वह दिन है जिसमें यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा। क्या यहोवा तेरे आगे नहीं निकला है?” इस पर बाराक और उसके पीछे-पीछे दस हजार पुरुष ताबोर पहाड़ से उतर पड़े।

15 तब यहोवा ने सारे रथों वरन् सारी सेना समेत सीसरा को तलवार से बाराक के सामने घबरा दिया; और सीसरा रथ पर से उतरकर पाँव-पाँव भाग चला। (2/2. 83:9,10)

16 और बाराक ने अन्यजातियों के हरोशेत तक रथों और सेना का पीछा किया, और तलवार से सीसरा की सारी सेना नष्ट की गई; और एक भी मनुष्य न बचा। (2/2/2. 2:12)

17 परन्तु सीसरा पाँव-पाँव हेबेर केनी की स्त्री याएल के डेरे को भाग गया; क्योंकि हासोर के राजा याबीन और हेबेर केनी में मेल था।

18 तब याएल सीसरा की भेंट के लिये निकलकर उससे कहने लगी, “हे मेरे प्रभु, आ, मेरे पास आ, और न डर।” तब वह उसके पास डेरे में गया, और उसने उसके ऊपर कम्बल डाल दिया।

19 तब सीसरा ने उससे कहा, “मुझे प्यास लगी है, मुझे थोड़ा पानी पिला।” तब उसने दूध की कुप्पी

\* 4:4 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2: उसके नाम का अर्थ है मधुमक्खी, वह एक भविष्यद्विक्तन थी। † 4:6 2/2/2/2/2: अर्थात् विजली: एक योद्धा के लिये उचित नाम।

खोलकर उसे दूध पिलाया, और उसको ओढ़ा दिया।  
(**2:22-24, 5:25,26, 24:43**)

20 तब उसने उससे कहा, “डेरे के द्वार पर खड़ी रह, और यदि कोई आकर तुझ से पूछे, ‘यहाँ कोई पुरुष है?’ तब कहना, ‘कोई भी नहीं।’”

21 इसके बाद हेबेर की स्त्री याएल ने डेरे की एक खूँटी ली, और अपने हाथ में एक हथौड़ा भी लिया, और दबे पाँव उसके पास जाकर खूँटी को उसकी कनपटी में ऐसा ठोक दिया कि खूँटी पार होकर भूमि में धँस गई; वह तो थका था ही इसलिए गहरी नींद में सो रहा था। अतः वह मर गया।

22 जब बाराक सीसरा का पीछा करता हुआ आया, तब याएल उससे भेंट करने के लिये निकली, और कहा, “इधर आ, जिसका तू खोजी है उसको मैं तुझे दिखाऊँगी।” तब उसने उसके साथ जाकर क्या देखा; कि सीसरा मरा पड़ा है, और वह खूँटी उसकी कनपटी में गड़ी है।

23 इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन कनान के राजा याबीन को इस्राएलियों के सामने नीचा दिखाया। (**2:22, 18:47**)

24 और इस्राएली कनान के राजा याबीन पर प्रबल होते गए, यहाँ तक कि उन्होंने कनान के राजा याबीन को नष्ट कर डाला।

## 5

**2:22-24, 2:22-24**

1 उसी दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया:

2 “इस्राएल के अगुओं ने जो अगुआई की और प्रजा जो अपनी ही इच्छा से भरती हुई,

इसके लिये यहोवा को धन्य कहो!

3 “हे राजाओं, सुनो; हे अधिपतियों कान लगाओ, मैं आप यहोवा के लिये गीत गाऊँगी; इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूँगी।

4 हे यहोवा, जब तू सेईर से निकल चला, जब तूने एदोम के देश से प्रस्थान किया, तब पृथ्वी डोल उठी, और आकाश टूट पड़ा, बादल से भी जल बरसने लगा। (**2:22-24, 12:26**)

5 यहोवा के प्रताप से पहाड़,

इस्राएल के परमेश्वर

यहोवा के प्रताप से वह सीनै पिघलकर बहने लगा।

6 “अनात के पुत्र शमगर के दिनों में, और याएल के दिनों में सड़कें सूनी पड़ी थीं,

और बटोही पगडण्डियों से चलते थे।

7 जब तक मैं दबोरा न उठी, जब तक मैं इस्राएल में माता होकर न उठी, तब तक गाँव सूने पड़े थे। (**2:22, 20:19**)

8 नये-नये देवता माने गए, उस समय फाटकों में लड़ाई होती थी।

क्या चालीस हजार इस्राएलियों में भी ढाल या बछ्छी कहीं देखने में आती थी?

9 मेरा मन इस्राएल के हाकिमों की ओर लगा है, जो प्रजा के बीच में अपनी ही इच्छा से भरती हुए।

यहोवा को धन्य कहो।

10 “हे उजली गदहियों पर चढ़नेवालों,

हे फर्शों पर विराजनेवालो,

हे मार्ग पर पैदल चलनेवालों ध्यान रखो।

11 पनघटों के आस-पास धनुर्धारियों की बात के कारण, वहाँ वे यहोवा के धर्ममय कामों का, इस्राएल के लिये उसके धर्ममय कामों का वर्णन करेंगे।

उस समय यहोवा की प्रजा के लोग फाटकों के पास गए।

12 “जाग, जाग, हे दबोरा!

जाग, जाग, गीत सुना! हे बाराक, उठ,

हे अबीनोअम के पुत्र,

अपने बन्दियों को बँधुआई में ले चल।

13 उस समय थोड़े से रईस प्रजा समेत उतर पड़े;

यहोवा शूरवीरों के विरुद्ध मेरे हित में उतर आया।

(**2:22, 8:37, 2:22, 75:7**)

14 एप्रैम में से वे आए जिसकी जड़ अमालेक में है;

हे बिन्यामीन, तेरे पीछे तेरे दलों में,

माकीर में से हाकिम, और जबूलून में से सेनापति का दण्ड लिए हुए उतरे; (**2:22, 2:15**)

15 और इस्साकार के हाकिम दबोरा के संग हुए,

जैसा इस्साकार वैसा ही बाराक भी था;

उसके पीछे लगे हुए वे तराई में झपटकर गए।

रूबेन की नदियों के पास बड़े-बड़े काम मन में ठाने गए।

16 तू चरवाहों का सीटी बजाना सुनने को भेड़शालाओं के बीच क्यों बैठा रहा?

रूबेन की नदियों के पास **2:22-24, 2:22, 2:22, 2:22** **2:22\***।

17 गिलाद यरदन पार रह गया; और दान क्यों जहाजों में रह गया?

आशेर समुद्र तट पर बैठा रहा,

और उसकी खाड़ियों के पास रह गया।

18 जबूलून अपने प्राण पर खेलनेवाले लोग ठहरे;

नप्ताली भी देश के ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर वैसा ही ठहरा।

\* **5:16 2:22-24, 2:22, 2:22, 2:22, 2:22**: दबोरा के कहने का अर्थ था, पहले तो रूबेनवंशियों ने याबीन के विरुद्ध अपने भाइयों की सहायता करने का निर्णय लिया था। परन्तु वे घर में ही रहे और अवसर को हाथ से जाने दिया।

19 “राजा आकर लड़े,  
उस समय कनान के राजा  
मगिदो के सोतों के पास तानाक में लड़े;  
पर [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2] [2][2][2] [2][2][2][2]। (2[2][2][2][2])  
**16:16)**

20 आकाश की ओर से भी लड़ाई हुई;  
वरन् तारों ने अपने-अपने मण्डल से सीसरा से लड़ाई  
की।

21 कीशोन नदी ने उनको बहा दिया,  
अर्थात् वही प्राचीन नदी जो कीशोन नदी है।  
हे मन, हियाव बाँधे आगे बढ़।

22 “उस समय घोड़े के खुरों से टाप का शब्द होने लगा,  
उनके बलिष्ठ घोड़ों के कूदने से यह हुआ।

23 “यहोवा का दूत कहता है,  
कि [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2] [2][2]†, उसके निवासियों को  
भारी श्राप दो,  
क्योंकि वे यहोवा की सहायता करने को,  
शूरवीरों के विरुद्ध यहोवा की सहायता करने को न  
आए।

24 “सब स्त्रियों में से केनी हेबेर की स्त्री याएल धन्य  
ठहरेगी;  
डेरों में रहनेवाली सब स्त्रियों में से वह धन्य ठहरेगी।  
(2[2][2][2][2] 1:42)

25 सीसरा ने पानी माँगा, उसने दूध दिया,  
रईसों के योग्य बर्तन में वह मक्खन ले आई।

26 उसने अपना हाथ खूँटी की ओर,  
अपना दाहिना हाथ बढ़ाई के हथौड़े की ओर बढ़ाया;  
और हथौड़े से सीसरा को मारा, उसके सिर को फोड़  
डाला,  
और उसकी कनपटी को आर-पार छेद दिया।  
27 उस स्त्री के पाँवों पर वह झुका, वह गिरा, वह पड़ा  
रहा;

उस स्त्री के पाँवों पर वह झुका, वह गिरा;  
जहाँ झुका, वहीं मरा पड़ा रहा।

28 “खिड़की में से एक स्त्री झाँककर चिल्लाई,  
सीसरा की माता ने झिलमिली की ओट से पुकारा,  
‘उसके रथ के आने में इतनी देर क्यों लगी?  
उसके रथों के पहियों को देर क्यों हुई है?’

29 उसकी बुद्धिमान प्रतिष्ठित स्त्रियों ने उसे उत्तर दिया,  
वरन् उसने अपने आपको इस प्रकार उत्तर दिया,

30 क्या उन्होंने लूट पाकर बाँट नहीं ली?  
क्या एक-एक पुरुष को एक-एक वरन् दो-दो कुँवारियाँ;  
और सीसरा को रंगीले वस्त्र की लूट,  
वरन् बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र की लूट,

और लूटे हुआओं के गले में दोनों ओर बूटे काढ़े हुए रंगीले  
वस्त्र नहीं मिले?’

31 “हे यहोवा, “तेरे सब शत्रु ऐसे ही नाश हो जाएँ!  
परन्तु उसके प्रेमी लोग प्रताप के साथ उदय होते हुए  
सूर्य के समान तेजोमय हों।”

फिर देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही। (2[2][2][2][2])  
**1:16)**

## 6

[2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2]

1 तब इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया,  
इसलिए यहोवा ने उन्हें मिद्यानियों के वश में सात वर्ष  
कर रखा।

2 और मिद्यानी इस्राएलियों पर प्रबल हो गए।  
मिद्यानियों के डर के मारे इस्राएलियों ने पहाड़ों के गहरे  
खड्डों, और गुफाओं, और किलों को अपने निवास बना  
लिए।

3 और जब जब इस्राएली बीज बोते तब-तब मिद्यानी  
और अमालेकी और पूर्वी लोग उनके विरुद्ध चढ़ाई करके

4 गाज़ा तक छावनी डाल डालकर भूमि की उपज  
नाश कर डालते थे, और इस्राएलियों के लिये न तो कुछ  
भोजनवस्तु, और न भेड़-बकरी, और न गाय-बैल, और  
न गदहा छोड़ते थे।

5 क्योंकि वे अपने पशुओं और डेरों को लिए हुए  
चढ़ाई करते, और टिड्डियों के दल के समान बहुत आते  
थे; और उनके ऊँट भी अनगिनत होते थे; और वे देश  
को उजाड़ने के लिये उसमें आया करते थे।

6 और मिद्यानियों के कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में  
पड़ गए; तब इस्राएलियों ने यहोवा की दुहाई दी।

7 जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों के कारण यहोवा की  
दुहाई दी,

8 तब यहोवा ने इस्राएलियों के पास एक नबी को  
भेजा, जिसने उनसे कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा  
यह कहता है: मैं तुम को मिस्र में से ले आया, और  
दासत्व के घर से निकाल ले आया;

9 और मैंने तुम को मिस्रियों के हाथ से, वरन् जितने  
तुम पर अंधेर करते थे उन सभी के हाथ से छुड़ाया, और  
उनको तुम्हारे सामने से बरबस निकालकर उनका देश  
तुम्हें दे दिया;

10 और मैंने तुम से कहा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा  
हूँ; एमोरी लोग जिनके देश में तुम रहते हो उनके

† 5:19 [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]: उन्होंने जीवन और विजय के निमित्त युद्ध किया था, लूट के लिये नहीं। ‡ 5:23 [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2]  
[2][2]: मेरोज के निवासी पीछे हट गए और युद्ध में सहायता नहीं की जबकि यहोवा ने उन्हें बुलाया था। अतः परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उन्हें श्राप दिया।







10 जेबह और सल्मुन्ना तो कर्कोर में थे, और उनके साथ कोई पन्द्रह हजार पुरुषों की सेना थी, क्योंकि पूर्वियों की सारी सेना में से उतने ही रह गए थे; और जो मारे गए थे वे एक लाख बीस हजार हथियार-बन्द थे।

11 तब गिदोन ने नोबह और योगबहा के पूर्व की ओर डेरों में रहनेवालों के मार्ग में चढ़कर उस सेना को जो निडर पड़ी थी मार लिया।

12 और जब जेबह और सल्मुन्ना भागे, तब उसने उनका पीछा करके मिद्यानियों के उन दोनों राजाओं अर्थात् जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ लिया, और सारी सेना को भगा दिया।

13 और योआश का पुत्र गिदोन हेरेस नामक चढ़ाई पर से लड़ाई से लौटा।

14 और सुक्कोत के एक जवान पुरुष को पकड़कर उससे पूछा, और उसने सुक्कोत के सतहत्तरो हाकिमों और वृद्ध लोगों के पते लिखवाए।

15 तब वह सुक्कोत के मनुष्यों के पास जाकर कहने लगा, “जेबह और सल्मुन्ना को देखो, जिनके विषय में तुम ने यह कहकर मुझे चिढ़ाया था, कि क्या जेबह और सल्मुन्ना अभी तेरे हाथ में हैं, कि हम तेरे थके-माँदे जनो को रोटी दें?”

16 तब उसने उस नगर के वृद्ध लोगों को पकड़ा, और जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ लेकर सुक्कोत के पुरुषों को कुछ सिखाया।

17 और उसने पनूएल के गुम्मट को ढा दिया, और उस नगर के मनुष्यों को घात किया।

18 फिर उसने जेबह और सल्मुन्ना से पूछा, “जो मनुष्य तुम ने ताबोर पर घात किए थे वे कैसे थे?” उन्होंने उत्तर दिया, “जैसा तू वैसे ही वे भी थे, अर्थात् एक-एक का रूप राजकुमार का सा था।”

19 उसने कहा, “वे तो मेरे भाई, वरन् मेरे सहोदर भाई थे; यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम ने उनको जीवित छोड़ा होता, तो मैं तुम को घात न करता।”

20 तब उसने अपने जेठे पुत्र यतेरे से कहा, “उठकर इन्हें घात कर।” परन्तु जवान ने अपनी तलवार न खींची, क्योंकि वह उस समय तक लड़का ही था, इसलिए वह डर गया।

21 तब जेबह और सल्मुन्ना ने कहा, “तू उठकर हम पर प्रहार कर; क्योंकि जैसा पुरुष हो, वैसा ही उसका पौरुष भी होगा।” तब गिदोन ने उठकर जेबह और सल्मुन्ना को घात किया; और उनके ऊँटों के गलों के चन्द्रहारों को ले लिया।

22 तब इस्राएल के पुरुषों ने गिदोन से कहा, “तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता करे; क्योंकि तूने हमको मिद्यान के हाथ से छुड़ाया है।”

23 गिदोन ने उनसे कहा, “मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूँगा, और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करेगा; यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा।”

24 फिर गिदोन ने उनसे कहा, “मैं तुम से कुछ माँगता हूँ; अर्थात् तुम मुझे को अपनी-अपनी लूट में की ~~दो~~ दो। (वे तो इश्माएली थे, इस कारण उनकी बालियाँ सोने की थीं।)”

25 उन्होंने कहा, “निश्चय हम देंगे।” तब उन्होंने कपड़ा बिछाकर उसमें अपनी-अपनी लूट में से निकालकर बालियाँ डाल दीं।

26 जो सोने की बालियाँ उसने माँग लीं उनका तौल एक हजार सात सौ शेकेल हुआ; और उनको छोड़ चन्द्रहार, झुमके, और बैंगनी रंग के वस्त्र जो मिद्यानियों के राजा पहने थे, और उनके ऊँटों के गलों की जंजीर।

27 उनका गिदोन ने एक एपोद बनवाकर अपने ओप्रा नामक नगर में रखा; और सारा इस्राएल वहाँ व्यभिचारिणी के समान उसके पीछे हो लिया, और वह गिदोन और उसके घराने के लिये फंदा ठहरा।

28 इस प्रकार मिद्यान इस्राएलियों से दब गया, और फिर सिर न उठाया। और गिदोन के जीवन भर अर्थात् चालीस वर्ष तक देश चैन से रहा।

29 योआश का पुत्र ~~जाकर~~ जाकर अपने घर में रहने लगा।

30 और गिदोन के सत्तर बेटे उत्पन्न हुए, क्योंकि उसकी बहुत स्त्रियाँ थीं।

31 और उसकी जो एक रखैल शेकेम में रहती थी उसको एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और गिदोन ने उसका नाम अबीमेलेक रखा।

32 योआश का पुत्र गिदोन पूरे बुढ़ापे में मर गया, और अबीएजेरियों के ओप्रा नामक गाँव में उसके पिता योआश की कब्र में उसको मिट्टी दी गई।

33 गिदोन के मरते ही इस्राएली फिर गए, और व्यभिचारिणी के समान बाल देवताओं के पीछे हो लिए, और बाल-बरीत को अपना देवता मान लिया।

34 और इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा को, जिसने उनको चारों ओर के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया था, स्मरण न रखा;

35 और न उन्होंने यरूबबाल अर्थात् गिदोन की उस सारी भलाई के अनुसार जो उसने इस्राएलियों के साथ की थी उसके घराने को प्रीति दिखाई।

† 8:24 ~~दो~~: बालियाँ वास्तव में नथ थीं। पूर्वी देशों में नथ पहनना प्रचलित था। ‡ 8:29 ~~जाकर~~: गिदोन का दूसरा नाम





26 तब एबेद का पुत्र गाल अपने भाइयों समेत शेकेम में आया; और शेकेम के मनुष्यों ने उसका भरोसा किया।

27 और उन्होंने मैदान में जाकर अपनी-अपनी दाख की बारियों के फल तोड़े और उनका रस रौंदा, और स्तुति का बलिदान कर अपने देवता के मन्दिर में जाकर खाने-पीने और अबीमेलेक को कोसने लगे।

28 तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, “अबीमेलेक कौन है? शेकेम कौन है कि हम उसके अधीन रहें? क्या वह यरूबाल का पुत्र नहीं? क्या जबूल उसका सेनानायक नहीं? शेकेम के पिता हमोर के लोगों के तो अधीन हो, परन्तु हम उसके अधीन क्यों रहें?”

29 और यह प्रजा मेरे वंश में होती तो क्या ही भला होता! तब तो मैं अबीमेलेक को दूर करता।” फिर उसने अबीमेलेक से कहा, “अपनी सेना की गिनती बढ़ाकर निकल आ।”

30 एबेद के पुत्र गाल की वे बातें सुनकर नगर के हाकिम जबूल का क्रोध भड़क उठा।

31 और उसने अबीमेलेक के पास छिपके दूतों से कहला भेजा, “एबेद का पुत्र गाल और उसके भाई शेकेम में आ के नगरवालों को तेरा विरोध करने को भड़का रहे हैं।

32 इसलिए तू अपने संगवालों समेत रात को उठकर मैदान में घात लगा।

33 और सवेरे सूर्य के निकलते ही उठकर इस नगर पर चढ़ाई करना; और जब वह अपने संगवालों समेत तेरा सामना करने को निकले तब जो तुझ से बन पड़े वही उससे करना।”

34 तब अबीमेलेक और उसके संग के सब लोग रात को उठ चार दल बाँधकर शेकेम के विरुद्ध घात में बैठ गए।

35 और एबेद का पुत्र गाल बाहर जाकर नगर के फाटक में खड़ा हुआ; तब अबीमेलेक और उसके संगी घात छोड़कर उठ खड़े हुए।

36 उन लोगों को देखकर गाल जबूल से कहने लगा, “देख, पहाड़ों की चोटियों पर से लोग उतरे आते हैं!” जबूल ने उससे कहा, “वह तो पहाड़ों की छाया है जो तुझे मनुष्यों के समान दिखाई देती है।”

37 गाल ने फिर कहा, “देख, लोग देश के बीचों बीच होकर उतरे आते हैं, और एक दल मोननीम नामक बांज वृक्ष के मार्ग से चला आता है।”

38 जबूल ने उससे कहा, “तेरी यह बात कहाँ रही, कि अबीमेलेक कौन है कि हम उसके अधीन रहें? ये तो वे

ही लोग हैं जिनको तूने निकम्मा जाना था; इसलिए अब निकलकर उनसे लड़।”

39 तब गाल शेकेम के पुरुषों का अगुआ हो बाहर निकलकर अबीमेलेक से लड़ा।

40 और अबीमेलेक ने उसको खदेड़ा, और वह अबीमेलेक के सामने से भागा; और नगर के फाटक तक पहुँचते-पहुँचते बहुत से घायल होकर गिर पड़े।

41 तब अबीमेलेक ~~27272727~~ में रहने लगा; और जबूल ने गाल और उसके भाइयों को निकाल दिया, और शेकेम में रहने न दिया।

42 दूसरे दिन लोग मैदान में निकल गए; और यह अबीमेलेक को बताया गया।

43 और उसने अपनी सेना के तीन दल बाँधकर मैदान में घात लगाई; और जब देखा कि लोग नगर से निकले आते हैं तब उन पर चढ़ाई करके उन्हें मार लिया।

44 अबीमेलेक अपने संग के दलों समेत आगे दौड़कर नगर के फाटक पर खड़ा हो गया, और दो दलों ने उन सब लोगों पर धावा करके जो मैदान में थे उन्हें मार डाला।

45 उसी दिन अबीमेलेक ने नगर से दिन भर लड़कर उसको ले लिया, और उसके लोगों को घात करके नगर को ढा दिया, और उस पर ~~2727 2727272727 27272727~~।

46 यह सुनकर शेकेम के गुम्मट के सब रहनेवाले एलबरीत के मन्दिर के गढ़ में जा घुसे।

47 जब अबीमेलेक को यह समाचार मिला कि शेकेम के गुम्मट के सब प्रधान लोग इकट्ठे हुए हैं,

48 तब वह अपने सब संगियों समेत सल्मोन नामक पहाड़ पर चढ़ गया; और हाथ में कुल्हाड़ी ले पेड़ों में से एक डाली काटी, और उसे उठाकर अपने कंधे पर रख ली। और अपने संगवालों से कहा, “जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम भी झटपट करो।”

49 तब उन सब लोगों ने भी एक-एक डाली काट ली, और अबीमेलेक के पीछे हो उनको गढ़ पर डालकर गढ़ में आग लगाई; तब शेकेम के गुम्मट के सब स्त्री पुरुष जो लगभग एक हजार थे मर गए।

50 तब अबीमेलेक ने तेबेस को जाकर उसके सामने डेरे खड़े करके उसको ले लिया।

51 परन्तु उस नगर के बीच एक दृढ़ गुम्मट था, इसलिए क्या स्त्री क्या पुरुष, नगर के सब लोग भागकर उसमें घुसे; और उसे बन्द करके गुम्मट की छत पर चढ़ गए।

52 तब अबीमेलेक गुम्मट के निकट जाकर उसके विरुद्ध लड़ने लगा, और गुम्मट के द्वार तक गया कि उसमें आग लगाए।

† 9:41 ~~27272727~~: अरुमा वह शहर है जो शेकेम से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर है ‡ 9:45 ~~2727 2727272727 27272727~~: अपनी घृणा और इच्छा व्यक्त करने के लिये कि विनाश के साथ वह फलवन्त भी न हो। नमक बाँझपन का प्रतीक था।

53 तब किसी स्त्री ने चक्की के ऊपर का पाट अबीमेलक के सिर पर डाल दिया, और उसकी खोपड़ी फट गई।

54 तब उसने झट अपने हथियारों के ढोनेवाले जवान को बुलाकर कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे मार डाल, ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय में कहने पाएँ, ‘उसको एक स्त्री ने घात किया।’” तब उसके जवान ने तलवार भोंक दी, और वह मर गया।

55 यह देखकर कि अबीमेलक मर गया है इस्राएली अपने-अपने स्थान को चले गए।

56 इस प्रकार जो दुष्ट काम अबीमेलक ने अपने सत्तर भाइयों को घात करके अपने पिता के साथ किया था, उसको परमेश्वर ने उसके सिर पर लौटा दिया;

57 और शेकेम के पुरुषों के भी सब दुष्ट काम परमेश्वर ने उनके सिर पर लौटा दिए, और यरूबबाल के पुत्र योताम का श्राप उन पर घट गया।

## 10

ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

1 अबीमेलक के बाद इस्राएल को छुड़ाने के लिये ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ, ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ\* का पुत्र था; और एप्रैम के पहाड़ी देश के शामीर नगर में रहता था।

2 वह तेईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। तब मर गया, और उसको शामीर में मिट्टी दी गई।

3 उसके बाद गिलादी याईर उठा, वह बाईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा।

4 और उसके तीस पुत्र थे जो गदहियों के तीस बच्चों पर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस नगर भी थे जो गिलाद देश में हैं, और आज तक हब्बोत्याईर कहलाते हैं।

5 और याईर मर गया, और उसको कामोन में मिट्टी दी गई।

6 तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, अर्थात् बाल देवताओं और अशतोरेत देवियों और अराम, सीदोन, मोआब, अम्मोनियों, और पलिशितियों के देवताओं की उपासना करने लगे; और यहोवा को त्याग दिया, और उसकी उपासना न की। (ⓂⓂⓂ. 106:36, ⓂⓂⓂⓂ. 4:1)

7 तब यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़का, और उसने उन्हें पलिशितियों और अम्मोनियों के अधीन कर दिया,

8 और ⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ये इस्राएलियों को सताते और पीसते रहे। वरन् यरदन पार एमोरियों के देश गिलाद में

रहनेवाले सब इस्राएलियों पर अठारह वर्ष तक अंधेर करते रहे।

9 अम्मोनी यहूदा और बिन्यामीन से और एप्रैम के घराने से लड़ने को यरदन पार जाते थे, यहाँ तक कि इस्राएल बड़े संकट में पड़ गया।

10 तब इस्राएलियों ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, “हमने जो अपने परमेश्वर को त्याग कर बाल देवताओं की उपासना की है, यह हमने तेरे विरुद्ध महापाप किया है।”

11 यहोवा ने इस्राएलियों से कहा, “क्या मैंने तुम को मिस्त्रियों, एमोरियों, अम्मोनियों, और पलिशितियों के हाथ से न छुड़ाया था?”

12 फिर जब सीदोनी, और अमालेकी, और माओनी लोगों ने तुम पर अंधेर किया; और तुम ने मेरी दुहाई दी, तब मैंने तुम को उनके हाथ से भी न छुड़ाया? (ⓂⓂⓂ. 106: 42, 43)

13 तो भी तुम ने मुझे त्याग कर पराए देवताओं की उपासना की है; इसलिए मैं फिर तुम को न छुड़ाऊँगा।

14 जाओ, अपने माने हुए देवताओं की दुहाई दो; तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएँ।” (ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ. 2:28, ⓂⓂⓂ. 10:3)

15 इस्राएलियों ने यहोवा से कहा, “हमने पाप किया है; इसलिए जो कुछ तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर; परन्तु अभी हमें छुड़ा।”

16 तब वे पराए देवताओं को अपने मध्य में से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे; और वह इस्राएलियों के कष्ट के कारण खेदित हुआ।

17 तब अम्मोनियों ने इकट्ठे होकर गिलाद में अपने डेरे डाले; और इस्राएलियों ने भी इकट्ठे होकर ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ में अपने डेरे डाले।

18 तब गिलाद के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे, “कौन पुरुष अम्मोनियों से संग्राम आरम्भ करेगा? वही गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा।”

## 11

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

1 यिप्तह नामक गिलादी बड़ा शूरवीर था, और वह वेश्या का बेटा था; और गिलाद से यिप्तह उत्पन्न हुआ था।

2 गिलाद की स्त्री के भी बेटे उत्पन्न हुए; और जब वे बड़े हो गए तब यिप्तह को यह कहकर निकाल दिया,

\* 10:1 ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ, ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ: दोनों इस्साकार भाग में परिवार के मुखिया थे। † 10:8 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: सम्भवतः अत्याचार का अन्तिम वर्ष जब अम्मोनियों ने यरदन पार की थी। ‡ 10:17 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: अर्थात् चौकसी गढ़, या निगरानी, इससे प्रगट होता है कि वह गिलाद पर्वत पर ऊँचाई में स्थित था और एक दृढ़ चौकी थी।



छेड़कर बुरा व्यवहार करता है; इसलिए यहोवा जो न्यायी है, वह इस्राएलियों और अम्मोनियों के बीच में आज न्याय करे।”

28 तो भी अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह की ये बातें न मानीं जिनको उसने कहला भेजा था।

29 तब यहोवा का आत्मा यिप्तह में समा गया, और वह गिलाद और मनश्शे से होकर गिलाद के मिस्ये में आया, और गिलाद के मिस्ये से होकर अम्मोनियों की ओर चला।

30 और यिप्तह ने यह कहकर यहोवा की मन्त्रत मानी, “यदि तू निःसन्देह अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे,

31 तो जब मैं कुशल के साथ अम्मोनियों के पास से लौट आऊँ तब जो कोई मेरे भेंट के लिये मेरे घर के द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा, और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊँगा।”

32 तब यिप्तह अम्मोनियों से लड़ने को उनकी ओर गया; और यहोवा ने उनको उसके हाथ में कर दिया।

33 और वह अरोएर से ले मिन्नीत तक, जो बीस नगर हैं, वरन् आबेलकरामीम तक जीतते-जीतते उन्हें बहुत बड़ी मार से मारता गया। और अम्मोनी इस्राएलियों से हार गए। (12:32)

34 जब यिप्तह मिस्या को अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे भेंट करने के लिये निकल आई; वह उसकी एकलौती थी; उसको छोड़ उसके न तो कोई बेटा था और न कोई बेटी।

35 उसको देखते ही उसने अपने कपड़े फाड़कर कहा, “हाय, मेरी बेटी! तूने कमर तोड़ दी, और तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में हो गई है; क्योंकि मैंने यहोवा को वचन दिया है, और उसे टाल नहीं सकता।”

36 उसने उससे कहा, “हे मेरे पिता, तूने जो यहोवा को वचन दिया है, तो जो बात तेरे मुँह से निकली है उसी के अनुसार मुझसे बर्ताव कर, क्योंकि यहोवा ने तेरे अम्मोनी शत्रुओं से तेरा बदला लिया है।”

37 फिर उसने अपने पिता से कहा, “मेरे लिये यह किया जाए, कि दो महीने तक मुझे छोड़े रह, कि मैं अपनी सहेलियों सहित जाकर पहाड़ों पर फिरती हुई अपने 12:1 पर रोती रहूँ।”

38 उसने कहा, “जा।” तब उसने उसे दो महीने की छुट्टी दी; इसलिए वह अपनी सहेलियों सहित चली गई, और पहाड़ों पर अपने कुँवारेपन पर रोती रही।

39 दो महीने के बीतने पर वह अपने पिता के पास लौट आई, और उसने उसके विषय में अपनी मानी हुई मन्त्रत

को पूरा किया। और उस कन्या ने पुरुष का मुँह कभी न देखा था। इसलिए इस्राएलियों में यह रीति चली

40 कि इस्राएली स्त्रियाँ प्रतिवर्ष यिप्तह गिलादी की बेटी का यश गाने को वर्ष में चार दिन तक जाया करती थीं।

## 12

12:1-12:12

1 तब एप्रैमी पुरुष इकट्ठे होकर सापोन को जाकर यिप्तह से कहने लगे, “जब तू अम्मोनियों से लड़ने को गया तब हमें संग चलने को क्यों नहीं बुलवाया? 12:1-12:12\*।”

2 यिप्तह ने उनसे कहा, “मेरा और मेरे लोगों का अम्मोनियों से बड़ा झगड़ा हुआ था; और जब मैंने तुम से सहायता माँगी, तब तुम ने मुझे उनके हाथ से नहीं बचाया।

3 तब यह देखकर कि तुम मुझे नहीं बचाते मैं 12:1-12:12+ अम्मोनियों के विरुद्ध चला, और यहोवा ने उनको मेरे हाथ में कर दिया; फिर तुम अब मुझसे लड़ने को क्यों चढ़ आए हो?”

4 तब यिप्तह गिलाद के सब पुरुषों को इकट्ठा करके एप्रैम से लड़ा, एप्रैम जो कहता था, “हे गिलादियों, तुम तो एप्रैम और मनश्शे के बीच रहनेवाले एप्रैमियों के भगोड़े हो,” और गिलादियों ने उनको मार लिया।

5 और गिलादियों ने यरदन का घाट उनसे पहले अपने वश में कर लिया। और जब कोई एप्रैमी भगोड़ा कहता, “मुझे पार जाने दो,” तब गिलाद के पुरुष उससे पूछते थे, “क्या तू एप्रैमी है?” और यदि वह कहता, “नहीं,”

6 तो वे उससे कहते, “अच्छा, शिब्बोलेत कह,” और वह कहता, “शिब्बोलेत,” क्योंकि उससे वह ठीक से बोला नहीं जाता था; तब वे उसको पकड़कर यरदन के घाट पर मार डालते थे। इस प्रकार उस समय बयालीस हजार एप्रैमी मारे गए।

7 यिप्तह छः वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। तब यिप्तह गिलादी मर गया, और उसको गिलाद के किसी नगर में मिट्टी दी गई।

8 उसके बाद बैतलहम का निवासी इबसान इस्राएल का न्याय करने लगा।

9 और उसके तीस बेटे हुए; और उसने अपनी तीस बेटियाँ बाहर विवाह दीं, और बाहर से अपने बेटों का विवाह करके तीस बहू ले आया। और वह इस्राएल का न्याय सात वर्ष तक करता रहा।

§ 11:37 12:1-12:12: इस्राएली कुँवारी के लिये: पत्नी एवं माता होना अस्तित्व का अन्त था। \* 12:1 12:1-12:12 12:1-12:12 12:1-12:12: जलाना मृत्युदण्ड की विधि और हताश युद्ध की विधि प्रतीत होती है। † 12:3 12:1-12:12 12:1-12:12 12:1-12:12 12:1-12:12: यह मुहावरा संकट की चरण सम्भावना को व्यक्त करता है जो जानते हुए लाया जाता है।

10 तब इबसान मर गया, और उसको बैतलहम में मिट्टी दी गई।

11 उसके बाद जबूलूनी एलोन इस्राएल का न्याय करने लगा; और वह इस्राएल का न्याय दस वर्ष तक करता रहा।

12 तब एलोन जबूलूनी मर गया, और उसको जबूलून के देश के अय्यालोन में मिट्टी दी गई।

13 उसके बाद पिरातोनी हिल्लेल का पुत्र अब्दोन इस्राएल का न्याय करने लगा।

14 और उसके चालीस बेटे और तीस पोते हुए, जो गदहियों के सत्तर बच्चों पर सवार हुआ करते थे। वह आठ वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा।

15 तब पिरातोनी हिल्लेल का पुत्र अब्दोन मर गया, और उसको एप्रैम के देश के पिरातोन में, जो अमालेकियों के पहाड़ी देश में है, मिट्टी दी गई।

### 13

□□□□□□ □□ □□□□□□

1 इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; इसलिए यहोवा ने उनको पलिशतियों के वश में □□□□□□ □□□□□□\* के लिये रखा।

2 दान के कुल का सोरावासी मानोह नामक एक पुरुष था, जिसकी पत्नी के बाँझ होने के कारण कोई पुत्र न था।

3 इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, “सुन, बाँझ होने के कारण तेरे बच्चा नहीं; परन्तु अब तू गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा। (□□□□□□ 1:31)

4 इसलिए अब सावधान रह, कि न तो तू दाखमधु या और किसी भाँति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए, (□□□□□□ 1:15)

5 क्योंकि तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा उत्पन्न होगा। और उसके सिर पर छुरा न फिरे, क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाज़ीर रहेगा; और इस्राएलियों को पलिशतियों के हाथ से छुड़ाने में वही हाथ लगाएगा।”

6 उस स्त्री ने अपने पति के पास जाकर कहा, “परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया था जिसका रूप परमेश्वर के दूत का सा अति भययोग्य था; और मैंने उससे न पूछा कि तू कहाँ का है? और न उसने मुझे अपना नाम बताया;

7 परन्तु उसने मुझसे कहा, ‘सुन तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा होगा; इसलिए अब न तो दाखमधु या और न किसी भाँति की मदिरा पीना, और न कोई अशुद्ध वस्तु

खाना, क्योंकि वह लड़का जन्म से मरण के दिन तक परमेश्वर का नाज़ीर रहेगा।’” (□□□□□□ 2:23)

8 तब मानोह ने यहोवा से यह विनती की, “हे प्रभु, विनती सुन, परमेश्वर का वह जन जिसे तूने भेजा था फिर हमारे पास आए, और हमें सिखाए कि जो बालक उत्पन्न होनेवाला है उससे हम क्या-क्या करें।”

9 मानोह की यह बात परमेश्वर ने सुन ली, इसलिए जब वह स्त्री मैदान में बैठी थी, और उसका पति मानोह उसके संग न था, तब परमेश्वर का वही दूत उसके पास आया।

10 तब उस स्त्री ने झट दौड़कर अपने पति को यह समाचार दिया, “जो पुरुष उस दिन मेरे पास आया था उसी ने मुझे दर्शन दिया है।”

11 यह सुनते ही मानोह उठकर अपनी पत्नी के पीछे चला, और उस पुरुष के पास आकर पूछा, “क्या तू वही पुरुष है जिसने इस स्त्री से बातें की थीं?” उसने कहा, “मैं वही हूँ।”

12 मानोह ने कहा, “जब तेरे वचन पूरे हो जाएँ तो, उस बालक का कैसा ढंग और उसका क्या काम होगा?”

13 यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, “जितनी वस्तुओं की चर्चा मैंने इस स्त्री से की थी उन सबसे यह परे रहे।

14 यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है न खाए, और न दाखमधु या और किसी भाँति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए; और जो आज्ञा मैंने इसको दी थी उसी को यह माने।”

15 मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, “हम तुझको रोक लें, कि तेरे लिये □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□\*।”

16 यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, “चाहे तू मुझे रोक रखे, परन्तु मैं तेरे भोजन में से कुछ न खाऊँगा; और यदि तू होमबलि करना चाहे तो यहोवा ही के लिये कर।” (मानोह तो न जानता था, कि यह यहोवा का दूत है।)

17 मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, “अपना नाम बता, इसलिए कि जब तेरी बातें पूरी हों तब हम तेरा आदरमान कर सकें।”

18 यहोवा के दूत ने उससे कहा, “मेरा नाम तो अद्भुत है, इसलिए तू उसे क्यों पूछता है?”

19 तब मानोह ने अन्नबलि समेत बकरी का एक बच्चा लेकर चट्टान पर यहोवा के लिये चढ़ाया तब उस दूत ने मानोह और उसकी पत्नी के देखते-देखते एक अद्भुत काम किया।

\* 13:1 □□□□□□ □□□□□□: पलिशतियों की प्रभुता शिमशोन के जन्म से पूर्व ही आरम्भ हो गई थी। (न्या.13:5) और शिमशोन के बीस वर्षीय युग में प्रभावी थी। (न्या.14:4, न्या.15:20) † 13:15 □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□: मानोह की भाषा में भी गिदोन के सदृश्य (न्या.6:18) सन्देश का संकेत है कि वह आगन्तुक अलौकिक नहीं।

20 अर्थात् जब लौ उस वेदी पर से आकाश की ओर उठ रही थी, तब यहोवा का दूत उस वेदी की लौ में होकर मानोह और उसकी पत्नी के देखते-देखते चढ़ गया; तब वे भूमि पर मुँह के बल गिरे।

21 परन्तु यहोवा के दूत ने मानोह और उसकी पत्नी को फिर कभी दर्शन न दिया। तब मानोह ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था।

22 तब मानोह ने अपनी पत्नी से कहा, “हम निश्चय मर जाएँगे, क्योंकि हमने परमेश्वर का दर्शन पाया है।”

23 उसकी पत्नी ने उससे कहा, “यदि यहोवा हमें मार डालना चाहता, तो हमारे हाथ से होमबलि और अन्नबलि ग्रहण न करता, और न वह ऐसी सब बातें हमको दिखाता, और न वह इस समय हमें ऐसी बातें सुनाता।”

24 और उस स्त्री के एक बेटा उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शिमशोन रखा; और वह बालक बढ़ता गया, और यहोवा उसको आशीष देता रहा।

25 और यहोवा का आत्मा सोरा और एश्ताओल के बीच महनेदान में उसको उभारने लगा।

## 14

1 शिमशोन तिम्नाह को गया, और तिम्नाह में एक पलिशती स्त्री को देखा।

2 तब उसने जाकर अपने माता पिता से कहा, “तिम्नाह में मैंने एक पलिशती स्त्री को देखा है, सो अब तुम <sup>1</sup>”

3 उसके माता पिता ने उससे कहा, “क्या तेरे भाइयों की बेटियों में, या हमारे सब लोगों में कोई स्त्री नहीं है, कि तू खतनारहित पलिशतियों में की स्त्री से विवाह करना चाहता है?” शिमशोन ने अपने पिता से कहा, “उसी से मेरा विवाह करा दे; क्योंकि मुझे वही अच्छी लगती है।”

4 उसके माता पिता न जानते थे कि <sup>2</sup>, कि वह पलिशतियों के विरुद्ध दाव ढूँढता है। उस समय तो पलिशती इस्राएल पर प्रभुता करते थे।

5 तब शिमशोन अपने माता पिता को संग लेकर तिम्नाह को चलकर तिम्नाह की दाख की बारी के पास पहुँचा, वहाँ उसके सामने एक जवान सिंह गरजने लगा।

6 तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तो भी उसने उसको ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े।

7 तब उसने जाकर उस स्त्री से बातचीत की; और वह शिमशोन को अच्छी लगी। <sup>3</sup> 11:33

8 कुछ दिनों के बीतने पर वह उसे लाने को लौट चला; और उस सिंह की लोथ देखने के लिये मार्ग से मुड़ गया, तो क्या देखा कि सिंह की लोथ में मधुमक्खियों का एक झुण्ड और मधु भी है।

9 तब वह उसमें से कुछ हाथ में लेकर खाते-खाते अपने माता पिता के पास गया, और उनको यह बिना बताए, कि मैंने इसको सिंह की लोथ में से निकाला है, कुछ दिया, और उन्होंने भी उसे खाया।

10 तब उसका पिता उस स्त्री के यहाँ गया, और शिमशोन ने जवानों की रीति के अनुसार वहाँ भोज दिया।

11 उसको देखकर वे उसके संग रहने के लिये तीस संगियों को ले आए।

12 शिमशोन ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक पहेली कहता हूँ; यदि तुम इस भोज के सातों दिनों के भीतर उसे समझकर अर्थ बता दो, तो मैं तुम को तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े दूँगा;

13 और यदि तुम उसे न बता सको, तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे।” उन्होंने उनसे कहा, “अपनी पहेली कह, कि हम उसे सुनें।”

14 उसने उनसे कहा, “खानेवाले में से खाना, और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली।” इस पहेली का अर्थ वे तीन दिन के भीतर न बता सके।

15 सातवें दिन उन्होंने शिमशोन की पत्नी से कहा, “अपने पति को फुसला कि वह हमें पहेली का अर्थ बताए, नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के घर समेत आग में जलाएँगे। क्या तुम लोगों ने हमारा धन लेने के लिये हमें नेवता दिया है? क्या यही बात नहीं है?”

16 तब शिमशोन की पत्नी यह कहकर उसके सामने रोने लगी, “तू तो मुझसे प्रेम नहीं, बैर ही रखता है; कि तूने एक पहेली मेरी जाति के लोगों से तो कही है, परन्तु मुझ को उसका अर्थ भी नहीं बताया।” उसने कहा, “मैंने उसे अपनी माता या पिता को भी नहीं बताया, फिर क्या मैं तुझको बता दूँ?”

17 भोज के सातों दिनों में वह स्त्री उसके सामने रोती रही; और सातवें दिन जब उसने उसको बहुत तंग किया; तब उसने उसको पहेली का अर्थ बता दिया। तब उसने उसे अपनी जाति के लोगों को बता दिया।

\* 14:2 <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup>





19 तब परमेश्वर ने लही में ओखली सा गड्ढा कर दिया, और उसमें से पानी निकलने लगा; जब शिमशोन ने पीया, तब उसके जी में जी आया, और वह फिर ताजा दम हो गया। इस कारण उस सोते का नाम एनहक्कोरे रखा गया, वह आज के दिन तक लही में है।

20 शिमशोन तो पलिशितयों के दिनों में बीस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा।

## 16

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 तब शिमशोन 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 को गया, और वहाँ एक वेश्या को देखकर उसके पास गया।

2 जब गाज़ावासियों को इसका समाचार मिला कि शिमशोन यहाँ आया है, तब उन्होंने उसको घेर लिया, और रात भर नगर के फाटक पर उसकी घात में लगे रहे; और यह कहकर रात भर चुपचाप रहे, कि भोर होते ही हम उसको घात करेंगे।

3 परन्तु शिमशोन आधी रात तक पड़ा रहा, और आधी रात को उठकर, उसने नगर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 उखाड़ लिया, और अपने कंधों पर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन के सामने है।

4 इसके बाद वह सोरेक नामक घाटी में रहनेवाली दलीला नामक एक स्त्री से प्रीति करने लगा।

5 तब पलिशितयों के सरदारों ने उस स्त्री के पास जा के कहा, “तू उसको फुसलाकर पूछ कि उसके महाबल का भेद क्या है, और कौन सा उपाय करके हम उस पर ऐसे प्रबल हों, कि उसे बाँधकर दबा रखें; तब हम तुझे ग्यारह-ग्यारह सौ टुकड़े चाँदी देंगे।”

6 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, “मुझे बता दे कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है, और किस रीति से कोई तुझे बाँधकर रख सकता है।”

7 शिमशोन ने उससे कहा, “यदि मैं सात ऐसी नई-नई ताँतों से बाँधा जाऊँ जो सुखाई न गई हों, तो मेरा बल घट जाएगा, और मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊँगा।”

8 तब पलिशितयों के सरदार दलीला के पास ऐसी नई-नई सात ताँतें ले गए जो सुखाई न गई थीं, और उनसे उसने शिमशोन को बाँधा।

9 उसके पास तो कुछ मनुष्य कोठरी में घात लगाए बैठे थे। तब उसने उससे कहा, “हे शिमशोन, पलिशती तेरी घात में है!” तब उसने ताँतों को ऐसा तोड़ा जैसा सन का सूत आग से छूते ही टूट जाता है। और उसके बल का भेद न खुला।

10 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, “सुन, तूने तो मुझसे छल किया, और झूठ कहा है; अब मुझे बता दे कि तू किस वस्तु से बन्ध सकता है।”

11 उसने उससे कहा, “यदि मैं ऐसी नई-नई रस्सियों से जो किसी काम में न आई हों कसकर बाँधा जाऊँ, तो मेरा बल घट जाएगा, और मैं साधारण मनुष्य के समान हो जाऊँगा।”

12 तब दलीला ने नई-नई रस्सियाँ लेकर और उसको बाँधकर कहा, “हे शिमशोन, पलिशती तेरी घात में है!” कितने मनुष्य उस कोठरी में घात लगाए हुए थे। तब उसने उनको सूत के समान अपनी भुजाओं पर से तोड़ डाला।

13 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, “अब तक तू मुझसे छल करता, और झूठ बोलता आया है; अब मुझे बता दे कि तू किस से बन्ध सकता है?” उसने कहा, “यदि तू मेरे सिर की सातों लटें ताने में बुने तो बन्ध सकूँगा।”

14 अतः उसने उसे खूँटी से जकड़ा। तब उससे कहा, “हे शिमशोन, पलिशती तेरी घात में है!” तब वह नींद से चौंक उठा, और खूँटी को धरन में से उखाड़कर उसे ताने समेत ले गया।

15 तब दलीला ने उससे कहा, “तेरा मन तो मुझसे नहीं लगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ? तूने ये तीनों बार मुझसे छल किया, और मुझे नहीं बताया कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है।”

16 इस प्रकार जब उसने हर दिन बातें करते-करते उसको तंग किया, और यहाँ तक हठ किया, कि उसकी नाकों में दम आ गया,

17 तब उसने अपने मन का सारा भेद खोलकर उससे कहा, “मेरे सिर पर छुरा कभी नहीं फिरा, क्योंकि मैं माँ के पेट ही से परमेश्वर का नाज़ीर हूँ, यदि मैं मुँड़ा जाऊँ, तो मेरा बल इतना घट जाएगा, कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊँगा।”

18 यह देखकर, कि उसने अपने मन का सारा भेद मुझसे कह दिया है, दलीला ने पलिशितयों के सरदारों के पास कहला भेजा, “अब की बार फिर आओ, क्योंकि उसने अपने मन का सब भेद मुझे बता दिया है।” तब पलिशितयों के सरदार हाथ में रुपया लिए हुए उसके पास गए।

19 तब उसने उसको अपने घुटनों पर सुला रखा; और एक मनुष्य बुलवाकर उसके सिर की सातों लटें मुँड़वा डाली। और वह उसको दबाने लगी, और वह निर्बल हो गया।

\* 16:1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 एल्यूथिरोपोलिस से लगभग 8 घंटे की यात्रा और पलिशितयों का एक दृढ़ गढ़। † 16:3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 फाटक को खोलने का प्रयास किए बिना उसने फाटक को पूरा का पूरा उखाड़ दिया।

20 तब उसने कहा, “हे शिमशोन, पलिशती तेरी घात में है!” तब वह चौंककर सोचने लगा, “मैं पहले के समान बाहर जाकर झटकूंगा।” वह तो न जानता था, कि यहोवा उसके पास से चला गया है।

21 तब पलिशतियों ने उसको पकड़कर [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]#, और उसे गाज़ा को ले जा के पीतल की बेडियों से जकड़ दिया; और वह बन्दीगृह में चक्की पीसने लगा।

22 उसके सिर के बाल मुँण्ड जाने के बाद फिर बढ़ने लगे।

23 तब पलिशतियों के सरदार अपने दागोन नामक देवता के लिये बड़ा यज्ञ, और आनन्द करने को यह कहकर इकट्ठे हुए, “हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे हाथ में कर दिया है।”

24 और जब लोगों ने उसे देखा, तब यह कहकर अपने देवता की स्तुति की, “हमारे देवता ने हमारे शत्रु और हमारे देश का नाश करनेवाले को, जिसने हम में से बहुतों को मार भी डाला, हमारे हाथ में कर दिया है।”

25 जब उनका मन मगन हो गया, तब उन्होंने कहा, “शिमशोन को बुलवा लो, कि वह हमारे लिये तमाशा करे।” इसलिए शिमशोन बन्दीगृह में से बुलवाया गया, और उनके लिये तमाशा करने लगा, और खम्भों के बीच खड़ा कर दिया गया।

26 तब शिमशोन ने उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े था कहा, “मुझे उन खम्भों को, जिनसे घर सम्भला हुआ है छूने दे, कि मैं उस पर टेक लगाऊँ।”

27 वह घर तो स्त्री पुरुषों से भरा हुआ था; पलिशतियों के सब सरदार भी वहाँ थे, और छत पर कोई तीन हजार स्त्री और पुरुष थे, जो शिमशोन को तमाशा करते हुए देख रहे थे।

28 तब शिमशोन ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, “हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले; हे परमेश्वर, अब की बार मुझे बल दे, कि मैं पलिशतियों से अपनी दोनों आँखों का एक ही बदला लूँ।”

29 तब शिमशोन ने उन दोनों बीचवाले खम्भों को जिनसे घर सम्भला हुआ था, पकड़कर एक पर तो दाहिने हाथ से और दूसरे पर बाएँ हाथ से बल लगा दिया।

30 और शिमशोन ने कहा, “पलिशतियों के संग मेरा प्राण भी जाए।” और वह अपना सारा बल लगाकर झुका; तब वह घर सब सरदारों और उसमें के सारे लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार जिनको उसने मरते समय मार डाला वे उनसे भी अधिक थे जिन्हें उसने अपने जीवन में मार डाला था। ([2][2][2][2]. 11:32)

31 तब उसके भाई और उसके पिता के सारे घराने के लोग आए, और उसे उठाकर ले गए, और सोरा और एशताओल के मध्य उसके पिता मानोह की कब्र में मिट्टी दी। उसने इस्राएल का न्याय बीस वर्ष तक किया था।

## 17

[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2][2][2][2][2][2][2]

1 एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका नामक एक पुरुष था।

2 उसने अपनी माता से कहा, “जो ग्यारह सौ टुकड़े चाँदी तुझ से ले लिए गए थे, जिनके विषय में तूने मेरे सुनते भी श्राप दिया था, वे मेरे पास हैं; मैंने ही उनको ले लिया था।” उसकी माता ने कहा, “मेरे बेटे पर यहोवा की ओर से आशीष हो।”

3 जब उसने वे ग्यारह सौ टुकड़े चाँदी अपनी माता को वापस दिए; तब माता ने कहा, “मैं अपनी ओर से अपने बेटे के लिये यह रुपया यहोवा को निश्चय अर्पण करती हूँ ताकि उससे एक मूरत खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई जाए, इसलिए अब मैं उसे तुझको वापस देती हूँ।”

4 जब उसने वह रुपया अपनी माता को वापस दिया, तब माता ने दो सौ टुकड़े ढलवैयों को दिए, और उसने उनसे एक मूर्ति खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई; और वे मीका के घर में रहीं।

5 मीका के पास एक देवस्थान था, तब उसने एक एपोद, और कई एक गृहदेवता बनवाए; और अपने एक बेटे का संस्कार करके उसे अपना पुरोहित ठहरा लिया।

6 उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।

7 यहूदा के कुल का एक जवान लेवीय यहूदा के बैतलहम में परदेशी होकर रहता था।

8 वह यहूदा के बैतलहम नगर से इसलिए निकला, कि जहाँ कहीं स्थान मिले वहाँ जा रहे। चलते-चलते वह एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर पर आ निकला।

9 मीका ने उससे पूछा, “तू कहाँ से आता है?” उसने कहा, “मैं तो यहूदा के बैतलहम से आया हुआ एक लेवीय हूँ, और इसलिए चला जाता हूँ, कि जहाँ कहीं ठिकाना मुझे मिले वहीं रहूँ।”

10 मीका ने उससे कहा, “मेरे संग रहकर मेरे लिये पिता और पुरोहित बन, और मैं तुझे प्रतिवर्ष दस टुकड़े रूपे, और एक जोड़ा कपड़ा, और भोजनवस्तु दिया करूँगा; तब वह लेवीय भीतर गया।

‡ 16:21 [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]: उन्होंने सोचा कि अब वह आगे को कोई परेशानी खड़ी नहीं करेगा और वे अपनी विजय एवं प्रतिकार को आगे बढ़ा पाएँगे।



## 19

20 तब पुरोहित प्रसन्न हुआ, इसलिए वह एपोद, गृहदेवता, और खुदी हुई मूरत को लेकर उन लोगों के संग चला गया।

21 तब वे मुझे, और बाल-बच्चों, पशुओं, और सामान को अपने आगे करके चल दिए।

22 जब वे मीका के घर से दूर निकल गए थे, तब जो मनुष्य मीका के घर के पासवाले घरों में रहते थे उन्होंने इकट्ठे होकर दानियों को जा लिया।

23 और दानियों को पुकारा, तब उन्होंने मुँह फेर के मीका से कहा, “तुझे क्या हुआ कि तू इतना बड़ा दल लिए आता है?”

24 उसने कहा, “तुम तो मेरे बनवाए हुए देवताओं और पुरोहित को ले चले हो; फिर मेरे पास क्या रह गया? तो तुम मुझसे क्यों पूछते हो कि तुझे क्या हुआ है?”  
(**21:27-31:30**)

25 दानियों ने उससे कहा, “तेरा बोल हम लोगों में सुनाई न दे, कहीं ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम लोगों पर प्रहार करें और तू अपना और अपने घर के लोगों के भी प्राण को खो दे।”

26 तब दानियों ने अपना मार्ग लिया; और मीका यह देखकर कि वे मुझसे अधिक बलवन्त हैं फिरके अपने घर लौट गया।

27 तब वे मीका के बनवाए हुए पदार्थों और उसके पुरोहित को साथ ले लैश के पास आए, जिसके लोग शान्ति से और बिना खटके रहते थे, और उन्होंने उनको तलवार से मार डाला, और नगर को आग लगाकर फूँक दिया।

28 और कोई बचानेवाला न था, क्योंकि वह सीदोन से दूर था, और वे और मनुष्यों से कोई व्यवहार न रखते थे। और वह बेत्रहोब की तराई में था। तब उन्होंने नगर को दृढ़ किया, और उसमें रहने लगे।

29 और उन्होंने उस नगर का नाम इस्राएल के एक पुत्र अपने मूलपुरुष दान के नाम पर दान रखा; परन्तु पहले तो उस नगर का नाम लैश था।

30 तब दानियों ने उस खुदी हुई मूरत को खड़ा कर लिया; और देश की बंधुआई के समय वह **21:27-31:30** जो गेशोम का पुत्र और मूसा का पोता था, वह और उसके वंश के लोग दान गोत्र के पुरोहित बने रहे। (**21:27-31:30**)

31 और जब तक परमेश्वर का भवन शीलो में बना रहा, तब तक वे मीका की खुदवाई हुई मूरत को स्थापित किए रहे। (**21:27-31:30**)

**21:27-31:30**

1 उन दिनों में जब इस्राएलियों का कोई राजा न था, तब एक लेवीय पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर परदेशी होकर रहता था, जिसने यहूदा के बैतलहम में की **21:27-31:30**\* रख ली थी।

2 उसकी रखैल व्यभिचार करके यहूदा के बैतलहम को अपने पिता के घर चली गई, और चार महीने वहीं रही।

3 तब उसका पति अपने साथ एक सेवक और दो गदहे लेकर चला, और उसके यहाँ गया, कि उसे समझा बुझाकर ले आए। वह उसे अपने पिता के घर ले गई, और उस जवान स्त्री का पिता उसे देखकर उसकी भेंट से आनन्दित हुआ।

4 तब उसके ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने विनती करके उसे रोक लिया, और वह तीन दिन तक उसके पास रहा; इसलिए वे वहाँ खाते पीते टिके रहे।

5 चौथे दिन जब वे भोर को सवेरे उठे, और वह चलने को हुआ; तब स्त्री के पिता ने अपने दामाद से कहा, “एक टुकड़ा रोटी खाकर अपना जी ठंडा कर, तब तुम लोग चले जाना।”

6 तब उन दोनों ने बैठकर संग-संग खाया पिया; फिर स्त्री के पिता ने उस पुरुष से कहा, “और एक रात टिके रहने को प्रसन्न हो और आनन्द कर।”

7 वह पुरुष विदा होने को उठा, परन्तु उसके ससुर ने विनती करके उसे दबाया, इसलिए उसने फिर उसके यहाँ रात बिताई।

8 पाँचवें दिन भोर को वह तो विदा होने को सवेरे उठा; परन्तु स्त्री के पिता ने कहा, “अपना जी ठंडा कर, और तुम दोनों दिन ढलने तक रुके रहो।” तब उन दोनों ने रोटी खाई।

9 जब वह पुरुष अपनी रखैल और सेवक समेत विदा होने को उठा, तब उसके ससुर अर्थात् स्त्री के पिता ने उससे कहा, “देख दिन तो ढल चला है, और साँझ होने पर है; इसलिए तुम लोग रात भर टिके रहो। देख, दिन तो डूबने पर है; इसलिए यहीं आनन्द करता हुआ रात बिता, और सवेरे को उठकर अपना मार्ग लेना, और अपने डेरे को चले जाना।”

10 परन्तु उस पुरुष ने उस रात को टिकना न चाहा, इसलिए वह उठकर विदा हुआ, और काठी बाँधे हुए दो गदहे और अपनी रखैल संग लिए हुए यबूस के सामने तक (जो यरूशलेम कहलाता है) पहुँचा।

† **18:30** **21:27-31:30**: मूसा का पुत्र गेशोम. (निर्ग.2:22), जिसका पुत्र या वंशज योनातान था। योनातान के वंशज दान के गोत्र के पुरोहित थे और बन्धुआई तक रहे (2राजा.15:29, 2 राजा.17:6) और यह खुदी हुई मूर्ति दाऊद के युग तक उनके अधिकार में थी। \* **19:1** **21:27-31:30**: रखैल एक प्रकार की पत्नी ही होती थी परन्तु पत्नी के अधिकार उसे प्राप्त नहीं थे। (न्या 19:34)

11 वे यबूस के पास थे, और दिन बहुत ढल गया था, कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा, “आ, हम यबूसियों के इस नगर में मुड़कर टिकें।”

12 उसके स्वामी ने उससे कहा, “हम पराए नगर में जहाँ कोई इस्राएली नहीं रहता, न उतरेंगे; गिबा तक बढ़ जाएँगे।”

13 फिर उसने अपने सेवक से कहा, “आ, हम उधर के स्थानों में से किसी के पास जाएँ, हम गिबा या रामाह में रात बिताएँ।”

14 और वे आगे की ओर चले; और उनके बिन्यामीन के गिबा के निकट पहुँचते-पहुँचते सूर्य अस्त हो गया,

15 इसलिए वे गिबा में टिकने के लिये उसकी ओर मुड़ गए। और वह भीतर जाकर उस नगर के चौक में बैठ गया, क्योंकि किसी ने उनको अपने घर में न टिकाया।

16 तब एक बूढ़ा अपने खेत के काम को निपटाकर साँझ को चला आया; वह तो एप्रैम के पहाड़ी देश का था, और गिबा में परदेशी होकर रहता था; परन्तु उस स्थान के लोग बिन्यामीनी थे।

17 उसने आँखें उठाकर उस यात्री को नगर के चौक में बैठे देखा; और उस बूढ़े ने पूछा, “तू किधर जाता, और कहाँ से आता है?”

18 उसने उससे कहा, “हम लोग तो ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~ से आकर एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर जाते हैं, मैं तो वहीं का हूँ; और यहूदा के बैतलहम तक गया था, और अब यहोवा के भवन को जाता हूँ, परन्तु कोई मुझे अपने घर में नहीं टिकाता।

19 हमारे पास तो गदहों के लिये पुआल और चारा भी है, और मेरे और तेरी इस दासी और इस जवान के लिये भी जो तेरे दासों के संग है रोटी और दाखमधु भी है; हमें किसी वस्तु की घटी नहीं है।”

20 बूढ़े ने कहा, “तेरा कल्याण हो; तेरे प्रयोजन की सब वस्तुएँ मेरे सिर हों; परन्तु रात को चौक में न बिता।”

21 तब वह उसको अपने घर ले चला, और गदहों को चारा दिया; तब वे पाँव धोकर खाने-पीने लगे।

22 वे आनन्द कर रहे थे, कि नगर के लुच्चों ने घर को घेर लिया, और द्वार को खटखटा-खटखटाकर घर के उस बूढ़े स्वामी से कहने लगे, “जो पुरुष तेरे घर में आया, उसे बाहर ले आ, कि हम उससे भोग करें।”

23 घर का स्वामी उनके पास बाहर जाकर उनसे कहने लगा, “नहीं, नहीं, हे मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो;

~~इससे ऐसी मूर्खता का काम मत करो।~~

24 देखो, यहाँ मेरी कुंवारी बेटी है, और उस पुरुष की रखैल भी है; उनको मैं बाहर ले आऊँगा। और उनका पत-पानी लो तो लो, और उनसे तो जो चाहो सो करो; परन्तु इस पुरुष से ऐसी मूर्खता का काम मत करो।”

25 परन्तु उन मनुष्यों ने उसकी नमानी। तब उस पुरुष ने अपनी रखैल को पकड़कर उनके पास बाहर कर दिया; और उन्होंने उससे कुकर्म किया, और रात भर क्या भोर तक उससे लीलाक्रीडा करते रहे। और पौ फटते ही उसे छोड़ दिया।

26 तब वह स्त्री पौ फटते ही जा के उस मनुष्य के घर के द्वार पर जिसमें उसका पति था गिर गई, और उजियाले के होने तक वहीं पड़ी रही।

27 सवेरे जब उसका पति उठ, घर का द्वार खोल, अपना मार्ग लेने को बाहर गया, तो क्या देखा, कि उसकी रखैल घर के द्वार के पास डेवढी पर हाथ फैलाए हुए पड़ी है।

28 उसने उससे कहा, “उठ हम चलें।” जब कोई उत्तर न मिला, तब वह उसको गदहे पर लादकर अपने स्थान को गया।

29 जब वह अपने घर पहुँचा, तब छूरी ले रखैल को अंग-अंग करके काटा; और उसे बारह टुकड़े करके इस्राएल के देश में भेज दिया।

30 जितनों ने उसे देखा, वे सब आपस में कहने लगे, “इस्राएलियों के मिस्र देश से चले आने के समय से लेकर आज के दिन तक ऐसा कुछ कभी नहीं हुआ, और न देखा गया; अतः इस पर सोचकर सम्मति करो, और बताओ।”

## 20

~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~

1 तब दान से लेकर बेशेबा तक के सब इस्राएली और गिलाद के लोग भी निकले, और उनकी मण्डली एकमत होकर ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~\* यहोवा के पास इकट्ठी हुई।

2 और सारी प्रजा के प्रधान लोग, वरन् सब इस्राएली गोत्रों के लोग जो चार लाख तलवार चलानेवाले प्यादे थे, परमेश्वर की प्रजा की सभा में उपस्थित हुए।

3 (बिन्यामीनियों ने तो सुना कि इस्राएली मिस्र को आए हैं।) और इस्राएली पूछने लगे, “हम से कहो, यह बुराई कैसे हुई?”

† 19:18 ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~: सम्भवतः शीलो यह लेवी सम्भवतः उनमें से एक था जो मिलापवाले तम्बू में सेवा करते थे। उसके दो गधे और सेवक से प्रगत होता है कि उसकी आर्थिक परिस्थिति अच्छी थी। ‡ 19:23 ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~: वह अतिथि-सत्कार के पवित्र अधिकारों की दुहाई देता है। \* 20:1 ~~इस्राएल के~~ ~~इस्राएल के~~: इसमें मिलापवाले तम्बू का विद्यमान होना अभिप्रेत है (न्या.11:1) बिन्यामीन के क्षेत्र में मिस्र। (यहो.18:26)

4 उस मार डाली हुई स्त्री के लेवीय पति ने उत्तर दिया, “मैं अपनी रखैल समेत बिन्यामीन के गिबा में टिकने को गया था।

5 तब गिबा के पुरुषों ने मुझ पर चढ़ाई की, और रात के समय घर को घेर के मुझे घात करना चाहा; और मेरी रखैल से इतना कुकर्म किया कि वह मर गई।

6 तब मैंने अपनी रखैल को लेकर टुकड़े-टुकड़े किया, और इस्राएलियों के भाग के सारे देश में भेज दिया, उन्होंने तो इस्राएल में महापाप और मूर्खता का काम किया है।

7 सुनो, हे इस्राएलियों, सब के सब देखो, और यहीं अपनी सम्मति दो।”

8 तब सब लोग एक मन हो, उठकर कहने लगे, “न तो हम में से कोई अपने डेरे जाएगा, और न कोई अपने घर की ओर मुड़ेगा।

9 परन्तु अब हम गिबा से यह करेंगे, अर्थात् हम चिट्ठी डाल डालकर उस पर चढ़ाई करेंगे,

10 और हम सब इस्राएली गोत्रों में सौ पुरुषों में से दस, और हजार पुरुषों में से एक सौ, और दस हजार में से एक हजार पुरुषों को ठहराएँ, कि वे सेना के लिये भोजनवस्तु पहुँचाएँ; इसलिए कि हम बिन्यामीन के गिबा में पहुँचकर उसको उस मूर्खता का पूरा फल भुगता सके जो उन्होंने इस्राएल में की है।”

11 तब सब इस्राएली पुरुष उस नगर के विरुद्ध एक पुरुष की समान संगठित होकर इकट्ठे हो गए।

12 और इस्राएली गोत्रियों ने बिन्यामीन के सारे गोत्रियों में कितने मनुष्य यह, पूछने को भेजे, “यह क्या बुराई है जो तुम लोगों में की गई है?”

13 अब उन गिबावासी लुच्चों को हमारे हाथ कर दो, कि हम उनको जान से मार के इस्राएल में से बुराई का नाश करें।” परन्तु बिन्यामीनियों ने अपने भाई इस्राएलियों की मानने से इन्कार किया।

14 और बिन्यामीनी अपने-अपने नगर में से आकर गिबा में इसलिए इकट्ठे हुए, कि इस्राएलियों से लड़ने को निकलें।

15 और उसी दिन गिबावासी पुरुषों को छोड़, जिनकी गिनती सात सौ चुने हुए पुरुष ठहरी, और नगरों से आए हुए तलवार चलानेवाले बिन्यामीनियों की गिनती छब्बीस हजार पुरुष ठहरी।

16 इन सब लोगों में से सात सौ बयंहत्थे चुने हुए पुरुष थे, जो सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल भर भी न चूकते थे।

17 और बिन्यामीनियों को छोड़ इस्राएली पुरुष चार लाख तलवार चलानेवाले थे; ये सब के सब योद्धा थे।

18 सब इस्राएली उठकर बेतेल को गए, और यह कहकर परमेश्वर से सलाह ली, और इस्राएलियों ने पूछा, “हम में से कौन बिन्यामीनियों से लड़ने को पहले चढ़ाई करे?” यहोवा ने कहा, “यहूदा पहले चढ़ाई करे।”

19 तब इस्राएलियों ने सवेरे को उठकर गिबा के सामने डेरे डाले।

20 और इस्राएली पुरुष बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल गए; और इस्राएली पुरुषों ने उससे लड़ने को गिबा के विरुद्ध पाँति बाँधी

21 तब बिन्यामीनियों ने गिबा से निकल उसी दिन बाईस हजार इस्राएली पुरुषों को मारकर मिट्टी में मिला दिया।

22 तो भी इस्राएली पुरुषों ने हियाव बाँधकर के उसी स्थान में जहाँ उन्होंने पहले दिन पाँति बाँधी थी, फिर पाँति बाँधी

23 और इस्राएली जाकर साँझ तक यहोवा के सामने रोते रहे; और यह कहकर यहोवा से पूछा, “क्या हम अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को फिर पास जाएँ?” यहोवा ने कहा, “हाँ, उन पर चढ़ाई करो।”

24 तब दूसरे दिन इस्राएली बिन्यामीनियों के निकट पहुँचे।

25 तब बिन्यामीनियों ने दूसरे दिन उनका सामना करने को गिबा से निकलकर फिर अठारह हजार इस्राएली पुरुषों को मारकर, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे, मिट्टी में मिला दिया।

26 तब सब इस्राएली, वरन् सब लोग बेतेल को गए; और रोते हुए यहोवा के सामने बैठे रहे, और उस दिन ~~26:26-27~~, और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।

27 और इस्राएलियों ने यहोवा से सलाह ली (उस समय परमेश्वर का वाचा का सन्दूक वहीं था,

28 और पीनहास, जो हारून का पोता, और एलीआजर का पुत्र था उन दिनों में उसके सामने हाजिर रहा करता था।) उन्होंने पूछा, “क्या हम एक और बार अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को निकलें, या उनको छोड़ दें?” यहोवा ने कहा, “चढ़ाई कर; क्योंकि कल मैं उनको तेरे हाथ में कर दूँगा।”

29 तब इस्राएलियों ने गिबा के चारों ओर लोगों को घात में बैठाया।

30 तीसरे दिन इस्राएलियों ने बिन्यामीनियों पर फिर चढ़ाई की, और पहले के समान गिबा के विरुद्ध पाँति बाँधी

† 20:26 ~~26:26-27~~: इब्रानियों में उपवास तोड़ने का समय संघ्याकाल था।

31 तब बिन्यामीनी उन लोगों का सामना करने को निकले, और नगर के पास से खींचे गए; और जो दो सड़क, एक बेतेल को और दूसरी गिबा को गई है, उनमें लोगों को पहले के समान मारने लगे, और मैदान में कोई तीस इस्राएली मारे गए।

32 बिन्यामीनी कहने लगे, “वे पहले के समान हम से मारे जाते हैं।” परन्तु इस्राएलियों ने कहा, “हम भागकर उनको नगर में से सड़कों में खींच ले आएँ।”

33 तब सब इस्राएली पुरुषों ने अपने स्थान से उठकर बालतामार में पाँति बाँधी; और घात में बैठे हुए इस्राएली अपने स्थान से, अर्थात् मारेगेवा से अचानक निकले।

34 तब सब इस्राएलियों में से छाँटे हुए दस हजार पुरुष गिबा के सामने आए, और घोर लड़ाई होने लगी; परन्तु वे न जानते थे कि हम पर विपत्ति अभी पड़ना चाहती है।

35 तब यहोवा ने बिन्यामीनियों को इस्राएल से हरवा दिया, और उस दिन इस्राएलियों ने पच्चीस हजार एक सौ बिन्यामीनी पुरुषों को नाश किया, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे।

36 तब बिन्यामीनियों ने देखा कि हम हार गए। और इस्राएली पुरुष उन घातकों का भरोसा करके जिन्हें उन्होंने गिबा के पास बैठाया था बिन्यामीनियों के सामने से चले गए।

37 परन्तु घातक लोग फुर्ती करके गिबा पर झपट गए; और घातकों ने आगे बढ़कर सारे नगर को तलवार से मारा।

38 इस्राएली पुरुषों और घातकों के बीच तो यह चिन्ह ठहराया गया था, कि वे नगर में से बहुत बड़ा धुएँ का खम्भा उठाए।

39 इस्राएली पुरुष तो लड़ाई में हटने लगे, और बिन्यामीनियों ने यह कहकर कि निश्चय वे पहली लड़ाई के समान हम से हारे जाते हैं, इस्राएलियों को मार डालने लगे, और तीस एक पुरुषों को घात किया।

40 परन्तु जब वह धुएँ का खम्भा नगर में से उठने लगा, तब बिन्यामीनियों ने अपने पीछे जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि नगर का नगर धुआँ होकर आकाश की ओर उड़ रहा है।

41 तब इस्राएली पुरुष घूमे, और बिन्यामीनी पुरुष यह देखकर घबरा गए, कि हम पर विपत्ति आ पड़ी है।

42 इसलिए उन्होंने इस्राएली पुरुषों को पीठ दिखाकर ~~लिया; परन्तु लड़ाई उनसे होती ही रही, और जो अन्य नगरों में से आए थे उनको इस्राएली रास्ते में नाश करते गए।~~

43 उन्होंने बिन्यामीनियों को घेर लिया, और उन्हें खदेड़ा, वे मनुहा में वरन् गिबा के पूर्व की ओर तक उन्हें लताड़ते गए।

44 और बिन्यामीनियों में से अठारह हजार पुरुष जो सब के सब शूरवीर थे मारे गए।

45 तब वे घूमकर जंगल में की रिम्मोन नामक चट्टान की ओर तो भाग गए; परन्तु इस्राएलियों ने उनमें से पाँच हजार को चुन-चुनकर सड़कों में मार डाला; फिर गिदोम तक उनके पीछे पड़के उनमें से दो हजार पुरुष मार डाले।

46 तब बिन्यामीनियों में से जो उस दिन मारे गए वे पच्चीस हजार तलवार चलानेवाले पुरुष थे, और ये सब शूरवीर थे।

47 परन्तु छः सौ पुरुष घूमकर जंगल की ओर भागे, और रिम्मोन नामक चट्टान में पहुँच गए, और चार महीने वहीं रहे।

48 तब इस्राएली पुरुष लौटकर बिन्यामीनियों पर लपके और नगरों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जो कुछ मिला, सब को तलवार से नाश कर डाला। और जितने नगर उन्हें मिले उन सभी को आग लगाकर फूँक दिया।

## 21

~~लिया; परन्तु लड़ाई उनसे होती ही रही, और जो अन्य नगरों में से आए थे उनको इस्राएली रास्ते में नाश करते गए।~~

1 इस्राएली पुरुषों ने मिस्र में शपथ खाकर कहा था, “हम में कोई अपनी बेटी का किसी बिन्यामीनी से विवाह नहीं करेगा।”

2 वे बेतेल को जाकर साँझ तक परमेश्वर के सामने बैठे रहे, और फूट फूटकर बहुत रोते रहे।

3 और कहते थे, “हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, इस्राएल में ऐसा क्यों होने पाया, कि आज इस्राएल में एक गोत्र की घटी हुई है?”

4 फिर दूसरे दिन उन्होंने सवेरे उठ वहाँ वेदी बनाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।

5 तब इस्राएली पूछने लगे, “इस्राएल के सारे गोत्रों में से कौन है जो यहोवा के पास सभा में नहीं आया था?” उन्होंने तो भारी शपथ खाकर कहा था, “जो कोई मिस्र को यहोवा के पास न आए वह निश्चय मार डाला जाएगा।”

6 तब इस्राएली अपने भाई बिन्यामीन के विषय में यह कहकर पछताने लगे, “आज इस्राएल में से एक गोत्र कट गया है।”

‡ 20:42 ~~लिया; परन्तु लड़ाई उनसे होती ही रही, और जो अन्य नगरों में से आए थे उनको इस्राएली रास्ते में नाश करते गए।~~ यरीहो से बेतेल तक का जंगल।

7 हमने जो यहोवा की शपथ खाकर कहा है, कि हम उनसे अपनी किसी बेटी का विवाह नहीं करेंगे, इसलिए बचे हुएों को स्त्रियाँ मिलने के लिये क्या करें?”

8 जब उन्होंने यह पूछा, “इस्राएल के गोत्रों में से कौन है जो मिस्र को यहोवा के पास न आया था?” तब यह मालूम हुआ, कि गिलादी याबेश से कोई छावनी में सभा को न आया था।

9 अर्थात् जब लोगों की गिनती की गई, तब यह जाना गया कि गिलादी याबेश के निवासियों में से कोई यहाँ नहीं है।

10 इसलिए मण्डली ने <sup>21:10</sup> <sup>21:10</sup> <sup>21:10</sup> को वहाँ यह आज्ञा देकर भेज दिया, “तुम जाकर स्त्रियों और बाल-बच्चों समेत गिलादी याबेश को तलवार से नाश करो।

11 और तुम्हें जो करना होगा वह यह है, कि सब पुरुषों को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो उनका सत्यानाश कर डालना।”

12 और उन्हें गिलादी याबेश के निवासियों में से चार सौ जवान कुमारियाँ मिलीं जिन्होंने पुरुष का मुँह नहीं देखा था; और उन्हें वे शीलो को जो कनान देश में है छावनी में ले आए।

13 तब सारी मण्डली ने उन बिन्यामीनियों के पास जो रिम्मोन नामक चट्टान पर थे कहला भेजा, और उनसे संधि की घोषणा की।

14 तब बिन्यामीन उसी समय लौट गए; और उनको वे स्त्रियाँ दी गईं जो गिलादी याबेश की स्त्रियों में से जीवित छोड़ी गई थीं; तो भी वे उनके लिये थोड़ी थीं।

15 तब लोग बिन्यामीन के विषय फिर यह कहकर पछताये, कि यहोवा ने इस्राएल के गोत्रों में घटी की है।

16 तब मण्डली के वृद्ध लोगों ने कहा, “बिन्यामीनी स्त्रियाँ नाश हुई हैं, तो बचे हुए पुरुषों के लिये स्त्री पाने का हम क्या उपाय करें?”

17 फिर उन्होंने कहा, “बचे हुए बिन्यामीनियों के लिये कोई भाग चाहिये, ऐसा न हो कि इस्राएल में से एक गोत्र मिट जाए।

18 परन्तु हम तो अपनी किसी बेटी का उनसे विवाह नहीं कर सकते, क्योंकि इस्राएलियों ने यह कहकर शपथ खाई है कि श्रापित हो वह जो किसी बिन्यामीनी से अपनी लड़की का विवाह करें।”

19 फिर उन्होंने कहा, “सुनो, शीलो जो बेतेल के उत्तर की ओर, और उस सड़क के पूर्व की ओर है जो बेतेल से

शेकेम को चली गई है, और लबोना के दक्षिण की ओर है, उसमें प्रतिवर्ष <sup>21:19</sup> <sup>21:19</sup> <sup>21:19</sup> माना जाता है।”

20 इसलिए उन्होंने बिन्यामीनियों को यह आज्ञा दी, “तुम जाकर दाख की बारियों के बीच घात लगाए बैठे रहो,

21 और देखते रहो; और यदि शीलो की लड़कियाँ नाचने को निकलें, तो तुम दाख की बारियों से निकलकर शीलो की लड़कियों में से अपनी-अपनी स्त्री को पकड़कर बिन्यामीन के क्षेत्र को चले जाना।

22 और जब उनके पिता या भाई हमारे पास झगड़ने को आएँगे, तब हम उनसे कहेंगे, ‘अनुग्रह करके उनको हमें दे दो, क्योंकि लड़ाई के समय हमने उनमें से एक-एक के लिये स्त्री नहीं बचाई; और तुम लोगों ने तो उनका विवाह नहीं किया, नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते।’”

23 तब बिन्यामीनियों ने ऐसा ही किया, अर्थात् उन्होंने अपनी गिनती के अनुसार उन नाचनेवालों में से पकड़कर स्त्रियाँ ले लीं; तब अपने भाग को लौट गए, और नगरों को बसाकर उनमें रहने लगे।

24 उसी समय इस्राएली भी वहाँ से चलकर अपने-अपने गोत्र और अपने-अपने घराने को गए, और वहाँ से वे अपने-अपने निज भाग को गए।

25 <sup>21:25</sup> <sup>21:25</sup> <sup>21:25</sup> <sup>21:25</sup>; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।

\* 21:10 <sup>21:10</sup> <sup>21:10</sup> <sup>21:10</sup> प्रत्येक गोत्र से एक हजार। † 21:19 <sup>21:19</sup> <sup>21:19</sup> <sup>21:19</sup> यह त्यौहार सम्भवतः फसह था यहूदियों के तीन मुख्य त्यौहारों में से एक था। उस समय जब वे पूर्णतः बस नहीं पाए थे तब पुरुष वर्ष में एक बार ही शीलो जाया करते थे। (1 शमू. 1:3)

‡ 21:25 <sup>21:25</sup> <sup>21:25</sup> <sup>21:25</sup> <sup>21:25</sup> इस बात को बार बार दोहराने का अभिप्राय सम्भवतः यह है कि हम पर प्रगट किया जाए कि इस अवस्था का कारण था कि उन्हें अपने अधिकाराधीन रखनेवाला कोई अधिकारी नहीं था।







ऐसे लोगों में आई है जिनको पहले तू न जानती थी, यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया है।

12 यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों के तले तू शरण लेने आई है, तुझे पूरा प्रतिफल दे।”

13 उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे, क्योंकि यद्यपि मैं तेरी दासियों में से किसी के भी बराबर नहीं हूँ, तो भी तूने अपनी दासी के मन में पैठनेवाली बातें कहकर मुझे शान्ति दी है।”

14 फिर खाने के समय बोअज ने उससे कहा, “यहीं आकर रोटी खा, और अपना कौर सिरके में डूबा।” तो वह लवनेवालों के पास बैठ गई; और उसने उसको भुनी हुई बालें दीं; और वह खाकर तृप्त हुई, वरन् कुछ बचा भी रखा।

15 जब वह बीनने को उठी, तब बोअज ने अपने जवानों को आज्ञा दी, “उसको पूलों के बीच-बीच में भी बीनने दो, और दोष मत लगाओ।

16 वरन् मुट्टी भर जाने पर कुछ कुछ निकालकर गिरा भी दिया करो, और उसके बीनने के लिये छोड़ दो, और उसे डाँटना मत।”

17 अतः वह साँझ तक खेत में बीनती रही; तब जो कुछ बीन चुकी उसे [2:17]‡, और वह कोई एपा भर जौ निकला।

18 तब वह उसे उठाकर नगर में गई, और उसकी सास ने उसका बीना हुआ देखा, और जो कुछ उसने तृप्त होकर बचाया था उसको उसने निकालकर अपनी सास को दिया।

19 उसकी सास ने उससे पूछा, “आज तू कहाँ बीनती, और कहाँ काम करती थी? धन्य वह हो जिसने तेरी सुधि ली है।” तब उसने अपनी सास को बता दिया, कि मैंने किसके पास काम किया, और कहा, “जिस पुरुष के पास मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज है।”

20 नाओमी ने अपनी बहू से कहा, “वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, क्योंकि उसने न तो जीवित पर से और न मरे हुआँ पर से अपनी करुणा हटाई!” फिर नाओमी ने उससे कहा, “वह पुरुष तो हमारा एक कुटुम्बी है, वरन् उनमें से है जिनको हमारी भूमि छुड़ाने का अधिकार है।”

21 फिर रूत मोआबिन बोली, “उसने मुझसे यह भी कहा, ‘जब तक मेरे सेवक मेरी सारी कटनी पूरी न कर

चुके तब तक उन्हीं के संग-संग लगी रह।’”

22 नाओमी ने अपनी बहू रूत से कहा, “मेरी बेटी यह अच्छा भी है, कि तू उसी की दासियों के साथ-साथ जाया करे, और वे तुझको दूसरे के खेत में न मिलें।”

23 इसलिए रूत जौ और गेहूँ दोनों की कटनी के अन्त तक बीनने के लिये बोअज की दासियों के साथ-साथ लगी रही; और अपनी सास के यहाँ रहती थी।

### 3

[3:1] [3:2] [3:3] [3:4] [3:5] [3:6] [3:7] [3:8] [3:9] [3:10] [3:11] [3:12] [3:13] [3:14] [3:15] [3:16] [3:17] [3:18] [3:19] [3:20] [3:21] [3:22] [3:23] [3:24] [3:25] [3:26] [3:27] [3:28] [3:29] [3:30] [3:31] [3:32] [3:33] [3:34] [3:35] [3:36] [3:37] [3:38] [3:39] [3:40] [3:41] [3:42] [3:43] [3:44] [3:45] [3:46] [3:47] [3:48] [3:49] [3:50] [3:51] [3:52] [3:53] [3:54] [3:55] [3:56] [3:57] [3:58] [3:59] [3:60] [3:61] [3:62] [3:63] [3:64] [3:65] [3:66] [3:67] [3:68] [3:69] [3:70] [3:71] [3:72] [3:73] [3:74] [3:75] [3:76] [3:77] [3:78] [3:79] [3:80] [3:81] [3:82] [3:83] [3:84] [3:85] [3:86] [3:87] [3:88] [3:89] [3:90] [3:91] [3:92] [3:93] [3:94] [3:95] [3:96] [3:97] [3:98] [3:99] [3:100]

1 एक दिन उसकी सास नाओमी ने उससे कहा, “हे मेरी बेटी, क्या मैं तेरे लिये आश्रय न ढूँँ कि तेरा भला हो?

2 अब जिसकी दासियों के पास तू थी, क्या वह बोअज हमारा कुटुम्बी नहीं है? [3:2] [3:3] [3:4] [3:5] [3:6] [3:7] [3:8] [3:9] [3:10] [3:11] [3:12] [3:13] [3:14] [3:15] [3:16] [3:17] [3:18] [3:19] [3:20] [3:21] [3:22] [3:23] [3:24] [3:25] [3:26] [3:27] [3:28] [3:29] [3:30] [3:31] [3:32] [3:33] [3:34] [3:35] [3:36] [3:37] [3:38] [3:39] [3:40] [3:41] [3:42] [3:43] [3:44] [3:45] [3:46] [3:47] [3:48] [3:49] [3:50] [3:51] [3:52] [3:53] [3:54] [3:55] [3:56] [3:57] [3:58] [3:59] [3:60] [3:61] [3:62] [3:63] [3:64] [3:65] [3:66] [3:67] [3:68] [3:69] [3:70] [3:71] [3:72] [3:73] [3:74] [3:75] [3:76] [3:77] [3:78] [3:79] [3:80] [3:81] [3:82] [3:83] [3:84] [3:85] [3:86] [3:87] [3:88] [3:89] [3:90] [3:91] [3:92] [3:93] [3:94] [3:95] [3:96] [3:97] [3:98] [3:99] [3:100]

3 तू स्नान कर तेल लगा, वस्त्र पहनकर खलिहान को जा; परन्तु जब तक वह पुरुष खा पी न चुके तब तक अपने को उस पर प्रगट न करना।

4 और जब वह लेट जाए, तब तू उसके लेटने के स्थान को देख लेना; फिर भीतर जा उसके पाँव उघाड़ के लेट जाना; तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिये।”

5 रूत ने उससे कहा, “जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूँगी।”

6 तब वह खलिहान को गई और अपनी सास के कहे अनुसार ही किया।

7 जब बोअज खा पी चुका, और उसका मन आनन्दित हुआ, तब जाकर अनाज के ढेर के एक सिरे पर लेट गया। तब वह चुपचाप गई, और उसके पाँव उघाड़ के लेट गई।

8 आधी रात को वह पुरुष चौंक पड़ा, और आगे की ओर झुककर क्या पाया, कि मेरे पाँवों के पास कोई स्त्री लेटी है।

9 उसने पूछा, “तू कौन है?” तब वह बोली, “मैं तो तेरी दासी रूत हूँ; तू [3:9] [3:10] [3:11] [3:12] [3:13] [3:14] [3:15] [3:16] [3:17] [3:18] [3:19] [3:20] [3:21] [3:22] [3:23] [3:24] [3:25] [3:26] [3:27] [3:28] [3:29] [3:30] [3:31] [3:32] [3:33] [3:34] [3:35] [3:36] [3:37] [3:38] [3:39] [3:40] [3:41] [3:42] [3:43] [3:44] [3:45] [3:46] [3:47] [3:48] [3:49] [3:50] [3:51] [3:52] [3:53] [3:54] [3:55] [3:56] [3:57] [3:58] [3:59] [3:60] [3:61] [3:62] [3:63] [3:64] [3:65] [3:66] [3:67] [3:68] [3:69] [3:70] [3:71] [3:72] [3:73] [3:74] [3:75] [3:76] [3:77] [3:78] [3:79] [3:80] [3:81] [3:82] [3:83] [3:84] [3:85] [3:86] [3:87] [3:88] [3:89] [3:90] [3:91] [3:92] [3:93] [3:94] [3:95] [3:96] [3:97] [3:98] [3:99] [3:100]

10 उसने कहा, “हे बेटी, यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष हो; क्योंकि तूने अपनी पिछली [3:10]‡

‡ 2:17 [2:17]‡ हो सकता है कि वे लकड़ी से भरकर अन्न को अर्थात्, एक छड़ी के साथ, जैसा कि शब्द का तात्पर्य है। ये विधि आज तक चलन में है। रूत ने अपने और अपनी सास के लिए पर्याप्त अन्न एकत्र कर लिया था। \* 3:2 [3:2] [3:3] [3:4] [3:5] [3:6] [3:7] [3:8] [3:9] [3:10] [3:11] [3:12] [3:13] [3:14] [3:15] [3:16] [3:17] [3:18] [3:19] [3:20] [3:21] [3:22] [3:23] [3:24] [3:25] [3:26] [3:27] [3:28] [3:29] [3:30] [3:31] [3:32] [3:33] [3:34] [3:35] [3:36] [3:37] [3:38] [3:39] [3:40] [3:41] [3:42] [3:43] [3:44] [3:45] [3:46] [3:47] [3:48] [3:49] [3:50] [3:51] [3:52] [3:53] [3:54] [3:55] [3:56] [3:57] [3:58] [3:59] [3:60] [3:61] [3:62] [3:63] [3:64] [3:65] [3:66] [3:67] [3:68] [3:69] [3:70] [3:71] [3:72] [3:73] [3:74] [3:75] [3:76] [3:77] [3:78] [3:79] [3:80] [3:81] [3:82] [3:83] [3:84] [3:85] [3:86] [3:87] [3:88] [3:89] [3:90] [3:91] [3:92] [3:93] [3:94] [3:95] [3:96] [3:97] [3:98] [3:99] [3:100] † 3:9 [3:9] [3:10] [3:11] [3:12] [3:13] [3:14] [3:15] [3:16] [3:17] [3:18] [3:19] [3:20] [3:21] [3:22] [3:23] [3:24] [3:25] [3:26] [3:27] [3:28] [3:29] [3:30] [3:31] [3:32] [3:33] [3:34] [3:35] [3:36] [3:37] [3:38] [3:39] [3:40] [3:41] [3:42] [3:43] [3:44] [3:45] [3:46] [3:47] [3:48] [3:49] [3:50] [3:51] [3:52] [3:53] [3:54] [3:55] [3:56] [3:57] [3:58] [3:59] [3:60] [3:61] [3:62] [3:63] [3:64] [3:65] [3:66] [3:67] [3:68] [3:69] [3:70] [3:71] [3:72] [3:73] [3:74] [3:75] [3:76] [3:77] [3:78] [3:79] [3:80] [3:81] [3:82] [3:83] [3:84] [3:85] [3:86] [3:87] [3:88] [3:89] [3:90] [3:91] [3:92] [3:93] [3:94] [3:95] [3:96] [3:97] [3:98] [3:99] [3:100] ‡ 3:10 [3:10]‡ उसकी पिछली प्रीति थी कि उसने वृद्ध बोअज को पति स्वरूप स्वीकार किया।

पहली से अधिक दिखाई, क्योंकि तू, क्या धनी, क्या कंगाल, किसी जवान के पीछे नहीं लगी।

11 इसलिए अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं तुझ से करूँगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्त्री है।

12 और सच तो है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्बी हूँ, तो भी एक और है जिसे मुझसे पहले ही छुड़ाने का अधिकार है।

13 अतः रात भर ठहरी रह, और सवेरे यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करना चाहे; तो अच्छा, वही ऐसा करे; परन्तु यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करने को प्रसन्न न हो, तो यहोवा के जीवन की शपथ मैं ही वह काम करूँगा। भोर तक लेटी रह।”

14 तब वह उसके पाँवों के पास भोर तक लेटी रही, और उससे पहले कि कोई दूसरे को पहचान सके वह उठी; और बोअज ने कहा, “कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री आई थी।”

15 तब बोअज ने कहा, “जो चद्दर तू ओढ़े है उसे फैलाकर पकड़ ले।” और जब उसने उसे पकड़ा तब उसने छः नपुए जौ नापकर उसको उठा दिया; फिर वह नगर में चली गई।

16 जब रूत अपनी सास के पास आई तब उसने पूछा, “हे बेटी, क्या हुआ?” तब जो कुछ उस पुरुष ने उससे किया था वह सब उसने उसे कह सुनाया।

17 फिर उसने कहा, “यह छः नपुए जौ उसने यह कहकर मुझे दिया, कि अपनी सास के पास खाली हाथ मत जा।”

18 फिर नाओमी ने कहा, “हे मेरी बेटी, जब तक तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा, तब तक चुपचाप बैठी रह, क्योंकि आज उस पुरुष को यह काम बिना निपटाए चैन न पड़ेगा।”

## 4

११११ ११ ११११ ११ ११११११११

1 तब बोअज ११११\* के पास जाकर बैठ गया; और जिस छुड़ानेवाले कुटुम्बी की चर्चा बोअज ने की थी, वह भी आ गया। तब बोअज ने कहा, “हे मित्र, इधर आकर यहीं बैठ जा;” तो वह उधर जाकर बैठ गया।

2 तब उसने नगर के दस वृद्ध लोगों को बुलाकर कहा, “यहीं बैठ जाओ।” वे भी बैठ गए।

\* 4:1 ११११: पूर्वी देशों में नगर द्वारा समागम का, व्यापार का, और न्याय करने का स्थान होता था। † 4:6 १११ ११११ १११११ ११११ ११११: अर्थात् वह निकट परिजन द्वारा मुक्ति का कार्य नहीं कर सकता था उसे भय था कि उसकी सम्पदा एलिमेलेक के पास जाएगी। ‡ 4:12 १११११: पेरस एप्राता के वंश का पूर्वज था, बोअज स्वयं उससे सम्बंधित था

3 तब वह उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी से कहने लगा, “नाओमी जो मोआब देश से लौट आई है वह हमारे भाई एलीमेलेक की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है।

4 इसलिए मैंने सोचा कि यह बात तुझको जताकर कहूँगा, कि तू उसको इन बैठे हुआओं के सामने और मेरे लोगों के इन वृद्ध लोगों के सामने मोल ले। और यदि तू उसको छुड़ाना चाहे, तो छुड़ा; और यदि तू छुड़ाना न चाहे, तो मुझे ऐसा ही बता दे, कि मैं समझ लूँ; क्योंकि तुझे छोड़ उसके छुड़ाने का अधिकार और किसी को नहीं है, और तेरे बाद मैं हूँ।” उसने कहा, “मैं उसे छुड़ाऊँगा।”

5 फिर बोअज ने कहा, “जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबिन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे।”

6 उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने कहा, “११११ १११११ १११११११ ११११११ ११११११ ११११११, ऐसा न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए। इसलिए मेरा छुड़ाने का अधिकार तू ले ले, क्योंकि मैं उसे छुड़ा नहीं सकता।”

7 पुराने समय में इस्राएल में छुड़ाने और बदलने के विषय में सब पक्का करने के लिये यह प्रथा थी, कि मनुष्य अपनी जूती उतार के दूसरे को देता था। इस्राएल में प्रमाणित इसी रीति से होता था।

8 इसलिए उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने बोअज से यह कहकर; “कि तू उसे मोल ले,” अपनी जूती उतारी।

9 तब बोअज ने वृद्ध लोगों और सब लोगों से कहा, “तुम आज इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और महलोन का था, वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूँ।

10 फिर महलोन की स्त्री रूत मोआबिन को भी मैं अपनी पत्नी करने के लिये इस मनसा से मोल लेता हूँ, कि मरे हुए का नाम उसके निज भाग पर स्थिर करूँ, कहीं ऐसा न हो कि मरे हुए का नाम उसके भाइयों में से और उसके स्थान के फाटक से मिट जाए; तुम लोग आज साक्षी ठहरे हो।”

11 तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्होंने और वृद्ध लोगों ने कहा, “हम साक्षी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उसको यहोवा इस्राएल के घराने की दो उपजानेवाली राहेल और लिआ के समान करे। और तू एप्राता में वीरता करे, और बैतलहम में तेरा बड़ा नाम हो;

12 और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे उसके कारण से तेरा घराना [?]का सा हो जाए, जो तामार से यहूदा के द्वारा उत्पन्न हुआ।”

**([?] 1:3)**

[?] [?] [?] [?] [?]

13 तब बोअज ने रूत को ब्याह लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा की दया से उसको गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न हुआ। **([?] 1:4,5)**

14 तब स्त्रियों ने नाओमी से कहा, “यहोवा धन्य है, जिसने तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; इस्राएल में इसका बड़ा नाम हो।

15 और यह तेरे जी में जी ले आनेवाला और तेरा बुढ़ापे में पालनेवाला हो, क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रेम रखती और सात बेटों से भी तेरे लिये श्रेष्ठ है उसी का यह बेटा है।”

16 फिर नाओमी उस बच्चे को अपनी गोद में रखकर उसकी दाई का काम करने लगी।

17 और उसकी पड़ोसियों ने यह कहकर, कि “नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है”, लड़के का नाम [?] रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ।

**([?] 1:6)**

18 परेस की वंशावली यह है, अर्थात् परेस से हेस्रोन,

19 और हेस्रोन से राम, और राम से अम्मीनादाब,

20 और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सलमोन,

21 और सलमोन से बोअज, और बोअज से ओबेद,

22 और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ। **([?] 1:4-6, [?] 3:31,32)**

## शमूएल की पहली पुस्तक

११११

पुस्तक में लेखक स्पष्ट नहीं है। तथापि शमूएल सम्भावित लेखक है और निश्चय ही वह 1 शमू. 1:1-24:22 की जानकारी देता है जो उसकी मृत्यु तक उसके जीवन एवं कार्यों की गाथा है। अति सम्भव है कि भविष्यद्वक्ता शमूएल ने इस पुस्तक का एक भाग लिखा है। 1 शमूएल के अन्य सम्भावित लेखक हैं इतिहासकार/भविष्यद्वक्ता नातान एवं गाद (1 इति. 29:29)।

११११ ११११ ११११ ११११११

लगभग 1050 - 722 ई. पू.

यह पुस्तक विभाजित राज्य के बाद लिखी गई है जो दोनों राज्यों, इस्राएल और यहूदिया, के अलग-अलग उल्लेखों से स्पष्ट होता है (1 शमू. 11:8; 17:52; 18:16; 2 शमू. 5:5; 11:11; 12:8; 19:42-43; 24:1-9)।

११११११

इसके मूल पाठक विभाजित राज्य, इस्राएल और यहूदिया की प्रजा थी जिन्हें दाऊद के राजवंश के औचित्य एवं उद्देश्य के निमित्त दिव्य दृष्टिकोण की आवश्यकता थी।

११११११११

1 शमूएल में कनान देश में न्यायियों से लेकर राजाओं के अधीन एक राष्ट्र होने तक का इतिहास है। शमूएल अन्तिम न्यायी हुआ था और वह प्रथम दो राजाओं शाऊल और दाऊद का अभिषेक करता है।

११११ ११११

परिवर्तन काल  
रूपरेखा

1. शमूएल का जीवन एवं सेवाकाल — 1:1-8:22
2. इस्राएल के प्रथम राजा शाऊल का जीवन — 9:1-12:25
3. शाऊल का असफल राजा होना — 13:1-15:35
4. दाऊद का जीवन — 16:1-20:42
5. इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अनुभव — 21:1-31:13

११११११११ ११ १११११ ११११११११ १११११ ११११

1 एप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैम सोपीम नगर का निवासी एल्काना नामक एक पुरुष था, वह एप्रैमी था,

और सूफ के पुत्र तोहू का परपोता, एलीहू का पोता, और यरोहाम का पुत्र था।

2 और १११११ ११ ११११११११११ ११११\*; एक का नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना था। पनिन्ना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के कोई बालक न हुआ।

3 वह पुरुष प्रतिवर्ष अपने नगर से ११११११११ ११ ११११११११ को दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में जाता था; और वहाँ होप्नी और पीनहास नामक एली के दोनों पुत्र रहते थे, जो यहोवा के याजक थे।

4 और जब जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब-तब वह अपनी पत्नी पनिन्ना को और उसके सब बेटे-बेटियों को दान दिया करता था;

5 परन्तु हन्ना को वह दो गुना दान दिया करता था, क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था; तो भी यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी।

6 परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती रहती थी।

7 वह तो प्रतिवर्ष ऐसा ही करता था; और जब हन्ना यहोवा के भवन को जाती थी तब पनिन्ना उसको चिढ़ाती थी। इसलिए वह रोती और खाना न खाती थी।

११११११ ११ ११११

8 इसलिए उसके पति एल्काना ने उससे कहा, “हे हन्ना, तू क्यों रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यों उदास है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूँ?”

9 तब शीलो में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक बाजू के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ था।

10 वह मन में व्याकुल होकर यहोवा से प्रार्थना करने और बिलख-बिलख कर रोने लगी।

11 और उसने यह मन्त्रत मानी, “हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूँगी, और उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा।” (१११११ 1:48)

12 जब वह यहोवा के सामने ऐसी प्रार्थना कर रही थी, तब एली उसके मुँह की ओर ताक रहा था।

\* 1:2 ११११ ११ ११११११११ ११११: उनके विधान में इसकी अनुमति थी (न्या.21:15) हन्ना: अर्थात् सुन्दरता: या आकर्षण:पनिन्ना: अर्थात् मोती:

† 1:3 ११११११ ११ ११११११: यह परमेश्वर का पदनाम है।



और उसने उन पर जगत को धरा है।

9 “वह अपने भक्तों के पाँवों को सम्भाले रहेगा, परन्तु दुष्ट अंधियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।

10 जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा; और **2:10-11**; और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा।” **(2:10-11 1:69)**

11 तब एल्काना रामाह को अपने घर चला गया। और वह बालक एली याजक के सामने यहोवा की सेवा टहल करने लगा।

**2:12-13**

12 **2:12-13**; उन्होंने यहोवा को न पहचाना।

13 याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी, कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता था तब याजक का सेवक माँस पकाने के समय एक नोकवाला काँटा हाथ में लिये हुए आकर,

14 उसे कड़ाही, या हाण्डी, या हँडे, या तसले के भीतर डालता था; और जितना माँस काँटे में लग जाता था उतना याजक आप ले लेता था। ऐसा ही वे शीलो में सारे इस्राएलियों से किया करते थे जो वहाँ आते थे।

15 और चर्बी जलाने से पहले भी याजक का सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता था, “भूनने के लिये याजक को माँस दे; वह तुझ से पका हुआ नहीं, कच्चा ही माँस लेगा।”

16 और जब कोई उससे कहता, “निश्चय चर्बी अभी जलाई जाएगी, तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना,” तब वह कहता था, “नहीं, अभी दे; नहीं तो मैं छीन लूँगा।”

17 इसलिए उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे।

**2:18-19**

18 परन्तु शमूएल जो बालक था **2:18-19**; पहने हुए यहोवा के सामने सेवा टहल किया करता था।

19 और उसकी माता प्रतिवर्ष उसके लिये एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति के संग प्रतिवर्ष की

मेलबलि चढ़ाने आती थी तब बागे को उसके पास लाया करती थी।

20 एली ने एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा, “यहोवा इस अर्पण किए हुए बालक के बदले जो उसको अर्पण किया गया है तुझको इस पत्नी से वंश दे;” तब वे अपने यहाँ चले गए।

21 यहोवा ने हन्ना की सुधि ली, और वह गर्भवती हुई और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ उत्पन्न हुईं। और बालक शमूएल यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया।

**2:22-23**

22 एली तो अति बूढ़ा हो गया था, और उसने सुना कि उसके पुत्र सारे इस्राएल से कैसा-कैसा व्यवहार करते हैं, वरन् मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के संग कुकर्म भी करते हैं।

23 तब उसने उनसे कहा, “तुम ऐसे-ऐसे काम क्यों करते हो? मैं इन सब लोगों से तुम्हारे कुकर्मों की चर्चा सुना करता हूँ।

24 हे मेरे बेटों, ऐसा न करो, क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं; तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध कराते हो।

25 यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो **2:25** उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन विनती करेगा?” तो भी उन्होंने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी।

26 परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे। **(2:26-27 2:52)**

27 परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उससे कहने लगा, “यहोवा यह कहता है, कि जब तेरे मूलपुरुष का घराना मिस्र में फ़िरौन के घराने के वंश में था, तब क्या मैं उस पर निश्चय प्रगट न हुआ था?

28 और क्या मैंने उसे इस्राएल के सब गोत्रों में से इसलिए चुन नहीं लिया था, कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावे चढ़ाए, और धूप जलाए, और मेरे सामने एपोद पहना करे? और क्या मैंने तेरे मूलपुरुष के घराने को इस्राएलियों के सारे हव्य न दिए थे?

29 इसलिए मेरे मेलबलि और अन्नबलि को जिनको मैंने अपने धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, उन्हें तुम

\* **2:10** **2:10-11**: यह एक अत्यधिक असाधारण वाक्य है जिसमें परमेश्वर के मसीह के राज्य और महिमा की स्पष्ट एवं विशिष्ट भविष्यद्वाणी है। † **2:12** **2:12-13**: मूसा प्रदत्त विधान में स्पष्ट व्यक्त था कि प्रत्येक मेलबलि में पुरोहित का भाग क्या और कितना है और उसमें चर्बी जलाने के भी स्पष्ट निर्देश थे। अतः विधान में निर्विष्ट अंश से अधिक लेना होष्नी और पीनहास के लिये अवज्ञा और निरंकुश व्यवहार था। ‡ **2:18** **2:18-19**: यह पुरोहितों का साधारण वस्त्र था। यहाँ स्पष्ट नहीं कि लेवी एपोद पहनते थे। सम्भवतः यह शमूएल के लिये परमेश्वर के अधीन विशेष समर्पण का चिन्ह था कि वह एपोद पहनता था। § **2:25** **2:25**: दूसरी सम्भावना परमेश्वर



लोग क्यों पाँव तले रौंदते हो? और तू क्यों अपने पुत्रों का मुझसे अधिक आदर करता है, कि तुम लोग मेरी इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंट खा खाके मोटे हो जाओ?

30 इसलिए इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि मैंने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे सामने सदैव चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि यह बात मुझसे दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूँगा, और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे जाएँगे।

31 सुन, वे दिन आते हैं, कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूँगा, कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा होने न पाएगा।

32 इस्राएल का कितना ही कल्याण क्यों न हो, तो भी तुझे मेरे धाम का दुःख देख पड़ेगा, और तेरे घराने में कोई कभी बूढ़ा न होने पाएगा।

33 मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न छीनूँगा, परन्तु तो भी तेरी आँखें देखती रह जाएँगी, और तेरा मन शोकित होगा, और तेरे घर की बढ़ती सब अपनी पूरी जवानी ही में मर मिटेंगे।

34 और मेरी इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी जो होप्नी और पीनहास नामक तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी; अर्थात् वे दोनों के दोनों एक ही दिन मर जाएँगे।

35 और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊँगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और मैं उसका घर बसाऊँगा और स्थिर करूँगा, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे-आगे सब दिन चला फिरा करेगा।

36 और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घराने में बचा रहेगा वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चाँदी के या एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा, याजक के किसी काम में मुझे लगा, जिससे मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले।”

### 3

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 वह बालक शमूएल एली के सामने यहोवा की सेवा टहल करता था। उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था।

2 और उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आँखें तो धुँधली होने लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था,

3 और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा के मन्दिर में जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था, लेटा था;

4 तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उसने कहा, “क्या आज्ञा!”

5 तब उसने एली के पास दौड़कर कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे पुकारा है।” वह बोला, “मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।” तो वह जाकर लेट गया।

6 तब यहोवा ने फिर पुकारके कहा, “हे शमूएल!” शमूएल उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे पुकारा है।” उसने कहा, “हे मेरे बेटे, मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।”

7 उस समय तक तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ था।

8 फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा। और वह उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे पुकारा है।” तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा है।

9 इसलिए एली ने शमूएल से कहा, “जा लेटा रह; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, ‘हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।’” तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया।

10 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

11 यहोवा ने शमूएल से कहा, “सुन, मैं इस्राएल में एक ऐसा काम करने पर हूँ, जिससे सब सुननेवालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा।

12 उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त तक पूरा करूँगा।

13 क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूँ, कि मैं उस अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिये उसके घर का न्याय करूँगा, क्योंकि उसके पुत्र आप श्रापित हुए हैं, और उसने उन्हें नहीं रोका।

14 इस कारण मैंने एली के घराने के विषय यह शपथ खाई, कि 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

15 और शमूएल भोर तक लेटा रहा; तब उसने यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला। और शमूएल एली को

\* 3:10 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: व्यक्तिगत उपस्थिति मात्र वाणी या शमूएल की कल्पना नहीं थी। यह स्पष्ट व्यक्त है। † 3:14 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: एली के पुत्रों का पाप से छुटकारा विधान की बलियों से नहीं हो सकता है।

उस दर्शन की बातें बताने से डरा।

16 तब एली ने शमूएल को पुकारकर कहा, “हे मेरे बेटे, शमूएल।” वह बोला, “क्या आज्ञा।”

17 तब उसने पूछा, “वह कौन सी बात है जो यहोवा ने तुझ से कही है? उसे मुझसे न छिपा। जो कुछ उसने तुझ से कहा हो यदि तू उसमें से कुछ भी मुझसे छिपाए, तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।”

18 तब शमूएल ने उसको रत्ती-रत्ती बातें कह सुनाई, और कुछ भी न छिपा रखा। वह बोला, “वह तो यहोवा है; जो कुछ वह भला जाने वही करे।”

19 और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उसने शमूएल की कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी।

20 और दान से बेशेबा तक के रहनेवाले सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियुक्त किया गया है। (22:22-23:20)

21 और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा ने अपने आपको शीलो में शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया।

## 4

22:22-23:20

1 और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुँचा। और इस्राएली पलिशतियों से युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो एबेनेजेर के आस-पास छावनी डाली, और पलिशतियों ने अपेक में छावनी डाली।

2 तब पलिशतियों ने इस्राएल के विरुद्ध पाँति बाँधी, और जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्राएली पलिशतियों से हार गए, और उन्होंने कोई चार हजार इस्राएली सेना के पुरुषों को मैदान में ही मार डाला।

3 जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्राएल के वृद्ध लोग कहने लगे, “यहोवा ने आज हमें पलिशतियों से क्यों हरा दिया है? 22, 22 22:22-23:20 22 22:22 22 22:22-23:20 22 22:22 22 22:22”, कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए।”

4 तब उन लोगों ने शीलो में भेजकर वहाँ से करूबों के ऊपर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक मँगवा लिया; और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास भी वहाँ थे।

5 जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुँचा, तब सारे इस्राएली इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि गूँज उठी।

6 इस ललकार का शब्द सुनकर पलिशतियों ने पूछा, “22:22-23:20 की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण है?” तब उन्होंने जान लिया, कि यहोवा का सन्दूक छावनी में आया है।

7 तब पलिशती डरकर कहने लगे, “उस छावनी में परमेश्वर आ गया है।” फिर उन्होंने कहा, “हाय! हम पर ऐसी बात पहले नहीं हुई थी।

8 हाय! ऐसे महाप्रतापी देवताओं के हाथ से हमको कौन बचाएगा? ये तो वे ही देवता हैं जिन्होंने मिश्रियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियाँ डाली थीं।

9 हे पलिशतियों, तुम हियाव बाँधो, और पुरुषार्थ जगाओ, कहीं ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ; पुरुषार्थ करके संग्राम करो।”

10 तब पलिशती लड़ाई के मैदान में टूट पड़े, और इस्राएली हारकर अपने-अपने डेरे को भागने लगे; और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ, कि तीस हजार इस्राएली पैदल खेत आए।

11 और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया; और एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी मारे गए।

22:22 22 22:22-23:20

12 तब उसी दिन एक बिन्यामीनी मनुष्य सेना में से दौड़कर अपने वस्त्र फाड़े और सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो पहुँचा।

13 22:22 जब पहुँचा उस समय एली, जिसका मन परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से थरथरा रहा था, वह मार्ग के किनारे कुर्सी पर बैठा बाट जोह रहा था। और जैसे ही उस मनुष्य ने नगर में पहुँचकर वह समाचार दिया वैसे ही सारा नगर चिल्ला उठा।

14 चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा, “ऐसे हुल्लड़ और हाहाकार मचने का क्या कारण है?” और उस मनुष्य ने झट जाकर एली को पूरा हाल सुनाया।

15 एली तो अठानवे वर्ष का था, और उसकी आँखें धुंधली पड़ गई थीं, और उसे कुछ सूझता न था।

16 उस मनुष्य ने एली से कहा, “मैं वही हूँ जो सेना में से आया हूँ; और मैं सेना से आज ही भागकर आया हूँ।” वह बोला, “हे मेरे बेटे, क्या समाचार है?”

\* 4:3 22, 22 22:22-23:20 22 22:22 22 22:22-23:20 22 22:22 22 22:22-23:20 22 22:22 22 22:22: उनके विचार में वाचा के सन्दूक के कारण परमेश्वर को उन्हें विजय देना ही होगा। † 4:6 22:22-23:20: विदेशी जातियाँ इस्राएल को इसी नाम से संबोधित करती थीं। ‡ 4:13 22:22: अर्थात् यहोवा

















## 12

१२:१-१२:३३

1 तब शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा, “सुनो, जो कुछ तुम ने मुझसे कहा था उसे मानकर मैंने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है।

2 और अब देखो, वह राजा तुम्हारे आगे-आगे चलता है; और अब मैं बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं; और मैं लडकपन से लेकर आज तक तुम्हारे सामने काम करता रहा हूँ।

3 मैं उपस्थित हूँ; इसलिए तुम यहोवा के सामने, और उसके अभिषिक्त के सामने मुझ पर साक्षी दो, कि मैंने किसका बैल ले लिया? या किसका गदहा ले लिया? या किस पर अंधेर किया? या किसको पीसा? या किसके हाथ से अपनी आँखें बन्द करने के लिये घूस लिया? बताओ, और मैं वह तुम को फेर दूँगा?” (१२:१-१२:३३) **20:33)**

4 वे बोले, “तूने न तो हम पर अंधेर किया, न हमें पीसा, और न किसी के हाथ से कुछ लिया है।”

5 उसने उनसे कहा, “आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी, और उसका अभिषिक्त इस बात का साक्षी है, कि मेरे यहाँ कुछ नहीं निकला।” वे बोले, “हाँ, वह साक्षी है।”

6 फिर शमूएल लोगों से कहने लगा, “जो मूसा और हारून को ठहराकर तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल लाया १२:१-१२:३३\*।

7 इसलिए अब तुम खड़े रहो, और मैं यहोवा के सामने उसके सब धार्मिकता के कामों के विषय में, जिन्हें उसने तुम्हारे साथ और तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया है, तुम्हारे साथ विचार करूँगा।

8 याकूब मिस्र में गया, और तुम्हारे पूर्वजों ने यहोवा की दुहाई दी; तब यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा, और उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से निकाला, और इस स्थान में बसाया।

9 फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए, तब उसने उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा, और पलिशतियों और मोआब के राजा के अधीन कर दिया; और वे उनसे लड़े।

10 तब उन्होंने यहोवा की दुहाई देकर कहा, ‘हमने यहोवा को त्याग कर और बाल देवताओं और अशतोरेत देवियों की उपासना करके महापाप किया है; परन्तु अब तू हमको हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा तो हम तेरी उपासना करेंगे।’

11 इसलिए यहोवा ने यरूबाल, बदान, यिप्तह, और शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया; और तुम निडर रहने लगे।

12 और जब तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश हम पर चढ़ाई करता है, तब यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था तो भी तुम ने मुझसे कहा, ‘नहीं, हम पर एक राजा राज्य करेगा।’

13 अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और जिसके लिये तुम ने प्रार्थना की थी; देखो, यहोवा ने एक राजा तुम्हारे ऊपर नियुक्त कर दिया है।

14 यदि तुम यहोवा का भय मानते, उसकी उपासना करते, और उसकी बात सुनते रहो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे बलवा न करो, और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे-पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला होगा;

15 परन्तु यदि तुम यहोवा की बात न मानो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे बलवा करो, तो यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखाओं के विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध उठेगा।

16 इसलिए अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करने पर है।

17 आज क्या गेहूँ की कटनी नहीं हो रही? मैं यहोवा को पुकारूँगा, और वह मेघ गरजाएगा और मेंह बरसाएगा; तब तुम जान लोगे, और देख भी लोगे, कि तुम ने राजा माँगकर यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ी बुराई की है।”

18 तब शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन मेघ गरजाया और मेंह बरसाया; और सब लोग यहोवा से और शमूएल से अत्यन्त डर गए।

19 और सब लोगों ने शमूएल से कहा, “अपने दासों के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाएँ; क्योंकि हमने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई की है कि राजा माँगा है।”

20 शमूएल ने लोगों से कहा, “डरो मत; तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना; परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उसकी उपासना करना;

21 और मत मुड़ना; नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने लगोगे जिनसे न कुछ लाभ पहुँचेगा, और न कुछ छुटकारा हो सकता है, क्योंकि वे सब व्यर्थ ही हैं।”

\* 12:6 १२:१-१२:३३ १२:३३: यहोवा को परमेश्वर वरन् पूर्वजों का परमेश्वर कहने में शाऊल का उद्देश्य था कि वह लोगों पर प्रभाव डालें, कि उनका राष्ट्रीय अस्तित्व और उनकी सब राष्ट्रीय आशीषें परमेश्वर की ही देन है।





19 शाऊल याजक से बातें कर रहा था, कि पलिशितियों की छावनी में हुल्लड अधिक बढ़ गया; तब शाऊल ने याजक से कहा, “*११११ १११ ११११ १११*।”

20 तब शाऊल और उसके संग के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई में गए; वहाँ उन्होंने क्या देखा, कि एक-एक पुरुष की तलवार अपने-अपने साथी पर चल रही है, और बहुत बड़ा कोलाहल मच रहा है।

21 जो इब्री पहले पलिशितियों की ओर थे, और उनके साथ चारों ओर से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान के संग के इस्राएलियों में मिल गए।

22 इसी प्रकार जितने इस्राएली पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश में छिप गए थे, वे भी यह सुनकर कि पलिशती भागे जाते हैं, लड़ाई में आकर उनका पीछा करने में लग गए।

23 तब यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को छुटकारा दिया; और लड़नेवाले बेतावेन की परली ओर तक चले गए।

24 परन्तु इस्राएली पुरुष उस दिन तंग हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगों को शपथ धराकर कहा, “श्रापित हो वह, जो साँझ से पहले कुछ खाए; इसी रीति मैं अपने शत्रुओं से बदला ले सकूँगा।” अतः उन लोगों में से किसी ने कुछ भी भोजन न किया।

25 और सब लोग किसी वन में पहुँचे, जहाँ भूमि पर मधु पड़ा हुआ था।

26 जब लोग वन में आए तब क्या देखा, कि मधु टपक रहा है, तो भी शपथ के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुँह तक न ले गया।

27 परन्तु योनातान ने अपने पिता को लोगों को शपथ धराते न सुना था, इसलिए उसने अपने हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में डुबाया, और अपना हाथ अपने मुँह तक ले गया; तब *११११ ११११११ ११११ १११११११ १११*।

28 तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा, “तेरे पिता ने लोगों को कड़ी शपथ धरा के कहा है, ‘श्रापित हो वह, जो आज कुछ खाए।’” और लोग थके-माँदे थे।

29 योनातान ने कहा, “मेरे पिता ने लोगों को कष्ट दिया है; देखो, मैंने इस मधु को थोड़ा सा चखा, और मेरी आँखें कैसी चमक उठी हैं।

30 यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्होंने पाया मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो बहुत अधिक पलिशती मारे नहीं गए।”

31 उस दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन तक पलिशितियों को मारते गए; और लोग बहुत ही थक गए।

32 इसलिए वे लूट पर दूटे, और भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और बछड़े लेकर भूमि पर मारकर उनका माँस लहू समेत खाने लगे।

33 जब इसका समाचार शाऊल को मिला, कि लोग लहू समेत माँस खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं। तब उसने उनसे कहा, “तुम ने तो विश्वासघात किया है; अभी एक बड़ा पत्थर मेरे पास लुढ़का दो।”

34 फिर शाऊल ने कहा, “लोगों के बीच में इधर-उधर फिरके उनसे कहो, ‘अपना-अपना बैल और भेड़ शाऊल के पास ले जाओ, और वहीं बलि करके खाओ; और लहू समेत खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो।’” तब सब लोगों ने उसी रात अपना-अपना बैल ले जाकर वहीं बलि किया।

35 तब *११११ ११ ११११११ ११ १११११ ११ १११११ ११११११११*; वह तो पहली वेदी है जो उसने यहोवा के लिये बनवाई।

36 फिर शाऊल ने कहा, “हम इसी रात को ही पलिशितियों का पीछा करके उन्हें भोर तक लूटते रहें; और उनमें से एक मनुष्य को भी जीवित न छोड़ें।” उन्होंने कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।” परन्तु याजक ने कहा, “हम यहीं परमेश्वर के समीप आएँ।”

37 *११ १११११ ११ ११११११११११ ११ १११११\**, “क्या मैं पलिशितियों का पीछा करूँ? क्या तू उन्हें इस्राएल के हाथ में कर देगा?” परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला।

38 तब शाऊल ने कहा, “हे प्रजा के मुख्य लोगों, इधर आकर जानो; और देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है।

39 क्योंकि इस्राएल के छुड़ानेवाले यहोवा के जीवन की शपथ, यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो, तो भी निश्चय वह मार डाला जाएगा।” परन्तु लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न दिया।

40 तब उसने सारे इस्राएलियों से कहा, “तुम एक ओर रहो, और मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर रहेंगे।” लोगों ने शाऊल से कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।”

41 तब शाऊल ने यहोवा से कहा, “हे इस्राएल के

† 14:19 *११११ १११ ११११ ११*: शाऊल युद्ध के लिये अधीर परमेश्वर के निर्देश की प्रतिक्षा नहीं कर पा रहा था। उसने अहिव्याह से निवेदन किया था कि वह परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करें। ‡ 14:27 *११११ १११११ १११ १११११११ ११*: उसको अपनी सामर्थ्य वापस मिल गई § 14:35 *११११ ११ ११११११ ११ ११११ ११ ११११ ११११११*: शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनवाना आरम्भ किया परन्तु उस रात पलिशितियों का पीछा करने की शीघ्रता में वह उसका निर्माण पूरा नहीं करवा पाया। \* 14:37 *११ ११११ ११ ११११११११ ११ १११११*: यह परमेश्वर से पूछने की व्यवहारिक शब्दावली है।

परमेश्वर, सत्य बात बता।” तब चिट्ठी योनातान और शाऊल के नाम पर निकली, और प्रजा बच गई।

42 फिर शाऊल ने कहा, “मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर चिट्ठी डालो।” तब चिट्ठी योनातान के नाम पर निकली।

43 तब शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बता, कि तूने क्या किया है।” योनातान ने बताया, और उससे कहा, “मैंने अपने हाथ की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख तो लिया था; और देख, मुझे मरना है।”

44 शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन् इससे भी अधिक करे; हे योनातान, तू निश्चय मारा जाएगा।”

45 परन्तु लोगों ने शाऊल से कहा, “क्या योनातान मारा जाए, जिसने इस्राएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है? ऐसा न होगा! यहोवा के जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा; क्योंकि आज के दिन उसने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है।” तब प्रजा के लोगों ने योनातान को बचा लिया, और वह मारा न गया। (22:22-23 10:30, 22:22 21:18, 22:22-23. 27:34)

46 तब शाऊल पलिशतियों का पीछा छोड़कर लौट गया; और पलिशती भी अपने स्थान को चले गए।

47 जब शाऊल इस्राएलियों के राज्य में स्थिर हो गया, तब वह मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, और पलिशती, अपने चारों ओर के सब शत्रुओं से, और सोबा के राजाओं से लड़ा; और जहाँ-जहाँ वह जाता वहाँ जय पाता था।

48 फिर उसने वीरता करके अमालेकियों को जीता, और इस्राएलियों को लूटनेवालों के हाथ से छुड़ाया।

49 शाऊल के पुत्र योनातान, यिश्वी, और मल्कीशूअ थे; और उसकी दो बेटियों के नाम ये थे, बड़ी का नाम तो मेरब और छोटी का नाम मीकल था।

50 और शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम था जो अहीमास की बेटि थी। उसके प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर था जो शाऊल के चाचा नेर का पुत्र था।

51 शाऊल का पिता कीश था, और अब्नेर का पिता नेर अबीएल का पुत्र था।

52 शाऊल जीवन भर पलिशतियों से संग्राम करता रहा; जब जब शाऊल को कोई वीर या अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा तब-तब उसने उसे अपने पास रख लिया।

## 15

22:22 22 22:22 22:22 22 22:22 22

\* 15:3 22:22 22:22 22 22:22 22: 22: जब कोई नगर नष्ट किया जाता था तब हर एक प्राणी घात किया जाता था और इस प्रकार विजेता के हाथ लूट का माल नहीं लगता था। † 15:8 22:22 22:22 22:22 22 22:22 22:22: अगाग को जीवित पकड़ना सर्वनाश का स्पष्ट उल्लंघन था। ‡ 15:11 22:22 22:22: शमूएल क्रोधित था या अप्रसन्न था कि जिस राजा का उसने अभिषेक किया वह पद से खारिज किया जाए।

1 शमूएल ने शाऊल से कहा, “यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा था; इसलिए अब यहोवा की बातें सुन ले।

2 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ‘मुझे स्मरण आता है कि अमालेकियों ने इस्राएलियों से क्या किया; जब इस्राएली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया।

3 इसलिए अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22\*; क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूध पीता, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सब को मार डाल।”

4 तब शाऊल ने लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया, और उन्हें तलाईम में गिना, और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार यहूदी पुरुष थे।

5 तब शाऊल ने अमालेक नगर के पास जाकर एक घाटी में घातकों को बैठाया।

6 और शाऊल ने केनियों से कहा, “वहाँ से हटो, अमालेकियों के मध्य में से निकल जाओ कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साथ तुम्हारा भी अन्त कर डालूँ; क्योंकि तुम ने सब इस्राएलियों पर उनके मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई थी।” और केनी अमालेकियों के मध्य में से निकल गए।

7 तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर तक जो मिस्र के पूर्व में है अमालेकियों को मारा।

8 और 22:22 22:22 22:22 22 22:22 22:22†, और उसकी सब प्रजा को तलवार से नष्ट कर डाला।

9 परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे पशुओं, और मेम्नों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की, और उन्हें नष्ट करना न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसका उन्होंने सत्यानाश किया।

22:22 22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

10 तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुँचा,

11 “मैं शाऊल को राजा बना के 22:22 22:22; क्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।” तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दुहाई देता रहा।

12 जब शमूएल शाऊल से भेंट करने के लिये सवेरे उठा; तब शमूएल को यह बताया गया, “शाऊल कर्मेल

को आया था, और अपने लिये एक स्मारक खड़ा किया, और घूमकर गिलगाल को चला गया है।”

13 तब शमूएल शाऊल के पास गया, और शाऊल ने उससे कहा, “तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले; मैंने यहोवा की आज्ञा पूरी की है।”

14 शमूएल ने कहा, “फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना, और गाय-बैलों का यह रम्भाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो रहा है?”

15 शाऊल ने कहा, “वे तो अमालेकियों के यहाँ से आए हैं; अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़ दिया है; और बाकी सब का तो हमने सत्यानाश कर दिया है।”

16 तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझसे कही है वह मैं तुझको बताता हूँ।” उसने कहा, “कह दे।”

17 शमूएल ने कहा, “जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब क्या तू इस्राएली गोत्रों का प्रधान न हो गया?, और क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया?”

18 और यहोवा ने तुझे एक विशेष कार्य करने को भेजा, और कहा, “जाकर उन पापी अमालेकियों का सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएँ, तब तक उनसे लड़ता रह।”

19 फिर तूने किस लिये यहोवा की यह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है?”

20 शाऊल ने शमूएल से कहा, “निःसन्देह मैंने यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूँ, और अमालेकियों का सत्यानाश किया है।”

21 परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, अर्थात् नष्ट होने की उत्तम-उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं।”

22 शमूएल ने कहा, “क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है,

जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। (12:32,33)

23 देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है,

और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।

तूने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिए उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।”

24 शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने पाप किया है; मैंने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है।

25 परन्तु अब मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ, कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूँ।”

26 शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तेरे साथ न लौटूँगा; क्योंकि तूने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुझे इस्राएल का राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।”

27 तब शमूएल जाने के लिये घूमा, और शाऊल ने उसके बागे की छोर को पकड़ा, और वह फट गया।

28 तब शमूएल ने उससे कहा, “आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है।

29 और जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि पछताए।” (12:22-27. 6:18)

30 उसने कहा, “मैंने पाप तो किया है; तो भी मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्राएल के सामने मेरा आदर कर, और मेरे साथ लौट, कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूँ।”

31 तब शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया; और शाऊल ने यहोवा को दण्डवत् की।

32 तब शमूएल ने कहा, “अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास ले आओ।” तब अगाग आनन्द के साथ यह कहता हुआ उसके पास गया, “निश्चय मृत्यु का दुःख जाता रहा।”

33 शमूएल ने कहा, “जैसे स्त्रियाँ तेरी तलवार से निर्वंश हुई हैं, वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी।” तब शमूएल ने अगाग को गिलगाल में यहोवा के सामने टुकड़े-टुकड़े किया।

34 तब शमूएल रामाह को चला गया; और शाऊल अपने नगर गिबा को अपने घर गया।

35 और शमूएल ने अपने जीवन भर शाऊल से फिर भेंट न की, क्योंकि शमूएल शाऊल के लिये विलाप करता रहा। और यहोवा शाऊल को इस्राएल का राजा बनाकर पछताता था।





21 और दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके सामने उपस्थित रहने लगा। और शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह उसका हथियार ढोनेवाला हो गया।

22 तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, “दाऊद को मेरे सामने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ।”

23 और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब-तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उसमें से हट जाता था।

## 17

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 अब पलिशतियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया; और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम में डेरे डाले।

2 शाऊल और इस्राएली पुरुषों ने भी इकट्ठे होकर एला नामक तराई में डेरे डाले, और युद्ध के लिये पलिशतियों के विरुद्ध पाँति बाँधी।

3 पलिशती तो एक ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनों के बीच तराई थी।

4 तब पलिशतियों की छावनी में से गोलियत नामक एक वीर निकला, जो गत नगर का था, और उसकी लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी।

5 उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहने हुए था, जिसका तौल पाँच हजार शेकेल पीतल का था।

6 उसकी टाँगों पर पीतल के कवच थे, और उसके कंधों के बीच बरछी बंधी थी।

7 उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके आगे-आगे चलता था।

8 वह खड़ा होकर इस्राएली पाँतियों को ललकार के बोला, “तुम ने यहाँ आकर लड़ाई के लिये क्यों पाँति बाँधी है? क्या मैं पलिशती नहीं हूँ, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए।”

9 यदि वह मुझसे लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएँगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूँ, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी।”

10 फिर वह पलिशती बोला, “मैं आज के दिन इस्राएली पाँतियों को ललकारता हूँ, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।”

11 उस पलिशती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।

12 दाऊद यहूदा के बैतलहम के उस एप्राती पुरुष का पुत्र था, जिसका नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र थे और वह पुरुष शाऊल के दिनों में बूढ़ा और निर्बल हो गया था।

13 यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे; और उसके तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गए थे, ये थे, अर्थात् ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे का शम्मा था।

14 सबसे छोटा दाऊद था; और तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर गए थे,

15 और दाऊद बैतलहम में अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराने को शाऊल के पास से आया-जाया करता था।

16 वह पलिशती तो चालीस दिन तक सवेरे और साँझ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था।

17 यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, “यह एपा भर भुना हुआ अनाज, और ये दस रोटियाँ लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़ जा;

18 और पनीर की ये दस टिकियाँ उनके सहस्त्रपति के लिये ले जा। और अपने भाइयों का कुशल देखकर उनकी कोई निशानी ले आना।

19 शाऊल, और तेरे भाई, और समस्त इस्राएली पुरुष एला नामक तराई में पलिशतियों से लड़ रहे हैं।”

20 अतः दाऊद सवेरे उठ, भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर, यिशै की आज्ञा के अनुसार उन वस्तुओं को लेकर चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिये ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुँचा।

21 तब इस्राएलियों और पलिशतियों ने अपनी-अपनी सेना आमने-सामने करके पाँति बाँधी।

22 दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर रणभूमि को दौड़ा, और अपने भाइयों के पास जाकर उनका कुशल क्षेम पूछा।

23 वह उनके साथ बातें कर ही रहा था, कि पलिशतियों की पाँतियों में से वह वीर, अर्थात् गतवासी गोलियत नामक वह पलिशती योद्धा चढ़ आया, और पहले की सी बातें कहने लगा। और दाऊद ने उन्हें सुना।

24 उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके सामने से भागे।

25 फिर इस्राएली पुरुष कहने लगे, “क्या तुम ने उस पुरुष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इस्राएलियों को ललकारने को चढ़ा आता है; और जो कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी का विवाह उससे कर देगा, और उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतंत्र कर देगा।”

26 तब दाऊद ने उन पुरुषों से जो उसके आस-पास खड़े थे पूछा, “जो उस पलिशती को मारकर इस्राएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिशती क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?”

27 तब लोगों ने उससे वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई उसे मारेगा उससे ऐसा-ऐसा किया जाएगा।

28 जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा, “तू यहाँ क्यों आया है? और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किसके पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई देखने के लिये यहाँ आया है।”

29 दाऊद ने कहा, “अब मैंने क्या किया है? वह तो निरी बात थी।”

30 तब उसने उसके पास से मुँह फेर के दूसरे के सम्मुख होकर वैसी ही बात कही; और लोगों ने उसे पहले के समान उत्तर दिया।

31 जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई; और उसने उसे बुलवा भेजा।

32 तब दाऊद ने शाऊल से कहा, “किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिशती से लड़ेगा।”

33 शाऊल ने दाऊद से कहा, “तू जाकर उस पलिशती के विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है।” (१७:२७-३३) **11:33)**

34 दाऊद ने शाऊल से कहा, “तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियाँ चराता था; और जब कोई सिंह या भालू झुण्ड में से मेम्ना उठा ले जाता,

35 तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मेम्ने को उसके मुँह से छुड़ा लेता; और जब वह मुझ पर हमला करता, तब मैं उसके केश को पकड़कर उसे मार डालता।

36 तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मारा है। और वह खतनारहित पलिशती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।”

37 फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिशती के हाथ से भी बचाएगा।” शाऊल ने दाऊद से कहा, “जा, यहोवा तेरे साथ रहे।”

38 तब शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाए, और पीतल का टोप उसके सिर पर रख दिया, और झिलम उसको पहनाया।

39 तब दाऊद ने उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी, और चलने का यत्न किया; उसने तो उनको न परखा था। इसलिए दाऊद ने शाऊल से कहा, “इन्हें पहने हुए मुझसे चला नहीं जाता, क्योंकि मैंने इन्हें नहीं परखा है।” और दाऊद ने उन्हें उतार दिया।

40 तब उसने अपनी लाठी हाथ में ली और नदी में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिशती के निकट गया।

41 और पलिशती चलते-चलते दाऊद के निकट पहुँचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे-आगे चला।

42 जब पलिशती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था।

43 तब पलिशती ने दाऊद से कहा, “क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?” तब पलिशती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा।

44 फिर पलिशती ने दाऊद से कहा, “मेरे पास आ, मैं तेरा माँस आकाश के पक्षियों और वन-पशुओं को दे दूँगा।”

45 दाऊद ने पलिशती से कहा, “तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तूने ललकारा है।

46 आज के दिन यहोवा तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझको मारूँगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा; और मैं आज के दिन पलिशती सेना के शव आकाश के पक्षियों को दे दूँगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है।

47 और यह समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।”

48 जब पलिशती उठकर दाऊद का सामना करने के लिये निकट आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिशती का सामना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा। (१७:२७-३३)

49 फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उसमें से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिशती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा।

50 अतः दाऊद ने पलिशती पर गोफन और एक ही पत्थर के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी।

51 तब दाऊद दौड़कर पलिशती के ऊपर खड़ा हो गया, और उसकी तलवार पकड़कर म्यान से खींची, और उसको घात किया, और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिशती भाग गए।

52 इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे, और गत और एक्रोन से फाटकों तक पलिशतियों का पीछा करते गए, और घायल पलिशती <sup>22222222</sup>\* के मार्ग में और गत और एक्रोन तक गिरते गए। (2222. 15:36)

53 तब इस्राएली पलिशतियों का पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरों को लूट लिया।

54 और दाऊद पलिशती का सिर यरूशलेम में ले गया; और उसके हथियार अपने डेरे में रख लिए।

55 जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिशती का सामना करने के लिये जाते देखा, तब उसने अपने सेनापति अब्नेर से पूछा, “हे अब्नेर, वह जवान किसका पुत्र है?” अब्नेर ने कहा, “हे राजा, तेरे जीवन की शपथ, मैं नहीं जानता।”

56 राजा ने कहा, “तू पूछ ले कि वह जवान किसका पुत्र है।”

57 जब दाऊद पलिशती को मारकर लौटा, तब अब्नेर ने उसे पलिशती का सिर हाथ में लिए हुए शाऊल के सामने पहुँचाया।

58 शाऊल ने उससे पूछा, “हे जवान, तू किसका पुत्र है?” दाऊद ने कहा, “मैं तो तेरे दास बैतलहमवासी यिशै का पुत्र हूँ।”

## 18

<sup>22222222</sup> <sup>22</sup> <sup>22222222</sup> <sup>22</sup> <sup>22222222</sup>

1 जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के समान प्यार करने लगा।

2 और उस दिन शाऊल ने उसे अपने पास रखा, और पिता के घर लौटने न दिया।

3 तब योनातान ने दाऊद से वाचा बाँधी, क्योंकि वह उसको अपने प्राण के समान प्यार करता था।

4 योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहने था उतारकर अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन् अपनी तलवार और धनुष और कमरबन्ध भी उसको दे दिए।

5 और जहाँ कहीं शाऊल दाऊद को भेजता था वहाँ वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था; अतः शाऊल ने उसे योद्धाओं का प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी उससे प्रसन्न थे।

<sup>22222222</sup> <sup>22</sup> <sup>22222222</sup> <sup>22</sup> <sup>22222222</sup> <sup>22222222</sup>

6 जब दाऊद उस पलिशती को मारकर लौट रहा था, और वे सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत में निकलीं।

7 और वे स्त्रियाँ नाचती हुई एक दूसरे के साथ यह गाती गईं,

“शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।”

8 तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, “उन्होंने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों ही ठहराया; इसलिए अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या मिलना बाकी है?”

9 उस दिन से शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा।

10 दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा; दाऊद प्रतिदिन के समान अपने हाथ से बजा रहा था और शाऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए था;

11 तब शाऊल ने यह सोचकर कि “मैं ऐसा माँगा कि भाला दाऊद को बेधकर दीवार में धँस जाए,” भाले को चलाया, परन्तु दाऊद उसके सामने से दोनों बार हट गया।

12 शाऊल दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ था और शाऊल के पास से अलग हो गया था।

13 शाऊल ने उसको अपने पास से अलग करके सहस्त्रपति किया, और वह प्रजा के सामने आया-जाया करता था।

14 और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ-साथ था।

15 जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है, तब वह उससे डर गया।

\* 17:52 <sup>22222222</sup>: यहूदा के शपेला का एक नगर जो इस समय पलिशतियों के अधीन था।

16 परन्तु इस्राएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे; क्योंकि वह उनके आगे-आगे आया-जाया करता था।

17 शाऊल ने यह सोचकर कि “मेरा हाथ नहीं, वरन् पलिशतियों ही का हाथ दाऊद पर पड़े,” उससे कहा, “सुन, मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब से तेरा विवाह कर दूँगा; इतना कर, कि तू मेरे लिये वीरता के साथ यहोवा की ओर से युद्ध कर।”

18 दाऊद ने शाऊल से कहा, “मैं क्या हूँ, और मेरा जीवन क्या है, और इस्राएल में मेरे पिता का कुल क्या है, कि मैं राजा का दामाद हो जाऊँ?”

19 जब समय आ गया कि शाऊल की बेटी मेरब का दाऊद से विवाह किया जाए, तब वह महोलाई अद्रीएल से ब्याह दी गई।

20 और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी; और जब इस बात का समाचार शाऊल को मिला, तब 21 शाऊल तो सोचता था, कि वह उसके लिये फंदा हो, और पलिशतियों का हाथ उस पर पड़े। और शाऊल ने दाऊद से कहा, “अब की बार तो तू अवश्य ही मेरा दामाद हो जाएगा।”

22 फिर शाऊल ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी, “दाऊद से छिपकर ऐसी बातें करो, सुन, राजा तुझ से प्रसन्न है, और उसके सब कर्मचारी भी तुझ से प्रेम रखते हैं; इसलिए अब तू राजा का दामाद हो जा।”

23 तब शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं। परन्तु दाऊद ने कहा, “मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूँ, फिर क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है?”

24 जब शाऊल के कर्मचारियों ने उसे बताया, कि दाऊद ने ऐसी-ऐसी बातें कहीं।

25 तब शाऊल ने कहा, “तुम दाऊद से यह कहो, राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता, केवल पलिशतियों की एक सौ खलडियाँ चाहता है, कि वह अपने शत्रुओं से बदला ले।” शाऊल की योजना यह थी, कि पलिशतियों से दाऊद को मरवा डाले।

26 जब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें बताईं, तब वह राजा का दामाद होने को प्रसन्न हुआ। जब 27 तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला, और पलिशतियों के दो सौ पुरुषों को मारा; तब दाऊद उनकी खलडियों को ले आया, और वे राजा को गिन-गिनकर

दी गई, इसलिए कि वह राजा का दामाद हो जाए। अतः शाऊल ने अपनी बेटी मीकल का उससे विवाह कर दिया।

28 जब शाऊल ने देखा, और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ है, और मेरी बेटी मीकल उससे प्रेम रखती है,

29 तब शाऊल दाऊद से और भी डर गया। इसलिए शाऊल सदा के लिये दाऊद का बैरी बन गया।

30 फिर पलिशतियों के प्रधान निकल आए, और जब जब वे निकल आए तब-तब दाऊद ने शाऊल के सब कर्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इससे उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

## 19

1 शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने सब कर्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा की। परन्तु शाऊल का पुत्र योनातान दाऊद से बहुत प्रसन्न था।

2 योनातान ने दाऊद को बताया, “मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता है; इसलिए तू सवेरे सावधान रहना, और किसी गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना;

3 और मैं मैदान में जहाँ तू होगा वहाँ जाकर अपने पिता के पास खड़ा होकर उससे तेरी चर्चा करूँगा; और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊँगा।”

4 योनातान ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके उससे कहा, “हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी न हो; क्योंकि उसने तेरे विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया, वरन् उसके सब काम तेरे बहुत हित के हैं;

5 उसने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिशती को मार डाला, और यहोवा ने समस्त इस्राएलियों की बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था; और तू दाऊद को अकारण मारकर निर्दोष के खून का पापी क्यों बने?”

6 तब शाऊल ने योनातान की बात मानकर यह शपथ खाई, “यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा।”

7 तब योनातान ने दाऊद को बुलाकर ये समस्त बातें उसको बताईं। फिर योनातान दाऊद को शाऊल के पास ले गया, और वह पहले की समान उसके सामने रहने लगा।

8 तब लड़ाई फिर होने लगी; और दाऊद जाकर पलिशतियों से लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके सामने से भाग गए।

\* 18:20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

9 जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा था; और दाऊद हाथ से वीणा बजा रहा था, तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा।

10 शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे बेधते हुए दीवार में धँस जाए; परन्तु **20:10** कि भाला जाकर दीवार ही में धँस गया। और दाऊद भागा, और उस रात को बच गया।

11 तब शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत इसलिए भेजे कि वे उसकी घात में रहें, और सवेरे उसे मार डालें, तब दाऊद की स्त्री मीकल ने उसे यह कहकर जताया, “यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए, तो सवेरे मारा जाएगा।”

12 तब मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया; और वह भागकर बच निकला।

13 तब मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया, और बकरियों के रोए की तकिया उसके सिरहाने पर रखकर उनको वस्त्र ओढ़ा दिए।

14 जब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे, तब वह बोली, “वह तो बीमार है।”

15 तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के देखने के लिये भेजा, और कहा, “उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूँ।”

16 जब दूत भीतर गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर गृहदेवता पड़े हैं, और सिरहाने पर बकरियों के रोए की तकिया है।

17 अतः शाऊल ने मीकल से कहा, “तूने मुझे ऐसा धोखा क्यों दिया? तूने मेरे शत्रु को ऐसे क्यों जाने दिया कि वह बच निकला है?” मीकल ने शाऊल से कहा, “उसने मुझसे कहा, ‘मुझे जाने दे; **20:17**’।”

18 दाऊद भागकर बच निकला, और रामाह में शमूएल के पास पहुँचकर जो कुछ शाऊल ने उससे किया था सब उसे कह सुनाया। तब वह और शमूएल जाकर नबायोत में रहने लगे।

19 जब शाऊल को इसका समाचार मिला कि दाऊद रामाह में के नबायोत में है,

20 तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे; और जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए, और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी नबूवत करने लगे।

21 इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे।

22 तब वह आप ही रामाह को चला, और उस बड़े गड्ढे पर जो सेकू में है पहुँचकर पूछने लगा, “शमूएल और दाऊद कहाँ हैं?” किसी ने कहा, “वे तो रामाह के नबायोत में हैं।”

23 तब वह उधर, अर्थात् रामाह के नबायोत को चला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामाह के नबायोत को पहुँचने तक नबूवत करता हुआ चला गया।

24 और उसने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल के सामने नबूवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नंगा पड़ा रहा। इस कारण से यह कहावत चली, “क्या शाऊल भी नबियों में से है?”

## 20

**20:1**

1 फिर दाऊद रामाह के नबायोत से भागा, और योनातान के पास जाकर कहने लगा, “मैंने क्या किया है? मुझसे क्या पाप हुआ? मैंने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है?”

2 उसने उससे कहा, “ऐसी बात नहीं है; तू मारा न जाएगा। सुन, मेरा पिता मुझ को बिना बताए न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा; फिर वह ऐसी बात को मुझसे क्यों छिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है।”

3 फिर दाऊद ने शपथ खाकर कहा, “तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है; और वह सोचता होगा, कि योनातान इस बात को न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित हो जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, निःसन्देह, मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर है।”

4 योनातान ने दाऊद से कहा, “जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिये करूँगा।”

5 दाऊद ने योनातान से कहा, “सुन कल नया चाँद होगा, और मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूँ; परन्तु तू मुझे विदा कर, और मैं परसों साँझ तक मैदान में छिपा रहूँगा।”

\* **19:10** **20:10** **20:17** **20:20** **20:23** **20:26** **20:29** **20:32** **20:35** **20:38** **20:41** **20:44** **20:47** **20:50** **20:53** **20:56** **20:59** **20:62** **20:65** **20:68** **20:71** **20:74** **20:77** **20:80** **20:83** **20:86** **20:89** **20:92** **20:95** **20:98** **20:101** **20:104** **20:107** **20:110** **20:113** **20:116** **20:119** **20:122** **20:125** **20:128** **20:131** **20:134** **20:137** **20:140** **20:143** **20:146** **20:149** **20:152** **20:155** **20:158** **20:161** **20:164** **20:167** **20:170** **20:173** **20:176** **20:179** **20:182** **20:185** **20:188** **20:191** **20:194** **20:197** **20:200** **20:203** **20:206** **20:209** **20:212** **20:215** **20:218** **20:221** **20:224** **20:227** **20:230** **20:233** **20:236** **20:239** **20:242** **20:245** **20:248** **20:251** **20:254** **20:257** **20:260** **20:263** **20:266** **20:269** **20:272** **20:275** **20:278** **20:281** **20:284** **20:287** **20:290** **20:293** **20:296** **20:299** **20:302** **20:305** **20:308** **20:311** **20:314** **20:317** **20:320** **20:323** **20:326** **20:329** **20:332** **20:335** **20:338** **20:341** **20:344** **20:347** **20:350** **20:353** **20:356** **20:359** **20:362** **20:365** **20:368** **20:371** **20:374** **20:377** **20:380** **20:383** **20:386** **20:389** **20:392** **20:395** **20:398** **20:401** **20:404** **20:407** **20:410** **20:413** **20:416** **20:419** **20:422** **20:425** **20:428** **20:431** **20:434** **20:437** **20:440** **20:443** **20:446** **20:449** **20:452** **20:455** **20:458** **20:461** **20:464** **20:467** **20:470** **20:473** **20:476** **20:479** **20:482** **20:485** **20:488** **20:491** **20:494** **20:497** **20:500** **20:503** **20:506** **20:509** **20:512** **20:515** **20:518** **20:521** **20:524** **20:527** **20:530** **20:533** **20:536** **20:539** **20:542** **20:545** **20:548** **20:551** **20:554** **20:557** **20:560** **20:563** **20:566** **20:569** **20:572** **20:575** **20:578** **20:581** **20:584** **20:587** **20:590** **20:593** **20:596** **20:599** **20:602** **20:605** **20:608** **20:611** **20:614** **20:617** **20:620** **20:623** **20:626** **20:629** **20:632** **20:635** **20:638** **20:641** **20:644** **20:647** **20:650** **20:653** **20:656** **20:659** **20:662** **20:665** **20:668** **20:671** **20:674** **20:677** **20:680** **20:683** **20:686** **20:689** **20:692** **20:695** **20:698** **20:701** **20:704** **20:707** **20:710** **20:713** **20:716** **20:719** **20:722** **20:725** **20:728** **20:731** **20:734** **20:737** **20:740** **20:743** **20:746** **20:749** **20:752** **20:755** **20:758** **20:761** **20:764** **20:767** **20:770** **20:773** **20:776** **20:779** **20:782** **20:785** **20:788** **20:791** **20:794** **20:797** **20:800** **20:803** **20:806** **20:809** **20:812** **20:815** **20:818** **20:821** **20:824** **20:827** **20:830** **20:833** **20:836** **20:839** **20:842** **20:845** **20:848** **20:851** **20:854** **20:857** **20:860** **20:863** **20:866** **20:869** **20:872** **20:875** **20:878** **20:881** **20:884** **20:887** **20:890** **20:893** **20:896** **20:899** **20:902** **20:905** **20:908** **20:911** **20:914** **20:917** **20:920** **20:923** **20:926** **20:929** **20:932** **20:935** **20:938** **20:941** **20:944** **20:947** **20:950** **20:953** **20:956** **20:959** **20:962** **20:965** **20:968** **20:971** **20:974** **20:977** **20:980** **20:983** **20:986** **20:989** **20:992** **20:995** **20:998** **20:1001** **20:1004** **20:1007** **20:1010** **20:1013** **20:1016** **20:1019** **20:1022** **20:1025** **20:1028** **20:1031** **20:1034** **20:1037** **20:1040** **20:1043** **20:1046** **20:1049** **20:1052** **20:1055** **20:1058** **20:1061** **20:1064** **20:1067** **20:1070** **20:1073** **20:1076** **20:1079** **20:1082** **20:1085** **20:1088** **20:1091** **20:1094** **20:1097** **20:1100** **20:1103** **20:1106** **20:1109** **20:1112** **20:1115** **20:1118** **20:1121** **20:1124** **20:1127** **20:1130** **20:1133** **20:1136** **20:1139** **20:1142** **20:1145** **20:1148** **20:1151** **20:1154** **20:1157** **20:1160** **20:1163** **20:1166** **20:1169** **20:1172** **20:1175** **20:1178** **20:1181** **20:1184** **20:1187** **20:1190** **20:1193** **20:1196** **20:1199** **20:1202** **20:1205** **20:1208** **20:1211** **20:1214** **20:1217** **20:1220** **20:1223** **20:1226** **20:1229** **20:1232** **20:1235** **20:1238** **20:1241** **20:1244** **20:1247** **20:1250** **20:1253** **20:1256** **20:1259** **20:1262** **20:1265** **20:1268** **20:1271** **20:1274** **20:1277** **20:1280** **20:1283** **20:1286** **20:1289** **20:1292** **20:1295** **20:1298** **20:1301** **20:1304** **20:1307** **20:1310** **20:1313** **20:1316** **20:1319** **20:1322** **20:1325** **20:1328** **20:1331** **20:1334** **20:1337** **20:1340** **20:1343** **20:1346** **20:1349** **20:1352** **20:1355** **20:1358** **20:1361** **20:1364** **20:1367** **20:1370** **20:1373** **20:1376** **20:1379** **20:1382** **20:1385** **20:1388** **20:1391** **20:1394** **20:1397** **20:1400** **20:1403** **20:1406** **20:1409** **20:1412** **20:1415** **20:1418** **20:1421** **20:1424** **20:1427** **20:1430** **20:1433** **20:1436** **20:1439** **20:1442** **20:1445** **20:1448** **20:1451** **20:1454** **20:1457** **20:1460** **20:1463** **20:1466** **20:1469** **20:1472** **20:1475** **20:1478** **20:1481** **20:1484** **20:1487** **20:1490** **20:1493** **20:1496** **20:1499** **20:1502** **20:1505** **20:1508** **20:1511** **20:1514** **20:1517** **20:1520** **20:1523** **20:1526** **20:1529** **20:1532** **20:1535** **20:1538** **20:1541** **20:1544** **20:1547** **20:1550** **20:1553** **20:1556** **20:1559** **20:1562** **20:1565** **20:1568** **20:1571** **20:1574** **20:1577** **20:1580** **20:1583** **20:1586** **20:1589** **20:1592** **20:1595** **20:1598** **20:1601** **20:1604** **20:1607** **20:1610** **20:1613** **20:1616** **20:1619** **20:1622** **20:1625** **20:1628** **20:1631** **20:1634** **20:1637** **20:1640** **20:1643** **20:1646** **20:1649** **20:1652** **20:1655** **20:1658** **20:1661** **20:1664** **20:1667** **20:1670** **20:1673** **20:1676** **20:1679** **20:1682** **20:1685** **20:1688** **20:1691** **20:1694** **20:1697** **20:1700** **20:1703** **20:1706** **20:1709** **20:1712** **20:1715** **20:1718** **20:1721** **20:1724** **20:1727** **20:1730** **20:1733** **20:1736** **20:1739** **20:1742** **20:1745** **20:1748** **20:1751** **20:1754** **20:1757** **20:1760** **20:1763** **20:1766** **20:1769** **20:1772** **20:1775** **20:1778** **20:1781** **20:1784** **20:1787** **20:1790** **20:1793** **20:1796** **20:1799** **20:1802** **20:1805** **20:1808** **20:1811** **20:1814** **20:1817** **20:1820** **20:1823** **20:1826** **20:1829** **20:1832** **20:1835** **20:1838** **20:1841** **20:1844** **20:1847** **20:1850** **20:1853** **20:1856** **20:1859** **20:1862** **20:1865** **20:1868** **20:1871** **20:1874** **20:1877** **20:1880** **20:1883** **20:1886** **20:1889** **20:1892** **20:1895** **20:1898** **20:1901** **20:1904** **20:1907** **20:1910** **20:1913** **20:1916** **20:1919** **20:1922** **20:1925** **20:1928** **20:1931** **20:1934** **20:1937** **20:1940** **20:1943** **20:1946** **20:1949** **20:1952** **20:1955** **20:1958** **20:1961** **20:1964** **20:1967** **20:1970** **20:1973** **20:1976** **20:1979** **20:1982** **20:1985** **20:1988** **20:1991** **20:1994** **20:1997** **20:2000** **20:2003** **20:2006** **20:2009** **20:2012** **20:2015** **20:2018** **20:2021** **20:2024** **20:2027** **20:2030** **20:2033** **20:2036** **20:2039** **20:2042** **20:2045** **20:2048** **20:2051** **20:2054** **20:2057** **20:2060** **20:2063** **20:2066** **20:2069** **20:2072** **20:2075** **20:2078** **20:2081** **20:2084** **20:2087** **20:2090** **20:2093** **20:2096** **20:2099** **20:2102** **20:2105** **20:2108** **20:2111** **20:2114** **20:2117** **20:2120** **20:2123** **20:2126** **20:2129** **20:2132** **20:2135** **20:2138** **20:2141** **20:2144** **20:2147** **20:2150** **20:2153** **20:2156** **20:2159** **20:2162** **20:2165** **20:2168** **20:2171** **20:2174** **20:2177** **20:2180** **20:2183** **20:2186** **20:2189** **20:2192** **20:2195** **20:2198** **20:2201** **20:2204** **20:2207** **20:2210** **20:2213** **20:2216** **20:2219** **20:2222** **20:2225** **20:2228** **20:2231** **20:2234** **20:2237** **20:2240** **20:2243** **20:2246** **20:2249** **20:2252** **20:2255** **20:2258** **20:2261** **20:2264** **20:2267** **20:2270** **20:2273** **20:2276** **20:2279** **20:2282** **20:2285** **20:2288** **20:2291** **20:2294** **20:2297** **20:2300** **20:2303** **20:2306** **20:2309** **20:2312** **20:2315** **20:2318** **20:2321** **20:2324** **20:2327** **20:2330** **20:2333** **20:2336** **20:2339** **20:2342** **20:2345** **20:2348** **20:2351** **20:2354** **20:2357** **20:2360** **20:2363** **20:2366** **20:2369** **20:2372** **20:2375** **20:2378** **20:2381** **20:2384** **20:2387** **20:2390** **2**



30 तब शाऊल का कोप योनातान पर भड़क उठा, और उसने उससे कहा, “**20:30** क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन तो यिश्शे के पुत्र पर लगा है? इसी से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा।

31 क्योंकि जब तक यिश्शे का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब तक न तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा। इसलिए अभी भेजकर उसे मेरे पास ला, क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा।”

32 योनातान ने अपने पिता शाऊल को उत्तर देकर उससे कहा, “वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?”

33 तब शाऊल ने उसको मारने के लिये उस पर भाला चलाया; इससे योनातान ने जान लिया, कि मेरे पिता ने दाऊद को मार डालना ठान लिया है।

34 तब योनातान क्रोध से जलता हुआ मेज पर से उठ गया, और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया, क्योंकि वह बहुत खेदित था, इसलिए कि उसके पिता ने दाऊद का अनादर किया था।

35 सवेरे को योनातान एक छोटा लड़का संग लिए हुए मैदान में दाऊद के साथ ठहराए हुए स्थान को गया।

36 तब उसने अपने लड़के से कहा, “दौड़कर जो-जो तीर मैं चलाऊँ उन्हें ढूँढ़ ले आ।” लड़का दौड़ ही रहा था, कि उसने एक तीर उसके परे चलाया।

37 जब लड़का योनातान के चलाए तीर के स्थान पर पहुँचा, तब योनातान ने उसके पीछे से पुकारके कहा, “तीर तो तेरी उस ओर है।”

38 फिर योनातान ने लड़के के पीछे से पुकारकर कहा, “फुर्ती कर, ठहर मत।” और योनातान का लड़का तीरों को बटोरके अपने स्वामी के पास ले आया।

39 इसका भेद लड़का तो कुछ न जानता था; केवल योनातान और दाऊद इस बात को जानते थे।

40 योनातान ने अपने हथियार उस लड़के को देकर कहा, “जा, इन्हें नगर को पहुँचा।”

41 जैसे ही लड़का गया, वैसे ही दाऊद दक्षिण दिशा की ओर से निकला, और भूमि पर औंधे मुँह गिरकर **20:41**; तब उन्होंने एक दूसरे को चूमा, और एक दूसरे के साथ रोए, परन्तु दाऊद का रोना अधिक था।

42 तब योनातान ने दाऊद से कहा, “कुशल से चला जा; क्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहकर यहोवा के नाम की शपथ खाई है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य,

और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे।” तब वह उठकर चला गया; और योनातान नगर में गया।

## 21

**21:1**

1 तब दाऊद **21:1**\* को गया और अहीमेलेक याजक के पास आया; और अहीमेलेक दाऊद से भेंट करने को थरथराता हुआ निकला, और उससे पूछा, “क्या कारण है कि तू अकेला है, और तेरे साथ कोई नहीं?”

2 दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा, “राजा ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझसे कहा, जिस काम को मैं तुझे भेजता हूँ, और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ, वह किसी पर प्रगट न होने पाए;” और मैंने जवानों को फलाने स्थान पर जाने को समझाया है।

3 अब तेरे हाथ में क्या है? पाँच रोटी, या जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे।”

4 याजक ने दाऊद से कहा, “मेरे पास साधारण रोटी तो नहीं है, केवल पवित्र रोटी है; इतना हो कि वे जवान स्त्रियों से अलग रहे हों।”

5 दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उससे कहा, “सच है कि हम तीन दिन से स्त्रियों से अलग हैं; फिर जब मैं निकल आता हूँ, तब **21:5** यद्यपि यात्रा साधारण होती है, तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे।”

6 तब याजक ने उसको पवित्र रोटी दी; क्योंकि दूसरी रोटी वहाँ न थी, केवल भेंट की रोटी थी जो यहोवा के सम्मुख से उठाई गई थी, कि उसके उठा लेने के दिन गरम रोटी रखी जाए। (**21:6** **12:4**, **21:6**)

7 उसी दिन वहाँ दोएग नामक शाऊल का एक कर्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ था; वह एदोमी और शाऊल के चरवाहों का मुखिया था।

8 फिर दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, “क्या यहाँ तेरे पास कोई भाला या तलवार नहीं है? क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी कि मैं न तो तलवार साथ लाया हूँ, और न अपना कोई हथियार ही लाया।”

9 याजक ने कहा, “हाँ, पलिशती गोलियत जिसे तूने एला तराई में घात किया, उसकी तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोद के पीछे रखी है; यदि तू उसे लेना चाहे, तो ले ले, उसे छोड़ और कोई यहाँ नहीं है।” दाऊद बोला, “उसके तुल्य कोई नहीं; वही मुझे दे।”

‡ **20:41** **20:41** निश्चय ही योनातान के प्रति उसकी अटल सभी भक्ति का संकेत है उसके राजा का पुत्र होने के कारण और योनातान द्वारा उसे मार डालने के अधिकार तथा उसकी भिन्नता को स्वीकार करने में। \* **21:1** **21:1** नोब पुरोहितों का नगर था। प्रधान पुरोहित वहाँ रहता था और मिलापवाला तम्बू वहाँ था। † **21:5** **21:5** उनके वस्त्र या झोले (व्यव. 22:5) या अन्य सामान जो नियमानुसार अशुद्ध हो सकते थे और उन्हें तथा उस व्यक्ति को भी शोधन की आवश्यकता होती थी। (लैव्य. 13:58; निर्ग. 19:10)

११११ ११ ११ ११ ११ १११११

10 तब दाऊद चला, और उसी दिन शाऊल के डर के मारे भागकर गत के राजा आकीश के पास गया।

11 और आकीश के कर्मचारियों ने आकीश से कहा, “क्या वह उस देश का राजा दाऊद नहीं है? क्या लोगों ने उसी के विषय नाचते-नाचते एक दूसरे के साथ यह गाना न गाना था,

‘शाऊल ने हजारों को,  
और दाऊद ने लाखों को मारा है?’ ”

12 दाऊद ने ये बातें अपने मन में रखीं, और गत के राजा आकीश से अत्यन्त डर गया।

13 तब उसने उनके सामने दूसरी चाल चली, और उनके हाथ में पड़कर पागल सा, बन गया; और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचने, और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा।

14 तब आकीश ने अपने कर्मचारियों से कहा, “देखो, वह जन तो बावला है; तुम उसे मेरे पास क्यों लाए हो?”

15 क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे सामने बावलापन करने के लिये लाए हो? क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा?”

## 22

११११ ११ १११ ११ १११११

1 दाऊद वहाँ से चला, और बचकर ११११११११ ११ १११११\* में पहुँच गया; यह सुनकर उसके भाई, वरन् उसके पिता का समस्त घराना वहाँ उसके पास गया।

2 और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ हो गए।

3 वहाँ से दाऊद ने मोआब के मिस्ये को जाकर मोआब के राजा से कहा, “मेरे पिता को अपने पास तब तक आकर रहने दो, जब तक कि मैं न जानूँ कि परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा।”

4 और वह उनको मोआब के राजा के सम्मुख ले गया, और जब तक दाऊद उस गढ़ में रहा, तब तक वे उसके पास रहे।

5 फिर गाद नामक एक नबी ने दाऊद से कहा, “इस गढ़ में मत रह; चल, यहूदा के देश में जा।” और दाऊद चलकर हेरेत के जंगल में गया।

6 तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके संगियों का पता लग गया है उस समय शाऊल गिबा के ऊँचे स्थान पर, एक झाऊ के पेड़ के नीचे, हाथ में अपना

भाला लिए हुए बैठा था, और उसके सब कर्मचारी उसके आस-पास खड़े थे।

7 तब शाऊल अपने कर्मचारियों से जो उसके आस-पास खड़े थे कहने लगा, “हे बिन्यामीनियों, सुनो; क्या यिशै का पुत्र तुम सभी को खेत और दाख की बारियाँ देगा? क्या वह तुम सभी को सहस्त्रपति और शतपति करेगा?”

8 तुम सभी ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की गोष्ठी की है? और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बाँधी, तब किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया; और तुम में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्मचारी को मेरे विरुद्ध ऐसा घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है।”

9 तब एदोमी दोग ने, जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया गया था, उत्तर देकर कहा, “मैंने तो यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमेलक के पास आते देखा,

10 और उसने उसके लिये यहोवा से पूछा, और उसे भोजनवस्तु दी, और पलिशती गोलियत की तलवार भी दी।”

11 और राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलक याजक को और उसके पिता के समस्त घराने को, अर्थात् नोब में रहनेवाले याजकों को बुलवा भेजा; और जब वे सब के सब शाऊल राजा के पास आए,

12 तब शाऊल ने कहा, “हे अहीतूब के पुत्र, सुन,” वह बोला, “हे प्रभु, क्या आज्ञा?”

13 शाऊल ने उससे पूछा, “क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनों ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की है? तूने उसे रोटी और तलवार दी, और उसके लिये परमेश्वर से पूछा भी, जिससे वह मेरे विरुद्ध उठे, और ऐसा घात लगाए जैसा आज के दिन है?”

14 अहीमेलक ने राजा को उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त कर्मचारियों में दाऊद के तुल्य विश्वासयोग्य कौन है? वह तो राजा का दामाद है, और तेरी राजसभा में उपस्थित हुआ करता, और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है।

15 क्या मैंने आज ही उसके लिये परमेश्वर से पूछना आरम्भ किया है? वह मुझसे दूर रहे! राजा न तो अपने दास पर ऐसा कोई दोष लगाए, न मेरे पिता के समस्त घराने पर, क्योंकि तेरा दास इन सब बातों के विषय कुछ भी नहीं जानता।”

16 राजा ने कहा, “हे अहीमेलक, तू और तेरे पिता का समस्त घराना निश्चय मार डाला जाएगा।”

\* 22:1 ११११११११ ११ १११११: अदूल्लाम शपेला में यहूदिया का एक नगर था जो बैतलहम से दूर नहीं था।



17 फिर राजा ने उन पहरुओं से जो उसके आस-पास खड़े थे आज्ञा दी, “मुझे और यहोवा के याजकों को मार डालो; क्योंकि उन्होंने भी दाऊद की सहायता की है, और उसका भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया।” परन्तु राजा के सेवक यहोवा के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे।

18 तब राजा ने दोएग से कहा, “तू मुड़कर याजकों को मार डाल।” तब एदोमी दोएग ने मुड़कर याजकों को मारा, और उस दिन सनीवाला एपोद पहले हुए पचासी पुरुषों को घात किया।

19 और याजकों के नगर नोब को उसने स्त्रियों-पुरुषों, और बाल-बच्चों, और दूधपीतों, और बैलों, गदहों, और भेड़-बकरियों समेत तलवार से मारा।

20 परन्तु अहीतूब के पुत्र अहीमेलक का ~~नामक एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया।~~

21 तब एब्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल ने यहोवा के याजकों का वध किया है।

22 और दाऊद ने एब्यातार से कहा, “जिस दिन एदोमी दोएग वहाँ था, उसी दिन मैंने जान लिया था, कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ।

23 इसलिए तू मेरे साथ निडर रह; जो मेरे प्राण का ग्राहक है वही तेरे प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी।”

## 23

~~दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिशती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे हैं, और खलिहानों को लूट रहे हैं।~~

1 दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिशती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे हैं, और खलिहानों को लूट रहे हैं।

2 तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं जाकर पलिशतियों को मारूँ?” यहोवा ने दाऊद से कहा, “जा, और पलिशतियों को मार के कीला को बचा।”

3 परन्तु दाऊद के जनों ने उससे कहा, “हम तो इस यहूदा देश में भी डरते रहते हैं, यदि हम कीला जाकर पलिशतियों की सेना का सामना करें, तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे?”

4 तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा, “कमर बाँधकर कीला को जा; क्योंकि मैं पलिशतियों को तेरे हाथ में कर दूँगा।”

5 इसलिए दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया, और पलिशतियों से लड़कर उनके पशुओं को हाँक लाया, और उन्हें बड़ी मार से मारा। अतः दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया।

6 जब अहीमेलक का पुत्र एब्यातार दाऊद के पास कीला को भाग गया था, तब हाथ में एपोद लिए हुए गया था।

7 तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है। और शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है; वह तो फाटक और बेंडेवाले नगर में घुसकर बन्द हो गया है।”

8 तब शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलवाया, कि कीला को जाकर दाऊद और उसके जनों को घेर ले।

9 तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि कि युक्ति कर रहा है; इसलिए उसने एब्यातार याजक से कहा, “एपोद को निकट ले आ।”

10 तब दाऊद ने कहा, “हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण कीला नगर नष्ट करने को आना चाहता है।

11 क्या कीला के लोग मुझे उसके वश में कर देंगे? क्या जैसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, अपने दास को यह बता।” यहोवा ने कहा, “हाँ, वह आएगा।”

12 फिर दाऊद ने पूछा, “क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल के वश में कर देंगे?” यहोवा ने कहा, “हाँ, वे कर देंगे।”

13 तब दाऊद और उसके जन जो कोई छः सौ थे, कीला से निकल गए, और इधर-उधर जहाँ कहीं जा सके वहाँ गए। और जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है, तब उसने वहाँ जाने का विचार छोड़ दिया।

~~तब दाऊद जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के ~~नामक जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूँढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।~~~~

14 तब दाऊद जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के ~~नामक जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूँढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।~~

15 और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला है। और दाऊद जीप नामक जंगल के होरेश नामक स्थान में था;

† 22:20 ~~वह पवित्रस्थान की देख-रेख के लिये नोब में रह गया था जब अन्य पुरोहित शाऊल के पास गए थे और इस प्रकार वह बच गया। वह दाऊद के सम्पूर्ण राज्यकाल में उसका विश्वासयोग्य मित्र बना रहा।~~ \* 23:14 ~~हेब्रोन और एन गेदी के मध्य~~ † 23:16 ~~मित्रों में अपनी निष्ठा का एक मार्ग स्पर्शी उदाहरण। योनातान की दीनता और निःस्वार्थ प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है।~~



किसी ने तो मुझसे तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैंने कहा, 'मैं अपने प्रभु पर हाथ न उठाऊंगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।'

11 फिर, [22] [22] [22] [22] [22] [22], देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैंने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न किया; इससे निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई बुराई या अपराध का सोच नहीं है। मैंने तेरे विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया, परन्तु तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है।

12 यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा बदला ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।

13 प्राचीनों के नीतिवचन के अनुसार 'दुष्टता दुष्टों से होती है;' परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।

14 इस्राएल का राजा किसका पीछा करने को निकला है? और किसके पीछे पड़ा है? एक मरे कुत्ते के पीछे! एक पिस्सू के पीछे!

15 इसलिए यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे, और विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े, और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए।"

16 जब दाऊद शाऊल से ये बातें कह चुका, तब शाऊल ने कहा, "हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?" तब शाऊल चिल्लाकर रोने लगा।

17 फिर उसने दाऊद से कहा, "तू मुझसे अधिक धर्मी है; तूने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की।

18 और तूने आज यह प्रगट किया है, कि तूने मेरे साथ भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया, तब तूने मुझे घात न किया।

19 भला! क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है? इसलिए जो तूने आज मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे।

20 और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा।

21 अब मुझसे यहोवा की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे बाद नष्ट न करूंगा, और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूंगा।"

22 तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया; और दाऊद अपने जनों समेत गद्दों में चला गया।

[22] [22] [22] [22] [22] [22]

1 शमूएल की मृत्यु हो गई; और समस्त इस्राएलियों ने इकट्ठे होकर उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही में जो रामाह में था उसको मिट्टी दी। तब दाऊद उठकर पारान जंगल को चला गया।

2 माओन में एक पुरुष रहता था जिसका व्यापार कर्मेल में था। और वह पुरुष बहुत धनी था, और उसकी तीन हजार भेड़ें, और एक हजार बकरियाँ थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था।

3 उस पुरुष का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी, परन्तु पुरुष कठोर, और बुरे-बुरे काम करनेवाला था; वह कालेबवंशी था।

4 जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा है;

5 तब दाऊद ने दस जवानों को वहाँ भेज दिया, और दाऊद ने उन जवानों से कहा, "कर्मेल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर से उसका कुशल क्षेम पूछो।

6 और उससे यह कहो, 'तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे।'

7 मैंने सुना है, कि जो तू ऊन कतर रहा है; तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे, और न तो हमने उनकी कुछ हानि की, और न उनका कुछ खोया गया।

8 अपने जवानों से यह बात पूछ ले, और वे तुझको बताएँगे। अतः इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो; हम तो आनन्द के समय में आए हैं, इसलिए जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दे।"

9 दाऊद के जवान जाकर ऐसी बातें उसके नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे।

10 नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उनसे कहा, "दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आजकल बहुत से दास अपने-अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं।

11 क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैंने अपने कतरनेवालों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूँ, जिनको मैं नहीं जानता कि कहाँ के हैं?"

12 तब दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको ये सब बातें ज्यों की त्यों सुना दीं।

13 तब दाऊद ने अपने जनों से कहा, "अपनी-अपनी तलवार बाँध लो।" तब उन्होंने अपनी-अपनी तलवार बाँध ली; और दाऊद ने भी अपनी तलवार बाँध ली;

## 25

और कोई चार सौ पुरुष दाऊद के पीछे-पीछे चले, और दो सौ सामान के पास रह गए।

14 परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया, “दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे; और उसने उन्हें ललकार दिया।

15 परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया-जाया करते थे, तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई, और न हमारा कुछ खोया;

16 जब तक हम उनके साथ भेड़-बकरियाँ चराते रहे, तब तक वे रात दिन हमारी आड़ बने रहे।

17 इसलिए अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए; क्योंकि उन्होंने हमारे स्वामी की और उसके समस्त घराने की हानि करना ठान लिया होगा, वह तो ऐसा दुष्ट है कि उससे कोई बोल भी नहीं सकता।”

18 तब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु, और पाँच भेड़ों का माँस, और पाँच सआ भूना हुआ अनाज, और एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ टिकियाँ लेकर गदहों पर लदवाई।

19 और उसने अपने जवानों से कहा, “तुम मेरे आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आती हूँ;” परन्तु उसने अपने पति नाबाल से कुछ न कहा।

20 वह गदहे पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती थी, और दाऊद अपने जनों समेत उसके सामने उतरा आता था; और वह उनको मिली।

21 दाऊद ने तो सोचा था, “मैंने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह निःसन्देह व्यर्थ हुआ; क्योंकि उसने भलाई के बदले मुझसे बुराई ही की है।

22 यदि सवेरे को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीवित छोड़ूँ, तो ~~तुझे मुझे भेजा है~~, वरन इससे भी अधिक करे।”

23 दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी, और दाऊद के सम्मुख मुँह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की।

24 फिर वह उसके पाँव पर गिरकर कहने लगी, “हे मेरे प्रभु, यह अपराध मेरे ही सिर पर हो; तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू अपनी दासी की बातों को सुन ले।

25 मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह आप है; उसका

नाम तो नाबाल है, और सचमुच उसमें मूर्खता पाई जाती है; परन्तु मुझ तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तूने भेजा था न देखा था।

26 और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना बदला लेने से रोक रखा है, इसलिए अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेवाले नाबाल ही के समान ठहरें।

27 और अब यह भेंट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है, उन जवानों को दी जाए जो मेरे प्रभु के साथ चलते हैं।

28 अपनी दासी का अपराध क्षमा कर; क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिए कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है; और जन्म भर तुझ में कोई बुराई नहीं पाई जाएगी।

29 और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का ग्राहक होने को उठा है, तो भी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बँधा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा।

30 इसलिए जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये यह समस्त भलाई करेगा जो उसने तेरे विषय में कही है, और तुझे इस्राएल पर प्रधान करके ठहराएगा,

31 तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, या मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न होगा कि तूने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु ने अपना बदला आप लिया है। फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण करना।”

32 दाऊद ने अबीगैल से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज के दिन मुझसे भेंट करने के लिये तुझे भेजा है।

33 और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तूने मुझे आज के दिन खून करने और अपना बदला आप लेने से रोक लिया है।

34 क्योंकि सचमुच इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसने मुझे तेरी हानि करने से रोका है, उसके जीवन की शपथ, यदि तू फुर्ती करके मुझसे भेंट करने को न आती, तो निःसन्देह सवेरे को उजियाला होने तक नाबाल का कोई लड़का भी न बचता।”

35 तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह उसके लिये लाई थी; फिर उससे उसने कहा, “अपने घर कुशल से जा; सुन, मैंने तेरी बात मानी है और तेरी विनती ग्रहण

\* 25:22 ~~तुझे मुझे भेजा है~~ समापन वाक्यांश परिवार के सर्वनाश का भाव व्यक्त करता है। एक लड़के का अर्थ सम्भवत है कि तुझ से तुझ कहा था।

कर ली है।”

36 तब अबीगैल नाबाल के पास लौट गई; और क्या देखती है, कि वह घर में राजा का सा भोज कर रहा है। और नाबाल का मन मगन है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिए उसने भोर का उजियाला होने से पहले उससे कुछ भी न कहा।

37 सवेरे को जब नाबाल का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी ने उसे सारा हाल कह सुनाया, तब उसके मन का हियाव जाता रहा, और [2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2]†।

38 और दस दिन के पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया।

39 नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा, “धन्य है यहोवा जिसने नाबाल के साथ मेरी नामधराई का मुकद्दमा लड़कर अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है।” तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास इसलिए भेजा कि वे उससे उसकी पत्नी होने की बातचीत करें।

40 तो जब दाऊद के सेवक कर्मेल को अबीगैल के पास पहुंचे, तब उससे कहने लगे, “दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिए भेजा है कि तू उसकी पत्नी बने।”

41 तब वह उठी, और मुँह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा, “तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिये दासी बने।”

42 तब अबीगैल फुर्ती से उठी, और गदहे पर चढ़ी, और उसकी पाँच सहेलियाँ उसके पीछे-पीछे हो लीं; और वह दाऊद के दूतों के पीछे-पीछे गई; और उसकी पत्नी हो गई।

43 और दाऊद ने यिज्जेल नगर की अहीनोअम से भी विवाह कर लिया, तो वे दोनों उसकी पत्नियाँ हुईं।

44 परन्तु शाऊल ने अपनी बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था।

## 26

[2][2][2][2] [2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]

1 फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद उस हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है छिपा नहीं रहता?”

2 तब शाऊल उठकर इस्राएल के तीन हजार छाँटे हुए योद्धा संग लिए हुए गया कि दाऊद को जीप के जंगल में खोजे।

3 और शाऊल ने अपनी छावनी मार्ग के पास हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल में रहा; और उसने जान लिया, कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में आया है;

4 तब दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है।

5 तब दाऊद उठकर उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल पड़ा था; और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहाँ शाऊल अपने सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर समेत पड़ा था, शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था और उसके लोग उसके चारों ओर डेरे डाले हुए थे।

6 तब दाऊद ने हिती अहीमेलेक और सरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा, “मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा?” [2][2][2][2]\* ने कहा, “तेरे साथ मैं चलूँगा।”

7 अतः दाऊद और अबीशै रातों-रात उन लोगों के पास गए, और क्या देखते हैं, कि शाऊल गाड़ियों की आड़ में पड़ा सो रहा है, और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा है; और अब्नेर और योद्धा लोग उसके चारों ओर पड़े हुए हैं।

8 तब अबीशै ने दाऊद से कहा, “परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है; इसलिए अब मैं उसको एक बार ऐसा मारूँ कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धँस जाए, और मुझ को उसे दूसरी बार मारना न पड़ेगा।”

9 दाऊद ने अबीशै से कहा, “उसे नष्ट न कर; क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है।”

10 फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा; या वह अपनी मृत्यु से मरेगा; या वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा।

11 यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर उठाऊँ; अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की सुराही उठा ले, और हम यहाँ से चले जाएँ।”

12 तब दाऊद ने भाले और पानी की सुराही को शाऊल के सिरहाने से उठा लिया; और वे चले गए। और किसी ने इसे न देखा, और न जाना, और न कोई जागा; क्योंकि वे सब इस कारण सोए हुए थे, कि यहोवा की ओर से उनमें भारी नींद समा गई थी।

13 तब दाऊद दूसरी ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ, और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था;

14 और दाऊद ने उन लोगों को, और नेर के पुत्र अब्नेर

† 25:37 [2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2] [2] [2][2][2][2]: सम्भवतः सुनकर उसके आक्रोश के कारण उसे लकवा मार गया जिसका कारण था पिछली रात उसका पीना-खाना। दस दिन निश्चेष्ट पड़ा रहा फिर मर गया। \* 26:6 [2][2][2][2]: वह दाऊद की बहन सरूयाह का पुत्र था और दाऊद का हमउम्र था। वह एक प्रसिद्ध योद्धा था।



10 आकीश ने पूछा, “आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं की?” दाऊद ने कहा, “हाँ, यहूदा <sup>27:10</sup> और केनियों की दक्षिण दिशा में।”

11 दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुँचाए; उसने सोचा था, “ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा-ऐसा किया है। वरन् जब से वह पलिशियों के देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही है।”

12 तब आकीश ने दाऊद की बात सच मानकर कहा, “यह अपने इस्राएली लोगों की दृष्टि में अति घृणित हुआ है; इसलिए यह सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा।”

## 28

1 उन दिनों में पलिशियों ने इस्राएल से लड़ने के लिये अपनी सेना इकट्ठी की तब आकीश ने दाऊद से कहा, “निश्चय जान कि तुझे अपने जवानों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा।”

2 दाऊद ने आकीश से कहा, “इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा।” आकीश ने दाऊद से कहा, “इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊँगा।”

<sup>27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10-27:10</sup> <sup>27:10-27:10</sup>

3 शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्राएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामाह में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों को देश से निकाल दिया था।

4 जब पलिशती इकट्ठे हुए और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली।

5 पलिशियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो काँप उठा।

6 और जब <sup>27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10-27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10</sup>, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा।

7 तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, “मेरे लिये किसी भूत-सिद्धि करनेवाली को ढूँढो, कि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूँ।” उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, “एनदोर में एक भूत-सिद्धि करनेवाली रहती है।”

8 तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातों-रात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, “अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूँगा उसे बुलवा दे।”

9 स्त्री ने उससे कहा, “तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उसने ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों का देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले।”

10 शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।”

11 तब स्त्री ने पूछा, “मैं तेरे लिये किसको बुलाऊँ?” उसने कहा, “शमूएल को मेरे लिये बुला।”

12 जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊँचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, “तूने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल है।”

13 राजा ने उससे कहा, “मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है?” स्त्री ने शाऊल से कहा, “मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है।”

14 उसने उससे पूछा, “उसका कैसा रूप है?” उसने कहा, “एक बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है।” तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुँह भूमि पर गिरकर दण्डवत् किया।

15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, “तूने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है?” शाऊल ने कहा, “मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ; क्योंकि पलिशती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वप्नों के; इसलिए मैंने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूँ।”

16 शमूएल ने कहा, “जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझसे क्यों पूछता है?”

17 यहोवा ने तो जैसे मुझसे कहलवाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है; अर्थात् उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।

18 तूने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव

† 27:10 <sup>27:10</sup> हेस्रोन पुत्र यरहमेल के वंशज। यहूदा का पुत्र परेस, परेस का पुत्र हेस्रोन। अतः यहूदा के दक्षिण का भाग: \* 28:6 <sup>27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10-27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10</sup> स्वप्न द्वारा शाऊल को यहोवा ने कोई उत्तर नहीं दिया जो उसके लिये तात्कालिक प्रका. था- एपोद पहने हुए प्रधान पुरोहित का उत्तर या भविष्यद्वक्ता का उत्तर। † 28:19 <sup>27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10-27:10</sup> <sup>27</sup> <sup>27:10</sup> शाऊल अपने घराने का ही नहीं सम्पूर्ण इस्राएल का विनाश लाया था। शाऊल और योनातान की मृत्यु के बाद उनका शिविर विजेताओं द्वारा लूटा जाएगा।





4 तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर उनमें रोने की शक्ति न रही।

5 दाऊद की दोनों स्त्रियाँ, यिजेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्दी बना ली गई थीं।

6 और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पथरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बाँधा।

7 तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र [?] याजक से कहा, “एपोद को मेरे पास ला।” तब एब्यातार एपोद को दाऊद के पास ले आया।

8 और दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं इस दल का पीछा करूँ? क्या उसको जा पकड़ूँगा?” उसने उससे कहा, “पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा;”

9 तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को लेकर बसोर नामक नदी तक पहुँचा; वहाँ कुछ लोग छोड़े जाकर रह गए।

10 दाऊद तो चार सौ पुरुषों समेत पीछा किए चला गया; परन्तु दो सौ जो ऐसे थक गए थे, कि बसोर नदी के पार न जा सके वहीं रहे।

11 उनको एक मिस्री पुरुष मैदान में मिला, उन्होंने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दी; और उसने उसे खाया, तब उसे पानी पिलाया,

12 फिर उन्होंने उसको अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिए। और जब उसने खाया, तब उसके जी में जी आया; उसने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई थी और न पानी पिया था।

13 तब दाऊद ने उससे पूछा, “तू किसका जन है? और कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य का दास हूँ; और तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा, और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया।

14 हम लोगों ने करेतियों की दक्षिण दिशा में, और यहूदा के देश में, और कालेब की दक्षिण दिशा में चढ़ाई की; और सिकलग को आग लगाकर फूँक दिया था।”

15 दाऊद ने उससे पूछा, “क्या तू मुझे उस दल के पास पहुँचा देगा?” उसने कहा, “मुझसे परमेश्वर की यह शपथ खा, कि तू मुझे न तो प्राण से मारेगा, और न मेरे स्वामी के हाथ कर देगा, तब मैं तुझे उस दल के पास पहुँचा दूँगा।”

16 जब उसने उसे पहुँचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि पर छिटके हुए खाते पीते, और उस बड़ी लूट

के कारण, जो वे पलिशितियों के देश और यहूदा देश से लाए थे, नाच रहे हैं।

17 इसलिए दाऊद उन्हें रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की साँझ तक मारता रहा; यहाँ तक कि चार सौ जवानों को छोड़, जो ऊँटों पर चढ़कर भाग गए, उनमें से एक भी मनुष्य न बचा।

18 और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया।

19 वरन् उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियाँ, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उसमें से कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया।

20 और दाऊद ने सब भेड़-बकरियाँ, और गाय-बैल भी लूट लिए; और इन्हें लोग यह कहते हुए अपने जानवरों के आगे हाँकते गए, कि यह दाऊद की लूट है।

21 तब दाऊद उन दो सौ पुरुषों के पास आया, जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे-पीछे न जा सके थे, और बसोर नाले के पास छोड़ दिए गए थे; और वे दाऊद से और उसके संग के लोगों से मिलने को चले; और दाऊद ने उनके पास पहुँचकर उनका कुशल क्षेम पूछा।

22 तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गए थे सब दुष्ट और ओछे लोगों ने कहा, “ये लोग हमारे साथ नहीं चले थे, इस कारण हम उन्हें अपने छोड़ाए हुए लूट के माल में से कुछ न देंगे, केवल एक-एक मनुष्य को उसकी स्त्री और बाल-बच्चे देंगे, कि वे उन्हें लेकर चले जाएँ।”

23 परन्तु दाऊद ने कहा, “हे मेरे भाइयों, तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है; और उसने हमारी रक्षा की, और उस दल को जिसने हमारे ऊपर चढ़ाई की थी हमारे हाथ में कर दिया है।

24 और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा? लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा; दोनों एक ही समान भाग पाएँगे।”

25 और दाऊद ने इस्राएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम ठहराया, और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन् आज लो बना है।

26 सिकलग में पहुँचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियों के पास जो उसके मित्र थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा, और यह सन्देश भेजा, “यहोवा के शत्रुओं से ली हुई लूट

\* 30:7 [?] एब्यातार दाऊद के साथ बना रहा। जब से उसने कीला में दाऊद का साथ पकड़ा था। (1शमू. 23:6) एपोद द्वारा यहोवा से पूछना

में से तुम्हारे लिये यह भेंट है।”

27 अर्थात् बेतेल के दक्षिण देश के रामोत, यत्तीर,

28 अरोएर, सिपमोत, एशतमो,

29 राकाल, यरहमेलियों के नगरों, केनियों के नगरों,

30 होर्मा, कोराशान, अताक,

31 [2222222222] आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था, उन सब के पुरनियों के पास उसने कुछ कुछ भेजा।

### 31

[2222 22 2222 22222222 22 22222222]

1 पलिशती तो इस्राएलियों से लड़े; और इस्राएली पुरुष पलिशतियों के सामने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए।

2 और पलिशती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे; और पलिशतियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब, और मल्कीशूअ को मार डाला।

3 शाऊल के साथ घमासान युद्ध हो रहा था, और धनुर्धारियों ने उसे पा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया।

4 तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मुझे भोंक दें, और मेरा ठट्टा करें।” परन्तु उसके हथियार ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करने से इन्कार किया। तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा।

5 यह देखकर कि शाऊल मर गया, उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी तलवार पर आप गिरकर उसके साथ मर गया।

6 अतः शाऊल, और उसके तीनों पुत्र, और उसका हथियार ढोनेवाला, और उसके समस्त जन उसी दिन एक संग मर गए।

7 यह देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई की दूसरी ओर वाले और यरदन के पार रहनेवाले भी इस्राएली मनुष्य अपने-अपने नगरों को छोड़कर भाग गए; और पलिशती आकर उनमें रहने लगे।

8 दूसरे दिन जब पलिशती मारे हुआओं के माल को लूटने आए, तब उनको शाऊल और उसके तीनों पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले।

9 तब उन्होंने शाऊल का सिर काटा, और हथियार लूट लिए, और पलिशतियों के देश के सब स्थानों में दूतों

को इसलिए भेजा, कि उनके देवालियों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएँ।

10 तब उन्होंने उसके हथियार तो अशतोरत नामक देवियों के मन्दिर में रखे, और उसके शव को बेतशान की शहरपनाह में जड़ दिया।

11 जब गिलादवाले याबेश के निवासियों ने सुना कि पलिशतियों ने शाऊल से क्या-क्या किया है,

12 तब सब शूरवीर चले, और रातों-रात जाकर शाऊल और उसके पुत्रों के शव बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वहीं [2222 2222]\*

13 तब उन्होंने उनकी हड्डियाँ लेकर याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दीं, और [222 222 22 222222 222222]†।

† 30:31 [2222222222] हेब्रोन शरणनगर था (यहो.20:7) और कहातियों का एक नगर था (यहो.21:11) वह नगर यरूशलेम के दक्षिण में 20 मील की दूरी पर था। \* 31:12 [2222 2222] इब्रानियों में शव को जलाना अन्तिम संस्कार विधि नहीं थी परन्तु उन सिर कटे शवों को छिपाने और अतिरिक्त भावी अपमान से बचाने की पवित्र इच्छा से याबेश के पुरुषों ने उनके शव जला दिए। † 31:13 [222 222 22 222222 222222] शाऊल

यद्यपि एक पतित मनुष्य था, उन्होंने उसे पूर्ण सम्मान प्रदान किया।

## शमूएल की दूसरी पुस्तक

११११

शमूएल की दूसरी पुस्तक अपने लेखक का नाम प्रगट नहीं करती है। इसका लेखक भविष्यद्वक्ता शमूएल नहीं हो सकता क्योंकि उसकी मृत्यु हो चुकी थी। आरम्भ में 1 शमूएल और 2 शमूएल एक ही ग्रन्थ था। यूनानी पुराने नियम के अनुवादकों ने इसे दो पुस्तकों में विभाजित कर दिया था। अतः उन्होंने शाऊल की मृत्यु के वृत्तान्त तक के भाग को एक पुस्तक में रखा तथा दाऊद के राज्यकाल के आरम्भ अर्थात् दाऊद यहूदा का राजा कैसे बनाया गया तथा बाद में सम्पूर्ण इस्राएल का राजा होने का वृत्तान्त दूसरी पुस्तक में कर दिया।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 1050 - 722 ई. पू.

यह पुस्तक बाबेल की बंधुआई के समय विधान को मुख्य माननेवालों की परम्परा के इतिहास का भाग है।

१११११११

एक प्रकार से इसके मूल पाठक राजा दाऊद और राजा सुलैमान की प्रजा (इस्राएल) तथा उनके वंशज थे।

१११११११११

2 शमूएल की पुस्तक राजा दाऊद के राज्य का वृत्तान्त है। यह पुस्तक दाऊद के साथ बाँधी गई परमेश्वर की वाचा को ऐतिहासिक परिदृश्य में व्यक्त करती है। दाऊद ने यरूशलेम को इस्राएल का राजनीतिक एवं धार्मिक केन्द्र बना दिया था। (2 शमू. 5:6-12; 6:1-17) यहोवा के वचन (2 शमू. 7:4-16) तथा दाऊद के वचन (2 शमू. 23:1-7) परमेश्वर प्रदत्त राज्य के महत्त्व को बल देते हैं। और मसीह की सहस्र वर्षीय प्रभुता की भविष्यद्वानी है।

१११ १११११

एकीकरण

रूपरेखा

1. दाऊद के राज्य का उदय — 1:1-10:19
2. दाऊद के राज्य का पतन — 11:1-20:26
3. परिशिष्ट — 21:1-24:25

११११ ११ १११११११ ११ ११११

\* 1:12 ११११ ११११११ ११ ११११ ११११: यहाँ दाऊद का देशभक्त एवं स्वार्थ रहित चरित्र स्पष्ट प्रगट होता है। जबकि इससे उसके लिए सिंहासन का मार्ग खुल गया था और उसका बेरी मार्ग से हटा दिया गया था। योनातान के लिए उसने मन की पूर्ण कोमलता से विलाप किया क्योंकि वह उसका प्रेमी मित्र था।

1 शाऊल के मरने के बाद, जब दाऊद अमालेकियों को मारकर लौटा, और दाऊद को सिकलग में रहते हुए दो दिन हो गए,

2 तब तीसरे दिन ऐसा हुआ कि शाऊल की छावनी में से एक पुरुष कपड़े फाड़े सिर पर धूल डाले हुए आया। जब वह दाऊद के पास पहुँचा, तब भूमि पर गिरा और दण्डवत् किया।

3 दाऊद ने उससे पूछा, “तू कहाँ से आया है?” उसने उससे कहा, “मैं इस्राएली छावनी में से बचकर आया हूँ।”

4 दाऊद ने उससे पूछा, “वहाँ क्या बात हुई? मुझे बता।” उसने कहा, “यह, कि लोग रणभूमि छोड़कर भाग गए, और बहुत लोग मारे गए; और शाऊल और उसका पुत्र योनातान भी मारे गए हैं।”

5 दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जवान से पूछा, “तू कैसे जानता है कि शाऊल और उसका पुत्र योनातान मर गए?”

6 समाचार देनेवाले जवान ने कहा, “संयोग से मैं गिलबो पहाड़ पर था; तो क्या देखा, कि शाऊल अपने भाले की टेक लगाए हुए है; फिर मैंने यह भी देखा कि उसका पीछा किए हुए रथ और सवार बड़े वेग से दौड़े आ रहे हैं।

7 उसने पीछे फिरकर मुझे देखा, और मुझे पुकारा। मैंने कहा, ‘क्या आज्ञा?’

8 उसने मुझसे पूछा, ‘तू कौन है?’ मैंने उससे कहा, ‘मैं तो अमालेकी हूँ।’

9 उसने मुझसे कहा, ‘मेरे पास खड़ा होकर मुझे मार डाल; क्योंकि मेरा सिर तो घूमा जाता है, परन्तु प्राण नहीं निकलता।’

10 तब मैंने यह निश्चय जान लिया, कि वह गिर जाने के पश्चात् नहीं बच सकता, मैंने उसके पास खड़े होकर उसे मार डाला; और मैं उसके सिर का मुकुट और उसके हाथ का कंगन लेकर यहाँ अपने स्वामी के पास आया हूँ।”

11 तब दाऊद ने दुःखी होकर अपने कपड़े पकड़कर फाड़े; और जितने पुरुष उसके संग थे सब ने वैसा ही किया;

12 और वे शाऊल, और उसके पुत्र योनातान, और यहोवा की प्रजा, और इस्राएल के घराने के लिये १११११ ११११११ ११ १११११ ११११\*, और साँझ तक कुछ न खाया, इस कारण कि वे तलवार से मारे गए थे।

13 फिर दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जवान से पूछा, “तू कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं तो परदेशी का बेटा अर्थात् अमालेकी हूँ।”

14 दाऊद ने उससे कहा, “तू यहोवा के अभिषिक्त को नष्ट करने के लिये हाथ बढ़ाने से क्यों नहीं डरा?”

15 तब दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा, “निकट जाकर उस पर प्रहार कर।” तब उसने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया।

16 और दाऊद ने उससे कहा, “तेरा खून तेरे ही सिर पर पड़े; क्योंकि तूने यह कहकर कि मैं ही ने यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला, अपने मुँह से अपने ही विरुद्ध साक्षी दी है।”

११११ ११ १११११११ ११ ११११ ११११ ११  
११११११११

17 तब दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातान के विषय यह विलापगीत बनाया,

18 और यहूदियों को यह ११११ ११११ ११११† सिखाने की आज्ञा दी; यह याशार नामक पुस्तक में लिखा हुआ है:

19 “हे इस्राएल, तेरा शिरोमणि तेरे ऊँचे स्थान पर मारा गया।

हाय, शूरवीर कैसे गिर पड़े हैं!

20 गत में यह न बताओ,

और न अशकलोन की सड़कों में प्रचार करना;

न हो कि पलिशती स्त्रियाँ आनन्दित हों,

न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियाँ गर्व करने लगें।

21 “हे गिलबो पहाड़ों,

तुम पर न ओस पड़े,

और न वर्षा हो, और न भेंट के योग्य ११११११११ ११११‡ पाए जाएँ!

क्योंकि वहाँ शूरवीरों की ढालें अशुद्ध हो गईं।

और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई।

22 “जूझे हुआँ के लहू बहाने से, और शूरवीरों की चर्बी

खाने से,

योनातान का धनुष न लौटता था,

और न शाऊल की तलवार छूँछी फिर आती थी।

23 “शाऊल और योनातान जीवनकाल में तो

प्रिय और मनभाऊ थे,

और अपनी मृत्यु के समय अलग न हुए;

वे उकाब से भी वेग से चलनेवाले,

और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे।

24 “हे इस्राएली स्त्रियों, शाऊल के लिये रोओ,

वह तो तुम्हें लाल रंग के वस्त्र पहनाकर सुख देता,

और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहनाता था।

25 “हाय, युद्ध के बीच शूरवीर कैसे काम आए!

हे योनातान, हे ऊँचे स्थानों पर जूझे हुए,

26 हे मेरे भाई योनातान, मैं तेरे कारण दुःखित हूँ;

तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था;

तेरा प्रेम मुझ पर अद्भुत,

वरन् स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था।

27 “हाय, शूरवीर कैसे गिर गए,

और युद्ध के हथियार कैसे नष्ट हो गए हैं!”

## 2

११११ ११ १११११११ १११ १११११ ११११ ११  
१११११११११

1 इसके बाद ११११ ११ ११११११ ११ ११११‡, “क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊँ?” यहोवा ने उससे कहा,

“हाँ, जा।” दाऊद ने फिर पूछा, “किस नगर में जाऊँ?” उसने कहा, “हेब्रोन में।”

2 तब दाऊद यिज्जेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल नामक, अपनी दोनों पत्नियों समेत वहाँ गया।

3 दाऊद अपने साथियों को भी एक-एक के घराने समेत वहाँ ले गया; और वे हेब्रोन के गाँवों में रहने लगे।

4 और यहूदी लोग गए, और वहाँ ११११ ११

१११११११ १११११‡ कि वह यहूदा के घराने का राजा हो।

जब दाऊद को यह समाचार मिला, कि जिन्होंने शाऊल को मिट्टी दी वे गिलाद के याबेश नगर के लोग हैं।

5 तब दाऊद ने दूतों से गिलाद के याबेश के लोगों के पास यह कहला भेजा, “यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल पर यह कृपा करके उसको मिट्टी दी।

6 इसलिए अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्ताव करे; और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूँगा, क्योंकि तुम ने यह काम किया है।

7 अब हियाव बाँधो, और पुरुषार्थ करो; क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल मर गया, और यहूदा के घराने ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक किया है।”

† 1:18 ११११ ११११ ११११: यहाँ गीत का अभिप्राय है अन्त्येष्टी गीत या विलापगीत। धनुष: इस विलापगीत का शीर्षक है। ‡ 1:21 ११११११११

११११: दाऊद गिलबो की भूमि पर ऐसे बाँझपन का श्राप देता है कि वहाँ पहले फल की भेंट चढ़ाने के लिए भी कुछ न उगें। \* 2:1 ११११ ११

११११११ ११ १११११: प्रधान पुरोहित अबियातार के माध्यम से- शाऊल और योनातान की मृत्यु से दाऊद की परिस्थिति में पूर्ण परिवर्तन आ गया था

अतः उसे परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन की आवश्यकता थी कि वह अब इन नई परिस्थितियों में कैसे और क्या करे। † 2:4 ११११ ११ १११११११

१११११: दाऊद का अभिषेक तो शमूएल कर चुका था। (1 शमूएल 16:13) उसके पहले अभिषेक में परमेश्वर का गुप्त उद्देश्य निहित था और इस दूसरे अभिषेक में उस उद्देश्य की पूर्ति थी।

१११११११ ११११११११ ११ १११११

8 परन्तु नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति था, उसने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को संग ले पार जाकर महनैम में पहुँचाया;

9 और उसे गिलाद अशूरियों के देश, यिज्जेल, एप्रैम, बिन्यामीन, वरन् समस्त इस्राएल प्रदेश पर राजा नियुक्त किया।

10 शाऊल का पुत्र ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब वह इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु यहूदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा।

11 और दाऊद का हेब्रोन में यहूदा के घराने पर राज्य करने का समय साढ़े सात वर्ष था।

११११११ ११ ११११११११ ११ ११११ ११११११

12 नेर का पुत्र अब्नेर, और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के जन, महनैम से गिबोन को आए।

13 तब सरूयाह का पुत्र योआब, और दाऊद के जन, हेब्रोन से निकलकर उनसे गिबोन के जलकुण्ड के पास मिले; और दोनों दल उस जलकुण्ड के एक-एक ओर बैठ गए।

14 तब अब्नेर ने योआब से कहा, “जवान लोग उठकर हमारे सामने खेलें।” योआब ने कहा, “वे उठें।”

15 तब वे उठे, और बिन्यामीन, अर्थात् शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले, और दाऊद के जनों में से भी बारह निकले।

16 और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी-अपनी तलवार एक दूसरे के पाँजर में भोंक दी; और वे एक ही संग मरे। इससे उस स्थान का नाम हेल्कथस्सूरीम पड़ा, वह गिबोन में है।

१११११११ ११ ११११११११

17 उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ; और अब्नेर और इस्राएल के पुरुष दाऊद के जनों से हार गए।

18 वहाँ योआब, अबीशै, और असाहेल नामक सरूयाह के तीनों पुत्र थे। असाहेल जंगली हिरन के समान वेग से दौड़नेवाला था।

19 तब असाहेल अब्नेर का पीछा करने लगा, और उसका पीछा करते हुए न तो दाहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर।

20 अब्नेर ने पीछे फिरके पूछा, “क्या तू असाहेल है?” उसने कहा, “हाँ मैं वही हूँ।”

21 अब्नेर ने उससे कहा, “चाहे दाहिनी, चाहे बाईं ओर मुड़, किसी जवान को पकड़कर उसका कवच ले ले।” परन्तु असाहेल ने उसका पीछा न छोड़ा।

22 अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा, “मेरा पीछा छोड़ दे; मुझ को क्यों तुझे मारकर मिट्टी में मिला देना पड़े? ऐसा करके मैं तेरे भाई योआब को अपना मुख कैसे दिखाऊँगा?”

23 तो भी उसने हट जाने को मना किया; तब अब्नेर ने अपने भाले की पिछाड़ी उसके पेट में ऐसे मारी, कि भाला आर-पार होकर पीछे निकला; और वह वहीं गिरकर मर गया। जितने लोग उस स्थान पर आए जहाँ असाहेल गिरकर मर गया, वहाँ वे सब खड़े रहे।

१११११११ ११ १११११

24 परन्तु योआब और अबीशै अब्नेर का पीछा करते रहे; और सूर्य डूबते-डूबते वे अम्माह नामक उस पहाड़ी तक पहुँचे, जो गिबोन के जंगल के मार्ग में गीह के सामने है।

25 और बिन्यामीनी अब्नेर के पीछे होकर एक दल हो गए, और एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए।

26 तब अब्नेर योआब को पुकारके कहने लगा, “क्या तलवार सदा मारती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका फल दुःखदाई होगा? तू कब तक अपने लोगों को आज्ञा न देगा, कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर लौटो?”

27 योआब ने कहा, “परमेश्वर के जीवन की शपथ, कि यदि तू न बोला होता, तो निःसन्देह लोग सवेरे ही चले जाते, और अपने-अपने भाई का पीछा न करते।”

28 तब योआब ने नरसिंगा फूँका; और सब लोग ठहर गए, और फिर इस्राएलियों का पीछा न किया, और लड़ाई फिर न की।

29 अब्नेर अपने जनों समेत उसी दिन रातों-रात अराबा से होकर गया; और यरदन के पार हो समस्त बित्रोन देश में होकर महनैम में पहुँचा।

30 योआब अब्नेर का पीछा छोड़कर लौटा; और जब उसने सब लोगों को इकट्ठा किया, तब क्या देखा, कि दाऊद के जनों में से उन्नीस पुरुष और असाहेल भी नहीं हैं।

31 परन्तु दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर के जनों को ऐसा मारा कि उनमें से तीन सौ साठ जन मर गए।

32 और उन्होंने असाहेल को उठाकर उसके पिता के कब्रिस्तान में, जो बैतलहम में था, मिट्टी दी। तब योआब अपने जनों समेत रात भर चलकर पौ फटते-फटते हेब्रोन में पहुँचा।

### 3

1 शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के मध्य बहुत दिन तक लड़ाई होती रही; परन्तु दाऊद प्रबल होता गया, और शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया।

2222 22 222222

2 और हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए; उसका जेठा बेटा अम्मोन था, जो यिज्जेली अहीनोअम से उत्पन्न हुआ था;

3 और उसका दूसरा किलाब था, जिसकी माँ कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल थी; तीसरा अबशालोम, जो गशूर के राजा तलमै की बेटी माका से उत्पन्न हुआ था;

4 चौथा 222222222222\*, जो हग्गीत से उत्पन्न हुआ था; पाँचवाँ शपत्याह, जिसकी माँ अबीतल थी;

5 छठवाँ यित्राम, जो एग्ला नाम दाऊद की स्त्री से उत्पन्न हुआ। हेब्रोन में दाऊद से ये ही सन्तान उत्पन्न हुईं।

222222 22 2222 22 2222 222 222

6 जब शाऊल और दाऊद दोनों के घरानों के मध्य लड़ाई हो रही थी, तब अब्नेर शाऊल के घराने की सहायता में बल बढ़ाता गया।

7 शाऊल की एक रखैल थी जिसका नाम रिस्पा था, वह अय्या की बेटी थी; और ईशबोशेत ने अब्नेर से पूछा, “तू मेरे पिता की रखैल के पास क्यों गया?”

8 ईशबोशेत की बातों के कारण अब्नेर अति क्रोधित होकर कहने लगा, “क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूँ? आज तक मैं तेरे पिता शाऊल के घराने और उसके भाइयों और मित्रों को प्रीति दिखाता आया हूँ, और तुझे दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया; फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के विषय में दोष लगाता है?”

9 यदि मैं दाऊद के साथ परमेश्वर की शपथ के अनुसार बर्ताव न करूँ, तो परमेश्वर अब्नेर से वैसा ही, वरन् उससे भी अधिक करे;

10 अर्थात् मैं राज्य को शाऊल के घराने से छीनूँगा, और दाऊद की राजगद्दी दान से लेकर बेशेबा तक इस्राएल और यहूदा के ऊपर स्थिर करूँगा।”

11 और वह अब्नेर को कोई उत्तर न दे सका, इसलिए कि वह उससे डरता था।

12 तब अब्नेर ने दाऊद के पास दूतों से कहला भेजा, “देश किसका है?” और यह भी कहला भेजा, “तू मेरे साथ वाचा बाँध, और मैं तेरी सहायता करूँगा कि समस्त इस्राएल का मन तेरी ओर फेर दूँ।”

13 दाऊद ने कहा, “ठीक है, मैं तेरे साथ वाचा तो बाँधूँगा परन्तु एक बात मैं तुझ से चाहता हूँ; कि जब तू मुझसे भेंट करने आए, तब यदि तू पहले शाऊल की बेटी मीकल को न ले आए, तो मुझसे भेंट न होगी।”

14 फिर दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूतों से यह कहला भेजा, “मेरी पत्नी मीकल, जिसे मैंने एक सौ पलिशितियों की खलडियाँ देकर अपनी कर लिया था, उसको मुझे दे दे।”

15 तब ईशबोशेत ने लोगों को भेजकर उसे लैश के पुत्र पलतीएल के पास से छीन लिया।

16 और उसका पति उसके साथ चला, और बहूरीम तक उसके पीछे रोता हुआ चला गया। तब अब्नेर ने उससे कहा, “लौट जा;” और वह लौट गया।

17 फिर अब्नेर ने इस्राएल के पुरनियों के संग इस प्रकार की बातचीत की, “पहले तो तुम लोग चाहते थे कि दाऊद हमारे ऊपर राजा हो।

18 अब वैसा ही करो; क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय में यह कहा है, ‘अपने दास दाऊद के द्वारा मैं अपनी प्रजा इस्राएल को पलिशितियों, वरन् उनके सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाऊँगा।’”

19 अब्नेर ने बिन्यामीन से भी बातें की; तब अब्नेर हेब्रोन को चला गया, कि इस्राएल और बिन्यामीन के समस्त घराने को जो कुछ अच्छा लगा, वह दाऊद को सुनाए।

20 तब अब्नेर बीस पुरुष संग लेकर हेब्रोन में आया, और दाऊद ने उसके और उसके संगी पुरुषों के लिये भोज किया।

21 तब अब्नेर ने दाऊद से कहा, “मैं उठकर जाऊँगा, और अपने प्रभु राजा के पास सब इस्राएल को इकट्ठा करूँगा, कि वे तेरे साथ वाचा बाँधें, और तू अपनी इच्छा के अनुसार राज्य कर सके।” तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया, और वह कुशल से चला गया।

222222 22 222222

22 तब दाऊद के कई जन और योआब समेत कहीं चढ़ाई करके बहुत सी लूट लिये हुए आ गए। अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन में न था, क्योंकि उसने उसको विदा कर दिया था, और वह कुशल से चला गया था।

23 जब योआब और उसके साथ की समस्त सेना आई, तब लोगों ने योआब को बताया, “नेर का पुत्र अब्नेर राजा के पास आया था, और उसने उसको विदा कर दिया, और वह कुशल से चला गया।”

24 तब योआब ने राजा के पास जाकर कहा, “तूने यह क्या किया है? अब्नेर जो तेरे पास आया था, तो क्या कारण है कि फिर तूने उसको जाने दिया, और वह चला गया है?”

\* 3:4 222222222222: यह वही व्यक्ति है जो दाऊद के मरते समय सिंहासन पर बैठने की लालसा में था और सुलैमान ने उसकी हत्या की थी।

25 तू नेर के पुत्र अब्नेर को जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने, और तेरे आने-जाने, और सारे काम का भेद लेने आया था।”

26 योआब ने दाऊद के पास से निकलकर अब्नेर के पीछे दूत भेजे, और वे उसको सीरा नामक कुण्ड से लौटा ले आए। परन्तु दाऊद को इस बात का पता न था।

27 जब अब्नेर हेब्रोन को लौट आया, तब योआब उससे एकान्त में बातें करने के लिये उसको फाटक के भीतर अलग ले गया, और वहाँ अपने भाई असाहेल के खून के बदले में उसके पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया।

28 बाद में जब दाऊद ने यह सुना, तो कहा, “नेर के पुत्र अब्नेर के खून के विषय मैं अपनी प्रजा समेत यहोवा की दृष्टि में सदैव निर्दोष रहूँगा।

29 वह योआब और उसके पिता के समस्त घराने को लगे; और योआब के वंश में कोई न कोई प्रमेह का रोगी, और कोढ़ी, और लँगड़ा, और तलवार से घात किया जानेवाला, और भूखा मरनेवाला सदा होता रहे।”

30 योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को इस कारण घात किया, कि उसने उनके भाई असाहेल को गिबोन में लड़ाई के समय मार डाला था।

११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११ १११११११

31 तब दाऊद ने योआब और अपने सब संगी लोगों से कहा, “अपने वस्त्र फाड़ो, और कमर में टाट बाँधकर अब्नेर के आगे-आगे चलो।” और दाऊद राजा स्वयं अर्थी के पीछे-पीछे चला।

32 अब्नेर को हेब्रोन में मिट्टी दी गई; और राजा अब्नेर की कब्र के पास फूट फूटकर रोया; और सब लोग भी रोए।

33 तब दाऊद ने अब्नेर के विषय यह विलापगीत बनाया,

“क्या उचित था कि अब्नेर मूर्ख के समान मरे?

34 न तो तेरे हाथ बाँधे गए, और न तेरे पाँवों में बेड़ियाँ डाली गई;

जैसे कोई कुटिल मनुष्यों से मारा जाए,

वैसे ही तू मारा गया।” तब सब लोग उसके विषय फिर रो उठे।

35 तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए; परन्तु दाऊद ने शपथ खाकर कहा, “यदि मैं सूर्य के अस्त होने से पहले रोटी या और कोई वस्तु खाऊँ, तो परमेश्वर मुझसे ऐसा ही, वरन् इससे भी अधिक करे।”

36 सब लोगों ने इस पर विचार किया और इससे प्रसन्न हुए, वैसे भी जो कुछ राजा करता था उससे सब लोग प्रसन्न होते थे।

37 अतः उन सब लोगों ने, वरन् समस्त इस्राएल ने भी, उसी दिन जान लिया कि नेर के पुत्र अब्नेर का घात किया जाना राजा की ओर से नहीं था।

38 राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, “क्या तुम लोग नहीं जानते कि इस्राएल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है?

39 और यद्यपि मैं अभिषिक्त राजा हूँ तो भी आज निर्बल हूँ; और वे सरूयाह के पुत्र मुझसे अधिक प्रचण्ड हैं। परन्तु यहोवा बुराई करनेवाले को उसकी बुराई के अनुसार ही बदला दे।” (१११. 28:4)

## 4

११११११११ ११ ११११११११

1 जब शाऊल के पुत्र ने सुना, कि अब्नेर हेब्रोन में मारा गया, तब उसके हाथ ढीले पड़ गए, और सब इस्राएली भी घबरा गए।

2 शाऊल के पुत्र के दो जन थे जो दलों के प्रधान थे; एक का नाम बानाह, और दूसरे का नाम रेकाब था, ये दोनों बेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन के पुत्र थे, (क्योंकि बेरोत भी बिन्यामीन के भाग में गिना जाता है;

3 और बेरोती लोग गित्तैम को भाग गए, और आज के दिन तक वहीं परदेशी होकर रहते हैं।)

4 शाऊल के पुत्र योनातान के एक लँगड़ा बेटा था। जब यिज्जेल से शाऊल और योनातान का समाचार आया तब वह पाँच वर्ष का था; उस समय उसकी दाईं उसे उठाकर भागी; और उसके उतावली से भागने के कारण वह गिरकर लँगड़ा हो गया। उसका नाम मपीबोशेत था।

5 उस बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बानाह कड़ी धूप के समय ईशबोशेत के घर में जब वह दोपहर को विश्राम कर रहा था आए।

6 और गेहूँ ले जाने के बहाने घर में घुस गए; और उसके पेट में मारा; तब रेकाब और उसका भाई बानाह भाग निकले।

7 जब वे घर में घुसे, और वह सोने की कोठरी में चारपाई पर सो रहा था, तब उन्होंने उसे मार डाला, और उसका सिर काट लिया, और उसका सिर लेकर रातों-रात अराबा के मार्ग से चले।

8 वे ईशबोशेत का सिर हेब्रोन में दाऊद के पास ले जाकर राजा से कहने लगे, “देख, शाऊल जो तेरा शत्रु और तेरे प्राणों का ग्राहक था, उसके पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है; तो आज के दिन यहोवा ने शाऊल और उसके वंश से मेरे प्रभु राजा का बदला लिया है।”

9 दाऊद ने बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और उसके भाई बानाह को उत्तर देकर उनसे कहा, “यहोवा जो





है।” इस कारण उसने उस स्थान का नाम बालपरासीम रखा।

21 वहाँ उन्होंने अपनी मूरतों को छोड़ दिया, और दाऊद और उसके जन उन्हें उठा ले गए।

22 फिर दूसरी बार पलिशती चढ़ाई करके रपाईम नामक तराई में फैल गए।

23 जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उसने कहा, “चढ़ाई न कर; उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के सामने से उन पर छापा मार।

24 और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब यह जानकर फुर्ती करना, कि यहोवा पलिशतियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा है।”

25 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद गेबा से लेकर गेजेर तक पलिशतियों को मारता गया।

## 6

1 फिर दाऊद ने एक और बार इस्राएल में से सब बड़े वीरों को, जो तीस हजार थे, इकट्ठा किया।

2 तब दाऊद और जितने लोग उसके संग थे, वे सब उठकर यहूदा के बाले नामक स्थान से चले, कि परमेश्वर का वह सन्दूक ले आएँ, जो करूबों पर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा का कहलाता है।

3 तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से निकाला; और अबीनादाब के उज्जा और अह्यो नामक दो पुत्र उस नई गाड़ी को हाँकने लगे।

4 और उन्होंने उसको परमेश्वर के सन्दूक समेत टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से बाहर निकाला; और अह्यो सन्दूक के आगे-आगे चला।

5 दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के आगे सनोवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे और वीणा, सारंगियाँ, डफ, डमरू, झाँझ बजाते रहे।

6 जब वे नाकोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी।

7 तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहाँ ऐसा मारा, कि वह वहाँ परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया।

8 तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिए कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था; और उसने उस स्थान का नाम परेसुज्जा रखा, यह नाम आज के दिन तक विद्यमान है।

9 और उस दिन दाऊद यहोवा से डरकर कहने लगा, “यहोवा का सन्दूक मेरे यहाँ कैसे आए?”

10 इसलिए दाऊद ने यहोवा के सन्दूक को अपने यहाँ दाऊदपुर में पहुँचाना न चाहा; परन्तु गतवासी <sup>22</sup> के यहाँ पहुँचाया।

11 यहोवा का सन्दूक गतवासी ओबेदेदोम के घर में तीन महीने रहा; और यहोवा ने ओबेदेदोम और उसके समस्त घराने को आशीष दी।

12 तब दाऊद राजा को यह बताया गया, कि यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर, और जो कुछ उसका है, उस पर भी परमेश्वर के सन्दूक के कारण आशीष दी है। तब दाऊद ने जाकर परमेश्वर के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर से दाऊदपुर में आनन्द के साथ पहुँचा दिया।

13 जब यहोवा का सन्दूक उठानेवाले छः कदम चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया।

14 और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा।

15 अतः दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के सन्दूक को जयजयकार करते और नरसिंगा फूँकते हुए ले चला।

16 जब यहोवा का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था, तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँककर दाऊद राजा को यहोवा के सम्मुख नाचते कूदते देखा, और <sup>22</sup> के यहाँ पहुँचाया।

17 और लोग यहोवा का सन्दूक भीतर ले आए, और उसके स्थान में, अर्थात् उस तम्बू में रखा, जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और दाऊद ने यहोवा के सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।

18 जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उसने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया।

19 तब उसने समस्त प्रजा को, अर्थात्, क्या स्त्री क्या पुरुष, समस्त इस्राएली भीड़ के लोगों को एक-एक रोटी, और एक-एक टुकड़ा माँस, और किशमिश की एक-एक टिकिया बँटवा दी। तब प्रजा के सब लोग अपने-अपने घर चले गए।

\* 6:10 <sup>22</sup> के यहाँ पहुँचाया: वह मरारी परिवार के का एक लेवी मनुष्य था, वह द्वारपाल था और सिय्योन में जब वाचा का सन्दूक लाया जा रहा था तब संगीत की सेवा में उसको नियुक्त किया गया था वरन् बाद में भी वह सेवा में ही रखा गया था उसे गतवासी कहा गया है...क्योंकि वह मनश्शे के गत्रिम्मोन का रहनेवाला था। † 6:16 <sup>22</sup> के यहाँ पहुँचाया: शाऊल के राज्यकाल में वाचा का सन्दूक ध्यान का केन्द्र नहीं था वरन् शाऊल हर एक बात में धर्म से दूर था। मीकल में भी वही मानसिकता थी।





रहोब के पुत्र सोबा के राजा हदादेजेर की लूट को भी रखा।

13 जब दाऊद नमक की तराई में अठारह हजार अरामियों को मारकर लौट आया, तब उसका बड़ा नाम हो गया।

14 फिर उसने एदोम में सिपाहियों की चौकियाँ बैठाई; पूरे एदोम में उसने सिपाहियों की चौकियाँ बैठाई, और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और दाऊद जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ-वहाँ यहोवा उसको जयवन्त करता था।

दाऊद ने एदोम में सिपाहियों की चौकियाँ बैठाई, और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए।

15 दाऊद तो समस्त इस्राएल पर राज्य करता था, और दाऊद अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धार्मिकता के काम करता था।

16 प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब था; इतिहास का लिखनेवाला अहीलूद का पुत्र यहोशापात था;

17 प्रधान याजक अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्यातार का पुत्र अहीमेलेक थे; मंत्री सरयाह था;

18 करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था; और दाऊद के पुत्र भी मंत्री थे।

## 9

दाऊद ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातान के कारण प्रीति दिखाऊँ?”

1 दाऊद ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातान के कारण प्रीति दिखाऊँ?”

2 शाऊल के घराने का सीबा नामक एक कर्मचारी था, वह दाऊद के पास बुलाया गया; और जब राजा ने उससे पूछा, “क्या तू सीबा है?” तब उसने कहा, हाँ, “तेरा दास वही है।”

3 राजा ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊँ?” सीबा ने राजा से कहा, “हाँ, योनातान का एक बेटा तो है, जो लँगड़ा है।”

4 राजा ने उससे पूछा, “वह कहाँ है?” सीबा ने राजा से कहा, “वह तो लोदबार नगर में, अम्मोएल के पुत्र माकीर के घर में रहता है।”

5 तब राजा दाऊद ने दूत भेजकर उसको लोदबार से, अम्मोएल के पुत्र माकीर के घर से बुलवा लिया।

6 जब मपीबोशेत, जो योनातान का पुत्र और शाऊल का पोता था, दाऊद के पास आया, तब

दाऊद ने कहा, “हे मपीबोशेत!” उसने कहा, “तेरे दास को क्या आज्ञा?”

7 दाऊद ने उससे कहा, “मत डर; तेरे पिता योनातान के कारण मैं निश्चय तुझको प्रीति दिखाऊँगा, और तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे फेर दूँगा; और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया कर।”

8 उसने दण्डवत् करके कहा, “तेरा दास क्या है, कि तू मुझे

9 तब राजा ने शाऊल के कर्मचारी सीबा को बुलवाकर उससे कहा, “जो कुछ शाऊल और उसके समस्त घराने का था वह मैंने तेरे स्वामी के पोते को दे दिया है।

10 अब से तू अपने बेटों और सेवकों समेत उसकी भूमि पर खेती करके उसकी उपज ले आया करना, कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला करे; परन्तु तेरे स्वामी का पोता मपीबोशेत मेरी मेज पर नित्य भोजन किया करेगा।” और सीबा के तो पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे।

11 सीबा ने राजा से कहा, “मेरा प्रभु राजा अपने दास को जो-जो आज्ञा दे, उन सभी के अनुसार तेरा दास करेगा।” दाऊद ने कहा, “मपीबोशेत राजकुमारों के समान मेरी मेज पर भोजन किया करे।”

12 मपीबोशेत के भी मीका नामक एक छोटा बेटा था। और सीबा के घर में जितने रहते थे वे सब मपीबोशेत की सेवा करते थे।

13 मपीबोशेत यरूशलेम में रहता था; क्योंकि वह राजा की मेज पर नित्य भोजन किया करता था। और वह दोनों पाँवों का विकलांग था।

## 10

दाऊद ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातान के कारण प्रीति दिखाऊँ?”

1 इसके बाद अम्मोनियों का राजा मर गया, और उसका हानून नामक पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ।

2 तब दाऊद ने यह सोचा, “जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई थी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखाऊँगा।” तब दाऊद ने अपने कई कर्मचारियों को उसके पास उसके पिता की मृत्यु के विषय शान्ति देने के लिये भेज दिया। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों के देश में आए।

3 परन्तु अम्मोनियों के हाकिम अपने स्वामी हानून से कहने लगे, “दाऊद ने जो तेरे पास शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने के विचार से भेजे गए हैं? वह क्या दाऊद ने अपने

\* 9:6 दाऊद ने एक पतित विरोधी को उसकी पैतृक सम्पदा लौटाने में जो दया दिखाई वह दुर्लभ ही है।

† 9:8 मपीबोशेत की अभिव्यक्ति में जो दीनता है वह दर्दनाक है। यह कुछ तो असहाय लँगड़ेपन के कारण थी और कुछ उसके जीवन के दुर्भाग्य के कारण। \* 10:2 इतिहास में तो दाऊद के लिए नाहाश की दया की कहीं भी चर्चा नहीं है परन्तु शाऊल के घराने से नाहाश का बैर सम्भवतः शाऊल के विरोधी दाऊद को पक्ष प्रगट करने का कारण रहा होगा।

कर्मचारियों को तेरे पास इसी विचार से नहीं भेजा कि इस नगर में ढूँढ़-ढाँढ़ करके और इसका भेद लेकर इसको उलट दे?”

4 इसलिए हानून ने दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ा, और उनकी ~~१०००-१००० १००००० १०००००००००~~ और आधे वस्त्र, अर्थात् नितम्ब तक कटवाकर, उनको जाने दिया।

5 इस घटना का समाचार पाकर दाऊद ने कुछ लोगों को उनसे मिलने के लिये भेजा, क्योंकि वे राजा के सामने आने से बहुत लजाते थे। और राजा ने यह कहा, “जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ बढ़ न जाएँ तब तक यरीहो में ठहरे रहो, फिर लौट आना।”

~~१००००० १० १०००००० १००००००~~

6 जब अम्मोनियों ने देखा कि हम से दाऊद अप्रसन्न है, तब अम्मोनियों ने बेत्रहोब और सोबा के बीस हजार अरामी प्यादों को, और एक हजार पुरुषों समेत माका के राजा को, और बारह हजार तोबी पुरुषों को, वेतन पर बुलवाया।

7 यह

सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरों की समस्त सेना को भेजा।

8 तब अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास पाँति बाँधी; और सोबा और रहोब के अरामी और तोब और माका के पुरुष उनसे अलग मैदान में थे।

9 यह देखकर कि आगे-पीछे दोनों हमारे विरुद्ध पाँति बंधी है, योआब ने सब बड़े-बड़े इस्राएली वीरों में से बहुतों को छाँटकर अरामियों के सामने उनकी पाँति बाँधाई,

10 और अन्य लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया, और उसने अम्मोनियों के सामने उनकी पाँति बाँधाई।

11 फिर उसने कहा, “यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगे, तो तू मेरी सहायता करना; और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगेंगे, तो मैं आकर तेरी सहायता करूँगा।

12 तू हियाव बाँध, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे वैसा करे।”

13 तब योआब और जो लोग उसके साथ थे अरामियों से युद्ध करने को निकट गए; और वे उसके सामने से भागे।

14 यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं अम्मोनी भी अबीशै के सामने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब

योआब अम्मोनियों के पास से लौटकर यरूशलेम को आया।

15 फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गए हैं सब अरामी इकट्ठे हुए।

16 और हदादेजेर ने दूत भेजकर फरात के पार के अरामियों को बुलवाया; और वे हदादेजेर के सेनापति शोबक को अपना प्रधान बनाकर हेलांम को आए।

17 इसका समाचार पाकर दाऊद ने समस्त इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और यरदन के पार होकर हेलांम में पहुँचा। तब अराम दाऊद के विरुद्ध पाँति बाँधकर उससे लड़ा।

18 परन्तु अरामी इस्राएलियों से भागे, और दाऊद ने अरामियों में से सात सौ रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला, और उनके सेनापति शोबक को ऐसा घायल किया कि वह वहीं मर गया।

19 यह देखकर कि हम इस्राएल से हार गए हैं, जितने राजा हदादेजेर के अधीन थे उन सभी ने इस्राएल के साथ संधि की, और उसके अधीन हो गए। इसलिए अरामी अम्मोनियों की और सहायता करने से डर गए।

## 11

~~१०००० १० १००० १००० १००००० १० १०००००~~

1 फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों का नाश किया, और रब्बाह नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया।

2 साँझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी।

3 जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, “क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?”

4 तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी) तब वह अपने घर लौट गई।

5 और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, कि मुझे गर्भ है।

6 तब दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा, “हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज।” तब योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेज दिया।

† 10:4 ~~१०००-१००० १००००० १०००००००००~~: दाढ़ी मुँडवाना अपमान का द्योतक था। पूर्वी देशों के मान का प्रतीक लम्बा वस्त्र आधा काट देना भी उतना ही अपमान जनक था जितना कि दाढ़ी मुँडवाना।

7 जब ऊरिय्याह उसके पास आया, तब दाऊद ने उससे योआब और सेना का कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा।

8 तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, “अपने घर जाकर अपने पाँव धो।” और ऊरिय्याह राजभवन से निकला, और उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया।

9 परन्तु ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया, और अपने घर न गया।

10 जब दाऊद को यह समाचार मिला, “ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया,” तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, “क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर क्यों नहीं गया?”

11 ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, “जब [21:22-23]\* और इस्राएल और यहूदा झोपड़ियों में रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जाकर खाऊँ, पीऊँ, और अपनी पत्नी के साथ सोऊँ? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की शपथ, कि मैं ऐसा काम नहीं करने का।”

12 दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, “आज यहीं रह, और कल मैं तुझे विदा करूँगा।” इसलिए ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरूशलेम में रहा।

13 तब दाऊद ने उसे नेवता दिया, और उसने उसके सामने खायी पिया, और उसी ने उसे मतवाला किया; और साँझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के संग अपनी चारपाई पर सोने को निकला, परन्तु अपने घर न गया।

14 सवेरे दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर ऊरिय्याह के हाथ से भेज दी।

15 उस चिट्ठी में यह लिखा था, “सबसे घोर युद्ध के सामने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोड़कर लौट आओ, कि वह घायल होकर मर जाए।”

16 अतः योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख-भाल कर जिस स्थान में वह जानता था कि वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा दिया।

17 तब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब से युद्ध किया, और लोगों में से, अर्थात् दाऊद के सेवकों में से कितने मारे गए; और उनमें हिती ऊरिय्याह भी मर गया।

18 तब योआब ने दूत को भेजकर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल बताया;

19 और दूत को आज्ञा दी, “जब तू युद्ध का पूरा हाल राजा को बता दे,

20 तब यदि राजा क्रोध में कहने लगे, ‘तुम लोग लड़ने को नगर के ऐसे निकट क्यों गए? क्या तुम न जानते थे

कि वे शहरपनाह पर से तीर छोड़ेंगे?

21 यरूब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को किसने मार डाला? क्या एक स्त्री ने शहरपनाह पर से चक्की का उपरला पाट उस पर ऐसा न डाला कि वह तेबेस में मर गया? फिर तुम शहरपनाह के ऐसे निकट क्यों गए?’ तो तू यह कहना, ‘तेरा दास ऊरिय्याह हिती भी मर गया।’”

22 तब दूत चल दिया, और जाकर दाऊद से योआब की सब बातों का वर्णन किया।

23 दूत ने दाऊद से कहा, “वे लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में हमारे पास निकल आए, फिर हमने उन्हें फाटक तक खदेड़ा।

24 तब धनुर्धारियों ने शहरपनाह पर से तेरे जनों पर तीर छोड़े; और राजा के कितने जन मर गए, और तेरा दास ऊरिय्याह हिती भी मर गया।”

25 दाऊद ने दूत से कहा, “योआब से यह कहना, ‘इस बात के कारण उदास न हो, क्योंकि तलवार जैसे इसको वैसे उसको नष्ट करती है; तू नगर के विरुद्ध अधिक दृढ़ता से लड़कर उसे उलट दे।’ और तू उसे हियाव बंधा।”

26 जब ऊरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह [21:24-25] [21:26] [21:27] [21:28] [21:29] [21:30] [21:31] [21:32] [21:33] [21:34] [21:35] [21:36] [21:37] [21:38] [21:39] [21:40] [21:41] [21:42] [21:43] [21:44] [21:45] [21:46] [21:47] [21:48] [21:49] [21:50] [21:51] [21:52] [21:53] [21:54] [21:55] [21:56] [21:57] [21:58] [21:59] [21:60] [21:61] [21:62] [21:63] [21:64] [21:65] [21:66] [21:67] [21:68] [21:69] [21:70] [21:71] [21:72] [21:73] [21:74] [21:75] [21:76] [21:77] [21:78] [21:79] [21:80] [21:81] [21:82] [21:83] [21:84] [21:85] [21:86] [21:87] [21:88] [21:89] [21:90] [21:91] [21:92] [21:93] [21:94] [21:95] [21:96] [21:97] [21:98] [21:99] [21:100] [21:101] [21:102] [21:103] [21:104] [21:105] [21:106] [21:107] [21:108] [21:109] [21:110] [21:111] [21:112] [21:113] [21:114] [21:115] [21:116] [21:117] [21:118] [21:119] [21:120] [21:121] [21:122] [21:123] [21:124] [21:125] [21:126] [21:127] [21:128] [21:129] [21:130] [21:131] [21:132] [21:133] [21:134] [21:135] [21:136] [21:137] [21:138] [21:139] [21:140] [21:141] [21:142] [21:143] [21:144] [21:145] [21:146] [21:147] [21:148] [21:149] [21:150] [21:151] [21:152] [21:153] [21:154] [21:155] [21:156] [21:157] [21:158] [21:159] [21:160] [21:161] [21:162] [21:163] [21:164] [21:165] [21:166] [21:167] [21:168] [21:169] [21:170] [21:171] [21:172] [21:173] [21:174] [21:175] [21:176] [21:177] [21:178] [21:179] [21:180] [21:181] [21:182] [21:183] [21:184] [21:185] [21:186] [21:187] [21:188] [21:189] [21:190] [21:191] [21:192] [21:193] [21:194] [21:195] [21:196] [21:197] [21:198] [21:199] [21:200] [21:201] [21:202] [21:203] [21:204] [21:205] [21:206] [21:207] [21:208] [21:209] [21:210] [21:211] [21:212] [21:213] [21:214] [21:215] [21:216] [21:217] [21:218] [21:219] [21:220] [21:221] [21:222] [21:223] [21:224] [21:225] [21:226] [21:227] [21:228] [21:229] [21:230] [21:231] [21:232] [21:233] [21:234] [21:235] [21:236] [21:237] [21:238] [21:239] [21:240] [21:241] [21:242] [21:243] [21:244] [21:245] [21:246] [21:247] [21:248] [21:249] [21:250] [21:251] [21:252] [21:253] [21:254] [21:255] [21:256] [21:257] [21:258] [21:259] [21:260] [21:261] [21:262] [21:263] [21:264] [21:265] [21:266] [21:267] [21:268] [21:269] [21:270] [21:271] [21:272] [21:273] [21:274] [21:275] [21:276] [21:277] [21:278] [21:279] [21:280] [21:281] [21:282] [21:283] [21:284] [21:285] [21:286] [21:287] [21:288] [21:289] [21:290] [21:291] [21:292] [21:293] [21:294] [21:295] [21:296] [21:297] [21:298] [21:299] [21:300] [21:301] [21:302] [21:303] [21:304] [21:305] [21:306] [21:307] [21:308] [21:309] [21:310] [21:311] [21:312] [21:313] [21:314] [21:315] [21:316] [21:317] [21:318] [21:319] [21:320] [21:321] [21:322] [21:323] [21:324] [21:325] [21:326] [21:327] [21:328] [21:329] [21:330] [21:331] [21:332] [21:333] [21:334] [21:335] [21:336] [21:337] [21:338] [21:339] [21:340] [21:341] [21:342] [21:343] [21:344] [21:345] [21:346] [21:347] [21:348] [21:349] [21:350] [21:351] [21:352] [21:353] [21:354] [21:355] [21:356] [21:357] [21:358] [21:359] [21:360] [21:361] [21:362] [21:363] [21:364] [21:365] [21:366] [21:367] [21:368] [21:369] [21:370] [21:371] [21:372] [21:373] [21:374] [21:375] [21:376] [21:377] [21:378] [21:379] [21:380] [21:381] [21:382] [21:383] [21:384] [21:385] [21:386] [21:387] [21:388] [21:389] [21:390] [21:391] [21:392] [21:393] [21:394] [21:395] [21:396] [21:397] [21:398] [21:399] [21:400] [21:401] [21:402] [21:403] [21:404] [21:405] [21:406] [21:407] [21:408] [21:409] [21:410] [21:411] [21:412] [21:413] [21:414] [21:415] [21:416] [21:417] [21:418] [21:419] [21:420] [21:421] [21:422] [21:423] [21:424] [21:425] [21:426] [21:427] [21:428] [21:429] [21:430] [21:431] [21:432] [21:433] [21:434] [21:435] [21:436] [21:437] [21:438] [21:439] [21:440] [21:441] [21:442] [21:443] [21:444] [21:445] [21:446] [21:447] [21:448] [21:449] [21:450] [21:451] [21:452] [21:453] [21:454] [21:455] [21:456] [21:457] [21:458] [21:459] [21:460] [21:461] [21:462] [21:463] [21:464] [21:465] [21:466] [21:467] [21:468] [21:469] [21:470] [21:471] [21:472] [21:473] [21:474] [21:475] [21:476] [21:477] [21:478] [21:479] [21:480] [21:481] [21:482] [21:483] [21:484] [21:485] [21:486] [21:487] [21:488] [21:489] [21:490] [21:491] [21:492] [21:493] [21:494] [21:495] [21:496] [21:497] [21:498] [21:499] [21:500] [21:501] [21:502] [21:503] [21:504] [21:505] [21:506] [21:507] [21:508] [21:509] [21:510] [21:511] [21:512] [21:513] [21:514] [21:515] [21:516] [21:517] [21:518] [21:519] [21:520] [21:521] [21:522] [21:523] [21:524] [21:525] [21:526] [21:527] [21:528] [21:529] [21:530] [21:531] [21:532] [21:533] [21:534] [21:535] [21:536] [21:537] [21:538] [21:539] [21:540] [21:541] [21:542] [21:543] [21:544] [21:545] [21:546] [21:547] [21:548] [21:549] [21:550] [21:551] [21:552] [21:553] [21:554] [21:555] [21:556] [21:557] [21:558] [21:559] [21:560] [21:561] [21:562] [21:563] [21:564] [21:565] [21:566] [21:567] [21:568] [21:569] [21:570] [21:571] [21:572] [21:573] [21:574] [21:575] [21:576] [21:577] [21:578] [21:579] [21:580] [21:581] [21:582] [21:583] [21:584] [21:585] [21:586] [21:587] [21:588] [21:589] [21:590] [21:591] [21:592] [21:593] [21:594] [21:595] [21:596] [21:597] [21:598] [21:599] [21:600] [21:601] [21:602] [21:603] [21:604] [21:605] [21:606] [21:607] [21:608] [21:609] [21:610] [21:611] [21:612] [21:613] [21:614] [21:615] [21:616] [21:617] [21:618] [21:619] [21:620] [21:621] [21:622] [21:623] [21:624] [21:625] [21:626] [21:627] [21:628] [21:629] [21:630] [21:631] [21:632] [21:633] [21:634] [21:635] [21:636] [21:637] [21:638] [21:639] [21:640] [21:641] [21:642] [21:643] [21:644] [21:645] [21:646] [21:647] [21:648] [21:649] [21:650] [21:651] [21:652] [21:653] [21:654] [21:655] [21:656] [21:657] [21:658] [21:659] [21:660] [21:661] [21:662] [21:663] [21:664] [21:665] [21:666] [21:667] [21:668] [21:669] [21:670] [21:671] [21:672] [21:673] [21:674] [21:675] [21:676] [21:677] [21:678] [21:679] [21:680] [21:681] [21:682] [21:683] [21:684] [21:685] [21:686] [21:687] [21:688] [21:689] [21:690] [21:691] [21:692] [21:693] [21:694] [21:695] [21:696] [21:697] [21:698] [21:699] [21:700] [21:701] [21:702] [21:703] [21:704] [21:705] [21:706] [21:707] [21:708] [21:709] [21:710] [21:711] [21:712] [21:713] [21:714] [21:715] [21:716] [21:717] [21:718] [21:719] [21:720] [21:721] [21:722] [21:723] [21:724] [21:725] [21:726] [21:727] [21:728] [21:729] [21:730] [21:731] [21:732] [21:733] [21:734] [21:735] [21:736] [21:737] [21:738] [21:739] [21:740] [21:741] [21:742] [21:743] [21:744] [21:745] [21:746] [21:747] [21:748] [21:749] [21:750] [21:751] [21:752] [21:753] [21:754] [21:755] [21:756] [21:757] [21:758] [21:759] [21:760] [21:761] [21:762] [21:763] [21:764] [21:765] [21:766] [21:767] [21:768] [21:769] [21:770] [21:771] [21:772] [21:773] [21:774] [21:775] [21:776] [21:777] [21:778] [21:779] [21:780] [21:781] [21:782] [21:783] [21:784] [21:785] [21:786] [21:787] [21:788] [21:789] [21:790] [21:791] [21:792] [21:793] [21:794] [21:795] [21:796] [21:797] [21:798] [21:799] [21:800] [21:801] [21:802] [21:803] [21:804] [21:805] [21:806] [21:807] [21:808] [21:809] [21:810] [21:811] [21:812] [21:813] [21:814] [21:815] [21:816] [21:817] [21:818] [21:819] [21:820] [21:821] [21:822] [21:823] [21:824] [21:825] [21:826] [21:827] [21:828] [21:829] [21:830] [21:831] [21:832] [21:833] [21:834] [21:835] [21:836] [21:837] [21:838] [21:839] [21:840] [21:841] [21:842] [21:843] [21:844] [21:845] [21:846] [21:847] [21:848] [21:849] [21:850] [21:851] [21:852] [21:853] [21:854] [21:855] [21:856] [21:857] [21:858] [21:859] [21:860] [21:861] [21:862] [21:863] [21:864] [21:865] [21:866] [21:867] [21:868] [21:869] [21:870] [21:871] [21:872] [21:873] [21:874] [21:875] [21:876] [21:877] [21:878] [21:879] [21:880] [21:881] [21:882] [21:883] [21:884] [21:885] [21:886] [21:887] [21:888] [21:889] [21:890] [21:891] [21:892] [21:893] [21:894] [21:895] [21:896] [21:897] [21:898] [21:899] [21:900] [21:901] [21:902] [21:903] [21:904] [21:905] [21:906] [21:907] [21:908] [21:909] [21:910] [21:911] [21:912] [21:913] [21:914] [21:915] [21:916] [21:917] [21:918] [21:919] [21:920] [21:921] [21:922] [21:923] [21:924] [21:925] [21:926] [21:927] [21:928] [21:929] [21:930] [21:931] [21:932] [21:933] [21:934] [21:935] [21:936] [21:937] [21:938] [21:939] [21:940] [21:941] [21:942] [21:943] [21:944] [21:945] [21:946] [21:947] [21:948] [21:949] [21:950] [21:951] [21:952] [21:953] [21:954] [21:955] [21:956] [21:957] [21:958] [21:959] [21:960] [21:961] [21:962] [21:963] [21:964] [21:965] [21:966] [21:967] [21:968] [21:969] [21:970] [21:971] [21:972] [21:973] [21:974] [21:975] [21:976] [21:977] [21:978] [21:979] [21:980] [21:981] [21:982] [21:983] [21:984] [21:985] [21:986] [21:987] [21:988] [21:989] [21:990] [21:991] [21:992] [21:993] [21:994] [21:995] [21:996] [21:997] [21:998] [21:999] [22:1] [22:2] [22:3] [22:4] [22:5] [22:6] [22:7] [22:8] [22:9] [22:10] [22:11] [22:12] [22:13] [22:14] [22:15] [22:16] [22:17] [22:18] [22:19] [22:20] [22:21] [22:22] [22:23] [22:24] [22:25] [22:26] [22:27] [22:28] [22:29] [22:30] [22:31] [22:32] [22:33] [22:34] [22:35] [22:36] [22:37] [22:38] [22:39] [22:40] [22:41] [22:42] [22:43] [22:44] [22:45] [22:46] [22:47] [22:48] [22:49] [22:50] [22:51] [22:52] [22:53] [22:54] [22:55] [22:56] [22:57] [22:58] [22:59] [22:60] [22:61] [22:62] [22:63] [22:64] [22:65] [22:66] [22:67] [22:68] [22:69] [22:70] [22:71] [22:72] [22:73] [22:74] [22:75] [22:76] [22:77] [22:78] [22:79] [22:80] [22:81] [22:82] [22:83] [22:84] [22:85] [22:86] [22:87] [22:88] [22:89] [22:90] [22:91] [22:92] [22:93] [22:94] [22:95] [22:96] [22:97] [22:98] [22:99] [22:100] [22:101] [22:102] [22:103] [22:104] [22:105] [22:106] [22:107] [22:108] [22:109] [22:110] [22:111] [22:112] [22:113] [22:114] [22:115] [22:116] [22:117] [22:118] [22:119] [22:120] [22:121] [22:122] [22:123] [22:124] [22:125] [22:126] [22:127] [22:128] [22:129] [22:130] [22:131] [22:132] [22:133] [22:134] [22:135] [22:136] [22:137] [22:138] [22:139] [22:140] [22:141] [22:142] [22:143] [22:144] [22:145] [22:146] [22:147] [22:148] [22:149] [22:150] [22:151] [22:152] [22:153] [22:154] [22:155] [22:156] [22:157] [22:158] [22:159] [22:160] [22:161] [22:162] [22:163] [22:164] [22:165] [22:166] [22:167] [22:168] [22:169] [22:170] [22:171] [22:172] [22:173] [22:174] [22:175] [22:176] [22:177] [22:178] [22:179] [22:180] [22:181] [22:182] [22:183] [22:184] [22:185] [22:186] [22:187] [22:188] [22:189] [22:190] [22:191] [22:192] [22:193] [22:194] [22:195] [22:196] [22:197] [22:198] [22:199] [22:200] [22:201] [22:202] [22:203] [22:204] [22:205] [22:206] [22:207] [22:208] [22:209] [22:210] [22:211] [22:212] [22:213] [22:214] [22:215] [22:216] [22:217] [22:218] [22:219] [22:220] [22:221] [22:222] [22:223] [22:224] [22:225] [22:226] [22:227] [22:228] [22:229] [22:230] [22:231] [22:232] [22:233] [22:234] [22:235] [22:236] [22:237] [22:238] [22:239] [22:240] [22:241] [22:242] [22:243] [22:244] [22:245] [22:246] [22:247] [22:248] [22:249] [22:250] [22:251] [22:252] [22:253] [22:254] [22:255] [22:256] [22:257] [22:258] [22:259] [22:260] [22:261] [22:262] [22:263] [22:264] [22:265] [22:266] [22:267] [22:268] [22:269] [22:270] [22:271] [22:272] [22:273] [22:274] [22:275] [22:276] [22:277] [22:278] [22:279] [22:280] [22:281] [22:282] [22:283] [22:284] [22:285] [22:286] [22:287] [22:288] [22:289] [22:290] [22:291] [22:292] [22:293] [22:294] [22:295] [22:296] [22:297] [22:298] [22:299] [22:300] [22:301] [22:302] [22:303] [22:304] [22:305] [22:306] [22:307] [22:308] [22:309] [22:310] [22:311] [22:312] [22:313] [22:314] [22:315] [22:316] [22:317] [22:318] [22:319] [22:320] [22:321] [22:322] [22:323] [22:324] [22:325] [22:326] [22:327] [22:328] [22:329] [22:330] [22:331] [22:332] [22:333] [22:334] [22:335] [22:336] [22:337] [22:338] [22:339] [22:340] [22:341] [22:342] [22:343] [2



हुआ, और उसने उसका नाम [2][2][2][2][2][2] रखा। और वह यहोवा का प्रिय हुआ। ([2][2][2][2] 1:6)

25 और उसने नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा सन्देश भेज दिया; और उसने यहोवा के कारण उसका नाम यदिद्याह रखा।

[2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]

26 इस बीच योआब ने अम्मोनियों के रब्बाह नगर से लड़कर राजनगर को ले लिया।

27 तब योआब ने दूतों से दाऊद के पास यह कहला भेजा, “मैं रब्बाह से लड़ा और जलवाले नगर को ले लिया है।

28 इसलिए अब रहे हुए लोगों को इकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी डालकर उसे भी ले ले; ऐसा न हो कि मैं उसे ले लूँ, और वह मेरे नाम पर कहलाए।”

29 तब दाऊद सब लोगों को इकट्ठा करके रब्बाह को गया, और उससे युद्ध करके उसे ले लिया।

30 तब उसने उनके राजा का मुकुट, जो तौल में किककार भर सोने का था, और उसमें मणि जड़े थे, उसको उसके सिर पर से उतारा, और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उसने उस नगर की बहुत ही लूट पाई।

31 उसने उसके रहनेवालों को निकालकर आरी से दो-दो टुकड़े कराया, और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाए, और लोहे की कुल्हाड़ियों से उन्हें कटवाया, और ईंट के पजावे में से चलवाया; और अम्मोनियों के सब नगरों से भी उसने ऐसा ही किया। तब दाऊद समस्त लोगों समेत यरूशलेम को लौट गया।

## 13

[2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2]

1 तामार नामक एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहन थी, उस पर दाऊद का पुत्र अम्मोन मोहित हुआ।

2 अम्मोन अपनी बहन तामार के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया; क्योंकि वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ करना अम्मोन को कठिन जान पड़ता था।

3 अम्मोन के योनादाब नामक एक मित्र था, जो दाऊद के भाई [2][2][2][2][2]\* का बेटा था, और वह बड़ा चतुर था।

4 और उसने अम्मोन से कहा, “हे राजकुमार, क्या कारण है कि तू प्रतिदिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा?” अम्मोन ने उससे कहा, “मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहन तामार पर मोहित हूँ।”

5 योनादाब ने उससे कहा, “अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए, तब उससे कहना, मेरी बहन तामार आकर मुझे रोटी खिलाएँ, और भोजन को मेरे सामने बनाए, कि मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊँ।”

6 अतः अम्मोन लेटकर बीमार बना; और जब राजा उसे देखने आया, तब अम्मोन ने राजा से कहा, “मेरी बहन तामार आकर मेरे देखते दो पूरियां बनाए, कि मैं उसके हाथ से खाऊँ।”

7 तब दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा, “अपने भाई अम्मोन के घर जाकर उसके लिये भोजन बना।”

8 तब तामार अपने भाई अम्मोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ था। तब उसने आटा लेकर गूँधा, और उसके देखते पूरियां पकाईं।

9 तब उसने थाल लेकर उनको उसके लिये परोसा, परन्तु उसने खाने से इन्कार किया। तब अम्मोन ने अपने दासों से कहा, “मेरे आस-पास से सब लोगों को निकाल दो।” तब सब लोग उसके पास से निकल गए।

10 तब अम्मोन ने तामार से कहा, “भोजन को कोठरी में ले आ, कि मैं तेरे हाथ से खाऊँ।” तो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठाकर अपने भाई अम्मोन के पास कोठरी में ले गई।

11 जब वह उनको उसके खाने के लिये निकट ले गई, तब उसने उसे पकड़कर कहा, “हे मेरी बहन, आ, मुझसे मिल।”

12 उसने कहा, “हे मेरे भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिये; ऐसी मूर्खता का काम न कर।

13 फिर मैं अपनी [2][2][2][2][2][2] लिये हुए कहाँ जाऊँगी? और तू इस्राएलियों में एक मूर्ख गिना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लिये मना न करेगा।”

14 परन्तु उसने उसकी न सुनी; और उससे बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट किया।

15 तब अम्मोन उससे अत्यन्त बैर रखने लगा; यहाँ तक कि यह बैर उसके पहले मोह से बढ़कर हुआ। तब अम्मोन ने उससे कहा, “उठकर चली जा।”

16 उसने कहा, “ऐसा नहीं, क्योंकि यह बड़ा उपद्रव, अर्थात् मुझे निकाल देना उस पहले से बढ़कर है जो तूने मुझसे किया है।” परन्तु उसने उसकी न सुनी।

17 तब उसने अपने सेवक जवान को बुलाकर कहा, “इस स्त्री को मेरे पास से बाहर निकाल दे, और उसके

\* 13:3 [2][2][2][2]: वह यिश्शै का तीसरा पुत्र था। † 13:13 [2][2][2][2][2]: मेरी लज्जा और निन्दा।



पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दे।”

18 वह तो रंगबिरंगी कुर्ती पहने थी; क्योंकि जो राजकुमारियाँ कुँवारी रहती थीं वे ऐसे ही वस्त्र पहनती थीं। अतः अम्मोन के टहलुए ने उसे बाहर निकालकर उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दी।

19 तब तामार ने अपने सिर पर राख डाली, और अपनी रंगबिरंगी कुर्ती को फाड़ डाला; और [2/2/2 2/2/2] [2/2/2 2/2/2] चिल्लाती हुई चली गई। (2/2/2. 7:6, [2/2/2/2/2]. 2:12)

20 उसके भाई अबशालोम ने उससे पूछा, “क्या तेरा भाई अम्मोन तेरे साथ रहा है? परन्तु अब, हे मेरी बहन, चुप रह, वह तो तेरा भाई है; इस बात की चिन्ता न कर।” तब तामार अपने भाई अबशालोम के घर में मन मारे बैठी रही।

21 जब ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पड़ीं, तब वह बहुत झुंझला उठा।

22 और अबशालोम ने अम्मोन से भला-बुरा कुछ न कहा, क्योंकि अम्मोन ने उसकी बहन तामार को भ्रष्ट किया था, इस कारण अबशालोम उससे घृणा करता था।

[2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2]

23 दो वर्ष के बाद अबशालोम ने एप्रैम के निकट के बाल्हासोर में अपनी भेड़ों का ऊन कतरवाया और अबशालोम ने सब राजकुमारों को नेवता दिया।

24 वह राजा के पास जाकर कहने लगा, “विनती यह है, कि तेरे दास की भेड़ों का ऊन कतरा जाता है, इसलिए राजा अपने कर्मचारियों समेत अपने दास के संग चले।”

25 राजा ने अबशालोम से कहा, “हे मेरे बेटे, ऐसा नहीं; हम सब न चलेंगे, ऐसा न हो कि तुझे अधिक कष्ट हो।” तब अबशालोम ने विनती करके उस पर दबाव डाला, परन्तु उसने जाने से इन्कार किया, तो भी उसे आशीर्वाद दिया।

26 तब अबशालोम ने कहा, “यदि तू नहीं तो मेरे भाई अम्मोन को हमारे संग जाने दे।” राजा ने उससे पूछा, “वह तेरे संग क्यों चले?”

27 परन्तु अबशालोम ने उसे ऐसा दबाया कि उसने अम्मोन और सब राजकुमारों को उसके साथ जाने दिया।

28 तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, “सावधान रहो और जब अम्मोन दाखमधु पीकर नशे में आ जाए, और मैं तुम से कहूँ, ‘अम्मोन को मार डालना।’ क्या इस आज्ञा का देनेवाला मैं नहीं हूँ? हियाव बाँधकर पुरुषार्थ करना।”

29 अतः अबशालोम के सेवकों ने अम्मोन के साथ अबशालोम की आज्ञा के अनुसार किया। तब सब

राजकुमार उठ खड़े हुए, और अपने-अपने खच्चर पर चढ़कर भाग गए।

30 वे मार्ग ही में थे, कि दाऊद को यह समाचार मिला, “अबशालोम ने सब राजकुमारों को मार डाला, और उनमें से एक भी नहीं बचा।”

31 तब दाऊद ने उठकर अपने वस्त्र फाड़े, और भूमि पर गिर पड़ा, और उसके सब कर्मचारी वस्त्र फाड़े हुए उसके पास खड़े रहे।

32 तब दाऊद के भाई शिमआह के पुत्र योनादाब ने कहा, “मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान, अर्थात् राजकुमार मार डाले गए हैं, केवल अम्मोन मारा गया है; क्योंकि जिस दिन उसने अबशालोम की बहन तामार को भ्रष्ट किया, उसी दिन से अबशालोम की आज्ञा से ऐसी ही बात निश्चित थी।

33 इसलिए अब मेरा प्रभु राजा अपने मन में यह समझकर कि सब राजकुमार मर गए उदास न हो; क्योंकि केवल अम्मोन ही मारा गया है।”

[2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2]

34 इतने में अबशालोम भाग गया। और जो जवान पहरा देता था उसने आँखें उठाकर देखा, कि पीछे की ओर से पहाड़ के पास के मार्ग से बहुत लोग चले आ रहे हैं।

35 तब योनादाब ने राजा से कहा, “देख, राजकुमार तो आ गए हैं; जैसा तेरे दास ने कहा था वैसा ही हुआ।”

36 वह कह ही चुका था, कि राजकुमार पहुँच गए, और चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे; और राजा भी अपने सब कर्मचारियों समेत बिलख-बिलख कर रोने लगा।

37 अबशालोम तो भागकर गशूर के राजा अम्मीहूद के पुत्र तल्मै के पास गया। और दाऊद अपने पुत्र के लिये दिन-दिन विलाप करता रहा।

38 अतः अबशालोम भागकर गशूर को गया, तब वहाँ तीन वर्ष तक रहा।

39 दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही; क्योंकि अम्मोन जो मर गया था, इस कारण उसने उसके विषय में शान्ति पाई।

## 14

[2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2]

1 सूर्याह का पुत्र योआब ताड़ गया कि राजा का मन अबशालोम की ओर लगा है।

2 इसलिए योआब ने [2/2/2/2]\* नगर में दूत भेजकर वहाँ से एक बुद्धिमान स्त्री को बुलवाया, और उससे कहा, “शोक करनेवाली बन, अर्थात् शोक का पहरावा पहन,

‡ 13:19 [2/2/2 2/2 2/2/2 2/2/2]: राख को रोकने के लिए। \* 14:2 [2/2/2/2]: यहूदा के दक्षिण में बैतलहम से 20 मील दूर।



मेरा दर्शन न पाए।” तब अबशालोम अपने घर चला गया, और राजा का दर्शन न पाया।

25 समस्त इस्राएल में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा

योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था; वरन् उसमें नख से सिख तक कुछ दोष न था।

26 वह वर्ष के अन्त में अपना सिर मुँडवाता था; (उसके बाल उसको भारी जान पड़ते थे, इस कारण वह उसे मुँडाता था) और जब जब वह उसे मुँडाता तब-तब अपने सिर के बाल तौलकर राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल भर पाता था।

27 अबशालोम के तीन बेटे, और तामार नामक एक बेटा उत्पन्न हुई थी; और यह रूपवती स्त्री थी।

28 अतः अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाए यरूशलेम में दो वर्ष रहा।

29 तब अबशालोम ने योआब को बुलवा भेजा कि उसे राजा के पास भेजे; परन्तु योआब ने उसके पास आने से इन्कार किया। और उसने उसे दूसरी बार बुलवा भेजा, परन्तु तब भी उसने आने से इन्कार किया।

30 तब उसने अपने सेवकों से कहा, “सुनो, योआब का एक खेत मेरी भूमि के निकट है, और उसमें उसका जौ खड़ा है; तुम जाकर उसमें आग लगाओ।” और अबशालोम के सेवकों ने उस खेत में आग लगा दी।

31 तब योआब उठा, और अबशालोम के घर में उसके पास जाकर उससे पूछने लगा, “तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई है?”

32 अबशालोम ने योआब से कहा, “मैंने तो तेरे पास यह कहला भेजा था, ‘यहाँ आना कि मैं तुझे राजा के पास यह कहने को भेजूँ, ‘मैं गशूर से क्यों आया? मैं अब तक वहाँ रहता तो अच्छा होता।’ इसलिए अब राजा मुझे दर्शन दे; और यदि मैं दोषी हूँ, तो वह मुझे मार डाले।”

33 तब योआब ने राजा के पास जाकर उसको यह बात सुनाई; और राजा ने अबशालोम को बुलवाया। अतः वह उसके पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् की; और राजा ने अबशालोम को चूमा।

## 15

1 इसक बाद अबशालोम ने रथ और घोड़े, और अपने

आगे-आगे दौड़नेवाले पचास अंगरक्षकों रख लिए।

2 अबशालोम सवेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था; और जब जब कोई मुद्दई राजा के

पास न्याय के लिये आता, तब-तब अबशालोम उसको पुकारके पूछता था, “तू किस नगर से आता है?” और वह कहता था, “तेरा दास इस्राएल के अमुक गोत्र का है।”

3 तब अबशालोम उससे कहता था, “सुन, तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है; परन्तु राजा की ओर से तेरी सुननेवाला कोई नहीं है।”

4 फिर अबशालोम यह भी कहा करता था, “भला होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता! तब जितने मुकद्दमा वाले होते वे सब मेरे ही पास आते, और मैं उनका न्याय चुकाता।”

5 फिर जब कोई उसे दण्डवत् करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़कर चूम लेता था।

6 अतः जितने इस्राएली राजा के पास अपना मुकद्दमा लेकर आते उन सभी से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार किया करता था; इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया।

7 चार वर्ष के बीतने पर अबशालोम ने राजा से कहा, “मुझे हेब्रोन जाकर अपनी उस मन्त्रत को पूरी करने दे, जो मैंने यहोवा की मानी है।

8 तेरा दास तो जब अराम के गशूर में रहता था, तब यह कहकर यहोवा की मन्त्रत मानी, कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम को लौटा ले जाए, तो मैं यहोवा की उपासना करूँगा।”

9 राजा ने उससे कहा, “कुशल क्षेम से जा।” और वह उठकर हेब्रोन को गया।

10 तब अबशालोम ने इस्राएल के समस्त गोत्रों में यह कहने के लिये भेदिए भेजे, “जब नरसिंगे का शब्द तुम को सुनाई पड़े, तब कहना, ‘अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ!’”

11 अबशालोम के संग दो सौ निमंत्रित यरूशलेम से गए; वे सीधे मन से उसका भेद बिना जाने गए।

12 फिर जब अबशालोम का यज्ञ हुआ, तब उसने गीलोवासी <sup>22</sup> को, जो दाऊद का मंत्री था, बुलवा भेजा कि वह अपने नगर गीलो से आए। और राजद्रोह की गोष्ठी ने बल पकड़ा, क्योंकि अबशालोम के पक्ष के लोग बराबर बढ़ते गए।

13 तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार

दिया, “इस्राएली मनुष्यों के मन अबशालोम की ओर हो गए हैं।”

14 तब दाऊद ने अपने सब कर्मचारियों से जो यरूशलेम में उसके संग थे कहा, “आओ, हम भाग चलें;

\* 15:12 <sup>22</sup>: वह बतशेबा का दादा था अत्यधिक सम्भावना में माना जाता है कि बतशेबा और ऊरिय्याह के साथ दाऊद के व्यवहार के कारण अहीतोपेल दाऊद के विरुद्ध व्यक्तिगत बुराई मन में रखता था।

नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से न बचेगा; इसलिए फुर्ती करते चले चलो, ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ घेरे, और हमारी हानि करे, और इस नगर को तलवार से मार ले।”

15 राजा के कर्मचारियों ने उससे कहा, “जैसा हमारे प्रभु राजा को अच्छा जान पड़े, वैसा ही करने के लिये तेरे दास तैयार हैं।”

16 तब राजा निकल गया, और उसके पीछे उसका समस्त घराना निकला। राजा दस रखैलियों को भवन की चौकसी करने के लिये छोड़ गया।

17 तब राजा निकल गया, और उसके पीछे सब लोग निकले; और वे बेतमेर्हक में ठहर गए।

18 उसके सब कर्मचारी उसके पास से होकर आगे गए; और सब करेती, और सब पलेती, और सब गती, अर्थात् जो छः सौ पुरुष गत से उसके पीछे हो लिए थे वे सब राजा के सामने से होकर आगे चले।

19 तब राजा ने गती इत्तै से पूछा, “हमारे संग तू क्यों चलता है? लौटकर राजा के पास रह; क्योंकि तू परदेशी और अपने देश से दूर है, इसलिए अपने स्थान को लौट जा।

20 तू तो कल ही आया है, क्या मैं आज तुझे अपने साथ मारा-मारा फिराऊँ? मैं तो जहाँ जा सकूँगा वहाँ जाऊँगा। तू लौट जा, और अपने भाइयों को भी लौटा दे; परमेश्वर की करुणा और सच्चाई तेरे संग रहे।”

21 इत्तै ने राजा को उत्तर देकर कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, और मेरे प्रभु राजा के जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिये हो चाहे जीवित रहने के लिये, उसी स्थान में तेरा दास भी रहेगा।”

22 तब दाऊद ने इत्तै से कहा, “पार चल।” अतः गती इत्तै अपने समस्त जनों और अपने साथ के सब बाल-बच्चों समेत पार हो गया।

23 सब रहनेवाले चिल्ला चिल्लाकर रोए; और सब लोग पार हुए, और राजा भी किद्रोन नामक घाटी के पार हुआ, और सब लोग नाले के पार जंगल के मार्ग की ओर पार होकर चल पड़े।

24 तब क्या देखने में आया, कि सादोक भी और उसके संग सब लेवीय परमेश्वर की वाचा का सन्दूक उठाए हुए हैं; और उन्होंने परमेश्वर के सन्दूक को धर दिया, तब ~~24:24-24:24~~, और जब तक सब लोग नगर से न निकले तब तक वहीं रहा।

25 तब राजा ने सादोक से कहा, “परमेश्वर के सन्दूक को नगर में लौटा ले जा। यदि यहोवा के अनुग्रह की

दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा;

26 परन्तु यदि वह मुझसे ऐसा कहे, ‘मैं तुझ से प्रसन्न नहीं,’ तो भी मैं हाजिर हूँ, जैसा उसको भाए वैसा ही वह मेरे साथ बर्ताव करे।”

27 फिर राजा ने सादोक याजक से कहा, “क्या तू दर्शी नहीं है? सो कुशल क्षेम से नगर में लौट जा, और तेरा पुत्र अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातान, दोनों तुम्हारे संग लौटें।

28 सुनो, मैं जंगल के घाट के पास तब तक ठहरा रहूँगा, जब तक तुम लोगों से मुझे हाल का समाचार न मिले।”

29 तब सादोक और एब्यातार ने परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम में लौटा दिया; और आप वहीं रहे।

~~29:29-29:29~~

30 तब दाऊद जैतून के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढाँके, नंगे पाँव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी ~~30:30-30:30~~ रोते हुए चढ़ गए।

31 तब दाऊद को यह समाचार मिला, “अबशालोम के संगी राजद्रोहियों के साथ अहीतोपेल है।” दाऊद ने कहा, “हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे।”

32 जब दाऊद चोटी तक पहुँचा, जहाँ परमेश्वर की आराधना की जाती थी, तब एरेकी हूशै अंगरखा फाड़े, सिर पर मिट्टी डाले हुए उससे मिलने को आया।

33 दाऊद ने उससे कहा, “यदि तू मेरे संग आगे जाए, तब तो मेरे लिये भार ठहरेगा।

34 परन्तु यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से कहने लगे, ‘हे राजा, मैं तेरा कर्मचारी होऊँगा; जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्मचारी रहा, वैसे ही अब तेरा रहूँगा,’ तो तू मेरे हित के लिये अहीतोपेल की सम्मति को निष्फल कर सकेगा।

35 और क्या वहाँ तेरे संग सादोक और एब्यातार याजक न रहेंगे? इसलिए राजभवन में से जो हाल तुझे सुनाई पड़े, उसे सादोक और एब्यातार याजकों को बताया करना।

36 उनके साथ तो उनके दो पुत्र, अर्थात् सादोक का पुत्र अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातान, वहाँ रहेंगे; तो जो समाचार तुम लोगों को मिले उसे मेरे पास उन्हीं के हाथ भेजा करना।”

37 अतः दाऊद का मित्र, हूशै, नगर को गया, और अबशालोम भी यरूशलेम में पहुँच गया।

† 15:24 ~~24:24-24:24~~: सम्भव है बलि चढ़ाने के लिए। ‡ 15:30 ~~30:30-30:30~~: गहन दुःख का प्रतीक।

## 16

१११११ ११ १११११११

1 दाऊद चोटी पर से थोड़ी दूर बढ़ गया था, कि मपीबोशेत का कर्मचारी सीबा एक जोड़ी, जीन बाँधे हुए गदहों पर दो सौ रोटी, किशमिश की एक सौ टिकियाँ, धूपकाल के फल की एक सौ टिकियाँ, और कुप्पी भर दाखमधु, लादे हुए उससे आ मिला।

2 राजा ने सीबा से पूछा, “इनसे तेरा क्या प्रयोजन है?” सीबा ने कहा, “गदहे तो राजा के घराने की सवारी के लिये हैं, और रोटी और धूपकाल के फल जवानों के खाने के लिये हैं, और दाखमधु इसलिए है कि जो कोई जंगल में थक जाए वह उसे पीए।”

3 राजा ने पूछा, “फिर तेरे स्वामी का बेटा कहाँ है?” सीबा ने राजा से कहा, “वह तो यह कहकर यरूशलेम में रह गया, कि अब इस्राएल का घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा।”

4 राजा ने सीबा से कहा, “जो कुछ मपीबोशेत का था वह सब तुझे मिल गया।” सीबा ने कहा, “प्रणाम; हे मेरे प्रभु, हे राजा, मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे।”

१११११ ११ १११११११

5 जब दाऊद राजा बहूरीम तक पहुँचा, तब शाऊल का एक कुटुम्बी वहाँ से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी था; और वह कोसता हुआ चला आया।

6 वह दाऊद पर, और दाऊद राजा के सब कर्मचारियों पर पत्थर फेंकने लगा; और शूरवीरों समेत सब लोग उसकी दाहिनी बाईं दोनों ओर थे।

7 शिमी कोसता हुआ यह बकता गया, “दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा!”

8 यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने के खून का पूरा बदला लिया है, जिसके स्थान पर तू राजा बना है; यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है। और इसलिए कि तू खूनी है, तू अपनी बुराई में आप फँस गया।”

9 तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, “यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों श्राप देने पाए? मुझे उधर जाकर उसका सिर काटने दे।”

10 राजा ने कहा, “सरूयाह के बेटों, मुझे तुम से क्या काम? वह जो कोसता है, और यहोवा ने जो उससे कहा है, कि दाऊद को श्राप दे, तो उससे कौन पूछ सकता है, कि तूने ऐसा क्यों किया?”

11 फिर दाऊद ने अबीशै और अपने सब कर्मचारियों से कहा, “जब मेरा निज पुत्र ही मेरे प्राण का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे? उसको रहने दो, और श्राप देने दो; क्योंकि यहोवा ने उससे कहा है।

12 कदाचित् यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके १११ १११ १११११११\* के बदले मुझे भला बदला दे।”

13 तब दाऊद अपने जनों समेत अपने मार्ग चला गया, और शिमी उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर से श्राप देता, और उस पर पत्थर और धूल फेंकता हुआ चला गया।

14 राजा अपने संग के सब लोगों समेत अपने ठिकाने पर थका हुआ पहुँचा; और वहाँ विश्राम किया।

११११११११ १११ ११११११११ ११ १११११११

15 अबशालोम सब इस्राएली लोगों समेत यरूशलेम को आया, और उसके संग अहीतोपेल भी आया।

16 जब दाऊद का मित्र एरेकी हूशै अबशालोम के पास पहुँचा, तब हूशै ने अबशालोम से कहा, “राजा चिरंजीव रहे! राजा चिरंजीव रहे!”

17 अबशालोम ने उससे कहा, “क्या यह तेरी प्रीति है जो तू अपने मित्र से रखता है? तू अपने मित्र के संग क्यों नहीं गया?”

18 हूशै ने अबशालोम से कहा, “ऐसा नहीं; जिसको यहोवा और वे लोग, क्या वरन् सब इस्राएली लोग चाहें, उसी का मैं हूँ, और उसी के संग मैं रहूँगा।

19 और फिर मैं किसकी सेवा करूँ? क्या उसके पुत्र के सामने रहकर सेवा न करूँ? जैसा मैं तेरे पिता के सामने रहकर सेवा करता था, वैसा ही तेरे सामने रहकर सेवा करूँगा।”

20 तब अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, “तुम लोग अपनी सम्मति दो, कि क्या करना चाहिये?”

21 अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, “११११ १११११११११ ११ १११११ १११११ ११११ ११ १११११११ १११११ ११ १११११ ११११, १११११ ११११ ११११ ११११; और जब सब इस्राएली यह सुनेंगे, कि अबशालोम का पिता उससे घिन करता है, तब तेरे सब संगी हियाव बाँधेंगे।”

22 अतः उसके लिये भवन की छत के ऊपर एक तम्बू खड़ा किया गया, और अबशालोम समस्त इस्राएल के देखते अपने पिता की रखैलों के पास गया।

23 उन दिनों जो सम्मति अहीतोपेल देता था, वह ऐसी होती थी कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ

\* 16:12 ११ १११ १११११११: दाऊद समझ रहा था कि प्रत्येक शब्द एवं कार्य में वह नातान द्वारा कहा गया पाप का फल भोग रहा है। † 16:21 ११११ १११११११११... १११११ ११११ १११ १११: रनवास पर अधिकार करना प्रभुता का एक निर्णयक कार्य था। (1 राजा 2:22) यह एक बड़ा प्रहार एवं अपमान जनक था। अबशालोम का यह काम समझोते के लिए असंभव हो गया था।

लेता हो; अहीतोपेल चाहे दाऊद को चाहे अबशालोम को, जो-जो सम्मति देता वह ऐसी ही होती थी।

## 17

17:1-17:17

1 फिर अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, “मुझे बारह हजार पुरुष छाँटने दे, और मैं उठकर 17:17\* दाऊद का पीछा करूँगा।

2 और जब वह थका-माँदा और निर्बल होगा, तब मैं उसे पकड़ूँगा, और डराऊँगा; और जितने लोग उसके साथ हैं सब भागेंगे। और मैं राजा ही को मारूँगा,

3 और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊँगा; जिस मनुष्य का तू खोजी है उसके मिलने से समस्त प्रजा का मिलना हो जाएगा, और समस्त प्रजा कुशल क्षेम से रहेगी।”

4 यह बात अबशालोम और सब इस्राएली पुरनियों को उचित मालूम पड़ी।

17:18-17:22

5 फिर अबशालोम ने कहा, “एरेकी हूशै को भी बुला ला, और जो वह कहेगा हम उसे भी सुनें।”

6 जब हूशै अबशालोम के पास आया, तब अबशालोम ने उससे कहा, “अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की बात कही है; क्या हम उसकी बात मानें कि नहीं? यदि नहीं, तो तू कह दे।”

7 हूशै ने अबशालोम से कहा, “जो सम्मति अहीतोपेल ने इस बार दी, वह अच्छी नहीं।”

8 फिर हूशै ने कहा, “तू तो अपने पिता और उसके जनों को जानता है कि वे शूरवीर हैं, और बच्चा छीनी हुई रीछनी के समान क्रोधित होंगे। तेरा पिता योद्धा है; और अन्य लोगों के साथ रात नहीं बिताता।

9 इस समय तो वह किसी गट्टे, या किसी दूसरे स्थान में छिपा होगा। जब इनमें से पहले ही आक्रमण में कोई-कोई मारे जाएँ, तब इसके सब सुननेवाले कहने लगेंगे, ‘अबशालोम के पक्षवाले हार गए।’

10 तब वीर का हृदय, जो सिंह का सा होता है, उसका भी साहस टूट जाएगा, समस्त इस्राएल जानता है कि तेरा पिता वीर है, और उसके संगी बड़े योद्धा हैं।

11 इसलिए मेरी सम्मति यह है कि दान से लेकर बेशेबा तक रहनेवाले समस्त इस्राएली तेरे पास समुद्र तट के रेतकणों के समान इकट्ठे किए जाएँ, और तू आप ही युद्ध को जाए।

12 और जब हम उसको किसी न किसी स्थान में जहाँ वह मिले जा पकड़ेंगे, तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम उस पर टूट पड़ेंगे; तब न तो वह बचेगा, और न उसके संगियों में से कोई बचेगा।

13 यदि वह किसी नगर में घुसा हो, तो सब इस्राएली उस नगर के पास रस्सियाँ ले आएँगे, और हम उसे नदी में खींचेंगे, यहाँ तक कि उसका एक छोटा सा पत्थर भी न रह जाएगा।”

14 तब अबशालोम और सब इस्राएली पुरुषों ने कहा, “एरेकी हूशै की सम्मति अहीतोपेल की सम्मति से उत्तम है।” यहोवा ने तो अहीतोपेल की अच्छी सम्मति को निष्फल करने की ठानी थी, कि वह अबशालोम ही पर विपत्ति डाले।

17:23-17:27

15 तब हूशै ने सादोक और एब्यातार याजकों से कहा, “अहीतोपेल ने तो अबशालोम और इस्राएली पुरनियों को इस-इस प्रकार की सम्मति दी; और मैंने इस-इस प्रकार की सम्मति दी है।

16 इसलिए अब फुर्ती कर 17:27†, ‘आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना, अवश्य पार ही हो जाना; ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उसके संग हों, सब नष्ट हो जाएँ।’”

17 योनातान और अहीमास एनरोगेल के पास ठहरे रहे; और एक दासी जाकर उन्हें सन्देशा दे आती थी, और वे जाकर राजा दाऊद को सन्देशा देते थे; क्योंकि वे किसी के देखते नगर में नहीं जा सकते थे।

18 एक लड़के ने उन्हें देखकर अबशालोम को बताया; परन्तु वे दोनों फुर्ती से चले गए, और एक बहुरीमवासी मनुष्य के घर पहुँचकर जिसके आँगन में कुआँ था उसमें उतर गए।

19 तब उसकी स्त्री ने कपड़ा लेकर कुएँ के मुँह पर बिछाया, और उसके ऊपर दला हुआ अन्न फैला दिया; इसलिए कुछ मालूम न पड़ा।

20 तब अबशालोम के सेवक उस घर में उस स्त्री के पास जाकर कहने लगे, “अहीमास और योनातान कहाँ हैं?” तब स्त्री ने उनसे कहा, “वे तो उस छोटी नदी के पार गए।” तब उन्होंने उन्हें ढूँढा, और न पाकर यरूशलेम को लौटे।

21 जब वे चले गए, तब ये कुएँ में से निकले, और जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया; और दाऊद से कहा, “तुम लोग चलो, फुर्ती करके नदी के पार हो

\* 17:1 17:17-17:17: जिस रात दाऊद बचकर भागा और अबशालोम ने यरूशलेम प्रवेश किया। † 17:16 17:27-17:27: हूशै एक बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति, अबशालोम का निर्बल एवं दुर्बल चरित्र जानता था कि वह राजा का पीछा न करने का निर्णय जो उसने उसे उत्प्रेरित करके लिया था, वह उससे टल जाएगा इसलिए उसने दाऊद को संकट से अवगत करवा दिया।



अबशालोम के हृदय में, जो बांज वृक्ष में जीवित ही लटका था, छेद डाला।

15 तब योआब के दस हथियार ढोनेवाले जवानों ने अबशालोम को घेर के ऐसा मारा कि वह मर गया।

16 फिर ~~२२२२ २२ २२२२२२ २२२२२~~, और लोग इस्राएल का पीछा करने से लौटे; क्योंकि योआब प्रजा को बचाना चाहता था।

17 तब लोगों ने अबशालोम को उतार के उस वन के एक बड़े गड्ढे में डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया; और सब इस्राएली अपने-अपने डेरे को भाग गए।

18 अपने जीते जी अबशालोम ने यह सोचकर कि मेरे नाम का स्मरण करानेवाला कोई पुत्र मेरा नहीं है, अपने लिये वह स्तम्भ खड़ा कराया था जो राजा की तराई में है; और स्तम्भ का अपना ही नाम रखा, जो आज के दिन तक अबशालोम का स्तम्भ कहलाता है।

~~२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२२२~~

19 तब सादोक के पुत्र ~~२२२२२२~~ ने कहा, “मुझे दौड़कर राजा को यह समाचार देने दे, कि यहोवा ने न्याय करके तुझे तेरे शत्रुओं के हाथ से बचाया है।”

20 योआब ने उससे कहा, “तू आज के दिन समाचार न दे; दूसरे दिन समाचार देने पाएगा, परन्तु आज समाचार न दे, इसलिए कि राजकुमार मर गया है।”

21 तब योआब ने एक कूशी से कहा, “जो कुछ तूने देखा है वह जाकर राजा को बता दे।” तो वह कूशी योआब को दण्डवत् करके दौड़ गया।

22 फिर सादोक के पुत्र अहीमास ने दूसरी बार योआब से कहा, “जो हो सो हो, परन्तु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ जाने दे।” योआब ने कहा, “हे मेरे बेटे, तेरे समाचार का कुछ बदला न मिलेगा, फिर तू क्यों दौड़ जाना चाहता है?”

23 उसने यह कहा, “जो हो सो हो, परन्तु मुझे दौड़ जाने दे।” उसने उससे कहा, “दौड़।” तब अहीमास दौड़ा, और तराई से होकर कूशी के आगे बढ़ गया।

24 दाऊद तो दो फाटकों के बीच बैठा था, कि पहरुआ जो फाटक की छत से होकर शहरपनाह पर चढ़ गया था, उसने आँखें उठाकर क्या देखा, कि एक मनुष्य अकेला दौड़ा आता है।

25 जब पहरुए ने पुकारके राजा को यह बता दिया, तब राजा ने कहा, “यदि अकेला आता हो, तो सन्देश लाता होगा।” वह दौड़ते-दौड़ते निकल आया।

26 फिर पहरुए ने एक और मनुष्य को दौड़ते हुए देख फाटक के रखवाले को पुकारके कहा, “सुन, एक और मनुष्य अकेला दौड़ा आता है।” राजा ने कहा, “वह भी सन्देश लाता होगा।”

27 पहरुए ने कहा, “मुझे तो ऐसा देख पड़ता है कि पहले का दौड़ना सादोक के पुत्र अहीमास का सा है।” राजा ने कहा, “वह तो भला मनुष्य है, तो भला सन्देश लाता होगा।”

28 तब अहीमास ने पुकारके राजा से कहा, “सब कुशल है।” फिर उसने भूमि पर मुँह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा, “तेरा परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने मेरे प्रभु राजा के विरुद्ध हाथ उठानेवाले मनुष्यों को तेरे वश में कर दिया है!”

29 राजा ने पूछा, “क्या वह जवान अबशालोम सकुशल है?” अहीमास ने कहा, “जब योआब ने राजा के कर्मचारी को और तेरे दास को भेज दिया, तब मुझे बड़ी भीड़ देख पड़ी, परन्तु मालूम न हुआ कि क्या हुआ था।”

30 राजा ने कहा; “हटकर यहीं खड़ा रह।” और वह हटकर खड़ा रहा।

31 तब कूशी भी आ गया; और कूशी कहने लगा, “मेरे प्रभु राजा के लिये समाचार है। यहोवा ने आज न्याय करके तुझे उन सभी के हाथ से बचाया है जो तेरे विरुद्ध उठे थे।”

32 राजा ने कूशी से पूछा, “क्या वह जवान अर्थात् अबशालोम कुशल से है?” कूशी ने कहा, “मेरे प्रभु राजा के शत्रु, और जितने तेरी हानि के लिये उठे हैं, उनकी दशा उस जवान की सी हो।”

33 तब राजा बहुत घबराया, और फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा; और चलते-चलते यह कहता गया, “हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे!!”

## 19

~~२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२~~

1 तब योआब को यह समाचार मिला, “राजा अबशालोम के लिये रो रहा है और विलाप कर रहा है।”

2 इसलिए उस दिन की विजय सब लोगों की समझ में विलाप ही का कारण बन गई; क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना, कि राजा अपने बेटे के लिये खेदित है।

† 18:16 ~~२२२२ २२ २२२२२२ २२२२~~: पीछा करने और नरसंहार रोकने के लिए। ‡ 18:19 ~~२२२२२२~~: वह सादोक का पुत्र और एक चिरपरिचित धावक था।



3 इसलिए उस दिन लोग ऐसा मुँह चुराकर नगर में घुसे, जैसा लोग युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मुँह चुराते हैं।

4 और राजा मुँह ढाँपे

हुए चिल्ला चिल्लाकर पुकारता रहा, “हाय मेरे बेटे अबशालोम! हाय अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!”

5 तब योआब घर में राजा के पास जाकर कहने लगा, “तेरे कर्मचारियों ने आज के दिन तेरा, और तेरे बेटे-बेटियों का और तेरी पत्नियों और रखैलों का प्राण तो बचाया है, परन्तु तूने आज के दिन उन सभी का मुँह काला किया है;

6 इसलिए कि तू अपने बैरियों से प्रेम और अपने प्रेमियों से बैर रखता है। तूने आज यह प्रगट किया कि तुझे हाकिमों और कर्मचारियों की कुछ चिन्ता नहीं; वरन् मैंने आज जान लिया, कि यदि हम सब आज मारे जाते और अबशालोम जीवित रहता, तो तू बहुत प्रसन्न होता।

7 इसलिए अब उठकर बाहर जा, और अपने कर्मचारियों को शान्ति दे; नहीं तो मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूँ, कि यदि तू बाहर न जाएगा, तो आज रात को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा; और तेरे बचपन से लेकर अब तक जितनी विपत्तियाँ तुझ पर पड़ी हैं उन सबसे यह विपत्ति बड़ी होगी।”

8 तब ~~22222 22222~~\* फाटक में जा बैठा। जब सब लोगों को यह बताया गया, कि राजा फाटक में बैठा है; तब सब लोग राजा के सामने आए।

इस बीच इस्राएली अपने-अपने डेरे को भाग गए थे।

9 इस्राएल के सब गोत्रों के सब लोग आपस में यह कहकर झगड़ते थे, “राजा ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से बचाया था, और पलिशियों के हाथ से उसी ने हमें छुड़ाया; परन्तु अब वह अबशालोम के डर के मारे देश छोड़कर भाग गया।

10 अबशालोम जिसको हमने अपना राजा होने को अभिषेक किया था, वह युद्ध में मर गया है। तो अब तुम क्यों चुप रहते? और राजा को लौटा ले आने की चर्चा क्यों नहीं करते?”

11 तब राजा दाऊद ने सादोक और एब्यातार याजकों के पास कहला भेजा, “यहूदी पुरनियों से कहो, ‘तुम लोग राजा को भवन पहुँचाने के लिये सबसे पीछे क्यों होते हो जबकि समस्त इस्राएल की बातचीत राजा के सुनने में आई है, कि उसको भवन में पहुँचाए

12 तुम लोग तो मेरे भाई, वरन् मेरी ही हड्डी और माँस हो; तो तुम राजा को लौटाने में सब के पीछे क्यों होते हो?’

13 फिर अमासा से यह कहो, ‘क्या तू मेरी हड्डी और माँस नहीं है? और यदि तू योआब के स्थान पर सदा के लिये सेनापति न ठहरे, तो परमेश्वर मुझसे वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।’”

14 इस प्रकार उसने सब यहूदी पुरुषों के मन ऐसे अपनी ओर खींच लिया कि मानो एक ही पुरुष था; और उन्होंने राजा के पास कहला भेजा, “तू अपने सब कर्मचारियों को संग लेकर लौट आ।”

15 तब राजा लौटकर यरदन तक आ गया; और यहूदी लोग गिलगाल तक गए कि उससे मिलकर उसे यरदन पार ले आएँ।

~~22222 22 2222222222~~

16 यहूदियों के संग गेरा का पुत्र बिन्यामीनी शिमी भी जो बहूरीम का निवासी था फुर्ती करके राजा दाऊद से भेंट करने को गया;

17 उसके संग हजार बिन्यामीनी पुरुष थे और शाऊल के घराने का कर्मचारी सीबा अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस दासों समेत था, और वे राजा के सामने यरदन के पार पैदल उतर गए।

18 और एक बेड़ा राजा के परिवार को पार ले आने, और जिस काम में वह उसे लगाना चाहे उसी में लगाने के लिये पार गया। जब राजा यरदन पार जाने पर था, तब गेरा का पुत्र शिमी उसके पाँवों पर गिरकर,

19 राजा से कहने लगा, “मेरा प्रभु मेरे दोष का लेखा न ले, और जिस दिन मेरा प्रभु राजा यरूशलेम को छोड़ आया, उस दिन तेरे दास ने जो कुटिल काम किया, उसे स्मरण न करे और न राजा उसे अपने ध्यान में रखे।

20 क्योंकि तेरा दास जानता है कि मैंने पाप किया; देख, आज अपने प्रभु राजा से भेंट करने के लिये यूसुफ के समस्त घराने में से मैं ही पहले आया हूँ।”

21 तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, “शिमी ने जो यहोवा के अभिषिक्त को श्राप दिया था, इस कारण क्या उसका वध करना न चाहिये?”

22 दाऊद ने कहा, “हे सरूयाह के बेटों, मुझे तुम से क्या काम, कि तुम आज मेरे विरोधी ठहरे हो? आज क्या इस्राएल में किसी को प्राणदण्ड मिलेगा? क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इस्राएल का राजा हुआ हूँ?”

23 फिर राजा ने शिमी से कहा, “तुझे प्राणदण्ड न मिलेगा।” और राजा ने उससे शपथ भी खाई।

\* 19:8 ~~22222 22222~~: दाऊद ने योआब की बात में औचित्य देखा और विलाप से न निकल आने के कारण जो नया संकट उत्पन्न हो सकता था उसका भी बोध उसे हुआ।

१९२४२४२४२४ २४ १९२४ २४ १९२४२४२४२४

24 तब शाऊल का पोता मपीबोशेत राजा से भेंट करने को आया; उसने राजा के चले जाने के दिन से उसके कुशल क्षेम से फिर आने के दिन तक न १९२४ १९२४१९२४ १९२ १९२४१९२४, १९ १ १९२४ १९२४१९२४ १९२४१९२४, और न अपने कपड़े धुलवाए थे।

25 जब यरूशलेमी राजा से मिलने को गए, तब राजा ने उससे पूछा, “हे मपीबोशेत, तू मेरे संग क्यों नहीं गया था?”

26 उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरे कर्मचारी ने मुझे धोखा दिया था; तेरा दास जो विकलांग है; इसलिए तेरे दास ने सोचा, ‘मैं गदहे पर काठी कसवाकर उस पर चढ़ राजा के साथ चला जाऊँगा।’

27 और मेरे कर्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के सामने मेरी चुगली की है। परन्तु मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के दूत के समान है; और जो कुछ तुझे भाए वही कर।

28 मेरे पिता का समस्त घराना तेरी ओर से प्राणदण्ड के योग्य था; परन्तु तूने अपने दास को अपनी मेज पर खानेवालों में गिना है। मुझे क्या हक है कि मैं राजा की दुहाई दूँ?”

29 राजा ने उससे कहा, “तू अपनी बात की चर्चा क्यों करता रहता है? मेरी आज्ञा यह है, कि उस भूमि को तुम और सीबा दोनों आपस में बाँट लो।”

30 मपीबोशेत ने राजा से कहा, “मेरे प्रभु राजा जो कुशल क्षेम से अपने घर आया है, इसलिए सीबा ही सब कुछ ले ले।”

१९२४२४२४२४ २४ १९२४ २४ १९२४२४२४२४

31 तब गिलादी बर्जिल्लै रोगलीम से आया, और राजा के साथ यरदन पार गया, कि उसको यरदन के पार पहुँचाए।

32 बर्जिल्लै तो वृद्ध पुरुष था, अर्थात् अस्सी वर्ष की आयु का था जब तक राजा महनैम में रहता था तब तक वह उसका पालन-पोषण करता रहा; क्योंकि वह बहुत धनी था।

33 तब राजा ने बर्जिल्लै से कहा, “मेरे संग पार चल, और मैं तुझे यरूशलेम में अपने पास रखकर तेरा पालन-पोषण करूँगा।”

34 बर्जिल्लै ने राजा से कहा, “मुझे कितने दिन जीवित रहना है, कि मैं राजा के संग यरूशलेम को जाऊँ?”

35 आज मैं अस्सी वर्ष का हूँ; क्या मैं भले बुरे का विवेक कर सकता हूँ? क्या तेरा दास जो कुछ खाता

पीता है उसका स्वाद पहचान सकता है? क्या मुझे गायकों या गायिकाओं का शब्द अब सुन पड़ता है? तेरा दास अब अपने स्वामी राजा के लिये क्यों बोझ का कारण हो?

36 तेरा दास राजा के संग यरदन पार ही तक जाएगा। राजा इसका ऐसा बड़ा बदला मुझे क्यों दे?

37 अपने दास को लौटने दे, कि मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता के कब्रिस्तान के पास मरूँ। परन्तु तेरा दास किम्हाम उपस्थित है; मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाए; और जैसा तुझे भाए वैसा ही उससे व्यवहार करना।”

38 राजा ने कहा, “हाँ, किम्हाम मेरे संग पार चलेगा, और जैसा तुझे भाए वैसा ही मैं उससे व्यवहार करूँगा वरन् जो कुछ तू मुझसे चाहेगा वह मैं तेरे लिये करूँगा।”

39 तब सब लोग यरदन पार गए, और राजा भी पार हुआ; तब राजा ने बर्जिल्लै को चूमकर आशीर्वाद दिया, और वह अपने स्थान को लौट गया।

40 तब राजा गिलगाल की ओर पार गया, और उसके संग किम्हाम पार हुआ; और सब यहूदी लोगों ने और आधे इस्राएली लोगों ने राजा को पार पहुँचाया।

41 तब सब इस्राएली पुरुष राजा के पास आए, और राजा से कहने लगे, “क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई तुझे चोरी से ले आए, और परिवार समेत राजा को और उसके सब जनों को भी यरदन पार ले आए हैं।”

42 सब यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों को उत्तर दिया, “कारण यह है कि राजा हमारे गोत्र का है। तो तुम लोग इस बात से क्यों रूठ गए हो? क्या हमने राजा का दिया हुआ कुछ खाया है? या उसने हमें कुछ दान दिया है?”

43 इस्राएली पुरुषों ने यहूदी पुरुषों को उत्तर दिया, “राजा में दस अंश हमारे हैं; और दाऊद में हमारा भाग तुम्हारे भाग से बड़ा है। तो फिर तुम ने हमें क्यों तुच्छ जाना? क्या अपने राजा के लौटा ले आने की चर्चा पहले हम ही ने न की थी?” और यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों से अधिक कड़ी बातें कहीं।

## 20

१९२४ २४ १९२४१९२४

1 वहाँ संयोग से शेबा नामक एक बिन्यामीनी था, वह ओच्छा पुरुष १९२४१९२४ १९ १९२४१९२४\* था; वह नरसिंगा फूँककर कहने लगा, “दाऊद में हमारा कुछ

† 19:24 १९२४ १९२४१९२४ २४ १९२४१९२४ १९२४, १९ १ १९२४ १९२४१९२४ १९२४१९२४: इस पद में व्यक्त यह सत्य मपीबोशेत को उस सन्देह से मुक्त करता है कि वह दाऊद के साथ विश्वासयोग्य नहीं। \* 20:1 १९२४१९२४ १९ १९२४१९२४: शाऊल भी इसी कुल का था। स्पष्ट है कि उनके गोत्र से यहूदा के गोत्र में राज सत्ता का चला जाना अनेक बिन्यामिनियों में असन्तोष का कारण था।

अंश नहीं, और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग है; हे इस्राएलियों, अपने-अपने डेरे को चले जाओ!”

2 इसलिए सब इस्राएली पुरुष दाऊद के पीछे चलना छोड़कर बिक्री के पुत्र शेबा के पीछे हो लिए; परन्तु सब यहूदी पुरुष यरदन से यरूशलेम तक अपने राजा के संग लगे रहे।

3 तब दाऊद यरूशलेम को अपने भवन में आया; और राजा ने उन दस रखैलों को, जिन्हें वह भवन की चौकसी करने को छोड़ गया था, अलग एक घर में रखा, और उनका पालन-पोषण करता रहा, परन्तु उनसे सहवास न किया। इसलिए वे अपनी-अपनी मृत्यु के दिन तक विधवापन की सी दशा में जीवित ही बन्द रहीं।

4 तब राजा ने अमासा से कहा, “यहूदी पुरुषों को तीन दिन के भीतर मेरे पास बुला ला, और तू भी यहाँ उपस्थित रहना।”

5 तब अमासा यहूदियों को बुलाने गया; परन्तु उसके ठहराए हुए समय से अधिक रह गया।

6 तब दाऊद ने <sup>20:6</sup> से कहा, “अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम से भी हमारी अधिक हानि करेगा; इसलिए तू अपने प्रभु के लोगों को लेकर उसका पीछा कर, ऐसा न हो कि वह गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप जाए।”

7 तब योआब के जन, और करेती और पलेती लोग, और सब शूरवीर उसके पीछे हो लिए; और बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को यरूशलेम से निकले।

8 वे गिबोन में उस भारी पत्थर के पास पहुँचे ही थे, कि अमासा उनसे आ मिला। योआब तो योद्धा का वस्त्र फेंटे से कसे हुए था, और उस फेंटे में एक तलवार उसकी कमर पर अपनी म्यान में बंधी हुई थी; और जब वह चला, तब वह निकलकर गिर पड़ी।

9 तो योआब ने अमासा से पूछा, “हे मेरे भाई, क्या तू कुशल से है?” तब योआब ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर अमासा को चूमने के लिये उसकी दाढ़ी पकड़ी।

10 परन्तु अमासा ने उस तलवार की कुछ चिन्ता न की जो योआब के हाथ में थी; और उसने उसे अमासा के पेट में भोंक दी, जिससे उसकी अंतडियाँ निकलकर धरती पर गिर पड़ी, और उसने उसको दूसरी बार न मारा; और वह मर गया।

तब योआब और उसका भाई अबीशै बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को चले।

11 और उसके पास योआब का एक जवान खड़ा होकर कहने लगा, “जो कोई योआब के पक्ष और दाऊद की ओर का हो वह योआब के पीछे हो ले।”

12 अमासा सड़क के मध्य अपने लहू में लोट रहा था। जब उस मनुष्य ने देखा कि सब लोग खड़े हो गए हैं, तब अमासा को सड़क पर से मैदान में उठा ले गया, क्योंकि देखा कि जितने उसके पास आते हैं वे खड़े हो जाते हैं, तब उसने उसके ऊपर एक कपड़ा डाल दिया।

13 उसके सड़क पर से सरकाए जाने पर, सब लोग बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को योआब के पीछे हो लिए।

14 शेबा सब इस्राएली गोत्रों में होकर आबेल और बेतमाका और बैरियों के देश तक पहुँचा; और वे भी इकट्ठे होकर उसके पीछे हो लिए।

15 तब योआब के जनों ने उसको आबेल्वेत्माका में घेर लिया; और नगर के सामने एक टीला खड़ा किया कि वह शहरपनाह से सट गया; और योआब के संग के सब लोग शहरपनाह को गिराने के लिये धक्का देने लगे।

<sup>20:15</sup>

16 तब एक बुद्धिमान स्त्री ने नगर में से पुकारा, “सुनो! सुनो! योआब से कहो, कि यहाँ आए, ताकि मैं उससे कुछ बातें करूँ।”

17 जब योआब उसके निकट गया, तब स्त्री ने पूछा, “क्या तू योआब है?” उसने कहा, “हाँ, मैं वही हूँ।” फिर उसने उससे कहा, “अपनी दासी के वचन सुन।” उसने कहा, “मैं सुन रहा हूँ।”

18 वह कहने लगी, “प्राचीनकाल में लोग कहा करते थे, ‘आबेल में पूछा जाए,’ और इस रीति झगड़े को निपटा देते थे।

19 मैं तो मेल मिलापवाले और विश्वासयोग्य इस्राएलियों में से हूँ; परन्तु तू एक प्रधान नगर नष्ट करने का यत्न करता है; तू यहोवा के भाग को क्यों निगल जाएगा?”

20 योआब ने उत्तर देकर कहा, “यह मुझसे दूर हो, दूर, कि मैं निगल जाऊँ या नष्ट करूँ!”

21 बात ऐसी नहीं है। शेबा नामक एप्रैम के पहाड़ी देश का एक पुरुष जो बिक्री का पुत्र है, उसने दाऊद राजा के विरुद्ध हाथ उठाया है; अतः तुम लोग केवल उसी को सौंप दो, तब मैं नगर को छोड़कर चला जाऊँगा।” स्त्री ने योआब से कहा, “उसका सिर शहरपनाह पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा।”

22 तब स्त्री अपनी बुद्धिमानी से सब लोगों के पास गई। तब उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा फूँका, और सब लोग नगर के पास से अलग-अलग

† 20:6 <sup>20:6</sup>: सम्भवतः राजा योआब के साथ अच्छे सम्बंधों के न होने के कारण उसे सेनापति के पद से वंचित करना चाहता था।

होकर अपने-अपने डेरे को गए और योआब यरूशलेम को राजा के पास लौट गया।

22 23 24 25 26

23 योआब तो समस्त इस्राएली सेना के ऊपर प्रधान रहा; और यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों के ऊपर था;

24 और अदोराम बेगारों के ऊपर था; और अहीलूद का पुत्र यहोशापात इतिहास का लेखक था;

25 और शवा मंत्री था; और सादोक और एब्यातार याजक थे;

26 और याईरी ईरा भी दाऊद का एक मंत्री था।

## 21

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 दाऊद के दिनों में लगातार तीन वर्ष तक अकाल पड़ा; तो दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने कहा, “यह शाऊल और उसके <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> के कारण हुआ, क्योंकि उसने गिबोनियों को मरवा डाला था।”

2 तब राजा ने गिबोनियों को बुलाकर उनसे बातें की। गिबोनी लोग तो इस्राएलियों में से नहीं थे, वे बचे हुए एमोरियों में से थे; और इस्राएलियों ने उनके साथ शपथ खाई थी, परन्तु शाऊल को जो इस्राएलियों और यहूदियों के लिये जलन हुई थी, इससे उसने उन्हें मार डालने के लिये यत्न किया था।

3 तब दाऊद ने गिबोनियों से पूछा, “मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ? और क्या करके ऐसा प्रायश्चित्त करूँ, कि तुम यहोवा के निज भाग को आशीर्वाद दे सको?”

4 गिबोनियों ने उससे कहा, “हमारे और शाऊल या उसके घराने के मध्य रुपये पैसे का कुछ झगड़ा नहीं; और न हमारा काम है कि किसी इस्राएली को मार डालें।” उसने कहा, “जो कुछ तुम कहो, वही मैं तुम्हारे लिये करूँगा।”

5 उन्होंने राजा से कहा, “जिस पुरुष ने हमको नष्ट कर दिया, और हमारे विरुद्ध ऐसी युक्ति की कि हमारा ऐसा सत्यानाश हो जाएँ, कि इस्राएल के देश में आगे को न रह सकें,

6 उसके वंश के सात जन हमें सौंप दिए जाएँ, और हम उन्हें यहोवा के लिये यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिबा नामक बस्ती में फांसी देंगे।” राजा ने कहा, “मैं उनको सौंप दूँगा।”

7 परन्तु <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> आपस में यहोवा की शपथ खाई थी,

\* 21:1 <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> निर्दोषों का संहार करनेवाले परिवार का दोष। गिबोनियों के साथ शपथ खाकर उसे तोड़ने के कारण शाऊल सम्पूर्ण इस्राएल पर आपदा का कारण हुआ था, इसलिए दाऊद योनातान के साथ खाई अपनी शपथ के विषय अत्यधिक संदर्भ था।

इस कारण राजा ने योनातान के पुत्र मपीबोशेत को जो शाऊल का पोता था बचा रखा।

8 परन्तु अर्मोनी और मपीबोशेत नामक, अय्या की बेटी रिस्पा के दोनों पुत्र जो शाऊल से उत्पन्न हुए थे; और शाऊल की बेटी मीकल के पाँचों बेटे, जो वह महोलवासी बर्जिल्लै के पुत्र अद्रीएल की ओर से थे, इनको राजा ने पकड़वाकर

9 गिबोनियों के हाथ सौंप दिया, और उन्होंने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के सामने फांसी दी, और सातों एक साथ नष्ट हुए। उनका मार डाला जाना तो कटनी के पहले दिनों में, अर्थात् जौ की कटनी के आरम्भ में हुआ।

10 तब अय्या की बेटी रिस्पा ने टाट लेकर, कटनी के आरम्भ से लेकर जब तक आकाश से उन पर अत्यन्त वर्षा न हुई, तब तक चट्टान पर उसे अपने नीचे बिछाये रही; और न तो दिन में आकाश के पक्षियों को, और न रात में जंगली पशुओं को उन्हें छूने दिया।

11 जब अय्या की बेटी शाऊल की रखैल रिस्पा के इस काम का समाचार दाऊद को मिला,

12 तब दाऊद ने जाकर शाऊल और उसके पुत्र योनातान की हड्डियों को गिलादी याबेश के लोगों से ले लिया, जिन्होंने उन्हें बेतशान के उस चौक से चुरा लिया था, जहाँ पलिशितियों ने उन्हें उस दिन टाँगा था, जब उन्होंने शाऊल को गिलबो पहाड़ पर मार डाला था;

13 वह वहाँ से शाऊल और उसके पुत्र योनातान की हड्डियों को ले आया; और फांसी पाए हुआओं की हड्डियाँ भी इकट्ठी की गईं।

14 और शाऊल और उसके पुत्र योनातान की हड्डियाँ बिन्यामीन के देश के जेला में शाऊल के पिता कीश के कब्रिस्तान में गाड़ी गईं; और दाऊद की सब आज्ञाओं के अनुसार काम हुआ। उसके बाद परमेश्वर ने देश के लिये प्रार्थना सुन ली।

15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

15 पलिशितियों ने इस्राएल से फिर युद्ध किया, और दाऊद अपने जनों समेत जाकर पलिशितियों से लड़ने लगा; परन्तु दाऊद थक गया।

16 तब यिशबोबनोब, जो रापा के वंश का था, और उसके भाले का फल तौल में तीन सौ शेकेल पीतल का था, और वह नई तलवार बाँधे हुए था, उसने दाऊद को मारने का ठान लिया था।

17 परन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने दाऊद की सहायता करके उस पलिशती को ऐसा मारा कि वह मर गया। तब दाऊद के जनों ने शपथ खाकर उससे कहा,

† 21:7 <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> यहोवा की शपथ खाई थी।





3 इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है,  
 इस्राएल की चट्टान ने मुझसे बातें की हैं,  
 कि मनुष्यों में प्रभुता करनेवाला एक धर्मी होगा,  
 जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा,  
 4 वह मानो भोर का प्रकाश होगा जब सूर्य निकलता है,  
 ऐसा भोर जिसमें बादल न हों,  
 जैसा वर्षा के बाद निर्मल प्रकाश के कारण भूमि से हरी-  
 हरी घास उगती है।  
 5 क्या मेरा घराना परमेश्वर की दृष्टि में ऐसा नहीं है?  
 उसने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बाँधी है,  
 जो सब बातों में ठीक की हुई और अटल भी है।  
 क्योंकि चाहे वह उसको प्रगट न करे,  
 तो भी मेरा पूर्ण उद्धार और पूर्ण अभिलाषा का विषय  
 वही है।  
 6 परन्तु ओछे लोग सब के सब निकम्मी झाड़ियों  
 के समान हैं जो हाथ से पकड़ी नहीं जातीं;  
 7 परन्तु जो पुरुष उनको छूए उसे लोहे  
 और भाले की छड़ से सुसज्जित होना चाहिये।  
 इसलिए वे अपने ही स्थान में आग से भस्म कर दिए  
 जाएँगे।”

23:16 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26

8 दाऊद के शूरवीरों के नाम ये हैं: अर्थात् तहकमोनी  
 योशेव्यशेबेत, जो सरदारों में मुख्य था; वह एस्नी  
 अदीनो भी कहलाता था; जिसने एक ही समय में आठ  
 सौ पुरुष मार डाले।

9 उसके बाद अहोही दोदै का पुत्र एलीआजर था।  
 वह उस समय दाऊद के संग के तीनों वीरों में से था,  
 जबकि उन्होंने युद्ध के लिये एकत्रित हुए पलिशितियों  
 को ललकारा, और इस्राएली पुरुष चले गए थे।

10 वह कमर बाँधकर पलिशितियों को तब तक मारता  
 रहा जब तक उसका हाथ थक न गया, और तलवार हाथ  
 से चिपट न गई; और उस दिन यहोवा ने बड़ी विजय  
 कराई; और जो लोग उसके पीछे हो लिए वे केवल लूटने  
 ही के लिये उसके पीछे हो लिए।

11 उसके बाद आगै नामक एक हरारी का पुत्र शम्मा  
 था। पलिशितियों ने इकट्ठे होकर एक स्थान में दल बाँधा,  
 जहाँ मसूर का एक खेत था; और लोग उनके डर के मारे  
 भागे।

12 तब उसने खेत के मध्य में खड़े होकर उसे बचाया,  
 और पलिशितियों को मार लिया; और यहोवा ने बड़ी  
 विजय दिलाई।

13 फिर तीसों मुख्य सरदारों में से तीन जन कटनी के  
 दिनों में दाऊद के पास अदुल्लाम नामक गुफा में आए,  
 और पलिशितियों का दल रपाईम नामक तराई में छावनी  
 किए हुए था।

14 उस समय दाऊद गढ़ में था; और उस समय  
 पलिशितियों की चौकी बैतलहम में थी।

15 तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा,  
 “कौन मुझे बैतलहम के फाटक के पास के कुएँ का पानी  
 पिलाएगा?”

16 अतः वे तीनों वीर पलिशितियों की छावनी पर  
 टूट पड़े, और बैतलहम के फाटक के कुएँ से पानी  
 भरकर दाऊद के पास ले आए। परन्तु उसने पीने से  
 इन्कार किया, और 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26\*  
 23:27 23:28\*  
 17 और कहा, “हे यहोवा, मुझसे ऐसा काम दूर रहे।  
 क्या मैं उन मनुष्यों का लहू पीऊँ जो अपने प्राणों पर  
 खेलकर गए थे?” इसलिए उसने उस पानी को पीने से  
 इन्कार किया। इन तीन वीरों ने तो ये ही काम किए।

18 अबीशै जो सरूयाह के पुत्र योआब का भाई था,  
 वह तीनों से मुख्य था। उसने अपना भाला चलाकर तीन  
 सौ को मार डाला, और तीनों में नामी हो गया।

19 क्या वह तीनों से अधिक प्रतिष्ठित न था? और  
 इसी से वह उनका प्रधान हो गया; परन्तु मुख्य तीनों के  
 पद को न पहुँचा।

20 फिर 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26†, जो  
 कबसेलवासी एक बड़ा काम करनेवाले वीर का पुत्र था;  
 उसने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला। बर्फ  
 गिरने के समय उसने एक गड्ढे में उतर के एक सिंह को  
 मार डाला।

21 फिर उसने एक रूपवान मिस्री पुरुष को मार डाला।  
 मिस्री तो हाथ में भाला लिए हुए था; परन्तु बनायाह  
 एक लाठी ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री के  
 हाथ से भाला छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया।

22 ऐसे-एसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन  
 तीनों वीरों में नामी हो गया।

23 वह तीनों से अधिक प्रतिष्ठित तो था, परन्तु मुख्य  
 तीनों के पद को न पहुँचा। उसको दाऊद ने अपनी निज  
 सभा का सभासद नियुक्त किया।

24 फिर तीसों में योआब का भाई असाहेल; बैतलहमी  
 दोदो का पुत्र एल्हनान,

25 हेरोदी शम्मा, और एलीका,

26 पेलैती हेलेस, तकोई इक्केश का पुत्र ईरा,

\* 23:16 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26: वह उसके उपयोग हेतु अत्यधिक मूल्यवान था और केवल परमेश्वर ही योग्य था।

† 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26: उसने दाऊद के राजकाल में केरत और पेलैत का नेतृत्व किया था और अदोनियाह के विरुद्ध  
 सुलैमान का साथ दिया था, जब दाऊद मरने पर था।

27 अनातोती अबीएजेर, हूशाई मबुन्ने,  
 28 अहोही सल्मोन, नतोपाही महरै,  
 29 एक और नतोपाही बानाह का पुत्र हेलेब,  
 बिन्यामीनियों के गिबा नगर के रीबै का पुत्र इत्तै,  
 30 पिरातोनी, बनायाह, गाश के नालों के पास  
 रहनेवाला हिदै,  
 31 अराबा का अबीअल्बोन, बहूरीमी अज्मावेत,  
 32 शालबोनी एल्यहवा, याशेन के वंश में से  
 योनातान,  
 33 हरारी शम्मा, हरारी शारार का पुत्र अहीआम,  
 34 माका  
 देश के अहसबै का पुत्र एलीपेलेत, गीलोवासी  
 अहीतोपेल का पुत्र एलीआम,  
 35 कर्मेली हेस्रो, अराबी पारै  
 36 सोबा नातान का पुत्र यिगाल, गादी बानी,  
 37 अम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै जो सरूयाह के पुत्र  
 योआब का हथियार ढोनेवाला था,  
 38 येतेरी ईरा, और गारेब,  
 39 और हित्ती ऊरिय्याह था: सब मिलाकर सैंतीस थे।

## 24

1 <sup>24:1</sup> <sup>24:2</sup> <sup>24:3</sup> <sup>24:4</sup> <sup>24:5</sup> <sup>24:6</sup> <sup>24:7</sup> <sup>24:8</sup> <sup>24:9</sup> <sup>24:10</sup> <sup>24:11</sup> <sup>24:12</sup> <sup>24:13</sup> <sup>24:14</sup> <sup>24:15</sup> <sup>24:16</sup> <sup>24:17</sup> <sup>24:18</sup> <sup>24:19</sup> <sup>24:20</sup> <sup>24:21</sup> <sup>24:22</sup> <sup>24:23</sup> <sup>24:24</sup> <sup>24:25</sup> <sup>24:26</sup> <sup>24:27</sup> <sup>24:28</sup> <sup>24:29</sup> <sup>24:30</sup> <sup>24:31</sup> <sup>24:32</sup> <sup>24:33</sup> <sup>24:34</sup> <sup>24:35</sup> <sup>24:36</sup> <sup>24:37</sup> <sup>24:38</sup> <sup>24:39</sup> <sup>24:40</sup> <sup>24:41</sup> <sup>24:42</sup> <sup>24:43</sup> <sup>24:44</sup> <sup>24:45</sup> <sup>24:46</sup> <sup>24:47</sup> <sup>24:48</sup> <sup>24:49</sup> <sup>24:50</sup> <sup>24:51</sup> <sup>24:52</sup> <sup>24:53</sup> <sup>24:54</sup> <sup>24:55</sup> <sup>24:56</sup> <sup>24:57</sup> <sup>24:58</sup> <sup>24:59</sup> <sup>24:60</sup> <sup>24:61</sup> <sup>24:62</sup> <sup>24:63</sup> <sup>24:64</sup> <sup>24:65</sup> <sup>24:66</sup> <sup>24:67</sup> <sup>24:68</sup> <sup>24:69</sup> <sup>24:70</sup> <sup>24:71</sup> <sup>24:72</sup> <sup>24:73</sup> <sup>24:74</sup> <sup>24:75</sup> <sup>24:76</sup> <sup>24:77</sup> <sup>24:78</sup> <sup>24:79</sup> <sup>24:80</sup> <sup>24:81</sup> <sup>24:82</sup> <sup>24:83</sup> <sup>24:84</sup> <sup>24:85</sup> <sup>24:86</sup> <sup>24:87</sup> <sup>24:88</sup> <sup>24:89</sup> <sup>24:90</sup> <sup>24:91</sup> <sup>24:92</sup> <sup>24:93</sup> <sup>24:94</sup> <sup>24:95</sup> <sup>24:96</sup> <sup>24:97</sup> <sup>24:98</sup> <sup>24:99</sup> <sup>24:100</sup> <sup>24:101</sup> <sup>24:102</sup> <sup>24:103</sup> <sup>24:104</sup> <sup>24:105</sup> <sup>24:106</sup> <sup>24:107</sup> <sup>24:108</sup> <sup>24:109</sup> <sup>24:110</sup> <sup>24:111</sup> <sup>24:112</sup> <sup>24:113</sup> <sup>24:114</sup> <sup>24:115</sup> <sup>24:116</sup> <sup>24:117</sup> <sup>24:118</sup> <sup>24:119</sup> <sup>24:120</sup> <sup>24:121</sup> <sup>24:122</sup> <sup>24:123</sup> <sup>24:124</sup> <sup>24:125</sup> <sup>24:126</sup> <sup>24:127</sup> <sup>24:128</sup> <sup>24:129</sup> <sup>24:130</sup> <sup>24:131</sup> <sup>24:132</sup> <sup>24:133</sup> <sup>24:134</sup> <sup>24:135</sup> <sup>24:136</sup> <sup>24:137</sup> <sup>24:138</sup> <sup>24:139</sup> <sup>24:140</sup> <sup>24:141</sup> <sup>24:142</sup> <sup>24:143</sup> <sup>24:144</sup> <sup>24:145</sup> <sup>24:146</sup> <sup>24:147</sup> <sup>24:148</sup> <sup>24:149</sup> <sup>24:150</sup> <sup>24:151</sup> <sup>24:152</sup> <sup>24:153</sup> <sup>24:154</sup> <sup>24:155</sup> <sup>24:156</sup> <sup>24:157</sup> <sup>24:158</sup> <sup>24:159</sup> <sup>24:160</sup> <sup>24:161</sup> <sup>24:162</sup> <sup>24:163</sup> <sup>24:164</sup> <sup>24:165</sup> <sup>24:166</sup> <sup>24:167</sup> <sup>24:168</sup> <sup>24:169</sup> <sup>24:170</sup> <sup>24:171</sup> <sup>24:172</sup> <sup>24:173</sup> <sup>24:174</sup> <sup>24:175</sup> <sup>24:176</sup> <sup>24:177</sup> <sup>24:178</sup> <sup>24:179</sup> <sup>24:180</sup> <sup>24:181</sup> <sup>24:182</sup> <sup>24:183</sup> <sup>24:184</sup> <sup>24:185</sup> <sup>24:186</sup> <sup>24:187</sup> <sup>24:188</sup> <sup>24:189</sup> <sup>24:190</sup> <sup>24:191</sup> <sup>24:192</sup> <sup>24:193</sup> <sup>24:194</sup> <sup>24:195</sup> <sup>24:196</sup> <sup>24:197</sup> <sup>24:198</sup> <sup>24:199</sup> <sup>24:200</sup> <sup>24:201</sup> <sup>24:202</sup> <sup>24:203</sup> <sup>24:204</sup> <sup>24:205</sup> <sup>24:206</sup> <sup>24:207</sup> <sup>24:208</sup> <sup>24:209</sup> <sup>24:210</sup> <sup>24:211</sup> <sup>24:212</sup> <sup>24:213</sup> <sup>24:214</sup> <sup>24:215</sup> <sup>24:216</sup> <sup>24:217</sup> <sup>24:218</sup> <sup>24:219</sup> <sup>24:220</sup> <sup>24:221</sup> <sup>24:222</sup> <sup>24:223</sup> <sup>24:224</sup> <sup>24:225</sup> <sup>24:226</sup> <sup>24:227</sup> <sup>24:228</sup> <sup>24:229</sup> <sup>24:230</sup> <sup>24:231</sup> <sup>24:232</sup> <sup>24:233</sup> <sup>24:234</sup> <sup>24:235</sup> <sup>24:236</sup> <sup>24:237</sup> <sup>24:238</sup> <sup>24:239</sup> <sup>24:240</sup> <sup>24:241</sup> <sup>24:242</sup> <sup>24:243</sup> <sup>24:244</sup> <sup>24:245</sup> <sup>24:246</sup> <sup>24:247</sup> <sup>24:248</sup> <sup>24:249</sup> <sup>24:250</sup> <sup>24:251</sup> <sup>24:252</sup> <sup>24:253</sup> <sup>24:254</sup> <sup>24:255</sup> <sup>24:256</sup> <sup>24:257</sup> <sup>24:258</sup> <sup>24:259</sup> <sup>24:260</sup> <sup>24:261</sup> <sup>24:262</sup> <sup>24:263</sup> <sup>24:264</sup> <sup>24:265</sup> <sup>24:266</sup> <sup>24:267</sup> <sup>24:268</sup> <sup>24:269</sup> <sup>24:270</sup> <sup>24:271</sup> <sup>24:272</sup> <sup>24:273</sup> <sup>24:274</sup> <sup>24:275</sup> <sup>24:276</sup> <sup>24:277</sup> <sup>24:278</sup> <sup>24:279</sup> <sup>24:280</sup> <sup>24:281</sup> <sup>24:282</sup> <sup>24:283</sup> <sup>24:284</sup> <sup>24:285</sup> <sup>24:286</sup> <sup>24:287</sup> <sup>24:288</sup> <sup>24:289</sup> <sup>24:290</sup> <sup>24:291</sup> <sup>24:292</sup> <sup>24:293</sup> <sup>24:294</sup> <sup>24:295</sup> <sup>24:296</sup> <sup>24:297</sup> <sup>24:298</sup> <sup>24:299</sup> <sup>24:300</sup> <sup>24:301</sup> <sup>24:302</sup> <sup>24:303</sup> <sup>24:304</sup> <sup>24:305</sup> <sup>24:306</sup> <sup>24:307</sup> <sup>24:308</sup> <sup>24:309</sup> <sup>24:310</sup> <sup>24:311</sup> <sup>24:312</sup> <sup>24:313</sup> <sup>24:314</sup> <sup>24:315</sup> <sup>24:316</sup> <sup>24:317</sup> <sup>24:318</sup> <sup>24:319</sup> <sup>24:320</sup> <sup>24:321</sup> <sup>24:322</sup> <sup>24:323</sup> <sup>24:324</sup> <sup>24:325</sup> <sup>24:326</sup> <sup>24:327</sup> <sup>24:328</sup> <sup>24:329</sup> <sup>24:330</sup> <sup>24:331</sup> <sup>24:332</sup> <sup>24:333</sup> <sup>24:334</sup> <sup>24:335</sup> <sup>24:336</sup> <sup>24:337</sup> <sup>24:338</sup> <sup>24:339</sup> <sup>24:340</sup> <sup>24:341</sup> <sup>24:342</sup> <sup>24:343</sup> <sup>24:344</sup> <sup>24:345</sup> <sup>24:346</sup> <sup>24:347</sup> <sup>24:348</sup> <sup>24:349</sup> <sup>24:350</sup> <sup>24:351</sup> <sup>24:352</sup> <sup>24:353</sup> <sup>24:354</sup> <sup>24:355</sup> <sup>24:356</sup> <sup>24:357</sup> <sup>24:358</sup> <sup>24:359</sup> <sup>24:360</sup> <sup>24:361</sup> <sup>24:362</sup> <sup>24:363</sup> <sup>24:364</sup> <sup>24:365</sup> <sup>24:366</sup> <sup>24:367</sup> <sup>24:368</sup> <sup>24:369</sup> <sup>24:370</sup> <sup>24:371</sup> <sup>24:372</sup> <sup>24:373</sup> <sup>24:374</sup> <sup>24:375</sup> <sup>24:376</sup> <sup>24:377</sup> <sup>24:378</sup> <sup>24:379</sup> <sup>24:380</sup> <sup>24:381</sup> <sup>24:382</sup> <sup>24:383</sup> <sup>24:384</sup> <sup>24:385</sup> <sup>24:386</sup> <sup>24:387</sup> <sup>24:388</sup> <sup>24:389</sup> <sup>24:390</sup> <sup>24:391</sup> <sup>24:392</sup> <sup>24:393</sup> <sup>24:394</sup> <sup>24:395</sup> <sup>24:396</sup> <sup>24:397</sup> <sup>24:398</sup> <sup>24:399</sup> <sup>24:400</sup> <sup>24:401</sup> <sup>24:402</sup> <sup>24:403</sup> <sup>24:404</sup> <sup>24:405</sup> <sup>24:406</sup> <sup>24:407</sup> <sup>24:408</sup> <sup>24:409</sup> <sup>24:410</sup> <sup>24:411</sup> <sup>24:412</sup> <sup>24:413</sup> <sup>24:414</sup> <sup>24:415</sup> <sup>24:416</sup> <sup>24:417</sup> <sup>24:418</sup> <sup>24:419</sup> <sup>24:420</sup> <sup>24:421</sup> <sup>24:422</sup> <sup>24:423</sup> <sup>24:424</sup> <sup>24:425</sup> <sup>24:426</sup> <sup>24:427</sup> <sup>24:428</sup> <sup>24:429</sup> <sup>24:430</sup> <sup>24:431</sup> <sup>24:432</sup> <sup>24:433</sup> <sup>24:434</sup> <sup>24:435</sup> <sup>24:436</sup> <sup>24:437</sup> <sup>24:438</sup> <sup>24:439</sup> <sup>24:440</sup> <sup>24:441</sup> <sup>24:442</sup> <sup>24:443</sup> <sup>24:444</sup> <sup>24:445</sup> <sup>24:446</sup> <sup>24:447</sup> <sup>24:448</sup> <sup>24:449</sup> <sup>24:450</sup> <sup>24:451</sup> <sup>24:452</sup> <sup>24:453</sup> <sup>24:454</sup> <sup>24:455</sup> <sup>24:456</sup> <sup>24:457</sup> <sup>24:458</sup> <sup>24:459</sup> <sup>24:460</sup> <sup>24:461</sup> <sup>24:462</sup> <sup>24:463</sup> <sup>24:464</sup> <sup>24:465</sup> <sup>24:466</sup> <sup>24:467</sup> <sup>24:468</sup> <sup>24:469</sup> <sup>24:470</sup> <sup>24:471</sup> <sup>24:472</sup> <sup>24:473</sup> <sup>24:474</sup> <sup>24:475</sup> <sup>24:476</sup> <sup>24:477</sup> <sup>24:478</sup> <sup>24:479</sup> <sup>24:480</sup> <sup>24:481</sup> <sup>24:482</sup> <sup>24:483</sup> <sup>24:484</sup> <sup>24:485</sup> <sup>24:486</sup> <sup>24:487</sup> <sup>24:488</sup> <sup>24:489</sup> <sup>24:490</sup> <sup>24:491</sup> <sup>24:492</sup> <sup>24:493</sup> <sup>24:494</sup> <sup>24:495</sup> <sup>24:496</sup> <sup>24:497</sup> <sup>24:498</sup> <sup>24:499</sup> <sup>24:500</sup> <sup>24:501</sup> <sup>24:502</sup> <sup>24:503</sup> <sup>24:504</sup> <sup>24:505</sup> <sup>24:506</sup> <sup>24:507</sup> <sup>24:508</sup> <sup>24:509</sup> <sup>24:510</sup> <sup>24:511</sup> <sup>24:512</sup> <sup>24:513</sup> <sup>24:514</sup> <sup>24:515</sup> <sup>24:516</sup> <sup>24:517</sup> <sup>24:518</sup> <sup>24:519</sup> <sup>24:520</sup> <sup>24:521</sup> <sup>24:522</sup> <sup>24:523</sup> <sup>24:524</sup> <sup>24:525</sup> <sup>24:526</sup> <sup>24:527</sup> <sup>24:528</sup> <sup>24:529</sup> <sup>24:530</sup> <sup>24:531</sup> <sup>24:532</sup> <sup>24:533</sup> <sup>24:534</sup> <sup>24:535</sup> <sup>24:536</sup> <sup>24:537</sup> <sup>24:538</sup> <sup>24:539</sup> <sup>24:540</sup> <sup>24:541</sup> <sup>24:542</sup> <sup>24:543</sup> <sup>24:544</sup> <sup>24:545</sup> <sup>24:546</sup> <sup>24:547</sup> <sup>24:548</sup> <sup>24:549</sup> <sup>24:550</sup> <sup>24:551</sup> <sup>24:552</sup> <sup>24:553</sup> <sup>24:554</sup> <sup>24:555</sup> <sup>24:556</sup> <sup>24:557</sup> <sup>24:558</sup> <sup>24:559</sup> <sup>24:560</sup> <sup>24:561</sup> <sup>24:562</sup> <sup>24:563</sup> <sup>24:564</sup> <sup>24:565</sup> <sup>24:566</sup> <sup>24:567</sup> <sup>24:568</sup> <sup>24:569</sup> <sup>24:570</sup> <sup>24:571</sup> <sup>24:572</sup> <sup>24:573</sup> <sup>24:574</sup> <sup>24:575</sup> <sup>24:576</sup> <sup>24:577</sup> <sup>24:578</sup> <sup>24:579</sup> <sup>24:580</sup> <sup>24:581</sup> <sup>24:582</sup> <sup>24:583</sup> <sup>24:584</sup> <sup>24:585</sup> <sup>24:586</sup> <sup>24:587</sup> <sup>24:588</sup> <sup>24:589</sup> <sup>24:590</sup> <sup>24:591</sup> <sup>24:592</sup> <sup>24:593</sup> <sup>24:594</sup> <sup>24:595</sup> <sup>24:596</sup> <sup>24:597</sup> <sup>24:598</sup> <sup>24:599</sup> <sup>24:600</sup> <sup>24:601</sup> <sup>24:602</sup> <sup>24:603</sup> <sup>24:604</sup> <sup>24:605</sup> <sup>24:606</sup> <sup>24:607</sup> <sup>24:608</sup> <sup>24:609</sup> <sup>24:610</sup> <sup>24:611</sup> <sup>24:612</sup> <sup>24:613</sup> <sup>24:614</sup> <sup>24:615</sup> <sup>24:616</sup> <sup>24:617</sup> <sup>24:618</sup> <sup>24:619</sup> <sup>24:620</sup> <sup>24:621</sup> <sup>24:622</sup> <sup>24:623</sup> <sup>24:624</sup> <sup>24:625</sup> <sup>24:626</sup> <sup>24:627</sup> <sup>24:628</sup> <sup>24:629</sup> <sup>24:630</sup> <sup>24:631</sup> <sup>24:632</sup> <sup>24:633</sup> <sup>24:634</sup> <sup>24:635</sup> <sup>24:636</sup> <sup>24:637</sup> <sup>24:638</sup> <sup>24:639</sup> <sup>24:640</sup> <sup>24:641</sup> <sup>24:642</sup> <sup>24:643</sup> <sup>24:644</sup> <sup>24:645</sup> <sup>24:646</sup> <sup>24:647</sup> <sup>24:648</sup> <sup>24:649</sup> <sup>24:650</sup> <sup>24:651</sup> <sup>24:652</sup> <sup>24:653</sup> <sup>24:654</sup> <sup>24:655</sup> <sup>24:656</sup> <sup>24:657</sup> <sup>24:658</sup> <sup>24:659</sup> <sup>24:660</sup> <sup>24:661</sup> <sup>24:662</sup> <sup>24:663</sup> <sup>24:664</sup> <sup>24:665</sup> <sup>24:666</sup> <sup>24:667</sup> <sup>24:668</sup> <sup>24:669</sup> <sup>24:670</sup> <sup>24:671</sup> <sup>24:672</sup> <sup>24:673</sup> <sup>24:674</sup> <sup>24:675</sup> <sup>24:676</sup> <sup>24:677</sup> <sup>24:678</sup> <sup>24:679</sup> <sup>24:680</sup> <sup>24:681</sup> <sup>24:682</sup> <sup>24:683</sup> <sup>24:684</sup> <sup>24:685</sup> <sup>24:686</sup> <sup>24:687</sup> <sup>24:688</sup> <sup>24:689</sup> <sup>24:690</sup> <sup>24:691</sup> <sup>24:692</sup> <sup>24:693</sup> <sup>24:694</sup> <sup>24:695</sup> <sup>24:696</sup> <sup>24:697</sup> <sup>24:698</sup> <sup>24:699</sup> <sup>24:700</sup> <sup>24:701</sup> <sup>24:702</sup> <sup>24:703</sup> <sup>24:704</sup> <sup>24:705</sup> <sup>24:706</sup> <sup>24:707</sup> <sup>24:708</sup> <sup>24:709</sup> <sup>24:710</sup> <sup>24:711</sup> <sup>24:712</sup> <sup>24:713</sup> <sup>24:714</sup> <sup>24:715</sup> <sup>24:716</sup> <sup>24:717</sup> <sup>24:718</sup> <sup>24:719</sup> <sup>24:720</sup> <sup>24:721</sup> <sup>24:722</sup> <sup>24:723</sup> <sup>24:724</sup> <sup>24:725</sup> <sup>24:726</sup> <sup>24:727</sup> <sup>24:728</sup> <sup>24:729</sup> <sup>24:730</sup> <sup>24:731</sup> <sup>24:732</sup> <sup>24:733</sup> <sup>24:734</sup> <sup>24:735</sup> <sup>24:736</sup> <sup>24:737</sup> <sup>24:738</sup> <sup>24:739</sup> <sup>24:740</sup> <sup>24:741</sup> <sup>24:742</sup> <sup>24:743</sup> <sup>24:744</sup> <sup>24:745</sup> <sup>24:746</sup> <sup>24:747</sup> <sup>24:748</sup> <sup>24:749</sup> <sup>24:750</sup> <sup>24:751</sup> <sup>24:752</sup> <sup>24:753</sup> <sup>24:754</sup> <sup>24:755</sup> <sup>24:756</sup> <sup>24:757</sup> <sup>24:758</sup> <sup>24:759</sup> <sup>24:760</sup> <sup>24:761</sup> <sup>24:762</sup> <sup>24:763</sup> <sup>24:764</sup> <sup>24:765</sup> <sup>24:766</sup> <sup>24:767</sup> <sup>24:768</sup> <sup>24:769</sup> <sup>24:770</sup> <sup>24:771</sup> <sup>24:772</sup> <sup>24:773</sup> <sup>24:774</sup> <sup>24:775</sup> <sup>24:776</sup> <sup>24:777</sup> <sup>24:778</sup> <sup>24:779</sup> <sup>24:780</sup> <sup>24:781</sup> <sup>24:782</sup> <sup>24:783</sup> <sup>24:784</sup> <sup>24:785</sup> <sup>24:786</sup> <sup>24:787</sup> <sup>24:788</sup> <sup>24:789</sup> <sup>24:790</sup> <sup>24:791</sup> <sup>24:792</sup> <sup>24:793</sup> <sup>24:794</sup> <sup>24:795</sup> <sup>24:796</sup> <sup>24:797</sup> <sup>24:798</sup> <sup>24:799</sup> <sup>24:800</sup> <sup>24:801</sup> <sup>24:802</sup> <sup>24:803</sup> <sup>24:804</sup> <sup>24:805</sup> <sup>24:806</sup> <sup>24:807</sup> <sup>24:808</sup> <sup>24:809</sup> <sup>24:810</sup> <sup>24:811</sup> <sup>24:812</sup> <sup>24:813</sup> <sup>24:814</sup> <sup>24:815</sup> <sup>24:816</sup> <sup>24:817</sup> <sup>24:818</sup> <sup>24:819</sup> <sup>24:820</sup> <sup>24:821</sup> <sup>24:822</sup> <sup>24:823</sup> <sup>24:824</sup> <sup>24:825</sup> <sup>24:826</sup> <sup>24:827</sup> <sup>24:828</sup> <sup>24:829</sup> <sup>24:830</sup> <sup>24:831</sup> <sup>24:832</sup> <sup>24:833</sup> <sup>24:834</sup> <sup>24:835</sup> <sup>24:836</sup> <sup>24:837</sup> <sup>24:838</sup> <sup>24:839</sup> <sup>24:840</sup> <sup>24:841</sup> <sup>24:842</sup> <sup>24:843</sup> <sup>24:844</sup> <sup>24:845</sup> <sup>24:846</sup> <sup>24:847</sup> <sup>24:848</sup> <sup>24:849</sup> <sup>24:850</sup> <sup>24:851</sup> <sup>24:852</sup> <sup>24:853</sup> <sup>24:854</sup> <sup>24:855</sup> <sup>24:856</sup> <sup>24:857</sup> <sup>24:858</sup> <sup>24:859</sup> <sup>24:860</sup> <sup>24:861</sup> <sup>24:862</sup> <sup>24:863</sup> <sup>24:864</sup> <sup>24:865</sup> <sup>24:866</sup> <sup>24:867</sup> <sup>24:868</sup> <sup>24:869</sup> <sup>24:870</sup> <sup>24:871</sup> <sup>24:872</sup> <sup>24:873</sup> <sup>24:874</sup> <sup>24:875</sup> <sup>24:876</sup> <sup>24:877</sup> <sup>24:878</sup> <sup>24:879</sup> <sup>24:880</sup> <sup>24:881</sup> <sup>24:882</sup> <sup>24:883</sup> <sup>24:884</sup> <sup>24:885</sup> <sup>24:886</sup> <sup>24:887</sup> <sup>24:888</sup> <sup>24:889</sup> <sup>24:890</sup> <sup>24:891</sup> <sup>24:892</sup> <sup>24:893</sup> <sup>24:894</sup> <sup>24:895</sup> <sup>24:896</sup> <sup>24:897</sup> <sup>24:898</sup> <sup>24:899</sup> <sup>24:900</sup> <sup>24:901</sup> <sup>24:902</sup> <sup>24:903</sup> <sup>24:904</sup> <sup>24:905</sup> <sup>24:906</sup> <sup>24:907</sup> <sup>24:908</sup> <sup>24:909</sup> <sup>24:910</sup> <sup>24:911</sup> <sup>24:912</sup> <sup>24:913</sup> <sup>24:914</sup> <sup>24:915</sup> <sup>24:916</sup> <sup>24:917</sup> <sup>24:918</sup> <sup>24:919</sup> <sup>24:920</sup> <sup>24:921</sup> <sup>24:922</sup> <sup>24:923</sup> <sup>24:924</sup> <sup>24:925</sup> <sup>24:926</sup> <sup>24:927</sup> <sup>24:928</sup> <sup>24:929</sup> <sup>24:930</sup> <sup>24:931</sup> <sup>24:932</sup> <sup>24:933</sup> <sup>24:934</sup> <sup>24:935</sup> <sup>24:936</sup> <sup>24:937</sup> <sup>24:938</sup> <sup>24:939</sup> <sup>24:940</sup> <sup>24:941</sup> <sup>24:942</sup> <sup>24:943</sup> <sup>24:944</sup> <sup>24:945</sup> <sup>24:946</sup> <sup>24:947</sup> <sup>24:948</sup> <sup>24:949</sup> <sup>24:950</sup> <sup>24:951</sup> <sup>24:952</sup> <sup>24:953</sup> <sup>24:954</sup> <sup>24:955</sup> <sup>24:956</sup> <sup>24:957</sup> <sup>24:958</sup> <sup>24:959</sup> <sup>24:960</sup> <sup>24:961</sup> <sup>24:962</sup> <sup>24:963</sup> <sup>24:964</sup> <sup>24:965</sup> <sup>24:966</sup> <sup>24:967</sup> <sup>24:968</sup> <sup>24:969</sup> <sup>24:970</sup> <sup>24:971</sup> <sup>24:972</sup> <sup>24:973</sup> <sup>24:974</sup> <sup>24:975</sup> <sup>24:976</sup> <sup>24:977</sup> <sup>24:978</sup> <sup>24:979</sup> <sup>24:980</sup> <sup>24:981</sup> <sup>24:982</sup> <sup>24:983</sup> <sup>24:984</sup> <sup>24:985</sup> <sup>24:986</sup> <sup>24:9</sup>



18 उसी दिन गाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, “जाकर अरौना यबूसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनवा।”

19 अतः दाऊद यहोवा की आज्ञा के अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहाँ गया।

20 जब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्मचारियों समेत अपनी ओर आते देखा, तब अरौना ने निकलकर भूमि पर मुँह के बल गिर राजा को दण्डवत् की।

21 और अरौना ने कहा, “मेरा प्रभु राजा अपने दास के पास क्यों पधारा है?” दाऊद ने कहा, “तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूँ, कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊँ, इसलिए कि यह महामारी प्रजा पर से दूर की जाए।”

22 अरौना ने दाऊद से कहा, “मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे उसे लेकर चढ़ाए; देख, होमबलि के लिये तो बैल हैं, और दाँवने के हथियार, और बैलों का सामान ईंधन का काम देंगे।”

23 यह सब अरौना ने राजा को दे दिया। फिर अरौना ने राजा से कहा, “तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रसन्न हो।”

24 राजा ने अरौना से कहा, “ऐसा नहीं, मैं ये वस्तुएँ तुझ से अवश्य दाम देकर लूँगा; मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंट-मेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।” सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चाँदी के पचास शेकेल में मोल लिया।

25 और दाऊद ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनवाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और यहोवा ने देश के निमित्त विनती सुन ली, तब वह महामारी इस्राएल पर से दूर हो गई।



करती थी।

16 बतशेबा ने झुककर राजा को दण्डवत् किया, और राजा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?”

17 उसने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, तूने तो अपने परमेश्वर यहोवा की शपथ खाकर अपनी दासी से कहा था, ‘तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा।’

18 अब देख अदोनिय्याह राजा बन बैठा है, और अब तक मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता।

19 उसने बहुत से बैल तैयार किए, पशु और भेड़ें बलि की, और सब राजकुमारों को और एब्यातार याजक और योआब सेनापति को बुलाया है, परन्तु तेरे दास सुलैमान को नहीं बुलाया।

20 और हे मेरे प्रभु! हे राजा! सब इस्राएली तुझे ताक रहे हैं कि तू उनसे कहे, कि हमारे प्रभु राजा की गद्दी पर उसके बाद कौन बैठेगा।

21 नहीं तो जब हमारा प्रभु राजा, अपने पुरखाओं के संग सोएगा, तब मैं और मेरा पुत्र सुलैमान दोनों अपराधी गिने जाएँगे।”

22 जब बतशेबा राजा से बातें कर ही रही थी, कि नातान नबी भी आ गया।

23 और राजा से कहा गया, “नातान नबी हाजिर है;” तब वह राजा के सम्मुख आया, और मुँह के बल गिरकर राजा को दण्डवत् की।

24 तब नातान कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा! क्या तूने कहा है, ‘अदोनिय्याह मेरे बाद राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा?’

25 देख उसने आज नीचे जाकर बहुत से बैल, तैयार किए हुए पशु और भेड़ें बलि की हैं, और सब राजकुमारों और सेनापतियों को और एब्यातार याजक को भी बुला लिया है; और वे उसके सम्मुख खाते पीते हुए कह रहे हैं, ‘अदोनिय्याह राजा जीवित रहे।’

26 परन्तु मुझ तेरे दास को, और सादोक याजक और यहोयादा के पुत्र बनायाह, और तेरे दास सुलैमान को उसने नहीं बुलाया।

27 क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से हुआ? तूने तो अपने दास को यह नहीं जताया है, कि प्रभु राजा की गद्दी पर कौन उसके बाद विराजेगा।”

28 दाऊद राजा ने कहा, “बतशेबा को मेरे पास बुला लाओ।” तब वह राजा के पास आकर उसके सामने खड़ी हुई।

29 राजा ने शपथ खाकर कहा, “यहोवा जो मेरा प्राण सब जोखिमों से बचाता आया है,

30 उसके जीवन की शपथ, जैसा मैंने तुझ से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाकर कहा था, ‘तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे बदले मेरी गद्दी पर विराजेगा,’ वैसा ही मैं निश्चय आज के दिन करूँगा।”

31 तब बतशेबा ने भूमि पर मुँह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा, “मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा तक जीवित रहे!”

32 तब दाऊद राजा ने कहा, “मेरे पास सादोक याजक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ।” अतः वे राजा के सामने आए।

33 राजा ने उनसे कहा, “अपने प्रभु के कर्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ; और गीहोन को ले जाओ;

34 और वहाँ सादोक याजक और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उसका अभिषेक करें; तब तुम सब नरसिंगा फूँककर कहना, ‘राजा सुलैमान जीवित रहे।’

35 और तुम उसके पीछे-पीछे इधर आना, और वह आकर मेरे सिंहासन पर विराजे, क्योंकि मेरे बदले में वही राजा होगा; और उसी को मैंने इस्राएल और यहूदा का प्रधान होने को ठहराया है।”

36 तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने कहा, “आमीन! मेरे प्रभु राजा का परमेश्वर यहोवा भी ऐसा ही कहे।

37 ~~उसके पीछे-पीछे~~, उसी रीति वह सुलैमान के भी संग रहे, और उसका राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के राज्य से भी अधिक बढ़ाए।”

38 तब सादोक याजक और नातान नबी और यहोयादा का पुत्र बनायाह और करेतियों और पलेतियों को संग लिए हुए नीचे गए, और सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन को ले चले।

39 तब सादोक याजक ने यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला, और सुलैमान का राज्याभिषेक किया। और वे नरसिंगे फूँकने लगे; और सब लोग बोल उठे, “राजा सुलैमान जीवित रहे।”

40 तब सब लोग उसके पीछे-पीछे बाँसुरी बजाते और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गए, कि उनकी ध्वनि से पृथ्वी डोल उठी।

41 जब अदोनिय्याह और उसके सब अतिथि खा चुके थे, तब यह ध्वनि उनको सुनाई पड़ी। योआब ने नरसिंगे

‡ 1:37 ~~उसके पीछे-पीछे~~ इस अभिव्यक्ति में परमेश्वर के अनुग्रह की पराकाष्ठा व्यक्त है।

का शब्द सुनकर पूछा, “नगर में हलचल और चिल्लाहट का शब्द क्यों हो रहा है?”

42 वह यह कहता ही था, कि एब्द्यातार याजक का पुत्र योनातान आया और अदोनिय्याह ने उससे कहा, “भीतर आ; तू तो भला मनुष्य है, और भला समाचार भी लाया होगा।”

43 योनातान ने अदोनिय्याह से कहा, “सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना दिया।

44 और राजा ने सादोक याजक, नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह और करेतियों और पलेतियों को उसके संग भेज दिया, और उन्होंने उसको राजा के खच्चर पर चढ़ाया है।

45 और सादोक याजक, और नातान नबी ने गीहोन में उसका राज्याभिषेक किया है; और वे वहाँ से ऐसा आनन्द करते हुए ऊपर गए हैं कि नगर में हलचल मच गई, और जो शब्द तुम को सुनाई पड़ रहा है वही है।

46 सुलैमान राजगद्दी पर विराज भी रहा है।

47 फिर राजा के कर्मचारी हमारे प्रभु दाऊद राजा को यह कहकर धन्य कहने आए, ‘तेरा परमेश्वर, सुलैमान का नाम, तेरे नाम से भी महान करे, और उसका राज्य तेरे राज्य से भी अधिक बढ़ाए;’ और राजा ने अपने पलंग पर दण्डवत् की।

48 फिर राजा ने यह भी कहा, ‘इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज मेरे देखते एक को मेरी गद्दी पर विराजमान किया है।’ ”

49 तब जितने अतिथि अदोनिय्याह के संग थे वे सब थरथरा उठे, और उठकर अपना-अपना मार्ग लिया।

50 और अदोनिय्याह सुलैमान से डरकर उठा, और जाकर वेदी के सींगों को पकड़ लिया।

51 तब सुलैमान को यह समाचार मिला, “अदोनिय्याह सुलैमान राजा से ऐसा डर गया है कि उसने वेदी के सींगों को यह कहकर पकड़ लिया है, ‘आज राजा सुलैमान शपथ खाए कि अपने दास को तलवार से न मार डालेगा।’ ”

52 सुलैमान ने कहा, “यदि वह भलमनसी दिखाए तो ~~परन्तु यदि उसमें दुष्टता पाई जाए, तो वह मारा जाएगा।~~ परन्तु यदि उसमें दुष्टता पाई जाए, तो वह मारा जाएगा।”

53 तब राजा सुलैमान ने लोगों को भेज दिया जो उसको वेदी के पास से उतार ले आए तब उसने आकर राजा सुलैमान को दण्डवत् की और सुलैमान ने उससे

कहा, “अपने घर चला जा।”

## 2

~~1 जब दाऊद के मरने का समय निकट आया, तब उसने अपने पुत्र सुलैमान से कहा,~~

1 “मैं संसार की रीति पर कूच करनेवाला हूँ इसलिए तू हियाव बाँधकर पुरुषार्थ दिखा।

2 और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियों का पालन करते रहना; जिससे जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, उसमें तू सफल होए;

3 और ~~जो~~ ~~तुझे~~ ~~सौंपा~~ ~~है,~~ ~~उसकी~~ ~~रक्षा~~ ~~करके~~ ~~उसके~~ ~~मार्गों~~ ~~पर~~ ~~चला~~ ~~करना~~ ~~और~~ ~~जैसा~~ ~~मूसा~~ ~~की~~ ~~व्यवस्था~~ ~~में~~ ~~लिखा~~ ~~है,~~ ~~वैसा~~ ~~ही~~ ~~उसकी~~ ~~विधियों~~ ~~तथा~~ ~~आज्ञाओं,~~ ~~और~~ ~~नियमों,~~ ~~और~~ ~~चितौनियों~~ ~~का~~ ~~पालन~~ ~~करते~~ ~~रहना;~~ ~~जिससे~~ ~~जो~~ ~~कुछ~~ ~~तू~~ ~~करे~~ ~~और~~ ~~जहाँ~~ ~~कहीं~~ ~~तू~~ ~~जाए,~~ ~~उसमें~~ ~~तू~~ ~~सफल~~ ~~होए;~~

4 और ~~जो~~ ~~तुझे~~ ~~सौंपा~~ ~~है,~~ ~~उसने~~ ~~मेरे~~ ~~विषय~~ ~~में~~ ~~कहा~~ ~~था,~~ ~~‘यदि~~ ~~तेरी~~ ~~सन्तान~~ ~~अपनी~~ ~~चाल~~ ~~के~~ ~~विषय~~ ~~में~~ ~~ऐसे~~ ~~सावधान~~ ~~रहें,~~ ~~कि~~ ~~अपने~~ ~~सम्पूर्ण~~ ~~हृदय~~ ~~और~~ ~~सम्पूर्ण~~ ~~प्राण~~ ~~से~~ ~~सच्चाई~~ ~~के~~ ~~साथ~~ ~~नित~~ ~~मेरे~~ ~~सम्मुख~~ ~~चलते~~ ~~रहें~~ ~~तब~~ ~~तो~~ ~~इस्राएल~~ ~~की~~ ~~राजगद्दी~~ ~~पर~~ ~~विराजनेवाले~~ ~~की,~~ ~~तेरे~~ ~~कुल~~ ~~परिवार~~ ~~में~~ ~~घटी~~ ~~कभी~~ ~~न~~ ~~होगी।’~~

5 “फिर तू स्वयं जानता है, कि सरूयाह के पुत्र योआब ने मुझसे क्या-क्या किया! अर्थात् उसने नेर के पुत्र अब्नेर, और येतेर के पुत्र अमासा, इस्राएल के इन दो सेनापतियों से क्या-क्या किया। उसने उन दोनों को घात किया, और मेल के समय युद्ध का लहू बहाकर उससे अपनी कमर का कमरबन्द और अपने पावों की जूतियाँ भिगो दीं।

6 इसलिए तू अपनी बुद्धि से काम लेना और उस पक्के बाल वाले को अधोलोक में शान्ति से उतरने न देना।

7 फिर गिलादी बर्जिल्लै के पुत्रों पर कृपा रखना, और वे तेरी मेज पर खानेवालों में रहें, क्योंकि जब मैं तेरे भाई अबशालोम के सामने से भागा जा रहा था, तब उन्होंने मेरे पास आकर वैसा ही किया था।

8 फिर सुन, तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का पुत्र बहूरीमी शिमी रहता है, जिस दिन मैं महनैम को जाता था उस दिन उसने मुझे कड़ाई से श्राप दिया था पर जब वह मेरी भेंट के लिये यरदन को आया, तब मैंने उससे यहोवा की यह शपथ खाई, कि मैं तुझे तलवार से न मार डालूँगा।

9 परन्तु अब तू इसे निर्दोष न ठहराना, तू तो बुद्धिमान पुरुष है; तुझे मालूम होगा कि उसके साथ क्या करना

§ 1:52 ~~अदोनिय्याह को क्षमा करने में सुलैमान की दया प्रशासनीय है क्योंकि सिंहासन ग्रहण करने के बाद राजा के लिये अन्य सब भाइयों की हत्या कर देना उनकी प्रथा थी।~~ \* 2:4 ~~नातान द्वारा दाऊद को दिया गया वचन, दाऊद सुलैमान को इसका स्मरण कराता है कि उस पर विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता में स्थिर रहने का उद्देश्य सप्रभाव प्रगत करे।~~



32 और यहोवा उसके सिर वह खून लौटा देगा क्योंकि उसने मेरे पिता दाऊद के बिना जाने अपने से अधिक धर्मी और भले दो पुरुषों पर, अर्थात् इस्राएल के प्रधान सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर और यहूदा के प्रधान सेनापति येतेर के पुत्र अमासा पर टूटकर उनको तलवार से मार डाला था।

33 अतः योआब के सिर पर और उसकी सन्तान के सिर पर खून सदा तक रहेगा, परन्तु दाऊद और उसके वंश और उसके घराने और उसके राज्य पर यहोवा की ओर से शान्ति सदैव तक रहेगी।”

34 तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने जाकर योआब को मार डाला; और उसको जंगल में उसी के घर में मिट्टी दी गई।

35 तब राजा ने उसके स्थान पर यहोयादा के पुत्र बनायाह को प्रधान सेनापति ठहराया; और एब्द्यातार के स्थान पर सादोक याजक को ठहराया।

36 तब राजा ने शिमी को बुलवा भेजा, और उससे कहा, “तू यरूशलेम में अपना एक घर बनाकर वहीं रहना और नगर से बाहर कहीं न जाना।

37 तू निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर किद्रोन नाले के पार उतरे, उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा, और तेरा लहू तेरे ही सिर पर पड़ेगा।”

38 शिमी ने राजा से कहा, “बात अच्छी है; जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है, वैसा ही तेरा दास करेगा।” तब शिमी बहुत दिन यरूशलेम में रहा।

39 परन्तु तीन वर्ष के व्यतीत होने पर शिमी के दो दास, गत नगर के राजा माका के पुत्र आकीश के पास भाग गए, और शिमी को यह समाचार मिला, “तेरे दास गत में हैं।”

40 तब शिमी उठकर अपने गदहे पर काठी कसकर, अपने दास को ढूँढने के लिये गत को आकीश के पास गया, और अपने दासों को गत से ले आया।

41 जब सुलैमान राजा को इसका समाचार मिला, “शिमी यरूशलेम से गत को गया, और फिर लौट आया है,”

42 तब उसने शिमी को बुलवा भेजा, और उससे कहा, “क्या मैंने तुझे यहोवा की शपथ न खिलाई थी? और तुझ से चिताकर न कहा था, ‘यह निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर कहीं चला जाए, उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा?’ और क्या तूने मुझसे न कहा था, ‘जो बात मैंने सुनी, वह अच्छी है?’

43 फिर तूने यहोवा की शपथ और मेरी दृढ़ आज्ञा क्यों नहीं मानी?”

44 और राजा ने शिमी से कहा, “तू आप ही अपने मन में उस सब दुष्टता को जानता है, जो तूने मेरे पिता दाऊद से की थी? इसलिए यहोवा तेरे सिर पर तेरी दुष्टता लौटा देगा।

45 परन्तु राजा सुलैमान धन्य रहेगा, और दाऊद का राज्य यहोवा के सामने सदैव दृढ़ रहेगा।”

46 तब राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को आज्ञा दी, और उसने बाहर जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह भी मर गया। इस प्रकार सुलैमान के हाथ में राज्य दृढ़ हो गया।

### 3

१११११११ ११ १११ ११११११११ ११ ११११११११११

1 फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा फ़िरौन की बेटी को ब्याह कर उसका दामाद बन गया, और उसको दाऊदपुर में लाकर तब तक अपना भवन और यहोवा का भवन और यरूशलेम के चारों ओर की शहरपनाह न बनवा चुका, तब तक उसको वहीं रखा।

2 क्योंकि प्रजा के लोग तो ऊँचे स्थानों पर बलि चढ़ाते थे और उन दिनों तक यहोवा के नाम का कोई भवन नहीं बना था।

3 सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता था और अपने पिता दाऊद की विधियों पर चलता तो रहा, परन्तु वह ऊँचे स्थानों पर भी बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था।

4 और राजा गिबोन को बलि चढ़ाने गया, क्योंकि मुख्य ऊँचा स्थान वही था, तब वहाँ की वेदी पर सुलैमान ने एक हजार होमबलि चढ़ाए।

5 गिबोन में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा, “जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ, वह माँग।”

6 सुलैमान ने कहा, “तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर १११११ ११११११\* करता रहा, क्योंकि वह अपने को तेरे सम्मुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धार्मिकता और मन की सिधाई से चलता रहा; और तूने यहाँ तक उस पर करुणा की थी कि उसे उसकी गद्दी पर बिराजनेवाला एक पुत्र दिया है, जैसा कि आज वर्तमान है।

7 और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तूने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का सा हूँ जो भीतर बाहर आना-जाना नहीं जानता।

8 फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के मध्य में है, जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नहीं हो सकती।

\* 3:6 १११११ ११११११: स्वयं दाऊद भी इसे परमेश्वर की परम कृपा मानता था।

9 तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूँ; क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?”

10 इस बात से प्रभु प्रसन्न हुआ, कि सुलैमान ने ऐसा वरदान माँगा है।

11 तब परमेश्वर ने उससे कहा, “इसलिए कि तूने यह वरदान माँगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश माँगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान माँगा है इसलिए सुन,

12 मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूँ, <sup>12</sup> यहाँ तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहले कोई कभी हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा।

13 फिर जो तूने नहीं माँगा, अर्थात् धन और महिमा, वह भी मैं तुझे यहाँ तक देता हूँ, कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा।

14 फिर यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मेरे मार्गों में चलता हुआ, मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहेगा तो <sup>14</sup>।”

15 तब सुलैमान जाग उठा; और देखा कि यह स्वप्न था; फिर वह यरूशलेम को गया, और यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने खड़ा होकर, होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और अपने सब कर्मचारियों के लिये भोज किया।

16 उस समय दो वेश्याएँ राजा के पास आकर उसके सम्मुख खड़ी हुईं।

17 उनमें से एक स्त्री कहने लगी, “हे मेरे प्रभु! मैं और यह स्त्री दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके संग घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ।

18 फिर मेरे जच्चा के तीन दिन के बाद ऐसा हुआ कि यह स्त्री भी जच्चा हो गई; हम तो संग ही संग थीं, हम दोनों को छोड़कर घर में और कोई भी न था।

19 और रात में इस स्त्री का बालक इसके नीचे दबकर मर गया।

20 तब इसने आधी रात को उठकर, जब तेरी दासी सो ही रही थी, तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपनी छाती में रखा, और अपना मरा हुआ बालक मेरी छाती में लिटा दिया।

21 भोर को जब मैं अपना बालक दूध पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया; परन्तु भोर को मैंने ध्यान से

यह देखा, कि वह मेरा पुत्र नहीं है।”

22 तब दूसरी स्त्री ने कहा, “नहीं जीवित पुत्र मेरा है, और मरा पुत्र तेरा है।” परन्तु वह कहती रही, “नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित मेरा पुत्र है,” इस प्रकार वे राजा के सामने बातें करती रहीं।

23 राजा ने कहा, “एक तो कहती है ‘जो जीवित है, वही मेरा पुत्र है, और मरा हुआ तेरा पुत्र है;’ और दूसरी कहती है, ‘नहीं, जो मरा है वही तेरा पुत्र है, और जो जीवित है, वह मेरा पुत्र है।’”

24 फिर राजा ने कहा, “मेरे पास तलवार ले आओ;” अतः एक तलवार राजा के सामने लाई गई।

25 तब राजा बोला, “जीविते बालक को दो टुकड़े करके आधा इसको और आधा उसको दो।”

26 तब जीवित बालक की माता का मन अपने बेटे के स्नेह से भर आया, और उसने राजा से कहा, “हे मेरे प्रभु! जीवित बालक उसी को दे; परन्तु उसको किसी भाँति न मार।” दूसरी स्त्री ने कहा, “वह न तो मेरा हो और न तेरा, वह दो टुकड़े किया जाए।”

27 तब राजा ने कहा, “पहली को जीवित बालक दो; किसी भाँति उसको न मारो; क्योंकि उसकी माता वही है।”

28 जो न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार समस्त इस्राएल को मिला, और उन्होंने राजा का भय माना, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिये परमेश्वर की बुद्धि है।

## 4

<sup>1</sup> राजा सुलैमान तो समस्त इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त हुआ था।

1 राजा सुलैमान तो समस्त इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त हुआ था।

2 और उसके हाकिम ये थे, अर्थात् <sup>2</sup>\*,

3 और शीशा के पुत्र एलीहोरोप और अहिय्याह राजसी आधिकारिक थे। अहीलूद का पुत्र यहोशापात, इतिहास का लेखक था।

4 फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह प्रधान सेनापति था, और सादोक और एब्यातार याजक थे।

5 नातान का पुत्र अजर्याह भण्डारियों के ऊपर था, और नातान का पुत्र जाबूद याजक, और राजा का मित्र भी था।

† 3:12 <sup>12</sup>: सुलैमान की बुद्धि नैतिकता और प्रज्ञा दोनों ही की प्रतीत होती है परन्तु उसने केवल नैतिकता की सद्वुद्धि माँगी थी और परमेश्वर ने उसे दोनों दी। ‡ 3:14 <sup>14</sup>: यहाँ प्रतिज्ञा शर्त आधारित थी। यदि शर्तें नहीं मानी गईं (1 राजा.11:1-8) तो प्रतिज्ञा प्राप्ति का अधिकार छीन लिया जाएगा और वह पूरी नहीं होगी। \* 4:2 <sup>2</sup>: पुरोहित का पद अजर्याह का था सादोक का नहीं। वह सादोक का पोता था। वह सम्भवतः उसके बाद पुरोहित बन गया था।

6 अहीशार राजपरिवार के ऊपर था, और अब्दा का पुत्र अदोनीराम बेगारों के ऊपर मुखिया था।

7 और सुलैमान के बारह भण्डारी थे, जो समस्त इस्राएलियों के अधिकारी होकर राजा और उसके घराने के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे। एक-एक पुरुष प्रतिवर्ष अपने-अपने नियुक्त महीने में प्रबन्ध करता था।

8 उनके नाम ये थे, अर्थात् एप्रैम के पहाड़ी देश में बेन्हूर।

9 और माकस, शाल्वीम, बेतशेमेश और एलोन-बेतानान में बेन्देकेर था।

10 अरुब्बोत में बेन्हेसेद जिसके अधिकार में सोको और हेपेर का समस्त देश था।

11 दोर के समस्त ऊँचे देश में बेन-अबीनादब जिसकी स्त्री सुलैमान की बेटी तापत थी।

12 अहीलूद का पुत्र बाना जिसके अधिकार में तानाक, मगिदो और बेतशान का वह सब देश था, जो सारतान के पास और यिज्जेल के नीचे और बेतशान से आबेल-महोला तक अर्थात् योकमाम की परली ओर तक है।

13 और गिलाद के रामोत में बेनगेबेर था, जिसके अधिकार में मनशेई यार्डर के गिलाद के गाँव थे, अर्थात् इसी के अधिकार में बाशान के अर्गोब का देश था, जिसमें शहरपनाह और पीतल के बेंडेवाले साठ बड़े-बड़े नगर थे।

14 इदो के पुत्र अहीनादाब के हाथ में महनैम था।

15 नप्ताली में अहीमास था, जिसने सुलैमान की बासमत नाम बेटी को ब्याह लिया था।

16 आशेर और आलोत में हूशै का पुत्र बाना,

17 इस्साकार में पारुह का पुत्र यहोशापात,

18 और बिन्यामीन में एला का पुत्र शिमी था।

19 ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद में अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग के देश में था, इस समस्त देश में वही अधिकारी था।

20 यहूदा और इस्राएल के लोग बहुत थे, वे समुद्र तट पर के रेतकणों के समान बहुत थे, और खाते-पीते और आनन्द करते रहे।

21 सुलैमान तो महानद से लेकर पलिश्रितियों के देश, और मिस्र की सीमा तक के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता करता था और उनके लोग सुलैमान के जीवन भर भेंट लाते, और उसके अधीन रहते थे।

22 सुलैमान की एक दिन की रसोई में इतना उठता था, अर्थात् तीस कोर मैदा, साठ कोर आटा,

23 दस तैयार किए हुए बैल और चराइयों में से बीस बैल और सौ भेड़-बकरी और इनको छोड़ हिरन, चिकारे, यखमूर और तैयार किए हुए पक्षी।

24 क्योंकि फरात के इस पार के समस्त देश पर अर्थात् तिप्सह से लेकर गाज़ा तक जितने राजा थे, उन सभी पर सुलैमान प्रभुता करता, और अपने चारों ओर के सब रहनेवालों से मेल रखता था।

25 और दान से बेशेबा तक के सब यहूदी और इस्राएली

26 फिर उसके रथ के घोड़ों के लिये सुलैमान के चालीस हजार घुड़साल थे, और उसके बारह हजार घुड़सवार थे।

27 और वे भण्डारी अपने-अपने महीने में राजा सुलैमान के लिये और जितने उसकी मेज पर आते थे, उन सभी के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे, किसी वस्तु की घटी होने नहीं पाती थी।

28 घोड़ों और वेग चलनेवाले घोड़ों के लिये जौ और पुआल जहाँ प्रयोजन होता था वहाँ आज्ञा के अनुसार एक-एक जन पहुँचाया करता था।

29 और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट के रेतकणों के तुल्य अनगिनत गुण दिए।

30 और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी बुद्धि से बढ़कर बुद्धि थी।

31 वह तो और सब मनुष्यों से वरन् एतान, एज्जेरी और हेमान, और माहोल के पुत्र कलकोल, और दर्दा से भी अधिक बुद्धिमान था और उसकी कीर्ति चारों ओर की सब जातियों में फैल गई।

32 उसने तीन हजार कहे, और उसके एक हजार पाँच गीत भी हैं।

33 फिर उसने लबानोन के देवदारुओं से लेकर दीवार में से उगते हुए जूफा तक के सब पेड़ों की चर्चा और पशुओं पक्षियों और रेंगनेवाले जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की।

34 और देश-देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे।

## 5

इस्राएली राजाओं के नाम

† 4:25 इस्राएली राजाओं के नाम ... 4:32 नीतिवचनों की पुस्तक में केवल कुछ ही नीतिवचनों का संग्रह है। सुलैमान के नीतिवचनों का अधिकांश भाग नष्ट हो गया है।



1 सोर नगर के राजा हीराम ने अपने दूत सुलैमान के पास भेजे, क्योंकि उसने सुना था, कि वह अभिषिक्त होकर अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है: और दाऊद के जीवन भर हीराम उसका मित्र बना रहा।

2 सुलैमान ने हीराम के पास यह सन्देश भेजा, “तुझे मालूम है,

3 कि मेरा पिता दाऊद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन इसलिए न बनवा सका कि वह चारों ओर लड़ाइयों में तब तक उलझा रहा, जब तक यहोवा ने उसके शत्रुओं को उसके पाँव तले न कर दिया।

4 परन्तु अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्राम दिया है और न तो कोई विरोधी है, और न कुछ विपत्ति देख पड़ती है।

5 मैंने अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने की ठान रखी है अर्थात् उस बात के अनुसार जो यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही थी, ‘तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्थान में गद्दी पर बैठाऊँगा, वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा।’

6 इसलिए अब तू मेरे लिये लबानोन पर से देवदार काटने की आज्ञा दे, और मेरे दास तेरे दासों के संग रहेंगे, और जो कुछ मजदूरी तू ठहराए, वही मैं तुझे तेरे दासों के लिये दूँगा, तुझे मालूम तो है, कि सीदोनियों के बराबर लकड़ी काटने का भेद हम लोगों में से कोई भी नहीं जानता।”

7 सुलैमान की ये बातें सुनकर, हीराम बहुत आनन्दित हुआ, और कहा, “आज यहोवा धन्य है, जिसने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिये एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।”

8 तब हीराम ने सुलैमान के पास यह सन्देश भेजा, “जो तूने मेरे पास कहला भेजा है वह मेरी समझ में आ गया, देवदार और सनोवर की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे, वही मैं करूँगा।

9 मेरे दास लकड़ी को लबानोन से समुद्र तक पहुँचाएँगे, फिर मैं उनके बेड़े बनवाकर, **११ ११११११ ११ ११११११ ११ ११११११ ११११११\***, वहीं पर समुद्र के मार्ग से उनको पहुँचवा दूँगा: वहाँ मैं उनको खोलकर डलवा दूँगा, और तू उन्हें ले लेना: और तू मेरे परिवार के लिये भोजन देकर, मेरी भी इच्छा पूरी करना।”

10 इस प्रकार हीराम सुलैमान की इच्छा के अनुसार उसको देवदार और सनोवर की लकड़ी देने लगा।

11 और सुलैमान ने हीराम के परिवार के खाने के

लिये उसे बीस हजार कोर गेहूँ और बीस कोर पेरा हुआ तेल दिया; इस प्रकार सुलैमान हीराम को प्रतिवर्ष दिया करता था। **(११११११११. 12:20)**

12 यहोवा ने सुलैमान को अपने वचन के अनुसार बुद्धि दी, और हीराम और सुलैमान के बीच मेल बना रहा वरन् उन दोनों ने आपस में वाचा भी बाँध ली।

13 राजा सुलैमान ने पूरे इस्राएल में से तीस हजार पुरुष बेगार पर लगाए,

14 और उन्हें लबानोन पहाड़ पर बारी-बारी करके, महीने-महीने दस हजार भेज दिया करता था और एक महीना वे लबानोन पर, और दो महीने घर पर रहा करते थे; और बेगारियों के ऊपर अदोनीराम ठहराया गया।

15 सुलैमान के सत्तर हजार बोझ ढोनेवाले और पहाड़ पर अस्सी हजार वृक्ष काटनेवाले और पत्थर निकालनेवाले थे।

16 इनको छोड़ सुलैमान के तीन हजार तीन सौ मुखिए थे, जो काम करनेवालों के ऊपर थे।

17 फिर राजा की आज्ञा से बड़े-बड़े अनमोल पत्थर इसलिए खोदकर निकाले गए कि भवन की नींव, गढ़े हुए पत्थरों से डाली जाए।

18 सुलैमान के कारीगरों और हीराम के कारीगरों और गबालियों ने उनको गढ़ा, और भवन के बनाने के लिये लकड़ी और पत्थर तैयार किए।

## 6

**११११११११ ११ ११११११११**

1 इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चार सौ अस्सीवें वर्ष के बाद जो सुलैमान के इस्राएल पर राज्य करने का चौथा वर्ष था, उसके जीव नामक दूसरे महीने में वह यहोवा का भवन बनाने लगा।

2 जो भवन राजा सुलैमान ने यहोवा के लिये बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ, चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई तीस हाथ की थी। **(११११११११. 7:47)**

3 और भवन के मन्दिर के सामने के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ की थी, अर्थात् भवन की चौड़ाई के बराबर थी, और ओसारे की चौड़ाई जो भवन के सामने थी, वह दस हाथ की थी।

4 फिर उसने भवन में चौखट सहित जालीदार खिड़कियाँ बनाई।

5 और उसने भवन के आस-पास की दीवारों से सटे हुए अर्थात् मन्दिर और दर्शन-स्थान दोनों दीवारों के आस-पास उसने मंजिलें और कोठरियाँ बनाई।

\* 5:9 **११ ११११११ ११ ११११ ११११ ११११११**: पहले तो लकड़ी लबानोन से पश्चिम की ओर ले जाई गई बंदरगाह के निकटतम स्थान में फिर याफा के तट से लट्टों का बेड़ा बनाकर दक्षिण में भेजी गई जहाँ से यरूशलेम के लिये थल यात्रा लगभग 40 मील की थी।





22 और खम्भों के सिरों पर सोसन के फूल का काम बना था खम्भों का काम इसी रीति पूरा हुआ।

23 फिर उसने एक ढाला हुआ एक बड़ा हौज बनाया, जो एक छोर से दूसरी छोर तक दस हाथ चौड़ा था, उसका आकार गोल था, और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ की थी, और उसके चारों ओर का घेरा तीस हाथ के सूत के बराबर था।

24 और उसके चारों ओर के किनारे के नीचे एक-एक हाथ में दस-दस कलियाँ बनीं, जो हौज को घेरे थीं; जब वह ढाला गया; तब ये कलियाँ भी दो पंक्तियों में ढाली गईं।

25 और वह बारह बने हुए बैलों पर रखा गया जिनमें से तीन उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्षिण, और तीन पूर्व की ओर मुँह किए हुए थे; और उन ही के ऊपर हौज था, और उन सभी का पिछला अंग भीतर की ओर था।

26 उसकी मोटाई मुट्ठी भर की थी, और उसका किनारा कटोरे के किनारे के समान सोसन के फूलों के जैसा बना था, और उसमें दो हजार बत पानी समाता था।

27 फिर उसने पीतल के दस ठेले बनाए, एक-एक ठेले की लम्बाई चार हाथ, चौड़ाई भी चार हाथ और ऊँचाई तीन हाथ की थी।

28 उन पायों की बनावट इस प्रकार थी; उनके पटरियाँ थीं, और पटरियों के बीचों बीच जोड़ भी थे।

29 और जोड़ों के बीचों बीच की पटरियों पर सिंह, बैल, और करूब बने थे और जोड़ों के ऊपर भी एक-एक और टेला बना और सिंहों और बैलों के नीचे लटकती हुई झालरें बनी थीं।

30 एक-एक ठेले के लिये पीतल के चार पहिये और पीतल की धुरियाँ बनीं; और एक-एक के चारों कोनों से लगे हुए आधार भी ढालकर बनाए गए जो हौदी के नीचे तक पहुँचते थे, और एक-एक आधार के पास झालरें बनी हुई थीं।

31 हौदी का मुँह जो ठेले की कँगनी के भीतर और ऊपर भी था वह एक हाथ ऊँचा था, और ठेले का मुँह जिसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी, वह पाये की बनावट के समान गोल बना; और उसके मुँह पर भी कुछ खुदा हुआ काम था और उनकी पटरियाँ गोल नहीं, चौकोर थीं।

32 और चारों पहिये, पटरियों के नीचे थे, और एक-एक ठेले के पहियों में धुरियाँ भी थीं; और एक-एक पहिये की ऊँचाई डेढ़-डेढ़ हाथ की थी।

33 पहियों की बनावट, रथ के पहिये की सी थी, और उनकी धुरियाँ, चक्र, आरे, और नाभें सब ढाली हुई थीं।

34 और एक-एक ठेले के चारों कोनों पर चार आधार थे, और आधार और ठेले दोनों एक ही टुकड़े के बने थे।

35 और एक-एक ठेले के सिरे पर आधा हाथ ऊँची चारों ओर गोलाई थी, और ठेले के सिरे पर की टेकें और पटरियाँ ठेले से जुड़े हुए एक ही टुकड़े के बने थे।

36 और टेकों के पाटों और पटरियों पर जितनी जगह जिस पर थी, उसमें उसने करूब, और सिंह, और खजूर के वृक्ष खोदकर भर दिये, और चारों ओर झालरें भी बनाईं।

37 इसी प्रकार से उसने दसों ठेलों को बनाया; सभी का एक ही साँचा और एक ही नाप, और एक ही आकार था।

38 उसने पीतल की दस हौदी बनाईं। एक-एक हौदी में चालीस-चालीस बत पानी समाता था; और एक-एक, चार-चार हाथ चौड़ी थी, और दसों ठेलों में से एक-एक पर, एक-एक हौदी थी।

39 उसने पाँच हौदी भवन के दक्षिण की ओर, और पाँच उसकी उत्तर की ओर रख दीं; और हौज को भवन की दाहिनी ओर अर्थात् दक्षिण-पूर्व की ओर रख दिया।

40 हूराम ने हौदियों, फावड़ियों, और कटोरों को भी बनाया। सो हूराम ने राजा सुलैमान के लिये यहोवा के भवन में जितना काम करना था, वह सब पूरा कर दिया,

41 अर्थात् दो खम्भे, और उन कँगनियों की गोलाईयाँ जो दोनों खम्भों के सिरे पर थीं, और दोनों खम्भों के सिरों पर की गोलाईयों के ढाँपने को दो-दो जालियाँ, और दोनों जालियों के लिए चार-चार सौ अनार,

42 अर्थात् खम्भों के सिरों पर जो गोलाईयाँ थीं, उनके ढाँपने के लिये अर्थात् एक-एक जाली के लिये अनारों की दो-दो पंक्तियाँ;

43 दस ठेले और इन पर की दस हौदियाँ,

44 एक हौज और उसके नीचे के बारह बैल, और हँडे, फावड़ियाँ,

45 और कटोरे बने। ये सब पात्र जिन्हें हूराम ने यहोवा के भवन के निमित्त राजा सुलैमान के लिये बनाया, वह झलकाये हुए पीतल के बने।

46 राजा ने उनको यरदन की तराई में अर्थात् सुक्कोत और सारतान के मध्य की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढाला।

47 और सुलैमान ने बहुत अधिक होने के कारण सब पात्रों को बिना तौले छोड़ दिया, अतः पीतल के तौल का वज़न मालूम न हो सका।

48 यहोवा के भवन के जितने पात्र थे सुलैमान ने सब बनाए, अर्थात् सोने की वेदी, और सोने की वह मेज जिस पर भेंट की रोटी रखी जाती थी,

49 और शुद्ध सोने की दीवटें जो भीतरी कोठरी के आगे पाँच तो दक्षिण की ओर, और पाँच उत्तर की ओर रखी गईं; और सोने के फूल,

50 दीपक और चिमटे, और शुद्ध सोने के तसले, कैंचियाँ, कटोरे, धूपदान, और करछे और भीतरवाला भवन जो परमपवित्र स्थान कहलाता है, और भवन जो मन्दिर कहलाता है, दोनों के किवाड़ों के लिये सोने के कब्जे बने।

51 इस प्रकार जो-जो काम राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये किया, वह सब पूरा हुआ। तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हुए सोने चाँदी और पात्रों को भीतर पहुँचाकर यहोवा के भवन के भण्डारों में रख दिया।

## 8

११:११-११:१९

1 तब सुलैमान ने इस्राएली पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुषों को भी जो इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के प्रधान थे, यरूशलेम में अपने पास इस मनसा से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर अर्थात् सिय्योन से ऊपर ले आएँ। (११:११-११:१९)

2 अतः सब इस्राएली पुरुष एतानीम नामक ११:११-११:१९ के समय राजा सुलैमान के पास इकट्ठे हुए।

3 जब सब इस्राएली पुरनिये आए, तब याजकों ने सन्दूक को उठा लिया।

4 और यहोवा का सन्दूक, और मिलापवाले तम्बू, और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे, उन सभी को याजक और लेवीय लोग ऊपर ले गए।

5 और राजा सुलैमान और समस्त इस्राएली मण्डली, जो उसके पास इकट्ठी हुई थी, वे सब सन्दूक के सामने इतने भेड़ और बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती किसी रीति से नहीं हो सकती थी।

6 तब याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक उसके स्थान को अर्थात् भवन के पवित्रस्थान में, जो परमपवित्र स्थान है, पहुँचाकर करुबों के पंखों के तले रख दिया। (११:११-११:१९)

7 करुब सन्दूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाए हुए थे, कि वे ऊपर से सन्दूक और उसके डंडों को ढाँके थे।

8 डंडे तो ऐसे लम्बे थे, कि उनके सिरे उस पवित्रस्थान से जो पवित्रस्थान के सामने था दिखाई पड़ते थे परन्तु बाहर से वे दिखाई नहीं पड़ते थे। वे आज के दिन तक यहीं वर्तमान हैं।

9 सन्दूक में कुछ नहीं था, उन दो पटियाओं को छोड़ जो मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखीं, जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने पर उनके साथ वाचा बाँधी थी।

10 जब याजक पवित्रस्थान से निकले, तब ११:११-११:१९

11 और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था। (११:११-११:१९) 15:8

12 तब सुलैमान कहने लगा, “यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूँगा।

13 सचमुच मैंने तेरे लिये एक वासस्थान, वरन् ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिसमें तू युगानुयुग बना रहे।”

14 तब राजा ने इस्राएल की पूरी सभा की ओर मुँह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया; और पूरी सभा खड़ी रही।

15 और उसने कहा, “धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा! जिसने अपने मुँह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और अपने हाथ से उसे पूरा किया है,

16 जिस दिन से मैं अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र से निकाल लाया, तब से मैंने किसी इस्राएली गोत्र का कोई नगर नहीं चुना, जिसमें मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए; परन्तु मैंने दाऊद को चुन लिया, कि वह मेरी प्रजा इस्राएल का अधिकारी हो।”

17 मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा तो थी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाए।

18 परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, “यह जो तेरी इच्छा है, कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी इच्छा करके तूने भला तो किया; (११:११-११:१९) 7:45,46

19 तो भी तू उस भवन को न बनाएगा; तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा।”

20 यह जो वचन यहोवा ने कहा था, उसे उसने पूरा भी किया है, और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर, यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजमान हूँ, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से इस भवन को बनाया है। (११:११-११:१९) 7:47

21 और इसमें मैंने एक स्थान उस सन्दूक के लिये ठहराया है, जिसमें यहोवा की वह वाचा है, जो उसने हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकालने के समय उनसे बाँधी थी।”

\* 8:2 ११:११-११:१९ ११:१९-११:१९: झोपड़ियों का त्यौहार जिसमें निर्गमन के समय तम्बूओं में रहने का स्मरण किया जाता था। † 8:10 ११:११-११:१९ परमेश्वर की उपस्थिति का प्रत्यक्ष चिन्ह, वाचा के सन्दूक के आरम्भ होने से पूर्व “परमेश्वर की महिमा” जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी (निर्ग. 29:43) और मिलापवाले तम्बू के तैयार होते ही वह उसमें समा गई थी।



अनुसार व्यवहार करना जिससे पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल के समान तेरा भय मानें, और निश्चय जानें, कि यह भवन जिसे मैंने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है।

44 “जब तेरी प्रजा के लोग जहाँ कहीं तू उन्हें भेजे, वहाँ अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएँ, और इस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम पर बनाया है, यहोवा से प्रार्थना करें,

45 तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिडगिडाहट सुनकर उनका न्याय

46 “निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है: यदि ये भी तेरे विरुद्ध पाप करें, और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उनको बन्दी बनाकर अपने देश को चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएँ,

47 और यदि वे बँधुआई के देश में सोच विचार करें, और फिरकर अपने बन्दी बनानेवालों के देश में तुझ से गिडगिडाकर कहें, ‘हमने पाप किया, और कुटिलता और दुष्टता की है;’

48 और यदि वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें बन्दी करके ले गए हों, अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण प्राण से तेरी ओर फिरेँ और अपने इस देश की ओर जो तूने उनके पुरखाओं को दिया था, और इस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम का बनाया है, तुझ से प्रार्थना करें,

49 तो तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान में से उनकी प्रार्थना और गिडगिडाहट सुनना; और उनका न्याय करना,

50 और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करेंगे, और जितने अपराध वे तेरे विरुद्ध करेंगे, सब को क्षमा करके, उनके बन्दी करनेवालों के मन में ऐसी दया उपजाना कि वे उन पर दया करें।

51 क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं जिन्हें तू लोहे के भट्टे के मध्य में से अर्थात् मिश्र से निकाल लाया है।

52 इसलिए तेरी आँखें तेरे दास की गिडगिडाहट और तेरी प्रजा इस्राएल की गिडगिडाहट की ओर ऐसी खुली रहें, कि जब जब वे तुझे पुकारें, तब-तब तू उनकी सुन ले;

53 क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपने उस वचन के अनुसार, जो तूने हमारे पुरखाओं को मिश्र से निकालने के समय अपने दास मूसा के द्वारा दिया था, तूने इन लोगों को अपना निज भाग होने के लिये पृथ्वी की सब जातियों से अलग किया है।”

54 जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्थना गिडगिडाहट के साथ कर चुका, तब वह जो घुटने टेके

और आकाश की ओर हाथ फैलाए हुए था, यहोवा की वेदी के सामने से उठा,

55 और खड़ा हो, समस्त इस्राएली सभा को ऊँचे स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया,

56 “धन्य है यहोवा, जिसने ठीक अपने कथन के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल को विश्राम दिया है, जितनी भलाई की बातें उसने अपने दास मूसा के द्वारा कही थीं, उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।

57 हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे हमारे पुरखाओं के संग रहता था, वैसे ही हमारे संग भी रहे, वह हमको त्याग न दे और न हमको छोड़ दे।

58 वह हमारे मन अपनी ओर ऐसा फिराए रखे, कि हम उसके सब मार्गों पर चला करें, और उसकी आज्ञाएँ और विधियाँ और नियम जिन्हें उसने हमारे पुरखाओं को दिया था, नित माना करें।

59 और मेरी ये बातें जिनकी मैंने यहोवा के सामने विनती की है, वह दिन और रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन में बनी रहें, और जैसी प्रतिदिन आवश्यकता हो वैसा ही वह अपने दास का और अपनी प्रजा इस्राएल का भी न्याय किया करे,

60 और इससे पृथ्वी की सब जातियाँ यह जान लें, कि यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं।

61 तो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे, कि आज के समान उसकी विधियों पर चलते और उसकी आज्ञाएँ मानते रहो।”

62 तब राजा समस्त इस्राएल समेत यहोवा के सम्मुख मेलबलि चढ़ाने लगा।

63 और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि में यहोवा को चढ़ाए, वे बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें थीं। इस रीति राजा ने सब इस्राएलियों समेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की।

64 उस दिन राजा ने यहोवा के भवन के सामनेवाले आँगन के मध्य भी एक स्थान पवित्र किया और होमबलि, और अन्नबलि और मेलबलियों की चर्बी वहीं चढ़ाई; क्योंकि जो पीतल की वेदी यहोवा के सामने थी, वह उनके लिये छोटी थी।

65 अतः सुलैमान ने और उसके संग समस्त इस्राएल की एक बड़ी सभा ने जो हमात के प्रवेश-द्वार से लेकर मिश्र के नाले तक के सब देशों से इकट्ठी हुई थी, दो सप्ताह तक अर्थात् चौदह दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने पर्व को माना।

66 फिर आठवें दिन उसने प्रजा के लोगों को विदा किया। और वे राजा को धन्य, धन्य, कहकर उस सब भलाई के कारण जो यहोवा ने अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा इस्राएल से की थी, आनन्दित और मगन





25 सुलैमान उस वेदी पर जो उसने यहोवा के लिये बनाई थी, <sup>10:25</sup> होमबलि और मेलबलि चढ़ाया करता था और साथ ही उस वेदी पर जो यहोवा के सम्मुख थी, धूप जलाया करता था, इस प्रकार उसने उस भवन को तैयार कर दिया।

26 फिर राजा सुलैमान ने एस्योनगेबेर में जो एदोम देश में लाल समुद्र के किनारे एलोत के पास है, जहाज बनाए।

27 और जहाजों में हीराम ने अपने अधिकार के मल्लाहों को, जो समुद्र की जानकारी रखते थे, सुलैमान के सेवकों के संग भेज दिया।

28 उन्होंने ओपीर को जाकर वहाँ से चार सौ बीस किककार सोना, राजा सुलैमान को लाकर दिया।

## 10

<sup>10:1</sup> <sup>10:2</sup> <sup>10:3</sup> <sup>10:4</sup> <sup>10:5</sup> <sup>10:6</sup> <sup>10:7</sup> <sup>10:8</sup> <sup>10:9</sup> <sup>10:10</sup> <sup>10:11</sup> <sup>10:12</sup> <sup>10:13</sup> <sup>10:14</sup> <sup>10:15</sup> <sup>10:16</sup> <sup>10:17</sup> <sup>10:18</sup> <sup>10:19</sup> <sup>10:20</sup> <sup>10:21</sup> <sup>10:22</sup> <sup>10:23</sup> <sup>10:24</sup> <sup>10:25</sup> <sup>10:26</sup> <sup>10:27</sup> <sup>10:28</sup> <sup>10:29</sup> <sup>10:30</sup> <sup>10:31</sup> <sup>10:32</sup> <sup>10:33</sup> <sup>10:34</sup> <sup>10:35</sup> <sup>10:36</sup> <sup>10:37</sup> <sup>10:38</sup> <sup>10:39</sup> <sup>10:40</sup> <sup>10:41</sup> <sup>10:42</sup> <sup>10:43</sup> <sup>10:44</sup> <sup>10:45</sup> <sup>10:46</sup> <sup>10:47</sup> <sup>10:48</sup> <sup>10:49</sup> <sup>10:50</sup> <sup>10:51</sup> <sup>10:52</sup> <sup>10:53</sup> <sup>10:54</sup> <sup>10:55</sup> <sup>10:56</sup> <sup>10:57</sup> <sup>10:58</sup> <sup>10:59</sup> <sup>10:60</sup> <sup>10:61</sup> <sup>10:62</sup> <sup>10:63</sup> <sup>10:64</sup> <sup>10:65</sup> <sup>10:66</sup> <sup>10:67</sup> <sup>10:68</sup> <sup>10:69</sup> <sup>10:70</sup> <sup>10:71</sup> <sup>10:72</sup> <sup>10:73</sup> <sup>10:74</sup> <sup>10:75</sup> <sup>10:76</sup> <sup>10:77</sup> <sup>10:78</sup> <sup>10:79</sup> <sup>10:80</sup> <sup>10:81</sup> <sup>10:82</sup> <sup>10:83</sup> <sup>10:84</sup> <sup>10:85</sup> <sup>10:86</sup> <sup>10:87</sup> <sup>10:88</sup> <sup>10:89</sup> <sup>10:90</sup> <sup>10:91</sup> <sup>10:92</sup> <sup>10:93</sup> <sup>10:94</sup> <sup>10:95</sup> <sup>10:96</sup> <sup>10:97</sup> <sup>10:98</sup> <sup>10:99</sup> <sup>10:100</sup>

1 जब शेबा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्ति सुनी, तब वह कठिन-कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करने को चल पड़ी। <sup>(10:2) 6:29</sup>

2 वह तो बहुत भारी दल के साथ, मसालों, और बहुत सोने, और मणि से लदे ऊँट साथ लिये हुए यरूशलेम को आई; और सुलैमान के पास पहुँचकर अपने मन की सब बातों के विषय में उससे बातें करने लगी।

3 सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसको न बता सका।

4 जब शेबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन, और उसकी मेज पर का भोजन देखा,

5 और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और उसके टहलुए किस रीति खड़े रहते, और कैसे-कैसे कपड़े पहने रहते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वह कैसी चढ़ाई है, जिससे वह यहोवा के भवन को जाया करता है, यह सब जब उसने देखा, तब वह चकित रह गई।

6 तब उसने राजा से कहा, “तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्ति मैंने अपने देश में सुनी थी वह सच ही है।

7 परन्तु जब तक मैंने आप ही आकर अपनी आँखों से यह न देखा, तब तक मैंने उन बातों पर विश्वास न किया, परन्तु इसका आधा भी मुझे न बताया गया था; तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीर्ति से भी बढ़कर है, जो मैंने सुनी थी। <sup>(10:27) 12:27</sup>

8 धन्य हैं तेरे जन! धन्य हैं तेरे ये सेवक! जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं।

9 <sup>10:9</sup> <sup>10:10</sup> <sup>10:11</sup> <sup>10:12</sup> <sup>10:13</sup> <sup>10:14</sup> <sup>10:15</sup> <sup>10:16</sup> <sup>10:17</sup> <sup>10:18</sup> <sup>10:19</sup> <sup>10:20</sup> <sup>10:21</sup> <sup>10:22</sup> <sup>10:23</sup> <sup>10:24</sup> <sup>10:25</sup> <sup>10:26</sup> <sup>10:27</sup> <sup>10:28</sup> <sup>10:29</sup> <sup>10:30</sup> <sup>10:31</sup> <sup>10:32</sup> <sup>10:33</sup> <sup>10:34</sup> <sup>10:35</sup> <sup>10:36</sup> <sup>10:37</sup> <sup>10:38</sup> <sup>10:39</sup> <sup>10:40</sup> <sup>10:41</sup> <sup>10:42</sup> <sup>10:43</sup> <sup>10:44</sup> <sup>10:45</sup> <sup>10:46</sup> <sup>10:47</sup> <sup>10:48</sup> <sup>10:49</sup> <sup>10:50</sup> <sup>10:51</sup> <sup>10:52</sup> <sup>10:53</sup> <sup>10:54</sup> <sup>10:55</sup> <sup>10:56</sup> <sup>10:57</sup> <sup>10:58</sup> <sup>10:59</sup> <sup>10:60</sup> <sup>10:61</sup> <sup>10:62</sup> <sup>10:63</sup> <sup>10:64</sup> <sup>10:65</sup> <sup>10:66</sup> <sup>10:67</sup> <sup>10:68</sup> <sup>10:69</sup> <sup>10:70</sup> <sup>10:71</sup> <sup>10:72</sup> <sup>10:73</sup> <sup>10:74</sup> <sup>10:75</sup> <sup>10:76</sup> <sup>10:77</sup> <sup>10:78</sup> <sup>10:79</sup> <sup>10:80</sup> <sup>10:81</sup> <sup>10:82</sup> <sup>10:83</sup> <sup>10:84</sup> <sup>10:85</sup> <sup>10:86</sup> <sup>10:87</sup> <sup>10:88</sup> <sup>10:89</sup> <sup>10:90</sup> <sup>10:91</sup> <sup>10:92</sup> <sup>10:93</sup> <sup>10:94</sup> <sup>10:95</sup> <sup>10:96</sup> <sup>10:97</sup> <sup>10:98</sup> <sup>10:99</sup> <sup>10:100</sup> <sup>10:101</sup> <sup>10:102</sup> <sup>10:103</sup> <sup>10:104</sup> <sup>10:105</sup> <sup>10:106</sup> <sup>10:107</sup> <sup>10:108</sup> <sup>10:109</sup> <sup>10:110</sup> <sup>10:111</sup> <sup>10:112</sup> <sup>10:113</sup> <sup>10:114</sup> <sup>10:115</sup> <sup>10:116</sup> <sup>10:117</sup> <sup>10:118</sup> <sup>10:119</sup> <sup>10:120</sup> <sup>10:121</sup> <sup>10:122</sup> <sup>10:123</sup> <sup>10:124</sup> <sup>10:125</sup> <sup>10:126</sup> <sup>10:127</sup> <sup>10:128</sup> <sup>10:129</sup> <sup>10:130</sup> <sup>10:131</sup> <sup>10:132</sup> <sup>10:133</sup> <sup>10:134</sup> <sup>10:135</sup> <sup>10:136</sup> <sup>10:137</sup> <sup>10:138</sup> <sup>10:139</sup> <sup>10:140</sup> <sup>10:141</sup> <sup>10:142</sup> <sup>10:143</sup> <sup>10:144</sup> <sup>10:145</sup> <sup>10:146</sup> <sup>10:147</sup> <sup>10:148</sup> <sup>10:149</sup> <sup>10:150</sup> <sup>10:151</sup> <sup>10:152</sup> <sup>10:153</sup> <sup>10:154</sup> <sup>10:155</sup> <sup>10:156</sup> <sup>10:157</sup> <sup>10:158</sup> <sup>10:159</sup> <sup>10:160</sup> <sup>10:161</sup> <sup>10:162</sup> <sup>10:163</sup> <sup>10:164</sup> <sup>10:165</sup> <sup>10:166</sup> <sup>10:167</sup> <sup>10:168</sup> <sup>10:169</sup> <sup>10:170</sup> <sup>10:171</sup> <sup>10:172</sup> <sup>10:173</sup> <sup>10:174</sup> <sup>10:175</sup> <sup>10:176</sup> <sup>10:177</sup> <sup>10:178</sup> <sup>10:179</sup> <sup>10:180</sup> <sup>10:181</sup> <sup>10:182</sup> <sup>10:183</sup> <sup>10:184</sup> <sup>10:185</sup> <sup>10:186</sup> <sup>10:187</sup> <sup>10:188</sup> <sup>10:189</sup> <sup>10:190</sup> <sup>10:191</sup> <sup>10:192</sup> <sup>10:193</sup> <sup>10:194</sup> <sup>10:195</sup> <sup>10:196</sup> <sup>10:197</sup> <sup>10:198</sup> <sup>10:199</sup> <sup>10:200</sup> <sup>10:201</sup> <sup>10:202</sup> <sup>10:203</sup> <sup>10:204</sup> <sup>10:205</sup> <sup>10:206</sup> <sup>10:207</sup> <sup>10:208</sup> <sup>10:209</sup> <sup>10:210</sup> <sup>10:211</sup> <sup>10:212</sup> <sup>10:213</sup> <sup>10:214</sup> <sup>10:215</sup> <sup>10:216</sup> <sup>10:217</sup> <sup>10:218</sup> <sup>10:219</sup> <sup>10:220</sup> <sup>10:221</sup> <sup>10:222</sup> <sup>10:223</sup> <sup>10:224</sup> <sup>10:225</sup> <sup>10:226</sup> <sup>10:227</sup> <sup>10:228</sup> <sup>10:229</sup> <sup>10:230</sup> <sup>10:231</sup> <sup>10:232</sup> <sup>10:233</sup> <sup>10:234</sup> <sup>10:235</sup> <sup>10:236</sup> <sup>10:237</sup> <sup>10:238</sup> <sup>10:239</sup> <sup>10:240</sup> <sup>10:241</sup> <sup>10:242</sup> <sup>10:243</sup> <sup>10:244</sup> <sup>10:245</sup> <sup>10:246</sup> <sup>10:247</sup> <sup>10:248</sup> <sup>10:249</sup> <sup>10:250</sup> <sup>10:251</sup> <sup>10:252</sup> <sup>10:253</sup> <sup>10:254</sup> <sup>10:255</sup> <sup>10:256</sup> <sup>10:257</sup> <sup>10:258</sup> <sup>10:259</sup> <sup>10:260</sup> <sup>10:261</sup> <sup>10:262</sup> <sup>10:263</sup> <sup>10:264</sup> <sup>10:265</sup> <sup>10:266</sup> <sup>10:267</sup> <sup>10:268</sup> <sup>10:269</sup> <sup>10:270</sup> <sup>10:271</sup> <sup>10:272</sup> <sup>10:273</sup> <sup>10:274</sup> <sup>10:275</sup> <sup>10:276</sup> <sup>10:277</sup> <sup>10:278</sup> <sup>10:279</sup> <sup>10:280</sup> <sup>10:281</sup> <sup>10:282</sup> <sup>10:283</sup> <sup>10:284</sup> <sup>10:285</sup> <sup>10:286</sup> <sup>10:287</sup> <sup>10:288</sup> <sup>10:289</sup> <sup>10:290</sup> <sup>10:291</sup> <sup>10:292</sup> <sup>10:293</sup> <sup>10:294</sup> <sup>10:295</sup> <sup>10:296</sup> <sup>10:297</sup> <sup>10:298</sup> <sup>10:299</sup> <sup>10:300</sup> <sup>10:301</sup> <sup>10:302</sup> <sup>10:303</sup> <sup>10:304</sup> <sup>10:305</sup> <sup>10:306</sup> <sup>10:307</sup> <sup>10:308</sup> <sup>10:309</sup> <sup>10:310</sup> <sup>10:311</sup> <sup>10:312</sup> <sup>10:313</sup> <sup>10:314</sup> <sup>10:315</sup> <sup>10:316</sup> <sup>10:317</sup> <sup>10:318</sup> <sup>10:319</sup> <sup>10:320</sup> <sup>10:321</sup> <sup>10:322</sup> <sup>10:323</sup> <sup>10:324</sup> <sup>10:325</sup> <sup>10:326</sup> <sup>10:327</sup> <sup>10:328</sup> <sup>10:329</sup> <sup>10:330</sup> <sup>10:331</sup> <sup>10:332</sup> <sup>10:333</sup> <sup>10:334</sup> <sup>10:335</sup> <sup>10:336</sup> <sup>10:337</sup> <sup>10:338</sup> <sup>10:339</sup> <sup>10:340</sup> <sup>10:341</sup> <sup>10:342</sup> <sup>10:343</sup> <sup>10:344</sup> <sup>10:345</sup> <sup>10:346</sup> <sup>10:347</sup> <sup>10:348</sup> <sup>10:349</sup> <sup>10:350</sup> <sup>10:351</sup> <sup>10:352</sup> <sup>10:353</sup> <sup>10:354</sup> <sup>10:355</sup> <sup>10:356</sup> <sup>10:357</sup> <sup>10:358</sup> <sup>10:359</sup> <sup>10:360</sup> <sup>10:361</sup> <sup>10:362</sup> <sup>10:363</sup> <sup>10:364</sup> <sup>10:365</sup> <sup>10:366</sup> <sup>10:367</sup> <sup>10:368</sup> <sup>10:369</sup> <sup>10:370</sup> <sup>10:371</sup> <sup>10:372</sup> <sup>10:373</sup> <sup>10:374</sup> <sup>10:375</sup> <sup>10:376</sup> <sup>10:377</sup> <sup>10:378</sup> <sup>10:379</sup> <sup>10:380</sup> <sup>10:381</sup> <sup>10:382</sup> <sup>10:383</sup> <sup>10:384</sup> <sup>10:385</sup> <sup>10:386</sup> <sup>10:387</sup> <sup>10:388</sup> <sup>10:389</sup> <sup>10:390</sup> <sup>10:391</sup> <sup>10:392</sup> <sup>10:393</sup> <sup>10:394</sup> <sup>10:395</sup> <sup>10:396</sup> <sup>10:397</sup> <sup>10:398</sup> <sup>10:399</sup> <sup>10:400</sup> <sup>10:401</sup> <sup>10:402</sup> <sup>10:403</sup> <sup>10:404</sup> <sup>10:405</sup> <sup>10:406</sup> <sup>10:407</sup> <sup>10:408</sup> <sup>10:409</sup> <sup>10:410</sup> <sup>10:411</sup> <sup>10:412</sup> <sup>10:413</sup> <sup>10:414</sup> <sup>10:415</sup> <sup>10:416</sup> <sup>10:417</sup> <sup>10:418</sup> <sup>10:419</sup> <sup>10:420</sup> <sup>10:421</sup> <sup>10:422</sup> <sup>10:423</sup> <sup>10:424</sup> <sup>10:425</sup> <sup>10:426</sup> <sup>10:427</sup> <sup>10:428</sup> <sup>10:429</sup> <sup>10:430</sup> <sup>10:431</sup> <sup>10:432</sup> <sup>10:433</sup> <sup>10:434</sup> <sup>10:435</sup> <sup>10:436</sup> <sup>10:437</sup> <sup>10:438</sup> <sup>10:439</sup> <sup>10:440</sup> <sup>10:441</sup> <sup>10:442</sup> <sup>10:443</sup> <sup>10:444</sup> <sup>10:445</sup> <sup>10:446</sup> <sup>10:447</sup> <sup>10:448</sup> <sup>10:449</sup> <sup>10:450</sup> <sup>10:451</sup> <sup>10:452</sup> <sup>10:453</sup> <sup>10:454</sup> <sup>10:455</sup> <sup>10:456</sup> <sup>10:457</sup> <sup>10:458</sup> <sup>10:459</sup> <sup>10:460</sup> <sup>10:461</sup> <sup>10:462</sup> <sup>10:463</sup> <sup>10:464</sup> <sup>10:465</sup> <sup>10:466</sup> <sup>10:467</sup> <sup>10:468</sup> <sup>10:469</sup> <sup>10:470</sup> <sup>10:471</sup> <sup>10:472</sup> <sup>10:473</sup> <sup>10:474</sup> <sup>10:475</sup> <sup>10:476</sup> <sup>10:477</sup> <sup>10:478</sup> <sup>10:479</sup> <sup>10:480</sup> <sup>10:481</sup> <sup>10:482</sup> <sup>10:483</sup> <sup>10:484</sup> <sup>10:485</sup> <sup>10:486</sup> <sup>10:487</sup> <sup>10:488</sup> <sup>10:489</sup> <sup>10:490</sup> <sup>10:491</sup> <sup>10:492</sup> <sup>10:493</sup> <sup>10:494</sup> <sup>10:495</sup> <sup>10:496</sup> <sup>10:497</sup> <sup>10:498</sup> <sup>10:499</sup> <sup>10:500</sup> <sup>10:501</sup> <sup>10:502</sup> <sup>10:503</sup> <sup>10:504</sup> <sup>10:505</sup> <sup>10:506</sup> <sup>10:507</sup> <sup>10:508</sup> <sup>10:509</sup> <sup>10:510</sup> <sup>10:511</sup> <sup>10:512</sup> <sup>10:513</sup> <sup>10:514</sup> <sup>10:515</sup> <sup>10:516</sup> <sup>10:517</sup> <sup>10:518</sup> <sup>10:519</sup> <sup>10:520</sup> <sup>10:521</sup> <sup>10:522</sup> <sup>10:523</sup> <sup>10:524</sup> <sup>10:525</sup> <sup>10:526</sup> <sup>10:527</sup> <sup>10:528</sup> <sup>10:529</sup> <sup>10:530</sup> <sup>10:531</sup> <sup>10:532</sup> <sup>10:533</sup> <sup>10:534</sup> <sup>10:535</sup> <sup>10:536</sup> <sup>10:537</sup> <sup>10:538</sup> <sup>10:539</sup> <sup>10:540</sup> <sup>10:541</sup> <sup>10:542</sup> <sup>10:543</sup> <sup>10:544</sup> <sup>10:545</sup> <sup>10:546</sup> <sup>10:547</sup> <sup>10:548</sup> <sup>10:549</sup> <sup>10:550</sup> <sup>10:551</sup> <sup>10:552</sup> <sup>10:553</sup> <sup>10:554</sup> <sup>10:555</sup> <sup>10:556</sup> <sup>10:557</sup> <sup>10:558</sup> <sup>10:559</sup> <sup>10:560</sup> <sup>10:561</sup> <sup>10:562</sup> <sup>10:563</sup> <sup>10:564</sup> <sup>10:565</sup> <sup>10:566</sup> <sup>10:567</sup> <sup>10:568</sup> <sup>10:569</sup> <sup>10:570</sup> <sup>10:571</sup> <sup>10:572</sup> <sup>10:573</sup> <sup>10:574</sup> <sup>10:575</sup> <sup>10:576</sup> <sup>10:577</sup> <sup>10:578</sup> <sup>10:579</sup> <sup>10:580</sup> <sup>10:581</sup> <sup>10:582</sup> <sup>10:583</sup> <sup>10:584</sup> <sup>10:585</sup> <sup>10:586</sup> <sup>10:587</sup> <sup>10:588</sup> <sup>10:589</sup> <sup>10:590</sup> <sup>10:591</sup> <sup>10:592</sup> <sup>10:593</sup> <sup>10:594</sup> <sup>10:595</sup> <sup>10:596</sup> <sup>10:597</sup> <sup>10:598</sup> <sup>10:599</sup> <sup>10:600</sup> <sup>10:601</sup> <sup>10:602</sup> <sup>10:603</sup> <sup>10:604</sup> <sup>10:605</sup> <sup>10:606</sup> <sup>10:607</sup> <sup>10:608</sup> <sup>10:609</sup> <sup>10:610</sup> <sup>10:611</sup> <sup>10:612</sup> <sup>10:613</sup> <sup>10:614</sup> <sup>10:615</sup> <sup>10:616</sup> <sup>10:617</sup> <sup>10:618</sup> <sup>10:619</sup> <sup>10:620</sup> <sup>10:621</sup> <sup>10:622</sup> <sup>10:623</sup> <sup>10:624</sup> <sup>10:625</sup> <sup>10:626</sup> <sup>10:627</sup> <sup>10:628</sup> <sup>10:629</sup> <sup>10:630</sup> <sup>10:631</sup> <sup>10:632</sup> <sup>10:633</sup> <sup>10:634</sup> <sup>10:635</sup> <sup>10:636</sup> <sup>10:637</sup> <sup>10:638</sup> <sup>10:639</sup> <sup>10:640</sup> <sup>10:641</sup> <sup>10:642</sup> <sup>10:643</sup> <sup>10:644</sup> <sup>10:645</sup> <sup>10:646</sup> <sup>10:647</sup> <sup>10:648</sup> <sup>10:649</sup> <sup>10:650</sup> <sup>10:651</sup> <sup>10:652</sup> <sup>10:653</sup> <sup>10:654</sup> <sup>10:655</sup> <sup>10:656</sup> <sup>10:657</sup> <sup>10:658</sup> <sup>10:659</sup> <sup>10:660</sup> <sup>10:661</sup> <sup>10:662</sup> <sup>10:663</sup> <sup>10:664</sup> <sup>10:665</sup> <sup>10:666</sup> <sup>10:667</sup> <sup>10:668</sup> <sup>10:669</sup> <sup>10:670</sup> <sup>10:671</sup> <sup>10:672</sup> <sup>10:673</sup> <sup>10:674</sup> <sup>10:675</sup> <sup>10:676</sup> <sup>10:677</sup> <sup>10:678</sup> <sup>10:679</sup> <sup>10:680</sup> <sup>10:681</sup> <sup>10:682</sup> <sup>10:683</sup> <sup>10:684</sup> <sup>10:685</sup> <sup>10:686</sup> <sup>10:687</sup> <sup>10:688</sup> <sup>10:689</sup> <sup>10:690</sup> <sup>10:691</sup> <sup>10:692</sup> <sup>10:693</sup> <sup>10:694</sup> <sup>10:695</sup> <sup>10:696</sup> <sup>10:697</sup> <sup>10:698</sup> <sup>10:699</sup> <sup>10:700</sup> <sup>10:701</sup> <sup>10:702</sup> <sup>10:703</sup> <sup>10:704</sup> <sup>10:705</sup> <sup>10:706</sup> <sup>10:707</sup> <sup>10:708</sup> <sup>10:709</sup> <sup>10:710</sup> <sup>10:711</sup> <sup>10:712</sup> <sup>10:713</sup> <sup>10:714</sup> <sup>10:715</sup> <sup>10:716</sup> <sup>10:717</sup> <sup>10:718</sup> <sup>10:719</sup> <sup>10:720</sup> <sup>10:721</sup> <sup>10:722</sup> <sup>10:723</sup> <sup>10:724</sup> <sup>10:725</sup> <sup>10:726</sup> <sup>10:727</sup> <sup>10:728</sup> <sup>10:729</sup> <sup>10:730</sup> <sup>10:731</sup> <sup>10:732</sup> <sup>10:733</sup> <sup>10:734</sup> <sup>10:735</sup> <sup>10:736</sup> <sup>10:737</sup> <sup>10:738</sup> <sup>10:739</sup> <sup>10:740</sup> <sup>10:741</sup> <sup>10:742</sup> <sup>10:743</sup> <sup>10:744</sup> <sup>10:745</sup> <sup>10:746</sup> <sup>10:747</sup> <sup>10:748</sup> <sup>10:749</sup> <sup>10:750</sup> <sup>10:751</sup> <sup>10:752</sup> <sup>10:753</sup> <sup>10:754</sup> <sup>10:755</sup> <sup>10:756</sup> <sup>10:757</sup> <sup>10:758</sup> <sup>10:759</sup> <sup>10:760</sup> <sup>10:761</sup> <sup>10:762</sup> <sup>10:763</sup> <sup>10:764</sup> <sup>10:765</sup> <sup>10:766</sup> <sup>10:767</sup> <sup>10:768</sup> <sup>10:769</sup> <sup>10:770</sup> <sup>10:771</sup> <sup>10:772</sup> <sup>10:773</sup> <sup>10:774</sup> <sup>10:775</sup> <sup>10:776</sup> <sup>10:777</sup> <sup>10:778</sup> <sup>10:779</sup> <sup>10:780</sup> <sup>10:781</sup> <sup>10:782</sup> <sup>10:783</sup> <sup>10:784</sup> <sup>10:785</sup> <sup>10:786</sup> <sup>10:787</sup> <sup>10:788</sup> <sup>10:789</sup> <sup>10:790</sup> <sup>10:791</sup> <sup>10:792</sup> <sup>10:793</sup> <sup>10:794</sup> <sup>10:795</sup> <sup>10:796</sup> <sup>10:797</sup> <sup>10:798</sup> <sup>10:799</sup> <sup>10:800</sup> <sup>10:801</sup> <sup>10:802</sup> <sup>10:803</sup> <sup>10:804</sup> <sup>10:805</sup> <sup>10:806</sup> <sup>10:807</sup> <sup>10:808</sup> <sup>10:809</sup> <sup>10:810</sup> <sup>10:811</sup> <sup>10:812</sup> <sup>10:813</sup> <sup>10:814</sup> <sup>10:815</sup> <sup>10:816</sup> <sup>10:817</sup> <sup>10:818</sup> <sup>10:819</sup> <sup>10:820</sup> <sup>10:821</sup> <sup>10:822</sup> <sup>10:823</sup> <sup>10:824</sup> <sup>10:825</sup> <sup>10:826</sup> <sup>10:827</sup> <sup>10:828</sup> <sup>10:829</sup> <sup>10:830</sup> <sup>10:831</sup> <sup>10:832</sup> <sup>10:833</sup> <sup>10:834</sup> <sup>10:835</sup> <sup>10:836</sup> <sup>10:837</sup> <sup>10:838</sup> <sup>10:839</sup> <sup>10:840</sup> <sup>10:841</sup> <sup>10:842</sup>

खड़ा हुआ बना था, कुल बारह सिंह बने थे। किसी राज्य में ऐसा सिंहासन कभी नहीं बना;

21 राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के बने थे, और लबानोन का वन नामक महल के सब पात्र भी शुद्ध सोने के थे, चाँदी का कोई भी न था। सुलैमान के दिनों में उसका कुछ मूल्य न था।

22 क्योंकि समुद्र पर हीराम के जहाजों के साथ राजा भी तर्शाश के जहाज रखता था, और तीन-तीन वर्ष पर तर्शाश के जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बन्दर और मयूर ले आते थे।

23 इस प्रकार राजा सुलैमान, धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया।

24 और समस्त पृथ्वी के लोग उसकी बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उत्पन्न की थीं, सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे।

25 और वे प्रतिवर्ष अपनी-अपनी भेंट, अर्थात् चाँदी और सोने के पात्र, वस्त्र, शस्त्र, सुगन्ध-द्रव्य, घोड़े, और खच्चर ले आते थे।

26 सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिए, उसके चौदह सौ रथ, और बारह हजार सवार हो गए, और उनको उसने रथों के नगरों में, और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा।

27 और राजा ने बहुतायत के कारण, यरूशलेम में चाँदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर और देवदार को ऐसा जैसे नीचे के देश के गूलर।

28 और जो घोड़े सुलैमान रखता था, वे मिस्र से आते थे, और राजा के व्यापारी उन्हें झुण्ड-झुण्ड करके ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे।

29 एक रथ तो छः सौ शेकेल चाँदी में, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल में, मिस्र से आता था, और इसी दाम पर वे हित्तियों और अराम के सब राजाओं के लिये भी व्यापारियों के द्वारा आते थे।

## 11

1 परन्तु राजा सुलैमान फिरौन की बेटी, और बहुत सी विजातीय स्त्रियों से, जो मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी, और हिती थीं, प्रीति करने लगा।

2 वे उन जातियों की थीं, जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, “[22:24](#) [22:25](#) [22:26](#) [22:27](#) [22:28](#)”, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएँ, वे तुम्हारा

\* **11:2** [22:24](#) [22:25](#) [22:26](#) [22:27](#) [22:28](#): इसका अर्थ था पड़ोसी मूर्तिपूजकों के साथ विवाह निषेध। † **11:4** [22:24](#) [22:25](#) [22:26](#) [22:27](#) [22:28](#): वह अपने यहोवा की आराधना करता था और प्रतिवर्ष तीन बार मन्दिर में बलि चढ़ाता था, परन्तु उसका मन परमेश्वर के साथ पूर्ण सम्बन्ध में सिद्ध नहीं था।

मन अपने देवताओं की ओर निःसन्देह फेरेंगी;” उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया।

3 उसके सात सौ रानियाँ, और तीन सौ रखैलियाँ हो गई थीं और उसकी इन स्त्रियों ने उसका मन बहका दिया।

4 अतः जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब [22:24](#) [22:25](#) [22:26](#) [22:27](#) [22:28](#), और उसका मन अपने पिता दाऊद की समान अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा।

5 सुलैमान तो सीदोनियों की अशतोरेत नामक देवी, और अम्मोनियों के मिल्कोम नामक घृणित देवता के पीछे चला।

6 इस प्रकार सुलैमान ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद के समान पूरी रीति से न चला।

7 उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के सामने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश नामक घृणित देवता के लिये और अम्मोनियों के मोलेक नामक घृणित देवता के लिये एक-एक ऊँचा स्थान बनाया।

8 और अपनी सब विजातीय स्त्रियों के लिये भी जो अपने-अपने देवताओं को धूप जलाती और बलिदान करती थीं, उसने ऐसा ही किया।

9 तब यहोवा ने सुलैमान पर क्रोध किया, क्योंकि उसका मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया था जिसने दो बार उसको दर्शन दिया था।

10 और उसने इसी बात के विषय में आज्ञा दी थी, कि पराए देवताओं के पीछे न हो लेना, तो भी उसने यहोवा की आज्ञा न मानी।

11 इसलिए यहोवा ने सुलैमान से कहा, “तुझ से जो ऐसा काम हुआ है, और मेरी बँधाई हुई वाचा और दी हुई विधि तूने पूरी नहीं की, इस कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर तेरे एक कर्मचारी को दे दूँगा।

12 तो भी तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनों में तो ऐसा न करूँगा; परन्तु तेरे पुत्र के हाथ से राज्य छीन लूँगा।

13 फिर भी मैं पूर्ण राज्य तो न छीन लूँगा, परन्तु अपने दास दाऊद के कारण, और अपने चुने हुए यरूशलेम के कारण, मैं तेरे पुत्र के हाथ में एक गोत्र छोड़ दूँगा।”

14 तब यहोवा ने एदोमी हृदद को जो एदोमी राजवंश का था, सुलैमान का शत्रु बना दिया।

15 क्योंकि जब दाऊद एदोम में था, और योआब सेनापति मारे हुआओं को मिट्टी देने गया,

16 (योआब तो समस्त इस्राएल समेत वहाँ छः महीने रहा, जब तक कि उसने एदोम के सब पुरुषों का नाश न कर दिया)

17 तब हदद जो छोटा लड़का था, अपने पिता के कई एक एदोमी सेवकों के संग मिश्र को जाने की मनसा से भागा।

18 और वे मिद्यान से होकर पारान को आए, और पारान में से कई पुरुषों को संग लेकर मिश्र में फ़िरौन राजा के पास गए, और फ़िरौन ने उसको घर दिया, और उसके भोजन व्यवस्था की आज्ञा दी और कुछ भूमि भी दी।

19 और हदद पर फ़िरौन की बड़े अनुग्रह की दृष्टि हुई, और उसने उससे अपनी साली अर्थात् तहपनेस रानी की बहन ब्याह दी।

20 और तहपनेस की बहन से गनूबत उत्पन्न हुआ और इसका दूध तहपनेस ने फ़िरौन के भवन में छुड़ाया; तब गनूबत फ़िरौन के भवन में उसी के पुत्रों के साथ रहता था।

21 जब हदद ने मिश्र में रहते यह सुना, कि दाऊद अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और योआब सेनापति भी मर गया है, तब उसने फ़िरौन से कहा, “मुझे आज्ञा दे कि मैं अपने देश को जाऊँ।”

22 फ़िरौन ने उससे कहा, “क्यों? मेरे यहाँ तुझे क्या घटी हुई कि तू अपने देश को चला जाना चाहता है?” उसने उत्तर दिया, “कुछ नहीं हुई, तो भी मुझे अवश्य जाने दे।”

23 फिर परमेश्वर ने उसका एक और शत्रु कर दिया, अर्थात् एल्यादा के पुत्र रजोन को, वह तो अपने स्वामी सोबा के राजा हदादेजेर के पास से भागा था;

24 और जब दाऊद ने सोबा के जनों को घात किया, तब रजोन अपने पास कई पुरुषों को इकट्ठे करके, एक दल का प्रधान हो गया, और वह दमिश्क को जाकर वहीं रहने और राज्य करने लगा।

25 उस हानि के साथ-साथ जो हदद ने की, रजोन भी, सुलैमान के जीवन भर इस्राएल का शत्रु बना रहा; और वह इस्राएल से घृणा रखता हुआ अराम पर राज्य करता था।

26 फिर नबात का और सरूआह नामक एक विधवा का पुत्र यारोबाम नामक एक एप्रैमी सरेदावासी जो सुलैमान का कर्मचारी था, उसने भी राजा के विरुद्ध सिर उठाया।

27 उसका राजा के विरुद्ध सिर उठाने का यह कारण हुआ, कि सुलैमान मिल्लो को बना रहा था और अपने

पिता दाऊद के नगर के दरार बन्द कर रहा था।

28 यारोबाम बड़ा शूरवीर था, और जब सुलैमान ने जवान को देखा, कि यह परिश्रमी है; तब उसने उसको यूसुफ के घराने के सब काम पर मुखिया ठहराया।

29 उन्हीं दिनों में यारोबाम यरूशलेम से निकलकर जा रहा था, कि शीलोवासी अहिय्याह नबी, नई चद्वर ओढ़े हुए मार्ग पर उससे मिला; और केवल वे ही दोनों मैदान में थे।

30 तब अहिय्याह ने अपनी उस नई चद्वर को ले लिया, और उसे फाड़कर बारह टुकड़े कर दिए।

31 तब उसने यारोबाम से कहा, “दस टुकड़े ले ले; क्योंकि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘सुन, मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीनकर दस गोत्र तेरे हाथ में कर दूँगा।’

32 परन्तु मेरे दास दाऊद के कारण और यरूशलेम के कारण जो मैंने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुना है, उसका एक गोत्र बना रहेगा।

33 इसका कारण यह है कि उन्होंने मुझे त्याग कर सीदोनियों की देवी अशतोरैत और मोआबियों के देवता कमोश, और अम्मोनियों के देवता मिल्लोम को दण्डवत् की, और मेरे मार्गों पर नहीं चले: और जो मेरी दृष्टि में ठीक है, वह नहीं किया, और मेरी विधियों और नियमों को नहीं माना जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया।

34 तो भी मैं उसके हाथ से पूर्ण राज्य न ले लूँगा, परन्तु मेरा चुना हुआ दास दाऊद जो मेरी आज्ञाएँ और विधियाँ मानता रहा, उसके कारण मैं उसको जीवन भर प्रधान ठहराए रखूँगा।

35 परन्तु उसके पुत्र के हाथ से मैं राज्य अर्थात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूँगा।

36 और उसके पुत्र को मैं एक गोत्र दूँगा, इसलिए कि यरूशलेम अर्थात् उस नगर में जिसे अपना नाम रखने को मैंने चुना है, मेरे दास दाऊद का दीपक मेरे सामने सदैव बना रहे।

37 परन्तु तुझे मैं ठहरा लूँगा, और तू अपनी इच्छा भर इस्राएल पर राज्य करेगा।

38 और यदि तू मेरे दास दाऊद के समान मेरी सब आज्ञाएँ माने, और मेरे मार्गों पर चले, और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है, वही करे, और मेरी विधियाँ और आज्ञाएँ मानता रहे, तो मैं तेरे संग रहूँगा, और जिस तरह मैंने दाऊद का घराना बनाए रखा है, वैसे ही तेरा भी घराना बनाए रखूँगा, और तेरे हाथ इस्राएल को दूँगा।

39 इस पाप के कारण मैं दाऊद के वंश को दुःख दूँगा, तो भी सदा तक नहीं।”

40 इसलिए सुलैमान ने यारोबाम को मार डालना



इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया, और यहूदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घराने से कोई मिला न रहा।

21 जब रहबाम यरूशलेम को आया, तब उसने यहूदा के समस्त घराने को, और बिन्यामीन के गोत्र को, जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे, इकट्ठा किया, कि वे इस्राएल के घराने के साथ लड़कर सुलैमान के पुत्र रहबाम के वश में फिर राज्य कर दें।

22 तब परमेश्वर का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुँचा, “यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम से,

23 और यहूदा और बिन्यामीन के सब घराने से, और सब लोगों से कह, ‘यहोवा यह कहता है,

24 कि अपने भाई इस्राएलियों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो; तुम अपने-अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है।’” यहोवा का यह वचन मानकर उन्होंने उसके अनुसार लौट जाने को अपना-अपना मार्ग लिया।

25 तब यारोबाम एप्रैम के पहाड़ी देश के शेकेम नगर को दृढ़ करके उसमें रहने लगा; फिर वहाँ से निकलकर पनूएल को भी दृढ़ किया।

26 तब यारोबाम सोचने लगा, “अब राज्य दाऊद के घराने का हो जाएगा।

27 यदि प्रजा के लोग यरूशलेम में बलि करने को जाएँ, तो उनका मन अपने स्वामी यहूदा के राजा रहबाम की ओर फिरेगा, और वे मुझे घात करके यहूदा के राजा रहबाम के हो जाएँगे।”

28 अतः राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, “यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है इसलिए हे इस्राएल अपने देवताओं को देखो, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाए हैं।”

29 उसने एक बछड़े को बेतेल, और दूसरे को दान में स्थापित किया।

30 31 और उसने ऊँचे स्थानों के भवन बनाए, और सब प्रकार के लोगों में से जो लेवीवंशी न थे, याजक ठहराए।

32 फिर यारोबाम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन यहूदा के पर्व के समान एक पर्व ठहरा दिया, और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा; इस रीति उसने बेतेल में अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये वेदी पर, बलि किया, और

अपने बनाए हुए ऊँचे स्थानों के याजकों को बेतेल में ठहरा दिया।

33 जिस महीने की उसने अपने मन में कल्पना की थी अर्थात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उसने इस्राएलियों के लिये एक पर्व ठहरा दिया, और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया।

## 13

1 तब यहोवा से वचन पाकर

2 यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था।

3 उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यह पुकारा, “वेदी, हे वेदी! यहोवा यह कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नामक एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊँचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी।”

4 और उसने, उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया, “यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिन्ह यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी।”

5 तब ऐसा हुआ कि परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उसने बेतेल की वेदी के विरुद्ध पुकारकर कहा, यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, “उसको पकड़ लो!” तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका।

6 और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई; अतः वह चिन्ह पूरा हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था।

7 तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, “अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए!” तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया।

8 तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, “मेरे संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी दूँगा।”

9 परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, “चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे, तो भी तेरे घर न चलूँगा और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊँगा और न पानी पीऊँगा।

‡ 12:30 13:1-13:2: अर्थात् रहबाम का यह कार्य इस्राएल के लिये पाप करने का अवसर बना।

\* 13:1 13:2-13:3: अर्थात् वह भविष्यद्वक्ता मात्र भेजा नहीं गया वरन् परमेश्वर के वचन के सामर्थ्य एवं क्षमता में आया, परमेश्वर द्वारा प्रेरित एक सन्देशवाहक।

9 क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि [REDACTED], और न उस मार्ग से लौटना जिससे तू जाएगा।”

10 इसलिए वह उस मार्ग से जिससे बेतेल को गया था न लौटकर, दूसरे मार्ग से चला गया।

11 बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था, और उसके एक बेटे ने आकर उससे उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे; और जो बातें उसने राजा से कही थीं, उनको भी उसने अपने पिता से कह सुनाया।

12 उसके बेटों ने तो यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था, किस मार्ग से चला गया, अतः उनके पिता ने उनसे पूछा, “वह किस मार्ग से चला गया?”

13 और उसने अपने बेटों से कहा, “मेरे लिये गदहे पर काठी बाँधो;” तब उन्होंने गदहे पर काठी बाँधी, और वह उस पर चढ़ा,

14 और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांज वृक्ष के तले बैठा हुआ पाया; और उससे पूछा, “परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था, क्या तू वही है?”

15 उसने कहा, “हाँ, वही हूँ।” उसने उससे कहा, “मेरे संग घर चलकर भोजन कर।”

16 उसने उससे कहा, “मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर में जा सकता हूँ और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊँगा, न पानी पीऊँगा।

17 क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहाँ न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उससे न लौटना।”

18 उसने कहा, “जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूँ; और मुझसे एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए।” यह उसने उससे झूठ कहा।

19 अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया।

20 जब वे मेज़ पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुँचा, जो दूसरे को लौटा ले आया था।

21 उसने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था, पुकारके कहा, “यहोवा यह कहता है इसलिए कि तूने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नहीं माना;

22 परन्तु जिस स्थान के विषय उसने तुझ से कहा था,

‘उसमें न तो रोटी खाना और न पानी पीना,’ उसी में तूने लौटकर रोटी खाई, और पानी भी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी।”

23 जब वह खा पी चुका, तब उसने परमेश्वर के उस जन के लिये जिसको वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी बाँधाई।

24 जब वह मार्ग में चल रहा था, तो एक सिंह उसे मिला, और उसको मार डाला, और उसका शव मार्ग पर पड़ा रहा, और गदहा उसके पास खड़ा रहा और सिंह भी लोथ के पास खड़ा रहा।

25 जो लोग उधर से चले आ रहे थे उन्होंने यह देखकर कि मार्ग पर एक शव पड़ा है, और उसके पास सिंह खड़ा है, उस नगर में जाकर जहाँ वह बूढ़ा नबी रहता था यह समाचार सुनाया।

26 यह सुनकर उस नबी ने जो उसको मार्ग पर से लौटा ले आया था, कहा, “परमेश्वर का वही जन होगा, जिसने यहोवा के वचन के विरुद्ध किया था, इस कारण यहोवा ने उसको सिंह के पंजे में पड़ने दिया; और यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने उससे कहा था, सिंह ने उसे फाड़कर मार डाला होगा।”

27 तब उसने अपने बेटों से कहा, “मेरे लिये गदहे पर काठी बाँधो;” जब उन्होंने काठी बाँधी,

28 तब उसने जाकर उस जन का शव मार्ग पर पड़ा हुआ, और गदहे, और सिंह दोनों को शव के पास खड़े हुए पाया, और यह भी कि सिंह ने न तो शव को खाया, और न गदहे को फाड़ा है।

29 तब उस बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन के शव को उठाकर गदहे पर लाद लिया, और उसके लिये छाती पीटने लगा, और उसे मिट्टी देने को अपने नगर में लौटा ले गया।

30 और उसने उसके शव को अपने कब्रिस्तान में रखा, और लोग “हाय, मेरे भाई!” यह कहकर छाती पीटने लगे।

31 फिर उसे मिट्टी देकर उसने अपने बेटों से कहा, “जब मैं मर जाऊँगा तब मुझे इसी कब्रिस्तान में रखना, जिसमें परमेश्वर का यह जन रखा गया है, और मेरी हड्डियाँ उसी की हड्डियों के पास रख देना।

32 क्योंकि जो वचन उसने यहोवा से पाकर बेतेल की वेदी और सामरिया के नगरों के सब ऊँचे स्थानों के भवनों के विरुद्ध पुकारके कहा है, वह निश्चय पूरा हो जाएगा।”

[REDACTED]

† 13:9 [REDACTED]: इस आज्ञा का कारण स्पष्ट है। परमेश्वर के उस जन को किसी भी बेतेलवासी का अतिथि-सत्कार ग्रहण नहीं करना था। यारोवाम ने अपने मन से जो युक्ति तैयार की थी उससे परमेश्वर घृणा करता था।

33 इसके बाद यारोबाम अपनी बुरी चाल से न फिरा। उसने फिर सब प्रकार के लोगों में से ऊँचे स्थानों के याजक बनाए, वरन् जो कोई चाहता था, उसका संस्कार करके, वह उसको ऊँचे स्थानों का याजक होने को ठहरा देता था।

34 यह बात यारोबाम के घराने का [21222] ठहरी, इस कारण उसका विनाश हुआ, और वह धरती पर से नाश किया गया।

## 14

[21222222] [21] [212222] [21] [212222]

1 उस समय यारोबाम का बेटा अबिय्याह रोगी हुआ।

2 तब यारोबाम ने अपनी स्त्री से कहा, “[2122] [2122] [2122]\* कि कोई तुझे पहचान न सके कि यह यारोबाम की स्त्री है, और शीलो को चली जा, वहाँ अहिय्याह नबी रहता है जिसने मुझसे कहा था ‘तू इस प्रजा का राजा हो जाएगा।’

3 उसके पास तू दस रोटी, और टिकियाँ और एक कुप्पी मधु लिये हुए जा, और वह तुझे बताएगा कि लड़के का क्या होगा।”

4 यारोबाम की स्त्री ने वैसा ही किया, और चलकर शीलो को पहुँची और अहिय्याह के घर पर आई: अहिय्याह को तो कुछ सूझ न पड़ता था, क्योंकि बुढ़ापे के कारण उसकी आँखें धुन्धली पड़ गई थीं।

5 और यहोवा ने अहिय्याह से कहा, “सुन यारोबाम की स्त्री तुझ से अपने बेटे के विषय में जो रोगी है कुछ पूछने को आती है, तू उससे ये-ये बातें कहना; वह तो आकर अपने को दूसरी औरत बताएगी।”

6 जब अहिय्याह ने द्वार में आते हुए उसके पाँव की आहट सुनी तब कहा, “हे यारोबाम की स्त्री! भीतर आ; तू अपने को क्यों दूसरी स्त्री बनाती है? मुझे तेरे लिये बुरा सन्देशा मिला है।

7 तू जाकर यारोबाम से कह कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘[212222] [21] [212222] [212222] [2122] [21] [21222222] [21222] [212222] [2122222222] [21] [21222222] [212222],’

8 और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझको दिया, परन्तु तू मेरे दास दाऊद के समान न हुआ जो मेरी

आज्ञाओं को मानता, और अपने पूर्ण मन से मेरे पीछे-पीछे चलता, और केवल वही करता था जो मेरी दृष्टि में ठीक है।

9 तूने उन सभी से बढ़कर जो तुझ से पहले थे बुराई, की है, और जाकर पराए देवता की उपासना की और मूरतें ढालकर बनाईं, जिससे मुझे क्रोधित कर दिया और मुझे तो पीठ के पीछे फेंक दिया है।

10 इस कारण मैं यारोबाम के घराने पर विपत्ति डालूँगा, वरन् मैं यारोबाम के कुल में से हर एक लड़के को और क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल के मध्य हर एक रहनेवाले को भी नष्ट कर डालूँगा: और जैसा कोई गोबर को तब तक उठाता रहता है जब तक वह सब उठा नहीं लिया जाता, वैसे ही मैं यारोबाम के घराने की सफाई कर दूँगा।

11 यारोबाम के घराने का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खाएँगे; और जो मैदान में मरे, उसको आकाश के पक्षी खा जाएँगे; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।

12 इसलिए तू उठ और अपने घर जा, और नगर के भीतर तेरे पाँव पड़ते ही वह बालक मर जाएगा।

13 उसे तो समस्त इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी देंगे; यारोबाम के सन्तानों में से केवल उसी को कब्र मिलेगी, क्योंकि यारोबाम के घराने में से उसी में कुछ पाया जाता है जो यहोवा इस्राएल के प्रभु की दृष्टि में भला है।

14 फिर यहोवा इस्राएल के लिये एक ऐसा राजा खडा करेगा जो उसी दिन यारोबाम के घराने को नाश कर डालेगा, परन्तु कब? यह अभी होगा।

15 क्योंकि यहोवा इस्राएल को ऐसा मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है, और वह उनको इस अच्छी भूमि में से जो उसने उनके पुरखाओं को दी थी उखाड़कर फरात के पार तितर-बितर करेगा; क्योंकि उन्होंने अशेरा नामक मूरतें अपने लिये बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया है।

16 और उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किए और इस्राएल से कराए थे, यहोवा इस्राएल को त्याग देगा।”

17 तब यारोबाम की स्त्री विदा होकर चली और तिसर्ता को आई, और वह भवन की डेवढी पर जैसे ही पहुँची कि वह बालक मर गया।

18 तब यहोवा के वचन के अनुसार जो उसने अपने दास अहिय्याह नबी से कहलाया था, समस्त इस्राएल

‡ 13:34 [2122]: चेतवनी के बाद भी यारोबाम द्वारा ऐसा करते रहना उचित नहीं था, और उसे परमेश्वर का दण्ड मिला। यारोबाम ही नहीं उसका सम्पूर्ण परिवार नष्ट हो गया। \* 14:2 [2122] [2122] [2122]: यारोबाम को भय था कि शीलोवासी अहिय्याह जिसने एक प्रकार से उसे राजा बनवाया था, कठिनाई से ही उसकी रानी को सुनाएगा। † 14:7 [212222] [21] [212222] [212222] [2122] [21] [21222222] [21222] [212222] [2122222222] [21] [21222222] [212222]: यारोबाम का राजा होना अहिय्याह द्वारा घोषित किया गया था, अतः वही भविष्यद्वक्ता उसके राज्य के छिन जाने से अवगत कराने के लिये नियुक्त किया गया।

ने उसको मिट्टी देकर उसके लिये शोक मनाया।

19 यारोबाम के और काम अर्थात् उसने कैसा-कैसा युद्ध किया, और कैसा राज्य किया, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है।

20 यारोबाम बाईस वर्ष तक राज्य करके मर गया और अपने पुरखाओं के संग जा मिला और नादाब नामक उसका पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ।

222222 22 222222

21 सुलैमान का पुत्र रहबाम यहूदा में राज्य करने लगा। रहबाम इकतालीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा; और यरूशलेम जिसको यहोवा ने सारे इस्राएली गोत्रों में से अपना नाम रखने के लिये चुन लिया था, उस नगर में वह सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नामाह था जो अम्मोनी स्त्री थी।

22 और यहूदी लोग वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और अपने पुरखाओं से भी अधिक पाप करके उसकी जलन भड़काई।

23 उन्होंने तो सब ऊँचे टीलों पर, और सब हरे वृक्षों के तले, ऊँचे स्थान, और लाठें, और अशेरा नामक मूरतें बना लीं।

24 और उनके देश में पुरुषगामी भी थे; वे उन जातियों के से सब घिनौने काम करते थे जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के सामने से निकाल दिया था।

25 राजा रहबाम के पाँचवें वर्ष में मिस्र का राजा शीशक, यरूशलेम पर चढ़ाई करके,

26 यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएँ और राजभवन की अनमोल वस्तुएँ, सब की सब उठा ले गया; और सोने की जो ढालें सुलैमान ने बनाई थी सब को वह ले गया।

27 इसलिए राजा रहबाम ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाई और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे।

28 और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता था तब-तब पहरुएँ उन्हें उठा ले चलते, और फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख देते थे।

29 रहबाम के और सब काम जो उसने किए वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

30 रहबाम और यारोबाम में तो सदा लड़ाई होती रही।

31 और रहबाम जिसकी माता नामाह नामक एक अम्मोनिन थी, वह मरकर अपने पुरखाओं के साथ जा मिला; और उन्हीं के पास दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र अबिय्याम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

## 15

22222222 22 222222

1 नबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याम यहूदा पर राज्य करने लगा।

2 और वह तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम माका था जो अबशालोम की पुत्री थी:

3 वह वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उसके पिता ने उससे पहले किए थे और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद के समान पूरी रीति से सिद्ध न था;

4 तो भी दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने यरूशलेम में उसे एक दीपक दिया अर्थात् उसके पुत्र को उसके बाद ठहराया और यरूशलेम को बनाए रखा।

5 क्योंकि दाऊद वह किया करता था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था और हित्ती ऊरिय्याह की बात के सिवाय और किसी बात में यहोवा की किसी आज्ञा से जीवन भर कभी न मुड़ा।

6 रहबाम के जीवन भर उसके और यारोबाम के बीच लड़ाई होती रही।

7 अबिय्याम के और सब काम जो उसने किए, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? और अबिय्याम की यारोबाम के साथ लड़ाई होती रही।

8 अबिय्याम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

2222 22 222222

9 इस्राएल के राजा यारोबाम के राज्य के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा पर राज्य करने लगा;

10 और यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक राज्य करता रहा, और उसकी माता अबशालोम की पुत्री माका थी।

11 और आसा ने अपने मूलपुरुष दाऊद के समान वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था।

12 उसने तो पुरुषगामियों को देश से निकाल दिया, और जितनी मूरतें उसके पुरखाओं ने बनाई थीं उन सभी को उसने दूर कर दिया।

13 वरन् उसकी माता माका जिसने अशेरा के लिये एक घिनौनी मूरत बनाई थी उसको उसने राजमाता के पद से उतार दिया, और आसा ने उसकी मूरत को काट डाला और किद्रोन के नाले में फूँक दिया।

14 परन्तु ऊँचे स्थान तो ढाए न गए; तो भी आसा का मन जीवन भर यहोवा की ओर पूरी रीति से लगा रहा।



15 और जो सोना चाँदी और पात्र उसके पिता ने अर्पण किए थे, और जो उसने स्वयं अर्पण किए थे, उन सभी को उसने यहोवा के भवन में पहुँचा दिया।

16 [2222 22 22222222 22 22222 22222 22 2222 22222 22 22222 22222 22 22222 22222 22 22222 22222 22222 22222]\*।

17 इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की, और रामाह को इसलिए दृढ़ किया कि कोई यहूदा के राजा आसा के पास आने-जाने न पाए।

18 तब आसा ने जितना सोना चाँदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में रह गया था उस सब को निकाल अपने कर्मचारियों के हाथ सौंपकर, दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास जो हेज्योन का पोता और तब्रिमोन का पुत्र था भेजकर यह कहा,

19 “जैसा मेरे और तेरे पिता के मध्य में वैसा ही मेरे और तेरे मध्य भी वाचा बाँधी जाए: देख, मैं तेरे पास चाँदी सोने की भेंट भेजता हूँ, इसलिए आ, इस्राएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को टाल दे, कि वह मेरे पास से चला जाए।”

20 राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदद ने अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई करवाकर इय्योन, दान, आबेल्मेत्माका और समस्त किन्नेरेत को और नप्ताली के समस्त देश को पूरा जीत लिया।

21 यह सुनकर बाशा ने रामाह को दृढ़ करना छोड़ दिया, और तिसर्सा में रहने लगा।

22 तब राजा आसा ने सारे यहूदा में प्रचार करवाया और कोई अनसुना न रहा, तब वे रामाह के पत्थरों और लकड़ी को जिनसे बाशा उसे दृढ़ करता था उठा ले गए, और उनसे राजा आसा ने बिन्यामीन के गेबा और मिस्पा को दृढ़ किया।

23 आसा के अन्य काम और उसकी वीरता और जो कुछ उसने किया, और जो नगर उसने दृढ़ किए, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? परन्तु उसके बुढ़ापे में तो उसे पाँवों का रोग लग गया।

24 आसा मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और उसे उसके मूलपुरुष दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दी गई और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

[22222 22 22222222]

\* 15:16 [2222 22 22222222 22 22222 22222 ... 22222 22222 22222]: आसा के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में बाशा इस्राएल का राजा बना था। (1 राजा.15:33) इन दोनों राज्यों की सीमा पर जो छोटे-मोटे युद्ध होते थे वे आसा और बाशा के सम्पूर्ण जीवन चलते रहे। \* 16:1 [22222]: यहू का पिता हनानी यहूदा के राज्य में आसा का भविष्यद्वक्ता था। (2इति. 16:7-10) उसका पुत्र यहू इस्राएल राज्य में यही पद सम्भाल रहा था, उत्तरकाल में यरूशलेमवासी दिखाई देता है जो यहोशापात के लिये भविष्यद्वानी कर रहा है।

25 यहूदा के राजा आसा के राज्य के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल पर राज्य करने लगा; और दो वर्ष तक राज्य करता रहा।

26 उसने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उसने इस्राएल से करवाया था।

27 नादाब सब इस्राएल समेत पलिशितियों के देश के गिब्वतोन नगर को घेरे था। और इस्साकार के गोत्र के अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके गिब्वतोन के पास उसको मार डाला।

28 और यहूदा के राजा आसा के राज्य के तीसरे वर्ष में बाशा ने नादाब को मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया।

29 राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला; उसने यारोबाम के वंश को यहाँ तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न रहा। यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उसने अपने दास शीलोवासी अहिय्याह से कहलवाया था।

30 यह इस कारण हुआ कि यारोबाम ने स्वयं पाप किए, और इस्राएल से भी करवाए थे, और उसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया था।

31 नादाब के और सब काम जो उसने किए, वह क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

32 आसा और इस्राएल के राजा बाशा के मध्य में तो उनके जीवन भर युद्ध होता रहा।

[22222 22 22222222]

33 यहूदा के राजा आसा के राज्य के तीसरे वर्ष में अहिय्याह का पुत्र बाशा, तिसर्सा में समस्त इस्राएल पर राज्य करने लगा, और चौबीस वर्ष तक राज्य करता रहा।

34 और उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, और यारोबाम के मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे उसने इस्राएल से करवाया था।

## 16

1 तब बाशा के विषय यहोवा का यह वचन हनानी के पुत्र [22222]\* के पास पहुँचा,

2 “मैंने तुझको मिट्टी पर से उठाकर अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान किया, परन्तु तू यारोबाम की सी

चाल चलता और मेरी प्रजा इस्राएल से ऐसे पाप कराता आया है जिनसे वे मुझे क्रोध दिलाते हैं।

3 सुन, मैं बाशा और उसके घराने की पूरी रीति से सफाई कर दूँगा और तेरे घराने को नबात के पुत्र यारोबाम के समान कर दूँगा।

4 बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खा डालेंगे, और उसका जो कोई मैदान में मर जाए, उसको आकाश के पक्षी खा डालेंगे।”

5 बाशा के और सब काम जो उसने किए, और उसकी वीरता यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

6 अन्त में बाशा मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और तिस्रा में उसे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र एला उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

7 यहोवा का जो वचन हनानी के पुत्र येहू के द्वारा बाशा और उसके घराने के विरुद्ध आया, वह न केवल उन सब बुराइयों के कारण आया जो उसने यारोबाम के घराने के समान होकर यहोवा की दृष्टि में किया था और अपने कामों से उसको क्रोधित किया, वरन् इस कारण भी आया, कि उसने उसको मार डाला था।

2222 22 222222

8 यहूदा के राजा आसा के राज्य के छब्बीसवें वर्ष में बाशा का पुत्र एला तिस्रा में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा।

9 जब वह तिस्रा में अर्सा नामक भण्डारी के घर में जो उसके तिस्रावाले भवन का प्रधान था, पीकर मतवाला हो गया था, तब उसके जिम्मी नामक एक कर्मचारी ने जो उसके आधे रथों का प्रधान था,

10 राजद्रोह की गोष्ठी की और भीतर जाकर उसको मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। यह यहूदा के राजा आसा के राज्य के सताईसवें वर्ष में हुआ।

11 और जब वह राज्य करने लगा, तब गद्दी पर बैठते ही उसने बाशा के पूरे घराने को मार डाला, वरन् उसने न तो उसके कुटुम्बियों और न उसके मित्रों में से एक लड़के को भी जीवित छोड़ा।

12 इस रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने येहू नबी के द्वारा बाशा के विरुद्ध कहा था, जिम्मी ने बाशा का समस्त घराना नष्ट कर दिया।

13 इसका कारण बाशा के सब पाप और उसके पुत्र एला के भी पाप थे, जो उन्होंने स्वयं आप करके और इस्राएल से भी करवाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातों से क्रोध दिलाया था।

14 एला के और सब काम जो उसने किए, वह क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं।

222222 22 222222

15 यहूदा के राजा आसा के सताईसवें वर्ष में जिम्मी तिस्रा में राज्य करने लगा, और तिस्रा में सात दिन तक राज्य करता रहा। उस समय लोग पलिशितयों के देश गिब्वतोन के विरुद्ध डेरे किए हुए थे।

16 तो जब उन डेरे लगाए हुए लोगों ने सुना, कि जिम्मी ने राजद्रोह की गोष्ठी करके राजा को मार डाला है, तो उसी दिन समस्त इस्राएल ने ओम्मी नामक प्रधान सेनापति को छावनी में इस्राएल का राजा बनाया।

17 तब ओम्मी ने समस्त इस्राएल को संग ले गिब्वतोन को छोड़कर तिस्रा को घेर लिया।

18 जब जिम्मी ने देखा, कि नगर ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मत में जाकर राजभवन में आग लगा दी, और उसी में स्वयं जल मरा।

19 यह उसके पापों के कारण हुआ क्योंकि उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, क्योंकि वह यारोबाम की सी चाल और उसके किए हुए और इस्राएल से करवाए हुए पाप की लीक पर चला।

20 जिम्मी के और काम और जो राजद्रोह की गोष्ठी उसने की, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

222222 22 222222

21 तब इस्राएली प्रजा दो भागों में बँट गई, प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी नामक गीनत के पुत्र को राजा बनाने के लिये उसी के पीछे हो लिए, और आधे ओम्मी के पीछे हो लिए।

22 अन्त में जो लोग ओम्मी के पीछे हुए थे वे उन पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र तिब्नी के पीछे हो लिए थे, इसलिए तिब्नी मारा गया और ओम्मी राजा बन गया।

23 यहूदा के राजा आसा के इकतीसवें वर्ष में ओम्मी इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसने छः वर्ष तो तिस्रा में राज्य किया।

24 और उसने शेमेर से सामरिया पहाड़ को दो किक्कार चाँदी में मोल लेकर, उस पर एक नगर बसाया; और अपने बसाए हुए नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के नाम पर सामरिया रखा।

† 16:25 2222 22 22... 2222 222222 22: ओम्मी ने अपने पूर्वजों को मूर्तिपूजा में पीछे छोड़ दिया था। अपने इस विधर्म के जोश में उसने बछड़े की पूजा को एक नियमित औपचारिक पूजा पद्धति बना दिया था जो उनकी सन्तानों में आ गई थी।



बहुत दिन तक खाते रहे।

16 यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा समाप्त हुआ, और न उस कुप्पी का तेल घटा।

17 इन बातों के बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी, रोगी हुआ, और उसका रोग यहाँ तक बढ़ा कि उसका साँस लेना बन्द हो गया।

18 तब वह एलिय्याह से कहने लगी, “**१७:१७-१८**! मेरा तुझे से क्या काम? क्या तू इसलिए मेरे यहाँ आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाए?”

19 उसने उससे कहा “अपना बेटा मुझे दे;” तब वह उसे उसकी गोद से लेकर उस अटारी पर ले गया जहाँ वह स्वयं रहता था, और अपनी खाट पर लिटा दिया।

20 तब उसने यहोवा को पुकारकर कहा, “हे मेरे परमेश्वर यहोवा! क्या तू इस विधवा का बेटा मार डालकर जिसके यहाँ मैं टिका हूँ, इस पर भी विपत्ति ले आया है?”

21 तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकारकर कहा, “हे मेरे परमेश्वर यहोवा! इस बालक का प्राण इसमें फिर डाल दे।”

22 एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उसमें फिर आ गया और वह जी उठा।

23 तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप दिया, “देख तेरा बेटा जीवित है।” **(१७:२०-२३)**

24 स्त्री ने एलिय्याह से कहा, “अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुँह से निकलता है, वह सच होता है।”

## 18

**१८:१-३**

1 बहुत दिनों के बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुँचा, “जाकर अपने आपको अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूँगा।”

2 तब एलिय्याह अपने आपको अहाब को दिखाने गया। उस समय सामरिया में अकाल भारी था।

3 अहाब ने **१८:१**\* को जो उसके घराने का दीवान था बुलवाया।

4 ओबद्याह तो यहोवा का भय यहाँ तक मानता था कि जब ईजेबेल यहोवा के नबियों को नाश करती थी,

तब ओबद्याह ने एक सौ नबियों को लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा; और अन्न जल देकर उनका पालन-पोषण करता रहा।

5 और अहाब ने ओबद्याह से कहा, “देश में जल के सब सोतों और सब नदियों के पास जा, कदाचित् इतनी घास मिले कि हम घोड़ों और खच्चरों को जीवित बचा सके, और हमारे सब पशु न मर जाएँ।”

6 अतः उन्होंने आपस में देश बाँटा कि उसमें होकर चलें; एक ओर अहाब और दूसरी ओर ओबद्याह चला।

7 ओबद्याह मार्ग में था, कि एलिय्याह उसको मिला; उसे पहचानकर वह मुँह के बल गिरा, और कहा, “हे मेरे प्रभु एलिय्याह, क्या तू है?”

8 उसने कहा “हाँ मैं ही हूँ: जाकर अपने स्वामी से कह, ‘एलिय्याह मिला है।’”

9 उसने कहा, “मैंने ऐसा क्या पाप किया है कि तू मुझे मरवा डालने के लिये अहाब के हाथ करना चाहता है?”

10 तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ कोई ऐसी जाति या राज्य नहीं, जिसमें मेरे स्वामी ने तुझे ढूँढने को न भेजा हो, और जब उन लोगों ने कहा, ‘वह यहाँ नहीं है,’ तब उसने उस राज्य या जाति को इसकी शपथ खिलाई कि वह नहीं मिला।

11 और अब तू कहता है, ‘जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलिय्याह यहाँ है।’

12 फिर ज्यों ही मैं तेरे पास से चला जाऊँगा, त्यों ही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहाँ उठा ले जाएगा, अतः जब मैं जाकर अहाब को बताऊँगा, और तू उसे न मिलेगा, तब वह मुझे मार डालेगा: परन्तु मैं तेरा दास अपने लड़कपन से यहोवा का भय मानता आया हूँ!

13 क्या मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया, कि जब ईजेबेल यहोवा के नबियों को घात करती थी तब मैंने क्या किया? कि यहोवा के नबियों में से एक सौ लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा, और उन्हें अन्न जल देकर पालता रहा।

14 फिर अब तू कहता है, ‘जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला है!’ तब वह मुझे घात करेगा।”

15 एलिय्याह ने कहा, “सेनाओं का यहोवा जिसके सामने मैं रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ आज मैं अपने आपको उसे दिखाऊँगा।”

16 तब ओबद्याह अहाब से मिलने गया, और उसको बता दिया; अतः अहाब एलिय्याह से मिलने चला।

17 एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, “हे इस्राएल के सतानेवाले क्या तू ही है?” **(१८:१७-१८)**

† 17:18 **१७:१७-१८**: यहूदियों और इस्राएलियों में भविष्यद्वक्ता के लिये यह एक सामान्य पदवी हो गई थी। \* 18:3 **१८:१**: इस नाम का अर्थ है यहोवा का सेवक, इससे उसका धर्मी चरित्र प्रगट होता है।



उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे कीशोन के नाले में ले जाकर मार डाला।

41 फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, “उठकर खा पी, क्योंकि [2222] [222222] [22] [22222222] सुन पड़ती है।”

42 तब अहाब खाने-पीने चला गया, और एलिय्याह कर्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिरकर अपना मुँह घुटनों के बीच किया,

43 और उसने अपने सेवक से कहा, “चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि करके देख,” तब उसने चढ़कर देखा और लौटकर कहा, “कुछ नहीं दिखता।” एलिय्याह ने कहा, “फिर सात बार जा।”

44 सातवीं बार उसने कहा, “देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है।” एलिय्याह ने कहा, “अहाब के पास जाकर कह, ‘रथ जुतवाकर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।’”

45 थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आँधी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार होकर यिज्जेल को चला। ([2222] 5:18)

46 तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी हुई; कि वह कमर बाँधकर अहाब के आगे-आगे यिज्जेल तक दौड़ता चला गया। ([2222] 12:35)

## 19

[22222222] [22] [222222] [2222]

1 जब अहाब ने [22222222]\* को एलिय्याह के सब काम विस्तार से बताए कि उसने सब नबियों को तलवार से किस प्रकार मार डाला।

2 तब ईजेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत के द्वारा कहला भेजा, “यदि मैं कल इसी समय तक तेरा प्राण उनका सा न कर डालूँ तो देवता मेरे साथ वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करें।”

3 यह देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा, और यहूदा के बेशेबा को पहुँचकर अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया।

4 और आप जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहाँ उसने यह कहकर अपनी मृत्यु माँगी, “हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि [2222] [222222] [2222222222] [22] [22222222] [222222] [222222]।”

‡ 18:41 [2222] [222222] [22] [22222222]: यह आवाज केवल भविष्यद्वक्ता के कानों में सुनाई पड़ा रही थी। यह एक रहस्यमय सूचना थी अकाल समाप्त होगा और उस दिन वर्षा होगी। \* 19:1 [22222222]: वह भी एक पुजारी की पुत्री थी। वह आगे चलकर संहार किए गए बाल पुजारियों का बदला लेने का संकल्प करेगी। † 19:4 [222] [2222] [22222222] [22] [222222] [222222] [2222]: अर्थात् मैं एक निर्बल मनुष्य हूँ और अपने से पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं से न तो अच्छा हूँ और न ही अधिक बलवन्त हूँ।

5 वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर कहा, “उठकर खा।”

6 उसने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने पत्थरों पर पकी हुई एक रोटी, और एक सुराही पानी रखा है; तब उसने खाया और पिया और फिर लेट गया।

7 दूसरी बार यहोवा का दूत आया और उसे छूकर कहा, “उठकर खा, क्योंकि तुझे बहुत लम्बी यात्रा करनी है।”

8 तब उसने उठकर खाया पिया; और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन-रात चलते-चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुँचा।

9 वहाँ वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, “हे एलिय्याह तेरा यहाँ क्या काम?”

10 उसने उत्तर दिया “सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूँ; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।”

11 उसने कहा, “निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो।” और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के सामने एक बड़ी प्रचण्ड आँधी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तो भी यहोवा उस आँधी में न था; फिर आँधी के बाद भूकम्प हुआ, तो भी यहोवा उस भूकम्प में न था।

12 फिर भूकम्प के बाद आग दिखाई दी, तो भी यहोवा उस आग में न था; फिर आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया।

13 यह सुनते ही एलिय्याह ने अपना मुँह चद्दर से ढाँपा, और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया, “हे एलिय्याह तेरा यहाँ क्या काम?”

14 उसने कहा, “मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, और तेरी वेदियों को गिरा दिया है और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है; और मैं ही अकेला रह गया हूँ; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।” ([2222] 11:3)

15 यहोवा ने उससे कहा, “लौटकर दमिश्क के जंगल को जा, और वहाँ पहुँचकर अराम का राजा होने के लिये हजाएल का,







कि वह घायल हुआ।

38 तब वह नबी चला गया, और आँखों को पगड़ी से ढाँपकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग पर खड़ा रहा।

39 जब राजा पास होकर जा रहा था, तब उसने उसकी दुहाई देकर कहा, “जब तेरा दास युद्ध क्षेत्र में गया था तब कोई मनुष्य मेरी ओर मुड़कर किसी मनुष्य को मेरे पास ले आया, और मुझसे कहा, ‘इस मनुष्य की चौकसी कर; यदि यह किसी रीति छूट जाए, तो उसके प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना होगा; नहीं तो किककार भर चाँदी देना पड़ेगा।’

40 उसके बाद तेरा दास इधर-उधर काम में फँस गया, फिर वह न मिला।” इस्राएल के राजा ने उससे कहा, “तेरा ऐसा ही न्याय होगा; तूने आप अपना न्याय किया है।”

41 नबी ने झट अपनी आँखों से पगड़ी उठाई, तब इस्राएल के राजा ने उसे पहचान लिया, कि वह कोई नबी है।

42 तब उसने राजा से कहा, “यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘इसलिए कि तूने अपने हाथ से ऐसे एक मनुष्य को जाने दिया, जिसे मैंने सत्यानाश हो जाने को ठहराया था, तुझे उसके प्राण के बदले अपना प्राण और उसकी प्रजा के बदले, अपनी प्रजा देनी पड़ेगी।’”

43 तब इस्राएल का राजा उदास और अप्रसन्न होकर घर की ओर चला, और सामरिया को आया।

## 21

ⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ  
ⓂⓂⓂⓂⓂ

1 नाबोत नामक एक यिज्जेली की एक दाख की बारी सामरिया के राजा अहाब के राजभवन के पास यिज्जेल में थी।

2 इन बातों के बाद अहाब ने नाबोत से कहा, “तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मैं उसमें साग-पात की बारी लगाऊँ; और मैं उसके बदले तुझे उससे अच्छी एक वाटिका दूँगा, नहीं तो तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दे दूँगा।”

3 नाबोत ने अहाब से कहा, “यहोवा न करे कि मैं अपने पुरखाओं का निज भाग तुझे दूँ।”

4 यिज्जेली नाबोत के इस वचन के कारण “मैं तुझे अपने पुरखाओं का निज भाग न दूँगा,” अहाब उदास और अप्रसन्न होकर अपने घर गया, और बिछौने पर लेट गया और मुँह फेर लिया, और कुछ भोजन न किया।

5 तब उसकी पत्नी ईजेबेल ने उसके पास आकर पूछा, “तेरा मन क्यों ऐसा उदास है कि तू कुछ भोजन नहीं करता?”

6 उसने कहा, “कारण यह है, कि मैंने यिज्जेली नाबोत से कहा ‘रुपया लेकर मुझे अपनी दाख की बारी दे, नहीं तो यदि तू चाहे तो मैं उसके बदले दूसरी दाख की बारी दूँगा’; और उसने कहा, ‘मैं अपनी दाख की बारी तुझे न दूँगा।’”

7 उसकी पत्नी ईजेबेल ने उससे कहा, “क्या तू इस्राएल पर राज्य करता है कि नहीं? उठकर भोजन कर; और तेरा मन आनन्दित हो; यिज्जेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूँगी।”

8 तब उसने अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उसकी ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ\* लगाकर, उन पुरनियों और रईसों के पास भेज दी जो उसी नगर में नाबोत के पड़ोस में रहते थे।

9 उस चिट्ठी में उसने यह लिखा, “उपवास का प्रचार करो, और नाबोत को लोगों के सामने ऊँचे स्थान पर बैठाना।

10 तब दो नीच जनों को उसके सामने बैठाना जो साक्षी देकर उससे कहें, ‘तूने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की।’ तब तुम लोग उसे बाहर ले जाकर उसको पथरवाह करना, कि वह मर जाए।”

11 ईजेबेल की चिट्ठी में की आज्ञा के अनुसार नगर में रहनेवाले पुरनियों और रईसों ने उपवास का प्रचार किया,

12 और नाबोत को लोगों के सामने ऊँचे स्थान पर बैठाया।

13 तब दो नीच जन आकर उसके सम्मुख बैठ गए; और उन नीच जनों ने लोगों के सामने नाबोत के विरुद्ध यह साक्षी दी, “नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की।” इस पर उन्होंने उसे नगर से बाहर ले जाकर उसको पथरवाह किया, और वह मर गया।

14 तब उन्होंने ईजेबेल के पास यह कहला भेजा कि नाबोत पथरवाह करके मार डाला गया है।

15 यह सुनते ही कि नाबोत पथरवाह करके मार डाला गया है, ईजेबेल ने अहाब से कहा, “उठकर यिज्जेली नाबोत की दाख की बारी को जिसे उसने तुझे रुपया लेकर देने से भी इन्कार किया था अपने अधिकार में ले, क्योंकि नाबोत जीवित नहीं परन्तु वह मर गया है।”

16 यिज्जेली नाबोत की मृत्यु का समाचार पाते ही अहाब उसकी दाख की बारी अपने अधिकार में लेने के लिये वहाँ जाने को उठ खड़ा हुआ।

\* 21:8 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂ: अँगुठी से मुहर लगाना एक अति प्राचीन खोज थी। यहूदा की अँगुठी और फ़िरौन की राजमुद्रा की अँगुठी का उल्लेख उत्पत्ति में है। (उत्प.38:18; उत्प.41:42)

17 तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुँचा,

18 “चल, सामरिया में रहनेवाले इस्राएल के राजा अहाब से मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहाँ गया है।

19 और उससे यह कहना, कि यहोवा यह कहता है, ‘क्या तूने घात किया, और अधिकारी भी बन बैठा?’ फिर तू उससे यह भी कहना, कि यहोवा यह कहता है, ‘जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लहू चाटेंगे।’”

20 एलिय्याह को देखकर अहाब ने कहा, “हे मेरे शत्रु! क्या तूने मेरा पता लगाया है?” उसने कहा, “हाँ, लगाया तो है; और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तूने अपने को बेच डाला है।

21 मैं तुझे पर ऐसी विपत्ति डालूँगा, कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूँगा; और तेरे घर के एक-एक लडके को और क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहनेवाले को भी नाश कर डालूँगा।

22 और मैं तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूँगा; इसलिए कि तूने मुझे क्रोधित किया है, और इस्राएल से पाप करवाया है।

23 और ईजेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, ‘यिज्जेल के किले के पास कुत्ते ईजेबेल को खा डालेंगे।’

24 अहाब का जो कोई नगर में मर जाएगा उसको कुत्ते खा लेंगे; और जो कोई मैदान में मर जाएगा उसको आकाश के पक्षी खा जाएँगे।”

25 सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जिसने अपनी पत्नी ~~22:25~~ वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था।

26 वह तो उन एमोरियों के समान जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के सामने से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने काम करता था, अर्थात् मूरतों की उपासना करने लगा था।

27 एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े, और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे पाँवों चलने लगा।

28 और यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुँचा,

29 “क्या तूने देखा है कि अहाब मेरे सामने नम्र बन गया है? इस कारण कि वह मेरे सामने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूँगा परन्तु उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेजूँगा।”

## 22

~~22:29~~ ~~22:30~~ ~~22:31~~ ~~22:32~~

1 तीन वर्ष तक अरामी और इस्राएली बिना युद्ध के रहे।

2 तीसरे वर्ष में यहूदा का राजा यहोशापात इस्राएल के राजा के पास गया।

3 तब इस्राएल के राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, “क्या तुम को मालूम है, कि गिलाद का रामोत हमारा है? फिर हम क्यों चुपचाप रहते और उसे अराम के राजा के हाथ से क्यों नहीं छीन लेते हैं?”

4 और उसने यहोशापात से पूछा, “क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत से लड़ने के लिये जाएगा?” यहोशापात ने इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, “जैसा तू है वैसा मैं भी हूँ। जैसी तेरी प्रजा है वैसी ही मेरी भी प्रजा है, और जैसे तेरे घोड़े हैं वैसे ही मेरे भी घोड़े हैं।”

5 फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, “आज यहोवा की इच्छा मालूम कर ले।”

6 तब इस्राएल के राजा ने ~~22:33~~ को जो कोई चार सौ पुरुष थे इकट्ठा करके उनसे पूछा, “क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करूँ, या रुका रहूँ?” उन्होंने उत्तर दिया, “चढ़ाई कर: क्योंकि प्रभु उसको राजा के हाथ में कर देगा।”

7 परन्तु यहोशापात ने पूछा, “क्या यहाँ यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिससे हम पूछ लें?”

8 इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, “हाँ, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरुष और है जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं? परन्तु मैं उससे घृणा रखता हूँ, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं वरन् हानि ही की भविष्यद्वानी करता है।”

9 यहोशापात ने कहा, “राजा ऐसा न कहे।” तब इस्राएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा, “यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ।”

† 21:25 ~~21:25~~ ~~21:26~~ ~~21:27~~ ~~21:28~~ ~~21:29~~ ~~21:30~~ ~~21:31~~ ~~21:32~~ ~~21:33~~ ~~21:34~~ ~~21:35~~ ~~21:36~~ ~~21:37~~ ~~21:38~~ ~~21:39~~ ~~21:40~~ ~~21:41~~ ~~21:42~~ ~~21:43~~ ~~21:44~~ ~~21:45~~ ~~21:46~~ ~~21:47~~ ~~21:48~~ ~~21:49~~ ~~21:50~~ ~~21:51~~ ~~21:52~~ ~~21:53~~ ~~21:54~~ ~~21:55~~ ~~21:56~~ ~~21:57~~ ~~21:58~~ ~~21:59~~ ~~21:60~~ ~~21:61~~ ~~21:62~~ ~~21:63~~ ~~21:64~~ ~~21:65~~ ~~21:66~~ ~~21:67~~ ~~21:68~~ ~~21:69~~ ~~21:70~~ ~~21:71~~ ~~21:72~~ ~~21:73~~ ~~21:74~~ ~~21:75~~ ~~21:76~~ ~~21:77~~ ~~21:78~~ ~~21:79~~ ~~21:80~~ ~~21:81~~ ~~21:82~~ ~~21:83~~ ~~21:84~~ ~~21:85~~ ~~21:86~~ ~~21:87~~ ~~21:88~~ ~~21:89~~ ~~21:90~~ ~~21:91~~ ~~21:92~~ ~~21:93~~ ~~21:94~~ ~~21:95~~ ~~21:96~~ ~~21:97~~ ~~21:98~~ ~~21:99~~ ~~21:100~~ आहाब के राज्य का सम्पूर्ण इतिहास यही दर्शाता है कि वह अपनी अभिमानी पत्नी का गुलाम था।

\* 22:6

~~22:6~~ ~~22:7~~ ~~22:8~~ ~~22:9~~ ~~22:10~~ ~~22:11~~ ~~22:12~~ ~~22:13~~ ~~22:14~~ ~~22:15~~ ~~22:16~~ ~~22:17~~ ~~22:18~~ ~~22:19~~ ~~22:20~~ ~~22:21~~ ~~22:22~~ ~~22:23~~ ~~22:24~~ ~~22:25~~ ~~22:26~~ ~~22:27~~ ~~22:28~~ ~~22:29~~ ~~22:30~~ ~~22:31~~ ~~22:32~~ ~~22:33~~ ~~22:34~~ ~~22:35~~ ~~22:36~~ ~~22:37~~ ~~22:38~~ ~~22:39~~ ~~22:40~~ ~~22:41~~ ~~22:42~~ ~~22:43~~ ~~22:44~~ ~~22:45~~ ~~22:46~~ ~~22:47~~ ~~22:48~~ ~~22:49~~ ~~22:50~~ ~~22:51~~ ~~22:52~~ ~~22:53~~ ~~22:54~~ ~~22:55~~ ~~22:56~~ ~~22:57~~ ~~22:58~~ ~~22:59~~ ~~22:60~~ ~~22:61~~ ~~22:62~~ ~~22:63~~ ~~22:64~~ ~~22:65~~ ~~22:66~~ ~~22:67~~ ~~22:68~~ ~~22:69~~ ~~22:70~~ ~~22:71~~ ~~22:72~~ ~~22:73~~ ~~22:74~~ ~~22:75~~ ~~22:76~~ ~~22:77~~ ~~22:78~~ ~~22:79~~ ~~22:80~~ ~~22:81~~ ~~22:82~~ ~~22:83~~ ~~22:84~~ ~~22:85~~ ~~22:86~~ ~~22:87~~ ~~22:88~~ ~~22:89~~ ~~22:90~~ ~~22:91~~ ~~22:92~~ ~~22:93~~ ~~22:94~~ ~~22:95~~ ~~22:96~~ ~~22:97~~ ~~22:98~~ ~~22:99~~ ~~22:100~~ अति सम्भव है कि बछड़े की पूजा से सम्बंधित नबी, परमेश्वर यहोवा के सच्चे भविष्यद्वक्ता नहीं।



बीच छेदकर लगा; तब उसने अपने सारथी से कहा, “मैं घायल हो गया हूँ इसलिए बागडोर फेरकर मुझे सेना में से बाहर निकाल ले चल।”

35 और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और राजा अपने रथ में औरों के सहारे अरामियों के सम्मुख खड़ा रहा, और साँझ को मर गया; और उसके घाव का लहू बहकर रथ के पायदान में भर गया।

36 सूर्य डूबते हुए सेना में यह पुकार हुई, “हर एक अपने नगर और अपने देश को लौट जाए।”

37 जब राजा मर गया, तब सामरिया को पहुँचाया गया और सामरिया में उसे मिट्टी दी गई।

38 और यहोवा के वचन के अनुसार जब उसका रथ सामरिया के जलकुण्ड में धोया गया, तब कुत्तों ने उसका लहू चाट लिया, और वेश्याएँ यहीं स्नान करती थीं।

39 अहाब के और सब काम जो उसने किए, और हाथी दाँत का जो भवन उसने बनाया, और जो-जो नगर उसने बसाए थे, यह सब क्या इस्राएली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

40 अतः अहाब मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र अहज्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

इस्राएल के राजा अहाब के राज्य के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राज्य करने लगा।

41 इस्राएल के राजा अहाब के राज्य के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राज्य करने लगा।

42 जब यहोशापात राज्य करने लगा, तब वह पैंतीस वर्ष का था और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी।

43 और उसकी चाल सब प्रकार से उसके पिता आसा की सी थी, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा, और उससे कुछ न मुड़ा। तो भी ऊँचे स्थान ढाए न गए, प्रजा के लोग ऊँचे स्थानों पर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी जलाया करते थे।

44 यहोशापात ने इस्राएल के राजा से मेल किया।

45 यहोशापात के काम और जो वीरता उसने दिखाई, और उसने जो-जो लड़ाइयाँ की, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

46 पुरुषगामियों में से जो उसके पिता आसा के दिनों में रह गए थे, उनको उसने देश में से नाश किया।

47 उस समय एदोम में कोई राजा न था; एक नायब राजकाज का काम करता था।

‡ 22:52 इस्राएल के राजा अहाब के राज्य के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राज्य करने लगा, तब वह पैंतीस वर्ष का था और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी। और उसकी चाल सब प्रकार से उसके पिता आसा की सी थी, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा, और उससे कुछ न मुड़ा। तो भी ऊँचे स्थान ढाए न गए, प्रजा के लोग ऊँचे स्थानों पर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी जलाया करते थे। यहोशापात ने इस्राएल के राजा से मेल किया। यहोशापात के काम और जो वीरता उसने दिखाई, और उसने जो-जो लड़ाइयाँ की, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? पुरुषगामियों में से जो उसके पिता आसा के दिनों में रह गए थे, उनको उसने देश में से नाश किया। उस समय एदोम में कोई राजा न था; एक नायब राजकाज का काम करता था।

48 फिर यहोशापात ने तर्शाश के जहाज सोना लाने के लिये ओपीर जाने को बनवा लिए, परन्तु वे एस्योनगेबेर में टूट गए, इसलिए वहाँ न जा सके।

49 तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, “मेरे जहाजियों को अपने जहाजियों के संग, जहाजों में जाने दे;” परन्तु यहोशापात ने इन्कार किया।

50 यहोशापात मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसको उसके पुरखाओं के साथ उसके मूलपुरुष दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

यहूदा के राजा यहोशापात के राज्य के सत्रहवें वर्ष में अहाब का पुत्र अहज्याह सामरिया में इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य करता रहा।

51 यहूदा के राजा यहोशापात के राज्य के सत्रहवें वर्ष में अहाब का पुत्र अहज्याह सामरिया में इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य करता रहा।

52 और उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। और इस्राएल के राजा अहज्याह के राज्य के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राज्य करने लगा, तब वह पैंतीस वर्ष का था और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी। और उसकी चाल सब प्रकार से उसके पिता आसा की सी थी, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा, और उससे कुछ न मुड़ा। तो भी ऊँचे स्थान ढाए न गए, प्रजा के लोग ऊँचे स्थानों पर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी जलाया करते थे। यहोशापात ने इस्राएल के राजा से मेल किया। यहोशापात के काम और जो वीरता उसने दिखाई, और उसने जो-जो लड़ाइयाँ की, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? पुरुषगामियों में से जो उसके पिता आसा के दिनों में रह गए थे, उनको उसने देश में से नाश किया। उस समय एदोम में कोई राजा न था; एक नायब राजकाज का काम करता था।

53 जैसे उसका पिता बालू की उपासना और उसे दण्डवत् करने से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित करता रहा वैसे ही अहज्याह भी करता रहा।

## राजाओं की दूसरी पुस्तक

११११

1 राजाओं तथा 2 राजाओं मूल में एक ही पुस्तक थी। यहूदी परम्परा के अनुसार भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह 2 राजाओं की पुस्तक का लेखक माना जाता है, परन्तु आधुनिक बाइबल इस पुस्तक को अज्ञात लेखकों का कार्य मानते हैं। इन लेखकों को विधान को महत्त्व देनेवाले लेखक कहा जाता है। 2 राजाओं की पुस्तक में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का विषय संजोया गया है अर्थात् परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन आशीष लाता है और अवज्ञा श्राप लाती है।

११११ ११११ १११ १११११

लगभग 590 - 538 ई. पू.

इसके लेखनकाल में प्रथम मन्दिर स्थित था। (1 राजा. 8:8)

११११११

इस्राएल और सब बाइबल पाठक

११११११११

2 राजाओं की पुस्तक 1 राजाओं की पुस्तक की उत्तर कथा है। यह विभाजित राज्य, इस्राएल एवं यहूदा, के राजाओं की कहानी है। 2 राजाओं की पुस्तक का अन्त इस्राएल का अशूर देश की बन्धुआई में जाने और यहूदा का बाबेल की बन्धुआई में जाने के साथ होता है।

१११ ११११

प्रकीर्णन

रूपरेखा

1. एलीशा की सेवा — 1:1-8:29
2. आहाब के वंश का अन्त — 9:1-11:21
3. योआश से इस्राएल के अन्त तक — 12:1-17:41
4. हिजकिय्याह से यहूदिया के अन्त तक — 18:1-25:30

११११११११ ११ १११११११

1 अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के विरुद्ध बलवा करने लगा।

2 अहज्याह एक जालीदार खिड़की में से, जो सामरिया में उसकी अटारी में थी, गिर पड़ा, और बीमार हो गया। तब उसने दूतों को यह कहकर भेजा, “तुम जाकर एक्रोन के ११११-१११११\* नामक देवता से यह पूछ आओ, कि क्या मैं इस बीमारी से बचूंगा कि नहीं?”

3 तब यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा, “उठकर सामरिया के राजा के दूतों से मिलने को जा, और उनसे कह, ‘क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम एक्रोन के बाल-जबूब देवता से पूछने जाते हो?’

4 इसलिए अब यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।’” तब एलिय्याह चला गया।

5 जब अहज्याह के दूत उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे पूछा, “तुम क्यों लौट आए हो?”

6 उन्होंने उससे कहा, “एक मनुष्य हम से मिलने को आया, और कहा कि, ‘जिस राजा ने तुम को भेजा उसके पास लौटकर कहो, यहोवा यह कहता है, कि क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तू एक्रोन के बाल-जबूब देवता से पूछने को भेजता है? इस कारण जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।’”

7 उसने उनसे पूछा, “जो मनुष्य तुम से मिलने को आया, और तुम से ये बातें कहीं, उसका कैसा रंग-रूप था?”

8 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “वह तो रोंआर मनुष्य था और अपनी कमर में चमड़े का फेंटा बाँधे हुए था।” उसने कहा, “वह तिशबी एलिय्याह होगा।” (१११११११ 3:4, १११. 1:6)

9 तब उसने उसके पास पचास सिपाहियों के एक प्रधान को उसके पचासों सिपाहियों समेत भेजा। प्रधान ने एलिय्याह के पास जाकर क्या देखा कि वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। उसने उससे कहा, “हे परमेश्वर के भक्त राजा ने कहा है, ‘तू उतर आ।’”

10 एलिय्याह ने उस पचास सिपाहियों के प्रधान से कहा, “यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले।” तब आकाश से आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर दिया। (१११११११. 11:5)

11 फिर राजा ने उसके पास पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया। प्रधान ने उससे कहा, “हे परमेश्वर के भक्त राजा ने कहा है, ‘फुर्ती से तू उतर आ।’”

12 एलिय्याह ने उत्तर देकर उनसे कहा, “यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे और तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले।” तब आकाश से परमेश्वर की आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर दिया।

\* 1:2 ११११-१११११: जिसका वास्तविक अर्थ है, मक्खियों का देवता, पूर्व के देशों में मक्खियाँ अत्यधिक भयानक महामारी लाती थीं।



का परमेश्वर यहोवा कहाँ है?” जब उसने जल पर मारा, तब वह इधर-उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया।

15 उसे देखकर भविष्यद्वक्ताओं के दल जो यरीहो में उसके सामने थे, कहने लगे, “एलिय्याह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है।” अतः वे उससे मिलने को आए और उसके सामने भूमि तक झुककर दण्डवत् की।

16 तब उन्होंने उससे कहा, “सुन, तेरे दासों के पास पचास बलवान पुरुष हैं, वे जाकर तेरे स्वामी को ढूँढ़ें, सम्भव है कि क्या जाने यहोवा के आत्मा ने उसको उठाकर किसी पहाड़ पर या किसी तराई में डाल दिया हो।” उसने कहा, “मत भेजो।”

17 जब उन्होंने उसको यहाँ तक दबाया कि वह लज्जित हो गया, तब उसने कहा, “भेज दो।” अतः उन्होंने पचास पुरुष भेज दिए, और वे उसे तीन दिन तक ढूँढ़ते रहे परन्तु न पाया।

18 उस समय तक वह यरीहो में ठहरा रहा, अतः जब वे उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे कहा, “क्या मैंने तुम से न कहा था, कि मत जाओ?”

☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

19 उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, “देख, यह नगर मनभावने स्थान पर बसा है, जैसा मेरा प्रभु देखता है परन्तु पानी बुरा है; और भूमि गर्भ गिरानेवाली है।”

20 उसने कहा, “एक नये प्याले में नमक डालकर मेरे पास ले आओ।” वे उसे उसके पास ले आए।

21 तब वह जल के सोते के पास गया, और उसमें नमक डालकर कहा, “यहोवा यह कहता है, कि मैं यह पानी ठीक कर देता हूँ, जिससे वह फिर कभी मृत्यु या गर्भ गिरने का कारण न होगा।”

22 एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया, और आज तक ऐसा ही है।

23 वहाँ से वह बेतेल को चला, और मार्ग की चढ़ाई में चल रहा था कि नगर से छोटे लड़के निकलकर उसका उपहास करके कहने लगे, “हे चन्दुए चढ़ जा, हे चन्दुए चढ़ जा।”

24 तब उसने पीछे की ओर फिरकर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम से उनको श्राप दिया, तब जंगल में से दो रीछनियों ने निकलकर उनमें से बयालीस लड़के फाड़ डाले।

25 वहाँ से वह कर्मेल को गया, और फिर वहाँ से सामरिया को लौट गया।

### 3

☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞

1 यहूदा के राजा यहोशापात के राज्य के अठारहवें वर्ष में अहाब का पुत्र यहोराम सामरिया में राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा।

2 उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था तो भी उसने अपने माता-पिता के बराबर नहीं किया वरन् अपने पिता की बनवाई हुई बाल के स्तम्भ को दूर किया।

3 तो भी वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे पापों में जैसे उसने इस्राएल से भी कराए लिपटा रहा और उनसे न फिरा।

4 मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़-बकरियाँ रखता था, और इस्राएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़ों का ऊन कर की रीति से दिया करता था।

5 जब अहाब मर गया, तब मोआब के राजा ने इस्राएल के राजा से बलवा किया।

6 उस समय राजा यहोराम ने सामरिया से निकलकर सारे इस्राएल की गिनती ली।

7 और उसने जाकर यहूदा के राजा यहोशापात के पास यह सन्देश भेजा, “मोआब के राजा ने मुझसे बलवा किया है, क्या तू मेरे संग मोआब से लड़ने को चलेगा?” उसने कहा, “हाँ मैं चलूँगा, जैसा तू वैसा मैं, जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी प्रजा, और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे भी घोड़े हैं।”

8 फिर उसने पूछा, “हम किस मार्ग से जाएँ?” उसने उत्तर दिया, “एदोम के जंगल से होकर।”

9 तब इस्राएल का राजा, और यहूदा का राजा, और एदोम का राजा चले और जब सात दिन तक घूमकर चल चुके, तब सेना और उसके पीछे-पीछे चलनेवाले पशुओं के लिये कुछ पानी न मिला।

10 और इस्राएल के राजा ने कहा, “हाय! यहोवा ने इन तीन राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि उनको मोआब के हाथ में कर दे।”

11 परन्तु यहोशापात ने कहा, “क्या यहाँ ☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞\*”, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछें?” इस्राएल के राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, “हाँ, शापात का पुत्र एलीशा जो एलिय्याह के हाथों को धुलाया करता था वह तो यहाँ है।”

12 तब यहोशापात ने कहा, “उसके पास यहोवा का वचन पहुँचा करता है।” तब इस्राएल का राजा और यहोशापात और एदोम का राजा उसके पास गए।

\* 3:11 ☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: यह जानना आवश्यक था क्योंकि वहाँ बाल के अनेक नबी थे।

13 तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, “मेरा तुझ से क्या काम है? अपने पिता के भविष्यद्वक्ताओं और अपनी माता के नबियों के पास जा।” इस्राएल के राजा ने उससे कहा, “ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन तीनों राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि इनको मोआब के हाथ में कर दे।”

14 एलीशा ने कहा, “सेनाओं का यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहा करता हूँ, उसके जीवन की शपथ यदि मैं यहूदा के राजा यहोशापात का आदरमान न करता, तो मैं न तो तेरी ओर मुँह करता और न तुझ पर दृष्टि करता।

15 अब कोई बजानेवाला मेरे पास ले आओ।” जब बजानेवाला बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति एलीशा पर हुई

16 और उसने कहा, “इस नाले में तुम लोग इतना खोदो, कि इसमें गड़े ही गड़े हो जाएँ।

17 क्योंकि यहोवा यह कहता है, ‘तुम्हारे सामने न तो वायु चलेगी, और न वर्षा होगी; तो भी यह नदी पानी से भर जाएगी; और अपने गाय बैलों और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे।

18 और यह यहोवा की दृष्टि में छोटी सी बात है; यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा।

19 तब तुम सब गढ़वाले और उत्तम नगरों को नाश करना, और सब अच्छे-वृक्षों को काट डालना, और जल के सब सोतों को भर देना, और सब अच्छे खेतों में पत्थर फेंककर उन्हें बिगाड़ देना।”

20 सवेरे को अन्नबलि चढ़ाने के समय एदोम की ओर से जल बह आया, और देश जल से भर गया।

21 यह सुनकर कि राजाओं ने हम से युद्ध करने के लिये चढ़ाई की है, जितने मोआबियों की अवस्था हथियार बाँधने योग्य थी, वे सब बुलाकर इकट्ठे किए गए, और सीमा पर खड़े हुए।

22 सवेरे को जब वे उठे उस समय सूर्य की किरणें उस जल पर ऐसी पड़ीं कि वह मोआबियों के सामने की ओर से लहू सा लाल दिखाई पड़ा।

23 तो वे कहने लगे, “वह तो लहू होगा, निःसन्देह वे राजा एक दूसरे को मारकर नाश हो गए हैं, इसलिए अब हे मोआबियों लूट लेने को जाओ।”

24 और जब वे इस्राएल की छावनी के पास आए ही थे, कि इस्राएली उठकर मोआबियों को मारने लगे और वे उनके सामने से भाग गए; और वे मोआब को मारते-मारते उनके देश में पहुँच गए।

25 और उन्होंने नगरों को ढा दिया, और सब अच्छे

खेतों में एक-एक पुरुष ने अपना-अपना पत्थर डालकर उन्हें भर दिया; और जल के सब सोतों को भर दिया; और सब अच्छे-वृक्षों को काट डाला, यहाँ तक कि कीरहरासत के पत्थर तो रह गए, परन्तु उसको भी चारों ओर गोफन चलानेवालों ने जाकर मारा।

26 यह देखकर कि हम युद्ध में हार चले, मोआब के राजा ने सात सौ तलवार रखनेवाले पुरुष संग लेकर एदोम के राजा तक पाँति चीरकर पहुँचने का यत्न किया परन्तु पहुँच न सका।

27 तब उसने अपने जेठे पुत्र को जो उसके स्थान में राज्य करनेवाला था पकड़कर शहरपनाह पर होमबलि चढ़ाया। इस कारण इस्राएल पर बड़ा ही क्रोध हुआ, इसलिए वे उसे छोड़कर अपने देश को लौट गए।

## 4

?????? ?? ???? ?????????????????

1 भविष्यद्वक्ताओं के दल में से एक की स्त्री ने एलीशा की दुहाई देकर कहा, “तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था, वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए।”

2 एलीशा ने उससे पूछा, “मैं तेरे लिये क्या करूँ? मुझे बता कि तेरे घर में क्या है?” उसने कहा, “तेरी दासी के घर में एक हाण्डी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है।”

3 उसने कहा, “तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसिनों से खाली बर्तन माँग ले आ, और थोड़े बर्तन न लाना।

4 फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द करके उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना।”

5 तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बर्तन लाते गए और वह उण्डेलती गई।

6 जब बर्तन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, “मेरे पास एक और भी ले आ;” उसने उससे कहा, “और बर्तन तो नहीं रहा।” तब तेल रुक गया।

7 तब उसने जाकर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। और उसने कहा, “जा तेल बेचकर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उससे तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।”

8 फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहाँ एक कुलीन स्त्री थी, और उसने उसे रोटी खाने के लिये विनती करके विवश किया। अतः जब जब वह उधर से जाता, तब-तब वह वहाँ रोटी खाने को उतरता था।



9 और उस स्त्री ने अपने पति से कहा, “सुन यह जो बार बार हमारे यहाँ से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है।

10 हम दीवार पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएँ, और उसमें उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहाँ आए, तब-तब उसी में टिका करे।”

11 एक दिन की बात है, कि वह वहाँ जाकर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में लेट गया।

12 और उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, “उस शूनेमिन को बुला ले।” उसके बुलाने से वह उसके सामने खड़ी हुई।

13 तब उसने गेहजी से कहा, “इससे कह, कि तूने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिये क्या किया जाए? क्या तेरी चर्चा राजा, या प्रधान सेनापति से की जाए?” उसने उत्तर दिया, “*[2:22 22 2:22 22 2:22 22 2:22 22 2:22 22]*”।

14 फिर उसने कहा, “तो इसके लिये क्या किया जाए?” गेहजी ने उत्तर दिया, “निश्चय उसके कोई लड़का नहीं, और उसका पति बूढ़ा है।”

15 उसने कहा, “उसको बुला ले।” और जब उसने उसे बुलाया, तब वह द्वार में खड़ी हुई।

16 तब उसने कहा, “वसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी।” स्त्री ने कहा, “हे मेरे प्रभु! हे परमेश्वर के भक्त ऐसा नहीं, अपनी दासी को धोखा न दे।”

17 स्त्री को गर्भ रहा, और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उससे कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ।

18 जब लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवनेवालों के निकट निकल गया।

19 और उसने अपने पिता से कहा, “आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर।” तब पिता ने अपने सेवक से कहा, “इसको इसकी माता के पास ले जा।”

20 वह उसे उठाकर उसकी माता के पास ले गया, फिर वह दोपहर तक उसके घुटनों पर बैठा रहा, तब मर गया।

21 तब उसने चढ़कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया, और निकलकर किवाड़ बन्द किया, तब उतर गई।

22 तब उसने अपने पति से पुकारकर कहा, “मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के भक्त के यहाँ झटपट हो आऊँ।”

23 उसने कहा, “आज तू उसके यहाँ क्यों जाएगी? आज न तो नये चाँद का, और न विश्राम का दिन है;” उसने कहा, “कल्याण होगा।”

24 तब उस स्त्री ने गदही पर काठी बाँधकर अपने सेवक से कहा, “हाँके चल; और मेरे कहे बिना हाँकने में ढिलाई न करना।”

25 तो वह चलते-चलते कर्मल पर्वत को परमेश्वर के भक्त के निकट पहुँची।

उसे दूर से देखकर परमेश्वर के भक्त ने अपने सेवक गेहजी से कहा, “देख, उधर तो वह शूनेमिन है।

26 अब उससे मिलने को दौड़ जा, और उससे पूछ, कि तू कुशल से है? तेरा पति भी कुशल से है? और लड़का भी कुशल से है?” पूछने पर स्त्री ने उत्तर दिया, “हाँ, कुशल से हैं।”

27 वह पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुँची, और *[2:22 22 2:22 22 2:22 22 2:22 22]*, तब गेहजी उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए, परन्तु परमेश्वर के भक्त ने कहा, “उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है।”

28 तब वह कहने लगी, “क्या मैंने अपने प्रभु से पुत्र का वर माँगा था? क्या मैंने न कहा था मुझे धोखा न दे?”

29 तब एलीशा ने गेहजी से कहा, “अपनी कमर बाँध, और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला जा, मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना, और कोई तेरा कुशल पूछे, तो उसको उत्तर न देना, और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुँह पर रख देना।” (*[2:22 22 10:4, 2:22 22 12:35]*)

30 तब लड़के की माँ ने एलीशा से कहा, “यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे न छोड़ूँगी।” तो वह उठकर उसके पीछे-पीछे चला।

31 उनसे पहले पहुँचकर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुँह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा, और न उसमें कोई हरकत हुई, तब वह एलीशा से मिलने को लौट आया, और उसको बता दिया, “लड़का नहीं जागा।”

32 जब एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है।

33 तब उसने अकेला भीतर जाकर किवाड़ बन्द किया, और यहोवा से प्रार्थना की। (*[2:22 22 6:6]*)

\* 4:13 *[2:22 22 2:22 22 2:22 22 2:22 22]*: उस स्त्री ने एलीशा के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उसके पास किसी की बुराई की शिकायत नहीं थी, उसका किसी पड़ोसी से झगडा नहीं था, जिसके कारण उसे किसी अधिकारी की सहायता की आवश्यकता हो। † 4:27 *[2:22 22 2:22 22]*: पाँव पकड़ना या घुटने छूना याचना को बाध्य करने के लिए समझा जाता था।

## 5

34 तब वह चढ़कर [2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2] कि अपना मुँह उसके मुँह से और अपनी आँखें उसकी आँखों से और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिये और वह लड़के पर पसर गया, तब लड़के की देह गर्म होने लगी।

35 वह उसे छोड़कर घर में इधर-उधर टहलने लगा, और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया; तब लड़के ने सात बार छींका, और अपनी आँखें खोलीं।

36 तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा, “शूनेमिन को बुला ले।” जब उसके बुलाने से वह उसके पास आई, “तब उसने कहा, अपने बेटे को उठा ले।” ([2][2][2][2] 7:15)

37 वह भीतर गई, और उसके पाँवों पर गिर भूमि तक झुककर दण्डवत् किया; फिर अपने बेटे को उठाकर निकल गई।

38 तब एलीशा गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल था, और भविष्यद्वक्ताओं के दल उसके सामने बैठे हुए थे, और उसने अपने सेवक से कहा, “हण्डा चढाकर भविष्यद्वक्ताओं के दल के लिये कुछ पका।”

39 तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया, और कोई जंगली लता पाकर अपनी अँकवार भर जंगली फल तोड़ ले आया, और फाँक-फाँक करके पकने के लिये हण्डे में डाल दिया, और वे उसको न पहचानते थे।

40 तब उन्होंने उन मनुष्यों के खाने के लिये हण्डे में से परोसा। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे, “हे परमेश्वर के भक्त हण्डे में जहर है;” और वे उसमें से खा न सके।

41 तब एलीशा ने कहा, “अच्छा, कुछ आटा ले आओ।” तब उसने उसे हण्डे में डालकर कहा, “उन लोगों के खाने के लिये परोस दे।” फिर हण्डे में कुछ हानि की वस्तु न रही।

42 कोई मनुष्य बालशालीशा से, पहले उपजे हुए जौ की बीस रोटियाँ, और अपनी बोरी में हरी बालें परमेश्वर के भक्त के पास ले आया; तो एलीशा ने कहा, “उन लोगों को खाने के लिये दे।”

43 उसके टहलुए ने कहा, “क्या मैं सौ मनुष्यों के सामने इतना ही रख दूँ?” उसने कहा, “लोगों को दे दे कि खाएँ, क्योंकि यहोवा यह कहता है, ‘उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा।’”

44 तब उसने उनके आगे रख दिया, और यहोवा के वचन के अनुसार उनके खाने के बाद कुछ बच भी गया। ([2][2][2][2] 14:20, [2][2][2][2] 9:17)

[2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]

1 अराम के राजा का नामान नामक सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था, और वह शूरवीर था, परन्तु कोढ़ी था।

2 अरामी लोग दल बाँधकर इस्राएल के देश में जाकर वहाँ से एक छोटी लड़की बन्दी बनाकर ले आए थे और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी।

3 उसने अपनी स्वामिनी से कहा, “यदि मेरा स्वामी सामरिया के भविष्यद्वक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता! क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता।”

4 तो नामान ने अपने प्रभु के पास जाकर कह दिया, “इस्राएली लड़की इस प्रकार कहती है।”

5 अराम के राजा ने कहा, “तू जा, मैं इस्राएल के राजा के पास एक पत्र भेजूँगा।”

तब वह दस किक्कार चाँदी और छः हजार टुकड़े सोना, और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर रवाना हो गया।

6 और वह इस्राएल के राजा के पास वह पत्र ले गया जिसमें यह लिखा था, “जब यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैंने नामान नामक अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिए भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे।”

7 यह पत्र पढ़ने पर इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े और बोला, “क्या मैं मारनेवाला और जिलानेवाला परमेश्वर हूँ कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इसलिए भेजा है कि मैं उसका कोढ़ दूर करूँ? सोच विचार तो करो, वह मुझसे झगड़े का कारण ढूँढता होगा।”

8 यह सुनकर कि इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं, परमेश्वर के भक्त एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा, “तूने क्यों अपने वस्त्र फाड़े हैं? वह मेरे पास आए, तब जान लेगा, कि इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है।”

9 तब नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ।

10 तब एलीशा ने [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2], “तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा।”

11 परन्तु नामान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, “मैंने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से

‡ 4:34 [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]: जीवित देह से मृतक देह में गर्मी का वास्तविक प्रवाह हुआ होगा। \* 5:10 [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]: एलीशा ने उससे भेंट नहीं की, इसलिए नहीं कि वह कोढ़ी था। उसने एक दूत को भेजा क्योंकि नामान अपने आपको अत्यधिक महान समझता था। (2 राजा 5:11) और उसे झिड़की की आवश्यकता थी।





28 फिर राजा ने उससे पूछा, “तुझे क्या हुआ?” उसने उत्तर दिया, “इस स्त्री ने मुझसे कहा था, ‘मुझे अपना बेटा दे, कि हम आज उसे खा लें, फिर कल मैं अपना बेटा दूँगी, और हम उसे भी खाएँगी।’”

29 तब मेरे बेटे को पकाकर हमने खा लिया, फिर दूसरे दिन जब मैंने इससे कहा “अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब इसने अपने बेटे को छिपा रखा।”

30 उस स्त्री की ये बातें सुनते ही, राजा ने अपने वस्त्र फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा था), जब लोगों ने देखा, तब उनको यह देख पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहने है।

31 तब वह बोल उठा, “यदि मैं शापात के पुत्र एलीशा का सिर आज उसके धड़ पर रहने दूँ, तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही वरन् इससे भी अधिक करे।”

32 एलीशा अपने घर में बैठा हुआ था, और पुरनिये भी उसके संग बैठे थे। सो जब राजा ने अपने पास से एक जन भेजा, तब उस दूत के पहुँचने से पहले उसने पुरनियों से कहा, “देखो, इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है; इसलिए जब वह दूत आए, तब किवाड़ बन्द करके रोके रहना। क्या उसके स्वामी के पाँव की आहट उसके पीछे नहीं सुन पड़ती?”

33 वह उनसे यह बातें कर ही रहा था कि दूत उसके पास आ पहुँचा। और राजा कहने लगा, “यह विपत्ति यहोवा की ओर से है, अब मैं आगे को यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूँ?”

## 7

1 तब एलीशा ने कहा, “~~यहोवा यह कहता है, ‘कल इसी समय सामरिया के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जौ भी एक शेकेल में बिकेगा।’~~”

2 तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर राजा तकिया करता था, परमेश्वर के भक्त को उत्तर देकर कहा, “सुन, चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले, तो भी क्या ऐसी बात हो सकेगी?” उसने कहा, “सुन, तू यह अपनी आँखों से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा।”

3 चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे; वे आपस में कहने लगे, “हम क्यों यहाँ बैठे-बैठे मर जाएँ?”

4 यदि हम कहें, ‘नगर में जाएँ;’ तो वहाँ मर जाएँगे; क्योंकि वहाँ अकाल पड़ा है, और यदि हम यहीं बैठे रहें, तो भी मर ही जाएँगे। तो आओ हम अराम की सेना में पकड़े जाएँ; यदि वे हमको जिलाए रखें तो हम जीवित

रहेंगे, और यदि वे हमको मार डालें, तो भी हमको मरना ही है।”

5 तब वे साँझ को अराम की छावनी में जाने को चले, और अराम की छावनी की छोर पर पहुँचकर क्या देखा, कि वहाँ कोई नहीं है।

6 क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना की सी आहट सुनाई थी, और वे आपस में कहने लगे थे, “सुनो, इस्राएल के राजा ने हित्ती और मिच्ची राजाओं को वेतन पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें।”

7 इसलिए वे साँझ को उठकर ऐसे भाग गए, कि अपने डेरे, घोड़े, गदहे, और छावनी जैसी की तैसी छोड़कर अपना-अपना प्राण लेकर भाग गए।

8 जब वे कोढ़ी छावनी की छोर के डेरों के पास पहुँचे, तब एक डेरे में घुसकर खाया पिया, और उसमें से चाँदी, सोना और वस्त्र ले जाकर छिपा रखा; फिर लौटकर दूसरे डेरे में घुस गए और उसमें से भी ले जाकर छिपा रखा।

9 तब वे आपस में कहने लगे, “जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें तो हमको दण्ड मिलेगा; सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बता दें।”

10 तब वे चले और नगर के चौकीदारों को बुलाकर बताया, “हम जो अराम की छावनी में गए, तो क्या देखा, कि वहाँ कोई नहीं है, और मनुष्य की कुछ आहट नहीं है, केवल बंधे हुए घोड़े और गदहे हैं, और डेरे जैसे के तैसे हैं।”

11 तब चौकीदारों ने पुकारके राजभवन के भीतर समाचार दिया।

12 तब राजा रात ही को उठा, और अपने कर्मचारियों से कहा, “मैं तुम्हें बताता हूँ कि अरामियों ने हम से क्या किया है? वे जानते हैं, कि हम लोग भूखे हैं इस कारण वे छावनी में से मैदान में छिपने को यह कहकर गए हैं, कि जब वे नगर से निकलेंगे, तब हम उनको जीवित ही पकड़कर नगर में घुसने पाएँगे।”

13 परन्तु राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, “जो घोड़े नगर में बच रहे हैं उनमें से लोग पाँच घोड़े लें, और उनको भेजकर हम हाल जान लें। वे तो इस्राएल की सब भीड़ के समान हैं जो नगर में रह गई है वरन् इस्राएल की जो भीड़ मर मिट गई है वे उसी के समान हैं।”

\* 7:1 ~~यहोवा यह कहता है, ‘कल इसी समय सामरिया के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जौ भी एक शेकेल में बिकेगा।’~~ इस पद में एलीशा राजा की चुनौती के उत्तर में कहता है कि अगले दिन उसी समय तक अकाल समाप्त हो जाएगा और भोजनवस्तुएँ पहले से अधिक सस्ती हो जाएगी।





4 अतः वह जवान भविष्यद्वक्ता गिलाद के रामोत को गया।

5 वहाँ पहुँचकर उसने क्या देखा, कि सेनापति बैठे हुए हैं; तब उसने कहा, “हे सेनापति, मुझे तुझ से कुछ कहना है।” यहू ने पूछा, “हम सभी में किस से?” उसने कहा, “हे सेनापति, तुझी से!”

6 तब वह उठकर घर में गया; और उसने यह कहकर उसके सिर पर तेल डाला, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, मैं अपनी प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूँ।

7 तो तू अपने स्वामी अहाब के घराने को मार डालना, जिससे मुझे अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के वरन् अपने सब दासों के खून का जो ईजेबेल ने बहाया, बदला मिले। **([?/?/?/?/?] 6:10, [?/?/?/?/?] 19:2)**

8 क्योंकि अहाब का समस्त घराना नाश हो जाएगा, और मैं अहाब के वंश के हर एक लड़के को और इस्राएल में के क्या बन्दी, क्या स्वाधीन, हर एक का नाश कर डालूँगा।

9 और मैं अहाब का घराना नबात के पुत्र यारोबाम का सा, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूँगा।

10 और ईजेबेल को यिज्जेल की भूमि में कुत्ते खाएँगे, और उसको मिट्टी देनेवाला कोई न होगा।” तब वह द्वार खोलकर भाग गया।

11 तब यहू अपने स्वामी के कर्मचारियों के पास निकल आया, और एक ने उससे पूछा, “क्या कुशल है, वह बावला क्यों तेरे पास आया था?” उसने उनसे कहा, “तुम को मालूम होगा कि वह कौन है और उससे क्या बातचीत हुई।”

12 उन्होंने कहा, “झूठ है, हमें बता दे।” उसने कहा, “उसने मुझसे कहा तो बहुत, परन्तु मतलब यह है यहोवा यह कहता है कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूँ।”

13 तब उन्होंने झट अपना-अपना वस्त्र उतार कर उसके नीचे सीढ़ी ही पर बिछाया, और नरसिंगे फूँककर कहने लगे, “यहू राजा है।” **([?/?/?/?/?] 19:36)**

14 यह यहू जो निमशी का पोता और यहोशापात का पुत्र था, उसने योराम से राजद्रोह की युक्ति की। (योराम तो सारे इस्राएल समेत अराम के राजा हजाएल के कारण गिलाद के रामोत की रक्षा कर रहा था;

15 परन्तु राजा योराम आप अपने घाव का जो अराम के राजा हजाएल से युद्ध करने के समय उसको अरामियों से लगे थे, उनका इलाज कराने के लिये यिज्जेल को लौट गया था।) तब यहू ने कहा, “यदि तुम्हारा ऐसा मन हो,

तो इस नगर में से कोई निकलकर यिज्जेल में सुनाने को न जाने पाए।”

16 तब यहू रथ पर चढ़कर, यिज्जेल को चला जहाँ योराम पड़ा हुआ था; और यहूदा का राजा अहज्याह योराम के देखने को वहाँ आया था।

17 यिज्जेल के गुम्मत पर, जो पहरुआ खड़ा था, उसने यहू के संग आते हुए दल को देखकर कहा, “मुझे एक दल दिखता है;” योराम ने कहा, “एक सवार को बुलाकर उन लोगों से मिलने को भेज और वह उनसे पूछे, ‘क्या कुशल है?’”

18 तब एक सवार उससे मिलने को गया, और उससे कहा, “राजा पूछता है, ‘क्या कुशल है?’” यहू ने कहा, “कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे चल।” तब पहरुए ने कहा, “वह दूत उनके पास पहुँचा तो था, परन्तु लौटकर नहीं आया।”

19 तब उसने दूसरा सवार भेजा, और उसने उनके पास पहुँचकर कहा, “राजा पूछता है, ‘क्या कुशल है?’” यहू ने कहा, “कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे चल।”

20 तब पहरुए ने कहा, “वह भी उनके पास पहुँचा तो था, परन्तु लौटकर नहीं आया। हाँकना निमशी के पोते यहू का सा है; वह तो पागलों के समान हाँकता है।”

21 योराम ने कहा, “मेरा रथ जुतवा।” जब उसका रथ जुत गया, तब इस्राएल का राजा योराम और यहूदा का राजा अहज्याह, दोनों अपने-अपने रथ पर चढ़कर निकल गए, और यहू से मिलने को बाहर जाकर यिज्जेल नाबोत की भूमि में उससे भेंट की।

22 यहू को देखते ही योराम ने पूछा, “हे यहू क्या कुशल है,” यहू ने उत्तर दिया, “जब तक तेरी माता ईजेबेल छिनालपन और टोना करती रहे, तब तक कुशल कहाँ?” **([?/?/?/?/?] 2:20, [?/?/?/?/?] 9:21)**

23 तब योराम रास फेर के, और अहज्याह से यह कहकर भागा, “हे अहज्याह विश्वासघात है, भाग चल।”

24 तब यहू ने धनुष को कान तक खींचकर योराम के कंधों के बीच ऐसा तीर मारा, कि वह उसका हृदय फोड़कर निकल गया, और वह अपने रथ में झुककर गिर पड़ा।

25 तब यहू ने बिदकर नामक अपने एक सरदार से कहा, “उसे उठाकर यिज्जेली नाबोत की भूमि में फेंक दे; स्मरण तो कर, कि जब मैं और तू, हम दोनों एक संग सवार होकर उसके पिता अहाब के पीछे-पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उससे यह भारी वचन कहलवाया था,



26 'यहोवा की यह वाणी है, कि नाबोत और उसके पुत्रों का जो खून हुआ, उसे मैंने देखा है, और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूंगा।' तो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर उसी भूमि में फेंक दे।'

27 यह देखकर यहूदा का राजा अहज्याह बारी के भवन के मार्ग से भाग चला। और यहू ने उसका पीछा करके कहा, "उसे भी रथ ही पर मारो;" तो वह भी यिबलाम के पास की गूर की चढ़ाई पर मारा गया, और मगिदो तक भागकर मर गया।

28 तब उसके कर्मचारियों ने उसे रथ पर यरूशलेम को पहुँचाकर दाऊदपुर में उसके पुरखाओं के बीच मिट्टी दी।

29 अहज्याह तो अहाब के पुत्र योराम के राज्य के ग्यारहवें वर्ष में यहूदा पर राज्य करने लगा था।

30 जब यहू यिज्जेल को आया, तब ईजेबेल यह सुन अपनी आँखों में सुरमा लगा, अपना सिर संवारकर, खिड़की में से झाँकने लगी।

31 जब यहू फाटक में होकर आ रहा था तब उसने कहा, "हे अपने स्वामी के घात करनेवाले जिम्मी, क्या कुशल है?"

32 तब उसने खिड़की की ओर मुँह उठाकर पूछा, "मेरी ओर कौन है? कौन?" इस पर दो तीन खोजों ने उसकी ओर झाँका।

33 तब उसने कहा, "उसे नीचे गिरा दो।" अतः उन्होंने उसको नीचे गिरा दिया, और उसके लहू के कुछ छींटे दीवार पर और कुछ घोड़ों पर पड़े, और उन्होंने उसको पाँव से लताड़ दिया।

34 तब वह भीतर जाकर खाने-पीने लगा; और कहा, "जाओ उस श्रापित स्त्री को देख लो, और उसे मिट्टी दो; <sup>†</sup> 1"'

35 जब वे उसे मिट्टी देने गए, तब उसकी खोपड़ी पाँवों और हथेलियों को छोड़कर उसका और कुछ न पाया।

36 अतः उन्होंने लौटकर उससे कह दिया; तब उसने कहा, "यह यहोवा का वह वचन है, जो उसने अपने दास तिश्बी एलिय्याह से कहलवाया था, कि ईजेबेल का माँस यिज्जेल की भूमि में कुत्ते खाएँगे।

37 और ईजेबेल का शव यिज्जेल की भूमि पर खाद के समान पड़ा रहेगा, यहाँ तक कि कोई न कहेगा, 'यह ईजेबेल है।' "

## 10

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 अहाब के <sup>†</sup> 2, पोते, सामरिया में रहते थे। अतः यहू ने सामरिया में उन पुरनियों के पास, और जो यिज्जेल के हाकिम थे, और जो अहाब के लड़कों के पालनेवाले थे, उनके पास पत्रों को लिखकर भेजा,

2 "तुम्हारे स्वामी के बेटे, पोते तो तुम्हारे पास रहते हैं, और तुम्हारे रथ, और घोड़े भी हैं, और तुम्हारे एक गढ़वाला नगर, और हथियार भी हैं; तो इस पत्र के हाथ लगते ही,

3 अपने स्वामी के बेटों में से जो सबसे अच्छा और योग्य हो, उसको छांटकर, उसके पिता की गद्दी पर बैठाओ, और अपने स्वामी के घराने के लिये लड़ो।"

4 परन्तु वे बहुत डर गए, और कहने लगे, "उसके सामने दो राजा भी ठहर न सके, फिर हम कहाँ ठहर सकेंगे?"

5 तब जो राजघराने के काम पर था, और जो नगर के ऊपर था, उन्होंने और पुरनियों और लड़कों के पालनेवालों ने यहू के पास यह कहला भेजा, "हम तेरे दास हैं, जो कुछ तुम से कहे, उसे हम करेंगे; हम किसी को राजा न बनाएँगे, जो तुझे भाए वही कर।"

6 तब उसने दूसरा पत्र लिखकर उनके पास भेजा, "यदि तुम मेरी ओर के हो और मेरी मानो, तो अपने स्वामी के बेटों-पोतों के सिर कटवाकर कल इसी समय तक मेरे पास यिज्जेल में हाजिर होना।" राजपुत्र तो जो सत्तर मनुष्य थे, वे उस नगर के रईसों के पास पलते थे।

7 यह पत्र उनके हाथ लगते ही, उन्होंने उन सत्तरों राजपुत्रों को पकड़कर मार डाला, और उनके सिर टोकरियों में रखकर यिज्जेल को उसके पास भेज दिए।

8 जब एक दूत ने उसके पास जाकर बता दिया, "राजकुमारों के सिर आ गए हैं।" तब उसने कहा, "उन्हें फाटक में दो ढेर करके सवेरे तक रखो।"

9 सवेरे उसने बाहर जा खड़े होकर सब लोगों से कहा, "<sup>†</sup> 1, मैंने अपने स्वामी से राजद्रोह की युक्ति करके उसे घात किया, परन्तु इन सभी को किसने मार डाला?

10 अब जान लो कि जो वचन यहोवा ने अपने दास एलिय्याह के द्वारा कहा था, उसे उसने पूरा किया है; जो वचन यहोवा ने अहाब के घराने के विषय कहा, उसमें से एक भी बात बिना पूरी हुए न रहेगी।"

11 तब अहाब के घराने के जितने लोग यिज्जेल में रह गए, उन सभी को और उसके जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे, उन सभी को यहू ने मार डाला,

† 9:34 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: आहाब की विधवा और यहोराम की माता। यहू ने ईजेबेल को दफ़न के योग्य नहीं समझा था। परन्तु वह एतबाल सीदोन के राजा की पुत्री थी अतः राजकुमारी थी। \* 10:1 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: अर्थात् उसके वंशज जिनमें यहोराम के पुत्र भी गिने गए हैं। (2 राजा 10:2-3) † 10:9 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100: तुम निरपराध हो और उचित न्याय कर सकते हो। यहू छिपाता है कि हत्या की आज्ञा उसने दी थी।

यहाँ तक कि उसने किसी को जीवित न छोड़ा।

12 तब वह वहाँ से चलकर सामरिया को गया। और मार्ग में चरवाहों के ऊन कतरने के स्थान पर पहुँचा ही था,

13 कि यहूदा के राजा अहज्याह के भाई येहू से मिले और जब उसने पूछा, “तुम कौन हो?” तब उन्होंने उत्तर दिया, “हम अहज्याह के भाई हैं, और राजपुत्रों और राजमाता के बेटों का कुशल क्षेम पूछने को जाते हैं।”

14 तब उसने कहा, “इन्हें जीवित पकड़ो।” अतः उन्होंने उनको जो बयालीस पुरुष थे, जीवित पकड़ा, और ऊन कतरने के स्थान की बावली पर मार डाला, उसने उनमें से किसी को न छोड़ा।

15 जब वह वहाँ से चला, तब रेकाब का पुत्र यहोनादाब सामने से आता हुआ उसको मिला। उसका कुशल उसने पूछकर कहा, “मेरा मन तो तेरे प्रति निष्कपट है, क्या तेरा मन भी वैसा ही है?” यहोनादाब ने कहा, “हाँ, ऐसा ही है।” फिर उसने कहा, “ऐसा हो, तो अपना हाथ मुझे दे।” उसने अपना हाथ उसे दिया, और वह यह कहकर उसे अपने पास रथ पर चढ़ाने लगा,

16 “मेरे संग चल और देख, कि मुझे यहोवा के निमित्त कैसी जलन रहती है।” तब वह उसके रथ पर चढ़ा दिया गया।

17 सामरिया को पहुँचकर उसने यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह से कहा था, अहाब के जितने सामरिया में बचे रहे, उन सभी को मार के विनाश किया।

18 तब येहू ने सब लोगों को इकट्ठा करके कहा, “अहाब ने तो बाल की थोड़ी ही उपासना की थी, अब येहू उसकी उपासना बढ़के करेगा।

19 इसलिए अब बाल के सब नबियों, सब उपासकों और सब याजकों को मेरे पास बुला लाओ, उनमें से कोई भी न रह जाए; क्योंकि बाल के लिये मेरा एक बड़ा यज्ञ होनेवाला है; जो कोई न आए वह जीवित न बचेगा।” येहू ने यह काम कपट करके बाल के सब उपासकों को नाश करने के लिये किया।

20 तब येहू ने कहा, “बाल की एक पवित्र महासभा का प्रचार करो।” और लोगों ने प्रचार किया।

21 येहू ने सारे इस्राएल में दूत भेजे; तब बाल के सब उपासक आए, यहाँ तक कि ऐसा कोई न रह गया जो न आया हो। वे बाल के भवन में इतने आए, कि वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

22 तब उसने उस मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिकारी था, कहा, “बाल के सब उपासकों के लिये

वस्त्र निकाल ले आ।” अतः वह उनके लिये वस्त्र निकाल ले आया।

23 तब येहू रेकाब के पुत्र यहोनादाब को संग लेकर बाल के भवन में गया, और बाल के उपासकों से कहा, “ढूँढ़कर देखो, कि यहाँ तुम्हारे संग यहोवा का कोई उपासक तो नहीं है, केवल बाल ही के उपासक हैं।”

24 तब वे मेलबलि और होमबलि चढ़ाने को भीतर गए।

येहू ने तो अस्सी पुरुष बाहर ठहराकर उनसे कहा था, “यदि उन मनुष्यों में से जिन्हें मैं तुम्हारे हाथ कर दूँ, कोई भी बचने पाए, तो जो उसे जाने देगा उसका प्राण, उसके प्राण के बदले जाएगा।”

25 फिर जब होमबलि चढ़ चुका, तब येहू ने पहरुओं और सरदारों से कहा, “भीतर जाकर उन्हें मार डालो; कोई निकलने न पाए।” तब उन्होंने उन्हें तलवार से मारा और पहरुए और सरदार उनको बाहर फेंककर बाल के भवन के नगर को गए।

26 और उन्होंने बाल के भवन में की लाठें निकालकर फूँक दीं।

27 और बाल के स्तम्भ को उन्होंने तोड़ डाला; और बाल के भवन को ढाकर शौचालय बना दिया; और वह आज तक ऐसा ही है।

28 अतः येहू ने बाल को इस्राएल में से नाश करके दूर किया।

29 तो भी नबात के पुत्र यारोबाम, जिसने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार करने, अर्थात् बेतल और दान में के सोने के बछ्छड़ों की पूजा, उससे येहू अलग न हुआ।

30 ~~222222 22 22222 22 2222~~, “इसलिए कि तूने वह किया, जो मेरी दृष्टि में ठीक है, और अहाब के घराने से मेरी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया है, तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर विराजती रहेगी।”

31 परन्तु येहू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था पर पूर्ण मन से चलने की चौकसी न की, वरन् यारोबाम जिसने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार करने से वह अलग न हुआ।

32 उन दिनों यहोवा इस्राएल की सीमा को घटाने लगा, इसलिए हजाएल ने इस्राएल के उन सारे देशों में उनको मारा:

33 यरदन से पूरब की ओर गिलाद का सारा देश, और गादी और रूबेनी और मनश्शेई का देश अर्थात् अरोएर

‡ 10:30 ~~222222 22 22222 22 2222~~: सम्भवतः एलीशा के मुख से एक सीमा तक येहू के काम आज्ञाकारिता के थे जिसके लिए परमेश्वर उसे सांसारिक प्रतिफल देना चाहता था।







21 लोग किसी मनुष्य को मिट्टी दे रहे थे, कि एक दल उन्हें दिखाई पड़ा, तब उन्होंने उस शव को एलीशा की कब्र में डाल दिया, और एलीशा की हड्डियों से छूते ही <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup>, और अपने पाँवों के बल खड़ा हो गया।

22 यहोआहाज के जीवन भर अराम का राजा हजाएल इस्राएल पर अंधेरे ही करता रहा।

23 परन्तु यहोवा ने उन पर अनुग्रह किया, और उन पर दया करके अपनी उस वाचा के कारण जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से बाँधी थी, उन पर कृपादृष्टि की, और न तो उन्हें नाश किया, और न अपने सामने से निकाल दिया।

24 तब अराम का राजा हजाएल मर गया, और उसका पुत्र बेन्हदद उसके स्थान पर राजा बन गया।

25 तब यहोआहाज के पुत्र यहोआश ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद के हाथ से वे नगर फिर ले लिए, जिन्हें उसने युद्ध करके उसके पिता यहोआहाज के हाथ से छीन लिया था। यहोआश ने उसको तीन बार जीतकर इस्राएल के नगर फिर ले लिए।

## 14

<sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup>

1 इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के राज्य के दूसरे वर्ष में यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह राजा हुआ।

2 जब वह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम यहोअद्दान था, जो यरूशलेम की थी।

3 उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था तो भी अपने मूलपुरुष दाऊद के समान न किया; <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup>

4 उसके दिनों में ऊँचे स्थान गिराए न गए; लोग तब भी उन पर बलि चढ़ाते, और धूप जलाते रहे।

5 जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया, तब उसने अपने उन कर्मचारियों को मृत्यु-दण्ड दिया, जिन्होंने उसके पिता राजा को मार डाला था।

6 परन्तु उन खूनियों के बच्चों को उसने न मार डाला, क्योंकि यहोवा की यह आज्ञा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है: “पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और पिता के कारण पुत्र न मार डाला जाए; जिसने पाप किया हो, वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।”

‡ 13:21 <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup>



11 जकर्याह के और काम इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

12 अतः यहोवा का वह वचन पूरा हुआ, जो उसने यहू से कहा था, “तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर बैठती जाएगी।” और वैसा ही हुआ।

?????? ?? ???????

13 यहूदा के राजा उज्जियाह के राज्य के उनतालीसवें वर्ष में याबेश का पुत्र शल्लूम राज्य करने लगा, और महीने भर सामरिया में राज्य करता रहा।

14 क्योंकि गादी के पुत्र मनहेम ने, तिस्रा से सामरिया को जाकर याबेश के पुत्र शल्लूम को वहीं मारा, और उसे घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ।

15 शल्लूम के अन्य काम और उसने राजद्रोह की जो गोष्ठी की, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है।

16 तब मनहेम ने तिस्रा से जाकर, सब निवासियों और आस-पास के देश समेत तिप्सह को इस कारण मार लिया, कि तिप्सहियों ने उसके लिये फाटक न खोले थे, इस कारण उसने उन्हें मार दिया, और उसमें जितनी गर्भवती स्त्रियाँ थीं, उन सभी को चीर डाला।

?????? ?? ???????

17 यहूदा के राजा अजर्याह के राज्य के उनतालीसवें वर्ष में गादी का पुत्र मनहेम इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दस वर्ष सामरिया में राज्य करता रहा।

18 उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह जीवन भर अलग न हुआ।

19 अशूर के राजा पूल ने देश पर चढ़ाई की, और मनहेम ने उसको हजार किककार चाँदी इस इच्छा से दी, कि वह उसका सहायक होकर राज्य को उसके हाथ में स्थिर रखे।

20 यह चाँदी अशूर के राजा को देने के लिये मनहेम ने बड़े-बड़े धनवान इस्राएलियों से ले ली, एक-एक पुरुष को पचास-पचास शेकेल चाँदी देनी पड़ी; तब अशूर का राजा देश को छोड़कर लौट गया।

21 मनहेम के और काम जो उसने किए, वे सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

22 अन्त में मनहेम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र पकहयाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

?????? ?? ???????

23 यहूदा के राजा अजर्याह के राज्य के पचासवें वर्ष में मनहेम का पुत्र पकहयाह सामरिया में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा।

24 उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ।

25 उसके सरदार रमल्याह के पुत्र पेकह ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके, सामरिया के राजभवन के गुम्मत में उसको और उसके संग अर्गोब और अर्ये को मारा; और पेकह के संग पचास गिलादी पुरुष थे, और वह उसका घात करके उसके स्थान पर राजा बन गया।

26 पकहयाह के और सब काम जो उसने किए, वह इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

?????? ?? ???????

27 यहूदा के राजा अजर्याह के राज्य के बावनवें वर्ष में रमल्याह का पुत्र पेकह सामरिया में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बीस वर्ष तक राज्य करता रहा।

28 उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम, जिसने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ।

29 इस्राएल के राजा पेकह के दिनों में अशूर के राजा तिग्लत्प्लेसेर ने आकर इय्योन, आबेल्वेत्माका, यानोह, केदेश और हासोर नामक नगरों को और गिलाद और गलील, वरन् नप्ताली के पूरे देश को भी ले लिया, और उनके लोगों को बन्दी बनाकर अशूर को ले गया।

30 उज्जियाह के पुत्र योताम के बीसवें वर्ष में एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे मारा, और उसे घात करके उसके स्थान पर राजा बन गया।

31 पेकह के और सब काम जो उसने किए वह इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं।

?????? ?? ???????

32 रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह के राज्य के दूसरे वर्ष में यहूदा के राजा उज्जियाह का पुत्र योताम राजा हुआ।

33 जब वह राज्य करने लगा, तब पच्चीस वर्ष का था, और यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यरूशा था जो सादोक की बेटी थी।







चलने लगे।

20 तब यहोवा ने इस्राएल की सारी सन्तान को छोड़कर, उनको दुःख दिया, और लूटनेवालों के हाथ कर दिया, और अन्त में उन्हें अपने सामने से निकाल दिया।

21 जब उसने <sup>21:21</sup> को <sup>21:22</sup> को <sup>21:23</sup> के हाथ से छीन लिया, तो उन्होंने नबात के पुत्र यारोबाम को अपना राजा बनाया; और यारोबाम ने इस्राएल को यहोवा के पीछे चलने से दूर खींचकर उनसे बड़ा पाप कराया।

22 अतः जैसे पाप यारोबाम ने किए थे, वैसे ही पाप इस्राएली भी करते रहे, और उनसे अलग न हुए।

23 अन्त में यहोवा ने इस्राएल को अपने सामने से दूर कर दिया, जैसे कि उसने अपने सब दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था। इस प्रकार इस्राएल अपने देश से निकालकर अशूर को पहुँचाया गया, जहाँ वह आज के दिन तक रहता है।

<sup>21:24</sup> <sup>21:25</sup> <sup>21:26</sup> <sup>21:27</sup> <sup>21:28</sup> <sup>21:29</sup> <sup>21:30</sup> <sup>21:31</sup> <sup>21:32</sup> <sup>21:33</sup> <sup>21:34</sup> <sup>21:35</sup> <sup>21:36</sup> <sup>21:37</sup> <sup>21:38</sup> <sup>21:39</sup> <sup>21:40</sup> <sup>21:41</sup> <sup>21:42</sup> <sup>21:43</sup> <sup>21:44</sup> <sup>21:45</sup> <sup>21:46</sup> <sup>21:47</sup> <sup>21:48</sup> <sup>21:49</sup> <sup>21:50</sup> <sup>21:51</sup> <sup>21:52</sup> <sup>21:53</sup> <sup>21:54</sup> <sup>21:55</sup> <sup>21:56</sup> <sup>21:57</sup> <sup>21:58</sup> <sup>21:59</sup> <sup>21:60</sup> <sup>21:61</sup> <sup>21:62</sup> <sup>21:63</sup> <sup>21:64</sup> <sup>21:65</sup> <sup>21:66</sup> <sup>21:67</sup> <sup>21:68</sup> <sup>21:69</sup> <sup>21:70</sup> <sup>21:71</sup> <sup>21:72</sup> <sup>21:73</sup> <sup>21:74</sup> <sup>21:75</sup> <sup>21:76</sup> <sup>21:77</sup> <sup>21:78</sup> <sup>21:79</sup> <sup>21:80</sup> <sup>21:81</sup> <sup>21:82</sup> <sup>21:83</sup> <sup>21:84</sup> <sup>21:85</sup> <sup>21:86</sup> <sup>21:87</sup> <sup>21:88</sup> <sup>21:89</sup> <sup>21:90</sup> <sup>21:91</sup> <sup>21:92</sup> <sup>21:93</sup> <sup>21:94</sup> <sup>21:95</sup> <sup>21:96</sup> <sup>21:97</sup> <sup>21:98</sup> <sup>21:99</sup> <sup>21:100</sup>

24 अशूर के राजा ने बाबेल, कूता, अव्वा, हमात और सपर्वैम नगरों से लोगों को लाकर, इस्राएलियों के स्थान पर सामरिया के नगरों में बसाया; सो वे सामरिया के अधिकारी होकर उसके नगरों में रहने लगे।

25 जब वे वहाँ पहले-पहले रहने लगे, तब यहोवा का भय न मानते थे, इस कारण यहोवा ने उनके बीच सिंह भेजे, जो उनको मार डालने लगे।

26 इस कारण उन्होंने अशूर के राजा के पास कहला भेजा कि जो जातियाँ तुने उनके देशों से निकालकर सामरिया के नगरों में बसा दी हैं, वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानतीं, इससे उसने उसके मध्य सिंह भेजे हैं जो उनको इसलिए मार डालते हैं कि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते।

27 तब अशूर के राजा ने आज्ञा दी, “जिन याजकों को तुम उस देश से ले आए, उनमें से एक को वहाँ पहुँचा दो; और वह वहाँ जाकर रहे, और वह उनको उस देश के देवता की रीति सिखाए।”

28 तब जो याजक सामरिया से निकाले गए थे, उनमें से एक जाकर बतेल में रहने लगा, और उनको सिखाने लगा कि यहोवा का भय किस रीति से मानना चाहिये।

29 तो भी एक-एक जाति के लोगों ने अपने-अपने निज देवता बनाकर, अपने-अपने बसाए हुए नगर में उन ऊँचे स्थानों के भवनों में रखा जो सामरिया के वासियों ने बनाए थे।

30 बाबेल के मनुष्यों ने सुक्कोतबनोत को, कूत के मनुष्यों ने नेर्गल को, हमात के मनुष्यों ने अशीमा को,

31 और अर्वियों ने निभज, और तर्ताक को स्थापित किया; और सपर्वैमी लोग अपने बेटों को अद्रम्मेलक और अनम्मेलक नामक सपर्वैम के देवताओं के लिये होम करके चढ़ाने लगे।

32 अतः वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु सब प्रकार के लोगों में से ऊँचे स्थानों के याजक भी ठहरा देते थे, जो ऊँचे स्थानों के भवनों में उनके लिये बलि करते थे।

33 वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु उन जातियों की रीति पर, जिनके बीच से वे निकाले गए थे, अपने-अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे।

34 आज के दिन तक वे अपनी पुरानी रीतियों पर चलते हैं, वे यहोवा का भय नहीं मानते।

वे न तो उन विधियों और नियमों पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा के अनुसार चलते हैं, जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दी थी, जिसका नाम उसने इस्राएल रखा था।

35 उनसे यहोवा ने वाचा बाँधकर उन्हें यह आज्ञा दी थी, “तुम पराए देवताओं का भय न मानना और न उन्हें दण्डवत् करना और न उनकी उपासना करना और न उनको बलि चढ़ाना।

36 परन्तु यहोवा जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले आया, तुम उसी का भय मानना, उसी को दण्डवत् करना और उसी को बलि चढ़ाना।

37 और उसने जो-जो विधियाँ और नियम और जो व्यवस्था और आज्ञाएँ तुम्हारे लिये लिखीं, उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो; और पराए देवताओं का भय न मानना।

38 और जो वाचा मैंने तुम्हारे साथ बाँधी है, उसे न भूलना और पराए देवताओं का भय न मानना।

39 केवल अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा।”

40 तो भी उन्होंने न माना, परन्तु वे अपनी पुरानी रीति के अनुसार करते रहे।

41 अतएव वे जातियाँ यहोवा का भय मानती तो थीं, परन्तु अपनी खुदी हुई मूरतों की उपासना भी करती रहीं, और जैसे वे करते थे वैसे ही उनके बेटे पोते भी आज के दिन तक करते हैं।

## 18

<sup>22:1</sup> <sup>22:2</sup> <sup>22:3</sup> <sup>22:4</sup> <sup>22:5</sup> <sup>22:6</sup> <sup>22:7</sup> <sup>22:8</sup> <sup>22:9</sup> <sup>22:10</sup> <sup>22:11</sup> <sup>22:12</sup> <sup>22:13</sup> <sup>22:14</sup> <sup>22:15</sup> <sup>22:16</sup> <sup>22:17</sup> <sup>22:18</sup> <sup>22:19</sup> <sup>22:20</sup> <sup>22:21</sup> <sup>22:22</sup> <sup>22:23</sup> <sup>22:24</sup> <sup>22:25</sup> <sup>22:26</sup> <sup>22:27</sup> <sup>22:28</sup> <sup>22:29</sup> <sup>22:30</sup> <sup>22:31</sup> <sup>22:32</sup> <sup>22:33</sup> <sup>22:34</sup> <sup>22:35</sup> <sup>22:36</sup> <sup>22:37</sup> <sup>22:38</sup> <sup>22:39</sup> <sup>22:40</sup> <sup>22:41</sup> <sup>22:42</sup> <sup>22:43</sup> <sup>22:44</sup> <sup>22:45</sup> <sup>22:46</sup> <sup>22:47</sup> <sup>22:48</sup> <sup>22:49</sup> <sup>22:50</sup> <sup>22:51</sup> <sup>22:52</sup> <sup>22:53</sup> <sup>22:54</sup> <sup>22:55</sup> <sup>22:56</sup> <sup>22:57</sup> <sup>22:58</sup> <sup>22:59</sup> <sup>22:60</sup> <sup>22:61</sup> <sup>22:62</sup> <sup>22:63</sup> <sup>22:64</sup> <sup>22:65</sup> <sup>22:66</sup> <sup>22:67</sup> <sup>22:68</sup> <sup>22:69</sup> <sup>22:70</sup> <sup>22:71</sup> <sup>22:72</sup> <sup>22:73</sup> <sup>22:74</sup> <sup>22:75</sup> <sup>22:76</sup> <sup>22:77</sup> <sup>22:78</sup> <sup>22:79</sup> <sup>22:80</sup> <sup>22:81</sup> <sup>22:82</sup> <sup>22:83</sup> <sup>22:84</sup> <sup>22:85</sup> <sup>22:86</sup> <sup>22:87</sup> <sup>22:88</sup> <sup>22:89</sup> <sup>22:90</sup> <sup>22:91</sup> <sup>22:92</sup> <sup>22:93</sup> <sup>22:94</sup> <sup>22:95</sup> <sup>22:96</sup> <sup>22:97</sup> <sup>22:98</sup> <sup>22:99</sup> <sup>22:100</sup>

1 एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे के राज्य के तीसरे वर्ष में यहूदा के राजा आहाज का पुत्र हिजकिय्याह राजा हुआ।

2 जब वह राज्य करने लगा तब पच्चीस वर्ष का था, और उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम अबी था, जो जकर्याह की बेटी थी।

3 जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वैसा ही उसने भी किया।

4 उसने ऊँचे स्थान गिरा दिए, लाठों को तोड़ दिया, अशेरा को काट डाला। पीतल का जो साँप मूसा ने बनाया था, उसको उसने इस कारण चूर चूरकर दिया, कि उन दिनों तक इस्राएली उसके लिये धूप जलाते थे; और उसने उसका नाम **22222222**\* रखा।

5 वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था, और उसके बाद यहूदा के सब राजाओं में कोई उसके बराबर न हुआ, और न उससे पहले भी ऐसा कोई हुआ था।

6 और **22 222222 22 222222 2222** और उसके पीछे चलना न छोड़ा; और जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं, उनका वह पालन करता रहा।

7 इसलिए यहोवा उसके संग रहा; और जहाँ कहीं वह जाता था, वहाँ उसका काम सफल होता था। और उसने अशूर के राजा से बलवा करके, उसकी अधीनता छोड़ दी।

8 उसने पलिशतियों को गाज़ा और उसकी सीमा तक, पहरुओं के गुम्मत और गढ़वाले नगर तक मारा।

9 राजा हिजकिय्याह के राज्य के चौथे वर्ष में जो एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे के राज्य का सातवाँ वर्ष था, अशूर के राजा शल्मनेसेर ने सामरिया पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया।

10 और तीन वर्ष के बीतने पर उन्होंने उसको ले लिया। इस प्रकार हिजकिय्याह के राज्य के छठवें वर्ष में जो इस्राएल के राजा होशे के राज्य का नौवाँ वर्ष था, सामरिया ले लिया गया।

11 तब अशूर का राजा इस्राएलियों को बन्दी बनाकर अशूर में ले गया, और हलह में और गोजान की नदी हाबोर के पास और मादियों के नगरों में उसे बसा दिया।

12 इसका कारण यह था, कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानी, वरन् उसकी वाचा को तोड़ा, और जितनी आज्ञाएँ यहोवा के दास मूसा ने दी थीं,

उनको टाल दिया और न उनको सुना और न उनके अनुसार किया।

**22222222 22 222222 22 22222 22222 22 222222**

13 हिजकिय्याह राजा के राज्य के चौदहवें वर्ष में अशूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उनको ले लिया।

14 तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अशूर के राजा के पास लाकीश को सन्देश भेजा, “मुझसे अपराध हुआ, मेरे पास से लौट जा; और जो भार तू मुझ पर डालेगा उसको मैं उठाऊँगा।” तो अशूर के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये तीन सौ किककार चाँदी और तीस किककार सोना ठहरा दिया।

15 तब जितनी चाँदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में मिली, उस सब को हिजकिय्याह ने उसे दे दिया।

16 उस समय हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के दरवाज़ों से और उन खम्भों से भी जिन पर यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सोना मढ़ा था, सोने को छीलकर अशूर के राजा को दे दिया।

17 तो भी अशूर के राजा ने तर्तान, रबसारीस और रबशाके को बड़ी सेना देकर, लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया। अतः वे यरूशलेम को गए और वहाँ पहुँचकर ऊपर के जलकुण्ड की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़े हुए।

18 जब उन्होंने राजा को पुकारा, तब हिल्किय्याह का पुत्र एलयाकीम जो राजघराने के काम पर था, और शेबना जो मंत्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला था, ये तीनों उनके पास बाहर निकल गए।

19 रबशाके ने उनसे कहा, “हिजकिय्याह से कहो, कि महाराजाधिराज अर्थात् अशूर का राजा यह कहता है, ‘तू किस पर भरोसा करता है?’

20 तू जो कहता है, कि मेरे यहाँ युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम है, **22 22 222222 2222 22 2222 2222**। तू किस पर भरोसा रखता है कि तूने मुझसे बलवा किया है?

21 सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है, उस पर यदि कोई टेक लगाए, तो वह

\* **18:4** **22222222**: इसका अर्थ है कांस्य और साँप। † **18:6** **22 222222 22 222222 2222**: सुलैमान, यहोशापात, योआश तथा अमस्याह जैसे अच्छे राजा अपने अन्तिम वर्षों में परमेश्वर से दूर हो गए थे। हिजकिय्याह अन्त तक स्थिर रहा था। ‡ **18:20** **22 22 222222 2222 22 2222** **2222**: तथ्य रहित बातें हैं।



द्वारा अशूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर।

7 सुन, मैं उसके मन को प्रेरित करूँगा, कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए, और मैं उसको उसी के देश में तलवार से मरवा डालूँगा।”

8 तब रबशाके ने लौटकर अशूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया, क्योंकि उसने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है।

9 जब उसने कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना, “वह मुझसे लड़ने को निकला है,” तब उसने हिजकिय्याह के पास दूतों को यह कहकर भेजा,

10 “तुम यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यह कहना: तेरा परमेश्वर जिसका तू भरोसा करता है, यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए, कि यरूशलेम अशूर के राजा के वश में न पड़ेगा।

11 देख, तूने तो सुना है कि अशूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा व्यवहार किया है और उनका सत्यानाश कर दिया है। फिर क्या तू बचेगा?

12 गोजान और हारान और रेसेप और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी, जिन जातियों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया, क्या उनमें से किसी जाति के देवताओं ने उसको बचा लिया?

13 हमाम का राजा, और अर्पाद का राजा, और सपर्वैम नगर का राजा, और हेना और इव्वा के राजा ये सब कहाँ रहे?”

14 इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा। तब यहोवा के भवन में जाकर उसको यहोवा के सामने फैला दिया।

15 और यहोवा से यह प्रार्थना की, “हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! हे करूबों पर विराजनेवाले! पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है। आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है।

16 हे यहोवा! कान लगाकर सुन, हे यहोवा आँख खोलकर देख, और सन्हेरीब के वचनों को सुन ले, जो उसने जीविते परमेश्वर की निन्दा करने को कहला भेजे हैं।

17 हे यहोवा, सच तो है, कि अशूर के राजाओं ने जातियों को और उनके देशों को उजाड़ा है।

18 और ~~तू ही परमेश्वर है, क्योंकि वे ईश्वर न थे; वे मनुष्यों के बनाए हुए काठ और पत्थर ही के थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके।~~

19 इसलिए अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू हमें उसके हाथ से बचा, कि पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोग

जान लें कि केवल तू ही यहोवा है।”

20 तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जो प्रार्थना तूने अशूर के राजा सन्हेरीब के विषय मुझसे की, उसे मैंने सुना है।

21 उसके विषय में यहोवा ने यह वचन कहा है, “सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और तुझे उपहास में उड़ाती है, यरूशलेम की पुत्री, तुझ पर सिर हिलाती है।

22 “तूने जो नामधराई और निन्दा की है, वह किसकी की है?

और तूने जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है वह किसके विरुद्ध किया है?

इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध तूने किया है!

23 अपने दूतों के द्वारा तूने प्रभु की निन्दा करके कहा है, कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर, वरन् लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूँ,

और मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदारुओं और अच्छे-अच्छे सनोवर को काट डालूँगा; और उसमें जो सबसे ऊँचा टिकने का स्थान होगा उसमें और उसके वन की फलदाई बारियों में प्रवेश करूँगा।

24 मैंने तो खुदवाकर परदेश का पानी पिया;

और मिस्र की नहरों में पाँव धरते ही उन्हें सूखा डालूँगा।

25 क्या तूने नहीं सुना, कि प्राचीनकाल से मैंने यही ठहराया?

और पिछले दिनों से इसकी तैयारी की थी, उन्हें अब मैंने पूरा भी किया है,

कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे,

26 इसी कारण उनके रहनेवालों का बल घट गया;

वे विस्मित और लज्जित हुए;

वे मैदान के छोटे-छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास, और ऐसे अनाज के समान हो गए, जो बढ़ने से पहले सूख जाता है।

27 “मैं तो तेरा बैठा रहना, और कूच करना, और लौट आना जानता हूँ,

और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है।

28 इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता

और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं;

मैं तेरी नाक में अपनी नकेल डालकर

और तेरे मुँह में अपना लगाम लगाकर,

† 19:18 ~~तू ही परमेश्वर है, क्योंकि वे ईश्वर न थे; वे मनुष्यों के बनाए हुए काठ और पत्थर ही के थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके।~~ अशूरों का एक नियम था कि जिन देशों को वे जीत लेते थे उनके मन्दिरों से वे देवताओं की मूर्तियाँ ले जाकर अपनी वेदियों पर रखते थे।

जिस मार्ग से तू आया है, उसी से तुझे लौटा दूँगा।

29 “और तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगें, और दूसरे वर्ष उसे जो उत्पन्न हो वह खाओगे; और तीसरे वर्ष बीज बोने और उसे लवने पाओगे, और दाख की बारियाँ लगाने और उनका फल खाने पाओगे।

30 और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे, और फलेंगे भी।

31 क्योंकि यरूशलेम में से बचे हुए और सिय्योन पर्वत के भागे हुए लोग निकलेंगे। यहोवा यह काम अपनी जलन के कारण करेगा।

32 “इसलिए यहोवा अशूर के राजा के विषय में यह कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने, वरन् इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा, और न वह ढाल लेकर इसके सामने आने, या इसके विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा।

33 जिस मार्ग से वह आया, उसी से वह लौट भी जाएगा, और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है।

34 और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त ~~२२ २२२ २२ २२२२२ २२२२ २२२ २२२२२२२~~।”

35 उसी रात में क्या हुआ, कि यहोवा के दूत ने निकलकर अशूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा, और भोर को जब लोग सवेरे उठे, तब देखा, कि शव ही शव पड़े हैं।

36 तब अशूर का राजा सन्हेरीब चल दिया, और लौटकर नीनवे में रहने लगा।

37 वहाँ वह अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था, कि अद्रम्मेलोक और शरेसेर ने उसको तलवार से मारा, और अरारात देश में भाग गए। तब उसका पुत्र एसहद्दोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

## 20

~~२२२२२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२~~

1 उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था, और आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, “यहोवा यह कहता है, कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा।”

2 ~~२२ २२२२ २२२२२२ २२ २२ २२२२ २२२२~~\*, यहोवा से प्रार्थना करके कहा, “हे यहोवा!

‡ 19:34 ~~२२ २२२ २२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२२~~: ऐसों से जो उसके सामर्थ्य को सीधा-सीधा नकारते हैं, उनसे अपने नगर की रक्षा करना परमेश्वर का सम्मान था। \* 20:2 ~~२२ २२२२ २२२२ २२ २२ २२२२ २२२~~: क्योंकि वह भक्ति में बाधा रहित प्रार्थना करना चाहता था। † 20:3

~~२२२२२ २२~~: पुरानी वाचा में धर्मी जन के लिए समृद्धि और दीर्घायु की प्रतिज्ञा थी। अपनी विश्वासयोग्यता एवं निष्ठा से अभिक्ष हिजकिय्याह सविनय प्रेरित होने का प्रयास करता है।

3 मैं विनती करता हूँ, ~~२२२२२ २२~~, कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलता आया हूँ; और जो तुझे अच्छा लगता है वही मैं करता आया हूँ।” तब हिजकिय्याह फूट फूटकर रोया।

4 तब ऐसा हुआ कि यशायाह आँगन के बीच तक जाने भी न पाया था कि यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा,

5 “लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैंने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आँसू देखे हैं; देख, मैं तुझे चंगा करता हूँ; परसों तू यहोवा के भवन में जा सकेगा।

6 मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूँगा। अशूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊँगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूँगा।”

7 तब यशायाह ने कहा, “अंजीरों की एक टिकिया लो।” जब उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बाँधा, तब वह चंगा हो गया।

8 हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, “यहोवा जो मुझे चंगा करेगा और मैं परसों यहोवा के भवन को जा सकूँगा, इसका क्या चिन्ह होगा?”

9 यशायाह ने कहा, “यहोवा जो अपने कहे हुए वचन को पूरा करेगा, इस बात का यहोवा की ओर से तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि धूपघड़ी की छाया दस अंश आगे बढ़ जाएगी, या दस अंश घट जाएगी।”

10 हिजकिय्याह ने कहा, “छाया का दस अंश आगे बढ़ना तो हलकी बात है, इसलिए ऐसा हो कि छाया दस अंश पीछे लौट जाए।”

11 तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यहोवा को पुकारा, और आहाज की धूपघड़ी की छाया, जो दस अंश ढल चुकी थी, यहोवा ने उसको पीछे की ओर लौटा दिया।

~~२२२२२२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२ २२२२~~

12 उस समय बलदान का पुत्र बरोदक-बलदान जो बाबेल का राजा था, उसने हिजकिय्याह के रोगी होने की चर्चा सुनकर, उसके पास पत्री और भेंट भेजी।

13 उनके लानेवालों की मानकर हिजकिय्याह ने उनको अपने अनमोल पदार्थों का सब भण्डार, और चाँदी और सोना और सुगन्ध-द्रव्य और उत्तम तेल और





सुनेगा वह बड़े सन्नाटे में आ जाएगा।

13 और जो मापने की डोरी मैंने सामरिया पर डाली है और जो साहुल मैंने अहाब के घराने पर लटकाया है वही यरूशलेम पर डालूँगा। और मैं यरूशलेम को ऐसा पोछूँगा जैसे कोई थाली को पोछता है और उसे पोछकर उलट देता है।

14 मैं अपने निज भाग के बचे हुआओं को त्याग कर शत्रुओं के हाथ कर दूँगा और वे अपने सब शत्रुओं के लिए लूट और धन बन जाएँगे।

15 इसका कारण यह है, कि जब से उनके पुरखा मिस्र से निकले तब से आज के दिन तक वे वह काम करके जो मेरी दृष्टि में बुरा है, मुझे क्रोध दिलाते आ रहे हैं।”

16 मनश्शे ने न केवल वह काम कराके यहूदियों से पाप कराया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, वरन् निर्दोषों का खून बहुत बहाया, यहाँ तक कि उसने यरूशलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे तक खून से भर दिया।

17 मनश्शे के और सब काम जो उसने किए, और जो पाप उसने किए, वह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

18 अन्त में मनश्शे मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसे उसके भवन की बारी में जो उज्जा की बारी कहलाती थी मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राजा हुआ।

२२:१३ २२ २२:१३

19 जब आमोन राज्य करने लगा, तब वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम मशुल्लेमेत था जो योत्बावासी हारूस की बेटी थी।

20 और उसने अपने पिता मनश्शे के समान वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

21 वह पूरी तरह अपने पिता के समान चाल चला, और जिन मूर्तों की उपासना उसका पिता करता था, उनकी वह भी उपासना करता, और उन्हें दण्डवत् करता था।

22 उसने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया, और यहोवा के मार्ग पर न चला।

23 आमोन के कर्मचारियों ने विद्रोह की गोष्ठी करके राजा को उसी के भवन में मार डाला।

24 तब साधारण लोगों ने उन सभी को मार डाला, जिन्होंने राजा आमोन के विरुद्ध-विद्रोह की गोष्ठी की थी, और लोगों ने उसके पुत्र योशिय्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया।

25 आमोन के और काम जो उसने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं।

26 उसे भी उज्जा की बारी में उसकी निज कब्र में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र योशिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

## 22

२२:१३ २२ २२:१३ २२ २२:१३

1 जब योशिय्याह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यदीदा था जो बोस्कतवासी अदायाह की बेटी थी।

2 उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है और जिस मार्ग पर उसका मूलपुरुष दाऊद चला ठीक उसी पर वह भी चला, और उससे न तो दाहिनी ओर न बाई ओर मुड़ा।

3 अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में राजा योशिय्याह ने असल्याह के पुत्र शापान मंत्री को जो मशुल्लाम का पोता था, यहोवा के भवन में यह कहकर भेजा,

4 “*२२:१३ २२ २२:१३ २२ २२:१३*\* महायाजक के पास जाकर कह, कि जो चाँदी यहोवा के भवन में लाई गई है, और द्वारपालों ने प्रजा से इकट्ठी की है,

5 उसको जोड़कर, उन काम करानेवालों को सौंप दे, जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिए हैं; फिर वे उसको यहोवा के भवन में काम करनेवाले कारीगरों को दें, इसलिए कि उसमें जो कुछ टूटा फूटा हो उसकी वे मरम्मत करें।

6 अर्थात् बढइयों, राजमिस्त्रियों और संगतराशों को दें, और भवन की मरम्मत के लिये लकड़ी और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में लगाएँ।”

7 परन्तु जिनके हाथ में वह चाँदी सौंपी गई, उनसे हिसाब न लिया गया, क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे।

8 हिल्किय्याह महायाजक ने शापान मंत्री से कहा, “मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है;” तब हिल्किय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी, और वह उसे पढ़ने लगा।

9 तब शापान मंत्री ने राजा के पास लौटकर यह सन्देश दिया, “जो चाँदी भवन में मिली, उसे तेरे कर्मचारियों ने थैलियों में डालकर, उनको सौंप दिया जो यहोवा के भवन में काम करानेवाले हैं।”

\* 22:4 २२:१३ २२ २२:१३ २२ २२:१३: हिल्किय्याह सरयाह जो यहूदा के बन्धुआई में ले जाने के समय महायाजक था, उसका पिता (या दादा) था।

10 फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया, “हिल्किय्याह याजक ने उसे एक पुस्तक दी है।” तब शापान उसे राजा को पढ़कर सुनाने लगा।

11 व्यवस्था की उस पुस्तक की बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े।

12 फिर उसने हिल्किय्याह याजक, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के पुत्र अकबोर, शापान मंत्री और असायाह नामक अपने एक कर्मचारी को आज्ञा दी,

13 “यह पुस्तक जो मिली है, उसकी बातों के विषय तुम जाकर मेरी और प्रजा की और सब यहूदियों की ओर से यहोवा से पूछो, क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इस कारण भड़की है, कि हमारे पुरखाओं ने इस पुस्तक की बातें न मानी कि जो कुछ हमारे लिये लिखा है, उसके अनुसार करते।”

14 हिल्किय्याह याजक और अहीकाम, अकबोर, शापान और असायाह ने हुल्दा नबिया के पास जाकर उससे बातें की, वह उस शल्लूम की पत्नी थी जो तिकवा का पुत्र और हर्हस का पोता और वस्त्रों का रखवाला था, (और वह स्त्री यरूशलेम के नये मोहल्ले में रहती थी)।

15 उसने उनसे कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा, उससे यह कहो,

16 ‘यहोवा यह कहता है, कि सुन, जिस पुस्तक को यहूदा के राजा ने पढ़ा है, उसकी सब बातों के अनुसार मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर विपत्ति डालने पर हूँ।

17 उन लोगों ने मुझे त्याग कर <sup>22:17</sup> ~~यहोवा के आदेशों को न माना~~ और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे क्रोध दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़केगी और फिर शान्त न होगी।

18 परन्तु यहूदा का राजा जिसने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेजा है उससे तुम यह कहो, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,

19 इसलिए कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और मेरी वे बातें सुनकर कि इस स्थान और इसके निवासियों को देखकर लोग चकित होंगे, और श्राप दिया करेंगे, तूने यहोवा के सामने अपना सिर झुकाया, और अपने वस्त्र फाड़कर मेरे सामने रोया है, इस कारण मैंने तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी है।

20 इसलिए देख, मैं ऐसा करूँगा, कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा, और तू शान्ति से अपनी कब्र को पहुँचाया जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डालूँगा, उसमें से तुझे अपनी आँखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।” तब उन्होंने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया।

## 23

<sup>23:1</sup> ~~राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरानियों को अपने पास बुलाकर इकट्ठा किया।~~

1 राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरानियों को अपने पास बुलाकर इकट्ठा किया।

2 तब राजा, यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और नबियों वरन् छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन में गया। उसने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़कर सुनाई।

3 तब राजा ने खम्भे के पास खड़ा होकर यहोवा से इस आशा की <sup>23:3</sup> ~~कि मैं यहोवा के पीछे-पीछे चलूँगा, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञाएँ, चित्तौनियाँ और विधियों का नित पालन किया करूँगा, और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूँगा; और सब प्रजा वाचा में सम्भागी हुई।~~

4 तब राजा ने हिल्किय्याह महायाजक और उसके नीचे के याजकों और द्वारपालों को आज्ञा दी कि जितने पात्र बाल और अशेरा और आकाश के सब गणों के लिये बने हैं, उन सभी को यहोवा के मन्दिर में से निकाल ले आओ। तब उसने उनको यरूशलेम के बाहर किद्रोन के मैदानों में फूँककर उनकी राख बतेल को पहुँचा दी।

5 जिन पुजारियों को यहूदा के राजाओं ने यहूदा के नगरों के ऊँचे स्थानों में और यरूशलेम के आस-पास के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था, उनको और जो बाल और सूर्य-चन्द्रमा, राशिचक्र और आकाश के सारे गणों को धूप जलाते थे, उनको भी राजा ने हटा दिया।

6 वह अशेरा को यहोवा के भवन में से निकालकर यरूशलेम के बाहर किद्रोन नाले में ले गया और वहीं उसको फूँक दिया, और पीसकर बुकनी कर दिया। तब वह बुकनी साधारण लोगों की कब्रों पर फेंक दी।

† 22:17 <sup>22:17</sup> ~~यहोवा के आदेशों को न माना~~: अन्य देवताओं की सेवा की और उनकी उपासना की। धूप जलाया उस तथ्य की ओर संकेत करता है कि उस समय की मनोवांछित मूर्तिपूजा में वे अपने घरों की छतों पर बाल देवता के लिए धूप जलाते थे। \* 23:3 <sup>23:3</sup> ~~यहोवा के पीछे-पीछे~~: योशिय्याह के द्वारा होरेब पर्वत पर परमेश्वर और इस्राएलियों के बीच बाँधी गई वाचा (व्य 5:2) को नवीकरण किया, वाचा का नवीकरण किसी के व्यक्तिगत कार्य से ही सम्भव था।



और इस यरूशलेम नगर, जिसे मैंने चुना और इस भवन जिसके विषय मैंने कहा, कि यह मेरे नाम का निवास होगा, के विरुद्ध मैं हाथ उठाऊँगा।”

28 योशिय्याह के और सब काम जो उसने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

29 उसके दिनों में फ़िरौन-नको नामक मिस्र का राजा अशशूर के राजा की सहायता करने फ़रात महानद तक गया तो योशिय्याह राजा भी उसका सामना करने को गया, और फ़िरौन-नको ने उसको देखते ही मगिदो में मार डाला।

30 तब उसके कर्मचारियों ने उसका शव एक रथ पर रख मगिदो से ले जाकर यरूशलेम को पहुँचाया और उसकी निज कब्र में रख दिया। तब साधारण लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसका अभिषेक करके, उसके पिता के स्थान पर राजा नियुक्त किया।

22222222 22 222222

31 जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम हमूतल था, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी।

32 उसने ठीक अपने पुरखाओं के समान वही किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

33 उसको फ़िरौन-नको ने हमात देश के रिबला नगर में बन्दी बना लिया, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न करने पाए, फिर उसने देश पर सौ किककार चाँदी और किककार भर सोना जुर्माना किया।

34 तब फ़िरौन-नको ने योशिय्याह के पुत्र एलयाकीम को उसके पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा नियुक्त किया, और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा; परन्तु यहोआहाज को वह ले गया। और यहोआहाज मिस्र में जाकर वहीं मर गया।

35 यहोयाकीम ने फ़िरौन को वह चाँदी और सोना तो दिया परन्तु देश पर इसलिए कर लगाया कि फ़िरौन की आज्ञा के अनुसार उसे दे सके, अर्थात् देश के सब लोगों से जितना जिस पर लगान लगा, उतनी चाँदी और सोना उससे फ़िरौन-नको को देने के लिये ले लिया।

22222222 22 222222

36 जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह पच्चीस वर्ष का था, और ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम जबीदा था जो रूमावासी पदायाह की बेटी थी।

37 उसने ठीक अपने पुरखाओं के समान वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

## 24

222222 22 22222222 22 22222222

1 उसके दिनों में बाबेल के राजा 222222222222\* ने चढ़ाई की और यहोयाकीम तीन वर्ष तक उसके अधीन रहा; तब उसने फिरकर उससे विद्रोह किया।

2 तब यहोवा ने उसके विरुद्ध और यहूदा को नाश करने के लिये कसदियों, अरामियों, मोआबियों और अम्मोनियों के दल भेजे, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो उसने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था।

3 निःसन्देह यह यहूदा पर यहोवा की आज्ञा से हुआ, ताकि वह उनको अपने सामने से दूर करे। यह मनश्शे के सब पापों के कारण हुआ।

4 और निर्दोष के उस खून के कारण जो उसने किया था; क्योंकि उसने यरूशलेम को निर्दोषों के खून से भर दिया था, जिसको यहोवा ने क्षमा करना न चाहा।

5 यहोयाकीम के और सब काम जो उसने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

6 अन्त में यहोयाकीम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र 2222222222† उसके स्थान पर राजा हुआ।

7 और मिस्र का राजा अपने देश से बाहर फिर कभी न आया, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर फ़रात महानद तक जितना देश मिस्र के राजा का था, सब को अपने वश में कर लिया था।

22222222 22 222222

8 जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह अठारह वर्ष का था, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नहुशता था, जो यरूशलेम के एलनातान की बेटी थी।

9 उसने ठीक अपने पिता के समान वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

10 उसके दिनों में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारियों ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके नगर को घेर लिया।

11 जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारी नगर को घेरे हुए थे, तब वह आप वहाँ आ गया।

\* 24:1 222222222222: इस नाम की संधि तीन शब्दों से की गई है, नवो: उनका एक प्रसिद्ध देवता (यशा 46:1), कुदूर जिसका अर्थ संदिग्ध है (मुकुट या भूमि का चिन्ह) और उजर अर्थात् रक्षक। † 24:6 2222222222: उसे यकोन्याह या कोनियाह भी कहा जाता है यहोयाकीम और दोनों का अर्थ है यहोवा स्थिर करेगा और कोनियाह अर्थात् यहोवा स्थापित करे।







30 मिशमा, दूमा, मस्सा, हदद, तेमा,

31 यतूर, नापीश, केदमा। ये इश्माएल के पुत्र हुए।

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

32 फिर कतूरा जो अब्राहम की रखैल थी, उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् उससे जिम्नान, योक्षान, मदान, मिद्यान, यिशबाक और शूह उत्पन्न हुए। योक्षान के पुत्र: शेबा और ददान।

33 और मिद्यान के पुत्र: एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दा, ये सब कतूरा के वंशज हैं।

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

34 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ। इसहाक के पुत्र: एसाव और इस्राएल। (☞☞☞☞☞☞ 1:2)

35 एसाव के पुत्र: एलीपज, रूएल, यूश, यालाम और कोरह थे।

36 एलीपज के ये पुत्र हुए: तेमान, ओमार, सपी, गाताम, कनज, तिम्ना और अमालेक।

37 रूएल के पुत्र: नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा।

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

38 फिर सेईर के पुत्र: लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, दीशोन, एसेर और दीशान हुए।

39 और लोतान के पुत्र: होरी और होमाम, और लोतान की बहन तिम्ना थीं।

40 शोबाल के पुत्र: अल्यान, मानहत, एबाल, शपी और ओनाम। और सिबोन के पुत्र: अय्या, और अना।

41 अना का पुत्र: दीशोन। और दीशोन के पुत्र: हम्नान, एशबान, यित्रान और करान।

42 एसेर के पुत्र: बिल्हान, जावान और याकान। और दीशान के पुत्र: ऊस और अरान।

☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞

43 जब किसी राजा ने इस्राएलियों पर राज्य न किया था, तब एदोम के देश में ये राजा हुए अर्थात् बोर का पुत्र बेला और उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा था।

44 बेला के मरने पर, बोस्राई जेरह का पुत्र योबाब, उसके स्थान पर राजा हुआ।

45 और योबाब के मरने पर, तेमानियों के देश का हूशाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

46 फिर हूशाम के मरने पर, बदद का पुत्र हदद, उसके स्थान पर राजा हुआ: यह वही है जिसने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार दिया; और उसकी राजधानी का नाम अबीत था।

47 और हदद के मरने पर, मस्रेकाई सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ।

48 फिर सम्ला के मरने पर शाऊल, जो महानद के तट पर के रहोबोत नगर का था, वह उसके स्थान पर राजा हुआ।

49 और शाऊल के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ।

50 और बाल्हानान के मरने पर, हदद उसके स्थान पर राजा हुआ; और उसकी राजधानी का नाम पाऊ हुआ, उसकी पत्नी का नाम महेतबेल था जो मेज़ाहाब की नातिनी और मन्नेद की बेटी थी।

51 और हदद मर गया।

फिर एदोम के अधिपति ये थे: अर्थात् अधिपति तिम्ना, अधिपति अल्वा, अधिपति यतेत,

52 अधिपति ओहोलीबामा, अधिपति एला, अधिपति पीनोन,

53 अधिपति कनज, अधिपति तेमान, अधिपति मिबसार,

54 अधिपति मग्दीएल, अधिपति ईराम। एदोम के ये अधिपति हुए।

## 2

1 ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞\*; रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून,

2 दान, यूसुफ, बिन्यामीन, नप्ताली, गाद और आशेर।

☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

3 यहूदा के ये पुत्र हुए एर, ओनान और शेला, उसके ये तीनों पुत्र, शूआ नामक एक कनानी स्त्री की बेटी से उत्पन्न हुए। और यहूदा का जेठा एर, यहोवा की दृष्टि में बुरा था, इस कारण उसने उसको मार डाला।

4 यहूदा की बहू तामार से परेस और जेरह उत्पन्न हुए। यहूदा के कुल पाँच पुत्र हुए।

5 परेस के पुत्र: हेस्रोन और हामूल।

6 और जेरह के पुत्र: जिम्री, एतान, हेमान, कलकोल और दारा सब मिलकर पाँच पुत्र हुए।

7 फिर कर्मी का पुत्र: आकार जो अर्पण की हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात करके इस्राएलियों को कष्ट देनेवाला हुआ।

8 और एतान का पुत्र: अजर्याह।

9 हेस्रोन के जो पुत्र उत्पन्न हुए यरहमेल, राम और कलूबै। (☞☞☞☞☞☞ 1:3)

10 और राम से अम्मीनादाब और अम्मीनादाब से नहशोन उत्पन्न हुआ जो यहूदा वंशियों का प्रधान बना।

11 और नहशोन से सल्मा और सल्मा से बोअज;

\* 2:1 ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞: यहाँ नामों का क्रम उनके जन्म की और वैधता की अनुरूपता में है।



12 और बोअज से ओबेद और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। (1:4,5)

13 और यिशै से उसका जेठा एलीआब और दूसरा अबीनादाब तीसरा शिमा,

14 चौथा नतनेल और पाँचवाँ रहैं।

15 छठा ओसेम और सातवाँ दाऊद उत्पन्न हुआ। (3:31-32)

16 इनकी बहनें सरूयाह और अबीगैल थीं। और सरूयाह के पुत्र अबीशै, योआब और असाहेल ये तीन थे।

17 और अबीगैल से अमासा उत्पन्न हुआ, और अमासा का पिता इश्माएली येतेर था।

हेस्रोन के पुत्र कालेब के अजूबा नामक एक स्त्री

18 से, और यरीओत से बेटे उत्पन्न हुए; और इसके पुत्र ये हुए; अर्थात् येशेर, शोबाब और अर्दान।

19 जब अजूबा मर गई, तब कालेब ने एप्राता को ब्याह लिया; और जिससे हूर उत्पन्न हुआ।

20 और हूर से ऊरी और ऊरी से बसलेल उत्पन्न हुआ।

21 इसके बाद हेस्रोन गिलाद के पिता माकीर की बेटी के पास गया, जिसे उसने तब ब्याह लिया, जब वह साठ वर्ष का था; और उससे सगूब उत्पन्न हुआ।

22 और सगूब से याईर जन्मा, जिसके गिलाद देश में तेईस नगर थे।

23 और गशूर और अराम ने याईर की बस्तियों को और गाँवों समेत कनात को, उनसे ले लिया; 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100

24 और जब हेस्रोन कालेब एप्राता में मर गया, तब उसकी अबिय्याह नामक स्त्री से अशहूर उत्पन्न हुआ जो तकोआ का पिता हुआ।

हेस्रोन के जेठे यरहमेल के ये पुत्र हुए अर्थात्

25 राम जो उसका जेठा था; और बूना, ओरेन, ओसेम और अहिय्याह।

26 और यरहमेल की एक और पत्नी थी, जिसका नाम अतारा था; वह ओनाम की माता थी।

27 और यरहमेल के जेठे राम के ये पुत्र हुए, अर्थात् मास, यामीन और एकेर।

28 और ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा हुए। और शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर हुए।

29 और अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था, और उससे अहबान और मोलीद उत्पन्न हुए।

30 और नादाब के पुत्र सेलेद और अप्पैम हुए; सेलेद तो निःसन्तान मर गया और अप्पैम का पुत्र यिशी

31 और यिशी का पुत्र शेशान और शेशान का पुत्रः अहलै।

32 फिर शम्मै के भाई यादा के पुत्रः येतेर और योनातान हुए; येतेर तो निःसन्तान मर गया।

33 योनातान के पुत्र पेलेत और जाजा; यरहमेल के पुत्र ये हुए।

34 शेशान के तो बेटा न हुआ, केवल बेटियाँ हुईं। शेशान के पास यर्हा नामक एक मिस्री दास था।

35 और शेशान ने उसको अपनी बेटी ब्याह दी, और उससे अत्तै उत्पन्न हुआ।

36 और अत्तै से नातान, नातान से जाबाद,

37 जाबाद से एपलाल, एपलाल से ओबेद,

38 ओबेद से येहू, येहू से अजर्याह,

39 अजर्याह से हेलेस, हेलेस से एलासा,

40 एलासा से सिस्मै, सिस्मै से शल्लूम,

41 शल्लूम से यकम्याह और यकम्याह से एलीशामा उत्पन्न हुए।

यरहमेल के भाई कालेब के ये पुत्र हुए अर्थात्

42 फिर यरहमेल के भाई कालेब के ये पुत्र हुए अर्थात् उसका जेठा मेशा जो जीप का पिता हुआ। और मारेशा का पुत्र हेब्रोन भी उसी के वंश में हुआ।

43 और हेब्रोन के पुत्र कोरह, तप्पूह, रेकेम और शेमा।

44 और शेमा से योर्काम का पिता रहम और रेकेम से शम्मै उत्पन्न हुआ था।

45 और शम्मै का पुत्र माओन हुआ; और माओन बेतसूर का पिता हुआ।

46 फिर एपा जो कालेब की रखैल थी, उससे हारान, मोसा और गाजेज उत्पन्न हुए; और हारान से गाजेज उत्पन्न हुआ।

47 फिर याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत, एपा और शाप।

48 और माका जो कालेब की रखैल थी, उससे शेबेर और तिर्हाना उत्पन्न हुए।

49 फिर उससे मदमन्ना का पिता शाप और मकबेना और गिबा का पिता शवा उत्पन्न हुए। और कालेब की बेटी अकसा थी।

† 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100 सगूब और याईर और उनकी सन्तानों को माकीर के पुत्र कहा गया है न कि हेस्रोन के पुत्र। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी चिट्ठी मनश्शे के साथ डाली और उन्हीं के भाग में रहे।

50 कालेब के वंश में ये हुए। एप्रता के जेठे हूर का पुत्र: किर्यत्यारीम का पिता शोबाल,

51 बैतलहम का पिता सल्मा और बेतगादेर का पिता हारेप।

52 और किर्यत्यारीम के पिता शोबाल के वंश में हारोए आधे मनुहोतवासी,

53 और किर्यत्यारीम के कुल अर्थात् येतेरी, पूती, शूमाती और मिश्राई और इनसे सोराई और एशताओली निकले।

54 फिर सल्मा के वंश में बैतलहम और नतोपाई, अत्रोतबेत्योआब और आधे मानहती, सोरी।

55 याबेस में रहनेवाले लेखकों के कुल अर्थात् तिराती, शिमाती और सूकाती हुए। ये रेकाब के घराने के मूलपुरुष हम्मत के वंशवाले केनी हैं।

### 3

1:1-10

1 दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन में उससे उत्पन्न हुए वे ये हैं: जेठा अम्मोन जो यिज्जेली अहीनोअम से, दूसरा दानिय्येल जो कर्मेली अबीगैल से उत्पन्न हुआ।

2 तीसरा अबशालोम जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका का पुत्र था, चौथा अदोनिय्याह जो हग्गीत का पुत्र था।

3 पाँचवाँ शपत्याह जो अबीतल से, और छठवाँ यित्राम जो उसकी स्त्री एग्ला से उत्पन्न हुआ।

4 दाऊद से हेब्रोन में छः पुत्र उत्पन्न हुए, और वहाँ उसने साढ़े सात वर्ष राज्य किया; यरूशलेम में तैंतीस वर्ष राज्य किया।

5 यरूशलेम में उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए: अर्थात् शिमा, शोबाब, नातान और सुलैमान, ये चारों अम्मीएल की बेटी बतशेबा से उत्पन्न हुए।

6 और यिभार, एलीशामा एलीपेलेत,

7 नोगह, नेपेग, यापी,

8 एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेत, ये नौ पुत्र थे।

9 ये सब दाऊद के पुत्र थे; और इनको छोड़ रखैलों के भी पुत्र थे, और इनकी बहन तामार थी।

1:11-15

10 फिर सुलैमान का पुत्र रहबाम उत्पन्न हुआ; रहबाम का अबिय्याह, अबिय्याह का आसा, आसा का यहोशापात,

11 यहोशापात का योराम, योराम का अहज्याह, अहज्याह का योआश;

12 योआश का अमस्याह, अमस्याह का अजर्याह, अजर्याह का योताम;

13 योताम का आहाज, आहाज का हिजकिय्याह, हिजकिय्याह का मनश्शे;

14 मनश्शे का आमोन, और आमोन का योशिय्याह पुत्र हुआ। (1:7-10)

15 और योशिय्याह के पुत्र: उसका जेठा योहानान, दूसरा यहोयाकीम; तीसरा सिदकिय्याह, चौथा शल्लूम।

16 यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह, इसका पुत्र सिदकिय्याह। (1:11)

17 और यकोन्याह का पुत्र अस्सीर, उसका पुत्र शालतीएल; (1:12, 3:27)

18 और मल्कीराम, पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा और नदब्याह;

19 और पदायाह के पुत्र जरुब्बाबेल और शिमी हुए; और 2:1-10\* के पुत्र मशुल्लाम और हनन्याह, जिनकी बहन शलोमीत थी;

20 और हशुबा, ओहेल, बेरेक्याह, हसद्याह और यूशब-हेसेद, पाँच।

21 और हनन्याह के पुत्र: पलत्याह और यशायाह, और उसका पुत्र रपायाह, उसका पुत्र अर्नान, उसका पुत्र ओबद्याह, उसका पुत्र शकन्याह।

22 और शकन्याह का पुत्र शमायाह, और शमायाह के पुत्र हत्तूश और यिगाल, बारीह, नार्याह और शापात, छः।

23 और नार्याह के पुत्र एल्योएनै, हिजकिय्याह और अज्जीकाम, तीन।

24 और एल्योएनै के पुत्र होदव्याह, एल्याशीब, पलायाह, अक्कूब, योहानान, दलायाह और अनानी, सात।

### 4

1:16-20

1 यहूदा के पुत्र: पेरेस, हेस्रोन, कर्मी, हूर और शोबाल।

2 और शोबाल के पुत्र: रायाह से यहत और यहत से अहमै और लहद उत्पन्न हुए, ये सोराई कुल हैं।

3 एताम के पिता के ये पुत्र हुए अर्थात् यिज्जेल, यिश्मा और यिद्दाश, जिनकी बहन का नाम हस्सलेलपोनी था;

\* 3:19 1:1-10: जिसे अन्य स्थानों में शालतीएल का पुत्र भी कहा गया है क्योंकि वही शालतीएल का उत्तराधिकारी और वंशज था क्योंकि वह उसका भतीजा था उसके भाई पदायाह का पुत्र।

4 और गदोर का पिता पनूएल, और हूशाह का पिता एजेर। ये एप्रता के जेठे हूर के सन्तान थे, जो बैतलहम का पिता हुआ।

5 और तकोआ के पिता अशहूर के हेला और नारा नामक दो स्त्रियाँ थीं।

6 नारा से अहुज्जाम, हेपेर, तेमनी और हाहशतारी उत्पन्न हुए, नारा के ये ही पुत्र हुए।

7 और हेला के पुत्र, सेरेत, यिसहर और एत्ना।

8 कोस से आनूब और सोबेबा उत्पन्न हुए और उसके वंश में हारूम के पुत्र अहर्हेल के कुल भी उत्पन्न हुए।

9 और याबेस अपने भाइयों से अधिक प्रतिष्ठित हुआ, और उसकी माता ने यह कहकर उसका नाम **११११११\*** रखा, “मैंने इसे पीड़ित होकर उत्पन्न किया।”

10 और याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, “भला होता, कि तू मुझे सचमुच आशीष देता, और मेरा देश बढ़ाता, और तेरा हाथ मेरे साथ रहता, और तू मुझे बुराई से ऐसा बचा रखता कि मैं उससे पीड़ित न होता!” और जो कुछ उसने माँगा, वह परमेश्वर ने उसे दिया।

11 फिर शूहा के भाई कलूब से एशतोन का पिता महीर उत्पन्न हुआ।

12 एशतोन के वंश में बेतरापा का घराना, और पासेह और ईर्नाहाश का पिता तहिन्ना उत्पन्न हुए, रेका के लोग ये ही हैं।

13 कनज के पुत्र: ओत्नीएल और सरायाह, और ओत्नीएल का पुत्र हतत।

14 मोनोतै से ओप्रा और सरायाह से योआब जो गेहराशीम का पिता हुआ; वे कारीगर थे।

15 और यपुन्ने के पुत्र कालेब के पुत्र: ईरू, एला और नाम; और एला के पुत्र: कनज।

16 यहलेल के पुत्र, जीप, जीपा, तीरया और असरेल।

17 और एज्रा के पुत्र: येतेर, मेरेद, एपेर और यालोन, और उसकी स्त्री से मिर्याम, शम्मै **१११ ११११११११ १११ ११११११११ ११११११११ ११११११११ ११११११११**।

18 उसकी यहूदिन स्त्री से गदोर का पिता येरेद, सोको के पिता हेबेर और जानोह के पिता यकूतीएल उत्पन्न हुए, ये फिरौन की बेटी बित्या के पुत्र थे जिसे मेरेद ने ब्याह लिया था।

19 और होदिय्याह की स्त्री जो नहम की बहन थी, उसके पुत्र: कीला का पिता एक गेरेमी और एशतमो का

पिता एक माकाई।

20 और शिमोन के पुत्र: अम्मोन, रिन्ना, बेन्हानान और तोलोन; और यिशी के पुत्र: जोहेत और बेनजोहेत।

21 यहूदा के पुत्र शेला के पुत्र: लेका का पिता एर, मारेशा का पिता लादा और बेत-अशबे में उस घराने के कुल जिसमें सन के कपड़े का काम होता था;

22 और योकीम और कोजेबा के मनुष्य और योआश और साराप जो **११११११** में प्रभुता करते थे, और याशूब लेहेम। इनका वृत्तान्त प्राचीन है।

23 ये कुम्हार थे, और नताईम और गदेरा में रहते थे जहाँ वे राजा का काम-काज करते हुए उसके पास रहते थे।

**११११११ ११ १११११**

24 शिमोन के पुत्र: नमूएल, यामीन, यारीब, जेरह और शाऊल;

25 और शाऊल का पुत्र शल्लूम, शल्लूम का पुत्र मिवसाम और मिवसाम का मिश्मा हुआ।

26 और मिश्मा का पुत्र हम्मूएल, उसका पुत्र जक्कूर, और उसका पुत्र शिमी।

27 शिमी के सोलह बेटे और छः बेटियाँ हुई परन्तु उसके भाइयों के बहुत बेटे न हुए; और उनका सारा कुल यहूदियों के बराबर न बढ़ा।

28 वे बेशेबा, मोलादा, हसर्सूआल,

29 बिल्हा, एसेम, तोलाद,

30 बतूएल, होर्मा, सिकलग,

31 बेत्मर्काबोत, हसर्सूसीम, बेतबिरी और शारैम में बस गए; दाऊद के राज्य के समय तक उनके ये ही नगर रहे।

32 और उनके गाँव एताम, ऐन, रिम्मोन, तोकेन और आशान नामक पाँच नगर;

33 और बाल तक जितने गाँव इन नगरों के आस-पास थे, उनके बसने के स्थान ये ही थे, और यह उनकी वंशावली हैं।

34 फिर मशोबाब और यम्लेक और अमस्याह का पुत्र योशा,

35 और योएल और योशिब्याह का पुत्र यहू, जो सरायाह का पोता, और असीएल का परपोता था,

36 और एल्योएनै और याकोबा, यशोहायाह और असायाह और अदीएल और यसीमीएल और बनायाह,

\* 4:9 **११११११**: यह एक विचित्र बात है कि याबेस का परिचय बिना वर्णन किया गया है जैसे कि वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था। याबेस के नाम का अर्थ है दुःखी और उसकी मनोकामना थी कि उसे उसके नाम का जो अर्थ है वह उस पर न घटे। † 4:17 **११ १११११११ ११ १११११ ११११११ ११११११११** **१११११**: वह गर्भवती हुई। माँ का नाम नहीं दिया गया है। ‡ 4:22 **१११११**: दाऊद ने मोआब को जीत लिया था (2शमू 8:2) और फिर ओम्नी ने उसे जीता और आहाब की मृत्यु तक वह इस्राएल के अधीन रहा। (2राजा 3:5)

37 और शिपी का पुत्र जीजा जो अल्लोन का पुत्र, यह यदायाह का पुत्र, यह शिम्री का पुत्र, यह शमायाह का पुत्र था।

38 ये जिनके नाम लिखे हुए हैं, अपने-अपने कुल में प्रधान थे; और उनके पितरों के घराने बहुत बढ़ गए।

39 ये अपनी भेड़-बकरियों के लिये चराई ढूँढने को गदोर की घाटी की तराई की पूर्व ओर तक गए।

40 और उनको उत्तम से उत्तम चराई मिली, और देश लम्बा-चौड़ा, चैन और शान्ति का था; क्योंकि वहाँ के पहले रहनेवाले हाम के वंश के थे।

41 और जिनके नाम ऊपर लिखे हैं, उन्होंने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में वहाँ आकर जो मूनी वहाँ मिले, उनको डेरों समेत मारकर ऐसा सत्यानाश कर डाला कि आज तक उनका पता नहीं है, और वे उनके स्थान में रहने लगे, क्योंकि वहाँ उनकी भेड़-बकरियों के लिये चराई थी।

42 और उनमें से अर्थात् शिमोनियों में से पाँच सौ पुरुष अपने ऊपर पलत्याह, नार्याह, रपायाह और उज्जीएल नामक यिशी के पुत्रों को अपना प्रधान ठहराया;

43 तब वे सेईद पहाड़ को गए, और जो अमालेकी बचकर रह गए थे उनको मारा, और आज के दिन तक वहाँ रहते हैं।

## 5

११११११ ११ १११११

1 इस्राएल का जेटा तो रूबेन था, परन्तु उसने जो अपने पिता के बिच्छौने को अशुद्ध किया, इस कारण जेटे का अधिकार इस्राएल के पुत्र यूसुफ के पुत्रों को दिया गया। वंशावली जेटे के अधिकार के अनुसार नहीं ठहरी।

2 यद्यपि यहूदा अपने भाइयों पर प्रबल हो गया, और प्रधान उसके वंश से हुआ परन्तु जेटे का अधिकार यूसुफ का था

3 इस्राएल के जेटे पुत्र रूबेन के पुत्र ये हुए: अर्थात् हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी।

4 योएल का पुत्र शमायाह, शमायाह का गोग, गोग का शिम्री,

5 शिम्री का मीका, मीका का रायाह, रायाह का बाल,

6 और बाल का पुत्र बएराह, इसको अशशूर का राजा तिग्लत्पिलेसेर बन्दी बनाकर ले गया; और वह रूबेनियों का प्रधान था।

7 और उसके भाइयों की वंशावली के लिखते समय वे अपने-अपने कुल के अनुसार ये ठहरे, अर्थात् मुख्य तो योएल, फिर जकर्याह,

8 और अजाज का पुत्र बेला जो शेमा का पोता और योएल का परपोता था, वह अरोएर में और नबो और बालमोन तक रहता था।

9 और पूर्व ओर ११ ११ ११११ ११ ११११ ११ ११११\* जो फरात महानद तक पहुँचाता है, क्योंकि उनके पशु गिलाद देश में बढ़ गए थे।

10 और शाऊल के दिनों में उन्होंने हग्रियों से युद्ध किया, और हग्री उनके हाथ से मारे गए; तब वे गिलाद के सम्पूर्ण पूर्वी भाग में अपने डेरों में रहने लगे।

१११ ११ ११११

11 गादी उनके सामने सल्का तक बाशान देश में रहते थे।

12 अर्थात् मुख्य तो योएल और दूसरा शापाम फिर यानै और शापात, ये बाशान में रहते थे।

13 और उनके भाई अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार मीकाएल, मशुल्लाम, शेबा, योरै, याकान, जीअ और एबेर, सात थे।

14 ये अबीहैल के पुत्र थे, जो हूरी का पुत्र था, यह योराह का पुत्र, यह गिलाद का पुत्र, यह मीकाएल का पुत्र, यह यशीशै का पुत्र, यह यहदो का पुत्र, यह बूज का पुत्र था।

15 इनके पितरों के घरानों का मुख्य पुरुष अब्दीएल का पुत्र, और गूनी का पोता अही था।

16 ये लोग बाशान में, गिलाद और उसके गाँवों में, और शारोन की सब चराइयों में उसकी दूसरी ओर तक रहते थे।

17 इन सभी की वंशावली यहूदा के राजा योताम के दिनों और इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में लिखी गई।

18 रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के योद्धा जो ढाल बाँधने, तलवार चलाने, और धनुष के तीर छोड़ने के योग्य और युद्ध करना सीखे हुए थे, वे चौवालीस हजार सात सौ साठ थे, जो युद्ध में जाने के योग्य थे।

19 इन्होंने हग्रियों और यतूर नापीश और नोदाब से युद्ध किया था।

20 उनके विरुद्ध इनको सहायता मिली, और हग्री उन सब समेत जो उनके साथ थे उनके हाथ में कर दिए गए, क्योंकि युद्ध में इन्होंने परमेश्वर की दुहाई दी थी और

\* 5:9 ११ ११ ११११ ११ ११११ ११ ११११: वह अर्थात् रूबेन। पूर्व की ओर रूबेन का गोत्र सीरिया के विशाल रेगिस्तान तक उस पर अधिकार किए हुए था जो फरात नदी से उनकी सीमा तक का था।

उसने उनकी विनती इस कारण सुनी, कि इन्होंने उस पर भरोसा रखा था।

21 और इन्होंने उनके पशु हर लिए, अर्थात् ऊँट तो पचास हजार, भेड़-बकरी ढाई लाख, गदहे दो हजार, और मनुष्य एक लाख बन्धुए करके ले गए।

22 और बहुत से मरे पड़े थे क्योंकि वह लड़ाई परमेश्वर की ओर से हुई। और ये उनके स्थान में बँधुआई के समय तक बसे रहे।

23 फिर मनश्शे के आधे गोत्र की सन्तान उस देश में बसे, और वे बाशान से ले बालहेर्मान, और सनीर और हेर्मान पर्वत तक फैल गए।

24 और उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये थे, अर्थात् एपेर, यिशी, एलीएल, अज्जीएल, यिरम्याह, होदव्याह और यहदीएल, ये बड़े वीर और नामी और अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे।

25 परन्तु उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर से विश्वासघात किया, और उस देश के लोग जिनका परमेश्वर ने उनके सामने से विनाश किया था, उनके देवताओं के पीछे व्यभिचारिणी के समान हो लिए।

26 इसलिए इस्राएल के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल और अश्शूर के राजा तिगलत्पिलेसेर का मन उभारा, और इन्होंने उन्हें अर्थात् रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को बन्धुआ करके हलह, और हारा और गोजान नदी के पास पहुँचा दिया; और वे आज के दिन तक वहीं रहते हैं।

## 6

1 लेवी के पुत्र गेशोम, कहात और मरारी।

2 और कहात के पुत्र, अम्माम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल।

3 और अम्माम की सन्तान हारून, मूसा और मिर्याम, और हारून के पुत्र, नादाब, अबीहू, एलीआजर और ईतामार।

4 एलीआजर से पीनहास, पीनहास से अबीशू,

5 अबीशू से बुक्की, बुक्की से उज्जी,

6 उज्जी से जरहयाह, जरहयाह से मरायोत,

7 मरायोत से अमर्याह, अमर्याह से अहीतूब,

8 अहीतूब से सादोक, सादोक से अहीमास,

9 अहीमास से अजर्याह, अजर्याह से योहानान,

10 और योहानान से अजर्याह उत्पन्न हुआ (जो सुलैमान के यरूशलेम में बनाए हुए भवन में याजक का काम करता था)।

11 अजर्याह से अमर्याह, अमर्याह से अहीतूब,

12 अहीतूब से सादोक, सादोक से शल्लूम,

13 शल्लूम से हिल्कियाह, हिल्कियाह से अजर्याह,

14 अजर्याह से सरायाह, और सरायाह से यहोसादाक उत्पन्न हुआ।

15 और जब यहोवा, यहूदा और यरूशलेम को नबूकदनेस्सर के द्वारा बन्दी बना करके ले गया, तब <sup>22</sup> भी बन्धुआ होकर गया।

16 लेवी के पुत्र गेशोम, कहात और मरारी।

17 और गेशोम के पुत्रों के नाम ये थे, अर्थात् लिब्नी और शिमी।

18 और कहात के पुत्र अम्माम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल।

19 और मरारी के पुत्र महली और मूशी। अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार लेवियों के कुल ये हुए।

20 अर्थात्, गेशोम का पुत्र लिब्नी हुआ, लिब्नी का यहत, यहत का जिम्मा।

21 जिम्मा का योआह, योआह का इदो, इदो का जेरह, और जेरह का पुत्र यातैर हुआ।

22 फिर कहात का पुत्र अम्मीनादाब हुआ, अम्मीनादाब का कोरह, कोरह का अस्सीर,

23 अस्सीर का एल्काना, एल्काना का एब्यासाप, एब्यासाप का अस्सीर,

24 अस्सीर का तहत, तहत का ऊरीएल, ऊरीएल का उज्जियाह और उज्जियाह का पुत्र शाऊल हुआ।

25 फिर एल्काना के पुत्र अमासै और अहीमोत।

26 एल्काना का पुत्र सोपै, सोपै का नहत,

27 नहत का एलीआब, एलीआब का यरोहाम, और यरोहाम का पुत्र एल्काना हुआ।

28 शमूएल के पुत्र: उसका जेठा योएल और दूसरा अबिय्याह हुआ।

29 फिर मरारी का पुत्र महली, महली का लिब्नी, लिब्नी का शिमी, शिमी का उज्जा।

30 उज्जा का शिमा; शिमा का हग्गियाह और हग्गियाह का पुत्र असायाह हुआ।

<sup>22</sup>

† 5:26 <sup>22</sup>: एक नगर या रेगिस्तान प्रतीत होता है। न की नदी है।

\* 6:15 <sup>22</sup>: इस नाम का अर्थ है यहोवा धर्मी है।

31 फिर जिनको दाऊद ने सन्दूक के भवन में रखे जाने के बाद, यहोवा के भवन में गाने का अधिकारी ठहरा दिया वे ये हैं।

32 जब तक सुलैमान यरूशलेम में यहोवा के भवन को बनवाने चुका, तब तक वे मिलापवाले तम्बू के निवास के सामने गाने के द्वारा [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]](#); और इस सेवा में नियम के अनुसार उपस्थित हुआ करते थे।

33 जो अपने-अपने पुत्रों समेत उपस्थित हुआ करते थे वे ये हैं, अर्थात् कहातियों में से हेमान गवैया जो योएल का पुत्र था, और योएल शमूएल का,

34 शमूएल एल्काना का, एल्काना यरोहाम का, यरोहाम एलीएल का, एलीएल तोह का,

35 तोह सूफ का, सूफ एल्काना का, एल्काना महत का, महत अमासै का,

36 अमासै एल्काना का, एल्काना योएल का, योएल अजर्याह का, अजर्याह सपन्याह का,

37 सपन्याह तहत का, तहत अस्सीर का, अस्सीर एब्यासाप का, एब्यासाप कोरह का,

38 कोरह यिसहार का, यिसहार कहात का, कहात लेवी का और लेवी इस्राएल का पुत्र था।

39 और उसका भाई आसाप जो उसके दाहिने खड़ा हुआ करता था वह बेरेक्याह का पुत्र था, और बेरेक्याह शिमा का,

40 शिमा मीकाएल का, मीकाएल बासेयाह का, बासेयाह मल्किय्याह का,

41 मल्किय्याह एल्नी का, एल्नी जेरह का, जेरह अदायाह का,

42 अदायाह एतान का, एतान जिम्मा का, जिम्मा शिमी का,

43 शिमी यहत का, यहत गेशोम का, गेशोम लेवी का पुत्र था।

44 और बाई ओर उनके भाई मरारी खड़े होते थे, अर्थात् एतान जो कीशी का पुत्र था, और कीशी अब्दी का, अब्दी मल्लूक का,

45 मल्लूक हशब्याह का, हशब्याह अमस्याह का, अमस्याह हिल्किय्याह का,

46 हिल्किय्याह अमसी का, अमसी बानी का, बानी शेमेर का,

47 शेमेर महली का, महली मूशी का, मूशी मरारी का, और मरारी लेवी का पुत्र था;

48 और इनके भाई जो लेवीय थे वे परमेश्वर के भवन के निवास की सब प्रकार की सेवा के लिये अर्पण किए हुए थे।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

49 परन्तु हारून और उसके पुत्र होमबलि की वेदी, और धूप की वेदी दोनों पर बलिदान चढ़ाते, और परमपवित्र स्थान का सब काम करते, और इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करते थे, जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने आज्ञाएँ दी थीं।

50 और हारून के वंश में ये हुए: अर्थात् उसका पुत्र एलीआजर हुआ, और एलीआजर का पीनहास, पीनहास का अबीशू,

51 अबीशू का बुक्की, बुक्की का उज्जी, उज्जी का जरहयाह,

52 जरहयाह का मरायोत, मरायोत का अमर्याह, अमर्याह का अहीतूब,

53 अहीतूब का सादोक और सादोक का अहीमास पुत्र हुआ।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

54 उनके भागों में उनकी छावनियों के अनुसार उनकी बस्तियाँ ये हैं अर्थात् कहात के कुलों में से पहली चिट्टी जो हारून की सन्तान के नाम पर निकली;

55 अर्थात् चारों ओर की चराइयों समेत यहूदा देश का हेब्रोन उन्हें मिला।

56 परन्तु उस नगर के खेत और गाँव यपुन्ने के पुत्र कालेब को दिए गए।

57 और हारून की सन्तान को शरणनगर हेब्रोन, और चराइयों समेत लिब्ना, और यत्तीर और अपनी-अपनी चराइयों समेत एशतमो;

58 अपनी-अपनी चराइयों समेत हीलेन और दबीर;

59 आशान और बेतशेमेश।

60 और बिन्यामीन के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत गेबा, आलेमेत और अनातोत दिए गए। उनके घरानों के सब नगर तेरह थे।

61 और शेष कहातियों के गोत्र के कुल, अर्थात् मनश्शे के आधे गोत्र में से चिट्टी डालकर दस नगर दिए गए।

62 और गेशोमियों के कुलों के अनुसार उन्हें इस्साकार, आशेर और नप्ताली के गोत्र, और बाशान में रहनेवाले मनश्शे के गोत्र में से तेरह नगर मिले।

63 मरारियों के कुलों के अनुसार उन्हें रूबेन, गाद और जबूलून के गोत्रों में से चिट्टी डालकर बारह नगर दिए गए।

64 इस्राएलियों ने लेवियों को ये नगर चराइयों समेत दिए।

† 6:32 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]](#): मन्दिर में संगीत की सेवा के आरम्भ एवं निरंतरता पर।

65 उन्होंने यहूदियों, शिमोनियों और बिन्यामीनियों के गोत्रों में से वे नगर दिए, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं।

66 और कहातियों के कई कुलों को उनके भाग के नगर एप्रैम के गोत्र में से मिले।

67 सो उनको अपनी-अपनी चराइयों समेत एप्रैम के पहाड़ी देश का शेकेम जो शरणनगर था, फिर गेजेर,

68 योकमाम, बेथोरोन,

69 अय्यालोन और गत्रिम्मोन;

70 और मनश्शे के आधे गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत आनेर और बिलाम शेष कहातियों के कुल को मिले।

71 फिर गेशोमियों को मनश्शे के आधे गोत्र के कुल में से तो अपनी-अपनी चराइयों समेत बाशान का गोलन और अशतारोत;

72 और इस्साकार के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत केदेश, दाबरात,

73 रामोत और आनेम,

74 और आशेर के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत माशाल, अब्दोन,

75 हूकोक और रहोब;

76 और नप्ताली के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत गलील का केदेश हम्मोन और किर्यातेम मिले।

77 फिर शेष लेवियों अर्थात् मरारियों को जबूलून के गोत्र में से तो अपनी-अपनी चराइयों समेत रिम्मोन और ताबोर।

78 और यरीहो के पास की यरदन नदी के पूर्व ओर रूबेन के गोत्र में से तो अपनी-अपनी चराइयों समेत जंगल का बेसेर, यहस,

79 कदेमोत और मेपात;

80 और गाद के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत गिलाद का रामोत महनैम,

81 हेसबोन और याजेर दिए गए।

## 7

इस्साकार के पुत्र: तोला, पूआ, याशूब और शिमोन,

1 चार थे।

2 और तोला के पुत्र: उज्जी, रपायाह, यरीएल, यहमै, यिबसाम और शमूएल, ये अपने-अपने पितरों के घरानों अर्थात् तोला की सन्तान के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, और दाऊद के दिनों में उनके वंश की गिनती बाईस हजार छः सौ थी।

3 और उज्जी का पुत्र: यिज्रह्याह, और यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल, ओबद्याह, योएल और यिशिशय्याह पाँच थे; ये सब मुख्य पुरुष थे;

4 और उनके साथ उनकी वंशावलियों और पितरों के घरानों के अनुसार सेना के दलों के छत्तीस हजार योद्धा थे; क्योंकि उनकी बहुत सी स्त्रियाँ और पुत्र थे।

5 और उनके भाई जो इस्साकार के सब कुलों में से थे, वे सत्तासी हजार बड़े वीर थे, जो अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार गिने गए।

बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर और यदीएल ये तीन

थे।

7 बेला के पुत्र: एसबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत और ईरी ये पाँच थे। ये अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, और अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार उनकी गिनती बाईस हजार चौत्तीस थी।

8 और बेकेर के पुत्र: जमीरा, योआश, एलीएजेर, एल्योएनै, ओम्री, यरेमोत, अबिय्याह, अनातोत और आलेमेत ये सब बेकेर के पुत्र थे।

9 ये जो अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, इनके वंश की गिनती अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार बीस हजार दो सौ थी।

10 और यदीएल का पुत्र बिल्हान, और बिल्हान के पुत्र, यूश, बिन्यामीन, एहूद, कनाना, जेतान, तर्शाश और अहीशहर थे।

11 ये सब जो यदीएल की सन्तान और अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, इनके वंश से सेना में युद्ध करने के योग्य सत्रह हजार दो सौ पुरुष थे।

12 और ईर के पुत्र शुप्पीम और हुप्पीम और अहेर के पुत्र हूशीम थे।

13 नप्ताली के पुत्र, यहसेल, गूनी, येसेर और शिल्लेम थे, ये बिल्हा के पोते थे।

मनश्शे के पुत्र: अस्त्रीएल जो उसकी अरामी रखैल

14 स्त्री से उत्पन्न हुआ था; और उस अरामी स्त्री ने गिलाद के पिता माकीर को भी जन्म दिया।

15 और माकीर (जिसकी बहन का नाम माका था) उसने हुप्पीम और शुप्पीम के लिये स्त्रियाँ ब्याह लीं, और दूसरे का नाम सलोफाद था, और सलोफाद के बेटियाँ हुईं।

16 फिर माकीर की स्त्री माका को एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसका नाम परेश रखा; और उसके भाई का नाम शेरेश था; और इसके पुत्र ऊलाम और राकेम थे।

17 और ऊलाम का पुत्र: बदान। ये गिलाद की सन्तान थे जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था।

18 फिर उसकी बहन हम्मोलेकेत ने ईशहोद, ~~????????~~\* और महला को जन्म दिया।

19 शमीदा के पुत्र अहिअन, शेकेम, लिखी और अनीआम थे।

~~????????~~ ~~??~~ ~~??????~~

20 एप्रेम के पुत्र शूतेलह और शूतेलह का बेरेद, बेरेद का तहत, तहत का एलादा, एलादा का तहत;

21 तहत का जाबाद और जाबाद का पुत्र शूतेलह हुआ, और एजेर और एलाद भी जिन्हें गत के मनुष्यों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे इसलिए घात किया, कि वे उनके पशु हर लेने को उतर आए थे।

22 सो उनका पिता एप्रेम उनके लिये बहुत दिन शोक करता रहा, और उसके भाई उसे शान्ति देने को आए।

23 और वह अपनी पत्नी के पास गया, और उसने गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म दिया और एप्रेम ने उसका नाम इस कारण बरीआ रखा, कि उसके घराने में विपत्ति पड़ी थी।

24 उसकी पुत्री शेरा थी, जिसने निचले और ऊपरवाले दोनों बेथोरोन नामक नगरों को और उज्जेनशेरा को दृढ़ कराया।

25 उसका पुत्र रेपा था, और रेशेप भी, और उसका पुत्र तेलह, तेलह का तहन, तहन का लादान,

26 लादान का अम्मीहूद, अम्मीहूद का एलीशामा,

27 एलीशामा का नून, और नून का पुत्र यहोशू था।

28 उनकी निज भूमि और बस्तियाँ गाँवों समेत बेतेल और पूर्व की ओर नारान और पश्चिम की ओर गाँवों समेत गेजेर, फिर गाँवों समेत शेकेम, और गाँवों समेत अय्या थीं;

29 और मनश्शेइयों की सीमा के पास अपने-अपने गाँवों समेत बेतशान, तानाक, मगिदो और दोर। इनमें इस्राएल के पुत्र यूसुफ की सन्तान के लोग रहते थे।

~~??????~~ ~~??~~ ~~??????~~

30 आशेर के पुत्र: यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी और बरीआ, और उनकी बहन सेरह हुई।

31 और बरीआ के पुत्र: हेबेर और मल्कीएल और यह बिर्जोत का पिता हुआ।

32 हेबेर ने यपलेत, शोमेर, होताम और उनकी बहन शूआ को जन्म दिया।

33 और यपलेत के पुत्र पासक बिम्हाल और अशवात। यपलेत के ये ही पुत्र थे।

34 शोमेर के पुत्र: अही, रोहगा, यहुब्बा और अराम।

35 उसके भाई हेलेम के पुत्र सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल।

36 सोपह के पुत्र, सूह, हर्नेपेर, शूआल, बेरी, इम्ना।

37 बेसेर, होद, शम्मा, शिलसा, यित्रान और बेरा।

38 येतेर के पुत्र: यपुत्रे, पिस्पा और अरा।

39 उल्ला के पुत्र: आरह, हन्नीएल और रिस्सा।

40 ये सब आशेर के वंश में हुए, और अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े से बड़े वीर थे और प्रधानों में मुख्य थे। ये जो अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार सेना में युद्ध करने के लिये गिने गए, इनकी गिनती छब्बीस हजार थी।

## 8

~~??????????????~~ ~~??~~ ~~??????????~~

1 बिन्यामीन से उसका जेठा बेला, दूसरा अशबेल, तीसरा अहूह,

2 चौथा नोहा और पाँचवाँ रापा उत्पन्न हुआ।

3 बेला के पुत्र अद्दार, गेरा, अबीहूद,

4 अबीशू, नामान, अहोह,

5 गेरा, शपूपान और हूराम थे।

6 एहूद के पुत्र ये हुए (गेबा के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष ये थे, जिन्हें बन्दी बनाकर मानहत को ले जाया गया था)।

7 और नामान, अहिय्याह और गेरा (इन्हें भी बन्धुआ करके मानहत को ले गए थे), और उसने उज्जा और अहीहूद को जन्म दिया।

8 और शहरैम से हूशीम और बारा नामक अपनी स्त्रियों को छोड़ देने के बाद, मोआब देश में लड़के उत्पन्न हुए।

9 उसकी अपनी स्त्री होदेश से योबाब, सिब्या, मेशा, मल्काम, यूस, सोक्या,

10 और मिर्मा उत्पन्न हुए। उसके ये पुत्र अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे।

11 और हूशीम से अबीतूब और एल्पाल का जन्म हुआ।

12 एल्पाल के पुत्र एबेर, मिशाम और शामेद, इसी ने ओनो और गाँवों समेत लोद को बसाया।

13 फिर बरीआ और शेमा जो अय्यालोन के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे, और जिन्होंने गत के निवासियों को भगा दिया,

14 और अह्यो, शाशक, यरेमोत,

15 जबद्याह, अराद, एदेर,

16 मीकाएल, यिस्पा, योहा, जो बरीआ के पुत्र थे,

17 जबद्याह, मशुल्लाम, हिजकी, हेबेर,

\* 7:18 ~~????????~~: उसके वंशज मनश्शे की अति महत्त्वपूर्ण शाखा हुए। उन्हीं में से गिदोन जैसा महानतम् न्यायी हुआ।





अदीएल का पुत्र, यह यहजेरा का पुत्र, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह मशिल्लीत का पुत्र, यह इम्मेर का पुत्र था;

13 और इनके भाई थे जो अपने-अपने पितरों के घरानों में सत्रह सौ साठ मुख्य पुरुष थे, वे परमेश्वर के भवन की सेवा के काम में बहुत निपुण पुरुष थे।

14 फिर लेवियों में से मरारी के वंश में से शमायाह जो हश्शूब का पुत्र, अज्जीकाम का पोता, और हश्ब्याह का परपोता था;

15 और बकबक्कर, हेरेश और गालाल और आसाप के वंश में से मत्तन्याह जो मीका का पुत्र, और जिक्की का पोता था;

16 और ओबद्याह जो शमायाह का पुत्र, गालाल का पोता और यदूतून का परपोता था: और बेरेक्याह जो आसा का पुत्र, और एल्काना का पोता था, जो नतोपाइयों के गाँवों में रहता था।

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

17 द्वारपालों में से अपने-अपने भाइयों सहित शल्लूम, अक्कूब, तल्मोन और अहीमन, इनमें से मुख्य तो शल्लूम था।

18 और वह अब तक पूर्व की ओर राजा के फाटक के पास द्वारपाली करता था। लेवियों की छावनी के द्वारपाल ये ही थे।

19 और शल्लूम जो कोरे का पुत्र, एब्यासाप का पोता, और कोरह का परपोता था, और उसके भाई जो उसके मूलपुरुष के घराने के अर्थात् कोरही थे, वह इस काम के अधिकारी थे कि वे तम्बू के द्वारपाल हों। उनके पुरखा तो यहोवा की छावनी के अधिकारी, और प्रवेश-द्वार के रखवाले थे।

20 प्राचीनकाल में एलीआजर का पुत्र पीनहास, जिसके संग यहोवा रहता था, वह उनका प्रधान था।

21 मशेलेम्याह का पुत्र जकर्याह मिलापवाले तम्बू का द्वारपाल था।

22 ये सब जो द्वारपाल होने को चुने गए, वह दो सौ बारह थे। ये जिनके पुरखाओं को दाऊद और शमूएल दर्शी ने विश्वासयोग्य जानकर ठहराया था, वह अपने-अपने गाँव में अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार गिने गए।

23 अतः वे और उनकी सन्तान यहोवा के भवन अर्थात् तम्बू के भवन के फाटकों का अधिकार बारी-बारी रखते थे।

24 द्वारपाल पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चारों दिशा की ओर चौकी देते थे।

25 और उनके भाई जो गाँवों में रहते थे, उनको सात-सात दिन के बाद बारी-बारी से उनके संग रहने के लिये आना पड़ता था।

26 क्योंकि चारों प्रधान द्वारपाल जो लेवीय थे, वे विश्वासयोग्य जानकर परमेश्वर के भवन की कोठरियों और भण्डारों के अधिकारी ठहराए गए थे।

27 वे परमेश्वर के भवन के आस-पास इसलिए रात बिताते थे कि उसकी रक्षा उन्हें सौंपी गई थी, और प्रतिदिन भोर को उसे खोलना उन्हीं का काम था।

???????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

28 उनमें से कुछ उपासना के पात्रों के अधिकारी थे, क्योंकि ये पात्र गिनकर भीतर पहुँचाए, और गिनकर बाहर निकाले भी जाते थे।

29 और उनमें से कुछ सामान के, और पवित्रस्थान के पात्रों के, और मैदे, दाखमधु, तेल, लोबान और सुगन्ध-द्रव्यों के अधिकारी ठहराए गए थे।

30 याजकों के पुत्रों में से कुछ सुगन्ध-द्रव्यों के मिश्रण तैयार करने का काम करते थे।

31 और मत्तित्याह नामक एक लेवीय जो कोरही शल्लूम का जेटा था उसे विश्वासयोग्य जानकर तवों पर बनाई हुई वस्तुओं का अधिकारी नियुक्त किया था।

32 उसके भाइयों अर्थात् कहातियों में से कुछ तो भेंटवाली रोटी के अधिकारी थे, कि हर एक विश्रामदिन को उसे तैयार किया करें।

33 ये गवैये थे जो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य थे, और मन्दिर में रहते, और अन्य सेवा के काम से छूटे थे; क्योंकि वे रात-दिन अपने काम में लगे रहते थे।

34 ये ही अपनी-अपनी पीढ़ी में लेवियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे, ये यरूशलेम में रहते थे।

?????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

35 गिबोन में गिबोन का पिता यीएल रहता था, जिसकी पत्नी का नाम माका था।

36 उसका जेटा पुत्र अब्दोन हुआ, फिर सूर, कीश, बाल, नेर, नादाब,

37 गदोर, अह्यो, जकर्याह और मिक्लोत;

38 और मिक्लोत से शिमाम उत्पन्न हुआ और ये भी अपने भाइयों के सामने अपने भाइयों के संग यरूशलेम में रहते थे।

39 नेर से कीश, कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान, मल्कीशूअ, अबीनादाब और एशबाल उत्पन्न हुए।

40 और योनातान का पुत्र मरीब्वाल हुआ, और मरीब्वाल से मीका उत्पन्न हुआ।

41 मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तह्ने और आहाज;

42 और आहाज, से यारा, और यारा से आलेमेत, अज्मावेत और जिम्नी, और जिम्नी से मोसा,





- 40 येतेरी ईरा और गारेब,  
 41 हिती ऊरिय्याह, अहलै का पुत्र जाबाद,  
 42 तीस पुरुषों समेत रूबेनी शीजा का पुत्र अदीना जो रूबेनियों का मुखिया था,  
 43 माका का पुत्र हानान, मेतेनी योशापात,  
 44 अशतारोती उज्जियाह, अरोएरी होताम के पुत्र शामा और यीएल,  
 45 शिमी का पुत्र यदीएल और उसका भाई तीसी, योहा,  
 46 महवीमी एलीएल, एलनाम के पुत्र यरीबै और योशव्याह,  
 47 मोआबी यित्मा, एलीएल, ओबेद और मसोबाई यासीएल।

## 12

जब दाऊद सिकलग में कीश के पुत्र शाऊल के डर के मारे छिपा रहता था, तब ये उसके पास वहाँ आए, और ये उन वीरों में से थे जो युद्ध में उसके सहायक थे।

2 ये धनुर्धारी थे, जो बाएँ-बाएँ, दोनों हाथों से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर चला सकते थे; और ये शाऊल के भाइयों में से <sup>\*</sup> थे,

3 मुख्य तो अहीएजेर और दूसरा योआश था जो गिबावासी शमाआ का पुत्र था; फिर अज्मावेत के पुत्र यजीएल और पेलेत, फिर बराका और अनातोती येहू,

4 और गिबोनी यिशमायाह जो तीसों में से एक वीर और उनके ऊपर भी था; फिर यिर्मयाह, यहजीएल, योहानान, गदेरावासी योजाबाद,

5 एलूजै, यरीमोत, बाल्याह, शेमर्याह, हारूपी शपत्याह,

6 एल्काना, यिशिशय्याह, अजरेल, योएजेर, याशोबाम, जो सब कोरहवंशी थे,

7 और गदोरवासी यरोहाम के पुत्र योएला और जबद्याह।

8 फिर जब दाऊद जंगल के गढ़ में रहता था, तब ये गादी जो शूरवीर थे, और युद्ध विद्या सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेवाले थे, और उनके मुँह सिंह के से और वे पहाड़ी मृग के समान वेग से दौड़नेवाले थे, ये और गादियों से अलग होकर उसके पास आए,

9 अर्थात् मुख्य तो एजेर, दूसरा ओबद्याह, तीसरा एलीआब,

10 चौथा मिश्मन्ना, पाँचवाँ यिर्मयाह,

\* 12:2 <sup>\*</sup> बिन्यामिनियों की धनुष कला यहाँ व्यक्त है। (1 इति. 8:40, 2 इति 14:8) बाएँ हाथ के उपयोग में उनकी दक्षता न्यायियों के वृत्तान्त में दर्शाई गई है (न्या. 3:15 तथा पाश्र्व टिप्पणी) और गोफन चलाने में उनकी उत्कृष्टता भी व्यक्त है।

- 11 छठा अत्तै, सातवाँ एलीएल,  
 12 आठवाँ योहानान, नौवाँ एलजाबाद,  
 13 दसवाँ यिर्मयाह और ग्यारहवाँ मकबन्नै था,  
 14 ये गादी मुख्य योद्धा थे, उनमें से जो सबसे छोटा था वह तो एक सौ के ऊपर, और जो सबसे बड़ा था, वह हजार के ऊपर था।

15 ये ही वे हैं, जो पहले महीने में जब यरदन नदी सब किनारों के ऊपर-ऊपर बहती थी, तब उसके पार उतरे; और पूर्व और पश्चिम दोनों ओर के सब तराई के रहनेवालों को भगा दिया।

16 कई एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में आए।

17 उनसे मिलने को दाऊद निकला और उनसे कहा, “यदि तुम मेरे पास मित्रभाव से मेरी सहायता करने को आए हो, तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा; परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने आए हो, तो हमारे पितरों का परमेश्वर इस पर दृष्टि करके डाँटे, क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ।”

18 तब आत्मा अमासै में समाया, जो तीसों वीरों में मुख्य था, और उसने कहा,

“हे दाऊद! हम तेरे हैं;

हे यिशै के पुत्र! हम तेरी ओर के हैं,

तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो,

क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है।”

इसलिए दाऊद ने उनको रख लिया, और अपने दल के मुखिए ठहरा दिए।

19 फिर कुछ मनश्शेई भी उस समय दाऊद के पास भाग आए, जब वह पलिशितियों के साथ होकर शाऊल से लड़ने को गया, परन्तु वह उसकी कुछ सहायता न कर सका, क्योंकि पलिशितियों के सरदारों ने सम्मति लेने पर यह कहकर उसे विदा किया, “वह हमारे सिर कटवाकर अपने स्वामी शाऊल से फिर मिल जाएगा।”

20 जब वह सिकलग को जा रहा था, तब ये मनश्शेई उसके पास भाग आए; अर्थात् अदनह, योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहू और सिल्लतै जो मनश्शे के हजारों के मुखिए थे।

21 इन्होंने लुटेरों के दल के विरुद्ध दाऊद की सहायता की, क्योंकि ये सब शूरवीर थे, और सेना के प्रधान भी बन गए।



9 जब वे किदोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ सन्दूक थामने को बढ़ाया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी।

10 तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और उसने उसको मारा क्योंकि उसने सन्दूक पर हाथ लगाया था; वह वहीं परमेश्वर के सामने मर गया।

11 तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिए कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था; और उसने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा रखा, यह नाम आज तक बना है।

12 उस दिन दाऊद परमेश्वर से डरकर कहने लगा, “मैं परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहाँ कैसे ले आऊँ?”

13 तब दाऊद सन्दूक को अपने यहाँ दाऊदपुर में न लाया, परन्तु ओबेदेदोम नामक गती के यहाँ ले गया।

14 और परमेश्वर का सन्दूक ओबेदेदोम के यहाँ उसके घराने के पास तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर और जो कुछ उसका था उस पर भी आशीष दी।

## 14

1 सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत भेजे,

और उसका भवन बनाने को देवदार की लकड़ी और राजमिस्त्री और बढ़ई भेजे।

2 तब दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने उसे इस्राएल का राजा करके स्थिर किया है, क्योंकि उसकी प्रजा इस्राएल के निमित्त उसका राज्य अत्यन्त बढ़ गया था।

3 यरूशलेम में दाऊद ने और स्त्रियों से विवाह कर लिया, और उनसे और बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

4 उसकी जो सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुई, उनके नाम ये हैं: शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान;

5 यिभार, एलीशू, एलपेलेत;

6 नोगह, नेपेग, यापी, एलीशामा,

7 बेल्यादा और एलीपेलेत।

8 जब पलिशतियों ने सुना कि पूरे इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिशतियों ने दाऊद की खोज में चढ़ाई की; यह सुनकर दाऊद उनका सामना करने को निकल गया।

9 पलिशती आए और रपाईम नामक तराई में धावा बोला।

10 तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मैं पलिशतियों पर चढ़ाई करूँ? और क्या तू उन्हें मेरे हाथ में कर देगा?” यहोवा ने उससे कहा, “चढ़ाई कर, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर दूँगा।”

11 इसलिए जब वे बालपरासीम को आए, तब दाऊद ने उनको वहीं मार लिया; तब दाऊद ने कहा, “परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा के समान टूट पड़ा है।” इस कारण उस स्थान का नाम बालपरासीम रखा गया।

12 और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूँक दिए गए।

13 फिर दूसरी बार पलिशतियों ने उसी तराई में धावा बोला।

14 तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा, और परमेश्वर ने उससे कहा, “उनका पीछा मत कर; उनसे मुड़कर तूत के वृक्षों के सामने से उन पर छापा मार।

15 और जब तूत के वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुन पड़े, तब यह जानकर युद्ध करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिशतियों की सेना को मारने के लिये तेरे आगे जा रहा है।”

16 परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद ने किया, और इस्राएलियों ने पलिशतियों की सेना को गिबोन से लेकर गेजेर तक मार लिया।

17 तब दाऊद की कीर्ति सब देशों में फैल गई, और यहोवा ने सब जातियों के मन में उसका भय भर दिया।

## 15

1 तब दाऊद ने दाऊदपुर में भवन बनवाए, और परमेश्वर के सन्दूक के लिये एक स्थान तैयार करके

2 तब दाऊद ने कहा, “परमेश्वर मेरे हाथ में कर देगा, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर दूँगा।”

3 तब दाऊद ने सब इस्राएलियों को यरूशलेम में इसलिए इकट्ठा किया कि यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुँचाएँ, जिसे उसने उसके लिये तैयार किया था।

4 इसलिए दाऊद ने हारून की सन्तानों और लेवियों को इकट्ठा किया:

\* 14:12 प्राचीन युग की जातियों में अपने देवताओं को लेकर युद्ध में जाना एक सामान्य प्रचलन था जो इस अंधविश्वास से आरम्भ हुआ कि मूर्तियों में कुछ गुण हैं और उनके द्वारा सैन्य सफलता प्राप्त होती है। \* 15:1 मिलापवाला तम्बू तो अब भी गिबोन में था। † 15:2 उज्जा पर परमेश्वर के प्रकोप (1इति. 13:11) के बाद दाऊद ने वाचा के सन्दूक को उठाने के लिये सब वैधानिक अनिवार्यताओं पर ध्यान दिया और वह उनके पालन के प्रति सतर्क था।

5 अर्थात् कहातियों में से ऊरीएल नामक प्रधान को और उसके एक सौ बीस भाइयों को;

6 मरारियों में से असायाह नामक प्रधान को और उसके दो सौ बीस भाइयों को;

7 गेशोमियों में से योएल नामक प्रधान को और उसके एक सौ तीस भाइयों को;

8 एलीसापानियों में से शमायाह नामक प्रधान को और उसके दो सौ भाइयों को;

9 हेब्रोणियों में से एलीएल नामक प्रधान को और उसके अस्सी भाइयों को;

10 और उज्जीएलियों में से अम्मीनादाब नामक प्रधान को और उसके एक सौ बारह भाइयों को।

11 तब दाऊद ने सादोक और एब्यातार नामक याजकों को, और ऊरीएल, असायाह, योएल, शमायाह, एलीएल और अम्मीनादाब नामक लेवियों को बुलवाकर उनसे कहा,

12 “तुम तो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष हो; इसलिए अपने भाइयों समेत अपने-अपने को पवित्र करो, कि तुम इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुँचा सको जिसको मैंने उसके लिये तैयार किया है।

13 क्योंकि पिछली बार तुम ने उसको न उठाया था इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर दूट पड़ा, क्योंकि हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न लगे थे।”

14 तब याजकों और लेवियों ने अपने-अपने को पवित्र किया, कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक ले जा सकें।

15 तब उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी थी, लेवियों ने सन्दूक को डंडों के बल अपने कंधों पर उठा लिया।

16 तब दाऊद ने प्रधान लेवियों को आज्ञा दी कि अपने भाई ~~२२२२२२२२~~ को बाजे अर्थात् सारंगी, वीणा और झाँझ देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊँचे स्वर से गाने के लिये नियुक्त करें।

17 तब लेवियों ने योएल के पुत्र हेमान को, और उसके भाइयों में से बेरेक्याह के पुत्र आसाप को, और अपने भाई मरारियों में से कूशायाह के पुत्र एतान को ठहराया।

18 उनके साथ उन्होंने दूसरे पद के अपने भाइयों को अर्थात् जकर्याह, बेन, याजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, बनायाह, मासेयाह, मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, और ओबेदेदोम और यीएल को जो द्वारपाल थे ठहराया।

19 अतः हेमान, आसाप और एतान नाम के गवैये तो पीतल की झाँझ बजा-बजाकर राग चलाने को;

20 और जकर्याह, अजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, मासेयाह, और बनायाह, अलामोत नामक राग में सारंगी बजाने को;

21 और मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, ओबेदेदोम, यीएल, और अजज्याह वीणा खर्ज में छेड़ने को ठहराए गए।

22 और राग उठाने का अधिकारी कनन्याह नामक लेवियों का प्रधान था, वह राग उठाने के विषय शिक्षा देता था, क्योंकि वह निपुण था।

23 और बेरेक्याह और एल्काना सन्दूक के द्वारपाल थे।

24 और शबन्याह, योशापात, नतनेल, अमासै, जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर नामक याजक परमेश्वर के सन्दूक के आगे-आगे तुरहियाँ बजाते हुए चले और ओबेदेदोम और यहिय्याह उसके द्वारपाल थे;

25 दाऊद और इस्राएलियों के पुरनिये और सहस्रपति सब मिलकर यहोवा की वाचा का सन्दूक ओबेदेदोम के घर से आनन्द के साथ ले आने के लिए गए।

26 जब परमेश्वर ने लेवियों की सहायता की जो यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले थे, तब उन्होंने सात बैल और सात मट्टे बलि किए।

27 दाऊद, और यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले सब लेवीय और गानेवाले और गानेवालों के साथ राग उठानेवाले का प्रधान कनन्याह, ये सब तो सन के कपड़े के बागे पहने थे, और दाऊद सन के कपड़े का एपोद पहने था।

28 इस प्रकार सब इस्राएली यहोवा की वाचा के सन्दूक को जयजयकार करते, और नरसिंगे, तुरहियाँ और झाँझ बजाते और सारंगियाँ और वीणा बजाते हुए ले चले।

29 जब यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर में पहुँचा तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँककर दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना।

## 16

~~२२२२२२ २२ २२२२२ २२२ २२२ २२२२~~

1 तब परमेश्वर का सन्दूक ले आकर उस तम्बू में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और परमेश्वर के सामने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए गए।

‡ 15:16 ~~२२२२२२~~: भजनगान तो बहुत पहले ही से धार्मिक संस्कारों में उचित माना गया था। (निर्गं.15:21, न्या.5:1, 1इति.13:8) परन्तु यहाँ हम पहली बार देखते हैं कि संगीत का आयोजन करना लेवियों का उत्तरदायित्व था।





और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय बड़ाई करें। (27:27. 106:47)

36 अनादिकाल से अनन्तकाल तक इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है।”

तब सब प्रजा ने “आमीन” कहा: और यहोवा की स्तुति की। (27:27. 106:48)

37 तब उसने वहाँ अर्थात् यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने आसाप और उसके भाइयों को छोड़ दिया, कि प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार वे सन्दूक के सामने नित्य सेवा टहल किया करें,

38 और अडसठ भाइयों समेत ओबेदेदोम को, और द्वारपालों के लिये यदूतून के पुत्र ओबेदेदोम और होसा को छोड़ दिया।

39 फिर उसने सादोक याजक और उसके भाई याजकों को यहोवा के निवास के सामने, जो गिबोन के ऊँचे स्थान में था, ठहरा दिया,

40 कि वे नित्य सवेरे और साँझ को 27:27:27 27:27:27 27:27:27 यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें, और उन सब के अनुसार किया करें, जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा है, जिसे उसने इस्राएल को दिया था।

41 और उनके संग उसने हेमान और यदूतून और दूसरों को भी जो नाम लेकर चुने गए थे ठहरा दिया, कि यहोवा की सदा की करुणा के कारण उसका धन्यवाद करें।

42 और उनके संग उसने हेमान और यदूतून को बजानेवालों के लिये तुरहियां और झाँझें और परमेश्वर के गीत गाने के लिये बाजे दिए, और यदूतून के बेटों को फाटक की रखवाली करने को ठहरा दिया।

43 तब प्रजा के सब लोग अपने-अपने घर चले गए, और दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट गया।

## 17

27:27:27 27:27:27 27:27:27:27:27 27:27:27

1 जब दाऊद अपने भवन में रहने लगा, तब दाऊद ने नातान नबी से कहा, “देख, मैं तो देवदार के बने हुए घर में रहता हूँ, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक तम्बू में रहता है।”

2 नातान ने दाऊद से कहा, “जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर, क्योंकि परमेश्वर तेरे संग है।”

3 उसी दिन-रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुँचा, “जाकर मेरे दास दाऊद से कह,

4 ‘यहोवा यह कहता है: मेरे निवास के लिये तू घर बनवाने न पाएगा।

5 क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; परन्तु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया-जाया करता हूँ।

6 जहाँ-जहाँ मैंने सब इस्राएलियों के बीच आना-जाना किया, क्या मैंने इस्राएल के न्यायियों में से जिनको मैंने अपनी प्रजा की चरवाही करने को ठहराया था, किसी से ऐसी बात कभी कही कि तुम लोगों ने मेरे लिये देवदार का घर क्यों नहीं बनवाया?

7 अतः अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि मैंने तो तुझको भेड़शाला से और भेड़-बकरियों के पीछे-पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया, कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए;

8 और जहाँ कहीं तू आया और गया, वहाँ मैं तेरे संग रहा, और तेरे सब शत्रुओं को तेरे सामने से नष्ट किया है। अब मैं तेरे नाम को पृथ्वी के बड़े-बड़े लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूँगा।

9 और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के लिये एक स्थान ठहराऊँगा, और उसको स्थिर करूँगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहे और कभी चलायमान न हो; और कुटिल लोग उनको नाश न करने पाएँगे, जैसे कि पहले दिनों में करते थे,

10 वरन् उस समय भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल के ऊपर न्यायी ठहराता था; अतः मैं तेरे सब शत्रुओं को दबा दूँगा। फिर मैं तुझे यह भी बताता हूँ, कि यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा।

11 जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और तुझे अपने पितरों के संग जाना पड़ेगा, तब मैं तेरे बाद तेरे वंश को जो तेरे पुत्रों में से होगा, खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा। (1 27:27:27. 2:10,11, 2 27:27. 7:12)

12 मेरे लिये एक घर वही बनाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा।

13 मैं उसका पिता ठहरूँगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा; और जैसे मैंने अपनी करुणा उस पर से जो तुझ से पहले था हटाई, वैसे मैं उस पर से न हटाऊँगा, (2 27:27. 7:14)

14 वरन् मैं उसको अपने घर और अपने राज्य में सदैव स्थिर रखूँगा और उसकी राजगद्दी सदैव अटल रहेगी।” (2 27:27. 7:16)

15 इन सब बातों और इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया।

† 16:40 27:27:27 27:27:27 27:27:27:27:27 27:27:27 होमबलि की वेदी (निर्ग.27:1-8) गिबोन में मिलापवाले तम्बू ही में थी (2इति.1:3, 2इति. 1:5) हो सकता है कि दाऊद ने यरूशलेम में बलि चढ़ाने के लिये एक नई वेदी बनाई।

16 तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख

बैठा, और कहने लगा, "हे यहोवा परमेश्वर! मैं क्या हूँ? और मेरा घराना क्या है? कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है?"

17 हे परमेश्वर! यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुई, क्योंकि तूने अपने दास के घराने के विषय भविष्य के बहुत दिनों तक की चर्चा की है, और हे यहोवा परमेश्वर! तूने मुझे <sup>†</sup>सा जाना है।

18 जो महिमा तेरे दास पर दिखाई गई है, उसके विषय दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है? तू तो अपने दास को जानता है।

19 हे यहोवा! तूने अपने दास के निमित्त और अपने मन के अनुसार यह बड़ा काम किया है, कि तेरा दास उसको जान ले।

20 हे यहोवा! जो कुछ हमने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है।

21 फिर तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है? वह तो पृथ्वी भर में एक ही जाति है, उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छोड़ाया, इसलिए कि तू बड़े और डरावने काम करके अपना नाम करे, और अपनी प्रजा के सामने से जो तूने मिस्र से छोड़ा ली थी, जाति-जाति के लोगों को निकाल दे।

22 क्योंकि तूने अपनी प्रजा इस्राएल को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया, और हे यहोवा! तू आप उसका परमेश्वर ठहरा।

23 इसलिए, अब हे यहोवा, तूने जो वचन अपने दास के और उसके घराने के विषय दिया है, वह सदैव अटल रहे, और अपने वचन के अनुसार ही कर।

24 और तेरा नाम सदैव अटल रहे, और यह कहकर <sup>†</sup>, कि सेनाओं का यहोवा इस्राएल का परमेश्वर है, वरन् वह इस्राएल ही के लिये परमेश्वर है, और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे सामने स्थिर रहे।

25 क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तूने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूँगा, इस कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है।

26 और अब हे यहोवा तू ही परमेश्वर है, और तूने

अपने दास को यह भलाई करने का वचन दिया है;

27 और अब तूने प्रसन्न होकर, अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू आशीष दे चुका है, इसलिए वह सदैव आशीषित बना रहे।"

## 18

1 इसके बाद दाऊद ने पलिशतियों को जीतकर अपने

अधीन कर लिया, और गाँवों समेत गत नगर को पलिशतियों के हाथ से छीन लिया।

2 फिर <sup>†</sup>, और मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट लाने लगे।

3 फिर जब सोबा का राजा हदादेजेर फरात महानद के पास अपना राज्य स्थिर करने को जा रहा था, तब दाऊद ने उसको हमात के पास जीत लिया।

4 दाऊद ने उससे एक हजार रथ, सात हजार सवार, और बीस हजार प्यादे हर लिए, और दाऊद ने सब रथवाले घोड़ों के घुटनों के पीछे की नस कटवाई, परन्तु एक सौ रथवाले घोड़े बचा रखे।

5 जब दमिश्क के अरामी, सोबा के राजा हदादेजेर की सहायता करने को आए, तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस हजार पुरुष मारे।

6 तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बैठाई; अतः अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहाँ-जहाँ दाऊद जाता, वहाँ-वहाँ यहोवा उसको जय दिलाता था।

7 और हदादेजेर के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं, उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को आया।

8 और हदादेजेर के तिभत और कून नामक नगरों से दाऊद बहुत सा पीतल ले आया; और उसी से सुलैमान ने पीतल के हौद और खम्भों और पीतल के पात्रों को बनवाया।

9 जब हमात के राजा तोऊ ने सुना कि दाऊद ने सोबा के राजा हदादेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है,

10 तब उसने हदोराम नामक अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल क्षेम पूछने और उसे बधाई देने को भेजा, इसलिए कि उसने हदादेजेर से लड़कर उसे जीत लिया था; (क्योंकि हदादेजेर तोऊ से लड़ा करता था) और हदोराम सोने चाँदी और पीतल के सब प्रकार के पात्र लिये हुए आया।

\* 17:17 <sup>†</sup>: अर्थात् परमेश्वर ने मेरे राज्य को सदाकालीन बनाकर मुझे अन्य मनुष्यों से ऊँचा उठा दिया है जैसे कि मैं एक ऊँचा मनुष्य हूँ। † 17:24 <sup>†</sup>: तेरा नाम स्थिर रहे और प्रतिष्ठित हो। \* 18:2 <sup>†</sup>: दाऊद ने बहुत अधिक मोआबियों को युद्ध में बन्दी बनाया। मोआबी तो दाऊद के मित्र थे, (1शम्. 22:3, 4) अतः उनसे युद्ध करने और उनके साथ ऐसा कठोर व्यवहार करने का कारण अज्ञात है।



19 यह देखकर कि वे इस्राएलियों से हार गए हैं, हदादेजेर के कर्मचारियों ने दाऊद से संधि की और उसके अधीन हो गए; और अरामियों ने अम्मोनियों की सहायता फिर करनी न चाही।

## 20

११११११ ११ ११११

1 फिर नये वर्ष के आरम्भ में ११ ११११ १११ ११११११ ११११ ११ ११११११ ११११ ११११\*, तब योआब ने भारी सेना संग ले जाकर अम्मोनियों का देश उजाड़ दिया और आकर रब्बाह को घेर लिया; परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया; और योआब ने रब्बाह को जीतकर ढा दिया।

2 तब दाऊद ने उनके राजा का मुकुट उसके सिर से उतारकर क्या देखा, कि उसका तौल किककार भर सोने का है, और उसमें मणि भी जड़े थे; और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उसे नगर से बहुत सामान लूट में मिला।

3 उसने उनमें रहनेवालों को निकालकर आरों और लोहे के हेंगों और कुल्हाड़ियों से कटवाया; और अम्मोनियों के सब नगरों के साथ भी दाऊद ने वैसा ही किया। तब दाऊद सब लोगों समेत यरूशलेम को लौट गया।

११११११११ ११११११११ ११ ११११११

4 इसके बाद गेजेर में पलिशतियों के साथ युद्ध हुआ; उस समय हूशाई ११११११११† ने सिप्पै को, जो रापा की सन्तान था, मार डाला; और वे दब गए।

5 पलिशतियों के साथ फिर युद्ध हुआ; उसमें याईर के पुत्र एल्हनान ने गती गोलियत के भाई लहमी को मार डाला, जिसके बछ्छे की छड़, जुलाहे की डोंगी के समान थी।

6 फिर गत में भी युद्ध हुआ, और वहाँ एक बड़े डील-डौल का पुरुष था, जो रापा की सन्तान था, और उसके एक-एक हाथ पाँव में छः छः उँगलियाँ अर्थात् सब मिलाकर चौबीस उँगलियाँ थीं।

7 जब उसने इस्राएलियों को ललकारा, तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनातान ने उसको मारा।

8 ये ही गत में रापा से उत्पन्न हुए थे, और वे दाऊद और उसके सेवकों के हाथ से मार डाले गए।

## 21

१११११ ११ ११११११११ १११११११११ ११ ११११११११

\* 20:1 ११ १११११ १११ १११११११ १११११ ११ ११११११ १११११ १११११: दाऊद के राज्यकाल में ऐसे अनेक युद्ध शामिल थे। † 20:4 १११११११११: इस नाम का अर्थ है परमेश्वर सुधि लेता है, वह दाऊद की सेना के शूरवीरों में से एक था। \* 21:1 १११११११: यहाँ पहली बार शैतान का नाम हमारे सामने आता है। यहाँ वह मनुष्य को बाहर से हानि पहुँचानेवाला बैरी मात्र ही नहीं वरन् मन में पाप करने और विचार करने के द्वारा उसके विनाश की परीक्षा लानेवाला है।

1 और ११११११\* ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उकसाया कि इस्राएलियों की गिनती ले।

2 तब दाऊद ने योआब और प्रजा के हाकिमों से कहा, “तुम जाकर बेशेबा से ले दान तक इस्राएल की गिनती लेकर मुझे बताओ, कि मैं जान लूँ कि वे कितने हैं।”

3 योआब ने कहा, “यहोवा की प्रजा के कितने ही क्यों न हों, वह उनको सौ गुना बढ़ा दे; परन्तु हे मेरे प्रभु! हे राजा! क्या वे सब राजा के अधीन नहीं हैं? मेरा प्रभु ऐसी बात क्यों चाहता है? वह इस्राएल पर दोष लगाने का कारण क्यों बने?”

4 तो भी राजा की आज्ञा योआब पर प्रबल हुई। तब योआब विदा होकर सारे इस्राएल में घूमकर यरूशलेम को लौट आया।

5 तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़, दाऊद को सुनाया और सब तलवार चलानेवाले पुरुष इस्राएल के तो ग्यारह लाख, और यहूदा के चार लाख सत्तर हजार ठहरे।

6 परन्तु उनमें योआब ने लेवी और बिन्यामीन को न गिना, क्योंकि वह राजा की आज्ञा से घृणा करता था

7 और यह बात परमेश्वर को बुरी लगी, इसलिए उसने इस्राएल को मारा।

8 और दाऊद ने परमेश्वर से कहा, “यह काम जो मैंने किया, वह महापाप है। परन्तु अब अपने दास का अधर्म दूर कर; मुझसे तो बड़ी मूर्खता हुई है।”

9 तब यहोवा ने दाऊद के दर्शी गाद से कहा,

10 “जाकर दाऊद से कह, ‘यहोवा यह कहता है कि मैं तुझको तीन विपत्तियाँ दिखाता हूँ, उनमें से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूँ।’”

11 तब गाद ने दाऊद के पास जाकर उससे कहा, “यहोवा यह कहता है, कि जिसको तू चाहे उसे चुन ले:

12 या तो तीन वर्ष का अकाल पड़े; या तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे; या तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात् मरी देश में फैले और यहोवा का दूत इस्राएली देश में चारों ओर विनाश करता रहे। अब सोच, कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या उत्तर दूँ।”

13 दाऊद ने गाद से कहा, “मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ; मैं यहोवा के हाथ में पड़ूँ, क्योंकि उसकी दया बहुत बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े।”

14 तब यहोवा ने इस्राएल में मरी फैलाई, और



6 फिर उसने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये भवन बनाने की आज्ञा दी।

7 दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, “मेरी मनसा तो थी कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊँ।

8 परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ‘तूने लहू बहुत बहाया और बड़े-बड़े युद्ध किए हैं, इसलिए तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, क्योंकि तूने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लहू बहाया है।

9 देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शान्त पुरुष होगा; और मैं उसको चारों ओर के शत्रुओं से शान्ति दूँगा; उसका नाम तो सुलैमान होगा, और उसके दिनों में मैं इस्राएल को शान्ति और चैन दूँगा।

10 वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उसका पिता ठहरूँगा, और उसकी राजगद्दी को मैं इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर रखूँगा।’

11 अब हे मेरे पुत्र, यहोवा तेरे संग रहे, और तू कृतार्थ होकर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे विषय कहा है, उसका भवन बनाना।

12 अब यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे और इस्राएल का अधिकारी ठहरा दे, और तू अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे।

13 तू तब ही कृतार्थ होगा जब उन विधियों और नियमों पर चलने की चौकसी करेगा, जिनकी आज्ञा यहोवा ने इस्राएल के लिये मूसा को दी थी। <sup>22:13</sup> <sup>22:14</sup> <sup>22:15</sup> <sup>22:16</sup> <sup>22:17</sup> <sup>22:18</sup> <sup>22:19</sup> <sup>22:20</sup> <sup>22:21</sup> <sup>22:22</sup> <sup>22:23</sup> <sup>22:24</sup> <sup>22:25</sup> <sup>22:26</sup> <sup>22:27</sup> <sup>22:28</sup> <sup>22:29</sup> <sup>22:30</sup> <sup>22:31</sup> <sup>22:32</sup> <sup>22:33</sup> <sup>22:34</sup> <sup>22:35</sup> <sup>22:36</sup> <sup>22:37</sup> <sup>22:38</sup> <sup>22:39</sup> <sup>22:40</sup> <sup>22:41</sup> <sup>22:42</sup> <sup>22:43</sup> <sup>22:44</sup> <sup>22:45</sup> <sup>22:46</sup> <sup>22:47</sup> <sup>22:48</sup> <sup>22:49</sup> <sup>22:50</sup> <sup>22:51</sup> <sup>22:52</sup> <sup>22:53</sup> <sup>22:54</sup> <sup>22:55</sup> <sup>22:56</sup> <sup>22:57</sup> <sup>22:58</sup> <sup>22:59</sup> <sup>22:60</sup> <sup>22:61</sup> <sup>22:62</sup> <sup>22:63</sup> <sup>22:64</sup> <sup>22:65</sup> <sup>22:66</sup> <sup>22:67</sup> <sup>22:68</sup> <sup>22:69</sup> <sup>22:70</sup> <sup>22:71</sup> <sup>22:72</sup> <sup>22:73</sup> <sup>22:74</sup> <sup>22:75</sup> <sup>22:76</sup> <sup>22:77</sup> <sup>22:78</sup> <sup>22:79</sup> <sup>22:80</sup> <sup>22:81</sup> <sup>22:82</sup> <sup>22:83</sup> <sup>22:84</sup> <sup>22:85</sup> <sup>22:86</sup> <sup>22:87</sup> <sup>22:88</sup> <sup>22:89</sup> <sup>22:90</sup> <sup>22:91</sup> <sup>22:92</sup> <sup>22:93</sup> <sup>22:94</sup> <sup>22:95</sup> <sup>22:96</sup> <sup>22:97</sup> <sup>22:98</sup> <sup>22:99</sup> <sup>22:100</sup> <sup>22:101</sup> <sup>22:102</sup> <sup>22:103</sup> <sup>22:104</sup> <sup>22:105</sup> <sup>22:106</sup> <sup>22:107</sup> <sup>22:108</sup> <sup>22:109</sup> <sup>22:110</sup> <sup>22:111</sup> <sup>22:112</sup> <sup>22:113</sup> <sup>22:114</sup> <sup>22:115</sup> <sup>22:116</sup> <sup>22:117</sup> <sup>22:118</sup> <sup>22:119</sup> <sup>22:120</sup> <sup>22:121</sup> <sup>22:122</sup> <sup>22:123</sup> <sup>22:124</sup> <sup>22:125</sup> <sup>22:126</sup> <sup>22:127</sup> <sup>22:128</sup> <sup>22:129</sup> <sup>22:130</sup> <sup>22:131</sup> <sup>22:132</sup> <sup>22:133</sup> <sup>22:134</sup> <sup>22:135</sup> <sup>22:136</sup> <sup>22:137</sup> <sup>22:138</sup> <sup>22:139</sup> <sup>22:140</sup> <sup>22:141</sup> <sup>22:142</sup> <sup>22:143</sup> <sup>22:144</sup> <sup>22:145</sup> <sup>22:146</sup> <sup>22:147</sup> <sup>22:148</sup> <sup>22:149</sup> <sup>22:150</sup> <sup>22:151</sup> <sup>22:152</sup> <sup>22:153</sup> <sup>22:154</sup> <sup>22:155</sup> <sup>22:156</sup> <sup>22:157</sup> <sup>22:158</sup> <sup>22:159</sup> <sup>22:160</sup> <sup>22:161</sup> <sup>22:162</sup> <sup>22:163</sup> <sup>22:164</sup> <sup>22:165</sup> <sup>22:166</sup> <sup>22:167</sup> <sup>22:168</sup> <sup>22:169</sup> <sup>22:170</sup> <sup>22:171</sup> <sup>22:172</sup> <sup>22:173</sup> <sup>22:174</sup> <sup>22:175</sup> <sup>22:176</sup> <sup>22:177</sup> <sup>22:178</sup> <sup>22:179</sup> <sup>22:180</sup> <sup>22:181</sup> <sup>22:182</sup> <sup>22:183</sup> <sup>22:184</sup> <sup>22:185</sup> <sup>22:186</sup> <sup>22:187</sup> <sup>22:188</sup> <sup>22:189</sup> <sup>22:190</sup> <sup>22:191</sup> <sup>22:192</sup> <sup>22:193</sup> <sup>22:194</sup> <sup>22:195</sup> <sup>22:196</sup> <sup>22:197</sup> <sup>22:198</sup> <sup>22:199</sup> <sup>22:200</sup> <sup>22:201</sup> <sup>22:202</sup> <sup>22:203</sup> <sup>22:204</sup> <sup>22:205</sup> <sup>22:206</sup> <sup>22:207</sup> <sup>22:208</sup> <sup>22:209</sup> <sup>22:210</sup> <sup>22:211</sup> <sup>22:212</sup> <sup>22:213</sup> <sup>22:214</sup> <sup>22:215</sup> <sup>22:216</sup> <sup>22:217</sup> <sup>22:218</sup> <sup>22:219</sup> <sup>22:220</sup> <sup>22:221</sup> <sup>22:222</sup> <sup>22:223</sup> <sup>22:224</sup> <sup>22:225</sup> <sup>22:226</sup> <sup>22:227</sup> <sup>22:228</sup> <sup>22:229</sup> <sup>22:230</sup> <sup>22:231</sup> <sup>22:232</sup> <sup>22:233</sup> <sup>22:234</sup> <sup>22:235</sup> <sup>22:236</sup> <sup>22:237</sup> <sup>22:238</sup> <sup>22:239</sup> <sup>22:240</sup> <sup>22:241</sup> <sup>22:242</sup> <sup>22:243</sup> <sup>22:244</sup> <sup>22:245</sup> <sup>22:246</sup> <sup>22:247</sup> <sup>22:248</sup> <sup>22:249</sup> <sup>22:250</sup> <sup>22:251</sup> <sup>22:252</sup> <sup>22:253</sup> <sup>22:254</sup> <sup>22:255</sup> <sup>22:256</sup> <sup>22:257</sup> <sup>22:258</sup> <sup>22:259</sup> <sup>22:260</sup> <sup>22:261</sup> <sup>22:262</sup> <sup>22:263</sup> <sup>22:264</sup> <sup>22:265</sup> <sup>22:266</sup> <sup>22:267</sup> <sup>22:268</sup> <sup>22:269</sup> <sup>22:270</sup> <sup>22:271</sup> <sup>22:272</sup> <sup>22:273</sup> <sup>22:274</sup> <sup>22:275</sup> <sup>22:276</sup> <sup>22:277</sup> <sup>22:278</sup> <sup>22:279</sup> <sup>22:280</sup> <sup>22:281</sup> <sup>22:282</sup> <sup>22:283</sup> <sup>22:284</sup> <sup>22:285</sup> <sup>22:286</sup> <sup>22:287</sup> <sup>22:288</sup> <sup>22:289</sup> <sup>22:290</sup> <sup>22:291</sup> <sup>22:292</sup> <sup>22:293</sup> <sup>22:294</sup> <sup>22:295</sup> <sup>22:296</sup> <sup>22:297</sup> <sup>22:298</sup> <sup>22:299</sup> <sup>22:300</sup> <sup>22:301</sup> <sup>22:302</sup> <sup>22:303</sup> <sup>22:304</sup> <sup>22:305</sup> <sup>22:306</sup> <sup>22:307</sup> <sup>22:308</sup> <sup>22:309</sup> <sup>22:310</sup> <sup>22:311</sup> <sup>22:312</sup> <sup>22:313</sup> <sup>22:314</sup> <sup>22:315</sup> <sup>22:316</sup> <sup>22:317</sup> <sup>22:318</sup> <sup>22:319</sup> <sup>22:320</sup> <sup>22:321</sup> <sup>22:322</sup> <sup>22:323</sup> <sup>22:324</sup> <sup>22:325</sup> <sup>22:326</sup> <sup>22:327</sup> <sup>22:328</sup> <sup>22:329</sup> <sup>22:330</sup> <sup>22:331</sup> <sup>22:332</sup> <sup>22:333</sup> <sup>22:334</sup> <sup>22:335</sup> <sup>22:336</sup> <sup>22:337</sup> <sup>22:338</sup> <sup>22:339</sup> <sup>22:340</sup> <sup>22:341</sup> <sup>22:342</sup> <sup>22:343</sup> <sup>22:344</sup> <sup>22:345</sup> <sup>22:346</sup> <sup>22:347</sup> <sup>22:348</sup> <sup>22:349</sup> <sup>22:350</sup> <sup>22:351</sup> <sup>22:352</sup> <sup>22:353</sup> <sup>22:354</sup> <sup>22:355</sup> <sup>22:356</sup> <sup>22:357</sup> <sup>22:358</sup> <sup>22:359</sup> <sup>22:360</sup> <sup>22:361</sup> <sup>22:362</sup> <sup>22:363</sup> <sup>22:364</sup> <sup>22:365</sup> <sup>22:366</sup> <sup>22:367</sup> <sup>22:368</sup> <sup>22:369</sup> <sup>22:370</sup> <sup>22:371</sup> <sup>22:372</sup> <sup>22:373</sup> <sup>22:374</sup> <sup>22:375</sup> <sup>22:376</sup> <sup>22:377</sup> <sup>22:378</sup> <sup>22:379</sup> <sup>22:380</sup> <sup>22:381</sup> <sup>22:382</sup> <sup>22:383</sup> <sup>22:384</sup> <sup>22:385</sup> <sup>22:386</sup> <sup>22:387</sup> <sup>22:388</sup> <sup>22:389</sup> <sup>22:390</sup> <sup>22:391</sup> <sup>22:392</sup> <sup>22:393</sup> <sup>22:394</sup> <sup>22:395</sup> <sup>22:396</sup> <sup>22:397</sup> <sup>22:398</sup> <sup>22:399</sup> <sup>22:400</sup> <sup>22:401</sup> <sup>22:402</sup> <sup>22:403</sup> <sup>22:404</sup> <sup>22:405</sup> <sup>22:406</sup> <sup>22:407</sup> <sup>22:408</sup> <sup>22:409</sup> <sup>22:410</sup> <sup>22:411</sup> <sup>22:412</sup> <sup>22:413</sup> <sup>22:414</sup> <sup>22:415</sup> <sup>22:416</sup> <sup>22:417</sup> <sup>22:418</sup> <sup>22:419</sup> <sup>22:420</sup> <sup>22:421</sup> <sup>22:422</sup> <sup>22:423</sup> <sup>22:424</sup> <sup>22:425</sup> <sup>22:426</sup> <sup>22:427</sup> <sup>22:428</sup> <sup>22:429</sup> <sup>22:430</sup> <sup>22:431</sup> <sup>22:432</sup> <sup>22:433</sup> <sup>22:434</sup> <sup>22:435</sup> <sup>22:436</sup> <sup>22:437</sup> <sup>22:438</sup> <sup>22:439</sup> <sup>22:440</sup> <sup>22:441</sup> <sup>22:442</sup> <sup>22:443</sup> <sup>22:444</sup> <sup>22:445</sup> <sup>22:446</sup> <sup>22:447</sup> <sup>22:448</sup> <sup>22:449</sup> <sup>22:450</sup> <sup>22:451</sup> <sup>22:452</sup> <sup>22:453</sup> <sup>22:454</sup> <sup>22:455</sup> <sup>22:456</sup> <sup>22:457</sup> <sup>22:458</sup> <sup>22:459</sup> <sup>22:460</sup> <sup>22:461</sup> <sup>22:462</sup> <sup>22:463</sup> <sup>22:464</sup> <sup>22:465</sup> <sup>22:466</sup> <sup>22:467</sup> <sup>22:468</sup> <sup>22:469</sup> <sup>22:470</sup> <sup>22:471</sup> <sup>22:472</sup> <sup>22:473</sup> <sup>22:474</sup> <sup>22:475</sup> <sup>22:476</sup> <sup>22:477</sup> <sup>22:478</sup> <sup>22:479</sup> <sup>22:480</sup> <sup>22:481</sup> <sup>22:482</sup> <sup>22:483</sup> <sup>22:484</sup> <sup>22:485</sup> <sup>22:486</sup> <sup>22:487</sup> <sup>22:488</sup> <sup>22:489</sup> <sup>22:490</sup> <sup>22:491</sup> <sup>22:492</sup> <sup>22:493</sup> <sup>22:494</sup> <sup>22:495</sup> <sup>22:496</sup> <sup>22:497</sup> <sup>22:498</sup> <sup>22:499</sup> <sup>22:500</sup> <sup>22:501</sup> <sup>22:502</sup> <sup>22:503</sup> <sup>22:504</sup> <sup>22:505</sup> <sup>22:506</sup> <sup>22:507</sup> <sup>22:508</sup> <sup>22:509</sup> <sup>22:510</sup> <sup>22:511</sup> <sup>22:512</sup> <sup>22:513</sup> <sup>22:514</sup> <sup>22:515</sup> <sup>22:516</sup> <sup>22:517</sup> <sup>22:518</sup> <sup>22:519</sup> <sup>22:520</sup> <sup>22:521</sup> <sup>22:522</sup> <sup>22:523</sup> <sup>22:524</sup> <sup>22:525</sup> <sup>22:526</sup> <sup>22:527</sup> <sup>22:528</sup> <sup>22:529</sup> <sup>22:530</sup> <sup>22:531</sup> <sup>22:532</sup> <sup>22:533</sup> <sup>22:534</sup> <sup>22:535</sup> <sup>22:536</sup> <sup>22:537</sup> <sup>22:538</sup> <sup>22:539</sup> <sup>22:540</sup> <sup>22:541</sup> <sup>22:542</sup> <sup>22:543</sup> <sup>22:544</sup> <sup>22:545</sup> <sup>22:546</sup> <sup>22:547</sup> <sup>22:548</sup> <sup>22:549</sup> <sup>22:550</sup> <sup>22:551</sup> <sup>22:552</sup> <sup>22:553</sup> <sup>22:554</sup> <sup>22:555</sup> <sup>22:556</sup> <sup>22:557</sup> <sup>22:558</sup> <sup>22:559</sup> <sup>22:560</sup> <sup>22:561</sup> <sup>22:562</sup> <sup>22:563</sup> <sup>22:564</sup> <sup>22:565</sup> <sup>22:566</sup> <sup>22:567</sup> <sup>22:568</sup> <sup>22:569</sup> <sup>22:570</sup> <sup>22:571</sup> <sup>22:572</sup> <sup>22:573</sup> <sup>22:574</sup> <sup>22:575</sup> <sup>22:576</sup> <sup>22:577</sup> <sup>22:578</sup> <sup>22:579</sup> <sup>22:580</sup> <sup>22:581</sup> <sup>22:582</sup> <sup>22:583</sup> <sup>22:584</sup> <sup>22:585</sup> <sup>22:586</sup> <sup>22:587</sup> <sup>22:588</sup> <sup>22:589</sup> <sup>22:590</sup> <sup>22:591</sup> <sup>22:592</sup> <sup>22:593</sup> <sup>22:594</sup> <sup>22:595</sup> <sup>22:596</sup> <sup>22:597</sup> <sup>22:598</sup> <sup>22:599</sup> <sup>22:600</sup> <sup>22:601</sup> <sup>22:602</sup> <sup>22:603</sup> <sup>22:604</sup> <sup>22:605</sup> <sup>22:606</sup> <sup>22:607</sup> <sup>22:608</sup> <sup>22:609</sup> <sup>22:610</sup> <sup>22:611</sup> <sup>22:612</sup> <sup>22:613</sup> <sup>22:614</sup> <sup>22:615</sup> <sup>22:616</sup> <sup>22:617</sup> <sup>22:618</sup> <sup>22:619</sup> <sup>22:620</sup> <sup>22:621</sup> <sup>22:622</sup> <sup>22:623</sup> <sup>22:624</sup> <sup>22:625</sup> <sup>22:626</sup> <sup>22:627</sup> <sup>22:628</sup> <sup>22:629</sup> <sup>22:630</sup> <sup>22:631</sup> <sup>22:632</sup> <sup>22:633</sup> <sup>22:634</sup> <sup>22:635</sup> <sup>22:636</sup> <sup>22:637</sup> <sup>22:638</sup> <sup>22:639</sup> <sup>22:640</sup> <sup>22:641</sup> <sup>22:642</sup> <sup>22:643</sup> <sup>22:644</sup> <sup>22:645</sup> <sup>22:646</sup> <sup>22:647</sup> <sup>22:648</sup> <sup>22:649</sup> <sup>22:650</sup> <sup>22:651</sup> <sup>22:652</sup> <sup>22:653</sup> <sup>22:654</sup> <sup>22:655</sup> <sup>22:656</sup> <sup>22:657</sup> <sup>22:658</sup> <sup>22:659</sup> <sup>22:660</sup> <sup>22:661</sup> <sup>22:662</sup> <sup>22:663</sup> <sup>22:664</sup> <sup>22:665</sup> <sup>22:666</sup> <sup>22:667</sup> <sup>22:668</sup> <sup>22:669</sup> <sup>22:670</sup> <sup>22:671</sup> <sup>22:672</sup> <sup>22:673</sup> <sup>22:674</sup> <sup>22:675</sup> <sup>22:676</sup> <sup>22:677</sup> <sup>22:678</sup> <sup>22:679</sup> <sup>22:680</sup> <sup>22:681</sup> <sup>22:682</sup> <sup>22:683</sup> <sup>22:684</sup> <sup>22:685</sup> <sup>22:686</sup> <sup>22:687</sup> <sup>22:688</sup> <sup>22:689</sup> <sup>22:690</sup> <sup>22:691</sup> <sup>22:692</sup> <sup>22:693</sup> <sup>22:694</sup> <sup>22:695</sup> <sup>22:696</sup> <sup>22:697</sup> <sup>22:698</sup> <sup>22:699</sup> <sup>22:700</sup> <sup>22:701</sup> <sup>22:702</sup> <sup>22:703</sup> <sup>22:704</sup> <sup>22:705</sup> <sup>22:706</sup> <sup>22:707</sup> <sup>22:708</sup> <sup>22:709</sup> <sup>22:710</sup> <sup>22:711</sup> <sup>22:712</sup> <sup>22:713</sup> <sup>22:714</sup> <sup>22:715</sup> <sup>22:716</sup> <sup>22:717</sup> <sup>22:718</sup> <sup>22:719</sup> <sup>22:720</sup> <sup>22:721</sup> <sup>22:722</sup> <sup>22:723</sup> <sup>22:724</sup> <sup>22:725</sup> <sup>22:726</sup> <sup>22:727</sup> <sup>22:728</sup> <sup>22:729</sup> <sup>22:730</sup> <sup>22:731</sup> <sup>22:732</sup> <sup>22:733</sup> <sup>22:734</sup> <sup>22:735</sup> <sup>22:736</sup> <sup>22:737</sup> <sup>22:738</sup> <sup>22:739</sup> <sup>22:740</sup> <sup>22:741</sup> <sup>22:742</sup> <sup>22:743</sup> <sup>22:744</sup> <sup>22:745</sup> <sup>22:746</sup> <sup>22:747</sup> <sup>22:748</sup> <sup>22:749</sup> <sup>22:750</sup> <sup>22:751</sup> <sup>22:752</sup> <sup>22:753</sup> <sup>22:754</sup> <sup>22:755</sup> <sup>22:756</sup> <sup>22:757</sup> <sup>22:758</sup> <sup>22:759</sup> <sup>22:760</sup> <sup>22:761</sup> <sup>22:762</sup> <sup>22:763</sup> <sup>22:764</sup> <sup>22:765</sup> <sup>22:766</sup> <sup>22:767</sup> <sup>22:768</sup> <sup>22:769</sup> <sup>22:770</sup> <sup>22:771</sup> <sup>22:772</sup> <sup>22:773</sup> <sup>22:774</sup> <sup>22:775</sup> <sup>22:776</sup> <sup>22:777</sup> <sup>22:778</sup> <sup>22:779</sup> <sup>22:780</sup> <sup>22:781</sup> <sup>22:782</sup> <sup>22:783</sup> <sup>22:784</sup> <sup>22:785</sup> <sup>22:786</sup> <sup>22:787</sup> <sup>22:788</sup> <sup>22:789</sup> <sup>22:790</sup> <sup>22:791</sup> <sup>22:792</sup> <sup>22:793</sup> <sup>22:794</sup> <sup>22:795</sup> <sup>22:796</sup> <sup>22:797</sup> <sup>22:798</sup> <sup>22:799</sup> <sup>22:800</sup> <sup>22:801</sup> <sup>22:802</sup> <sup>22:803</sup> <sup>22:804</sup> <sup>22:805</sup> <sup>22:806</sup> <sup>22:807</sup> <sup>22:808</sup> <sup>22:809</sup> <sup>22:810</sup> <sup>22:811</sup> <sup>22:812</sup> <sup>22:813</sup> <sup>22:814</sup> <sup>22:815</sup> <sup>22:816</sup> <sup>22:817</sup> <sup>22:818</sup> <sup>22:819</sup> <sup>22:820</sup> <sup>22:821</sup> <sup>22:822</sup> <sup>22:823</sup> <sup>22:824</sup> <sup>22:825</sup> <sup>22:826</sup> <sup>22:827</sup> <sup>22:828</sup> <sup>22:829</sup> <sup>22:830</sup> <sup>22:831</sup> <sup>22:832</sup> <sup>22:833</sup> <sup>22:834</sup> <sup>22:835</sup> <sup>22:836</sup> <sup>22:837</sup> <sup>22:838</sup> <sup>22:839</sup> <sup>22:840</sup> <sup>22:841</sup> <sup>22:842</sup> <sup>22:843</sup> <sup>22:844</sup> <sup>22:845</sup> <sup>22:846</sup> <sup>22:847</sup> <sup>22:848</sup> <sup>22:849</sup> <sup>22:850</sup> <sup>22:851</sup> <sup>22:852</sup> <sup>22:853</sup> <sup>22:854</sup> <sup>22:855</sup> <sup>22:856</sup> <sup>22:857</sup> <sup>22:858</sup> <sup>22:859</sup> <sup>22:860</sup> <sup>22:861</sup> <sup>22:862</sup> <sup>22:863</sup> <sup>22:864</sup> <sup>22:865</sup> <sup>22:866</sup> <sup>22:867</sup> <sup>22:868</sup> <sup>22:869</sup> <sup>22:870</sup> <sup>22:871</sup> <sup>22:872</sup> <sup>22:873</sup> <sup>22:874</sup> <sup>22:875</sup> <sup>22:876</sup> <sup>22:877</sup> <sup>22:878</sup> <sup>22:879</sup> <sup>22:880</sup> <sup>22:881</sup> <sup>22:882</sup> <sup>22:883</sup> <sup>22:884</sup> <sup>22:885</sup> <sup>22:886</sup> <sup>22:887</sup> <sup>22:888</sup> <sup>22:889</sup> <sup>22:890</sup> <sup>22:891</sup> <sup>22:892</sup> <sup>22:893</sup> <sup>22:894</sup> <sup>22:895</sup> <sup>22:896</sup> <sup>22:897</sup> <sup>22:898</sup> <sup>22:899</sup> <sup>22:900</sup> <sup>22:901</sup> <sup>22:902</sup> <sup>22:903</sup> <sup>22:904</sup> <sup>22:905</sup> <sup>22:906</sup> <sup>22:907</sup> <sup>22:908</sup> <sup>22:909</sup> <sup>22:910</sup> <sup>22:911</sup> <sup>22:912</sup> <sup>22:913</sup> <sup>22:914</sup> <sup>22:915</sup> <sup>22:916</sup> <sup>22:917</sup> <sup>22:918</sup> <sup>22:919</sup> <sup>22:920</sup> <sup>22:921</sup> <sup>22:922</sup> <sup>22:923</sup> <sup>22:924</sup> <sup>22:925</sup> <sup>22:926</sup> <sup>22:927</sup> <sup>22:928</sup> <sup>22:929</sup> <sup>22:930</sup> <sup>22:931</sup> <sup>22:932</sup> <sup>22:933</sup> <sup>22:934</sup> <sup>22:935</sup> <sup>22:936</sup> <sup>22:937</sup> <sup>22:938</sup> <sup>22:939</sup> <sup>22:940</sup> <sup>22:941</sup> <sup>22:942</sup> <sup>22:943</sup> <sup>22:944</sup> <sup>22:945</sup> <sup>22:946</sup> <sup>22:947</sup> <sup>22:948</sup> <sup>22:949</sup> <sup>22:950</sup> <sup>22:951</sup> <sup>22:952</sup> <sup>22:953</sup> <sup>22:954</sup> <sup>22:955</sup> <sup>22:956</sup> <sup>22:957</sup> <sup>22:958</sup> <sup>22:959</sup> <sup>22:960</sup> <sup>22:961</sup> <sup>22:962</sup> <sup>22:963</sup> <sup>22:964</sup> <sup>22:965</sup> <sup>22:966</sup> <sup>22:967</sup> <sup>22:968</sup> <sup>22:969</sup> <sup>22:970</sup> <sup>22:971</sup> <sup>22:972</sup> <sup>22:973</sup> <sup>22:974</sup> <sup>22:975</sup> <sup>22:976</sup> <sup>22:977</sup> <sup>22:978</sup>

11 यहत मुख्य था, और जीजा दूसरा; यूश और बरीआ के बहुत बेटे न हुए, इस कारण वे सब मिलकर पितरों का एक ही घराना ठहरे।

12 कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल चार थे। अम्राम के पुत्र: हारून और मूसा।

13 हारून तो इसलिए अलग किया गया, कि वह और उसकी सन्तान सदा परमपवित्र वस्तुओं को पवित्र ठहराएँ, और सदा यहोवा के सम्मुख धूप जलाया करें और उसकी सेवा टहल करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें।

14 परन्तु परमेश्वर के भक्त मूसा के पुत्रों के नाम लेवी के गोत्र के बीच गिने गए।

15 मूसा के पुत्र, गेशोम और एलीएजेर।

16 और गेशोम का पुत्र शबूएल मुख्य था।

17 एलीएजेर के पुत्र: रहब्याह मुख्य; और एलीएजेर के और कोई पुत्र न हुआ, परन्तु रहब्याह के बहुत से बेटे हुए।

18 यिसहार के पुत्रों में से शलोमीत मुख्य ठहरा।

19 हेब्रोन के पुत्र: यरिय्याह मुख्य, दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और चौथा यकमाम।

20 उज्जीएल के पुत्रों में से मुख्य तो मीका और दूसरा यिशिशय्याह था।

21 मरारी के पुत्र: महली और मूशी। महली के पुत्र: एलीआजर और कीश।

22 एलीआजर पुत्रहीन मर गया, उसके केवल बेटियाँ हुई; अतः कीश के पुत्रों ने जो उनके भाई थे उन्हें ब्याह लिया।

23 मूशी के पुत्र: महली; एदेर और यरेमोत यह तीन थे।

24 लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही थे, ये नाम ले लेकर, एक-एक पुरुष करके गिने गए, और बीस वर्ष की या उससे अधिक अवस्था के थे और यहोवा के भवन में सेवा टहल करते थे।

25 क्योंकि दाऊद ने कहा, “इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी प्रजा को विश्राम दिया है, कि वे यरूशलेम में सदैव रह सकें।

26 और लेवियों को निवास और उसकी उपासना का सामान फिर उठाना न पड़ेगा।”

27 क्योंकि [22:22] [22] [22:22] [22:22] [22:22]\* के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक अवस्था के लेवीय गिने गए।

28 क्योंकि उनका काम तो हारून की सन्तान की सेवा टहल करना था, अर्थात् यह कि वे आँगनों और कोठरियों में, और सब पवित्र वस्तुओं के शुद्ध करने में और परमेश्वर के भवन की उपासना के सब कामों में सेवा टहल करें;

29 और भेंट की रोटी का, अन्नबलियों के मैदे का, और अखमीरी पपड़ियों का, और तवे पर बनाए हुए और सने हुए का, और मापने और तौलने के सब प्रकार का काम करें।

30 और प्रति भोर और प्रति साँझ को यहोवा का धन्यवाद और उसकी स्तुति करने के लिये खड़े रहा करें।

31 और विश्रामदिनों और नये चाँद के दिनों, और नियत पर्वों में गिनती के नियम के अनुसार [22:22] [22:22] [22] [22] [22:22] [22:22] [22] [22:22];

32 और यहोवा के भवन की उपासना के विषय मिलापवाले तम्बू और पवित्रस्थान की रक्षा करें, और अपने भाई हारूनियों के सौंपे हुए काम को चौकसी से करें।

## 24

[22:22] [22] [22:22] [22:22] [22:22]

1 फिर हारून की सन्तान के दल ये थे। हारून के पुत्र तो नादाब, अबीहू, एलीआजर और ईतामार थे।

2 परन्तु नादाब और अबीहू अपने पिता के सामने पुत्रहीन मर गए, इसलिए याजक का काम एलीआजर और ईतामार करते थे।

3 और दाऊद ने एलीआजर के वंश के [22:22] [22] [22:22] [22] [22] [22:22] [22] [22:22] [22]\* उनको अपनी-अपनी सेवा के अनुसार दल-दल करके बाँट दिया।

4 एलीआजर के वंश के मुख्य पुरुष, ईतामार के वंश के मुख्य पुरुषों से अधिक थे, और वे ऐसे बाँटे गए: अर्थात् एलीआजर के वंश के पितरों के घरानों के सोलह, और ईतामार के वंश के पितरों के घरानों के आठ मुख्य पुरुष थे।

5 तब वे चिट्ठी डालकर बराबर-बराबर बाँटे गए, क्योंकि एलीआजर और ईतामार दोनों के वंशों में

\* 23:27 [22:22] [22] [22:22] [22:22]: कुछ के विचार में यह उसके राज्यकाल के उत्तरकालीन युग की ऐतिहासिक रचना है, सम्भवतः गाद या नातान द्वारा रचित (1इति. 27:24, 1इति. 29:29) अन्यो के विचार में उसने पवित्रस्थान में सेवा के निर्देशन लिखकर रख दिए थे। † 23:31 [22:22] [22:22] [22] [22] [22:22] [22:22] [22] [22:22]: यद्यपि लेवियों को बलि चढ़ाने की अनुमति नहीं थी, अनेक अवसर ऐसे थे जब वे बलि चढ़ाने में पुरोहितों को योगदान देते थे। \* 24:3 [22:22] [22] [22:22] [22] [22] [22] [22:22] [22] [22:22] [22]: सादोक और अहीमेलक ने पुरोहितीयदायित्वों को तैयार करने में दाऊद की सहायता की थी, जिस प्रकार के दलों के प्रधानों ने गायकों को दलों में बाँटने में उसकी सहायता की थी।



पवित्रस्थान के हाकिम और परमेश्वर के हाकिम नियुक्त हुए थे।

6 और नतनेल के पुत्र शमायाह जो शास्त्री और लेवीय था, <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup> <sup>1001</sup> <sup>1002</sup> <sup>1003</sup> <sup>1004</sup> <sup>1005</sup> <sup>1006</sup> <sup>1007</sup> <sup>1008</sup> <sup>1009</sup> <sup>1010</sup> <sup>1011</sup> <sup>1012</sup> <sup>1013</sup> <sup>1014</sup> <sup>1015</sup> <sup>1016</sup> <sup>1017</sup> <sup>1018</sup> <sup>1019</sup> <sup>1020</sup> <sup>1021</sup> <sup>1022</sup> <sup>1023</sup> <sup>1024</sup> <sup>1025</sup> <sup>1026</sup> <sup>1027</sup> <sup>1028</sup> <sup>1029</sup> <sup>1030</sup> <sup>1031</sup> <sup>1032</sup> <sup>1033</sup> <sup>1034</sup> <sup>1035</sup> <sup>1036</sup> <sup>1037</sup> <sup>1038</sup> <sup>1039</sup> <sup>1040</sup> <sup>1041</sup> <sup>1042</sup> <sup>1043</sup> <sup>1044</sup> <sup>1045</sup> <sup>1046</sup> <sup>1047</sup> <sup>1048</sup> <sup>1049</sup> <sup>1050</sup> <sup>1051</sup> <sup>1052</sup> <sup>1053</sup> <sup>1054</sup> <sup>1055</sup> <sup>1056</sup> <sup>1057</sup> <sup>1058</sup> <sup>1059</sup> <sup>1060</sup> <sup>1061</sup> <sup>1062</sup> <sup>1063</sup> <sup>1064</sup> <sup>1065</sup> <sup>1066</sup> <sup>1067</sup> <sup>1068</sup> <sup>1069</sup> <sup>1070</sup> <sup>1071</sup> <sup>1072</sup> <sup>1073</sup> <sup>1074</sup> <sup>1075</sup> <sup>1076</sup> <sup>1077</sup> <sup>1078</sup> <sup>1079</sup> <sup>1080</sup> <sup>1081</sup> <sup>1082</sup> <sup>1083</sup> <sup>1084</sup> <sup>1085</sup> <sup>1086</sup> <sup>1087</sup> <sup>1088</sup> <sup>1089</sup> <sup>1090</sup> <sup>1091</sup> <sup>1092</sup> <sup>1093</sup> <sup>1094</sup> <sup>1095</sup> <sup>1096</sup> <sup>1097</sup> <sup>1098</sup> <sup>1099</sup> <sup>1100</sup> <sup>1101</sup> <sup>1102</sup> <sup>1103</sup> <sup>1104</sup> <sup>1105</sup> <sup>1106</sup> <sup>1107</sup> <sup>1108</sup> <sup>1109</sup> <sup>1110</sup> <sup>1111</sup> <sup>1112</sup> <sup>1113</sup> <sup>1114</sup> <sup>1115</sup> <sup>1116</sup> <sup>1117</sup> <sup>1118</sup> <sup>1119</sup> <sup>1120</sup> <sup>1121</sup> <sup>1122</sup> <sup>1123</sup> <sup>1124</sup> <sup>1125</sup> <sup>1126</sup> <sup>1127</sup> <sup>1128</sup> <sup>1129</sup> <sup>1130</sup> <sup>1131</sup> <sup>1132</sup> <sup>1133</sup> <sup>1134</sup> <sup>1135</sup> <sup>1136</sup> <sup>1137</sup> <sup>1138</sup> <sup>1139</sup> <sup>1140</sup> <sup>1141</sup> <sup>1142</sup> <sup>1143</sup> <sup>1144</sup> <sup>1145</sup> <sup>1146</sup> <sup>1147</sup> <sup>1148</sup> <sup>1149</sup> <sup>1150</sup> <sup>1151</sup> <sup>1152</sup> <sup>1153</sup> <sup>1154</sup> <sup>1155</sup> <sup>1156</sup> <sup>1157</sup> <sup>1158</sup> <sup>1159</sup> <sup>1160</sup> <sup>1161</sup> <sup>1162</sup> <sup>1163</sup> <sup>1164</sup> <sup>1165</sup> <sup>1166</sup> <sup>1167</sup> <sup>1168</sup> <sup>1169</sup> <sup>1170</sup> <sup>1171</sup> <sup>1172</sup> <sup>1173</sup> <sup>1174</sup> <sup>1175</sup> <sup>1176</sup> <sup>1177</sup> <sup>1178</sup> <sup>1179</sup> <sup>1180</sup> <sup>1181</sup> <sup>1182</sup> <sup>1183</sup> <sup>1184</sup> <sup>1185</sup> <sup>1186</sup> <sup>1187</sup> <sup>1188</sup> <sup>1189</sup> <sup>1190</sup> <sup>1191</sup> <sup>1192</sup> <sup>1193</sup> <sup>1194</sup> <sup>1195</sup> <sup>1196</sup> <sup>1197</sup> <sup>1198</sup> <sup>1199</sup> <sup>1200</sup> <sup>1201</sup> <sup>1202</sup> <sup>1203</sup> <sup>1204</sup> <sup>1205</sup> <sup>1206</sup> <sup>1207</sup> <sup>1208</sup> <sup>1209</sup> <sup>1210</sup> <sup>1211</sup> <sup>1212</sup> <sup>1213</sup> <sup>1214</sup> <sup>1215</sup> <sup>1216</sup> <sup>1217</sup> <sup>1218</sup> <sup>1219</sup> <sup>1220</sup> <sup>1221</sup> <sup>1222</sup> <sup>1223</sup> <sup>1224</sup> <sup>1225</sup> <sup>1226</sup> <sup>1227</sup> <sup>1228</sup> <sup>1229</sup> <sup>1230</sup> <sup>1231</sup> <sup>1232</sup> <sup>1233</sup> <sup>1234</sup> <sup>1235</sup> <sup>1236</sup> <sup>1237</sup> <sup>1238</sup> <sup>1239</sup> <sup>1240</sup> <sup>1241</sup> <sup>1242</sup> <sup>1243</sup> <sup>1244</sup> <sup>1245</sup> <sup>1246</sup> <sup>1247</sup> <sup>1248</sup> <sup>1249</sup> <sup>1250</sup> <sup>1251</sup> <sup>1252</sup> <sup>1253</sup> <sup>1254</sup> <sup>1255</sup> <sup>1256</sup> <sup>1257</sup> <sup>1258</sup> <sup>1259</sup> <sup>1260</sup> <sup>1261</sup> <sup>1262</sup> <sup>1263</sup> <sup>1264</sup> <sup>1265</sup> <sup>1266</sup> <sup>1267</sup> <sup>1268</sup> <sup>1269</sup> <sup>1270</sup> <sup>1271</sup> <sup>1272</sup> <sup>1273</sup> <sup>1274</sup> <sup>1275</sup> <sup>1276</sup> <sup>1277</sup> <sup>1278</sup> <sup>1279</sup> <sup>1280</sup> <sup>1281</sup> <sup>1282</sup> <sup>1283</sup> <sup>1284</sup> <sup>1285</sup> <sup>1286</sup> <sup>1287</sup> <sup>1288</sup> <sup>1289</sup> <sup>1290</sup> <sup>1291</sup> <sup>1292</sup> <sup>1293</sup> <sup>1294</sup> <sup>1295</sup> <sup>1296</sup> <sup>1297</sup> <sup>1298</sup> <sup>1299</sup> <sup>1300</sup> <sup>1301</sup> <sup>1302</sup> <sup>1303</sup> <sup>1304</sup> <sup>1305</sup> <sup>1306</sup> <sup>1307</sup> <sup>1308</sup> <sup>1309</sup> <sup>1310</sup> <sup>1311</sup> <sup>1312</sup> <sup>1313</sup> <sup>1314</sup> <sup>1315</sup> <sup>1316</sup> <sup>1317</sup> <sup>1318</sup> <sup>1319</sup> <sup>1320</sup> <sup>1321</sup> <sup>1322</sup> <sup>1323</sup> <sup>1324</sup> <sup>1325</sup> <sup>1326</sup>

में झाँझ, सारंगी और वीणा बजाते थे। आसाप, यदूतन और हेमान राजा के अधीन रहते थे।

7 इन सभी की गिनती ~~222222 222222~~ जो यहोवा के गीत सीखे हुए और सब प्रकार से निपुण थे, दो सौ अट्ठासी थी।

8 उन्होंने क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या गुरु, क्या चेला, अपनी-अपनी बारी के लिये चिट्ठी डाली।

9 पहली चिट्ठी आसाप के बेटों में से यूसुफ के नाम पर निकली, दूसरी गदल्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

10 तीसरी जकूर के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

11 चौथी यिस्री के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

12 पाँचवीं नतन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

13 छठीं बुक्कियाह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

14 सातवीं यसरेला के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

15 आठवीं यशायाह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

16 नौवीं मत्तन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई समेत बारह थे।

17 दसवीं शिमी के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

18 ग्यारहवीं अजरेल के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

19 बारहवीं हशब्द्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

20 तेरहवीं शूबाएल के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

21 चौदहवीं मत्तित्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

22 पन्द्रहवीं यरेमोट के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

23 सोलहवीं हनन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

24 सत्रहवीं योशबकाशा के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

25 अठारहवीं हनानी के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

26 उन्नीसवीं मल्लोती के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

27 बीसवीं एलियातह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

28 इक्कीसवीं होतीर के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

29 बाईसवीं गिदलती के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

30 तेईसवीं महजीओत; के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

31 चौबीसवीं चिट्ठी रोममतीएजेर के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

## 26

~~222222 22 2222222222~~

1 फिर द्वारपालों के दल ये थे: कोरहियों में से तो मशेलेम्याह, जो कोरे का पुत्र और आसाप की सन्तानों में से था।

2 और मशेलेम्याह के पुत्र हुए, अर्थात् उसका जेठा जकर्याह, दूसरा यदीएल, तीसरा जबद्याह,

3 चौथा यातनीएल, पाँचवाँ एलाम, छठवाँ यहोहानान और सातवाँ एल्यहोएनै।

4 फिर ~~2222222222~~\* के भी पुत्र हुए, उसका जेठा शमायाह, दूसरा यहोजाबाद, तीसरा योआह, चौथा साकार, पाँचवाँ नतनेल,

5 छठवाँ अम्मीएल, सातवाँ इस्साकार और आठवाँ पुल्लतै, क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दी थी।

6 और उसके पुत्र शमायाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए, जो शूरवीर होने के कारण अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे।

7 शमायाह के पुत्र ये थे, अर्थात् ओतनी, रपाएल, ओबेद, एलजाबाद और उनके भाई एलीहू और समक्याह बलवान पुरुष थे।

8 ये सब ओबेदेदोम की सन्तानों में से थे, वे और उनके पुत्र और भाई इस सेवकाई के लिये बलवान और शक्तिमान थे; ये ओबेदेदोमी बासठ थे।

9 मशेलेम्याह के पुत्र और भाई अठारह थे, जो बलवान थे।

‡ 25:7 ~~222222 222222~~: अर्थात् लेवी गोत्र के अन्य सदस्यों के साथ। आसाप का प्रत्येक पुत्र यदूतन और हेमान बारह बारह प्रवीण संगीतकारों के दल के मुखिया थे, इन दलों में उसके अपने पुत्र तथा अन्य परिवारों के सदस्य थे। \* 26:4 ~~2222222222~~: ओबेदेदोम और होसा (1इति. 26:10) द्वारपाल थे- यरूशलेम में वाचा का सन्दूक लाने के समय से ही वे द्वारपाल थे। (1इति. 15:2, 1इति.16:38)





33 और अहीतोपेल राजा का मंत्री था, और एरेकी हूशै राजा का मित्र था।

34 और अहीतोपेल के बाद बनायाह का पुत्र यहोयादा और एब्द्यातार मंत्री ठहराए गए। और राजा का प्रधान सेनापति योआब था।

## 28

1 और दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अर्थात्

गोत्रों के हाकिमों और राजा की सेवा टहल करनेवाले दलों के हाकिमों को और सहस्त्रपतियों और शतपतियों और राजा और उसके पुत्रों के पशु आदि सब धन-सम्पत्ति के अधिकारियों, सरदारों और वीरों और सब शूरवीरों को यरूशलेम में बुलवाया।

2 तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा, “हे मेरे भाइयों! और हे मेरी प्रजा के लोगों! मेरी सुनो, मेरी मनसा तो थी कि यहोवा की वाचा के सन्दूक के लिये और हम लोगों के परमेश्वर के <sup>\*</sup> के लिये विश्राम का एक भवन बनाऊँ, और मैंने उसके बनाने की तैयारी की थी।

3 परन्तु परमेश्वर ने मुझसे कहा, ‘तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा, क्योंकि तू युद्ध करनेवाला है और तूने लहू बहाया है।’

4 तो भी इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया, कि इस्राएल का राजा सदा बना रहूँ अर्थात् उसने यहूदा को प्रधान होने के लिये और यहूदा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रों में से वह मुझी को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिये प्रसन्न हुआ।

5 और मेरे सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिए हैं) उसने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है, कि वह इस्राएल के ऊपर यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे।

6 और उसने मुझसे कहा, ‘तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आँगनों को बनाएगा, क्योंकि मैंने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरूँगा।’

7 और <sup>\*</sup>, तो मैं उसका राज्य सदा स्थिर रखूँगा।’

8 इसलिए अब इस्राएल के देखते अर्थात् यहोवा की मण्डली के देखते, और अपने परमेश्वर के सामने, अपने

परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो; ताकि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो, और इसे अपने बाद अपने वंश का सदा का भाग होने के लिये छोड़ जाओ।

9 “हे मेरे पुत्र सुलैमान! तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जाँचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझको मिलेगा; परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझको छोड़ देगा।

10 अब चौकस रह, यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है, जो पवित्रस्थान ठहरेगा, हियाव बाँधकर इस काम में लग जा।”

11 तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों, अटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित्त के ढकने के स्थान का नमूना,

12 और यहोवा के भवन के आँगनों और चारों ओर की कोठरियों, और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों के, जो-जो नमूने परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे सब दे दिए।

13 फिर याजकों और लेवियों के दलों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब कामों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब सामान,

14 अर्थात् सब प्रकार की सेवा के लिये सोने के पात्रों के निमित्त सोना तौलकर, और सब प्रकार की सेवा के लिये चाँदी के पात्रों के निमित्त चाँदी तौलकर,

15 और सोने की दीवटों के लिये, और उनके दीपकों के लिये प्रति एक-एक दीवट, और उसके दीपकों का सोना तौलकर और चाँदी की दीवटों के लिये एक-एक दीवट, और उसके दीपक की चाँदी, प्रति एक-एक दीवट के काम के अनुसार तौलकर,

16 और भेंट की रोटी की मेजों के लिये एक-एक मेज का सोना तौलकर, और चाँदी की मेजों के लिये चाँदी,

17 और शुद्ध सोने के काँटों, कटोरों और प्यालों और सोने की कटोरियों के लिये एक-एक कटोरी का सोना तौलकर, और चाँदी की कटोरियों के लिये एक-एक कटोरी की चाँदी तौलकर,

18 और धूप की वेदी के लिये ताया हुआ सोना तौलकर, और <sup>\*</sup>

\* **28:2** <sup>\*</sup>: दाऊद वाचा के सन्दूक को परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी कहता है क्योंकि वह उसके ऊपर विराजमान रहता था या उस प्रकाशमान बादल में जो दया के आसन एवं करुणों के मध्य था। † **28:7** <sup>\*</sup>.... <sup>\*</sup>: दाऊद से जो प्रतिज्ञा की गई वह शर्त पर आधारित थी और यहूदी सिंहासन पर उसके वंश का बैठना वह शर्त पर आधारित थी (2शमू 7:14) अब स्पष्टता से घोषित किया गया। ‡ **28:18** <sup>\*</sup>: वाचा का सन्दूक खुद है। यहोवा करुणों पर सवारी करता है, अतः वे उसका रथ है। (भज. 18:10, भजन. 99:1)



16 हे हमारे परमेश्वर यहोवा! वह जो बड़ा संचय हमने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिये किया है, वह तेरे ही हाथ से हमें मिला था, और सब तेरा ही है।

17 और हे मेरे परमेश्वर! मैं जानता हूँ कि तू मन को जाँचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है; मैंने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है; और अब मैंने आनन्द से देखा है, कि तेरी प्रजा के लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, वह अपनी इच्छा से तेरे लिये भेंट देते हैं।

18 हे यहोवा! हे हमारे पुरखा अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर! अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाए रख और ~~29:18~~।

19 और मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं, चित्तौनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे, और उस भवन को बनाए, जिसकी तैयारी मैंने की है।”

20 तब दाऊद ने सारी सभा से कहा, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो।” तब सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया, और अपना-अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत् किया।

~~29:21~~

21 और दूसरे दिन उन्होंने यहोवा के लिये बलिदान किए, अर्थात् अर्घों समेत एक हजार बैल, एक हजार मेढे और एक हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाए, और सब इस्राएल के लिये बहुत से मेलबलि चढ़ाए।

22 उसी दिन यहोवा के सामने उन्होंने बड़े आनन्द से खाया और पिया।

फिर उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा ठहराकर यहोवा की ओर से प्रधान होने के लिये उसका और याजक होने के लिये सादोक का अभिषेक किया।

23 तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और समृद्ध हुआ, और इस्राएल उसके अधीन हुआ।

24 और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की।

25 और यहोवा ने सुलैमान को सब इस्राएल के देखते बहुत बढ़ाया, और उसे ऐसा राजकीय ऐश्वर्य दिया,

‡ 29:18 ~~29:18~~: सहजता एवं स्वैच्छिक दान देने के लिए उनकी आत्मा को बनाए रख तथा उनके मन अपने में स्थिर रख।

§ 29:30 ~~29:30~~: किसी किसी अनुवाद में गाद स्पष्टतः शमूएल का पद उच्चतर उपाधि का है जो केवल उसे और हनानी को दिया गया था।

जैसा उससे पहले इस्राएल के किसी राजा का न हुआ था।

~~29:26~~

26 इस प्रकार यिशै के पुत्र दाऊद ने सारे इस्राएल के ऊपर राज्य किया।

27 और उसके इस्राएल पर राज्य करने का समय चालीस वर्ष का था; उसने सात वर्ष तो हेब्रोन में और तैंतीस वर्ष यरूशलेम में राज्य किया।

28 और वह पूरे बुढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और वैभव, मनमाना भोगकर मर गया; और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ।

29 आदि से अन्त तक राजा दाऊद के सब कामों का वृत्तान्त,

30 और उसके सब राज्य और पराक्रम का, और उस पर और इस्राएल पर, वरन् देश-देश के सब राज्यों पर जो कुछ बीता, इसका भी वृत्तान्त ~~29:30~~ की पुस्तकों में लिखा हुआ है।





13 तब सुलैमान गिबोन के ऊँचे स्थान से, अर्थात् मिलापवाले तम्बू के सामने से यरूशलेम को आया और वहाँ इस्राएल पर राज्य करने लगा।

14 फिर सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये; और उसके चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार थे, और उनको उसने रथों के नगरों में, और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा।

15 राजा ने ऐसा किया कि यरूशलेम में सोने-चाँदी का मूल्य बहुतायत के कारण पत्थरों का सा, और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरों का सा बना दिया।

16 जो घोड़े सुलैमान रखता था, वे मिस्र से आते थे, और राजा के व्यापारी उन्हें झुण्ड के झुण्ड ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे।

17 एक रथ तो छः सौ शेकेल चाँदी पर, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर मिस्र से आता था; और इसी दाम पर वे हित्तियों के सब राजाओं और अराम के राजाओं के लिये उन्हीं के द्वारा लाया करते थे।

## 2

?????? ???? ??

1 अब सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक भवन और अपना राजभवन बनाने का विचार किया।

2 इसलिए सुलैमान ने सत्तर हजार बोझा ढोनेवाले और अस्सी हजार पहाड़ से पत्थर काटनेवाले और वृक्ष काटनेवाले, और इन पर तीन हजार छः सौ मुखिए गिनती करके ठहराए।

3 तब सुलैमान ने सोर के राजा हीराम के पास कहला भेजा, “जैसा तूने मेरे पिता दाऊद से बर्ताव किया, अर्थात् उसके रहने का भवन बनाने को देवदार भेजे थे, वैसा ही अब मुझसे भी बर्ताव कर।

4 देख, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाने पर हूँ, कि उसे उसके लिये पवित्र करूँ और उसके सम्मुख सुगन्धित धूप जलाऊँ, और नित्य भेंट की रोटी उसमें रखी जाए; और प्रतिदिन सवेरे और साँझ को, और विश्राम और नये चाँद के दिनों में और हमारे परमेश्वर यहोवा के सब <sup>2</sup>????? <sup>2</sup>????? में होमबलि चढ़ाया जाए। इस्राएल के लिये ऐसी ही सदा की विधि है।

5 जो भवन मैं बनाने पर हूँ, वह महान होगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सब देवताओं में महान है।

6 परन्तु किस में इतनी शक्ति है, कि उसके लिये भवन बनाए, वह तो स्वर्ग में वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग में भी नहीं समाता? मैं क्या हूँ कि उसके सामने धूप जलाने को छोड़ और किसी विचार से उसका भवन बनाऊँ?

7 इसलिए अब तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज दे, जो सोने, चाँदी, पीतल, लोहे और बैंगनी, लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो, कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराए हुए निपुण मनुष्यों के साथ होकर जो मेरे पास यहूदा और यरूशलेम में रहते हैं, काम करे।

8 फिर लबानोन से मेरे पास देवदार, सनोवर और चन्दन की लकड़ी भेजना, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तेरे दास लबानोन में वृक्ष काटना जानते हैं, और तेरे दासों के संग मेरे दास भी रहकर,

9 मेरे लिये बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे, क्योंकि जो भवन मैं बनाना चाहता हूँ, वह बड़ा और अचम्भे के योग्य होगा।

10 तेरे दास जो लकड़ी काटेंगे, उनको मैं बीस हजार कोर कूटा हुआ गेहूँ, बीस हजार कोर जौ, बीस हजार बत दाखमधु और बीस हजार बत तेल दूँगा।”

11 तब सोर के राजा हीराम ने चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी: “यहोवा अपनी प्रजा से प्रेम रखता है, इससे उसने तुझे उनका राजा कर दिया।”

12 फिर हीराम ने यह भी लिखा, “धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है, और उसने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान, चतुर और समझदार पुत्र दिया है, ताकि वह यहोवा का एक भवन और अपना राजभवन भी बनाए।

13 इसलिए अब मैं एक बुद्धिमान और समझदार पुरुष को, अर्थात् हूराम-अबी को भेजता हूँ,

14 जो एक दान-वंशी स्त्री का बेटा है, और उसका पिता सोर का था। वह सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर, लकड़ी, बैंगनी और नीले और लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम, और सब प्रकार की नक्काशी को जानता और सब भाँति की कारीगरी बना सकता है: इसलिए तेरे चतुर मनुष्यों के संग, और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के चतुर मनुष्यों के संग, उसको भी काम मिले।

15 मेरे प्रभु ने जो गेहूँ, जौ, तेल और दाखमधु भेजने की चर्चा की है, उसे अपने दासों के पास भिजवा दे।

16 और हम लोग जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी लबानोन पर से काटेंगे, और बेड़े बनवाकर समुद्र के मार्ग से याफा को पहुँचाएँगे, और तू उसे यरूशलेम को ले जाना।”

?????? ??

\* 2:4 <sup>2</sup>????? <sup>2</sup>?????: तीन वार्षिक त्योहार जो सबसे बड़े थे फसह, सप्ताहों का त्यौहार और झोपड़ियों का त्यौहार (लैव्य. 23:4-44)।





9 डंडे तो इतने लम्बे थे, कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए भीतरी कोठरी के सामने देख पड़ते थे, परन्तु बाहर से वे दिखाई न पड़ते थे। वे आज के दिन तक वहीं हैं।

10 सन्दूक में पत्थर की उन दो पट्टियाओं को छोड़ कुछ न था, जिन्हें मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखा, जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के बाद उनके साथ वाचा बाँधी थी।

22222222 22 222222

11 जब याजक पवित्रस्थान से निकले (जितने याजक उपस्थित थे, उन सभी ने अपने-अपने को पवित्र किया था, और अलग-अलग दलों में होकर सेवा न करते थे;

12 और जितने लेवीय गायक थे, वे सब के सब अर्थात् पुत्रों और भाइयों समेत आसाप, हेमान और यदूतून सन के वस्त्र पहने झाँझ, सारंगियाँ और वीणाएँ लिये हुए, वेदी के पूर्व की ओर खड़े थे, और उनके साथ एक सौ बीस याजक तुरहियां बजा रहे थे।)

13 और जब तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियां, झाँझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊँचे शब्द से करने लगे, “वह भला है और उसकी करुणा सदा की है,” 22 222222 22 2222 2222 2222 2222 2222†,

14 और बादल के कारण याजक लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था। (222222. 15:8, 222222. 40:35)

## 6

22222222 22 2222 2222222222 22 22222222

1 तब सुलेमान कहने लगा, “यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूँगा।

2 परन्तु मैंने तेरे लिये एक वासस्थान वरन् ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिसमें तू युग-युग रहे।” (222. 132:13,14)

3 तब राजा ने इस्राएल की पूरी सभा की ओर मुँह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया, और इस्राएल की पूरी सभा खड़ी रही।

4 और उसने कहा, “धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसने अपने मुँह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और अपने हाथों से इसे पूरा किया है,

5 जिस दिन से मैं अपनी प्रजा को मिस्र देश से निकाल लाया, तब से मैंने न तो इस्राएल के किसी गोत्र का कोई

नगर चुना जिसमें मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए, और न कोई मनुष्य चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो।

6 परन्तु मैंने यरूशलेम को इसलिए चुना है, कि मेरा नाम वहाँ हो, और दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो।

7 मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा थी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाए।

8 परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, ‘तेरी जो इच्छा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी इच्छा करके तूने भला तो किया; (1 222222. 8:18)

9 तो भी तू उस भवन को बनाने न पाएगा: तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा।’

10 यह वचन जो यहोवा ने कहा था, उसे उसने पूरा भी किया है; और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजमान हूँ, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया है। (1 222222. 2:12)

11 इसमें मैंने उस सन्दूक को रख दिया है, जिसमें यहोवा की वह वाचा है, जो उसने इस्राएलियों से बाँधी थी।”

22222222 22 222222222222

12 तब वह इस्राएल की सारी सभा के देखते यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाए।

13 सुलेमान ने पाँच हाथ लम्बी, पाँच हाथ चौड़ी और तीन हाथ ऊँची पीतल की एक चौकी बनाकर आँगन के बीच रखवाई थी; उसी पर खड़े होकर उसने सारे इस्राएल की सभा के सामने घुटने टेककर स्वर्ग की ओर हाथ फैलाए हुए कहा,

14 “हे यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर, तेरे समान न तो स्वर्ग में और न पृथ्वी पर कोई परमेश्वर है: तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा पूरी करता और करुणा करता रहता है।

15 तूने जो वचन मेरे पिता दाऊद को दिया था, उसका तूने पालन किया है; जैसा तूने अपने मुँह से कहा था, वैसा ही अपने हाथ से उसको हमारी आँखों के सामने पूरा भी किया है।

16 इसलिए अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, इस वचन को भी पूरा कर, जो तूने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, तेरे कुल में मेरे सामने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू

† 5:13 22 22222222 22 2222 2222 2222 22 2222: यह परमेश्वर की उपस्थिति की परिस्थितियों के संदर्भ में है।

अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें।'

17 अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, जो वचन तूने अपने दास दाऊद को दिया था, वह सच्चा किया जाए।

18 "परन्तु क्या परमेश्वर सचमुच मनुष्यों के संग पृथ्वी पर वास करेगा? स्वर्ग में वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में तू कैसे समाएगा?"

19 तो भी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपने दास की प्रार्थना और गिडगिडाहट की ओर ध्यान दे और मेरी पुकार और यह प्रार्थना सुन, जो मैं तेरे सामने कर रहा हूँ।

20 वह यह है कि तेरी आँखें इस भवन की ओर, अर्थात् इसी स्थान की ओर जिसके विषय में तूने कहा है कि मैं उसमें अपना नाम रखूँगा, रात-दिन खुली रहें, और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले।

21 और अपने दास, और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिसको वे इस स्थान की ओर मुँह किए हुए गिडगिडाकर करें, उसे सुन लेना; स्वर्ग में से जो तेरा निवास-स्थान है, सुन लेना; और सुनकर क्षमा करना।

22 "जब कोई मनुष्य किसी दूसरे के विरुद्ध अपराध करे और उसको शपथ खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के सामने शपथ खाए,

23 तब तू स्वर्ग में से सुनना और मानना, और अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को बदला देना, और उसकी चाल उसी के सिर लौटा देना, और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर, उसकी धार्मिकता के अनुसार उसको फल देना।

24 "फिर यदि तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम मानें, और इस भवन में तुझ से प्रार्थना करें और गिडगिडाएँ,

25 तो तू स्वर्ग में से सुनना; और अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करना, और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जिसे तूने उनको और उनके पुरखाओं को दिया है।

26 "जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें, और इस कारण आकाश इतना बन्द हो जाए कि वर्षा न हो, ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें, और तू जो उन्हें दुःख देता है, इस कारण वे अपने पाप से फिरें,

27 तो तू स्वर्ग में से सुनना, और अपने दासों और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को क्षमा करना; तू जो उनको वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना

चाहिये, इसलिए अपने इस देश पर जिसे तूने अपनी प्रजा का भाग करके दिया है, पानी बरसा देना।

28 "जब इस देश में अकाल या मरी या झुलस हो या गेरुई या टिड्डियाँ या कीड़े लगें, या उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें घेर रखें, या कोई विपत्ति या रोग हो;

29 तब यदि कोई मनुष्य या तेरी सारी प्रजा इस्राएल जो अपना-अपना दुःख और अपना-अपना खेद जानकर और गिडगिडाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएँ;

30 तो तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान से सुनकर क्षमा करना, और एक-एक के मन की जानकर उसकी चाल के अनुसार उसे फल देना; (तू ही तो आदमियों के मन का जाननेवाला है);

31 कि वे जितने दिन इस देश में रहें, जिसे तूने उनके पुरखाओं को दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें।

32 "फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के कारण दूर देश से आए, और आकर इस भवन की ओर मुँह किए हुए प्रार्थना करे,

33 तब तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान में से सुने, और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसके अनुसार करना; जिससे पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर, तेरी प्रजा इस्राएल के समान तेरा भय मानें; और निश्चय करें, कि यह भवन जो मैंने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है।

34 "जब तेरी प्रजा के लोग जहाँ कहीं तू उन्हें भेजे वहाँ अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएँ, और इस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम का बनाया है, मुँह किए हुए तुझ से प्रार्थना करें,

35 तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिडगिडाहट सुनना, और उनका न्याय करना।

36 "निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उन्हें बन्दी बनाकर किसी देश को, चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएँ,

37 तो यदि वे बँधुआई के देश में सोच विचार करें, और फिरकर अपने बन्दी बनानेवालों के देश में तुझ से गिडगिडाकर कहें, हमने पाप किया, और कुटिलता और दुष्टता की है;

38 इसलिए यदि वे अपनी बँधुआई के देश में जहाँ वे उन्हें बन्दी बनाकर ले गए हों अपने पूरे मन और सारे



15 अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे।

16 क्योंकि अब मैंने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा के लिये इसमें बना रहे; मेरी आँखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे।

17 यदि तू अपने पिता दाऊद के समान अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे,

18 तो मैं तेरी राजगद्दी को स्थिर रखूँगा; जैसे कि मैंने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा बाँधी थी, कि तेरे कुल में इस्राएल पर प्रभुता करनेवाला सदा बना रहेगा।

19 परन्तु यदि तुम लोग फिरो, और मेरी विधियों और आज्ञाओं को जो मैंने तुम को दी हैं त्यागो, और जाकर पराए देवताओं की उपासना करो और उन्हें दण्डवत् करो,

20 तो मैं उनको अपने देश में से जो मैंने उनको दिया है, जड़ से उखाड़ूँगा; और इस भवन को जो मैंने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से दूर करूँगा; और ऐसा करूँगा कि देश-देश के लोगों के बीच उसकी उपमा और नामधराई चलेगी।

21 यह भवन जो इतना विशाल है, उसके पास से आने-जानेवाले चकित होकर पूछेंगे, 'यहोवा ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्यों किया है?'

22 तब लोग कहेंगे, 'उन लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उनको मिस्र देश से निकाल लाया था, त्याग कर पराए देवताओं को ग्रहण किया, और उन्हें दण्डवत् की और उनकी उपासना की, इस कारण उसने यह सब विपत्ति उन पर डाली है।'

## 8

??????????

1 सुलैमान को यहोवा के भवन और अपने भवन के बनाने में बीस वर्ष लगे।

2 तब जो नगर हीराम ने सुलैमान को दिए थे, उन्हें सुलैमान ने दृढ़ करके उनमें इस्राएलियों को बसाया।

3 तब सुलैमान ????\* को जाकर, उस पर जयवन्त हुआ।

4 उसने तदमोर को जो जंगल में है, और हमात के सब भण्डार-नगरों को दृढ़ किया।

5 फिर उसने ऊपरवाले और नीचेवाले दोनों बेथोरोन को शहरपनाह और फाटकों और बेंडों से दृढ़ किया।

\* 8:3 ???? जो आम्तौर पर महान हमात कहलाता था (आमोस 6:2) क्योंकि उन्होंने सुलैमान से विद्रोह किया और पराजित किए गए तथा सुलैमान के अधीन हो गए।

6 उसने बालात को और सुलैमान के जितने भण्डार-नगर थे और उसके रथों और सवारों के जितने नगर थे उनको, और जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और अपने राज्य के सब देश में बनाना चाहा, उन सब को बनाया।

7 हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, हिब्वियों और यबूसियों के बचे हुए लोग जो इस्राएल के न थे,

8 उनके वंश जो उनके बाद देश में रह गए, और जिनका इस्राएलियों ने अन्त न किया था, उनमें से तो बहुतों को सुलैमान ने बेगार में रखा और आज तक उनकी वही दशा है।

9 परन्तु इस्राएलियों में से सुलैमान ने अपने काम के लिये किसी को दास न बनाया, वे तो योद्धा और उसके हाकिम, उसके सरदार और उसके रथों और सवारों के प्रधान हुए।

10 सुलैमान के सरदारों के प्रधान जो प्रजा के लोगों पर प्रभुता करनेवाले थे, वे ढाई सौ थे।

11 फिर सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस भवन में ले आया जो उसने उसके लिये बनाया था, क्योंकि उसने कहा, "जिस-जिस स्थान में यहोवा का सन्दूक आया है, वह पवित्र है, इसलिए मेरी रानी इस्राएल के राजा दाऊद के भवन में न रहने पाएगी।"

12 तब सुलैमान ने यहोवा की उस वेदी पर जो उसने ओसारे के आगे बनाई थी, यहोवा को होमबलि चढ़ाई।

13 वह मूसा की आज्ञा और प्रतिदिन के नियम के अनुसार, अर्थात् विश्राम और नये चाँद और प्रतिवर्ष तीन बार ठहराए हुए पर्वों अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व, और सप्ताहों के पर्व, और झोपड़ियों के पर्व में बलि चढ़ाया करता था।

14 उसने अपने पिता दाऊद के नियम के अनुसार याजकों के सेवाकार्यों के लिये उनके दल ठहराए, और लेवियों को उनके कामों पर ठहराया, कि हर एक दिन के प्रयोजन के अनुसार वे यहोवा की स्तुति और याजकों के सामने सेवा-टहल किया करें, और एक-एक फाटक के पास द्वारपालों को दल-दल करके ठहरा दिया; क्योंकि परमेश्वर के भक्त दाऊद ने ऐसी आज्ञा दी थी।

15 राजा ने भण्डारों या किसी और बात के सम्बन्ध में याजकों और लेवियों को जो-जो आज्ञा दी थी, उन्होंने उसे न टाला।

16 सुलैमान का सब काम जो उसने यहोवा के भवन की नींव डालने से लेकर उसके पूरा करने तक किया वह ठीक हुआ। इस प्रकार यहोवा का भवन पूरा हुआ।

17 तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत को गया, जो एदोम के देश में समुद्र के किनारे स्थित हैं।

18 हीराम ने उसके पास अपने जहाजियों के द्वारा जहाज और समुद्र के जानकार मल्लाह भेज दिए, और उन्होंने सुलैमान के जहाजियों के संग ओपीर को जाकर वहाँ से साढ़े चार सौ किक्कार सोना राजा सुलैमान को ला दिया।

## 9

११११ ११ ११११ ११ १११११११ ११ ११११११

1 जब शेबा की रानी ने सुलैमान की कीर्ति सुनी, तब वह कठिन-कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करने के लिये यरूशलेम को चली। वह बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से लदे ऊँट साथ लिये हुए आई, और सुलैमान के पास पहुँचकर उससे अपने मन की सब बातों के विषय बातें की। (1 १११११. 10:1,2)

2 सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसे न बता सके।

3 जब शेबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन,

4 और उसकी मेज पर का भोजन देखा, और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और उसके टहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे-कैसे कपड़े पहने रहते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वे कैसे कपड़े पहने हैं, और वह कैसी चढ़ाई है जिससे वह यहोवा के भवन को जाया करता है, जब उसने यह सब देखा, तब वह चकित हो गई।

5 तब उसने राजा से कहा, "मैंने तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्ति अपने देश में सुनी वह सच ही है।

6 परन्तु जब तक मैंने आप ही आकर अपनी आँखों से यह न देखा, तब तक मैंने उन पर विश्वास न किया; परन्तु तेरी बुद्धि की आधी बड़ाई भी मुझे न बताई गई थी; तू उस कीर्ति से बढ़कर है जो मैंने सुनी थी। (1 १११११. 10:7)

7 धन्य हैं तेरे जन, धन्य हैं तेरे ये सेवक, जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं।

8 धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे से ऐसा प्रसन्न हुआ, कि तुझे अपनी राजगद्दी पर इसलिए विराजमान किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करे; तेरा परमेश्वर जो इस्राएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिये स्थिर करना चाहता था, इसी कारण उसने तुझे न्याय और धार्मिकता करने को उनका राजा बना दिया।"

9 उसने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना, बहुत सा सुगन्ध-द्रव्य, और मणि दिए; जैसे सुगन्ध-द्रव्य शेबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिए, वैसे देखने में नहीं आए।

10 फिर हीराम और सुलैमान दोनों के जहाजी जो ओपीर से सोना लाते थे, वे चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाते थे।

11 राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये चबूतरे और गायकों के लिये वीणाएँ और सारंगियाँ बनवाई; ऐसी वस्तुएँ उससे पहले यहूदा देश में न देख पड़ी थीं।

12 फिर शेबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उसको उसकी इच्छा के अनुसार दिया; यह उससे अधिक था, जो वह राजा के पास ले आई थी। तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई। (1 १११११. 10:13)

११११११११ ११ ११ ११ ११११११

13 जो सोना प्रतिवर्ष सुलैमान के पास पहुँचा करता था, उसका तौल छः सौ छियासठ किक्कार था।

14 यह उससे अधिक था जो सौदागर और व्यापारी लाते थे; और अरब देश के सब राजा और देश के अधिपति भी सुलैमान के पास सोना-चाँदी लाते थे।

15 राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी-बड़ी ढालें बनवाई; एक-एक ढाल में छः छः सौ शेकेल गढ़ा हुआ सोना लगा।

16 फिर उसने सोना गढ़ाकर तीन सौ छोटी ढालें और भी बनवाई; एक-एक छोटी ढाल में तीन सौ शेकेल सोना लगा, और राजा ने उनको लबानोन के वन नामक महल में रख दिया।

17 राजा ने हाथी दाँत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और शुद्ध सोने से मढ़ाया।

18 उस सिंहासन में छः सीढ़ियाँ और सोने का एक पावदान था; ये सब सिंहासन से जुड़े थे, और बैठने के स्थान के दोनों ओर टेक लगी थी और दोनों टेकों के पास एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था।

19 छहों सीढ़ियों के दोनों ओर एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था, वे सब बारह हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी न बना।

20 राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे, और लबानोन के वन नामक महल के सब पात्र भी शुद्ध सोने के थे; सुलैमान के दिनों में चाँदी का कोई मूल्य न था।

21 क्योंकि हीराम के जहाजियों के संग राजा के जहाज तर्शाश को जाते थे, और तीन-तीन वर्ष के बाद तर्शाश के ये जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बन्दर और मोर ले आते थे।



22 अतः राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया।

23 [22222222 22 22 222222]\* सुलैमान की उस बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उपजाई थीं उसका दर्शन करना चाहते थे।

24 वे प्रतिवर्ष अपनी-अपनी भेंट अर्थात् चाँदी और सोने के पात्र, वस्त्र-शस्त्र, सुगन्ध-द्रव्य, घोड़े और खच्चर ले आते थे।

25 अपने घोड़ों और रथों के लिये सुलैमान के चार हजार घुड़साल और बारह हजार घुड़सवार भी थे, जिनको उसने रथों के नगरों में और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा।

26 वह फरात से पलिश्रितियों के देश और मिस्र की सीमा तक के सब राजाओं पर प्रभुता करता था।

27 राजा ने ऐसा किया कि बहुतायत के कारण यरूशलेम में चाँदी का मूल्य पत्थरों का सा और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरों का सा हो गया।

28 लोग मिस्र से और अन्य सभी देशों से सुलैमान के लिये घोड़े लाते थे।

### [22222222 22 22222222]

29 आदि से अन्त तक सुलैमान के और सब काम क्या नातान नबी की पुस्तक में, और शीलोवासी अहिय्याह की नबूवत की पुस्तक में, और नबात के पुत्र यारोबाम के विषय इहो दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

30 सुलैमान ने यरूशलेम में सारे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया।

31 फिर सुलैमान अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसको उसके पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र रहबाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

## 10

### [22222222 22 222222 22 22 2222 22 222222]

1 रहबाम शेकेम को गया, क्योंकि सारे इस्राएली उसको राजा बनाने के लिये वहीं गए थे।

2 जब नबात के पुत्र [22222222]\* ने यह सुना (वह तो मिस्र में रहता था, जहाँ वह सुलैमान राजा के डर के मारे भाग गया था), तो वह मिस्र से लौट आया।

3 तब उन्होंने उसको बुलवा भेजा; अतः यारोबाम और सब इस्राएली आकर रहबाम से कहने लगे,

4 “तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, इसलिए अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और

उस भारी जूए को जिसे उसने हम पर डाल रखा है कुछ हलका कर, तब हम तेरे अधीन रहेंगे।”

5 उसने उनसे कहा, “तीन दिन के उपरान्त मेरे पास फिर आना।” अतः वे चले गए।

6 तब राजा रहबाम ने उन बूढ़ों से जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर उसके सामने उपस्थित रहा करते थे, यह कहकर सम्मति ली, “इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है, इसमें तुम क्या सम्मति देते हो?”

7 उन्होंने उसको यह उत्तर दिया, “यदि तू इस प्रजा के लोगों से अच्छा बर्ताव करके उन्हें प्रसन्न करे और उनसे मधुर बातें कहे, तो वे सदा तेरे अधीन बने रहेंगे।”

8 परन्तु उसने उस सम्मति को जो बूढ़ों ने उसको दी थी छोड़ दिया और उन जवानों से सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते थे।

9 उनसे उसने पूछा, “मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूँ, इसमें तुम क्या सम्मति देते हो? उन्होंने तो मुझसे कहा है, ‘जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर।’”

10 जवानों ने जो उसके संग बड़े हुए थे उसको यह उत्तर दिया, “उन लोगों ने तुझ से कहा है, ‘तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था, परन्तु उसे हमारे लिये हलका कर;’ तू उनसे यह कहना, ‘मेरी छिंंगुलिया मेरे पिता की कमर से भी मोटी ठहरेगी।’

11 मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी करूँगा; मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूँगा।”

12 तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था, “तीसरे दिन मेरे पास फिर आना,” वैसे ही यारोबाम और सारी प्रजा रहबाम के पास उपस्थित हुई।

13 तब राजा ने उनसे कड़ी बातें कीं, और रहबाम राजा ने बूढ़ों की दी हुई सम्मति छोड़कर

14 जवानों की सम्मति के अनुसार उनसे कहा, “मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया था, परन्तु मैं उसे और भी कठिन कर दूँगा; मेरे पिता ने तो तुम को कोड़ों से ताड़ना दी, परन्तु मैं बिच्छुओं से ताड़ना दूँगा।”

15 इस प्रकार राजा ने प्रजा की विनती न मानी; इसका कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी [22222222]† के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था, उसको पूरा करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा ही ठहराया था।

\* 9:23 [22222222 22 22 222222]: अर्थात् उस क्षेत्र के सब राजा अर्थात् वे सब राजा जिनके राज्य सुलैमान के साम्राज्य में जुड़ गए थे। \* 10:2 [22222222]: विभाजित राज्य इस्राएल का पहला राजा। 975-954, ई. पू. वह एक एप्रेमी, नबात का पुत्र था। † 10:15 [22222222]: वह सुलैमान के युग में शीली में एक लेवीय भविष्यद्वक्ता था।

16 जब समस्त इस्राएलियों ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता, तब वे बोले,  
“दाऊद के साथ हमारा क्या अंश?  
हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं है।  
हे इस्राएलियों, अपने-अपने डेरे को चले जाओ!  
अब हे दाऊद, अपने ही घराने की चिन्ता कर।”

17 तब सब इस्राएली अपने डेरे को चले गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे, उन्हीं पर रहबाम राज्य करता रहा।

18 तब राजा रहबाम ने हदोराम को जो सब बेगारों पर अधिकारी था भेज दिया, और इस्राएलियों ने उस पर पथराव किया और वह मर गया। तब रहबाम फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर, यरूशलेम को भाग गया।

19 और इस्राएल ने दाऊद के घराने से बलवा किया और आज तक फिरा हुआ है।

## 11

११:१-११:११

1 जब रहबाम यरूशलेम को आया, तब उसने यहूदा और बिन्यामीन के घराने को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इकट्ठा किया, कि इस्राएल के साथ युद्ध करे जिससे राज्य रहबाम के वश में फिर आ जाए।

2 तब यहोवा का यह वचन परमेश्वर के भक्त शमायाह के पास पहुँचा

3 “यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम से और यहूदा और बिन्यामीन के सब इस्राएलियों से कह,

4 “यहोवा यह कहता है, कि अपने भाइयों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो। तुम अपने-अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है।” यहोवा के ये वचन मानकर, वे यारोबाम पर बिना चढ़ाई किए लौट गए।

११:१२-११:१९

5 रहबाम यरूशलेम में रहने लगा, और यहूदा में बचाव के लिये ये नगर दृढ़ किए,

6 अर्थात् बैतलहम, एताम, तकोआ,

7 बेतसूर, सोको, अदुल्लाम,

8 गत्, मारेशा, जीप,

9 अदोरैम, लाकीश, अजेका,

10 सोरा, अय्यालोन और हेब्रोन जो यहूदा और बिन्यामीन में हैं, दृढ़ किया।

11 उसने दृढ़ नगरों को और भी दृढ़ करके उनमें प्रधान ठहराए, और भोजनवस्तु और तेल और दाखमधु के भण्डार रखवा दिए।

12 फिर एक-एक नगर में उसने ढालें और भाले रखवाकर उनको अत्यन्त दृढ़ कर दिया। यहूदा और बिन्यामीन तो उसके अधिकार में थे।

११:२०-११:२९

13 सारे इस्राएल के याजक और लेवीय भी अपने सारे देश से उठकर उसके पास गए।

14 अतः लेवीय अपनी चराइयों और निज भूमि छोड़कर, यहूदा और यरूशलेम में आए, क्योंकि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उनको निकाल दिया था कि वे यहोवा के लिये याजक का काम न करें,

15 और उसने ११:२०-११:२९\* और बकरा देवताओं और अपने बनाए हुए बछ्छड़ों के लिये, अपनी ओर से याजक ठहरा लिए।

16 लेवियों के बाद इस्राएल के सब गोत्रों में से जितने मन लगाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के खोजी थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिये यरूशलेम को आए।

17 उन्होंने यहूदा का राज्य स्थिर किया और सुलैमान के पुत्र रहबाम को तीन वर्ष तक दृढ़ कराया, क्योंकि तीन वर्ष तक वे दाऊद और सुलैमान की लीक पर चलते रहे।

११:३०-११:३९

18 रहबाम ने एक स्त्री से विवाह कर लिया, अर्थात् महलत से जिसका पिता दाऊद का पुत्र यरीमोट और माता यिशै के पुत्र एलीआब की बेटी अबीहैल थी।

19 उससे यूश, शेमर्याह और जाहम नामक पुत्र उत्पन्न हुए।

20 उसके बाद उसने अबशालोम की बेटी माका से विवाह कर लिया, और उससे अबिय्याह, अत्तै, जीजा और शलोमीत उत्पन्न हुए।

21 रहबाम ने अठारह रानियाँ ब्याह लीं और साठ रखैलियाँ रखीं, और उसके अट्टाईस बेटे और साठ बेटियाँ उत्पन्न हुईं। अबशालोम की बेटी माका से वह अपनी सब रानियों और रखैलों से अधिक प्रेम रखता था;

22 रहबाम ने माका के बेटे अबिय्याह को मुख्य और सब भाइयों में प्रधान इस विचार से ठहरा दिया, कि उसे राजा बनाए।

23 उसने समझ-बूझकर काम किया, और उसने अपने सब पुत्रों को अलग-अलग करके यहूदा और बिन्यामीन के सब देशों के सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया; और

\* 11:15 ११:२०-११:२९: दान और बेतेल में दो पवित्रस्थान।

उन्हें भोजनवस्तु बहुतायत से दी, और उनके लिये बहुत सी स्त्रियाँ ढूँढी।

## 12

परन्तु जब रहबाम का राज्य दृढ़ हो गया, और वह आप स्थिर हो गया, तब उसने और उसके साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया।

1 परन्तु जब रहबाम का राज्य दृढ़ हो गया, और वह आप स्थिर हो गया, तब उसने और उसके साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया।

2 उन्होंने जो यहोवा से विश्वासघात किया, इस कारण राजा रहबाम के पाँचवें वर्ष में मिस्र के राजा शीशक ने,

3 बारह सौ रथ और साठ हजार सवार लिये हुए यरूशलेम पर चढ़ाई की, और जो लोग उसके संग मिस्र से आए, अर्थात् लूबी, सुक्किय्यी, कूशी, ये अनगिनत थे।

4 उसने यहूदा के गढ़वाले नगरों को ले लिया, और यरूशलेम तक आया।

5 तब शमायाह नबी रहबाम और यहूदा के हाकिमों के पास जो शीशक के डर के मारे यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे, आकर कहने लगा, “यहोवा यह कहता है, कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है, इसलिए मैंने तुम को छोड़कर शीशक के हाथ में कर दिया है।”

6 तब इस्राएल के हाकिम और राजा दीन हो गए, और कहा, “*यहोवा ने हमें छोड़ दिया है, इसलिए हमें यरूशलेम में रहना पड़ेगा।*”

7 जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं, तब यहोवा का यह वचन शमायाह के पास पहुँचा “वे दीन हो गए हैं, मैं उनको नष्ट न करूँगा; मैं उनका कुछ *करूँगा*, और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा यरूशलेम पर न भड़केगी।

8 तो भी वे उसके अधीन रहेंगे, ताकि वे मेरी और देश-देश के राज्यों की भी सेवा में अन्तर को जान लें।”

9 तब मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएँ और राजभवन की अनमोल वस्तुएँ उठा ले गया। वह सब कुछ उठा ले गया, और सोने की जो ढालें सुलैमान ने बनाई थीं, उनको भी वह ले गया।

10 तब राजा रहबाम ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाई और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया, जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे।

11 जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता, तब-तब पहरुएँ आकर उन्हें उठा ले चलते, और फिर पहरुओं की कोठरी में लौटाकर रख देते थे।

\* 12:6 *यहोवा ने हमें छोड़ दिया है, इसलिए हमें यरूशलेम में रहना पड़ेगा।* † 12:7 *यहोवा ने हमें छोड़ दिया है, इसलिए हमें यरूशलेम में रहना पड़ेगा।* प्रायश्चित्त के कारण तात्कालिक विनाश का भय दूर हो गया था। \* 13:1 *यहोवा ने हमें छोड़ दिया है, इसलिए हमें यरूशलेम में रहना पड़ेगा।* यहाँ अहिय्याह के राज्यकाल का इतिहास राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में कहीं अधिक विस्तृत है, विशेष करके यारोबाम के साथ उसका युद्ध।

12 जब रहबाम दीन हुआ, तब यहोवा का क्रोध उस पर से उतर गया, और उसने उसका पूरा विनाश न किया; और यहूदा की दशा कुछ अच्छी भी थी।

अतः राजा रहबाम यरूशलेम में दृढ़ होकर राज्य करता रहा।

13 अतः राजा रहबाम यरूशलेम में दृढ़ होकर राज्य करता रहा। जब रहबाम राज्य करने लगा, तब इकतालीस वर्ष की आयु का था, और यरूशलेम में अर्थात् उस नगर में, जिसे यहोवा ने अपना नाम बनाए रखने के लिये इस्राएल के सारे गोत्र में से चुन लिया था, सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम नामाह था, जो अम्मोनी स्त्री थी।

14 उसने वह कर्म किया जो बुरा है, अर्थात् उसने अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया।

15 आदि से अन्त तक रहबाम के काम क्या शमायाह नबी और इदो दर्शी की पुस्तकों में वंशावलियों की रीति पर नहीं लिखे हैं? रहबाम और यारोबाम के बीच तो लड़ाई सदा होती रही।

16 और रहबाम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र अबिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

## 13

यारोबाम के अठारहवें वर्ष में यहूदा पर राज्य करने लगा।

1 यारोबाम के अठारहवें वर्ष में यहूदा पर राज्य करने लगा।

2 वह तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम मीकायाह था; जो गिबावासी ऊरीएल की बेटी थी।

फिर अबिय्याह और यारोबाम के बीच में लड़ाई हुई।

3 अबिय्याह ने तो बड़े योद्धाओं का दल, अर्थात् चार लाख छँटे हुए पुरुष लेकर लड़ने के लिये पाँति बँधाई, और यारोबाम ने आठ लाख छँटे हुए पुरुष जो बड़े शूरवीर थे, लेकर उसके विरुद्ध पाँति बँधाई।

4 तब अबिय्याह समारैम नामक पहाड़ पर, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में है, खड़ा होकर कहने लगा, “हे यारोबाम, हे सब इस्राएलियों, मेरी सुनो।

5 क्या तुम को न जानना चाहिए, कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने नमक वाली वाचा बाँधकर दाऊद को और उसके वंश को इस्राएल का राज्य सदा के लिये दे दिया है।

6 तो भी नबात का पुत्र यारोबाम जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का कर्मचारी था, वह अपने स्वामी के विरुद्ध उठा है।

7 उसके पास हलके और ओछे मनुष्य इकट्ठा हो गए हैं और जब सुलैमान का पुत्र रहबाम लड़का और अल्हड मन का था और उनका सामना न कर सकता था, तब वे उसके विरुद्ध सामर्थी हो गए।

8 अब तुम सोचते हो कि हम यहोवा के राज्य का सामना करेंगे, जो दाऊद की सन्तान के हाथ में है; क्योंकि तुम सब मिलकर बड़ा समाज बन गए हो और तुम्हारे पास वे सोने के बछड़े भी हैं जिन्हें यारोबाम ने तुम्हारे देवता होने के लिये बनवाया।

9 क्या तुम ने यहोवा के याजकों को, अर्थात् हारून की सन्तान और लेवियों को निकालकर देश-देश के लोगों के समान याजक नियुक्त नहीं कर लिए? जो कोई एक बछड़ा और सात मेढ्रे अपना संस्कार कराने को ले आता, वह उनका याजक हो जाता है जो ईश्वर नहीं है। (2:11)

10 परन्तु हम लोगों का परमेश्वर यहोवा है और हमने उसको नहीं त्यागा, और हमारे पास यहोवा की सेवा टहल करनेवाले याजक, हारून की सन्तान और अपने-अपने काम में लगे हुए लेवीय हैं।

11 वे नित्य सवेरे और साँझ को यहोवा के लिये होमबलि और सुगन्ध-द्रव्य का धूप जलाते हैं, और शुद्ध मेज पर भेंट की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उसके दीपक साँझ-साँझ को जलाते हैं; हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते रहे हैं, परन्तु तुम ने उसको त्याग दिया है।

12 देखो, हमारे संग हमारा प्रधान परमेश्वर है, और उसके याजक तुम्हारे विरुद्ध साँस बाँधकर फूँकने को तुरहियां लिये हुए भी हमारे साथ हैं। हे इस्राएलियों अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा से मत लड़ो, क्योंकि तुम सफल न होगे।”

13 परन्तु यारोबाम ने घातकों को उनके पीछे भेज दिया, वे तो यहूदा के सामने थे, और घातक उनके पीछे थे।

14 जब यहूदियों ने पीछे मुँह फेरा, तो देखा कि हमारे आगे और पीछे दोनों ओर से लड़ाई होनेवाली है; तब उन्होंने यहोवा की दुहाई दी, और याजक तुरहियों को फूँकने लगे।

15 तब यहूदी पुरुषों ने जय जयकार किया, और जब यहूदी पुरुषों ने जय जयकार किया, तब परमेश्वर ने अबिय्याह और यहूदा के सामने, यारोबाम और सारे

इस्राएलियों को मारा।

16 तब इस्राएली यहूदा के सामने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया।

17 अबिय्याह और उसकी प्रजा ने उन्हें बड़ी मार से मारा, यहाँ तक कि इस्राएल में से पाँच लाख छूटे हुए पुरुष मारे गए।

18 उस समय तो इस्राएली दब गए, और यहूदी इस कारण प्रबल हुए कि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा था।

19 तब अबिय्याह ने यारोबाम का पीछा करके उससे बेतेल, यशाना और एप्रोन नगरों और उनके गाँवों को ले लिया।

20 अबिय्याह के जीवन भर यारोबाम फिर सामर्थी न हुआ; और कि वह मर गया।

21 परन्तु अबिय्याह और भी सामर्थी हो गया और चौदह स्त्रियाँ ब्याह लीं जिनसे बाइस बेटे और सोलह बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

22 अबिय्याह के काम और उसकी चाल चलन, और उसके वचन, इदो नबी की कथा में लिखे हैं।

## 14

इस्राएली यहूदा के सामने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया।

1 अन्त में अबिय्याह मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा। इसके दिनों में दस वर्ष तक देश में चैन रहा।

2 आसा ने वही किया जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक था।

3 उसने पराई वेदियों को और ऊँचे स्थानों को दूर किया, और लाठों को तुड़वा डाला, और अशेरा नामक मूरतों को तोड़ डाला।

4 और यहूदियों को आज्ञा दी कि अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज करें, और व्यवस्था और आज्ञा को मानें।

5 उसने ऊँचे स्थानों और सूर्य की प्रतिमाओं को यहूदा के सब नगरों में से दूर किया, और उसके सामने राज्य में चैन रहा।

6 उसने यहूदा में गढ़वाले नगर बसाए, क्योंकि देश में चैन रहा। उन वर्षों में उसे किसी से लड़ाई न करनी पड़ी क्योंकि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था।

7 उसने यहूदियों से कहा, “आओ हम इन नगरों को बसाएँ और उनके चारों ओर शहरपनाह, गढ़ और फाटकों

† 13:20 इस्राएली यहूदा के सामने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया।

के पल्ले और बेड़े बनाएँ; देश अब तक हमारे सामने पड़ा है, क्योंकि हमने, अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है; हमने उसकी खोज की और उसने हमको चारों ओर से विश्राम दिया है।” तब उन्होंने उन नगरों को बसाया और समृद्ध हुए।

8 फिर आसा के पास ढाल और बरछी रखनेवालों की एक सेना थी, अर्थात् यहूदा में से तो तीन लाख पुरुष और बिन्यामीन में से ढाल रखनेवाले और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार, ये सब शूरवीर थे।

9 उनके विरुद्ध दस लाख पुरुषों की सेना और तीन सौ रथ लिये हुए जेरह नामक एक कूशी निकला और मारेशा तक आ गया।

10 तब आसा उसका सामना करने को चला और मारेशा के निकट सापता नामक तराई में युद्ध की पाँति बाँधी गई।

11 तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी, “हे यहोवा! जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन की भी; हे हमारे परमेश्वर यहोवा! हमारी सहायता कर, क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरुद्ध आए हैं। हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है; मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाएगा।”

12 तब यहोवा ने कूशियों को आसा और यहूदियों के सामने मारा और कूशी भाग गए।

13 आसा और उसके संग के लोगों ने उनका पीछा गरार तक किया, और इतने कूशी मारे गए, कि वे फिर सिर न उठा सके क्योंकि वे यहोवा और उसकी सेना से हार गए, और यहूदी बहुत सी लूट ले गए।

14 [22:22:22] [22:22] [22] [22-22] [22] [22] [22:22] [22] [22] [22:22]\*, क्योंकि यहोवा का भय उनके रहनेवालों के मन में समा गया और उन्होंने उन नगरों को लूट लिया, क्योंकि उनमें बहुत सा धन था।

15 फिर पशु-शालाओं को जीतकर बहुत सी भेड़-बकरियाँ और ऊँट लूटकर यरूशलेम को लौटे।

## 15

[22:22] [22] [22:22]

1 तब परमेश्वर का आत्मा ओदेद के पुत्र अजर्याह में समा गया,

2 और वह आसा से भेंट करने निकला, और उससे कहा, “हे आसा, और हे सारे यहूदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो, जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह

तुम्हारे संग रहेगा; और यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो, तब तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा।

3 बहुत दिन इस्राएल बिना सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेवाले याजक के और बिना व्यवस्था के रहा।

4 परन्तु जब जब वे संकट में पड़कर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे और उसको ढूँढा, तब-तब वह उनको मिला।

5 उस समय न तो जानेवाले को कुछ शान्ति होती थी, और न आनेवाले को, वरन् सारे देश के सब निवासियों में बड़ा ही कोलाहल होता था।

6 जाति से जाति और नगर से नगर चूर किए जाते थे, क्योंकि परमेश्वर विभिन्न प्रकार का कष्ट देकर उन्हें घबरा देता था। ([22:22:22] 24:7)

7 परन्तु तुम लोग हियाव बाँधों और तुम्हारे हाथ ढीले न पड़ें, क्योंकि तुम्हारे काम का बदला मिलेगा।” (1 [22:22:22] 15:58)

8 जब आसा ने ये वचन और ओदेद नबी की नबूवत सुनी, तब उसने हियाव बाँधकर यहूदा और बिन्यामीन के सारे देश में से, और उन नगरों में से भी जो उसने एप्रैम के पहाड़ी देश में ले लिये थे, सब घिनौनी वस्तुएँ दूर कीं, और यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसारे के सामने थी, उसको नये सिरे से बनाया।

9 उसने सारे यहूदा और बिन्यामीन को, और एप्रैम, मनश्शे और शिमोन में से जो लोग उसके संग रहते थे, उनको इकट्ठा किया, क्योंकि वे यह देखकर कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता है, इस्राएल में से बहुत से उसके पास चले आए थे।

10 आसा के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में वे यरूशलेम में इकट्ठा हुए।

11 उसी समय उन्होंने उस लूट में से जो वे ले आए थे, सात सौ बैल और सात हजार भेड़-बकरियाँ, यहोवा को बलि करके चढ़ाई।

12 [22:22:22] [22:22] [22:22]\* कि हम अपने पूरे मन और सारे जीव से अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे;

13 और क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या स्त्री, क्या पुरुष, जो कोई इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे, वह मार डाला जाएगा।

14 और उन्होंने जय जयकार के साथ तुरहियाँ और नरसिंगे बजाते हुए ऊँचे शब्द से यहोवा की शपथ खाई।

\* 14:14 [22:22:22] [22:22] [22] [22-22] [22] [22] [22:22] [22] [22] [22:22]: सम्भव है कि इस क्षेत्र के पलिशितयों ने कूशी जेरह के इस अभियान में साथ दिया था। \* 15:12 [22:22:22] [22:22] [22:22]: परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के साथ जो पावन वाचा जंगल में बाँधी थी (निर्गं. 24:3-8) उसी वाचा का यह व्यावहारिक नवीकरण था और यहूदियों के इतिहास में ऐसा समय समय पर होता रहा है।

15 यह शपथ खाकर सब यहूदी आनन्दित हुए, क्योंकि उन्होंने अपने सारे मन से शपथ खाई और बड़ी अभिलाषा से उसको ढूँढा और वह उनको मिला, और यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्राम दिया।

16 आसा राजा की माता माका जिसने अशेरा के पास रखने के लिए एक घिनौनी मूरत बनाई, उसको उसने राजमाता के पद से उतार दिया; और आसाप ने उसकी मूरत काटकर पीस डाली और किद्रोन नाले में फेंक दी।

17 ऊँचे स्थान तो इस्राएलियों में से न ढाए गए, तो भी [2222 22 22 22222 22 22222222 2222]† ।

18 उसने जो सोना-चाँदी, और पात्र उसके पिता ने अर्पण किए थे, और जो उसने आप अर्पण किए थे, उनको परमेश्वर के भवन में पहुँचा दिया।

19 राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें वर्ष तक फिर लड़ाई न हुई।

## 16

[2222 22 222 2222 22 22222]

1 आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की और रामाह को इसलिए दृढ़ किया, कि यहूदा के राजा आसा के पास कोई आने-जाने न पाए।

2 तब आसा ने यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में से चाँदी-सोना निकाल दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास दूत भेजकर यह कहा,

3 “जैसे मेरे तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे तेरे बीच भी वाचा बंधे; देख मैं तेरे पास चाँदी-सोना भेजता हूँ, इसलिए आ, इस्राएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को तोड़ दे, ताकि वह मुझसे दूर हो।”

4 बेन्हदद ने राजा आसा की यह बात मानकर, अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई करवाकर इय्योन, दान, [2222222222]† और नप्ताली के सब भण्डारवाले नगरों को जीत लिया।

5 यह सुनकर बाशा ने रामाह को दृढ़ करना छोड़ दिया, और अपना वह काम बन्द करा दिया।

6 तब राजा आसा ने पूरे यहूदा देश को साथ लिया और रामाह के पत्थरों और लकड़ी को, जिनसे बाशा काम करता था, उठा ले गया, और उनसे उसने गेबा, और मिस्पा को दृढ़ किया।

[222222 22 22222222]

† 15:17 [222 22 22 2222 22 22222222 2222]: यह नहीं कि आसा ने पाप नहीं किया परन्तु वह मूर्तिपूजा के पाप से बचा रहा और आजीवन यहोवा का निष्ठावान रहा। \* 16:4 [2222222222]: यह एक ऐसा नगर था जो उत्तर से आक्रमण करनेवाले के लिए सबसे उजागर था। † 16:9

[22 22 22 2222222222 222 22222 22222222]: आसा के आरम्भिक विश्वास का प्रतिफल शान्ति थी (2 इतिहास 4:5; 2 इतिहास. 15:5) परन्तु अब उसके विश्वास की कमी का परिणाम युद्ध और अशान्ति का दण्ड होगा। ‡ 16:12 [22 22 22222 22222 22222 222222 22 22222 2222222222]

[22 22 2222 22]: बाशा के साथ युद्ध के समय ही नहीं रोगावस्था में भी आसा ने मनुष्य की सहायता पर अनावश्यक निर्भरता दर्शाई थी।

7 उस समय हनानी दर्शी यहूदा के राजा आसा के पास जाकर कहने लगा, “तूने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं रखा वरन् अराम के राजा ही पर भरोसा रखा है, इस कारण अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच गई है।

8 क्या कूशियों और लूबियों की सेना बड़ी न थी, और क्या उसमें बहुत से रथ, और सवार न थे? तो भी तूने यहोवा पर भरोसा रखा था, इस कारण उसने उनको तेरे हाथ में कर दिया।

9 देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए। तूने यह काम मूर्खता से किया है, इसलिए [22 22 22 2222222222 2222 22222 22222222]† ।”

10 तब आसा दर्शी पर क्रोधित हुआ और उसे काठ में ठोंकवा दिया, क्योंकि वह उसकी ऐसी बात के कारण उस पर क्रोधित था। और उसी समय से आसा प्रजा के कुछ लोगों पर अत्याचार भी करने लगा।

[2222 22 22222222]

11 आदि से लेकर अन्त तक आसा के काम यहूदा और इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त में लिखे हैं।

12 अपने राज्य के उनतालीसवें वर्ष में आसा को पाँव का रोग हुआ, और वह रोग बहुत बढ़ गया, [22 22 22222 22222 22222 22222222 22 22222 2222222222] [22 22 2222 22]† ।

13 अन्त में आसा अपने राज्य के इकतालीसवें वर्ष में मर के अपने पुरखाओं के साथ जा मिला।

14 तब उसको उसी की कब्र में जो उसने दाऊदपुर में खुदवा ली थी, मिट्टी दी गई; और वह सुगन्ध-द्रव्यों और गंधी के काम के भाँति-भाँति के मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा दिया गया, और बहुत सा सुगन्ध-द्रव्य उसके लिये जलाया गया।

## 17

[2222222222 22 22222222]

1 उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राज्य करने लगा, और इस्राएल के विरुद्ध अपना बल बढ़ाया।

2 उसने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिए, और यहूदा के देश में और एप्रैम के

उन नगरों में भी जो उसके पिता आसा ने ले लिये थे, सिपाहियों की चौकियाँ बैठा दीं।

3 यहोवा यहोशापात के संग रहा, क्योंकि उसने अपने मूलपुरुष दाऊद की प्राचीन चाल का अनुसरण किया और बाल देवताओं की खोज में न लगा।

4 वरन् वह अपने पिता के परमेश्वर की खोज में लगा रहता था और उसी की आज्ञाओं पर चलता था, और [22222222 22 22 2222]\* नहीं करता था।

5 इस कारण यहोवा ने राज्य को उसके हाथ में दृढ़ किया, और सारे यहूदी उसके पास भेंट लाया करते थे, और उसके पास बहुत धन हो गया और उसका वैभव बढ़ गया।

6 यहोवा के मार्गों पर चलते-चलते उसका मन मगन हो गया; फिर उसने यहूदा से ऊँचे स्थान और अशेरा नामक मूरतें दूर कर दीं।

[22222222 22 22222222]

7 उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल और मीकायाह नामक अपने हाकिमों को यहूदा के नगरों में [22222222 222222 22 2222 222222]†।

8 उनके साथ शमायाह, नतन्याह, जबद्याह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान, अदोनिय्याह, तोबियाह और तोबदोनिय्याह, नामक लेवीय और उनके संग एलीशामा और यहोराम नामक याजक थे।

9 अतः उन्होंने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लिये हुए यहूदा में शिक्षा दी, वरन् वे यहूदा के सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे।

10 यहूदा के आस-पास के देशों के राज्य-राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया, कि उन्होंने यहोशापात से युद्ध न किया।

11 कुछ पलिशती यहोशापात के पास भेंट और कर समझकर चाँदी लाए; और अरब के लोग भी सात हजार सात सौ मेढ़े और सात हजार सात सौ बकरे ले आए।

[2222222222 22 22222222222222]

12 यहोशापात बहुत ही बढ़ता गया और उसने यहूदा में किले और भण्डार के नगर तैयार किए।

13 और यहूदा के नगरों में उसका बहुत काम होता था, और यरूशलेम में उसके योद्धा अर्थात् शूरवीर रहते थे।

14 इनके पितरों के घरानों के अनुसार इनकी यह गिनती थी, अर्थात् यहूदी सहस्रपति तो ये थे, प्रधान अदनह जिसके साथ तीन लाख शूरवीर थे,

15 और उसके बाद प्रधान यहोहानान, जिसके साथ दो लाख अस्सी हजार पुरुष थे।

16 और इसके बाद जित्री का पुत्र अमस्याह, जिसने अपने को अपनी ही इच्छा से यहोवा को अर्पण किया था, उसके साथ दो लाख शूरवीर थे।

17 फिर बिन्यामीन में से एल्यादा नामक एक शूरवीर, जिसके साथ ढाल रखनेवाले दो लाख धनुर्धारी थे।

18 और उसके नीचे यहोजाबाद, जिसके साथ युद्ध के हथियार बाँधे हुए एक लाख अस्सी हजार पुरुष थे।

19 ये वे हैं, जो राजा की सेवा में लौलीन थे। ये उनसे अलग थे जिन्हें राजा ने सारे यहूदा के गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया।

## 18

[22222 22 2222 2222222222 22 22222]

1 यहोशापात बड़ा धनवान और ऐश्वर्यवान हो गया; और उसने अहाब के घराने के साथ विवाह-सम्बंध स्थापित किया।

2 [2222 22222 22 2222]\* वह सामरिया में अहाब के पास गया, तब अहाब ने उसके और उसके संगियों के लिये बहुत सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल काटकर, उसे गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करने को उकसाया।

3 इस्राएल के राजा अहाब ने यहूदा के राजा यहोशापात से कहा, “क्या तू मेरे साथ गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करेगा?” उसने उसे उत्तर दिया, “जैसा तू वैसा मैं भी हूँ, और जैसी तेरी प्रजा, वैसी मेरी भी प्रजा है। हम लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे।”

4 फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, “आओ, पहले यहोवा का वचन मालूम करें।”

5 तब इस्राएल के राजा ने नबियों को जो चार सौ पुरुष थे, इकट्ठा करके उनसे पूछा, “क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें, अथवा मैं रुका रहूँ?” उन्होंने उत्तर दिया, “चढ़ाई कर, क्योंकि परमेश्वर उसको राजा के हाथ कर देगा।”

6 परन्तु यहोशापात ने पूछा, “क्या यहाँ यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिससे हम पूछ लें?”

7 इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, “हाँ, एक पुरुष और है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं; परन्तु मैं उससे घृणा करता हूँ; क्योंकि वह मेरे विषय कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि ही की नबूवत करता

\* 17:4 [22222222 22 22 2222]: विशेष करके मूर्तिपूजा बाल की पूजा लाना और स्थापित करना। † 17:7 [22222222 2222 22 2222 222222]: ये प्रधान वास्तव में शिक्षा देने के लिए नहीं, शिक्षा देनेवालों के सर्वेक्षण के लिए थे। शिक्षक तो याजक और लेवी थे। (2 इति. 17:8) \* 18:2 [2222 22222 22 2222]: यहोशापात के राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में (1 राजा. 22:51) विवाह के बाद आठ वर्ष से पहले नहीं।





32 यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट गए।

33 तब किसी ने यूसू ही एक तीर चलाया, और वह इस्राएल के राजा के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा; तब उसने अपने सारथी से कहा, “मैं घायल हो गया हूँ, इसलिए लगाम फेरकर मुझे सेना में से बाहर ले चल।”

34 और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और इस्राएल का राजा अपने रथ में अरामियों के सम्मुख साँझ तक खड़ा रहा, परन्तु सूर्य अस्त होते-होते वह मर गया।

## 19

19:1-19:19

1 यहूदा का राजा यहोशापात यरूशलेम को अपने भवन में कुशल से लौट गया।

2 तब हनानी नामक दर्शी का पुत्र यहू यहोशापात राजा से भेंट करने को निकला और उससे कहने लगा, “क्या 19:1-19:19 19:19” और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिये? इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध भड़का है।

3 तो भी तुझ में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं। तूने तो देश में से अशेरों को नाश किया और अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है।”

19:20-19:29

4 यहोशापात यरूशलेम में रहता था, और उसने बेशेबा से लेकर एप्रैम के पहाड़ी देश तक अपनी प्रजा में फिर दौरा करके, उनको उनके पितरों के परमेश्वर यहोवा की ओर फेर दिया।

5 फिर उसने यहूदा के एक-एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया।

6 और उसने न्यायियों से कहा, “सोचो कि क्या करते हो, क्योंकि तुम जो न्याय करोगे, वह मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा के लिये करोगे; और वह न्याय करते समय तुम्हारे साथ रहेगा।

7 अब यहोवा का भय तुम में बना रहे; चौकसी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है, और न वह किसी का पक्ष करता और न घूस लेता है।” (19:22. 2:11)

8 यरूशलेम में भी यहोशापात ने लेवियों और याजकों और इस्राएल के पितरों के घरानों के कुछ मुख्य पुरुषों को यहोवा की ओर से 19:22-19:29 19:29

\* 19:2 19:22-19:29 19:29: आहाब एक मूर्तिपूजक था वह राज्य में झूठा धर्म लाया जो नया तो था परन्तु अत्यधिक पतित था। इसी कारण यहोशापात उससे सम्बंधित विच्छेद करने पर विपक्ष हुआ। † 19:8 19:22-19:29 19:29: न्याय करने का अर्थ है, धार्मिक अनिवार्यताओं से सम्बंधित मतभेद सुलझाना। मुकद्दमों में अन्य सब विषय जैसे मौजदारी और नागरिक के।

19:22-19:29 के लिये ठहराया। उनका न्याय-आसन यरूशलेम में था।

9 उसने उनको आज्ञा दी, “यहोवा का भय मानकर, सच्चाई और निष्कपट मन से ऐसा करना।

10 तुम्हारे भाई जो अपने-अपने नगर में रहते हैं, उनमें से जिसका कोई मुकद्दमा तुम्हारे सामने आए, चाहे वह खून का हो, चाहे व्यवस्था, अथवा किसी आज्ञा या विधि या नियम के विषय हो, उनको चिता देना कि यहोवा के विषय दोषी न हो। ऐसा न हो कि तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर उसका क्रोध भड़के। ऐसा करो तो तुम दोषी न ठहरोगे।

11 और देखो, यहोवा के विषय के सब मुकद्दमों में तो अमर्याह महायाजक, और राजा के विषय के सब मुकद्दमों में यहूदा के घराने का प्रधान इश्माएल का पुत्र जबद्याह तुम्हारे ऊपर अधिकारी है; और लेवीय तुम्हारे सामने सरदारों का काम करेंगे। इसलिए हियाव बाँधकर काम करो और भले मनुष्य के साथ यहोवा रहेगा।”

## 20

20:1-20:19

1 इसके बाद मोआबियों और अम्मोनियों ने और उनके साथ कई मूनियों ने युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की।

2 तब लोगों ने आकर यहोशापात को बता दिया, “ताल के पार से एदोम देश की ओर से एक बड़ी भीड़ तुझ पर चढ़ाई कर रही है; और देख, वह हसासोन्तामार तक जो एनगदी भी कहलाता है, पहुँच गई है।”

3 तब यहोशापात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया।

4 अतः यहूदी यहोवा से सहायता माँगने के लिये इकट्ठा हुए, वरन् वे यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आए।

20:20-20:29

5 तब यहोशापात यहोवा के भवन में नये आँगन के सामने यहूदियों और यरूशलेमियों की मण्डली में खड़ा होकर

6 यह कहने लगा, “हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति-जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता?”

7 हे हमारे परमेश्वर! क्या तूने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के सामने से निकालकर इन्हें [20:7] [20:7] [20:7] के वंश को सदा के लिये नहीं दे दिया? ([20:7] 2:23)

8 वे इसमें बस गए और इसमें तेरे नाम का एक पवित्रस्थान बनाकर कहा,

9 'यदि तलवार या मरी अथवा अकाल या और कोई विपत्ति हम पर पड़े, तो भी हम इसी भवन के सामने और तेरे सामने (तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर, अपने क्लेश के कारण तेरी दुहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा।'

10 और अब अम्मोनी और मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तूने इस्राएल को मिस्र देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया, और वे उनकी ओर से मुड़ गए और उनका विनाश न किया,

11 देख, वे ही लोग तेरे दिए हुए अधिकार के इस देश में से जिसका अधिकार तूने हमें दिया है, हमको निकालकर कैसा बदला हमें दे रहे हैं।

12 हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिये? परन्तु हमारी आँखें तेरी ओर लगी हैं।"

[20:13] [20:13] [20:13]

13 और सब यहूदी अपने-अपने बाल-बच्चों, स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सम्मुख खड़े रहे।

14 तब आसाप के वंश में से यहजीएल नामक एक लेवीय जो जकर्याह का पुत्र और बनायाह का पोता और मत्तन्याह के पुत्र यीएल का परपोता था, उसमें मण्डली के बीच यहोवा का आत्मा समाया।

15 तब वह कहने लगा, "हे सब यहूदियों, हे यरूशलेम के रहनेवालों, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो; यहोवा तुम से यह कहता है, 'तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है।'

16 कल उनका सामना करने को जाना। देखो वे सीस की चढ़ाई पर चढ़े आते हैं और यरूएल नामक जंगल के सामने नाले के सिरे पर तुम्हें मिलेंगे।

17 इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा; हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना; मत डरो, और तुम्हारा

मन कच्चा न हो; कल उनका सामना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा।"

18 तब यहोशापात भूमि की ओर मुँह करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने गिरकर यहोवा को दण्डवत् किया।

19 कहातियों और कोरहियों में से कुछ लेवीय खड़े होकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति अत्यन्त ऊँचे स्वर से करने लगे।

[20:20] [20:20] [20:20]

20 वे सवरे उठकर तकोआ के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े होकर कहा, "हे यहूदियों, हे यरूशलेम के निवासियों, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; उसके नबियों पर विश्वास करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे।"

21 तब उसने प्रजा के साथ सम्मति करके कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियार-बन्दों के आगे-आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएँ, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, "यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।"

22 जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, [20:22] [20:22] [20:22] और वे मारे गए।

23 क्योंकि अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों को डराने और सत्यानाश करने के लिये उन पर चढ़ाई की, और जब वे सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों का अन्त कर चुके, तब उन सभी ने एक दूसरे का नाश करने में हाथ लगाया।

24 जब यहूदियों ने जंगल की चौकी पर पहुँचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़े हुए शव हैं; और कोई नहीं बचा।

25 तब यहोशापात और उसकी प्रजा लूट लेने को गए और शवों के बीच बहुत सी सम्पत्ति और मनभावने गहने मिले; उन्होंने इतने गहने उतार लिये कि उनको न ले जा सके, वरन् लूट इतनी मिली, कि बटोरते-बटोरते तीन दिन बीत गए।

26 चौथे दिन वे बराका नामक तराई में इकट्ठे हुए और वहाँ यहोवा का धन्यवाद किया; इस कारण उस स्थान का नाम बराका की तराई पड़ा, जो आज तक है।

\* 20:7 [20:7] [20:7] [20:7]: इस अभिव्यक्ति का आचार मुख्यतः उत्पत्ति. 18:23-33 में पाया जाता है जहाँ अब्राहम परमेश्वर से ऐसे बातें करता है जैसे अपने मित्र से। † 20:22 [20:22] [20:22] [20:22]: परमेश्वर ने उन्हें बैठाया। उन्हें स्वर्गदूत माना गया था जिन्हें परमेश्वर ने सेना में अव्यवस्था उत्पन्न करने और विनाश दाने के लिए नियुक्त किया था कि मोआबी, अम्मोनी पहले तो एदोमियों को नष्ट करें फिर आपस में लड़ें।

27 तब वे, अर्थात् यहूदा और यरूशलेम नगर के सब पुरुष और उनके आगे-आगे यहोशापात, आनन्द के साथ यरूशलेम लौटे क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर आनन्दित किया था।

28 अतः वे सारंगियाँ, वीणाएँ और तुरहियाँ बजाते हुए यरूशलेम में यहोवा के भवन को आए।

29 और जब देश-देश के सब राज्यों के लोगों ने सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से यहोवा लड़ा, तब उनके मन में परमेश्वर का डर समा गया।

30 इस प्रकार यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको चारों ओर से विश्राम दिया।

१११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११

31 अतः यहोशापात ने यहूदा पर राज्य किया। जब वह राज्य करने लगा तब वह पैंतीस वर्ष का था, और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी।

32 वह अपने पिता आसा की लीक पर चला और उससे न मुड़ा, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा।

33 तो भी ऊँचे स्थान ढाए न गए, वरन् अब तक प्रजा के लोगों ने अपना मन अपने पितरों के परमेश्वर की ओर न लगाया था।

34 आदि से अन्त तक यहोशापात के और काम, हनानी के पुत्र यहू के विषय उस वृत्तान्त में लिखे हैं, जो इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त में पाया जाता है।

35 इसके बाद यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल के राजा अहज्याह से जो बड़ी दुष्टता करता था, मेल किया।

36 अर्थात् उसने उसके साथ इसलिए मेल किया कि तर्शीश जाने को जहाज बनवाए, और उन्होंने ऐसे जहाज एस्योनगेबेर में बनवाए।

37 तब दोदावाह के पुत्र मारेशावासी एलीएजेर ने यहोशापात के विरुद्ध यह नबूवत की, “तूने जो अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा।” अतः जहाज टूट गए और तर्शीश को न जा सके।

## 21

१११११११ ११ १११११११

1 अन्त में यहोशापात मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और उसको उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर

\* 21:3 ११ १११११ ११: उतरी और दक्षिणी राज्यों में इन नियमों में छूट सुलैमान के कारण थी जहाँ दिव्य नियुक्ति प्रकृति पर प्रबल हुई थी। † 21:11 ११११ १११११ ११ ११११११११ ११ ११११ १११११ १११११: हमारे पास यहोराम की मूर्तिपूजा का ब्योरा है। वह अपनी पत्नी आहाब की पुत्री अतल्याह के बुरे प्रभाव के अधीन था।

में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

2 उसके भाई जो यहोशापात के पुत्र थे: अर्थात् अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और शपत्याह; ये सब इस्राएल के राजा यहोशापात के पुत्र थे।

3 उनके पिता ने उन्हें चाँदी सोना और अनमोल वस्तुएँ और बड़े-बड़े दान और यहूदा में गढ़वाले नगर दिए थे, परन्तु यहोराम को उसने राज्य दे दिया, क्योंकि ११ १११११ ११\*।

4 जब यहोराम अपने पिता के राज्य पर नियुक्त हुआ और बलवन्त भी हो गया, तब उसने अपने सब भाइयों को और इस्राएल के कुछ हाकिमों को भी तलवार से घात किया।

5 जब यहोराम राजा हुआ, तब वह बत्तीस वर्ष का था, और वह आठ वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।

6 वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना चलता था, क्योंकि उसकी पत्नी अहाब की बेटी थी। और वह उस काम को करता था, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

7 तो भी यहोवा ने दाऊद के घराने को नाश करना न चाहा, यह उस वाचा के कारण था, जो उसने दाऊद से बाँधी थी। उस वचन के अनुसार था, जो उसने उसको दिया था, कि मैं ऐसा करूँगा कि तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी न बुझेगा।

8 उसके दिनों में एदोम ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपने ऊपर एक राजा बना लिया।

9 तब यहोराम अपने हाकिमों और अपने सब रथों को साथ लेकर उधर गया, और रथों के प्रधानों को मारा।

10 अतः एदोम यहूदा के वंश से छूट गया और आज तक वैसा ही है। उसी समय लिब्ना ने भी उसकी अधीनता छोड़ दी, यह इस कारण हुआ, कि उसने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था।

11 १११११ ११११११ ११ ११११११११ ११ १११११ ११११११ १११११\* और यरूशलम के निवासियों से व्यभिचार कराया, और यहूदा को बहका दिया।

१११११११ ११ १११११११११ १११ ११ १११११

12 तब एलिय्याह नबी का एक पत्र उसके पास आया, “तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि तू जो न तो अपने पिता यहोशापात की लीक पर चला है और न यहूदा के राजा आसा की लीक पर,





से होकर राजभवन में आया, और राजा को राजगद्दी पर बैठाया।

21 तब सब लोग आनन्दित हुए और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो तलवार से मार ही डाली गई थी।

## 24

1

जब योआश राजा हुआ, तब वह सात वर्ष का था, और यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम सिब्या था, जो बेशेबा की थी।

2 जब तक यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक योआश वह काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है।

3 यहोयादा ने उसके दो विवाह कराए और उससे बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।

4

इसके बाद योआश के मन में यहोवा के भवन की मरम्मत करने की इच्छा उपजी।

5 तब उसने याजकों और लेवियों को इकट्ठा करके कहा, “प्रतिवर्ष यहूदा के नगरों में जा जाकर सब इस्राएलियों से रुपये लिया करो जिससे तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो; देखो इस काम में फुर्ती करो।” तो भी लेवियों ने कुछ फुर्ती न की।

6 तब राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलवाकर पूछा, “क्या कारण है कि तूने लेवियों को दृढ़ आज्ञा नहीं दी कि वे यहूदा और यरूशलेम से उस चन्दे के रुपये ले आएँ जिसका नियम यहोवा के दास मूसा और इस्राएल की मण्डली ने साक्षीपत्र के तम्बू के निमित्त चलाया था।”

7 उस दुष्ट स्त्री अतल्याह के बेटों ने तो परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया था, और यहोवा के भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुएँ बाल देवताओं के लिये प्रयोग की थीं।

8 राजा ने एक सन्दूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रखा गया।

9 तब यहूदा और यरूशलेम में यह प्रचार किया गया कि जिस चन्दे का नियम परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में इस्राएल में चलाया था, उसके रुपये यहोवा के निमित्त ले आओ।

10 तो सब हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित हो रुपये लाकर जब तक चन्दा पूरा न हुआ तब तक सन्दूक में डालते गए।

11 जब जब वह सन्दूक लेवियों के हाथ से राजा के प्रधानों के पास पहुँचाया जाता और यह जान पड़ता था कि उसमें रुपये बहुत हैं, तब-तब राजा के प्रधान और महायाजक के अधिकारी आकर सन्दूक को खाली करते और तब उसे फिर उसके स्थान पर रख देते थे। उन्होंने प्रतिदिन ऐसा किया और बहुत रुपये इकट्ठा किए।

12 तब राजा और यहोयादा ने वह रुपये यहोवा के भवन में काम करनेवालों को दे दिए, और उन्होंने राजमिस्त्रियों और बढ़इयों को यहोवा के भवन के सुधारने के लिये, और लोहारों और ठठेरों को यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिये मजदूरी पर रखा।

13 कारीगर काम करते गए और काम पूरा होता गया, और उन्होंने परमेश्वर का भवन जैसा का तैसा बनाकर दृढ़ कर दिया।

14 जब उन्होंने वह काम पूरा कर लिया, तब वे शेष रुपये राजा और यहोयादा के पास ले गए, और उनसे यहोवा के भवन के लिये पात्र बनाए गए, अर्थात् सेवा टहल करने और होमबलि चढ़ाने के पात्र और धूपदान आदि सोने चाँदी के पात्र। जब तक यहोयादा जीवित रहा, तब तक यहोवा के भवन में होमबलि नित्य चढ़ाए जाते थे।

15

परन्तु यहोयादा बूढ़ा हो गया और दीर्घायु होकर मर गया। जब वह मर गया तब एक सौ तीस वर्ष का था।

16 और <sup>†</sup>, क्योंकि उसने इस्राएल में और परमेश्वर के और उसके भवन के विषय में भला किया था।

17 यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के हाकिमों ने राजा के पास जाकर उसे दण्डवत् की, और राजा ने उनकी मानी।

18 तब वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरों और मूरतों की उपासना करने लगे। अतः उनके ऐसे दोषी होने के कारण परमेश्वर का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का।

19 तो भी उसने उनके पास नबी भेजे कि उनको यहोवा के पास फेर लाएँ; और इन्होंने उन्हें चिता दिया, परन्तु उन्होंने कान न लगाया।

20 तब परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह में समा गया, और <sup>†</sup>, “परमेश्वर

\* 24:16 यह अद्वैत सम्मान एक सीमा तक यहोयादा के धार्मिक चरित्र के कारण था। † 24:20 जकर्याह, जो प्रधान पुरोहित था ऊँचे स्थान पर सम्भवतः भीतरी प्रांगण की सीढ़ियों पर जो बाहरी प्रांगण से ऊँची थी, खड़ा हुआ। लोग बाहरी प्रांगण में थे।

यह कहता है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों टालते हो? ऐसा करके तुम्हारा भला नहीं हो सकता। देखो, तुम ने तो यहोवा को त्याग दिया है, इस कारण उसने भी तुम को त्याग दिया।”

21 तब लोगों ने उसके विरुद्ध द्रोह की बात करके, राजा की आज्ञा से यहोवा के भवन के आँगन में उस पर पथराव किया।

22 इस प्रकार राजा योआश ने वह प्रीति भूलकर जो यहोयादा ने उससे की थी, उसके पुत्र को घात किया। मरते समय उसने कहा, “यहोवा इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले।”

22:22-23

23 नये वर्ष के लगते अरामियों की सेना ने उस पर चढ़ाई की, और यहूदा और यरूशलेम आकर प्रजा में से सब हाकिमों को नाश किया और उनका सब धन लूटकर दमिश्क के राजा के पास भेजा।

24 अरामियों की सेना थोड़े ही सैनिकों के साथ तो आई, परन्तु यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना उनके हाथ कर दी, क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर को त्याग दिया था। इस प्रकार 24:24-25 25:1-2

25:1-2

25 जब वे उसे बहुत ही घायल अवस्था में छोड़ गए, तब उसके कर्मचारियों ने यहोयादा याजक के पुत्रों के खून के कारण उससे द्रोह की बात करके, उसे उसके बिछौने पर ही ऐसा मारा, कि वह मर गया; और उन्होंने उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं।

26 जिन्होंने उससे राजद्रोह की गोष्ठी की, वे ये थे, अर्थात् अम्मोनिन शिमात का पुत्र जाबाद, और शिम्रित मोआबिन का पुत्र यहोजाबाद।

27 उसके बेटों के विषय और उसके विरुद्ध, जो बड़े दण्ड की नबूवत हुई, उसके और परमेश्वर के भवन के बनने के विषय ये सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। तब उसका पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर राजा हुआ।

## 25

25:1-2

1 जब अमस्याह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक राज्य

करता रहा। और उसकी माता का नाम यहोअदान था, जो यरूशलेम की थी।

2 उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, परन्तु खरे मन से न किया।

3 जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया, तब उसने अपने उन कर्मचारियों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मार डाला था।

4 परन्तु उसने उनके बच्चों को न मारा क्योंकि उसने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है, “पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।”

25:5-6

5 तब अमस्याह ने यहूदा को वरन् सारे यहूदियों और बिन्यामीनियों को इकट्ठा करके उनको, पितरों के घरानों के अनुसार सहस्रपतियों और शतपतियों के अधिकार में ठहराया; और उनमें से जितनों की अवस्था बीस वर्ष की अथवा उससे अधिक थी, उनकी गिनती करके तीन लाख भाला चलानेवाले और ढाल उठानेवाले बड़े-बड़े योद्धा पाए।

6 फिर उसने एक लाख इस्राएली शूरवीरों को भी एक सौ किककार चाँदी देकर बुलवाया।

7 परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उसके पास आकर कहा, “हे राजा, इस्राएल की सेना तेरे साथ जाने न पाए; क्योंकि यहोवा इस्राएल अर्थात् एप्रेम की समस्त सन्तान के संग नहीं रहता।

8 यदि तू जाकर पुरुषार्थ करे; और युद्ध के लिये हियाव बाँधे, तो भी परमेश्वर तुझे शत्रुओं के सामने गिराएगा, क्योंकि सहायता करने और गिरा देने दोनों में परमेश्वर सामर्थी है।”

9 अमस्याह ने परमेश्वर के भक्त से पूछा, “फिर जो सौ किककार चाँदी मैं इस्राएली दल को दे चुका हूँ, उसके विषय क्या करूँ?” परमेश्वर के भक्त ने उत्तर दिया, “यहोवा तुझे इससे भी बहुत अधिक दे सकता है।”

10 25:10-11 25:12-13 25:14-15 25:16-17 25:18-19 25:20-21 25:22-23 25:24-25 25:26-27 25:28-29 25:30-31 25:32-33 25:34-35 25:36-37 25:38-39 25:40-41 25:42-43 25:44-45 25:46-47 25:48-49 25:50-51 25:52-53 25:54-55 25:56-57 25:58-59 25:60-61 25:62-63 25:64-65 25:66-67 25:68-69 25:70-71 25:72-73 25:74-75 25:76-77 25:78-79 25:80-81 25:82-83 25:84-85 25:86-87 25:88-89 25:90-91 25:92-93 25:94-95 25:96-97 25:98-99 25:100-101 25:102-103 25:104-105 25:106-107 25:108-109 25:110-111 25:112-113 25:114-115 25:116-117 25:118-119 25:120-121 25:122-123 25:124-125 25:126-127 25:128-129 25:130-131 25:132-133 25:134-135 25:136-137 25:138-139 25:140-141 25:142-143 25:144-145 25:146-147 25:148-149 25:150-151 25:152-153 25:154-155 25:156-157 25:158-159 25:160-161 25:162-163 25:164-165 25:166-167 25:168-169 25:170-171 25:172-173 25:174-175 25:176-177 25:178-179 25:180-181 25:182-183 25:184-185 25:186-187 25:188-189 25:190-191 25:192-193 25:194-195 25:196-197 25:198-199 25:200-201 25:202-203 25:204-205 25:206-207 25:208-209 25:210-211 25:212-213 25:214-215 25:216-217 25:218-219 25:220-221 25:222-223 25:224-225 25:226-227 25:228-229 25:230-231 25:232-233 25:234-235 25:236-237 25:238-239 25:240-241 25:242-243 25:244-245 25:246-247 25:248-249 25:250-251 25:252-253 25:254-255 25:256-257 25:258-259 25:260-261 25:262-263 25:264-265 25:266-267 25:268-269 25:270-271 25:272-273 25:274-275 25:276-277 25:278-279 25:280-281 25:282-283 25:284-285 25:286-287 25:288-289 25:290-291 25:292-293 25:294-295 25:296-297 25:298-299 25:300-301 25:302-303 25:304-305 25:306-307 25:308-309 25:310-311 25:312-313 25:314-315 25:316-317 25:318-319 25:320-321 25:322-323 25:324-325 25:326-327 25:328-329 25:330-331 25:332-333 25:334-335 25:336-337 25:338-339 25:340-341 25:342-343 25:344-345 25:346-347 25:348-349 25:350-351 25:352-353 25:354-355 25:356-357 25:358-359 25:360-361 25:362-363 25:364-365 25:366-367 25:368-369 25:370-371 25:372-373 25:374-375 25:376-377 25:378-379 25:380-381 25:382-383 25:384-385 25:386-387 25:388-389 25:390-391 25:392-393 25:394-395 25:396-397 25:398-399 25:400-401 25:402-403 25:404-405 25:406-407 25:408-409 25:410-411 25:412-413 25:414-415 25:416-417 25:418-419 25:420-421 25:422-423 25:424-425 25:426-427 25:428-429 25:430-431 25:432-433 25:434-435 25:436-437 25:438-439 25:440-441 25:442-443 25:444-445 25:446-447 25:448-449 25:450-451 25:452-453 25:454-455 25:456-457 25:458-459 25:460-461 25:462-463 25:464-465 25:466-467 25:468-469 25:470-471 25:472-473 25:474-475 25:476-477 25:478-479 25:480-481 25:482-483 25:484-485 25:486-487 25:488-489 25:490-491 25:492-493 25:494-495 25:496-497 25:498-499 25:500-501 25:502-503 25:504-505 25:506-507 25:508-509 25:510-511 25:512-513 25:514-515 25:516-517 25:518-519 25:520-521 25:522-523 25:524-525 25:526-527 25:528-529 25:530-531 25:532-533 25:534-535 25:536-537 25:538-539 25:540-541 25:542-543 25:544-545 25:546-547 25:548-549 25:550-551 25:552-553 25:554-555 25:556-557 25:558-559 25:560-561 25:562-563 25:564-565 25:566-567 25:568-569 25:570-571 25:572-573 25:574-575 25:576-577 25:578-579 25:580-581 25:582-583 25:584-585 25:586-587 25:588-589 25:590-591 25:592-593 25:594-595 25:596-597 25:598-599 25:600-601 25:602-603 25:604-605 25:606-607 25:608-609 25:610-611 25:612-613 25:614-615 25:616-617 25:618-619 25:620-621 25:622-623 25:624-625 25:626-627 25:628-629 25:630-631 25:632-633 25:634-635 25:636-637 25:638-639 25:640-641 25:642-643 25:644-645 25:646-647 25:648-649 25:650-651 25:652-653 25:654-655 25:656-657 25:658-659 25:660-661 25:662-663 25:664-665 25:666-667 25:668-669 25:670-671 25:672-673 25:674-675 25:676-677 25:678-679 25:680-681 25:682-683 25:684-685 25:686-687 25:688-689 25:690-691 25:692-693 25:694-695 25:696-697 25:698-699 25:700-701 25:702-703 25:704-705 25:706-707 25:708-709 25:710-711 25:712-713 25:714-715 25:716-717 25:718-719 25:720-721 25:722-723 25:724-725 25:726-727 25:728-729 25:730-731 25:732-733 25:734-735 25:736-737 25:738-739 25:740-741 25:742-743 25:744-745 25:746-747 25:748-749 25:750-751 25:752-753 25:754-755 25:756-757 25:758-759 25:760-761 25:762-763 25:764-765 25:766-767 25:768-769 25:770-771 25:772-773 25:774-775 25:776-777 25:778-779 25:780-781 25:782-783 25:784-785 25:786-787 25:788-789 25:790-791 25:792-793 25:794-795 25:796-797 25:798-799 25:800-801 25:802-803 25:804-805 25:806-807 25:808-809 25:810-811 25:812-813 25:814-815 25:816-817 25:818-819 25:820-821 25:822-823 25:824-825 25:826-827 25:828-829 25:830-831 25:832-833 25:834-835 25:836-837 25:838-839 25:840-841 25:842-843 25:844-845 25:846-847 25:848-849 25:850-851 25:852-853 25:854-855 25:856-857 25:858-859 25:860-861 25:862-863 25:864-865 25:866-867 25:868-869 25:870-871 25:872-873 25:874-875 25:876-877 25:878-879 25:880-881 25:882-883 25:884-885 25:886-887 25:888-889 25:890-891 25:892-893 25:894-895 25:896-897 25:898-899 25:900-901 25:902-903 25:904-905 25:906-907 25:908-909 25:910-911 25:912-913 25:914-915 25:916-917 25:918-919 25:920-921 25:922-923 25:924-925 25:926-927 25:928-929 25:930-931 25:932-933 25:934-935 25:936-937 25:938-939 25:940-941 25:942-943 25:944-945 25:946-947 25:948-949 25:950-951 25:952-953 25:954-955 25:956-957 25:958-959 25:960-961 25:962-963 25:964-965 25:966-967 25:968-969 25:970-971 25:972-973 25:974-975 25:976-977 25:978-979 25:980-981 25:982-983 25:984-985 25:986-987 25:988-989 25:990-991 25:992-993 25:994-995 25:996-997 25:998-999 26:1-2 26:3-4 26:5-6 26:7-8 26:9-10 26:11-12 26:13-14 26:15-16 26:17-18 26:19-20 26:21-22 26:23-24 26:25-26 26:27-28 26:29-30 26:31-32 26:33-34 26:35-36 26:37-38 26:39-40 26:41-42 26:43-44 26:45-46 26:47-48 26:49-50 26:51-52 26:53-54 26:55-56 26:57-58 26:59-60 26:61-62 26:63-64 26:65-66 26:67-68 26:69-70 26:71-72 26:73-74 26:75-76 26:77-78 26:79-80 26:81-82 26:83-84 26:85-86 26:87-88 26:89-90 26:91-92 26:93-94 26:95-96 26:97-98 26:99-100 26:101-102 26:103-104 26:105-106 26:107-108 26:109-110 26:111-112 26:113-114 26:115-116 26:117-118 26:119-120 26:121-122 26:123-124 26:125-126 26:127-128 26:129-130 26:131-132 26:133-134 26:135-136 26:137-138 26:139-140 26:141-142 26:143-144 26:145-146 26:147-148 26:149-150 26:151-152 26:153-154 26:155-156 26:157-158 26:159-160 26:161-162 26:163-164 26:165-166 26:167-168 26:169-170 26:171-172 26:173-174 26:175-176 26:177-178 26:179-180 26:181-182 26:183-184 26:185-186 26:187-188 26:189-190 26:191-192 26:193-194 26:195-196 26:197-198 26:199-200 26:201-202 26:203-204 26:205-206 26:207-208 26:209-210 26:211-212 26:213-214 26:215-216 26:217-218 26:219-220 26:221-222 26:223-224 26:225-226 26:227-228 26:229-230 26:231-232 26:233-234 26:235-236 26:237-238 26:239-240 26:241-242 26:243-244 26:245-246 26:247-248 26:249-250 26:251-252 26:253-254 26:255-256 26:257-258 26:259-260 26:261-262 26:263-264 26:265-266 26:267-268 26:269-270 26:271-272 26:273-274 26:275-276 26:277-278 26:279-280 26:281-282 26:283-284 26:285-286 26:287-288 26:289-290 26:291-292 26:293-294 26:295-296 26:297-298 26:299-300 26:301-302 26:303-304 26:305-306 26:307-308 26:309-310 26:311-312 26:313-314 26:315-316 26:317-318 26:319-320 26:321-322 26:323-324 26:325-326 26:327-328 26:329-330 26:331-332 26:333-334 26:335-336 26:337-338 26:339-340 26:341-342 26:343-344 26:345-346 26:347-348 26:349-350 26:351-352 26:353-354 26:355-356 26:357-358 26:359-360 26:361-362 26:363-364 26:365-366 26:367-368 26:369-370 26:371-372 26:373-374 26:375-376 26:377-378 26:379-380 26:381-382 26:383-384 26:385-386 26:387-388 26:389-390 26:391-392 26:393-394 26:395-396 26:397-398 26:399-400 26:401-402 26:403-404 26:405-406 26:407-408 26:409-410 26:411-412 26:413-414 26:415-416 26:417-418 26:419-420 26:421-422 26:423-424 26:425-426 26:427-428 26:429-430 26:431-432 26:433-434 26:435-436 26:437-438 26:439-440 26:441-442 26:443-444 26:445-446 26:447-448 26:449-450 26:451-452 26:453-454 26:455-456 26:457-458 26:459-460 26:461-462 26:463-464 26:465-466 26:467-468 26:469-470 26:471-472 26:473-474 26:475-476 26:477-478 26:479-480 26:481-482 26:483-484 26:485-486 26:487-488 26:489-490 26:491-492 26:493-494 26:495-496 26:497-498 26:499-500 26:501-502 26:503-504 26:505-506 26:507-508 26:509-510 26:511-512 26:513-514 26:515-516 26:517-518 26:519-520 26:521-522 26:523-524 26:525-526 26:527-528 26:529-530 26:531-532 26:533-534 26:535-536 26:537-538 26:539-540 26:541-542 26:543-544 26:545-546 26:547-548 26:549-550 26:551-552 26:553-554 26:555-556 26:557-558 26:559-560 26:561-562 26:563-564 26:565-566 26:567-568 26:569-570 26:571-572 26:573-574 26:575-576 26:577-578 26:579-580 26:581-582 26:583-584 26:585-586 26:587-588 26:589-590 26:591-592 26:593-594 26:595-596 26:597-598 26:599-600 26:601-602 26:603-604 26:605-606 26:607-608 26:609-610 26:611-612 26:613-614 26:615-616 26:617-618 26:619-620 26:621-622 26:623-624 26:625-626 26:627-628 26:629-630 26:631-632 26:633-634 26:635-636 26:637-638 26:639-640 26:641-642 26:643-644 26:645-646 26:647-648 26:649-650 26:651-652 26:653-654 26:655-656 26:657-658 26:659-660 26:661-662 26:663-664 26:665-666 26:667-668 26:669-670 26:671-672 26:673-674 26:675-676 26:677-678 26:679-680 26:681-682 26:683-684 26:685-686 26:687-688 26:689-690 26:691-692 26:693-694 26:695-696 26:697-698 26:699-700 26:701-702 26:703-704 26:705-706 26:707-708 26:709-710 26:711-712 26:713-714 26:715-716 26:717-718 26:719-720 26:721-722 26:723-724 26:725-726 26:727-728 26:729-730 26:731-732 26:733-734 26:735-736 26:737-738 26:739-740 26:741-742 26:743-744 26:745-746 26:747-748 26:749-750 26:751-752 26:753-754 26:755-756 26:757-758 26:759-760 26:761-762 26:763-764 26:765-766 26:767-768 26:769-770 26:771-772 26:773-774 26:775-776 26:777-778 26:779-780 26:781-782 26:783-784 26:785-786 26:787-788 26:789-790 26:791-792 26:793-794 26:795-796 26:797-798 26:799-800 26:801-802 26:803-804 26:805-806 26:807-808 26:809-810 26:811-812 26:813-814 26:815-816 26:817-818 26:819-820 26:821-822 26:823-824 26:825-826 26:827-828 26:829-830 26:831-832 26:833-834 26:835-836 26:837-838 26:839-840 26:841-842 26:843-844 26:845-846 26:847-848 26:849-850 26:851-852 26:853-854 26:855-856 26:857-858 26:859-860 26:861-862 26:863-864 26:865-866 26:867-868 26:869-870 26:871-872 26:873-874 26:875-876 26:877-878 26:879-880 26:881-882 26:883-884 26:885-886 26:887-888 26:889-890 26:891-892 26

11 परन्तु अमस्याह हियाव बाँधकर अपने लोगों को ले चला, और नमक की तराई में जाकर, दस हजार सेईरियों को मार डाला।

12 यहूदियों ने दस हजार को बन्दी बनाकर चट्टान की चोटी पर ले गये, और चट्टान की चोटी पर से गिरा दिया, और वे सब चूर-चूर हो गए।

13 परन्तु उस दल के पुरुष जिसे अमस्याह ने लौटा दिया कि वे उसके साथ युद्ध करने को न जाएँ, सामरिया से बेथोरोन तक यहूदा के सब नगरों पर टूट पड़े, और उनके तीन हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट ले ली।

14 जब अमस्याह एदोमियों का संहार करके लौट आया, तब ~~उन्होंने~~ ~~अपने~~ ~~देवता~~ ~~करके~~ ~~खड़ा~~ ~~किया~~, और उन्हीं के सामने दण्डवत् करने, और उन्हीं के लिये धूप जलाने लगा।

15 तब यहोवा का क्रोध अमस्याह पर भड़क उठा और उसने उसके पास एक नबी भेजा जिसने उससे कहा, “जो देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा न सके, उनकी खोज में तू क्यों लगा है?”

16 वह उससे कह ही रहा था कि उसने उससे पूछा, “क्या हमने तुझे राजमंत्री ठहरा दिया है? चुप रह! क्या तू मरना चाहता है?” तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया, “मुझे मालूम है कि परमेश्वर ने तेरा नाश करना ठान लिया है, क्योंकि तूने ऐसा किया है और मेरी सम्मति नहीं मानी।”

~~उन्होंने~~ ~~अपने~~ ~~देवता~~ ~~करके~~ ~~खड़ा~~ ~~किया~~

17 तब यहूदा के राजा अमस्याह ने सम्मति लेकर, इस्राएल के राजा योआश के पास, जो यहू का पोता और यहोआहाज का पुत्र था, यह कहला भेजा, “आ हम एक दूसरे का सामना करें।”

18 इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास यह कहला भेजा, “लबानोन पर की एक झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला भेजा, ‘अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे;’ इतने में लबानोन का कोई वन पशु पास से चला गया और उस झड़बेरी को रौंद डाला।

19 तू कहता है, कि मैंने एदोमियों को जीत लिया है; इस कारण तू फूल उठा और डींग मारता है! अपने घर में रह जा; तू अपनी हानि के लिये यहाँ क्यों हाथ डालता है, इससे तू क्या, वरन् यहूदा भी नीचा खाएगा।”

† 25:14 ~~उन्होंने~~ ~~अपने~~ ~~देवता~~ ~~करके~~ ~~खड़ा~~ ~~किया~~: उस युग में अन्यजातियों में पराजित देशों की मूर्तियों को उपहार स्वरूप ले आना एक आम प्रचलन था।

20 परन्तु अमस्याह ने न माना। यह तो परमेश्वर की ओर से हुआ, कि वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ कर दे, क्योंकि वे एदोम के देवताओं की खोज में लग गए थे।

21 तब इस्राएल के राजा योआश ने चढ़ाई की और उसने और यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का सामना किया।

22 यहूदा इस्राएल से हार गया, और हर एक अपने-अपने डेरे को भागा।

23 तब इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को, जो यहोआहाज का पोता और योआश का पुत्र था, बेतशेमेश में पकड़ा और यरूशलेम को ले गया और यरूशलेम की शहरपनाह को, एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक तक, चार सौ हाथ गिरा दिया।

24 और जितना सोना चाँदी और जितने पात्र परमेश्वर के भवन में ओबेदेदोम के पास मिले, और राजभवन में जितना खजाना था, उस सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह सामरिया को लौट गया।

~~उन्होंने~~ ~~अपने~~ ~~देवता~~ ~~करके~~ ~~खड़ा~~ ~~किया~~

25 यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा योआश के मरने के बाद योआश का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा।

26 आदि से अन्त तक अमस्याह के और काम, क्या यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

27 जिस समय अमस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़कर फिर गया था उस समय से यरूशलेम में उसके विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी होने लगी, और वह लाकीश को भाग गया। अतः दूतों ने लाकीश तक उसका पीछा करके, उसको वहीं मार डाला।

28 तब वह घोड़ों पर रखकर पहुँचाया गया और उसे उसके पुरखाओं के बीच यहूदा के नगर में मिट्टी दी गई।

## 26

~~उन्होंने~~ ~~अपने~~ ~~देवता~~ ~~करके~~ ~~खड़ा~~ ~~किया~~

1 तब सब यहूदी प्रजा ने उज्जियाह को लेकर जो सोलह वर्ष का था, उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा बनाया।

2 जब राजा अमस्याह मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला तब उज्जियाह ने एलोत नगर को दृढ़ करके यहूदा में फिर मिला लिया।

3 जब उज्जियाह राज्य करने लगा, तब वह सोलह वर्ष का था। और यरूशलेम में बावन वर्ष तक राज्य



करता रहा, उसकी माता का नाम यकोल्याह था, जो यरूशलेम की थी।

4 जैसे उसका पिता अमस्याह, किया करता था वैसा ही उसने भी किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था।

5 जकर्याह के दिनों में जो परमेश्वर के दर्शन के विषय समझ रखता था, वह परमेश्वर की खोज में लगा रहता था; और जब तक वह यहोवा की खोज में लगा रहा, तब तक परमेश्वर ने उसको सफलता दी।

¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶

6 तब उसने जाकर पलिशितियों से युद्ध किया, और गत, यब्ने और अशदोद की शहरपनाहें गिरा दीं, और अशदोद के आस-पास और पलिशितियों के बीच में नगर बसाए।

7 परमेश्वर ने पलिशितियों और गूर्बालवासी, अरबियों और मूनियों के विरुद्ध उसकी सहायता की।

8 अम्मोनी उज्जियाह को भेंट देने लगे, वरन् उसकी कीर्ति मिस्र की सीमा तक भी फैल गई, क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी हो गया था।

9 फिर उज्जियाह ने यरूशलेम में कोने के फाटक और तराई के फाटक और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मत बनवाकर दृढ़ किए।

10 उसके बहुत जानवर थे इसलिए ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶\* और बहुत से हौद खुदवाए, और पहाड़ों पर और कर्मेल् में उसके किसान और दास की बारियों के माली थे, क्योंकि वह खेती किसानी करनेवाला था।

11 फिर उज्जियाह के योद्धाओं की एक सेना थी जिनकी गिनती यीएल मुंशी और मासेयाह सरदार, हनन्याह नामक राजा के एक हाकिम की आज्ञा से करते थे, और उसके अनुसार वह दल बाँधकर लड़ने को जाती थी।

12 पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुष जो शूरवीर थे, उनकी पूरी गिनती दो हजार छः सौ थी।

13 उनके अधिकार में तीन लाख साठे सात हजार की एक बड़ी सेना थी, जो शत्रुओं के विरुद्ध राजा की सहायता करने को बड़े बल से युद्ध करनेवाले थे।

14 इनके लिये अर्थात् पूरी सेना के लिये उज्जियाह ने ढालें, भाले, टोप, झिलम, धनुष और ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶\* तैयार किए।

\* 26:10 ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ... ¶¶¶¶¶: भेड़ों के झुण्ड और चरवाहों के लिए जंगल के चारागाहों में जो पवित्र देश की सीमाओं पर थे, उसने गुम्मत बनवाए, विशेष करके दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में † 26:14 ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶: अशूर, मिस्री, फारसी, यूनानी, रोमी तथा अन्य देश युद्ध में गोफन का इस्तेमाल करते थे। ‡ 26:23 ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶: स्थान तो वही था परन्तु कब्र अलग थी। विधान के अनुसार कोढ़ी को समाज से अलग रहना होता था- लैव्यव्यवस्था 3:46 अतः यहूदियों के विधान में कोढ़ी मनुष्य मरण उपरान्त भी अलग रहे।

15 फिर उसने यरूशलेम में गुम्मतों और कंगूरों पर रखने को चतुर पुरुषों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाए जिनके द्वारा तीर और बड़े-बड़े पत्थर फेंके जाते थे। उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई, क्योंकि उसे अदभुत सहायता यहाँ तक मिली कि वह सामर्थी हो गया।

¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶

16 परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब उसका मन फूल उठा; और उसने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया, अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया।

17 पर अजर्याह याजक उसके बाद भीतर गया, और उसके संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो वीर थे गए।

18 उन्होंने उज्जियाह राजा का सामना करके उससे कहा, “हे उज्जियाह यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा काम नहीं, हारून की सन्तान अर्थात् उन याजकों ही का काम है, जो धूप जलाने को पवित्र किए गए हैं। तू पवित्रस्थान से निकल जा; तूने विश्वासघात किया है, यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का कारण न होगा।”

19 तब उज्जियाह धूप जलाने को धूपदान हाथ में लिये हुए झुंझला उठा। वह याजकों पर झुंझला रहा था, कि याजकों के देखते-देखते यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास ही उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ।

20 अजर्याह महायाजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि की, और क्या देखा कि उसके माथे पर कोढ़ निकला है! तब उन्होंने उसको वहाँ से झटपट निकाल दिया, वरन् यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है, उसने आप बाहर जाने को उतावली की।

21 उज्जियाह राजा मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता था, वह यहोवा के भवन में जाने न पाता था। और उसका पुत्र योताम राजघराने के काम पर नियुक्त किया गया और वह लोगों का न्याय भी करता था।

22 आदि से अन्त तक उज्जियाह के और कामों का वर्णन तो आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने लिखा है।

23 अन्त में उज्जियाह मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और उसको उसके पुरखाओं के निकट ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶: क्योंकि उन्होंने कहा, “वह कोढ़ी है।” उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।





और उसको तज करके यहोवा के निवास से मुँह फेरकर उसको पीठ दिखाई थी।

7 फिर उन्होंने ओसारे के द्वार बन्द किए, और दीपकों को बुझा दिया था; और पवित्रस्थान में इस्राएल के परमेश्वर के लिये न तो धूप जलाया और न होमबलि चढ़ाया था।

8 इसलिए यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का है, और उसने ऐसा किया, कि वे मारे-मारे फिरें और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो जाएँ, जैसे कि तुम अपनी आँखों से देख रहे हो।

9 देखो, इस कारण हमारे बाप तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे-बेटियाँ और स्त्रियाँ बँधुआई में चली गई हैं।

10 अब मेरे मन ने यह निर्णय किया है कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से वाचा बाँधू, इसलिए कि उसका भड़का हुआ क्रोध हम पर से दूर हो जाए।

11 हे मेरे बेटों, ढिलाई न करो; देखो, यहोवा ने अपने सम्मुख खड़े रहने, और अपनी सेवा टहल करने, और अपने टहलुएँ और धूप जलानेवाले का काम करने के लिये तुम्हीं को चुन लिया है।”

12 तब लेवीय उठ खड़े हुए: अर्थात् कहातियों में से अमासै का पुत्र महत, और अजर्याह का पुत्र योएल, और मरारियों में से अब्दी का पुत्र कीश, और यहल्लेलेल का पुत्र अजर्याह, और गेशोनियों में से जिम्मा का पुत्र योआह, और योआह का पुत्र एदेन।

13 और एलीसापान की सन्तान में से शिमी, और यूएल और आसाप की सन्तान में से जकर्याह और मत्तन्याह।

14 और हेमान की सन्तान में से यहूएल और शिमी, और यदूतून की सन्तान में से शमायाह और उज्जीएल।

15 इन्होंने अपने भाइयों को इकट्ठा किया और अपने-अपने को पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने यहोवा से वचन पाकर दी थी, यहोवा का भवन शुद्ध करने के लिये भीतर गए।

16 तब याजक यहोवा के भवन के भीतरी भाग को शुद्ध करने के लिये उसमें जाकर यहोवा के मन्दिर में जितनी अशुद्ध वस्तुएँ मिलीं उन सब को निकालकर यहोवा के भवन के आंगन में ले गए, और लेवियों ने उन्हें उठाकर बाहर किद्रोन के नाले में पहुँचा दिया।

17 पहले महीने के पहले दिन को उन्होंने पवित्र करने का काम आरम्भ किया, और उसी महीने के आठवें दिन को वे यहोवा के ओसारे तक आ गए। इस प्रकार उन्होंने

यहोवा के भवन को आठ दिन में पवित्र किया, और पहले महीने के सोलहवें दिन को उन्होंने उस काम को पूरा किया।

18 तब उन्होंने राजा हिजकिय्याह के पास भीतर जाकर कहा, “हम यहोवा के पूरे भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी, और भेंट की रोटी की मेज को भी शुद्ध कर चुके।

19 जितने पात्र राजा आहाज ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिए थे, उनको भी हमने ठीक करके पवित्र किया है; और वे यहोवा की वेदी के सामने रखे हुए हैं।”

20 तब राजा हिजकिय्याह सवेरे उठकर नगर के हाकिमों को इकट्ठा करके, यहोवा के भवन को गया।

21 तब वे राज्य और पवित्रस्थान और यहूदा के निमित्त सात बछड़े, सात मेढे, सात भेड़ के बच्चे, और पापबलि के लिये सात बकरे ले आए, और उसने हारून की सन्तान के लेवियों को आज्ञा दी कि इन सब को 22 तब उन्होंने बछड़े बलि किए, और याजकों ने उनका लहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया; तब उन्होंने मेढे बलि किए, और उनका लहू भी वेदी पर छिड़क दिया, और भेड़ के बच्चे बलि किए, और उनका भी लहू वेदी पर छिड़क दिया।

23 तब वे पापबलि के बकरों को राजा और मण्डली के समीप ले आए और उन पर अपने-अपने हाथ रखे।

24 तब याजकों ने उनको बलि करके, उनका लहू वेदी पर छिड़ककर पापबलि किया, जिससे सारे इस्राएल के लिये प्रायश्चित्त किया जाए। क्योंकि राजा ने सारे इस्राएल के लिये होमबलि और पापबलि किए जाने की आज्ञा दी थी।

25 फिर उसने दाऊद और राजा के दर्शी गाद, और नातान नबी की आज्ञा के अनुसार जो यहोवा की ओर से उसके नबियों के द्वारा आई थी, झाँझ, सारंगियाँ और वीणाएँ लिए हुए लेवियों को यहोवा के भवन में खड़ा किया।

26 तब लेवीय दाऊद के चलाए बाजे लिए हुए, और याजक तुरहियाँ लिए हुए खड़े हुए।

27 तब हिजकिय्याह ने वेदी पर होमबलि चढ़ाने की आज्ञा दी, और जब होमबलि चढ़ाने लगी, तब यहोवा का गीत आरम्भ हुआ, और तुरहियाँ और इस्राएल के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे;

† 29:21 29:22 29:23 29:24 29:25 29:26 29:27 29:28 29:29 29:30 29:31 29:32 29:33 29:34 29:35 29:36 29:37 29:38 29:39 29:40 29:41 29:42 29:43 29:44 29:45 29:46 29:47 29:48 29:49 29:50 29:51 29:52 29:53 29:54 29:55 29:56 29:57 29:58 29:59 29:60 29:61 29:62 29:63 29:64 29:65 29:66 29:67 29:68 29:69 29:70 29:71 29:72 29:73 29:74 29:75 29:76 29:77 29:78 29:79 29:80 29:81 29:82 29:83 29:84 29:85 29:86 29:87 29:88 29:89 29:90 29:91 29:92 29:93 29:94 29:95 29:96 29:97 29:98 29:99 29:100 29:101 29:102 29:103 29:104 29:105 29:106 29:107 29:108 29:109 29:110 29:111 29:112 29:113 29:114 29:115 29:116 29:117 29:118 29:119 29:120 29:121 29:122 29:123 29:124 29:125 29:126 29:127 29:128 29:129 29:130 29:131 29:132 29:133 29:134 29:135 29:136 29:137 29:138 29:139 29:140 29:141 29:142 29:143 29:144 29:145 29:146 29:147 29:148 29:149 29:150 29:151 29:152 29:153 29:154 29:155 29:156 29:157 29:158 29:159 29:160 29:161 29:162 29:163 29:164 29:165 29:166 29:167 29:168 29:169 29:170 29:171 29:172 29:173 29:174 29:175 29:176 29:177 29:178 29:179 29:180 29:181 29:182 29:183 29:184 29:185 29:186 29:187 29:188 29:189 29:190 29:191 29:192 29:193 29:194 29:195 29:196 29:197 29:198 29:199 29:200 29:201 29:202 29:203 29:204 29:205 29:206 29:207 29:208 29:209 29:210 29:211 29:212 29:213 29:214 29:215 29:216 29:217 29:218 29:219 29:220 29:221 29:222 29:223 29:224 29:225 29:226 29:227 29:228 29:229 29:230 29:231 29:232 29:233 29:234 29:235 29:236 29:237 29:238 29:239 29:240 29:241 29:242 29:243 29:244 29:245 29:246 29:247 29:248 29:249 29:250 29:251 29:252 29:253 29:254 29:255 29:256 29:257 29:258 29:259 29:260 29:261 29:262 29:263 29:264 29:265 29:266 29:267 29:268 29:269 29:270 29:271 29:272 29:273 29:274 29:275 29:276 29:277 29:278 29:279 29:280 29:281 29:282 29:283 29:284 29:285 29:286 29:287 29:288 29:289 29:290 29:291 29:292 29:293 29:294 29:295 29:296 29:297 29:298 29:299 29:300 29:301 29:302 29:303 29:304 29:305 29:306 29:307 29:308 29:309 29:310 29:311 29:312 29:313 29:314 29:315 29:316 29:317 29:318 29:319 29:320 29:321 29:322 29:323 29:324 29:325 29:326 29:327 29:328 29:329 29:330 29:331 29:332 29:333 29:334 29:335 29:336 29:337 29:338 29:339 29:340 29:341 29:342 29:343 29:344 29:345 29:346 29:347 29:348 29:349 29:350 29:351 29:352 29:353 29:354 29:355 29:356 29:357 29:358 29:359 29:360 29:361 29:362 29:363 29:364 29:365 29:366 29:367 29:368 29:369 29:370 29:371 29:372 29:373 29:374 29:375 29:376 29:377 29:378 29:379 29:380 29:381 29:382 29:383 29:384 29:385 29:386 29:387 29:388 29:389 29:390 29:391 29:392 29:393 29:394 29:395 29:396 29:397 29:398 29:399 29:400 29:401 29:402 29:403 29:404 29:405 29:406 29:407 29:408 29:409 29:410 29:411 29:412 29:413 29:414 29:415 29:416 29:417 29:418 29:419 29:420 29:421 29:422 29:423 29:424 29:425 29:426 29:427 29:428 29:429 29:430 29:431 29:432 29:433 29:434 29:435 29:436 29:437 29:438 29:439 29:440 29:441 29:442 29:443 29:444 29:445 29:446 29:447 29:448 29:449 29:450 29:451 29:452 29:453 29:454 29:455 29:456 29:457 29:458 29:459 29:460 29:461 29:462 29:463 29:464 29:465 29:466 29:467 29:468 29:469 29:470 29:471 29:472 29:473 29:474 29:475 29:476 29:477 29:478 29:479 29:480 29:481 29:482 29:483 29:484 29:485 29:486 29:487 29:488 29:489 29:490 29:491 29:492 29:493 29:494 29:495 29:496 29:497 29:498 29:499 29:500 29:501 29:502 29:503 29:504 29:505 29:506 29:507 29:508 29:509 29:510 29:511 29:512 29:513 29:514 29:515 29:516 29:517 29:518 29:519 29:520 29:521 29:522 29:523 29:524 29:525 29:526 29:527 29:528 29:529 29:530 29:531 29:532 29:533 29:534 29:535 29:536 29:537 29:538 29:539 29:540 29:541 29:542 29:543 29:544 29:545 29:546 29:547 29:548 29:549 29:550 29:551 29:552 29:553 29:554 29:555 29:556 29:557 29:558 29:559 29:560 29:561 29:562 29:563 29:564 29:565 29:566 29:567 29:568 29:569 29:570 29:571 29:572 29:573 29:574 29:575 29:576 29:577 29:578 29:579 29:580 29:581 29:582 29:583 29:584 29:585 29:586 29:587 29:588 29:589 29:590 29:591 29:592 29:593 29:594 29:595 29:596 29:597 29:598 29:599 29:600 29:601 29:602 29:603 29:604 29:605 29:606 29:607 29:608 29:609 29:610 29:611 29:612 29:613 29:614 29:615 29:616 29:617 29:618 29:619 29:620 29:621 29:622 29:623 29:624 29:625 29:626 29:627 29:628 29:629 29:630 29:631 29:632 29:633 29:634 29:635 29:636 29:637 29:638 29:639 29:640 29:641 29:642 29:643 29:644 29:645 29:646 29:647 29:648 29:649 29:650 29:651 29:652 29:653 29:654 29:655 29:656 29:657 29:658 29:659 29:660 29:661 29:662 29:663 29:664 29:665 29:666 29:667 29:668 29:669 29:670 29:671 29:672 29:673 29:674 29:675 29:676 29:677 29:678 29:679 29:680 29:681 29:682 29:683 29:684 29:685 29:686 29:687 29:688 29:689 29:690 29:691 29:692 29:693 29:694 29:695 29:696 29:697 29:698 29:699 29:700 29:701 29:702 29:703 29:704 29:705 29:706 29:707 29:708 29:709 29:710 29:711 29:712 29:713 29:714 29:715 29:716 29:717 29:718 29:719 29:720 29:721 29:722 29:723 29:724 29:725 29:726 29:727 29:728 29:729 29:730 29:731 29:732 29:733 29:734 29:735 29:736 29:737 29:738 29:739 29:740 29:741 29:742 29:743 29:744 29:745 29:746 29:747 29:748 29:749 29:750 29:751 29:752 29:753 29:754 29:755 29:756 29:757 29:758 29:759 29:760 29:761 29:762 29:763 29:764 29:765 29:766 29:767 29:768 29:769 29:770 29:771 29:772 29:773 29:774 29:775 29:776 29:777 29:778 29:779 29:780 29:781 29:782 29:783 29:784 29:785 29:786 29:787 29:788 29:789 29:790 29:791 29:792 29:793 29:794 29:795 29:796 29:797 29:798 29:799 29:800 29:801 29:802 29:803 29:804 29:805 29:806 29:807 29:808 29:809 29:810 29:811 29:812 29:813 29:814 29:815 29:816 29:817 29:818 29:819 29:820 29:821 29:822 29:823 29:824 29:825 29:826 29:827 29:828 29:829 29:830 29:831 29:832 29:833 29:834 29:835 29:836 29:837 29:838 29:839 29:840 29:841 29:842 29:843 29:844 29:845 29:846 29:847 29:848 29:849 29:850 29:851 29:852 29:853 29:854 29:855 29:856 29:857 29:858 29:859 29:860 29:861 29:862 29:863 29:864 29:865 29:866 29:867 29:868 29:869 29:870 29:871 29:872 29:873 29:874 29:875 29:876 29:877 29:878 29:879 29:880 29:881 29:882 29:883 29:884 29:885 29:886 29:887 29:888 29:889 29:890 29:891 29:892 29:893 29:894 29:895 29:896 29:897 29:898 29:899 29:900 29:901 29:902 29:903 29:904 29:905 29:906 29:907 29:908 29:909 29:910 29:911 29:912 29:913 29:914 29:915 29:916 29:917 29:918 29:919 29:920 29:921 29:922 29:923 29:924 29:925 29:926 29:927 29:928 29:929 29:930 29:931 29:932 29:933 29:934 29:935 29:936 29:937 29:938 29:939 29:940 29:941 29:942 29:943 29:944 29:945 29:946 29:947 29:948 29:949 29:950 29:951 29:952 29:953 29:954 29:955 29:956 29:957 29:958 29:959 29:960 29:961 29:962 29:963 29:964 29:965 29:966 29:967 29:968 29:969 29:970 29:971 29:972 29:973 29:974 29:975 29:976 29:977 29:978 29:979 29:980 29:981 29:982 29:983 29:984 29:985 29:986 29:987 29:988 29:989 29:990 29:991 29:992 29:993 29:994 29:995 29:996 29:997 29:998 29:999 30:1 30:2 30:3 30:4 30:5 30:6 30:7 30:8 30:9 30:10 30:11 30:12 30:13 30:14 30:15 30:16 30:17 30:18 30:19 30:20 30:21 30:22 30:23 30:24 30:25 30:26 30:27 30:28 30:29 30:30 30:31 30:32 30:33 30:34 30:35 30:36 30:37 30:38 30:39 30:40 30:41 30:42 30:43 30:44 30:45 30:46 30:47 30:48 30:49 30:50 30:51 30:52 30:53 30:54 30:55 30:56 30:57 30:58 30:59 30:60 30:61 30:62 30:63 30:64 30:65 30:66 30:67 30:68 30:69 30:70 30:71 30:72 30:73 30:74 30:75 30:76 30:77 30:78 30:79 30:80 30:81 30:82 30:83 30:84 30:85 30:86 30:87 30:88 30:89 30:90 30:91 30:92 30:93 30:94 30:95 30:96 30:97 30:98 30:99 30:100 30:101 30:102 30:103 30:104 30:105 30:106 30:107 30:108 30:109 30:110 30:111 30:112 30:113 30:114 30:115 30:116 30:117 30:118 30:119 30:120 30:121 30:122 30:123 30:124 30:125 30:126 30:127 30:128 30:129 30:130 30:131 30:132 30:133 30:134 30:135 30:136 30:137 30:138 30:139 30:140 30:141 30:142 30:143 30:144 30:145 30:146 30:147 30:148 30:149 30:150 30:151 30:152 30:153 30:154 30:155 30:156 30:157 30:158 30:159 30:160 30:161 30:162 30:163 30:164 30:165 30:166 30:167 30:168 30:169 30:170 30:171 30:172 30:173 30:174 30:175 30:176 30:177 30:178 30:179 30:180 30:181 30:182 30:183 30:184 30:185 30:186 30:187 30:188 30:189 30:190 30:191 30:192 30:193 30:194 30:195 30:196 30:197 30:198 30:199 30:200 30:201 30:202 30:203 30:204 30:205 30:206 30:207 30:208 30:209 30:210 30:211 30:212 30:213 30:214 30:215 30:216 30:217 30:218 30:219 30:220 30:221 30:222 30:223 30:224 30:225 30:226 30:227 30:228 30:229 30:230 30:231 30:232 30:233 30:234 30:235 30:236 30:237 30:238 30:239 30:240 30:241 30:242 30:243 30:244 30:245 30:246 30:247 30:248 30:249 30:250 30:251 30:252 30:253 30:254 30:255 30:256 30:257 30:258 30:259 30:260 30:261 30:262 30:263 30:264 30:265 30:266 30:267 30:268 30:269 30:270 30:271 30:272 30:273 30:274 30:275 30:276 30:277 30:278 30:279 30:280 30:281 30:282 30:283 30:284 30:285 30:286 30:287 30:288 30:289 30:290 30:291 30:292 30:293 30:294 30:295 30:296 30:297 30:298 30:299 30:300 30:301 30:302 30:303 30:304 30:305 30:306 30:307 30:308 30:309 30:310 30:311 30:312 30:313 30:314 30:315 30:316 30:317 30:318 30:319 30:320 30:321 30:322 30:323 30:324 30:325 30:326 30:327 30:328 30:329 30:330 30:331 30:332 30:333 30:334 30:335 30:336 30:337 30:338 30:339 30:340 30:341 30:342 30:343 30:344 30:345 30:346 30:347 30:348 30:349 30:350 30:351 30:352 30:353 30:354 30:355 30:356 30:357 30:358 30:359 30:360 30:361 30:362 30:363 30:364 30:365 30:366 30:367 30:368 30:369 30:370 30:371 30:372 30:373 30:374 30:375 30:376 30:377 30:378 30:379 30:380 30:381 30:382 30:383 30:384 30:385 30:386 30:387 30:388 30:389 30:390 30:391 30:392 30:393 30:394 30:395 30:396 30:397 30:398 30:399 30:400 30:401 30:402 30:403 30:404 30:405 30:406 30:407 30:408 30:409 30:410 30:411 30:412 30:413 30:414 30:415 30:416 30:417 30:418 30:419 30:420 30:421 30:422 30:423 30:424 30:425 30:426 30:427 30:428 30:429 30:430 30:431 30:432 30:433 30:434 30:435 30:436 30:437 30:438 30:439 30:440 30:441 30:442 30:443 30:444 30:445 30:446 30:447 30:448 30:449 30:450 30:451 30:452 30:453 30:454 30:455 30:456 30:457 30:458 30:459 30:460 30:461 30:462 30:463 30:464 30:465 30:466 30:467 30:468 30:469 30:470 30:471 30:472 30



नगर-नगर होते हुए जबूलून तक गए; परन्तु उन्होंने उनकी हँसी की, और उन्हें उपहास में उड़ाया।

11 तो भी आशेर, मनश्शे और जबूलून में से कुछ लोग दीन होकर यरूशलेम को आए।

12 यहूदा में भी परमेश्वर की ऐसी शक्ति हुई, कि वे एक मन होकर, जो आज्ञा राजा और हाकिमों ने यहोवा के वचन के अनुसार दी थी, उसे मानने को तैयार हुए।

2222 22 222222 2222 222222 22222

13 इस प्रकार अधिक लोग यरूशलेम में इसलिये इकट्ठे हुए, कि दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का पर्व मानें। और बहुत बड़ी सभा इकट्ठी हो गई।

14 उन्होंने उठकर, यरूशलेम में की वेदियों और धूप जलाने के सब स्थानों को उठाकर किद्रोन नाले में फेंक दिया।

15 तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्होंने फसह के पशुबलि किए तब याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आए।

16 वे अपने नियम के अनुसार, अर्थात् परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार, अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए, और याजकों ने रक्त को लेवियों के हाथ से लेकर छिड़क दिया।

17 क्योंकि सभा में बहुत ऐसे थे जिन्होंने अपने को पवित्र न किया था; इसलिये सब अशुद्ध लोगों के फसह के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवियों को दिया गया, कि उनको यहोवा के लिये पवित्र करें। (222222 11:55)

18 बहुत से लोगों ने अर्थात् एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून में से बहुतों ने अपने को शुद्ध नहीं किया था, तो भी वे फसह के पशु का माँस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। क्योंकि हिजकिय्याह ने उनके लिये यह प्रार्थना की थी, “यहोवा जो भला है, वह उन सभी के पाप ढाँप दे;”

19 जो परमेश्वर की अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाए हुए हैं, चाहे वे पवित्रस्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों।”

20 और यहोवा ने हिजकिय्याह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया।

21 जो इस्राएली यरूशलेम में उपस्थित थे, वे सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्व बड़े आनन्द से मनाते रहे; और प्रतिदिन लेवीय और याजक ऊँचे शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे।

22 जितने लेवीय यहोवा का भजन बुद्धिमानी के साथ करते थे, उनको हिजकिय्याह ने शान्ति के वचन कहे। इस प्रकार वे मेलबलि चढ़ाकर और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के सम्मुख अंगीकार करते रहे और उस नियत पर्व के सातों दिन तक खाते रहे।

2222 22 222222 2222 222222 22222

23 तब सारी सभा ने सम्मति की कि हम और सात दिन पर्व मानेंगे; अतः 222222222222 22 2222 2222 22222222 22222222 22222222।

24 क्योंकि यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़-बकरियाँ दे दीं, और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़-बकरियाँ दीं, और बहुत से याजकों ने अपने को पवित्र किया।

25 तब याजकों और लेवियों समेत यहूदा की सारी सभा, और इस्राएल से आए हुआओं की सभा, और इस्राएल के देश से आए हुए, और यहूदा में रहनेवाले परदेशी, इन सभी ने आनन्द किया।

26 इस प्रकार यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी।

27 अन्त में लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुँची।

## 31

222222222222 22 222222 22222

1 जब यह सब हो चुका, तब जितने इस्राएली उपस्थित थे, उन सभी ने यहूदा के नगरों में जाकर, सारे यहूदा और बिन्यामीन और एप्रैम और मनश्शे में की लाठों को तोड़ दिया, अशेरों को काट डाला, और ऊँचे स्थानों और वेदियों को गिरा दिया; और उन्होंने उन सब का अन्त कर दिया। तब सब इस्राएली अपने-अपने नगर को लौटकर, अपनी-अपनी निज भूमि में पहुँचे।

22222222 22 22222 22222

2 हिजकिय्याह ने याजकों के दलों को और लेवियों को वरन याजकों और लेवियों दोनों को, प्रति दल के अनुसार और एक-एक मनुष्य को उसकी सेवकाई के अनुसार इसलिये ठहरा दिया, कि वे यहोवा की छावनी के द्वारों के भीतर होमबलि, मेलबलि, सेवा टहल, धन्यवाद और स्तुति किया करें।

‡ 30:23 2222222222 22 2222 2222 222222 22 22222 222222: यह विधान में स्वैच्छिक परिवर्धन था, समय का लक्षण दर्शाने वाला अत्यधिक जोश का परिणाम एवं चिन्ह।

3 फिर उसने <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup> <sup>1001</sup> <sup>1002</sup> <sup>1003</sup> <sup>1004</sup> <sup>1005</sup> <sup>1006</sup> <sup>1007</sup> <sup>1008</sup> <sup>1009</sup> <sup>1010</sup> <sup>1011</sup> <sup>1012</sup> <sup>1013</sup> <sup>1014</sup> <sup>1015</sup> <sup>1016</sup> <sup>1017</sup> <sup>1018</sup> <sup>1019</sup> <sup>1020</sup> <sup>1021</sup> <sup>1022</sup> <sup>1023</sup> <sup>1024</sup> <sup>1025</sup> <sup>1026</sup> <sup>1027</sup> <sup>1028</sup> <sup>1029</sup> <sup>1030</sup> <sup>1031</sup> <sup>1032</sup> <sup>1033</sup> <sup>1034</sup> <sup>1035</sup> <sup>1036</sup> <sup>1037</sup> <sup>1038</sup> <sup>1039</sup> <sup>1040</sup> <sup>1041</sup> <sup>1042</sup> <sup>1043</sup> <sup>1044</sup> <sup>1045</sup> <sup>1046</sup> <sup>1047</sup> <sup>1048</sup> <sup>1049</sup> <sup>1050</sup> <sup>1051</sup> <sup>1052</sup> <sup>1053</sup> <sup>1054</sup> <sup>1055</sup> <sup>1056</sup> <sup>1057</sup> <sup>1058</sup> <sup>1059</sup> <sup>1060</sup> <sup>1061</sup> <sup>1062</sup> <sup>1063</sup> <sup>1064</sup> <sup>1065</sup> <sup>1066</sup> <sup>1067</sup> <sup>1068</sup> <sup>1069</sup> <sup>1070</sup> <sup>1071</sup> <sup>1072</sup> <sup>1073</sup> <sup>1074</sup> <sup>1075</sup> <sup>1076</sup> <sup>1077</sup> <sup>1078</sup> <sup>1079</sup> <sup>1080</sup> <sup>1081</sup> <sup>1082</sup> <sup>1083</sup> <sup>1084</sup> <sup>1085</sup> <sup>1086</sup> <sup>1087</sup> <sup>1088</sup> <sup>1089</sup> <sup>1090</sup> <sup>1091</sup> <sup>1092</sup> <sup>1093</sup> <sup>1094</sup> <sup>1095</sup> <sup>1096</sup> <sup>1097</sup> <sup>1098</sup> <sup>1099</sup> <sup>1100</sup> <sup>1101</sup> <sup>1102</sup> <sup>1103</sup> <sup>1104</sup> <sup>1105</sup> <sup>1106</sup> <sup>1107</sup> <sup>1108</sup> <sup>1109</sup> <sup>1110</sup> <sup>1111</sup> <sup>1112</sup> <sup>1113</sup> <sup>1114</sup> <sup>1115</sup> <sup>1116</sup> <sup>1117</sup> <sup>1118</sup> <sup>1119</sup> <sup>1120</sup> <sup>1121</sup> <sup>1122</sup> <sup>1123</sup> <sup>1124</sup> <sup>1125</sup> <sup>1126</sup> <sup>1127</sup> <sup>1128</sup> <sup>1129</sup> <sup>1130</sup> <sup>1131</sup> <sup>1132</sup> <sup>1133</sup> <sup>1134</sup> <sup>1135</sup> <sup>1136</sup> <sup>1137</sup> <sup>1138</sup> <sup>1139</sup> <sup>1140</sup> <sup>1141</sup> <sup>1142</sup> <sup>1143</sup> <sup>1144</sup> <sup>1145</sup> <sup>1146</sup> <sup>1147</sup> <sup>1148</sup> <sup>1149</sup> <sup>1150</sup> <sup>1151</sup> <sup>1152</sup> <sup>1153</sup> <sup>1154</sup> <sup>1155</sup> <sup>1156</sup> <sup>1157</sup> <sup>1158</sup> <sup>1159</sup> <sup>1160</sup> <sup>1161</sup> <sup>1162</sup> <sup>1163</sup> <sup>1164</sup> <sup>1165</sup> <sup>1166</sup> <sup>1167</sup> <sup>1168</sup> <sup>1169</sup> <sup>1170</sup> <sup>1171</sup> <sup>1172</sup> <sup>1173</sup> <sup>1174</sup> <sup>1175</sup> <sup>1176</sup> <sup>1177</sup> <sup>1178</sup> <sup>1179</sup> <sup>1180</sup> <sup>1181</sup> <sup>1182</sup> <sup>1183</sup> <sup>1184</sup> <sup>1185</sup> <sup>1186</sup> <sup>1187</sup> <sup>1188</sup> <sup>1189</sup> <sup>1190</sup> <sup>1191</sup> <sup>1192</sup> <sup>1193</sup> <sup>1194</sup> <sup>1195</sup> <sup>1196</sup> <sup>1197</sup> <sup>1198</sup> <sup>1199</sup> <sup>1200</sup> <sup>1201</sup> <sup>1202</sup> <sup>1203</sup> <sup>1204</sup> <sup>1205</sup> <sup>1206</sup> <sup>1207</sup> <sup>1208</sup> <sup>1209</sup> <sup>1210</sup> <sup>1211</sup> <sup>1212</sup> <sup>1213</sup> <sup>1214</sup> <sup>1215</sup> <sup>1216</sup> <sup>1217</sup> <sup>1218</sup> <sup>1219</sup> <sup>1220</sup> <sup>1221</sup> <sup>1222</sup> <sup>1223</sup> <sup>1224</sup> <sup>1225</sup> <sup>1226</sup> <sup>1227</sup> <sup>1228</sup> <sup>1229</sup> <sup>1230</sup> <sup>1231</sup> <sup>1232</sup> <sup>1233</sup> <sup>1234</sup> <sup>1235</sup> <sup>1236</sup> <sup>1237</sup> <sup>1238</sup> <sup>1239</sup> <sup>1240</sup> <sup>1241</sup> <sup>1242</sup> <sup>1243</sup> <sup>1244</sup> <sup>1245</sup> <sup>1246</sup> <sup>1247</sup> <sup>1248</sup> <sup>1249</sup> <sup>1250</sup> <sup>1251</sup> <sup>1252</sup> <sup>1253</sup> <sup>1254</sup> <sup>1255</sup> <sup>1256</sup> <sup>1257</sup> <sup>1258</sup> <sup>1259</sup> <sup>1260</sup> <sup>1261</sup> <sup>1262</sup> <sup>1263</sup> <sup>1264</sup> <sup>1265</sup> <sup>1266</sup> <sup>1267</sup> <sup>1268</sup> <sup>1269</sup> <sup>1270</sup> <sup>1271</sup> <sup>1272</sup> <sup>1273</sup> <sup>1274</sup> <sup>1275</sup> <sup>1276</sup> <sup>1277</sup> <sup>1278</sup> <sup>1279</sup> <sup>1280</sup> <sup>1281</sup> <sup>1282</sup> <sup>1283</sup> <sup>1284</sup> <sup>1285</sup> <sup>1286</sup> <sup>1287</sup> <sup>1288</sup> <sup>1289</sup> <sup>1290</sup> <sup>1291</sup> <sup>1292</sup> <sup>1293</sup> <sup>1294</sup> <sup>1295</sup> <sup>1296</sup> <sup>1297</sup> <sup>1298</sup> <sup>1299</sup> <sup>1300</sup> <sup>1301</sup> <sup>1302</sup> <sup>1303</sup> <sup>1304</sup> <sup>1305</sup> <sup>1306</sup> <sup>1307</sup> <sup>1308</sup> <sup>1309</sup> <sup>1310</sup> <sup>1311</sup> <sup>1312</sup> <sup>1313</sup> <sup>1314</sup> <sup>1315</sup> <sup>1316</sup> <sup>1317</sup> <sup>1318</sup> <sup>1319</sup> <sup>1320</sup> <sup>1321</sup> <sup>1322</sup> <sup>1323</sup> <sup>1324</sup> <sup>1325</sup> <sup>1326</sup> <sup>1327</sup> <sup>1328</sup> <sup>1329</sup> <sup>1330</sup> <sup>1331</sup> <sup>1332</sup> <sup>1333</sup> <sup>1334</sup> <sup>1</sup>

3 हिजकिय्याह ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ यह सम्मति की, कि नगर के बाहर के [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]\*; और उन्होंने उसकी सहायता की।

4 इस पर बहुत से लोग इकट्ठे हुए, और यह कहकर कि, “अशूर के राजा क्यों यहाँ आएँ, और आकर बहुत पानी पाएँ,” उन्होंने सब स्रोतों को रोक दिया और उस नदी को सुखा दिया जो देश के मध्य से होकर बहती थी।

5 फिर हिजकिय्याह ने हियाव बाँधकर शहरपनाह जहाँ कहीं टूटी थी, वहाँ-वहाँ उसको बनवाया, और उसे गुम्मतों के बराबर ऊँचा किया और बाहर एक और शहरपनाह बनवाई, और दाऊदपुर में मिल्लो को दृढ़ किया। और बहुत से हथियार और ढालें भी बनवाईं।

6 तब उसने प्रजा के ऊपर सेनापति नियुक्त किए और उनको नगर के फाटक के चौक में इकट्ठा किया, और यह कहकर उनको धीरज दिया,

7 “हियाव बाँधो और दृढ़ हो तुम न तो अशूर के राजा से डरो और न उसके संग की सारी भीड़ से, और न तुम्हारा मन कच्चा हो; क्योंकि जो हमारे साथ है, वह उसके संगियों से बड़ा है।

8 अर्थात् उसका सहारा तो मनुष्य ही है परन्तु हमारे साथ, हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है।” इसलिए प्रजा के लोग यहूदा के राजा हिजकिय्याह की बातों पर भरोसा किए रहे।

[2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2]

9 इसके बाद अशूर का राजा सन्हेरीब जो सारी सेना समेत लाकीश के सामने पड़ा था, उसने अपने कर्मचारियों को यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह और उन सब यहूदियों से जो यरूशलेम में थे यह कहने के लिये भेजा,

10 “अशूर का राजा सन्हेरीब कहता है, कि तुम्हें किसका भरोसा है जिससे कि तुम घिरे हुए यरूशलेम में बैठे हो?

11 क्या हिजकिय्याह तुम से यह कहकर कि हमारा परमेश्वर यहोवा हमको अशूर के राजा के पंजे से बचाएगा तुम्हें नहीं भरमाता है कि तुम को भूखा प्यासा मारे?

12 क्या उसी हिजकिय्याह ने उसके ऊँचे स्थान और वेदियों को दूर करके यहूदा और यरूशलेम को आज्ञा नहीं दी, कि तुम एक ही वेदी के सामने दण्डवत् करना और उसी पर धूप जलाना?

13 क्या तुम को मालूम नहीं, कि मैंने और मेरे पुरखाओं ने देश-देश के सब लोगों से क्या-क्या किया है? क्या उन देशों की जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके?

14 जितनी जातियों का मेरे पुरखाओं ने सत्यानाश किया है उनके सब देवताओं में से ऐसा कौन था जो अपनी प्रजा को मेरे हाथ से बचा सका हो? फिर तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा?

15 अब हिजकिय्याह तुम को इस रीति से भरमाने अथवा बहकाने न पाए, और तुम उस पर विश्वास न करो, क्योंकि किसी जाति या राज्य का कोई देवता अपनी प्रजा को न तो मेरे हाथ से और न मेरे पुरखाओं के हाथ से बचा सका। यह निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।”

16 इससे भी अधिक उसके कर्मचारियों ने यहोवा परमेश्वर की, और उसके दास हिजकिय्याह की निन्दा की।

17 फिर उसने ऐसा एक पत्र भेजा, जिसमें इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की ये बातें लिखी थीं: “जैसे देश-देश की जातियों के देवताओं ने अपनी-अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचाया वैसे ही हिजकिय्याह का देवता भी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।”

18 और उन्होंने ऊँचे शब्द से उन यरूशलेमियों को जो शहरपनाह पर बैठे थे, यहूदी बोली में पुकारा, कि उनको डराकर घबराहट में डाल दें जिससे नगर को ले लें।

19 उन्होंने यरूशलेम के परमेश्वर की ऐसी चर्चा की, कि मानो पृथ्वी के देश-देश के लोगों के देवताओं के बराबर हो, जो मनुष्यों के बनाए हुए हैं।

[2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2][2][2]

20 तब इन घटनाओं के कारण राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी दोनों ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर दुहाई दी।

21 तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिसने अशूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों, प्रधानों और सेनापतियों को नष्ट किया। अतः वह लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया। और जब वह अपने देवता के भवन में था, तब उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला।

22 अतः यहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के निवासियों को अशूर के राजा सन्हेरीब और अपने सब शत्रुओं के हाथ से बचाया, और चारों ओर उनकी अगुआई की।

\* 32:3 [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2][2][2]: हिजकिय्याह का उद्देश्य दो मुखी था। अशूरों को निवास करने के लिए बाहरी स्रोतों को दिखा दें और उनका पानी भूमिगत शहर में लाएँ कि घेराव के समय उनके पास कमी न हो।





10 यहोवा ने मनश्शे और उसकी प्रजा से बातें कीं, परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया।

11 तब यहोवा ने उन पर अश्शूर के सेनापतियों से चढ़ाई कराई, और वे मनश्शे को नकेल डालकर, और पीतल की बेड़ियों से जकड़कर, उसे [222222] [22] [22] [22]\*।

12 तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने बहुत दीन हुआ, और उससे प्रार्थना की।

13 तब उसने प्रसन्न होकर उसकी विनती सुनी, और उसको यरूशलेम में पहुँचाकर उसका राज्य लौटा दिया। तब मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है।

14 इसके बाद उसने दाऊदपुर से बाहर गीहोन के पश्चिम की ओर नाले में मछली फाटक तक एक शहरपनाह बनवाई, फिर ओपेल को घेरकर बहुत ऊँचा कर दिया; और यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सेनापति ठहरा दिए।

15 फिर उसने पराए देवताओं को और यहोवा के भवन में की मूर्ति को, और जितनी वेदियाँ उसने यहोवा के भवन के पर्वत पर, और यरूशलेम में बनवाई थीं, उन सब को दूर करके नगर से बाहर फेंकवा दिया।

16 तब उसने यहोवा की वेदी की मरम्मत की, और उस पर मेलबलि और धन्यवाद-बलि चढ़ाने लगा, और यहूदियों को इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दी।

17 तो भी प्रजा के लोग ऊँचे स्थानों पर बलिदान करते रहे, परन्तु केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिये।

[222222] [22] [222222]

18 मनश्शे के और काम, और उसने जो प्रार्थना अपने परमेश्वर से की, और उन दर्शियों के वचन जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से उससे बातें करते थे, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास में लिखा हुआ है।

19 और उसकी प्रार्थना और वह कैसे सुनी गई, और उसका सारा पाप और विश्वासघात और उसने दीन होने से पहले कहाँ-कहाँ ऊँचे स्थान बनवाए, और अशेरा नामक और खुदी हुई मूर्तियाँ खड़ी कराई, यह सब होशे के वचनों में लिखा है।

\* 33:11 [222222] [22] [22] [22]: अश्शूरों के स्मारकों में इस अभियान का उल्लेख नहीं मिलता है परन्तु एसहदोन (2 राजा. 19:37) के समय इसका होना यदि संदिग्ध माना जाए तो बहुत ही कम है क्योंकि उसने तेरह वर्ष राज्य किया था। एसहदोन अपनी अधीनस्थ राजाओं में मनश्शे का उल्लेख करता है। \* 34:3 [22] ... [222222] [22] [222222] [22] [222222] [2222] [2222]: यिर्मयाह की प्रथम भविष्यद्वाणियाँ (यिर्म. 2, 3) योशिय्याह द्वारा मूर्तिपूजा के निवारण के आरम्भिक प्रयास के समय की हैं और उनसे उसको बहुत साहस प्राप्त हुआ होगा।

20 अन्त में मनश्शे मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसे उसी के घर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

[2222] [22] [222222]

21 जब आमोन राज्य करने लगा, तब वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा।

22 उसने अपने पिता मनश्शे के समान वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। और जितनी मूर्तियाँ उसके पिता मनश्शे ने खोदकर बनवाई थीं, वह भी उन सभी के सामने बलिदान करता और उन सभी की उपासना भी करता था।

23 जैसे उसका पिता मनश्शे यहोवा के सामने दीन हुआ, वैसे वह दीन न हुआ, वरन् आमोन अधिक दोषी होता गया।

24 उसके कर्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी करके, उसको उसी के भवन में मार डाला।

25 तब साधारण लोगों ने उन सभी को मार डाला, जिन्होंने राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की थी; और लोगों ने उसके पुत्र योशिय्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया।

## 34

[2222222222] [22] [222222]

1 जब योशिय्याह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा।

2 उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका मूलपुरुष दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह भी चला करता था और उससे न तो दाहिनी ओर मुड़ा, और न बाई ओर।

[2222222222] [22] [222222]

3 वह लडका ही था, अर्थात् उसको गद्दी पर बैठे आठ वर्ष पूरे भी न हुए थे कि अपने मूलपुरुष दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा, और बारहवें वर्ष में [22] [2222] [22222222] [22] [222222] [22222] [22222222] [22] [22222] [22] [2222] [2222] [22222222] [22] [2222] [22222] [22] [22222222] [22222] [22222]\*।

4 बाल देवताओं की वेदियाँ उसके सामने तोड़ डाली गई, और सूर्य की प्रतिमाएँ जो उनके ऊपर ऊँचे पर थीं, उसने काट डाली, और अशेरा नामक, और खुदी और ढली हुई मूर्तियों को उसने तोड़कर पीस डाला, और उनकी बुकनी उन लोगों की कब्रों पर छितरा दी, जो उनको बलि चढ़ाते थे।



## 35

26 परन्तु यहूदा का राजा जिसने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेज दिया है उससे तुम यह कहो, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है,

27 कि इसलिए कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और परमेश्वर के सामने अपना सिर झुकाया, और उसकी बातें सुनकर जो उसने इस स्थान और इसके निवासियों के विरुद्ध कहीं, तूने मेरे सामने अपना सिर झुकाया, और वस्त्र फाड़कर मेरे सामने रोया है, इस कारण मैंने तेरी सुनी है; यहोवा की यही वाणी है।

28 सुन, मैं तुझे तेरे पुरखाओं के संग ऐसा मिलाऊँगा कि तू शान्ति से अपनी कब्र को पहुँचाया जाएगा; और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर, और इसके निवासियों पर डालना चाहता हूँ, उसमें से तुझे अपनी आँखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।” तब उन लोगों ने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया।

२२२२२२२२२ २२२२२२२ २२२२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२

29 तब राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियों को इकट्ठे होने को बुलवा भेजा।

30 राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और लेवियों वरन् छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया; तब उसने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उसमें की सारी बातें उनको पढ़कर सुनाई।

31 तब राजा ने अपने स्थान पर खड़े होकर, यहोवा से इस आशय की वाचा बाँधी कि मैं यहोवा के पीछे-पीछे चलूँगा, और अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण जीव से उसकी आज्ञाओं, चेतावनियों और विधियों का पालन करूँगा, और इन वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, पूरी करूँगा।

32 फिर उसने उन सभी से जो यरूशलेम में और बिन्यामीन में थे वैसी ही वाचा बाँधाई: और यरूशलेम के निवासी, परमेश्वर जो उनके पितरों का परमेश्वर था, उसकी वाचा के अनुसार करने लगे।

33 योशिय्याह ने इस्राएलियों के सब देशों में से सब अशुद्ध वस्तुओं को दूर करके जितने इस्राएल में मिले, उन सभी से उपासना कराई; अर्थात् उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना कराई; २२२२२ २२२२२ २२२२२ उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा।

२२२२२२२२२२ २२ २२२२२ २२२२ २२२२

1 योशिय्याह ने यरूशलेम में यहोवा के लिये फसह पर्व माना और पहले महीने के चौदहवें दिन को फसह का पशुबलि किया गया।

2 उसने याजकों को अपने-अपने काम में ठहराया, और यहोवा के भवन में सेवा करने को उनका हियाव बन्धाया।

3 फिर लेवीय जो सब इस्राएलियों को सिखाते और यहोवा के लिये पवित्र ठहरे थे, उनसे उसने कहा, “तुम २२२२२२२२ २२२२२२२२ २२ २२ २२२२ २२२२ २२२२\* जो दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनवाया था; अब तुम को कंधों पर बोझ उठाना न होगा। अब अपने परमेश्वर यहोवा की और उसकी प्रजा इस्राएल की सेवा करो।

4 इस्राएल के राजा दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान दोनों की लिखी हुई विधियों के अनुसार, अपने-अपने पितरों के अनुसार, अपने-अपने दल में तैयार रहो।

5 तुम्हारे भाई लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार पवित्रस्थान में खड़े रहो, अर्थात् उनके एक भाग के लिये लेवियों के एक-एक पितर के घराने का एक भाग हो।

6 फसह के पशुओं को बलि करो, और अपने-अपने को पवित्र करके अपने भाइयों के लिये तैयारी करो कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार कर सकें, जो उसने मूसा के द्वारा कहा था।”

7 फिर योशिय्याह ने सब लोगों को जो वहाँ उपस्थित थे, तीस हजार भेड़ों और बकरियों के बच्चे और तीन हजार बैल दिए थे; ये सब फसह के बलिदानों के लिये राजा की सम्पत्ति में से दिए गए थे।

8 उसके हाकिमों ने प्रजा के लोगों, याजकों और लेवियों को स्वेच्छाबलियों के लिये पशु दिए। और हिल्किय्याह, जकर्याह और यहीएल नामक परमेश्वर के भवन के प्रधानों ने याजकों को दो हजार छः सौ भेड़-बकरियाँ और तीन सौ बैल फसह के बलिदानों के लिए दिए।

9 कोनन्याह ने और शमायाह और नतनेल जो उसके भाई थे, और हशब्याह, यीएल और योजाबाद नामक लेवियों के प्रधानों ने लेवियों को पाँच हजार भेड़-बकरियाँ, और पाँच सौ बैल फसह के बलिदानों के लिये दिए।

† 34:33 २२२२२ २२२२२ २२२: योशिय्याह के राज्यकाल में मूर्तिपूजा प्रत्यक्ष में नहीं होती थी। \* 35:3 २२२२२२२२ २२२२२२२२ २२ २२ २२२२ २२२२ २२२२: योशिय्याह द्वारा आवश्यक सुधार के समय वाचा का सन्दूक कुछ समय के लिए वहाँ से हटाया गया होगा।

10 इस प्रकार उपासना की तैयारी हो गई, और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक अपने-अपने स्थान पर, और लेवीय अपने-अपने दल में खड़े हुए।

11 तब फसह के पशुबलि किए गए, और याजक बलि करनेवालों के हाथ से लहू को लेकर छिड़क देते और लेवीय उनकी खाल उतारते गए।

12 तब उन्होंने होमबलि के पशु इसलिए अलग किए कि उन्हें लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार दें, कि वे उन्हें यहोवा के लिये चढ़वा दें जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है; और बैलों को भी उन्होंने वैसा ही किया।

13 तब उन्होंने फसह के पशुओं का मांस विधि के अनुसार आग में भूना, और पवित्र वस्तुएँ, हाँडियों और हण्डों और थालियों में सिद्धा कर फुर्ती से लोगों को पहुँचा दिया।

14 तब उन्होंने अपने लिये और याजकों के लिये तैयारी की, क्योंकि हारून की सन्तान के याजक होमबलि के पशु और चर्बी रात तक चढ़ाते रहे, इस कारण लेवियों ने अपने लिये और हारून की सन्तान के याजकों के लिये तैयारी की।

15 आसाप के वंश के गवैये, दाऊद, आसाप, हेमान और राजा के दर्शी यदूतून की आज्ञा के अनुसार अपने-अपने स्थान पर रहे, और द्वारपाल एक-एक फाटक पर रहे। <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup> <sup>1001</sup> <sup>1002</sup> <sup>1003</sup> <sup>1004</sup> <sup>1005</sup> <sup>1006</sup> <sup>1007</sup> <sup>1008</sup> <sup>1009</sup> <sup>1010</sup> <sup>1011</sup> <sup>1012</sup> <sup>1013</sup> <sup>1014</sup> <sup>1015</sup> <sup>1016</sup> <sup>1017</sup> <sup>1018</sup> <sup>1019</sup> <sup>1020</sup> <sup>1021</sup> <sup>1022</sup> <sup>1023</sup> <sup>1024</sup> <sup>1025</sup> <sup>1026</sup> <sup>1027</sup> <sup>1028</sup> <sup>1029</sup> <sup>1030</sup> <sup>1031</sup> <sup>1032</sup> <sup>1033</sup> <sup>1034</sup> <sup>1035</sup> <sup>1036</sup> <sup>1037</sup> <sup>1038</sup> <sup>1039</sup> <sup>1040</sup> <sup>1041</sup> <sup>1042</sup> <sup>1043</sup> <sup>1044</sup> <sup>1045</sup> <sup>1046</sup> <sup>1047</sup> <sup>1048</sup> <sup>1049</sup> <sup>1050</sup> <sup>1051</sup> <sup>1052</sup> <sup>1053</sup> <sup>1054</sup> <sup>1055</sup> <sup>1056</sup> <sup>1057</sup> <sup>1058</sup> <sup>1059</sup> <sup>1060</sup> <sup>1061</sup> <sup>1062</sup> <sup>1063</sup> <sup>1064</sup> <sup>1065</sup> <sup>1066</sup> <sup>1067</sup> <sup>1068</sup> <sup>1069</sup> <sup>1070</sup> <sup>1071</sup> <sup>1072</sup> <sup>1073</sup> <sup>1074</sup> <sup>1075</sup> <sup>1076</sup> <sup>1077</sup> <sup>1078</sup> <sup>1079</sup> <sup>1080</sup> <sup>1081</sup> <sup>1082</sup> <sup>1083</sup> <sup>1084</sup> <sup>1085</sup> <sup>1086</sup> <sup>1087</sup> <sup>1088</sup> <sup>1089</sup> <sup>1090</sup> <sup>1091</sup> <sup>1092</sup> <sup>1093</sup> <sup>1094</sup> <sup>1095</sup> <sup>1096</sup> <sup>1097</sup> <sup>1098</sup> <sup>1099</sup> <sup>1100</sup> <sup>1101</sup> <sup>1102</sup> <sup>1103</sup> <sup>1104</sup> <sup>1105</sup> <sup>1106</sup> <sup>1107</sup> <sup>1108</sup> <sup>1109</sup> <sup>1110</sup> <sup>1111</sup> <sup>1112</sup> <sup>1113</sup> <sup>1114</sup> <sup>1115</sup> <sup>1116</sup> <sup>1117</sup> <sup>1118</sup> <sup>1119</sup> <sup>1120</sup> <sup>1121</sup> <sup>1122</sup> <sup>1123</sup> <sup>1124</sup> <sup>1125</sup> <sup>1126</sup> <sup>1127</sup> <sup>1128</sup> <sup>1129</sup> <sup>1130</sup> <sup>1131</sup> <sup>1132</sup> <sup>1133</sup> <sup>1134</sup> <sup>1135</sup> <sup>1136</sup> <sup>1137</sup> <sup>1138</sup> <sup>1139</sup> <sup>1140</sup> <sup>1141</sup> <sup>1142</sup> <sup>1143</sup> <sup>1144</sup> <sup>1145</sup> <sup>1146</sup> <sup>1147</sup> <sup>1148</sup> <sup>1149</sup> <sup>1150</sup> <sup>1151</sup> <sup>1152</sup> <sup>1153</sup> <sup>1154</sup> <sup>1155</sup> <sup>1156</sup> <sup>1157</sup> <sup>1158</sup> <sup>1159</sup> <sup>1160</sup> <sup>1161</sup> <sup>1162</sup> <sup>1163</sup> <sup>1164</sup> <sup>1165</sup> <sup>1166</sup> <sup>1167</sup> <sup>1168</sup> <sup>1169</sup> <sup>1170</sup> <sup>1171</sup> <sup>1172</sup> <sup>1173</sup> <sup>1174</sup> <sup>1175</sup> <sup>1176</sup> <sup>1177</sup> <sup>1178</sup> <sup>1179</sup> <sup>1180</sup> <sup>1181</sup> <sup>1182</sup> <sup>1183</sup> <sup>1184</sup> <sup>1185</sup> <sup>1186</sup> <sup>1187</sup> <sup>1188</sup> <sup>1189</sup> <sup>1190</sup> <sup>1191</sup> <sup>1192</sup> <sup>1193</sup> <sup>1194</sup> <sup>1195</sup> <sup>1196</sup> <sup>1197</sup> <sup>1198</sup> <sup>1199</sup> <sup>1200</sup> <sup>1201</sup> <sup>1202</sup> <sup>1203</sup> <sup>1204</sup> <sup>1205</sup> <sup>1206</sup> <sup>1207</sup> <sup>1208</sup> <sup>1209</sup> <sup>1210</sup> <sup>1211</sup> <sup>1212</sup> <sup>1213</sup> <sup>1214</sup> <sup>1215</sup> <sup>1216</sup> <sup>1217</sup> <sup>1218</sup> <sup>1219</sup> <sup>1220</sup> <sup>1221</sup> <sup>1222</sup> <sup>1223</sup> <sup>1224</sup> <sup>1225</sup> <sup>1226</sup> <sup>1227</sup> <sup>1228</sup> <sup>1229</sup> <sup>1230</sup> <sup>1231</sup> <sup>1232</sup> <sup>1233</sup> <sup>1234</sup> <sup>1235</sup> <sup>1236</sup> <sup>1237</sup> <sup>1238</sup> <sup>1239</sup> <sup>1240</sup> <sup>1241</sup> <sup>1242</sup> <sup>1243</sup> <sup>1244</sup> <sup>1245</sup> <sup>1246</sup> <sup>1247</sup> <sup>1248</sup> <sup>1249</sup> <sup>1250</sup> <sup>1251</sup> <sup>1252</sup> <sup>1253</sup> <sup>1254</sup> <sup>1255</sup> <sup>1256</sup> <sup>1257</sup> <sup>1258</sup> <sup>1259</sup> <sup>1260</sup> <sup>1261</sup> <sup>1262</sup> <sup>1263</sup> <sup>1264</sup> <sup>1265</sup> <sup>1266</sup> <sup>1267</sup> <sup>1268</sup> <sup>1269</sup> <sup>1270</sup> <sup>1271</sup> <sup>1272</sup> <sup>1273</sup> <sup>1274</sup> <sup>1275</sup> <sup>1276</sup>



में यह प्रचार करवाया, और इस आशय की चिट्ठियाँ लिखवाई:

<sup>23</sup> “फारस का राजा कुसू कहता है, ‘स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरूशलेम जो यहूदा में है उसमें मेरा एक भवन बनवा; इसलिए हे उसकी प्रजा के सब लोगों, तुम में से जो कोई चाहे, उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, वह वहाँ खाना हो जाए।’ ”

## एज्जा

११११

इब्रानी परम्परा के अनुसार एज्जा इस पुस्तक का लेखक है। अपेक्षाकृत अज्ञात एज्जा प्रधान पुरोहित हारून का वंशज था। (7:1-5) इस प्रकार वह अपने अनुवांशिक अधिकार से पुरोहित एवं विधिशास्त्री था। परमेश्वर और परमेश्वर के विधान के प्रति एज्जा का उत्साह फारस के राजा अर्तक्षत्र के राज्यकाल में यहूदियों के एक समूह को लेकर स्वदेश इस्राएल में लौटा लाया।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 457 - 440 ई. पू.

लेखन स्थान सम्भवतः बंधुवाई से लौटने के बाद यहूदा - यरूशलेम था।

११११११

यरूशलेम के इस्राएली जो बन्धुआई से लौटे थे और धर्मशास्त्र के सब भावी पाठक।

११११११११

परमेश्वर ने एज्जा को एक आदर्श-स्वरूप काम में लिया कि इस्राएलियों को परमेश्वर के पास लौटा लाए, शारीरिक रूप में स्वदेश लौटाकर और आत्मिक रूप में पापों से विमुक्त करके। हम प्रभु के काम में अविश्वासियों तथा आत्मिक शक्तियों के विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं। यदि हम समय से पहले तैयार रहें तो विरोधों का सामना करने में हम अधिक सम्पन्न होंगे। विश्वास हो तो हम मार्ग की बाधाओं को पार करके उन्नति करते जाएंगे। एज्जा की पुस्तक हमें स्मरण कराती है कि हमारे जीवन में परमेश्वर की योजना को पूरा करने में निराशा और भय दो बहुत बड़े अवरोधक हैं।

१११ ११११

पुनरूद्धार

रूपरेखा

1. जरूबबेल के साथ स्वदेश लौटना — 1:1-6:22
2. एज्जा के साथ दूसरी बार स्वदेश लौटना — 7:1-10:44

१११११११ ११११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११

\* 1:2 ११११ ११११ १११११ ११, ११.... ११११ ११ ११११ १११११: बाबेल को जीतने पर कुसू का सम्पर्क दानिय्येल से हुआ। दानिय्येल ने यशायाह की भविष्यद्वानी उसके समक्ष रखी (यशा.44:28) और कुसू ने यहोवा के मन्दिर के पुनः निर्माण की भविष्यद्वानी को स्वीकार किया। † 1:4 ११ ११११ १११११ १११११ ११११ ११ ११११ ११: अर्थात् अन्यजाति लोग उसकी सहायता करें। (एज्जा 1:6) ‡ 1:5 ११ १११११११११ ११ ११११११११: इस्राएलियों में कुछ ही लोग थे जिन्होंने कुसू की आज्ञा का लाभ उठाया था। बहुत से इस्राएली तो बाबेल में ही रह गए थे। जो लौटकर आए वे वही लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने विशेष रूप से उभारा था कि पवित्र महिमा के लिये बलि चढ़ाए।

1 फारस के राजा कुसू के राज्य के पहले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुसू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था वह पूरा हो जाए, इसलिए उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी दिया:

2 “फारस का राजा कुसू यह कहता है: स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और १११११ १११११ १११११११ ११, ११ १११११११ ११ १११११११११ ११११ १११११ ११ ११११ १११११\*।

3 उसकी समस्त प्रजा के लोगों में से तुम्हारे मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर उसके साथ रहे, और वह यहूदा के यरूशलेम को जाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए - जो यरूशलेम में है वही परमेश्वर है।

4 और ११ ११११ ११११११ १११११११ ११११ ११ ११११ १११, जहाँ वह रहता हो, उस स्थान के मनुष्य चाँदी, सोना, धन और पशु देकर उसकी सहायता करें और इससे अधिक यरूशलेम स्थित परमेश्वर के भवन के लिये अपनी-अपनी इच्छा से भी भेंट चढ़ाएँ।”

5 तब यहूदा और बिन्यामीन के जितने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों और याजकों और लेवियों का ११ १११११११११ ११ १११११११ था कि जाकर यरूशलेम में यहोवा के भवन को बनाएँ, वे सब उठ खड़े हुए;

6 और उनके आस-पास सब रहनेवालों ने चाँदी के पात्र, सोना, धन, पशु और अनमोल वस्तुएँ देकर, उनकी सहायता की; यह उन सबसे अधिक था, जो लोगों ने अपनी-अपनी इच्छा से दिया।

7 फिर यहोवा के भवन के जो पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से निकालकर अपने देवता के भवन में रखे थे, (2 १११११. 25:8-17)

8 उनको कुसू राजा ने, मिथ्रदात खजांची से निकलवाकर, यहूदियों के शेशबस्सर नामक प्रधान को गिनकर सौंप दिया।

9 उनकी गिनती यह थी, अर्थात् सोने के तीस और चाँदी के एक हजार परात और उनतीस छुरी,

10 सोने के तीस कटोरे और मध्यम प्रकार की चाँदी के चार सौ दस कटोरे तथा अन्य प्रकार के पात्र एक हजार।

11 सोने चाँदी के पात्र सब मिलाकर पाँच हजार चार सौ थे। इन सभी को शेशबस्सर उस समय ले आया जब बन्धुए बाबेल से यरूशलेम को आए।









मचता आया है। इसी कारण वह नगर नष्ट भी किया गया था।

16 हम राजा को निश्चय करा देते हैं कि यदि वह नगर बसाया जाए और उसकी शहरपनाह बन चुके, तब इसके कारण महानद के इस पार तेरा कोई भाग न रह जाएगा।”

17 तब राजा ने रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और सामरिया और महानद के इस पार रहनेवाले उनके अन्य सहयोगियों के पास यह उत्तर भेजा, “कुशल, हो!

18 जो चिट्ठी तुम लोगों ने हमारे पास भेजी वह मेरे सामने पढ़कर साफ-साफ सुनाई गई।

19 और मेरी आज्ञा से खोज किए जाने पर जान पड़ा है, कि वह नगर प्राचीनकाल से राजाओं के विरुद्ध सिर उठाता आया है और उसमें दंगा और बलवा होता आया है।

20 यरूशलेम के सामर्थी राजा भी हुए जो महानद के पार से समस्त देश पर राज्य करते थे, और कर, चुंगी और राहदारी उनको दी जाती थी।

21 इसलिए अब इस आज्ञा का प्रचार कर कि वे मनुष्य रोके जाएँ और जब तक मेरी ओर से आज्ञा न मिले, तब तक वह नगर बनाया न जाए।

22 और चौकस रहो, इस बात में ढीले न होना; राजाओं की हानि करनेवाली वह बुराई क्यों बढ़ने जाए?”

23 जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिट्ठी रहूम और शिमशै मंत्री और उनके सहयोगियों को पढ़कर सुनाई गई, तब वे उतावली करके यरूशलेम को यहूदियों के पास गए और बलपूर्वक उनको रोक दिया।

24 तब परमेश्वर के भवन का काम जो यरूशलेम में है, रुक गया; और फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक रुका रहा।

## 5

1 तब हागगै नामक नबी और इद्दो का पोता जकर्याह यहूदा और यरूशलेम के यहूदियों से नबूवत करने लगे, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के नाम से उनसे नबूवत की।

2 तब शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशुअ, कमर बाँधकर परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है बनाने लगे; और परमेश्वर के वे नबी

3 तब यहूदा के राजा दारा के राज्य के दूसरे वर्ष में यहूदा के यहूदियों से नबूवत करने लगे, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के नाम से उनसे नबूवत की।

\* 5:2 1:1-1:2 1:3-1:4 1:5-1:6 1:7-1:8 1:9-1:10 1:11-1:12 1:13-1:14 1:15-1:16 1:17-1:18 1:19-1:20 1:21-1:22 1:23-1:24 1:25-1:26 1:27-1:28 1:29-1:30 1:31-1:32 1:33-1:34 1:35-1:36 1:37-1:38 1:39-1:40 1:41-1:42 1:43-1:44 1:45-1:46 1:47-1:48 1:49-1:50 1:51-1:52 1:53-1:54 1:55-1:56 1:57-1:58 1:59-1:60 1:61-1:62 1:63-1:64 1:65-1:66 1:67-1:68 1:69-1:70 1:71-1:72 1:73-1:74 1:75-1:76 1:77-1:78 1:79-1:80 1:81-1:82 1:83-1:84 1:85-1:86 1:87-1:88 1:89-1:90 1:91-1:92 1:93-1:94 1:95-1:96 1:97-1:98 1:99-1:100 1:101-1:102 1:103-1:104 1:105-1:106 1:107-1:108 1:109-1:110 1:111-1:112 1:113-1:114 1:115-1:116 1:117-1:118 1:119-1:120 1:121-1:122 1:123-1:124 1:125-1:126 1:127-1:128 1:129-1:130 1:131-1:132 1:133-1:134 1:135-1:136 1:137-1:138 1:139-1:140 1:141-1:142 1:143-1:144 1:145-1:146 1:147-1:148 1:149-1:150 1:151-1:152 1:153-1:154 1:155-1:156 1:157-1:158 1:159-1:160 1:161-1:162 1:163-1:164 1:165-1:166 1:167-1:168 1:169-1:170 1:171-1:172 1:173-1:174 1:175-1:176 1:177-1:178 1:179-1:180 1:181-1:182 1:183-1:184 1:185-1:186 1:187-1:188 1:189-1:190 1:191-1:192 1:193-1:194 1:195-1:196 1:197-1:198 1:199-1:200 1:201-1:202 1:203-1:204 1:205-1:206 1:207-1:208 1:209-1:210 1:211-1:212 1:213-1:214 1:215-1:216 1:217-1:218 1:219-1:220 1:221-1:222 1:223-1:224 1:225-1:226 1:227-1:228 1:229-1:230 1:231-1:232 1:233-1:234 1:235-1:236 1:237-1:238 1:239-1:240 1:241-1:242 1:243-1:244 1:245-1:246 1:247-1:248 1:249-1:250 1:251-1:252 1:253-1:254 1:255-1:256 1:257-1:258 1:259-1:260 1:261-1:262 1:263-1:264 1:265-1:266 1:267-1:268 1:269-1:270 1:271-1:272 1:273-1:274 1:275-1:276 1:277-1:278 1:279-1:280 1:281-1:282 1:283-1:284 1:285-1:286 1:287-1:288 1:289-1:290 1:291-1:292 1:293-1:294 1:295-1:296 1:297-1:298 1:299-1:300 1:301-1:302 1:303-1:304 1:305-1:306 1:307-1:308 1:309-1:310 1:311-1:312 1:313-1:314 1:315-1:316 1:317-1:318 1:319-1:320 1:321-1:322 1:323-1:324 1:325-1:326 1:327-1:328 1:329-1:330 1:331-1:332 1:333-1:334 1:335-1:336 1:337-1:338 1:339-1:340 1:341-1:342 1:343-1:344 1:345-1:346 1:347-1:348 1:349-1:350 1:351-1:352 1:353-1:354 1:355-1:356 1:357-1:358 1:359-1:360 1:361-1:362 1:363-1:364 1:365-1:366 1:367-1:368 1:369-1:370 1:371-1:372 1:373-1:374 1:375-1:376 1:377-1:378 1:379-1:380 1:381-1:382 1:383-1:384 1:385-1:386 1:387-1:388 1:389-1:390 1:391-1:392 1:393-1:394 1:395-1:396 1:397-1:398 1:399-1:400 1:401-1:402 1:403-1:404 1:405-1:406 1:407-1:408 1:409-1:410 1:411-1:412 1:413-1:414 1:415-1:416 1:417-1:418 1:419-1:420 1:421-1:422 1:423-1:424 1:425-1:426 1:427-1:428 1:429-1:430 1:431-1:432 1:433-1:434 1:435-1:436 1:437-1:438 1:439-1:440 1:441-1:442 1:443-1:444 1:445-1:446 1:447-1:448 1:449-1:450 1:451-1:452 1:453-1:454 1:455-1:456 1:457-1:458 1:459-1:460 1:461-1:462 1:463-1:464 1:465-1:466 1:467-1:468 1:469-1:470 1:471-1:472 1:473-1:474 1:475-1:476 1:477-1:478 1:479-1:480 1:481-1:482 1:483-1:484 1:485-1:486 1:487-1:488 1:489-1:490 1:491-1:492 1:493-1:494 1:495-1:496 1:497-1:498 1:499-1:500 1:501-1:502 1:503-1:504 1:505-1:506 1:507-1:508 1:509-1:510 1:511-1:512 1:513-1:514 1:515-1:516 1:517-1:518 1:519-1:520 1:521-1:522 1:523-1:524 1:525-1:526 1:527-1:528 1:529-1:530 1:531-1:532 1:533-1:534 1:535-1:536 1:537-1:538 1:539-1:540 1:541-1:542 1:543-1:544 1:545-1:546 1:547-1:548 1:549-1:550 1:551-1:552 1:553-1:554 1:555-1:556 1:557-1:558 1:559-1:560 1:561-1:562 1:563-1:564 1:565-1:566 1:567-1:568 1:569-1:570 1:571-1:572 1:573-1:574 1:575-1:576 1:577-1:578 1:579-1:580 1:581-1:582 1:583-1:584 1:585-1:586 1:587-1:588 1:589-1:590 1:591-1:592 1:593-1:594 1:595-1:596 1:597-1:598 1:599-1:600 1:601-1:602 1:603-1:604 1:605-1:606 1:607-1:608 1:609-1:610 1:611-1:612 1:613-1:614 1:615-1:616 1:617-1:618 1:619-1:620 1:621-1:622 1:623-1:624 1:625-1:626 1:627-1:628 1:629-1:630 1:631-1:632 1:633-1:634 1:635-1:636 1:637-1:638 1:639-1:640 1:641-1:642 1:643-1:644 1:645-1:646 1:647-1:648 1:649-1:650 1:651-1:652 1:653-1:654 1:655-1:656 1:657-1:658 1:659-1:660 1:661-1:662 1:663-1:664 1:665-1:666 1:667-1:668 1:669-1:670 1:671-1:672 1:673-1:674 1:675-1:676 1:677-1:678 1:679-1:680 1:681-1:682 1:683-1:684 1:685-1:686 1:687-1:688 1:689-1:690 1:691-1:692 1:693-1:694 1:695-1:696 1:697-1:698 1:699-1:700 1:701-1:702 1:703-1:704 1:705-1:706 1:707-1:708 1:709-1:710 1:711-1:712 1:713-1:714 1:715-1:716 1:717-1:718 1:719-1:720 1:721-1:722 1:723-1:724 1:725-1:726 1:727-1:728 1:729-1:730 1:731-1:732 1:733-1:734 1:735-1:736 1:737-1:738 1:739-1:740 1:741-1:742 1:743-1:744 1:745-1:746 1:747-1:748 1:749-1:750 1:751-1:752 1:753-1:754 1:755-1:756 1:757-1:758 1:759-1:760 1:761-1:762 1:763-1:764 1:765-1:766 1:767-1:768 1:769-1:770 1:771-1:772 1:773-1:774 1:775-1:776 1:777-1:778 1:779-1:780 1:781-1:782 1:783-1:784 1:785-1:786 1:787-1:788 1:789-1:790 1:791-1:792 1:793-1:794 1:795-1:796 1:797-1:798 1:799-1:800 1:801-1:802 1:803-1:804 1:805-1:806 1:807-1:808 1:809-1:810 1:811-1:812 1:813-1:814 1:815-1:816 1:817-1:818 1:819-1:820 1:821-1:822 1:823-1:824 1:825-1:826 1:827-1:828 1:829-1:830 1:831-1:832 1:833-1:834 1:835-1:836 1:837-1:838 1:839-1:840 1:841-1:842 1:843-1:844 1:845-1:846 1:847-1:848 1:849-1:850 1:851-1:852 1:853-1:854 1:855-1:856 1:857-1:858 1:859-1:860 1:861-1:862 1:863-1:864 1:865-1:866 1:867-1:868 1:869-1:870 1:871-1:872 1:873-1:874 1:875-1:876 1:877-1:878 1:879-1:880 1:881-1:882 1:883-1:884 1:885-1:886 1:887-1:888 1:889-1:890 1:891-1:892 1:893-1:894 1:895-1:896 1:897-1:898 1:899-1:900 1:901-1:902 1:903-1:904 1:905-1:906 1:907-1:908 1:909-1:910 1:911-1:912 1:913-1:914 1:915-1:916 1:917-1:918 1:919-1:920 1:921-1:922 1:923-1:924 1:925-1:926 1:927-1:928 1:929-1:930 1:931-1:932 1:933-1:934 1:935-1:936 1:937-1:938 1:939-1:940 1:941-1:942 1:943-1:944 1:945-1:946 1:947-1:948 1:949-1:950 1:951-1:952 1:953-1:954 1:955-1:956 1:957-1:958 1:959-1:960 1:961-1:962 1:963-1:964 1:965-1:966 1:967-1:968 1:969-1:970 1:971-1:972 1:973-1:974 1:975-1:976 1:977-1:978 1:979-1:980 1:981-1:982 1:983-1:984 1:985-1:986 1:987-1:988 1:989-1:990 1:991-1:992 1:993-1:994 1:995-1:996 1:997-1:998 1:999-1:1000 2:1-2:2 2:3-2:4 2:5-2:6 2:7-2:8 2:9-2:10 2:11-2:12 2:13-2:14 2:15-2:16 2:17-2:18 2:19-2:20 2:21-2:22 2:23-2:24 2:25-2:26 2:27-2:28 2:29-2:30 2:31-2:32 2:33-2:34 2:35-2:36 2:37-2:38 2:39-2:40 2:41-2:42 2:43-2:44 2:45-2:46 2:47-2:48 2:49-2:50 2:51-2:52 2:53-2:54 2:55-2:56 2:57-2:58 2:59-2:60 2:61-2:62 2:63-2:64 2:65-2:66 2:67-2:68 2:69-2:70 2:71-2:72 2:73-2:74 2:75-2:76 2:77-2:78 2:79-2:80 2:81-2:82 2:83-2:84 2:85-2:86 2:87-2:88 2:89-2:90 2:91-2:92 2:93-2:94 2:95-2:96 2:97-2:98 2:99-2:100 2:101-2:102 2:103-2:104 2:105-2:106 2:107-2:108 2:109-2:110 2:111-2:112 2:113-2:114 2:115-2:116 2:117-2:118 2:119-2:120 2:121-2:122 2:123-2:124 2:125-2:126 2:127-2:128 2:129-2:130 2:131-2:132 2:133-2:134 2:135-2:136 2:137-2:138 2:139-2:140 2:141-2:142 2:143-2:144 2:145-2:146 2:147-2:148 2:149-2:150 2:151-2:152 2:153-2:154 2:155-2:156 2:157-2:158 2:159-2:160 2:161-2:162 2:163-2:164 2:165-2:166 2:167-2:168 2:169-2:170 2:171-2:172 2:173-2:174 2:175-2:176 2:177-2:178 2:179-2:180 2:181-2:182 2:183-2:184 2:185-2:186 2:187-2:188 2:189-2:190 2:191-2:192 2:193-2:194 2:195-2:196 2:197-2:198 2:199-2:200 2:201-2:202 2:203-2:204 2:205-2:206 2:207-2:208 2:209-2:210 2:211-2:212 2:213-2:214 2:215-2:216 2:217-2:218 2:219-2:220 2:221-2:222 2:223-2:224 2:225-2:226 2:227-2:228 2:229-2:230 2:231-2:232 2:233-2:234 2:235-2:236 2:237-2:238 2:239-2:240 2:241-2:242 2:243-2:244 2:245-2:246 2:247-2:248 2:249-2:250 2:251-2:252 2:253-2:254 2:255-2:256 2:257-2:258 2:259-2:260 2:261-2:262 2:263-2:264 2:265-2:266 2:267-2:268 2:269-2:270 2:271-2:272 2:273-2:274 2:275-2:276 2:277-2:278 2:279-2:280 2:281-2:282 2:283-2:284 2:285-2:286 2:287-2:288 2:289-2:290 2:291-2:292 2:293-2:294 2:295-2:296 2:297-2:298 2:299-2:300 2:301-2:302 2:303-2:304 2:305-2:306 2:307-2:308 2:309-2:310 2:311-2:312 2:313-2:314 2:315-2:316 2:317-2:318 2:319-2:320 2:321-2:322 2:323-2:324 2:325-2:326 2:327-2:328 2:329-2:330 2:331-2:332 2:333-2:334 2:335-2:336 2:337-2:338 2:339-2:340 2:341-2:342 2:343-2:344 2:345-2:346 2:347-2:348 2:349-2:350 2:351-2:352 2:353-2:354 2:355-2:356 2:357-2:358 2:359-2:360 2:361-2:362 2:363-2:364 2:365-2:366 2:367-2:368 2:369-2:370 2:371-2:372 2:373-2:374 2:375-2:376 2:377-2:378 2:379-2:380 2:381-2:382 2:383-2:384 2:385-2:386 2:387-2:388 2:389-2:390 2:391-2:392 2:393-2:394 2:395-2:396 2:397-2:398 2:399-2:400 2:401-2:402 2:403-2:404 2:405-2:406 2:407-2:408 2:409-2:410 2:411-2:412 2:413-2:414 2:415-2:416 2:417-2:418 2:419-2:420 2:421-2:422 2:423-2:424 2:425-2:426 2:427-2:428 2:429-2:430 2:431-2:432 2:433-2:434 2:435-2:436 2:437-2:438 2:439-2:440 2:441-2:442 2:443-2:444 2:445-2:446 2:447-2:448 2:449-2:450 2:451-2:452 2:453-2:454 2:455-2:456 2:457-2:458 2:459-2:460 2:461-2:462 2:463-2:464 2:465-2:466 2:467-2:468 2:469-2:470 2:471-2:472 2:473-2:474 2:475-2:476 2:477-2:478 2:479-2:480 2:481-2:482 2:483-2:484 2:485-2:486 2:487-2:488 2:489-2:490 2:491-2:492 2:493-2:494 2:495-2:496 2:497-2:498 2:499-2:500 2:501-2:502 2:503-2:504 2:505-2:506 2:507-2:508 2:509-2:510 2:511-2:512 2:513-2:514 2:515-2:516 2:517-2:518 2:519-2:520 2:521-2:522 2:523-2:524 2:525-2:526 2:527-2:528 2:529-2:530 2:531-2:532 2:533-2:534 2:535-2:536 2:537-2:538 2:539-2:540 2:541-2:542 2:543-2:544 2:545-2:546 2:547-2:548 2:549-2:550 2:551-2:552 2:553-2:554 2:555-2:556 2:557-2:558 2:559-2:560 2:561-2:562 2:563-2:564 2:565-2:566 2:567-2:568 2:569-2:570 2:571-2:572 2:573-2:574 2:575-2:576 2:577-2:578 2:579-2:580 2:581-2:582 2:583-2:584 2:585-2:586 2:587-2:588 2:589-2:590 2:591-2:592 2:593-2:594 2:595-2:596 2:597-2:598 2:599-2:600 2:601-2:602 2:603-2:604 2:605-2:606 2:607-2:608 2:609-2:610 2:611-2:612 2:613-2:614 2:615-2:616 2:617-2:618 2:619-2:620 2:621-2:622 2:623-2:624 2:625-2:626 2:627-2:628 2:629-2:630 2:631-2:632 2:633-2:634 2:635-2:636 2:637-2:638 2:639-2:640 2:641-2:642 2:643-2:644 2:645-2:646 2:647-2:648 2:649-2:650 2:651-2:652 2:653-2:654 2:655-2:656 2:657-2:658 2:659-2:660 2:661-2:662 2:663-2:664 2:665-2:666 2:667-2:668 2:669-2:670 2:671-2:672 2:673-2:674 2:675-2:676 2:677-2:678 2:679-2:680 2:681-2:682 2:683-2:684 2:685-2:686 2:687-2:688 2:689-2:690 2:691-2:692 2:693-2:694 2:695-2:696 2:697-2:698 2:699-2:700 2:701-2:702 2:703-2:704 2:705-2:706 2:707-2:708 2:709-2:710 2:711-2:712 2:713-2:714 2:715-2:716 2:717-2:718 2:719-2:720 2:721-2:722 2:723-2:724 2:725-2:726 2:727-2:728 2:729-2:730 2:731-2:732 2:733-2:734 2:735-2:736 2:737-2:738 2:739-2:740 2:741-2:742 2:743-2:744 2:745-2:746 2:747-2:748 2:749-2:750 2:751-2:752 2:753-2:754 2:755-2:756 2:757-2:758 2:759-2:760 2:761-2:762 2:763-2:764 2:765-2:766 2:767-2:768 2:769-2:770 2:771-2:772 2:773-2:774 2:775-2:776 2:777-2:778 2:779-2:780 2:781-2:782 2:783-2:784 2:785-2:786 2:787-2:788 2:789-2:790 2:791-2:792 2:793-2:794 2:795-2:796 2:797-2:798 2:799-2:800 2:801-2:802 2:803-2:804 2:805-2:806 2:807-2:808 2:809-2:810 2:811-2:812 2:813-2:814 2:815-2:816 2:817-2:818 2:819-2:820 2:821-2:822 2:823-2:824 2:825-2:826 2:827-2:828 2:829-2:830 2:831-2:832 2:833-2:834 2:835-2:836 2:837-2:838 2:839-2:840 2:841-2:842 2:843-2:844 2:845-2:846 2:847-2:848 2:849-2:850 2:851-2:852 2:853-2:854 2:855-2:856 2:857-2:858 2:859-2:860 2:861-2:862 2:863-2:864 2:865-2:866 2:867-2:868 2:869-2:870 2:871-2:872 2:873-2:874



18 तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है, वैसे ही उन्होंने परमेश्वर की आराधना के लिये जो यरूशलेम में है, बारी-बारी से याजकों और दल-दल के लेवियों को नियुक्त कर दिया।

19 फिर पहले महीने के चौदहवें दिन को बँधुआई से आए हुए लोगों ने फसह माना।

20 क्योंकि याजकों और लेवियों ने एक मन होकर, अपने-अपने को शुद्ध किया था; इसलिए वे सब के सब शुद्ध थे। उन्होंने बँधुआई से आए हुए सब लोगों और अपने भाई याजकों के लिये और अपने-अपने लिये फसह के पशुबलि किए।

21 तब बँधुआई से लौटे हुए इस्राएली और जितने और देश की अन्यजातियों की अशुद्धता से इसलिए अलग हो गए थे कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज करें, उन सभी ने भोजन किया।

22 वे अखमीरी रोटी का पर्व सात दिन तक आनन्द के साथ मनाते रहे; क्योंकि यहोवा ने उन्हें आनन्दित किया था, और अशूर के राजा का मन उनकी ओर ऐसा फेर दिया कि वह परमेश्वर अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर के भवन के काम में उनकी सहायता करे।

## 7

□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

1 इन बातों के बाद अर्थात् फारस के राजा अर्तक्षत्र के दिनों में, एज्जा बाबेल से यरूशलेम को गया। वह सरयाह का पुत्र था। सरयाह अजर्याह का पुत्र था, अजर्याह हिल्किय्याह का,

2 हिल्किय्याह शल्लूम का, शल्लूम सादोक का, सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमर्याह का, अमर्याह अजर्याह का,

3 अजर्याह मरायोत का,

4 मरायोत जरहयाह का, जरहयाह उज्जी का, उज्जी बुक्की का,

5 बुक्की अबीशू का, अबीशू पीनहास का, पीनहास एलीआजर का और एलीआजर हारून महायाजक का पुत्र था।

6 यही एज्जा मूसा की व्यवस्था के विषय जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निपुण शास्त्री था। उसके परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो उस पर रही, इसके कारण राजा ने उसका मुँह माँगा वर दे दिया।

7 कुछ इस्राएली, और याजक लेवीय, गवैये, और द्वारपाल और मन्दिर के सेवकों में से कुछ लोग अर्तक्षत्र राजा के सातवें वर्ष में यरूशलेम को गए।

8 वह राजा के सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम को पहुँचा।

9 पहले महीने के पहले दिन को वह बाबेल से चल दिया, और उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर रही, इस कारण पाँचवें महीने के पहले दिन वह यरूशलेम को पहुँचा।

10 क्योंकि एज्जा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था।

11 जो चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्जा याजक और शास्त्री को दी थी जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का, और उसकी इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था, उसकी नकल यह है;

12 “एज्जा याजक के नाम जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री है, उसको अर्तक्षत्र महाराजाधिराज की ओर से।

13 मैं यह आज्ञा देता हूँ, कि मेरे राज्य में जितने इस्राएली और उनके याजक और लेवीय अपनी इच्छा से यरूशलेम जाना चाहें, वे तेरे साथ जाने पाएँ।

14 “तू तो राजा और उसके सातों मंत्रियों की ओर से इसलिए भेजा जाता है, कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहूदा और यरूशलेम की दशा जान ले,

15 और जो चाँदी-सोना, राजा और उसके मंत्रियों ने इस्राएल के परमेश्वर को जिसका निवास यरूशलेम में है, अपनी इच्छा से दिया है,

16 और जितना चाँदी-सोना समस्त बाबेल प्रान्त में तुझे मिलेगा, और जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो यरूशलेम में हैं देंगे, उसको ले जाए।

17 इस कारण तू उस रुपये से फुर्ती के साथ बैल, मेढ्रे और मेम्ने उनके योग्य अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओं समेत मोल लेना और उस वेदी पर चढ़ाना, जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेम वाले भवन में है।

18 और जो चाँदी-सोना बचा रहे, उससे जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को उचित जान पड़े, वही अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना।

19 तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये जो पात्र तुझे सौंपे जाते हैं, उन्हें यरूशलेम के परमेश्वर के सामने दे देना।

20 इनसे अधिक जो कुछ तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये आवश्यक जानकर देना पड़े, वह राज खजाने में से दे देना।

21 “मैं अर्तक्षत्र राजा यह आज्ञा देता हूँ, कि तुम महानद के पार के सब खजांचियों से जो कुछ एज्जा याजक, जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का शास्त्री







कारण थरथराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए, और मैं साँझ की भेंट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा।

5 परन्तु साँझ की भेंट के समय मैं वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा, फिर घुटनों के बल झुका, और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा:

6 “हे मेरे परमेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मुँह उठाते लज्जा आती है, और हे मेरे परमेश्वर! मेरा मुँह काला है; क्योंकि हम लोगों के अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते-बढ़ते आकाश तक पहुँचा है। (222222. 9:7,8)

7 अपने पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं, और अपने अधर्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश-देश के राजाओं के हाथ में किए गए कि तलवार, दासत्व, लूटे जाने, और मुँह काला हो जाने की विपत्तियों में पड़े, जैसे कि आज हमारी दशा है।

8 अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम में से 2222-2222 22 2222222†, और हमको उसके पवित्रस्थान में एक खूँटी मिले, और हमारा परमेश्वर हमारी आँखों में ज्योति आने दे, और दासत्व में हमको कुछ विश्रान्ति मिले।

9 हम दास तो हैं ही, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हमको नहीं छोड़ दिया, वरन् फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया, कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खण्डहरों को सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली।

10 “अब हे हमारे परमेश्वर, इसके बाद हम क्या कहें, यही कि हमने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है, (222222. 9:5,10,11)

11 जो तूने यह कहकर अपने दास नबियों के द्वारा दीं, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो, वह तो देश-देश के लोगों की अशुद्धता के कारण और उनके धिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है, उन्होंने उसे एक सीमा से दूसरी सीमा तक अपनी अशुद्धता से भर दिया है।

12 इसलिए अब तू न तो अपनी बेटियाँ उनके बेटों को ब्याह देना और न उनकी बेटियों से अपने बेटों का ब्याह करना, और न कभी उनका कुशल क्षेम चाहना, इसलिए कि तुम बलवान बनो और उस देश के अच्छे-

अच्छे पदार्थ खाने पाओ, और उसे ऐसा छोड़ जाओ, कि वह तुम्हारे वंश के अधिकार में सदैव बना रहे।”

13 और उस सब के बाद जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जबकि हे हमारे परमेश्वर तूने हमारे अधर्म के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया, वरन् हम में से कितनों को बचा रखा है,

14 तो क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर से उल्लंघन करके इन धिनौने काम करनेवाले लोगों से समधियाना का सम्बंध करें? क्या तू हम पर यहाँ तक कोप न करेगा जिससे हम मिट जाएँ और न तो कोई बचे और न कोई रह जाए?

15 हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! तू धर्मी है, हम बचकर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान है। देख, हम तेरे सामने दोषी हैं, इस कारण कोई तेरे सामने खड़ा नहीं रह सकता।”

## 10

2222222222 22 2222222222 222222222222 22 2222 22222

1 जब एज्जा 2222222222 22 2222 22 2222222\* पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था, तब इस्राएल में से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की एक बहुत बड़ी मण्डली उसके पास इकट्ठी हुई; और लोग बिलख-बिलख कर रो रहे थे।

2 तब 2222222† का पुत्र शकन्याह जो एलाम के वंश में का था, एज्जा से कहने लगा, “हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह कर अपने परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है, परन्तु इस दशा में भी इस्राएल के लिये आशा है।

3 अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा बाँधे, कि हम अपने प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेवालों की सम्मति के अनुसार ऐसी सब स्त्रियों को और उनके बच्चों को दूर करें; और व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए।

4 तू उठ, क्योंकि यह काम तेरा ही है, और हम तेरे साथ हैं; इसलिए हियाव बाँधकर इस काम में लग जा।”

5 तब एज्जा उठा, और याजकों, लेवियों और सब इस्राएलियों के प्रधानों को यह शपथ खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे; और उन्होंने वैसी ही शपथ खाई।

6 तब एज्जा परमेश्वर के भवन के सामने से उठा, और एल्याशीब के पुत्र यहोहानान की कोठरी में गया, और

† 9:8 2222-2222 22 2222222: यह एक नया समुदाय था जो बन्धुआई से लौटकर आया था।

\* 10:1 2222222222 22 2222 22 2222222: मन्दिर के सामने उसकी ओर मुख करके प्रार्थना की। † 10:2 2222222: यह उनमें से एक था जिसने मूर्तिपूजक स्त्री से विवाह किया था। (एज्जा 10:26) और शकन्याह बुराई ले आया था।

वहाँ पहुँचकर न तो रोटी खाई, न पानी पिया, क्योंकि वह बँधुआई में से निकल आए हुआओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा।

7 तब उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में रहनेवाले बँधुआई में से आए हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया, कि तुम यरूशलेम में इकट्ठे हो;

8 और जो कोई हाकिमों और पुरनियों की सम्मति न मानेगा और तीन दिन के भीतर न आए तो उसकी समस्त धन-सम्पत्ति नष्ट की जाएगी और वह आप बँधुआई से आए हुआओं की सभा से अलग किया जाएगा।

9 तब यहूदा और बिन्यामीन के सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यरूशलेम में इकट्ठे हुए; यह नौवें महीने के बीसवें दिन में हुआ; और सब लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और भारी वर्षा के मारे काँपते हुए बैठे रहे।

10 तब एज़ा याजक खड़ा होकर, उनसे कहने लगा, “तुम लोगों ने विश्वासघात करके अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह लीं, और इससे इस्राएल का दोष बढ़ गया है।

11 सो अब अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के सामने अपना पाप मान लो, और उसकी इच्छा पूरी करो, और इस देश के लोगों से और अन्यजाति स्त्रियों से अलग हो जाओ।”

12 तब पूरी मण्डली के लोगों ने ऊँचे शब्द से कहा, “जैसा तूने कहा है, वैसा ही हमें करना उचित है।

13 परन्तु लोग बहुत हैं, और वर्षा का समय है, और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और यह दो एक दिन का काम नहीं है, क्योंकि हमने इस बात में बड़ा अपराध किया है।

14 समस्त मण्डली की ओर से हमारे हाकिम नियुक्त किए जाएँ; और जब तक हमारे परमेश्वर का भडका हुआ कोप हम से दूर न हो, और यह काम पूरा न हो जाए, तब तक हमारे नगरों के जितने निवासियों ने अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली हों, वे नियत समयों पर आया करें, और उनके संग एक नगर के पुरनिये और न्यायी आएँ।”

15 इसके विरुद्ध केवल असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के पुत्र यहजयाह खड़े हुए, और मशुल्लाम और शब्बतै लेवियों ने उनकी सहायता की।

16 परन्तु बँधुआई से आए हुए लोगों ने वैसा ही किया। तब एज़ा याजक और पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुष अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग किए गए, और दसवें

महीने के पहले दिन को इस बात की तहकीकात के लिये बैठे।

17 और पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने उन सब पुरुषों की जाँच पूरी कर ली, जिन्होंने अन्यजाति स्त्रियों को ब्याह लिया था।

18 याजकों की सन्तान में से; ये जन पाए गए जिन्होंने अन्यजाति स्त्रियों को ब्याह लिया था: येशुअ के पुत्र, योसादाक के पुत्र, और उसके भाई मासेयाह, एलीएजेर, यारीब और गदल्याह।

19 इन्होंने ~~एलीएजेर, यारीब, गदल्याह, योसादाक, येशुअ~~, कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल देंगे, और उन्होंने दोषी ठहरकर, अपने-अपने दोष के कारण एक-एक मेढा बलि किया।

20 इम्मर की सन्तान में से हनानी और जबद्याह।

21 हारीम की सन्तान में से मासेयाह, एलिय्याह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

22 पशहूर की सन्तान में से एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

23 फिर लेवियों में से योजाबाद, शिमी, केलायाह जो कलीता कहलाता है, पतह्याह, यहूदा और एलीएजेर।

24 गवैयों में से एल्याशीब; और द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम और ऊरी।

25 इस्राएल में से परोश की सन्तान में रम्याह, यिज्जियाह, मल्लिक्य्याह, मिय्यामीन, एलीआजर, मल्लिक्य्याह और बनायाह।

26 एलाम की सन्तान में से मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल अब्दी, यरेमोत और एलिय्याह।

27 और जत्तू की सन्तान में से एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अज़ीज़ा।

28 बेबै की सन्तान में से यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै।

29 बानी की सन्तान में से मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत।

30 पहत्मोआब की सन्तान में से अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे।

31 हारीम की सन्तान में से एलीएजेर, यिशिशयाह, मल्लिक्य्याह, शमायाह, शिमोन;

32 बिन्यामीन, मल्लूक और शेमर्याह।

33 हाशूम की सन्तान में से; मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी।

34 और बानी की सन्तान में से; मादै, अम्राम, ऊएल;

35 बनायाह, बेदयाह, कलूही;

36 वन्याह, मरेमोत, एल्याशीब;

37 मत्तन्याह, मत्तनै, यासू;

38 बानी, बिन्नूई, शिमी;

39 शेलेम्याह, नातान, अदायाह;

40 मक्नदबै, शाशै, शारै;

41 अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह;

42 शल्लूम, अमर्याह और यूसुफ ।

43 नबो की सन्तान में से; यीएल, मत्तित्याह, जाबाद,  
जबीना, यद्दई, योएल और बनायाह ।

44 इन सभी ने अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली थीं, और  
बहुतों की स्त्रियों से लड़के भी उत्पन्न हुए थे ।

## नहेम्याह

११११

यहूदी परम्परा के अनुसार नहेम्याह (यहोवा शान्तिदाता है) इस ऐतिहासिक पुस्तक का प्रमुख लेखक है। पुस्तक का अधिकांश भाग प्रथम पुरुष के दृष्टिकोण से लिखा गया है। उसकी युवावस्था और पृष्ठभूमि के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। हम उसे एक वयस्क ही देखते हैं जो फारस के राजा के महल में सेवारत है। अर्तक्षत्र राजा का पिलानेहारा (नहे. 1:11-2:1)। नहेम्याह की पुस्तक को एज्रा की पुस्तक की उत्तर कथा रूप में पढ़ा जा सकता है। कुछ विद्वानों के विचार में ये दोनों पुस्तकें मूल रूप से एक ही ग्रन्थ रही हैं।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 457 - 400 ई.पू

यह पुस्तक यहूदा, सम्भवतः यरूशलेम में लिखी गई थी, फारसी राज के समय बाबेल से लौटने के बाद।

१११११११

नहेम्याह के लक्षित पाठक इस्राएलियों की पीढ़ियाँ हैं जो बाबेल की बन्धुआई से लौटे थे।

१११११११११

लेखक स्पष्ट इच्छा व्यक्त करता है कि उसके पाठक परमेश्वर के सामर्थ्य और उसके चुने हुएों के लिए उसके प्रेम को समझें और उसके प्रति अपनी वाचा के उत्तरदायित्वों को अंतर्ग्रहण करें। परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है। वह मनुष्यों के जीवन में रुचि रखता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करने में जो भी आवश्यक है उसे देता है। मनुष्यों को एकजुट होकर काम करना है और अपने संसाधनों को आपस में बाँटना है। परमेश्वर के अनुयायियों के जीवन में स्वार्थ का कोई स्थान नहीं है। नहेम्याह ने धनवानों और कुलीन जनों को स्मरण कराया कि गरीबों से अनुचित लाभ न उठाएँ।

१११ ११११

पुनर्निर्माण

रूपरेखा

1. प्रशासक रूप में नहेम्याह का प्रथम प्रशासन काल — 1:1-12:47
2. प्रशासक रूप में नहेम्याह का दूसरा प्रशासन काल — 13:1-31

११११११११ ११ ११११ ११११११११ ११११११११११

\* 1:3 १११११११ ११ ११११११११ ११११ ११११: शहरपनाह के पुनर्निर्माण का कार्य सूडो स्मेरदिस के समय में रुकवा दिया गया था। (एज्रा 4:12-24) वह अब भी खण्डहर ही था। अश्रुओं की मूर्तिकला से विदित होता है कि नगर द्वार जला देना उस समय का एक आम प्रचलन था।

1 हकल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन। बीसवें वर्ष के किसलेव नामक महीने में, जब मैं शूशन नामक राजगढ़ में रहता था,

2 तब हनानी नामक मेरा एक भाई और यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैंने उनसे उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बंधुआई से छूट गए थे, और यरूशलेम के विषय में पूछा।

3 उन्होंने मुझसे कहा, “जो बचे हुए लोग बंधुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं, वे बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है; क्योंकि ११११११११ ११ १११११११११ १११११ ११११”, और उसके फाटक जले हुए हैं।”

4 ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कुछ दिनों तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कहकर प्रार्थना करता रहा।

5 “हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान और भययोग्य परमेश्वर! तू जो अपने प्रेम रखनेवाले और आज्ञा माननेवाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है;

6 तू कान लगाए और आँखें खोले रह, कि जो प्रार्थना में तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के लिये दिन-रात करता रहता हूँ, उसे तू सुन ले। मैं इस्राएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विरुद्ध किए हैं, मान लेता हूँ। मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है।

7 हमने तेरे सामने बहुत बुराई की है, और जो आज्ञाएँ, विधियाँ और नियम तूने अपने दास मूसा को दिए थे, उनको हमने नहीं माना।

8 उस वचन की सुधि ले, जो तूने अपने दास मूसा से कहा था, ‘यदि तुम लोग विश्वासघात करो, तो मैं तुम को देश-देश के लोगों में तितर-बितर करूँगा।’

9 परन्तु यदि तुम मेरी ओर फिरो, और मेरी आज्ञाएँ मानो, और उन पर चलो, तो चाहे तुम में से निकाले हुए लोग आकाश की छोर में भी हों, तो भी मैं उनको वहाँ से इकट्ठा करके उस स्थान में पहुँचाऊँगा, जिसे मैंने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है।”

10 अब वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग हैं जिनको तूने अपनी बड़ी सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है।

11 हे प्रभु विनती यह है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का

भय मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपने दास का काम सफल कर, और उस पुरुष को उस पर दयालु कर।”

मैं तो राजा का पियाऊ था।

## 2

१ अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नामक महीने

में, जब उसके सामने दाखमधु था, तब मैंने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इससे पहले मैं उसके सामने कभी उदास न हुआ था।

2 तब राजा ने मुझसे पूछा, “तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुँह क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी।” तब मैं अत्यन्त डर गया।

3 मैंने राजा से कहा, “राजा सदा जीवित रहे! जब वह नगर जिसमें मेरे पुरखाओं की कब्रें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुँह क्यों न उतरे?”

4 राजा ने मुझसे पूछा, “फिर तू क्या माँगता है?” तब मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके, राजा से कहा;

5 “यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कब्रों के नगर को भेज, ताकि मैं उसे बनाऊँ।”

6 तब राजा ने जिसके पास २२२२\* भी बैठी थी, मुझसे पूछा, “तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा?” अतः राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ; और मैंने उसके लिये एक समय नियुक्त किया।

7 फिर मैंने राजा से कहा, “यदि राजा को भाए, तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिट्ठियाँ मुझे दी जाएँ कि जब तक मैं यहूदा को न पहुँचूँ, तब तक वे मुझे अपने-अपने देश में से होकर जाने दें।

8 और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिये, और शहरपनाह के, और उस घर के लिये, जिसमें मैं जाकर रहूँगा, लकड़ी दे।” मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर थी, इसलिए राजा ने यह विनती स्वीकार कर ली।

9 तब मैंने महानद के पार के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की चिट्ठियाँ दीं। राजा ने मेरे संग सेनापति और सवार भी भेजे थे।

10 यह सुनकर कि एक मनुष्य इस्राएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है, होरोनी सम्बल्लत

और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२२ २२२२\*।

11 जब मैं यरूशलेम पहुँच गया, तब वहाँ तीन दिन रहा।

12 तब मैं थोड़े पुरुषों को लेकर रात को उठा; मैंने किसी को नहीं बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिये मेरे मन में क्या उपजाया था। अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था।

13 मैं रात को तराई के फाटक में होकर निकला और अजगर के सोते की ओर, और कूड़ा फाटक के पास गया, और यरूशलेम की टूटी पड़ी हुई शहरपनाह और जले फाटकों को देखा।

14 तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास गया; परन्तु मेरी सवारी के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न था।

15 तब मैं रात ही रात नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया; फिर घूमकर तराई के फाटक से भीतर आया, और इस प्रकार लौट आया।

16 और हाकिम न जानते थे कि मैं कहाँ गया और क्या करता था; वरन् मैंने तब तक न तो यहूदियों को कुछ बताया था और न याजकों और न रईसों और न हाकिमों और न दूसरे काम करनेवालों को।

17 तब मैंने उनसे कहा, “तुम तो आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं, कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं। तो आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह को बनाएँ, कि भविष्य में हमारी नामधराई न रहे।”

18 फिर मैंने उनको बताया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझसे क्या-क्या बातें कही थीं। तब उन्होंने कहा, “आओ हम कमर बाँधकर बनाने लगें।” और उन्होंने इस भले काम को करने के लिये हियाव बाँध लिया।

19 यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, और गेशेम नामक एक अरबी, हमें उपहास में उड़ाने लगे; और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे, “यह तुम क्या काम करते हो। क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा करोगे?”

20 तब मैंने उनको उत्तर देकर उनसे कहा, “स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिए हम उसके दास कमर बाँधकर बनाएँगे; परन्तु यरूशलेम में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक और न स्मारक है।”

\* 2:6 २२२२: यद्यपि फारसी राजाओं में बहुपत्नी का प्रचलन था, उनकी एक प्रमुख रानी होती थी और वही रानी कहलाती थी। † 2:10 २२२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२: यरूशलेम को एक महान एवं दृढ़ नगर बनाने का नहम्याह का लक्ष्य, सामरिया की समृद्धिया श्रेष्ठता में बाधक था।

\* 3:1 २२२२२२२२: यहोशू का पोता था जो जरुब्बाबेल के समकालीन प्रधान पुरोहित था।

## 3

१३३३३३३ २२ १३३३३३३ २२ १३३ १३३३३३  
१३३३

1 तब १३३३३३३३\* महायाजक ने अपने भाई याजकों समेत कमर बांधकर भेड़फाटक को बनाया। उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा की, और उसके पल्लों को भी लगाया; और हम्मेआ नामक गुम्मत तक वरन् हननेल के गुम्मत के पास तक उन्होंने शहरपनाह की प्रतिष्ठा की।

2 उससे आगे यरीहो के मनुष्यों ने बनाया, और इनसे आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया।

3 फिर १३३३३ १३३३३† को हस्सना के बेटों ने बनाया; उन्होंने उसकी कड़ियाँ लगाई, और उसके पल्ले, ताले और बेंडे लगाए।

4 उनसे आगे मरेमोत ने जो हक्कोस का पोता और ऊरिय्याह का पुत्र था, मरम्मत की। और इनसे आगे मशुल्लाम ने जो मशेजबेल का पोता, और बेरेक्याह का पुत्र था, मरम्मत की। इससे आगे बाना के पुत्र सादोक ने मरम्मत की।

5 इनसे आगे तकोइयों ने मरम्मत की; परन्तु उनके रईसों ने अपने प्रभु की सेवा का जूआ अपनी गर्दन पर न लिया।

6 फिर पुराने फाटक की मरम्मत पासेह के पुत्र योयादा और बसोदयाह के पुत्र मशुल्लाम ने की; उन्होंने उसकी कड़ियाँ लगाई, और उसके पल्ले, ताले और बेंडे लगाए।

7 और उनसे आगे गिबोनी मलत्याह और मेरोनोती यादोन ने और गिबोन और मिस्या के मनुष्यों ने महानद के पार के अधिपति के सिंहासन की ओर से मरम्मत की।

8 उनसे आगे हर्हयाह के पुत्र उज्जीएल ने और अन्य सुनारों ने मरम्मत की। इससे आगे हनन्याह ने, जो गन्धियों के समाज का था, मरम्मत की; और उन्होंने चौड़ी शहरपनाह तक यरूशलेम को दृढ़ किया।

9 उनसे आगे हूर के पुत्र रपायाह ने, जो यरूशलेम के आधे जिले का हाकिम था, मरम्मत की।

10 और उनसे आगे हरुमप के पुत्र यदायाह ने अपने ही घर के सामने मरम्मत की; और इससे आगे हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने मरम्मत की।

11 हारीम के पुत्र मल्किय्याह और पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने एक और भाग की, और भट्टी के गुम्मत की मरम्मत की।

12 इससे आगे यरूशलेम के आधे जिले के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम ने अपनी बेटियों समेत मरम्मत की।

13 तराई के फाटक की मरम्मत हानून और जानोह के निवासियों ने की; उन्होंने उसको बनाया, और उसके ताले, बेंडे और पल्ले लगाए, और हजार हाथ की शहरपनाह को भी अर्थात् कूड़ा फाटक तक बनाया।

14 कूड़ा फाटक की मरम्मत रेकाब के पुत्र मल्किय्याह ने की, जो बेथक्केरेम के जिले का हाकिम था; उसी ने उसको बनाया, और उसके ताले, बेंडे और पल्ले लगाए।

15 सोता फाटक की मरम्मत कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने की, जो मिस्या के जिले का हाकिम था; उसी ने उसको बनाया और पाटा, और उसके ताले, बेंडे और पल्ले लगाए; और उसी ने राजा की बारी के पास के शेलह नामक कुण्ड की शहरपनाह को भी दाऊदपुर से उतरनेवाली सीढ़ी तक बनाया।

16 उसके बाद अजबूक के पुत्र नहेम्याह ने जो बेतसूर के आधे जिले का हाकिम था, दाऊद के कब्रिस्तान के सामने तक और बनाए हुए जलकुण्ड तक, वरन् वीरों के घर तक भी मरम्मत की।

१३३३३ १३३३३३३३३ १३३३३३३ १३ १३३३३३  
१३३

17 इसके बाद बानी के पुत्र रहूम ने कितने लेवियों समेत मरम्मत की। इससे आगे कीला के आधे जिले के हाकिम हशब्नयाह ने अपने जिले की ओर से मरम्मत की।

18 उसके बाद उनके भाइयों समेत कीला के आधे जिले के हाकिम हेनादाद के पुत्र बब्बै ने मरम्मत की।

19 उससे आगे एक और भाग की मरम्मत जो शहरपनाह के मोड़ के पास शस्त्रों के घर की चढ़ाई के सामने है, येशुअ के पुत्र एजेर ने की, जो मिस्या का हाकिम था।

20 फिर एक और भाग की अर्थात् उसी मोड़ से लेकर एल्याशीब महायाजक के घर के द्वार तक की मरम्मत जब्बै के पुत्र बारूक ने तन मन से की।

21 इसके बाद एक और भाग की अर्थात् एल्याशीब के घर के द्वार से लेकर उसी घर के सिरे तक की मरम्मत, मरेमोत ने की, जो हक्कोस का पोता और ऊरिय्याह का पुत्र था।

१३३३ १३३३३३३३३ १३३३३३३ १३ १३३३३३  
१३३

22 उसके बाद उन याजकों ने मरम्मत की जो तराई के मनुष्य थे।

23 उनके बाद विन्यामीन और हश्शूब ने अपने घर के सामने मरम्मत की; और इनके पीछे अजर्याह ने जो मासेयाह का पुत्र और अनन्याह का पोता था अपने घर के पास मरम्मत की।

† 3:3 १३३३ १३३३३: उतरी दिवार में एक द्वार जहाँ से यरदन और गलील सागर की पकड़ी हुई मछलियाँ लाई जाती थीं- आज के दमिश्क द्वार से कुछ पूर्व में।

24 तब एक और भाग की, अर्थात् अजर्याह के घर से लेकर शहरपनाह के मोड़ तक वरन् उसके कोने तक की मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने की।

25 फिर उसी मोड़ के सामने जो ऊँचा गुम्मत राजभवन से बाहर निकला हुआ बन्दीगृह के आँगन के पास है, उसके सामने ऊजै के पुत्र पालाल ने मरम्मत की। इसके बाद परोश के पुत्र पदायाह ने मरम्मत की।

26 नतीन लोग तो ओपेल में पूरब की ओर जलफाटक के सामने तक और बाहर निकले हुए गुम्मत तक रहते थे।

27 पदायाह के बाद तकोइयों ने एक और भाग की मरम्मत की, जो बाहर निकले हुए बड़े गुम्मत के सामने और ओपेल की शहरपनाह तक है।

28 फिर ~~के ऊपर याजकों ने अपने-अपने घर के सामने मरम्मत की।~~

29 इनके बाद इम्मर के पुत्र सादोक ने अपने घर के सामने मरम्मत की; और तब पूर्वी फाटक के रखवाले शकन्याह के पुत्र शमायाह ने मरम्मत की।

30 इसके बाद शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के छठवें पुत्र हानून ने एक और भाग की मरम्मत की। तब बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपनी कोठरी के सामने मरम्मत की।

31 उसके बाद मल्किय्याह ने जो सुनार था नतिनों और व्यापारियों के स्थान तक ठहराए हुए स्थान के फाटक के सामने और कोने के कोठे तक मरम्मत की।

32 और कोनेवाले कोठे से लेकर भेडफाटक तक सुनारों और व्यापारियों ने मरम्मत की।

## 4

~~जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं, तब उसने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहूदियों को उपहास में उड़ाने लगा।~~

1 जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं, तब उसने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहूदियों को उपहास में उड़ाने लगा।

2 वह अपने भाइयों के और सामरिया की सेना के सामने यह कहने लगा, “वे निर्बल यहूदी क्या करना चाहते हैं? क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे? क्या वे अपना स्थान दृढ़ करेंगे? क्या वे यज्ञ करेंगे? क्या वे आज ही सब को निपटा डालेंगे? क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएँगे?”

3 उसके पास तो अम्मोनी तोबियाह था, और वह कहने लगा, “जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई गीदड

भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा।”

4 हे हमारे परमेश्वर सुन ले, कि हमारा अपमान हो रहा है; और उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बँधुआई के देश में लुटवा दे।

5 और उनका अधर्म तू न ढाँप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए; क्योंकि उन्होंने तुझे शहरपनाह बनानेवालों के सामने क्रोध दिलाया है।

6 हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊँचाई तक जुड़ गई। क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा।

7 जब सम्बल्लत और तोबियाह और अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों ने सुना, कि यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है, और उसमें के नाके बन्द होने लगे हैं, तब उन्होंने बहुत ही बुरा माना;

8 और सभी ने एक मन से गोष्ठी की, कि जाकर यरूशलेम से लड़ें, और उसमें गड़बड़ी डालें।

9 परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध दिन-रात के पहराए ठहरा दिए।

10 परन्तु यहूदी कहने लगे, “ढोनेवालों का बल घट गया, और मिट्टी बहुत पड़ी है, इसलिए शहरपनाह हम से नहीं बन सकती।”

11 और हमारे शत्रु कहने लगे, “जब तक हम उनके बीच में न पहुँचे, और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें, तब तक उनको न कुछ मालूम होगा, और न कुछ दिखाई पड़ेगा।”

12 फिर जो यहूदी उनके आस-पास रहते थे, उन्होंने सब स्थानों से दस बार आ आकर, हम लोगों से कहा, “तुम को हमारे पास लौट आना चाहिये।”

13 इस कारण मैंने लोगों को तलवारें, बर्छियाँ और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सबसे नीचे के खुले स्थानों में घराने-घराने के अनुसार बैठा दिया।

14 तब मैं देखकर उठा, और रईसों और हाकिमों और सब लोगों से कहा, “उनसे मत डरो; प्रभु जो महान और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों, स्त्रियों और घरों के लिये युद्ध करना।”

15 जब हमारे शत्रुओं ने सुना, कि यह बात हमको मालूम हो गई है और परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की है, तब हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने-अपने काम पर लौट गए।

16 और उस दिन से मेरे आधे सेवक तो उस काम में लगे रहे और आधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और

‡ 3:28 ~~नगर के पूर्व में किद्रोन घाटी की ओर खुलता हुआ द्वार है।~~





15 परन्तु पहले अधिपति जो मुझसे पहले थे, वे प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इसके साथ चालीस शेकेल चाँदी लेते थे, वरन् उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था।

16 फिर मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा, और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न ली; और मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहाँ इकट्ठे रहते थे।

17 फिर मेरी मेज पर खानेवाले एक सौ पचास यहूदी और हाकिम और वे भी थे, जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आए थे।

18 जो प्रतिदिन के लिये तैयार किया जाता था वह एक बैल, छः अच्छी-अच्छी भेड़ें व बकरियाँ थीं, और मेरे लिये चिड़ियों भी तैयार की जाती थीं; दस-दस दिन के बाद भाँति-भाँति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; परन्तु तो भी मैंने अधिपति के हक़ का भोज नहीं लिया,

19 क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था। हे मेरे परमेश्वर! जो कुछ मैंने इस प्रजा के लिये किया है, उसे तू मेरे हित के लिये स्मरण रख।

## 6

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

1 जब सम्बल्लत, तोबियाह और अरबी गेशेम और हमारे अन्य शत्रुओं को यह समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका; और यद्यपि उस समय तक भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका था, तो भी शहरपनाह में कोई दरार न रह गई थी।

2 तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यह कहला भेजा, “आ, हम ओनो के मैदान के किसी गाँव में एक दूसरे से भेंट करें।” परन्तु वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे।

3 परन्तु मैंने उनके पास दूतों के द्वारा कहला भेजा, “मैं तो भारी काम में लगा हूँ, वहाँ नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे?”

4 फिर उन्होंने चार बार मेरे पास वही बात कहला भेजी, और मैंने उनको वैसा ही उत्तर दिया।

5 तब पाँचवीं बार सम्बल्लत ने अपने सेवक को ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ\* देकर मेरे पास भेजा,

6 जिसमें यह लिखा था, “जाति-जाति के लोगों में यह कहा जाता है, और गेशेम भी यही बात कहता है,

कि तुम्हारी और यहूदियों की मनसा बलवा करने की है, और इस कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है; और तू इन बातों के अनुसार उनका राजा बनना चाहता है।

7 और तूने यरूशलेम में नबी ठहराए हैं, जो यह कहकर तेरे विषय प्रचार करें, कि यहूदियों में एक राजा है। अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जाएगा। इसलिए अब आ, हम एक साथ सम्मति करें।”

8 तब मैंने उसके पास कहला भेजा, “जैसा तू कहता है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है।”

9 वे सब लोग यह सोचकर हमें डराना चाहते थे, कि “उनके हाथ ढीले पड़ जाए, और काम बन्द हो जाए।” परन्तु अब हे परमेश्वर तू मुझे हियाव दे।

10 फिर मैं शमायाह के घर में गया, जो दलायाह का पुत्र और महतबेल का पोता था, वह तो बन्द घर में था; उसने कहा, “आ, हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेंट करें, और मन्दिर के द्वार बन्द करें; क्योंकि वे लोग तुझे घात करने आएँगे, रात ही को वे तुझे घात करने आएँगे।”

11 परन्तु मैंने कहा, “क्या मुझ जैसा मनुष्य भागे? और ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ? मैं नहीं जाने का।”

12 फिर मैंने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नहीं है परन्तु उसने हर बात परमेश्वर का वचन कहकर मेरी हानि के लिये कही, क्योंकि तोबियाह और सम्बल्लत ने उसे रुपया दे रखा था।

13 उन्होंने उसे इस कारण रुपया दे रखा था कि मैं डर जाऊँ, और वैसा ही काम करके पापी ठहरूँ, और उनको दोष लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर सकें।

14 हे मेरे परमेश्वर! तोबियाह, सम्बल्लत, और नोअद्याह नबिया और अन्य जितने नबी मुझे डराना चाहते थे, उन सब के ऐसे-ऐसे कामों की सुधि रख।

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

15 एलूल महीने के पच्चीसवें दिन को अर्थात् बावन दिन के भीतर शहरपनाह बन गई।

16 जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारों ओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और बहुत लज्जित हुए; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ।

\* 6:5 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: वह पत्र खुला: रखा गया था कि उसकी विषयवस्तु सर्वविदित हो कि उसमें व्यक्त धमकियों के कारण यहूदी भयभीत होकर निर्माण कार्य रोक दें। † 6:11 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: मन्दिर में जाकर रहे। क्योंकि पुरोहित की अपेक्षा किसी का मन्दिर में प्रवेश करना मृत्युदण्ड के योग्य अपराध था। (गिन. 18:4)

17 उन दिनों में भी यहूदी रईसों और तोबियाह के बीच चिट्ठी बहुत आया-जाया करती थी।

18 क्योंकि वह आरह के पुत्र शकन्याह का दामाद था, और उसके पुत्र यहोहानान ने बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम की बेटी को ब्याह लिया था; इस कारण बहुत से यहूदी उसका पक्ष करने की शपथ खाए हुए थे।

19 वे मेरे सुनते उसके भले कामों की चर्चा किया करते, और मेरी बातें भी उसको सुनाया करते थे। तोबियाह मुझे डराने के लिये चिट्ठियाँ भेजा करता था।

## 7

???????? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 जब शहरपनाह बन गई, और मैंने उसके फाटक खड़े किए, और द्वारपाल, और गवैये, और लेवीय लोग ठहराये गए,

2 तब मैंने अपने भाई हनानी और राजगढ़ के हाकिम हनन्याह को यरूशलेम का अधिकारी ठहराया, क्योंकि यह सच्चा पुरुष और बहुतेरों से अधिक परमेश्वर का भय माननेवाला था।

3 और मैंने उनसे कहा, “*?? ? ? ? ? ? ? ? ?*”, तब तक यरूशलेम के फाटक न खोले जाएँ और जब पहरुए पहरा देते रहें, तब ही फाटक बन्द किए जाएँ और बेड़े लगाए जाएँ। फिर यरूशलेम के निवासियों में से तू रखवाले ठहरा जो अपना-अपना पहरा अपने-अपने घर के सामने दिया करें।”

4 नगर तो लम्बा चौड़ा था, *???????? ? ? ? ? ? ? ? ?* *???????? ? ? ?*, और घर नहीं बने थे।

???????????????? ? ? ? ? ? ? ? ?

5 तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह उपजाया कि रईसों, हाकिमों और प्रजा के लोगों को इसलिए इकट्ठे करूँ, कि वे अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार गिने जाएँ। और मुझे पहले-पहल यरूशलेम को आए हुआ का वंशावली पत्र मिला, और उसमें मैंने यह लिखा हुआ पाया।

6 जिनको बाबेल का राजा, नबूकदनेस्सर बन्दी बना करके ले गया था, उनमें से प्रान्त के जो लोग बँधुआई से छूटकर, यरूशलेम और यहूदा के अपने-अपने नगर को आए।

7 वे जरुब्बाबेल, येशुअ, नहेम्याह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरत, बिगवै, नहूम और बानाह के संग आए।

इस्राएली प्रजा के लोगों की गिनती यह है:

8 परोश की सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर,

9 शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहत्तर,

10 आरह की सन्तान छः सौ बावन।

11 पहत्मोआब की सन्तान याने येशुअ और योआब की सन्तान, दो हजार आठ सौ अठारह।

12 एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन,

13 जत्तू की सन्तान आठ सौ पैंतालीस।

14 जक्कई की सन्तान सात सौ साठ।

15 बिन्नूई की सन्तान छः सौ अड़तालीस।

16 बेवै की सन्तान छः सौ अट्टाईस।

17 अजगाद की सन्तान दो हजार तीन सौ बाईस।

18 अदोनीकाम की सन्तान छः सौ सड़सठ।

19 बिगवै की सन्तान दो हजार सड़सठ।

20 आदीन की सन्तान छः सौ पचपन।

21 हिजकिय्याह की सन्तान आतेर के वंश में से अट्टानवे।

22 हाशूम, की सन्तान तीन सौ अट्टाईस।

23 बेसै की सन्तान तीन सौ चौबीस।

24 हारीफ की सन्तान एक सौ बारह।

25 गिबोन के लोग पंचानवे।

26 बैतलहम और नतोपा के मनुष्य एक सौ अट्टासी।

27 अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्टाईस।

28 बेतजमावत के मनुष्य बयालीस।

29 किर्यत्यारीम, कपीरा, और बेरोत के मनुष्य सात सौ तैंतालीस।

30 रामाह और गेबा के मनुष्य छः सौ इक्कीस।

31 मिकमाश के मनुष्य एक सौ बाईस।

32 बेतेल और आई के मनुष्य एक सौ तेईस।

33 दूसरे नबो के मनुष्य बावन।

34 दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन।

35 हारीम की सन्तान तीन सौ बीस।

36 यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस।

37 लोद हादीद और ओनो के लोग सात सौ इक्कीस।

38 सना के लोग तीन हजार नौ सौ तीस।

39 फिर याजक अर्थात् येशुअ के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर।

40 इम्मेर की सन्तान एक हजार बावन।

41 पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस।

42 हारीम की सन्तान एक हजार सत्रह।

43 फिर लेवीय ये थे: होदवा के वंश में से कदमीएल की सन्तान येशुअ की सन्तान चौहत्तर।

\* 7:3 *?? ? ? ? ? ? ? ? ?* असाधारण सावधानी पूर्वी देशों का एक नियम था कि सूर्योदय पर नगर द्वार खोल दिए जाएँ। † 7:4 *???????? ? ? ? ? ? ? ? ?* जो इस्राएली के साथ लौटे थे उनकी संख्या मात्र 42,360 (नह. 7:66) एज्रा के लौटकर आनेवालों की संख्या 2,000 से भी कम थी। (एज्रा. 8:1-20)

44 फिर गवैये ये थे: आसाप की सन्तान एक सौ अड़तालीस।

45 फिर द्वारपाल ये थे: शल्लूम की सन्तान, आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की सन्तान, और शोबै की सन्तान, जो सब मिलकर एक सौ अड़तीस हुए।

46 फिर नतीन अर्थात् सीहा की सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान,

47 केरोस की सन्तान, सीआ की सन्तान, पादोन की सन्तान,

48 लबाना की सन्तान, हगाबा की सन्तान, शल्मै की सन्तान।

49 हानान की सन्तान, गिदेल की सन्तान, गहर की सन्तान,

50 रायाह की सन्तान, रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान,

51 गज्जाम की सन्तान, उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान,

52 बेसै की सन्तान, मूनीम की सन्तान, नपूशस की सन्तान,

53 बकबूक की सन्तान, हकूपा की सन्तान, हर्हूर की सन्तान,

54 बसलीत की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान,

55 बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमह की सन्तान,

56 नसीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान।

57 फिर सुलैमान के दासों की सन्तान: सोतै की सन्तान, सोपेरत की सन्तान, परीदा की सन्तान,

58 याला की सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिदेल की सन्तान,

59 शपत्याह की सन्तान, हत्तिल की सन्तान, पोकरेत-सबायीम की सन्तान, और आमोन की सन्तान।

60 नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान मिलाकर तीन सौ बानवे थे।

61 और ये वे हैं, जो तेल्मेलाह, तेलहर्शा, करूब, अद्दोन, और इम्मेर से यरूशलेम को गए, परन्तु अपने-अपने पितरों के घराने और वंशावली न बता सके, कि इस्राएल के हैं, या नहीं।

62 दलायाह की सन्तान, तोबियाह की सन्तान, और नकोदा की सन्तान, जो सब मिलाकर छः सौ बयालीस थे।

63 और याजकों में से हबायाह की सन्तान, हक्कोस की सन्तान, और बर्जिल्लै की सन्तान, जिसने गिलादी बर्जिल्लै की बेटियों में से एक से विवाह कर लिया, और उन्हीं का नाम रख लिया था।

64 इन्होंने अपना-अपना वंशावली पत्र और अन्य वंशावली पत्रों में ढूँढा, परन्तु न पाया, इसलिए वे अशुद्ध ठहरकर याजकपद से निकाले गए।

65 और अधिपति ने उनसे कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न उठे, तब तक तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाओगे।

66 पूरी मण्डली के लोग मिलाकर बयालीस हजार तीन सौ साठ ठहरे।

67 इनको छोड़ उनके सात हजार तीन सौ सैंतीस दास-दासियाँ, और दो सौ पैंतालीस गानेवाले और गानेवालियाँ थीं।

68 उनके घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर दो सौ पैंतालीस,

69 ऊँट चार सौ पैंतीस और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे।

70 और पितरों के घरानों के कई एक मुख्य पुरुषों ने काम के लिये दान दिया। अधिपति ने तो चन्दे में हजार दर्कमोन सोना, पचास कटोरे और पाँच सौ तीस याजकों के अंगरखे दिए।

71 और पितरों के घरानों के कई मुख्य-मुख्य पुरुषों ने उस काम के चन्दे में बीस हजार दर्कमोन सोना और दो हजार दो सौ माने चाँदी दी।

72 और शेष प्रजा ने जो दिया, वह बीस हजार दर्कमोन सोना, दो हजार माने चाँदी और सड़सठ याजकों के अंगरखे हुए।

73 इस प्रकार याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये, प्रजा के कुछ लोग और नतीन और सब इस्राएली अपने-अपने नगर में बस गए।

## 8

?????????? ?? ???? ?????? ?? ???????

1 जब सातवाँ महीना निकट आया, उस समय सब इस्राएली अपने-अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर, जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे होकर, ?????? ?????? से कहा, कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आ।

2 तब एज्रा याजक सातवें महीने के पहले दिन को क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभी के सामने व्यवस्था को ले आया।

3 वह उसकी बातें भोर से दोपहर तक उस चौक के सामने जो जलफाटक के सामने था, क्या स्त्री, क्या पुरुष

\* 8:1 ?????? ?????? : इस पुस्तक में एज्रा का नाम यहाँ पहला बार आया है और यह पहली प्रमाण है कि वह नहम्याह का समकालीन था।

और सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे।

4 एज्रा शास्त्री, काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा हो गया; और उसकी दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्कय्याह और मासेयाह; और बाईं ओर, पदायाह, मीशाएल, मत्किय्याह, हाशूम, हशबदाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए।

5 तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊँचे पर था, सभी के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब ~~22 2222 22 22222 2222†~~।

6 तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने-अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना-अपना माथा भूमि पर टेककर यहोवा को दण्डवत् किया।

7 येशुअ, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान और पलायाह नामक लेवीय, लोगों को व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े रहे।

8 उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया।

9 तब नहेम्याह जो अधिपति था, और एज्रा जो याजक और शास्त्री था, और जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे, उन्होंने सब लोगों से कहा, “आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिए विलाप न करो और न रोओ।” क्योंकि सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते रहे।

10 फिर उसने उनसे कहा, “जाकर चिकना-चिकना भोजन करो और मीठा-मीठा रस पियो, और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भोजन सामग्री भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है; और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ गढ है।”

11 अतः लेवियों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया, “चुप रहो क्योंकि आज का दिन पवित्र है; और उदास मत रहो।”

12 तब सब लोग खाने, पीने, भोजन सामग्री भेजने और बड़ा आनन्द मनाने को चले गए, क्योंकि जो वचन उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे। (झोपड़ियों का पर्व)

13 दूसरे दिन भी समस्त प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य-मुख्य पुरुष और याजक और लेवीय लोग, एज्रा

शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने के लिये इकट्ठे हुए।

14 उन्हें व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला, कि यहोवा ने मूसा को यह आज्ञा दी थी, कि इस्राएली सातवें महीने के पर्व के समय झोपड़ियों में रहा करें,

15 और अपने सब नगरों और यरूशलेम में यह सुनाया और प्रचार किया जाए, “पहाड़ पर जाकर जैतून, तैलवृक्ष, मेंहदी, खजूर और घने-घने वृक्षों की डालियाँ ले आकर झोपड़ियाँ बनाओ, जैसे कि लिखा है।”

16 अतः सब लोग बाहर जाकर डालियाँ ले आए, और अपने-अपने घर की छत पर, और अपने आँगनों में, और परमेश्वर के भवन के आँगनों में, और जलफाटक के चौक में, और एप्रेम के फाटक के चौक में, झोपड़ियाँ बना लीं।

17 वरन् सब मण्डली के लोग जितने बंधुआई से छूटकर लौट आए थे, झोपड़ियाँ बनाकर उनमें रहे। नून के पुत्र ~~222222 22 222222 22 22222 22 2222 22†~~ इस्राएलियों ने ऐसा नहीं किया था। उस समय बहुत बड़ा आनन्द हुआ।

18 फिर पहले दिन से अन्तिम दिन तक एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। वे सात दिन तक पर्व को मानते रहे, और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा हुई।

## 9

~~2222 22 222222222~~

1 फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास का टाट पहने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए।

2 तब इस्राएल के वंश के लोग सब अन्यजाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर, अपने-अपने पापों और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों को मान लिया।

3 तब उन्होंने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते, और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करते रहे।

4 और येशुअ, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और कनानी ने लेवियों की सीढ़ी पर खड़े होकर ऊँचे स्वर से अपने परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी।

5 फिर येशुअ, कदमीएल, बानी, हशबन्याह, शेरेब्याह, होदिय्याह, शबन्याह, और पतह्याह नामक लेवियों ने कहा, “~~22222 22†~~, अपने परमेश्वर यहोवा

† 8:5 ~~22 2222 22 22222 2222~~: सावधान और सम्मान की मुद्रा में। ‡ 8:17 ~~222222 22 222222 22 22222 22 2222 22~~: यहोशू के समय से इस समय तक झोपड़ियों का त्यौहार नहीं मनाया गया था। \* 9:5 ~~22222 22~~: परमेश्वर की आराधना और अंगीकार हेतु वे उन्होंने घुटने टेक दिए थे। (नहे. 9:3) उन्हें अब स्तुति करने की उचित मुद्रा में रहना था।

को अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य कहो। तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए, जो सब धन्यवाद और स्तुति से परे है।

११११ ११११११११ ११ ११११११११११

6 “तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, सभी को तू ही ने बनाया, और सभी की रक्षा तू ही करता है; और १११११११ ११ ११११११ १११११ १११११ ११ १११११११११ १११११ १११११। (१११११. 6:4, ११११११. 20:11)

7 हे यहोवा! तू वही परमेश्वर है, जो अब्राम को चुनकर कसदियों के ऊर नगर में से निकाल लाया, और उसका नाम अब्राहम रखा;

8 और उसके मन को अपने साथ सच्चा पाकर, उससे वाचा बाँधी, कि मैं तेरे वंश को कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों, और गिर्गाशियों का देश दूँगा; और तूने अपना वह वचन पूरा भी किया, क्योंकि तू धर्मी है।

9 “फिर तूने मिस्र में हमारे पुरखाओं के दुःख पर दृष्टि की; और लाल समुद्र के तट पर उनकी दुहाई सुनी।

10 और फ़िरौन और उसके सब कर्मचारी वरन् उसके देश के सब लोगों को दण्ड देने के लिये चिन्ह और चमत्कार दिखाए; क्योंकि तू जानता था कि वे उनसे अभिमान करते हैं; और तूने अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जैसा आज तक वर्तमान है।

11 और तूने उनके आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया, कि वे समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हो गए; और जो उनके पीछे पड़े थे, उनको तूने गहरे स्थानों में ऐसा डाल दिया, जैसा पत्थर समुद्र में डाला जाए।

12 फिर तूने दिन को बादल के खम्भे में होकर और रात को आग के खम्भे में होकर उनकी अगुआई की, कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था, उसमें उनको उजियाला मिले।

13 फिर तूने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियाँ, और आज्ञाएँ दीं।

14 उन्हें अपने पवित्र विश्रामदिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएँ और विधियाँ और व्यवस्था दीं।

15 और उनकी भूख मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिये पानी निकाला, और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की मैंने शपथ खाई है उसके अधिकारी होने को तुम उसमें जाओ। (१११११. 6:31)

16 “परन्तु उन्होंने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएँ न मानी;

17 और आज्ञा मानने से इन्कार किया, और जो आश्चर्यकर्म तूने उनके बीच किए थे, उनका स्मरण न किया, वरन् हठ करके यहाँ तक बलवा करनेवाले बने, कि एक प्रधान ठहराया, कि अपने दासत्व की दशा में लौटे। परन्तु तू क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अति करुणामय परमेश्वर है, तूने उनको न त्यागा।

18 वरन् जब उन्होंने बछड़ा ढालकर कहा, ‘तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है,’ और तेरा बहुत तिरस्कार किया,

19 तब भी तू जो अति दयालु है, उनको जंगल में न त्यागा; न तो दिन को अगुआई करनेवाला बादल का खम्भा उन पर से हटा, और न रात को उजियाला देनेवाला और उनका मार्ग दिखानेवाला आग का खम्भा।

20 वरन् तूने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मन्ना उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा।

21 चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन-पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पाँव में सूजन हुई।

22 फिर तूने राज्य-राज्य और देश-देश के लोगों को उनके वंश में कर दिया, और दिशा-दिशा में उनको बाँट दिया; अतः वे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों के अधिकारी हो गए।

23 फिर तूने उनकी सन्तान को आकाश के तारों के समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुँचा दिया, जिसके विषय तूने उनके पूर्वजों से कहा था; कि वे उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाएँगे।

24 सो यह सन्तान जाकर उसकी अधिकारी हो गई, और तूने उनके द्वारा देश के निवासी कनानियों को दबाया, और राजाओं और देश के लोगों समेत उनको, उनके हाथ में कर दिया, कि वे उनसे जो चाहें सो करें।

25 उन्होंने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले ली, और सब प्रकार की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के, और खुदे हुए हौदों के, और दाख और जैतून की बारियों के, और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गए; वे उसे खा खाकर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे।

26 “परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा करनेवाले बन

गए और तेरी व्यवस्था को त्याग दिया, और तेरे जो [२२२ २२२२ २२ २२२२२२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२२२ २२२ २२२२ २२२२२२२२ २२२ २२२२], और तेरा बहुत तिरस्कार किया।

27 इस कारण तूने उनको उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया, और उन्होंने उनको संकट में डाल दिया; तो भी जब जब वे संकट में पड़कर तेरी दुहाई देते रहे तब-तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता रहा; और तू जो अति दयालु है, इसलिए उनके छुड़ानेवाले को भेजता रहा जो उनको शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे।

28 परन्तु जब जब उनको चैन मिला, तब-तब वे फिर तेरे सामने बुराई करते थे, इस कारण तू उनको शत्रुओं के हाथ में कर देता था, और वे उन पर प्रभुता करते थे; तो भी जब वे फिरकर तेरी दुहाई देते, तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता और तू जो दयालु है, इसलिए बार बार उनको छुड़ाता,

29 और उनको चिताता था कि उनको फिर अपनी व्यवस्था के अधीन कर दे। परन्तु वे अभिमान करते रहे और तेरी आज्ञाएँ नहीं मानते थे, और तेरे नियम, जिनको यदि मनुष्य माने, तो उनके कारण जीवित रहे, उनके विरुद्ध पाप करते, और हठ करके अपना कंधा हटाते और न सुनते थे।

30 तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिए तूने उन्हें देश-देश के लोगों के हाथ में कर दिया।

31 तो भी तूने जो अति दयालु है, उनका अन्त नहीं कर डाला और न उनको त्याग दिया, क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है।

32 “अब तो हे हमारे परमेश्वर! हे महान पराक्रमी और भययोग्य परमेश्वर! जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहा है, जो बड़ा कष्ट, अशशूर के राजाओं के दिनों से ले आज के दिन तक हमें और हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों, नबियों, पुरखाओं, वरन् तेरी समस्त प्रजा को भोगना पड़ा है, वह तेरी दृष्टि में थोड़ा न ठहरे।

33 तो भी जो कुछ हम पर बीता है उसके विषय तू तो धर्मी है; तूने तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हमने दुष्टता की है।

34 और हमारे राजाओं और हाकिमों, याजकों और पुरखाओं ने, न तो तेरी व्यवस्था को माना है और न तेरी आज्ञाओं और चितौनियों की ओर ध्यान दिया है जिनसे तूने उनको चिताया था।

35 उन्होंने अपने राज्य में, और उस बड़े कल्याण के समय जो तूने उन्हें दिया था, और इस लम्बे चौड़े और उपजाऊ देश में तेरी सेवा नहीं की; और न अपने बुरे कामों से पश्चाताप किया।

36 देख, हम आजकल दास हैं; जो देश तूने हमारे पितरों को दिया था कि उसकी उत्तम उपज खाएँ, इसी में हम दास हैं। (२२२२२२ 9:9, २२२२२ 28: 48)

37 इसकी उपज से उन राजाओं को जिन्हें तूने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर ठहराया है, बहुत धन मिलता है; और वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं, इसलिए हम बड़े संकट में पड़े हैं।”

[२२२२ २२ २२२२२ २२२२]

38 इस सब के कारण, हम सच्चाई के साथ वाचा बाँधते, और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, लेवीय और याजक उस पर छाप लगाते हैं।

## 10

[२२२२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२ २२ २२२२२ २२२२]

1 जिन्होंने छाप लगाई वे ये हैं हकल्याह का पुत्र नहेम्याह जो अधिपति था, और सिदकिय्याह;

2 सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह;

3 पशहूर, अमर्याह, मल्किय्याह;

4 हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक;

5 हारीम, मरेमोत, ओबद्याह;

6 दानिय्येल, गिन्नतोन, बारूक;

7 मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन;

8 माज्याह, बिलगै और शमायाह; ये तो याजक थे।

9 लेवी ये थे: आजन्याह का पुत्र येशुअ, हेनादाद की सन्तान में से विन्नूई और कदमीएल;

10 और उनके भाई शबन्याह, होदिय्याह, कलीता, पलायाह, हानान;

11 मीका, रहोब, हशब्याह;

12 जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह।

13 होदिय्याह, बानी और बनीनू;

14 फिर प्रजा के प्रधान ये थे: परोश, पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी;

15 बुन्नी, अजगाद, बेबै;

16 अदोनिय्याह, बिगवै, आदीन;

17 आतेर, हिजकिय्याह, अज्जूर;

18 होदिय्याह, हाशूम, बेसै;

19 हारीफ, अनातोत, नोबै;

‡ 9:26 [२२२] ... [२२२२ २२२२२२२२ २२२ २२२२]: यहूदी इतिहास में इसकी पुष्टि की गई है कि अनेक महान भविष्यद्वक्ताओं की उन्होंने हत्या की थी (उदाहरणार्थ, यशायाह, यिर्मयाह और यहजकेल)



अमर्याह का पुत्र, यह शपत्याह का पुत्र, यह महललेल का पुत्र था।

5 मासेयाह जो बारूक का पुत्र था, यह कोल्होजे का पुत्र, यह हजायाह का पुत्र, यह अदायाह का पुत्र, यह योयारीब का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, और यह शीलोई का पुत्र था।

6 परेस के वंश के जो यरूशलेम में रहते थे, वह सब मिलाकर चार सौ अडसठ शूरवीर थे।

7 बिन्यामीनियों में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र था, यह योएद का पुत्र, यह पदायाह का पुत्र था, यह कोलायाह का पुत्र यह मासेयाह का पुत्र, यह इतीएह का पुत्र, यह यशायाह का पुत्र था।

8 उसके बाद गब्बै सल्लै जिनके साथ नौ सौ अट्टाईस पुरुष थे।

9 इनका प्रधान जिक्की का पुत्र योएल था, और हस्सनूआ का पुत्र यहूदा नगर के प्रधान का नायब था।

10 फिर याजकों में से योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन।

11 और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल्कियाह का पुत्र था, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र था।

12 और इनके आठ सौ बाईस भाई जो उस भवन का काम करते थे; और अदायाह, जो यरोहाम का पुत्र था, यह पलल्याह का पुत्र, यह अमसी का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्कियाह का पुत्र था।

13 इसके दो सौ बयालीस भाई जो पितरों के घरानों के प्रधान थे; और अमशै जो अजरेल का पुत्र था, यह अहजै का पुत्र, यह मशिल्लेमोत का पुत्र, यह इम्मेर का पुत्र था।

14 इनके एक सौ अट्टाईस शूरवीर भाई थे और इनका प्रधान हग्गदोलीम का पुत्र जब्दीएल था।

15 फिर लेवियों में से शमायाह जो हशशूब का पुत्र था, यह अज्जीकाम का पुत्र, यह हशब्याह का पुत्र, यह बुन्नी का पुत्र था।

16 शब्बतै और योजाबाद मुख्य लेवियों में से <sup>†</sup> पर ठहरे थे।

17 मत्तन्याह जो मीका का पुत्र और जब्दी का पोता, और आसाप का परपोता था; वह प्रार्थना में धन्यवाद करनेवालों का मुखिया था, और बकबुक्याह अपने भाइयों में दूसरा पद रखता था; और अब्दा जो शम्मू का

पुत्र, और गालाल का पोता, और यदूतून का परपोता था।

18 जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे, वह सब मिलाकर दो सौ चौरासी थे।

19 अक्कूब और तल्मोन नामक द्वारपाल और उनके भाई जो फाटकों के रखवाले थे, एक सौ बहत्तर थे।

20 शेष इस्राएली याजक और लेवीय, <sup>‡</sup> में अपने-अपने भाग पर रहते थे।

21 नतीन लोग ओपेल में रहते; और नतिनों के ऊपर सीहा, और गिश्पा ठहराए गए थे।

22 जो लेवीय यरूशलेम में रहकर परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते थे, उनका मुखिया आसाप के वंश के गवैयों में का उज्जी था, जो बानी का पुत्र था, यह हशब्याह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र और यह हशब्याह का पुत्र था।

23 क्योंकि <sup>‡</sup>, और गवैयों के प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था।

24 प्रजा के सब काम के लिये मशेजबेल का पुत्र पतह्याह जो यहूदा के पुत्र जेरह के वंश में था, वह राजा के पास रहता था।

<sup>‡</sup>

25 बच गए गाँव और उनके खेत, सो कुछ यहूदी किर्यतअर्बा, और उनके गाँव में, कुछ दीबोन, और उसके गाँवों में, कुछ यकब्सेल और उसके गाँवों में रहते थे।

26 फिर येशुअ, मोलादा, बेत्पेलेत;

27 हसशूआल, और बेशेबा और उसके गाँवों में;

28 और सिकलग और मकोना और उनके गाँवों में;

29 एन्निम्मोन, सोरा, यर्मूत,

30 जानोह और अदुल्लाम और उनके गाँवों में, लाकीश, और उसके खेतों में, अजेका और उसके गाँवों में वे बेशेबा से ले हिन्नोम की तराई तक डेरे डाले हुए रहते थे।

31 बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकमाश, अय्या और बेतेल और उसके गाँवों में;

32 अनातोत, नोब, अनन्याह,

33 हासोर, रामाह, गित्तैम,

34 हादीद, सबोईम, नबल्लत,

35 लोद, ओनो और कारीगरों की तराई तक रहते थे।

36 यहूदा के कुछ लेवियों के दल बिन्यामीन के प्रान्तों में बस गए।

\* 11:16 <sup>†</sup>: जैसे नई कर वसूली (नहे.10:32), नियमित बलियाँ आदि का स्मरण। † 11:20 <sup>‡</sup>: स्वदेश लौटने वाला समुदाय जो मुख्यतः दो गोत्र के सदस्य ही थे परन्तु जिस भूमि पर वे निवास करते थे वह यहूदा राज्य की भूमि थी। ‡ 11:23 <sup>‡</sup>: मन्दिर की सेवा में नियुक्त सेवकों के प्रति अर्तक्षत्र की सद्भावना कर मुक्ति द्वारा प्रगत थी। (एज्जा 7:24) अब उसने राजसी कोष से गवैयों के लिए मत्त भी नियुक्त कर दिया था।



## 12

१२२२२२२ १२ १२२२२२२२ १२ १२२२२

1 जो याजक और लेवीय शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और येशुअ के संग यरूशलेम को गए थे, वे ये थे: सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा,

2 अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश,

3 शकन्याह, रहूम, मरेमोत,

4 इदो, गिन्नतोई, अबिय्याह,

5 मिय्यामीन, माद्याह, बिल्गा,

6 शमायाह, योयारीब, यदायाह,

7 सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और यदायाह। येशुअ के दिनों में याजकों और उनके भाइयों के मुख्य-मुख्य पुरुष, ये ही थे।

8 फिर ये लेवीय गए: येशुअ, बिन्नूई, कदमीएल, शेरेब्याह, यहूदा और वह मत्तन्याह जो अपने भाइयों समेत धन्यवाद के काम पर ठहराया गया था।

9 और उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो उनके सामने अपनी-अपनी सेवकाई में लगे रहते थे।

१२२२२२ १२ १२२२२२२२

10 येशुअ से योयाकीम उत्पन्न हुआ और योयाकीम से एल्याशीब और एल्याशीब से योयादा,

11 और योयादा से योनातान और योनातान से यहू उत्पन्न हुआ।

12 योयाकीम के दिनों में ये याजक अपने-अपने पितरों के घराने के मुख्य पुरुष थे, अर्थात् सरायाह का तो मरायाह; यिर्मयाह का हनन्याह।

13 एज्रा का मशुल्लाम; अमर्याह का यहोहानान।

14 मल्लूकी का योनातान; शबन्याह का यूसुफ।

15 हारीम का अदना; मरायोत का हेलकै।

16 इदो का जकर्याह; गिन्नतोन का मशुल्लाम;

17 अबिय्याह का जिक्की; मिन्यामीन के मोअद्याह का पिलतै;

18 बिल्गा का शम्मू; शमायाह का यहोनातान;

19 योयारीब का मत्तनै; यदायाह का उज्जी;

20 सल्लै का कल्लै; आमोक का एबेर।

21 हिल्किय्याह का हशब्याह; और यदायाह का नतनेल।

22 एल्याशीब, योयादा, यहोहानान और यहू के दिनों में लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते थे, और दारा फारसी के राज्य में याजकों के भी नाम लिखे जाते थे।

23 जो लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, उनके नाम एल्याशीब के पुत्र यहोहानान के दिनों तक इतिहास की पुस्तक में लिखे जाते थे।

24 और लेवियों के मुख्य पुरुष ये थे: अर्थात् हशब्याह, शेरेब्याह और कदमीएल का पुत्र येशुअ; और उनके सामने उनके भाई परमेश्वर के भक्त दाऊद की आज्ञा के अनुसार आमने-सामने स्तुति और धन्यवाद करने पर नियुक्त थे।

25 मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा देनेवाले द्वारपाल थे।

26 योयाकीम के दिनों में जो योसादाक का पोता और येशुअ का पुत्र था, और नहम्याह अधिपति और एज्रा याजक और शास्त्री के दिनों में ये ही थे।

१२२२२२२२ १२ १२२२२२२२ १२ १२२२२२२२२२

27 यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय लेवीय १२२२२ १२ १२२२२२२२\* में ढूँढे गए, कि यरूशलेम को पहुँचाए जाएँ, जिससे आनन्द और धन्यवाद करके और झाँझ, सारंगी और वीणा बजाकर, और गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें।

28 तो गवैयों के सन्तान यरूशलेम के चारों ओर के देश से और नतोपातियों के गाँवों से,

29 और बेतगिलगाल से, और गेबा और अज्मावेत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गवैयों ने यरूशलेम के आस-पास गाँव बसा लिये थे।

30 तब याजकों और लेवियों ने अपने-अपने को शुद्ध किया; और उन्होंने प्रजा को, और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया।

31 तब मैंने यहूदी हाकिमों को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराए, जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इनमें से एक दल तो दक्षिण की ओर, अर्थात् कूडा फाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर-ऊपर से चला;

32 और उसके पीछे-पीछे ये चले, अर्थात् होशयाह और यहूदा के आधे हाकिम,

33 और अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम,

34 यहूदा, विन्यामीन, शमायाह, और यिर्मयाह,

35 और याजकों के कितने पुत्र तुरहियां लिये हुए: जकर्याह जो योनातान का पुत्र था, यह शमायाह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र, यह मीकायाह का पुत्र, यह जक्कूर का पुत्र, यह आसाप का पुत्र था।

36 और उसके भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै, माए, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर के

\* 12:27 १२२२२ १२ १२२२२२२२: में अर्थात् यहूदा और विन्यामीन के नगरों में जहाँ वे रह रहे थे। (नहे. 11:36)





31 फिर मैंने लकड़ी की भेंट ले आने के विशेष समय ठहरा दिए, और पहली-पहली उपज के देने का प्रबन्ध भी किया। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये मुझे स्मरण कर।



और हाकिमों पर उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए; क्योंकि वह देखने में सुन्दर थी।

12 खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर रानी वशती ने आने से इन्कार किया। इस पर राजा बड़े क्रोध से जलने लगा।

13 तब राजा ने समय-समय का भेद जाननेवाले [2:22] से पूछा (राजा तो नीति और न्याय के सब ज्ञानियों से ऐसा ही किया करता था।

14 उसके पास कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना, और ममूकान नामक फारस, और मादै के सात प्रधान थे, जो राजा का दर्शन करते, और राज्य में मुख्य-मुख्य पदों पर नियुक्त किए गए थे।)

15 राजा ने पूछा, “रानी वशती ने राजा क्षयर्ष की खोजों द्वारा दिलाई हुई आज्ञा का उल्लंघन किया, तो नीति के अनुसार उसके साथ क्या किया जाए?”

16 तब ममूकान ने राजा और हाकिमों की उपस्थिति में उत्तर दिया, “रानी वशती ने जो अनुचित काम किया है, वह न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमों से और उन सब देशों के लोगों से भी जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में रहते हैं।

17 क्योंकि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियों में होगी और जब यह कहा जाएगा, ‘राजा क्षयर्ष ने रानी वशती को अपने सामने ले आने की आज्ञा दी परन्तु वह न आई,’ तब वे भी अपने-अपने पति को तुच्छ जानने लगेंगी।

18 आज के दिन फारस और मादी हाकिमों की स्त्रियाँ जिन्होंने रानी की यह बात सुनी है तो वे भी राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी; इस प्रकार बहुत ही घृणा और क्रोध उत्पन्न होगा।

19 यदि राजा को स्वीकार हो, तो यह आज्ञा निकाले, और फारसियों और मादियों के कानून में लिखी भी जाए, जिससे कभी बदल न सके, कि रानी वशती राजा क्षयर्ष के सम्मुख फिर कभी आने न पाए, और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे दे जो उससे अच्छी हो।

20 अतः जब राजा की यह आज्ञा उसके सारे राज्य में सुनाई जाएगी, तब सब पत्नियाँ, अपने-अपने पति का चाहे बड़ा हो या छोटा, आदरमान करती रहेंगी।”

21 यह बात राजा और हाकिमों को पसन्द आई और राजा ने ममूकान की सम्मति मान ली और अपने राज्य में,

22 अर्थात् प्रत्येक प्रान्त के अक्षरों में और प्रत्येक जाति की भाषा में चिट्ठियाँ भेजीं, कि सब पुरुष अपने-अपने घर में अधिकार चलाएँ, और अपनी जाति की

भाषा बोला करें।

## 2

[2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

1 इन बातों के बाद जब राजा क्षयर्ष का गुस्सा ठंडा हो गया, तब उसने रानी वशती की, और जो काम उसने किया था, और जो उसके विषय में आज्ञा निकली थी उसकी भी सुधि ली।

2 तब राजा के सेवक जो उसके टहलुए थे, कहने लगे, “राजा के लिये सुन्दर तथा युवा कुंवारियाँ ढूँढी जाएँ।

3 और राजा ने अपने राज्य के सब प्रान्तों में लोगों को इसलिए नियुक्त किया कि वे सब सुन्दर युवा कुंवारियों को शूशन गढ़ के रनवास में इकट्ठा करें और स्त्रियों के प्रबन्धक हेगो को जो राजा का खोजा था सौंप दें; और शुद्ध करने के योग्य वस्तुएँ उन्हें दी जाएँ।

4 तब उनमें से जो कुंवारी राजा की दृष्टि में उत्तम ठहरे, वह रानी वशती के स्थान पर पटरानी बनाई जाए।” यह बात राजा को पसन्द आई और उसने ऐसा ही किया।

5 शूशन गढ़ में मोर्दकै नामक एक यहूदी रहता था, जो कीश नाम के एक बिन्यामीनी का परपोता, शिमी का पोता, और याईर का पुत्र था।

6 वह उन बन्दियों के साथ यरूशलेम से बँधुआई में गया था, जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर, यहूदा के राजा यकोन्याह के संग बन्दी बना के ले गया था।

7 उसने [2:22]\* नामक अपनी चचेरी बहन को, जो एस्तेर भी कहलाती थी, पाला-पोसा था; क्योंकि उसके माता-पिता कोई न थे, और वह लड़की सुन्दर और रूपवती थी, और जब उसके माता-पिता मर गए, तब मोर्दकै ने उसको अपनी बेटी करके पाला।

8 जब राजा की आज्ञा और नियम सुनाए गए, और बहुत सी युवा स्त्रियाँ, शूशन गढ़ में हेगो के अधिकार में इकट्ठी की गईं, तब एस्तेर भी राजभवन में स्त्रियों के प्रबन्धक हेगो के अधिकार में सौंपी गईं।

9 वह युवती उसकी दृष्टि में अच्छी लगी; और वह उससे प्रसन्न हुआ, तब उसने बिना विलम्ब उसे राजभवन में से शुद्ध करने की वस्तुएँ, और उसका भोजन, और उसके लिये चुनी हुई सात सहेलियाँ भी दीं, और उसको और उसकी सहेलियों को रनवास में सबसे अच्छा रहने का स्थान दिया।

10 एस्तेर ने न अपनी जाति बताई थी, न अपना कुल; क्योंकि मोर्दकै ने उसको आज्ञा दी थी, कि उसे न बताना।

† 1:13 [2:22]: फारस में विख्यात खगोलशास्त्री नहीं, परन्तु व्यवहारिक बुद्धि रखनेवाले शास्त्री जो पूर्वकाल के तथ्यों एवं प्रथाओं के ज्ञानी थे।

\* 2:7 [2:22]: उस युवती का यह नाम सम्भवतः इब्रानी भाषा का था और एस्तेर नाम फारसी भाषा का था।



मोर्देकै की जाति जानकर, विनाश कर डालने की युक्ति निकाली।

7 राजा क्षयर्ष के बारहवें वर्ष के नीसान नामक पहले महीने में, हामान ने अदार नामक बारहवें महीने तक के एक-एक दिन और एक-एक महीने के लिये “पूर” अर्थात् चिट्ठी अपने सामने डलवाई।

8 हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा, “तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेवाले देश-देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिए उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है।

9 यदि राजा को स्वीकार हो तो उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राजा के भण्डारियों के हाथ में राजभण्डार में पहुँचाने के लिये, दस हजार किक्कार चाँदी दूँगा।”

10 तब राजा ने अपनी मुहर वाली अंगूठी अपने हाथ से उतारकर अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहूदियों का बैरी था दे दी।

11 और राजा ने हामान से कहा, “वह चाँदी तुझे दी गई है, और वे लोग भी, ताकि तू उनसे जैसा तेरा जी चाहे वैसा ही व्यवहार करे।”

12 फिर उसी पहले महीने के तेरहवें दिन को राजा के लेखक बुलाए गए, और हामान की आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियों, और सब प्रान्तों के प्रधानों, और देश-देश के लोगों के हाकिमों के लिये चिट्ठियाँ, एक-एक प्रान्त के अक्षरों में, और एक-एक देश के लोगों की भाषा में राजा क्षयर्ष के नाम से लिखी गई; और उनमें राजा की मुहर वाली अंगूठी की छाप लगाई गई।

13 राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिट्ठियाँ हर डाकियों के द्वारा भेजी गई कि एक ही दिन में, अर्थात् अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, क्या जवान, क्या बूढ़ा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहूदी घात और नाश किए जाएँ; और उनकी धन-सम्पत्ति लूट ली जाए।

14 उस आज्ञा के लेख की नकलें सब प्रान्तों में खुली हुई भेजी गई कि सब देशों के लोग उस दिन के लिये तैयार हो जाएँ।

15 यह आज्ञा शूशन गढ़ में दी गई, और डाकिए राजा की आज्ञा से तुरन्त निकल गए। राजा और हामान तो दाखमधु पीने बैठ गए; परन्तु

२२२२२२ २२२ २२\* ।

## 4

२२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२२२२२ २२ २२२२

1 जब मोर्देकै ने जान लिया कि क्या-क्या किया गया है तब मोर्देकै वस्त्र फाड़, टाट पहन, राख डालकर, नगर के मध्य जाकर ऊँचे और दुःख भरे शब्द से चिल्लाने लगा;

2 और वह राजभवन के फाटक के सामने पहुँचा, परन्तु टाट पहने हुए राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न थी।

3 एक-एक प्रान्त में, जहाँ-जहाँ राजा की आज्ञा और नियम पहुँचा, वहाँ-वहाँ यहूदी बड़ा विलाप करने और उपवास करने और रोने पीटने लगे; वरन् बहुत से टाट पहने और राख डाले हुए पड़े रहे।

4 २२२२२२ २२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२ २२२ २२२२\*, तब रानी शोक से भर गई; और मोर्देकै के पास वस्त्र भेजकर यह कहलाया कि टाट उतारकर इन्हें पहन ले, परन्तु उसने उन्हें न लिया।

5 तब एस्तेर ने राजा के खोजों में से हताक को जिसे राजा ने उसके पास रहने को ठहराया था, बुलवाकर आज्ञा दी, कि मोर्देकै के पास जाकर मालूम कर ले, कि क्या बात है और इसका क्या कारण है।

6 तब हताक नगर के उस चौक में, जो राजभवन के फाटक के सामने था, मोर्देकै के पास निकल गया।

7 मोर्देकै ने उसको सब कुछ बता दिया कि मेरे ऊपर क्या-क्या बीता है, और हामान ने यहूदियों के नाश करने की अनुमति पाने के लिये राजभण्डार में कितनी चाँदी भर देने का वचन दिया है, यह भी ठीक-ठीक बता दिया।

8 फिर यहूदियों को विनाश करने की जो आज्ञा शूशन में दी गई थी, उसकी एक नकल भी उसने हताक के हाथ में, एस्तेर को दिखाने के लिये दी, और उसे सब हाल बताने, और यह आज्ञा देने को कहा, कि भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करे।

9 तब हताक ने एस्तेर के पास जाकर मोर्देकै की बातें कह सुनाई।

10 तब एस्तेर ने हताक को मोर्देकै से यह कहने की आज्ञा दी,

11 “राजा के सब कर्मचारियों, वरन् राजा के प्रान्तों के सब लोगों को भी मालूम है, कि क्या पुरुष क्या स्त्री, कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आँगन में राजा के पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है;

† 3:15 २२२२ २२२ २२२ २२२२२२ २२२ २२: शूशन फारस की राजधानी थी जहाँ फारस के उच्च अधिकारियों का निवास-स्थान था। \* 4:4 २२२२२२ २२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२ २२२२: सम्भवतः एस्तेर की जाति और मोर्देकै से उसका सम्बंध उसकी सहेलियों को ज्ञात हो गया था परन्तु राजा यह बात नहीं जानता था।





## 6

११११ ११ ११११११ १११११११ ११ ११११११

1 उस रात राजा को नींद नहीं आई, इसलिए उसकी आज्ञा से इतिहास की पुस्तक लाई गई, और पढ़कर राजा को सुनाई गई।

2 उसमें यह लिखा हुआ मिला, कि जब राजा क्षयर्य के हाकिम जो द्वारपाल भी थे, उनमें से बिगताना और तेरेश नामक दो जनों ने उस पर हाथ चलाने की युक्ति की थी उसे मोर्दकै ने प्रगट किया था।

3 तब राजा ने पूछा, “११११ ११११ ११११११११ ११ ११११ ११११११११११ ११ ११११११ ११ ११\*?” राजा के जो सेवक उसकी सेवा टहल कर रहे थे, उन्होंने उसको उत्तर दिया, “उसके लिये कुछ भी नहीं किया गया।”

4 राजा ने पूछा, “आँगन में कौन है?” उसी समय हामान राजा के भवन से बाहरी आँगन में इस मनसा से आया था, कि जो खम्भा उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, उस पर उसको लटका देने की चर्चा राजा से करे।

5 तब राजा के सेवकों ने उससे कहा, “आँगन में तो हामान खड़ा है।” राजा ने कहा, “उसे भीतर बुलवा लाओ।”

6 जब हामान भीतर आया, तब राजा ने उससे पूछा, “जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा?” हामान ने यह सोचकर, कि मुझसे अधिक राजा किसकी प्रतिष्ठा करना चाहता होगा?

7 राजा को उत्तर दिया, “जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे,

8 ११११ ११११ ११११११ ११११११ ११११ ११११, ११ ११११ ११११११ है, और एक घोड़ा भी, जिस पर राजा सवार होता है, और उसके सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता है वह भी लाया जाए।

9 फिर वह वस्त्र, और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए, और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो, उसको वह वस्त्र पहनाया जाए, और उस घोड़े पर सवार करके, नगर के चौक में उसे फिराया जाए; और उसके आगे-आगे यह प्रचार किया जाए, ‘जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।’”

10 राजा ने हामान से कहा, “फुर्ती करके अपने कहने के अनुसार उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर, उस यहूदी मोर्दकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है, वैसा

ही कर। जैसा तूने कहा है उसमें कुछ भी कमी होने न जाए।”

11 तब हामान ने उस वस्त्र, और उस घोड़े को लेकर, मोर्दकै को पहनाया, और उसे घोड़े पर चढ़ाकर, नगर के चौक में इस प्रकार पुकारता हुआ घुमाया, “जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।”

12 तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया परन्तु हामान शोक करता हुआ और सिर ढाँपे हुए झट अपने घर को गया।

13 हामान ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सब मित्रों से सब कुछ जो उस पर बीता था वर्णन किया। तब उसके बुद्धिमान मित्रों और उसकी पत्नी जेरेश ने उससे कहा, “मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है, यदि वह यहूदियों के वंश में का है, तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उससे पूरी रीति नीचा हो जाएगा।”

14 वे उससे बातें कर ही रहे थे, कि राजा के खोजे आकर, हामान को एस्तेर के किए हुए भोज में फुर्ती से बुला ले गए।

## 7

१११११ ११ १११११११ ११ १११ ११११११

1 अतः राजा और हामान एस्तेर रानी के भोज में आ गए।

2 और राजा ने दूसरे दिन दाखमधु पीते-पीते एस्तेर से फिर पूछा, “हे एस्तेर रानी! तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या माँगती है? माँग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा।” (११. 6:23)

3 एस्तेर रानी ने उत्तर दिया, “हे राजा! यदि तू मुझ पर प्रसन्न है, और राजा को यह स्वीकार हो, तो मेरे निवेदन से मुझे, और मेरे माँगने से मेरे लोगों को प्राणदान मिले।

4 क्योंकि मैं और मेरी जाति के लोग बेच डाले गए हैं, और हम सब घात और नाश किए जानेवाले हैं। यदि हम केवल दास-दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते, तो मैं चुप रहती; चाहे उस दशा में भी वह विरोधी राजा की हानि भर न सकता।”

5 तब राजा क्षयर्य ने एस्तेर रानी से पूछा, “वह कौन है? और कहाँ है जिसने ऐसा करने की मनसा की है?”

6 एस्तेर ने उत्तर दिया, “वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है।” तब हामान राजा-रानी के सामने भयभीत हो गया।

\* 6:3 ११११ ११११ १११११११ ११ ११११ ११११११११११ ११ ११११ ११ ११: फारसी राज व्यवस्था का एक स्थापित सिद्धान्त था कि राजसी लाभार्थियों को उचित पुरस्कार दिया जाए। † 6:8 ११११ ११११ १११११११ १११११११ ११११ ११११, ११ ११११ ११११११: हामान ने जिस प्रतिष्ठा का सुझाव दिया था वह फारसी राजाओं द्वारा नागरिक को बहुत ही कम दिया जाता था।





21 और यह आज्ञा दी, कि अदार महीने के चौदहवें और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को प्रतिवर्ष माना करें।

22 जिनमें यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया, और यह महीना जिसमें शोक आनन्द से, और विलाप खुशी से बदला गया; (माना करें) और उनको भोज और आनन्द और एक दूसरे के पास भोजन सामग्री भेजने और कंगालों को दान देने के दिन मानें।

23 अतः यहूदियों ने जैसा आरम्भ किया था, और जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा, वैसा ही करने का निश्चय कर लिया।

24 क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान जो सब यहूदियों का विरोधी था, उसने यहूदियों का नाश करने की युक्ति की, और उन्हें मिटा डालने और नाश करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली थी।

25 परन्तु जब राजा ने यह जान लिया, तब उसने आज्ञा दी और लिखवाई कि जो दुष्ट युक्ति हामान ने यहूदियों के विरुद्ध की थी वह उसी के सिर पर पलट आए, तब वह और उसके पुत्र फांसी के खम्भों पर लटकाए गए।

26 इस कारण उन दिनों का नाम पूर शब्द से पूरीम रखा गया। इस चिट्ठी की सब बातों के कारण, और जो कुछ उन्होंने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीता था, उसके कारण भी

27 यहूदियों ने अपने-अपने लिये और अपनी सन्तान के लिये, और उन सभी के लिये भी जो उनमें मिल गए थे यह अटल प्रण किया, कि उस लेख के अनुसार प्रतिवर्ष उसके ठहराए हुए समय में वे ये दो दिन मानें।

28 और पीढ़ी-पीढ़ी, कुल-कुल, प्रान्त-प्रान्त, नगर-नगर में ये दिन स्मरण किए और माने जाएँगे। और पूरीम नाम के दिन यहूदियों में कभी न मिटेंगे और उनका स्मरण उनके वंश से जाता न रहेगा।

29 फिर अबीहैल की बेटी एस्तेर रानी, और मोर्दकै यहूदी ने, पूरीम के विषय यह दूसरी चिट्ठी बड़े अधिकार के साथ लिखी।

30 इसकी नकलें मोर्दकै ने क्षयर्य के राज्य के, एक सौ सत्ताईस प्रान्तों के सब यहूदियों के पास शान्ति देनेवाली और सच्ची बातों के साथ इस आशय से भेजीं,

31 कि पूरीम के उन दिनों के विशेष ठहराए हुए समयों में मोर्दकै यहूदी और एस्तेर रानी की आज्ञा के अनुसार, और जो यहूदियों ने अपने और अपनी सन्तान के लिये ठान लिया था, उसके अनुसार भी उपवास और विलाप किए जाएँ।

32 पूरीम के विषय का यह नियम एस्तेर की आज्ञा से भी स्थिर किया गया, और उनकी चर्चा पुस्तक में लिखी गई।

## 10

?????????? ?? ?????????????

1 राजा क्षयर्य ने देश और समुद्र के टापुओं पर कर लगाया।

2 उसके माहात्म्य और पराक्रम के कामों, और मोर्दकै की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा, जो राजा ने उसकी की थी, क्या वह मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

3 ????????? ?????????????, ????????????? ?????? ?? ???? ?????? ????\*, और यहूदियों की दृष्टि में बड़ा था, और उसके सब भाई उससे प्रसन्न थे, क्योंकि वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा करता था और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था।

\* 10:3 ????????? ?????????????, ????????????? ?????? ?? ???? ?????? ???? राजा के बाद दूसरा स्थान मोर्दकै का था और वह क्षयर्य के अन्त समय तक उसका वाञ्छित सेवक था।





विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थीं, तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने-अपने यहाँ से उसके पास चले।

12 जब उन्होंने दूर से आँख उठाकर अय्यूब को देखा और उसे न पहचान सके, तब चिल्लाकर रो उठे; और अपना-अपना बागा फाड़ा, और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपने-अपने सिर पर डाली। (27:30,31)

13 तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे, परन्तु उसका दुःख बहुत ही बड़ा जानकर किसी ने उससे एक भी बात न कही।

### 3

1 इसके बाद अय्यूब मुँह खोलकर अपने जन्मदिन को धिक्कारने

- 2 और कहने लगा,
- 3 “वह दिन नाश हो जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, ‘बेटे का गर्भ रहा।’
- 4 वह दिन अंधियारा हो जाए!
- ऊपर से परमेश्वर उसकी सुधि न ले, और न उसमें प्रकाश होए।
- 5 अंधियारा और मृत्यु की छाया उस पर रहे। बादल उस पर छाए रहें; और दिन को अंधेरा कर देनेवाली चीजें उसे डराएँ।
- 6 घोर अंधकार उस रात को पकड़े; वर्षा के दिनों के बीच वह आनन्द न करने पाए, और न महीनों में उसकी गिनती की जाए।
- 7 सुनो, वह रात बाँझ हो जाए; उसमें गाने का शब्द न सुन पड़े
- 8 जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं, और लिव्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें।
- 9 उसकी संध्या के तारे प्रकाश न दें; वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले, वह भोर की पलकों को भी देखने न पाए;
- 10 क्योंकि उसने मेरी माता की कोख को बन्द न किया और कष्ट को मेरी दृष्टि से न छिपाया।
- 11 “मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया? पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?
- 12 मैं घुटनों पर क्यों लिया गया?

\* 3:13 27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2 इसकी अपेक्षा कि कष्ट उठाता और तनाव ग्रस्त होता। अर्थात् पृथ्वी के राजाओं और राजकुमारों के साथ शान्त एवं सम्मानित विश्राम में होता। † 3:14 27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2 महान एवं बुद्धिमान लोग आपातकालीन स्थिति में राजाओं को परामर्श देते थे। ‡ 3:19 27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2 वृद्ध एवं युवा, उच्च पदाधिकारी एवं नगण्य लोग मृत्यु सब को बराबर बना देती है।

मैं छातियों को क्यों पीने पाया?

13 ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, 27:30,31

27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2

14 और मैं पृथ्वी के उन 27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2 होता

जिन्होंने अपने लिये सुनसान स्थान बनवा लिए,

15 या मैं उन राजकुमारों के साथ होता जिनके पास सोना था

जिन्होंने अपने घरों को चाँदी से भर लिया था;

16 या मैं असमय गिरे हुए गर्भ के समान हुआ होता,

या ऐसे बच्चों के समान होता जिन्होंने

उजियाले को कभी देखा ही न हो।

17 उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते,

और थके-माँदे विश्राम पाते हैं।

18 उसमें बन्धुए एक संग सुख से रहते हैं;

और परिश्रम करानेवाले का शब्द नहीं सुनते।

19 उसमें 27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2, और दास अपने

स्वामी से स्वतंत्र रहता है।

20 “दुःखियों को उजियाला,

और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है?

21 वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं;

और गड़े हुए धन से अधिक उसकी खोज करते हैं;

(27:30,31. 9:6)

22 वे कब्र को पहुँचकर आनन्दित और अत्यन्त मगन होते हैं।

23 उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है

जिसका मार्ग छिपा है,

जिसके चारों ओर परमेश्वर ने घेरा बाँध दिया है?

24 मुझे तो रोटी खाने के बदले लम्बी-लम्बी साँसें आती हैं,

और मेरा विलाप धारा के समान बहता रहता है।

25 क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है,

और जिस बात से मैं भय खाता हूँ वही मुझ पर आ जाती है।

26 मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम मिलता

है; परन्तु दुःख ही दुःख आता है।”

### 4

27:30,31 28:1-2 29:1-2 30:1-2 31:1-2 32:1-2 33:1-2 34:1-2 35:1-2 36:1-2 37:1-2 38:1-2 39:1-2 40:1-2 41:1-2 42:1-2 43:1-2 44:1-2 45:1-2 46:1-2 47:1-2 48:1-2 49:1-2 50:1-2 51:1-2 52:1-2 53:1-2 54:1-2 55:1-2 56:1-2 57:1-2 58:1-2 59:1-2 60:1-2 61:1-2 62:1-2 63:1-2 64:1-2 65:1-2 66:1-2 67:1-2 68:1-2 69:1-2 70:1-2 71:1-2 72:1-2 73:1-2 74:1-2 75:1-2 76:1-2 77:1-2 78:1-2 79:1-2 80:1-2 81:1-2 82:1-2 83:1-2 84:1-2 85:1-2 86:1-2 87:1-2 88:1-2 89:1-2 90:1-2 91:1-2 92:1-2 93:1-2 94:1-2 95:1-2 96:1-2 97:1-2 98:1-2 99:1-2 100:1-2

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा,





11 इसी रीति वह नम्र लोगों को ऊँचे स्थान पर बैठाता है,  
और शोक का पहरावा पहने हुए लोग ऊँचे  
पर पहुँचकर बचते हैं। (1:52,53, 4:10)

12 22 22 222222 222222 22 2222222222  
22222222 22 222222 22†,

और उनके हाथों से कुछ भी बन नहीं पड़ता।

13 वह बुद्धिमानों को उनकी धूर्तता ही में फँसाता है;  
और कुटिल लोगों की युक्ति दूर की जाती है। (1  
222222. 3:19,20)

14 उन पर दिन को अंधेरा छा जाता है, और  
दिन दुपहरी में वे रात के समान टटोलते फिरते हैं।

15 परन्तु वह दरिद्रों को उनके वचनरूपी तलवार  
से और बलवानों के हाथ से बचाता है।

16 इसलिए कंगालों को आशा होती है, और  
कुटिल मनुष्यों का मुँह बन्द हो जाता है।

17 “देख, क्या ही धन्य वह मनुष्य, जिसको  
परमेश्वर ताड़ना देता है;

इसलिए तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत  
जान।

18 क्योंकि वही घायल करता, और वही पट्टी भी बाँधता  
है;  
वही मारता है, और वही अपने हाथों से चंगा भी करता  
है।

19 22 22222 22 22222222222222 22 222222222222†;  
वरन्

सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी।

20 अकाल में वह तुझे मृत्यु से, और युद्ध में  
तलवार की धार से बचा लेगा।

21 तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा और जब  
विनाश आए, तब भी तुझे भय न होगा।

22 तू उजाड़ और अकाल के दिनों में हँसमुख रहेगा,  
और तुझे जंगली जन्तुओं से डर न लगेगा।

23 वरन् मैदान के पत्थर भी तुझ से वाचा बाँधे रहेंगे,  
और वन पशु तुझ से मेल रखेंगे।

24 और तुझे निश्चय होगा, कि तेरा डेरा कुशल से है,  
और जब तू अपने निवास में देखे तब  
कोई वस्तु खोई न होगी।

25 तुझे यह भी निश्चित होगा, कि मेरे बहुत वंश होंगे,  
और मेरी सन्तान पृथ्वी की घास के तुल्य बहुत होंगी।

26 जैसे पुलियों का ढेर समय पर खलिहान में रखा जाता  
है,  
वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर कब्र को पहुँचेगा।

27 देख, हमने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है;  
इसे तू सुन, और अपने लाभ के लिये ध्यान में रख।”

## 6

22222222 22 2222222

1 फिर अभ्युब ने उत्तर देकर कहा,

2 “भला होता कि मेरा खेद तौला जाता,  
और मेरी सारी विपत्ति तराजू में रखी जाती!

3 क्योंकि वह समुद्र की रेत से भी भारी ठहरती;  
इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं।

4 क्योंकि 2222222222222222 22 2222 222222 22222222  
222222 2222†;

और उनका विष मेरी आत्मा में पैठ गया है;  
परमेश्वर की भयंकर बात मेरे विरुद्ध पाँति बाँधे हैं।

5 जब जंगली गदहे को घास मिलती, तब क्या वह रेंकता  
है?

और बैल चारा पाकर क्या डकारता है?

6 जो फीका है क्या वह बिना नमक खाया जाता है?  
क्या अण्डे की सफेदी में भी कुछ स्वाद होता है?

7 जिन वस्तुओं को मैं छूना भी नहीं चाहता वही  
मानो मेरे लिये घिनौना आहार ठहरी हैं।

8 “भला होता कि मुझे मुँह माँगा वर मिलता  
और 2222 2222 22 2222 2222 222222 2222 22  
22222222222 222222 22 222222†!

9 कि परमेश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता,  
और हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता!

10 यही मेरी शान्ति का कारण;

वरन् भारी पीड़ा में भी मैं इस कारण से उछल पड़ता;  
क्योंकि मैंने उस पवित्र के वचनों का कभी इन्कार नहीं  
किया।

11 मुझ में बल ही क्या है कि मैं आशा रखूँ? और  
मेरा अन्त ही क्या होगा कि मैं धीरज धरूँ?

12 क्या मेरी दृढ़ता पत्थरों के समान है?  
क्या मेरा शरीर पीतल का है?

13 क्या मैं निराधार नहीं हूँ?

क्या काम करने की शक्ति मुझसे दूर नहीं हो गई?

14 “जो पड़ोसी पर कृपा नहीं करता वह  
सर्वशक्तिमान का भय मानना छोड़ देता है।

† 5:12 22 22 222222 222222 22 222222222222 22222222 22 22222 22: वह उनकी योजना निरर्थक कर देता है और उनकी युक्तियों को व्यर्थ कर देता है। ‡ 5:19 22 22222 22 222222222222 22 222222222222: यहाँ छः का आंकड़ा अनन्त संख्या का बोधक है अर्थात् वह अनेक विपत्तियों में साथ देगा। \* 6:4 22222222222222 22 2222 22222 222222 22222 2222: अर्थात् मेरा कष्ट कम नहीं है। मेरी पीड़ा ऐसी है जैसी मनुष्य नहीं दे सकता। † 6:8 2222 2222 22 2222 2222 2222 2222 22 222222222222 222222 22 222222: अर्थात् मृत्यु - वह उसकी आशा करता था, उसकी प्रतीक्षा करता था वह उस पल की अधीरता से बाट जोह रहा था।

15 मेरे भाई नाले के समान विश्वासघाती हो गए हैं,  
वरन् उन नालों के समान जिनकी धार सूख जाती है;  
16 और वे बर्फ के कारण काले से हो जाते हैं,  
और उनमें हिम छिपा रहता है।  
17 परन्तु जब गरमी होने लगती तब उनकी धाराएँ लोप  
हो जाती हैं,  
और जब कड़ी धूप पड़ती है तब वे अपनी  
जगह से उड़ जाते हैं  
18 वे घूमते-घूमते सूख जातीं,  
और सुनसान स्थान में बहकर नाश होती हैं।  
19 तेमा के बंजारे देखते रहे और शेबा के  
काफिलेवालों ने उनका रास्ता देखा।  
20 वे लज्जित हुए क्योंकि उन्होंने भरोसा रखा था;  
और वहाँ पहुँचकर उनके मुँह सूख गए।  
21 उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न रहे;  
मेरी विपत्ति देखकर तुम डर गए हो।  
22 क्या मैंने तुम से कहा था, 'मुझे कुछ दो?'  
या 'अपनी सम्पत्ति में से मेरे लिये कुछ दो?'  
23 या 'मुझे सतानेवाले के हाथ से बचाओ?'  
या 'उपद्रव करनेवालों के वश से छुड़ा लो?'  
24 " [REDACTED];  
और मुझे समझाओ कि मैंने किस बात में चूक की है।  
25 सच्चाई के वचनों में कितना प्रभाव होता है,  
परन्तु तुम्हारे विवाद से क्या लाभ होता है?  
26 क्या तुम बातें पकड़ने की कल्पना करते हो?  
निराश जन की बातें तो वायु के समान हैं।  
27 तुम अनाथों पर चिट्ठी डालते,  
और अपने मित्र को बेचकर लाभ उठानेवाले हो।  
28 "इसलिए अब कृपा करके मुझे देखो;  
निश्चय मैं तुम्हारे सामने कदापि झूठ न बोलूँगा।  
29 फिर कुछ अन्याय न होने पाए; फिर इस मुकद्दमे  
में मेरा धर्म ज्यों का त्यों बना है, मैं सत्य पर हूँ।  
30 क्या मेरे वचनों में कुछ कुटिलता है?  
क्या मैं दुष्टता नहीं पहचान सकता?

## 7

[REDACTED]

1 "क्या मनुष्य को पृथ्वी पर कठिन सेवा करनी नहीं  
पड़ती?

क्या उसके दिन मजदूर के से नहीं होते? ( [REDACTED].  
14:5,13,14)  
2 जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा करे, या  
मजदूर अपनी मजदूरी की आशा रखे;  
3 वैसा ही मैं अनर्थ के महीनों का स्वामी बनाया गया हूँ,  
और मेरे लिये क्लेश से भरी रातें ठहराई गई हैं।  
( [REDACTED]. 15:31)  
4 जब मैं लेट जाता, तब कहता हूँ,  
'मैं कब उठूँगा?' और रात कब बीतेगी?  
और पौ फटने तक छटपटाते-छटपटाते थक जाता हूँ।  
5 [REDACTED];  
मेरा चमड़ा सिमट जाता, और फिर गल जाता है।  
( [REDACTED]. 14:11)  
6 मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से अधिक फुर्ती से  
चलनेवाले हैं  
और निराशा में बीते जाते हैं।  
7 " [REDACTED] कि मेरा जीवन वायु ही है;  
और मैं अपनी आँखों से कल्याण फिर न देखूँगा।  
8 जो मुझे अब देखता है उसे मैं फिर दिखाई न दूँगा;  
तेरी आँखें मेरी ओर होंगी परन्तु मैं न मिलूँगा।  
9 जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है,  
वैसे ही अधोलोक में उतरनेवाला फिर वहाँ से नहीं लौट  
सकता;  
10 वह अपने घर को फिर लौट न आएगा,  
और न अपने स्थान में फिर मिलेगा।  
11 "इसलिए मैं अपना मुँह बन्द न रखूँगा;  
अपने मन का खेद खोलकर कहूँगा;  
और अपने जीव की कड़वाहट के कारण कुड़कुड़ाता  
रहूँगा।  
12 क्या मैं समुद्र हूँ, या समुद्री अजगर हूँ,  
कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है?  
13 जब जब मैं सोचता हूँ कि मुझे खाट पर शान्ति  
मिलेगी,  
और बिछौने पर मेरा खेद कुछ हलका होगा;  
14 तब-तब तू मुझे स्वप्नों से घबरा देता,  
और दर्शनों से भयभीत कर देता है;  
15 यहाँ तक कि मेरा जी फांसी को,  
और जीवन से मृत्यु को अधिक चाहता है।  
16 मुझे अपने जीवन से घृणा आती है;

‡ 6:24 [REDACTED]: मुझे सच्चा निर्देश दो या मुझे मेरा कर्तव्य बोध कराओ तो मैं शान्त हो जाऊँगा। \* 7:5 [REDACTED] निःसन्देह अय्यूब अपनी रोगावस्था के बारे में कह रहा है और धारों में कीड़े पड़ जाने और अन्य रोगों की चर्चा की गई है। † 7:7 [REDACTED] हे परमेश्वर यह स्पष्टतः परमेश्वर को पुकारना है। अपने प्राण की पीड़ा के कारण अय्यूब अपने सृजनहार की ओर आँखें और मन लगाता है और कारण जानने की याचना करता है कि उसके जीवन को समाप्त करने का कारण उसके पास क्या है।













24 तू किस कारण अपना मुँह फेर लेता है,  
और मुझे अपना शत्रु गिनता है?  
25 क्या तू उड़ते हुए पत्ते को भी कँपाएगा?  
और सूखे डंटल के पीछे पड़ेगा?  
26 तू मेरे लिये कठिन दुःखों की आज्ञा देता है,  
और मुझे भुगता देता है।  
27 और मेरे पाँवों को काठ में ठोकता,  
और मेरी सारी चाल-चलन देखता रहता है;  
और मेरे पाँवों की चारों ओर सीमा बाँध लेता है।  
28 और मैं सड़ी-गली वस्तु के तुल्य हूँ जो नाश  
हो जाती है, और कीड़ा खाए कपड़े के तुल्य हूँ।

## 14

1 “<sup>1</sup>उसके दिन थोड़े और दुःख भरे हैं।  
2 वह फूल के समान खिलता, फिर तोड़ा जाता है;  
वह छाया की रीति पर ढल जाता, और कहीं ठहरता  
नहीं।  
3 फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता है?  
क्या तू मुझे अपने साथ कचहरी में घसीटता है?  
4 अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है?  
कोई नहीं।  
5 मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं,  
और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है,  
और तूने उसके लिये ऐसा सीमा बाँधा है जिसे वह पार  
नहीं कर सकता,  
6 इस कारण उससे अपना मुँह फेर ले, कि वह आराम  
करे,  
जब तक कि वह मजदूर के समान अपना दिन पूरा न कर  
ले।  
7 “वृक्ष के लिये तो आशा रहती है,  
कि चाहे वह काट डाला भी जाए, तो भी  
फिर पनपेगा और उससे नर्म-नर्म डालियाँ निकलती ही  
रहेंगी।  
8 चाहे उसकी जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए,  
और उसका टूँट मिट्टी में सूख भी जाए,  
9 तो भी वर्षा की गन्ध पाकर वह फिर पनपेगा,  
और पौधे के समान उससे शाखाएँ फूटेंगी।  
10 परन्तु मनुष्य मर जाता, और पड़ा रहता है;

जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहाँ रहा?  
11 जैसे नदी का जल घट जाता है,  
और <sup>12</sup>वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता;  
जब तक आकाश बना रहेगा तब तक वह न जागेगा,  
और न उसकी नींद टूटेगी।  
13 भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता,  
और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे  
छिपाए रखता,  
और मेरे लिये समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता।  
14 यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?  
जब तक मेरा छुटकारा न होता  
तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए  
रहता।  
15 तू मुझे पुकारता, और मैं उत्तर देता हूँ;  
तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती  
है।  
16 परन्तु अब तू मेरे पग-पग को गिनता है,  
क्या तू मेरे पाप की ताक में लगा नहीं रहता?  
17 मेरे अपराध छाप लगी हुई थैली में हैं,  
और तूने मेरे अधर्म को सी रखा है।  
18 “और निश्चय पहाड़ भी गिरते-गिरते नाश हो जाता  
है,  
और चट्टान अपने स्थान से हट जाती है;  
19 और पत्थर जल से घिस जाते हैं,  
और भूमि की धूलि उसकी बाढ़ से बहाई जाती है;  
उसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को मिटा देता है।  
20 तू सदा उस पर प्रबल होता, और वह जाता रहता है;  
तू उसका चेहरा बिगाड़कर उसे निकाल देता है।  
21 उसके पुत्रों की बड़ाई होती है, और यह उसे नहीं  
सूझता;  
और उनकी घटी होती है, परन्तु वह उनका हाल नहीं  
जानता।  
22 केवल उसकी अपनी देह को दुःख होता है;  
और केवल उसका अपना प्राण ही अन्दर ही अन्दर  
शोकित होता है।”

## 15

<sup>1</sup>तब तेमानी एलीपज ने कहा

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा

‡ 13:26 <sup>1</sup>उसके दिन थोड़े और दुःख भरे हैं। \* 14:1 <sup>1</sup>उसके दिन थोड़े और दुःख भरे हैं। † 14:11 <sup>1</sup>उसके दिन थोड़े और दुःख भरे हैं। जैसे पानी भाप बनकर उड़ जाता है और तल सूख जाता है वैसे ही मनुष्य है जो पूर्णतः लोप हो जाता है और कुछ छोड़कर नहीं जाता है।

2 “क्या बुद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता के साथ उत्तर दे,  
या अपने अन्तःकरण को पूर्वी पवन से भरे?  
3 क्या वह निष्फल वचनों से,  
या व्यर्थ बातों से वाद-विवाद करे?  
4 वरन् तू परमेश्वर का भय मानना छोड़ देता,  
और परमेश्वर की भक्ति करना औरों से भी छुड़ाता है।  
5 तू अपने मुँह से अपना अधर्म प्रगट करता है,  
और धूर्त लोगों के बोलने की रीति पर बोलता है।  
6 मैं तो नहीं परन्तु तेरा मुँह ही तुझे दोषी ठहराता है;  
और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साक्षी देते हैं।  
7 “क्या पहला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ?  
क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ों से भी पहले हुई?  
8 क्या तू परमेश्वर की सभा में बैठा सुनता था?  
क्या बुद्धि का ठेका तू ही ने ले रखा है (22:22-23, 23:18,  
1 22:22, 2:16)  
9 तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते?  
तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं?  
10 हम लोगों में तो पक्के बाल वाले और अति पुरनिये  
मनुष्य हैं,  
जो तेरे पिता से भी बहुत आयु के हैं।  
11 परमेश्वर की शान्तिदायक बातें,  
और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं, क्या ये तेरी दृष्टि में  
तुच्छ हैं?  
12 तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है?  
और तू आँख से क्यों इशारे करता है?  
13 तू भी अपनी आत्मा परमेश्वर के विरुद्ध करता है,  
और अपने मुँह से व्यर्थ बातें निकलने देता है।  
14 मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो?  
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि निर्दोष हो  
सके?  
15 देख, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास नहीं करता,  
और स्वर्ग भी उसकी दृष्टि में निर्मल नहीं है।  
16 फिर मनुष्य अधिक घिनौना और भ्रष्ट है जो  
कुटिलता को पानी के समान पीता है।  
17 “मैं तुझे समझा दूँगा, इसलिए मेरी सुन ले,  
जो मैंने देखा है, उसी का वर्णन मैं करता हूँ।  
18 (वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने पुरखाओं से सुनकर  
बिना छिपाए बताया है।  
19 केवल उन्हीं को देश दिया गया था,  
और उनके मध्य में कोई विदेशी आता-जाता नहीं था।)

20 दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तडपता है, और  
उपद्रवी के वर्षों की गिनती ठहराई हुई है।  
21 उसके कान में डरावना शब्द गूँजता रहता है,  
कुशल के समय भी नाश करनेवाला उस पर आ पड़ता  
है।  
22 उसे अंधियारे में से फिर निकलने की कुछ आशा नहीं  
होती,  
और तलवार उसकी घात में रहती है।  
23 वह रोटी के लिये मारा-मारा फिरता है, कि कहाँ  
मिलेगी?  
उसे निश्चय रहता है, कि अंधकार का दिन मेरे पास ही  
है।  
24 संकट और दुर्घटना से उसको डर लगता रहता है,  
ऐसे 22:22 22 22:22 22 22:22 22 22:22 22:22  
22\*, वे उस पर प्रबल होते हैं।  
25 क्योंकि उसने तो परमेश्वर के विरुद्ध हाथ बढ़ाया है,  
और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल ठोकता है,  
26 और सिर उठाकर और अपनी मोटी-मोटी  
ढालें दिखाता हुआ घमण्ड से उस पर धावा करता है;  
27 इसलिए कि उसके मुँह पर चिकनाई छा गई है,  
और उसकी कमर में चर्बी जमी है।  
28 और वह उजाड़े हुए नगरों में बस गया है,  
और जो घर रहने योग्य नहीं,  
और खण्डहर होने को छोड़े गए हैं, उनमें बस गया है।  
29 वह धनी न रहेगा, और न उसकी सम्पत्ति बनी रहेगी,  
और ऐसे लोगों के खेत की उपज भूमि की ओर न झुकने  
पाएगी।  
30 वह अंधियारे से कभी न निकलेगा,  
और उसकी डालियाँ आग की लपट से झुलस जाएँगी,  
और परमेश्वर के मुँह की श्वास से वह उड़ जाएगा।  
31 वह अपने को धोखा देकर व्यर्थ बातों का भरोसा न  
करे,  
क्योंकि उसका प्रतिफल धोखा ही होगा।  
32 वह उसके नियत दिन से पहले पूरा हो जाएगा;  
उसकी डालियाँ हरी न रहेंगी।  
33 दाख के समान उसके कच्चे फल झड़ जाएँगे,  
और उसके फूल जैतून के वृक्ष के समान गिरेंगे।  
34 क्योंकि भक्तिहीन के परिवार से कुछ बन न पड़ेगा,  
और जो घूस लेते हैं, उनके तम्बू आग से जल जाएँगे।  
35 22:22 22:22 22:22 22 22:22 22:22, 22 22 22:22 22  
22 22:22 22:22 22\*  
और वे अपने अन्तःकरण में छल की बातें गढ़ते हैं।”

\* 15:24 22:22 22 22:22 22 22:22 22 22:22 22:22 22: युद्ध के लिए तत्पर जिसको रोकने का प्रयास करना व्यर्थ है। † 15:35 22:22 22:22 22 22:22 22:22, 22 22 22:22 22 22:22 22:22 22: इस पद का अर्थ है कि वे बुवाई की योजना रचते हैं और उसे कार्यान्वित करते हैं।

## 16

११:११-१२ ११:११-१२

- 1 तब अय्यूब ने कहा,  
 2 “ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ,  
 तुम सब के सब निकम्मे शान्तिदाता हो।  
 3 क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा?  
 तू कौन सी बात से झिड़ककर ऐसे उत्तर देता है?  
 4 यदि तुम्हारी दशा मेरी सी होती,  
 तो मैं भी तुम्हारी सी बातें कर सकता;  
 मैं भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड़ सकता,  
 और तुम्हारे विरुद्ध सिर हिला सकता।  
 5 वरन् मैं अपने वचनों से तुम को हियाव दिलाता,  
 और बातों से शान्ति देकर तुम्हारा शोक घटा देता।  
 6 “चाहे मैं बोलूँ तो भी मेरा शोक न घटेगा,  
 चाहे मैं चुप रहूँ, तो भी मेरा दुःख कुछ कम न होगा।  
 7 परन्तु अब ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११\*;  
 उसने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है।  
 8 और उसने जो मेरे शरीर को सूखा डाला है, वह मेरे  
 विरुद्ध साक्षी ठहरा है,  
 और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा होकर  
 मेरे सामने साक्षी देता है।  
 9 उसने क्रोध में आकर मुझे को फाड़ा और मेरे पीछे पड़ा  
 है;  
 वह मेरे विरुद्ध दाँत पीसता;  
 और मेरा बैरी मुझे को आँखें दिखाता है। (११:११.  
 2:16)  
 10 अब लोग मुझे पर मुँह पसारते हैं,  
 और मेरी नामधराई करके मेरे गाल पर थप्पड़ मारते,  
 और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं।  
 11 परमेश्वर ने मुझे कुटिलों के वश में कर दिया,  
 और दुष्ट लोगों के हाथ में फेंक दिया है।  
 12 मैं सुख से रहता था, और उसने मुझे चूर चूर कर डाला;  
 उसने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया;  
 फिर उसने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है।  
 13 उसके तीर मेरे चारों ओर उड़ रहे हैं,  
 वह निर्दय होकर मेरे गुदों को बेधता है,  
 और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है।  
 14 वह शूर के समान मुझे पर धावा करके मुझे  
 चोट पर चोट पहुँचाकर घायल करता है।  
 15 मैंने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है,

\* 16:7 ११:११ ११:११ ११:११ ११:११: अर्थात् परमेश्वर ने मुझे अशक्त बना दिया है वह विपत्तियों से आरम्भ करता है जिन्हें परमेश्वर ने उस पर डाली। † 16:19 ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११: अर्थात् मैं अपनी सत्यनिष्ठा के लिए परमेश्वर को पुकार सकता हूँ। वह मेरा गवाह है और मेरा लेखा रखेगा। \* 17:4 ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११: उसके तथाकथित मित्रों के मन को। अय्यूब कहता है कि वे अंधे और विकृत मानसिकता के हैं और उसका न्याय करने में अक्षम हैं। अतः वह याचना करता है कि वह अपना मुकद्दमा परमेश्वर के समक्ष रखेगा।

- और अपना बल मिट्टी में मिला दिया है।  
 16 रोते-रोते मेरा मुँह सूज गया है,  
 और मेरी आँखों पर घोर अंधकार छा गया है;  
 17 तो भी मुझसे कोई उपद्रव नहीं हुआ है,  
 और मेरी प्रार्थना पवित्र है।  
 18 “हे पृथ्वी, तू मेरे लहू को न ढाँपना,  
 और मेरी दुहाई कहीं न रुके।  
 19 अब भी ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११\*;  
 और मेरा गवाह ऊपर है।  
 20 मेरे मित्र मुझसे घृणा करते हैं,  
 परन्तु मैं परमेश्वर के सामने आँसू बहाता हूँ,  
 21 कि कोई परमेश्वर के सामने सज्जन का,  
 और आदमी का मुकद्दमा उसके पड़ोसी के विरुद्ध लड़े।  
 (११:११. 31:35)  
 22 क्योंकि थोड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग  
 से चला जाऊँगा, जिससे मैं फिर वापिस न लौटूँगा।  
 (११:११. 10:21)

## 17

११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११

- 1 “मेरा प्राण निकलने पर है, मेरे दिन पूरे हो चुके हैं;  
 मेरे लिये कब्र तैयार है।  
 2 निश्चय जो मेरे संग हैं वह ठट्टा करनेवाले हैं,  
 और उनका झगड़ा-रगड़ा मुझे लगातार दिखाई देता है।  
 3 “जमानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही जामिन हो;  
 कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे?  
 4 ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११\*;  
 इस कारण तू उनको प्रबल न करेगा।  
 5 जो अपने मित्रों को चुगली खाकर लूटा देता,  
 उसके बच्चों की आँखें अंधी हो जाएँगी।  
 6 “उसने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं;  
 और लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं।  
 7 खेद के मारे मेरी आँखों में धुंधलापन छा गया है,  
 और मेरे सब अंग छाया के समान हो गए हैं।  
 8 इसे देखकर सीधे लोग चकित होते हैं,  
 और जो निर्दोष हैं, वह भक्तिहीन के विरुद्ध भड़क उठते  
 हैं।  
 9 तो भी धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे,  
 और शुद्ध काम करनेवाले सामर्थ्य पर सामर्थ्य पाते  
 जाएँगे।  
 10 तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ,







13 वे अपने दिन सुख से बिताते,  
और पल भर ही में अधोलोक में उतर जाते हैं।  
14 तो भी वे परमेश्वर से कहते थे, 'हम से दूर हो!  
तेरी गति जानने की हमको इच्छा नहीं है।  
15 सर्वशक्तिमान क्या है, कि हम उसकी सेवा करें?  
और यदि हम उससे विनती भी करें तो हमें क्या लाभ  
होगा?'  
16 देखो, उनका कुशल उनके हाथ में नहीं रहता,  
दुष्ट लोगों का विचार मुझसे दूर रहे।  
17 "कितनी बार ऐसे होता है कि दुष्टों का दीपक बुझ  
जाता है,  
या उन पर विपत्ति आ पड़ती है;  
और परमेश्वर क्रोध करके उनके हिस्से में शोक देता है,  
18 वे वायु से उड़ाए हुए भूसे की,  
और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी के समान होते हैं।  
19 तुम कहते हो 'परमेश्वर उसके अधर्म का दण्ड उसके  
बच्चों के लिये रख छोड़ता है,'  
वह उसका बदला उसी को दे, ताकि वह जान ले।  
20 दुष्ट अपना नाश अपनी ही आँखों से देखे,  
और सर्वशक्तिमान की जलजलाहट में से आप पी ले।  
(**21:7. 75:8**)  
21 क्योंकि जब उसके महीनों की गिनती कट चुकी,  
तो अपने बादवाले घराने से उसका क्या काम रहा।  
22 क्या परमेश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा?  
वह तो ऊँचे पद पर रहनेवालों का भी न्याय करता है।  
23 कोई तो अपने पूरे बल में  
बड़े चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है।  
24 उसकी देह दूध से  
और उसकी हड्डियाँ गूदे से भरी रहती हैं।  
25 और कोई अपने जीव में कुढ़कुढ़कर बिना सुख  
भोगे मर जाता है।  
26 वे दोनों बराबर मिट्टी में मिल जाते हैं,  
और कीड़े उन्हें ढांक लेते हैं।  
27 "देखो, मैं तुम्हारी कल्पनाएँ जानता हूँ,  
और उन युक्तियों को भी, जो तुम मेरे विषय में अन्याय  
से करते हो।  
28 तुम कहते तो हो, 'रईस का घर कहाँ रहा?  
दुष्टों के निवास के तम्बू कहाँ रहे?'  
29 परन्तु क्या तुम ने बटोहियों से कभी नहीं पूछा?  
क्या तुम उनके इस विषय के प्रमाणों से अनजान हो,  
30 कि विपत्ति के दिन के लिये दुर्जन सुरक्षित रखा जाता  
है;  
और महाप्रलय के समय के लिये ऐसे लोग बचाए जाते  
हैं? (**21:21. 20:29**)

31 उसकी चाल उसके मुँह पर कौन कहेगा? और  
उसने जो किया है, उसका पलटा कौन देगा?  
32 तो भी वह कब्र को पहुँचाया जाता है,  
और लोग उस कब्र की रखवाली करते रहते हैं।  
33 नाले के ढेले उसको सुखदायक लगते हैं;  
और जैसे पूर्वकाल के लोग अनगिनत जा चुके,  
वैसे ही सब मनुष्य उसके बाद भी चले जाएँगे।  
34 तुम्हारे उत्तरों में तो झूठ ही पाया जाता है,  
इसलिए तुम क्यों मुझे व्यर्थ शान्ति देते हो?"

## 22

**22:1-22**

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा,  
2 "क्या मनुष्य से परमेश्वर को लाभ पहुँच सकता है?  
जो बुद्धिमान है, वह स्वयं के लिए लाभदायक है।  
3 क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता  
है?  
तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता  
है?  
4 वह तो तुझे डाँटता है, और तुझ से मुकद्दमा लड़ता है,  
तो क्या यह तेरी भक्ति के कारण है?  
5 क्या तेरी बुराई बहुत नहीं?  
तेरे अधर्म के कामों का कुछ अन्त नहीं।  
6 तूने तो अपने भाई का बन्धक अकारण रख लिया है,  
और नंगे के वस्त्र उतार लिये हैं।  
7 थके हुए को तूने पानी न पिलाया,  
और भूखे को रोटी देने से इन्कार किया।  
8 जो बलवान था उसी को भूमि मिली,  
और जिस पुरुष की प्रतिष्ठा हुई थी, वही उसमें बस  
गया।  
9 तूने विधवाओं को खाली हाथ लौटा दिया।  
और अनाथों की बाहें तोड़ डाली गई।  
10 इस कारण तेरे चारों ओर फंदे लगे हैं,  
और अचानक डर के मारे तू घबरा रहा है।  
11 क्या तू अंधियारे को नहीं देखता,  
और उस बाढ़ को जिसमें तू डूब रहा है?  
12 "क्या परमेश्वर स्वर्ग के ऊँचे स्थान में नहीं है?  
ऊँचे से ऊँचे तारों को देख कि वे कितने ऊँचे हैं।  
13 फिर तू कहता है, 'परमेश्वर क्या जानता है?  
क्या वह घोर अंधकार की आड़ में होकर न्याय करेगा?  
14 काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि वह कुछ  
नहीं देख सकता,  
वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर चलता फिरता है।'  
15 क्या तू उस पुराने रास्ते को पकड़े रहेगा,





और घोर अंधकार ने मेरे मुँह को ढाँप लिया है।

## 24

24:1-24:24

1 “सर्वशक्तिमान ने दुष्टों के न्याय के लिए समय क्यों नहीं ठहराया,  
और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं वे उसके दिन क्यों देखने नहीं पाते?

2 कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते,  
और भेड़-बकरियाँ छीनकर चराते हैं।

3 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*,  
और विधवा का बैल बन्धक कर रखते हैं।

4 वे दरिद्र लोगों को मार्ग से हटा देते,  
और देश के दीनों को इकट्ठे छिपना पड़ता है।

5 देखो, दीन लोग जंगली गदहों के समान  
अपने काम को और कुछ भोजन यत्न से ढूँढ़ने को निकल  
जाते हैं;

उनके बच्चों का भोजन उनको जंगल से मिलता है।

6 उनको खेत में चारा काटना,  
और दुष्टों की बची बचाई दाख बटोरना पड़ता है।

7 रात को उन्हें बिना वस्त्र नंगे पड़े रहना  
और जाड़े के समय बिना ओढ़े पड़े रहना पड़ता है।

8 वे पहाड़ों पर की वर्षा से भीगे रहते,  
और शरण न पाकर चट्टान से लिपट जाते हैं।

9 कुछ दुष्ट लोग अनाथ बालक को माँ की छाती पर से  
छीन लेते हैं,

और दीन लोगों से बन्धक लेते हैं।

10 जिससे वे बिना वस्त्र नंगे फिरते हैं;  
और भूख के मारे, पूलियाँ ढोते हैं।

11 वे दुष्टों की दीवारों के भीतर तेल पेरते  
और उनके कुण्डों में दाख रौंदते हुए भी प्यासे रहते हैं।

12 वे बड़े नगर में कराहते हैं,  
और घायल किए हुआ जी दुहाई देता है;  
परन्तु परमेश्वर मूर्खता का हिसाब नहीं लेता।

13 “फिर 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*,  
वे उसके मार्गों को नहीं पहचानते,  
और न उसके मार्गों में बने रहते हैं।

14 खूनी, पौ फटते ही उठकर दीन दरिद्र मनुष्य को घात  
करता,  
और रात को चोर बन जाता है।

\* 24:3 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*: अनाथ अपनी रक्षा नहीं कर सकता है अनाथों को हानि पहुँचाना सदैव ही एक बड़ा अपराध माना गया है क्योंकि वे आत्मरक्षा में समर्थ नहीं होता है। † 24:13 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*: अर्थात् वे प्रकाश के विरोधी हैं, वह उनके लिए अप्रिय है क्योंकि वे अंधकार में काम करते हैं। ‡ 24:24 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*: वे थोड़ी देर के लिए बढ़ते हैं। अय्यूब का वादा यही था। उसके मित्रों का कहना था कि दुष्ट लोग इसी जीवन में पापों का दण्ड पाते हैं और बड़ा पाप आपदा लाता है। \* 25:2 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*: अर्थात् परमेश्वर को राज करने का अधिकार है और उसे श्रद्धा अर्पित करना आवश्यक है।

15 व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न  
पाए,

दिन डूबने की राह देखता रहता है,  
और वह अपना मुँह छिपाए भी रखता है।

16 वे अंधियारे के समय घरों में सेंध मारते और  
दिन को छिपे रहते हैं;  
वे उजियाले को जानते भी नहीं।

17 क्योंकि उन सभी को भोर का प्रकाश घोर  
अंधकार सा जान पड़ता है,  
घोर अंधकार का भय वे जानते हैं।”

18 “वे जल के ऊपर हलकी सी वस्तु के सरीखे हैं,  
उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले कोसते हैं,  
और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते।

19 जैसे सूखे और धूप से हिम का जल सूख जाता है  
वैसे ही पापी लोग अधोलोक में सूख जाते हैं।

20 माता भी उसको भूल जाती,  
और कीड़े उसे चूसते हैं,

भविष्य में उसका स्मरण न रहेगा;

इस रीति टेढ़ा काम करनेवाला वृक्ष के समान कट जाता  
है।

21 “वह बाँझ स्त्री को जो कभी नहीं जनी लूटता,  
और विधवा से भलाई करना नहीं चाहता है।

22 बलात्कारियों को भी परमेश्वर अपनी शक्ति से खींच  
लेता है,

जो जीवित रहने की आशा नहीं रखता, वह भी फिर उठ  
बैठता है।

23 उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है, कि वे सम्भले रहते हैं;  
और उसकी कृपादृष्टि उनकी चाल पर लगी रहती है।

24 24:1-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24, 24:24-24:24\*,  
24:24-24:24\*;

वे दबाए जाते और सभी के समान रख लिये जाते हैं,  
और अनाज की बाल के समान काटे जाते हैं।

25 क्या यह सब सच नहीं! कौन मुझे झुठलाएगा?  
कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा?”

## 25

25:1-25:2

1 तब शूही बिल्दद ने कहा,

2 “25:1-25:2, 25:2-25:2, 25:2-25:2, 25:2-25:2, 25:2-25:2\*,  
25:2\*;

वह अपने ऊँचे-ऊँचे स्थानों में शान्ति रखता है।





24 **२२ २२ २२२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२ २२२२ २२२**,

और सारे आकाशमण्डल के तले देखता-भालता है।  
(**२२. 11:4**)

25 जब उसने वायु का तौल ठहराया,

और जल को नपुए में नापा,

26 और मेंह के लिये विधि

और गर्जन और बिजली के लिये मार्ग ठहराया,

27 तब उसने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया,

और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद बूझ लिया।

28 तब उसने मनुष्य से कहा,

देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है

और बुराई से दूर रहना यही समझ है।” (**२२२२. 4:6**)

## 29

**२२२२२२ २२ २२२२२ २२२**

1 अप्यूब ने और भी अपनी गूढ बात उठाई और कहा,

2 “भला होता, कि मेरी दशा बीते हुए महीनों की सी होती,

जिन दिनों में परमेश्वर मेरी रक्षा करता था,

3 जब उसके दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता था,

और **२२२२ २२२२२२२ २२२२\*** मैं अंधेरे से होकर चलता था।

4 वे तो मेरी जवानी के दिन थे,

जब परमेश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर प्रगट होती थी।

5 उस समय तक तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरे संग रहता था,

और मेरे बच्चे मेरे चारों ओर रहते थे।

6 तब मैं अपने पैरों को मलाई से धोता था और

मेरे पास की चट्टानों से तेल की धाराएँ बहा करती थीं।

7 जब-जब मैं नगर के फाटक की ओर चलकर खुले स्थान में

अपने बैठने का स्थान तैयार करता था,

8 तब-तब जवान मुझे देखकर छिप जाते,

और पुरनिये उठकर खड़े हो जाते थे।

9 हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते,

और हाथ से मुँह मूँदे रहते थे।

10 प्रधान लोग चुप रहते थे

और उनकी जीभ तालू से सट जाती थी।

11 क्योंकि जब कोई मेरा समाचार सुनता, तब वह मुझे धन्य कहता था,

और जब कोई मुझे देखता, तब मेरे विषय साक्षी देता था;

12 क्योंकि मैं दुहाई देनेवाले दिन जन को,

और **२२२२२ २२२२ २२ २२ २२२२२२२ २२†**।

13 जो नाश होने पर था मुझे आशीर्वाद देता था,

और मेरे कारण विधवा आनन्द के मारे गाती थी।

14 मैं धार्मिकता को पहने रहा, और वह मुझे ढांके रहा;

मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे और सुन्दर पगड़ी का काम देता था।

15 मैं अंधों के लिये आँखें,

और लँगडों के लिये पाँव ठहरता था।

16 दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता था,

और जो मेरी पहचान का न था उसके मुकद्दमे का हाल मैं पूछताछ करके जान लेता था।

17 मैं कुटिल मनुष्यों की डाढ़ें तोड़ डालता,

और उनका शिकार उनके मुँह से छीनकर बचा लेता था।

18 तब मैं सोचता था, ‘मेरे दिन रेतकणों के समान अनगिनत होंगे,

और अपने ही बसेरे में मेरा प्राण छूटेगा।

19 मेरी जड़ जल की ओर फैली,

और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी रहेगी,

20 मेरी महिमा ज्यों की त्यों बनी रहेगी,

और मेरा धनुष मेरे हाथ में सदा नया होता जाएगा।

21 “लोग मेरी ही ओर कान लगाकर ठहरे रहते थे

और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते थे।

22 जब मैं बोल चुकता था, तब वे और कुछ न बोलते थे,

मेरी बातें उन पर मेंह के सामान बरसा करती थीं।

23 **२२२२ २२२ २२२२२ २२, २२२२ २२ २२२२ २२ २२२ २२२२२ २२†;**

और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के लिये वैसे ही वे मुँह पसारे रहते थे।

24 जब उनको कुछ आशा न रहती थी तब मैं हँसकर उनको प्रसन्न करता था;

और कोई मेरे मुँह को बिगाड़ न सकता था।

25 मैं उनका मार्ग चुन लेता, और उनमें मुख्य ठहरकर बैठा करता था,

और जैसा सेना में राजा या विलाप करनेवालों

के बीच शान्तिदाता, वैसा ही मैं रहता था।

## 30

1 “परन्तु अब जिनकी आयु मुझसे कम है\*, वे मेरी हँसी करते हैं,

वे जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़-बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था।

2 उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता था?

\* **29:3** **२२२२ २२२२२२ २२२२:** उसके मार्गदर्शन एवं दिशा निर्देशक में † **29:12** **२२२२२ २२२२ २२ २२ २२२२२२ २२:** अर्थात् किसी दरिद्र जन के पास वकील करने का साधन न हो और वह उसके पास अपना मुकद्दमा लेकर आया तो उसने उसे उसके शोषण कर्ता से मुक्ति दिलाई।

‡ **29:23** **२२२२ २२ २२२२ २२, २२२२ २२ २२२२ २२ २२ २२२२ २२:** अर्थात् जैसे सूखी और प्यासी भूमि वर्षा की प्रतिक्षा करती है।

\* **30:1** **२२२२२ २२२ २२२२२ २२ २२** जो मुझसे छोटे हैं



21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35

4 क्या वह मेरी गति नहीं देखता  
और क्या वह मेरे पग-पग नहीं गिनता?  
5 यदि मैं व्यर्थ चाल चलता हूँ,  
या कपट करने के लिये मेरे पैर दौड़े हों;  
6 (तो मैं धर्म के तराजू में तौला जाऊँ,  
ताकि परमेश्वर मेरी खराई को जान ले)।  
7 यदि मेरे पग मार्ग से बहक गए हों,  
और मेरा मन मेरी आँखों की देखी चाल चला हो,  
या मेरे हाथों में कुछ कलंक लगा हो;  
8 तो मैं बीज बोऊँ, परन्तु दूसरा खाए;  
वरन् मेरे खेत की उपज उखाड़ डाली जाए।  
9 “यदि मेरा हृदय किसी स्त्री पर मोहित हो गया है,  
और मैं अपने पड़ोसी के द्वार पर घात में बैठा हूँ;  
10 तो मेरी स्त्री दूसरे के लिये पीसे,  
और पराए पुरुष उसको भ्रष्ट करें।  
11 क्योंकि वह तो महापाप होता;  
और न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म का काम  
होता;  
12 क्योंकि 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35  
22 23 24 25,  
और वह मेरी सारी उपज को जड़ से नाश कर देती है।  
13 “जब मेरे दास व दासी ने मुझसे झगड़ा किया,  
तब यदि मैंने उनका हक मार दिया हो;  
14 तो जब परमेश्वर उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूँगा?  
और जब वह आएगा तब मैं क्या उत्तर दूँगा?  
15 क्या वह उसका बनानेवाला नहीं जिसने मुझे गर्भ में  
बनाया?  
क्या एक ही ने हम दोनों की सूरत गर्भ में न रची थी?  
16 “यदि मैंने कंगालों की इच्छा पूरी न की हो,  
या मेरे कारण विधवा की आँखें कभी निराश हुई हों,  
17 या मैंने अपना टुकड़ा अकेला खाया हो,  
और उसमें से अनाथ न खाने पाए हों,  
18 (परन्तु वह मेरे लडकपन ही से मेरे साथ इस प्रकार  
पला जिस प्रकार पिता के साथ,  
और मैं जन्म ही से विधवा को पालता आया हूँ);  
19 यदि मैंने किसी को वस्त्रहीन मरते हुए देखा,  
या किसी दरिद्र को जिसके पास ओढ़ने को न था  
20 और उसको अपनी भेड़ों की ऊन के कपड़े न दिए हों,  
और उसने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद न दिया हो;

21 या यदि मैंने फाटक में अपने सहायक देखकर  
अनाथों के मारने को अपना हाथ उठाया हो,  
22 तो मेरी बाँह कंधे से उखड़कर गिर पड़े,  
और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए।  
23 क्योंकि परमेश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर  
सकता था,  
क्योंकि उसकी ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत  
होकर थरथराता था।  
24 “यदि मैंने सोने का भरोसा किया होता,  
या कुन्दन को अपना आसरा कहा होता,  
25 या अपने बहुत से धन  
या अपनी बड़ी कमाई के कारण आनन्द किया होता,  
26 या सूर्य को चमकते  
या चन्द्रमा को महाशोभा से चलते हुए देखकर  
27 मैं मन ही मन मोहित हो गया होता,  
और अपने मुँह से अपना हाथ चूम लिया होता;  
28 तो यह भी न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म का  
काम होता;  
क्योंकि ऐसा करके मैंने सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर का इन्कार  
किया होता।  
29 “22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35  
22 23 24,  
या जब उस पर विपत्ति पड़ी तब उस पर हँसा होता;  
30 (परन्तु मैंने न तो उसको श्राप देते हुए,  
और न उसके प्राणदण्ड की प्रार्थना करते हुए अपने मुँह  
से पाप किया है);  
31 यदि मेरे डेरे के रहनेवालों ने यह न कहा होता,  
‘ऐसा कोई कहाँ मिलेगा, जो इसके यहाँ का माँस खाकर  
तृप्त न हुआ हो?’  
32 (परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था;  
मैं बटोही के लिये अपना द्वार खुला रखता था);  
33 यदि मैंने आदम के समान अपना अपराध छिपाकर  
अपने अधर्म को ढाँप लिया हो,  
34 इस कारण कि मैं बड़ी भीड़ से भय खाता था,  
या कुलीनों से तुच्छ किए जाने से डर गया  
यहाँ तक कि मैं द्वार से बाहर न निकला-  
35 भला होता कि मेरा कोई सुननेवाला होता!  
सर्वशक्तिमान परमेश्वर अभी मेरा न्याय चुकाए! देखो,  
मेरा दस्तखत यही है।  
भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुद्दई ने लिखा है  
वह मेरे पास होता!

\* 31:3 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 ... 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35: अय्यूब कहता है कि वह भलीभांति जानता है कि दुष्ट का विनाश निश्चित है। † 31:12 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35: इसका सम्भावित अर्थ है कि ऐसा कुकर्म एक अपराध है जिसके कारण परमेश्वर विनाश दाने पर विवश होता है। ‡ 31:29 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35: अय्यूब अब अपराधों की एक और श्रेणी की चर्चा करता है जिसमें भी वह निर्दोष है। यहाँ विषय है कि हमारी हानि करनेवालों के साथ भी अच्छा व्यवहार करें।



5 यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे;  
मेरे सामने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा।  
6 देख, मैं परमेश्वर के सन्मुख तेरे तुल्य हूँ;  
मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूँ।  
7 सुन, तुझे डर के मारे घबराना न पड़ेगा,  
और न तू मेरे बोझ से दबेगा।  
8 “निःसन्देह तेरी ऐसी बात मेरे कानों में पड़ी है  
और मैंने तेरे वचन सुने हैं,  
9 मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूँ;  
और मुझ में अधर्म नहीं है।  
10 देख, [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]  
[REDACTED] [REDACTED]\*,  
और मुझे अपना शत्रु समझता है;  
11 वह मेरे दोनों पाँवों को काट में ठोक देता है,  
और मेरी सारी चाल पर दृष्टि रखता है।  
12 “देख, मैं तुझे उत्तर देता हूँ, इस बात में तू सच्चा नहीं  
है।  
क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से बड़ा है।  
13 तू उससे क्यों झगड़ता है?  
क्योंकि वह अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता।  
14 क्योंकि परमेश्वर तो एक क्या वरन् दो बार बोलता  
है,  
परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते।  
15 स्वप्न में, या रात को दिए हुए दर्शन में,  
जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं,  
या बिछौने पर सोते समय,  
16 तब वह मनुष्यों के कान खोलता है,  
और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है,  
17 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]  
[REDACTED]†  
और गर्व को मनुष्य में से दूर करे।  
18 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED],  
और उसके जीवन को तलवार की मार से बचाता है।  
19 “उसकी ताड़ना भी होती है, कि वह अपने बिछौने पर  
पड़ा-पड़ा तड़पता है,  
और उसकी हड्डी-हड्डी में लगातार झगड़ा होता है  
20 यहाँ तक कि उसका प्राण रोटी से,  
और उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा करने लगता  
है।  
21 उसका माँस ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता;

\* 33:10 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: अर्थात् परमेश्वर ने अय्यूब का विरोध करने के अवसर खोजे कि वह उसे दण्ड देने का आधार एवं कारण देखने का इच्छुक है। † 33:17 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: परमेश्वर उसे विधर्म की योजनाओं को कार्यान्वित करने के परिणामों की चेतावनी की युक्ति रचता है। वह उसे चेतावनी देखकर स्पष्ट करता है कि उसका मार्ग उसे दण्ड दिलाएगा। ‡ 33:18 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: वह मनुष्यों को चिताने के लिए ऐसा करता है कि वे अपना विनाश न लाएँ।

और उसकी हड्डियाँ जो पहले दिखाई नहीं देती थीं  
निकल आती हैं।  
22 तब वह कब्र के निकट पहुँचता है,  
और उसका जीवन नाश करनेवालों के वश में हो जाता  
है।  
23 यदि उसके लिये कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले,  
जो हजार में से एक ही हो, जो भावी कहे।  
और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिये क्या ठीक है।  
24 तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है,  
‘उसे गड्ढे में जाने से बचा ले,  
मुझे छुड़ौती मिली है।  
25 तब उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक  
स्वस्थ और कोमल हो जाएगी;  
उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएँगे।’  
26 वह परमेश्वर से विनती करेगा, और वह उससे प्रसन्न  
होगा,  
वह आनन्द से परमेश्वर का दर्शन करेगा,  
और परमेश्वर मनुष्य को ज्यों का त्यों धर्मी कर देगा।  
27 वह मनुष्यों के सामने गाने और कहने लगता है,  
‘मैंने पाप किया, और सच्चाई को उलट-पुलट कर दिया,  
परन्तु उसका बदला मुझे दिया नहीं गया।  
28 उसने मेरे प्राण कब्र में पड़ने से बचाया है,  
मेरा जीवन उजियाले को देखेगा।’  
29 “देख, ऐसे-ऐसे सब काम परमेश्वर मनुष्य के साथ दो  
बार क्या  
वरन् तीन बार भी करता है,  
30 जिससे उसको कब्र से बचाए,  
और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए।  
31 हे अय्यूब! कान लगाकर मेरी सुन;  
चुप रह, मैं और बोलूँगा।  
32 यदि तुझे बात कहनी हो, तो मुझे उत्तर दे;  
बोल, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना चाहता हूँ।  
33 यदि नहीं, तो तू मेरी सुन;  
चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात सिखाऊँगा।”

## 34

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

1 फिर एलीहू यह कहता गया;  
2 “हे बुद्धिमानों! मेरी बातें सुनो,  
हे ज्ञानियों! मेरी बात पर कान लगाओ,





और न उसके वचन समझ के साथ होते हैं।  
 36 भला होता, कि अय्यूब अन्त तक परीक्षा में रहता,  
 क्योंकि उसने अनर्थकारियों के समान उत्तर दिए हैं।  
 37 और वह अपने पाप में विरोध बढ़ाता है;  
 और हमारे बीच ताली बजाता है,  
 और परमेश्वर के विरुद्ध बहुत सी बातें बनाता है।”

### 35

1 फिर एलीहू इस प्रकार और भी कहता गया,

1 “क्या तू इसे अपना हक समझता है?  
 क्या तू दावा करता है कि तेरी धार्मिकता परमेश्वर की  
 धार्मिकता से अधिक है?  
 3 जो तू कहता है, ‘मुझे इससे क्या लाभ?  
 और मुझे पापी होने में और न होने में कौन सा अधिक  
 अन्तर है?’  
 4 मैं तुझे और तेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता  
 हूँ।  
 5 आकाश की ओर दृष्टि करके देख;  
 और आकाशमण्डल को ताक, जो तुझ से ऊँचा है।  
 6 यदि तेरे अपराध बहुत ही बढ़ जाएँ तो भी तू उसका क्या  
 कर लेगा?  
 7 यदि तू धर्मी है तो उसको क्या दे देता है;  
 या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है?  
 8 तेरी दुष्टता का फल तुझ जैसे पुरुष के लिये है,  
 और तेरी धार्मिकता का फल भी मनुष्यमात्र के लिये है।  
 9 “बहुत अंधेरे होने के कारण वे चिल्लाते हैं;  
 और बलवान के बाहुबल के कारण वे दुहाई देते हैं।  
 10 तो भी कोई यह नहीं कहता, ‘मेरा सृजनेवाला  
 परमेश्वर कहाँ है,  
 जो रात में भी गीत गवाता है,  
 11 और हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता,  
 और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है?’  
 12 वे दुहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर नहीं देता,  
 यह बुरे लोगों के घमण्ड के कारण होता है।

\* 35:6 अर्थात् वही हानि उठाएगा परमेश्वर नहीं। वह तो मनुष्य से बहुत ऊँचा है और अपनी प्रसन्नता के स्रोतों में मनुष्य से अलग और आत्म-निर्भर है कि मनुष्य के कर्मों से प्रभावित नहीं होता। † 35:13 व्यर्थ, खोखली, निर्दय याचना। ‡ 35:15 यहाँ अय्यूब की नहीं परमेश्वर की बात हो रही है और कहने का अर्थ है कि उसने अय्यूब के पापों का पूरा लेखा नहीं लिया है उसने उन्हें अनदेखा किया है और अय्यूब के साथ व्यवहार करने में उन सब का लेखा नहीं रखा है। \* 36:7 वह लगातार उन पर दृष्टि लगाए रहता है कि उनका जीवन किस स्तर पर है- अधिक ऊँचे या नीचे स्तर पर। † 36:10 वह उन्हें कष्टों द्वारा मिलनेवाली शिक्षा सुनने या सीखने के लिए इच्छुक बनाता है।

13 और न सर्वशक्तिमान उन पर चित्त लगाता है।  
 14 तो तू क्यों कहता है, कि वह मुझे दर्शन नहीं देता,  
 कि यह मुकद्दमा उसके सामने है, और तू उसकी बात  
 जोहता हुआ ठहरा है?  
 15 परन्तु अभी तो उसने क्रोध करके दण्ड नहीं दिया है,  
 और इस कारण अय्यूब व्यर्थ मुँह खोलकर अज्ञानता की  
 बातें बहुत बनाता है।”

### 36

1 फिर एलीहू ने यह भी कहा,  
 2 “कुछ ठहरा रह, और मैं तुझको समझाऊँगा,  
 क्योंकि परमेश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और भी कहना है।  
 3 मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊँगा,  
 और अपने सृजनहार को धर्मी ठहराऊँगा।  
 4 निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी,  
 वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है।  
 5 “देख, परमेश्वर सामर्थी है, और किसी को तुच्छ नहीं  
 जानता;  
 वह समझने की शक्ति में समर्थ है।  
 6 वह दुष्टों को जिलाए नहीं रखता,  
 और दीनों को उनका हक देता है।  
 7 वरन् उनको राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर  
 बैठाता है,  
 और वे ऊँचे पद को प्राप्त करते हैं।  
 8 और चाहे वे बेड़ियों में जकड़े जाएँ  
 और दुःख की रस्सियों से बाँधे जाएँ,  
 9 तो भी परमेश्वर उन पर उनके काम,  
 और उनका यह अपराध प्रगट करता है, कि उन्होंने गर्व  
 किया है।  
 10 और आज्ञा देता है कि वे बुराई से दूर रहें।  
 11 यदि वे सुनकर उसकी सेवा करें,  
 तो वे अपने दिन कल्याण से,



इसलिए कि [22] [222222] [22] [222222] [22],  
 उसी को वे बसाई हुई पृथ्वी के ऊपर पूरी करें।  
 13 चाहे ताड़ना देने के लिये, चाहे अपनी पृथ्वी की  
 भलाई के लिये  
 या मनुष्यों पर करुणा करने के लिये वह उसे भेजे।  
 14 “हे अय्यूब! इस पर कान लगा और सुन ले; चुपचाप  
 खड़ा रह,  
 और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों का विचार कर।  
 15 क्या तू जानता है, कि परमेश्वर क्यों अपने बादलों  
 को आज्ञा देता,  
 और अपने बादल की बिजली को चमकाता है?  
 16 क्या तू घटाओं का तौलना,  
 या सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्मों को जानता है?  
 17 जब पृथ्वी पर दक्षिणी हवा ही के कारण से सन्नाटा  
 रहता है  
 तब तेरे वस्त्र गर्म हो जाते हैं?  
 18 फिर क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान  
 सकता है,  
 जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है?  
 19 तू हमें यह सिखा कि उससे क्या कहना चाहिये?  
 क्योंकि हम अंधियारे के कारण अपना व्याख्यान ठीक  
 नहीं रच सकते।  
 20 क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ?  
 क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है?  
 21 “अभी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा  
 नहीं जाता  
 जब वायु चलकर उसको शुद्ध करती है।  
 22 उत्तर दिशा से सुनहरी ज्योति आती है  
 परमेश्वर भययोग्य तेज से विभूषित है।  
 23 सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो अति सामर्थी है,  
 और जिसका भेद हम पा नहीं सकते,  
 वह न्याय और पूर्ण धार्मिकता को छोड़ अत्याचार नहीं  
 कर सकता।  
 24 इसी कारण सज्जन उसका भय मानते हैं,  
 और जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं, उन पर वह दृष्टि  
 नहीं करता।”

### 38

[222222] [22] [22222222] [22] [222222]  
 1 [22] [222222] [22] [22222222] [22] [222222] [2222] [2222] [22]  
 [2222] [222222] [222222]\*,  
 2 “यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर  
 युक्ति को बिगाड़ना चाहता है?”

\* 38:1 [22] [222222] [22] [22222222] [22] [222222] [2222] [22] [2222] [222222] [222222]: यह विशेष करके अय्यूब के लिए है, इसलिए नहीं कि वह इस पुस्तक  
 का मुख्य नायक है परन्तु इसलिए कि वह कुड़कुड़ा रहा है और शिकायत कर रहा है। † 38:17 [222222] [22222222] [22] [222222] [2222] [22] [22222222]  
 [2222]: अर्थात् भूलोक के वे फाटक जहाँ मृत्यु का राज है या मृत्युलोक में खुलनेवाले फाटक।

3 पुरुष के समान अपनी कमर बाँध ले,  
 क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे।  
 ([222222]. 40:7)  
 4 “जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली, तब तू कहाँ था?  
 यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे।  
 5 उसकी नाप किसने ठहराई, क्या तू जानता है  
 उस पर किसने सूत खींचा?  
 6 उसकी नींव कौन सी वस्तु पर रखी गई,  
 या किसने उसके कोने का पत्थर बैठाया,  
 7 जबकि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे  
 और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे?  
 8 “फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला मानो वह गर्भ से  
 फूट निकला,  
 तब किसने द्वार बन्द कर उसको रोक दिया;  
 9 जबकि मैंने उसको बादल पहनाया  
 और घोर अंधकार में लपेट दिया,  
 10 और उसके लिये सीमा बाँधा  
 और यह कहकर बेंडे और किवाड़ें लगा दिए,  
 11 “यहीं तक आ, और आगे न बढ़,  
 और तेरी उमड़नेवाली लहरें यहीं थम जाएँ।”  
 12 “क्या तूने जीवन भर में कभी भोर को आज्ञा दी,  
 और पौ को उसका स्थान जताया है,  
 13 ताकि वह पृथ्वी की छोरों को वश में करे,  
 और दुष्ट लोग उसमें से झाड़ दिए जाएँ?  
 14 वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर के नीचे चिकनी मिट्टी  
 बदलती है,  
 और सब वस्तुएँ मानो वस्त्र पहने हुए दिखाई देती हैं।  
 15 दुष्टों से उनका उजियाला रोक लिया जाता है,  
 और उनकी बढ़ाई हुई बाँह तोड़ी जाती है।  
 16 “क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक पहुँचा है,  
 या गहरे सागर की थाह में कभी चला फिरा है?  
 17 [222222] [22222222] [22] [222222] [2222] [22] [22222222]  
 [2222],  
 क्या तू घोर अंधकार के फाटकों को कभी देखने पाया है?  
 18 क्या तूने पृथ्वी की चौड़ाई को पूरी रीति से समझ  
 लिया है?  
 यदि तू यह सब जानता है, तो बता दे।  
 19 “उजियाले के निवास का मार्ग कहाँ है,  
 और अंधियारे का स्थान कहाँ है?  
 20 क्या तू उसे उसकी सीमा तक हटा सकता है,  
 और उसके घर की डगर पहचान सकता है?”





उसकी पसलियाँ मानो लोहे के बेंडे हैं।

19 “वह परमेश्वर का मुख्य कार्य है;  
जो उसका सृजनहार हो उसके निकट तलवार लेकर  
आए!

20 निश्चय पहाड़ों पर उसका चारा मिलता है,  
जहाँ और सब वन पशु कलोल करते हैं।

21 वह कमल के पौधों के नीचे रहता नरकटों की आड़ में  
और कीच पर लेटा करता है

22 कमल के पौधे उस पर छाया करते हैं,  
वह नाले के बेंत के वृक्षों से घिरा रहता है।

23 चाहे नदी की बाढ़ भी हो तो भी वह न घबराएगा,  
चाहे यरदन भी बढ़कर उसके मुँह तक आए परन्तु वह  
निर्भय रहेगा।

24 जब वह चौकस हो तब क्या कोई उसको पकड़ सकेगा,  
या उसके नाथ में फंदा लगा सकेगा?

## 41

1 “फिर क्या तू लिव्यातान को बंसी के द्वारा खींच सकता  
है,

या डोरी से उसका जबड़ा दबा सकता है?

2 क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा सकता  
या उसका जबड़ा कील से बेध सकता है?

3 क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट करेगा,  
या तुझ से मीठी बातें बोलेगा?

4 क्या वह तुझ से वाचा बाँधेगा  
कि वह सदा तेरा दास रहे?

5 क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से,  
या अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बाँध  
रखेगा?

6 क्या मछुए के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे?  
क्या वह उसे व्यापारियों में बाँट देंगे?

7 क्या तू उसका चमड़ा भाले से,  
या उसका सिर मछुए के त्रिशूलों से बेध सकता है?

8 तू उस पर अपना हाथ ही धरे, तो लड़ाई को कभी न  
भूलेगा,

और भविष्य में कभी ऐसा न करेगा।

9 देख, उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है;  
उसके देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है।

10 कोई ऐसा साहसी नहीं, जो लिव्यातान को भड़काए;  
फिर ऐसा कौन है जो मेरे सामने ठहर सके?

11 किसने मुझे पहले दिया है, जिसका बदला मुझे देना  
पड़े!

देख, जो कुछ सारी धरती पर है, सब मेरा है। (22:22.  
11:35,36)

12 “मैं लिव्यातान के अंगों के विषय,  
और उसके बड़े बल और उसकी बनावट की शोभा के  
विषय चुप न रहूँगा। (22:22. 1:25)

13 22:22 22:22 22 22:22:22 22 22:22 22:22 22:22  
22:22\*  
उसके दाँतों की दोनों पाँतियों के अर्थात् जबड़ों के बीच  
कौन आएगा?

14 उसके मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल सकता है?  
उसके दाँत चारों ओर से डरावने हैं।

15 उसके छिलकों की रेखाएँ घमण्ड का कारण हैं;  
वे मानो कड़ी छाप से बन्द किए हुए हैं।

16 वे एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं,  
कि उनमें कुछ वायु भी नहीं पैठ सकती।

17 वे आपस में मिले हुए  
और ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग-अलग नहीं हो सकते।

18 फिर उसके छींकने से उजियाला चमक उठता है,  
और उसकी आँखें भोर की पलकों के समान हैं।

19 उसके मुँह से जलते हुए पलीते निकलते हैं,  
और आग की चिंगारियाँ छूटती हैं।

20 उसके नथनों से ऐसा धुआँ निकलता है,  
जैसा खौलती हुई हाण्डी और जलते हुए नरकटों से।

21 उसकी साँस से कोयले सुलगते,  
और उसके मुँह से आग की लौ निकलती है।

22 उसकी गर्दन में सामर्थ्य बनी रहती है,  
और उसके सामने डर नाचता रहता है।

23 उसके माँस पर माँस चढ़ा हुआ है,  
और ऐसा आपस में सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता।

24 उसका हृदय पत्थर सा दृढ़ है,  
वरन् चक्की के निचले पाट के समान दृढ़ है।

25 जब वह उठने लगता है, तब सामर्थी भी डर जाते हैं,  
और डर के मारे उनकी सुध-बुध लोप हो जाती है।

26 यदि कोई उस पर तलवार चलाए, तो उससे कुछ न  
बन पड़ेगा;

और न भाले और न बर्छी और न तीर से। (22:22:22.  
39:21-24)

27 वह लोहे को पुआल सा,  
और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है।

28 वह तीर से भगाया नहीं जाता,

\* 41:13 22:22 22:22 22 22:22:22 22 22:22 22:22 22:22 22:22: निःसन्देह ऊपर का पहरावा अर्थात् उसकी त्वचा। अर्थात् उसकी कठोर त्वचा उसकी रक्षा का कवच है और कोई भी इस कवच को उतार कर, उस पर हावी नहीं हो सकता है। † 41:28 22:22 22 22:22:22 22:22 22:22 22:22 22:22:22 22:22: वह लोहे और पीतल के हथियारों को भूसा या सड़ी गली लकड़ी समझता है। अर्थात् उस पर उनका प्रभाव नहीं पड़ता है।







अपने पवित्र पर्वत सिंघ्योन की राजगद्दी पर नियुक्त किया है।”

7 मैं उस वचन का प्रचार करूँगा:

जो यहोवा ने मुझसे कहा, “तू मेरा पुत्र है;

आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। (22222 3:17, 22222 17:5, 222 1:11, 222 9:7, 22222 3:22, 22222 9:35, 2222 1:49, 22222222 13:33, 222222 1:5, 222222 5:5, 2 222 1:17)

8 मुझसे माँग, और मैं 22222-22222 22 2222222 22 22222 2222222222 22222 22 222222, 22 2222-2222 22 222222 22 22222 2222 222222 22222 22 22222 22 2222222† (2222222 1:2)

9 तू उन्हें लोहे के डंडे से टुकड़े-टुकड़े करेगा।

तू कुम्हार के बर्तन के समान उन्हें चकनाचूर कर डालेगा।” (2222222 2:27, 2222222 12:5, 2222222 19:15)

10 इसलिए अब, हे राजाओं, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के शासकों, सावधान हो जाओ।

11 डरते हुए यहोवा की उपासना करो,

और काँपते हुए मगन हो। (222222 2:12)

12 पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ, क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है। धन्य है वे जो उसमें शरण लेते हैं।

### 3

22222 22 2222 22222-2222222222

दाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के सामने से भागा जाता था

1 हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ गए हैं!

वे जो मेरे विरुद्ध उठते हैं बहुत हैं।

2 बहुत से मेरे विषय में कहते हैं,

कि 22222 22222 22222222222 22 22 22 22222 22 22222\*।

(सेला)

3 परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है,

तू मेरी महिमा और 22222 2222222 22 222222 22222222222 22†।

4 मैं ऊँचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूँ,

और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है।

‡ 2:8 22222-22222 22 222222 22 22222 22222222222 22222 22 22222 22 2222222: मैं तुम्हें दे दूँगा, अर्थात् वह अन्ततः उसे यह दे देगा।

\* 3:2 22222 22222 22222222222 22 22 22 22222 22 22222: वह पूर्णतः त्यागा हुआ है उसमें आत्मरक्षा का सामर्थ्य नहीं है और परमेश्वर हस्तक्षेप करके उसे बचाने की इच्छा नहीं रखता है। † 3:3 22222 2222222 22 22222 22222222222 22: परेशानियों और दुःख में सिर अपने आप ही झुक जाता है जैसे कि कष्टों के बोझ से दब गया हो। ‡ 3:8 22222222 2222222 22 22 22 22 222222 22: केवल परमेश्वर ही है जो बचा लेता है।

\* 4:3 2222222 22 222222 22 222222 22222 22222 22 22222 22: अपने उद्देश्यों के निमित्त या अपनी योजना के लिए।

(सेला)

5 मैं लेटकर सो गया;

फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे सम्भालता है।

6 मैं उस भीड़ से नहीं डरता,

जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पाँति बाँधे खड़े हैं।

7 उठ, हे यहोवा! हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले!

क्योंकि तूने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है।

और तूने दुष्टों के दाँत तोड़ डाले हैं।

8 222222222 22222222 22 22 22 22 222222 22222; हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो।

### 4

22222222222 22 22222222

प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन

1 हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूँ तब तू मुझे उत्तर दे;

जब मैं संकट में पड़ा तब तूने मुझे सहारा दिया।

मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन ले।

2 हे मनुष्यों, कब तक मेरी महिमा का अनादर होता रहेगा?

तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे?

(सेला)

3 यह जान रखो कि 2222222 22 222222 22 222222 222222 22222 2222 22 22222 222\*;

जब मैं यहोवा को पुकारूँगा तब वह सुन लेगा।

4 काँपते रहो और पाप मत करो;

अपने-अपने बिछौने पर मन ही मन में ध्यान करो और चुपचाप रहो।

(सेला)

(2222 4:26)

5 धार्मिकता के बलिदान चढाओ,

और यहोवा पर भरोसा रखो।

6 बहुत से हैं जो कहते हैं, “कौन हमको कुछ भलाई दिखाएगा?”

हे यहोवा, तू अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका!

7 तूने मेरे मन में उससे कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता है।

8 मैं शान्ति से लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा;

क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को निश्चिन्त रहने देता है।

## 5

दाऊद का भजन

प्रधान बजानेवाले के लिये: बांसुरियों के साथ, दाऊद का भजन

- 1 हे यहोवा, मेरे वचनों पर कान लगा; मेरे कराहने की ओर ध्यान लगा।
- 2 हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दुहाई पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझे से प्रार्थना करता हूँ।
- 3 हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा।
- 4 क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर है, जो दुष्टता से प्रसन्न नहीं होता; बुरे लोग तेरे साथ नहीं रह सकते।
- 5 घमण्डी तेरे सम्मुख खड़े होने न पाएँगे; तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा है।
- 6 तू उनको जो झूठ बोलते हैं नाश करेगा; परन्तु मैं तो तेरी अपार करुणा के कारण तेरे भवन में आऊँगा, मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूँगा।
- 8 हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण अपने धार्मिकता के मार्ग में मेरी अगुआई कर; मेरे आगे-आगे अपने सीधे मार्ग को दिखा।
- 9 क्योंकि उनके मुँह में कोई सच्चाई नहीं; उनके मन में निरी दुष्टता है। वे अपनी जीभ से चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं।

**3:13)**

- 10 हे परमेश्वर तू उनको दोषी ठहरा; वे अपनी ही युक्तियों से आप ही गिर जाएँ; उनको उनके अपराधों की अधिकाई के कारण निकाल बाहर कर, क्योंकि उन्होंने तुझ से बलवा किया है।
- 11 परन्तु जितने तुझ में शरण लेते हैं वे सब आनन्द करें, वे सर्वदा ऊँचे स्वर से गाते रहें; क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है, और जो तेरे नाम के प्रेमी हैं तुझ में प्रफुल्लित हों।

\* 5:6 दाऊद का भजन: रक्त बहानेवाला और विश्वासघाती मनुष्य। † 5:9 दाऊद का भजन: जैसे कब्र अपना शिकार ग्रहण करने के लिए खुली रहती है, उसी प्रकार उनका गला मनुष्यों की शान्ति और सुख निगल जाता है। \* 6:1 दाऊद का भजन: जैसे कि मानो उस पर आनेवाले कष्टों के द्वारा उसको झिड़क रहा है। † 6:4 दाऊद का भजन: जैसे कि मानो वह उसे छोड़कर चला गया और उसे मरने के लिए छोड़ दिया है। ‡ 6:9 दाऊद का भजन: जैसे कि मानो वह उसे छोड़कर चला गया, वैसा वह आगे भी करेगा।

12 क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा; हे यहोवा, तू उसको ढाल के समान अपनी कृपा से घेरे रहेगा।

## 6

दाऊद का भजन

प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। खर्ज की राग में, दाऊद का भजन

- 1 हे यहोवा, तू मुझे ताड़ना दे, और न रोष में मुझे ताड़ना दे।
- 2 हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूँ; हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेचैनी है।
- 3 मेरा प्राण भी बहुत खेदित है। और तू, हे यहोवा, कब तक? (दाऊद 12:27)
- 4 दाऊद का भजन, और मेरे प्राण बचा; अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर।
- 5 क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा?
- 6 मैं कराहते-कराहते थक गया; मैं अपनी खाट आँसुओं से भिगोता हूँ; प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है।
- 7 मेरी आँखें शोक से बैठी जाती हैं, और मेरे सब सतानेवालों के कारण वे धुँधला गई हैं।
- 8 हे सब अनर्थकारियों मेरे पास से दूर हो; क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है। (दाऊद 7:23, दाऊद 13:27)
- 9 दाऊद का भजन: यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा।
- 10 मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत ही घबराएँगे; वे पराजित होकर पीछे हटेंगे, और एकाएक लज्जित होंगे।

## 7

दाऊद का भजन

दाऊद का शिगगायोन नामक भजन जो बिन्यामीनी कूश की बातों के कारण यहोवा के सामने गाया

- 1 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझ में शरण लेता हूँ; सब पीछा करनेवालों से मुझे बचा और छुटकारा दे,
- 2 ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह के समान फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालें;



- 2 मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊँगा,  
हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा।
- 3 मेरे शत्रु पराजित होकर पीछे हटते हैं,  
वे तेरे सामने से ठोकर खाकर नाश होते हैं।
- 4 तूने मेरे मुकद्दमे का न्याय मेरे पक्ष में किया है;  
तूने सिंहासन पर विराजमान होकर धार्मिकता से न्याय  
किया।
- 5 तूने जाति-जाति को झिड़का और दुष्ट को नाश किया  
है;
- तूने उनका नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है।
- 6 शत्रु अनन्तकाल के लिये उजड़ गए हैं;  
उनके नगरों को तूने ढा दिया,  
और उनका नाम और निशान भी मिट गया है।
- 7 परन्तु **११:११-१२**,  
**११:१३**,  
उसने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है;
- 8 और वह जगत का न्याय धर्म से करेगा,  
वह देश-देश के लोगों का मुकद्दमा खराई से  
निपटाएगा। **(११: 96:13, ११:१३-१४)**  
**17:31)**
- 9 यहोवा पिसे हुआँ के लिये ऊँचा गढ़ ठहरेगा,  
वह संकट के समय के लिये भी ऊँचा गढ़ ठहरेगा।
- 10 और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ पर भरोसा रखेंगे,  
क्योंकि हे यहोवा तूने अपने खोजियों को त्याग नहीं  
दिया।
- 11 यहोवा जो सिख्योन में विराजमान है, उसका भजन  
गाओ!
- जाति-जाति के लोगों के बीच में उसके महाकर्माँ का  
प्रचार करो!
- 12 क्योंकि खून का पलटा लेनेवाला उनको स्मरण करता  
है;
- वह पिसे हुआँ की दुहाई को नहीं भूलता।
- 13 हे यहोवा, मुझ पर दया कर। देख, मेरे बैरी मुझ पर  
अत्याचार कर रहे हैं,  
तू ही मुझे मृत्यु के फाटकों से बचा सकता है;
- 14 ताकि मैं सिख्योन के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का  
वर्णन करूँ,  
और तेरे किए हुए उद्धार से मगन होऊँ।
- 15 अन्य जातिवालों ने जो गढ़ा खोदा था, उसी में वे  
आप गिर पड़े;

- जो जाल उन्होंने लगाया था, उसमें उन्हीं का पाँव फँस  
गया।
- 16 यहोवा ने अपने को प्रगट किया, उसने न्याय किया  
है;  
दुष्ट अपने किए हुए कामों में फँस जाता है।  
**(११:१३-१४)**,  
सेला)
- 17 दुष्ट अधोलोक में लौट जाएँगे,  
तथा वे सब जातियाँ भी जो परमेश्वर को भूल जाती हैं।
- 18 क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल तक बिसरे हुए न  
रहेंगे,  
और न तो नम्र लोगों की आशा सर्वदा के लिये नाश  
होगी।
- 19 हे यहोवा, उठ, मनुष्य प्रबल न होने पाए!  
जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए।
- 20 हे यहोवा, उनको भय दिला!  
जातियाँ अपने को मनुष्यमात्र ही जानें।  
(सेला)

## 10

- १०:१-१२**,  
1 **१०:१-१२**,  
**१०:१३-१४**,  
**१०:१५-१६**,  
**१०:१७-१८**,  
**१०:१९-२०**,  
**१०:२१-२२**,  
**१०:२३-२४**,  
**१०:२५-२६**,  
**१०:२७-२८**,  
**१०:२९-३०**,  
**१०:३१-३२**,  
**१०:३३-३४**,  
**१०:३५-३६**,  
**१०:३७-३८**,  
**१०:३९-४०**,  
**१०:४१-४२**,  
**१०:४३-४४**,  
**१०:४५-४६**,  
**१०:४७-४८**,  
**१०:४९-५०**,  
**१०:५१-५२**,  
**१०:५३-५४**,  
**१०:५५-५६**,  
**१०:५७-५८**,  
**१०:५९-६०**,  
**१०:६१-६२**,  
**१०:६३-६४**,  
**१०:६५-६६**,  
**१०:६७-६८**,  
**१०:६९-७०**,  
**१०:७१-७२**,  
**१०:७३-७४**,  
**१०:७५-७६**,  
**१०:७७-७८**,  
**१०:७९-८०**,  
**१०:८१-८२**,  
**१०:८३-८४**,  
**१०:८५-८६**,  
**१०:८७-८८**,  
**१०:८९-९०**,  
**१०:९१-९२**,  
**१०:९३-९४**,  
**१०:९५-९६**,  
**१०:९७-९८**,  
**१०:९९-१००**,  
**१०:१०१-१०२**,  
**१०:१०३-१०४**,  
**१०:१०५-१०६**,  
**१०:१०७-१०८**,  
**१०:१०९-११०**,  
**१०:१११-११२**,  
**१०:११३-११४**,  
**१०:११५-११६**,  
**१०:११७-११८**,  
**१०:११९-१२०**,  
**१०:१२१-१२२**,  
**१०:१२३-१२४**,  
**१०:१२५-१२६**,  
**१०:१२७-१२८**,  
**१०:१२९-१३०**,  
**१०:१३१-१३२**,  
**१०:१३३-१३४**,  
**१०:१३५-१३६**,  
**१०:१३७-१३८**,  
**१०:१३९-१४०**,  
**१०:१४१-१४२**,  
**१०:१४३-१४४**,  
**१०:१४५-१४६**,  
**१०:१४७-१४८**,  
**१०:१४९-१५०**,  
**१०:१५१-१५२**,  
**१०:१५३-१५४**,  
**१०:१५५-१५६**,  
**१०:१५७-१५८**,  
**१०:१५९-१६०**,  
**१०:१६१-१६२**,  
**१०:१६३-१६४**,  
**१०:१६५-१६६**,  
**१०:१६७-१६८**,  
**१०:१६९-१७०**,  
**१०:१७१-१७२**,  
**१०:१७३-१७४**,  
**१०:१७५-१७६**,  
**१०:१७७-१७८**,  
**१०:१७९-१८०**,  
**१०:१८१-१८२**,  
**१०:१८३-१८४**,  
**१०:१८५-१८६**,  
**१०:१८७-१८८**,  
**१०:१८९-१९०**,  
**१०:१९१-१९२**,  
**१०:१९३-१९४**,  
**१०:१९५-१९६**,  
**१०:१९७-१९८**,  
**१०:१९९-२००**,  
**१०:२०१-२०२**,  
**१०:२०३-२०४**,  
**१०:२०५-२०६**,  
**१०:२०७-२०८**,  
**१०:२०९-२१०**,  
**१०:२११-२१२**,  
**१०:२१३-२१४**,  
**१०:२१५-२१६**,  
**१०:२१७-२१८**,  
**१०:२१९-२२०**,  
**१०:२२१-२२२**,  
**१०:२२३-२२४**,  
**१०:२२५-२२६**,  
**१०:२२७-२२८**,  
**१०:२२९-२३०**,  
**१०:२३१-२३२**,  
**१०:२३३-२३४**,  
**१०:२३५-२३६**,  
**१०:२३७-२३८**,  
**१०:२३९-२४०**,  
**१०:२४१-२४२**,  
**१०:२४३-२४४**,  
**१०:२४५-२४६**,  
**१०:२४७-२४८**,  
**१०:२४९-२५०**,  
**१०:२५१-२५२**,  
**१०:२५३-२५४**,  
**१०:२५५-२५६**,  
**१०:२५७-२५८**,  
**१०:२५९-२६०**,  
**१०:२६१-२६२**,  
**१०:२६३-२६४**,  
**१०:२६५-२६६**,  
**१०:२६७-२६८**,  
**१०:२६९-२७०**,  
**१०:२७१-२७२**,  
**१०:२७३-२७४**,  
**१०:२७५-२७६**,  
**१०:२७७-२७८**,  
**१०:२७९-२८०**,  
**१०:२८१-२८२**,  
**१०:२८३-२८४**,  
**१०:२८५-२८६**,  
**१०:२८७-२८८**,  
**१०:२८९-२९०**,  
**१०:२९१-२९२**,  
**१०:२९३-२९४**,  
**१०:२९५-२९६**,  
**१०:२९७-२९८**,  
**१०:२९९-३००**,  
**१०:३०१-३०२**,  
**१०:३०३-३०४**,  
**१०:३०५-३०६**,  
**१०:३०७-३०८**,  
**१०:३०९-३१०**,  
**१०:३११-३१२**,  
**१०:३१३-३१४**,  
**१०:३१५-३१६**,  
**१०:३१७-३१८**,  
**१०:३१९-३२०**,  
**१०:३२१-३२२**,  
**१०:३२३-३२४**,  
**१०:३२५-३२६**,  
**१०:३२७-३२८**,  
**१०:३२९-३३०**,  
**१०:३३१-३३२**,  
**१०:३३३-३३४**,  
**१०:३३५-३३६**,  
**१०:३३७-३३८**,  
**१०:३३९-३४०**,  
**१०:३४१-३४२**,  
**१०:३४३-३४४**,  
**१०:३४५-३४६**,  
**१०:३४७-३४८**,  
**१०:३४९-३५०**,  
**१०:३५१-३५२**,  
**१०:३५३-३५४**,  
**१०:३५५-३५६**,  
**१०:३५७-३५८**,  
**१०:३५९-३६०**,  
**१०:३६१-३६२**,  
**१०:३६३-३६४**,  
**१०:३६५-३६६**,  
**१०:३६७-३६८**,  
**१०:३६९-३७०**,  
**१०:३७१-३७२**,  
**१०:३७३-३७४**,  
**१०:३७५-३७६**,  
**१०:३७७-३७८**,  
**१०:३७९-३८०**,  
**१०:३८१-३८२**,  
**१०:३८३-३८४**,  
**१०:३८५-३८६**,  
**१०:३८७-३८८**,  
**१०:३८९-३९०**,  
**१०:३९१-३९२**,  
**१०:३९३-३९४**,  
**१०:३९५-३९६**,  
**१०:३९७-३९८**,  
**१०:३९९-४००**,  
**१०:४०१-४०२**,  
**१०:४०३-४०४**,  
**१०:४०५-४०६**,  
**१०:४०७-४०८**,  
**१०:४०९-४१०**,  
**१०:४११-४१२**,  
**१०:४१३-४१४**,  
**१०:४१५-४१६**,  
**१०:४१७-४१८**,  
**१०:४१९-४२०**,  
**१०:४२१-४२२**,  
**१०:४२३-४२४**,  
**१०:४२५-४२६**,  
**१०:४२७-४२८**,  
**१०:४२९-४३०**,  
**१०:४३१-४३२**,  
**१०:४३३-४३४**,  
**१०:४३५-४३६**,  
**१०:४३७-४३८**,  
**१०:४३९-४४०**,  
**१०:४४१-४४२**,  
**१०:४४३-४४४**,  
**१०:४४५-४४६**,  
**१०:४४७-४४८**,  
**१०:४४९-४५०**,  
**१०:४५१-४५२**,  
**१०:४५३-४५४**,  
**१०:४५५-४५६**,  
**१०:४५७-४५८**,  
**१०:४५९-४६०**,  
**१०:४६१-४६२**,  
**१०:४६३-४६४**,  
**१०:४६५-४६६**,  
**१०:४६७-४६८**,  
**१०:४६९-४७०**,  
**१०:४७१-४७२**,  
**१०:४७३-४७४**,  
**१०:४७५-४७६**,  
**१०:४७७-४७८**,  
**१०:४७९-४८०**,  
**१०:४८१-४८२**,  
**१०:४८३-४८४**,  
**१०:४८५-४८६**,  
**१०:४८७-४८८**,  
**१०:४८९-४९०**,  
**१०:४९१-४९२**,  
**१०:४९३-४९४**,  
**१०:४९५-४९६**,  
**१०:४९७-४९८**,  
**१०:४९९-५००**,  
**१०:५०१-५०२**,  
**१०:५०३-५०४**,  
**१०:५०५-५०६**,  
**१०:५०७-५०८**,  
**१०:५०९-५१०**,  
**१०:५११-५१२**,  
**१०:५१३-५१४**,  
**१०:५१५-५१६**,  
**१०:५१७-५१८**,  
**१०:५१९-५२०**,  
**१०:५२१-५२२**,  
**१०:५२३-५२४**,  
**१०:५२५-५२६**,  
**१०:५२७-५२८**,  
**१०:५२९-५३०**,  
**१०:५३१-५३२**,  
**१०:५३३-५३४**,  
**१०:५३५-५३६**,  
**१०:५३७-५३८**,  
**१०:५३९-५४०**,  
**१०:५४१-५४२**,  
**१०:५४३-५४४**,  
**१०:५४५-५४६**,  
**१०:५४७-५४८**,  
**१०:५४९-५५०**,  
**१०:५५१-५५२**,  
**१०:५५३-५५४**,  
**१०:५५५-५५६**,  
**१०:५५७-५५८**,  
**१०:५५९-५६०**,  
**१०:५६१-५६२**,  
**१०:५६३-५६४**,  
**१०:५६५-५६६**,  
**१०:५६७-५६८**,  
**१०:५६९-५७०**,  
**१०:५७१-५७२**,  
**१०:५७३-५७४**,  
**१०:५७५-५७६**,  
**१०:५७७-५७८**,  
**१०:५७९-५८०**,  
**१०:५८१-५८२**,  
**१०:५८३-५८४**,  
**१०:५८५-५८६**,  
**१०:५८७-५८८**,  
**१०:५८९-५९०**,  
**१०:५९१-५९२**,  
**१०:५९३-५९४**,  
**१०:५९५-५९६**,  
**१०:५९७-५९८**,  
**१०:५९९-६००**,  
**१०:६०१-६०२**,  
**१०:६०३-६०४**,  
**१०:६०५-६०६**,  
**१०:६०७-६०८**,  
**१०:६०९-६१०**,  
**१०:६११-६१२**,  
**१०:६१३-६१४**,  
**१०:६१५-६१६**,  
**१०:६१७-६१८**,  
**१०:६१९-६२०**,  
**१०:६२१-६२२**,  
**१०:६२३-६२४**,  
**१०:६२५-६२६**,  
**१०:६२७-६२८**,  
**१०:६२९-६३०**,  
**१०:६३१-६३२**,  
**१०:६३३-६३४**,  
**१०:६३५-६३६**,  
**१०:६३७-६३८**,  
**१०:६३९-६४०**,  
**१०:६४१-६४२**,  
**१०:६४३-६४४**,  
**१०:६४५-६४६**,  
**१०:६४७-६४८**,  
**१०:६४९-६५०**,  
**१०:६५१-६५२**,  
**१०:६५३-६५४**,  
**१०:६५५-६५६**,  
**१०:६५७-६५८**,  
**१०:६५९-६६०**,  
**१०:६६१-६६२**,  
**१०:६६३-६६४**,  
**१०:६६५-६६६**,  
**१०:६६७-६६८**,  
**१०:६६९-६७०**,  
**१०:६७१-६७२**,  
**१०:६७३-६७४**,  
**१०:६७५-६७६**,  
**१०:६७७-६७८**,  
**१०:६७९-६८०**,  
**१०:६८१-६८२**,  
**१०:६८३-६८४**,  
**१०:६८५-६८६**,  
**१०:६८७-६८८**,  
**१०:६८९-६९०**,  
**१०:६९१-६९२**,  
**१०:६९३-६९४**,  
**१०:६९५-६९६**,  
**१०:६९७-६९८**,  
**१०:६९९-७००**,  
**१०:७०१-७०२**,  
**१०:७०३-७०४**,  
**१०:७०५-७०६**,  
**१०:७०७-७०८**,  
**१०:७०९-७१०**,  
**१०:७११-७१२**,  
**१०:७१३-७१४**,  
**१०:७१५-७१६**,  
**१०:७१७-७१८**,  
**१०:७१९-७२०**,  
**१०:७२१-७२२**,  
**१०:७२३-७२४**,  
**१०:७२५-७२६**,  
**१०:७२७-७२८**,  
**१०:७२९-७३०**,  
**१०:७३१-७३२**,  
**१०:७३३-७३४**,  
**१०:७३५-७३६**,  
**१०:७३७-७३८**,  
**१०:७३९-७४०**,  
**१०:७४१-७४२**,  
**१०:७४३-७४४**,  
**१०:७४५-७४६**,  
**१०:७४७-७४८**,  
**१०:७४९-७५०**,  
**१०:७५१-७५२**,  
**१०:७५३-७५४**,  
**१०:७५५-७५६**,  
**१०:७५७-७५८**,  
**१०:७५९-७६०**,  
**१०:७६१-७६२**,  
**१०:७६३-७६४**,  
**१०:७६५-७६६**,  
**१०:७६७-७६८**,  
**१०:७६९-७७०**,  
**१०:७७१-७७२**,  
**१०:७७३-७७४**,  
**१०:७७५-७७६**,  
**१०:७७७-७७८**,  
**१०:७७९-७८०**,  
**१०:७८१-७८२**,  
**१०:७८३-७८४**,  
**१०:७८५-७८६**,  
**१०:७८७-७८८**,  
**१०:७८९-७९०**,  
**१०:७९१-७९२**,  
**१०:७९३-७९४**,  
**१०:७९५-७९६**,  
**१०:७९७-७९८**,  
**१०:७९९-८००**,  
**१०:८०१-८०२**,  
**१०:८०३-८०४**,  
**१०:८०५-८०६**,  
**१०:८०७-८०८**,  
**१०:८०९-८१०**,  
**१०:८११-८१२**,  
**१०:८१३-८१४**,  
**१०:८१५-८१६**,  
**१०:८१७-८१८**,  
**१०:८१९-८२०**,  
**१०:८२१-८२२**,  
**१०:८२३-८२४**,  
**१०:८२५-८२६**,  
**१०:८२७-८२८**,  
**१०:८२९-८३०**,  
**१०:८३१-८३२**,  
**१०:८३३-८३४**,  
**१०:८३५-८३६**,  
**१०:८३७-८३८**,  
**१०:८३९-८४०**,  
**१०:८४१-८४२**,  
**१०:८४३-८४४**,  
**१०:८४५-८४६**,  
**१०:८४७-८४८**,  
**१०:८४९-८५०**,  
**१०:८५१-८५२**,  
**१०:८५३-८५४**,  
**१०:८५५-८५६**,  
**१०:८५७-८५८**,  
**१०:८५९-८६०**,  
**१०:८६१-८६२**,  
**१०:८६३-८६४**,  
**१०:८६५-८६६**,  
**१०:८६७-८६८**,  
**१०:८६९-८७०**,  
**१०:८७१-८७२</**

उसकी आँखें लाचार की घात में लगी रहती है।  
 9 वह सिंह के समान झाड़ी में छिपकर घात में बैठाता है;  
 वह दीन को पकड़ने के लिये घात लगाता है,  
 वह दीन को जाल में फँसाकर पकड़ लेता है।  
 10 लाचार लोगों को कुचला और पीटा जाता है,  
 वह उसके मजबूत जाल में गिर जाते हैं।  
 11 वह अपने मन में सोचता है, “परमेश्वर भूल गया,  
 वह अपना मुँह छिपाता है; वह कभी नहीं देखेगा।”  
 12 उठ, हे यहोवा; हे परमेश्वर, अपना हाथ बढ़ा और  
 न्याय कर;  
 और दीनों को न भूल।  
 13 परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है,  
 और अपने मन में कहता है “तू लेखा न लेगा?”  
 14 तूने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात और उत्पीड़न पर  
 दृष्टि रखता है, ताकि उसका पलटा अपने हाथ  
 में रखे;

लाचार अपने आपको तुझे सौंपता है;  
 अनाथों का तू ही सहायक रहा है।

15 दुर्जन और दुष्ट की भुजा को तोड़ डाल;  
 उनकी दुष्टता का लेखा ले, जब तक कि सब उसमें से दूर  
 न हो जाए।  
 16 यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराज है;  
 उसके देश में से जाति-जाति लोग नाश हो गए हैं।  
 (10:11:26,27)  
 17 हे यहोवा, तूने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी है;  
 तू उनका मन दृढ़ करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा  
 18 कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे,  
 ताकि 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1 फिर भय  
 दिखाने न पाए।

## 11

10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन

1 मैं यहोवा में शरण लेता हूँ;  
 तुम क्यों मेरे प्राण से कहते हो  
 “10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1”;  
 2 क्योंकि देखो, दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते हैं,  
 और अपने तीर धनुष की डोरी पर रखते हैं,  
 कि सीधे मनवालों पर अंधियारे में तीर चलाएँ।  
 3 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1

‡ 10:18 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1 \* 11:1 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1 † 11:3 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1 \* 12:3 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1 † 12:6 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1 अर्थात् बार बार आग में पिघलाई गई।

तो धर्मी क्या कर सकता है?  
 4 यहोवा अपने पवित्र भवन में है;  
 यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है;  
 उसकी आँखें मनुष्य की सन्तान को नित देखती रहती हैं  
 और उसकी पलकें उनको जाँचती हैं।  
 5 यहोवा धर्मी और दुष्ट दोनों को परखता है,  
 परन्तु जो उपद्रव से प्रीति रखते हैं  
 उनसे वह घृणा करता है।  
 6 वह दुष्टों पर आग और गन्धक बरसाएगा;  
 और प्रचण्ड लूह उनके कटोरों में बाँट दी जाएगी।  
 7 क्योंकि यहोवा धर्मी है,  
 वह धार्मिकता के ही कामों से प्रसन्न रहता है;  
 धर्मी जन उसका दर्शन पाएँगे।

## 12

10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1

प्रधान बजानेवाले के लिये खर्ज की राग में दाऊद का भजन

1 हे यहोवा बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा;  
 मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग लुप्त हो गए हैं।  
 2 प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से झूठी बातें कहता है;  
 वे चापलूसी के होठों से दो रंगी बातें करते हैं।  
 3 यहोवा सब चापलूस होठों को  
 और 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1\*  
 काट डालेगा।  
 4 वे कहते हैं, “हम अपनी जीभ ही से जीतेंगे,  
 हमारे हाँठ हमारे ही वश में हैं; हम पर कौन शासन कर  
 सकेगा?”  
 5 दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों के कराहने के  
 कारण,  
 यहोवा कहता है, “अब मैं उठूँगा, जिस पर  
 वे फुँकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दूँगा।”  
 6 यहोवा का वचन पवित्र है,  
 उस चाँदी के समान जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई,  
 और 10:11:26,27 12:1:1 12:2:1 12:3:1 12:4:1 12:5:1 12:6:1 12:7:1 12:8:1 12:9:1 12:10:1 12:11:1 12:12:1 12:13:1 12:14:1 12:15:1 12:16:1 12:17:1 12:18:1 12:19:1 12:20:1 12:21:1 12:22:1 12:23:1 12:24:1 12:25:1 12:26:1 12:27:1 12:28:1 12:29:1 12:30:1 12:31:1 12:32:1 12:33:1 12:34:1 12:35:1 12:36:1 12:37:1 12:38:1 12:39:1 12:40:1 12:41:1 12:42:1 12:43:1 12:44:1 12:45:1 12:46:1 12:47:1 12:48:1 12:49:1 12:50:1 12:51:1 12:52:1 12:53:1 12:54:1 12:55:1 12:56:1 12:57:1 12:58:1 12:59:1 12:60:1 12:61:1 12:62:1 12:63:1 12:64:1 12:65:1 12:66:1 12:67:1 12:68:1 12:69:1 12:70:1 12:71:1 12:72:1 12:73:1 12:74:1 12:75:1 12:76:1 12:77:1 12:78:1 12:79:1 12:80:1 12:81:1 12:82:1 12:83:1 12:84:1 12:85:1 12:86:1 12:87:1 12:88:1 12:89:1 12:90:1 12:91:1 12:92:1 12:93:1 12:94:1 12:95:1 12:96:1 12:97:1 12:98:1 12:99:1 12:100:1।  
 7 तू ही हे यहोवा उनकी रक्षा करेगा,  
 उनको इस काल के लोगों से सर्वदा के लिये बचाए  
 रखेगा।  
 8 जब मनुष्यों में बुराई का आदर होता है,  
 तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं।



और [२२२२ २२२ २२२२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२२]\* ।

5 यहोवा तू मेरा चुना हुआ भाग और मेरा कटोरा है;

मेरे भाग को तू स्थिर रखता है ।

6 मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी,

और मेरा भाग मनभावना है ।

7 मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ,

क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है;

वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है ।

8 [२२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२ २२२२२२२ २२२ २२]:

इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊँगा ।

9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित

और मेरी आत्मा मगन हुई;

मेरा शरीर भी चैन से रहेगा ।

10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा,

न अपने पवित्र भक्त को कब्र में सड़ने देगा ।

11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा;

तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है,

तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है ।

([२२२२२२]. 2:25-28)

## 17

[२२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२२२]

दाऊद की प्रार्थना

1 हे यहोवा परमेश्वर सच्चाई के वचन सुन, मेरी पुकार

की ओर ध्यान दे

मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुँह से निकलती है

कान लगा!

2 मेरे मुकद्दमे का निर्णय तेरे सम्मुख हो!

तेरी आँखें न्याय पर लगी रहें!

3 यदि तू मेरे हृदय को जाँचता; यदि तू रात को मेरा

परीक्षण करता,

यदि तू मुझे परखता तो कुछ भी खोटापन नहीं पाता;

मेरे मुँह से अपराध की बात नहीं निकलेगी ।

4 मानवीय कामों में [२२२२२ २२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२]

[२२ २२२२२२]\*

अधर्मियों के मार्ग से स्वयं को बचाए रखा ।

5 मेरे पाँव तेरे पथों में स्थिर रहे, फिसले नहीं ।

\* 16:4 [२२२२ २२२ २२२२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२२]: आराधना के साधन स्वरूप अर्थात् मैं किसी भी प्रकार उन्हें ईश्वर नहीं मानूँगा और न ही उन्हें वह भक्ति चढ़ाऊँगा जो परमेश्वर का है। † 16:8 [२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२ २२२२२२२ २२२ २२]: मैंने स्वयं को सदैव परमेश्वर की उपस्थिति में माना है; मैंने सदैव यही माना है कि उसकी दृष्टि मुझ पर है। \* 17:4 [२२२२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२२]: न तो उसकी अपनी शक्ति के द्वारा और न ही उसकी क्षमता के द्वारा परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं एवं प्रतिज्ञाओं के द्वारा जो उसके मुँह से निकली हैं। † 17:8 [२२२२ २२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२२ २२]: ऐसी देख-भाल कर, रक्षा कर, चौकसी कर जैसे वह उसकी अनमोल और बहुमूल्य वस्तु है। ‡ 17:14 [२२२२ २२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२ २२]: इस पद का अर्थ है, दुष्ट जिस उद्देश्य से जीवित रहता है वह केवल संसार है और जो संसार दे सकता है उन्हें वह मिलता है ।

6 हे परमेश्वर, मैंने तुझ से प्रार्थना की है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा ।

अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी विनती सुन ले ।

7 तू जो अपने दाहिने हाथ के द्वारा अपने शरणागतों को उनके विरोधियों से बचाता है,

अपनी अद्भुत करुणा दिखा ।

8 [२२२२ २२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२२ २२];

अपने पंखों के तले मुझे छिपा रख,

9 उन दुष्टों से जो मुझ पर अत्याचार करते हैं,

मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं ।

10 उन्होंने अपने हृदयों को कठोर किया है;

उनके मुँह से घमण्ड की बातें निकलती हैं ।

11 उन्होंने पग-पग पर मुझ को घेरा है;

वे मुझ को भूमि पर पटक देने के लिये

घात लगाए हुए हैं ।

12 वह उस सिंह के समान है जो अपने शिकार की लालसा करता है,

और जवान सिंह के समान घात लगाने के स्थानों में बैठा रहता है ।

13 उठ, हे यहोवा!

उसका सामना कर और उसे पटक दे!

अपनी तलवार के बल से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ले ।

14 अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे मनुष्यों से बचा, अर्थात् सांसारिक मनुष्यों से जिनका भाग इसी जीवन में है,

और [२२२२२ २२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२ २२];

वे बाल-बच्चों से सन्तुष्ट हैं; और शेष सम्पत्ति अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं ।

15 परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूँगा

जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट होऊँगा ।

([२२]. 4:6,7, 1 [२२]. 3:2)

## 18

[२२२२ २२ २२२२२२२२२]

प्रधान बजानेवाले के लिये । यहोवा के दास दाऊद का गीत, जिसके वचन उसने यहोवा के लिये उस समय गाया जब यहोवा ने उसको उसके सारे शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से बचाया था, उसने कहा





हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है?

32 यह वही परमेश्वर है, जो सामर्थ्य से मेरा कमरबन्ध बाँधता है,

और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।

33 वही मेरे पैरों को हिरनी के पैरों के समान बनाता है, और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।

34 वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है, इसलिए मेरी बाहों से पीतल का धनुष झुक जाता है।

35 तूने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी है, तू अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है,

और तेरी नम्रता ने मुझे महान बनाया है।

36 *१११११ १११११ ११११११ ११ ११११ ११११११ ११११११*  
*११ १११११*,

और मेरे पैर नहीं फिसले।

37 मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा; और जब तक उनका अन्त न करूँ तब तक न लौटूँगा।

38 मैं उन्हें ऐसा बेधूँगा कि वे उठ न सकेंगे; वे मेरे पाँवों के नीचे गिर जाएँगे।

39 क्योंकि तूने युद्ध के लिये मेरी कमर में शक्ति का पट्टा बाँधा है;

और मेरे विरोधियों को मेरे सम्मुख नीचा कर दिया।

40 तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी; ताकि मैं उनको काट डालूँ जो मुझसे द्वेष रखते हैं।

41 उन्होंने दुहाई तो दी परन्तु उन्हें कोई बचानेवाला न मिला,

उन्होंने यहोवा की भी दुहाई दी, परन्तु उसने भी उनको उत्तर न दिया।

42 तब मैंने उनको कूट कूटकर पवन से उड़ाई हुई धूल के समान कर दिया;

मैंने उनको मार्ग के कीचड़ के समान निकाल फेंका।

43 तूने मुझे प्रजा के झगड़ों से भी छुड़ाया; तूने मुझे अन्यजातियों का प्रधान बनाया है;

जिन लोगों को मैं जानता भी न था वे मेरी सेवा करते हैं।

44 मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे; परदेशी मेरे वश में हो जाएँगे।

45 परदेशी मुझाँ जाएँगे, और अपने किलों में से थरथराते हुए निकलेंगे।

46 यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है; और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई हो।

47 धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला परमेश्वर!

जिसने देश-देश के लोगों को मेरे वश में कर दिया है;

48 और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है;

तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊँचा करता, और उपद्रवी पुरुष से बचाता है।

49 इस कारण मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा,

और तेरे नाम का भजन गाऊँगा।

50 वह अपने ठहराए हुए राजा को महान विजय देता है, वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर

और उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा।

## 19

*११११११ ११११११ १११११११११११ ११*  
*११११११ ११ ११११११*

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन

1 आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन करता है;

और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है।

2 दिन से दिन बातें करता है,

और रात को रात ज्ञान सिखाती है।

3 न तो कोई बोली है और न कोई भाषा;

जहाँ उनका शब्द सुनाई नहीं देता है।

4 फिर भी उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूँज गया है, और उनका वचन जगत की छोर तक पहुँच गया है।

उनमें उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है,

5 जो दुल्हे के समान अपने कक्ष से निकलता है।

वह *११११११११ ११ १११११ १११११ १११११ ११११११११ ११११*  
*१११११११ १११११ ११\**।

6 वह आकाश की एक छोर से निकलता है,

और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है;

और उसकी गर्मी से कोई नहीं बच पाता।

7 यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है;

यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं,

बुद्धिहीन लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;

8 *११११११ ११ ११११११* सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं;

यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों में ज्योति ले आती है;

9 यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है;

यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।

§ 18:36 *१११११ १११११ ११११११ ११ १११११ ११११११ ११११११ ११ १११११*: कि मैं बिना रुकावट या बाधा के चल पाऊँ। \* 19:5 *१११११११ ११*  
*१११११ १११११ १११११११११ ११ १११११११ ११११ ११*: दौड़ में प्रवेश करनेवाले मनुष्य के समान कुशल और शक्तिशाली। † 19:8 *११११११*  
*११ ११११११*: उपदेश शब्द का प्रयोग में सही अर्थ है, आज्ञा, आदेश या नियम, जो मार्गदर्शन के लिए है।

10 वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं;

वे मधु से और छत्ते से टपकनेवाले मधु से भी बढ़कर मधुर हैं।

11 उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। (2 **1:8, 119:11**)

12 अपनी गलतियों को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर।

13 तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएँ!

तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और **15:30**।

14 हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले, मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहणयोग्य हों।

## 20

**19:13** **20:6** **20:8** **20:10** **20:12** **20:14** **20:16** **20:18** **20:20** **20:22** **20:24** **20:26** **20:28** **20:30** **20:32** **20:34** **20:36** **20:38** **20:40** **20:42** **20:44** **20:46** **20:48** **20:50** **20:52** **20:54** **20:56** **20:58** **20:60** **20:62** **20:64** **20:66** **20:68** **20:70** **20:72** **20:74** **20:76** **20:78** **20:80** **20:82** **20:84** **20:86** **20:88** **20:90** **20:92** **20:94** **20:96** **20:98** **20:100**

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन

1 संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले!

याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊँचे स्थान पर नियुक्त करे!

2 वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे, और सिंघियों से तुझे सम्भाल ले!

3 वह तेरे सब भेटों को स्मरण करे, और तेरे होमबलि को ग्रहण करे।

4 वह तेरे मन की इच्छा को पूरी करे, और तेरी सारी युक्ति को सफल करे!

5 तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊँचे स्वर से हर्षित होकर गाएँगे, और अपने परमेश्वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे।

यहोवा तेरे सारे निवेदन स्वीकार करे। (**60:4**)

6 अब मैं जान गया कि **20:6** **20:8** **20:10** **20:12** **20:14** **20:16** **20:18** **20:20** **20:22** **20:24** **20:26** **20:28** **20:30** **20:32** **20:34** **20:36** **20:38** **20:40** **20:42** **20:44** **20:46** **20:48** **20:50** **20:52** **20:54** **20:56** **20:58** **20:60** **20:62** **20:64** **20:66** **20:68** **20:70** **20:72** **20:74** **20:76** **20:78** **20:80** **20:82** **20:84** **20:86** **20:88** **20:90** **20:92** **20:94** **20:96** **20:98** **20:100** को बचाएगा;

वह अपने पवित्र स्वर्ग से, अपने दाहिने हाथ के उद्धार के सामर्थ्य से, उसको उत्तर देगा।

7 किसी को रथों पर, और किसी को घोड़ों पर भरोसा है,

परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे। (**33:16,17**)

8 **20:6** **20:8** **20:10** **20:12** **20:14** **20:16** **20:18** **20:20** **20:22** **20:24** **20:26** **20:28** **20:30** **20:32** **20:34** **20:36** **20:38** **20:40** **20:42** **20:44** **20:46** **20:48** **20:50** **20:52** **20:54** **20:56** **20:58** **20:60** **20:62** **20:64** **20:66** **20:68** **20:70** **20:72** **20:74** **20:76** **20:78** **20:80** **20:82** **20:84** **20:86** **20:88** **20:90** **20:92** **20:94** **20:96** **20:98** **20:100**†:

परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हैं।

9 हे यहोवा, राजा को छुड़ा;

जब हम तुझे पुकारें तब हमारी सहायता कर।

## 21

**21:1** **21:2** **21:3** **21:4** **21:5** **21:6** **21:7** **21:8** **21:9** **21:10** **21:11** **21:12** **21:13** **21:14** **21:15** **21:16** **21:17** **21:18** **21:19** **21:20** **21:21** **21:22** **21:23** **21:24** **21:25** **21:26** **21:27** **21:28** **21:29** **21:30** **21:31** **21:32** **21:33** **21:34** **21:35** **21:36** **21:37** **21:38** **21:39** **21:40** **21:41** **21:42** **21:43** **21:44** **21:45** **21:46** **21:47** **21:48** **21:49** **21:50** **21:51** **21:52** **21:53** **21:54** **21:55** **21:56** **21:57** **21:58** **21:59** **21:60** **21:61** **21:62** **21:63** **21:64** **21:65** **21:66** **21:67** **21:68** **21:69** **21:70** **21:71** **21:72** **21:73** **21:74** **21:75** **21:76** **21:77** **21:78** **21:79** **21:80** **21:81** **21:82** **21:83** **21:84** **21:85** **21:86** **21:87** **21:88** **21:89** **21:90** **21:91** **21:92** **21:93** **21:94** **21:95** **21:96** **21:97** **21:98** **21:99** **21:100**

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
1 हे यहोवा तेरी सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा; और तेरे किए हुए उद्धार से वह अति मगन होगा।

2 तूने उसके मनोरथ को पूरा किया है, और उसके मुँह की विनती को तूने अस्वीकार नहीं किया।

(सेला)

3 क्योंकि तू उत्तम आशीषें देता हुआ उससे मिलता है और तू उसके सिर पर कुन्दन का मुकुट पहनाता है।

4 उसने तुझ से जीवन माँगा, और तूने जीवनदान दिया; तूने उसको युगानुयुग का जीवन दिया है।

5 तेरे उद्धार के कारण उसकी महिमा अधिक है; तू उसको वैभव और ऐश्वर्य से आभूषित कर देता है।

6 क्योंकि **21:1** **21:2** **21:3** **21:4** **21:5** **21:6** **21:7** **21:8** **21:9** **21:10** **21:11** **21:12** **21:13** **21:14** **21:15** **21:16** **21:17** **21:18** **21:19** **21:20** **21:21** **21:22** **21:23** **21:24** **21:25** **21:26** **21:27** **21:28** **21:29** **21:30** **21:31** **21:32** **21:33** **21:34** **21:35** **21:36** **21:37** **21:38** **21:39** **21:40** **21:41** **21:42** **21:43** **21:44** **21:45** **21:46** **21:47** **21:48** **21:49** **21:50** **21:51** **21:52** **21:53** **21:54** **21:55** **21:56** **21:57** **21:58** **21:59** **21:60** **21:61** **21:62** **21:63** **21:64** **21:65** **21:66** **21:67** **21:68** **21:69** **21:70** **21:71** **21:72** **21:73** **21:74** **21:75** **21:76** **21:77** **21:78** **21:79** **21:80** **21:81** **21:82** **21:83** **21:84** **21:85** **21:86** **21:87** **21:88** **21:89** **21:90** **21:91** **21:92** **21:93** **21:94** **21:95** **21:96** **21:97** **21:98** **21:99** **21:100**†;

तू अपने सम्मुख उसको हर्ष और आनन्द से भर देता है।

7 क्योंकि राजा का भरोसा यहोवा के ऊपर है; और परमप्रधान की करुणा से **21:1** **21:2** **21:3** **21:4** **21:5** **21:6** **21:7** **21:8** **21:9** **21:10** **21:11** **21:12** **21:13** **21:14** **21:15** **21:16** **21:17** **21:18** **21:19** **21:20** **21:21** **21:22** **21:23** **21:24** **21:25** **21:26** **21:27** **21:28** **21:29** **21:30** **21:31** **21:32** **21:33** **21:34** **21:35** **21:36** **21:37** **21:38** **21:39** **21:40** **21:41** **21:42** **21:43** **21:44** **21:45** **21:46** **21:47** **21:48** **21:49** **21:50** **21:51** **21:52** **21:53** **21:54** **21:55** **21:56** **21:57** **21:58** **21:59** **21:60** **21:61** **21:62** **21:63** **21:64** **21:65** **21:66** **21:67** **21:68** **21:69** **21:70** **21:71** **21:72** **21:73** **21:74** **21:75** **21:76** **21:77** **21:78** **21:79** **21:80** **21:81** **21:82** **21:83** **21:84** **21:85** **21:86** **21:87** **21:88** **21:89** **21:90** **21:91** **21:92** **21:93** **21:94** **21:95** **21:96** **21:97** **21:98** **21:99** **21:100**†।

(सेला)

8 तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूँढ़ निकालेगा, तेरा दाहिना हाथ तेरे सब बैरियों का पता लगा लेगा।

9 तू अपने मुख के सम्मुख उन्हें जलते हुए भट्टे के समान जलाएगा।

यहोवा अपने क्रोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उनको भस्म कर डालेगी।

10 तू उनके फलों को पृथ्वी पर से, और उनके वंश को मनुष्यों में से नष्ट करेगा।

11 क्योंकि उन्होंने तेरी हानि ठानी है, उन्होंने ऐसी युक्ति निकाली है जिसे वे पूरी न कर सकेंगे।

12 क्योंकि तू अपना धनुष उनके विरुद्ध चढ़ाएगा,

‡ **19:13** **20:6** **20:8** **20:10** **20:12** **20:14** **20:16** **20:18** **20:20** **20:22** **20:24** **20:26** **20:28** **20:30** **20:32** **20:34** **20:36** **20:38** **20:40** **20:42** **20:44** **20:46** **20:48** **20:50** **20:52** **20:54** **20:56** **20:58** **20:60** **20:62** **20:64** **20:66** **20:68** **20:70** **20:72** **20:74** **20:76** **20:78** **20:80** **20:82** **20:84** **20:86** **20:88** **20:90** **20:92** **20:94** **20:96** **20:98** **20:100**: अर्थात् वह उस अपराध से मुक्त रहेगा जो उसके गुप्त पापों के शोधन बिना विद्यमान रहता है।

\* **20:6** **20:8** **20:10** **20:12** **20:14** **20:16** **20:18** **20:20** **20:22** **20:24** **20:26** **20:28** **20:30** **20:32** **20:34** **20:36** **20:38** **20:40** **20:42** **20:44** **20:46** **20:48** **20:50** **20:52** **20:54** **20:56** **20:58** **20:60** **20:62** **20:64** **20:66** **20:68** **20:70** **20:72** **20:74** **20:76** **20:78** **20:80** **20:82** **20:84** **20:86** **20:88** **20:90** **20:92** **20:94** **20:96** **20:98** **20:100**: जिस राजा का अभिषेक या समर्पण किया गया है उसे वह सुरक्षित रखेगा। † **20:8** **20:10** **20:12** **20:14** **20:16** **20:18** **20:20** **20:22** **20:24** **20:26** **20:28** **20:30** **20:32** **20:34** **20:36** **20:38** **20:40** **20:42** **20:44** **20:46** **20:48** **20:50** **20:52** **20:54** **20:56** **20:58** **20:60** **20:62** **20:64** **20:66** **20:68** **20:70** **20:72** **20:74** **20:76** **20:78** **20:80** **20:82** **20:84** **20:86** **20:88** **20:90** **20:92** **20:94** **20:96** **20:98** **20:100**: अर्थात्, जो रथ और घोड़ों पर भरोसा करते हैं। यहाँ निश्चय ही उन बैरियों का संदर्भ है जिनसे राजा युद्ध करने जाएगा। \* **21:6** **21:8** **21:10** **21:12** **21:14** **21:16** **21:18** **21:20** **21:22** **21:24** **21:26** **21:28** **21:30** **21:32** **21:34** **21:36** **21:38** **21:40** **21:42** **21:44** **21:46** **21:48** **21:50** **21:52** **21:54** **21:56** **21:58** **21:60** **21:62** **21:64** **21:66** **21:68** **21:70** **21:72** **21:74** **21:76** **21:78** **21:80** **21:82** **21:84** **21:86** **21:88** **21:90** **21:92** **21:94** **21:96** **21:98** **21:100**: विचार यह है कि उसने उसे मनुष्यों के लिए या संसार के लिए आशीष का कारण बनाया था। उसे मनुष्यों के लिए आशीष का स्रोत बनाया है। † **21:7** **21:9** **21:11** **21:13** **21:15** **21:17** **21:19** **21:21** **21:23** **21:25** **21:27** **21:29** **21:31** **21:33** **21:35** **21:37** **21:39** **21:41** **21:43** **21:45** **21:47** **21:49** **21:51** **21:53** **21:55** **21:57** **21:59** **21:61** **21:63** **21:65** **21:67** **21:69** **21:71** **21:73** **21:75** **21:77** **21:79** **21:81** **21:83** **21:85** **21:87** **21:89** **21:91** **21:93** **21:95** **21:97** **21:99** **21:100**: वह दृढ़ता से स्थापित किया जाएगा: अर्थात् उसका सिंहासन दृढ़ रहेगा।





परन्तु जो अकारण विश्वासघाती हैं वे ही लज्जित होंगे।

4 हे यहोवा, अपने मार्ग मुझे दिखा; अपना पथ मुझे बता दे।

5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ।

6 हे यहोवा, अपनी दया और करुणा के कामों को स्मरण कर;

क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते आए हैं।

7 हे यहोवा, अपनी भलाई के कारण

१११११ ११११११ ११ ११११११ ११ १११११ १११११११११ ११ १११११ १ ११\*;

अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर।

8 यहोवा भला और सीधा है; इसलिए वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

9 वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हाँ, वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

10 जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं, उनके लिये उसके सब मार्ग करुणा और सच्चाई हैं। (१११. 1:17)

11 हे यहोवा, अपने नाम के निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत है क्षमा कर।

12 वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? प्रभु उसको उसी मार्ग पर जिससे वह प्रसन्न होता है चलाएगा।

13 वह कुशल से टिका रहेगा, और उसका वंश पृथ्वी पर अधिकारी होगा।

14 यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा। (१११. 1:9, १११. 1:18)

15 मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही १११११ १११११११ ११ ११११ ११११ ११ १११११११११†। (११. 141:8)

16 हे यहोवा, मेरी ओर फिरकर मुझ पर दया कर; क्योंकि मैं अकेला और पीड़ित हूँ।

17 मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है, १११ ११११ ११ ११११११ ११११११११ ११ १११११११ १११†।

18 तू मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर,

और मेरे सब पापों को क्षमा कर।

19 मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गए हैं, और मुझसे बड़ा बैर रखते हैं।

20 मेरे प्राण की रक्षा कर, और मुझे छुड़ा; मुझे लज्जित न होने दे,

क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ।

21 खराई और सिधाई मुझे सुरक्षित रखे, क्योंकि मुझे तेरी ही आशा है।

22 हे परमेश्वर इस्राएल को उसके सारे संकटों से छुड़ा ले।

## 26

१११ ११११ १११११११११ ११ १११११११११११

दाऊद का भजन

1 हे यहोवा, मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूँ,

और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है।

2 हे यहोवा, ११११ १११ ११११११ १११ ११११\*;

मेरे मन और हृदय को परख।

3 क्योंकि तेरी करुणा तो मेरी आँखों के सामने है, और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता रहा हूँ।

4 मैं निकम्मी चाल चलनेवालों के संग नहीं बैठा, और न मैं कपटियों के साथ कहीं जाऊँगा;

5 मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा रखता हूँ,

और दुष्टों के संग न बैठूँगा।

6 ११११ ११११११ १११११११ ११ ११११११११११११ ११ १११ १११ १११ ११११११११†,

तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करूँगा, (१११. 73:13)

7 ताकि तेरा धन्यवाद ऊँचे शब्द से करूँ, और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँ।

8 हे यहोवा, मैं तेरे धाम से

तेरी महिमा के निवास-स्थान से प्रीति रखता हूँ।

9 मेरे प्राण को पापियों के साथ,

और १११११ ११११११ १११ ११११११११११११ १११ ११११ १ ११११११†।

10 वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं,

और उनका दाहिना हाथ घूस से भरा रहता है।

11 परन्तु मैं तो खराई से चलता रहूँगा।

तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर दया कर।

\* 25:7 १११११ १११११११ ११.... ११११११ १ १११: परमेश्वर की प्रबल विषमता में भजनकार अपना ही आचरण एवं जीवन सामने रखता है। † 25:15 १११११ ११११११११ ११ ११११ ११११ ११ ११११११११११: जाल, दुष्ट ने उसके लिए बिछाया है। वह केवल परमेश्वर पर भरोसा रखता है कि उसे उससे बचाए।

‡ 25:17 ११ ११११ ११ १११११ ११११११११ ११ ११११११ १११: पापों के सदृश्य, और चारों ओर के संकटों से। बाहरी कष्ट और आन्तरिक अपराध बोध दोनों से छुड़ा ले \* 26:2 ११११ ११ १११११ ११ ११११: उसने यहोवा से याचना की कि उसके विषय में नियमनिष्ठ एवं अटल परिक्षण करे। † 26:6 ११११ ११११११ १११११११११११ ११ ११ ११ १११११११११: भजनकार अपनी निर्दोषता का एक और प्रमाण देता है। शुद्धता उसके जीवन का एक प्रेरणात्मक नियम था ताकि वह स्वामी की आराधना और सेवा पवित्रता में करे। ‡ 26:9 १११११ १११११ ११ ११११११११११ ११ ११११ १ ११११११: रक्तपात करनेवालों, रक्त बहानेवाले, लुटेरे, हत्यारे - दुष्टों का वर्णन करने के शब्द।

12 मेरे पाँव चौरस स्थान में स्थिर है;  
सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूँगा।

## 27

दाऊद का भजन

दाऊद का भजन

1 यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है;

यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है,

मैं किसका भय खाऊँ?  
2 जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से

बैर रखते थे,  
मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई की,

तब वे ही टोकर खाकर गिर पड़े।  
3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले,

तो भी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए,  
उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चित रहूँगा।  
4 एक वर मैंने यहोवा से माँगा है,

उसी के यत्न में लगा रहूँगा;  
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ,

जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ,  
और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ। (27: 6:8, 27: 23:6, 27:3:13)

5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा;  
अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा,  
और चट्टान पर चढ़ाएगा। (27: 91:1, 27: 40:2, 27: 138:7)

6 अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊँचा होगा;  
और मैं गाऊँगा और यहोवा के लिए गीत गाऊँगा। (27: 3:3)

7 हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूँ,  
तू मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे। (27: 130:2-4, 27: 13:3)

8 तूने कहा है, “मेरे दर्शन के खोजी हो।”  
इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है,  
“हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।”

9 अपना मुख मुझसे न छिपा।  
अपने दास को क्रोध करके न हटा,

\* 27:1 यहोवा मेरी रक्षा करे तो किसी में शक्ति नहीं कि मेरा प्राण हर ले: परमेश्वर में विश्वास करनेवालों के लिए वह गढ़ एवं दृढ़ बल है, और वे सुरक्षित रहते हैं। † 27:6 अर्थात् वह स्तुति और धन्यवाद के ऊँचे स्वर के साथ बलिदान चढ़ाएगा। ‡ 27:12 वे हिंसा या निर्दयता के व्यवहार पर मन लगाते हैं। \* 28:1 मृतकों के सद्दृश्य तनाव और निराशा से ग्रस्त होकर मर जाऊँ। † 28:5 परमेश्वर उन पर अनुग्रह नहीं करेगा, वह उन्हें समृद्धि प्रदान नहीं करेगा।

तू मेरा सहायक बना है।  
हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़ न दे!

10 मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है,  
परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।

11 हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा,  
और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल। (27: 5:8)

12 मुझ को मेरे सतानेवालों की इच्छा पर न छोड़,  
क्योंकि झूठे साक्षी जो मेरे विरुद्ध उठे हैं।

13 यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा,  
तो मैं मूर्च्छित हो जाता। (27: 142:5)

14 यहोवा की बाट जोहता रह;  
हियाव बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे;  
हाँ, यहोवा ही की बाट जोहता रह! (27: 31:24)

## 28

दाऊद का भजन

दाऊद का भजन

1 हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूँगा;

हे मेरी चट्टान, मेरी पुकार अनसुनी न कर,  
ऐसा न हो कि तेरे चुप रहने से

मैं कब्र में पड़े हुआँ के समान हो जाऊँ।  
2 जब मैं तेरी दुहाई दूँ,

और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊँ,  
तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले।

3 उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट;  
जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की बोलते हैं,  
परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं।

4 उनके कामों के और उनकी करनी की बुराई के अनुसार उनसे बर्ताव कर,  
उनके हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे;  
उनके कामों का पलटा उन्हें दे। (28: 16:27, 28: 18:6, 13, 28: 22:12)

5 क्योंकि वे यहोवा के कामों को और उसके हाथ के कामों को नहीं समझते,  
इसलिए वह उन्हें पछाड़ेगा और

6 यहोवा धन्य है;  
 क्योंकि उसने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है।  
 7 यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है;  
 उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है;  
 इसलिए मेरा हृदय प्रफुल्लित है;  
 और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूँगा।  
 8 यहोवा अपने लोगों की सामर्थ्य है,  
 वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है।  
 9 हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर,  
 और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे;  
 और उनकी चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।

## 29

दाऊद का भजन

1 हे परमेश्वर के पुत्रों, यहोवा का,  
 हाँ, यहोवा ही का गुणानुवाद करो,  
 यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को सराहो।  
 2 यहोवा के नाम की महिमा करो;  
 पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो।  
 3 यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुनाई देती है;  
 प्रतापी परमेश्वर गरजता है,  
 यहोवा घने मेघों के ऊपर रहता है। (37:4,5)  
 4 यहोवा की वाणी शक्तिशाली है,  
 यहोवा की वाणी प्रतापमय है।  
 5 यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है;  
 यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है।  
 6 वह लबानोन को बछड़े के समान  
 और सिर्योन को साँड़ के समान उछालता है।  
 7 यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है।  
 8 यहोवा की वाणी वन को हिला देती है,  
 यहोवा कादेश के वन को भी कँपाता है।  
 9 यहोवा की वाणी से हिरनियों का गर्भपात हो जाता है।  
 और जंगल में पतझड़ होता है;  
 और उसके मन्दिर में सब कोई  
 “महिमा ही महिमा” बोलते रहते हैं।  
 10 जल-प्रलय के समय यहोवा विराजमान था;  
 और यहोवा सर्वदा के लिये राजा होकर  
 विराजमान रहता है।  
 11 यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा;

\* 29:11 उन्हें आँधी और तूफान में किसी बात का डर न होगा, वे किसी बात से नहीं डरेंगे।  
 वह उन्हें आँधी में शान्ति की आशीष देगा। \* 30:3 अर्थात् मृत्यु उसके सिर पर थी वरन् वह कब्र के  
 मुँह से निकाला गया। † 30:5 उसकी प्रवृत्ति में जीवन देना है। वह जीवन रक्षक है, वह शाश्वत  
 जीवन देता है। ‡ 30:11 जो मैंने पहना या मेरी कमर में कसा हुआ था वो दुःख का  
 प्रतीक था और मेरे विलाप को दर्शाता है।

दाऊद का भजन  
 1 हे यहोवा, मैं तुझे सराहूँगा क्योंकि तूने  
 मुझे खींचकर निकाला है,  
 और मेरे शत्रुओं को मुझ पर  
 आनन्द करने नहीं दिया।  
 2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा,  
 मैंने तेरी दुहाई दी और तूने मुझे चंगा किया है।  
 3 हे यहोवा, तूने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है,  
 तूने मेरी आँसुओं को पोंछा है,  
 तूने मेरी आँसुओं को पोंछा है,  
 तूने मेरी आँसुओं को पोंछा है।  
 4 तूम जो विश्वासयोग्य हो!  
 यहोवा की स्तुति करो,  
 और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है,  
 उसका धन्यवाद करो।  
 5 क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता है,  
 परन्तु कदाचित् रात को रोना पड़े,  
 परन्तु सवेरे आनन्द पहुँचेगा।  
 6 मैंने तो अपने चैन के समय कहा था,  
 कि मैं कभी नहीं टलने का।  
 7 हे यहोवा, अपनी प्रसन्नता से तूने मेरे पहाड़ को दृढ़  
 और स्थिर किया था;  
 जब तूने अपना मुख फेर लिया  
 तब मैं घबरा गया।  
 8 हे यहोवा, मैंने तुझी को पुकारा;  
 और प्रभु से गिड़गिड़ाकर यह विनती की, कि  
 9 जब मैं कब्र में चला जाऊँगा तब मेरी मृत्यु से  
 क्या लाभ होगा?  
 क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती है?  
 क्या वह तेरी विश्वसनीयता का प्रचार कर सकती है?  
 10 हे यहोवा, सुन, मुझ पर दया कर;  
 हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो।  
 11 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;  
 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;  
 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;  
 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;

## 30

भवन की प्रतिष्ठा के लिये दाऊद का भजन  
 1 हे यहोवा, मैं तुझे सराहूँगा क्योंकि तूने  
 मुझे खींचकर निकाला है,  
 और मेरे शत्रुओं को मुझ पर  
 आनन्द करने नहीं दिया।  
 2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा,  
 मैंने तेरी दुहाई दी और तूने मुझे चंगा किया है।  
 3 हे यहोवा, तूने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है,  
 तूने मेरी आँसुओं को पोंछा है,  
 तूने मेरी आँसुओं को पोंछा है,  
 तूने मेरी आँसुओं को पोंछा है।  
 4 तूम जो विश्वासयोग्य हो!  
 यहोवा की स्तुति करो,  
 और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है,  
 उसका धन्यवाद करो।  
 5 क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता है,  
 परन्तु कदाचित् रात को रोना पड़े,  
 परन्तु सवेरे आनन्द पहुँचेगा।  
 6 मैंने तो अपने चैन के समय कहा था,  
 कि मैं कभी नहीं टलने का।  
 7 हे यहोवा, अपनी प्रसन्नता से तूने मेरे पहाड़ को दृढ़  
 और स्थिर किया था;  
 जब तूने अपना मुख फेर लिया  
 तब मैं घबरा गया।  
 8 हे यहोवा, मैंने तुझी को पुकारा;  
 और प्रभु से गिड़गिड़ाकर यह विनती की, कि  
 9 जब मैं कब्र में चला जाऊँगा तब मेरी मृत्यु से  
 क्या लाभ होगा?  
 क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती है?  
 क्या वह तेरी विश्वसनीयता का प्रचार कर सकती है?  
 10 हे यहोवा, सुन, मुझ पर दया कर;  
 हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो।  
 11 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;  
 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;  
 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;  
 तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;









21 दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा;  
और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे।  
22 यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता  
है;  
और जितने उसके शरणागत हैं  
उनमें से कोई भी दोषी न ठहरेगा।

### 35

दाऊद का भजन

1 हे यहोवा, जो मेरे साथ मुकद्दमा लड़ते हैं,  
उनके साथ तू भी मुकद्दमा लड़;  
जो मुझसे युद्ध करते हैं, उनसे तू युद्ध कर।  
2 ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता करने को  
खड़ा हो।  
3 बछ्नी को खींच और मेरा पीछा करनेवालों के  
सामने आकर उनको रोक;  
और मुझसे कह,  
कि मैं तेरा उद्धार हूँ।  
4 जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं  
वे लज्जित और निरादर हों!  
जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं,  
वे पीछे हटाए जाएँ और उनका मुँह काला हो।  
5 वे वायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान हों,  
और यहोवा का दूत उन्हें हाँकता जाए!  
6 **११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११\***,  
और यहोवा का दूत उनको खदेड़ता जाए।  
7 क्योंकि अकारण उन्होंने मेरे लिये अपना  
जाल गढ़े में बिछाया;  
अकारण ही उन्होंने मेरा प्राण लेने के  
लिये गढ़ा खोदा है।  
8 अचानक उन पर विपत्ति आ पड़े!  
और जो जाल उन्होंने बिछाया है  
उसी में वे आप ही फँसे;  
और उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें! **(११:११. 11:9,10,  
1 ११:११. 5:3)**  
9 परन्तु मैं यहोवा के कारण अपने  
मन में मगन होऊँगा,  
मैं उसके किए हुए उद्धार से हर्षित होऊँगा।  
10 मेरी हड्डी-हड्डी कहेंगी,  
“हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन है,  
जो दीन को बड़े-बड़े बलवन्तों से बचाता है,  
और लुटेरों से दीन दरिद्र लोगों की रक्षा करता है?”

11 अधर्मी साक्षी खड़े होते हैं;  
वे मुझ पर झूठा आरोप लगाते हैं।  
12 वे मुझसे भलाई के बदले बुराई करते हैं,  
यहाँ तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है।  
13 जब वे रोगी थे तब तो **११:११, ११:११, ११:११, ११:११†**,  
और उपवास कर करके दुःख उठाता रहा;  
मुझे मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला। **(११:११, ११:११,  
30:25, ११:११. 12:15)**  
14 मैं ऐसी भावना रखता था कि मानो वे मेरे  
संगी या भाई हैं; जैसा कोई माता के लिये  
विलाप करता हो, वैसा ही मैंने शोक का  
पहरावा पहने हुए सिर झुकाकर शोक किया।  
15 परन्तु जब मैं लँगडाने लगा तब वे  
लोग आनन्दित होकर इकट्ठे हुए,  
नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था  
वे मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए; वे मुझे लगातार फाड़ते रहे;  
16 आदर के बिना वे मुझे ताना मारते हैं;  
वे मुझ पर दाँत पीसते हैं। **(११:११. 37:12)**  
17 हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा?  
इस विपत्ति से, जिसमें उन्होंने मुझे  
डाला है मुझ को छुड़ा!  
जवान सिंहों से मेरे प्राण को बचा ले!  
18 मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूँगा;  
बहुत लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करूँगा।  
19 मेरे झूठ बोलनेवाले शत्रु मेरे विरुद्ध  
आनन्द न करने पाएँ,  
जो अकारण मेरे बैरी हैं,  
वे आपस में आँखों से इशारा न करने पाएँ। **(११:११,  
15:25, ११:११. 69:4)**  
20 क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते,  
परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं,  
उनके विरुद्ध छल की कल्पनाएँ करते हैं।  
21 और उन्होंने मेरे विरुद्ध मुँह पसार के कहा;  
“आहा, आहा, हमने अपनी आँखों से देखा है!”  
22 हे यहोवा, तूने तो देखा है; चुप न रह!  
हे प्रभु, मुझसे दूर न रह!  
23 उठ, मेरे न्याय के लिये जाग,  
हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु,  
मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिये आ!  
24 हे मेरे परमेश्वर यहोवा,  
तू अपने धार्मिकता के अनुसार मेरा न्याय चुका;  
और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे!

\* 35:6 **११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११, ११:११**: “अन्धकार भरा” अर्थात् वे देख नहीं पाएँ कि कहाँ जाते हैं, उन्हें क्या हानि होगी, उनके सामने क्या है उसका उन्हें ज्ञान न हो। † 35:13 **११:११, ११:११, ११:११, ११:११**: कष्टों में उन्हें गहरी सहानुभूति दिखाई और अपमान एवं विलाप का प्रतीक धारण किया।

25 वे मन में न कहने पाएँ,  
 “आहा! हमारी तो इच्छा पूरी हुई!”  
 वे यह न कहें, “हम उसे निगल गए हैं।”  
 26 जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं  
 उनके मुँह लज्जा के मारे एक साथ काले हों!  
 वह लज्जा और अनादर से ढँप जाएँ!  
 27 जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं,  
 वे जयजयकार और आनन्द करें,  
 और निरन्तर करते रहें, यहोवा की बड़ाई हो,  
 जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है!  
 28 तब मेरे मुँह से तेरे धर्म की चर्चा होगी,  
 और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी।

## 36

प्रधान बजानेवाले के लिये यहोवा के दास दाऊद का भजन

1 दुष्ट जन का अपराध उसके हृदय के भीतर कहता है;  
 परमेश्वर का भय उसकी दृष्टि में नहीं है। (3:18)

2 वह अपने अधर्म के प्रगट होने  
 और घृणित ठहरने के विषय  
 अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है।

3 उसकी बातें अनर्थ और छल की हैं;  
 उसने बुद्धि और भलाई के काम करने से  
 हाथ उठाया है।

4 वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है;  
 बुराई से वह हाथ नहीं उठाता।

5 हे यहोवा, तेरी करुणा स्वर्ग में है,  
 तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है।

6 तेरा धर्म ऊँचे पर्वतों के समान है,  
 तेरा न्याय अथाह सागर के समान है;  
 हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की  
 रक्षा करता है।

7 हे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है!  
 मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।

8 वे तेरे भवन के भोजन की  
 बहुतायत से तृप्त होंगे,

और तू अपनी सुख की नदी  
 में से उन्हें पिलाएगा।

9 क्योंकि तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे। (4:10,14, 21:6)

10 अपने जाननेवालों पर करुणा करता रह,  
 और अपने धर्म के काम सीधे  
 मनवालों में करता रह!

11 अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए,  
 और न दुष्ट अपने हाथ के  
 बल से मुझे भगाने पाए।

12 वहाँ अनर्थकारी गिर पड़े हैं;  
 वे ढकेल दिए गए, और फिर उठ न सकेंगे।

## 37

दाऊद का भजन

1 कुकर्मियों के कारण मत कुढ़,  
 कुटिल काम करनेवालों के विषय डाह न कर!

2 क्योंकि वे घास के समान झट कट जाएँगे,  
 और हरी घास के समान मुझाँ जाएँगे।

3 यहोवा पर भरोसा रख,  
 और भला कर; देश में बसा रह,  
 और सच्चाई में मन लगाए रह।

4 यहोवा को अपने सुख का मूल जान,  
 और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। (6:33)

5 और उस पर भरोसा रख,  
 वही पूरा करेगा।

6 और वह तेरा धर्म ज्योति के समान,  
 और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले के  
 समान प्रगट करेगा।

7 यहोवा के सामने चुपचाप रह,  
 और धीरज से उसकी प्रतिक्षा कर;  
 उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सफल होते हैं,  
 और वह बुरी युक्तियों को निकालता है!

8 क्रोध से परे रह,  
 और जलजलाहट को छोड़ दे!  
 मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी।

9 क्योंकि कुकर्मों लोग काट डाले जाएँगे;  
 और जो यहोवा की बाट जोहते हैं,

‡ 35:26 जो मुझ पर अपना बड़प्पन दिखाते हैं, कि मुझे गिराकर, नाश करके वे मेरे विनाश के द्वारा ऊपर उठना चाहते हैं। \* 36:4 जब वह सोने जाता है और उसे नींद नहीं आती तब वह अनर्थ की योजना बनाता है। † 36:9 सोता या स्रोत जहाँ से सम्पूर्ण जीवन प्रवाहित होता है। सब जीवित प्राणी उससे जीवन पाते हैं। \* 37:5 यहाँ विचार ऐसा है कि भारी बोझ को अपने ऊपर से लुढ़काकर दूसरे पर कर दें या परमेश्वर पर डाल दें, वह उठा लेगा।

वही पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

10 थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं;  
और तू उसके स्थान को भली

भाँति देखने पर भी उसको न पाएगा।

11 परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,  
और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएँगे। (११:११:११)

5:5)

12 दुष्ट धर्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति निकालता है,  
और उस पर दाँत पीसता है;

13 परन्तु प्रभु उस पर हँसेगा,  
क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आनेवाला है।

14 दुष्ट लोग तलवार खींचे  
और धनुष चढ़ाए हुए हैं,

ताकि दीन दरिद्र को गिरा दें,  
और सीधी चाल चलनेवालों को वध करें।

15 उनकी तलवारों से उन्हीं के हृदय छिदेंगे,  
और उनके धनुष तोड़े जाएँगे।

16 धर्मी का थोड़ा सा धन दुष्टों के  
बहुत से धन से उत्तम है।

17 क्योंकि दुष्टों की भुजाएँ तो तोड़ी जाएँगी;  
परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है।

18 यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है,  
और उनका भाग सदैव बना रहेगा।

19 विपत्ति के समय, वे लज्जित न होंगे,  
और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे।

20 दुष्ट लोग नाश हो जाएँगे;  
और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास

के समान नाश होंगे,  
वे धुएँ के समान लुप्त हो जाएँगे।

21 दुष्ट ऋण लेता है,  
और भरता नहीं परन्तु धर्मी

अनुग्रह करके दान देता है;

22 क्योंकि जो उससे आशीष पाते हैं  
वे तो पृथ्वी के अधिकारी होंगे,

परन्तु जो उससे श्रापित होते हैं,  
वे नाश हो जाएँगे।

23 ११:११:११ ११ ११ ११:११:११ ११ ११ ११ ११:११:११ ११  
११ ११ ११:११:११ ११:११:११ ११†,

और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;

24 चाहे वह गिरे तो भी पड़ा न रह जाएगा,  
क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।

25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे

तक देखता आया हूँ;

परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ,  
और न उसके वंश को टुकड़े माँगते देखा है।

26 वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है,  
और उसके वंश पर आशीष फलती रहती है।

27 बुराई को छोड़ भलाई कर;  
और तू सर्वदा बना रहेगा।

28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता;  
और अपने भक्तों को न तजेगा।

उनकी तो रक्षा सदा होती है,  
परन्तु दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा।

29 धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,  
और उसमें सदा बसे रहेंगे।

30 धर्मी अपने मुँह से बुद्धि की बातें करता,  
और न्याय का वचन कहता है।

31 उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके  
हृदय में बनी रहती है,  
उसके पैर नहीं फिसलते।

32 दुष्ट धर्मी की ताक में रहता है।

और उसके मार डालने का यत्न करता है।

33 यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा,  
और जब उसका विचार किया जाए

तब वह उसे दोषी न ठहराएगा।

34 यहोवा की बाट जोहता रह,  
और उसके मार्ग पर बना रह,

और वह तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा;  
जब दुष्ट काट डाले जाएँगे, तब तू देखेगा।

35 मैंने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी  
और ऐसा फैलता हुए देखा,

११:११:११ ११:११ ११:११ ११:११:११  
अपने निज भूमि में फैलता है।

36 परन्तु जब कोई उधर से गया तो  
देखा कि वह वहाँ है ही नहीं;

और मैंने भी उसे ढूँढा,

परन्तु कहीं न पाया। (११:११. 37:10)

37 खरे मनुष्य पर दृष्टि कर

और धर्मी को देख,

क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का

अन्तफल अच्छा है। (११:११. 32:17)

38 परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएँगे;  
दुष्टों का अन्तफल सर्वनाश है।

39 धर्मियों की मुक्ति यहोवा की

† 37:23 ११:११:११ ११ ११ ११:११:११ ११ ११ ११ ११:११:११ ११:११:११ ११: अर्थात् उसके जीवन का मार्ग यहोवा की अगुआई और नियंत्रण में है।

‡ 37:35 ११ ११ ११:११:११ ११ ११:११, ११:११ ११ ११ ११:११:११: विचार यह है कि- एक वृक्ष जो अपनी मिट्टी में रहता है, वह ज्यादा शक्तिशाली होता है और उसका विकास बहुत अधिक होता है एक प्रत्यारोपित वृक्ष की तुलना में।

ओर से होती है;  
संकट के समय वह उनका दृढ़ गढ़ है।  
40 यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है;  
वह उनको दुष्टों से छुड़ाकर उनका उद्धार करता है,  
इसलिए कि उन्होंने उसमें अपनी शरण ली है।

### 38

यदादगार के लिये दाऊद का भजन

1 हे यहोवा क्रोध में आकर मुझे झिड़क न दे,  
और न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर!  
2 क्योंकि तेरे तीर मुझ में लगे हैं,  
और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूँ।  
3 तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भी  
आरोग्यता नहीं;  
और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछ  
भी चैन नहीं।  
4 क्योंकि मेरे अधर्म के कामों में  
मेरा सिर डूब गया,  
और वे भारी बोझ के समान मेरे सहने से  
बाहर हो गए हैं।  
5 मेरी मूर्खता के पाप के कारण  
और उनसे दुर्गन्ध आती हैं।  
6 मैं बहुत दुःखी हूँ और झुक गया हूँ;  
दिन भर मैं शोक का पहरावा  
पहने हुए चलता फिरता हूँ।  
7 क्योंकि मेरी कमर में जलन है,  
और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं।  
8 मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया हूँ;  
मैं अपने मन की घबराहट से कराहता हूँ।  
9 हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सम्मुख है,  
और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं।  
10 मेरा हृदय धडकता है,  
मेरा बल घटता जाता है;  
और मेरी आँखों की ज्योति भी  
मुझसे जाती रही।  
11 मेरे मित्र और मेरे संगी  
मेरी विपत्ति में अलग हो गए,  
और मेरे कुटुम्बी भी दूर जा खड़े हुए। (27. 31:11,  
27. 23:49)

12 मेरे प्राण के ग्राहक मेरे लिये जाल बिछाते हैं,  
और मेरी हानि का यत्न करनेवाले

दुष्टता की बातें बोलते,  
और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं।  
13 परन्तु मैं बहरे के समान सुनता ही नहीं,  
और मैं गूँगे के समान मुँह नहीं खोलता।  
14 वरन् मैं ऐसे मनुष्य के तुल्य हूँ  
जो कुछ नहीं सुनता,  
और जिसके मुँह से विवाद की कोई  
बात नहीं निकलती।  
15 परन्तु हे यहोवा,  
मैंने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है;  
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर,  
तू ही उत्तर देगा।  
16 क्योंकि मैंने कहा,  
“ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें;  
जब मेरा पाँव फिसल जाता है,  
तब मुझ पर अपनी बड़ाई मारते हैं।”  
17 क्योंकि मैं तो अब गिरने ही पर हूँ;  
और इसलिए कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूँगा,  
और अपने पाप के कारण खेदित रहूँगा।  
18 इसलिए कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूँगा,  
और अपने पाप के कारण खेदित रहूँगा।  
19 परन्तु मेरे शत्रु अनगिनत हैं,  
और मेरे बैरी बहुत हो गए हैं।  
20 जो भलाई के बदले में बुराई करते हैं,  
वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने के  
कारण मुझसे विरोध करते हैं।  
21 हे यहोवा, मुझे छोड़ न दे!  
हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो!  
22 हे यहोवा, हे मेरे उद्धारकर्ता,  
मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

### 39

यदादगार के लिये दाऊद का भजन

1 मैंने कहा, “मैं अपनी चाल चलन में चौकसी करूँगा,  
ताकि मेरी जीभ से पाप न हो;  
जब तक दुष्ट मेरे सामने है,  
तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुँह बन्द किए रहूँगा।”  
(27. 1:26)

2 मैं मौन धारण कर गूँगा बन गया,  
और भलाई की ओर से भी चुप्पी साधे रहा;  
और मेरी पीड़ा बढ़ गई,

\* 38:5 अर्थात् वह पापों के कारण प्रताड़ित किया जा रहा था और उसकी मार के चिन्ह पर सुजन ही नहीं थी वरन् वे घाव बन गए थे। † 38:17 पापी होने का बोध उसके मन मस्तिष्क में बस गया था और वही उसकी सब परेशानियों की जड़ था।

3 [२२२२ २२२२ २२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२ २२]\*।

सोचते-सोचते आग भडक उठी;

तब मैं अपनी जीभ से बोल उठा;

4 “हे यहोवा, ऐसा कर कि मेरा अन्त

मुझे मालूम हो जाए, और यह भी

कि मेरी आयु के दिन कितने हैं;

जिससे मैं जान लूँ कि कैसा अनित्य हूँ!

5 देख, तूने मेरी आयु बालिशत भर की रखी है,

और मेरा जीवनकाल तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं।

सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर

क्यों न हों तो भी व्यर्थ ठहरे हैं।

6 सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है;

सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं;

वह धन का संचय तो करता है

परन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा!

7 “अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूँ?

मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है।

8 मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले।

मूर्ख मेरी निन्दा न करने पाए।

9 [२२२ २२२२२ २२ २२२]† और मुँह न खोला;

क्योंकि यह काम तू ही ने किया है।

10 तूने जो विपत्ति मुझ पर डाली है

उसे मुझसे दूर कर दे,

क्योंकि मैं तो तेरे हाथ की मार से

भस्म हुआ जाता हूँ।

11 जब तू मनुष्य को अधर्म के कारण

डाँट-डपटकर ताड़ना देता है;

तब तू उसकी सामर्थ्य को पतंगे के समान नाश करता

है;

सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं।

12 “हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दुहाई पर कान

लगा;

मेरा रोना सुनकर शान्त न रह!

क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री के समान रहता हूँ,

और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूँ।

([२२२२२] 11:13)

13 आह! इससे पहले कि मैं यहाँ से चला जाऊँ

और न रह जाऊँ,

मुझे बचा ले जिससे मैं प्रदीप्त जीवन प्राप्त करूँ!”

\* 39:3 [२२२२ २२२२ २२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२ २२]: मेरा मन अधिकाधिक विचलित हो गया और मेरी भावनाएँ भी अधिकाधिक प्रबल हो गईं। अपनी भावनाओं को दबाने का प्रयास किया तो वे अधिक प्रज्वलित हो गईं। † 39:9 [२२२ २२२२२ २२ २२२]: उसने शिकायत करने के लिए मुँह नहीं खोला; उसने नहीं कहा कि परमेश्वर ने उस पर निर्दयता दिखाई या अन्याय किया। \* 40:2 [२२२२ २२ २२२ २२२ २२ २२२२२]: गड्ढे के तल में ठोस भूमि, चट्टान नहीं थी कि खड़ा हो पाता। † 40:6 [२२२२ २२२२ २२२२]: उसने उनकी इच्छा नहीं की वह आज्ञाकारिता के आगे इनसे प्रसन्न नहीं होगा।

## 40

[२२२२२२ २२ २२ २२२]

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन

1 मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा;

और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दुहाई सुनी।

2 उसने मुझे सत्यानाश के गड्ढे

और [२२२२ २२ २२२ २२२ २२ २२२२२]\*,

और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके

मेरे पैरों को दृढ़ किया है।

3 उसने मुझे एक नया गीत सिखाया

जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है।

(सेला) बहुत लोग यह देखेंगे और उसकी महिमा करेंगे,

और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। ([२२२२२] 5:9,

[२२२२२] 14:3, [२२] 52:6)

4 क्या ही धन्य है वह पुरुष,

जो यहोवा पर भरोसा करता है,

और अभिमानियों और मिथ्या की

ओर मुड़नेवालों की ओर मुँह न फेरता हो।

5 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने बहुत से काम किए हैं!

जो आश्चर्यकर्मों और विचार तू हमारे लिये करता है

वह बहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहीं!

मैं तो चाहता हूँ कि खोलकर उनकी चर्चा करूँ,

परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती।

6 मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता

तूने मेरे कान खोदकर खोले हैं।

होमबलि और पापबलि [२२२२ २२२२ २२२२]†।

7 तब मैंने कहा,

“देख, मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक में

मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है।

8 हे मेरे परमेश्वर,

मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ;

और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बसी है।”

([२२२२२] 10:5-7)

9 मैंने बड़ी सभा में धार्मिकता के शुभ समाचार का प्रचार

किया है;

देख, मैंने अपना मुँह बन्द नहीं किया हे यहोवा,

तू इसे जानता है।

10 मैंने तेरी धार्मिकता मन ही में नहीं रखा;

मैंने तेरी सच्चाई

और तेरे किए हुए उद्धार की चर्चा की है;



मैंने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रखी।

11 हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले,

तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे!

12 क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हुआ हूँ;

मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा

और मैं दृष्टि नहीं उठा सकता;

वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं;

इसलिए मेरा हृदय टूट गया।

13 हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा ले!

हे यहोवा, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

14 जो मेरे प्राण की खोज में हैं,

वे सब लज्जित हों; और उनके मुँह काले हों

और वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ

जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं।

15 जो मुझसे, “आहा, आहा,” कहते हैं,

वे अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों।

16 परन्तु जितने तुझे ढूँढते हैं,

वह सब तेरे कारण हर्षित

और आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं,

वे निरन्तर कहते रहें, “यहोवा की बड़ाई हो!”

17 मैं तो दीन और दरिद्र हूँ,

तो भी प्रभु मेरी चिन्ता करता है।

तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है;

हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर।

## 41

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन

1 क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है!

विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा।

2 यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा,

और वह पृथ्वी पर धन्य होगा।

तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़।

3 तब यहोवा उसे सम्भालेगा;

तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा।

4 मैंने कहा, “हे यहोवा, मुझ पर दया कर;

मुझ को चंगा कर,

क्योंकि मैंने तो तेरे विरुद्ध पाप किया है!”

5 मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई करते हैं

“वह कब मरेगा, और उसका नाम कब मिटेगा?”

6 और जब वह मुझसे मिलने को आता है,

तब वह व्यर्थ बातें बकता है,

जबकि उसका मन अपने अन्दर अधर्म की बातें संचय करता है;

और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता है।

7 मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं;

वे मेरे विरुद्ध होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं।

8 वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा रोग लग गया है;

9 मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था,

जो मेरी रोटी खाता था,

उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है। (2 15:12, 13:18, 1:16)

10 परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर दया करके

मुझ को उठा ले कि मैं उनको बदला दूँ।

11 मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं हो पाता,

इससे मैंने जान लिया है कि तू मुझसे प्रसन्न है।

12 और मुझे तो तू खराई से सम्भालता,

और सर्वदा के लिये अपने सम्मुख स्थिर करता है।

13 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा

आदि से अनन्तकाल तक धन्य है

आमीन, फिर आमीन। (1:68, 106:48)

## दूसरा भाग

## 42

42-72

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह्वंशियों का मशकील

1 जैसे हिरनी नदी के जल के लिये हाँफती है,

वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ।

2 जीविते परमेश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ,

मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा?

(63:1, 22:4)

3 मेरे आँसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं;

और लोग दिन भर मुझसे कहते रहते हैं,

तेरा परमेश्वर कहाँ है?

4 मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था,

मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ

\* 41:3 कहेने का अर्थ है कि परमेश्वर उसे रोग सहन की क्षमता देगा, या उसकी देह के दुर्बल होने के उपरान्त भी वह उसे शक्ति देगा, आन्तरिक शक्ति। † 41:8 अब कोई आशा नहीं, इसके फिर उठ खड़े होने की तो सम्भावना ही नहीं है।

\* 42:4 मिलापवाले तम्बू को या सार्वजनिक आराधना के स्थान को दर्शाता है।

उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में **22222222 22**  
**2222\***  
को धीरे धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण  
शोकित हो जाता है।

5 हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है?  
और तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?  
परमेश्वर पर आशा लगाए रह;  
क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका  
धन्यवाद करूँगा। **(222222 26:38, 222.**  
**14:34, 222. 12:27)**

6 हे मेरे परमेश्वर; मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है,  
इसलिए मैं यरदन के पास के देश से और हेर्मोन  
के पहाड़ों और मिस्रगार की पहाड़ी के ऊपर  
से तुझे स्मरण करता हूँ।

7 तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर **22,**  
**22 22 22222222 22\***; तेरी सारी तरंगों  
और लहरों में मैं डूब गया हूँ।

8 तो भी दिन को यहोवा अपनी शक्ति  
और करुणा प्रगट करेगा;  
और रात को भी मैं उसका गीत गाऊँगा,  
और अपने जीवनदाता परमेश्वर से प्रार्थना करूँगा।

9 मैं परमेश्वर से जो मेरी चट्टान है कहूँगा,  
“तू मुझे क्यों भूल गया?

मैं शत्रु के अत्याचार के मारे क्यों शोक का  
पहरावा पहने हुए चलता फिरता हूँ?”

10 मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते हैं,  
मानो उससे मेरी हड्डियाँ चूर-चूर होती हैं,  
मानो कटार से छिदी जाती हैं,  
क्योंकि वे दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर  
कहाँ है?

11 हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है?  
तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?  
परमेश्वर पर भरोसा रख;  
क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है,  
मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा। **(222. 43:5, 222.**  
**14:34, 222. 12:27)**

## 43

**2222 22 222 2222222222**

1 हे परमेश्वर, **22222 2222222 22222\***  
और विधर्मी जाति से मेरा मुकद्दमा लड़;  
मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा।

2 क्योंकि तू मेरा सामर्थी परमेश्वर है,

† 42:7 **22, 22 22 22222222 22**: अर्थात् पानी की लहर, सम्भवतः एक तीव्र वेग से बहनेवाले सोते की लहरें जो एक तट पर टकरा कर दूसरे तट तक जाती हैं। \* 43:1 **22222 222222 22222**: दण्ड देने की बात नहीं है, मेरा मुकद्दमा लड़। † 43:3 **22222222 2222222**: सिय्योन पर्वत, जहाँ परमेश्वर की आराधना की जाती थी।

तूने क्यों मुझे त्याग दिया है?

मैं शत्रु के अत्याचार के मारे शोक का  
पहरावा पहने हुए क्यों फिरता रहूँ?

3 अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज;  
वे मेरी अगुआई करें,  
वे ही मुझ को तेरे **22222222 2222222\***  
पर और तेरे निवास-स्थान में पहुँचाए!

4 तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा,  
उस परमेश्वर के पास जो मेरे अति  
आनन्द का कुण्ड है; और हे परमेश्वर,  
हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजा-बजाकर तेरा धन्यवाद  
करूँगा।

5 हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है?  
तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?  
परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक  
और मेरा परमेश्वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

## 44

**22222222 22 22222222**

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का मशकील

1 हे परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना,  
हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है,  
कि तूने उनके दिनों में

और प्राचीनकाल में क्या-क्या काम किए हैं।

2 तूने अपने हाथ से जातियों को निकाल दिया,  
और इनको बसाया;

तूने देश-देश के लोगों को दुःख दिया,  
और इनको चारों ओर फैला दिया;

3 क्योंकि वे न तो अपनी तलवार के  
बल से इस देश के अधिकारी हुए,

और न अपने बाहुबल से; परन्तु तेरे दाहिने हाथ

और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त  
हुए;

क्योंकि तू उनको चाहता था।

4 हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है,  
तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है।

5 तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को  
ढकेलकर गिरा देंगे;

तेरे नाम के प्रताप से हम  
अपने विरोधियों को रौंदेंगे।

6 क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूँगा,  
और न अपनी तलवार के बल से बचूँगा।

7 परन्तु तू ही ने हमको द्रोहियों से बचाया है,  
और हमारे बैरियों को निराश  
और लज्जित किया है।

8 हम परमेश्वर की बडाई  
दिन भर करते रहते हैं,  
और सदैव तेरे नाम का  
धन्यवाद करते रहेंगे।

9 तो भी तूने अब हमको त्याग दिया  
और हमारा अनादर किया है,  
और हमारे दिलों के साथ आगे नहीं जाता।  
10 तू हमको शत्रु के सामने से हटा देता है,  
और हमारे बैरी मनमाने लूट मार करते हैं।

11 तूने हमें कसाई की भेड़ों के  
समान कर दिया है,  
और हमको अन्यजातियों में  
तितर-बितर किया है।

12 तू अपनी प्रजा को संत-मेंत बेच डालता है,  
परन्तु उनके मोल से तू धनी नहीं होता।

13 तू हमारे पड़ोसियों से हमारी  
नामधराई कराता है,  
और हमारे चारों ओर के रहनेवाले  
हम से हँसी ठट्टा करते हैं।

14 तूने हमको अन्यजातियों के बीच  
में अपमान ठहराया है,  
और देश-देश के लोग हमारे  
कारण सिर हिलाते हैं।

15 *११११ ११ ११११ ११११११११ ११११ १११११ ११\**,  
और कलंक लगाने

और निन्दा करनेवाले के बोल से,  
16 शत्रु और बदला लेनेवालों के कारण,  
बुरा-भला कहनेवालों

और निन्दा करनेवालों के कारण।

17 यह सब कुछ हम पर बीता तो  
भी हम तुझे नहीं भूले,  
न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात किया है।

18 हमारे मन न बहके,  
न हमारे पैर तरी राह से मुड़ें;

19 तो भी तूने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला,  
और हमको घोर अंधकार में छिपा दिया है।

20 यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल जाते,  
या किसी पराए देवता की ओर अपने हाथ फैलाते,

21 तो क्या परमेश्वर इसका विचार न करता?  
क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है।

22 परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त  
मार डाले जाते हैं,  
और उन भेड़ों के समान समझे  
जाते हैं जो वध होने पर हैं। **(११११ 8:36)**

23 हे प्रभु, जाग! तू क्यों सोता है?

(सेला) उठ! हमको सदा के लिये त्याग न दे!

24 *११ ११११११ १११११ १११११ १११११ १११११ १११११ १११११*  
और हमारा दुःख और सताया जाना भूल जाता है?

25 हमारा प्राण मिट्टी से लग गया;  
हमारा शरीर भूमि से सट गया है।

26 हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो।  
और अपनी करुणा के निमित्त हमको छुड़ा ले।

## 45

*११११११ ११११*

प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम में कोरहवंशियों  
का मशकील। प्रेम प्रीति का गीत

1 मेरा हृदय एक सुन्दर विषय की उमंग से  
उमड़ रहा है,

जो बात मैंने राजा के विषय रची है उसको  
सुनाता हूँ; मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी बनी है।

2 तू मनुष्य की सन्तानों में परम सुन्दर है;  
तेरे होठों में अनुग्रह भरा हुआ है;

इसलिए परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष  
दी है। **(१११११ 4:22, ११११११ 1:3,4)**

3 हे वीर, *११ १११११ १११११११ ११ ११ १११११ १११११\**  
*११ ११११११११ ११ १११११ ११११ ११ ११११११*

4 सत्यता, नम्रता और धार्मिकता के निमित्त अपने  
ऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हो;

तेरा दाहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखाए!

5 तेरे तीर तो तेज हैं,  
तेरे सामने देश-देश के लोग गिरेंगे;  
राजा के शत्रुओं के हृदय उनसे छिदेंगे।

6 हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना  
रहेगा;

तेरा राजदण्ड न्याय का है।

7 तूने धार्मिकता से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है।

इस कारण परमेश्वर ने हाँ, तेरे परमेश्वर ने  
तुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल  
से अभिषेक किया है। **(१११११११ 1:8,9)**

\* **44:15** *११११ ११ १११११ ११११११११११ १११११ ११११११ ११*: मेरे अपमान का बोध एवं प्रमाण सदैव मेरे साथ रहता है। † **44:24** *११ १११११११ १११११ १११११ १११११ १११११ १११११ ११*: तू हम से विमुख क्यों हो जाता है और सहायता से इन्कार क्यों करता है कि हम ऐसे दयनीय कष्टों में अकेले रह जायें। \* **45:3** *११ ११११११ ११११११ ११ ११ १११११ १११११*: अर्थात् युद्ध और विजय के लिए तैयार हो जा - यहाँ मसीह को एक विजेता राजा कहा गया है।

8 तेरे सारे वस्त्र गन्धरस, अगर, और तेज से सुगन्धित हैं,

तू हाथी दाँत के मन्दिरों में तारवाले बाजों के कारण आनन्दित हुआ है।

9 तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियाँ भी हैं; तेरी दाहिनी ओर पटरानी, ओपीर के कुन्दन से विभूषित खड़ी है।

10 हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे; अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा;

11 और राजा तेरे रूप की चाह करेगा।

क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर।

12 सोर की राजकुमारी भी भेंट करने के लिये उपस्थित होगी,

प्रजा के धनवान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे।

13 राजकुमारी महल में अति शोभायमान है, उसके वस्त्र में सुनहले बूटे कढ़े हुए हैं;

14 वह बूटेदार वस्त्र पहने हुए राजा के पास पहुँचाई जाएगी।

जो कुमारियाँ उसकी सहेलियाँ हैं,

वे उसके पीछे-पीछे चलती हुई तेरे पास पहुँचाई जाएँगी।

15 **११ ११११११११ ११ १११ ११११ ११११११११ ११११११११†**,

और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी।

16 तेरे पितरों के स्थान पर तेरे सन्तान होंगे;

जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा।

17 मैं ऐसा करूँगा, कि तेरे नाम की चर्चा पीढ़ी से पीढ़ी तक होती रहेगी;

इस कारण देश-देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे।

## 46

**१११११११११ १११११ १११११११११**

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह्वंशियों का, अलामोत की राग पर एक गीत

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है,

**१११११ १११ १११ १११ ११ ११११११११११ ११११११†**।

2 इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए,

और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएँ;

3 चाहे समुद्र गरजें और फेन उठाए,

† 45:15 **११ ११११११११ ११ १११ ११११ ११११११११ ११११११११**: वे दुल्हन के पास संगीत बजाते और गीत गाते हुए निकल आएँगे। जुलूस आनन्द और उत्सव का होगा। \* 46:1 **१११११ १११ १११ १११ ११ ११११११११११ १११११११**: यहाँ सहायक अर्थात्, सहयोग एवं सहकारिता। संकट: अर्थात् तनाव और दुःख देनेवाली सब परिस्थितियाँ। † 46:10 **१११ ११ ११ १११ ११ ११११११११११ १११११**: देखो मैंने क्या-क्या किया जो मेरे परमेश्वर होने का प्रमाण है।

और पहाड़ उसकी बाढ़ से काँप उठे।

(सेला)

**(१११११ 21:25, ११११११ 7:25)**

4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में

अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।

5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं;

पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।

6 जाति-जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य-राज्य के लोग डगमगाने लगे;

वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई। **(१११११११ 11:18, १११ 2:1)**

7 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;

याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है।

(सेला)

8 आओ, यहोवा के महाकर्म देखो,

कि उसने पृथ्वी पर कैसा-कैसा उजाड़

किया है।

9 वह पृथ्वी की छोर तक लडाइयों को मिटाता है;

वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है,

और रथों को आग में झोंक देता है!

10 “चुप हो जाओ, और **११११ ११ ११ ११११ ११ ११११११११११ ११११†**।

मैं जातियों में महान हूँ,

मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!”

11 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;

याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है।

(सेला)

## 47

**१११११११११ १११११ १११११**

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह्वंशियों का भजन

1 हे देश-देश के सब लोगों, तालियाँ बजाओ!

ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो!

2 क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है,

वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है।

3 वह देश-देश के लोगों को हमारे सम्मुख

नीचा करता,

और जाति-जाति को हमारे पाँवों के नीचे कर

देता है।





मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।”

16 परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है:

“तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम?

तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है?

17 तू तो शिक्षा से बैर करता,

और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।

18 जब तूने चोर को देखा, तब उसकी संगति से प्रसन्न हुआ;

और परस्त्रीगामियों के साथ भागी हुआ।

19 “तूने अपना मुँह बुराई करने के लिये खोला,

और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।

20 तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध बोलता;

और अपने सगे भाई की चुगली खाता है।

21 यह काम तूने किया, और मैं चुप रहा;

इसलिए तूने समझ लिया कि परमेश्वर बिल्कुल मेरे समान है।

परन्तु मैं तुझे समझाऊँगा, और तेरी आँखों के

सामने सब कुछ अलग-अलग दिखाऊँगा।”

22 “~~यह बात भली भाँति समझ लो,~~

कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूँ,

और कोई छुड़ानेवाला न हो।

23 धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है;

और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है

उसको मैं परमेश्वर का उद्धार दिखाऊँगा।” (13:15)

## 51

~~यह शब्द वास्तव में सृजन कार्य को दर्शाने के लिए प्रयोग किया गया है, अर्थात् किसी को जो नहीं है अस्तित्व में लाना।~~

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके पास इसलिए आया कि वह बतशेबा के पास गया था

1 हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर;

अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। (18:13, 43:25)

2 मुझे भली भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर,

और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!

3 मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ,

और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।

‡ 50:22 ~~यद्यपि तुम मुँह से उसकी आराधना करते हो, सच तो यह है कि तुम उसे भूल चुके हो, तुम परमेश्वर के प्रमाणिक स्वभाव को भूल चुके हो।~~ \* 51:7 ~~जूफा एक पौधा था जिसका उपयोग इस्राएल में पवित्र शोधन एवं छिड़काव में किया जाता था।~~ † 51:10 ~~यह शब्द वास्तव में सृजन कार्य को दर्शाने के लिए प्रयोग किया गया है, अर्थात् किसी को जो नहीं है अस्तित्व में लाना।~~ ‡ 51:17 ~~अपराध बोध के बोझ के नीचे दबकर टूटा हुआ अन्तःकरण। कहने का अर्थ है कि आत्मा पर इतना अधिक बोझ हो गया कि वह कुचल गई और दब गई।~~

4 मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे। (15:18,21, 3:4)

5 देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा। (3:6, 5:12, 2:3)

6 देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

7 ~~तो मैं पवित्र हो जाऊँगा;~~

मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूँगा।

8 मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना, जिससे जो हड्डियाँ तूने तोड़ डाली हैं, वे मगन हो जाएँ।

9 अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,

और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल।

10 हे परमेश्वर, ~~और मेरे अपराधों को मिटा दे, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।~~

11 मुझे अपने सामने से निकाल न दे,

और अपने पवित्र आत्मा को मुझसे अलग न कर।

12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे,

और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल।

13 जब मैं अपराधी को तेरा मार्ग सिखाऊँगा,

और पापी तेरी ओर फिरेंगे।

14 हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले,

तब मैं तेरी धार्मिकता का जयजयकार करने पाऊँगा।

15 हे प्रभु, मेरा मुँह खोल दे

तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूँगा।

16 क्योंकि तू बलि से प्रसन्न नहीं होता,

नहीं तो मैं देता;

होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता।

17 ~~परमेश्वर के योग्य बलिदान है;~~

हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।

18 प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर,

यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना,

19 तब तू धार्मिकता के बलिदानों से अर्थात् सर्वांग

पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा;  
तब लोग तेरी वेदी पर पवित्र बलिदान चढ़ाएँगे।

## 52

प्रधान बजानेवाले के लिये मशकील पर दाऊद का भजन

जब दोएग एदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद  
अहीमेलोक के घर गया था

1 हे वीर, तू बुराई करने पर क्यों घमण्ड करता है?

परमेश्वर की करुणा तो अनन्त है।

2 सान धरे हुए उस्तरे के समान वह छल

का काम करती है।

3 तू भलाई से बढ़कर बुराई में,

और धार्मिकता की बात से बढ़कर झूठ से प्रीति रखता  
है।

(सेला)

4 हे छली जीभ,

तू सब विनाश करनेवाली बातों से प्रसन्न रहती है।

5 निश्चय परमेश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा;

वह तुझे पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा;

और जीवितों के लोक से तुझे उखाड़ डालेगा।

(सेला)

6 तब धर्मी लोग इस घटना को देखकर डर जाएँगे,

और यह कहकर उस पर हँसेंगे,

7 “देखो, यह वही पुरुष है जिसने परमेश्वर को

अपनी शरण नहीं माना,

परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था,

और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता रहा!”

8 परन्तु मैंने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के

लिये भरोसा रखा है।

9 मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूँगा, क्योंकि

तू ही ने यह काम किया है।

मैं तेरे नाम पर आशा रखता हूँ, क्योंकि

यह तेरे पवित्र भक्तों के सामने उत्तम है।

यह तेरे पवित्र भक्तों के सामने उत्तम है।

\* 52:2 कहेने का अर्थ है कि वह मनुष्य अपनी जीभ के द्वारा मनुष्यों का विनाश करता है। † 52:8 इस प्रकार पवित्रस्थान के आँगन में लगाया गया वृक्ष पवित्र माना जाता है क्योंकि वह परमेश्वर की सुरक्षा के अधीन होता है। \* 53:5 अर्थात्, वे पराजय के कारण, अपने

प्रयासों में सफल न होने के कारण लज्जित हो गए। \* 54:1 अर्थात् अपने सामर्थ्य द्वारा दोषमार्जन कर या मुझे बचा ले।

## 53

प्रधान बजानेवाले के लिये महलत की राग पर दाऊद

का मशकील

1 मूर्ख ने अपने मन में कहा, “कोई परमेश्वर है ही नहीं।”  
वे बिगड़ गए, उन्होंने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं;  
कोई सुकर्मी नहीं।

2 परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की

ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवाला

या परमेश्वर को खोजनेवाला है कि नहीं।

3 वे सब के सब हट गए; सब एक साथ बिगड़ गए;

कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। (14:1-3, 3:10-12)

4 क्या उन सब अनर्थकारियों को कुछ भी ज्ञान नहीं,

जो मेरे लोगों को रोटी के समान खाते हैं

पर परमेश्वर का नाम नहीं लेते हैं?

5 वहाँ उन पर भय छा गया जहाँ भय का कोई कारण न  
था।

क्योंकि यहोवा ने उनकी हड्डियों को, जो तेरे विरुद्ध  
छावनी डाले पड़े थे, तितर-बितर कर दिया;

तूने इसलिए कि परमेश्वर ने उनको त्याग दिया है।

6 भला होता कि इस्राएल का पूरा उद्धार सिव्योन से  
निकलता!

जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्धुवाई से लौटा ले  
आएगा।

तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा।

## 54

प्रधान बजानेवाले के लिये, दाऊद का तारकले बाजों के

साथ मशकील जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा,  
“क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता?”

1 और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।

2 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन ले;

मेरे मुँह के वचनों की ओर कान लगा।

3 क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे हैं,

और कुकर्मी मेरे प्राण के गाहक हुए हैं;

उन्होंने परमेश्वर को अपने सम्मुख नहीं जाना।

(सेला)



4 देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है;  
 प्रभु मेरे प्राण को सम्भालनेवाला है।  
 5 वह मेरे द्रोहियों की बुराई को उन्हीं पर लौटा देगा;  
 हे परमेश्वर, अपनी सच्चाई के कारण उनका विनाश  
 कर।  
 6 [2222 2222 222222222222 2222222222];  
 हे यहोवा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा,  
 क्योंकि यह उत्तम है।  
 7 क्योंकि तूने मुझे सब दुःखों से छुड़ाया है,  
 और मैंने अपने शत्रुओं पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली है।

## 55

[222222222222 22 222222 22 22222  
 22222222222]

प्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ  
 दाऊद का मशकूल

1 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा;  
 और मेरी गिड़गिड़ाहट से मुँह न मोड़!  
 2 मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे;  
 विपत्तियों के कारण मैं व्याकुल होता हूँ।  
 3 क्योंकि शत्रु कोलाहल  
 और दुष्ट उपद्रव कर रहे हैं;  
 वे मुझ पर दोषारोपण करते हैं,  
 और क्रोध में आकर सताते हैं।  
 4 [22222 22 22222 22 22222 22222 2222 222\*],  
 और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है।  
 5 भय और कंपन ने मुझे पकड़ लिया है,  
 और भय ने मुझे जकड़ लिया है।  
 6 तब मैंने कहा, “भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख  
 होते  
 तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता!  
 7 देखो, फिर तो मैं उड़ते-उड़ते दूर निकल जाता  
 और जंगल में बसेरा लेता,  
 (सेला)  
 8 मैं प्रचण्ड बयार और आँधी के झोंके से  
 बचकर किसी शरणस्थान में भाग जाता।”  
 9 हे प्रभु, उनका सत्यानाश कर,  
 और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे;  
 क्योंकि मैंने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है।  
 10 रात-दिन वे उसकी शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर  
 घूमते हैं;  
 और उसके भीतर दुष्टता और उत्पात होता है।  
 11 उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला है;

और अत्याचार और छल उसके चौक से दूर नहीं होते।  
 12 जो मेरी नामधराई करता है वह शत्रु नहीं था,  
 नहीं तो मैं उसको सह लेता;  
 जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है वह मेरा बैरी नहीं है,  
 नहीं तो मैं उससे छिप जाता।  
 13 परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी बराबरी का मनुष्य  
 मेरा परम मित्र और मेरी जान-पहचान का था।  
 14 हम दोनों आपस में कैसी मीठी-मीठी बातें करते थे;  
 हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे।  
 15 उनको मृत्यु अचानक आ दबाए; वे जीवित ही  
 अधोलोक में उतर जाएँ;  
 [2222222222 22222 22 22 22 222222 2222  
 2222222222 22 22222222 2222 22\*]।  
 16 परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूँगा;  
 और यहोवा मुझे बचा लेगा।  
 17 साँझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर  
 मैं दुहाई दूँगा और कराहता रहूँगा  
 और वह मेरा शब्द सुन लेगा।  
 18 जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उससे उसने मुझे कुशल  
 के साथ बचा लिया है।  
 उन्होंने तो बहुतों को संग लेकर मेरा सामना किया था।  
 19 परमेश्वर जो आदि से विराजमान है यह सुनकर  
 उनको उत्तर देगा।  
 (सेला)  
 ये वे हैं जिनमें कोई परिवर्तन नहीं, और उनमें परमेश्वर  
 का भय है ही नहीं।  
 20 उसने अपने मेल रखनेवालों पर भी हाथ उठाया है,  
 उसने अपनी वाचा को तोड़ दिया है।  
 21 उसके मुँह की बातें तो मक्खन सी चिकनी थी  
 परन्तु उसके मन में लड़ाई की बातें थीं;  
 उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे  
 परन्तु नंगी तलवारें थीं।  
 22 अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा;  
 वह धर्मी को कभी टलने न देगा। (1 [22]. 5:7, [22].  
 37:24)  
 23 परन्तु हे परमेश्वर, तू उन लोगों को विनाश के गड्ढे में  
 गिरा देगा;  
 हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु तक भी  
 जीवित न रहेंगे।  
 परन्तु मैं तुझ पर भरोसा रखे रहूँगा।

† 54:6 [222 2222 222222222222 2222222222]: अर्थात् वह अपनी मुक्त इच्छा से, बिना दबाव और बिना अनिवार्यता के बलि चढ़ाएगा।

\* 55:4 [2222 22 2222 22 2222 2222 222 22]: बोझ से दबा और दुःखी अर्थात् बहुत व्यथित है। † 55:15 [22222222 22222 22 22  
 22 22222 222 2222222222 22 22222222 222 22]: उनके हर एक काम में बुराइयों की बहुतायत है। बुराइयाँ उनके घर में भी हैं और उनके मन में भी हैं।

## 56

प्रधान बजानेवाले के लिये योनतेलेखद्वोकीम में दाऊद का मिक्ताम जब पलिशितियों ने उसको गत नगर में पकड़ा था

1 हे परमेश्वर, मुझे पर दया कर, क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं;

वे दिन भर लड़कर मुझे सताते हैं।

2 मेरे द्रोही दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं, क्योंकि जो लोग अभिमान करके मुझसे लड़ते हैं वे बहुत हैं।

3 जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूँगा।

4 परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा, परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?

5 वे दिन भर मेरे वचनों को, उलटा अर्थ लगा लगाकर मरोड़ते रहते हैं; 6 वे सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और छिपकर बैठते हैं; वे मेरे कदमों को देखते भालते हैं मानो वे मेरे प्राणों की घात में ताक लगाए बैठे हों।

7 क्या वे बुराई करके भी बच जाएँगे? हे परमेश्वर, अपने क्रोध से देश-देश के लोगों को गिरा दे!

8 तू मेरे मारे-मारे फिरने का हिसाब रखता है; तू मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले! 9 तब जिस समय मैं पुकारूँगा, उसी समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे।

यह मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर मेरी ओर है।

10 परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा, यहोवा की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा।

11 मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

\* 56:5 उनकी सब योजनाएँ, युक्तियाँ और उद्देश्य मेरी भलाई से दूर है। वे सदैव मुझे हानि पहुँचाने का अवसर खोजते हैं। † 56:8 क्या वे तेरी स्मरण पुस्तक में अंकित करके लिखे नहीं गए कि तू उन्हें भूल न जाए? ‡ 56:13 उसकी उपस्थिति में उसकी मित्रता और उसकी कृपा का सुख भोगू। \* 57:4 अर्थात् ऐसे मनुष्यों के मध्य हूँ जो शेरों के सामान हैं- खूंखार, बर्बर मनुष्य। † 57:8 मैं इस काम के लिए नींद से जाग जाऊँगा। मैं प्रातःकाल के आरम्भिक पलों को उसकी आराधना में लगाऊँगा।

12 हे परमेश्वर, तेरी मन्त्रों का भार मुझ पर बना है; मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा।

13 क्योंकि तूने मुझे को मृत्यु से बचाया है; तूने मेरे पैरों को भी फिसलने से बचाया है, 14 हे परमेश्वर, मुझे पर दया कर, मुझे पर दया कर, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ; और जब तक ये विपत्तियाँ निकल न जाएँ, तब तक मैं तेरे पंखों के तले शरण लिए रहूँगा।

## 57

प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम; जब वह शाऊल से भागकर गुफा में छिप गया था

1 हे परमेश्वर, मुझे पर दया कर, मुझे पर दया कर, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ;

और जब तक ये विपत्तियाँ निकल न जाएँ, तब तक मैं तेरे पंखों के तले शरण लिए रहूँगा।

2 मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूँगा, परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।

3 परमेश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा, जब मेरा निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो।

(सेला) परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा।

4 मुझे जलते हुआओं के बीच में लेटना पड़ता है, अर्थात् ऐसे मनुष्यों के बीच में जिनके दाँत बर्छी और तीर हैं, और जिनकी जीभ तेज तलवार है।

5 हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोमय है, तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!

6 उन्होंने मेरे पैरों के लिये जाल बिछाया है; मेरा प्राण ढला जाता है।

उन्होंने मेरे आगे गड्ढा खोदा, परन्तु आप ही उसमें गिर पड़े।

(सेला) 7 हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है; मैं गाऊँगा वरन् भजन कीर्तन करूँगा।

8 हे मेरे मन जाग जा! हे सारंगी और वीणा जाग जाओ; 9 हे परमेश्वर, मुझे पर दया कर, मुझे पर दया कर, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ;



उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाएँ  
तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर,  
वरन् पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता है।

14 वे साँझ को लौटकर कुत्ते के समान गुराते,  
और नगर के चारों ओर घूमते हैं।

15 वे टुकड़े के लिये मारे-मारे फिरते,  
और तृप्त न होने पर रात भर गुराते हैं।

16 **११११११ १११ ११११ ११११११११ ११ ११**  
**१११११११†**,

और भोर को तेरी करुणा का जयजयकार करूँगा।  
क्योंकि तू मेरा ऊँचा गढ़ है,

और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है।

17 हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊँगा,  
क्योंकि हे परमेश्वर, तू मेरा ऊँचा गढ़

और मेरा करुणामय परमेश्वर है।

## 60

**१११११११ ११ ११११ १११११११११**

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का मिक्ताम शूशनेदूत  
राग में। शिक्षादायक। जब वह अरम्नहरैम और  
अरमसोबा से लड़ता था। और योआब ने लौटकर नमक  
की तराई में एदोमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये

1 हे परमेश्वर, तूने हमको त्याग दिया,

और हमको तोड़ डाला है;

तू क्रोधित हुआ; फिर हमको ज्यों का त्यों कर दे।

2 तूने भूमि को कँपाया और फाड़ डाला है;

उसके दरारों को भर दे, क्योंकि वह डगमगा रही है।

3 तूने अपनी प्रजा को कठिन समय दिखाया;

**१११११ १११११ ११११११११ १११११११११ १११११११**  
**१११११११ १११\***।

4 तूने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है,

कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए।

(सेला)

5 तू अपने दाहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन ले  
कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ।

6 परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है, "मैं प्रफुल्लित  
होऊँगा;

मैं शेकेम को बाँट लूँगा, और सुक्कोत की तराई को  
नपवाऊँगा।

7 गिलाद मेरा है; मनश्शे भी मेरा है;

और एप्रैम मेरे सिर का टोप,  
यहूदा मेरा राजदण्ड है।

8 मोआब मेरे धोने का पात्र है;

मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूँगा;

हे पलिशतीन, मेरे ही कारण जयजयकार कर।"

9 मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुँचाएगा?

एदोम तक मेरी अगुआई किसने की है?

10 हे परमेश्वर, क्या तूने हमको त्याग नहीं दिया?

हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ नहीं जाता।

11 शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर,

क्योंकि **१११११११ ११ १११११११ १११११११ ११†**।

12 परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएँगे,

क्योंकि हमारे शत्रुओं को वही रौंदेगा।

## 61

**११११११ ११ १११११ ११११११११११**

प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजे के साथ दाऊद  
का भजन

1 हे परमेश्वर, मेरा चिल्लाना सुन,

मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे।

2 मूर्च्छा खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से भी तुझे  
पुकारूँगा,

**११ १११११११ १११११ १११११ १११११ ११, ११ ११ ११११**  
**११ ११ ११†**;

3 क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है,

और शत्रु से बचने के लिये ऊँचा गढ़ है।

4 मैं तेरे तम्बू में युगानुयुग बना रहूँगा।

मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिए रहूँगा।

(सेला)

5 क्योंकि हे परमेश्वर, तूने मेरी मन्त्रों सुनीं,

जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा भाग तूने मुझे दिया  
है।

6 तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा;

उसके वर्ष पीढ़ी-पीढ़ी के बराबर होंगे।

7 वह परमेश्वर के सम्मुख सदा बना रहेगा;

तू अपनी करुणा और सच्चाई को उसकी रक्षा के लिये  
ठहरा रख।

8 इस प्रकार मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा गाकर  
अपनी मन्त्रों हर दिन पूरी किया करूँगा।

‡ 59:16 **११११११ १११ ११११ ११११११११ ११ ११ ११११११**: मेरी शक्ति का स्रोत वही है जिसके द्वारा मैंने मुक्ति पाई है। \* 60:3 **११११**

**१११११ ११११११११ ११११११११ ११११११ ११११११ ११**: कहने का अर्थ है कि उनकी दशा ऐसी है जैसे कि परमेश्वर ने उन्हें नशीले पदार्थ का कटोरा  
पिला दिया है, जिसके कारण वे स्थिर खड़े नहीं हो पा रहे हैं। † 60:11 **११११११ ११ १११११११ १११११११ ११**: हमारी सहायता परमेश्वर से है।  
मनुष्य न तो अगुआई कर सकता है न ही शक्ति दे सकता है, न क्षमा कर सकता, न उद्धार दिला सकता है। मनुष्य से सहायता की आशा करना व्यर्थ  
है। \* 61:2 **११ १११११११ १११११ १११११ ११११ ११, ११ ११ ११११ ११ ११ ११**: ऐसे शरणस्थान पर, किसी दृढ़ गढ़ में जहाँ मैं सुरक्षित रहूँ।

## 62

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन । यदूतून की राग पर

1 सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ

मेरा उद्धार उसी से होता है ।

2 सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है मैं अधिक न डिगूँगा ।

3 तुम कब तक एक पुरुष पर धावा करते रहोगे, कि सब मिलकर उसका घात करो?

वह तो झुकी हुई दीवार या गिरते हुए बाड़े के समान है ।

4 सचमुच वे उसको, उसके ऊँचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं;

वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं ।

मुँह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं ।

(सेला)

5 हे मेरे मन, परमेश्वर के सामने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी से है ।

6 सचमुच वही मेरी चट्टान, और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है; इसलिए मैं न डिगूँगा ।

7 मेरे उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है; मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है ।

8 हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो;

परमेश्वर हमारा शरणस्थान है ।

(सेला)

9 सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं;

तौल में वे हलके निकलते हैं;

वे सब के सब साँस से भी हलके हैं ।

10 अत्याचार करने पर भरोसा मत रखो, और लूट पाट करने पर मत फूलो;

चाहे धन-सम्पत्ति बढ़े, तो भी उस पर मन न लगाना ।

(**19:21,22, 1 6:17**)

11 परमेश्वर ने एक बार कहा है;

और दो बार मैंने यह सुना है:

12 और हे प्रभु, करुणा भी तेरी है ।

\* **62:8** यहाँ अंतर्निहित विचार है कि मन कोमल एवं मुलायम हो जाए कि उसकी भावनाएँ और इच्छाएँ पानी के सदृश्य बहने लगें। † **62:11** कहने का अर्थ है कि मनुष्य के लिए आवश्यक सामर्थ्य अर्थात् उसकी रक्षा एवं उद्धार की योग्यता, केवल परमेश्वर में हैं। \* **63:1** अर्थात् जैसे सूखी भूमि में कोई प्यासा हो वैसे मेरी आत्मा परमेश्वर के लिए तरसती है। † **63:7** तेरे पंखों के नीचे या उनकी सुरक्षा में सुरक्षित रहूँगा ।

क्योंकि तू एक-एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है। (**9:9, 16:27, 2:6, 22:12**)

## 63

दाऊद का भजन; जब वह यहूदा के जंगल में था ।

1 हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है,

मैं तुझे यत्न से ढूँढ़ूँगा;

मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है ।

2 इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ ।

3 क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है,

मैं तेरी प्रशंसा करूँगा ।

4 इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा;

और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा ।

5 मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा ।

6 जब मैं बिछड़ाने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा,

तब रात के एक-एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा;

7 क्योंकि तू मेरा सहायक बना है,

इसलिए मेरा मन तेरे पीछे-पीछे लगा चलता है;

और मुझे तो तू अपने दाहिने हाथ से थाम रखता है ।

9 परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी हैं,

वे पृथ्वी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे;

10 वे तलवार से मारे जाएँगे,

और गीदड़ों का आहार हो जाएँगे ।

11 परन्तु राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा;

जो कोई परमेश्वर की शपथ खाए, वह बड़ाई करने पाएगा;

परन्तु झूठ बोलनेवालों का मुँह बन्द किया जाएगा ।

## 64

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन

1 हे परमेश्वर, जब मैं तेरी दुहाई दूँ, तब मेरी सुन;

शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर ।

2 कुकर्मियों की गोष्ठी से,  
और अनर्थकारियों के हुल्लड से मेरी आड़ हो।  
3 उन्होंने अपनी जीभ को तलवार के समान तेज किया  
है,  
और अपने कड़वे वचनों के तीरों को चढाया है;  
4 ताकि छिपकर खरे मनुष्य को मारें;  
वे निडर होकर उसको अचानक मारते भी हैं।  
5 वे बुरे काम करने को हियाव बाँधते हैं;  
वे फंदे लगाने के विषय बातचीत करते हैं;  
और कहते हैं, “हमको कौन देखेगा?”  
6 वे कुटिलता की युक्ति निकालते हैं;  
और कहते हैं, “हमने पक्की युक्ति खोजकर निकाली  
है।”

क्योंकि मनुष्य के मन और हृदय के विचार गहरे है।

7 [२२२२२२२ २२२२२२२२२ २२ २२ २२२ २२२२२२२]\*;  
वे अचानक घायल हो जाएँगे।  
8 वे अपने ही वचनों के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे;  
जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब अपने-अपने सिर  
हिलाएँगे  
9 [२२ २२२२ २२२ २२ २२२२२२२]\*;  
और परमेश्वर के कामों का बखान करेंगे,  
और उसके कार्यक्रम को भली भाँति समझेंगे।  
10 धर्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उसका  
शरणागत होगा,  
और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे।

## 65

[२२२२२२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२]  
प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत  
1 हे परमेश्वर, सिय्योन में स्तुति तेरी बाट जोहती है;  
और [२२२२ २२२२ २२२२२२२२ २२२२ २२ २२२२२२२]\*।  
2 हे प्रार्थना के सुननेवाले!  
सब प्राणी तेरे ही पास आएँगे। ([२२२२२२२]  
10:34,35, [२२२]. 66:23)  
3 अधर्म के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं;  
हमारे अपराधों को तू क्षमा करेगा।  
4 क्या ही धन्य है वह, जिसको तू चुनकर अपने समीप  
आने देता है,  
कि वह तेरे आँगनों में वास करे!  
हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम-  
उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे।

\* 64:7 [२२२२२२ २२२२२२२२ २२ २२ २२२ २२२२२२२]: मनुष्यों पर तीर चलाने का उनका उद्देश्य है परन्तु इससे पहले कि वे सक्षम हों परमेश्वर उन पर अपने तीर चलाएगा। † 64:9 [२२ २२२२ २२२ २२ २२२२२२२]: दुष्ट को जब न्याय समेत दण्ड मिलेगा तब सब मनुष्य परमेश्वर का आदर करना सीख लेंगे और ऐसे सामर्थी परमेश्वर का भय मानेंगे। \* 65:1 [२२२२ २२२२ २२२२२२२ २२२२ २२ २२२२२२२]: परमेश्वर के प्रगट न्याय तथा उसकी भलाई के प्रमाणों को देखकर मनुष्य ने जो शपथ खाई या प्रतिज्ञाएँ की है, यह उनके संदर्भ में है। † 65:7 [२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२], .... [२२२२२ २२२२ २२]: जब समुद्र तूफानी लहरें उठाता है तब परमेश्वर उसे शान्त करता है। वह विशाल लहरों को शान्त कर देता है।

5 हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर,  
हे पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के और दूर के समुद्र पर के  
रहनेवालों के आधार,  
तू धार्मिकता से किए हुए अद्भुत कार्यों द्वारा हमें उत्तर  
देगा;  
6 तू जो पराक्रम का फेंटा कसे हुए,  
अपनी सामर्थ्य के पर्वतों को स्थिर करता है;  
7 [२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२२, २२२२ २२२२२२२]  
[२२ २२२२२२२२]  
[२२ २२२-२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२२२]  
[२२२२ २२]; ([२२२२२] 8:26, [२२२].  
17:12,13)  
8 इसलिए दूर-दूर देशों के रहनेवाले तेरे चिन्ह देखकर  
डर गए हैं;

तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार कराता  
है।  
9 तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता है,  
तू उसको बहुत फलदायक करता है;  
परमेश्वर की नदी जल से भरी रहती है;  
तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार  
करता है।  
10 तू रेघारियों को भली भाँति सींचता है,  
और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है,  
तू भूमि को मेंह से नरम करता है,  
और उसकी उपज पर आशीष देता है।  
11 तेरी भलाइयों से, तू वर्ष को मुकुट पहनता है;  
तेरे मार्गों में उत्तम-उत्तम पदार्थ पाए जाते हैं।  
12 वे जंगल की चराइयों में हरियाली फूट पड़ती हैं;  
और पहाड़ियाँ हर्ष का फेंटा बाँधे हुए हैं।  
13 चराइयाँ भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं;  
और तराइयाँ अन्न से ढँपी हुई हैं,  
वे जयजयकार करती और गाती भी हैं।

## 66

[२२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२२२]  
[२२ २२२२२२]  
प्रधान बजानेवाले के लिये गीत, भजन  
1 हे सारी पृथ्वी के लोगों, परमेश्वर के लिये जयजयकार  
करो;  
2 उसके नाम की महिमा का भजन गाओ;  
उसकी स्तुति करते हुए, उसकी महिमा करो।

3 परमेश्वर से कहो, “**११११ १११ १११११ ११११११**  
**११११**\*!  
 तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे।  
 4 सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे,  
 और तेरा भजन गाएँगे;  
 वे तेरे नाम का भजन गाएँगे।”

(सेला)

5 आओ परमेश्वर के कामों को देखो;  
 वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख  
 पड़ता है।

6 उसने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला;  
 वे महानद में से पाँव-पाँव पार उतरे।  
 वहाँ हम उसके कारण आनन्दित हुए,

7 जो अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है,  
 और अपनी आँखों से जाति-जाति को ताकता है।  
 विद्रोही अपने सिर न उठाए।

(सेला)

8 हे देश-देश के लोगों, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो,  
 और उसकी स्तुति में राग उठाओ,

9 जो हमको जीवित रखता है;  
 और हमारे पाँव को टलने नहीं देता।

10 क्योंकि हे परमेश्वर तूने हमको जाँचा;  
**११११ ११११ ११११११ ११ ११११ ११११ ११११ ११११**। (1 **१११**  
**1:7, १११. 48:10)**

11 तूने हमको जाल में फँसाया;  
 और हमारी कमर पर भारी बोझ बाँधा था;

12 तूने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया,  
 हम आग और जल से होकर गए;  
 परन्तु तूने हमको उबार के सुख से भर दिया है।

13 मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आऊँगा  
**११११ ११ ११११११११ ११ १११११ १११११ १११११**  
**११११११११**;

14 जो मैंने मुँह खोलकर मानीं,  
 और संकट के समय कही थीं।

15 मैं तुझे मोटे पशुओं की होमबलि,  
 मेढ़ों की चर्बी की धूप समेत चढ़ाऊँगा;  
 मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊँगा।

(सेला)

16 हे परमेश्वर के सब डरवैयों, आकर सुनो,  
 मैं बताऊँगा कि उसने मेरे लिये क्या-क्या किया है।

17 मैंने उसको पुकारा,

और उसी का गुणानुवाद मुझसे हुआ।

18 यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता,  
 तो प्रभु मेरी न सुनता। (**११११. 9:31, १११११. 15:29**)

19 परन्तु परमेश्वर ने तो सुना है;  
 उसने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है।

20 धन्य है परमेश्वर,  
 जिसने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की,  
 और न मुझसे अपनी करुणा दूर कर दी है!

## 67

**११११११११ ११ ११११**

प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजों के साथ  
 भजन, गीत

1 परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हमको आशीष दे;  
 वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए,

(सेला)

2 जिससे तेरी गति पृथ्वी पर,  
 और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना  
 जाए। (**१११११ 2:30,31, १११११. 2:11**)

3 हे परमेश्वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें;  
 देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।

4 राज्य-राज्य के लोग आनन्द करें,  
 और जयजयकार करें,  
 क्योंकि तू देश-देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा,  
 और **१११११११ ११ ११११११-११११११ ११ ११११११ ११**  
**११११११ ११११११**\*।

(सेला)

5 हे परमेश्वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें;  
 देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।

6 भूमि ने अपनी उपज दी है,  
 परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उसने हमें आशीष दी  
 है।

7 परमेश्वर हमको आशीष देगा;  
 और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग उसका भय  
 मानेंगे।

## 68

**११११११११ ११ ११११११११**

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत  
 1 परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर-बितर हों;

और उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ!

2 जैसे धुआँ उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे;

\* 66:3 **११११ १११ १११११ १११११ १११**: अर्थात् उसके सामर्थ्य और महानता का प्रदर्शन मन में भय एवं श्रद्धा उत्पन्न करने योग्य होता है।

† 66:10 **१११११ १११११ ११११११ ११ १११११ १११११ ११**: अर्थात् उचित परिक्षणों के अधीन करके उसकी वास्तविकता को निश्चित करना और उसकी अशुद्धियों को दूर करना। ‡ 66:13 **११११ ११ १११११११११ ११ १११११ १११११ १११११ ११११११११**: मैंने जो प्रतिज्ञाएँ सत्यनिष्ठा में की हैं, उनको अवश्य पूरी करूँगा। \* 67:4 **१११११११ ११ ११११११-११११११ ११ ११११११ ११ ११११११ १११११११**: अर्थात् परमेश्वर उन्हें निर्देश देगा कि उन्हें क्या करना है। परमेश्वर उन्हें समृद्धि, आनन्द और उद्धार के मार्ग में लेकर चलेगा।





वे चाँदी के टुकड़े लिये हुए प्रणाम करेंगे;  
जो लोगे युद्ध से प्रसन्न रहते हैं, उनको उसने तितर-बितर  
किया है।

31 मिस्र से अधिकारी आएँगे;  
कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से  
फैलाएँगे।

32 हे पृथ्वी पर के राज्य-राज्य के लोगों परमेश्वर का  
गीत गाओ;  
प्रभु का भजन गाओ,

(सेला)

33 जो सबसे ऊँचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता  
है;

देखो वह अपनी वाणी सुनाता है, वह गम्भीर वाणी  
शक्तिशाली है।

34 [११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११:११],  
उसका प्रताप इस्राएल पर छाया हुआ है,  
और उसकी सामर्थ्य आकाशमण्डल में है।

35 हे परमेश्वर, तू अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है,  
इस्राएल का परमेश्वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य और  
शक्ति का देनेवाला है।

परमेश्वर धन्य है।

## 69

[११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११:११]

प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम राग में दाऊद का  
गीत

1 हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर, मैं जल में डूबा जाता हूँ।

2 मैं बड़े दलदल में धँसा जाता हूँ, और मेरे पैर कहीं नहीं  
रुकते;

मैं गहरे जल में आ गया, और धारा में डूबा जाता हूँ।

3 मैं पुकारते-पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है;  
अपने परमेश्वर की बाट जोहते-जोहते, मेरी आँखें  
धुँधली पड़ गई हैं।

4 जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे गिनती में मेरे सिर के बालों  
से अधिक हैं;

मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे शत्रु हैं, वे सामर्थी  
हैं,

इसलिए जो मैंने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा।

([११:११: 15:25, [११: 35:19])

5 हे परमेश्वर, तू तो मेरी मूर्खता को जानता है,  
और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं।

6 हे प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी बाट जोहते हैं,  
वे मेरे कारण लज्जित न हो;  
हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तुझे ढूँढते हैं, वह मेरे कारण  
अपमानित न हो।

7 [११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११:११],  
और मेरा मुँह लज्जा से ढँपा है।

8 मैं अपने भाइयों के सामने अजनबी हुआ,  
और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में परदेशी ठहरा हूँ।

9 क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते-जलते भस्म  
हुआ,

और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को  
सहनी पड़ी है। ([११:११: 2:17, [११:११: 15:3,  
[११:११:११: 11:26])

10 जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था,  
तब उससे भी मेरी नामधराई ही हुई।

11 जब मैं टाट का वस्त्र पहने था,  
तब मेरा दृष्टान्त उनमें चलता था।

12 फाटक के पास बैठनेवाले मेरे विषय बातचीत करते  
हैं,

और मदिरा पीनेवाले मुझ पर लगता हुआ गीत गाते हैं।

13 परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के  
समय में हो रही है;

हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहुतायात से,

और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार मेरी  
सुन ले।

14 मुझ को दलदल में से उबार, कि मैं धँस न जाऊँ;  
मैं अपने बैरियों से, और गहरे जल में से बच जाऊँ।

15 मैं धारा में डूब न जाऊँ,

और न मैं गहरे जल में डूब मरूँ,

और न पाताल का मुँह मेरे ऊपर बन्द हो।

16 हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है;  
अपनी दया की बहुतायात के अनुसार मेरी ओर ध्यान दे।

17 अपने दास से अपना मुँह न मोड़;

क्योंकि मैं संकट में हूँ, फुर्ती से मेरी सुन ले।

18 मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले,

मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे।

19 मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू  
जानता है:

मेरे सब द्रोही तेरे सामने हैं।

20 मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया, और मैं बहुत  
उदास हूँ।

‡ 68:34 [११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११ ११:११:११:११ ११:११]: अर्थात् उसे सामर्थ्य सम्पन्न परमेश्वर मानो। अपनी आराधना में उसकी सर्वशक्ति को स्वीकार करो। \* 69:7 [११:११: ११ ११:११: ११:११ ११:११:११: ११:११ ११:११]: तेरे सत्य की रक्षा करने में क्योंकि मेरी निन्दा हुई है क्योंकि मैंने स्वयं को परमेश्वर का मित्र माना है।

मैंने किसी तरस खानेवाले की आशा तो की,  
परन्तु किसी को न पाया,  
और शान्ति देनेवाले ढूँढ़ता तो रहा, परन्तु कोई न  
मिला।

21 [२२२२२२] [२२] [२२२२] [२२२२] [२२] [२२२२] [२२२] [२२२२],  
[२२] [२२२२] [२२२२] [२२२२] [२२] [२२२२] [२२२२]  
[२२२२] [२२२२]। (२२. 15:23,36,  
[२२२२] 23:36, [२२२]. 19:28,29)

22 उनका भोजन उनके लिये फंदा हो जाए;  
और उनके सुख के समय जाल बन जाए।

23 उनकी आँखों पर अंधेरा छा जाए, ताकि वे देख न  
सके;  
और तू उनकी कमर को निरन्तर कँपाता रह। (२२२२.  
11:9,10)

24 उनके ऊपर अपना रोष भड़का,  
और तेरे क्रोध की आँच उनको लगे। (२२२२२२. 16:1)

25 उनकी छावनी उजड़ जाए,  
उनके डेरों में कोई न रहे। (२२२२२२२. 1:20)

26 क्योंकि जिसको तूने मारा, वे उसके पीछे पड़े हैं,  
और जिनको तूने घायल किया, वे उनकी पीड़ा की चर्चा  
करते हैं। (२२२२. 53:4)

27 उनके अधर्म पर अधर्म बढ़ा;  
और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें।

28 उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए,  
और धर्मियों के संग लिखा न जाए। (२२२२२२ 10:20,  
[२२२२२२]. 3:5, [२२२२२२]. 20:12,15,  
[२२२२२२]. 21:27)

29 परन्तु मैं तो दुःखी और पीड़ित हूँ,  
इसलिए हे परमेश्वर, तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊँचे  
स्थान पर बैठा।

30 मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूँगा,  
और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूँगा।

31 यह यहोवा को बैल से अधिक,  
वरन् सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भाएगा।

32 नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे,  
हे परमेश्वर के खोजियों, [२२२२२२२२] [२२] [२२२] [२२]  
[२२२]।

33 क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता है,  
और अपने लोगों को जो बन्दी हैं तुच्छ नहीं जानता।

34 स्वर्ग और पृथ्वी उसकी स्तुति करें,  
और समुद्र अपने सब जीवजन्तुओं समेत उसकी स्तुति  
करे।

35 क्योंकि परमेश्वर सिय्योन का उद्धार करेगा,  
और यहूदा के नगरों को फिर बसाएगा;  
और लोग फिर वहाँ बसकर उसके अधिकारी हो जाएँगे।

36 उसके दासों का वंश उसको अपने भाग में पाएगा,  
और उसके नाम के प्रेमी उसमें वास करेंगे।

## 70

[२२२२२२] [२२] [२२२२] [२२२२२२२२२]

प्रधान बजानेवाले के लिये: स्मरण कराने के लिये दाऊद  
का भजन

1 हे परमेश्वर, मुझे छुड़ाने के लिये, हे यहोवा, मेरी  
सहायता करने के लिये फुर्ती कर!

2 जो मेरे प्राण के खोजी हैं,  
[२२] [२२२२२२] [२२] [२२२२२२२] [२२] [२२२]!  
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं,

वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ।

3 जो कहते हैं, “आहा, आहा!”  
वे अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएँ।

4 जितने तुझे ढूँढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और  
आनन्दित हों!

और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें,  
“परमेश्वर की बड़ाई हो!”

5 मैं तो दीन और दरिद्र हूँ;

हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर!

तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है;

हे यहोवा विलम्ब न कर!

## 71

[२२] [२२२२२] [२२] [२२२२२२२२२]

1 हे यहोवा, मैं तेरा शरणागत हूँ;

मुझे लज्जित न होने दे।

2 तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर;

मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर।

3 मेरे लिये सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिसमें  
मैं नित्य जा सकूँ;

तूने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है,

क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है।

4 हे मेरे परमेश्वर, दुष्ट के

और कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर।

5 क्योंकि हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया  
हूँ;

† 69:21 [२२२२२] [२२] ... [२२२२] [२२२२२] [२२२२२२] [२२] [२२२२] [२२२२] [२२२२२] [२२२२२२]: यहाँ अभियोग विधि का संदर्भ दिया जा रहा है, वह है, जब कोई प्यास से मर रहा है और उसे पानी देने के स्थान में उसका ठट्टा करने के लिए उसे पानी की अपेक्षा ऐसा पेयपदार्थ दिया जाए जो पिया नहीं जा सकता है। ‡ 69:32 [२२२२२२२] [२२] [२२२] [२२] [२२२]: नवजीवन पाएगा, प्रोत्साहन पाएगा, बलवन्त होगा। \* 70:2 [२२] [२२२२२] [२२] [२२२२२] [२२] [२२२]: यह निश्चितता का अभिप्राय है कि वे लज्जित किए जाएँगे, वे धूल में मिला दिए जाएँगे, अर्थात् वे सफल नहीं होंगे या उनके उद्देश्य विफल किए जाएँगे।

बचपन से मेरा आधार तू है।

6 मैं गर्भ से निकलते ही, तेरे द्वारा सम्भाला गया;  
[२२२२ २२२ २२ २२२ २२ २२ २२ २२ २२२२२२]\*;  
इसलिए मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूँगा।

7 मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूँ;

परन्तु तू मेरा दृढ शरणस्थान है।

8 मेरे मुँह से तेरे गुणानुवाद,  
और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे।

9 बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर;

जब मेरा बल घटे तब मुझे को छोड़ न दे।

10 क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं,

और जो मेरे प्राण की ताक में हैं,  
वे आपस में यह सम्मति करते हैं कि

11 परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया है;

उसका पीछा करके उसे पकड़ लो, क्योंकि उसका कोई  
छुड़ानेवाला नहीं।

12 हे परमेश्वर, मुझेसे दूर न रह;

हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

13 जो मेरे प्राण के विरोधी हैं, वे लज्जित हो

और उनका अन्त हो जाए;

जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं, वे नामधराई  
और अनादर में गड़ जाएँ।

14 मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूँगा,

और तेरी स्तुति अधिकाधिक करता जाऊँगा।

15 मैं अपने मुँह से तेरी धार्मिकता का,

और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहूँगा,  
क्योंकि उनका पूरा ब्योरा मेरी समझ से परे है।

16 मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता  
हुआ आऊँगा,

मैं केवल तेरी ही धार्मिकता की चर्चा किया करूँगा।

17 हे परमेश्वर, तू तो मुझे को बचपन ही से सिखाता  
आया है,

और अब तक मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का प्रचार करता आया  
हूँ।

18 इसलिए हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ

और मेरे बाल पक जाएँ, तब भी तू मुझे न छोड़,

जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को  
तेरा बाहुबल और सब उत्पन्न होनेवालों को तेरा पराक्रम  
सुनाऊँ।

19 हे परमेश्वर, तेरी धार्मिकता अति महान है।

तू जिसने महाकार्य किए हैं,  
हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है?

20 तूने तो हमको बहुत से कठिन कष्ट दिखाए हैं  
परन्तु अब तू फिर से हमको जिलाएगा;

और [२२२२२२ २२ २२२२ २२२२२ २२२ २२ २२२२  
२२२२]।

21 [२२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२],  
और फिरकर मुझे शान्ति देगा।

22 हे मेरे परमेश्वर,

मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर  
गाऊँगा;

हे इस्राएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन  
गाऊँगा।

23 जब मैं तेरा भजन गाऊँगा, तब अपने मुँह से

और अपने प्राण से भी जो तूने बचा लिया है, जयजयकार  
करूँगा।

24 और मैं तेरे धार्मिकता की चर्चा दिन भर करता रहूँगा;

क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे,

वे लज्जित और अपमानित हुए।

## 72

[२२२२२ २२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२२]

सुलैमान का गीत

1 हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता,

राजपुत्र को अपनी धार्मिकता सिखला!

2 वह तेरी प्रजा का न्याय धार्मिकता से,

और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक-ठीक चुकाएगा।

([२२२२२] 25:31-34, [२२२२२२]. 17:31,  
[२२२]. 14:10, 2 [२२२२]. 5:10)

3 पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये,

धार्मिकता के द्वारा शान्ति मिला करेगी

4 वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा, और दरिद्र  
लोगों को बचाएगा;

और [२२२२२२२२ २२२२२२२२२ २२ २२२ २२२२२]\*।  
([२२२]. 11:4)

5 जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे

तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे।

6 वह घास की खूँटी पर बरसने वाले मेंह,

और भूमि सींचने वाली झड़ियों के समान होगा।

7 उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे,

\* 71:6 [२२२२ २२२ २२ २२२ २२ २२ २२ २२ २२२२२]: यहाँ कहने का अर्थ है कि परमेश्वर ने उसे उसके आरम्भिक वर्षों से ही उसे सम्भाला है, उसने उसकी रक्षा करने में अपना सामर्थ्य प्रगट किया है। † 71:20 [२२२२२ २२ २२२२ २२२२२ २२२ २२ २२२२ २२२२]: जैसे कि मानो वह गहरे जल में डूब गया या दलदल में फँस गया। ‡ 71:21 [२२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२]: परमेश्वर मुझे पूर्व स्थिति ही में नहीं लाएगा, वह मेरे आनन्द को भी बढ़ाएगा और मेरे लिए और भी बड़े काम करेगा। \* 72:4 [२२२२२२२२ २२२२२२२२२ २२ २२२ २२२२२]: जो मनुष्यों पर अत्याचार करते हैं उन्हें वह दबा देगा या नष्ट कर देगा।





अपने दीन जनों को सदा के लिये न भूल  
20 अपनी वाचा की सुधि ले;  
क्योंकि देश के अंधेरे स्थान अत्याचार के घरों से भरपूर  
हैं।

21 पिसे हुए जन को अपमानित होकर लौटना न पड़े;  
दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएँ।  
(27. 103:6)

22 हे परमेश्वर, उठ, अपना मुकद्दमा आप ही लड़;  
तेरी जो नामधराई मूर्ख द्वारा दिन भर होती रहती है,  
उसे स्मरण कर।

23 अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल,  
तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता  
है।

## 75

प्रधान बजानेवाले के लिये: अलतशहेत राग में आसाप  
का भजन। गीत।

1 हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते, हम तेरा नाम  
धन्यवाद करते हैं;

क्योंकि [?], तेरे  
आश्चर्यकर्मों का वर्णन हो रहा है।

2 जब ठीक समय आएगा  
तब मैं आप ही ठीक-ठीक न्याय करूँगा।

3 जब पृथ्वी अपने सब रहनेवालों समेत डोल रही है,  
तब मैं ही उसके खम्भों को स्थिर करता हूँ।

(सेला)

4 मैंने घमण्डियों से कहा, “घमण्ड मत करो,”  
और दुष्टों से, “सींग ऊँचा मत करो;

5 अपना सींग बहुत ऊँचा मत करो,  
न सिर उठाकर ढिठाई की बात बोलो।”

6 क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से,  
और न जंगल की ओर से आती है;

7 परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है,  
वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।

8 यहोवा के हाथ में एक कटोरा है, जिसमें का दाखमधु  
झागवाला है;

[?], और वह उसमें से  
उण्डेलता है,

\* 75:1 [?]: अर्थात् परमेश्वर निकट है। विशेष रूप से वह उन पर प्रगट हुआ है और इस कारण उसकी स्तुति का अवसर उत्पन्न होता है। † 75:8 [?]: कहने का अर्थ है कि परमेश्वर का क्रोध एक मदिरा के सदृश्य है जिसका नशा बढ़ाया गया हो। \* 76:9 [?]: अर्थात् जब वह अपनी प्रजा के शत्रुओं को उखाड़ फेंकने और नष्ट करने आया जैसा इस भजन के पूर्वोक्त अंश में व्यक्त है। † 76:11 [?]: यह भय उत्पन्न करने के लिए नहीं है कि भेंटे चढ़ाई जाएँ परन्तु वे इसलिए चढ़ाई जाएँ कि उसने प्रगट कर दिया कि वही भय और श्रद्धा के योग्य है।

निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी के सब दुष्ट लोग  
पी जाएँगे। (27. 25:15, 27. 14:10, 27. 16:19)

9 परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता रहूँगा,  
मैं याकूब के परमेश्वर का भजन गाऊँगा।  
10 दुष्टों के सब सींगों को मैं काट डालूँगा,  
परन्तु धर्मी के सींग ऊँचे किए जाएँगे।

## 76

प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ,  
आसाप का भजन, गीत

1 परमेश्वर यहूदा में जाना गया है,  
उसका नाम इस्राएल में महान हुआ है।

2 और उसका मण्डप शालेम में,  
और उसका धाम सिय्योन में है।

3 वहाँ उसने तीरों को,  
ढाल, तलवार को और युद्ध के अन्य हथियारों को तोड़  
डाला।

(सेला)

4 हे परमेश्वर, तू तो ज्योतिर्मय है:  
तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक उत्तम और महान  
है।

5 दृढ़ मनवाले लुट गए, और भारी नींद में पड़े हैं;  
और शूरवीरों में से किसी का हाथ न चला।

6 हे याकूब के परमेश्वर, तेरी घुड़की से,  
रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े हैं।

7 केवल तू ही भययोग्य है;  
और जब तू क्रोध करने लगे, तब तेरे सामने कौन खड़ा  
रह सकेगा?

8 तूने स्वर्ग से निर्णय सुनाया है;  
पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई, और चुप रही,

9 [?],  
[?].

(सेला)

10 निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण  
हो जाएगी,

और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा।

11 अपने परमेश्वर यहोवा की मन्त्रत मानो, और पूरी भी  
करो;

उसके आस-पास के सब  
उसके लिये भेंट ले आएँ।

12 वह तो प्रधानों का अभिमान मिटा देगा;  
वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है।

## 77

आसाप का मशकूल

प्रधान बजानेवाले के लिये: यदूतून की राग पर, आसाप  
का भजन

1 मैं परमेश्वर की दुहाई चिल्ला चिल्लाकर दूँगा,  
मैं परमेश्वर की दुहाई दूँगा, और वह मेरी ओर कान  
लगाएगा।

2 संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा रहा;  
रात को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ,

मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कराहता हूँ;  
मैं चिन्ता करते-करते मूर्च्छित हो चला हूँ।

3 मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कराहता हूँ;  
मैं चिन्ता करते-करते मूर्च्छित हो चला हूँ।

(सेला)

4 तू मुझे झपकी लगाने नहीं देता;  
मैं ऐसा घबराया हूँ कि मेरे मुँह से बात नहीं निकलती।

5 मैंने प्राचीनकाल के दिनों को,  
और युग-युग के वर्षों को सोचा है।

6 मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता;  
और मन में ध्यान करता हूँ,

और मन में भली भाँति विचार करता हूँ:

7 “क्या प्रभु युग-युग के लिये मुझे छोड़ देगा;  
और फिर कभी प्रसन्न न होगा?

8 क्या उसकी करुणा सदा के लिये जाती रही?  
क्या उसका वचन पीढ़ी-पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया  
है?

9 क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया?  
क्या उसने क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है?”  
(सेला)

10 मैंने कहा, “यह तो मेरा दुःख है, कि परमप्रधान का  
दाहिना हाथ बदल गया है।”

11 मैं यहोवा के बड़े कामों की चर्चा करूँगा;  
निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामों को  
स्मरण करूँगा।

12 मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा,  
और तेरे बड़े कामों को सोचूँगा।

13 हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है।  
कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है?

14 अद्भुत काम करनेवाला परमेश्वर तू ही है,

तूने देश-देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है।

15 तूने अपने भुजबल से अपनी प्रजा,  
याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया है।

(सेला)

16 हे परमेश्वर, तूने मेरे दुःख को दूर किया,  
समुद्र तुझे देखकर डर गया,  
गहरा सागर भी काँप उठा।

17 मेघों से बड़ी वर्षा हुई;

आकाश से शब्द हुआ;  
फिर तेरे तीर इधर-उधर चले।

18 बवंडर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था;  
जगत बिजली से प्रकाशित हुआ;

पृथ्वी काँपी और हिल गई।

19 तेरा मार्ग समुद्र में है,  
और तेरा रास्ता गहरे जल में हुआ;  
और तेरे पाँवों के चिन्ह मालूम नहीं होते।

20 तूने मूसा और हारून के द्वारा,  
अपनी प्रजा की अगुआई भेड़ों की सी की।

## 78

आसाप का मशकूल

आसाप का मशकूल

1 हे मेरे लोगों, मेरी शिक्षा सुनो;

मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!

2 मैंने प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूँगा, (77:13-35)

3 जिन बातों को हमने सुना, और जान लिया,  
और हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है।

4 उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे,  
परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से,

यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य  
और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे। (77:4-9,  
77:4:6,7, 77:6:4)

5 उसने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई,  
और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई,

जिसके विषय उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी,  
कि तुम इन्हें अपने-अपने बाल-बच्चों को बताना;

6 कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो बच्चे उत्पन्न  
होनेवाले हैं, वे इन्हें जानें;

और अपने-अपने बाल-बच्चों से इनका बखान करने में  
उद्यत हों,

\* 77:2 लाल सागर और यरदन नदी। † 77:16 लाल सागर और यरदन नदी।

लाल सागर और यरदन नदी।

\* 78:2 यहाँ नीतिवचन: का

अर्थ है उपमा देकर या तुलना करके कहना।









12 फिर तूने उसके बाड़ों को क्यों गिरा दिया,  
कि सब बटोही उसके फलों को तोड़ते है?  
13 जंगली सूअर उसको नाश किए डालता है,  
और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं।  
14 हे सेनाओं के परमेश्वर, [२२२] २!†  
स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि  
ले,  
15 ये पौधा तूने अपने दाहिने हाथ से लगाया,  
और जो लता की शाखा तूने अपने लिये दृढ़ की है।  
16 वह जल गई, वह कट गई है;  
तेरी घुड़की से तेरे शत्रु नाश हो जाए।  
17 तेरे दाहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ  
रखा रहे,  
उस आदमी पर, जिसे तूने अपने लिये दृढ़ किया है।  
18 तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे:  
तू हमको जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे।  
19 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हमको ज्यों का त्यों  
कर दे!  
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका,  
तब हमारा उद्धार हो जाएगा!

## 81

[२२२२२२२२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२२२२]

प्रधान बजानेवाले के लिये: गित्तीथ राग में आसाप का भजन  
1 परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से  
गाओ;  
याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो! (२२. 67:4)  
2 गीत गाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा और  
सारंगी को ले आओ।  
3 नये चाँद के दिन,  
और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूँको।  
4 क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि,  
और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है।  
5 इसको उसने यूसुफ में चितौनी की रीति पर उस समय  
चलाया,  
जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला।  
वहाँ मैंने एक अनजानी भाषा सुनी  
6 "मैंने उनके कंधों पर से बोझ को उतार दिया;  
उनका टोकरी ढोना छूट गया।

† 80:14 [२२२] २: संदर्भ से प्रगट होता है कि परमेश्वर उस देश से दूर हो गया है या उसे त्याग दिया है, उसने अपने लोगों को बिना रक्षक छोड़ दिया और खूंखार विदेशी शत्रुओं द्वारा संहार के लिए रख दिया है। \* 81:7 [२२२२२ २२२२ २२२२ २२ २२२]: यह सोता पर्वत होरेब पर था: (निर्ग. 17:5-7) चट्टान से पानी निकालना इस बात का प्रमाण था कि वह परमेश्वर है। † 81:10 [२२२२ २२२२ २२२२, २२२ २२२ २२ २२२२२]: अर्थात्, मैं तेरी सब आवश्यकताओं को बहुतायत से पूरी करूँगा \* 82:2 [२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२२]: अर्थात् दुष्टों का साथ देना और उन्हीं का पक्ष पोषण करना। अर्थात् दुष्टों का साथ देना और उन्हीं का पक्ष पोषण करना। † 82:5 [२२२२२२ २२२२२२ २२२ २२२२ २२२२२ २२२२ २२२]: विधान के अज्ञान में और वस्तु तथा स्थिति के तथ्यों से अज्ञान।

7 तूने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैंने तुझे छुड़ाया;  
बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैंने तेरी सुनी,  
और [२२२२२२ २२२२२ २२२२२ २२ २२२२]\* तेरी परीक्षा की।  
(सेला)  
8 हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूँ!  
हे इस्राएल भला हो कि तू मेरी सुने!  
9 तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो;  
और न तू किसी पराए देवता को दण्डवत् करना!  
10 तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूँ,  
जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है।  
तू [२२२२ २२२२ २२२२, २२२ २२२ २२ २२२२२]।  
(२२. 37:3,4)  
11 "परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी;  
इस्राएल ने मुझ को न चाहा।  
12 इसलिए मैंने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया,  
कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले।  
(२२२२२२. 14:16)  
13 यदि मेरी प्रजा मेरी सुने,  
यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले,  
14 तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊँ,  
और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊँ।  
15 यहोवा के बैरी उसके आगे भय में दण्डवत् करें!  
उन्हें हमेशा के लिए अपमानित किया जाएगा।  
16 मैं उनको उत्तम से उत्तम गेहूँ खिलाता,  
और मैं चट्टान के मधु से उनको तृप्त करता।"

## 82

[२२२२२ २२२२२ २२ २२२ २२२२२]

आसाप का भजन  
1 परमेश्वर दिव्य सभा में खड़ा है:  
वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।  
2 "तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते  
और [२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२२]\*?  
(सेला)  
3 कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ,  
दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो।  
4 कंगाल और निर्धन को बचा लो;  
दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।"  
5 [२२ २ २२ २२२ २२२२२ २२ २ २२२ २२२२२ २२२,  
२२२२२२ २२२२२२ २२२ २२२२ २२२२२ २२२२]

पृथ्वी की पूरी नींव हिल जाती है।

6 मैंने कहा था “तुम ईश्वर हो,  
और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो; (10:34)  
7 तो भी तुम मनुष्यों के समान मरोगे,  
और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे।”  
8 हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर;  
क्योंकि तू ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा।

## 83

आसाप का भजन

1 हे परमेश्वर मौन न रह;  
हे परमेश्वर चुप न रह, और न शान्त रह!  
2 क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं;  
और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है।  
3 वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते,  
और तेरे रक्षित लोगों के विरुद्ध युक्तियाँ निकालते हैं।  
4 उन्होंने कहा, “आओ, हम उनका ऐसा नाश करें कि  
राज्य भी मिट जाए;  
और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे।”  
5 और तेरे ही विरुद्ध वाचा बाँधी है।  
6 ये तो एदोम के तम्बूवाले  
और इश्माएली, मोआबी और हग्गी,  
7 गबाली, अम्मोनी, अमालेकी,  
और सोर समेत पलिशती हैं।  
8 इनके संग अशशूरी भी मिल गए हैं;  
उनसे भी लूतवंशियों को सहारा मिला है।

(सेला)

9 और कीशोन नाले में था,  
10 वे एनदोर में नाश हुए,  
और भूमि के लिये खाद बन गए।  
11 इनके रईसों को ओरेब और जेब सरीखे,  
और इनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान  
कर दे,  
12 जिन्होंने कहा था,  
“हम परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी आप ही हो  
जाएँ।”  
13 हे मेरे परमेश्वर इनको बवंडर की धूलि,

या पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे।

14 उस आग के समान जो वन को भस्म करती है,  
और उस लौ के समान जो पहाड़ों को जला देती है,  
15 तू इन्हें अपनी आँधी से भगा दे,  
और अपने बवंडर से घबरा दे!  
16 इनके मुँह को अति लज्जित कर,  
कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूँढ़ें।  
17 ये सदा के लिये लज्जित और घबराए रहें,  
इनके मुँह काले हों, और इनका नाश हो जाए,  
18 जिससे ये जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है,  
सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है।

## 84

प्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में कोरहवंशियों का भजन

1 हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं!  
2 मेरा प्राण यहोवा के आँगनों की अभिलाषा करते-करते  
मूर्च्छित हो चला;  
3 हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर,  
तेरी वेदियों में गौरैया ने अपना बसेरा  
और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है जिसमें वह अपने  
बच्चे रखे।  
4 क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं;  
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे।

(सेला)

5 क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता  
है,  
और वे जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है।  
6 वे रोने की तराई† में जाते हुए उसको सोतों का स्थान  
बनाते हैं;  
फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष  
उपजाती है।  
7 उनमें से हर एक जन सिय्योन में परमेश्वर को अपना  
मुँह दिखाएगा।  
8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन,  
हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा!

(सेला)

\* 83:5 इस विषय पर उनकी सम्मति में मतभेद नहीं है। उनकी एक ही अभिलाषा है और उनका उद्देश्य भी एक ही है। † 83:9 कनान के राजा याबीन की सेना का दबोरा भविष्यद्वक्त्र के निर्देश पर इब्रानी सेना ने उसे जीत लिया था। \* 84:2 मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व, मेरी देह और मेरी आत्मा, मेरी सब मनोकामनाएँ और आकांक्षाएँ, मेरे मन की सब लालसाएँ। † 84:6 बाका ‡ 84:7 वे एक के बाद एक विजय प्राप्त करते हैं कि मनुष्य देखे कि सिय्योन में एक धर्मनिष्ठ परमेश्वर है।

9 हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि कर;  
और अपने अभिषिक्त का मुख देख!  
10 क्योंकि तेरे आँगनों में एक दिन और कहीं के हजार  
दिन से उत्तम है।  
दुष्टों के डेरों में वास करने से  
अपने परमेश्वर के भवन की डेवढी पर खड़ा रहना ही  
मुझे अधिक भावता है।  
11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है;  
यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा;  
और जो लोग खरी चाल चलते हैं;  
[22222 22 2222 222222 222222 22 2 222222222]।  
12 हे सेनाओं के यहोवा,  
क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ पर भरोसा रखता  
है!

## 85

[22222222 22 22222222 22 2222 222222222222]  
प्रधान बजानेवाले के लिये: कोरहवंशियों का भजन  
1 हे यहोवा, तू अपने देश पर प्रसन्न हुआ, याकूब को  
बँधुवाई से लौटा ले आया है।  
2 तूने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा किया है;  
और उसके सब पापों को ढाँप दिया है।  
(सेला)  
3 तूने अपने रोष को शान्त किया है;  
और अपने भड़के हुए कोप को दूर किया है।  
4 हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमको पुनः स्थापित  
कर,  
और [22222 222222 22 22 22 2222 22]\*!  
5 क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा?  
क्या तू पीढी से पीढी तक कोप करता रहेगा?  
6 क्या तू हमको फिर न जिलाएगा,  
कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे?  
7 हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा,  
और तू हमारा उद्धार कर।  
8 मैं कान लगाए रहूँगा कि परमेश्वर यहोवा क्या कहता  
है,  
वह तो अपनी प्रजा से जो उसके भक्त है, शान्ति की  
बातें कहेगा;  
परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने लगे।  
9 [22222222 222222 2222222222 22 22222222 22 2222  
22222 22],

§ 84:11 [2222 22 222 22222 22222 22 2 22222222]: वास्तव में कोई भी अच्छी वस्तु, मनुष्य की कोई भी वास्तविक आवश्यकता, इस  
जीवन से सम्बंधित कुछ भी नहीं। \* 85:4 [2222 222222 22 22 22 2222 22]: अन्तर्निहित विचार है कि यदि वे पापों से विमुख हो जाएँ तो  
उसके क्रोध का कारण दूर हो जाएगा और निःसन्देह वह रुक जाएगा। † 85:9 [222222 22222 2222222222 22 22222222 22 2222 22222 22]:  
उद्धार अर्थात् सब प्रकार की मुक्ति, संकटों से, खतरों से, आपदाओं से बचाव। \* 86:9 [2222 2222 22 222222 22222222]: तुझे सच्चा परमेश्वर  
मानकर आदर करेंगे। वे मूर्तिपूजा का त्याग करके यहाँ आकर तेरी आराधना करेंगे।

तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा।  
10 करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं;  
धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है।  
11 पृथ्वी में से सच्चाई उगती  
और स्वर्ग से धर्म झुकता है।  
12 हाँ, यहोवा उत्तम वस्तुएँ देगा,  
और हमारी भूमि अपनी उपज देगी।  
13 धर्म उसके आगे-आगे चलेगा,  
और उसके पाँवों के चिन्हों को हमारे लिये मार्ग  
बनाएगा।

## 86

[222222 22 222222222222]  
दाऊद की प्रार्थना  
1 हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले,  
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ।  
2 मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूँ;  
तू मेरा परमेश्वर है, इसलिए अपने दास का,  
जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर।  
3 हे प्रभु, मुझे पर अनुग्रह कर,  
क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूँ।  
4 अपने दास के मन को आनन्दित कर,  
क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ।  
5 क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है,  
और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभी के लिये तू अति  
करुणामय है।  
6 हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा,  
और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन।  
7 संकट के दिन मैं तुझको पुकारूँगा,  
क्योंकि तू मेरी सुन लेगा।  
8 हे प्रभु, देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं,  
और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं।  
9 हे प्रभु, जितनी जातियों को तूने बनाया है,  
सब आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी,  
और [22222 2222 22 222222 22222222]\*। ([22222222]  
15:4)  
10 क्योंकि तू महान और आश्चर्यकर्म करनेवाला है,  
केवल तू ही परमेश्वर है।  
11 हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा, तब मैं तेरे सत्य  
मार्ग पर चलूँगा,



या तेरा धर्म विश्वासघात की दशा में जाना जाएगा?  
 13 परन्तु हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है;  
 और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचेगी।  
 14 हे यहोवा, तू मुझ को क्यों छोड़ता है?  
 तू अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता रहता है?  
 15 मैं बचपन ही से दुःखी वरन् अधमुआ हूँ,  
 [2222 22 22 22222] मैं अति व्याकुल हो गया हूँ।  
 16 तेरा क्रोध मुझ पर पडा है;  
 उस भय से मैं मिट गया हूँ।  
 17 वह दिन भर जल के समान मुझे घेरे रहता है;  
 वह मेरे चारों ओर दिखाई देता है।  
 18 तूने मित्र और भाई-बन्धु दोनों को मुझसे दूर किया  
 है;  
 और मेरे जान-पहचानवालों को अंधकार में डाल दिया  
 है।

## 89

[2222222222 22222222 22 222 22222222222]

एतान एज्रावंशी का मश्कील  
 1 मैं यहोवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहूँगा;  
 मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बताता रहूँगा।  
 2 क्योंकि मैंने कहा, “तेरी करुणा सदा बनी रहेगी,  
 तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रखेगा।”  
 3 तूने कहा, “मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है,  
 मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है,  
 4 [2222 22222 2222 22 2222 222222 22222222]\*;  
 और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी-पीढ़ी तक बनाए रखूँगा।”  
 (सेला)

([2222. 7:42, 2 2222. 7:11-16])

5 हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की,  
 और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी।  
 6 क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन  
 ठहरेगा?  
 बलवन्तों के पुत्रों में से कौन है जिसके साथ यहोवा की  
 उपमा दी जाएगी?  
 7 परमेश्वर पवित्र लोगों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा  
 के योग्य,  
 और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य  
 है। (2 [22222222. 1:10, 222. 76:7,11])  
 8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,  
 हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है?  
 तेरी सच्चाई तो तेरे चारों ओर है!

9 समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है;  
 जब उसके तरंग उठते हैं, तब तू उनको शान्त कर देता  
 है।  
 10 तूने रहब को घात किए हुए के समान कुचल डाला,  
 और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल से तितर-बितर  
 किया है। ([222222 1:51, 2222. 51:9])  
 11 आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है;  
 जगत और जो कुछ उसमें है, उसे तू ही ने स्थिर किया  
 है। (1 [222222. 10:26, 222. 24:1,2])  
 12 उत्तर और दक्षिण को तू ही ने सिरजा;  
 ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं।  
 13 तेरी भुजा बलवन्त है;  
 तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दाहिना हाथ प्रबल है।  
 14 तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है;  
 करुणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती है।  
 15 क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार  
 को पहचानता है;  
 हे यहोवा, वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं,  
 16 वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं,  
 और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं।  
 17 क्योंकि तू उनके बल की शोभा है,  
 और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊँचा करेगा।  
 18 क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की ओर से है,  
 हमारा राजा इस्राएल के पवित्र की ओर से है।  
 19 एक समय तूने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें की;  
 और कहा, “मैंने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा  
 है,  
 और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है।  
 20 मैंने अपने दास दाऊद को लेकर,  
 अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।  
 ([22222222. 13:22])  
 21 मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा,  
 और मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी।  
 22 शत्रु उसको तंग करने न पाएगा,  
 और न कुटिल जन उसको दुःख देने पाएगा।  
 23 मैं उसके शत्रुओं को उसके सामने से नाश करूँगा,  
 और उसके बैरियों पर विपत्ति डालूँगा।  
 24 परन्तु मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेंगी,  
 और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊँचा हो जाएगा।  
 25 मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे  
 और महानदों को उसके दाहिने हाथ के नीचे कर दूँगा।

† 88:15 [2222 22 22 22222]: मैं उन बातों को सहन कर रहा हूँ जिनसे भयभीत हो जाता हूँ या जो मेरे मन में भय उत्पन्न करती हैं; अर्थात् मृत्यु का भय। \* 89:4 [2222 22222 2222 22 2222 222222 22222222]: अर्थात् सिंहासन पर उसके उत्तराधिकारी सदैव बैठेंगे। प्रतिज्ञा यह है कि उसके सिंहासन पर बैठने से एक भी नहीं चूकेगा।













9 यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा।  
(**2222222. 17:31**)

## 99

**22222222 22 2222 2222222222**

1 यहोवा राजा हुआ है; देश-देश के लोग काँप उठें! वह करूबों पर विराजमान है; पृथ्वी डोल उठे!  
(**222222. 11:18, 222222. 19:6**)

2 यहोवा सियोन में महान है; और वह देश-देश के लोगों के ऊपर प्रधान है।  
3 वे तेरे महान और भययोग्य नाम का धन्यवाद करें! वह तो पवित्र है।  
4 राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल रखती है, तू ही ने सच्चाई को स्थापित किया; न्याय और धर्म को याकूब में तू ही ने चालू किया है।  
5 हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो; और उसके चरणों की चौकी के सामने दण्डवत् करो! वह पवित्र है!

6 उसके याजकों में मूसा और हारून, और उसके प्रार्थना करनेवालों में से **222222 222222 22 222222222 22\***, और वह उनकी सुन लेता था।

7 वह बादल के खम्भे में होकर उनसे बातें करता था; और वे उसकी चितौनियों और उसकी दी हुई विधियों पर चलते थे।

8 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू उनकी सुन लेता था; तू उनके कामों का पलटा तो लेता था तो भी उनके लिये क्षमा करनेवाला परमेश्वर था।

9 हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है!

## 100

**2222222222 22 22222222 22 2222**

धन्यवाद का भजन

1 हे सारी पृथ्वी के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो!  
2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो!  
जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!

\* **99:6** **222222 222222 22 22222222 22**: कहने का अर्थ है कि सब स्तुति करें, पुरोहित भी और आम जनता भी। मूसा और हारून अतीतकाल में प्रमुख थे, उसी प्रकार शमूएल पुरोहितीय वर्ग से अलग एक मनुष्य था। \* **100:3** **22 22222 222222, 22 22222 22222 22 22222222 2222**: जिस प्रकार एक चरवाहा अपने वृन्द का स्वामी होता है, जिस प्रकार चरवाहा अपने वृन्द की रक्षा करता है और उनके लिए प्रावधान करता है, उसी प्रकार परमेश्वर हमारी रक्षा करता है और हमारी सुधि लेता है। \* **101:3** **2222 22222 2222 2222 22 222222 2 222222222**: अच्छे काम से अभिप्राय है, निकम्मे, बुरे, दुष्टता के काम। उसका लक्ष्य दुष्टता का नहीं है वह पल भर के लिए भी दुष्टता के काम को नहीं देखेगा। † **101:5** **22222 22222 2222222222 22222222**: अर्थात् मैं उसे अपने से अलग कर दूँगा; मैं उसके साथ काम नहीं करूँगा। ऐसे किसी को भी वह घर में या सेवा में नहीं रखेगा।

3 निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है उसी ने हमको बनाया, और हम उसी के हैं;  
**22 22222 222222, 22 22222 22222 22 22222222 2222\***।

4 उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!  
5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

## 101

**2222222222222222 22222 22222222 22 22222222**

दाऊद का भजन

1 मैं करुणा और न्याय के विषय गाऊँगा; हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊँगा।  
2 मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूँगा।  
तू मेरे पास कब आएगा?  
मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलूँगा;

3 **2222 22222 2222 2222 22 2222222 2 2222222222\***। मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हूँ; ऐसे काम में मैं न लगूँगा।

4 टेढ़ा स्वभाव मुझसे दूर रहेगा; मैं बुराई को जानूँगा भी नहीं।

5 जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए, **22222 2222 22222222222 2222222222\***; जिसकी आँखें चढ़ी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहूँगा।

6 मेरी आँखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें; जो खरे मार्ग पर चलता है वही मेरा सेवक होगा।

7 जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे सामने बना न रहेगा।

8 प्रति भोर, मैं देश के सब दुष्टों का सत्यानाश किया करूँगा, ताकि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूँ।

## 102

दीन जन की उस समय की प्रार्थना जब वह दुःख का मारा

अपने शोक की बातें यहोवा के सामने खोलकर कहता हो

1 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन;  
मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे!

2 मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझसे न छिपा ले;  
अपना कान मेरी ओर लगा;  
जिस समय मैं पुकारूँ, उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले!

3 क्योंकि मेरे दिन धुएँ के समान उड़े जाते हैं,  
और मैं जंगल के धनेश के समान हो गया हूँ,  
मैं उजड़े स्थानों के उल्लू के समान बन गया हूँ।

4 मेरा मन झुलसी हुई घास के समान सूख गया है;  
और मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ।

5 कराहते-कराहते मेरी चमड़ी हड्डियों में सट गई है।

6 मैं जंगल के धनेश के समान हो गया हूँ,  
मैं उजड़े स्थानों के उल्लू के समान बन गया हूँ।

7 मैं पड़ा-पड़ा जागता रहता हूँ और गौरों के समान हो  
गया हूँ

जो छत के ऊपर अकेला बैठता है।

8 मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई करते हैं,  
जो मेरे विरुद्ध ठट्टा करते हैं,  
वह मेरे नाम से श्राप देते हैं।

9 क्योंकि मैंने रोटी के समान राख खाई और आँसू  
मिलाकर पानी पीता हूँ।

10 यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ है,  
क्योंकि तूने मुझे उठाया, और फिर फेंक दिया है।

11 मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है;  
और मैं आप घास के समान सूख चला हूँ।

12 परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान रहेगा;  
और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है,  
वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।

13 तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा;  
क्योंकि उस पर दया करने का  
मैं उठकर सिय्योन पर दया करेगा;  
क्योंकि उस पर दया करने का

14 क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरों को चाहते हैं,  
और उसके खंडहरों की धूल पर तरस खाते हैं।

15 इसलिए जाति-जाति यहोवा के नाम का भय मानेंगी,  
और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप से डरेंगे।

\* 102:3 प्रतीत होता है मानों कष्टों के कारण उसके शरीर का सबसे अधिक टोस एवं महत्त्वपूर्ण भाग उसकी हड्डियाँ पिघल गई और अस्तित्व में ही नहीं रही। † 102:13 कहने का अर्थ है कि उस पर कृपा करने का या उसके कष्टों के अन्त का समय निश्चित किया हुआ था। ‡ 102:23 ऐसा प्रतीत होता था कि वह मेरे जीवन का अन्त करने और मुझे कब्र में पहुँचाने पर है। भजनकार को पूर्ण विश्वास था कि वह मर जाएगा।

16 क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को फिर बसाया है,  
और वह अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है;

17 वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुँह करता है,  
और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता।

18 यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी,  
ताकि एक जाति जो उत्पन्न होगी, वह यहोवा की स्तुति  
करे।

19 क्योंकि यहोवा ने अपने ऊँचे और पवित्रस्थान से  
दृष्टि की;

स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देखा है,

20 ताकि बन्दियों का कराहना सुने,

और घात होनेवालों के बन्धन खोले;

21 तब लोग सिय्योन में यहोवा के नाम का वर्णन करेंगे,  
और यरूशलेम में उसकी स्तुति की जाएगी;

22 यह उस समय होगा जब देश-देश,

और राज्य-राज्य के लोग यहोवा की उपासना करने को  
इकट्ठे होंगे।

23 उसने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर,

मेरे बल और

24 मैंने कहा, “हे मेरे परमेश्वर, मुझे आधी आयु में न  
उठा ले,

तेरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे!”

25 आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली,

और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।

26 वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा;

और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा।

तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह मिट जाएगा;

27 परन्तु तू वहीं है,

और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।

28 तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी;

और उनका वंश तेरे सामने स्थिर रहेगा।

## 103

दाऊद का भजन

1 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह;

और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य

कहे!

2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह,

और उसके किसी उपकार को न भूलना।

3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता,

और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,

4 [२२२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२],  
[२२२२ २२]\*,

और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बाँधता है,  
5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है,

जिससे तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है।

6 यहोवा सब पिसे हुआँ के लिये  
धर्म और न्याय के काम करता है।

7 उसने मूसा को अपनी गति,  
और इस्राएलियों पर अपने काम प्रगट किए। (२२२.  
147:19)

8 यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप  
करनेवाला और अति करुणामय है (२२२.  
86:15, २२२. 145:8)

9 [२२ २२२२२२२ २२२२-२२२२२२ २२२२२ २ २२२२२२]\*,  
न उसका क्रोध सदा के लिये भड़का रहेगा।

10 उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं  
किया,  
और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमको बदला  
दिया है।

11 जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है,  
वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।

12 उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है,  
उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया  
है।

13 जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है,  
वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।

14 क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है;  
और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है।

15 मनुष्य की आयु घास के समान होती है,  
वह मैदान के फूल के समान फूलता है,

16 जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता,  
और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।

17 परन्तु यहोवा की करुणा उसके डरवैयों पर युग-युग,  
और उसका धर्म उनके नाती-पोतों पर भी प्रगट होता  
रहता है, (२२२२२ 1:50)

18 अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते  
और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं।

19 यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है,  
और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।

20 हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो,

और [२२२२ २२२ २२ २२२२२] और पूरा करते हो,  
उसको धन्य कहो!

21 हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके सेवकों,  
तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!

22 हे यहोवा की सारी सृष्टि,  
उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो।  
हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

## 104

[२२२२२२२२२२२२ २२ २२२२२२२]

1 हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

हे मेरे परमेश्वर यहोवा,  
तू अत्यन्त महान है!

तू वैभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहने हुए है,

2 तू उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है,  
और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है,

3 तू अपनी अटारियों की कड़ियाँ जल में धरता है,  
और मेघों को अपना रथ बनाता है,

और पवन के पंखों पर चलता है,  
4 तू पवनों को अपने दूत,  
और धधकती आग को अपने सेवक बनाता है।

(२२२२२२. 1:7)

5 तूने पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थिर किया है,  
ताकि वह कभी न डगमगाए।

6 तूने उसको गहरे सागर से ढाँप दिया है जैसे वस्त्र से;  
जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया।

7 तेरी घुड़की से वह भाग गया;

तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह  
गया।

8 वह पहाड़ों पर चढ़ गया, और तराइयों के मार्ग से उस  
स्थान में उतर गया

जिसे तूने उसके लिये तैयार किया था।

9 तूने एक सीमा ठहराई जिसको वह नहीं लाँघ सकता  
है,

और न लौटकर स्थल को ढाँप सकता है।

10 [२२ २२२२२२२२ २२२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२]\*;  
वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं,

11 उनसे मैदान के सब जीव-जन्तु जल पीते हैं;  
जंगली गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं।

12 उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करते,

\* 103:4 [२२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२ २२२२ २२ २२२ २२२२ २२]: संकट में मृत्यु से बचा लेता है या रोग के कारण मरने से बचाता है।

† 103:9 [२२ २२२२२२२ २२२-२२२२२२ २२२२ २ २२२२२]: झिड़केगा, विरोध करेगा, संघर्ष करेगा। वह मनुष्यों से सदैव संघर्ष नहीं करेगा, अप्रसन्न नहीं होगा। ‡ 103:20 [२२२२ २२२ २२ २२२२२]: जो सदैव उसकी वाणी सुनते हैं जो उसकी आज्ञा नहीं टालते। \* 104:10 [२२ २२२२२२२ २२२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२]: यद्यपि पानी समुद्र में भरता है, परमेश्वर ने फिर भी ध्यान रखा है कि पृथ्वी सूखी, निर्जल और ऊसर न रहे। उसने उसकी सींचाई कि व्यवस्था की है।

और डालियों के बीच में से बोलते हैं। (13:32)

13 तू अपनी अटारियों में से पहाड़ों को सींचता है, तेरे कामों के फल से पृथ्वी तृप्त रहती है।

14 तू पशुओं के लिये घास, और मनुष्यों के काम के लिये अन्न आदि उपजाता है, और इस रीति भूमि से वह भोजन-वस्तुएँ उत्पन्न करता है

15 और दाखमधु जिससे मनुष्य का मन आनन्दित होता है,

और तेल जिससे उसका मुख चमकता है, और अन्न जिससे वह सम्भल जाता है।

16 यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं, अर्थात् लबानोन के देवदार जो उसी के लगाए हुए हैं।

17 उनमें चिड़ियाँ अपने घोंसले बनाती हैं; सारस का बसेरा सनोवर के वृक्षों में होता है।

18 ऊँचे पहाड़ जंगली बकरों के लिये हैं; और चट्टानें शापानों के शरणस्थान हैं।

19 सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है।

20 तू अंधकार करता है, तब रात हो जाती है; जिसमें वन के सब जीव-जन्तु घूमते-फिरते हैं।

21 जवान सिंह अहेर के लिये गर्जते हैं, और परमेश्वर से अपना आहार माँगते हैं।

22 सूर्य उदय होते ही वे चले जाते हैं और अपनी माँदों में विश्राम करते हैं।

23 तब मनुष्य अपने काम के लिये और संध्या तक परिश्रम करने के लिये निकलता है।

24 हे यहोवा, तेरे काम अनगिनत हैं! इन सब वस्तुओं को तूने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है।

25 इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है, और उसमें अनगिनत जलचर जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं।

26 उसमें जहाज भी आते-जाते हैं, और लिब्यातान भी जिसे तूने वहाँ खेलने के लिये बनाया है।

27 इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया करे।

28 तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं;

तू अपनी मुट्टी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं।

29 तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं; तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।

30 फिर तू अपनी ओर से साँस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं;

और यहावा की महिमा सदाकाल बनी रहे,

यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे!

32 उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी काँप उठती है, और उसके छूते ही पहाड़ों से धुआँ निकलता है।

33 मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूँगा; जब तक मैं बना रहूँगा तब तक अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूँगा।

34 मेरे सोच-विचार उसको प्रिय लगे, क्योंकि मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूँगा।

35 पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएँ, और दुष्ट लोग आगे को न रहें!

हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह! यहोवा की स्तुति करो!

## 105

यहोवा का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो,

देश-देश के लोगों में उसके कामों का प्रचार करो!

2 उसके लिये गीत गाओ, उसके लिये भजन गाओ, उसके सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो!

3 उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो; यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो!

4 यहोवा और उसकी सामर्थ्य को खोजो, उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो!

5 उसके किए हुए आश्चर्यकर्मों को स्मरण करो, उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो!

6 हे उसके दास अब्राहम के वंश, हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो!

7 वही हमारा परमेश्वर यहोवा है; पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं।

8 वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है, यह वही वचन है जो उसने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है;

9 वही वाचा जो उसने अब्राहम के साथ बाँधी,

† 104:19 सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है। ‡ 104:30 पृथ्वी को निर्जन नहीं रखा गया है। एक पीढ़ी समाप्त होती है तो दूसरी पीढ़ी आ जाती है।



और उसके विषय में उसने इसहाक से शपथ खाई,  
(1:72,73)

10 और उसी को उसने याकूब के लिये विधि करके,  
और इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके  
दृढ़ किया,

11 “मैं कनान देश को तुझी को दूँगा, वह बाँट में तुम्हारा  
निज भाग होगा।”

12 उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे, वरन् बहुत ही  
थोड़े,

और उस देश में परदेशी थे।

13 वे एक जाति से दूसरी जाति में,  
और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे;

14 परन्तु उसने किसी मनुष्य को उन पर अत्याचार करने  
न दिया;

और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था,

15 “\*  
और न मेरे नबियों की हानि करो!”

16 फिर उसने उस देश में अकाल भेजा,  
और अन्न के सब आधार को दूर कर दिया।

17 उसने यूसुफ नामक एक पुरुष को उनसे पहले भेजा  
था,

जो दास होने के लिये बेचा गया था।

18 लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर उसे दुःख  
दिया;

वह लोहे की साँकलों से जकड़ा गया;

19 जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई

तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।

20 तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया,

और देश-देश के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन  
खुलवाए;

21 उसने उसको अपने भवन का प्रधान  
और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया,

(7:10)

22 कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार  
नियंत्रित करे

और पुरनियों को ज्ञान सिखाए।

23 फिर इस्राएल मिस्र में आया;

और याकूब हाम के देश में रहा।

24 तब उसने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया,

और उसके शत्रुओं से अधिक बलवन्त किया।

25 उसने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया,

कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने,

और उसके दासों से छल करने लगे।

26 उसने अपने दास मूसा को,

और अपने चुने हुए हारून को भेजा।

27 उन्होंने मिस्रियों के बीच उसकी ओर से भाँति-भाँति  
के चिन्ह,

और हाम के देश में चमत्कार दिखाए।

28 उसने अंधकार कर दिया, और अधियारा हो गया;

और उन्होंने उसकी बातों को न माना।

29 उसने मिस्रियों के जल को लहू कर डाला,

और मच्छलियों को मार डाला।

30 मेंढक उनकी भूमि में वरन् उनके राजा की कोठरियों  
में भी भर गए।

31 उसने आज्ञा दी, तब डांस आ गए,

और उनके सारे देश में कुटकियाँ आ गईं।

32 उसने उनके लिये जलवृष्टि के बदले ओले,

और उनके देश में धधकती आग बरसाई।

33 और उसने उनकी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों  
को

वरन् उनके देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला।

34 उसने आज्ञा दी तब अनगिनत टिड्डियाँ, और कीड़े  
आए,

35 और उन्होंने उनके देश के सब अन्न आदि को खा  
डाला;

और उनकी भूमि के सब फलों को चट कर गए।

36 उसने उनके देश के सब पहिलौठों को,

उनके पौरुष के सब पहले फल को नाश किया।

37 तब वह इस्राएल को सोना चाँदी दिलाकर निकाल  
लाया,

और उनमें से कोई निर्बल न था।

38 उनके जाने से मिस्री आनन्दित हुए,

क्योंकि उनका डर उनमें समा गया था।

39 उसने छाया के लिये बादल फैलाया,

और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट की।

40 उन्होंने माँगा तब उसने बटेरें पहुँचाई,

और उनको स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया। (6:31)

6:31

41 उसने चट्टान फाड़ी तब पानी बह निकला;

और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी।

42 †  
‡

43 वह अपनी प्रजा को हर्षित करके

और अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल  
लाया।

44 और उनको जाति-जाति के देश दिए;

\* 105:15 यहाँ अभिषिक्त शब्द का अर्थ है परमेश्वर ने उन्हें अपनी सेवा के लिए पृथक कर दिया है।

† 105:42 ‡ अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा विश्वासयोग्य है और उसने अब्राहम के वंशजों को आवश्यकता के समय स्मरण रखा है।









- 24 उपवास करते-करते मेरे घुटने निर्बल हो गए;  
और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूँ।  
25 मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है;  
जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलाते हैं। (10:12-13, 20:42-43)  
26 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर!  
अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर!  
27 जिससे वे जाने कि यह तेरा काम है,  
और हे यहोवा, तूने ही यह किया है!  
28 वे मुझे कोसते तो रहें, परन्तु तू आशीष दे!  
वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास आनन्दित  
हो! (1 4:12)  
29 मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहनाया जाए,  
और वे अपनी लज्जा को कम्बल के समान ओढ़ें!  
30 मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूँगा,  
और बहुत लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।  
31 क्योंकि वह दरिद्र की दाहिनी ओर खड़ा रहेगा,  
कि उसको प्राणदण्ड देनेवालों से बचाए।

## 110

दाऊद का भजन

- 1 मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, “तू मेरे दाहिने ओर  
बैठ,  
जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी  
न कर दूँ।” (10:12,13, 20:42,43)  
2 तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिंघ्योन से  
बढ़ाएगा।  
तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।  
3 तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि  
बनते हैं;  
तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान,  
और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास  
हैं।  
4 यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा,  
“*1*” (7:21, 20:42,43)  
5 प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकर  
अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा। (143:5)

\* 110:4 *1* अर्थात् वह मलिकिसिदक के समान पुरोहित था जैसा वह पुरोहित था वैसा ही पुरोहित होगा। \* 111:6 *1* उसके कार्यों का प्रताप या उसके कामों में निहित सामर्थ्य। यहाँ जिस प्रताप और सामर्थ्य की चर्चा की गई है वह मिश्र के विनाश और कनान की जातियों के विनाश में कार्यकारी सामर्थ्य है। \* 112:2 *1* उसकी सन्तान, उसके वंशज अर्थात् वे समृद्ध होंगे, सम्मानित होंगे, मनुष्यों के मध्य अपनी पहचान रखेंगे।

- 6 वह जाति-जाति में न्याय चुकाएगा, रणभूमि शवों से  
भर जाएगी;  
वह लम्बे चौड़े देशों के प्रधानों को चूर चूरकर देगा  
7 वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा  
और तब वह विजय के बाद अपने सिर को ऊँचा करेगा।

## 111

*1*

- 1 यहोवा की स्तुति करो। मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में  
और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद  
करूँगा।  
2 यहोवा के काम बड़े हैं,  
जितने उनसे प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं।  
(143:5)  
3 उसके काम वैभवशाली और ऐश्वर्यमय होते हैं,  
और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा।  
4 उसने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण कराया है;  
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है। (86:5)  
5 उसने अपने डरवैयों को आहार दिया है;  
वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा।  
6 उसने अपनी प्रजा को जाति-जाति का भाग देने के  
लिये,  
*1* \*।  
7 सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं;  
उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं,  
8 वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे,  
वे सच्चाई और सिधाई से किए हुए हैं।  
9 उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है;  
उसने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है।  
उसका नाम पवित्र और भययोग्य है। (149:68)  
10 बुद्धि का मूल यहोवा का भय है;  
जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं,  
उनकी समझ अच्छी होती है।  
उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।

## 112

*1*

- 1 यहोवा की स्तुति करो!  
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है,  
और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है!

- 2 [२२२२ २२२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२]\*;  
सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी।  
3 उसके घर में धन-सम्पत्ति रहती है;  
और उसका धर्म सदा बना रहेगा।  
4 सीधे लोगों के लिये अंधकार के बीच में ज्योति उदय  
होती है;  
वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है।  
5 जो व्यक्ति अनुग्रह करता और उधार देता है,  
और ईमानदारी के साथ अपने काम करता है, उसका  
कल्याण होता है।  
6 वह तो सदा तक अटल रहेगा;  
धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा।  
7 वह बुरे समाचार से नहीं डरता;  
उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है।  
8 उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिए वह न डरेगा,  
वरन् अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा।  
9 [२२२२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२२२ २२ २२२ २२२२]\*,  
उसका धर्म सदा बना रहेगा;  
और उसका सींग आदर के साथ ऊँचा किया जाएगा।  
(2 [२२२२]. 9:9)  
10 दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा;  
वह दाँत पीस-पीसकर गल जाएगा;  
दुष्टों की लालसा पूरी न होगी। ([२२२२२२२]. 7:54)

## 113

[२२२२२२ २२ २२२२२ २२२]

- 1 यहोवा की स्तुति करो!  
हे यहोवा के दासों, स्तुति करो,  
यहोवा के नाम की स्तुति करो!  
2 यहोवा का नाम  
अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाएँ!  
3 उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक,  
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।  
4 यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है,  
और उसकी महिमा आकाश से भी ऊँची है।  
5 हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है?  
वह तो ऊँचे पर विराजमान है,  
6 और आकाश और पृथ्वी पर,  
दृष्टि करने के लिये झुकता है।  
7 [२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२],

† 112:9 [२२२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२२ २२२२]: वह उदार है वह मुक्त हस्त दान देता है। वह आवश्यकता ग्रस्त और अभागों में बाँट देता है। \* 113:7 [२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२, ... २२२२२ २२२२ २२२२ २२]: जीवन की तुच्छ अवस्था से वह उन्हें धन-सम्पदा और पद-प्रतिष्ठा में ले आता है। \* 114:8 [२२ २२२२२२२ २२ २२ २२ २२२२, ... २२२ २२२२२ २२]: संदर्भ उस समय की घटना का है जब चट्टान से पानी निकलकर वहाँ तालाब बन गया था। \* 115:4 [२२ २२२२२ २२ २२२२२२]: 115:4-8 में मूर्तियों में विश्वास करने की निस्सारता की पराकाष्ठा और इस्राएल को सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने का वर्णन किया गया है।

- [२२ २२२२२२ २२ २२२२ २२ २२ २२२२२ २२२२  
२२२२ २२]\*,  
8 कि उसको प्रधानों के संग,  
अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए। ([२२२२२२].  
36:7)  
9 वह बाँझ को घर में बाल-बच्चों की आनन्द करनेवाली  
माता बनाता है।  
यहोवा की स्तुति करो!

## 114

[२२२ २२ २२२]

- 1 जब इस्राएल ने मिस्र से, अर्थात् याकूब के घराने ने  
अन्य भाषावालों के मध्य से कूच किया,  
2 तब यहूदा यहोवा का पवित्रस्थान  
और इस्राएल उसके राज्य के लोग हो गए।  
3 समुद्र देखकर भागा,  
यरदन नदी उलटी बही। ([२२]. 77:16)  
4 पहाड़ मेढों के समान उछलने लगे,  
और पहाड़ियाँ भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछलने  
लगीं।  
5 हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा?  
और हे यरदन तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बही?  
6 हे पहाड़ों, तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों के समान,  
और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़-बकरियों  
के बच्चों के समान उछलीं?  
7 हे पृथ्वी प्रभु के सामने,  
हाँ, याकूब के परमेश्वर के सामने धरधरा। ([२२]. 96:9)  
8 [२२ २२२२२२२ २२ २२ २२ २२२],  
[२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२ २२ २२२२ २२२ २२२२२२  
२२]\*।

## 115

[२२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२२ २२  
२२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२२२२२]

- 1 हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही  
नाम की महिमा,  
अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर।  
2 जाति-जाति के लोग क्यों कहने पाएँ,  
“उनका परमेश्वर कहाँ रहा?”  
3 हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में हैं;  
उसने जो चाहा वही किया है।  
4 [२२ २२२२२२ २२ २२२२२२२]\* सोने चाँदी ही की तो हैं,

वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं।

5 उनके मुँह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकती;

उनके आँखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकती।

6 उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकती;

उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सूँघ नहीं सकती।

7 उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकती;

उनके पाँव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकती;

और उनके कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकती।

(**116: 135:16,17**)

8 जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं;

और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे।

9 हे इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रख!

तेरा सहायक और ढाल वही है।

10 हे हारून के घराने, यहोवा पर भरोसा रख!

तेरा सहायक और ढाल वही है।

11 हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा पर भरोसा रखो!

तुम्हारा सहायक और ढाल वही है।

12 यहोवा ने हमको स्मरण किया है; वह आशीष देगा;

वह इस्राएल के घराने को आशीष देगा;

वह हारून के घराने को आशीष देगा।

13 **116:13 116:14 116:15 116:16**

जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा। (**116:**

**128:1**)

14 यहोवा तुम को और तुम्हारे वंश को भी अधिक बढ़ाता जाए।

15 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है,

उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो।

16 स्वर्ग तो यहोवा का है,

परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।

17 मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं,

वे तो यहोवा की स्तुति नहीं कर सकते,

18 परन्तु हम लोग यहोवा को

अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे।

यहोवा की स्तुति करो!

## 116

**116:1 116:2 116:3 116:4 116:5 116:6 116:7 116:8 116:9 116:10 116:11 116:12 116:13 116:14 116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**

1 मैं प्रेम रखता हूँ, इसलिए कि यहोवा ने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।

2 उसने जो मेरी ओर कान लगाया है,

† **115:13 115:14 115:15 115:16**: बड़ों के साथ छोटे, बच्चे और वयस्क, कंगाल और धनवान, अज्ञानी और ज्ञानवान, अकिंचन जन और गौरवान्वित जन्म एवं परिस्थिति के लोग। \* **116:3 116:4 116:5 116:6 116:7 116:8 116:9 116:10 116:11 116:12 116:13 116:14 116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**: जीवन में संग्रह के प्रयत्न में हम जिन बातों में

चूक: जाते हैं, हम मृत्यु से सम्बंधित संकटों और दुःखों को पाने में नहीं चूकते हैं। हम जहाँ भी जाएं वे हमारे मार्ग में हैं, हम उनसे बच नहीं सकते।

† **116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**: भक्तों की मृत्यु मूल्यवान होती है। परमेश्वर उसे महत्त्वपूर्ण मानता है अर्थात् वह महान योजनाओं से जुड़ी होती है और उसके द्वारा महान उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

इसलिए मैं जीवन भर उसको पुकारा करूँगा।

3 मृत्यु की रस्सियाँ मेरे चारों ओर थीं;

मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था;

**116:1 116:2 116:3 116:4 116:5 116:6 116:7 116:8 116:9 116:10 116:11 116:12 116:13 116:14 116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**\*। (**116:**

**18:4,5**)

4 तब मैंने यहोवा से प्रार्थना की,

“हे यहोवा, विनती सुनकर मेरे प्राण को बचा ले!”

5 यहोवा करुणामय और धर्मी है;

और हमारा परमेश्वर दया करनेवाला है।

6 यहोवा भोलों की रक्षा करता है;

जब मैं बलहीन हो गया था, उसने मेरा उद्धार किया।

7 हे मेरे प्राण, तू अपने विश्रामस्थान में लौट आ;

क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है।

8 तूने तो मेरे प्राण को मृत्यु से,

मेरी आँख को आँसू बहाने से,

और मेरे पाँव को ठोकर खाने से बचाया है।

9 मैं जीवित रहते हुए,

अपने को यहोवा के सामने जानकर नित चलता रहूँगा।

10 मैंने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास की कसौटी पर

कसकर कहा है,

“मैं तो बहुत ही दुःखित हूँ;” (**2 116:1 116:2 116:3 116:4 116:5 116:6 116:7 116:8 116:9 116:10 116:11 116:12 116:13 116:14 116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**)

11 मैंने उतावली से कहा,

“सब मनुष्य झूठे हैं।” (**116:1 116:2 116:3 116:4 116:5 116:6 116:7 116:8 116:9 116:10 116:11 116:12 116:13 116:14 116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**)

12 यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं,

उनके बदले मैं उसको क्या दूँ?

13 मैं उद्धार का कटोरा उठाकर,

यहोवा से प्रार्थना करूँगा,

14 मैं यहोवा के लिये अपनी मन्त्रों, सभी की दृष्टि में

प्रगट रूप में, उसकी सारी प्रजा के सामने पूरी

करूँगा।

15 **116:1 116:2 116:3 116:4 116:5 116:6 116:7 116:8 116:9 116:10 116:11 116:12 116:13 116:14 116:15 116:16 116:17 116:18 116:19**

16 हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास हूँ;

मैं तेरा दास, और तेरी दासी का पुत्र हूँ।

तूने मेरे बन्धन खोल दिए हैं।

17 मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा,

और यहोवा से प्रार्थना करूँगा।

18 मैं यहोवा के लिये अपनी मन्त्रों,

प्रगट में उसकी सारी प्रजा के सामने

19 यहोवा के भवन के आँगनों में,



हे यरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूँगा।  
यहोवा की स्तुति करो!

## 117

117:1-11

1 हे जाति-जाति के सब लोगों, यहोवा की स्तुति करो!  
हे राज्य-राज्य के सब लोगों, उसकी प्रशंसा करो!  
(117:1. 15:11)

2 क्योंकि उसकी करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है;  
और 117:1-11 117:1-11 117:1-11\*  
यहोवा की स्तुति करो!

## 118

118:1-11

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;  
और उसकी करुणा सदा की है!

2 इस्राएल कहे,  
उसकी करुणा सदा की है।

3 हारून का घराना कहे,  
उसकी करुणा सदा की है।

4 यहोवा के डरवैये कहे,  
उसकी करुणा सदा की है।

5 118:1-11 118:1-11 118:1-11\*,  
परमेश्वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौड़े स्थान में पहुँचाया।

6 यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूँगा।  
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? (118:1. 8:31,  
118:1-11. 13:6)

7 यहोवा मेरी ओर मेरे सहायक है;  
मैं अपने बैरियों पर दृष्टि कर सन्तुष्ट होऊँगा।

8 यहोवा की शरण लेना,  
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है।

9 यहोवा की शरण लेना,  
प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है।

10 सब जातियों ने मुझ को घेर लिया है;  
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर  
डालूँगा।

11 उन्होंने मुझ को घेर लिया है, निःसन्देह, उन्होंने मुझे  
घेर लिया है;  
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर  
डालूँगा।

12 उन्होंने मुझे मधुमक्खियों के समान घेर लिया है,

परन्तु काँटों की आग के समान वे बुझ गए;  
यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा!  
13 तूने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था, कि मैं गिर पड़ूँ,  
परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की।

14 परमेश्वर मेरा बल और भजन का विषय है;  
वह मेरा उद्धार ठहरा है।

15 धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की  
ध्वनि हो रही है,

यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है,  
16 यहोवा का दाहिना हाथ महान हुआ है,

यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है!  
17 118:1-11 118:1-11 118:1-11\*,  
और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूँगा।

18 परमेश्वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की है  
परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया। (2 118:1-11. 6:9,  
118:1-11. 12:10,11)

19 मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो,  
मैं उनमें प्रवेश करके यहोवा का धन्यवाद करूँगा।

20 यहोवा का द्वार यही है,  
इससे धर्मी प्रवेश करने पाएँगे। (118:1-11. 10:9)

21 हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा,  
क्योंकि तूने मेरी सुन ली है,

और मेरा उद्धार ठहर गया है।

22 राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था  
वही कोने का सिरा हो गया है। (1 118:1-11. 2:4, 118:1-11  
20:17)

23 यह तो यहोवा की ओर से हुआ है,  
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।

24 आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है;  
हम इसमें मगन और आनन्दित हों।

25 हे यहोवा, विनती सुन, उद्धार कर!  
हे यहोवा, विनती सुन, सफलता दे!

26 धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है!  
हमने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया  
है। (118:1-11 23:39, 118:1-11 13:35, 118:1-11  
11:9,10, 118:1-11 19:38)

27 यहोवा परमेश्वर है, और उसने हमको प्रकाश दिया  
है।

यज्ञपशु को वेदी के सींगों से रस्सियों से बाँधो!

28 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तेरा धन्यवाद  
करूँगा;

\* 117:2 117:1-11 117:1-11 117:1-11: परमेश्वर ने जो भी कहाँ है उसकी घोषणाएं, उसकी प्रतिज्ञाएँ, दया का उसका आश्वासन आदि। वे सभी देशों में जहाँ उनकी चर्चा है, अपरिवर्तनीय हैं। \* 118:5 118:1-11 118:1-11 118:1-11: संकटों के मध्य उसने परमेश्वर से प्रार्थना की और उसकी वाणी जो उसके दुःखों की गहराई से निकलती थी सुनी गई। † 118:17 118:1-11 118:1-11 118:1-11: स्पष्ट है कि भजनकार ने जान लिया था कि वह मर जाएगा या उसे मृत्यु के अवश्यभावी संकट की अनुभूति हो गई थी।

तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझको सराहूँगा।  
 29 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;  
 और उसकी करुणा सदा बनी रहेगी!

## 119

आलेफ

1 क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं,  
 और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं!  
 2 क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं,  
 और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं!  
 3 फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते,  
 वे उसके मार्गों में चलते हैं।  
 4 कि हम उसे यत्न से माने।  
 5 भला होता कि  
 तेरी विधियों को मानने के लिये मेरी चाल चलन दृढ़ हो  
 जाए!  
 6 तब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित्त लगाए रहूँगा,  
 और मैं लज्जित न होऊँगा।  
 7 जब मैं तेरे धर्ममय नियमों को सीखूँगा,  
 तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूँगा।  
 8 मैं तेरी विधियों को मानूँगा:  
 मुझे पूरी रीति से न तज!

बेथ

9 जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे?  
 तेरे वचन का पालन करने से।  
 10 मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूँ;  
 मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे!  
 11 मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है,  
 कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।  
 12 हे यहोवा, तू धन्य है;  
 मुझे अपनी विधियाँ सिखा!  
 13 तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन,  
 मैंने अपने मुँह से किया है।  
 14 मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से,  
 मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूँ।  
 15 मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा,  
 और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा।  
 16 मैं तेरी विधियों से सुख पाऊँगा;

और तेरे वचन को न भूलूँगा।

गिमेल

17 अपने दास का उपकार कर कि मैं जीवित रहूँ,  
 और मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की  
 अद्भुत बातें देख सकूँ।  
 19 मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूँ;  
 अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख!  
 20 मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण  
 हर समय खेदित रहता है।  
 21 तूने अभिमानियों को, जो श्रापित हैं, घुड़का है,  
 वे तेरी आज्ञाओं से भटके हुए हैं।  
 22 मेरी नामधराई और अपमान दूर कर,  
 क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूँ।  
 23 हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें करते  
 थे,  
 परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा।  
 24 तेरी चितौनियाँ मेरा सुखमूल  
 और मेरे मंत्री हैं।

दाल्थ

25 मैं धूल में पड़ा हूँ;  
 तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!  
 26 मैंने अपनी चाल चलन का तुझ से वर्णन किया है और  
 तूने मेरी बात मान ली है;  
 तू मुझ को अपनी विधियाँ सिखा!  
 27 अपने उपदेशों का मार्ग मुझे समझा,  
 तब मैं तेरे आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूँगा।  
 28 मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है;  
 तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!  
 29 मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर;  
 और कृपा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे।  
 30 मैंने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है,  
 तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाए रहता हूँ।  
 31 मैं तेरी चितौनियों में लौलीन हूँ,  
 हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे!  
 32 जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा,  
 तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूँगा।

हे

\* 119:4 उसके प्रत्येक नियम का पालन करना अनिवार्य है वरन् सदैव, हर परिस्थिति में उनका पालन किया जाए। † 119:17 इस काम में अनुग्रह के लिए वह पूर्णरूपेण परमेश्वर पर निर्भर था और उसने प्रार्थना की कि ऐसा जीवन सदा बना रहे कि वह परमेश्वर के वचनों का पालन करके उनका सम्मान करे।

33 हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग सिखा दे;  
तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूँगा।  
34 मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूँगा  
और पूर्ण मन से उस पर चलूँगा।  
35 अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला,  
क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूँ।  
36 मेरे मन को लोभ की ओर नहीं,  
अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे।  
37 [\[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]](#)  
[\[?\] \[?\]\[?\] \[?\];](#)  
तू अपने मार्ग में मुझे जिला।  
38 तेरा वादा जो तेरे भय माननेवालों के लिये है,  
उसको अपने दास के निमित्त भी पूरा कर।  
39 जिस नामधराई से मैं डरता हूँ, उसे दूर कर;  
क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं।  
40 देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूँ;  
अपने धर्म के कारण मुझ को जिला।

[\[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\]](#)

वाव  
41 हे यहोवा, तेरी करुणा और तेरा किया हुआ उद्धार,  
तेरे वादे के अनुसार, मुझ को भी मिले;  
42 तब मैं अपनी नामधराई करनेवालों को कुछ उत्तर दे  
सकूँगा,  
क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर है।  
43 मुझे अपने सत्य वचन कहने से न रोक  
क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है।  
44 तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार,  
सदा सर्वदा चलता रहूँगा;  
45 और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा करूँगा,  
क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है।  
46 और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के सामने  
भी करूँगा,  
और लज्जित न होऊँगा; ([\[?\] \[?\] 1:16](#))  
47 क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूँ,  
और मैं उनसे प्रीति रखता हूँ।  
48 मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिनमें मैं प्रीति रखता हूँ,  
हाथ फैलाऊँगा  
और तेरी विधियों पर ध्यान करूँगा।

[\[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\]](#)

जैन  
49 जो वादा तूने अपने दास को दिया है, उसे स्मरण कर,

क्योंकि तूने मुझे आशा दी है।  
50 मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है,  
क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैंने जीवन पाया है।  
51 अहंकारियों ने मुझे अत्यन्त ठट्टे में उड़ाया है,  
तो भी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।  
52 हे यहोवा, मैंने तेरे प्राचीन नियमों को स्मरण करके  
शान्ति पाई है।  
53 जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं,  
उनके कारण मैं क्रोध से जलता हूँ।  
54 जहाँ मैं परदेशी होकर रहता हूँ, वहाँ तेरी विधियाँ,  
मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।  
55 हे यहोवा, मैंने रात को तेरा नाम स्मरण किया,  
और तेरी व्यवस्था पर चला हूँ।  
56 यह मुझसे इस कारण हुआ,  
कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था।

[\[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\]](#)

हेथ

57 यहोवा मेरा भाग है;  
मैंने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है।  
58 मैंने पूरे मन से तुझे मनाया है;  
इसलिए अपने वादे के अनुसार मुझ पर दया कर।  
59 मैंने अपनी चाल चलन को सोचा,  
और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।  
60 मैंने तेरी आज्ञाओं के मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की  
है।  
61 मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया हूँ,  
तो भी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।  
62 तेरे धर्ममय नियमों के कारण  
मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूँगा।  
63 जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं,  
उनका मैं संगी हूँ।  
64 हे यहोवा, तेरी करुणा पृथ्वी में भरी हुई है;  
तू मुझे अपनी विधियाँ सिखा!

[\[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\]](#)

टेथ

65 हे यहोवा, तूने अपने वचन के अनुसार  
अपने दास के संग भलाई की है।  
66 मुझे भली विवेक-शक्ति और समझ दे,  
क्योंकि मैंने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है।  
67 उससे पहले कि मैं दुःखित हुआ, मैं भटकता था;

‡ 119:37 [\[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\] \[?\] \[?\]](#): व्यर्थ वस्तुओं अर्थात् निस्सार बातें, दुष्टता के कामों, वास्तविकता और सत्य के मार्ग से भटकाने वाली सब सम्भावित बातों से। § 119:67 [\[?\]\[?\]\[?\] \[?\] \[?\]\[?\] \[?\]\[?\] \[?\] \[?\] \[?\]\[?\]\[?\] \[?\]\[?\]](#): जब से में कष्टों में पड़ा उसका प्रभाव यह हुआ कि मैं भटकने नहीं पाया। उन्होंने मुझे कर्तव्य एवं पवित्रता के मार्ग में फिर से खड़ा कर दिया।







क्योंकि मेरी सारी चाल चलन तेरे सम्मुख प्रगट है।

१६९ हे यहोवा, मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे;

तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे!

१७० मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुँचे;

तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले।

१७१ मेरे मुँह से स्तुति निकला करे,  
क्योंकि तू मुझे अपनी विधियाँ सिखाता है।

१७२ मैं तेरे वचन का गीत गाऊँगा,  
क्योंकि तेरी सब आज्ञाएँ धर्ममय हैं।

१७३ तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहता है,  
क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों को अपनाया है।

१७४ हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूँ,

मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ।

१७५ मुझे जिला, और मैं तेरी स्तुति करूँगा,  
तेरे नियमों से मेरी सहायता हो।

१७६ मैं खोई हुई भेड़ के समान भटका हूँ;

तू अपने दास को ढूँढ ले,

क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया।

## 120

यात्रा का गीत

१ संकट के समय मैंने यहोवा को पुकारा,  
और उसने मेरी सुन ली।

२ हे यहोवा, झूठ बोलनेवाले मुँह से  
और छली जीभ से मेरी रक्षा कर।

३ हे छली जीभ,  
तुझको क्या मिले? और तेरे साथ और क्या अधिक  
किया जाए?

४ वीर के नोकीले तीर  
और झाऊ के अंगारे!

५ हाय, हाय, क्योंकि मुझे मेशोक में परदेशी होकर रहना  
पड़ा

और केदार के तम्बुओं में बसना पड़ा है!

६ बहुत समय से मुझ को मेल के बैरियों के साथ बसना  
पड़ा है।

७ मैं तो मेल चाहता हूँ;

परन्तु <sup>†</sup> ही, वे लड़ना चाहते हैं!

\* 120:7 <sup>†</sup> ही, वे लड़ना चाहते हैं; जब भी इसकी चर्चा करता हूँ, मैं जब भी अपनी दुःखित भावनाओं को व्यक्त करता हूँ, वे अनसुना करते हैं; उन्हें किसी बात से सन्तोष नहीं होता है। \* 121:3 <sup>†</sup> वह तुम्हें दृढ़ खड़ा रहने में सक्षम बनाएगा। उसकी शरण में तू सुरक्षित है। † 121:8 <sup>†</sup> अर्थात् हर जगह हर समय। \* 122:5 <sup>†</sup> जिन आसनों पर बैठकर न्याय किया जाता है। आज सिंहासन शब्द से समझा जाता है राजाओं के आसन।

## 121

यात्रा का गीत

१ मैं अपनी आँखें पूर्वतों की ओर उठाऊँगा।  
मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?

२ मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है,  
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

३ <sup>†</sup>,  
तेरा रक्षक कभी न ऊँचेगा।

४ सुन, इस्राएल का रक्षक,  
न ऊँचेगा और न सोएगा।

५ यहोवा तेरा रक्षक है;  
यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है।

६ न तो दिन को धूप से,  
और न रात को चाँदनी से तेरी कुछ हानि होगी।

७ यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा;  
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।

८ <sup>†</sup>  
†

## 122

दाऊद की यात्रा का गीत

१ जब लोगों ने मुझसे कहा, “आओ, हम यहोवा के भवन  
को चलें,”

तब मैं आनन्दित हुआ।

२ हे यरूशलेम, तेरे फाटकों के भीतर,  
हम खड़े हो गए हैं!

३ हे यरूशलेम, तू ऐसे नगर के समान बना है,  
जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं।

४ वहाँ यहोवा के गोत्र-गोत्र के लोग यहोवा के नाम का  
धन्यवाद करने को जाते हैं;

यह इस्राएल के लिये साक्षी है।

५ वहाँ तो <sup>†</sup>,  
दाऊद के घराने के लिये रखे हुए हैं।

६ यरूशलेम की शान्ति का वरदान माँगो,  
तेरे प्रेमी कुशल से रहें!

७ तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति,  
और तेरे महलों में कुशल होवे!

८ अपने भाइयों और संगियों के निमित्त,  
मैं कहूँगा कि तुझ में शान्ति होवे!

9 अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त,  
मैं तेरी भलाई का यत्न करूँगा।

## 123

दाऊद की यात्रा का गीत

1 हे स्वर्ग में विराजमान  
मैं अपनी आँखें तेरी ओर उठाता हूँ!  
2 देख, जैसे दासों की आँखें अपने स्वामियों के हाथ की  
ओर,  
और जैसे दासियों की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की  
ओर लगी रहती है,  
वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर उस  
समय तक लगी रहेंगी,  
जब तक वह हम पर दया न करे।  
3 हम पर दया कर, हे यहोवा, हम पर कृपा कर,  
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं।  
4 हमारा जीव सुखी लोगों के उपहास से,  
और **22222222 22 2222 22**\* बहुत ही भर  
गया है।

## 124

दाऊद की यात्रा का गीत

1 इस्राएल यह कहे,  
कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता,  
2 यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता  
जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की,  
3 तो **22 2222 222 222 22222 2222 2222\***,  
जब उनका क्रोध हम पर भड़का था,  
4 हम उसी समय जल में डूब जाते  
और धारा में बह जाते;  
5 उमड़ते जल में हम उसी समय ही बह जाते।  
6 धन्य है यहोवा,  
जिसने हमको उनके दाँतों तले जाने न दिया!  
7 हमारा जीव पक्षी के समान **222222222 22 222 22**  
**222 222†**;  
जाल फट गया और हम बच निकले!

\* **123:4** **222222222 22 2222 22**: जो पद में, अपनी स्थिति में, या अपनी भावनाओं में बड़े हैं। कहने का अर्थ है कि अपमान करनेवाले वे हैं जिनकी ओर मनुष्य आशा से निहारता हैं। \* **124:3** **22 2222 222 222 22222 2222 2222**: अर्थात्, वे ऐसे नष्ट हो जाते जैसे निगल लिए गए हों अर्थात् सम्पूर्ण विनाश हो जाता। † **124:7** **222222222 22 222 22 222 222**: ऐसा प्रतीत होता है कि शत्रु ने हमें पूर्णतः अपनी शक्ति के अधीन किया हुआ है परन्तु हम ऐसे बच गए जैसे पक्षी जाल टूटने पर बच जाता है। \* **125:2** **222 222222 22222 2222 22222 22 22222 22 22 2222 22222222 22 22 22**: जिस प्रकार यरूशलेम पहाड़ों के मध्य सुरक्षित है उसी प्रकार परमेश्वर की प्रजा परमेश्वर की सुरक्षा में है। \* **126:1** **22 222222 2222222222 22 22 22**: वह एक स्वप्न जैसा था कि हमें विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा हो गया है। वह ऐसा आश्चर्यजनक था, ऐसा सुहावना था, ऐसा आनन्द से भरा हुआ था कि हमें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह वास्तविक है। † **126:5** **22 22222 22222 222 2222 222**: बीज बोना एक परिश्रम का काम है और किसान पर ऐसा बोझ होता है कि वह रो देता है परन्तु जब फसल तैयार हो जाती है तब वह लवनी करके आनन्दित होता है।

8 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है,  
हमारी सहायता उसी के नाम से होती है।

## 125

दाऊद की यात्रा का गीत

1 जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं,  
वे सिय्योन पर्वत के समान हैं,  
जो टलता नहीं, वरन् सदा बना रहता है।  
2 जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं,  
**2222 22222222 222222 22222 222222 22 222222**  
**22 22 22 22222 22222222 22 2222 222222\***।  
3 दुष्टों का राजदण्ड धर्मियों के भाग पर बना न रहेगा,  
ऐसा न हो कि धर्मी अपने हाथ कुटिल काम की ओर  
बढ़ाएँ।  
4 हे यहोवा, भलों का  
और सीधे मनवालों का भला कर!  
5 परन्तु जो मुड़कर टेढ़े मार्गों में चलते हैं,  
उनको यहोवा अनर्थकारियों के संग निकाल देगा!  
इस्राएल को शान्ति मिले! (**222222. 2:15**)

## 126

दाऊद की यात्रा का गीत

1 जब यहोवा सिय्योन में लौटनेवालों को लौटा ले  
आया,  
तब **22 22222222 222222222222 22 22 22\***।  
2 तब हम आनन्द से हँसने  
और जयजयकार करने लगे;  
तब जाति-जाति के बीच में कहा जाता था,  
“यहोवा ने, इनके साथ बड़े-बड़े काम किए हैं।”  
3 यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं;  
और इससे हम आनन्दित हैं।  
4 हे यहोवा, दक्षिण देश के नालों के समान,  
हमारे बन्दियों को लौटा ले आ!  
5 **22 2222 222222 2222 22222 2222†**,  
**22 222222222 22222 2222 22222 22222222**।  
6 चाहे बोनवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए,



परन्तु वह फिर पुलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ  
निश्चय लौट आएगा। (127:21)

## 127

सुलैमान की यात्रा का गीत

1 यदि घर को यहोवा न बनाए,  
तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।  
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे,  
तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।  
2 तुम जो सवेरे उठते और देर करके विश्राम करते  
और कठोर परिश्रम की रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे  
लिये व्यर्थ ही है;  
क्योंकि वह अपने प्रियों को यों ही नींद प्रदान करता है।  
3 देखो, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है।  
4 जैसे वीर के हाथ में तीर,  
वैसे ही जवानी के बच्चे होते हैं।  
5 क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसने अपने तरकश को  
उन्से भर लिया हो!  
वह फाटक के पास अपने शत्रुओं से बातें करते संकोच न  
करेगा।

## 128

यात्रा का गीत

1 क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है,  
और तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा;  
2 तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा;  
तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा।  
3 तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी;  
तेरी मेज के चारों ओर तेरे बच्चे जैतून के पौधे के समान  
होंगे।  
4 सुन, जो पुरुष यहोवा का भय मानता हो,  
वह ऐसी ही आशीष पाएगा।  
5 और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता रहे!  
6 वरन् तू अपने नाती-पोतों को भी देखने पाए!  
इस्राएल को शान्ति मिले!

\* 127:3 वे प्रकृति की ओर से परमेश्वर की भक्ति का प्रतिफल हैं वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार आशीषें हैं। \* 128:1 परमेश्वर की आज्ञा और आदेशों के मार्ग। † 128:5

वह तुझे खेतों में और घरों में ही आशीष नहीं देगा परन्तु तेरी आशीषें सीधी सिंघुओं से आती प्रतीत होंगी। \* 129:3 यह रूपक ही भूमि जोतने का है उसमें निहित विचार यह है कि कष्ट ऐसे हैं जैसे हल धरती का सीना चीरता है।

† 129:7 वह एकत्र करके मवेशियों के लिए नहीं रखी जाती जैसे मैदान की घास।  
ऐसे किसी काम के लिए वह व्यर्थ है या वह पूर्णतः निकम्मी है। \* 130:6 रात में जो चौकसी करते हैं वे सूर्योदय की प्रतिक्षा करते हैं कि वे कार्य निवृत्त हों। इसी प्रकार कष्टों में, दुःख की लम्बी, तमसपूर्ण, विशादपूर्ण रात में कष्ट भोगी प्राण के लिए शान्ति का पहला संकेत, पहली हलकी सी किरण की प्रतिक्षा करता है।

## 129

यात्रा का गीत

1 इस्राएल अब यह कहे,  
“मेरे बचपन से लोग मुझे बार बार क्लेश देते आए हैं,  
2 मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार क्लेश देते तो आए  
हैं,  
परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए।  
3 और लम्बी-लम्बी रेखाएँ की।”  
4 यहोवा धर्मी है;  
उसने दुष्टों के फंदों को काट डाला है;  
5 जितने सिंघुओं से बैर रखते हैं,  
वे सब लज्जित हों, और पराजित होकर पीछे हट जाएं!  
6 वे छत पर की घास के समान हों,  
जो बढ़ने से पहले सूख जाती है;  
7 न पुलियों का कोई बाँधनेवाला अपनी अँकवार भर  
पाता है,  
8 और न आने-जानेवाले यह कहते हैं,  
“यहोवा की आशीष तुम पर होवे!  
हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद देते हैं!”

## 130

यात्रा का गीत

1 हे यहोवा, मैंने गहरे स्थानों में से तुझको पुकारा है!  
2 हे प्रभु, मेरी सुन!  
तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे रहें!  
3 हे यहोवा, यदि तू अधर्म के कामों का लेखा ले,  
तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा?  
4 परन्तु तू क्षमा करनेवाला है,  
जिससे तेरा भय माना जाए।  
5 मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट  
जोहता हूँ,  
और मेरी आशा उसके वचन पर है;  
6 मैं, हाँ,

पहरुए जितना भोर को चाहते हैं,  
उससे भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता  
हूँ।

7 इस्राएल, यहोवा पर आशा लगाए रहे!

क्योंकि यहोवा करुणा करनेवाला  
और पूरा छुटकारा देनेवाला है।

8 इस्राएल को उसके सारे अधर्म के कामों से वही  
छुटकारा देगा। (22. 131:3)

## 131

दाऊद की यात्रा का गीत

दाऊद की यात्रा का गीत

1 हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से  
और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है;  
और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक कठिन हैं,  
उनसे मैं काम नहीं रखता।

2 निश्चय मैंने अपने मन को शान्त और चुप कर दिया  
है,

3 हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर  
आशा लगाए रह!

## 132

दाऊद की यात्रा का गीत

दाऊद की यात्रा का गीत

1 हे यहोवा, दाऊद के लिये उसकी सारी दुर्दशा को  
स्मरण कर;

2 उसने यहोवा से शपथ खाई,

और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्त्रत मानी है,

3 उसने कहा, “निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में  
प्रवेश न करूँगा,

और न अपने पलंग पर चढ़ूँगा;

4 न अपनी आँखों में नींद,

और न अपनी पलकों में झपकी आने दूँगा,

5 जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान,

अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास-स्थान  
न पाऊँ।” (22. 132:7-12)

6 देखो, हमने एप्राता में इसकी चर्चा सुनी है,

\* 131:2 कहे का अर्थ है कि वह विनम्र है, उसने अपनी भावनाओं को शिथिल कर दिया है उसमें जो भी आकांक्षाएँ थीं उसने उन्हें दबा दिया है। \* 132:8 वाचा का सन्दूक परमेश्वर के सामर्थ्य का निवास माना जाता था या सर्वशक्तिमान परमेश्वर का निवास-स्थान माना जाता था। † 132:17 सिंग को शक्ति का प्रतीत माना जाता था और सफलता

या समृद्धि का भी। \* 133:2 जब हारून को पवित्र पद के लिए समर्पित किया गया था तब उसके सिर पर तेल डाला गया था।

हमने इसको वन के खेतों में पाया है।

7 आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें,  
हम उसके चरणों की चौकी के आगे दण्डवत् करें!

8 हे यहोवा, उठकर अपने विश्रामस्थान में

समेत आ।

9 तेरे याजक धर्म के वस्त्र पहने रहें,

और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें।

10 अपने दास दाऊद के लिये,

अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को अनसुनी न कर।

11 यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है और वह  
उससे न मुकरेगा:

“मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊँगा। (2  
7:12, 2:30)

12 यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें  
और जो चितौनी में उन्हें सिखाऊँगा, उस पर चलें,  
तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग-युग बैठते  
चले जाएँगे।”

13 निश्चय यहोवा ने सिय्योन को चुना है,

और उसे अपने निवास के लिये चाहा है।

14 “यह तो युग-युग के लिये मेरा विश्रामस्थान हैं;

यहीं मैं रहूँगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।

15 मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूँगा;

और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूँगा।

16 इसके याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा,

और इसके भक्त लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करेंगे।

17 मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा

है। (22. 133:1-6)

18 मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहनाऊँगा,  
परन्तु उसके सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।”

## 133

दाऊद की यात्रा का गीत

दाऊद की यात्रा का गीत

1 देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है  
कि भाई लोग आपस में मिले रहें!

2 और उसकी दाढ़ी से बहकर,  
उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया।

3 वह हेर्मोन की उस ओस के समान है,

जब हारून को पवित्र पद के लिए समर्पित किया गया था तब उसके सिर पर तेल डाला गया था।











अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे!

7 अपना हाथ ऊपर से बढ़ाकर मुझे महासागर से उबार, अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा।

8 उनके मुँह से तो झूठी बातें निकलती हैं, और उनके दाहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं।

9 हे परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊँगा; मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊँगा।  
(**144:12-14**, **145:3**)

10 तू राजाओं का उद्धार करता है, और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है।

11 मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा ले, जिनके मुँह से झूठी बातें निकलती हैं, और जिनका दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है।

12 **144:12-14**, **145:3**, **145:11-13**, **145:15-17**, **145:19-21**, **145:23-25**, **145:27-29**, **145:31-33**, **145:35-37**, **145:39-41**, **145:43-45**, **145:47-49**, **145:51-53**, **145:55-57**, **145:59-61**, **145:63-65**, **145:67-69**, **145:71-73**, **145:75-77**, **145:79-81**, **145:83-85**, **145:87-89**, **145:91-93**, **145:95-97**, **145:99-101**, **145:103-105**, **145:107-109**, **145:111-113**, **145:115-117**, **145:119-121**, **145:123-125**, **145:127-129**, **145:131-133**, **145:135-137**, **145:139-141**, **145:143-145**, **145:147-149**, **145:151-153**, **145:155-157**, **145:159-161**, **145:163-165**, **145:167-169**, **145:171-173**, **145:175-177**, **145:179-181**, **145:183-185**, **145:187-189**, **145:191-193**, **145:195-197**, **145:199-201**, **145:203-205**, **145:207-209**, **145:211-213**, **145:215-217**, **145:219-221**, **145:223-225**, **145:227-229**, **145:231-233**, **145:235-237**, **145:239-241**, **145:243-245**, **145:247-249**, **145:251-253**, **145:255-257**, **145:259-261**, **145:263-265**, **145:267-269**, **145:271-273**, **145:275-277**, **145:279-281**, **145:283-285**, **145:287-289**, **145:291-293**, **145:295-297**, **145:299-301**, **145:303-305**, **145:307-309**, **145:311-313**, **145:315-317**, **145:319-321**, **145:323-325**, **145:327-329**, **145:331-333**, **145:335-337**, **145:339-341**, **145:343-345**, **145:347-349**, **145:351-353**, **145:355-357**, **145:359-361**, **145:363-365**, **145:367-369**, **145:371-373**, **145:375-377**, **145:379-381**, **145:383-385**, **145:387-389**, **145:391-393**, **145:395-397**, **145:399-401**, **145:403-405**, **145:407-409**, **145:411-413**, **145:415-417**, **145:419-421**, **145:423-425**, **145:427-429**, **145:431-433**, **145:435-437**, **145:439-441**, **145:443-445**, **145:447-449**, **145:451-453**, **145:455-457**, **145:459-461**, **145:463-465**, **145:467-469**, **145:471-473**, **145:475-477**, **145:479-481**, **145:483-485**, **145:487-489**, **145:491-493**, **145:495-497**, **145:499-501**, **145:503-505**, **145:507-509**, **145:511-513**, **145:515-517**, **145:519-521**, **145:523-525**, **145:527-529**, **145:531-533**, **145:535-537**, **145:539-541**, **145:543-545**, **145:547-549**, **145:551-553**, **145:555-557**, **145:559-561**, **145:563-565**, **145:567-569**, **145:571-573**, **145:575-577**, **145:579-581**, **145:583-585**, **145:587-589**, **145:591-593**, **145:595-597**, **145:599-601**, **145:603-605**, **145:607-609**, **145:611-613**, **145:615-617**, **145:619-621**, **145:623-625**, **145:627-629**, **145:631-633**, **145:635-637**, **145:639-641**, **145:643-645**, **145:647-649**, **145:651-653**, **145:655-657**, **145:659-661**, **145:663-665**, **145:667-669**, **145:671-673**, **145:675-677**, **145:679-681**, **145:683-685**, **145:687-689**, **145:691-693**, **145:695-697**, **145:699-701**, **145:703-705**, **145:707-709**, **145:711-713**, **145:715-717**, **145:719-721**, **145:723-725**, **145:727-729**, **145:731-733**, **145:735-737**, **145:739-741**, **145:743-745**, **145:747-749**, **145:751-753**, **145:755-757**, **145:759-761**, **145:763-765**, **145:767-769**, **145:771-773**, **145:775-777**, **145:779-781**, **145:783-785**, **145:787-789**, **145:791-793**, **145:795-797**, **145:799-801**, **145:803-805**, **145:807-809**, **145:811-813**, **145:815-817**, **145:819-821**, **145:823-825**, **145:827-829**, **145:831-833**, **145:835-837**, **145:839-841**, **145:843-845**, **145:847-849**, **145:851-853**, **145:855-857**, **145:859-861**, **145:863-865**, **145:867-869**, **145:871-873**, **145:875-877**, **145:879-881**, **145:883-885**, **145:887-889**, **145:891-893**, **145:895-897**, **145:899-901**, **145:903-905**, **145:907-909**, **145:911-913**, **145:915-917**, **145:919-921**, **145:923-925**, **145:927-929**, **145:931-933**, **145:935-937**, **145:939-941**, **145:943-945**, **145:947-949**, **145:951-953**, **145:955-957**, **145:959-961**, **145:963-965**, **145:967-969**, **145:971-973**, **145:975-977**, **145:979-981**, **145:983-985**, **145:987-989**, **145:991-993**, **145:995-997**, **145:999-1001**, **146:1-3**, **146:5-7**, **146:9-11**, **146:13-15**, **146:17-19**, **146:21-23**, **146:25-27**, **146:29-31**, **146:33-35**, **146:37-39**, **146:41-43**, **146:45-47**, **146:49-51**, **146:53-55**, **146:57-59**, **146:61-63**, **146:65-67**, **146:69-71**, **146:73-75**, **146:77-79**, **146:81-83**, **146:85-87**, **146:89-91**, **146:93-95**, **146:97-99**, **146:101-103**, **146:105-107**, **146:109-111**, **146:113-115**, **146:117-119**, **146:121-123**, **146:125-127**, **146:129-131**, **146:133-135**, **146:137-139**, **146:141-143**, **146:145-147**, **146:149-151**, **146:153-155**, **146:157-159**, **146:161-163**, **146:165-167**, **146:169-171**, **146:173-175**, **146:177-179**, **146:181-183**, **146:185-187**, **146:189-191**, **146:193-195**, **146:197-199**, **146:201-203**, **146:205-207**, **146:209-211**, **146:213-215**, **146:217-219**, **146:221-223**, **146:225-227**, **146:229-231**, **146:233-235**, **146:237-239**, **146:241-243**, **146:245-247**, **146:249-251**, **146:253-255**, **146:257-259**, **146:261-263**, **146:265-267**, **146:269-271**, **146:273-275**, **146:277-279**, **146:281-283**, **146:285-287**, **146:289-291**, **146:293-295**, **146:297-299**, **146:301-303**, **146:305-307**, **146:309-311**, **146:313-315**, **146:317-319**, **146:321-323**, **146:325-327**, **146:329-331**, **146:333-335**, **146:337-339**, **146:341-343**, **146:345-347**, **146:349-351**, **146:353-355**, **146:357-359**, **146:361-363**, **146:365-367**, **146:369-371**, **146:373-375**, **146:377-379**, **146:381-383**, **146:385-387**, **146:389-391**, **146:393-395**, **146:397-399**, **146:401-403**, **146:405-407**, **146:409-411**, **146:413-415**, **146:417-419**, **146:421-423**, **146:425-427**, **146:429-431**, **146:433-435**, **146:437-439**, **146:441-443**, **146:445-447**, **146:449-451**, **146:453-455**, **146:457-459**, **146:461-463**, **146:465-467**, **146:469-471**, **146:473-475**, **146:477-479**, **146:481-483**, **146:485-487**, **146:489-491**, **146:493-495**, **146:497-499**, **146:501-503**, **146:505-507**, **146:509-511**, **146:513-515**, **146:517-519**, **146:521-523**, **146:525-527**, **146:529-531**, **146:533-535**, **146:537-539**, **146:541-543**, **146:545-547**, **146:549-551**, **146:553-555**, **146:557-559**, **146:561-563**, **146:565-567**, **146:569-571**, **146:573-575**, **146:577-579**, **146:581-583**, **146:585-587**, **146:589-591**, **146:593-595**, **146:597-599**, **146:601-603**, **146:605-607**, **146:609-611**, **146:613-615**, **146:617-619**, **146:621-623**, **146:625-627**, **146:629-631**, **146:633-635**, **146:637-639**, **146:641-643**, **146:645-647**, **146:649-651**, **146:653-655**, **146:657-659**, **146:661-663**, **146:665-667**, **146:669-671**, **146:673-675**, **146:677-679**, **146:681-683**, **146:685-687**, **146:689-691**, **146:693-695**, **146:697-699**, **146:701-703**, **146:705-707**, **146:709-711**, **146:713-715**, **146:717-719**, **146:721-723**, **146:725-727**, **146:729-731**, **146:733-735**, **146:737-739**, **146:741-743**, **146:745-747**, **146:749-751**, **146:753-755**, **146:757-759**, **146:761-763**, **146:765-767**, **146:769-771**, **146:773-775**, **146:777-779**, **146:781-783**, **146:785-787**, **146:789-791**, **146:793-795**, **146:797-799**, **146:801-803**, **146:805-807**, **146:809-811**, **146:813-815**, **146:817-819**, **146:821-823**, **146:825-827**, **146:829-831**, **146:833-835**, **146:837-839**, **146:841-843**, **146:845-847**, **146:849-851**, **146:853-855**, **146:857-859**, **146:861-863**, **146:865-867**, **146:869-871**, **146:873-875**, **146:877-879**, **146:881-883**, **146:885-887**, **146:889-891**, **146:893-895**, **146:897-899**, **146:901-903**, **146:905-907**, **146:909-911**, **146:913-915**, **146:917-919**, **146:921-923**, **146:925-927**, **146:929-931**, **146:933-935**, **146:937-939**, **146:941-943**, **146:945-947**, **146:949-951**, **146:953-955**, **146:957-959**, **146:961-963**, **146:965-967**, **146:969-971**, **146:973-975**, **146:977-979**, **146:981-983**, **146:985-987**, **146:989-991**, **146:993-995**, **146:997-999**, **147:1-3**, **147:5-7**, **147:9-11**, **147:13-15**, **147:17-19**, **147:21-23**, **147:25-27**, **147:29-31**, **147:33-35**, **147:37-39**, **147:41-43**, **147:45-47**, **147:49-51**, **147:53-55**, **147:57-59**, **147:61-63**, **147:65-67**, **147:69-71**, **147:73-75**, **147:77-79**, **147:81-83**, **147:85-87**, **147:89-91**, **147:93-95**, **147:97-99**, **147:101-103**, **147:105-107**, **147:109-111**, **147:113-115**, **147:117-119**, **147:121-123**, **147:125-127**, **147:129-131**, **147:133-135**, **147:137-139**, **147:141-143**, **147:145-147**, **147:149-151**, **147:153-155**, **147:157-159**, **147:161-163**, **147:165-167**, **147:169-171**, **147:173-175**, **147:177-179**, **147:181-183**, **147:185-187**, **147:189-191**, **147:193-195**, **147:197-199**, **147:201-203**, **147:205-207**, **147:209-211**, **147:213-215**, **147:217-219**, **147:221-223**, **147:225-227**, **147:229-231**, **147:233-235**, **147:237-239**, **147:241-243**, **147:245-247**, **147:249-251**, **147:253-255**, **147:257-259**, **147:261-263**, **147:265-267**, **147:269-271**, **147:273-275**, **147:277-279**, **147:281-283**, **147:285-287**, **147:289-291**, **147:293-295**, **147:297-299**, **147:301-303**, **147:305-307**, **147:309-311**, **147:313-315**, **147:317-319**, **147:321-323**, **147:325-327**, **147:329-331**, **147:333-335**, **147:337-339**, **147:341-343**, **147:345-347**, **147:349-351**, **147:353-355**, **147:357-359**, **147:361-363**, **147:365-367**, **147:369-371**, **147:373-375**, **147:377-379**, **147:381-383**, **147:385-387**, **147:389-391**, **147:393-395**, **147:397-399**, **147:401-403**, **147:405-407**, **147:409-411**, **147:413-415**, **147:417-419**, **147:421-423**, **147:425-427**, **147:429-431**, **147:433-435**, **147:437-439**, **147:441-443**, **147:445-447**, **147:449-451**, **147:453-455**, **147:457-459**, **147:461-463**, **147:465-467**, **147:469-471**, **147:473-475**, **147:477-479**, **147:481-483**, **147:485-487**, **147:489-491**, **147:493-495**, **147:497-499**, **147:501-503**, **147:505-507**, **147:509-511**, **147:513-515**, **147:517-519**, **147:521-523**, **147:525-527**, **147:529-531**, **147:533-535**, **147:537-539**, **147:541-543**, **147:545-547**, **147:549-551**, **147:553-555**, **147:557-559**, **147:561-563**, **147:565-567**, **147:569-571**, **147:573-575**, **147:577-579**, **147:581-583**, **147:585-587**, **147:589-591**, **147:593-595**, **147:597-599**, **147:601-603**, **147:605-607**, **147:609-611**, **147:613-615**, **147:617-619**, **147:621-623**, **147:625-627**, **147:629-631**, **147:633-635**, **147:637-639**, **147:641-643**, **147:645-647**, **147:649-651**, **147:653-655**, **147:657-659**, **147:661-663**, **147:665-667**, **147:669-671**, **147:673-675**, **147:677-679**, **147:681-683**, **147:685-687**, **147:689-691**, **147:693-695**, **147:697-699**, **147:701-703**, **147:705-707**, **147:709-711**, **147:713-715**, **147:717-719**, **147:721-723**, **147:725-727**, **147:729-731**, **147:733-735**, **147:737-739**, **147:741-743**, **147:745-747**, **147:749-751**, **147:753-755**, **147:757-759**, **147:761-763**, **147:765-767**, **147:769-771**, **147:773-775**, **147:777-779**, **147:781-783**, **147:785-787**, **147:789-791**, **147:793-795**, **147:797-799**, **147:801-803**, **14**









## नीतिवचन

११११

राजा सुलैमान नीतिवचनों का प्रमुख लेखक था। 1:1; 10:1, 25:1 में सुलैमान का नाम प्रगट है। अन्य योगदानकर्ताओं में एक समूह जो “बुद्धिमान” कहलाता था, आगूर तथा राजा लमूएल हैं। शेष बाइबल के सदृश्य नीतिवचन परमेश्वर के उद्धार की योजना की ओर संकेत करते हैं, परन्तु सम्भवतः अधिक सूक्ष्मता से। इस पुस्तक ने इस्राएलियों को परमेश्वर के मार्ग पर चलने का सही तरीका दिखाया। यह सम्भव है कि परमेश्वर ने सुलैमान को प्रेरित किया कि वह उन बुद्धिमानों के वचनों के आधार पर इसका संकलन करे जो उसने अपने सम्पूर्ण जीवन में सीखे थे।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 971 - 686 ई. पू.

सुलैमान राजा के राज्यकाल में इस्राएल में, नीतिवचन हजारों वर्ष पूर्व लिखे गए थे। इसकी बुद्धिमानों की बातें किसी भी संस्कृति में किसी भी समय व्यवहार्य हैं।

११११११

नीतिवचन के अनेक श्रोता हैं। यह बच्चों के निर्देशन हेतु माता-पिता के लिए है। बुद्धि के खोजी युवा-युवती के लिए भी यह है और अन्त में यह आज के बाइबल पाठकों के लिए, जो ईश्वर-भक्ति का जीवन जीना चाहते हैं, व्यावहारिक परामर्श है।

१११११११११

नीतिवचनों की पुस्तक में सुलैमान ऊँचे एवं श्रेष्ठ तथा साधारण एवं सामान्य दैनिक जीवन में परमेश्वर की सम्मति को प्रगट करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सुलैमान राजा के अवलोकन में कोई विषय बचा नहीं। व्यक्तिगत सम्बंध, यौन सम्बंध, व्यापार, धन-सम्पदा, दान, आकांक्षा, अनुशासन, ऋण, लालन-पालन, चरित्र, मद्यपान, राजनीति, प्रतिशोध तथा ईश्वर-भक्ति आदि अनेक विषय बुद्धिमानों की बातों पर इस विपुल संग्रह में विचार किया गया है।

१११ ११११

बुद्धि

रूपरेखा

1. बुद्धि के सदगुण — 1:1-9:18

2. सुलैमान के नीतिवचन — 10:1-22:16

3. बुद्धिमानों के वचन — 22:17-29:27

4. आगूर के वचन — 30:1-33

5. लमूएल के वचन — 31:1-31

१११११११ ११ १११११११११

1 दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के नीतिवचन:

2 इनके द्वारा पढ़नेवाला बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे,

और ११११\* की बातें समझे,

3 और विवेकपूर्ण जीवन निर्वाह करने में प्रवीणता,

और धर्म, न्याय और निष्पक्षता के विषय अनुशासन प्राप्त करे;

4 कि भोलों को चतुराई,

और जवान को ज्ञान और विवेक मिले;

5 कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए,

और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए,

6 जिससे वे नीतिवचन और दृष्टान्त को,

और बुद्धिमानों के वचन और उनके रहस्यों को समझें।

7 ११११११ ११ ११ ११११११ ११११११११ ११ ११११ ११; बुद्धि और शिक्षा को मूर्ख लोग ही तुच्छ जानते हैं।

११११११ १११११ ११ १११११

8 हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा,

और अपनी माता की शिक्षा को न तज;

9 क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट,

और तेरे गले के लिये माला होगी।

10 हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाएँ,

तो उनकी बात न मानना।

11 यदि वे कहें, “हमारे संग चल,

कि हम हत्या करने के लिये घात लगाएँ, हम निर्दोषों पर वार करें;

12 हम उन्हें जीवित निगल जाएँ, जैसे अधोलोक स्वस्थ लोगों को निगल जाता है,

और उन्हें कब्र में पड़े मृतकों के समान बना दें।

13 हमको सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे,

हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे;

14 तू हमारा सहभागी हो जा,

हम सभी का एक ही बटुआ हो,”

15 तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग में न चलना,

वरन् उनकी डगर में पाँव भी न रखना;

16 क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते हैं,

और हत्या करने को फुर्ती करते हैं। (११११. 3:15-17)

\* 1:2 ११११ सही और गलत, सच और झूठ में अन्तर करने की मानसिक शक्ति। † 1:7 ११११११ ११ ११ ११११११ ११११११११ ११ ११११ ११: बुद्धि का आरम्भ श्रद्धा एवं आदर के स्वभाव में पाया जाता है। अनन्त व्यक्तित्व की उपस्थिति में सीमित मनुष्य के मन में उत्पन्न भय।





तब उसके विरुद्ध बुरी युक्ति न बाँधना।  
 30 जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो,  
 उससे अकारण मुकद्दमा खड़ा न करना।  
 31 उपद्रवी पुरुष के विषय में डाह न करना,  
 न उसकी सी चाल चलना;  
 32 क्योंकि यहोवा कुटिल मनुष्य से घृणा करता है,  
 परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगों पर प्रगट करता है।  
 33 दुष्ट के घर पर यहोवा का श्राप  
 और धर्मियों के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है।  
 34 ठट्टा करनेवालों का वह निश्चय ठट्टा करता है;  
 परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। (22222. 4:6, 1 222.  
 5:5)  
 35 बुद्धिमान महिमा को पाएँगे,  
 परन्तु मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होगी।

## 4

2222222 22 2222

1 हे मेरे पुत्रों, पिता की शिक्षा सुनो,  
 और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ।  
 2 क्योंकि मैंने तुम को उत्तम शिक्षा दी है;  
 मेरी शिक्षा को न छोड़ो।  
 3 देखो, मैं भी अपने पिता का पुत्र था,  
 और माता का एकलौता दुलारा था,  
 4 और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था,  
 “तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे;  
 तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर, तब जीवित रहेगा।  
 5 बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर;  
 उनको भूल न जाना, न मेरी बातों को छोड़ना।  
 6 बुद्धि को न छोड़ और वह तेरी रक्षा करेगी;  
 उससे प्रीति रख और वह तेरा पहरा देगी।  
 7 बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिए उसकी प्राप्ति के लिये यत्न कर;  
 अपना सब कुछ खर्च कर दे ताकि समझ को प्राप्त कर  
 सके।  
 8 उसकी बड़ाई कर, वह तुझको बढ़ाएगी;  
 जब तू उससे लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी।  
 9 वह तेरे सिर पर शोभायमान आभूषण बाँधेगी;  
 और तुझे सुन्दर मुकुट देगी।”  
 10 हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर,  
 तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा।  
 11 मैंने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है;  
 और सिधार्थ के पथ पर चलाया है।  
 12 जिसमें 22222 22 22222 2222 2222 2 22222\*,  
 और चाहे तू दौड़े, तो भी ठोकर न खाएगा।

\* 4:12 22222 22 22222 2222 2222 2 22222: बुद्धि का मार्ग एक स्पष्ट एवं खुला पथ है उसमें बाधाएँ विलोप हो जाती हैं। शीघ्रता के काम में (जैसे दौड़ना) गिरने का संकट नहीं होता।

13 शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे;  
 उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है।  
 14 दुष्टों की डगर में पाँव न रखना,  
 और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना।  
 15 उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल,  
 उसके निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा।  
 16 क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नींद  
 नहीं आती;  
 और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएँ, तब तक  
 उन्हें नींद नहीं मिलती।  
 17 क्योंकि वे दुष्टता की रोटी खाते,  
 और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।  
 18 परन्तु धर्मियों की चाल, भोर-प्रकाश के समान है,  
 जिसकी चमक दोपहर तक बढ़ती जाती है।  
 19 दुष्टों का मार्ग घोर अंधकारमय है;  
 वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं।  
 20 हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन,  
 और अपना कान मेरी बातों पर लगा।  
 21 इनको अपनी आँखों से ओझल न होने दे;  
 वरन् अपने मन में धारण कर।  
 22 क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित  
 रहने का,  
 और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।  
 23 सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर;  
 क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।  
 24 टेढ़ी बात अपने मुँह से मत बोल,  
 और चालबाजी की बातें कहना तुझ से दूर रहे।  
 25 तेरी आँखें सामने ही की ओर लगी रहें,  
 और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें।  
 26 अपने पाँव रखने के लिये मार्ग को समतल कर,  
 तब तेरे सब मार्ग ठीक रहेंगे। (2222222. 12:13)  
 27 न तो दाहिनी ओर मुड़ना, और न बाईं ओर;  
 अपने पाँव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले।

## 5

2222222222 22 222222

1 हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे,  
 मेरी समझ की ओर कान लगा;  
 2 जिससे तेरा विवेक सुरक्षित बना रहे,  
 और तू ज्ञान की रक्षा करे।  
 3 क्योंकि पराई स्त्री के होठों से मधु टपकता है,  
 और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं;  
 4 परन्तु इसका परिणाम नागदौना के समान कड़वा





- 13 वह नैन से सैन और पाँव से इशारा,  
और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है,  
14 उसके मन में उलट-फेर की बातें रहतीं, वह लगातार  
बुराई गढ़ता है  
और झगड़ा-रगड़ा उत्पन्न करता है।  
15 इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी,  
वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा, कि बचने का कोई  
उपाय न रहेगा।  
16 छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है,  
वरन् सात हैं जिनसे उसको घृणा है:  
17 अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली  
जीभ,  
और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ,  
18 अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन,  
बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पाँव,  
19 झूठ बोलनेवाला साक्षी  
और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला  
मनुष्य।

?????????? ?? ?????????

- 20 हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा को मान,  
और अपनी माता की शिक्षा को न तज।  
21 उनको अपने हृदय में सदा गाँठ बाँधे रख;  
और अपने गले का हार बना ले।  
22 वह तेरे चलने में तेरी अगुआई,  
और सोते समय तेरी रक्षा,  
और जागते समय तुझे शिक्षा देगी।  
23 आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति,  
और अनुशासन के लिए दी जानेवाली डाँट जीवन का  
मार्ग है,  
24 वे तुझको ?????????? से  
और व्यभिचारिणी की चिकनी चुपड़ी बातों से बचाएगी।  
25 उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी  
अभिलाषा न कर;  
वह तुझे अपने कटाक्ष से फँसाने न पाए;  
26 क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य रोटी के टुकड़ों  
का भिखारी हो जाता है,  
परन्तु व्यभिचारिणी अनमोल जीवन का अहेर कर लेती  
है।  
27 क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख  
ले;  
और उसके कपड़े न जलें?  
28 क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले,  
और उसके पाँव न झुलसें?

† 6:24 ?????????? ??????????: यहाँ स्मरण रखना है कि चेतावनी व्यभिचारिणी के पाप के खतरे के विरुद्ध है।

- 29 जो पराई स्त्री के पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है;  
वरन् जो कोई उसको छूएगा वह दण्ड से न बचेगा।  
30 जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी  
करे,  
उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते;  
31 फिर भी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सात गुणा  
भर देना पड़ेगा;  
वरन् अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा।  
32 जो परस्त्रीगमन करता है वह निरा निर्बुद्ध है;  
जो ऐसा करता है, वह अपने प्राण को नाश करता है।  
33 उसको घायल और अपमानित होना पड़ेगा,  
और उसकी नामधराई कभी न मिटेगी।  
34 क्योंकि जलन से पुरुष बहुत ही क्रोधित हो जाता है,  
और जब वह बदला लेगा तब कोई दया नहीं दिखाएगा।  
35 वह मुआवजे में कुछ न लेगा,  
और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे, तो भी वह न मानेगा।

## 7

- 1 हे मेरे पुत्र, मेरी बातों को माना कर,  
और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़।  
2 मेरी आज्ञाओं को मान, इससे तू जीवित रहेगा,  
और मेरी शिक्षा को अपनी आँख की पुतली जान;  
3 उनको अपनी उँगलियों में बाँध,  
और अपने हृदय की पटिया पर लिख ले।  
4 बुद्धि से कह, “तू मेरी बहन है,”  
और समझ को अपनी कुटुम्बी बना;  
5 तब तू पराई स्त्री से बचेगा,  
जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है।

?????????? ?????????

- 6 मैंने एक दिन अपने घर की खिड़की से,  
अर्थात् अपने झरोखे से झाँका,  
7 तब मैंने ?????????\* लोगों में से  
एक निर्बुद्धि जवान को देखा;  
8 वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क से गुजर  
रहा था,  
और उसने उसके घर का मार्ग लिया।  
9 उस समय दिन ढल गया, और संध्याकाल आ गया था,  
वरन् रात का घोर अंधकार छा गया था।  
10 और उससे एक स्त्री मिली,  
जिसका भेष वेश्या के समान था, और वह बड़ी धूर्त थी।  
11 वह शान्ति रहित और चंचल थी,  
और उसके पैर घर में नहीं टिकते थे;  
12 कभी वह सड़क में, कभी चौक में पाई जाती थी,

\* 7:7 ?????????: निर्बुद्धि, निरुत्साही

और सब प्रकार की बुराइयों को करनेवाला मनुष्य।





15 वह उन लोगों को जो अपने मार्गों पर सीधे-सीधे चलते हैं यह कहकर पुकारती है,  
 16 “जो कोई भोला है, वह मुड़कर यहीं आए;”  
 जो निर्बुद्धि है, उससे वह कहती है,  
 17 “**१०:१० ११ १२ १३ १४ १५**,  
 और लुके-छिपे की रोटी अच्छी लगती है।”  
 18 और वह नहीं जानता है, कि वहाँ मरे हुए पड़े हैं,  
 और उस स्त्री के निमंत्रित अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे हैं।

## 10

**१०:१० ११ १२ १३ १४ १५**

1 सुलैमान के नीतिवचन।  
 बुद्धिमान सन्तान से पिता आनन्दित होता है,  
 परन्तु मूर्ख सन्तान के कारण माता को शोक होता है।  
 2 दुष्टों के रखे हुए धन से लाभ नहीं होता,  
 परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है।  
 3 धर्मी को यहोवा भूखा मरने नहीं देता,  
 परन्तु दुष्टों की अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता।  
 4 जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है,  
 परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं।  
 5 बुद्धिमान सन्तान धूपकाल में फसल बटोरता है,  
 परन्तु **१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७\***,  
 वह लज्जा का कारण होता है।  
 6 धर्मी पर बहुत से आशीर्वाद होते हैं,  
 परन्तु दुष्टों के मुँह में उपद्रव छिपा रहता है।  
 7 धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं,  
 परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है।  
 8 जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओं को स्वीकार करता है,  
 परन्तु जो बकवादी मूर्ख है, उसका नाश होता है।  
 9 जो खराई से चलता है वह निडर चलता है,  
 परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है। **(१०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०)**  
 10 जो नैन से सैन करके बुरे काम के लिए इशारा करता है उससे औरों को दुःख होता है,  
 और जो बकवादी मूर्ख है, उसका नाश होगा।  
 11 धर्मी का मुँह तो जीवन का सोता है,  
 परन्तु दुष्टों के मुँह में उपद्रव छिपा रहता है।

12 बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं,  
 परन्तु **१०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०**। **(1 १०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०)**  
 13 समझवालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है,  
 परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोड़ा है।  
 14 बुद्धिमान लोग ज्ञान का संग्रह करते हैं,  
 परन्तु मूर्ख के बोलने से विनाश होता है।  
 15 धनी का धन उसका दृढ़ नगर है,  
 परन्तु कंगाल की निर्धनता उसके विनाश का कारण है।  
 16 धर्मी का परिश्रम जीवन की ओर ले जाता है;  
 परन्तु दुष्ट का लाभ पाप की ओर ले जाता है।  
 17 जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है,  
 परन्तु जो डाँट से मुँह मोड़ता, वह भटकता है।  
 18 जो बैर को छिपा रखता है, वह झूठ बोलता है,  
 और जो झूठी निन्दा फैलाता है, वह मूर्ख है।  
 19 **१०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०**, वहाँ अपराध भी होता है,  
 परन्तु जो अपने मुँह को बन्द रखता है वह बुद्धि से काम करता है।  
 20 धर्मी के वचन तो उत्तम चाँदी हैं;  
 परन्तु दुष्टों का मन बहुत हलका होता है।  
 21 धर्मी के वचनों से बहुतों का पालन-पोषण होता है,  
 परन्तु मूर्ख लोग बुद्धिहीनता के कारण मर जाते हैं।  
 22 धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है,  
 और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।  
 23 मूर्ख को तो महापाप करना हँसी की बात जान पड़ती है,  
 परन्तु समझवाले व्यक्ति के लिए बुद्धि प्रसन्नता का विषय है।  
 24 दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है,  
 परन्तु धर्मियों की लालसा पूरी होती है।  
 25 दुष्ट जन उस बवण्डर के समान है,  
 जो गुजरते ही लोप हो जाता है  
 परन्तु धर्मी सदा स्थिर रहता है।  
 26 जैसे दाँत को सिरका, और आँख को धुआँ,  
 वैसे आलसी उनको लगता है जो उसको कहीं भेजते हैं।  
 27 यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है,  
 परन्तु दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है।

† 9:17 **१०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०**: अर्थात् निषिद्ध कार्य को करने में आनन्द प्राप्त होता है, विलासिता मनोहर होती है क्योंकि वह वर्जित है। \* 10:5 **१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०**: जब विपुल फसल कटनी के लिये तैयार हो तब सोना सबसे बड़ा आलस्य है। † 10:12 **१०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०**: पहले छिपा लेता है, प्रकट नहीं करता, फिर पापों को क्षमा करके उन्हें भूल जाता है। ‡ 10:19 **१०:१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०**: अर्थात् शब्दों की अधिकता से गलती सुधारी नहीं जा सकती। सुधार करनेवाले और अपराधी दोनों का चुप रहना अधिक उत्तम है।

- 28 धर्मियों को आशा रखने में आनन्द मिलता है,  
परन्तु दुष्टों की आशा टूट जाती है।  
29 यहोवा खरे मनुष्य का गढ़ ठहरता है,  
परन्तु अनर्थकारियों का विनाश होता है।  
30 धर्मी सदा अटल रहेगा,  
परन्तु दुष्ट पृथ्वी पर बसने न पाएँगे।  
31 धर्मी के मुँह से बुद्धि टपकती है,  
पर उलट-फेर की बात कहनेवाले की जीभ काटी  
जाएगी।  
32 धर्मी ग्रहणयोग्य बात समझकर बोलता है,  
परन्तु दुष्टों के मुँह से उलट-फेर की बातें निकलती हैं।

## 11

- 1 छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है,  
परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है।  
2 जब अभिमान होता, तब अपमान भी होता है,  
परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है।  
3 सीधे लोग अपनी खराई से अगुआई पाते हैं,  
परन्तु विश्वासघाती अपने कपट से नाश होते हैं।  
4 कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता,  
परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है।  
5 खरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधा होता है,  
परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण गिर जाता है।  
6 सीधे लोगों का बचाव उनके धर्म के कारण होता है,  
परन्तु विश्वासघाती लोग अपनी ही दुष्टता में फँसते  
हैं।  
7 जब दुष्ट मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है,  
और अधर्मी की आशा व्यर्थ होती है।  
8 धर्मी विपत्ति से छूट जाता है,  
परन्तु दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है।  
9 भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से  
बिगाड़ता है,  
परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।  
10 जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग  
प्रसन्न होते हैं,  
परन्तु जब दुष्ट नाश होते, तब जय जयकार होता है।  
11 ~~दुष्टों के मुँह से बुद्धि टपकती है,~~  
परन्तु दुष्टों के मुँह की बात से वह ढाया जाता है।  
12 जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह निर्बुद्धि है,  
परन्तु समझदार पुरुष चुपचाप रहता है।  
13 जो चुगली करता फिरता वह भेद प्रगट करता है,  
परन्तु विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है।

\* 11:11 ~~दुष्टों के मुँह से बुद्धि टपकती है,~~ शायद, वह जो अपने नगर की भलाई के लिये प्रार्थना करता है जिसके द्वारा वह विनाश से सुरक्षित रहता है।

- 14 जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती  
है;  
परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव  
होता है।  
15 जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दुःख  
उठाता है,  
परन्तु जो जमानत लेने से घृणा करता, वह निडर रहता  
है।  
16 अनुग्रह करनेवाली स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती है,  
और उग्र लोग धन को नहीं खोते।  
17 कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है, परन्तु जो  
क्रूर है,  
वह अपनी ही देह को दुःख देता है।  
18 दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है,  
परन्तु जो धर्म का बीज बोता, उसको निश्चय फल  
मिलता है।  
19 जो धर्म में दृढ़ रहता, वह जीवन पाता है,  
परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मर जाएगा।  
20 जो मन के टेढ़े हैं, उनसे यहोवा को घृणा आती है,  
परन्तु वह खरी चालवालों से प्रसन्न रहता है।  
21 निश्चय जानो, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा,  
परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा।  
22 जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती,  
वह थूथन में सोने की नत्थ पहने हुए सूअर के समान है।  
23 धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है;  
परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है।  
24 ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, फिर भी उनकी बढ़ती ही  
होती है;  
और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इससे  
उनकी घटती ही होती है। (2 ~~11:27~~ 9:6)  
25 उदार प्राणी हष्ट-पुष्ट हो जाता है,  
और जो औरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची  
जाएगी।  
26 जो अपना अनाज जमाखोरी करता है, उसको लोग  
श्राप देते हैं,  
परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको आशीर्वाद दिया जाता  
है।  
27 जो यत्न से भलाई करता है वह दूसरों की प्रसन्नता  
खोजता है,  
परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर  
बुराई आ पड़ती है।

28 जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह सूखे पत्ते के समान गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं।  
 29 जो अपने घराने को दुःख देता, उसका भाग वायु ही होगा,  
 और मूर्ख बुद्धिमान का दास हो जाता है।  
 30 धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।  
 31 देख, [REDACTED]†, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा। (1 [REDACTED] 4:18)

## 12

1 जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डाँट से बैर रखता, वह पशु के समान मूर्ख है।  
 2 भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है, परन्तु बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है।  
 3 कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता, परन्तु धर्मियों की जड़ उखड़ने की नहीं।  
 4 भली स्त्री अपने पति का [REDACTED]\* है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है।  
 5 धर्मियों की कल्पनाएँ न्याय ही की होती हैं, परन्तु दुष्टों की युक्तियाँ छल की हैं।  
 6 दुष्टों की बातचीत हत्या करने के लिये घात लगाने के समान होता है, परन्तु सीधे लोग अपने मुँह की बात के द्वारा छुड़ानेवाले होते हैं।  
 7 जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं, परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है।  
 8 मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है।  
 9 जिसके पास खाने को रोटी तक नहीं, पर अपने बारे में डींगे मारता है, उससे दास रखनेवाला साधारण मनुष्य ही उत्तम है।  
 10 धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।  
 11 जो अपनी भूमि को जोतता, वह पेट भर खाता है,

परन्तु जो निकम्मों की संगति करता, वह निर्बुद्धि ठहरता है।  
 12 दुष्ट जन बुरे लोगों के लूट के माल की अभिलाषा करते हैं, परन्तु धर्मियों की जड़ें हरी भरी रहती हैं।  
 13 बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फंदे में फँसता है, परन्तु धर्मी संकट से निकास पाता है।  
 14 सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तृप्त होता है, और जैसी जिसकी करनी वैसी उसकी भरनी होती है।  
 15 मूर्ख को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।  
 16 [REDACTED]†, परन्तु विवेकी मनुष्य अपमान को अनदेखा करता है।  
 17 जो सच बोलता है, वह धर्म प्रगट करता है, परन्तु जो झूठी साक्षी देता, वह छल प्रगट करता है।  
 18 ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच विचार का बोलना तलवार के समान चुभता है, परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।  
 19 सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल भर का होता है।  
 20 [REDACTED]†, परन्तु मेल की युक्ति करनेवालों को आनन्द होता है।  
 21 धर्मी को हानि नहीं होती है, परन्तु दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब जाते हैं।  
 22 झूठों से यहोवा को घृणा आती है परन्तु जो ईमानदारी से काम करते हैं, उनसे वह प्रसन्न होता है।  
 23 विवेकी मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता है, परन्तु मूर्ख अपने मन की मूर्खता ऊँचे शब्द से प्रचार करता है।  
 24 कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं।  
 25 उदास मन दब जाता है, परन्तु भली बात से वह आनन्दित होता है।  
 26 धर्मी अपने पड़ोसी की अगुआई करता है,

† 11:31 [REDACTED] धर्मी को फल मिलता है अर्थात् अपने छोटे-मोटे पापों का दण्ड मिलता है या अनुशासित किया जाता है तो दुष्टों को कितना अधिक दण्ड मिलेगा। \* 12:4 [REDACTED] यहूदियों के लिये, केवल राजाओं की सामर्थ्य का ही नहीं वरन् आनन्द एवं हर्ष का भी चिन्ह है। † 12:16 [REDACTED] "मूर्ख" अपना क्रोध रोक नहीं पाता है, वह उसी "पल" उसी दिन उसे प्रगट कर देता है। समझदार मनुष्य जानता है कि निन्दा और लज्जा पर क्रोध तुरन्त प्रगट करने से और अधिक कटाक्ष किए जाएँगे। ‡ 12:20 [REDACTED] "बुरी युक्ति करनेवालों" का छल उनसे सलाह लेनेवालों के लिये बुराई के अलावा और कुछ नहीं करता है। "शान्ति के परामर्शदाताओं" के भीतर आनन्द रहता है और वे दूसरों को भी आनन्द देते हैं।











परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।  
(**17:26**)

## 17

1 चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम है,  
जो मेलबलि-पशुओं से भरा हो, परन्तु उसमें झगड़े-रगड़े हों।

2 बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा,  
और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा।

3 **17:27**, **17:28**, **17:29**, **17:30**, **17:31**, **17:32**, **17:33**, **17:34**, **17:35**, **17:36**, **17:37**, **17:38**, **17:39**, **17:40**, **17:41**, **17:42**, **17:43**, **17:44**, **17:45**, **17:46**, **17:47**, **17:48**, **17:49**, **17:50**, **17:51**, **17:52**, **17:53**, **17:54**, **17:55**, **17:56**, **17:57**, **17:58**, **17:59**, **17:60**, **17:61**, **17:62**, **17:63**, **17:64**, **17:65**, **17:66**, **17:67**, **17:68**, **17:69**, **17:70**, **17:71**, **17:72**, **17:73**, **17:74**, **17:75**, **17:76**, **17:77**, **17:78**, **17:79**, **17:80**, **17:81**, **17:82**, **17:83**, **17:84**, **17:85**, **17:86**, **17:87**, **17:88**, **17:89**, **17:90**, **17:91**, **17:92**, **17:93**, **17:94**, **17:95**, **17:96**, **17:97**, **17:98**, **17:99**, **17:100**, **17:101**, **17:102**, **17:103**, **17:104**, **17:105**, **17:106**, **17:107**, **17:108**, **17:109**, **17:110**, **17:111**, **17:112**, **17:113**, **17:114**, **17:115**, **17:116**, **17:117**, **17:118**, **17:119**, **17:120**, **17:121**, **17:122**, **17:123**, **17:124**, **17:125**, **17:126**, **17:127**, **17:128**, **17:129**, **17:130**, **17:131**, **17:132**, **17:133**, **17:134**, **17:135**, **17:136**, **17:137**, **17:138**, **17:139**, **17:140**, **17:141**, **17:142**, **17:143**, **17:144**, **17:145**, **17:146**, **17:147**, **17:148**, **17:149**, **17:150**, **17:151**, **17:152**, **17:153**, **17:154**, **17:155**, **17:156**, **17:157**, **17:158**, **17:159**, **17:160**, **17:161**, **17:162**, **17:163**, **17:164**, **17:165**, **17:166**, **17:167**, **17:168**, **17:169**, **17:170**, **17:171**, **17:172**, **17:173**, **17:174**, **17:175**, **17:176**, **17:177**, **17:178**, **17:179**, **17:180**, **17:181**, **17:182**, **17:183**, **17:184**, **17:185**, **17:186**, **17:187**, **17:188**, **17:189**, **17:190**, **17:191**, **17:192**, **17:193**, **17:194**, **17:195**, **17:196**, **17:197**, **17:198**, **17:199**, **17:200**, **17:201**, **17:202**, **17:203**, **17:204**, **17:205**, **17:206**, **17:207**, **17:208**, **17:209**, **17:210**, **17:211**, **17:212**, **17:213**, **17:214**, **17:215**, **17:216**, **17:217**, **17:218**, **17:219**, **17:220**, **17:221**, **17:222**, **17:223**, **17:224**, **17:225**, **17:226**, **17:227**, **17:228**, **17:229**, **17:230**, **17:231**, **17:232**, **17:233**, **17:234**, **17:235**, **17:236**, **17:237**, **17:238**, **17:239**, **17:240**, **17:241**, **17:242**, **17:243**, **17:244**, **17:245**, **17:246**, **17:247**, **17:248**, **17:249**, **17:250**, **17:251**, **17:252**, **17:253**, **17:254**, **17:255**, **17:256**, **17:257**, **17:258**, **17:259**, **17:260**, **17:261**, **17:262**, **17:263**, **17:264**, **17:265**, **17:266**, **17:267**, **17:268**, **17:269**, **17:270**, **17:271**, **17:272**, **17:273**, **17:274**, **17:275**, **17:276**, **17:277**, **17:278**, **17:279**, **17:280**, **17:281**, **17:282**, **17:283**, **17:284**, **17:285**, **17:286**, **17:287**, **17:288**, **17:289**, **17:290**, **17:291**, **17:292**, **17:293**, **17:294**, **17:295**, **17:296**, **17:297**, **17:298**, **17:299**, **17:300**, **17:301**, **17:302**, **17:303**, **17:304**, **17:305**, **17:306**, **17:307**, **17:308**, **17:309**, **17:310**, **17:311**, **17:312**, **17:313**, **17:314**, **17:315**, **17:316**, **17:317**, **17:318**, **17:319**, **17:320**, **17:321**, **17:322**, **17:323**, **17:324**, **17:325**, **17:326**, **17:327**, **17:328**, **17:329**, **17:330**, **17:331**, **17:332**, **17:333**, **17:334**, **17:335**, **17:336**, **17:337**, **17:338**, **17:339**, **17:340**, **17:341**, **17:342**, **17:343**, **17:344**, **17:345**, **17:346**, **17:347**, **17:348**, **17:349**, **17:350**, **17:351**, **17:352**, **17:353**, **17:354**, **17:355**, **17:356**, **17:357**, **17:358**, **17:359**, **17:360**, **17:361**, **17:362**, **17:363**, **17:364**, **17:365**, **17:366**, **17:367**, **17:368**, **17:369**, **17:370**, **17:371**, **17:372**, **17:373**, **17:374**, **17:375**, **17:376**, **17:377**, **17:378**, **17:379**, **17:380**, **17:381**, **17:382**, **17:383**, **17:384**, **17:385**, **17:386**, **17:387**, **17:388**, **17:389**, **17:390**, **17:391**, **17:392**, **17:393**, **17:394**, **17:395**, **17:396**, **17:397**, **17:398**, **17:399**, **17:400**, **17:401**, **17:402**, **17:403**, **17:404**, **17:405**, **17:406**, **17:407**, **17:408**, **17:409**, **17:410**, **17:411**, **17:412**, **17:413**, **17:414**, **17:415**, **17:416**, **17:417**, **17:418**, **17:419**, **17:420**, **17:421**, **17:422**, **17:423**, **17:424**, **17:425**, **17:426**, **17:427**, **17:428**, **17:429**, **17:430**, **17:431**, **17:432**, **17:433**, **17:434**, **17:435**, **17:436**, **17:437**, **17:438**, **17:439**, **17:440**, **17:441**, **17:442**, **17:443**, **17:444**, **17:445**, **17:446**, **17:447**, **17:448**, **17:449**, **17:450**, **17:451**, **17:452**, **17:453**, **17:454**, **17:455**, **17:456**, **17:457**, **17:458**, **17:459**, **17:460**, **17:461**, **17:462**, **17:463**, **17:464**, **17:465**, **17:466**, **17:467**, **17:468**, **17:469**, **17:470**, **17:471**, **17:472**, **17:473**, **17:474**, **17:475**, **17:476**, **17:477**, **17:478**, **17:479**, **17:480**, **17:481**, **17:482**, **17:483**, **17:484**, **17:485**, **17:486**, **17:487**, **17:488**, **17:489**, **17:490**, **17:491**, **17:492**, **17:493**, **17:494**, **17:495**, **17:496**, **17:497**, **17:498**, **17:499**, **17:500**, **17:501**, **17:502**, **17:503**, **17:504**, **17:505**, **17:506**, **17:507**, **17:508**, **17:509**, **17:510**, **17:511**, **17:512**, **17:513**, **17:514**, **17:515**, **17:516**, **17:517**, **17:518**, **17:519**, **17:520**, **17:521**, **17:522**, **17:523**, **17:524**, **17:525**, **17:526**, **17:527**, **17:528**, **17:529**, **17:530**, **17:531**, **17:532**, **17:533**, **17:534**, **17:535**, **17:536**, **17:537**, **17:538**, **17:539**, **17:540**, **17:541**, **17:542**, **17:543**, **17:544**, **17:545**, **17:546**, **17:547**, **17:548**, **17:549**, **17:550**, **17:551**, **17:552**, **17:553**, **17:554**, **17:555**, **17:556**, **17:557**, **17:558**, **17:559**, **17:560**, **17:561**, **17:562**, **17:563**, **17:564**, **17:565**, **17:566**, **17:567**, **17:568**, **17:569**, **17:570**, **17:571**, **17:572**, **17:573**, **17:574**, **17:575**, **17:576**, **17:577**, **17:578**, **17:579**, **17:580**, **17:581**, **17:582**, **17:583**, **17:584**, **17:585**, **17:586**, **17:587**, **17:588**, **17:589**, **17:590**, **17:591**, **17:592**, **17:593**, **17:594**, **17:595**, **17:596**, **17:597**, **17:598**, **17:599**, **17:600**, **17:601**, **17:602**, **17:603**, **17:604**, **17:605**, **17:606**, **17:607**, **17:608**, **17:609**, **17:610**, **17:611**, **17:612**, **17:613**, **17:614**, **17:615**, **17:616**, **17:617**, **17:618**, **17:619**, **17:620**, **17:621**, **17:622**, **17:623**, **17:624**, **17:625**, **17:626**, **17:627**, **17:628**, **17:629**, **17:630**, **17:631**, **17:632**, **17:633**, **17:634**, **17:635**, **17:636**, **17:637**, **17:638**, **17:639**, **17:640**, **17:641**, **17:642**, **17:643**, **17:644**, **17:645**, **17:646**, **17:647**, **17:648**, **17:649**, **17:650**, **17:651**, **17:652**, **17:653**, **17:654**, **17:655**, **17:656**, **17:657**, **17:658**, **17:659**, **17:660**, **17:661**, **17:662**, **17:663**, **17:664**, **17:665**, **17:666**, **17:667**, **17:668**, **17:669**, **17:670**, **17:671**, **17:672**, **17:673**, **17:674**, **17:675**, **17:676**, **17:677**, **17:678**, **17:679**, **17:680**, **17:681**, **17:682**, **17:683**, **17:684**, **17:685**, **17:686**, **17:687**, **17:688**, **17:689**, **17:690**, **17:691**, **17:692**, **17:693**, **17:694**, **17:695**, **17:696**, **17:697**, **17:698**, **17:699**, **17:700**, **17:701**, **17:702**, **17:703**, **17:704**, **17:705**, **17:706**, **17:707**, **17:708**, **17:709**, **17:710**, **17:711**, **17:712**, **17:713**, **17:714**, **17:715**, **17:716**, **17:717**, **17:718**, **17:719**, **17:720**, **17:721**, **17:722**, **17:723**, **17:724**, **17:725**, **17:726**, **17:727**, **17:728**, **17:729**, **17:730**, **17:731**, **17:732**, **17:733**, **17:734**, **17:735**, **17:736**, **17:737**, **17:738**, **17:739**, **17:740**, **17:741**, **17:742**, **17:743**, **17:744**, **17:745**, **17:746**, **17:747**, **17:748**, **17:749**, **17:750**, **17:751**, **17:752**, **17:753**, **17:754**, **17:755**, **17:756**, **17:757**, **17:758**, **17:759**, **17:760**, **17:761**, **17:762**, **17:763**, **17:764**, **17:765**, **17:766**, **17:767**, **17:768**, **17:769**, **17:770**, **17:771**, **17:772**, **17:773**, **17:774**, **17:775**, **17:776**, **17:777**, **17:778**, **17:779**, **17:780**, **17:781**, **17:782**, **17:783**, **17:784**, **17:785**, **17:786**, **17:787**, **17:788**, **17:789**, **17:790**, **17:791**, **17:792**, **17:793**, **17:794**, **17:795**, **17:796**, **17:797**, **17:798**, **17:799**, **17:800**, **17:801**, **17:802**, **17:803**, **17:804**, **17:805**, **17:806**, **17:807**, **17:808**, **17:809**, **17:810**, **17:811**, **17:812**, **17:813**, **17:814**, **17:815**, **17:816**, **17:817**, **17:818**, **17:819**, **17:820**, **17:821**, **17:822**, **17:823**, **17:824**, **17:825**, **17:826**, **17:827**, **17:828**, **17:829**, **17:830**, **17:831**, **17:832**, **17:833**, **17:834**, **17:835**, **17:836**, **17:837**, **17:838**, **17:839**, **17:840**, **17:841**, **17:842**, **17:843**, **17:844**, **17:845**, **17:846**, **17:847**, **17:848**, **17:849**, **17:850**, **17:851**, **17:852**, **17:853**, **17:854**, **17:855**, **17:856**, **17:857**, **17:858**, **17:859**, **17:860**, **17:861**, **17:862**, **17:863**, **17:864**, **17:865**, **17:866**, **17:867**, **17:868**, **17:869**, **17:870**, **17:871**, **17:872**, **17:873**, **17:874**, **17:875**, **17:876**, **17:877**, **17:878**, **17:879**, **17:880**, **17:881**, **17:882**, **17:883**, **17:884**, **17:885**, **17:886**, **17:887**, **17:888**, **17:889**, **17:890**, **17:891**, **17:892**, **17:893**, **17:894**, **17:895**, **17:896**, **17:897**, **17:898**, **17:899**, **17:900**, **17:901**, **17:902**, **17:903**, **17:904**, **17:905**, **17:906**, **17:907**, **17:908**, **17:909**, **17:910**, **17:911**, **17:912**, **17:913**, **17:914**, **17:915**, **17:916**, **17:917**, **17:918**, **17:919**, **17:920**, **17:921**, **17:922**, **17:923**, **17:924**, **17:925**, **17:926**, **17:927**, **17:928**, **17:929**, **17:930**, **17:931**, **17:932**, **17:933**, **17:934**, **17:935**, **17:936**, **17:937**, **17:938**, **17:939**, **17:940**, **17:941**, **17:942**, **17:943**, **17:944**, **17:945**, **17:946**, **17:947**, **17:948**, **17:949**, **17:950**, **17:951**, **17:952**, **17:953**, **17:954**, **17:955**, **17:956**, **17:957**, **17:958**, **17:959**, **17:960**, **17:961**, **17:962**, **17:963**, **17:964**, **17:965**, **17:966**, **17:967**, **17:968**, **17:969**, **17:970**, **17:971**, **17:972**, **17:973**, **17:974**, **17:975**, **17:976**, **17:977**, **17:978**, **17:979**, **17:980**, **17:981**, **17:982**, **17:983**, **17:984**, **17:985**, **17:986**, **17:987**, **17:988**, **17:989**, **17:990**, **17:991**, **17:992**, **17:993**, **17:994**, **17:995**, **17:996**, **17:997**, **17:998**, **17:999**, **17:1000**

परन्तु मनो को यहोवा जाँचता है। (**17:17**)

4 कुकर्म अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है,  
और झूठा मनुष्य दुष्टता की बात की ओर कान लगाता है।

5 जो निर्धन को उपहास में उड़ाता है, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है;

और जो किसी की विपत्ति पर हँसता है, वह निर्दोष नहीं ठहरेगा।

6 बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते हैं;  
और बाल-बच्चों



8 जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपने प्राण को प्रेमी ठहराता है;

और जो समझ को रखे रहता है उसका कल्याण होता है।

9 झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह नाश होता है।

10 जब सुख में रहना मूर्ख को नहीं फबता, तो हाकिमों पर दास का प्रभुता करना कैसे फबे!

11 जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है,

और अपराध को भुलाना उसको शोभा देता है।

12 राजा का क्रोध सिंह की गर्जन के समान है, परन्तु उसकी प्रसन्नता घास पर की ओस के तुल्य होती है।

13 मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति है, और झगड़ालू पत्नी [?] वाले जल के समान हैं।

14 घर और धन पुरखाओं के भाग से, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से मिलती है।

15 आलस से भारी नींद आ जाती है, और जो प्राणी ढिलाई से काम करता, वह भूखा ही रहता है।

16 जो आज्ञा को मानता, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो अपने चाल चलन के विषय में निश्चिन्त रहता है, वह मर जाता है।

17 जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है,

और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा। ([?])  
**25:40**

18 जब तक आशा है तब तक अपने पुत्र की ताड़ना कर, जान बूझकर उसको मार न डाल।

19 जो बड़ा क्रोधी है, उसे दण्ड उठाने दे; क्योंकि यदि तू उसे बचाए, तो बारम्बार बचाना पड़ेगा।

20 सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, ताकि तू अपने अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे।

21 मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।

22 मनुष्य में निष्ठा सर्वोत्तम गुण है, और निर्धन जन झूठ बोलनेवाले से बेहतर है।

23 यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है;

और उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है;

उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की।

24 आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु अपने मुँह तक कौर नहीं उठाता।

25 ठट्टा करनेवाले को मार, इससे भोला मनुष्य समझदार हो जाएगा;

और समझवाले को डाँट, तब वह अधिक ज्ञान पाएगा।

26 जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता, और अपनी माँ को भगा देता है,

वह अपमान और लज्जा का कारण होगा।

27 हे मेरे पुत्र, यदि तू शिक्षा को सुनना छोड़ दे, तो तू ज्ञान की बातों से भटक जाएगा।

28 अधर्मी साक्षी न्याय को उपहास में उड़ाता है, और दुष्ट लोग अनर्थ काम निगल लेते हैं।

29 ठट्टा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया जाता है, और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

## 20

1 दाखमधु ठट्टा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है;

जो कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं।

2 राजा का क्रोध, जवान सिंह के गर्जन समान है; जो उसको रोष दिलाता है वह अपना प्राण खो देता है।

3 मुकद्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूर्ख झगड़ने को तैयार होते हैं।

4 आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोतता; इसलिए कटनी के समय वह भीख माँगता, और कुछ नहीं पाता।

5 मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो है, तो भी समझवाला मनुष्य उसको निकाल लेता है।

6 बहुत से मनुष्य अपनी निष्ठा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा व्यक्ति कौन पा सकता है?

7 वह व्यक्ति जो अपनी सत्यनिष्ठा पर चलता है, उसके पुत्र जो उसके पीछे चलते हैं, वे धन्य हैं।

8 राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है, वह अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को छाँट लेता है।

9 कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया;

अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ?

10 घटते-बढ़ते बटखरे और घटते-बढ़ते नपुए इन दोनों से यहोवा घृणा करता है।

11 लड़का भी अपने कामों से पहचाना जाता है,

\* 19:13 [?]: छत की दरार से सदाकालीन बूँद बूँद पानी टपकना झल्लाहट का कारण होता है।

कि उसका काम पवित्र और सीधा है, या नहीं।

12 सुनने के लिये कान और देखने के लिये जो आँखें हैं, उन दोनों को यहोवा ने बनाया है।

13 नींद से प्रीति न रख, नहीं तो दरिद्र हो जाएगा;

¶¶¶¶¶\* तब तू रोटी से तृप्त होगा।

14 मोल लेने के समय ग्राहक, “अच्छी नहीं, अच्छी नहीं,” कहता है;

परन्तु चले जाने पर बढ़ाई करता है।

15 सोना और बहुत से बहुमूल्य रत्न तो हैं;

परन्तु ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶† अनमोल मणि ठहरी हैं।

16 किसी अनजान के लिए जमानत देनेवाले के वस्त्र ले और पराए के प्रति जो उत्तरदायी हुआ है उससे बंधक की वस्तु ले रख।

17 छल-कपट से प्राप्त रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है,

परन्तु बाद में उसका मुँह कंकड़ों से भर जाता है।

18 सब कल्पनाएँ सम्मति ही से स्थिर होती हैं;

और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये।

19 जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है;

इसलिए बकवादी से मेल जोल न रखना।

20 जो अपने माता-पिता को कोसता, उसका दिया बुझ जाता, और घोर अंधकार हो जाता है।

21 जो भाग पहले उतावली से मिलता है,

अन्त में उस पर आशीष नहीं होती।

22 मत कह, “मैं बुराई का बदला लूँगा;”

वरन् यहोवा की बाट जोहता रह, वह तुझको छुड़ाएगा।

(1 ¶¶¶¶¶. 5:15)

23 घटते-बढ़ते बटखरों से यहोवा घृणा करता है,

और छल का तराजू अच्छा नहीं।

24 मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है;

¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶?

25 जो मनुष्य बिना विचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए,

और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे, वह फंदे में फँसेगा।

26 बुद्धिमान राजा दुष्टों को फटकता है,

और उन पर दाँवने का पहिया चलवाता है।

27 मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है;

वह मन की सब बातों की खोज करता है। (1 ¶¶¶¶¶.

2:11)

28 राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है,

और कृपा करने से उसकी गद्दी सम्मलती है।

29 जवानों का गौरव उनका बल है,

परन्तु बूढ़ों की शोभा उनके पक्के बाल हैं।

30 चोट लगने से जो घाव होते हैं, वे बुराई दूर करते हैं; और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है।

## 21

1 राजा का मन जल की धाराओं के समान यहोवा के हाथ में रहता है,

जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है।

2 मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है,

परन्तु यहोवा मन को जाँचता है,

3 धर्म और न्याय करना,

यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

4 चढी आँखें, घमण्डी मन, और दुष्टों की खेती, तीनों पापमय हैं।

5 कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।

6 जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जानेवाला कुहरा है,

उसके ढूँढनेवाले मृत्यु ही को ढूँढते हैं।

7 जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं,

उससे उन्हीं का नाश होता है, क्योंकि वे न्याय का काम करने से इन्कार करते हैं।

8 पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है, परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है।

9 लम्बे-चौड़े घर में झगडालू पत्नी के संग रहने से, छत के कोने पर रहना उत्तम है।

10 दुष्ट जन बुराई की लालसा जी से करता है,

वह अपने पड़ोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नहीं करता।

11 जब ठट्टा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है;

और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है, तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।

12 धर्मी जन दुष्टों के घराने पर बुद्धिमानी से विचार करता है,

और परमेश्वर दुष्टों को बुराइयों में उलट देता है।

13 जो कंगाल की दुहाई पर कान न दे,

वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।

14 गुप्त में दी हुई भेंट से क्रोध टंडा होता है,

और चुपके से दी हुई घूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है।

\* 20:13 ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶: सतर्क एवं सक्रिय रह। यह समृद्धि का रहस्य है। † 20:15 ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶: अर्थात् सबसे अधिक मूल्यवान हैं “ज्ञान की बातें” ‡ 20:24 ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶: मनुष्य के जीवन का क्रम उसके लिये एक रहस्य है। वह नहीं जानता कि कहाँ जा रहा है या परमेश्वर उसे किस काम के लिये शिक्षा दे रहा है।



और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा;  
 18 यदि तू उसको अपने मन में रखे,  
 और वे सब तेरे मुँह से निकला भी करें, तो यह मनभावनी  
 बात होगी।  
 19 मैंने आज इसलिए ये बातें तुझको बताई हैं,  
 कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो।  
 20 मैं बहुत दिनों से तेरे हित के उपदेश  
 और ज्ञान की बातें लिखता आया हूँ,  
 21 कि मैं तुझे सत्य वचनों का निश्चय करा दूँ,  
 जिससे जो तुझे काम में लगाएँ, उनको सच्चा उत्तर दे  
 सके।  
 22 [22:22] [22] [22] [22:22] [22:22] [22] [22:22]† कि वह  
 कंगाल है,  
 और न दीन जन को कचहरी में पीसना;  
 23 क्योंकि यहोवा उनका मुकद्दमा लड़ेगा,  
 और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह  
 हर लेगा।  
 24 क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना,  
 और झट क्रोध करनेवाले के संग न चलना,  
 25 कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे,  
 और तेरा प्राण फंदे में फँस जाए।  
 26 जो लोग हाथ पर हाथ मारते हैं,  
 और कर्जदार के उत्तरदायी होते हैं, उनमें तू न होना।  
 27 यदि तेरे पास भुगतान करने के साधन की कमी हो,  
 तो क्यों न साहूकार तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?  
 28 जो सीमा तेरे पुरखाओं ने बाँधी हो, उस पुरानी सीमा  
 को न बढ़ाना।  
 29 यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो काम-काज में निपुण हो,  
 तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के  
 सम्मुख नहीं।

## 23

1 जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे,  
 तब इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे सामने कौन  
 है?  
 2 और यदि तू अधिक खानेवाला हो,  
 तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना।  
 3 उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना,  
 क्योंकि वह धोखे का भोजन है।  
 4 धनी होने के लिये परिश्रम न करना;  
 अपनी समझ का भरोसा छोड़ना। (1 [23:23]. 6:9)  
 5 जब तू अपनी दृष्टि धन पर लगाएगा,  
 वह चला जाएगा,

वह उकाब पक्षी के समान पंख लगाकर, निःसन्देह  
 आकाश की ओर उड़ जाएगा।  
 6 जो डाह से देखता है, उसकी रोटी न खाना,  
 और न उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा  
 करना;  
 7 क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति है,  
 जो भोजन के कीमत की गणना करता है। वह तुझ से  
 कहता तो है, खा और पी,  
 परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं है।  
 8 जो कौर तूने खाया हो, उसे उगलना पड़ेगा,  
 और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा।  
 9 मूर्ख के सामने न बोलना,  
 नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानेगा।  
 10 पुरानी सीमाओं को न बढ़ाना,  
 और न अनाथों के खेत में घुसना;  
 11 क्योंकि उनका छुड़ानेवाला सामर्थी है;  
 उनका मुकद्दमा तेरे संग वही लड़ेगा।  
 12 अपना हृदय शिक्षा की ओर,  
 और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना।  
 13 [23:23] [23] [23:23] [23] [23:23]\*;  
 क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा।  
 14 तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से  
 बचाएगा।  
 15 हे मेरे पुत्र, यदि तू बुद्धिमान हो,  
 तो मेरा ही मन आनन्दित होगा।  
 16 और जब तू सीधी बातें बोले, तब मेरा मन प्रसन्न  
 होगा।  
 17 तू पापियों के विषय मन में डाह न करना,  
 दिन भर यहोवा का भय मानते रहना।  
 18 क्योंकि अन्त में फल होगा,  
 और तेरी आशा न टूटेगी।  
 19 हे मेरे पुत्र, तू सुनकर बुद्धिमान हो,  
 और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला।  
 20 दाखमधु के पीनेवालों में न होना,  
 न माँस के अधिक खानेवालों की संगति करना;  
 21 क्योंकि पियक्कड़ और पेटू दरिद्र हो जाएँगे,  
 और उनका क्रोध उन्हें चिथड़े पहनाएगी।  
 22 अपने जन्मानेवाले पिता की सुनना,  
 और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाए, तब भी उसे तुच्छ  
 न जानना।  
 23 सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं;  
 और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।

† 22:22 [22:22] [22] [22] [22:22] [22:22] [22] [22:22]: कंगाल की लाचारी के कारण उसकी हानि करने के लिए परीक्षा में मत पड़ना। \* 23:13 [23:13] [23] [23:13] [23] [23:13]: अर्थात् आपकी ताड़ना से आपके पुत्र की मृत्यु नहीं होगी परन्तु आपका उसको ताड़ना ना देना उसे बुराई की मृत्यु की ओर ले जायेगा।







ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दे।  
 17 अपने पड़ोसी के घर में बारम्बार जाने से अपने पाँव को रोक,  
 ऐसा न हो कि वह खिन्न होकर घृणा करने लगे।  
 18 जो किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी देता है,  
 वह मानो हथौड़ा और तलवार और पैना तीर है।  
 19 विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा,  
 टूटे हुए दाँत या उखड़े पाँव के समान है।  
 20 जैसा जाड़े के दिनों में किसी का वस्त्र उतारना या सज्जी पर सिरका डालना होता है,  
 वैसा ही उदास मनवाले के सामने गीत गाना होता है।  
 21 यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना;  
 और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना;  
 22 क्योंकि इस रीति तू उसके सिर पर अंगारे डालेगा,  
 और यहोवा तुझे इसका फल देगा। (2/2/2/2/2 5:44, 2/2/2. 12:20)  
 23 जैसे उत्तरी वायु वर्षा को लाती है,  
 वैसे ही चुगली करने से मुख पर क्रोध छा जाता है।  
 24 लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है।  
 25 दूर देश से शुभ सन्देश,  
 प्यासे के लिए ठंडे पानी के समान है।  
 26 जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है,  
 वह खराब जल-स्रोत और बिगड़े हुए कुण्ड के समान है।  
 27 जैसे बहुत मधु खाना अच्छा नहीं,  
 वैसे ही आत्मप्रशंसा करना भी अच्छा नहीं।  
 28 जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई हो।

## 26

1 जैसा धूपकाल में हिम का, या कटनी के समय वर्षा होना,  
 वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती।  
 2 जैसे गौरैया घूमते-घूमते और शूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती,  
 वैसे ही व्यर्थ श्राप नहीं पड़ता।  
 3 घोड़े के लिये कोड़ा, गदहे के लिये लगाम,  
 और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी है।  
 4 मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे।  
 5 मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर देना,  
 ऐसा न हो कि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ठहरे।  
 6 जो मूर्ख के हाथ से सन्देशा भेजता है,

वह मानो अपने पाँव में कुल्हाड़ा मारता और विष पीता है।  
 7 जैसे लँगड़े के पाँव लड़खड़ाते हैं,  
 वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन होता है।  
 8 जैसे पत्थरों के ढेर में मणियों की थैली,  
 वैसे ही मूर्ख को महिमा देनी होती है।  
 9 जैसे मतवाले के हाथ में काँटा गड़ता है,  
 वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदाई होता है।  
 10 जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को मारता हो,  
 वैसा ही मूर्खों या राहगीरों का मजदूरी में लगानेवाला भी होता है।  
 11 जैसे कुत्ता अपनी छाँट को चाटता है,  
 वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को दोहराता है। (2 2/2. 2:20-22)  
 12 यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो,  
 तो उससे अधिक आशा मूर्ख ही से है।  
 13 आलसी कहता है, “मार्ग में सिंह है,  
 चौक में सिंह है!”  
 14 जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है,  
 वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है।  
 15 आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता है,  
 परन्तु आलस्य के कारण कौर मुँह तक नहीं उठाता।  
 16 आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले सात मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान समझता है।  
 17 जो मार्ग पर चलते हुए पराए झगड़े में विघ्न डालता है,  
 वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है।  
 18 जैसा एक पागल जो जहरीले तीर मारता है,  
 19 वैसा ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी को धोखा देकर कहता है,  
 “मैं तो मजाक कर रहा था।”  
 20 जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है,  
 उसी प्रकार जहाँ कानाफूसी करनेवाला नहीं, वहाँ झगड़ा मिट जाता है।  
 21 जैसा अंगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है,  
 वैसा ही झगड़ा बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है।  
 22 कानाफूसी करनेवाले के वचन,  
 स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं।  
 23 जैसा कोई चाँदी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्तन हो,





वह नाश करनेवाले का संगी ठहरता है।  
 25 लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है,  
 और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह [2222]-[22222]  
 [22] [22222] [22]†।  
 26 जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है;  
 और जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है।  
 27 जो निर्धन को दान देता है उसे घटी नहीं होती,  
 परन्तु जो उससे [2222222] [2222] [22222] [22]‡ वह श्राप  
 पर श्राप पाता है।  
 28 जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं तब तो मनुष्य ढूँढे नहीं  
 मिलते,  
 परन्तु जब वे नाश हो जाते हैं, तब धर्मी उन्नति करते हैं।

## 29

1 जो बार बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, वह  
 [222222] [22222] [22] [222222]\*  
 और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।  
 2 जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं, तब प्रजा आनन्दित  
 होती है;  
 परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाय-हाय  
 करती है।  
 3 जो बुद्धि से प्रीति रखता है, वह अपने पिता को  
 आनन्दित करता है,  
 परन्तु वेश्याओं की संगति करनेवाला धन को उड़ा देता  
 है। ([222222] 15:13)  
 4 राजा न्याय से देश को स्थिर करता है,  
 परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको उलट देता है।  
 5 जो पुरुष किसी से चिकनी चुपड़ी बातें करता है,  
 वह उसके पैरों के लिये जाल लगाता है।  
 6 बुरे मनुष्य का अपराध उसके लिए फंदा होता है,  
 परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जयजयकार करता है।  
 7 धर्मी पुरुष कंगालों के मुकद्दमे में मन लगाता है;  
 परन्तु दुष्ट जन उसे जानने की समझ नहीं रखता।  
 8 ठट्टा करनेवाले लोग नगर को फूँक देते हैं,  
 परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को ठंडा करते हैं।  
 9 जब बुद्धिमान मूर्ख के साथ वाद-विवाद करता है,  
 तब वह मूर्ख क्रोधित होता और ठट्टा करता है, और वहाँ  
 शान्ति नहीं रहती।  
 10 हत्यारे लोग खरे पुरुष से बैर रखते हैं,  
 और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं।

11 मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल देता है,  
 परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर  
 देता है।  
 12 जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है,  
 तब [22222] [22] [22222] [2222222] [22] [22222] [22222]†।  
 13 निर्धन और अंधेर करनेवाले व्यक्तियों में एक  
 समानता है;  
 यहोवा दोनों की आँखों में ज्योति देता है।  
 14 जो राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाता है,  
 उसकी गद्दी सदैव स्थिर रहती है।  
 15 छड़ी और डाँट से बुद्धि प्राप्त होती है,  
 परन्तु जो लड़का ऐसे ही छोड़ा जाता है वह अपनी  
 माता की लज्जा का कारण होता है।  
 16 दुष्टों के बढ़ने से अपराध भी बढ़ता है;  
 परन्तु अन्त में धर्मी लोग उनका गिरना देख लेते हैं।  
 17 अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उससे तुझे चैन  
 मिलेगा;  
 और तेरा मन सुखी हो जाएगा।  
 18 जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो  
 जाते हैं,  
 परन्तु जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है।  
 19 दास बातों ही के द्वारा सुधारा नहीं जाता,  
 क्योंकि वह समझकर भी नहीं मानता।  
 20 क्या तू बातें करने में उतावली करनेवाले मनुष्य को  
 देखता है?  
 उससे अधिक तो मूर्ख ही से आशा है।  
 21 जो अपने दास को उसके लड़कपन से ही लाड़-प्यार  
 से पालता है,  
 वह दास अन्त में उसका बेटा बन बैठता है।  
 22 क्रोध करनेवाला मनुष्य झगड़ा मचाता है  
 और अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी भी होता है।  
 23 मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है,  
 परन्तु मन्म आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है।  
 ([222222] 23:12)  
 24 जो चोर की संगति करता है वह अपने प्राण का बैरी  
 होता है;  
 शपथ खाने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता।  
 25 मनुष्य का भय खाना फंदा हो जाता है,  
 परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है उसका स्थान ऊँचा  
 किया जाएगा।

† 28:25 [2222]-[222222] [22] [22222] [22]: वह दो गुणा आशीषों का आनन्द उठाता है बहुतायत और शान्ति का। ‡ 28:27 [2222222] [2222] [22222]  
 [22]: दरिद्र से मुँह फेर लेता है, उसको तुच्छ समझता है। \* 29:1 [222222] [22222] [22] [222222]: दीर्घ काल से विलम्बित दण्ड की आकस्मिकता पर  
 बल दिया गया है। † 29:12 [22222] [22] [22222] [2222222] [22] [22222] [2222]: वे जानते हैं कि किस बात से प्रसन्नता होगी, वे दूसरों की बुराई करनेवाले  
 बन जाते हैं। ‡ 29:26 [2222222] [22] [2222222] [2222222] [22] [22222] [22]: प्रशासकों पर भरोसा करना रेत पर घर बनाना है। सब गलतियों को सुधारने  
 का सही निर्णय यहोवा ही से प्राप्त होता है।







परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा  
की जाएगी।

31 उसके हाथों के परिश्रम का फल उसे दो,  
और उसके कार्यों से सभा में उसकी प्रशंसा होगी।







22 अतः मैंने यह देखा कि इससे अधिक कुछ अच्छा नहीं कि मनुष्य अपने कामों में आनन्दित रहे, क्योंकि उसका भाग यही है; कौन उसके पीछे होनेवाली बातों को देखने के लिये [2:22] [2:22] [2:22]?

#### 4

1 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] जो सूर्य के नीचे होता है। और क्या देखा, कि अंधेर सहनेवालों के आँसू बह रहे हैं, और उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं! अंधेर करनेवालों के हाथ में शक्ति थी, परन्तु उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं था।

2 इसलिए मैंने मरे हुआओं को जो मर चुके हैं, उन जीवितों से जो अब तक जीवित हैं अधिक धन्य कहा;

3 वरन् उन दोनों से अधिक अच्छा वह है जो अब तक हुआ ही नहीं, न यह बुरे काम देखे जो सूर्य के नीचे होते हैं।

[2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

4 तब मैंने सब परिश्रम के काम और सब सफल कामों को देखा जो [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]। यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है।

5 मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता और अपना माँस खाता है।

6 चैन के साथ एक मुट्ठी उन दो मुट्ठियों से अच्छा है, जिनके साथ परिश्रम और वायु को पकड़ना हो।

7 फिर मैंने सूर्य के नीचे यह भी व्यर्थ बात देखी।

8 कोई अकेला रहता और उसका कोई नहीं है; न उसके बेटा है, न भाई है, तो भी उसके परिश्रम का अन्त नहीं होता; न उसकी आँखें धन से सन्तुष्ट होती हैं, और न वह कहता है, मैं किसके लिये परिश्रम करता और अपने जीवन को सुखरहित रखता हूँ? यह भी व्यर्थ और निरा दुःख भरा काम है।

[2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

9 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22], क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है।

10 क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाथ उस पर जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला न हो।

11 फिर यदि दो जन एक संग सोएँ तो वे गर्म रहेंगे, परन्तु कोई अकेला कैसे गर्म हो सकता है?

‡ 3:22 [2:22] [2:22] [2:22]: उसके मरणोपरान्त उसके कर्मों के फल का क्या होगा।

† 4:4 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]: सफलता कार्य करनेवाले को ईश्या का पात्र बना देती है। यह कार्य पड़ोसी के साथ मनुष्य की प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम है।

‡ 4:9 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

[2:22]: साथी के बिना मनुष्य ऐसा है जैसा दाहिने हाथ के बिना बायाँ हाथ।

“सुनने और आज्ञा मानने के लिये निकट आना बलि चढ़ाने से अधिक उत्तम है।

† 5:6 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]: बिना सोचे समझे शपथ नहीं खाना कि फिर उसे टालना पड़े और वह पूरी न हो।

12 यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका सामना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती।

[2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

13 बुद्धिमान लड़का दरिद्र होने पर भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से अधिक उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न करे,

14 चाहे वह उसके राज्य में धनहीन उत्पन्न हुआ या बन्दीगृह से निकलकर राजा हुआ हो।

15 मैंने सब जीवितों को जो सूर्य के नीचे चलते फिरते हैं देखा कि वे उस दूसरे लड़के के संग हो लिये हैं जो उनका स्थान लेने के लिये खड़ा हुआ।

16 वे सब लोग अनगिनत थे जिन पर वह प्रधान हुआ था। तो भी भविष्य में होनेवाले लोग उसके कारण आनन्दित न होंगे। निःसन्देह यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है।

#### 5

[2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

1 जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना; [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] \* मूर्खों के बलिदान चढ़ाने से अच्छा है; क्योंकि वे नहीं जानते कि बुरा करते हैं।

2 बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं और तू पृथ्वी पर है; इसलिए तेरे वचन थोड़े ही हों।

3 क्योंकि जैसे कार्य की अधिकता के कारण स्वप्न देखा जाता है, वैसे ही बहुत सी बातों का बोलनेवाला मूर्ख ठहरता है।

4 जब तू परमेश्वर के लिये मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना; क्योंकि वह मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता। जो मन्नत तूने मानी हो उसे पूरी करना।

5 मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है।

6 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22], और न परमेश्वर के दूत के सामने कहना

\* 4:1 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]: वह अन्य

† 4:4 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]:

‡ 4:9 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]

\* 5:1 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]: सम्भवतः इसका अर्थ है कि

† 5:6 [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22] [2:22]: बिना

कि यह भूल से हुआ; परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर क्रोधित हो, और तेरे हाथ के कार्यों को नष्ट करे?

7 क्योंकि स्वप्नों की अधिकता से व्यर्थ बातों की बहुतायत होती है: परन्तु तू परमेश्वर का भय मानना।

११११११११ ११ ११११११ ११ ११११११११

8 यदि तू किसी प्रान्त में निर्धनों पर अंधेर और न्याय और धर्म को बिगड़ता देखे, तो इससे चकित न होना; क्योंकि एक अधिकारी से बड़ा दूसरा रहता है जिसे इन बातों की सुधि रहती है, और उनसे भी और अधिक बड़े रहते हैं।

9 भूमि की उपज सब के लिये है, वरन् खेती से राजा का भी काम निकलता है।

10 जो रुपये से प्रीति रखता है वह रुपये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से यह भी व्यर्थ है।

11 जब सम्पत्ति बढ़ती है, तो उसके खानेवाले भी बढ़ते हैं, तब उसके स्वामी को इसे छोड़ और क्या लाभ होता है कि उस सम्पत्ति को अपनी आँखों से देखे?

12 परिश्रम करनेवाला चाहे थोड़ा खाए, या बहुत, तो भी उसकी नींद सुखदाई होती है; परन्तु धनी के धन बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती।

13 मैंने सूर्य के नीचे एक बड़ी बुरी बला देखी है; अर्थात् वह धन जिसे उसके मालिक ने अपनी ही हानि के लिये रखा हो,

14 और वह धन किसी बुरे काम में उड़ जाता है; और उसके घर में बेटा उत्पन्न होता है परन्तु उसके हाथ में कुछ नहीं रहता।

15 जैसा वह माँ के पेट से निकला वैसा ही लौट जाएगा; नंगा ही, जैसा आया था, और अपने परिश्रम के बदले कुछ भी न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जा सके। (1 १११११. 6:7)

16 यह भी एक बड़ी बला है कि जैसा वह आया, ठीक वैसा ही वह जाएगा; उसे उस व्यर्थ परिश्रम से और क्या लाभ है?

17 केवल इसके कि उसने जीवन भर अंधकार में भोजन किया, और बहुत ही दुःखित और रोगी रहा और क्रोध भी करता रहा?

18 सुन, जो भली बात मैंने देखी है, वरन् जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए और पीए और अपने परिश्रम से जो वह सूर्य के नीचे करता है, अपनी सारी आयु भर

जो परमेश्वर ने उसे दी है, सुखी रहे क्योंकि उसका भाग यही है।

19 वरन् हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने धन-सम्पत्ति दी हो, और उनसे आनन्द भोगने और उसमें से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने को शक्ति भी दी हो ११ १११११११११ ११ ११११११ १११:।

20 इस जीवन के दिन उसे बहुत स्मरण न रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय रखता है।

## 6

1 एक बुराई जो मैंने सूर्य के नीचे देखी है, वह मनुष्यों को बहुत भारी लगती है:

2 किसी मनुष्य को परमेश्वर धन-सम्पत्ति और प्रतिष्ठा यहाँ तक देता है कि जो कुछ उसका मन चाहता है उसे उसकी कुछ भी घटी नहीं होती, तो भी परमेश्वर उसको उसमें से खाने नहीं देता, कोई दूसरा ही उसे खाता है; यह व्यर्थ और भयानक दुःख है।

3 यदि किसी पुरुष के सौ पुत्र हों, और वह बहुत वर्ष जीवित रहे और उसकी आयु बढ़ जाए, परन्तु न उसका प्राण प्रसन्न रहे और १ १११११ १११११११ १११११११ ११ १११११\* , तो मैं कहता हूँ कि ऐसे मनुष्य से अधूरे समय का जन्मा हुआ बच्चा उत्तम है।

4 क्योंकि वह व्यर्थ ही आया और अंधेरे में चला गया, और उसका नाम भी अंधेरे में छिप गया;

5 और न सूर्य को देखा, न किसी चीज को जानने पाया; तो भी इसको उस मनुष्य से अधिक चैन मिला।

6 हाँ चाहे वह दो हजार वर्ष जीवित रहे, और कुछ सुख भोगने न पाए, तो उसे क्या? क्या सब के सब एक ही स्थान में नहीं जाते?

7 मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट के लिये होता है तो भी उसका मन नहीं भरता।

8 जो बुद्धिमान है वह मूर्ख से किस बात में बढ़कर है? और कंगाल जो यह जानता है कि इस जीवन में ११११ १११११११ ११ १११११ १११११११, वह भी उससे किस बात में बढ़कर है?

9 आँखों से देख लेना मन की चंचलता से उत्तम है: यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है।

10 जो कुछ हुआ है उसका नाम युग के आरम्भ से रखा गया है, और यह प्रगट है कि वह आदमी है, कि वह उससे

‡ 5:19 ११ ११११११११ ११ १११११ ११: वह परमेश्वर के ज्ञान में रहे तो उसके दिन शान्ति और सुख से बीत जाएँगे। \* 6:3 १ ११११ ११११११ ११११११ ११ ११११: शव को दफन किए बिना छोड़ देना कलंक और अपमान की बात होती थी। † 6:8 १११ ११११११ ११ ११११ १११११११: अर्थात् उसके साथ के मनुष्यों के साथ कैसा आचरण रखना चाहिए।



दुष्टता की मूर्खता और मूर्खता जो निरा बावलापन है, को जानूँ।

26 और मैंने मृत्यु से भी अधिक दुःखदाई एक वस्तु पाई, अर्थात् वह स्त्री जिसका मन फंदा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ियाँ हैं; जिस पुरुष से परमेश्वर प्रसन्न है वही उससे बचेगा, परन्तु पापी उसका शिकार होगा।

27 देख, उपदेशक कहता है, मैंने ज्ञान के लिये अलग-अलग बातें मिलाकर जाँची, और यह बात निकाली,

28 जिसे मेरा मन अब तक ढूँढ रहा है, परन्तु नहीं पाया। हजार में से मैंने एक पुरुष को पाया, परन्तु उनमें एक भी स्त्री नहीं पाई।

29 देखो, मैंने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया, परन्तु उन्होंने बहुत सी युक्तियाँ निकाली हैं।

## 8

1 बुद्धिमान के तुल्य कौन है? और किसी बात का अर्थ कौन लगा सकता है? मनुष्य की बुद्धि के कारण उसका मुख चमकता, और उसके मुख की कठोरता दूर हो जाती है।

2 मैं तुझे सलाह देता हूँ कि परमेश्वर की शपथ के कारण राजा की आज्ञा मान।

3 राजा के सामने से उतावली के साथ न लौटना और न बुरी बात पर हठ करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है करता है।

4 क्योंकि राजा के वचन में तो सामर्थ्य रहती है, और कौन उससे कह सकता है कि तू क्या करता है?

5 जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है।

6 क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके लिये बहुत भारी होता है।

7 वह नहीं जानता कि क्या होनेवाला है, और कब होगा? यह उसको कौन बता सकता है?

8 ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसका वश प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय रोक ले, और न कोई मृत्यु के दिन पर अधिकारी होता है; और न उसे लड़ाई से छुट्टी मिल सकती है, और न [ ]\* अपनी दुष्टता के कारण बच सकते हैं।

9 जितने काम सूर्य के नीचे किए जाते हैं उन सब को ध्यानपूर्वक देखने में यह सब कुछ मैंने देखा, और यह भी देखा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिकारी होकर अपने ऊपर हानि लाता है।

9 जितने काम सूर्य के नीचे किए जाते हैं उन सब को ध्यानपूर्वक देखने में यह सब कुछ मैंने देखा, और यह भी देखा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिकारी होकर अपने ऊपर हानि लाता है।

10 फिर मैंने दुष्टों को गाड़े जाते देखा, जो पवित्रस्थान में आया-जाया करते थे और जिस नगर में वे ऐसा करते थे वहाँ उनका स्मरण भी न रहा; यह भी व्यर्थ ही है।

11 बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है।

12 चाहे पापी सौ बार पाप करे अपने दिन भी बढ़ाए, तो भी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और उसको सम्मुख जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा;

13 परन्तु दुष्ट का भला नहीं होने का, और न उसकी जीवनरूपी छाया लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता।

14 एक व्यर्थ बात [ ]\*, अर्थात् ऐसे धर्मी हैं जिनकी वह दशा होती है जो दुष्टों की होनी चाहिये, और ऐसे दुष्ट हैं जिनकी वह दशा होती है जो धर्मियों की होनी चाहिये। मैंने कहा कि यह भी व्यर्थ ही है।

15 तब मैंने आनन्द को सराहा, क्योंकि सूर्य के नीचे मनुष्य के लिये खाने-पीने और आनन्द करने को छोड़ और कुछ भी अच्छा नहीं, क्योंकि यही उसके जीवन भर जो परमेश्वर उसके लिये सूर्य के नीचे ठहराए, उसके परिश्रम में उसके संग बना रहेगा।

16 जब मैंने बुद्धि प्राप्त करने और सब काम देखने के लिये जो पृथ्वी पर किए जाते हैं अपना मन लगाया, कि कैसे मनुष्य रात-दिन जागते रहते हैं;

17 तब मैंने परमेश्वर का सारा काम देखा जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी थाह मनुष्य नहीं पा सकता। चाहे मनुष्य उसकी खोज में कितना भी परिश्रम करे, तो भी उसको न जान पाएगा; और यद्यपि बुद्धिमान कहे भी कि मैं उसे समझूँगा, तो भी वह उसे न पा सकेगा।

## 9

1 यह सब कुछ मैंने मन लगाकर विचारा कि इन सब बातों का भेद पाऊँ, कि किस प्रकार धर्मी और बुद्धिमान लोग और [ ]\* धर्मी होने के कारण उसकी विशेष सुरक्षा में और मनुष्य होने के कारण उसके निर्देशनाधीन हैं।

\* 8:8 [ ]: यद्यपि दुष्टों का जीवन लम्बा हो सकता है, फिर भी दुष्टता के पास उस जीवन को बढ़ाने के लिए कोई अंतर्निहित शक्ति नहीं है। † 8:14 [ ]: व्यर्थता के उदाहरण जिनका संदर्भ इन शब्दों द्वारा दिया गया है, परमेश्वर के न्याय के तुल्य प्रतीत नहीं होते हैं।

\* 9:1 [ ]: धर्मी होने के कारण उसकी विशेष सुरक्षा में और मनुष्य होने के कारण उसके निर्देशनाधीन हैं।





10 यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना पड़ेगा; परन्तु सफल होने के लिये बुद्धि से लाभ होता है।

11 यदि मंत्र से पहले सर्प डसे, तो मंत्र पढ़नेवाले को कुछ भी लाभ नहीं।

12 बुद्धिमान के वचनों के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु मूर्ख अपने वचनों के द्वारा नाश होते हैं।

13 उसकी बात का आरम्भ मूर्खता का, और उनका अन्त दुःखदाई बावलापन होता है।

14 [REDACTED], तो भी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा, और कौन बता सकता है कि उसके बाद क्या होनेवाला है?

15 मूर्ख को परिश्रम से थकावट ही होती है, यहाँ तक कि वह नहीं जानता कि नगर को कैसे जाए।

16 हे देश, तुझ पर हाय जब तेरा राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रातःकाल भोज करते हैं!

17 हे देश, तू धन्य है जब तेरा राजा कुलीन है; और तेरे हाकिम समय पर भोज करते हैं, और वह भी मतवाले होने को नहीं, वरन् बल बढ़ाने के लिये!

18 आलस्य के कारण छत की कड़ियाँ दब जाती हैं, और हाथों की सुस्ती से घर चूता है।

19 भोज हँसी खुशी के लिये किया जाता है, और दाखमधु से जीवन को आनन्द मिलता है; और [REDACTED]।

20 राजा को मन में भी श्राप न देना, न धनवान को अपने शयन की कोठरी में श्राप देना; क्योंकि कोई आकाश का पक्षी तेरी वाणी को ले जाएगा, और कोई उड़नेवाला जन्तु उस बात को प्रगट कर देगा।

## 11

[REDACTED]

1 अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएगा।

2 सात वरन् आठ जनों को भी भाग दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथ्वी पर क्या विपत्ति आ पड़ेगी।

3 यदि बादल जलभरे हैं, तब उसको भूमि पर उण्डेल देते हैं; और वृक्ष चाहे दक्षिण की ओर गिरे या उत्तर की ओर, तो भी जिस स्थान पर वृक्ष गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा।

† 10:14 [REDACTED]: यहाँ संकेत इस बात का है कि अधिक बोलने की अपेक्षा भविष्य के विषय में आत्म-विश्वास के साथ चर्चा की जाए। ‡ 10:19 [REDACTED]: आनन्द मनाने के लिये वे भोज (रोटी) करते हैं और मदिरा जीवन को सुख प्रदान करती है और पैसा है तो यह सब सम्भव होता है। \* 11:8 [REDACTED]: वृद्धावस्था और सम्भवतः दुःख का और दुर्भाग्य का समय। † 11:10 [REDACTED]: परमेश्वर के उचित समय के न्याय और युवावस्था की द्रुतगामिता तुम्हारे आचरण पर ऐसा प्रभाव डालें कि तुम ऐसे कामों से बचो जो भविष्य में पछतावा और दुःख दें। \* 12:2 [REDACTED]: आकाश की ज्योति का अंधेरा होना क्लेश और उदासी की द्योतक है।

4 जो वायु को ताकता रहेगा वह बीज बोने न पाएगा; और जो बादलों को देखता रहेगा वह लवने न पाएगा।

5 जैसे तू वायु के चलने का मार्ग नहीं जानता और किस रीति से गर्भवती के पेट में हड्डियाँ बढ़ती हैं, वैसे ही तू परमेश्वर का काम नहीं जानता जो सब कुछ करता है। (22:2. 3:8)

6 भोर को अपना बीज बो, और साँझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सफल होगा, यह या वह या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे।

7 उजियाला मनभावना होता है, और धूप के देखने से आँखों को सुख होता है।

8 यदि मनुष्य बहुत वर्ष जीवित रहे, तो उन सभी में आनन्दित रहे; परन्तु यह स्मरण रखे कि [REDACTED] भी बहुत होंगे। जो कुछ होता है वह व्यर्थ है।

[REDACTED]

9 हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द कर, और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह; अपनी मनमानी कर और अपनी आँखों की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।

10 अपने मन से खेद और अपनी देह से दुःख दूर कर, क्योंकि [REDACTED]।

## 12

1 अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएँ, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इनमें नहीं लगता।

2 इससे पहले कि सूर्य और प्रकाश और चन्द्रमा और [REDACTED], और वर्षा होने के बाद बादल फिर घिर आएँ;

3 उस समय घर के पहरे काँपेंगे, और बलवन्त झुक जाएँगे, और पिसनहारियाँ थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी, और झरोखों में से देखनेवालियाँ अंधी हो जाएँगी,

4 और सड़क की ओर के किवाड़ बन्द होंगे, और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा, और तड़के चिड़िया बोलते ही एक उठ जाएगा, और सब गानेवालियों का शब्द धीमा हो जाएगा।

5 फिर जो ऊँचा हो उससे भय खाया जाएगा, और मार्ग में डरावनी वस्तुएँ मानी जाएँगी; और बादाम का पेड़ फूलेगा, और टिड्डी भी भारी लगेगी, और भूख बढ़ानेवाला फल फिर काम न देगा; क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जाएगा, और रोने पीटनेवाले सड़क-सड़क फिरंगे।

6 उस समय चाँदी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा; और सोते के पास घड़ा फूटेगा, और कुण्ड के पास रहट टूट जाएगा,

7 जब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और

8 उपदेशक कहता है, सब व्यर्थ ही व्यर्थ; सब कुछ व्यर्थ है।

9 उपदेशक जो बुद्धिमान था, वह प्रजा को ज्ञान भी सिखाता रहा, और ध्यान लगाकर और जाँच-परख करके बहुत से नीतिवचन क्रम से रखता था।

10 उपदेशक ने मनभावने शब्द खोजे और सिधाई से ये सच्ची बातें लिख दीं।

11 बुद्धिमानों के वचन पैनों के समान होते हैं, और सभाओं के प्रधानों के वचन गाड़ी हुई कीलों के समान हैं, क्योंकि

12 हे मेरे पुत्र, इन्हीं में चौकसी सीख। बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता, और बहुत पढ़ना देह को थका देता है।

13 सब कुछ सुना गया; कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।

14 क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा। (2

5:10)

† 12:7 जीवन का सोता परमेश्वर के पास लौट जाने का अर्थ है निश्चित रूप से जीना जारी रखना। ‡ 12:11 अर्थात् परमेश्वर या राजा सुलैमान § 12:13 परमेश्वर का आदर कर और उसकी आज्ञा मान यही मनुष्य की सम्पूर्ण जीवन रचना है। यही मनुष्य के लिये स्वीकार करने की बात है। अन्य सब बातें सर्वोच्च अज्ञेय शक्ति पर निर्भर है।

## श्रेष्ठगीत

११११

श्रेष्ठगीत पुस्तक के प्रथम पद से प्राप्त शीर्षक है जिसमें व्यक्त है कि यह गीत कौन गाता है। “श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है” (1:1) इस पुस्तक के शीर्षक ने अन्ततः राजा सुलैमान का नाम लिया क्योंकि सम्पूर्ण पुस्तक में उसके नाम का उल्लेख है (1:5; 3:7,9,11; 8:11-12)।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 971 - 965 ई. पू.

यह पुस्तक सुलैमान ने इस्राएल पर अपने राज्यकाल के समय लिखी थी। विद्वान सुलैमान को इस पुस्तक का लेखक मानते हैं कि यह गीत उसके राज्यकाल के आरम्भ समय में लिखा गया था। कविता में जो युवा जोश व्यक्त किया गया है उसी भाग के कारण नहीं परन्तु इसलिए भी कि लेखक ने देश के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर के स्थानों के नामों का भी उल्लेख किया है और लबानोन और मिस्र के नामों की भी चर्चा की गई है।

११११११

अविवाहित एवं विवाहित दोनों जो विवाह के बारे में सोचते हैं।

११११११११

श्रेष्ठगीत एक कविता है जो प्रेम के सद्गुण का महिमान्वन करती है और स्पष्ट रूप से विवाह को परमेश्वर का विधान मानती है। स्त्री और पुरुष को विवाह की सीमाओं में रहना आवश्यक है और एक दूसरे के साथ आत्मिक, भाव प्रवण एवं शारीरिक प्रेम रखना है।

१११ ११११

प्रेम और विवाह

रूपरेखा

1. दुल्हन सुलैमान के बारे में सोचती है — 1:1-3:5
2. दुल्हन मंगनी को स्वीकार करके विवाह की प्रतीक्षा में है — 3:6-5:1
3. दुल्हन दुल्हे से विरक्त हो जाने की कल्पना करती है — 5:2-6:3
4. दूल्हा और दुल्हन एक दूसरे को सराहते हैं — 6:4-8:14

1 श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है। (1 १११११. 4:32)

११११ १११

वधू

2 तू अपने मुँह के चुम्बनों से मुझे चूमे!  
क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है,  
3 तेरे भाँति-भाँति के इत्रों का सुगन्ध उत्तम है,  
तेरा नाम उण्डेले हुए इत्र के तुल्य है;  
इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम रखती हैं  
4 मुझे खींच ले; हम तेरे पीछे दौड़ेंगे।  
राजा मुझे अपने महल में ले आया है।  
हम तुझ में मगन और आनन्दित होंगे;  
हम दाखमधु से अधिक तेरे प्रेम की चर्चा करेंगे;  
वे ठीक ही तुझ से प्रेम रखती हैं। (१११११ 11:4, १११११.  
3:1-12, ११. 45:14)

5 हे यरूशलेम की पुत्रियों,  
मैं काली तो हूँ परन्तु सुन्दर हूँ,  
केदार के तम्बुओं के  
और सुलैमान के पर्दों के तुल्य हूँ।  
6 मुझे इसलिए न घूर कि मैं साँवली हूँ,  
क्योंकि मैं धूप से झुलस गई।  
मेरी माता के पुत्र मुझसे अप्रसन्न थे,  
उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन् बनाया;  
परन्तु मैंने १११११ ११११ ११११ १११ ११११११\* की रखवाली  
नहीं की!

7 हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता,  
तू अपनी भेड़-बकरियाँ कहाँ चराता है,  
दोपहर को तू उन्हें कहाँ बैठाता है;  
मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़-बकरियों के पास  
घूँघट काढ़े हुए भटकती फिरूँ?

१११११११११ ११ ११११११

वर

8 हे स्त्रियों में सुन्दरी, यदि तू यह न जानती हो  
तो १११११-१११११११११ ११ ११११११ ११ १११११११११ ११  
१११†  
और चरावाहों के तम्बुओं के पास, अपनी बकरियों के  
बच्चों को चरा।  
9 हे मेरी प्रिय मैंने तेरी तुलना  
फ़िरौन के रथों में जुती हुई घोड़ी से की है। (2 ११११.  
1:16)

10 तेरे गाल केशों के लटों के बीच क्या ही सुन्दर हैं,  
और तेरा कण्ठ हीरों की लड्डियों के बीच।

वधू

\* 1:6 १११११ ११११ ११११ ११ १११११: यह उसकी और से उसकी सुन्दरता की उपमा है। † 1:8 १११११-१११११११११ ११ ११११११ ११ १११११११११ ११  
११: अर्थात् यदि तेरा प्रियतम वास्तव में चरवाहा है तो उसे चरवाहों में खोज परन्तु यदि वह राजा है तो वह राजसी महल में पाया जाएगा।

11 हम तेरे लिये चाँदी के फूलदार सोने के आभूषण बनाएँगे।

12 जब राजा अपनी मेज के पास बैठा था मेरी जटामासी की सुगन्ध फैल रही थी।

13 मेरा प्रेमी मेरे लिये लोबान की थैली के समान है जो मेरी छातियों के बीच में पड़ी रहती है।

14 मेरा प्रेमी मेरे लिये मेंहदी के फूलों के गुच्छे के समान है,

जो एनगदी की दाख की बारियों में होता है।

वर

15 तू सुन्दरी है, हे मेरी प्रिय, तू सुन्दरी है; तेरी आँखें कबूतरी की सी हैं।

वधू

16 हे मेरे प्रिय तू सुन्दर और मनभावना है और हमारा बिछौना भी हरा है;

17 हमारे घर के धरन देवदार हैं और हमारी छत की कडियाँ सनोवर हैं।

## 2

1 मैं [?] का गुलाब और तराइयों का सोसन फूल हूँ।

वर

2 [?] वैसे ही मेरी प्रिय युवतियों के बीच में है।

वधू

3 जैसे सेब का वृक्ष जंगल के वृक्षों के बीच में, वैसे ही मेरा प्रेमी जवानों के बीच में है। मैं उसकी छाया में हर्षित होकर बैठ गई, और उसका फल मुझे खाने में मीठा लगा। ([?].

22:1,2)

4 वह मुझे भोज के घर में ले आया, और उसका जो झण्डा मेरे ऊपर फहराता था वह प्रेम था।

5 मुझे किशमिश खिलाकर सम्भालो, सेब खिलाकर ताजा करो: क्योंकि मैं प्रेम रोगी हूँ।

6 काश, उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और अपने दाहिने हाथ से वह मेरा आलिंगन करता।

7 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम से चिकारियों और मैदान की हिरनियों की शपथ धराकर कहती हूँ,

कि जब तक वह स्वयं न उठना चाहे, तब तक उसको न उकसाओं न जगाओ। ([?].

3:5, 8:4)

\* 2:1 [?]: इस्राएल के पूर्वी हिस्से का तटीय स्थान। † 2:2 [?]: राजा वधू की तुलना करना पुनः आरम्भ करता है। जिस प्रकार की सोसन का फूल कँटीली झाड़ियों में श्रेष्ठ होता है वैसे ही मेरा मित्र अपने साथियों में श्रेष्ठ है। ‡ 2:9 [?]: यहाँ तुलना के विषय शरीर की सुन्दरता, मर्यादा और गति की तीव्रता है। § 2:16 [?]: वह उपयुक्त स्थानों तथा उदारता एवं सुन्दरता के मध्य अपना पेशा चलाता है।

[?]

वधू

8 मेरे प्रेमी का शब्द सुन पड़ता है! देखो, वह पहाड़ों पर कूदता और पहाड़ियों को फान्दता हुआ आता है।

9 मेरा प्रेमी चिकारे या [?] देखो, वह हमारी दीवार के पीछे खड़ा है, और खिड़कियों की ओर ताक रहा है, और झंझरी में से देख रहा है।

10 मेरा प्रेमी मुझसे कह रहा है,

वर

“हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी, उठकर चली आ;

11 क्योंकि देख, सर्दी जाती रही; वर्षा भी हो चुकी और जाती रही है।

12 पृथ्वी पर फूल दिखाई देते हैं, चिड़ियों के गाने का समय आ पहुँचा है, और हमारे देश में पिण्डुक का शब्द सुनाई देता है।

13 अंजीर पकने लगे हैं, और दाखलताएँ फूल रही हैं; वे सुगन्ध दे रही हैं।

हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी, उठकर चली आ।

14 हे मेरी कबूतरी, पहाड़ की दरारों में और टीलों के कुंज में तेरा मुख मुझे देखने दे,

तेरा बोल मुझे सुनने दे, क्योंकि तेरा बोल मीठा, और तेरा मुख अति सुन्दर है।

15 जो छोटी लोमडियाँ दाख की बारियों को बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले,

क्योंकि हमारी दाख की बारियों में फूल लगे हैं।” ([?]. 80:8-13, [?]. 13:4)

वधू

16 मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूँ,

वह अपनी भेड़-बकरियाँ [?] [?]

17 जब तक दिन ठंडा न हो और छाया लम्बी होते-होते मिट न जाए,

तब तक हे मेरे प्रेमी उस चिकारे या जवान हिरन के समान बन जो बेतेर के पहाड़ों पर फिरता है।

## 3

[?]

1 रात के समय मैं अपने पलंग पर अपने प्राणप्रिय को ढूँढ़ती रही;

मैं उसे

ढूँढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया; (2:22) 3:1)

2 “मैंने कहा, मैं अब उठकर नगर में, और सड़कों और चौकों में घूमकर अपने प्राणप्रिय को ढूँढ़ूँगी।”

मैं उसे ढूँढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया।

3 जो पहरेदार (2:22)\* में घूमते थे, वे मुझे मिले, मैंने उनसे पूछा, “क्या तुम ने मेरे प्राणप्रिय को देखा है?”

4 मुझ को उनके पास से आगे बढ़े थोड़े ही देर हुई थी कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिल गया।

मैंने उसको पकड़ लिया, और उसको जाने न दिया जब तक उसे अपनी माता के घर अर्थात् अपनी जननी की कोठरी में न ले आई।

5 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम से चिकारियों और मैदान की हिरनियों की शपथ धराकर कहती हूँ,

कि जब तक प्रेम आप से न उठे, तब तक उसको न उकसाओ और न जगाओ।

(2:22) (2:22)

वधू

6 यह क्या है जो धुएँ के खम्भे के समान,

गन्धरस और लोबान से सुगन्धित, और व्यापारी की सब भाँति की बुकनी लगाए हुए जंगल से निकला आता है?

7 देखो, यह सुलैमान की पालकी है!

उसके चारों ओर इस्राएल के शूरवीरों में के साथ वीर हैं।

8 वे सब के सब तलवार बाँधनेवाले और युद्ध विद्या में निपुण हैं।

प्रत्येक पुरुष रात के डर से जाँघ पर तलवार लटकाए रहता है।

9 सुलैमान राजा ने अपने लिये लबानोन के काठ की एक बड़ी पालकी बनवा ली।

10 उसने उसके खम्भे चाँदी के, उसका सिरहाना सोने का, और गद्दी बैंगनी रंग की बनवाई है;

और उसके भीतरी भाग को यरूशलेम की पुत्रियों की ओर से बड़े प्रेम से जड़ा गया है।

11 हे सिय्योन की पुत्रियों निकलकर सुलैमान राजा पर दृष्टि डालो,

देखो, वह वही मुकुट पहने हुए है जिसे उसकी माता ने उसके विवाह के

दिन और उसके मन के आनन्द के दिन, उसके सिर पर रखा था।

4

वर

1 हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर है!

तेरी आँखें तेरी लटों के बीच में कबूतरों के समान दिखाई देती हैं।

तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के समान हैं जो गिलाद पहाड़ के ढाल पर लेटी हुई हैं। (2:22) 5:19)

5:19)

2 तेरे दाँत उन ऊन कतरी हुई भेड़ों के झुण्ड के समान हैं, जो नहाकर ऊपर आई हों, उनमें हर एक के दो-दो जुड़वा बच्चे होते हैं।

और उनमें से किसी का साथी नहीं मरा।

3 तेरे होंठ लाल रंग की डोरी के समान हैं,

और तेरा मुँह मनोहर है, तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे अनार की फाँक से देख पड़ते हैं।

4 तेरा गला दाऊद की मीनार के समान है, जो अस्त्र-शस्त्र के लिये बना हो, और जिस पर हजार ढालें टँगी हुई हों,

वे सब ढालें शूरवीरों की हैं।

5 तेरी दोनों छातियाँ मृग के दो जुड़वे बच्चों के तुल्य हैं, जो सोसन फूलों के बीच में चरते हों।

6 जब तक दिन ठंडा न हो, और छाया लम्बी होते-होते मिट न जाए,

तब तक मैं शीघ्रता से गन्धरस के पहाड़ और लोबान की पहाड़ी पर चला जाऊँगा।

7 हे मेरी प्रिय तू सर्वांग सुन्दरी है;

तुझ में कोई दोष नहीं। (2:22) 5:27)

8 हे मेरी दुल्हन, तू मेरे संग लबानोन से,

मेरे संग लबानोन से चली आ।

तू अमाना की चोटी पर से,

सनीर और हेर्मोन की चोटी पर से,

सिंहों की गुफाओं से, चीतों के पहाड़ों पर से दृष्टि कर।

9 हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, तूने मेरा मन मोह लिया है,

तूने अपनी आँखों की एक ही चितवन से,

और अपने गले के एक ही हीरे से मेरा हृदय मोह लिया है।

10 हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, तेरा प्रेम क्या ही मनोहर है!

तेरा प्रेम दाखमधु से क्या ही उत्तम है,

\* 3:3 (2:22): वधू के घर का नगर, सम्भवतः शूनेम।

और तेरे इत्रों का सुगन्ध सब प्रकार के मसालों के सुगन्ध से! (2:22, 4:10, 2:22, 12:3)

11 हे मेरी दुल्हन, तेरे होठों से मधु टपकता है; तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध रहता है; तेरे वस्त्रों का सुगन्ध लबानोन के समान है।

12 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, किवाड़ लगाई हुई 2:22, 2:22\* के समान, किवाड़ बन्द किया हुआ सोता, और छाप लगाया हुआ झरना है।

13 तेरे अंकुर उत्तम फलवाली अनार की बारी के तुल्य हैं,

जिसमें मेहदी और जटामासी,

14 जटामासी और केसर, लोबान के सब भाँति के पेड़, मुश्क और दालचीनी, गन्धरस, अगर, आदि सब मुख्य-मुख्य सुगन्ध-द्रव्य होते हैं।

15 तू बारियों का सोता है, फूटते हुए जल का कुआँ, और लबानोन से बहती हुई धाराएँ हैं।

**वधू**

16 हे उत्तर वायु जाग, और हे दक्षिण वायु चली आ! मेरी बारी पर बह, जिससे उसका सुगन्ध फैले। मेरा प्रेमी अपनी बारी में आए, और उसके उत्तम-उत्तम फल खाए।

## 5

**वर**

1 हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, मैं अपनी बारी में आया हूँ, मैंने अपना गन्धरस और बलसान चुन लिया; मैंने मधु समेत 2:22, 2:22\* खा लिया, मैंने दूध और दाखमधु पी लिया।

**सहेलियाँ**

हे मित्रों, तुम भी खाओ, हे प्यारों, पियो, मनमाना पियो!

2:22, 2:22

**वधू**

2 मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था। सुन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है, "हे मेरी बहन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लिये द्वार खोल;

क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है, और मेरी लटें रात में गिरी हुई बूँदों से भीगी हैं।" (2:22, 2:22, 3:20)

3 मैं अपना वस्त्र उतार चुकी थी मैं उसे फिर कैसे पहनूँ? मैं तो अपने पाँव धो चुकी थी अब उनको कैसे मैला करूँ?

4 मेरे प्रेमी ने अपना हाथ किवाड़ के छेद से भीतर डाल दिया,

तब मेरा हृदय उसके लिये उमड़ उठा।

5 मैं अपने प्रेमी के लिये द्वार खोलने को उठी, और मेरे हाथों से गन्धरस टपका,

और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गन्धरस बेंडे की मूठों पर पड़ा।

6 मैंने अपने प्रेमी के लिये द्वार तो खोला परन्तु मेरा प्रेमी मुड़कर चला गया था।

जब वह बोल रहा था, तब मेरा प्राण घबरा गया था मैंने उसको ढूँढा, परन्तु न पाया;

मैंने उसको पुकारा, परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया।

7 पहरेदार जो नगर में घूमते थे, मुझे मिले,

उन्होंने मुझे मारा और घायल किया;

शहरपनाह के पहरुओं ने मेरी चद्दर मुझसे छीन ली।

8 हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम को शपथ धराकर कहती हूँ, यदि मेरा प्रेमी तुम को मिल जाए,

तो उससे कह देना कि 2:22, 2:22, 2:22, 2:22, 2:22\*।

**सहेलियाँ**

9 हे स्त्रियों में परम सुन्दरी

तेरा प्रेमी और प्रेमियों से किस बात में उत्तम है?

तू क्यों हमको ऐसी शपथ धराती है?

**वधू**

10 मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है,

वह दस हजारों में उत्तम है।

11 उसका सिर उत्तम कुन्दन है;

उसकी लटकती हुई लटें कौवों की समान काली हैं।

12 उसकी आँखें उन कबूतरों के समान हैं जो

दूध में नहाकर नदी के किनारे

अपने झुण्ड में एक कतार से बैठे हुए हों।

13 उसके गाल फूलों की फुलवारी और बलसान

की उभरी हुई क्यारियाँ हैं।

उसके होंठ 2:22, 2:22, 2:22, 2:22, जिनसे पिघला हुआ गन्धरस टपकता है।

\* 4:12 2:22, 2:22: वधू के आकर्षण और पवित्रता की तुलना एक वाटिका से की गई है जो अतिक्रमणकारियों से सुरक्षित की गई है। \* 5:1 2:22, 2:22: जिसमें शहद होता है या उसका एक अंश † 5:8 2:22, 2:22, 2:22, 2:22, 2:22: वधू अब जाग चुकी है और अपने प्रीतम को खोज रही है। उसके चले जाने का उसका स्वप्न और उससे उत्पन्न उसकी भावनाएँ उसके जागृत मन की वास्तविक भावनाओं को दर्शाती हैं। ‡ 5:13 2:22, 2:22, 2:22: सम्भवतः फूलों की सुगन्ध या होठों जैसे घूमी हुई पंखडियाँ यहाँ उनका रंग नहीं तुलना है।

- 14 उसके हाथ फीरोजा जड़े हुए सोने की छड़ें हैं।  
उसका शरीर नीलम के फूलों से जड़े हुए हाथी दाँत का काम है।
- 15 उसके पाँव कुन्दन पर बैठाये हुए संगमरमर के खम्भे हैं।  
वह देखने में लबानोन और सुन्दरता में देवदार के वृक्षों के समान मनोहर है।
- 16 उसकी वाणी अति मधुर है, हाँ वह परम सुन्दर है।  
हे यरूशलेम की पुत्रियों, यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र है।

## 6

### सहेलियाँ

- 1 हे स्त्रियों में परम सुन्दरी,  
तेरा प्रेमी कहाँ गया?  
तेरा प्रेमी कहाँ चला गया  
कि हम तेरे संग उसको ढूँढने निकलें?  
वधू
- 2 मेरा प्रेमी अपनी बारी में अर्थात् बलसान की क्यारियों की ओर गया है,  
कि बारी में अपनी भेड़-बकरियाँ चराए और सोसन फूल बटोरे।
- 3 मैं अपने प्रेमी की हूँ और मेरा प्रेमी मेरा है,  
वह अपनी भेड़-बकरियाँ सोसन फूलों के बीच चराता है।

२२२२२२२ २२२

### वर

- 4 हे मेरी प्रिय, तू तिसा की समान सुन्दरी है  
तू यरूशलेम के समान रूपवान है,  
और पताका फहराती हुई सेना के तुल्य भयंकर है।
- 5 २२२२ २२२२२ २२२२ २२ २२ २२२ २२\*,  
क्योंकि मैं उनसे घबराता हूँ;  
तेरे बाल ऐसी बकरियों के झुण्ड के समान हैं,  
जो गिलाद की ढलान पर लेटी हुई देख पड़ती हों।
- 6 तेरे दाँत ऐसी भेड़ों के झुण्ड के समान हैं  
जिन्हें स्नान कराया गया हो,  
उनमें प्रत्येक जुड़वाँ बच्चे देती हैं,  
जिनमें से किसी का साथी नहीं मरा।
- 7 तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे  
अनार की फाँक से देख पड़ते हैं।
- 8 वहाँ साठ रानियाँ और अस्सी रखैलियाँ  
और असंख्य कुमारियाँ भी हैं।
- 9 परन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल, अद्वितीय है

\* 6:5 २२२२ २२२२२ २२२२ २२ २२ २२२ २२: राजा के लिए भी वधू की सुन्दर आँखों में भयोत्पादक आकर्षक था। † 6:13 २२२२२२२२२२:  
अर्थात् शूनेमवासी \* 7:4 २२२२ २२२२ २२ २२२२२ २२: यह सम्भवतः सुलैमान द्वारा निर्मित हाथी दाँत की मीनार थी जिससे तुलना की जा रही है।

- अपनी माता की एकलौती,  
अपनी जननी की दुलारी है।  
पुत्रियों ने उसे देखा और धन्य कहा;  
रानियों और रखैलों ने देखकर उसकी प्रशंसा की।
- 10 यह कौन है जिसकी शोभा भोर के तुल्य है,  
जो सुन्दरता में चन्द्रमा  
और निर्मलता में सूर्य,  
और पताका फहराती हुई सेना के तुल्य  
भयंकर दिखाई देती है?
- 11 मैं अखरोट की बारी में उत्तर गई,  
कि तराई के फूल देखूँ,  
और देखूँ की दाखलता में कलियाँ लगीं,  
और अनारों के फूल खिले कि नहीं।
- 12 मुझे पता भी न था कि मेरी कल्पना ने  
मुझे अपने राजकुमार के रथ पर चढ़ा दिया।
- सहेलियाँ
- 13 लौट आ, लौट आ, हे २२२२२२२२२२२२,  
लौट आ, लौट आ, कि हम तुझ पर दृष्टि करें।  
वधू
- क्या तुम शूलेम्मिन को इस प्रकार देखोगे  
जैसा महनैम के नृत्य को देखते हैं?

## 7

२२२२२२ २२ २२२२२२

### वर

- 1 हे कुलीन की पुत्री, तेरे पाँव जूतियों में  
क्या ही सुन्दर हैं!  
तेरी जाँघों की गोलाई ऐसे गहनों के समान है,  
जिसको किसी निपुण कारीगर ने रचा हो।
- 2 तेरी नाभि गोल कटोरा है,  
जो मसाला मिले हुए दाखमधु से पूर्ण हो।  
तेरा पेट गेहूँ के ढेर के समान है जिसके  
चारों ओर सोसन फूल हों।
- 3 तेरी दोनों छातियाँ  
मृगनी के दो जुड़वे बच्चों के समान हैं।
- 4 तेरा गला २२२२ २२२२ २२ २२२२२ २२\*।  
तेरी आँखें हेशबान के उन कुण्डों के समान हैं,  
जो बत्रब्बीम के फाटक के पास हैं।  
तेरी नाक लबानोन के मीनार के तुल्य है,  
जिसका मुख दमिश्क की ओर है।
- 5 तेरा सिर तुझ पर कर्मेल के समान शोभायमान है,  
और तेरे सिर के लटें बैंगनी रंग के वस्त्र के तुल्य है;





और फल के रखवालों को दो सौ मिलें ।

13 तू जो बारियों में रहती है,  
मेरे मित्र तेरा बोल सुनना चाहते हैं;  
उसे मुझे भी सुनने दे ।

वधु  
14 हे मेरे प्रेमी, शीघ्रता कर,  
और सुगन्ध-द्रव्यों के पहाड़ों पर  
चिकारे या जवान हिरन के समान बन जा ।



पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूँ; मैं बछड़ों या भेड़ के बच्चों या बकरों के लहू से प्रसन्न नहीं होता।

12 तुम जब अपने मुँह मुझे दिखाने के लिये आते हो, तब यह कौन चाहता है कि तुम मेरे आँगनों को पाँव से रौंदो?

13 व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ; धूप से मुझे घृणा है। नये चाँद और विश्रामदिन का मानना, और सभाओं का प्रचार करना, यह मुझे बुरा लगता है। महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझसे सहा नहीं जाता।

14 तुम्हारे नये चाँदों और नियत पर्वों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूँ; वे सब मुझे बोझ से जान पड़ते हैं, मैं उनको सहते-सहते थक गया हूँ।

15 जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूँगा; तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तो भी मैं तुम्हारी न सुनूँगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। (22:28, 23:4)

16 अपने को धोकर पवित्र करो: मेरी आँखों के सामने से अपने बुरे कामों को दूर करो; भविष्य में बुराई करना छोड़ दो, (1:2, 2:1, 4:8)

17 भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकदमा लड़ो।

18 यहोवा कहता है, “22:†, हम आपस में वाद-विवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तो भी वे हिम के समान उजले हो जाएँगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तो भी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएँगे।

19 यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो,

20 तो इस देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाओगे; और यदि तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे; यहोवा का यही वचन है।”

22:22-23

21 जो नगरी विश्वासयोग्य थी वह कैसे व्यभिचारिणी हो गई! वह न्याय से भरी थी और उसमें धार्मिकता पाया जाता था, परन्तु अब उसमें हत्यारे ही पाए जाते हैं।

22 तेरी चाँदी धातु का 22:‡ हो गई, तेरे दाखमधु में पानी मिल गया है।

23 तेरे हाकिम हठीले और चोरों से मिले हैं। वे सब के सब घूस खानेवाले और भेंट के लालची हैं। वे अनाथ का न्याय नहीं करते, और न विधवा का मुकदमा अपने पास आने देते हैं।

† 1:18 22: यह इस्राएल राष्ट्र को संबोधित करता है और यही आग्रह सब पापियों के लिए है। ‡ 1:22 22: धातु को पिघलाने के बाद उसका मैल अलग हो जाता है। इसका महत्त्व कम वरन् नगण्य है। इस अभिव्यक्ति का अर्थ है, शाशक भ्रष्ट एवं पतित हो गए थे जैसे कि मानो शुद्ध चाँदी पूर्णतः मैली हो गई। § 1:29 22:22-23: प्राचीन युग में ये मूर्तिपूजा के लिए मनभावन स्थान थे।

24 इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा, इस्राएल के शक्तिमान की यह वाणी है: “सुनो, मैं अपने शत्रुओं को दूर करके शान्ति पाऊँगा, और अपने बैरियों से बदला लूँगा।

25 मैं तुम पर हाथ बढ़ाकर तुम्हारा धातु का मैल पूरी रीति से भस्म करूँगा और तुम्हारी मिलावट पूरी रीति से दूर करूँगा।

26 मैं तुम में पहले के समान न्यायी और आदिकाल के समान मंत्री फिर नियुक्त करूँगा। उसके बाद तू धर्मपुरी और विश्वासयोग्य नगरी कहलाएगी।”

27 सिय्योन न्याय के द्वारा, और जो उसमें फिरेंगे वे धार्मिकता के द्वारा छुड़ा लिए जाएँगे।

28 परन्तु बलवाइयों और पापियों का एक संग नाश होगा, और जिन्होंने यहोवा को त्यागा है, उनका अन्त हो जाएगा।

29 क्योंकि जिन 22:28 से तुम प्रीति रखते थे, उनसे वे लज्जित होंगे, और जिन बारियों से तुम प्रसन्न रहते थे, उनके कारण तुम्हारे मुँह काले होंगे।

30 क्योंकि तुम पत्ते मुझाए हुए बांज वृक्ष के, और बिना जल की बारी के समान हो जाओगे।

31 बलवान तो सन और उसका काम चिंगारी बनेगा, और दोनों एक साथ जलेंगे, और कोई बुझानेवाला न होगा।

## 2

22:22-23

1 आमोस के पुत्र यशायाह का वचन, जो उसने यहूदा और यरूशलेम के विषय में दर्शन में पाया।

2 अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दूढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे।

3 और बहुत देशों के लोग आएँगे, और आपस में कहेंगे: “आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।” क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा। (2:8-23)

4 वह जाति-जाति का न्याय करेगा, और देश-देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हँसिया

बनाएँगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे। (2:2. 46:9, 2:2222 4:3)

2:222222 2:2222 2:2222 2:222222

5 हे याकूब के घराने, 2, 2:2 2:222222 2:2 2:22222222 2:222 2:22222\*। (2:222. 5:8, 1 2:222. 1:7)

6 तूने अपनी प्रजा याकूब के घराने को त्याग दिया है, क्योंकि वे पूर्वजों के व्यवहार पर तन मन से चलते और पलिशतियों के समान टोना करते हैं, और परदेशियों के साथ हाथ मिलाते हैं।

7 2:2222 2:222 2:222222 2:2 2:22222 2:2 2:222222 2:22, और उनके रखे हुए धन की सीमा नहीं; उनका देश घोड़ों से भरपूर है, और उनके रथ अनगिनत हैं।

8 उनका देश मूरतों से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उन्होंने अपनी उँगलियों से संवारा है, दण्डवत् करते हैं।

9 इससे मनुष्य झुकते, और बड़े मनुष्य नीचे किए गए हैं, इस कारण उनको क्षमा न कर!

10 यहोवा के भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टान में घुस जा, और मिट्टी में छिप जा। (2:222222. 6:15, 2:22222 23:30)

11 क्योंकि आदमियों की घमण्ड भरी आँखें नीची की जाएँगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा। (2 2:222222. 1:9)

12 क्योंकि सेनाओं के यहोवा का दिन सब घमण्डियों और ऊँची गर्दनवालों पर और उन्नति से फूलनेवालों पर आएगा; और वे झुकाए जाएँगे;

13 और लबानोन के सब देवदारों पर जो ऊँचे और बड़े हैं;

14 बाशान के सब बांजवृक्षों पर; और सब ऊँचे पहाड़ों और सब ऊँची पहाड़ियों पर;

15 सब ऊँचे गुम्मतों और सब दृढ़ शहरपनाहों पर;

16 तर्शाश के सब जहाजों और सब सुन्दर चित्रकारी पर वह दिन आता है।

17 मनुष्य का गर्व मिटाया जाएगा, और मनुष्यों का घमण्ड नीचा किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा।

18 मूरतें सब की सब नष्ट हो जाएँगी।

19 जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये उठेगा, तब उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानों की गुफाओं और भूमि के बिलों में जा घुसेंगे।

20 उस दिन लोग अपनी चाँदी-सोने की मूरतों को जिन्हें उन्होंने दण्डवत् करने के लिये बनाया था, छछून्दरों और चमगादड़ों के आगे फेंकेंगे,

21 और जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये उठेगा तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टानों की दरारों और पहाड़ियों के छेदों में घुसेंगे।

22 इसलिए तुम मनुष्य से परे रहो 2:222222 2:222222 2:22222 2:222222 2:222 2:22, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?

### 3

2:222222 2:2 2:22222222 2:2 2:222222

1 सुनों, प्रभु सेनाओं का यहोवा यरूशलेम और यहूदा का सब प्रकार का सहारा और सिरहाना अर्थात् अन्न का सारा आधार, और जल का सारा आधार दूर कर देगा;

2 और वीर और योद्धा को, न्यायी और नबी को, भावी वक्ता और वृद्ध को, पचास सिपाहियों के सरदार और प्रतिष्ठित पुरुष को,

3 मंत्री और चतुर कारीगर को, और निपुण टोन्हे को भी दूर कर देगा।

4 मैं लड़कों को उनके हाकिम कर दूँगा, और बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे।

5 प्रजा के लोग आपस में एक दूसरे पर, और हर एक अपने पड़ोसी पर अंधेर करेंगे; और जवान वृद्ध जनों से और नीच जन माननीय लोगों से असभ्यता का व्यवहार करेंगे।

6 उस समय जब कोई पुरुष अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़कर कहेगा, “तेरे पास तो वस्त्र है, आ हमारा न्यायी हो जा और इस उजड़े देश को अपने वश में कर ले;”

7 तब वह शपथ खाकर कहेगा, “मैं चंगा करनेवाला न होऊँगा; क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न कपड़े; इसलिए तुम मुझे प्रजा का न्यायी नहीं नियुक्त कर सकोगे।”

8 यरूशलेम तो डगमगाया और यहूदा गिर गया है; क्योंकि उनके वचन और उनके काम यहोवा के विरुद्ध हैं, जो उसकी तेजोमय आँखों के सामने बलवा करनेवाले ठहरे हैं।

\* 2:5 2, 2:2 2:222222 2:2 2:22222222 2:22 2:22222: इसका अभिप्रेत अर्थ है, हम यहोवा की आज्ञाओं का पालन करें। † 2:7 2:2222 2:22 2:222222 2:2 2:2222 2:2 2:222222 2:2: सुलैमान ने विदेशों से बहुत सोना-चाँदी आयात किया था। सोना-चाँदी एकत्र करना मूसा की व्यवस्था में वर्जित था। (व्यव. 17:17) ‡ 2:22 2:222222 2:222222 2:2222 2:222222 2:22 2:2: अर्थात् जो दुर्बल और लघु आयु है और जिसे अपने आप पर नियंत्रण नहीं। उसका सामर्थ्य तब तक ही है जब तक उसकी श्वास चल रही है।

9 उनका चेहरा भी उनके विरुद्ध साक्षी देता है; वे सदोमियों के समान अपने पाप को आप ही बखानते और नहीं छिपाते हैं। उन पर हाय! क्योंकि उन्होंने अपनी हानि आप ही की है।

10 धर्मियों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि वे अपने कामों का फल प्राप्त करेंगे।

11 दुष्ट पर हाय! उसका बुरा होगा, क्योंकि उसके कामों का फल उसको मिलेगा।

12 मेरी प्रजा पर बच्चे अंधे करते और स्त्रियाँ उन पर प्रभुता करती हैं। हे मेरी प्रजा, तेरे अगुए तुझे भटकाते हैं, और तेरे चलने का मार्ग भुला देते हैं।

यशायाह 3:13

13 यहोवा देश-देश के लोगों से मुकद्दमा लड़ने और

14 यहोवा अपनी प्रजा के वृद्ध और हाकिमों के साथ यह विवाद करता है, “तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है, और दीन लोगों का धन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है।”

15 सेनाओं के प्रभु यहोवा की यह वाणी है, “तुम क्यों मेरी प्रजा को दलते, और दीन लोगों को पीस डालते हो!”

यशायाह 3:16

16 यहोवा ने यह भी कहा है, “क्योंकि सिय्योन की स्त्रियाँ घमण्ड करती और सिर ऊँचे किए आँखें मटकातीं और घुँघरूओं को छमछमाती हुई टुमुक-टुमुक चलती हैं,

17 इसलिए प्रभु यहोवा उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को उधरवाएगा।”

18 उस समय प्रभु घुँघरूओं, जालियों,

19 चन्द्रहारों, झुमकों, कड़ों, घूँघटों,

20 पगड़ियों, पैकरियों, पट्टकों, सुगन्धपात्रों, गण्डों,

21 अँगूठियों, नथों,

22 सुन्दर वस्त्रों, कुर्तियों, चद्दरों, बटुओं,

23 दर्पणों, मलमल के वस्त्रों, बुन्दियों, दुपट्टों इन सभी की शोभा को दूर करेगा।

24 सुगन्ध के बदले सड़ाहट, सुन्दर करधनी के बदले बन्धन की रस्सी, गूँथे हुए बालों के बदले गंजापन, सुन्दर पट्टके के बदले टाट की पेट्टी, और सुन्दरता के बदले दाग होंगे।

25 तेरे पुरुष तलवार से, और शूरवीर युद्ध में मारे जाएँगे।

26 और ~~यशायाह 3:13~~ में साँस भरना और विलाप करना होगा; और वह भूमि पर अकेली बैठी रहेगी।

## 4

यशायाह 4:1

1 उस समय सात स्त्रियाँ एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी, “रोटी तो हम अपनी ही खाएँगी, और वस्त्र अपने ही पहनेंगी, केवल हम तेरी कहलाएँ; हमारी नामधराई दूर कर।”

2 उस समय इस्राएल के बच्चे हुआओं के लिये यहोवा की डाली, भूषण और महिमा ठहरेगी, और भूमि की उपज, बड़ाई और शोभा ठहरेगी। (यशायाह 23:5, यशायाह 27:6, यशायाह 1:14)

3 और जो कोई सिय्योन में बचा रहे, और यरूशलेम में रहे, अर्थात् यरूशलेम में जितनों के नाम जीवनपत्र में लिखे हों, वे पवित्र कहलाएँगे। (यशायाह 17:8, यशायाह 20:15)

4 यह तब होगा, जब प्रभु न्याय करनेवाली और भस्म करनेवाली आत्मा के द्वारा सिय्योन की स्त्रियों के मल को धो चुकेगा और यरूशलेम के खून को दूर कर चुकेगा।

5 तब यहोवा सिय्योन पर्वत के एक-एक घर के ऊपर, और उसके सभास्थानों के ऊपर, दिन को तो धुएँ का बादल, और रात को धधकती आग का ~~यशायाह 4:5~~, और समस्त वैभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा।

6 वह दिन को धूप से बचाने के लिये और आँधी-पानी और झड़ी में एक शरण और आड़ होगा।

## 5

यशायाह 5:1

1 अब मैं अपने प्रिय के लिये और उसकी दाख की बारी के विषय में गीत गाऊँगा: एक अति उपजाऊ टीले पर मेरे प्रिय की एक दाख की बारी थी।

2 उसने उसकी मिट्टी खोदी और उसके पत्थर बीनकर उसमें उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई; उसके बीच में उसने एक गुम्मत बनाया, और दाखरस के लिये एक कुण्ड भी खोदा; तब उसने दाख की आशा की, परन्तु उसमें निकम्मी दाखें ही लगीं।

3 अब हे यरूशलेम के निवासियों और हे यहूदा के मनुष्यों, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो।

4 मेरी दाख की बारी के लिये और क्या करना रह गया जो मैंने उसके लिये न किया हो? फिर क्या कारण है कि

\* 3:13 यशायाह 3:13-14: परमेश्वर शान्त रहकर उनके दुष्टता के आचरण को नहीं देखता रहेगा। परन्तु वह आकर उनको उनके योग्य कठोर दण्ड देगा। † 3:26 यशायाह 3:26: उस युग के नगरों की शहरपनाह होती थी और नगर में प्रवेश करने के लिए मुख्य मार्गों में द्वार खुलते थे। \* 4:5 यशायाह 4:5: इस पद और अगले पद का अर्थ है कि परमेश्वर अपने लोगों को पवित्र देख-रेख और सुरक्षा में रखेगा।

जब मैंने दाख की आशा की तब उसमें निकम्मी दाखें लगीं?

5 अब मैं तुम को बताता हूँ कि अपनी दाख की बारी से क्या करूँगा। मैं उसके काँटेवाले बाड़े को उखाड़ दूँगा कि वह चट की जाए, और उसकी दीवार को ढा दूँगा कि वह रौंदी जाए।

6 मैं उसे उजाड़ दूँगा; वह न तो फिर छाँटी और न खोदी जाएगी और उसमें भाँति-भाँति के कटीले पेड़ उगेंगे; मैं मेघों को भी आज्ञा दूँगा कि उस पर जल न बरसाएँ।

7 क्योंकि सेनाओं के यहोवा की **222 22 22222\*** इस्राएल का घराना, और उसका प्रिय पौधा यहूदा के लोग हैं; और उसने उनमें न्याय की आशा की परन्तु अन्याय देख पड़ा; उसने धार्मिकता की आशा की, परन्तु उसे चिल्लाहट ही सुन पड़ी! **(222. 80:8, 222222 3:8-10)**

**222222 22 222222 22 222222**

8 हाय उन पर जो घर से घर, और खेत से खेत यहाँ तक मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं बचता, कि तुम देश के बीच अकेले रह जाओ।

9 सेनाओं के यहोवा ने मेरे सुनते कहा है: “निश्चय बहुत से घर सुनसान हो जाएँगे, और बड़े-बड़े और सुन्दर घर निर्जन हो जाएँगे। **(2222. 6:11, 222222 26:38)**

10 क्योंकि दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत दाखमधु मिलेगा, और होमेर भर के बीच से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा।”

11 हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात तक दाखमधु पीते रहते हैं जब तक उनको गर्मी न चढ़ जाए!

12 उनके भोजों में वीणा, सारंगी, डफ, बाँसुरी और दाखमधु, ये सब पाये जाते हैं; परन्तु वे यहोवा के कार्य की ओर दृष्टि नहीं करते, और उसके हाथों के काम को नहीं देखते।

13 इसलिए अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बँधुवाई में जाती है, उसके प्रतिष्ठित पुरुष भूखे मरते और साधारण लोग प्यास से व्याकुल होते हैं।

14 इसलिए अधोलोक ने अत्यन्त लालसा करके अपना मुँह हृद से ज्यादा पसारा है, और उनका वैभव और भीड़-भाड़ और आनन्द करनेवाले सब के सब उसके मुँह में जा पड़ते हैं।

\* 5:7 **2222 22 22222**: परमेश्वर यहूदियों के साथ ऐसा व्यवहार करता था जैसे एक किसान अपनी दाख की बारी को सम्भालता है। वह उसकी दाख की बारी थी, उसकी निष्ठावान एवं निरन्तर देख-रेख का पात्र थी। † 5:28 **2222 22 222222 222222 222222 2222**: अर्थात् उनके रथ बहुत तेज दौड़ते हैं और बवण्डर के जैसी धूल उड़ाते हैं।

15 साधारण मनुष्य दबाए जाते और बड़े मनुष्य नीचे किए जाते हैं, और अभिमानियों की आँखें नीची की जाती हैं।

16 परन्तु सेनाओं का यहोवा न्याय करने के कारण महान ठहरता, और पवित्र परमेश्वर धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है!

17 तब भेड़ों के बच्चे मानो अपने खेत में चरेंगे, परन्तु हृष्टपुष्टों के उजड़े स्थान परदेशियों को चराई के लिये मिलेंगे।

18 हाय उन पर जो अधर्म को अनर्थ की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खींच ले आते हैं,

19 जो कहते हैं, “वह फुर्ती करे और अपने काम को शीघ्र करे कि हम उसको देखें; और इस्राएल के पवित्र की युक्ति प्रगट हो, वह निकट आए कि हम उसको समझें!”

20 हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं!

21 हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान हैं! **(22222. 3:7, 26:12, 2222. 12:16)**

22 हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज बनाने में बहादुर हैं,

23 जो घूस लेकर दुष्टों को निर्दोष, और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं!

24 इस कारण जैसे अग्नि की लौ से खूँटी भस्म होती है और सूखी घास जलकर बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी और उनके फूल धूल होकर उड़ जाएँगे; क्योंकि उन्होंने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को निकम्मी जाना, और इस्राएल के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना है।

25 इस कारण यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का है, और उसने उनके विरुद्ध हाथ बढ़ाकर उनको मारा है, और पहाड़ काँप उठे; और लोगों की लोथें सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।

26 वह दूर-दूर की जातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा, और सीटी बजाकर उनको पृथ्वी की छोर से बुलाएगा; देखो, वे फुर्ती करके वेग से आएँगे!

27 उनमें कोई थका नहीं न कोई ठोकर खाता है; कोई उँघने या सोनेवाला नहीं, किसी का फेंटा नहीं खुला, और किसी के जूतों का बन्धन नहीं टूटा;











8 क्योंकि वह कहता है, “क्या मेरे सब हाकिम राजा के तुल्य नहीं?”

9 क्या कलनो कर्कमीश के समान नहीं है? क्या हमात अर्पाद के और सामरिया दमिश्क के समान नहीं?

10 जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतों से भरे हुए उन राज्यों पर पहुँचा जिनकी मूरतों यरूशलेम और सामरिया की मूरतों से बढ़कर थीं, और जिस प्रकार मैंने सामरिया और उसकी मूरतों से किया,

11 क्या उसी प्रकार मैं यरूशलेम से और उसकी मूरतों से भी न करूँ?”

१०:१०-११

12 इस कारण जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब मैं अश्रूर के राजा के गर्व की बातों का, और उसकी घमण्ड भरी आँखों का बदला दूँगा।

13 उसने कहा है, “अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैंने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूँ; मैंने देश-देश की सीमाओं को हटा दिया, और उनके रखे हुए धन को लूट लिया; मैंने वीर के समान गद्दी पर विराजनेहारों को उतार दिया है।

14 देश-देश के लोगों की धन-सम्पत्ति, चिड़ियों के घोंसलों के समान, मेरे हाथ आई है, और जैसे कोई छोड़े हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैंने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है; और कोई पंख फड़फड़ाने या चोंच खोलने या चीं-चीं करनेवाला न था।”

15 क्या कुल्हाड़ा उसके विरुद्ध जो उससे काटता हो डींग मारे, या आरी उसके विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या सोंटा अपने चलानेवाले को चलाए या छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है!

16 इस कारण प्रभु अर्थात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हष्ट-पुष्ट योद्धाओं को दुबला कर देगा, और उसके ऐश्वर्य के नीचे १०:१६-१७ होगी।

17 इस्राएल की ज्योति तो आग ठहरेगी, और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके झाड़-झँखाड़ को एक ही दिन में भस्म करेगा।

18 और जैसे रोगी के क्षीण हो जाने पर उसकी दशा होती है वैसे ही वह उसके वन और फलदाई बारी की शोभा पूरी रीति से नाश करेगा।

19 उस वन के वृक्ष इतने थोड़े रह जाएँगे कि लड़का भी उनको गिनकर लिख लेगा।

१०:१८-१९

‡ 10:16 १०:१६-१७ अर्थात् परमेश्वर अकस्मात् ही उसके वैभव और घमण्ड को पूर्णतः नष्ट कर देगा। जैसे किसी भव्य मन्दिर के नीचे आग जला दी गई हो। § 10:20 १०:२० अर्थात् अश्रूर का राजा \* 10:26 १०:२६ इस चट्टान पर गिदोन ने दो मिद्यानियों को मार डाला था ओरेब और जेब। † 10:32 १०:३२ बिन्यामीन गोत्र का एक नगर जिसमें पुरोहित थे।

20 उस समय इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए, अपने १०:२० पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, परन्तु यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे।

21 याकूब में से बचे हुए लोग पराक्रमी परमेश्वर की ओर फिरेंगे।

22 क्योंकि हे इस्राएल, चाहे तेरे लोग समुद्र के रेतकणों के समान भी बहुत हों, तो भी निश्चय है कि उनमें से केवल बचे लोग ही लौटेंगे। सत्यानाश तो पूरे न्याय के साथ ठाना गया है।

23 क्योंकि प्रभु सेनाओं के यहोवा ने सारे देश का सत्यानाश कर देना ठाना है। (१०:२३, २७, २८)

१०:२४-२५

24 इसलिए प्रभु सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “हे सिय्योन में रहनेवाली मेरी प्रजा, अश्रूर से मत डर; चाहे वह सोंटों से तुझे मारे और मिस्र के समान तेरे ऊपर छड़ी उठाए।

25 क्योंकि अब थोड़ी ही देर है कि मेरी जलन और क्रोध उनका सत्यानाश करके शान्त होगा

26 सेनाओं का यहोवा उसके विरुद्ध कोड़ा उठाकर उसको ऐसा मारेगा जैसा उसने १०:२६ पर मिद्यानियों को मारा था; और जैसा उसने मिस्रियों के विरुद्ध समुद्र पर लाठी बढाई, वैसे ही उसकी ओर भी बढ़ाएगा।

27 उस समय ऐसा होगा कि उसका बोज़ तेरे कंधे पर से और उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।”

१०:२८-२९

28 वह अय्यात में आया है, और मिग्रोन में से होकर आगे बढ़ गया है; मिकमाश में उसने अपना सामान रखा है।

29 वे घाटी से पार हो गए, उन्होंने गेबा में रात काटी; रामाह थरथरा उठा है, शाऊल का गिबा भाग निकला है।

30 हे गल्लीम की बेटी चिल्ला! हे लैशा के लोगों कान लगाओ! हाय बेचारा अनातोत!

31 मदमेना मारा-मारा फिरता है, गेबीम के निवासी भागने के लिये अपना-अपना सामान इकट्ठा कर रहे हैं।

32 आज ही के दिन वह १०:३२ में टिकेगा; तब वह सिय्योन पहाड़ पर, और यरूशलेम की पहाड़ी पर हाथ उठाकर धमकाएगा।

33 देखो, प्रभु सेनाओं का यहोवा पेड़ों को भयानक रूप से छाँट डालेगा; ऊँचे-ऊँचे वृक्ष काटे जाएँगे, और जो ऊँचे हैं वे नीचे किए जाएँगे।

34 वह घने वन को लोहे से काट डालेगा और लवानोन एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा।

## 11

यशायाह 13:23, 23:5, 22:16

1 तब यशायाह\* के टूट में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। (यशायाह 13:23, 23:5, 22:16)

2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। (यशायाह 1:17, 42:1, 14:17)

3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध—सा भाएगा।

वह मुँह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा; (यशायाह 8:15, 16, 7:24)

4 परन्तु वह कंगालों का न्याय धार्मिकता से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपनी फूँक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा। (2 यशायाह 2:8, 19:15, 31:8, 9)

5 उसकी कटि का फेंटा धार्मिकता और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी। (यशायाह 59:17, 6:14)

6 तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा।

7 यशायाह\* और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल के समान भूसा खाया करेगा।

8 दूध पीता बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा।

9 मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है।

यशायाह 13:23, 23:5, 22:16

\* 11:1 यशायाह: दाऊद का पिता अर्थात् जिसकी चर्चा की जा रही है वह यिशै के कुटुम्ब या दाऊद के वंश का है। † 11:7 यशायाह 13:23, 23:5, 22:16: अर्थात् एक साथ ये पशु स्वभाव से ही संगति नहीं करते हैं क्योंकि एक दूसरे का शिकार होता है, वे एक साथ रहेंगे। \* 12:1 यशायाह 105:1, 2: पिछले अध्याय में जिस दिन का संदर्भ है, मसीह के आगमन का समय जब उसके राज्य का प्रभाव हर जगह दिखाई देगा।

10 उस समय यिशै की जड़ देश-देश के लोगों के लिये एक झण्डा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूँढ़ेंगे, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा। (यशायाह 15:12)

11 उस समय प्रभु अपना हाथ दूसरी बार बढ़ाकर बचे हुए लोगों को, जो उसकी प्रजा के रह गए हैं, अश्शूर से, मिस्र से, पत्रोस से, कूश से, एलाम से, शिनार से, हमत से, और समुद्र के द्वीपों से मोल लेकर छुड़ाएगा।

12 वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करके इस्राएल के सब निकाले हुए लोगों को, और यहूदा के सब बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा।

13 एप्रैम फिर डाह न करेगा और यहूदा के तंग करनेवाले काट डाले जाएँगे; न तो एप्रैम यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रैम को तंग करेगा।

14 परन्तु वे पश्चिम की ओर पलिश्तियों के कंधे पर झपट्टा मारेगा, और मिलकर पूर्वियों को लूटेंगे। वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएँगे, और अम्मोनी उनके अधीन हो जाएँगे।

15 यहोवा मिस्र के समुद्र की कोल को सुखा डालेगा, और फरात पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लू से ऐसा सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा, और लोग जूता पहने हुए भी पार हो जाएँगे। (यशायाह 10:11)

16 उसकी प्रजा के बचे हुए लोगों के लिये अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले आने के समय इस्राएल के लिये हुआ था।

## 12

यशायाह 11:1, 11:7, 11:10

1 यशायाह\* तू कहेगा, “हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित हुआ था, परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हुआ, और तूने मुझे शान्ति दी है।”

2 देखो “परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूँगा और न थरथराऊँगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया है।” (यशायाह 118:14, 11:10, 15:2)

3 तुम आनन्दपूर्वक उद्धार के स्रोतों से जल भरोगे।

4 और उस दिन तुम कहोगे, “यहोवा की स्तुति करो, उससे प्रार्थना करो; सब जातियों में उसके बड़े कामों का प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम महान है। (यशायाह 105:1, 2)

5 “**१२:१२** **१२** **१२२** **१२२**, **१२२२२२२२** **१२२२२** **१२२२२२२२२२** **१२२२** **१२२२** **१२२२**”; इसे सारी पृथ्वी पर प्रगट करो।

6 हे सिय्योन में बसनेवाली तू जयजयकार कर और ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान है।”

## 13

**१२२२२२** **१२** **१२२२२२२२** **१२२२२२**

1 बाबेल के विषय की भारी भविष्यद्वाणी जिसको आमोस के पुत्र यशायाह ने दर्शन में पाया।

2 मुंडे पहाड़ पर एक झण्डा खड़ा करो, हाथ से संकेत करो और उनसे ऊँचे स्वर से पुकारो कि वे सरदारों के फाटकों में प्रवेश करें।

3 मैंने स्वयं अपने पवित्र किए हुआओं को आज्ञा दी है, मैंने अपने क्रोध के लिये अपने वीरों को बुलाया है जो मेरे प्रताप के कारण प्रसन्न हैं।

4 पहाड़ों पर एक बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है, मानो एक बड़ी फौज की हलचल हो। राज्य-राज्य की इकट्टी की हुई जातियाँ हलचल मचा रही हैं। सेनाओं का यहोवा युद्ध के लिये अपनी सेना इकट्टी कर रहा है।

5 वे दूर देश से, आकाश के छोर से आए हैं, हाँ, यहोवा अपने क्रोध के हथियारों समेत सारे देश को नाश करने के लिये आया है।

6 हाय-हाय करो, क्योंकि यहोवा का दिन समीप है; वह सर्वशक्तिमान की ओर से मानो सत्यानाश करने के लिये आता है।

7 इस कारण सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, और हर एक मनुष्य का हृदय पिघल जाएगा,

8 और वे घबरा जाएँगे। उनको पीड़ा और शोक होगा; उनको जच्चा की सी पीड़ाएँ उठेंगी। वे चकित होकर एक दूसरे को ताकेंगे; उनके मुँह जल जाएँगे। **(१ १२:१२-१२. 5:3)**

9 देखो, यहोवा का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दयता के साथ आता है कि वह पृथ्वी को उजाड़ डाले और पापियों को उसमें से नाश करे।

10 क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े-बड़े नक्षत्र अपना प्रकाश न देंगे, और सूर्य उदय होते-होते अंधेरा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। **(१२:२२-२२ 24:29, १२. 13:24, १२:१२. 6:12,13)**

11 मैं जगत के लोगों को उनकी बुराई के कारण, और दुष्टों को उनके अधर्म का दण्ड दूँगा; मैं अभिमानियों

के अभिमान को नाश करूँगा और उपद्रव करनेवालों के घमण्ड को तोड़ूँगा।

12 मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी को ओपीर के सोने से भी अधिक महँगा करूँगा।

13 इसलिए मैं आकाश को कँपाऊँगा, और **१२:१२-१२ १२:१२ १२:१२ १२:१२\***; यह सेनाओं के यहोवा के रोष के कारण और उसके भड़के हुए क्रोध के दिन होगा।

14 और वे खदेड़े हुए हिरन, या बिन चरवाहे की भेड़ों के समान अपने-अपने लोगों की ओर फिरेंगे, और अपने-अपने देश को भाग जाएँगे।

15 जो कोई मिले वह बेधा जाएगा, और जो कोई पकड़ा जाए, वह तलवार से मार डाला जाएगा।

16 उनके बाल-बच्चे उनके सामने पटक दिए जाएँगे; और उनके घर लूटे जाएँगे, और उनकी स्त्रियाँ भ्रष्ट की जाएँगी।

17 देखो, मैं उनके विरुद्ध मादी लोगों को उभाऊँगा जो न तो चाँदी का कुछ विचार करेंगे और न सोने का लालच करेंगे।

18 वे तीरों से जवानों को मारेंगे, और बच्चों पर कुछ दया न करेंगे, वे लड़कों पर कुछ तरस न खाएँगे।

19 बाबेल जो सब राज्यों का शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं, वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और गमोरा, जब परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया था।

20 वह फिर कभी न बसेगा और युग-युग उसमें कोई वास न करेगा; अरबी लोग भी उसमें डेरा खड़ा न करेंगे, और न चरवाहे उसमें अपने पशु बैठाएँगे।

21 वहाँ जंगली जन्तु बैठेंगे, और उल्लू उनके घरों में भरे रहेंगे; वहाँ शूतुर्मुर्ग बसेंगे, और जंगली बकरे वहाँ नाचेंगे। **(१२:१२-१२. 18:2)**

22 उस नगर के राज-भवनों में हूँडार, और उसके सुख-विलास के मन्दिरों में गीदड़ बोला करेंगे; उसके नाश होने का समय निकट आ गया है, और उसके दिन अब बहुत नहीं रहे।

## 14

**१२२२२२** **१२** **१२२**

1 यहोवा याकूब पर दया करेगा, और इस्राएल को फिर अपनाकर, उन्हीं के देश में बसाएगा, और परदेशी उनसे मिल जाएँगे और अपने-अपने को याकूब के घराने से मिला लेंगे।

† 12:5 **१२:१२** ... **१२:१२ १२:१२ १२:१२ १२:१२**; महिमा की बातें, जो उत्सव के योग्य हैं, स्मरणयोग्य रही हैं, जो बातें गौरव की, महान और अद्भुत हैं। \* 13:13 **१२:१२ १२:१२ १२:१२ १२ १२ १२:१२**; यह परमेश्वर के प्रकोप का महान प्रभाव दर्शाता है, जैसे कि उसकी उपस्थिति से पृथ्वी को भी डरना और काँपना और उसके क्रोध के भय से दूर भागना आवश्यक है।

2 देश-देश के लोग उनको उन्हीं के स्थान में पहुँचाएँगे, और इस्राएल का घराना यहोवा की भूमि पर उनका अधिकारी होकर उनको दास और दासियाँ बनाएगा; क्योंकि वे अपने बँधुवाई में ले जानेवालों को बन्दी बनाएँगे, और जो उन पर अत्याचार करते थे उन पर वे शासन करेंगे।

22222 22 22222 22 2222

3 जिस दिन यहोवा तुझे तेरे सन्ताप और घबराहट से, और उस कठिन श्रम से जो तुझ से लिया गया विश्राम देगा,

4 उस दिन तू बाबेल के राजा पर ताना मारकर कहेगा, “परिश्रम करानेवाला कैसा नाश हो गया है, सुनहले मन्दिरों से भरी नगरी कैसी नाश हो गई है!

5 यहोवा ने दुष्टों के सोंटे को और अन्याय से 22222 2222222222 22 22 22\* तोड़ दिया है,

6 जिससे वे मनुष्यों को लगातार रोष से मारते रहते थे, और जाति-जाति पर क्रोध से प्रभुता करते और लगातार उनके पीछे पड़े रहते थे।

7 अब सारी पृथ्वी को विश्राम मिला है, वह चैन से है; लोग ऊँचे स्वर से गा उठे हैं।

8 सनोवर और लबानोन के देवदार भी तुझ पर आनन्द करके कहते हैं, ‘जब से तू गिराया गया तब से कोई हमें काटने को नहीं आया।’

9 पाताल के नीचे अधोलोक में तुझ से मिलने के लिये हलचल हो रही है; वह तेरे लिये मुर्दों को अर्थात् पृथ्वी के सब सरदारों को जगाता है, और वह जाति-जाति से सब राजाओं को उनके सिंहासन पर से उठा खड़ा करता है।

10 वे सब तुझ से कहेंगे, ‘क्या तू भी हमारे समान निर्बल हो गया है? क्या तू हमारे समान ही बन गया?’

11 तेरा वैभव और तेरी सारंगियों को शब्द अधोलोक में उतारा गया है; कीड़े तेरा बिछौना और केंचुए तेरा ओढ़ना हैं।

2222 22 2222222222 2222 22 2222

12 “हे भोर के चमकनेवाले तारे तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति-जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? (22222 10:18, 2222. 28:13-17)

13 तू मन में कहता तो था, ‘2222 22222222 22 22222222†; मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के तारागण

\* 14:5 2222 2222222222 22 22 22: अर्थात् बाबेल के राजा का राजदण्ड। इसका अर्थ है कि यहोवा ने बाबेल से अधिकार छीन लिया और उसकी प्रभुता नष्ट कर दी। † 14:13 2222 22222222 22 22222222: अर्थात् उसने अपने को सर्वोच्च स्थान पर लाने की इच्छा की, उसकी मनोकामना थी कि सब उसे सम्मान दें। वह परमेश्वर के अधिकार को स्वीकार करना नहीं चाहता था। ‡ 14:24 2222 2222 22: किसी बात का दृढ़ पुष्टिकरण करते समय यहोवा को शपथ खाते दिखाया जाता है जिसका अर्थ है कि वह जो कहता है वह पूर्णतः निश्चित है।

से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा; (22222222 11:23, 222222 10:15)

14 मैं मेघों से भी ऊँचे-ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।’

15 परन्तु तू अधोलोक में उस गड्ढे की तह तक उतारा जाएगा। (22222222 11:23, 222222 10:15)

16 जो तुझे देखेंगे तुझको ताकते हुए तेरे विषय में सोच-सोचकर कहेंगे, ‘क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था और राज्य-राज्य में घबराहट डाल देता था;

17 जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढा देता था, और अपने बन्दियों को घर जाने नहीं देता था?’

18 जाति-जाति के सब राजा अपने-अपने घर पर महिमा के साथ आराम से पड़े हैं;

19 परन्तु तू निकम्मी शाख के समान अपनी कब्र में से फेंका गया; तू उन मारे हुएों के शवों से घिरा है जो तलवार से बिधकर गड्ढे में पत्थरों के बीच में लताड़ी हुई लोथ के समान पड़े है।

20 तू उनके साथ कब्र में न गाड़ा जाएगा, क्योंकि तूने अपने देश को उजाड़ दिया, और अपनी प्रजा का घात किया है।

“कुकर्मियों के वंश का नाम भी कभी न लिया जाएगा।

21 उनके पूर्वजों के अधर्म के कारण पुत्रों के घात की तैयारी करो, ऐसा न हो कि वे फिर उठकर पृथ्वी के अधिकारी हो जाएँ, और जगत में बहुत से नगर बसाएँ।”

222222 22 2222

22 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, “मैं उनके विरुद्ध उठूँगा, और बाबेल का नाम और निशान मिटा डालूँगा, और बेटों-पोतों को काट डालूँगा,” यहोवा की यही वाणी है।

23 “मैं उसको साही की माँद और जल की झीलें कर दूँगा, और मैं उसे सत्यानाश के झाड़ू से झाड़ू डालूँगा,” सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

222222222222 22 2222

24 सेनाओं के यहोवा ने यह 2222 2222 22‡, “निःसन्देह जैसा मैंने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैंने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी,

25 कि मैं अशूर को अपने ही देश में तोड़ दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूँगा; तब उसका जूआ उनकी गर्दनों पर से और उसका बोझ उनके कंधों पर से उतर जाएगा।”

26 यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिये ठहराई गई है; और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है।

27 क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?

□□□□□□□□ □□ □□□

28 जिस वर्ष में आहाज राजा मर गया उसी वर्ष यह भारी भविष्यद्वाणी हुई

29 “हे सारे पलिशतीन तू इसलिए आनन्द न कर, कि तेरे मारनेवाले की लाठी टूट गई, क्योंकि सर्प की जड़ से एक काला नाग उत्पन्न होगा, और उसका फल एक उड़नेवाला और तेज विषवाला अग्निसर्प होगा।

30 तब कंगालों के जेठे खाएँगे और दरिद्र लोग निडर बैठने पाएँगे, परन्तु मैं तेरे वंश को भूख से मार डालूँगा, और तेरे बचे हुए लोग घात किए जाएँगे।

31 हे फाटक, तू हाय! हाय! कर; हे नगर, तू चिल्ला; हे पलिशतीन तू सब का सब पिघल जा! क्योंकि उत्तर से एक धुआँ उठेगा और उसकी सेना में से कोई पीछे न रहेगा।”

32 तब जाति-जाति के दूतों को क्या उत्तर दिया जाएगा? यह कि “यहोवा ने सिय्योन की नींव डाली है, और उसकी प्रजा के दीन लोग उसमें शरण लेंगे।”

## 15

□□□□ □□ □□□

1 मोआब के विषय भारी भविष्यद्वाणी। निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात में उजाड़ और नाश हो गया है; निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में उजाड़ और नाश हो गया है।

2 बैत और दीबोन ऊँचे स्थानों पर रोने के लिये चढ़ गए हैं; नबो और □□□□□\* के ऊपर मोआब हाय! हाय! करता है। उन सभी के सिर मुँण्डे हुए, और सभी की दाढ़ियाँ मुँण्डी हुई हैं;

3 सड़कों में लोग टाट पहने हैं; छतों पर और चौकों में सब कोई आँसू बहाते हुए हाय! हाय! करते हैं।

\* 15:2 □□□□□: यह यरदन नदी के पूर्व में रूबेन को दिए गये क्षेत्र के दक्षिणी भाग में एक नगर था। † 15:5 □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□: यह गहन अनुकंपा को व्यक्त करता है, और प्रमाण है कि भविष्यद्वाक्ता की समझ में उस पर आनेवाली आपदायें विपत्तिपूर्ण होंगी।

\* 16:3 □□□□□□□□: अर्थात् वह करो जो न्याय संगत एवं उचित हो।

4 हेशबोन और एलाले चिल्ला रहे हैं, उनका शब्द यहस तक सुनाई पड़ता है; इस कारण मोआब के हथियार-बन्द चिल्ला रहे हैं; उसका जी अति उदास है।

5 □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□; उसके रईस सोअर और एग्लत-शलीशिया तक भागे जाते हैं। देखो, लूहीत की चढ़ाई पर वे रोते हुए चढ़ रहे हैं; सुनो, होरोनैम के मार्ग में वे नाश होने की चिल्लाहट मचा रहे हैं।

6 निम्रीम का जल सूख गया; घास कुम्हला गई और हरियाली मुझा गई, और नमी कुछ भी नहीं रही।

7 इसलिए जो धन उन्होंने बचा रखा, और जो कुछ उन्होंने इकट्ठा किया है, उस सब को वे उस घाटी के पार लिये जा रहे हैं जिसमें मजनू वृक्ष हैं।

8 इस कारण मोआब के चारों ओर की सीमा में चिल्लाहट हो रही है, उसमें का हाहाकार एग्लैम और बेरेलीम में भी सुन पड़ता है।

9 क्योंकि दीमोन का सोता लहू से भरा हुआ है; तो भी मैं दीमोन पर और दुःख डालूँगा, मैं बचे हुए मोआबियों और उनके देश से भागे हुआओं के विरुद्ध सिंह भेजूँगा।

## 16

□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□

1 जंगल की ओर से सेला नगर से सिय्योन की बेटे के पर्वत पर देश के हाकिम के लिये भेड़ों के बच्चों को भेजो।

2 मोआब की बेटियाँ अनॉन के घाट पर उजाड़े हुए घोंसले के पक्षी और उनके भटके हुए बच्चों के समान हैं।

3 □□□□□□□\* करो, न्याय चुकाओ; दोपहर ही में अपनी छाया को रात के समान करो; घर से निकाले हुआओं को छिपा रखो, जो मारे-मारे फिरते हैं उनको मत पकड़वाओ।

4 मेरे लोग जो निकाले हुए हैं वे तेरे बीच में रहें; नाश करनेवाले से मोआब को बचाओ। पीसनेवाला नहीं रहा, लूट पाट फिर न होगी; क्योंकि देश में से अंधेर करनेवाले नाश हो गए हैं।

5 तब दया के साथ एक सिंहासन स्थिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तम्बू में सच्चाई के साथ एक विराजमान होगा जो सोच विचार कर सच्चा न्याय करेगा और धार्मिकता के काम पर तत्पर रहेगा।

6 हमने मोआब के गर्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी था; उसके अभिमान और गर्व और



रोष के सम्बंध में भी सुना है—परन्तु उसका बड़ा बोल व्यर्थ है।

7 क्योंकि मोआब हाय! हाय! करेगा; सब के सब मोआब के लिये हाहाकार करेंगे। कीरहरासत की दाख की टिकियों के लिये वे अति निराश होकर लम्बी-लम्बी साँस लिया करेंगे।

8 क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा की दाखलताएँ मुझाँ गईं; जाति-जाति के अधिकारियों ने उनकी उत्तम-उत्तम लताओं को काट-काटकर गिरा दिया है, वे याजेर तक पहुँची और जंगल में भी फैलती गईं; और बढ़ते-बढ़ते ताल के पार दूर तक बढ़ गई थीं।

9 मैं याजेर के साथ सिबमा की दाखलताओं के लिये भी [?]; हे हेशबोन और एलाले, मैं तुम्हें अपने आँसुओं से सींचूँगा; क्योंकि तुम्हारे धूपकाल के फलों के और अनाज की कटनी के समय की ललकार सुनाई पड़ी है।

10 फलदाई बारियों में से आनन्द और मगनता जाती रही; दाख की बारियों में गीत न गाया जाएगा, न हर्ष का शब्द सुनाई देगा; और दाखरस के कुण्डों में कोई दाख न रौंदेगा, क्योंकि मैं उनके हर्ष के शब्द को बन्द करूँगा।

11 इसलिए मेरा मन मोआब के कारण और मेरा हृदय कीरहेरेस के कारण वीणा का सा क्रन्दन करता है।

12 और जब मोआब ऊँचे स्थान पर मुँह दिखाते-दिखाते थक जाए, और प्रार्थना करने को अपने पवित्रस्थान में आए, तो उसे कुछ लाभ न होगा।

13 यही वह बात है जो यहोवा ने इससे पहले मोआब के विषय में कही थी।

14 परन्तु [?], “मजदूरों के वर्षों के समान तीन वर्ष के भीतर मोआब का वैभव और उसकी भीड़-भाड़ सब तुच्छ ठहरेगी; और थोड़े जो बचेंगे उनका कोई बल न होगा।”

## 17

[?]

1 [?]\* देखो, दमिश्क नगर न रहेगा, वह खण्डहर ही खण्डहर हो जाएगा।

2 अरोएर के नगर निर्जन हो जाएँगे, वे पशुओं के झुण्डों की चराई बनेंगे; पशु उनमें बैठेंगे और उनका कोई भगानेवाला न होगा।

† 16:9 [?]: उजाड़ा जाना ऐसा भयानक होगा कि मैं भविष्यद्वक्ता विलाप करूँगा, यद्यपि वह मेरा देश नहीं, दूसरा देश है। ‡ 16:14 [?]

[?]: यह यशायाह की विशेष एवं निश्चित भविष्यद्वक्ती के संदर्भ में है कि उनका विनाश तीन वर्ष में होगा। \* 17:1 [?]

[?]: अर्थात् वह निश्चय ही नष्ट होगा। भविष्यद्वक्ता ने दर्शन में देखा कि वह नष्ट हो चुका है। † 17:4 [?]

[?]: वह दुर्बल हो जाएगा जैसे रोगग्रस्त मनुष्य हो जाता है। ‡ 17:13 [?]: अर्थात् वह उनकी योजनाओं को निरर्थक कर देगा, उनकी सफलता को रोकेंगा और उनके उद्देश्यों को परास्त कर देगा। यह परमेश्वर के महान सामर्थ्य को प्रगट करता है।

3 एप्रैम के गढ़वाले नगर, और दमिश्क का राज्य और बचे हुए अरामी, तीनों भविष्य में न रहेंगे; और जो दशा इस्राएलियों के वैभव की हुई वही उनकी होगी; सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

4 उस समय याकूब का वैभव घट जाएगा, और [?]

5 और ऐसा होगा जैसा लवनेवाला अनाज काटकर बालों को अपनी अँकवार में समेटे या रपाईम नामक तराई में कोई सिला बीनता हो।

6 तो भी जैसे जैतून वृक्ष के झाड़ते समय कुछ फल रह जाते हैं, अर्थात् फुनगी पर दो-तीन फल, और फलवन्त डालियों में कहीं-कहीं चार-पाँच फल रह जाते हैं, वैसे ही उनमें सिला बिनाई होगी, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

7 उस समय मनुष्य अपने कर्ता की ओर दृष्टि करेगा, और उसकी आँखें इस्राएल के पवित्र की ओर लगी रहेंगी;

8 वह अपनी बनाई हुई वेदियों की ओर दृष्टि न करेगा, और न अपनी बनाई हुई अशेरा नामक मूर्तों या सूर्य की प्रतिमाओं की ओर देखेगा। ([?]: 5:13,14)

9 उस समय उनके गढ़वाले नगर घने वन, और उनके निर्जन स्थान पहाड़ों की चोटियों के समान होंगे जो इस्राएलियों के डर के मारे छोड़ दिए गए थे, और वे उजाड़ पड़े रहेंगे।

10 क्योंकि तू अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गया और अपनी दृढ़ चट्टान का स्मरण नहीं रखा; इस कारण चाहे तू मनभावने पौधे लगाए और विदेशी कलम जमाये,

11 चाहे रोपने के दिन तू अपने चारों और बाड़ा बाँधे, और सवरे ही को उनमें फूल खिलने लगें, तो भी सन्ताप और असाध्य दुःख के दिन उसका फल नाश हो जाएगा।

[?]

12 हाय, हाय! देश-देश के बहुत से लोगों का कैसा नाद हो रहा है, वे समुद्र की लहरों के समान गरजते हैं। राज्य-राज्य के लोगों का कैसा गर्जन हो रहा है, वे प्रचण्ड धारा के समान नाद करते हैं!

13 राज्य-राज्य के लोग बाढ़ के बहुत से जल के समान नाद करते हैं, परन्तु [?], और वे दूर भाग जाएँगे, और ऐसे उड़ाए जाएँगे जैसे पहाड़ों पर

की भूसी वायु से, और धूल बवण्डर से घुमाकर उड़ाई जाती है।

14 साँझ को, देखो, घबराहट है! और भोर से पहले, वे लोप हो गये हैं! हमारे नाश करनेवालों का भाग और हमारे लूटनेवाले की यही दशा होगी।

## 18

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

1 हाय, पंखों की फड़फड़ाहट से भरे हुए देश, तू जो कूश की नदियों के परे है;

2 और समुद्र पर दूतों को सरकण्डों की नावों में बैठाकर जल के मार्ग से यह कह के भेजता है, हे फुर्तीले दूतों, उस जाति के पास जाओ जिसके लोग बलिष्ठ और सुन्दर हैं, जो आदि से अब तक डरावने हैं, जो मापने और रौंदनेवाला भी हैं, और जिनका देश नदियों से विभाजित किया हुआ है।

3 हे जगत के सब रहनेवालों, और पृथ्वी के सब निवासियों, जब झण्डा पहाड़ों पर खड़ा किया जाए, उसे देखो! जब नरसिंगा फूँका जाए, तब सुनो!

4 क्योंकि यहोवा ने मुझसे यह कहा है, “धूप की तेज गर्मी या कटनी के समय के ओसवाले बादल के समान **1:1**”

5 क्योंकि दाख तोड़ने के समय से पहले जब फूल फूल चुके, और दाख के गुच्छे पकने लगें, तब वह टहनियों को हँसुओं से काट डालेगा, और फैली हुई डालियों को तोड़-तोड़कर अलग फेंक देगा।

6 वे पहाड़ों के माँसाहारी पक्षियों और वन-पशुओं के लिये इकट्ठे पड़े रहेंगे। और माँसाहारी पक्षी तो उनको नोचते-नोचते धूपकाल बिताएँगे, और सब भाँति के वन पशु उनको खाते-खाते सर्दी काटेंगे।

7 उस समय जिस जाति के लोग बलिष्ठ और सुन्दर हैं, और जो आदि ही से डरावने होते आए हैं, और जो सामर्थी और रौंदनेवाले हैं, और जिनका देश नदियों से विभाजित किया हुआ है, उस जाति से सेनाओं के यहोवा के नाम के स्थान सिय्योन पर्वत पर सेनाओं के यहोवा के पास भेंट पहुँचाई जाएगी।

## 19

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

1 मिस्र के विषय में भारी भविष्यद्वाणी। देखो, यहोवा शीघ्र उड़नेवाले बादल पर सवार होकर मिस्र में आ रहा

\* 18:4 **1:1** मैं हस्तक्षेप नहीं करूँगा। मैं शान्त रहूँगा। उनका विरोध नहीं करूँगा। ऐसा शान्त एवं निश्चल रहूँगा जैसे उनकी योजनाओं का पक्षधर हूँ। \* 19:3 **1:1** वे आन्तरिक झगड़ों और विरोधों के कारण क्षीण हो जाएंगे और उनके पास मुक्ति की आशा न दिखाई देगी और अव्यवस्था के अन्त होने की चिन्ता में वे अपने देवी-देवताओं की शरण लेंगे।

है; और मिस्र की मूरतें उसके आने से थरथरा उठेंगी, और मिस्रियों का हृदय पानी-पानी हो जाएगा। **(1:13, 30:13, 1:7)**

2 और मैं मिस्रियों को एक दूसरे के विरुद्ध उभारूँगा, और वे आपस में लड़ेंगे, प्रत्येक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, नगर-नगर में और राज्य-राज्य में युद्ध छिड़ेंगा; **(1:10:21,36)**

3 और **1:1** और मैं उनकी युक्तियों को व्यर्थ कर दूँगा; और वे अपनी मूरतों के पास और ओझों और फुसफुसानेवाले टोन्हों के पास जा जाकर उनसे पूछेंगे;

4 परन्तु मैं मिस्रियों को एक कठोर स्वामी के हाथ में कर दूँगा; और एक क्रूर राजा उन पर प्रभुता करेगा, प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

5 और समुद्र का जल सूख जाएगा, और महानदी सूख कर खाली हो जाएगी;

6 और नाले से दुर्गन्ध आने लगेंगे, और मिस्र की नहरें भी सूख जाएँगी, और नरकट और हूगले कुम्हला जाएँगे।

7 नील नदी का तट उजड़ जाएगा, और उसके कछार की घास, और जो कुछ नील नदी के पास बोया जाएगा वह सूख कर नष्ट हो जाएगा, और उसका पता तक न लगेगा।

8 सब मछुएँ जितने नील नदी में बंसी डालते हैं विलाप करेंगे और लम्बी-लम्बी साँसें लेंगे, और जो जल के ऊपर जाल फेंकते हैं वे निर्बल हो जाएँगे।

9 फिर जो लोग धुने हुए सन से काम करते हैं और जो सूत से बुनते हैं उनकी आशा टूट जाएगी।

10 मिस्र के रईस तो निराश और उसके सब मजदूर उदास हो जाएँगे।

11 निश्चय सोअन के सब हाकिम मूर्ख हैं; और फिरौन के बुद्धिमान मंत्रियों की युक्ति पशु की सी ठहरी। फिर तुम फिरौन से कैसे कह सकते हो कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र और प्राचीन राजाओं की सन्तान हूँ?

12 अब तेरे बुद्धिमान कहाँ है? सेनाओं के यहोवा ने मिस्र के विषय जो युक्ति की है, उसको यदि वे जानते हों तो तुझे बताएँ। **(1:1:20)**

13 सोअन के हाकिम मूर्ख बन गए हैं, नोप के हाकिमों ने धोखा खाया है; और जिन पर मिस्र के प्रधान लोगों का भरोसा था उन्होंने मिस्र को भरमा दिया है।



## 22

4 मेरा हृदय धड़कता है, मैं अत्यन्त भयभीत हूँ, जिस साँझ की मैं बाट जोहता था उसे उसने मेरी थरथराहट का कारण कर दिया है।

5 भोजन की तैयारी हो रही है, पहरुए बैठाए जा रहे हैं, खाना-पीना हो रहा है। हे हाकिमों, उठो, [22:2] [22:2] [22:2] [22:2]!

6 क्योंकि प्रभु ने मुझसे यह कहा है, “जाकर एक पहरुआ खड़ा कर दे, और वह जो कुछ देखे उसे बताए।

7 जब वह सवार देखे जो दो-दो करके आते हों, और गदहों और ऊँटों के सवार, तब बहुत ही ध्यान देकर सुने।”

8 और उसने सिंह के से शब्द से पुकारा, “हे प्रभु मैं दिन भर खड़ा पहरा देता रहा और मैंने पूरी रातें पहरे पर काटी।

9 और क्या देखता हूँ कि मनुष्यों का दल और दो-दो करके सवार चले आ रहे हैं!” और वह बोल उठा, “गिर पड़ा, बाबिल गिर पड़ा; और उसके देवताओं के सब खुदी हुई मूर्तें भूमि पर चकनाचूर कर डाली गई हैं।” ([22:2] 14:8, [22:2] 18:2)

10 हे मेरे दाएँ हुए, और मेरे खलिहान के अन्न, जो बातें मैंने इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा से सुनी हैं, उनको मैंने तुम्हें जता दिया है।

[22:2] [22:2] [22:2] [22:2]

11 दूमा के विषय भारी वचन। सेईर में से कोई मुझे पुकार रहा है, “हे पहरुए, रात का क्या समाचार है? हे पहरुए, रात की क्या खबर है?”

12 पहरुए ने कहा, “[22:2] [22:2] [22:2] और रात भी। यदि तुम पूछना चाहते हो तो पूछो; फिर लौटकर आना।”

[22:2] [22:2] [22:2] [22:2]

13 अरब के विरुद्ध भारी वचन। हे ददानी बटोहियों, तुम को अरब के जंगल में रात बितानी पड़ेगी।

14 हे तेमा देश के रहनेवाले, प्यासे के पास जल लाओ और रोटी लेकर भागनेवाले से मिलने के लिये जाओ।

15 क्योंकि वे तलवारों के सामने से वरन् नंगी तलवार से और ताने हुए धनुष से और घोर युद्ध से भागे हैं।

16 क्योंकि प्रभु ने मुझसे यह कहा है, “मजदूर के वर्षों के अनुसार एक वर्ष में केदार का सारा वैभव मिटाया जाएगा;”

17 और केदार के धनुर्धारी शूरवीरों में से थोड़े ही रह जाँगे; क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने ऐसा कहा है।”

[22:2] [22:2] [22:2] [22:2]

1 दर्शन की तराई के विषय में भारी वचन। तुम्हें क्या हुआ कि तुम सब के सब छतों पर चढ़ गए हो,

2 हे कोलाहल और ऊधम से भरी प्रसन्न नगरी? तुझ में जो मारे गए हैं वे न तो तलवार से और न लड़ाई में मारे गए हैं।

3 तेरे सब शासक एक संग भाग गए और बिना धनुष के बन्दी बनाए गए हैं। तेरे जितने शेष पाए गए वे एक संग बाँधे गए, यद्यपि वे दूर भागे थे।

4 इस कारण मैंने कहा, “[22:2] [22:2] [22:2] [22:2] [22:2] [22:2]” कि मैं बिलख-बिलख कर रोऊँ; मेरे नगर के सत्यानाश होने के शोक में मुझे शान्ति देने का यत्न मत करो।”

5 क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा का ठहराया हुआ दिन होगा, जब दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदा जाना और बेचैनी होगी; शहरपनाह में सुरंग लगाई जाएगी और दुहाई का शब्द पहाड़ों तक पहुँचेगा।

6 एलाम पैदलों के दल और सवारों समेत तरकश बाँधे हुए है, और कीर ढाल खोले हुए है।

7 तेरी उत्तम-उत्तम तराइयाँ रथों से भरी हुई होंगी और सवार फाटक के सामने पाँति बाँधेंगे।

8 उसने यहूदा का घूँघट खोल दिया है। उस दिन तूने वन नामक भवन के अस्त्र-शस्त्र का स्मरण किया,

9 और तूने दाऊदपुर की शहरपनाह की दरारों को देखा कि वे बहुत हैं, और तूने निचले जलकुण्ड के जल को इकट्ठा किया।

10 और यरूशलेम के घरों को गिनकर शहरपनाह के दृढ़ करने के लिये घरों को ढा दिया।

11 तूने दोनों दीवारों के बीच पुराने जलकुण्ड के जल के लिये एक कुण्ड खोदा। परन्तु तूने उसके कर्ता को स्मरण नहीं किया, जिसने प्राचीनकाल से उसको ठहरा रखा था, और न उसकी ओर तूने दृष्टि की।

12 उस समय सेनाओं के प्रभु यहोवा ने रोने-पीटने, सिर मुँडाने और टाट पहनने के लिये कहा था;

13 परन्तु क्या देखा कि हर्ष और आनन्द मनाया जा रहा है, गाय-बैल का घात और भेड़-बकरी का वध किया जा रहा है, माँस खाया और दाखमधु पीया जा रहा है। और कहते हैं, “आओ खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो हमें मरना है।” (1 [22:2] 15:32)

\* 21:5 [22:2] [22:2] [22:2] [22:2] अर्थात् युद्ध की तैयारी करो। † 21:12 [22:2] [22:2] [22:2] [22:2] दिन होने के चिन्ह दिखाई दे रहे हैं। यहाँ भोर समृद्धि का प्रतीक है। \* 22:4 [22:2] [22:2] [22:2] [22:2] [22:2] [22:2] मुझसे आशा मत रखो, गहरे दुःख का संकेत, क्योंकि दुःख अकेलापन खोजता है, और विशाद सार्वजनिक चर्चा एवं सामने आने से बचता है।



14 हे तर्शीश के जहाजों, हाय, हाय, करो, क्योंकि तुम्हारा दृढ़ स्थान उजड़ गया है।

15 उस समय एक राजा के दिनों के अनुसार सत्तर वर्ष तक सोर बिसरा हुआ रहेगा। सत्तर वर्ष के बीतने पर सोर वेश्या के समान गीत गाने लगेगा।

16 हे बिसरी हुई वेश्या, वीणा लेकर नगर में घूम, भली भाँति बजा, बहुत गीत गा, जिससे लोग फिर तुझे याद करें।

17 सत्तर वर्ष के बीतने पर यहोवा सोर की सुधि लेगा, और वह फिर छिनाले की कमाई पर मन लगाकर धरती भर के सब राज्यों के संग छिनाला करेंगी। (22:22-23:2)

18 उसके व्यापार की प्राप्ति, और उसके छिनाले की कमाई, यहोवा के लिये पवित्र की जाएगी; वह न भण्डार में रखी जाएगी न संचय की जाएगी, क्योंकि उसके व्यापार की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो यहोवा के सामने रहा करेंगे, कि उनको भरपूर भोजन और चमकीला वस्त्र मिले।

## 24

24:1-24:24

1 सुनों, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने पर है, वह उसको उलटकर उसके रहनेवालों को तितर-बितर करेगा।

2 और जैसी यजमान की वैसी याजक की; जैसी दास की वैसी स्वामी की; जैसी दासी की वैसी स्वामिनी की; जैसी लेनेवाले की वैसी बेचनेवाले की; जैसी उधार देनेवाले की वैसी उधार लेनेवाले की; जैसी ब्याज लेनेवाले की वैसी ब्याज देनेवाले की; सभी की एक ही दशा होगी।

3 पृथ्वी शून्य और सत्यानाश हो जाएगी; क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है।

4 पृथ्वी विलाप करेगी और मुझाएगी, जगत कुम्हलाएगा और मुझा जाएगा; पृथ्वी के महान लोग भी कुम्हला जाएँगे।

5 पृथ्वी अपने रहनेवालों के कारण अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है।

6 इस कारण पृथ्वी को श्राप प्रसेगा और उसमें रहनेवाले दोषी ठहरेंगे; और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएँगे।

7 नया दाखमधु जाता रहेगा, दाखलता मुझा जाएगी, और जितने मन में आनन्द करते हैं सब लम्बी-लम्बी साँस लेंगे।

8 डफ का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा, प्रसन्न होनेवालों का कोलाहल जाता रहेगा वीणा का सुखदाई शब्द शान्त हो जाएगा। (22:22, 26:13, 22:22-23:2)

9 वे गाकर फिर दाखमधु न पीएँगे; पीनेवाले को मदिरा कड़वी लगेगी।

10 गड़बड़ी मचानेवाली नगरी नाश होगी, उसका हर एक घर ऐसा बन्द किया जाएगा कि कोई घुस न सकेगा।

11 सड़कों में लोग दाखमधु के लिये चिल्लाएँगे; आनन्द मिट जाएगा: देश का सारा हर्ष जाता रहेगा।

12 नगर उजाड़ ही उजाड़ रहेगा, और उसके फाटक तोड़कर नाश किए जाएँगे।

13 क्योंकि पृथ्वी पर देश-देश के लोगों में ऐसा होगा जैसा कि जैतून के झाड़ने के समय, या दाख तोड़ने के बाद कोई-कोई फल रह जाते हैं।

14 वे लोग गला खोलकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा के माहात्म्य को देखकर समुद्र से ललकारेंगे।

15 इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो, और समुद्र के द्वीपों में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो। (22:22, 1:11, 22:22, 42:10)

16 पृथ्वी की छोर से हमें ऐसे गीत की ध्वनि सुन पड़ती है, कि धर्मी की महिमा और बड़ाई हो। परन्तु मैंने कहा, “हाय, हाय! मैं नाश हो गया, नाश! क्योंकि विश्वासघाती विश्वासघात करते, वे बड़ा ही विश्वासघात करते हैं।”

17 हे पृथ्वी के रहनेवालों तुम्हारे लिये भय और गड्ढा और फंदा है! (22:22, 21:35)

18 जो कोई भय के शब्द से भागे वह गड्ढे में गिरेगा, और जो कोई गड्ढे में से निकले वह फंदे में फँसेगा। क्योंकि आकाश के झरोखे खुल जाएँगे, और पृथ्वी की नींव डोल उठेगी।

19 24:1-24:24 पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान होगी। (22:22, 1:5)

20 वह मतवाले के समान बहुत डगमगाएगी और मचान के समान डोलेगी; वह अपने पाप के बोझ से दबकर गिरेगी और फिर न उठेगी।

21 उस समय ऐसा होगा कि यहोवा आकाश की सेना को आकाश में और 22:22-23:2 को पृथ्वी ही पर दण्ड देगा।

\* 24:19 24:1-24:24: उसका प्रभाव एक भूकम्प के समान होगा जब कोलाहल एवं विनाश होता है।

† 24:21 24:1-24:24: सर्वोच्च विश्वास और सम्मान की तुलना में हीन और नीचे हैं।

22 वे बन्दियों के समान गड्ढे में इकट्ठे किए जाएंगे और बन्दीगृह में बन्द किए जाएंगे; और बहुत दिनों के बाद उनकी सुधि ली जाएगी।

23 तब चन्द्रमा संकुचित हो जाएगा और सूर्य लज्जित होगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपनी प्रजा के पुरनियों के सामने प्रताप के साथ राज्य करेगा।

## 25

हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूँगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तूने आश्चर्यकर्मों किए हैं, तूने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियाँ की हैं।

1 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूँगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तूने आश्चर्यकर्मों किए हैं, तूने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियाँ की हैं।

2 तूने नगर को ढेर बना डाला, और उस गढ़वाले नगर को खण्डहर कर डाला है; तूने परदेशियों की राजपुरी को ऐसा उजाड़ा कि वह नगर नहीं रहा; वह फिर कभी बसाया न जाएगा।

3 इस कारण बलवन्त राज्य के लोग तेरी महिमा करेंगे; भयंकर जातियों के नगरों में तेरा भय माना जाएगा।

4 क्योंकि तू संकट में दीनों के लिये गढ़, और जब भयानक लोगों का झोंका दीवार पर बौछार के समान होता था, तब तू दरिद्रों के लिये उनकी शरण, और तपन में छाया का स्थान हुआ।

5 जैसे निर्जल देश में बादल की छाया से तपन ठण्डी होती है वैसे ही तू परदेशियों का कोलाहल और क्रूर लोगों को जयजयकार बन्द करता है।

हे यहोवा, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है।

6 सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसा भोज तैयार करेगा जिसमें भाँति-भाँति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निथरा हुआ दाखमधु होगा।

7 और जो परदा सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो घूँघट सब जातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नाश करेगा। (25:18)

8 वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभी के मुख पर से आँसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है। (1 25:18, 15:54, 25:18, 21:4)

\* 25:10 हे यहोवा, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है। अर्थात् वह रक्षक होगा, उसकी सुरक्षा हटेगी नहीं, वरन् स्थाई होगी।

दण्ड देना आवश्यक है कि दुष्ट जन धर्मनिष्ठा के मार्ग पर आ जायें।

9 उस समय यह कहा जाएगा, “देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उससे उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे।”

हे यहोवा, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है।

10 क्योंकि इस पर्वत पर रहेगा और मोआब अपने ही स्थान में ऐसा लताड़ा जाएगा जैसा घूरे में पुआल लताड़ा जाता है।

11 वह उसमें अपने हाथ इस प्रकार फैलाएगा, जैसे कोई तैरते हुए फैलाए; परन्तु वह उसके गर्व को तोड़ेगा; और उसकी चतुराई को निष्फल कर देगा।

12 उसकी ऊँची-ऊँची और दृढ़ शहरपनाहों को वह झुकाएगा और नीचा करेगा, वरन् भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देगा।

## 26

हे यहोवा, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है।

1 उस समय यहूदा देश में यह गीत गाया जाएगा, “हमारा एक दृढ़ नगर है; उद्धार का काम देने के लिये वह उसकी शहरपनाह और गढ़ को नियुक्त करता है।

2 फाटकों को खोलो कि सच्चाई का पालन करनेवाली एक धर्मी जाति प्रवेश करे।

3 जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। (26:7)

4 यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है।

5 वह ऊँचे पदवाले को झुका देता, जो नगर ऊँचे पर बसा है उसको वह नीचे कर देता। वह उसको भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देता है।

6 वह पाँवों से, वरन् दरिद्रों के पैरों से रौंदा जाएगा।”

7 धर्मी का मार्ग सच्चाई है; तू जो स्वयं सच्चाई है, तू धर्मी की अगुआई करता है।

8 हे यहोवा, तेरे न्याय के मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए हैं; तेरे नाम के स्मरण की हमारे प्राणों में लालसा बनी रहती है।

9 रात के समय मैं जी से तेरी लालसा करता हूँ, मेरा सम्पूर्ण मन यत्न के साथ तुझे ढूँढता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धार्मिकता को सीखते हैं।

\* 26:10 हे यहोवा, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है, तूने मेरी प्रजा को बचाया है।

10 **॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥\*** तो भी वह धार्मिकता को न सीखेगा; धर्मराज्य में भी वह कुटिलता करेगा, और यहोवा का माहात्म्य उसे सूझ न पड़ेगा।

11 हे यहोवा, तेरा हाथ बढ़ा हुआ है, पर वे नहीं देखते। परन्तु वे जानेंगे कि तुझे प्रजा के लिये कैसी जलन है, और लजाएँगे। **(॥॥॥॥ 5:9, ॥॥॥॥॥. 10:27)**

12 तेरे बैरी आग से भस्म होंगे। हे यहोवा, तू हमारे लिये शान्ति ठहराएगा, हमने जो कुछ किया है उसे तू ही ने हमारे लिये किया है।

13 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तेरे सिवाय और स्वामी भी हम पर प्रभुता करते थे, परन्तु तेरी कृपा से हम केवल तेरे ही नाम का गुणानुवाद करेंगे।

14 वे मर गए हैं, फिर कभी जीवित नहीं होंगे; उनको मरे बहुत दिन हुए, वे फिर नहीं उठने के; तूने उनका विचार करके उनको ऐसा नाश किया कि वे फिर स्मरण में न आएँगे।

15 परन्तु तूने जाति को बढ़ाया; हे यहोवा, तूने जाति को बढ़ाया है; तूने अपनी महिमा दिखाई है और उस देश के सब सीमाओं को तूने बढ़ाया है।

16 हे यहोवा, दुःख में वे तुझे स्मरण करते थे, जब तू उन्हें ताड़ना देता था तब वे दबे स्वर से अपने मन की बात तुझ पर प्रगट करते थे।

17 जैसे गर्भवती स्त्री जनने के समय ऐंठती और पीडा के कारण चिल्ला उठती है, हम लोग भी, हे यहोवा, तेरे सामने वैसे ही हो गए हैं। **(॥॥॥. 48:6)**

18 हम भी गर्भवती हुए, हम भी ऐंठे, **॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥**। हमने देश के लिये कोई उद्धार का काम नहीं किया, और न जगत के रहनेवाले उत्पन्न हुए।

19 तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसनेवालो, जागकर जयजयकार करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और **॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥**।

**॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥**

20 हे मेरे लोगों, आओ, अपनी-अपनी कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो; थोड़ी देर तक जब तक क्रोध शान्त न हो तब तक अपने को छिपा रखो। **(॥॥॥. 91:4, 32:7)**

21 क्योंकि देखो, यहोवा पृथ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने के लिये अपने स्थान से चला आता

है, और पृथ्वी अपना खून प्रगट करेगी और घात किए हुआओं को और अधिक न छिपा रखेगी।

## 27

**॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥**

1 उस समय यहोवा अपनी कड़ी, बड़ी, और दृढ़ तलवार से लिव्यातान नामक वेग और टेढ़े चलनेवाले सर्प को दण्ड देगा, और जो अजगर समुद्र में रहता है उसको भी घात करेगा।

2 उस समय एक सुन्दर दाख की बारी होगी, तुम उसका यश गाना!

3 मैं यहोवा उसकी रक्षा करता हूँ; मैं **॥॥॥॥॥-॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥\*** मैं रात-दिन उसकी रक्षा करता रहूँगा ऐसा न हो कि कोई उसकी हानि करे।

4 मेरे मन में जलजलाहट नहीं है। यदि कोई भाँति-भाँति के कटीले पेड़ मुझसे लड़ने को खड़े करता, तो मैं उन पर पाँव बढ़ाकर उनको पूरी रीति से भस्म कर देता।

5 या मेरे साथ मेल करने को वे मेरी शरण लें, वे मेरे साथ मेल कर लें।

6 भविष्य में याकूब जड़ पकड़ेगा, और इस्राएल फूले-फलेगा, और उसके फलों से जगत भर जाएगा।

7 क्या उसने उसे मारा जैसा उसने उसके मारनेवालों को मारा था? क्या वह घात किया गया जैसे उसके घात किए हुए घात हुए?

8 जब तूने उसे निकाला, तब सोच-विचार कर उसको दुःख दिया: उसने पुरवाई के दिन उसको प्रचण्ड वायु से उड़ा दिया है।

9 इससे याकूब के अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाएगा और उसके पाप के दूर होने का प्रतिफल यह होगा कि वे वेदी के सब पत्थरों को चूना बनाने के पत्थरों के समान चकनाचूर करेंगे, और अशेरा और सूर्य की प्रतिमाएँ फिर खड़ी न रहेंगी। **(॥॥॥॥. 11:27)**

10 क्योंकि गढ़वाला नगर निर्जन हुआ है, वह छोड़ी हुई बस्ती के समान निर्जन और जंगल हो गया है; वहाँ बछड़े चरेंगे और वहीं बैठेंगे, और पेड़ों की डालियों की फुनगी को खा लेंगे।

11 जब उसकी शाखाएँ सूख जाएँ तब **॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥**; और स्त्रियाँ आकर उनको तोड़कर जला देंगी। क्योंकि ये लोग निर्बुद्धि हैं; इसलिए उनका कर्ता उन पर दया न करेगा, और उनका रचनेवाला उन पर अनुग्रह न करेगा।

† 26:18 **॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥**: हमारे प्रयास सब व्यर्थ रहे। ‡ 26:19 **॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥**: अर्थात् पुनरुत्थान के दिन पृथ्वी अपने मृतक खड़े कर देगी कि बाबेल में परमेश्वर के लोग पुनः जीवित हो जायें। \* 27:3 **॥॥॥॥॥-॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥**: अर्थात् लगातार, जैसा दाख की बारी का रखवाला उसकी सुधि लेता है। † 27:11 **॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥**: स्वयं ही गिर जाएँगी या उनके द्वारा जो जलाने के लिए लकड़ी एकत्र करते हैं।



12 उस समय यहोवा फरात से लेकर मिस्र के नाले तक अपने अन्न को फटकेगा, और हे इस्राएलियों तुम एक-एक करके इकट्ठे किए जाओगे।

13 उस समय बड़ा नरसिंगा फूँका जाएगा, और जो अशशूर देश में नाश हो रहे थे और जो मिस्र देश में बरबस बसाए हुए थे वे यरूशलेम में आकर पवित्र पर्वत पर यहोवा को दण्डवत् करेंगे। (27:24-31)

## 28

28:1-14

1 घमण्ड के मुकुट पर हाय! जो एप्रैम के मतवालों का है, और उनकी भडकीली सुन्दरता पर जो मुझानेवाला फूल है, जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर दाखमधु से मतवालों की है।

2 देखो, प्रभु के पास एक बलवन्त और सामर्थी है जो ओले की वर्षा या उजाड़नेवाली आँधी या बाढ़ की प्रचण्ड धार के समान है वह उसको कठोरता से भूमि पर गिरा देगा।

3 एप्रैमी मतवालों के घमण्ड का मुकुट पाँव से लताड़ा जाएगा;

4 और उनकी भडकीली सुन्दरता का मुझानेवाला फूल जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है, वह ग्रीष्मकाल से पहले पके अंजीर के समान होगा, जिसे देखनेवाला देखते ही हाथ में ले और निगल जाए।

5 उस समय सेनाओं का यहोवा स्वयं अपनी प्रजा के बचे हुए के लिये सुन्दर और प्रतापी मुकुट ठहरेगा;

6 और 28:15-28:28\* और जो चढ़ाई करते हुए शत्रुओं को नगर के फाटक से हटा देते हैं, उनके लिये वह बल ठहरेगा।

7 ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा से लड़खड़ाते हैं; याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं, दाखमधु ने उनको भुला दिया है, वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते और दर्शन पाते हुए भटके जाते, और न्याय में भूल करते हैं।

8 क्योंकि सब भोजन आसन वमन और मल से भरे हैं, कोई शुद्ध स्थान नहीं बचा।

9 “वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं?

\* 28:6 28:15-28:28\* इस गद्यांश का अर्थ है कि यहोवा उस देश के न्यायियों को ज्ञान प्रदान करेगा जिससे कि उनमें उचित को समझने की बुद्धि उत्पन्न हो और वे उसे करेंगी। † 28:14 28:28: तुम जो परमेश्वर के सन्देश की अवहेलना करते हो, उससे घृणा करते हो, जो सुरक्षा के भ्रम की उत्तम कल्पना करते हो और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दण्ड की चेतावनी का टट्टा करते हो।

10 क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।”

11 वह तो इन लोगों से परदेशी होठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा;

12 जिनसे उसने कहा, “विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो;” परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा।

13 इसलिए यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ, जिससे वे टोकर खाकर चित्त गिरे और घायल हो जाएँ, और फंदे में फँसकर पकड़े जाएँ।

28:29-31

14 इस कारण हे 28:29 28:31†, यरूशलेमवासी प्रजा के हाकिमों, यहोवा का वचन सुनो!

15 तुम ने कहा है “हमने मृत्यु से वाचा बाँधी और अधोलोक से प्रतिज्ञा कराई है; इस कारण विपत्ति जब बाढ़ के समान बढ़ आए तब हमारे पास न आएगी; क्योंकि हमने झूठ की शरण ली और मिथ्या की आड़ में छिपे हुए हैं।”

16 इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है, “देखो, मैंने सिय्योन में नींव का पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नींव के योग्य पत्थर: और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा। (28:9-33, 1 28:11, 28:2:20, 1 28:2:4-6)

17 और मैं न्याय को डोरी और धार्मिकता को साहुल ठहराऊँगा; और तुम्हारा झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा, और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डूब जाएगा।”

18 तब जो वाचा तुम ने मृत्यु से बाँधी है वह टूट जाएगी, और जो प्रतिज्ञा तुम ने अधोलोक से कराई वह न ठहरेगी; जब विपत्ति बाढ़ के समान बढ़ आए, तब तुम उसमें डूब ही जाओगे।

19 जब जब वह बढ़ आए, तब-तब वह तुम को ले जाएगी; वह प्रतिदिन वरन् रात-दिन बढ़ा करेगी; और इस समाचार का सुनना ही व्याकुल होने का कारण होगा।

20 क्योंकि बिच्छौना टाँग फैलाने के लिये छोटा, और ओढ़ना ओढ़ने के लिये संकरा है।

21 क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नामक पर्वत पर खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई में उसने क्रोध दिखाया था; वह अब फिर क्रोध दिखाएगा, जिससे वह अपना काम करे, जो अचम्भित काम है, और वह कार्य करे जो अनोखा है।

22 इसलिए अब तुम ठट्टा मत करो, नहीं तो [REDACTED]; क्योंकि मैंने सेनाओं के प्रभु यहोवा से यह सुना है कि सारे देश का सत्यानाश ठाना गया है।

[REDACTED]

23 कान लगाकर मेरी सुनो, ध्यान धरकर मेरा वचन सुनो।

24 क्या हल जोतनेवाला बीज बोने के लिये लगातार जोतता रहता है? क्या वह सदा धरती को चीरता और हेंगा फेरता रहता है?

25 क्या वह उसको चौरस करके सौंफ को नहीं छितराता, जीरे को नहीं बखेरता और गेहूँ को पाँति-पाँति करके और जौ को उसके निज स्थान पर, और कठिया गेहूँ को खेत की छोर पर नहीं बोता?

26 क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक-ठीक काम करना सिखाता और बताता है।

27 दाँवने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती, और गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर नहीं चलाया जाता; परन्तु सौंफ छड़ी से, और जीरा सोंटे से झाड़ा जाता है।

28 रोटी के अन्न की दाँवनी की जाती है, परन्तु कोई उसको सदा दाँवता नहीं रहता; और न गाड़ी के पहिये न धोड़े उस पर चलाता है, वह उसे चूर-चूर नहीं करता।

29 यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है, वह अद्भुत युक्तिवाला और महाबुद्धिमान है।

## 29

[REDACTED]

1 हाय, अरीएल, [REDACTED]\*, हाय उस नगर पर जिसमें दाऊद छावनी किए हुए रहा! वर्ष पर वर्ष जोड़ते जाओ, उत्सव के पर्व अपने-अपने समय पर मनाते जाओ।

2 तो भी मैं तो अरीएल को सकेती में डालूँगा, वहाँ रोना पीटना रहेगा, और वह मेरी दृष्टि में सचमुच अरीएल सा ठहरेगा।

3 मैं चारों ओर तेरे विरुद्ध छावनी करके तुझे कोटों से घेर लूँगा, और तेरे विरुद्ध गढ़ भी बनाऊँगा।

‡ 28:22 [REDACTED]: अन्यथा तुम्हारा कारावास और भी अधिक कठोर एवं निर्दयी होगा। परमेश्वर उन्हें उनके पापों के अनुसार दण्ड देगा। \* 29:1 [REDACTED]: निःसंदेह यह यरूशलेम के लिए उपयोग किया गया है। † 29:9 [REDACTED]: यरूशलेम की प्रजा। यह नैतिक एवं आत्मिक नशा है। वे अपने धर्म सिद्धान्तों एवं अभ्यासों में चूक गये हैं। वे एक मतवाले के सदृश्य कुछ भी स्पष्ट एवं उचित रूप में नहीं देख पाते हैं।

4 तब तू गिराकर भूमि में डाला जाएगा, और धूल पर से बोलेगा, और तेरी बात भूमि से धीमी-धीमी सुनाई देगी; तेरा बोल भूमि पर से प्रेत का सा होगा, और तू धूल से गुनगुनाकर बोलेगा।

5 तब तेरे परदेशी बैरियों की भीड़ सूक्ष्म धूल के समान, और उन भयानक लोगों की भीड़ भूसै के समान उड़ाई जाएगी।

6 सेनाओं का यहोवा अचानक बादल गरजाता, भूमि को कँपाता, और महाध्वनि करता, बवण्डर और आँधी चलाता, और नाश करनेवाली अग्नि भड़काता हुआ उसके पास आएगा।

7 और जातियों की सारी भीड़ जो अरीएल से युद्ध करेगी, और जितने लोग उसके और उसके गढ़ के विरुद्ध लड़ेंगे और उसको सकेती में डालेंगे, वे सब रात के देखे हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे।

8 और जैसा कोई भूखा स्वप्न में तो देखता है कि वह खा रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका पेट भूखा ही है, या कोई प्यासा स्वप्न में देखे की वह पी रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका गला सूखा जाता है और वह प्यासा मर रहा है; वैसी ही उन सब जातियों की भीड़ की दशा होगी जो सिथ्योन पर्वत से युद्ध करेंगी।

[REDACTED]

9 ठहर जाओ और चकित हो! भोग-विलास करो और अंधे हो जाओ! [REDACTED], वे डगमगाते तो हैं, परन्तु मदिरा पीने से नहीं!

10 यहोवा ने तुम को भारी नींद में डाल दिया है और उसने तुम्हारी नबीरूपी आँखों को बन्द कर दिया है और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरों पर परदा डाला है। ([REDACTED]. 11:8)

11 इसलिए सारे दर्शन तुम्हारे लिये एक लपेटी और मुहरबन्द की हुई पुस्तक की बातों के समान हैं, जिसे कोई पढ़े-लिखे मनुष्य को यह कहकर दे, “इसे पढ़”, और वह कहे, “मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि इस पर मुहरबन्द की हुई है।” ([REDACTED]. 5:1-3)

12 तब वही पुस्तक अनपढ़ को यह कहकर दी जाए, “इसे पढ़,” और वह कहे, “मैं तो अनपढ़ हूँ।”

13 प्रभु ने कहा, “ये लोग जो मुँह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझसे दूर रखते हैं,





## 31

१ हाय उन पर जो सहायता पाने के लिये मिस्र को

जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं; जो रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारों पर, क्योंकि वे अति बलवान हैं, पर इस्राएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की खोज करते हैं!

२ १:१० और दुःख देगा, वह अपने वचन न टालेगा, परन्तु उठकर कुकर्मियों के घराने पर और अनर्थकारियों के सहायकों पर भी चढ़ाई करेगा।

३ मिस्री लोग परमेश्वर नहीं, मनुष्य ही हैं; और उनके घोड़े आत्मा नहीं, माँस ही हैं। जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा, तब सहायता करनेवाले और सहायता चाहनेवाले दोनों ठोकर खाकर गिरेंगे, और वे सब के सब एक संग नष्ट हो जाएँगे।

४ फिर यहोवा ने मुझसे यह कहा, “जिस प्रकार सिंह या १:१० जब अपने अहेर पर गुराँता हो, और चरवाहे इकट्ठे होकर उसके विरुद्ध बड़ी भीड़ लगाएँ, तो भी वह उनके बोल से न घबराएगा और न उनके कोलाहल के कारण दबेगा, उसी प्रकार सेनाओं का यहोवा, सिय्योन पर्वत और यरूशलेम की पहाड़ी पर, युद्ध करने को उतरेगा।

५ पंख फैलाई हुई चिड़ियों के समान सेनाओं का यहोवा यरूशलेम की रक्षा करेगा; वह उसकी रक्षा करके बचाएगा, और उसको बिन छूए ही उद्धार करेगा।”

६ हे इस्राएलियों, जिसके विरुद्ध तुम ने भारी बलवा किया है, उसी की ओर १:१०।

७ उस समय तुम लोग सोने चाँदी की अपनी-अपनी मूर्तियों से जिन्हें १:१० हो घृणा करोगे।

८ “तब अश्शूर उस तलवार से गिराया जाएगा जो मनुष्य की नहीं; वह उस तलवार का कौर हो जाएगा जो आदमी की नहीं; और वह तलवार के सामने से भागेगा और उसके जवान बेगार में पकड़े जाएँगे।

९ वह भय के मारे अपने सुन्दर भवन से जाता रहेगा, और उसके हाकिम घबराहट के कारण ध्वजा त्याग कर भाग जाएँगे,” यहोवा जिसकी अग्नि सिय्योन में और जिसका भट्टा यरूशलेम में हैं, उसी की यह वाणी है।

\* 31:2 १:१० परमेश्वर बुद्धिमान है। उसे धोखा देना व्यर्थ है, या उससे छिपकर कुछ करना व्यर्थ है। † 31:4 १:१० एक शक्तिशाली भयानक शेर यह दो शेरों का उपयोग तुलना की प्रबलता एवं बल के लिए है। ‡ 31:6 १:१० मन फिराओ। मनुष्यों के लिए यह हर समय परमेश्वर की पुकार है। § 31:7 १:१० कहने का अर्थ है कि मूर्तियाँ बनाना पाप है वरन् मूर्तियाँ पाप हैं। मूर्तियों को महिमा देने पाप है, जिसका दोष उन पर है। \* 32:6 १:१० अर्थात् वह तो अपने स्वभाव के अनुसार ही बातें करेगा। उसका स्वभाव ही मूर्द्धता की बातें करना है, अतः वह मूर्द्धता ही उगलेगा।

## 32

१ देखो, एक राजा धार्मिकता से राज्य करेगा, और

राजकुमार न्याय से हुकूमत करेंगे। (१:१०. 19:11, १:१०. 1:8,9)

२ हर एक मानो आँधी से छिपने का स्थान, और बौछार से आड़ होगा; या निर्जल देश में जल के झरने, व तप्त भूमि में बड़ी चट्टान की छाया।

३ उस समय देखनेवालों की आँखें धुँधली न होंगी, और सुननेवालों के कान लगे रहेंगे।

४ उतावलों के मन ज्ञान की बातें समझेंगे, और तुतलानेवालों की जीभ फुर्ती से और साफ बोलेंगी।

५ मूर्ख फिर उदार न कहलाएगा और न कंजूस दानी कहा जाएगा।

६ क्योंकि १:१० और मन में अनर्थ ही गढ़ता रहता है कि वह अधर्म के काम करे और यहोवा के विरुद्ध झूठ कहे, भूखे को भूखा ही रहने दे और प्यासे का जल रोक रखे।

७ छली की चालें बुरी होती हैं, वह दुष्ट युक्तियाँ निकालता है कि दरिद्र को भी झूठी बातों में लूटे जबकि वे ठीक और नम्रता से भी बोलते हों।

८ परन्तु उदार मनुष्य उदारता ही की युक्तियाँ निकालता है, वह उदारता में स्थिर भी रहेगा।

१ हे सुखी स्त्रियों, उठकर मेरी सुनो; हे निश्चिन्त

पुत्रियों, मेरे वचन की ओर कान लगाओ।

१० हे निश्चिन्त स्त्रियों, वर्ष भर से कुछ ही अधिक समय में तुम विकल हो जाओगी; क्योंकि तोड़ने को दाखें न होंगी और न किसी भाँति के फल हाथ लगेंगे।

११ हे सुखी स्त्रियों, थरथराओ, हे निश्चिन्त स्त्रियों, विकल हो; अपने-अपने वस्त्र उतारकर अपनी-अपनी कमर में टाट कसो।

१२ वे मनभाऊ खेतों और फलवन्त दाखलताओं के लिये छाती पीटेंगी।

१३ मेरे लोगों के वरन् प्रसन्न नगर के सब हर्ष भरे घरों में भी भाँति-भाँति के कटीले पेड़ उपजेंगे।

१४ क्योंकि राजभवन त्यागा जाएगा, कोलाहल से भरा नगर सुनसान हो जाएगा और पहाड़ी और उन पर के पहरोओं के घर सदा के लिये माँदे और जंगली गदहों

का विहार-स्थान और घरेलू पशुओं की चराई उस समय तक बने रहेंगे

15 जब तक आत्मा ऊपर से हम पर उण्डेला न जाए, और जंगल फलदायक बारी न बने, और फलदायक बारी फिर वन न गिनी जाए।

16 तब उस जंगल में न्याय बसेगा, और उस फलदायक बारी में धार्मिकता रहेगा।

17 और धार्मिकता का फल शान्ति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा। **([?/?/?] 14:7, [?/?/?] 3:18)**

18 मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेंगे।

19 वन के विनाश के समय ओले गिरेंगे, और नगर पूरी रीति से चौपट हो जाएगा।

20 क्या ही धन्य हो तुम जो सब जलाशयों के पास बीज बोते, और बैलों और गदहों को स्वतंत्रता से चराते हो।

### 33

[?/?/?] [?/?/?] [?/?/?] [?/?/?/?/?/?/?/?/?/?]

1 हाय तुझ नाश करनेवाले पर जो नाश नहीं किया गया था; हाय तुझ विश्वासघाती पर, जिसके साथ विश्वासघात नहीं किया गया! जब तू नाश कर चुके, तब तू नाश किया जाएगा; और जब तू विश्वासघात कर चुके, तब तेरे साथ विश्वासघात किया जाएगा।

2 हे यहोवा, हम लोगों पर अनुग्रह कर; हम तेरी ही बाट जोहते हैं। भोर को तू उनका भुजबल, संकट के समय हमारा उद्धारकर्ता ठहर।

3 हुल्लड सुनते ही देश-देश के लोग भाग गए, तेरे उठने पर अन्यजातियाँ तितर-बितर हुई।

4 जैसे टिड्डियाँ चट करती हैं वैसे ही तुम्हारी लूट चट की जाएगी, और जैसे टिड्डियाँ टूट पड़ती हैं, वैसे ही वे उस पर टूट पड़ेंगे।

5 यहोवा महान हुआ है, वह ऊँचे पर रहता है; उसने सिय्योन को न्याय और धार्मिकता से परिपूर्ण किया है;

6 और उद्धार, बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत तेरे दिनों का आधार होगी; यहोवा का भय उसका धन होगा।

7 देख, उनके शूरवीर बाहर चिल्ला रहे हैं; संधि के दूत बिलख-बिलख कर रो रहे हैं।

8 राजमार्ग सुनसान पड़े हैं, उन पर यात्री अब नहीं चलते। उसने वाचा को टाल दिया, नगरों को तुच्छ जाना, उसने मनुष्य को कुछ न समझा।

9 पृथ्वी विलाप करती और मुझा गई है; लबानोन कुम्हला गया और वह मुझा गया है; शारोन मरुभूमि के समान हो गया; बाशान और कर्मेल में पतझड़ हो रहा है।

[?/?/?/?/?/?] [?/?] [?/?/?/?/?]

10 यहोवा कहता है, अब मैं उठूँगा, मैं अपना प्रताप दिखाऊँगा; अब मैं महान ठहरूँगा।

11 तुम में सूखी घास का गर्भ रहेगा, तुम से भूसी उत्पन्न होगी; तुम्हारी साँस आग है जो तुम्हें भस्म करेगी।

12 देश-देश के लोग फूँके हुए चूने के सामान हो जाएँगे, और कटे हुए कँटीली झाड़ियों के समान आग में जलाए जाएँगे।

13 [?/?] [?/?/?-?/?/?] [?/?] [?/?/?/?/?/?]\*, सुनो कि मैंने क्या किया है? और तुम भी जो निकट हो, मेरा पराक्रम जान लो।

14 सिय्योन के पापी थरथरा गए हैं; भक्तिहीनों को कँपकँपी लगी है: हम में से कौन प्रचण्ड आग में रह सकता? हम में से कौन उस आग में बना रह सकता है जो कभी नहीं बुझेगी? **([?/?/?/?/?] 12:29)**

15 जो धार्मिकता से चलता और सीधी बातें बोलता; जो अंधेर के लाभ से घृणा करता, जो घूस नहीं लेता; जो खून की बात सुनने से कान बन्द करता, और बुराई देखने से आँख मूँद लेता है। वही ऊँचे स्थानों में निवास करेगा।

16 वह चट्टानों के गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी।

[?/?/?/?/?/?] [?/?/?/?/?/?]

17 तू अपनी आँखों से राजा को उसकी शोभा सहित देखेगा; और लम्बे-चौड़े देश पर दृष्टि करेगा। **([?/?/?/?/?] 17:2, [?/?/?] 1:14)**

18 तू भय के दिनों को स्मरण करेगा: लेखा लेनेवाला और कर तौलकर लेनेवाला कहाँ रहा? गुम्मतों का गिननेवाला कहाँ रहा? **(1 [?/?/?/?/?] 1:20)**

19 जिनकी कठिन भाषा तू नहीं समझता, और जिनकी लड़बड़ाती जीभ की बात तू नहीं बूझ सकता उन निर्दय लोगों को तू फिर न देखेगा।

20 हमारे पर्व के नगर सिय्योन पर दृष्टि कर! तू अपनी आँखों से यरूशलेम को देखेगा, वह विश्राम का स्थान, और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा, जिसका कोई खूँटा कभी उखाड़ा न जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी।

\* **33:13** [?/?] [?/?/?-?/?/?] [?/?] [?/?/?/?/?/?]: यह यहोवा की वाणी है कि अशूरों की सेना का विनाश ऐसा संकेत है जो दूर-दूर के देशों तक पहुँचता है और यह उनके लिए एक चेतावनी है।



1 जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरूभूमि मगन होकर केसर के समान फूलेगी;

2 वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी। [2222] [2222] [222222] [22] [22] [2222]\* और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी। वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे।

[22222222] [222222] [222222] [22] [22222222]

3 ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो। ([222222]. 12:12)

4 घबरानेवालों से कहो, “हियाव बाँधो, मत डरो! देखो, तुम्हारा परमेश्वर बदला लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हाँ, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा।”

5 तब अंधों की आँखें खोली जाएँगी और बहरों के कान भी खोले जाएँगे;

6 तब लँगडा हिरन की सी चौकड़ियाँ भरेगा और गूँगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे। क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरूभूमि में नदियाँ बहने लगेंगी; ([222222] 11:5, [2222]. 41:17,18)

7 मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे; और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उसमें घास और नरकट और सरकण्डे होंगे।

[2222222222] [22] [22222222] [2222222222]

8 वहाँ एक सड़क अर्थात् राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा; [222] [22222222] [22] [22] [22] [22] [222222] [22222222]; वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे वह चाहे मूर्ख भी हों तो भी कभी न भटकेंगे।

9 वहाँ सिंह न होगा और न कोई हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा न वहाँ पाया जाएगा, परन्तु छुड़ाए हुए उसमें नित चलेंगे।

10 और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सियोन में आएँगे; और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएँगे और शोक और लम्बी साँस का लेना जाता रहेगा। ([22222222]. 21:4)

## 36

[22222222] [22] [22222222] [22] [22222222]

\* 35:2 [22222] [22222] [22222222] [22] [22] [22222]; लबानोन की शोभा या सजावट उसके देवदार वृक्ष थे। † 35:8 [222] [22222222] [22] [22] [22] [22] [22222] [22222222]; वहाँ एक भी मूर्तिपूजक नहीं होंगे, जो यहोवा का भक्त नहीं उसे वहाँ आने न दिया जाएगा। \* 36:6 [222222] [2222] [222222]; यहाँ अभिप्रेत का अर्थ है कि जब कोई किसी सरकण्डे का सहारा लेता है तो वह टूटकर उसके हाथों में चुभ जाता है। इसी प्रकार मिस्र और मिस्र का सहारा लेना उन्हें ही हानि पहुँचाएगा।

1 हिजकिय्याह राजा के राज्य के चौदहवें वर्ष में, अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उनको ले लिया।

2 और अश्शूर के राजा ने रबशाके की बड़ी सेना देकर लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया। और वह उत्तरी जलकुण्ड की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़ा हुआ।

3 तब हिजकिय्याह का पुत्र एलयाकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त था, और शेबना जो मंत्री था, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक था, ये तीनों उससे मिलने को बाहर निकल गए।

4 रबशाके ने उनसे कहा, “हिजकिय्याह से कहो, ‘महाराजाधिराज अश्शूर का राजा यह कहता है कि तू किसका भरोसा किए बैठा है?’

5 मेरा कहना है कि क्या मुँह से बातें बनाना ही युद्ध के लिये पराक्रम और युक्ति है? तू किस पर भरोसा रखता है कि तूने मुझसे बलवा किया है?

6 सुन, तू तो उस [22222222] [2222] [22222222]\* अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है; उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उसके हाथ में चुभकर छेद कर देगा। मिस्र का राजा फ़िरौन उन सब के साथ ऐसा ही करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं।

7 फिर यदि तू मुझसे कहे, हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊँचे स्थानों और वेदियों को ढाकर हिजकिय्याह ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहा कि तुम इस वेदी के सामने दण्डवत् किया करो?

8 इसलिए अब मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के साथ वाचा बाँध तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूँगा यदि तू उन पर सवार चढ़ा सके।

9 फिर तू रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखकर मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी को भी कैसे हटा सकेगा?

10 क्या मैंने यहोवा के बिना कहे इस देश को उजाड़ने के लिये चढ़ाई की है? यहोवा ने मुझसे कहा है, उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे।”

11 तब एलयाकीम, शेबना और योआह ने रबशाके से कहा, “अपने दासों से अरामी भाषा में बात कर क्योंकि हम उसे समझते हैं; हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर।”



## 37

12 रबशाके ने कहा, “क्या मेरे स्वामी ने मुझे तेरे स्वामी ही के या तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं जिन्हें तुम्हारे संग अपनी विष्टा खाना और अपना मूत्र पीना पड़ेगा?”

13 तब रबशाके ने खड़े होकर यहूदी भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “महाराजाधिराज अश्शूर के राजा की बातें सुनो!

14 राजा यह कहता है, ‘~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~’, क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा।

15 ऐसा न हो कि हिजकिय्याह तुम से यह कहकर यहोवा का भरोसा दिलाने पाए कि यहोवा निश्चय हमको बचाएगा कि यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा।

16 हिजकिय्याह की मत सुनो; अश्शूर का राजा कहता है, भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो और मेरे पास निकल आओ; तब तुम अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खा पाओगे, और अपने-अपने कुण्ड का पानी पिया करोगे;

17 जब तक मैं आकर तुम को ऐसे देश में न ले जाऊँ जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश और रोटी और दाख की बारियों का देश है।

18 ऐसा न हो कि हिजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हमको बचाएगा। क्या और जातियों के देवताओं ने अपने-अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाया है?

19 हमारा और अर्पाद के देवता कहाँ रहे? सपर्वैम के देवता कहाँ रहे? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचाया?

20 देश-देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है जिसने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा?”

21 ~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~ और उसके उत्तर में एक बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उसको उत्तर न देना।

22 तब हिजकिय्याह का पुत्र एलयाकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त था और शेबना जो मंत्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक था, इन्होंने हिजकिय्याह के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर रबशाके की बातें कह सुनाई।

~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~

1 जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने वस्त्र फाड़ और टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया।

2 और उसने एलयाकीम को जो राजघराने के काम पर नियुक्त था और शेबना मंत्री को और याजकों के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेज दिया।

3 उन्होंने उससे कहा, “हिजकिय्याह यह कहता है कि ‘आज का दिन संकट और उलाहने और निन्दा का दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को जनने का बल न रहा।

4 सम्भव है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने रबशाके की बातें सुनी जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने ~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~ है, और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उसके लिये उन्हें दपटे; अतः तू इन बचे हुआओं के लिये जो रह गए हैं, प्रार्थना कर।”

5 जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए।

6 तब यशायाह ने उनसे कहा, “अपने स्वामी से कहो, ‘यहोवा यह कहता है कि जो वचन तूने सुने हैं जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर।

7 सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा उत्पन्न करूँगा जिससे वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए; और मैं उसको उसी देश में तलवार से मरवा डालूँगा।”

~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~

8 तब रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया; क्योंकि उसने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है।

9 उसने कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह उससे लड़ने को निकला है। तब उसने हिजकिय्याह के पास दूतों को यह कहकर भेजा।

10 “तुम यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यह कहना, ‘तेरा परमेश्वर जिस पर तू भरोसा करता है, यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा।

† 36:14 ~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~ यहोवा में या उसमें भरोसा रखो या मुक्ति की प्रतिज्ञाओं में विश्वास करो। ‡ 36:21 ~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~ हिजकिय्याह की आज्ञा थी कि वे प्रतिक्रिया न दिखाएँ। उन्हें केवल रबशाके की बातें सुननी थीं और उसे समाचार देना था कि वह आगे की कार्यवाही सोचे। \* 37:4 ~~यहूदा के राजा यहूदा के राजा~~ जीवित परमेश्वर मूर्तियों से तुलना करने से घृणा करता है। मूर्तियाँ तो मात्र लकड़ी या पत्थर के टुकड़े होती थीं।

11 देख, तूने सुना है कि अशूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा व्यवहार किया कि उन्हें सत्यानाश ही कर दिया।

12 फिर क्या तू बच जाएगा? गोजान और हारान और रेसेप में रहनेवाली जिन जातियों को और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी लोगों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया, क्या उनके देवताओं ने उन्हें बचा लिया?

13 हमात का राजा, अर्पाद का राजा, सपर्वैम नगर का राजा, और हेना और इव्वा के राजा, ये सब कहाँ गए? ”

?????????????? ?? ???????????????

14 इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढा; तब उसने यहोवा के भवन में जाकर उस पत्री को यहोवा के सामने फैला दिया।

15 और यहोवा से यह प्रार्थना की,

16 “हे सेनाओं के यहोवा, हे करूबों पर विराजमान इस्राएल के परमेश्वर, पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है; आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है।

17 हे यहोवा, कान लगाकर सुन; हे यहोवा आँख खोलकर देख; और सन्हेरीब के सब वचनों को सुन ले, जिसने जीविते परमेश्वर की निन्दा करने को लिख भेजा है।

18 हे यहोवा, सच तो है कि अशूर के राजाओं ने सब जातियों के देशों को उजाड़ा है

19 और उनके देवताओं को आग में झोंका है; क्योंकि वे ईश्वर न थे, वे केवल मनुष्यों की कारीगरी, काठ और पत्थर ही थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके। (???? 115:4-8, ????? 4:8)

20 अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू हमें उसके हाथ से बचा जिससे पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है।”

?????????????? ?? ??????? ????? ??????????????? ??

21 तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, तूने जो अशूर के राजा सन्हेरीब के विषय में मुझसे प्रार्थना की है,

22 उसके विषय यहोवा ने यह वचन कहा है, ‘सिय्योन की कुंवारी कन्या तुझे तुच्छ जानती है और उपहास में उड़ाती है; यरूशलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है।

23 “ तूने किसकी नामधराई और निन्दा की है? और तू जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है, वह किसके विरुद्ध किया है? इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध!

24 अपने कर्मचारियों के द्वारा तूने प्रभु की निन्दा करके कहा है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर वरन् लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूँ; मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदारों और अच्छे-अच्छे सनोवर वृक्षों को काट डालूंगा और उसके दूर-दूर के ऊँचे स्थानों में और उसके वन की फलदाई बारियों में प्रवेश करूंगा।

25 मैंने खुदवाकर पानी पिया और मिस्र की नहरों में पाँव धरते ही उन्हें सूखा दिया।

26 क्या तूने नहीं सुना कि प्राचीनकाल से मैंने यही ठाना और पूर्वकाल से इसकी तैयारी की थी? इसलिए अब ??????? ?? ??????? ?? ??????? ?????? कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे।

27 इसी कारण उनके रहनेवालों का बल घट गया और वे विस्मित और लज्जित हुए: वे मैदान के छोटे-छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास और ऐसे अनाज के समान हो गए जो बढ़ने से पहले ही सूख जाता है।

28 “ मैं तो तेरा बैठना, कूच करना और लौट आना जानता हूँ; और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है।

29 इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं, मैं तेरी नाक में नकेल डालकर और तेरे मुँह में अपनी लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है उसी मार्ग से तुझे लौटा दूँगा।’

30 “और तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगें, और दूसरे वर्ष वह जो उससे उत्पन्न हो, और तीसरे वर्ष बीज बोकर उसे लवने पाओगे और दाख की बारियाँ लगाने और उनका फल खाने पाओगे।

31 और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे और फूलें-फलेंगे;

32 क्योंकि यरूशलेम से बचे हुए और सिय्योन पर्वत से भागे हुए लोग निकलेंगे। सेनाओं का यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेगा।

33 “इसलिए यहोवा अशूर के राजा के विषय यह कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने, वरन् इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा; और न वह ढाल

† 37:26 ??????? ?? ??????? ?? ??????? ?????? तुम गर्व से कहते हो कि यह सब तुम्हारी सम्मति एवं सामर्थ्य से है। परन्तु मैंने यह किया है अर्थात् मैंने बहुत पहले से ही इसका विचार किया, इसकी योजना बनाई और इसका प्रबन्ध किया था।





10 देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ्य दिखाता हुआ आ रहा है, वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा; देखो, जो मजदूरी देने की है वह उसके पास है और जो बदला देने का है वह उसके हाथ में है। (22:7-12)

11 वह चरवाहे के समान अपने झुण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अँकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे धीरे ले चलेगा। (34:23, 5:4)

22:7-12 22:7-12 22:7-12

12 किसने महासागर को चुल्लू से मापा और किसके बिन्ते से आकाश का नाप हुआ, किसने पृथ्वी की मिट्टी को नपुए में भरा और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को काँटे में तौला है?

13 किसने यहोवा की आत्मा को मार्ग बताया या उसका 22:7-12 22:7-12 22:7-12 22:7-12 22:7-12 है? (1 2:16)

14 उसने किस से सम्मति ली और किसने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है? (11:34,35)

15 देखो, जातियाँ तो डोल की एक बूँद या पलड़ों पर की धूल के तुल्य ठहरीं; देखो, वह द्वीपों को धूल के किनकों सरीखे उठाता है।

16 लबानोन भी ईधन के लिये थोड़ा होगा और उसमें के जीव-जन्तु होमबलि के लिये बस न होंगे।

17 सारी जातियाँ उसके सामने कुछ नहीं हैं, वे उसकी दृष्टि में लेश और शून्य से भी घट ठहरीं हैं।

18 तुम परमेश्वर को किसके समान बताओगे और उसकी उपमा किस से दोगे?

19 मूरत! कारीगर ढालता है, सुनार उसको सोने से मढ़ता और उसके लिये चाँदी की साँकलें ढालकर बनाता है।

20 जो कंगाल इतना अर्पण नहीं कर सकता, वह ऐसा वृक्ष चुन लेता है जो न घुने; तब एक निपुण कारीगर ढूँढकर मूरत खुदवाता और उसे ऐसा स्थिर कराता है कि वह हिल न सके। (17:29)

21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या तुम को आरम्भ ही से नहीं बताया गया? क्या तुम ने पृथ्वी की नींव पड़ने के समय ही से विचार नहीं किया?

22 यह वह है जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है; और पृथ्वी के रहनेवाले टिट्टी के तुल्य है; जो आकाश को मलमल के समान फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के लिये तम्बू ताना जाता है;

† 40:13 22:7-12 22:7-12 22:7-12 22:7-12 22:7-12: वह परामर्श के लिए न तो मनुष्यों पर न ही स्वर्गदूतों पर निर्भर करता है। वह सर्वोच्च है, आत्म-निर्भर है और अनन्त है। उसे परामर्श देने योग्य कोई नहीं है। \* 41:3 22:7-12 22:7-12 22:7-12: जब वे भाग रहे थे तब उसने उनका पीछा और उन्हें घबराहट एवं विनाश के अधीन कर दिया।

23 जो बड़े-बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है, और पृथ्वी के अधिकारियों को शून्य के समान कर देता है।

24 वे रोपे ही जाते, वे बोए ही जाते, उनके टूँठ भूमि में जड़ ही पकड़ पाते कि वह उन पर पवन बहाता और वे सूख जाते, और आँधी उन्हें भूसे के समान उड़ा ले जाती है।

25 इसलिए तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूँ? उस पवित्र का यही वचन है।

26 अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन-गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता।

27 हे याकूब, तू क्यों कहता है, हे इस्राएल तू क्यों बोलता है, “मेरा मार्ग यहोवा से छिपा हुआ है, मेरा परमेश्वर मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नहीं करता?”

28 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सृजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है।

29 वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है।

30 तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं;

31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।

## 41

22:7-12 22:7-12 22:7-12 22:7-12 22:7-12

1 हे द्वीपों, मेरे सामने चुप रहो; देश-देश के लोग नया बल प्राप्त करें; वे समीप आकर बोलें; हम आपस में न्याय के लिये एक दूसरे के समीप आएँ।

2 किसने पूर्व दिशा से एक को उभारा है, जिसे वह धार्मिकता के साथ अपने पाँव के पास बुलाता है? वह जातियों को उसके वश में कर देता और उसको राजाओं पर अधिकारी ठहराता है; वह अपनी तलवार से उन्हें धूल के समान, और अपने धनुष से उड़ाए हुए भूसे के समान कर देता है।

3 वह 22:7-12 22:7-12\* और ऐसे मार्ग से, जिस पर वह कभी न चला था, बिना रोक-टोक आगे बढ़ता है।





पर उन्होंने चलना न चाहा और न उसकी व्यवस्था को माना?

<sup>25</sup> इस कारण उस पर उसने अपने क्रोध की आग भड़काई और युद्ध का बल चलाया; और यद्यपि आग उसके चारों ओर लग गई, तो भी वह न समझा; वह जल भी गया, तो भी न चेता।

### 43

यशायाह 43:25-43:28

<sup>1</sup> हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा, और हे इस्राएल तेरा रचनेवाला, अब यह कहता है, “मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है।

<sup>2</sup> जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग-संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।

<sup>3</sup> क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ, तेरी छुड़ौती में मैं मिस्र को और तेरे बदले कूश और सबा को देता हूँ।

<sup>4</sup> मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ, इस कारण मैं तेरे बदले मनुष्यों को और तेरे प्राण के बदले में राज्य-राज्य के लोगों को दे दूँगा।

<sup>5</sup> मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; मैं तेरे वंश को पूर्व से ले आऊँगा, और पश्चिम से भी इकट्ठा करूँगा। (यशायाह 43:24, यशायाह 43:28)

<sup>6</sup> मैं उत्तर से कहूँगा, ‘दे दे’, और दक्षिण से कि ‘रोक मत रख; मेरे पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ; (यशायाह 43:107:2,3)

<sup>7</sup> हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिसको मैंने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिसको मैंने रचा और बनाया है।”

यशायाह 43:29-43:32

<sup>8</sup> आँख रहते हुए अंधे को और कान रखते हुए बहरों को निकाल ले आओ!

<sup>9</sup> जाति-जाति के लोग इकट्ठे किए जाएँ और राज्य-राज्य के लोग एकत्रित हों। उनमें से यशायाह 43:29-43:32\* या बीती हुई बातें हमें सुना सकता है? वे अपने साक्षी ले आएँ जिससे वे सच्चे ठहरें, वे सुन लें और कहें, यह सत्य है।

<sup>10</sup> यहोवा की वाणी है, “तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो, जिन्हें मैंने इसलिए चुना है कि समझकर मेरा

विश्वास करो और यह जान लो कि मैं वही हूँ। मुझसे पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा। (यशायाह 43:1:7,8, यशायाह 43:2:45:6)

<sup>11</sup> मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं।

<sup>12</sup> मैं ही ने समाचार दिया और उद्धार किया और वर्णन भी किया, जब तुम्हारे बीच में कोई पराया देवता न था; इसलिए तुम ही मेरे साक्षी हो,” यहोवा की यह वाणी है।

<sup>13</sup> “मैं ही परमेश्वर हूँ और भविष्य में भी मैं ही हूँ; मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा; जब मैं काम करना चाहूँ तब कौन मुझे रोक सकेगा।” (यशायाह 43:1:17; यशायाह 43:2:9:18,19)

यशायाह 43:33-43:36

<sup>14</sup> तुम्हारा छुड़ानेवाला और इस्राएल का पवित्र यहोवा यह कहता है, “तुम्हारे निमित्त मैंने बाबेल को भेजा है, और उसके सब रहनेवालों को भगोड़ों की दशा में और कसदियों को भी उन्हीं के जहाजों पर चढ़ाकर ले आऊँगा जिनके विषय वे बड़ा बोल बोलते हैं।

<sup>15</sup> मैं यहोवा तुम्हारा पवित्र, इस्राएल का सृजनहार, तुम्हारा राजा हूँ।”

<sup>16</sup> यहोवा जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता है,

<sup>17</sup> जो रथों और घोड़ों को और शूरवीरों समेत सेना को निकाल लाता है, (वे तो एक संग वहीं रह गए और फिर नहीं उठ सकते, वे बुझ गए, वे सन की बत्ती के समान बुझ गए हैं।) वह यह कहता है,

<sup>18</sup> “अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ।

<sup>19</sup> देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा। (यशायाह 43:107:35)

<sup>20</sup> गीदड़ और शुतुमुर्ग आदि जंगली जन्तु मेरी महिमा करेंगे; क्योंकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के लिये जंगल में जल और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा।

<sup>21</sup> इस प्रजा को मैंने अपने लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें। (यशायाह 43:107:31, 1 यशायाह 43:2:9)

यशायाह 43:37-43:40

<sup>22</sup> “तो भी हे याकूब, तूने मुझसे प्रार्थना नहीं की; वरन् हे इस्राएल तू मुझसे थक गया है!

\* 43:9 यशायाह 43:29-43:32: उनमें से कौन है जो इस अवस्था का पूर्वानुमान लगा सकता है? कौन है जो आगामी घटनाओं को बता सकता है। यहाँ अभिप्रेत अर्थ है कि यहोवा ने ऐसा किया है जो अन्यजाति देवी-देवता कभी नहीं कर सकते।



23 मेरे लिये होमबलि करने को तू मेम्ने नहीं लाया और न मेलबलि चढ़ाकर मेरी महिमा की है। देख, मैंने अन्नबलि चढ़ाने की कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई, न तुझ से धूप लेकर तुझे थका दिया है।

24 तू मेरे लिये सुगन्धित नरकट रुपये से मोल नहीं लाया और न मेलबलियों की चर्बी से मुझे तृप्त किया। परन्तु तूने अपने पापों के कारण मुझ पर बोझ लाद दिया है, और अपने अधर्म के कामों से मुझे थका दिया है।

25 “मैं वही हूँ जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूँ और तेरे पापों को स्मरण न करूँगा। (22:22, 10:17, 8:12, 22:22, 31:34)

26 मुझे स्मरण करो, हम आपस में विवाद करें; तू अपनी बात का वर्णन कर जिससे तू निर्दोष ठहरे।

27 तेरा मूलपुरुष पापी हुआ और जो-जो मेरे और तुम्हारे बीच बिचवई हुए, वे मुझसे बलवा करते चले आए हैं।

28 इस कारण मैंने पवित्रस्थान के हाकिमों को अपवित्र ठहराया, मैंने याकूब को सत्यानाश और इस्राएल को निन्दित होने दिया है।

## 44

22:22, 22:22

1 “परन्तु अब हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए इस्राएल, सुन ले!

2 तेरा कर्ता यहोवा, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया और तेरी सहायता करेगा, यह कहता है: हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए यशूरून, मत डर!

3 क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा; मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा। (22:22, 21:6, 22:2, 2:28)

4 वे उन मजनुओं के समान बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं।

5 कोई कहेगा, ‘मैं यहोवा का हूँ,’ कोई अपना नाम याकूब रखेगा, कोई अपने हाथ पर लिखेगा, ‘मैं यहोवा का हूँ,’ और अपना कुलनाम इस्राएली बताएगा।”

22:22, 22:22, 22, 22:22, 22:22, 22:22

6 यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यह कहता है, “मैं सबसे पहला हूँ, और मैं ही अन्त तक रहूँगा;

\* 44:15 22 22:22, 22 22:22, 22 22:22, 22 22:22, 22: 22: यह पद और अगला पद उपहासगर्भित है कि जिस लकड़ी से मूर्तियाँ बनाई जाती हैं उसी लकड़ी को तापने के लिए और खाना पकाने के लिए काम में लेते हैं।

मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं। (22:22, 1:17, 22:22, 1:17, 22:22, 21:6, 22:22, 22:13)

7 जब से मैंने प्राचीनकाल में मनुष्यों को ठहराया, तब से कौन हुआ जो मेरे समान उसको प्रचार करे, या बताए या मेरे लिये रचे अथवा होनहार बातें पहले ही से प्रगट करे?

8 मत डरो और न भयभीत हो; क्या मैंने प्राचीनकाल ही से ये बातें तुम्हें नहीं सुनाई और तुम पर प्रगट नहीं की? तुम मेरे साक्षी हो। क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्टान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता।”

22:22, 22:22, 22

9 जो मूरत खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं और जिन वस्तुओं में वे आनन्द ढूँढते उनसे कुछ लाभ न होगा; उनके साक्षी, न तो आप कुछ देखते और न कुछ जानते हैं, इसलिए उनको लज्जित होना पड़ेगा।

10 किसने देवता या निष्फल मूरत ढाली है?

11 देख, उसके सब संगियों को तो लज्जित होना पड़ेगा, कारीगर तो मनुष्य ही है; वे सब के सब इकट्ठे होकर खड़े हों; वे डर जाएँगे; वे सब के सब लज्जित होंगे।

12 लोहार एक बसूला अंगारों में बनाता और हथौड़ों से गढ़कर तैयार करता है, अपने भुजबल से वह उसको बनाता है; फिर वह भूखा हो जाता है और उसका बल घटता है, वह पानी नहीं पीता और थक जाता है।

13 बढई सूत लगाकर टाँकी से रेखा करता है और रन्दनी से काम करता और परकार से रेखा खींचता है, वह उसका आकार और मनुष्य की सी सुन्दरता बनाता है ताकि लोग उसे घर में रखें।

14 वह देवदार को काटता या वन के वृक्षों में से जाति-जाति के बांज वृक्ष चुनकर देख-भाल करता है, वह देवदार का एक वृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल पाकर बढ़ता है।

15 तब 22 22:22, 22 22:22, 22 22:22, 22 22:22, 22: 22: वह उसमें से कुछ सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी बनाता है; उसी से वह देवता भी बनाकर उसको दण्डवत् करता है; वह मूरत खुदवाकर उसके सामने प्रणाम करता है।

16 उसका एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से माँस पकाकर खाता है, वह माँस भूनकर तृप्त होता; फिर तापकर कहता है, “अहा, मैं गर्म हो गया, मैंने आग देखी है!”

17 और उसके बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात् एक मूरत खोदकर बनाता है; तब वह उसके सामने प्रणाम और दण्डवत् करता और उससे प्रार्थना करके कहता है, “मुझे बचा ले, क्योंकि तू मेरा देवता है!” (27:29, 17:29)

18 वे कुछ नहीं जानते, न कुछ समझ रखते हैं; क्योंकि उनकी आँखें ऐसी बन्द की गई हैं कि वे देख नहीं सकते; और उनकी बुद्धि ऐसी कि वे बूझ नहीं सकते।

19 कोई इस पर ध्यान नहीं करता, और न किसी को इतना ज्ञान या समझ रहती है कि वह कह सके, “उसका एक भाग तो मैंने जला दिया और उसके कोयलों पर रोटी बनाई; और माँस भूनकर खाया है; फिर क्या मैं उसके बचे हुए भाग को धिनौनी वस्तु बनाऊँ? क्या मैं काठ को प्रणाम करूँ?”

20 27 27:29 27:29 27:29; भरमाई हुई बुद्धि के कारण वह भटकाया गया है और वह न अपने को बचा सकता और न यह कह सकता है, “क्या मेरे दाहिने हाथ में मिथ्या नहीं?”

27:29 27:29 27:29 27:29 27:29 27:29

21 हे याकूब, हे इस्राएल, इन बातों को स्मरण कर, तू मेरा दास है, मैंने तुझे रचा है; हे इस्राएल, तू मेरा दास है, मैं तुझको न भूलूँगा।

22 मैंने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है।

23 हे आकाश ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि यहोवा ने यह काम किया है; हे पृथ्वी के गहरे स्थानों, जयजयकार करो; हे पहाड़ों, हे वन, हे वन के सब वृक्षों, गला खोलकर ऊँचे स्वर से गाओ! क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल में महिमावान होगा। (27:69:34,35, 27:49:13)

24 यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया है, यह कहता है, “मैं यहोवा ही सब का बनानेवाला हूँ जिसने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है।

25 मैं झूठे लोगों के कहे हुए चिन्हों को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेवालों को बावला कर देता हूँ; जो बुद्धिमानों को पीछे हटा देता और उनकी पंडिताई को मूर्खता बनाता हूँ; (27:5:12-14, 1 27:1:20)

† 44:20 27 27:29 27:29 27:29: इसका अर्थ है कि मूर्तिपूजा करके उनकी मनोकामना पूरी नहीं होगी। यह ऐसा है जैसे मनुष्य भोजन की खोज करे और अन्ततः वह भोजन राख निगले। \* 45:2 27:29 27:29 27:29-27:29 27:29: विजय का मार्ग तैयार करने के लिए, यह सिद्ध करने हेतु कि पृथ्वी के घमण्डी विजेताओं की विजय परमेश्वर के प्रावधान ही है। यहाँ निहित विचार है, तुम्हारी विजय यात्रा को घटाने या उसका विरोध करनेवाली हर एक बाधा को मैं दूर कर दूँगा।

26 और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सफल करता हूँ; जो यरूशलेम के विषय कहता है, ‘वह फिर बसाई जाएगी’ और यहूदा के नगरों के विषय, ‘वे फिर बनाए जाएंगे और मैं उनके खण्डहरों को सुधारूँगा;’

27 जो गहरे जल से कहता है, ‘तू सूख जा, मैं तेरी नदियों को सूखाऊँगा;’ (27:51:36)

28 जो कुसू के विषय में कहता है, ‘वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा;’ यरूशलेम के विषय कहता है, ‘वह बसाई जाएगी;’ और मन्दिर के विषय कि ‘तेरी नींव डाली जाएगी।’” (27:1:1-3)

## 45

27:29 27 27:29 27:29 27 27:29 27:29 27

1 यहोवा अपने अभिषिक्त कुसू के विषय यह कहता है, मैंने उसके दाहिने हाथ को इसलिए थाम लिया है कि उसके सामने जातियों को दबा दूँ और राजाओं की कमर ढीली करूँ, उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूँ कि वे फाटक बन्द न किए जाएँ।

2 “27:29 27:29 27:29-27:29 27:29 27:29”\* और ऊँची-ऊँची भूमि को चौरस करूँगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेंडों को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

3 मैं तुझको अंधकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूँगा, जिससे तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। (27:27:5, 27:2:3)

4 अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैंने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैंने तुझे पदवी दी है।

5 मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैं तेरी कमर कसूँगा,

6 जिससे उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं; मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं है।

7 मैं उजियाले का बनानेवाला और अधियारे का सृजनहार हूँ, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूँ, मैं यहोवा ही इन सभी का कर्ता हूँ।

8 हे आकाश ऊपर से धार्मिकता बरसा, आकाशमण्डल से धार्मिकता की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धार्मिकता भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया है।

?????????? ?? ?????????

9 “हाय उस पर जो अपने रचनेवाले से झगड़ता है! वह तो मिट्टी के ठीकरों में से एक ठीकरा ही है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, ‘तू यह क्या करता है?’ क्या कारीगर का बनाया हुआ कार्य उसके विषय कहेगा, ‘उसके हाथ नहीं है?’ (????? 9:20,21)

10 हाय उस पर जो अपने पिता से कहे, ‘तू क्या जन्माता है?’ और माँ से कहे, ‘तू किसकी माता है?’ ”

11 यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है वह यह कहता है, “क्या तुम आनेवाली घटनाएँ मुझसे पूछोगे? क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों के विषय मुझे आज्ञा दोगे?”

12 मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैंने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है।

13 मैं ही ने उस पुरुष को धार्मिकता में उभारा है और मैं उसके सब मार्गों को सीधा करूँगा; वह मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बन्दियों को बिना दाम या बदला लिए छोड़ा देगा,” सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

????? ?????????????? ?????????????????

14 यहोवा यह कहता है, “मिस्रियों की कमाई और कूशियों के व्यापार का लाभ और सबाई लोग जो डील-डौलवाले हैं, तेरे पास चले आएँगे, और तेरे ही हो जाएँगे, वे तेरे पीछे-पीछे चलेंगे; वे साँकलों में बाँधे हुए चले आएँगे और तेरे सामने दण्डवत् कर तुझ से विनती करके कहेंगे, ‘निश्चय परमेश्वर तेरे ही साथ है और दूसरा कोई नहीं; उसके सिवाय कोई और परमेश्वर नहीं।’ ” (????? 8:22,23, ?????????? 3:9)

15 हे इस्राएल के परमेश्वर, हे उद्धारकर्ता! निश्चय तू ऐसा परमेश्वर है जो अपने को गुप्त रखता है। (????? 11:33)

16 मूर्तियों के गढ़नेवाले सब के सब लज्जित और चकित होंगे, वे सब के सब व्याकुल होंगे।

17 परन्तु इस्राएल यहोवा के द्वारा युग-युग का उद्धार पाएगा; तुम युग-युग वरन् अनन्तकाल तक न तो कभी लज्जित और न कभी व्याकुल होंगे। (????? 10:11, ?????? 2:26,27, ?????????? 5:9)

† 45:19 ?????? ?????????? ?????? ?????????? कहने का अर्थ है कि परमेश्वर की सेवा करना व्यर्थ और निरर्थक नहीं रहा है क्योंकि वह उनका रक्षक एवं मित्र रहा है और उनका उसके निकट जाकर अपनी आवश्यकताएँ प्रस्तुत करना व्यर्थ नहीं था। \* 46:1 ?????? ?????????? ?????? ?????? बाबेल का प्रमुख गृहदेवता।

18 क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सुनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रचा है। वही यह कहता है, “मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवाय दूसरा और कोई नहीं है।

19 मैंने न किसी गुप्त स्थान में, न अंधकार देश के किसी स्थान में बातें की; मैंने याकूब के वंश से नहीं कहा, ‘?????? ?????????? ?????? ??????????’ मैं यहोवा सत्य ही कहता हूँ, मैं उचित बातें ही बताता हूँ।

20 “हे जाति-जाति में से बचे हुए लोगों, इकट्ठे होकर आओ, एक संग मिलकर निकट आओ! वह जो अपनी लकड़ी की खोदी हुई मूरतें लिए फिरते हैं और ऐसे देवता से जिससे उद्धार नहीं हो सकता, प्रार्थना करते हैं, वे अज्ञान हैं।

21 तुम प्रचार करो और उनको लाओ; हाँ, वे आपस में सम्मति करें किसने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया? किसने प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं किया? इसलिए मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता परमेश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है।

22 “हे पृथ्वी के दूर-दूर के देश के रहनेवालों, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और दूसरा कोई नहीं है।

23 मैंने अपनी ही शपथ खाई, धार्मिकता के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं टलेगा, ‘प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख झुकेगा और प्रत्येक के मुख से मेरी ही शपथ खाई जाएगी।’ (????? 6:13, ?????? 14:11, ?????? 2:10,11)

24 “लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल यहोवा ही में धार्मिकता और शक्ति है। उसी के पास लोग आएँगे, और जो उससे रूठे रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पड़ेगा।

25 इस्राएल के सारे वंश के लोग यहोवा ही के कारण धर्मी ठहरेँगे, और उसकी महिमा करेंगे।”

## 46

????? ?????????????? ?? ????????? ?????????????

1 ?????? ?????????? ?????? ??????\*, नबो देवता नब गया है, उनकी प्रतिमाएँ पशुओं वरन् घरेलू पशुओं पर लदी हैं; जिन वस्तुओं को तुम उठाए फिरते थे, वे अब भारी बोझ हो गई और थकित पशुओं पर लदी हैं।

2 वे नब गए, वे एक संग झुक गए, वे उस भार को छुड़ा नहीं सके, और आप भी बंधुवाई में चले गए हैं।

3 “हे याकूब के घराने, हे इस्राएल के घराने के सब बचे हुए लोगों, मेरी ओर कान लगाकर सुनो; तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाए रहा और जन्म ही से लिए फिरता आया हूँ।

4 तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा। मैंने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूँगा; मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता भी रहूँगा।

5 “तुम किस से मेरी उपमा दोगे और मुझे किसके समान बताओगे, किस से मेरा मिलान करोगे कि हम एक समान ठहरें?

6 जो थैली से सोना उण्डेलते या काँटे में चाँदी तौलते हैं, जो सुनार को मजदूरी देकर उससे देवता बनवाते हैं, तब वे उसे प्रणाम करते वरन् दण्डवत् भी करते हैं! (22:22-24)

7 वे उसको कंधे पर उठाकर लिए फिरते हैं, वे उसे उसके स्थान में रख देते और वह वहीं खड़ा रहता है; वह अपने स्थान से हट नहीं सकता; यदि कोई उसकी दुहाई भी दे, तो भी न वह सुन सकता है और न विपत्ति से उसका उद्धार कर सकता है।

8 “हे अपराधियों, इस बात को स्मरण करो और ध्यान दो, इस पर फिर मन लगाओ।

9 प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से है, क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है।

10 मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, ‘22:22 22:22 22:22 22:22’ और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।’

11 मैं पूर्व से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेवाले पुरुष को बुलाता हूँ। मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैंने यह विचार बाँधा है और उसे सफल भी करूँगा।

12 “हे कठोर मनवालों तुम जो धार्मिकता से दूर हो, कान लगाकर मेरी सुनो।

13 मैं अपनी धार्मिकता को समीप ले आने पर हूँ वह दूर नहीं है, और मेरे उद्धार करने में विलम्ब न होगा;

मैं सिय्योन का उद्धार करूँगा और इस्राएल को महिमा दूँगा।”

## 47

22:22 22:22 22:22

1 हे बाबेल की कुमारी बेटी, उतर आ और धूल पर बैठ; हे कसदियों की बेटी तू बिना सिंहासन भूमि पर बैठ! क्योंकि तू अब फिर कोमल और सुकुमार न कहलाएगी।

2 चक्की लेकर आटा पीस, अपना घूँघट हटा और घाघरा समेट ले और उघाड़ी टाँगों से नदियों को पार कर।

3 22:22 22:22 22:22 22:22\* और तेरी लज्जा प्रगट होगी। मैं बदला लूँगा और किसी मनुष्य को न छोड़ूँगा।

4 हमारा छुटकारा देनेवाले का नाम सेनाओं का यहोवा और इस्राएल का पवित्र है।

5 हे कसदियों की बेटी, चुपचाप बैठी रह और अधियारे में जा; क्योंकि तू अब राज्य-राज्य की स्वामिनी न कहलाएगी।

6 मैंने अपनी प्रजा से क्रोधित होकर अपने निज भाग को अपवित्र ठहराया और तेरे वश में कर दिया; तूने उन पर कुछ दया न की; बूढ़ों पर तूने अपना अत्यन्त भारी जूआ रख दिया।

7 तूने कहा, “मैं सर्वदा स्वामिनी बनी रहूँगी,” इसलिए तूने अपने मन में इन बातों पर विचार न किया और यह भी न सोचा कि उनका क्या फल होगा।

8 इसलिए सुन, तू जो राग-रंग में उलझी हुई निडर बैठी रहती है और मन में कहती है कि “मैं ही हूँ, और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं; मैं विधवा के समान न बैठूँगी और न मेरे बाल-बच्चे मिटेंगे।” (22: 2:15, 22:22 18:7)

9 सुन, ये दोनों दुःख अर्थात् लड़कों का जाता रहना और विधवा हो जाना, अचानक एक ही दिन तुझ पर आ पड़ेंगे। तेरे बहुत से टोन्हों और तेरे भारी-भारी तंत्र-मंत्रों के रहते भी ये तुझ पर अपने पूरे बल से आ पड़ेंगे। (22:22 18:8,23)

10 22:22 22:22 22:22 22:22, तूने कहा, “मुझे कोई नहीं देखता;” तेरी बुद्धि और ज्ञान ने तुझे बहकाया और तूने अपने मन में कहा, “मैं ही हूँ और मेरे सिवाय कोई दूसरा नहीं।”

† 46:10 22:22 22:22 22:22: मेरा उद्देश्य, मेरी योजना, मेरी मर्जी स्थिर रहेगी का अर्थ है, अचल, बस जाना, निश्चित होना, स्थापित होना \* 47:3 22:22 22:22 22:22 22:22: यह नगर के सर्वनाश की दयनीय दशा को दर्शाता है। उसका घमण्ड समाप्त हो जाएगा और उसकी स्थिति ऐसी होगी कि उसके निवासी अपमान एवं लज्जा से भर जाएंगे। † 47:10 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22: यहाँ निःसंदेह, दुष्टता का अर्थ घमण्ड है अर्थात् उसने यह सोचा था कि वह इनके द्वारा अन्य देशों पर अपनी श्रेष्ठता एवं प्रभुता बनाये रखेगा।





13 हे आकाश जयजयकार कर, हे पृथ्वी, मगन हो; हे पहाड़ों, गला खोलकर जयजयकार करो! क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है और अपने दीन लोगों पर दया की है। (2/2/2. 96:11-13, 2/2/2/2/2/2. 31:13)

14 परन्तु सिय्योन ने कहा, “यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया है।”

15 “क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हाँ, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता।

16 देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।

17 तेरे बच्चों फुर्ती से आ रहे हैं और खण्डहर बनानेवाले और उजाड़नेवाले तेरे बीच से निकले जा रहे हैं।

18 अपनी आँखें उठाकर चारों ओर देख, वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं। यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन सभी को गहने के समान पहन लेगी, तू दुल्हन के समान अपने शरीर में उन सब को बाँध लेगी।” (2/2/2. 14:11)

19 “तेरे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं, और तेरे जो देश खण्डहर ही खण्डहर हैं, उनमें अब निवासी न समाएँगे, और तुझे नष्ट करनेवाले दूर हो जाएँगे।

20 तेरे पुत्र जो तुझ से ले लिए गए वे फिर तेरे कान में कहने पाएँगे, ‘यह स्थान हमारे लिये छोटा है, हमें और स्थान दे कि उसमें रहें।’

21 तब तू मन में कहेगी, ‘किसने इनको मेरे लिये जन्माया? मैं तो पुत्रहीन और बाँझ हो गई थीं, दासत्व में और यहाँ-वहाँ मैं घूमती रही, इनको किसने पाला? देख, मैं अकेली रह गई थी; फिर ये कहाँ थे?’”

22 प्रभु यहोवा यह कहता है, “देख, 2/2/2 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2-2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2, और देश-देश के लोगों के सामने अपना झण्डा खड़ा करूँगा; तब वे तेरे पुत्रों को अपनी गोद में लिए आएँगे, और तेरी पुत्रियों को अपने कंधे पर चढ़ाकर तेरे पास पहुँचाएँगे।

23 राजा तेरे बच्चों के निज-सेवक और उनकी रानियाँ दूध पिलाने के लिये तेरी दाइयाँ होंगी। वे अपनी नाक भूमि पर रगड़कर तुझे दण्डवत् करेंगे और तेरे पाँवों की धूल चाटेंगे। तब तू यह जान लेगी कि मैं ही यहोवा

हूँ; मेरी बाट जोहनेवाले कभी लज्जित न होंगे।” (2/2/2. 72:9-11, 2/2/2. 2:27)

24 क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है? क्या दुष्ट के बन्दी छुड़ाए जा सकते हैं? (2/2/2/2/2/2 12:29)

25 तो भी यहोवा यह कहता है, “हाँ, वीर के बन्दी उससे छीन लिए जाएँगे, और दुष्ट का शिकार उसके हाथ से छुड़ा लिया जाएगा, क्योंकि जो तुझ से लड़ते हैं उनसे मैं आप मुकद्दमा लड़ूँगा, और तेरे बाल-बच्चों का मैं उद्धार करूँगा।

26 जो तुझ पर अंधेरे करते हैं उनको मैं उन्हीं का माँस खिलाऊँगा, और, वे अपना लहू पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु से होते हैं। तब सब प्राणी जान लेंगे कि तेरा उद्धारकर्ता यहोवा और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का शक्तिमान मैं ही हूँ।” (2/2/2/2/2/2. 16:6)

## 50

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2

1 “तुम्हारी माता का त्यागपत्र कहाँ है, जिसे मैंने उसे त्यागते समय दिया था? या मैंने किस व्यापारी के हाथ तुम्हें बेचा?” यहोवा यह कहता है, “सुनो, तुम अपने ही अधर्म के कामों के कारण बिक गए, और तुम्हारे ही अपराधों के कारण तुम्हारी माता छोड़ दी गई।

2 इसका क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला? और जब मैंने पुकारा, तब कोई न बोला? क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? क्या मुझ में उद्धार करने की शक्ति नहीं? देखो, मैं एक धमकी से समुद्र को सूखा देता हूँ, मैं महानदों को रेगिस्तान बना देता हूँ; उनकी मछलियाँ जल बिना मर जाती और बसाती हैं।

3 मैं आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा पहनाता, और टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूँ।”

2/2/2/2/2/2/2/2 2/2/2

4 प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा सम्भालना जानूँ। भोर को वह नित मुझे जगाता और 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2\* कि मैं शिष्य के समान सुनूँ।

5 प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैंने विरोध न किया, न पीछे हटा।

6 मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने

‡ 49:22 2/2/2 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2-2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2: हाथ उठाने का अर्थ है संकेत करना या किसी को बुलाना। यहाँ विचार यह है कि परमेश्वर अन्यजातियों को बुलायेगा कि वे आशीषों में सहभागी हों और मसीह को गले लगाएँ। \* 50:4 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2: कान खोलने का अर्थ है कि निर्देशनों को ग्रहण करने के लिए किसी को तैयार करना।

और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया। (22:22-24) 26:67, 27:27-29. 12:2)

7 क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैंने संकोच नहीं किया; वरन् अपना माथा चकमक के समान कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा।

8 जो मुझे धर्मी ठहराता है वह मेरे निकट है। मेरे साथ कौन मुकद्दमा करेगा? हम आमने-सामने खड़े हों। मेरा विरोधी कौन है? वह मेरे निकट आए। (22:22. 8:33,34)

9 सुनो, प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है; मुझे कौन दोषी ठहरा सकेगा? देखो, वे सब कपड़े के समान पुराने हो जाएँगे; उनको कीड़े खा जाएँगे।

10 तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अधियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रहे।

11 देखो, 22:22 22:22 22:22 22:22\* और अग्निबाणों को कमर में बाँधते हो! तुम सब अपनी जलाई हुई आग में और अपने जलाए हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पड़े रहोगे।

## 51

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

1 “हे धार्मिकता पर चलनेवालों, हे यहोवा के ढूँढने वालों, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खदान में से तुम निकाले गए, उस पर ध्यान करो।

2 अपने मूलपुरुष अब्राहम और अपनी माता सारा पर ध्यान करो; जब वह अकेला था, तब ही से मैंने उसको बुलाया और आशीष दी और बढ़ा दिया।

3 यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है, उसने उसके सब खण्डहरों को शान्ति दी है; वह उसके जंगल को अदन के समान और उसके निर्जल देश को यहोवा की वाटिका के समान बनाएगा; उसमें हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा।

4 “हे मेरी प्रजा के लोगों, मेरी ओर ध्यान धरो; हे मेरे लोगों, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी, और मैं अपना नियम देश-देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर करूँगा।

5 मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है; मैं अपने भुजबल से देश-देश के लोगों का न्याय करूँगा। द्वीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे।

6 आकाश की ओर अपनी आँखें उठाओ, और पृथ्वी को निहारो; क्योंकि आकाश धुएँ के समान लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी, और उसके रहनेवाले ऐसे ही जाते रहेंगे; परन्तु जो उद्धार मैं करूँगा वह सर्वदा ठहरेगा, और मेरी धार्मिकता का अन्त न होगा।

7 “हे धार्मिकता के जाननेवालों, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; मनुष्यों की नामधराई से मत डरो, और उनके निन्दा करने से विस्मित न हो।

8 क्योंकि घुन उन्हें कपड़े के समान और कीड़ा उन्हें ऊन के समान खाएगा; परन्तु मेरी धार्मिकता अनन्तकाल तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।”

9 हे यहोवा की भुजा, जाग! जाग और बल धारण कर; जैसे प्राचीनकाल में और बीते हुए पीढ़ियों में, वैसे ही अब भी जाग। क्या तू वही नहीं है जिसने 22:22 22:22 22:22-22:22 22:22\* और अजगर को छेदा?

10 क्या तू वही नहीं जिसने समुद्र को अर्थात् गहरे सागर के जल को सूखा डाला और उसकी गहराई में अपने छुड़ाए हुआओं के पार जाने के लिये मार्ग निकाला था?

11 सो यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएँगे, और उनके सिरों पर अनन्त आनन्द गूँजता रहेगा; वे हर्ष और आनन्द प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियों का अन्त हो जाएगा।

12 “मैं, मैं ही तेरा शान्तिदाता हूँ; तू कौन है जो मरनेवाले मनुष्य से, और घास के समान मुझानेवाले आदमी से डरता है,

13 और आकाश के ताननेवाले और पृथ्वी की नींव डालनेवाले अपने कर्ता यहोवा को भूल गया है, और जब द्रोही नाश करने को तैयार होता है तब उसकी जलजलाहट से दिन भर लगातार थरथराता है? परन्तु द्रोही की जलजलाहट कहाँ रही?

14 बन्दी शीघ्र ही स्वतंत्र किया जाएगा; वह गड्ढे में न मरेगा और न उसे रोटी की कमी होगी।

† 50:11 22:22 22:22 22:22 22:22: यह पद दुष्टों के संदर्भ में है। पिछले पद में मसीह भक्तों को परमेश्वर में भरोसा रखने का आह्वान करता है और अर्थ निहित है कि वे ऐसा करते हैं। परन्तु दुष्ट ऐसा नहीं करते हैं। \* 51:9 22:22 22:22 22:22-22:22 22:22: अर्थात् उसे नष्ट कर दिया था। उसी भुजा ने न्याय की ओर प्रतिशोध की तलवार चलाई थी जिससे रहब मारा गया था। यहाँ रहब: का अर्थ है मित्र।



15 जो समुद्र को उथल-पुथल करता जिससे उसकी लहरों में गर्जन होती है, वह मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है।

16 मैंने तेरे मुँह में अपने वचन डाले, और तुझे अपने हाथ की आड़ में छिपा रखा है; कि मैं आकाश को तानूँ और पृथ्वी की नींव डालूँ, और सिय्योन से कहूँ, 'तुम मेरी प्रजा हो।' (21:2, 10, 27)

21:2, 10, 27

17 हे यरूशलेम जाग! जाग उठ! खड़ी हो जा, 21:27 22:1-3, तूने कटोरे का लडखड़ा देनेवाला मद पूरा-पूरा ही पी लिया है। (14:10, 1 15:34)

18 जितने लड़कों ने उससे जन्म लिया उनमें से कोई न रहा जो उसकी अगुआई करके ले चले; और जितने लड़के उसने पाले-पोसे उनमें से कोई न रहा जो उसके हाथ को थाम ले।

19 ये दो विपत्तियाँ तुझ पर आ पड़ी हैं, कौन तेरे संग विलाप करेगा? उजाड़ और विनाश और अकाल और तलवार आ पड़ी है; कौन तुझे शान्ति देगा?

20 तेरे लड़के मूर्च्छित होकर हर एक सड़क के सिरे पर, महाजाल में फँसे हुए हिरन के समान पड़े हैं; यहोवा की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की धमकी के कारण वे अचेत पड़े हैं।

21 इस कारण हे दुःखियारी, सुन, तू मतवाली तो है, परन्तु दाखमधु पीकर नहीं;

22 तेरा प्रभु यहोवा जो अपनी प्रजा का मुकद्दमा लड़नेवाला तेरा परमेश्वर है, वह यह कहता है, "सुन, मैं लडखड़ा देनेवाले मद के कटोरे को अर्थात् अपनी जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से ले लेता हूँ; तुझे उसमें से फिर कभी पीना न पड़ेगा;

23 और मैं उसे तेरे उन दुःख देनेवालों के हाथ में दूँगा, जिन्होंने तुझ से कहा, 'लेट जा, कि हम तुझ पर पाँव धरकर आगे चलें;' और तूने औंधे मुँह गिरकर अपनी पीठ को भूमि और आगे चलनेवालों के लिये सड़क बना दिया।"

## 52

21:2, 10, 27

† 51:17 21:2, 10, 27 22:1-3 23:1-3 24:1-3 25:1-3 26:1-3 27:1-3 28:1-3 29:1-3 30:1-3 31:1-3 32:1-3 33:1-3 34:1-3 35:1-3 36:1-3 37:1-3 38:1-3 39:1-3 40:1-3 41:1-3 42:1-3 43:1-3 44:1-3 45:1-3 46:1-3 47:1-3 48:1-3 49:1-3 50:1-3 51:1-3 52:1-3 53:1-3 54:1-3 55:1-3 56:1-3 57:1-3 58:1-3 59:1-3 60:1-3 61:1-3 62:1-3 63:1-3 64:1-3 65:1-3 66:1-3 67:1-3 68:1-3 69:1-3 70:1-3 71:1-3 72:1-3 73:1-3 74:1-3 75:1-3 76:1-3 77:1-3 78:1-3 79:1-3 80:1-3 81:1-3 82:1-3 83:1-3 84:1-3 85:1-3 86:1-3 87:1-3 88:1-3 89:1-3 90:1-3 91:1-3 92:1-3 93:1-3 94:1-3 95:1-3 96:1-3 97:1-3 98:1-3 99:1-3 100:1-3 यहोवा के क्रोध की तुलना नशा उत्पन्न करनेवाले कटोरे से बार बार की गई है। कारण है कि उसका प्रभाव वैसा ही है। वह अशक्त बनाता है और उसके पात्र को लडखड़ाता और चकराकर गिरा देता है।

\* 52:1 21:2, 10, 27 22:1-3 23:1-3 24:1-3 25:1-3 26:1-3 27:1-3 28:1-3 29:1-3 30:1-3 31:1-3 32:1-3 33:1-3 34:1-3 35:1-3 36:1-3 37:1-3 38:1-3 39:1-3 40:1-3 41:1-3 42:1-3 43:1-3 44:1-3 45:1-3 46:1-3 47:1-3 48:1-3 49:1-3 50:1-3 51:1-3 52:1-3 53:1-3 54:1-3 55:1-3 56:1-3 57:1-3 58:1-3 59:1-3 60:1-3 61:1-3 62:1-3 63:1-3 64:1-3 65:1-3 66:1-3 67:1-3 68:1-3 69:1-3 70:1-3 71:1-3 72:1-3 73:1-3 74:1-3 75:1-3 76:1-3 77:1-3 78:1-3 79:1-3 80:1-3 81:1-3 82:1-3 83:1-3 84:1-3 85:1-3 86:1-3 87:1-3 88:1-3 89:1-3 90:1-3 91:1-3 92:1-3 93:1-3 94:1-3 95:1-3 96:1-3 97:1-3 98:1-3 99:1-3 100:1-3 अर्थात् अपनी प्रजा को दासत्व से छुड़ाने के लिए। यह उपमा योद्धाओं से ली गई है जो युद्ध के लिए अपनी भुजा को प्रगट करते हैं। इसका अभिप्राय है कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए एक योद्धा के रूप में आता है।

1 हे सिय्योन, जाग, जाग! 21:2, 10, 27; हे पवित्र नगर यरूशलेम, अपने शोभायमान वस्त्र पहन ले; क्योंकि तेरे बीच खतनारहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश न करने पाएँगे। (21:2, 10, 27)

2 अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, हे यरूशलेम, उठ; हे सिय्योन की बन्दी बेटा, अपने गले के बन्धन को खोल दे।

3 क्योंकि यहोवा यह कहता है, "तुम जो सेंट-मेंत बिक गए थे, इसलिए अब बिना रुपया दिए छुड़ाए भी जाओगे। (22: 44:12, 1 22: 1:18)

4 प्रभु यहोवा यह कहता है: मेरी प्रजा पहले तो मिस्र में परदेशी होकर रहने को गई थी, और अशूरियों ने भी बिना कारण उन पर अत्याचार किया।

5 इसलिए यहोवा की यह वाणी है कि मैं अब यहाँ क्या करूँ जबकि मेरी प्रजा सेंट-मेंत हर ली गई है? यहोवा यह भी कहता है कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे ऊधम मचा रहे हैं, और मेरे नाम कि निन्दा लगातार दिन भर होती रहती है। (22: 36:20-23, 22: 2:24)

6 इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी; वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है वह यहोवा ही है; देखो, मैं ही हूँ।"

7 पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, "तेरा परमेश्वर राज्य करता है।" (22: 10:36, 22: 10:15, 22: 1:15)

8 सुन, तेरे पहरुए पुकार रहे हैं, वे एक साथ जयजयकार कर रहे हैं; क्योंकि वे साक्षात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है।

9 हे यरूशलेम के खण्डहरों, एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है, उसने यरूशलेम को छुड़ा लिया है।

10 21:2, 10, 27 22:1-3 23:1-3 24:1-3 25:1-3 26:1-3 27:1-3 28:1-3 29:1-3 30:1-3 31:1-3 32:1-3 33:1-3 34:1-3 35:1-3 36:1-3 37:1-3 38:1-3 39:1-3 40:1-3 41:1-3 42:1-3 43:1-3 44:1-3 45:1-3 46:1-3 47:1-3 48:1-3 49:1-3 50:1-3 51:1-3 52:1-3 53:1-3 54:1-3 55:1-3 56:1-3 57:1-3 58:1-3 59:1-3 60:1-3 61:1-3 62:1-3 63:1-3 64:1-3 65:1-3 66:1-3 67:1-3 68:1-3 69:1-3 70:1-3 71:1-3 72:1-3 73:1-3 74:1-3 75:1-3 76:1-3 77:1-3 78:1-3 79:1-3 80:1-3 81:1-3 82:1-3 83:1-3 84:1-3 85:1-3 86:1-3 87:1-3 88:1-3 89:1-3 90:1-3 91:1-3 92:1-3 93:1-3 94:1-3 95:1-3 96:1-3 97:1-3 98:1-3 99:1-3 100:1-3 और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे। (22: 98:3, 22: 3:16, 22: 2:30,31)

11 दूर हो, दूर, वहाँ से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छूओ; उसके बीच से निकल जाओ; हे यहोवा

के पात्रों के ढोनेवालों, अपने को शुद्ध करो। (2 [?/?/?/?] 6:17, [?/?/?/?] 18:4)

12 क्योंकि तुम को उतावली से निकलना नहीं, और न भागते हुए चलना पड़ेगा; क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे-आगे अगुआई करता हुआ चलेगा, और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा करता चलेगा।

[?/?/?/?] [?/?/?/?] [?/?/?/?/?/?/?/?/?/?] [?/?] [?/?/?/?]

13 देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान और अति महान हो जाएगा। ([?/?/?/?/?] 23:5)

14 जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी), ([?/?] 22:6,7, [?/?/?] 53:2,3)

15 वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे; क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी। ([?/?/?] 15:21, 1 [?/?/?/?] 2:9)

## 53

1 जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? ([?/?/?] 12:38, [?/?/?] 10:16)

2 क्योंकि वह उसके सामने अंकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो [?/?/?/?/?/?] [?/?/?/?/?] में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। ([?/?/?/?/?] 2:23)

3 वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान-पहचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हमने उसका मूल्य न जाना। ([?/?] 9:12)

4 निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। ([?/?/?/?/?] 8:17, 1 [?/?] 2:24)

5 परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। ([?/?/?] 4:25, 1 [?/?] 2:24)

6 हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और

यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। ([?/?/?/?/?/?] 10:43, 1 [?/?] 2:25)

7 वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। ([?/?/?] 1:29, [?/?/?/?/?] 27:12,14, [?/?] 15:4,5, 1 [?/?/?/?] 5:7, [?/?/?/?/?] 5:6,12)

8 अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। ([?/?/?/?/?] 8:32,33)

9 उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी। (1 [?/?/?/?] 15:3, 1 [?/?] 2:22, 1 [?/?/?] 3:5, [?/?/?] 19:38-42)

10 तो भी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।

11 वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा। ([?/?/?] 5:19)

12 इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तो भी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधी के लिये विनती करता है। ([?/?/?/?/?] 27:38, [?/?] 15:27, [?/?/?/?] 22:37, [?/?/?/?/?] 9:28)

## 54

[?/?/?] [?/?] [?/?/?/?/?/?] [?/?] [?/?/?/?]

1 "हे बाँझ, तू जो पुत्रहीन है जयजयकार कर; तू जिसे प्रसव-पीडा नहीं हुई, गला खोलकर जयजयकार कर और पुकार! क्योंकि त्यागी हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से अधिक होंगे, यहोवा का यही वचन है। ([?/?] 113:9, [?/?/?] 4:27)

\* 53:2 [?/?/?/?/?/?] [?/?/?/?/?] ऐसी ऊसर भूमि जहाँ नमी नहीं वहाँ, जो कुछ उगता है वह छोटी और मुझाई हुई होती है।



तेरे पास दौड़ी आऊँगी, वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी, क्योंकि उसने तुझे शोभायमान किया है।

6 “जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, **22 22 22 2222 22**† तब तक उसे पुकारो; **(222222. 17:27)**

7 दुष्ट अपनी चाल चलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।

8 क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। **(222. 11:33)**

9 क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।

10 “जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ ऐसे ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, **(2 2222. 9:10)**

11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, **22 2222 222222 22 222 22 2222 222222**‡, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।

12 “क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुँचाए जाओगे; तुम्हारे आगे-आगे पहाड़ और पहाड़ियाँ गला खोलकर जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएँगे।

13 तब भटकटैयों के बदले सनोवर उगेंगे; और बिच्छू पेड़ों के बदले मेंहदी उगेंगी; और इससे यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा।”

## 56

**222222222222 22 222 222222**

1 यहोवा यह कहता है, “न्याय का पालन करो, और धर्म के काम करो; क्योंकि मैं शीघ्र तुम्हारा उद्धार करूँगा, और मेरा धर्मी होना प्रगट होगा।

2 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा ही करता, और वह आदमी जो इस पर स्थिर रहता है, जो विश्रामदिन

को पवित्र मानता और अपवित्र करने से बचा रहता है, और अपने हाथ को सब भाँति की बुराई करने से रोकता है।”

3 जो परदेशी यहोवा से मिल गए हैं, वे न कहें, “यहोवा हमें अपनी प्रजा से निश्चय अलग करेगा;” और खोजे भी न कहें, “**22 22 2222 222222 222**\*।”

4 “क्योंकि जो खोजे मेरे विश्रामदिन को मानते और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूँ उसी को अपनाते और मेरी वाचा का पालन करते हैं,” उनके विषय यहोवा यह कहता है,

5 “मैं अपने भवन और अपनी शहरपनाह के भीतर उनको ऐसा नाम दूँगा जो पुत्र-पुत्रियों से कहीं उत्तम होगा; मैं उनका नाम सदा बनाए रखूँगा और वह कभी न मिटाया जाएगा।

6 “परदेशी भी जो यहोवा के साथ इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उसकी सेवा टहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति रखें और उसके दास हो जाएँ, जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते और मेरी वाचा को पालते हैं,

7 उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूँगा; उनके होमबलि और मेलबलि मेरी वेदी पर ग्रहण किए जाएँगे; क्योंकि मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा। **(222. 1:11, 22. 11:17, 1 22. 2:5)**

8 प्रभु यहोवा, जो निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठे करनेवाला है, उसकी यह वाणी है कि जो इकट्ठे किए गए हैं उनके साथ मैं औरों को भी इकट्ठे करके मिला दूँगा।” **(222. 10:16)**

**22222222 22 222 2222222222 2222**

9 हे मैदान के सब जन्तुओं, हे वन के सब पशुओं, खाने के लिये आओ।

10 उसके पहरे अंधे हैं, वे सब के सब अज्ञानी हैं, वे सब के सब गूँगे कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते; वे स्वप्न देखनेवाले और लेटे रहकर सोते रहना चाहते हैं।

11 वे मरभूखे कुत्ते हैं जो कभी तृप्त नहीं होते। **22 222222 222 222222 222 22 2222**†; उन सभी ने अपने-अपने लाभ के लिये अपना-अपना मार्ग लिया है।

12 वे कहते हैं, “आओ, हम दाखमधु ले आएँ, आओ मदिरा पीकर छक जाएँ; कल का दिन भी तो आज ही के

† 55:6 **22 22 22 2222 22**: इसका महत्त्वपूर्ण अर्थ है कि परमेश्वर हर समय हमारे निकट ही रहता है और दर्शाता है कि कुछ समय अन्य समय की तुलना में ऐसे होते हैं जब उसको खोजना अधिक अनुकूल परिस्थिति में हो जाता है। ‡ 55:11 **22 2222 222222 22 222 22 2222 222222**:

मेरी इच्छा पूरी किए बिना वह लौटेगा नहीं। \* 56:3 **22 22 2222 222222 222**: सूखा वृक्ष ऊसर, अनुपयोगी और फलहीन दशा दर्शाता है। यहाँ कहने का अर्थ है कि अब से आगे वे धार्मिक एवं नागरिक अयोग्यताओं के अधीन नहीं होंगे जिसके अधीन वे अब तक रहे। † 56:11 **22 222222 222 222222 222 22 2222**:

जो मनुष्यों की आवश्यकताओं के प्रति उदासीन हैं और जो समझ नहीं पाते कि उनसे क्या अपेक्षा की गई है।

समान अत्यन्त सुहावना होगा।” (22:12-20, 1 22:22. 15:32)

## 57

22:22-22 22 22:22-22:22 22 22:22-22:22

1 धर्मी जन नाश होता है, और कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता; भक्त मनुष्य उठा लिए जाते हैं, परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन इसलिए उठा लिया गया कि आनेवाली आपत्ति से बच जाए,

2 वह शान्ति को पहुँचता है; जो सीधी चाल चलता है वह अपनी खाट पर विश्राम करता है।

3 परन्तु तुम, हे जादूगरनी के पुत्रों, हे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की सन्तान, यहाँ निकट आओ।

4 तुम किस पर हँसी करते हो? तुम किस पर मुँह खोलकर जीभ निकालते हो? क्या तुम पाखण्डी और झूठे के वंश नहीं हो,

5 तुम, जो सब हरे वृक्षों के तले देवताओं के कारण कामातुर होते और नालों में और चट्टानों ही दरारों के बीच बाल-बच्चों को वध करते हो?

6 नालों के चिकने पत्थर ही तेरा भाग और अंश ठहरे; तूने उनके लिये तपावन दिया और अन्नबलि चढ़ाया है। क्या मैं इन बातों से शान्त हो जाऊँ?

7 एक बड़े ऊँचे पहाड़ पर तूने अपना बिछौना बिछाया है, वहीं तू बलि चढ़ाने को चढ़ गई।

8 तूने अपनी निशानी अपने द्वार के किवाड़ और चौखट की आड़ ही में रखी; मुझे छोड़कर तू औरों को अपने आपको दिखाने के लिये चढ़ी, तूने अपनी खाट चौड़ी की और उनसे वाचा बाँध ली, तूने उनकी खाट को जहाँ देखा, पसन्द किया।

9 तू तेल लिए हुए 22:22\* के पास गई और बहुत सुगन्धित तेल अपने काम में लाई; अपने दूत तूने दूर तक भेजे और अधोलोक तक अपने को नीचा किया।

10 तू अपनी यात्रा की लम्बाई के कारण थक गई, तो भी तूने न कहा कि यह व्यर्थ है; तेरा बल कुछ अधिक हो गया, इसी कारण तू नहीं थकी।

11 तूने किसके डर से झूठ कहा, और किसका भय मानकर ऐसा किया कि मुझ को स्मरण नहीं रखा न मुझ पर ध्यान दिया? क्या मैं बहुत काल से चुप नहीं रहा? इस कारण तू मेरा भय नहीं मानती।

\* 57:9 22:22 अर्थात् मोलेक देवता। † 57:12 22 22 22 22:22-22:22 22 22:22-22:22 22 22:22-22:22: यह स्पष्टतः उपहास में कहा गया है। इसका अर्थ है, तुम ने मूर्तियों की पूजा की और परदेशियों की सहायता खोजी। ‡ 57:20 22:22 22 22:22: विचलित, सदा चलायमान, अशान्त समुद्र कभी भी शान्त नहीं रहता है, उसमें लहरें उठती रहती हैं। वह प्रायः ज्ञान उगलता है और उथल-पुथल में रहता है।

12 22 22 22:22 22:22-22:22 22 22:22-22:22 22 22:22-22:22, परन्तु उनसे तुझे कुछ लाभ न होगा।

13 जब तू दुहाई दे, तब जिन मूर्तियों को तूने जमा किया है वे ही तुझे छुड़ाएँ! वे तो सब की सब वायु से वरन् एक ही फूँक से उड़ जाएँगी। परन्तु जो मेरी शरण लेगा वह देश का अधिकारी होगा, और मेरे पवित्र पर्वत का भी अधिकारी होगा।

22:22 22 22:22-22:22

14 यह कहा जाएगा, “पाँति बाँध बाँधकर राजमार्ग बनाओ, मेरी प्रजा के मार्ग में से हर एक ठोकर दूर करो।”

15 क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यह कहता है, “मैं ऊँचे पर और पवित्रस्थान में निवास करता हूँ, और उसके संग भी रहता हूँ, जो खेदित और नम्र हैं, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूँ।

16 मैं सदा मुकद्दमा न लड़ता रहूँगा, न सर्वदा क्रोधित रहूँगा; क्योंकि आत्मा मेरे बनाए हुए हैं और जीव मेरे सामने मूर्च्छित हो जाते हैं।

17 उसके लोभ के पाप के कारण मैंने क्रोधित होकर उसको दुःख दिया था, और क्रोध के मारे उससे मुँह छिपाया था; परन्तु वह अपने मनमाने मार्ग में दूर भटकता चला गया था।

18 मैं उसकी चाल देखता आया हूँ, तो भी अब उसको चंगा करूँगा; मैं उसे ले चलूँगा और विशेष करके उसके शोक करनेवालों को शान्ति दूँगा।

19 मैं मुँह के फल का सृजनहार हूँ; यहोवा ने कहा है, जो दूर और जो निकट हैं, दोनों को पूरी शान्ति मिले; और मैं उसको चंगा करूँगा। (22:2. 2:13,17, 22:2. 2:39, 22:22. 13:15)

20 परन्तु दुष्ट तो 22:22 22 22:22-22:22 के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। (22:2. 1:13)

21 दुष्टों के लिये शान्ति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है।”

## 58

22:22 22 22:22-22:22 22:22-22:22

1 “गला खोलकर पुकार, कुछ न रख छोड़, नरसिंगे का सा ऊँचा शब्द कर; मेरी प्रजा को उसका अपराध अर्थात् याकूब के घराने को उसका पाप जता दे।

2 वे प्रतिदिन मेरे पास आते और मेरी गति जानने की इच्छा ऐसी रखते हैं मानो वे धर्मी लोग हैं जिन्होंने अपने परमेश्वर के नियमों को नहीं टाला; वे मुझसे धर्म के नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं।

3 वे कहते हैं, 'क्या कारण है कि हमने तो उपवास रखा, परन्तु तूने इसकी सुधि नहीं ली? हमने दुःख उठाया, परन्तु तूने कुछ ध्यान नहीं दिया?' सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो।

4 सुनो, तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूँसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो, उससे तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी।

5 जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ अर्थात् जिसमें मनुष्य स्वयं को दीन करे, क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या सिर को झाँक के समान झुकाना, अपने नीचे टाट बिछाना, और राख फैलाने ही को तुम उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो? (22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1)

6 'जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अंधेर सहनेवालों का जूआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और, सब जूओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना? (22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1)

7 क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बाँट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुआओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? (22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1)

8 तब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरी धार्मिकता तेरे आगे-आगे चलेगी, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। (22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1)

9 तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दुहाई देगा और वह कहेगा, 'मैं यहाँ हूँ।' यदि तू अंधेर करना और उँगली उठाना, और, दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे,

10 उदारता से भूखे की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अंधियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अंधकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।

11 यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और 22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1); और तू सीची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। (22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1)

12 तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे; तू पीढ़ी-पीढ़ी की पड़ी हुई नींव पर घर उठाएगा; तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारक और पथों का ठीक करनेवाला पड़ेगा।

13 "22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1) अर्थात् मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे, और विश्रामदिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझकर माने; यदि तू उसका सम्मान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले, अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही बातें न बोले,

14 तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के ऊँचे स्थानों पर चलने दूँगा; मैं तेरे मूलपुरुष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊँगा, क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है।"

## 59

22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1)

1 सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहरा हो गया है कि सुन न सके;

2 परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।

3 क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और तुम्हारी अंगुलियाँ अधर्म के कर्मों से अपवित्र हो गई हैं, तुम्हारे मुँह से तो झूठ और तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें निकलती हैं।

4 कोई धर्म के साथ नालिश नहीं करता, न कोई सच्चाई से मुकद्दमा लड़ता है; वे मिथ्या पर भरोसा रखते हैं और झूठी बातें बकते हैं; उसको मानो उत्पात का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं।

5 वे साँपिन के अण्डे सेते और मकड़ी के जाले बनाते हैं; जो कोई उनके अण्डे खाता वह मर जाता है, और जब कोई एक को फोड़ता तब उसमें से सपोला निकलता है।

\* 58:11 22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1) कहने का अर्थ है कि परमेश्वर उनके लिए ऐसा प्रावधान करेगा जैसे विपुल वर्षा और सुखदाई जल के झरने फूट निकले हैं। † 58:13 22:29, 29:17, 30:15, 35:6, 36:16, 37:36, 40:15, 42:1, 44:26, 48:1, 54:17, 55:12, 56:1, 58:6, 59:12, 60:1, 61:1, 62:1, 63:1, 64:1, 65:1, 66:1, 67:1, 68:1, 69:1, 70:1, 71:1, 72:1, 73:1, 74:1, 75:1, 76:1, 77:1, 78:1, 79:1, 80:1, 81:1, 82:1, 83:1, 84:1, 85:1, 86:1, 87:1, 88:1, 89:1, 90:1, 91:1, 92:1, 93:1, 94:1, 95:1, 96:1, 97:1, 98:1, 99:1, 100:1) स्पष्ट अर्थ यह है कि उन्हें विश्राम दिवस का गंभीरता से पालन करना था। उसका उल्लंघन नहीं करना था और न ही उसे अशुद्ध करना था।



5 तब तू इसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय थरथराएगा और आनन्द से भर जाएगा; क्योंकि समुद्र का सारा धन और जाति-जाति की धन-सम्पत्ति तुझे मिलेगी। (21:1-3, 2:26, 61:6)

6 तेरे देश में ऊँटों के झुण्ड और मिद्यान और एपा देशों की साँड़नियाँ इकट्ठी होंगी; शेबा के सब लोग आकर सोना और लोबान भेंट लाएँगे और यहोवा का गुणानुवाद आनन्द से सुनाएँगे। (72:10, 2:11)

7 केदार की सब भेड़-बकरियाँ इकट्ठी होकर तेरी हो जाएँगी, नबायोत के मेढ्रे तेरी सेवा टहल के काम में आएँगे; मेरी वेदी पर वे ग्रहण किए जाएँगे और मैं अपने शोभायमान भवन को और भी प्रतापी कर दूँगा। (21:13)

8 ये कौन हैं जो बादल के समान और अपने दरबों की ओर उड़ते हुए कबूतरों के समान चले आते हैं?

9 निश्चय द्वीप मेरी ही बाट देखेंगे, पहले तो तर्शीश के जहाज आएँगे, कि तेरे पुत्रों को सोने-चाँदी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात् इस्राएल के पवित्र के नाम के निमित्त दूर से पहुँचाए, क्योंकि उसने तुझे शोभायमान किया है।

10 ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~\*, और उनके राजा तेरी सेवा टहल करेंगे; क्योंकि मैंने क्रोध में आकर तुझे दुःख दिया था, परन्तु अब तुझ से प्रसन्न होकर तुझ पर दया की है।

11 तेरे फाटक सदैव खुले रहेंगे; दिन और रात वे बन्द न किए जाएँगे जिससे जाति-जाति की धन-सम्पत्ति और उनके राजा बन्दी होकर तेरे पास पहुँचाए जाएँ। (21:24,26)

12 क्योंकि जो जाति और राज्य के लोग तेरी सेवा न करें वे नष्ट हो जाएँगे; हाँ ऐसी जातियाँ पूरी रीति से सत्यानाश हो जाएँगी।

13 लबानोन का वैभव अर्थात् सनोवर और देवदार और चीड़ के पेड़ एक साथ तेरे पास आएँगे कि मेरे पवित्रस्थान को सुशोभित करें; और मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूँगा।

14 तेरे दुःख देनेवालों की सन्तान तेरे पास सिर झुकाए हुए आएँगी; और जिन्होंने तेरा तिरस्कार किया सब तेरे पाँवों पर गिरकर दण्डवत् करेंगे; वे तेरा नाम यहोवा का नगर, इस्राएल के पवित्र का सिय्योन रखेंगे।

\* 60:10 ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~: जो लोग विदेशी, झूठे धर्म के हैं, वे सच्चे धर्म के भक्त होकर सच्चे परमेश्वर की सेवा करेंगे। † 60:18 ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~... ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~: यह मसीह के युग में शान्ति और समृद्धि का अति सुन्दर वर्णन है। ‡ 60:22 ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~: उस समय महान विकास होगा जैसे कि एक छोटे से छोटा है बढ़कर एक हजार हो जाएगा। कहने का अर्थ है कि थोड़े से लोग बहुत अधिक हो जाएँगे।

15 तू जो त्यागी गई और घृणित ठहरी, यहाँ तक कि कोई तुझ में से होकर नहीं जाता था, इसके बदले मैं तुझे सदा के घमण्ड का और पीढ़ी-पीढ़ी के हर्ष का कारण ठहराऊँगा।

16 तू जाति-जाति का दूध पी लेगी, तू राजाओं की छातियाँ चूसेगी; और तू जान लेगी कि मैं यहोवा तेरा उद्धारकर्ता और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का सर्वशक्तिमान हूँ।

17 मैं पीतल के बदले सोना, लोहे के बदले चाँदी, लकड़ी के बदले पीतल और पत्थर के बदले लोहा लाऊँगा। मैं तेरे हाकिमों को मेल-मिलाप और तेरे चौधरियों को धार्मिकता ठहराऊँगा।

18 ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी।

19 फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चाँदनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा। (21:123, 22:5)

20 तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और तेरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएँगे।

21 तेरे लोग सब के सब धर्मी होंगे; वे सर्वदा देश के अधिकारी रहेंगे, वे मेरे लगाए हुए पौधे और मेरे हाथों का काम ठहरेंगे, जिससे मेरी महिमा प्रगट हो। (21:27, 2:10, 2:13)

22 ~~21:1-3, 2:26, 61:6~~ और सबसे दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा। मैं यहोवा हूँ; ठीक समय पर यह सब कुछ शीघ्रता से पूरा करूँगा।

## 61

~~21:1-3, 2:26, 61:6~~

1 प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ; कि बन्दियों के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ; (11:5, 2:11, 10:38, 2:3, 26:18, 4:18)



2 कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ; कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ। (2:18, 19, 2:25:4)

3 और सिय्योन के विलाप करनेवालों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बाँध दूँ, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊँ और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊँ; जिससे वे धार्मिकता के बाँज वृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएँ और जिससे उसकी महिमा प्रगट हो। (2:45:7, 30:11, 2:26:21)

4 तब वे बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे, पूर्वकाल से पड़े हुए खण्डहरों में वे फिर घर बनाएँगे; उजड़े हुए नगरों को जो पीढ़ी-पीढ़ी से उजड़े हुए हों वे फिर नये सिरे से बसाएँगे।

5 परदेशी आ खड़े होंगे और तुम्हारी भेड़-बकरियों को चराएँगे और विदेशी लोग तुम्हारे हल चलानेवाले और दाख की बारी के माली होंगे;

6 पर 2:22 2:22 2:22 2:22\*, वे तुम को हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे; और तुम जाति-जाति की धन-सम्पत्ति को खाओगे, उनके वैभव की वस्तुएँ पाकर तुम बड़ाई करोगे। (1 2:2:5, 9, 2:2:1:6, 2:2:2:5:10)

7 तुम्हारी नामधराई के बदले दूना भाग मिलेगा, अनादर के बदले तुम अपने भाग के कारण जयजयकार करोगे; तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होंगे; और सदा आनन्दित बने रहोगे।

8 क्योंकि, मैं यहोवा न्याय से प्रीति रखता हूँ, मैं अन्याय और डकैती से घृणा करता हूँ; इसलिए मैं उनको उनका प्रतिफल सच्चाई से दूँगा, और उनके साथ सदा की वाचा बाँधूँगा।

9 उनका वंश जाति-जाति में और उनकी सन्तान देश-देश के लोगों के बीच प्रसिद्ध होगी; जितने उनको देखेंगे, पहचान लेंगे कि यह वह वंश है जिसको परमेश्वर ने आशीष दी है।

10 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहनाए, और धार्मिकता की चदर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हन अपने

गहनों से अपना सिंगार करती है। (2:22:3:18, 2:22:5:11, 2:22:19:7, 8)

11 क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के सामने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा।

## 62

2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22

1 सिय्योन के निमित्त मैं चुप न रहूँगा, और यरूशलेम के निमित्त मैं चैन न लूँगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता प्रकाश के समान और उसका उद्धार जलती हुई मशाल के समान दिखाई न दे।

2 तब जाति-जाति के लोग तेरी धार्मिकता और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे, और 2:22 2:22 2:22\* जो यहोवा के मुख से निकलेगा। (2:22:2:17, 2:22:3:12)

3 तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी।

4 तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा और 2:22 2:22 2:22\* कहलाएगी; क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागिन होगी।

5 क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरुष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा।

6 हे यरूशलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर पहरा बैठाए हैं; वे दिन-रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालों, चुप न रहो, (2:22:3:17-21, 2:22:13:17)

7 और जब तक वह यरूशलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो।

8 यहोवा ने अपने दाहिने हाथ की और अपनी बलवन्त भुजा की शपथ खाई है: निश्चय मैं भविष्य में तेरा अन्न अब फिर तेरे शत्रुओं को खाने के लिये न दूँगा, और परदेशियों के पुत्र तेरा नया दाखमधु जिसके लिये तूने परिश्रम किया है, नहीं पीने पाएँगे;

\* 61:6 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22: संसार तुम्हें श्रद्धा अर्पित करेगा और तुम सब देशों की उपज का आनन्द लोगे और इस कारण तुम केवल यहोवा की सेवा में समर्पित रहोगे। † 61:10 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22: इसका अर्थ है कि यहोवा की विश्वासयोग्यता और सिद्धता के कारण आनन्द बड़ेगा, जो उनके लोगों के छुटकारे के द्वारा प्रगट होगा। \* 62:2 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22: अर्थात् उनकी दशा ऐसी नहीं होगी जिसमें उनका नाम अपमान, गरीबी और अत्याचार का द्योतक हो। † 62:4 2:22 2:22 2:22 2:22: यह उपमा एक ऐसी स्त्री की है जो त्यागी हुई है और उसका उचित नाम परित्यक्त है। परमेश्वर कहता है कि उसका नाम अब परित्यक्त स्त्री नहीं होगा वरन् विवाहित होगा।



17 हे यहोवा, तू क्यों हमको अपने मार्गों से भटका देता, और हमारे मन ऐसे कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते? अपने दास, अपने निज भाग के गोत्रों के निमित्त लौट आ।

18 तेरी पवित्र प्रजा तो थोड़े ही समय तक तेरे पवित्रस्थान की अधिकारी रही; हमारे द्रोहियों ने उसे लताड़ दिया है। (21:24, 22:11:2)

19 हम लोग तो ऐसे हो गए हैं, मानो तूने हम पर कभी प्रभुता नहीं की, और उनके समान जो कभी तेरे न कहलाए।

## 64

1 भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे सामने काँप उठे।

2 जैसे आग झाड़-झंखाड़ को जला देती या जल को उबालती है, उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति-जाति के लोग तेरे प्रताप से काँप उठें।

3 जब तूने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से काँप उठे।

4 क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे। (21:31:19, 1 22:2:9)

5 तू तो उन्हीं से मिलता है जो धर्म के काम हर्ष के साथ करते, और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं। देख, तू क्रोधित हुआ था, क्योंकि हमने पाप किया; हमारी यह दशा तो बहुत समय से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है?

6 22 22 22 22 22 222222 222222 22 22 2222\*, और हमारे धार्मिकता के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते के समान मुझाँ जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु के समान उड़ा दिया है।

7 कोई भी तुझ से प्रार्थना नहीं करता, न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये चौकसी करता है कि तुझ से लिपटा रहे; क्योंकि हमारे अधर्म के कामों के कारण तूने हम से अपना मुँह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराइयों के वश में छोड़ दिया है।

\* 64:6 22 22 22 22 22 222222 222222 22 22 2222: यहाँ भावार्थ है कि जैसा लैव्यव्यवस्था में अशुद्ध होना कहा गया है वैसे अशुद्ध एवं दूषित। कहने का अर्थ है कि वे स्वयं को पूर्णतः अशुद्ध एवं पतित मानते हैं। † 64:8 22 22 22 22 2222 2222 22 2222 2222: जैसे मिट्टी का पात्र कुम्हार के हाथ का काम होता है। हम तेरे द्वारा बनाये गये हैं और तुम ही पर निर्भर हैं कि तू हमें जैसा चाहे वैसा बनाये। \* 65:4 2222 22 2222 2222: यहूदियों के लिए अशुद्ध भोजन। † 65:6 2222 2222 2 22222222: न्यायोचित एवं उचित बात कहने से मुझे कोई नहीं दूर रख सकता है।

8 तो भी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी हैं, और तू हमारा कुम्हार है; 22 22 22 22 222222 2222 22 2222 2222†। (22: 100:3, 2222: 3:26)

9 इसलिए हे यहोवा, अत्यन्त क्रोधित न हो, और अनन्तकाल तक हमारे अधर्म को स्मरण न रख। विचार करके देख, हम तेरी विनती करते हैं, हम सब तेरी प्रजा हैं।

10 देख, तेरे पवित्र नगर जंगल हो गए, सिय्योन सुनसान हो गया है, यरूशलेम उजड़ गया है।

11 हमारा पवित्र और शोभायमान मन्दिर, जिसमें हमारे पूर्वज तेरी स्तुति करते थे, आग से जलाया गया, और हमारी मनभावनी वस्तुएँ सब नष्ट हो गई हैं।

12 हे यहोवा, क्या इन बातों के होते हुए भी तू अपने को रोके रहेगा? क्या तू हम लोगों को इस अत्यन्त दुर्दशा में रहने देगा?

## 65

2222 2222 2222222222 22 22222 2222 2222222222

1 जो मुझे को पूछते भी न थे वे मेरे खोजी हैं; जो मुझे ढूँढते भी न थे उन्होंने मुझे पा लिया, और जो जाति मेरी नहीं कहलाई थी, उससे भी मैं कहता हूँ, “देख, मैं उपस्थित हूँ।”

2 मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा, जो अपनी युक्तियों के अनुसार बुरे मार्गों में चलते हैं। (22:22: 10:20,21)

3 ऐसे लोग, जो मेरे सामने ही बारियों में बलि चढ़ा-चढ़ाकर और ईंटों पर धूप जला-जलाकर, मुझे लगातार क्रोध दिलाते हैं।

4 ये कब्र के बीच बैठते और छिपे हुए स्थानों में रात बिताते; जो 222222 22 222222 222222\*, और घृणित वस्तुओं का रस अपने बर्तनों में रखते;

5 जो कहते हैं, “हट जा, मेरे निकट मत आ, क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूँ।” ये मेरी नाक में धुएँ व उस आग के समान हैं जो दिन भर जलती रहती है। विद्रोहियों को दण्ड

6 देखो, यह बात मेरे सामने लिखी हुई है: “2222 2222 2 2222222222†, मैं निश्चय बदला दूँगा वरन् तुम्हारे और तुम्हारे पुरखाओं के भी अधर्म के कामों का बदला तुम्हारी गोद में भर दूँगा।

7 क्योंकि उन्होंने पहाड़ों पर धूप जलाया और पहाड़ियों पर मेरी निन्दा की है, इसलिए मैं यहोवा कहता हूँ, कि, उनके पिछले कामों के बदले को मैं इनकी गोद में तौलकर दूँगा।”

8 यहोवा यह कहता है: “जिस भाँति दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे नाश मत कर, क्योंकि उसमें आशीष है, उसी भाँति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा करूँगा कि सभी को नाश न करूँगा।

9 मैं याकूब में से एक वंश, और यहूदा में से अपने पर्वतों का एक वारिस उत्पन्न करूँगा; मेरे चुने हुए उसके वारिस होंगे, और मेरे दास वहाँ निवास करेंगे।

10 मेरी प्रजा जो मुझे ढूँढती है, उसकी भेड़-बकरियाँ तो शारोन में चरेंगी, और उसके गाय-बैल आकोर नामक तराई में विश्राम करेंगे।

11 परन्तु तुम जो यहोवा को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाग्य देवता के लिये मेज पर भोजन की वस्तुएँ सजाते और भावी देवी के लिये मसाला मिला हुआ दाखमधु भर देते हो;

12 मैं तुम्हें गिन-गिनकर तलवार का कौर बनाऊँगा, और तुम सब घात होने के लिये झुकोगे; क्योंकि, जब मैंने तुम्हें बुलाया तुम ने उत्तर न दिया, जब मैं बोला, तब तुम ने मेरी न सुनी; वरन् जो मुझे बुरा लगता है वही तुम ने नित किया, और जिससे मैं अप्रसन्न होता हूँ, उसी को तुम ने अपनाया।”

13 इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: “देखो, मेरे दास तो खाएँगे, पर तुम भूखे रहोगे; मेरे दास पीएँगे, पर तुम प्यासे रहोगे; मेरे दास आनन्द करेंगे, पर तुम लज्जित होगे;

14 देखो, मेरे दास हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे, परन्तु तुम शोक से चिल्लाओगे और **21:17, 21:22** हाय! हाय!, करोगे।

15 मेरे चुने हुए लोग तुम्हारी उपमा दे-देकर श्राप देंगे, और प्रभु यहोवा तुझको नाश करेगा; परन्तु अपने दासों का दूसरा नाम रखेगा। (**21:17, 21:22, 21:27, 21:32**)

16 तब सारे देश में जो कोई अपने को धन्य कहेगा वह सच्चे परमेश्वर का नाम लेकर अपने को धन्य कहेगा, और जो कोई देश में शपथ खाए वह सच्चे परमेश्वर के नाम से शपथ खाएगा; क्योंकि पिछला कष्ट दूर हो गया और वह मेरी आँखों से छिप गया है।

‡ **65:14** **21:17, 21:22**: अर्थात् आपदाओं से दबकर तुम टूट जाओगे और हताश हो जाओगे। § **65:20** **21:17, 21:22, 21:27, 21:32**: वे दीर्घायु की आशीषों का आनन्द लेंगे और ऐसी दीर्घायु नहीं जो दुर्बल एवं हताशा से भरी हो वरन् शक्ति एवं आनन्द से भरपूर।

**21:17, 21:22, 21:27, 21:32**

17 “क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ; और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच-विचार में भी न आएँगी। (**21:17, 3:13, 21:27, 21:32**)

18 इसलिए जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊँगा।

19 मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित होऊँगा; उसमें फिर रोने या चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा। (**21:27, 21:4**)

20 उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा **21:27, 21:28, 21:29, 21:30, 21:31, 21:32, 21:33, 21:34, 21:35**; क्योंकि जो लडकपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा।

21 वे घर बनाकर उनमें बसेंगे; वे दाख की बारियाँ लगाकर उनका फल खाएँगे।

22 ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएँ और दूसरा बसे; या वे लगाएँ, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएँगे।

23 उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल-बच्चे उनसे अलग न होंगे। (**21:27, 115:14, 15**)

24 उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूँगा, और उनके माँगते ही मैं उनकी सुन लूँगा।

25 भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल के समान भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है।”

## 66

**21:27, 21:28, 21:29, 21:30, 21:31, 21:32, 21:33, 21:34, 21:35**

1 यहोवा यह कहता है: “आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है; तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे, और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा? (**21:27, 21:28, 7:48-50, 21:27, 5:34, 35**)

2 यहोवा की यह वाणी है, ये सब वस्तुएँ मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, इसलिए ये सब मेरी ही हैं। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो **22:22 22 22:22:22 22\*** का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो। **(22:34:18, 22:22:22 5:3)**

3 “बैल का बलि करनेवाला मनुष्य के मार डालनेवाले के समान है; जो भेड़ का चढ़ानेवाला है वह उसके समान है जो कुत्ते का गला काटता है; जो अन्नबलि चढ़ाता है वह मानो सूअर का लहू चढ़ानेवाले के समान है; और जो लोबान जलाता है, वह उसके समान है जो मूरत को धन्य कहता है। इन सभी ने अपना-अपना मार्ग चुन लिया है, और घिनौनी वस्तुओं से उनके मन प्रसन्न होते हैं।

4 इसलिए मैं भी उनके लिये दुःख की बातें निकालूँगा, और जिन बातों से वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाऊँगा; क्योंकि जब मैंने उन्हें बुलाया, तब कोई न बोला, और जब मैंने उनसे बातें की, तब उन्होंने मेरी न सुनी; परन्तु जो मेरी दृष्टि में बुरा था वही वे करते रहे, और जिससे मैं अप्रसन्न होता था उसी को उन्होंने अपनाया।”

5 तुम जो यहोवा का वचन सुनकर थरथराते हो यहोवा का यह वचन सुनो: “तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते और मेरे नाम के निमित्त तुम को अलग कर देते हैं उन्हीं ने कहा है, ‘यहोवा की महिमा तो बढ़े, जिससे हम तुम्हारा आनन्द देखने पाएँ;’ परन्तु उन्हीं को लज्जित होना पड़ेगा। **(2 22:22:22 1:12)**

### 22:22 22 22 22:22

6 “सुनो, नगर से कोलाहल की धूम! मन्दिर से एक शब्द, सुनाई देता है! वह यहोवा का शब्द है, वह अपने शत्रुओं को उनकी करनी का फल दे रहा है! **(22:22:22 16:1,17)**

7 “उसकी प्रसव-पीड़ा उठने से पहले ही उसने जन्मा दिया; उसको पीड़ाएँ होने से पहले ही उससे बेटा जन्मा। **(22:22:22 12:2,5)**

8 ऐसी बात किसने कभी सुनी? किसने कभी ऐसी बातें देखी? क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है? क्या एक जाति क्षण मात्र में ही उत्पन्न हो सकती है? क्योंकि सिय्योन की प्रसव-पीड़ा उठी ही थी कि उससे सन्तान उत्पन्न हो गए।

9 यहोवा कहता है, क्या मैं उसे जन्माने के समय तक पहुँचाकर न जन्माऊँ? तेरा परमेश्वर कहता है, मैं जो गर्भ देता हूँ क्या मैं कोख बन्द करूँ?

10 “हे यरूशलेम से सब प्रेम रखनेवालों, उसके साथ आनन्द करो और उसके कारण मगन हो; हे उसके विषय सब विलाप करनेवालों उसके साथ हर्षित हो!

11 जिससे तुम उसके शान्तिरूपी स्तन से दूध पी पीकर तृप्त हो; और दूध पीकर उसकी महिमा की बहुतायत से अत्यन्त सुखी हो।”

12 क्योंकि यहोवा यह कहता है, “देखो, मैं उसकी ओर शान्ति को नदी के समान, और जाति-जाति के धन को नदी की बाढ़ के समान बहा दूँगा; और तुम उससे पीओगे, तुम उसकी गोद में उठाए जाओगे और उसके घुटनों पर कुदाए जाओगे।

13 जिस प्रकार माता अपने पुत्र को शान्ति देती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शान्ति दूँगा; तुम को यरूशलेम ही में शान्ति मिलेगी।

14 तुम यह देखोगे और प्रफुल्लित होंगे; तुम्हारी हड्डियाँ घास के समान हरी-भरी होंगी; और यहोवा का हाथ उसके दासों के लिये प्रगट होगा, और उसके शत्रुओं के ऊपर उसका क्रोध भड़केगा। **(22:22 16:22)**

15 “क्योंकि देखो, **22:22:22 22 22 22:22 22:22**, और उसके रथ बवण्डर के समान होंगे, जिससे वह अपने क्रोध को जलजलाहट के साथ और अपनी चितौनी को भस्म करनेवाली आग की लपट से प्रगट करे। **(2 22:22:22 1:8)**

16 क्योंकि यहोवा सब प्राणियों का न्याय आग से और अपनी तलवार से करेगा; और यहोवा के मारे हुए बहुत होंगे।

17 “जो लोग अपने को इसलिए पवित्र और शुद्ध करते हैं कि बारियों में जाएँ और किसी के पीछे खड़े होकर सूअर या चूहे का माँस और अन्य घृणित वस्तुएँ खाते हैं, वे एक ही संग नाश हो जाएँगे, यहोवा की यही वाणी है।

18 “क्योंकि मैं उनके काम और उनकी कल्पनाएँ, दोनों अच्छी रीति से जानता हूँ; और वह समय आता है जब मैं सारी जातियों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों को इकट्ठा करूँगा; और वे आकर मेरी महिमा देखेंगे।

19 मैं उनमें एक चिन्ह प्रगट करूँगा; और उनके बचे हुए को मैं उन जातियों के पास भेजूँगा जिन्होंने न तो मेरा समाचार सुना है और न मेरी महिमा देखी है, अर्थात् तर्शाशियों और धनुर्धारी पूलियों और लूदियों के पास, और तुबलियों और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के पास भी भेज दूँगा और वे जाति-जाति में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे।

\* **66:2 22:22 22 22:22:22 22:** ऐसा मन जो टूटा हुआ हो, कुचला हुआ हो या पाप से अत्यधिक प्रभावित रहा हो। † **66:15 22:22:22 22 22 22:22 22:22:** आग परमेश्वर द्वारा न्याय करने और दण्ड देने आने का प्रतीक है।

20 जैसे इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध पात्र में रखकर यहोवा के भवन में ले आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे सब भाइयों को भाइयों को जातियों से घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और साँड़नियों पर चढ़ा-चढ़ाकर मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम पर यहोवा की भेंट के लिये ले आएँगे, यहोवा का यही वचन है।

21 और उनमें से मैं कुछ लोगों को याजक और लेवीय पद के लिये भी चुन लूँगा।

☞☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

22 “क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूँ, ☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा; यहोवा की यही वाणी है। (2 ☞☞. 3:13, ☞☞☞☞☞☞. 21:1)

23 “फिर ऐसा होगा कि एक नये चाँद से दूसरे नये चाँद के दिन तक और एक विश्रामदिन से दूसरे विश्रामदिन तक समस्त प्राणी मेरे सामने दण्डवत् करने को आया करेंगे; यहोवा का यही वचन है।

24 “तब वे निकलकर उन लोगों के शवों पर जिन्होंने मुझसे बलवा किया दृष्टि डालेंगे; क्योंकि उनमें पड़े हुए कीड़े कभी न मरेंगे, उनकी आग कभी न बुझेगी, और सारे मनुष्यों को उनसे अत्यन्त घृणा होगी।” (☞☞. 9:48)

‡ 66:22 ☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: वे समाप्त न होंगे, न ही उनके स्थान पर नया आकाश और नई पृथ्वी आएँगे। अर्थात् जिन बातों की चर्चा की गई है, वे स्थाई एवं सदाकालीन होंगी।

## यिर्मयाह

११११

यिर्मयाह और उसका लिपिक बारूक। यिर्मयाह जो पुरोहित एवं भविष्यद्वक्ता दोनों था, वह हिल्कियाह नामक पुरोहित का पुत्र था। (यह हिल्कियाह 2 राजा. 22:8 का प्रधान पुरोहित नहीं है) वह एक छोटे गाँव अनातोत का रहनेवाला था। सेवा में उसका एक सहायक था जिसका नाम बारूक था। बारूक विधिशास्त्री था। यिर्मयाह उसे परमेश्वर से प्राप्त वचन लिखवा देता था। यिर्मयाह के सन्देशों के संग्रह का प्रभारी वही था। (यिर्म. 36:4,32; 45:1) यिर्मयाह सामान्यतः “रोता हुआ भविष्यद्वक्ता” कहलाता था। (देखें यिर्म. 9:1; 13:17; 14:17) उसका जीवन संघर्षों से भरा था क्योंकि वह परमेश्वर के दण्ड की भविष्यद्वक्ता करता था और कहता था कि बाबेल की सेना उन्हें पराजित करेगी।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 626 - 570 ई. पू.

इस पुस्तक का पूर्ण होना बाबेल की बन्धुआई में कभी किसी समय का है। कुछ विचारकों के अनुसार इस पुस्तक का संपादन और भी बाद तक होता रहा है।

१११११११

यहूदा और इस्राएल की प्रजा तथा भावी बाइबल पाठक।

१११११११११

यिर्मयाह की पुस्तक उस नई वाचा की झलक प्रदान करती है जो परमेश्वर का मसीह पृथ्वी पर आने के बाद उसके लोगों के साथ बाँधेगा। यह नई वाचा परमेश्वर की प्रजा के पुनःस्थापन के लिए होगी। इस वाचा में परमेश्वर अपनी आज्ञाओं को मनुष्यों के हृदयों पर लिखेगा, पत्थर की पट्टियों पर नहीं। यिर्मयाह की पुस्तक में यहूदिया के लिए अन्तिम भविष्यद्वक्तागणियाँ हैं कि यदि इस्राएलियों ने विधर्म से मन नहीं फिराया तो उनका विनाश निकट है। यिर्मयाह इस्राएलियों को परमेश्वर के पास आ जाने के लिए पुकारता है। इसके साथ ही वह उनकी मूर्ति-पूजा और अनैतिकता के कारण अवश्यंभावी विनाश को भी देख रहा है।

१११ ११११

दण्ड की आज्ञा

रूपरेखा

1. परमेश्वर द्वारा यिर्मयाह का बुलाया जाना — 1:1-19
2. यहूदा को चेतावनी — 2:1-35:19
3. यिर्मयाह के कष्ट — 36:1-38:28
4. यरूशलेम का पतन एवं उसके परिणाम — 39:1-45:5
5. अन्यजातियों के लिए भविष्यद्वक्तागणियाँ — 46:1-51:64
6. ऐतिहासिक परिशिष्ट — 52:1-34

११११११

1 हिल्कियाह का पुत्र यिर्मयाह जो बिन्यामीन क्षेत्र के अनातोत में रहनेवाले याजकों में से था, उसी के ये वचन हैं।

2 यहोवा का वचन उसके पास आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशियाह के राज्य के दिनों में उसके राज्य के तेरहवें वर्ष में पहुँचा।

3 इसके बाद योशियाह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के दिनों में, और योशियाह के पुत्र यहूदा के राजा सिदकियाह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के अन्त तक भी प्रगट होता रहा जबकि उसी वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम के निवासी बंधुआई में न चले गए।

१११११११११ ११ १११११११

- 4 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,
- 5 “गर्भ में रचने से पहले ही मैंने तुझे परचित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैंने तुझे अभिषेक किया; मैंने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया।” (११११. 1:15)

6 तब मैंने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा! देख, ११११ १११ ११११११ ११ १११११ ११११११”, क्योंकि मैं कम उम्र का हूँ।”

7 परन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, “मत कह कि मैं कम उम्र का हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँ वहाँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ वही तू कहेगा।

8 तू उनसे भयभीत न होना, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिये मैं तेरे साथ हूँ, यहोवा की यही वाणी है।” (११११११११. 26:17, ११११११११. 18:9,10)

9 तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और यहोवा ने मुझसे कहा, “देख, मैंने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिये हैं।

११ ११११११

\* 1:6 ११११ ११ ११११११ ११ १११११ ११११११: मुझ में सफलता के लिए बोलने का कौशल्य नहीं है। इस्राएल के भविष्यद्वक्ता धार्मिक बातों में देश के प्रचारक थे और राजनीति में वे भाषण देनेवाले।

10 “सुन, मैंने आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिये, नाश करने और काट डालने के लिये, उन्हें बनाने और रोपने के लिये।” (११:१०-११)

११:१०-११ ११:१०-११ ११:१०-११ ११:१०-११

11 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, “हे यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई पड़ता है?” मैंने कहा, “मुझे बादाम की एक टहनी दिखाई देती है।”

12 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “तुझे ठीक दिखाई पड़ता है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये जागृत हूँ।”

13 फिर यहोवा का वचन दूसरी बार मेरे पास पहुँचा, और उसने पूछा, “तुझे क्या दिखाई देता है?” मैंने कहा, “मुझे उबलता हुआ एक हण्डा दिखाई देता है जिसका मुँह उत्तर दिशा की ओर से है।”

14 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “इस देश के सब रहनेवालों पर उत्तर दिशा से विपत्ति आ पड़ेगी।

15 यहोवा की यह वाणी है, मैं उत्तर दिशा के राज्यों और कुलों को बुलाऊँगा; और वे आकर यरूशलेम के फाटकों में और उसके चारों ओर की शहरपनाह, और यहूदा के और सब नगरों के सामने अपना-अपना सिंहासन लगाएँगे।

16 उनकी सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड की आज्ञा दूँगा; क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग कर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् किया है।

17 इसलिए तू अपनी कमर कसकर उठ; और जो कुछ कहने की मैं तुझे आज्ञा दूँ वही उनसे कह। तू उनके मुख को देखकर न घबराना, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके सामने घबरा दूँ। (११:१२-१५)

18 क्योंकि सुन, मैंने आज तुझे इस सारे देश और यहूदा के राजाओं, हाकिमों, और याजकों और साधारण लोगों के विरुद्ध गढ़वाला नगर, और लोहे का खम्भा, और पीतल की शहरपनाह बनाया है।

19 वे तुझ से लड़ेंगे तो सही, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि बचाने के लिये मैं तेरे साथ हूँ, यहोवा की यही वाणी है।”

## 2

१२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

\* 2:13 १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११: अन्यजातियाँ केवल एक ही पाप के दोषी थे अर्थात् केवल मूर्तिपूजा की परन्तु वाचा के लोगों ने दो पाप किए थे, एक उन्होंने परमेश्वर का त्याग किया और दूसरा मूर्तिपूजा।

2 “जा और यरूशलेम में पुकारकर यह सुना दे, यहोवा यह कहता है, तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है कि तू कैसे जंगल में मेरे पीछे-पीछे चली जहाँ भूमि जोती-बोई न गई थी।

3 इस्राएल, यहोवा के लिये पवित्र और उसकी पहली उपज थी। उसे खानेवाले सब दोषी ठहरेंगे और विपत्ति में पड़ेंगे,” यहोवा की यही वाणी है।

4 हे याकूब के घराने, हे इस्राएल के घराने के कुलों के लोगों, यहोवा का वचन सुनो!

5 यहोवा यह कहता है, “तुम्हारे पुरखाओं ने मुझ में कौन सी ऐसी कुटिलता पाई कि मुझसे दूर हट गए और निकम्मी मूर्तियों के पीछे होकर स्वयं निकम्मे हो गए?

6 उन्होंने इतना भी न कहा, ‘जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया जो हमें जंगल में से और रेत और गड्डों से भरे हुए निर्जल और घोर अंधकार के देश से जिसमें होकर कोई नहीं चलता, और जिसमें कोई मनुष्य नहीं रहता, हमें निकाल ले आया वह यहोवा कहाँ है?’

7 और मैं तुम को इस उपजाऊ देश में ले आया कि उसका फल और उत्तम उपज खाओ; परन्तु मेरे इस देश में आकर तुम ने इसे अशुद्ध किया, और मेरे इस निज भाग को घृणित कर दिया है।

8 याजकों ने भी नहीं पूछा, ‘यहोवा कहाँ है?’ जो व्यवस्था सिखाते थे वे भी मुझ को न जानते थे; चरवाहों ने भी मुझसे बलवा किया; भविष्यद्वक्ताओं ने बाल देवता के नाम से भविष्यद्वाणी की और व्यर्थ बातों के पीछे चले।

१२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११

9 “इस कारण यहोवा यह कहता है, मैं फिर तुम से विवाद, और तुम्हारे बेटे और पोतों से भी प्रश्न करूँगा।

10 कित्तियों के द्वीपों में पार जाकर देखो, या केदार में दूत भेजकर भली भाँति विचार करो और देखो; देखो, कि ऐसा काम कहीं और भी हुआ है? क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को बदल दिया जो परमेश्वर भी नहीं हैं?

11 परन्तु मेरी प्रजा ने अपनी महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल दिया है। (१२:१०-१३)

12 हे आकाश चकित हो, बहुत ही थरथरा और सुनसान हो जा, यहोवा की यह वाणी है।

13 क्योंकि १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११ १२:१०-११\*: उन्होंने मुझ जीवन के जल के सोते को त्याग दिया है, और, उन्होंने हौद बना लिए, वरन् ऐसे हौद जो



टूट गए हैं, और जिनमें जल नहीं रह सकता। (17:13)

14 “क्या वह घर में

जन्म से ही दास है? फिर वह क्यों शिकार बना?

15 जवान सिंहों ने उसके विरुद्ध गरजकर नाद किया। उन्होंने उसके देश को उजाड़ दिया; उन्होंने उसके नगरों को ऐसा उजाड़ दिया कि उनमें कोई बसनेवाला ही न रहा।

16 नोप और तहपन्हेस के निवासी भी तेरे देश की उपज चट कर गए हैं।

17 क्या यह तेरी ही करनी का फल नहीं, जो तूने अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया जो तुझे मार्ग में लिए चला?

18 अब तुझे मिस्र के मार्ग से क्या लाभ है कि तू सीहोर का जल पीए? अथवा अशशूर के मार्ग से भी तुझे क्या लाभ कि तू फरात का जल पीए?

19 तेरी बुराई ही तेरी ताड़ना करेगी, और तेरा भटक जाना तुझे उलाहना देगा। जान ले और देख कि अपने परमेश्वर यहोवा को त्यागना, यह बुरी और कड़वी बात है; तुझे मेरा भय ही नहीं रहा, प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

20 “क्योंकि बहुत समय पहले मैंने तेरा जूआ तोड़ डाला और तेरे बन्धन खोल दिए; परन्तु तूने कहा, ‘मैं सेवा न करूँगी।’ और सब ऊँचे-ऊँचे टीलों पर और सब हरे पेड़ों के नीचे तू व्यभिचारिणी का सा काम करती रही।

21 मैंने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और उत्तम बीज करके लगाया था, फिर तू क्यों मेरे लिये जंगली दाखलता बन गई?

22 चाहे तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन भी प्रयोग करे, तो भी तेरे अधर्म का धब्बा मेरे सामने बना रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

23 तू कैसे कह सकती है कि ‘मैं अशुद्ध नहीं, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं चली?’ तराई में की अपनी चाल देख और जान ले कि तूने क्या किया है? तू वेग से चलने वाली और इधर-उधर फिरनेवाली ऊँटनी है,

24 जंगल में पली हुई जंगली गदही जो कामातुर होकर वायु सूँघती फिरती है तब कौन उसे वश में कर सकता है? जितने उसको ढूँढते हैं वे व्यर्थ परिश्रम न करें; क्योंकि वे उसे उसकी ऋतु में पाएँगे।

25 अपने पाँव नंगे और गला सुखाए न रह। परन्तु तूने कहा, ‘नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि मेरा प्रेम दूसरों से हो गया है और मैं उनके पीछे चलती रहूँगी।’

26 “जैसे चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है, वैसे ही इस्राएल का घराना, राजाओं, हाकिमों, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं समेत लज्जित होगा।

27 वे काठ से कहते हैं, ‘तू मेरा पिता है,’ और पत्थर से कहते हैं, ‘तूने मुझे जन्म दिया है।’ इस प्रकार उन्होंने मेरी ओर मुँह नहीं पीठ ही फेरी है; परन्तु विपत्ति के समय वे कहते हैं, ‘उठकर हमें बचा!’

28 परन्तु जो देवता तूने अपने लिए बनाए हैं, वे कहाँ रहे? यदि वे तेरी विपत्ति के समय तुझे बचा सकते हैं तो अभी उठें; क्योंकि हे यहूदा, तेरे नगरों के बराबर तेरे देवता भी बहुत हैं।

29 “तुम क्यों मुझसे वाद-विवाद करते हो? तुम सभी

ने मुझसे बलवा किया है, यहोवा की यही वाणी है।

30 मैंने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों की ताड़ना की, उन्होंने कुछ भी नहीं माना; तुम ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को अपनी ही तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा सिंह फाड़ता है।

31 हे लोगों, यहोवा के वचन पर ध्यान दो! क्या मैं इस्राएल के लिये जंगल या घोर अधिकार का देश बना? तब मेरी प्रजा क्यों कहती है कि ‘हम तो आजाद हो गए हैं इसलिए तेरे पास फिर न आएँगे?’

32 क्या कुमारी अपने श्रृंगार या दुल्हन अपनी सजावट भूल सकती है? तो भी मेरी प्रजा ने युगों से मुझे भुला दिया है।

33 “प्रेम पाने के लिये तू कैसी सुन्दर चाल चलती है! बुरी स्त्रियों को भी तूने अपनी सी चाल सिखाई है।

34 तेरे घाघरे में निर्दोष और दरिद्र लोगों के लहू का चिन्ह पाया जाता है; तूने उन्हें सेंध लगाते नहीं पकड़ा। परन्तु इन सब के होते हुए भी

35 तू कहती है, ‘मैं निर्दोष हूँ; निश्चय उसका क्रोध मुझ पर से हट जाएगा।’ देख, तू जो कहती है कि ‘मैंने पाप नहीं किया,’ इसलिए मैं तेरा न्याय करूँगा।

36 तू क्यों नया मार्ग पकड़ने के लिये इतनी डाँवाडोल फिरती है? जैसे अशशूरियों से तू लज्जित हुई वैसे ही मिस्रियों से भी होगी।

37 वहाँ से भी तू सिर पर हाथ रखे हुए ऐसे ही चली आएगी, क्योंकि जिन पर तूने भरोसा रखा है उनको

† 2:14 17:13: यहोवा के सेवक होना इस्राएल की महिमा थी और परिवार में जन्मे दास स्वामी-भक्ति में खरीदे गए दासों से अधिक महत्त्वपूर्ण थे।

यहोवा ने निकम्मा ठहराया है, और उनके कारण तू सफल न होगी।

### 3

११११११११ ११११११ ११ १११११११

1 “वे कहते हैं, ‘यदि कोई अपनी पत्नी को त्याग दे, और वह उसके पास से जाकर दूसरे पुरुष की हो जाए, तो वह पहला क्या उसके पास फिर जाएगा?’ क्या वह देश अति अशुद्ध न हो जाएगा? यहोवा की यह वाणी है कि तूने बहुत से प्रेमियों के साथ व्यभिचार किया है,

११११११ ११ ११ १११११ ११ ११११११११\*?

2 मुण्डे टीलों की ओर आँखें उठाकर देख! ऐसा कौन सा स्थान है जहाँ तूने कुकर्म न किया हो? मार्गों में तू ऐसी बैठी जैसे एक अरबी जंगल में। तूने देश को अपने व्यभिचार और दुष्टता से अशुद्ध कर दिया है।

3 इसी कारण वर्षा रोक दी गई और पिछली बरसात नहीं होती; तो भी तेरा माथा वेश्या के समान है, तू लज्जित होना ही नहीं चाहती।

4 क्या तू अब मुझे पुकारकर कहेगी, ‘हे मेरे पिता, तू ही मेरी जवानी का साथी है?’

5 क्या वह सदा क्रोधित रहेगा? क्या वह उसको सदा बनाए रहेगा? तूने ऐसा कहा तो है, परन्तु तूने बुरे काम प्रबलता के साथ किए हैं।”

११११११११ ११ ११११११ ११ १११११११११ १११११ १११११

6 फिर योशिय्याह राजा के दिनों में यहोवा ने मुझसे यह भी कहा, “क्या तूने देखा कि भटकनेवाली इस्राएल ने क्या किया है? उसने सब ऊँचे पहाड़ों पर और सब हरे पेड़ों के तले जा जाकर व्यभिचार किया है।

7 तब मैंने सोचा, जब ये सब काम वह कर चुके तब मेरी ओर फिरेगी; परन्तु वह न फिरी, और उसकी विश्वासघाती बहन यहूदा ने यह देखा।

8 फिर मैंने देखा, जब मैंने भटकनेवाली इस्राएल को उसके व्यभिचार करने के कारण त्याग कर उसे त्यागपत्र दे दिया; तो भी उसकी विश्वासघाती बहन यहूदा न डरी, वरन् जाकर वह भी व्यभिचारिणी बन गई।

9 उसके निर्लज्ज-व्यभिचारिणी होने के कारण देश भी अशुद्ध हो गया, उसने पत्थर और काठ के साथ भी व्यभिचार किया।

10 इतने पर भी उसकी विश्वासघाती बहन यहूदा पूर्ण मन से मेरी ओर नहीं फिरी, परन्तु कपट से, यहोवा की यही वाणी है।”

\* 3:1 १११११ ११ ११ १११११ ११ ११११११११: यहाँ बात दया की नहीं है। परन्तु यह एक प्रमाण है कि इस्राएल के लगातार व्यभिचार करने के बाद वह पत्नी के स्थान से वंचित है।

11 यहोवा ने मुझसे कहा, “भटकनेवाली इस्राएल, विश्वासघातिन यहूदा से कम दोषी निकली है।

12 तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार कर, ‘यहोवा की यह वाणी है, हे भटकनेवाली इस्राएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की दृष्टि न करूँगा; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैं करुणामय हूँ; मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूँगा।

13 केवल अपना यह अधर्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ों के तले इधर-उधर दूसरों के पास गई, और मेरी बातों को नहीं माना, यहोवा की यह वाणी है।

14 “हे भटकनेवाले बच्चों, लौट आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूँ; यहोवा की यह वाणी है। तुम्हारे प्रत्येक नगर से एक, और प्रत्येक कुल से दो को लेकर मैं सिय्योन में पहुँचा दूँगा।

15 “मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दूँगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएँगे।

16 उन दिनों में जब तुम इस देश में बढ़ो, और फूलो-फलो, तब लोग फिर ऐसा न कहेंगे, यहोवा की वाचा का सन्दूक; यहोवा की यह भी वाणी है। उसका विचार भी उनके मन में न आएगा, न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे; और न उसकी मरम्मत होगी।

17 उस समय यरूशलेम यहोवा का सिंहासन कहलाएगा, और सब जातियाँ उसी यरूशलेम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी, और, वे फिर अपने बुरे मन के हठ पर न चलेंगी।

18 उन दिनों में यहूदा का घराना इस्राएल के घराने के साथ चलेगा और वे दोनों मिलकर उत्तर के देश से इस देश में आएँगे जिसे मैंने उनके पूर्वजों को निज भाग करके दिया था।

१११११११११ ११ ११११११ ११११११११ ११११११११११११

19 “मैंने सोचा था, मैं कैसे तुझे लड़कों में गिनकर वह मनभावना देश दूँ जो सब जातियों के देशों का शिरोमणि है। मैंने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी, और मुझसे फिर न भटकेगी। (1 १११. 1:3-7)

20 इसमें तो सन्देह नहीं कि जैसे विश्वासघाती स्त्री अपने प्रिय से मन फेर लेती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तू मुझसे फिर गया है, यहोवा की यही वाणी है।”

21 मुण्डे टीलों पर से इस्राएलियों के रोने और गिड़गिड़ाने का शब्द सुनाई दे रहा है, क्योंकि वे टेढ़ी चाल चलते रहे हैं और अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए हैं।



19 हाय! हाय! मेरा हृदय भीतर ही भीतर तड़पता है! और मेरा मन घबराता है! मैं चुप नहीं रह सकता; क्योंकि हे मेरे प्राण, नरसिंगे का शब्द और युद्ध की ललकार तुझ तक पहुँची है।

20 नाश पर नाश का समाचार आ रहा है, सारा देश नाश हो गया है। मेरे डरे अचानक और मेरे तम्बू एकाएक लूटे गए हैं।

21 और कितने दिन तक मुझे उनका झण्डा देखना और नरसिंगे का शब्द सुनना पड़ेगा?

22 “क्योंकि मेरी प्रजा मूर्ख है, वे मुझे नहीं जानते; वे ऐसे मूर्ख बच्चें हैं जिनमें कुछ भी समझ नहीं। बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते।”

23 मैंने पृथ्वी पर देखा, वह सूनी और सुनसान पड़ी थी; और आकाश को, और उसमें कोई ज्योति नहीं थी।

24 मैंने पहाड़ों को देखा, वे हिल रहे थे, और सब पहाड़ियों को कि वे डोल रही थीं।

25 फिर मैंने क्या देखा कि कोई मनुष्य भी न था और सब पक्षी भी उड़ गए थे।

26 फिर मैं क्या देखता हूँ कि यहोवा के प्रताप और उस भड़के हुए प्रकोप के कारण उपजाऊ देश जंगल, और उसके सारे नगर खण्डहर हो गए थे।

27 क्योंकि यहोवा ने यह बताया, “सारा देश उजाड़ हो जाएगा; 28 इस कारण पृथ्वी विलाप करेगी, और आकाश शोक का काला वस्त्र पहनेगा; क्योंकि मैंने ऐसा ही करने को ठाना और कहा भी है; मैं इससे नहीं पछताऊँगा और न अपने प्राण को छोड़ूँगा।”

29 नगर के सारे लोग सवारों और धनुर्धारियों का कोलाहल सुनकर भागे जाते हैं; वे झाड़ियों में घुसते और चट्टानों पर चढ़े जाते हैं; सब नगर निर्जन हो गए, और उनमें कोई बाकी न रहा।

30 और तू जब उजड़ेंगी तब क्या करेगी? चाहे तू लाल रंग के वस्त्र पहने और सोने के आभूषण धारण करे और अपनी आँखों में अंजन लगाए, परन्तु व्यर्थ ही तू अपना श्रृंगार करेगी। क्योंकि तेरे प्रेमी तुझे निकम्मी जानते हैं; वे तेरे प्राण के खोजी हैं।

31 क्योंकि मैंने जच्चा का शब्द, पहलौटा जनती हुई स्त्री की सी चिल्लाहट सुनी है, यह सिय्योन की बेटी का शब्द है, जो हाँफती और हाथ फैलाए हुए यह कहती है, “हाय मुझ पर, मैं हत्यारों के हाथ पड़कर मूर्छित हो चली हूँ।”

## 5

1 यरूशलेम की सड़कों में इधर-उधर दौड़कर देखो!

उसके चौकों में ढूँढो यदि कोई ऐसा मिल सके जो न्याय से काम करे और सच्चाई का खोजी हो; तो मैं उसका पाप क्षमा करूँगा।

2 यद्यपि उसके निवासी यहोवा के जीवन की शपथ भी खाएँ, तो भी निश्चय वे झूठी शपथ खाते हैं।

3 हे यहोवा, क्या तूने उनको दुःख दिया, परन्तु वे शोकित नहीं हुए; तूने उनको नाश किया, परन्तु उन्होंने ताड़ना से भी नहीं माना। उन्होंने अपना मन चट्टान से भी अधिक कठोर किया है; उन्होंने पश्चाताप करने से इन्कार किया है।

4 फिर मैंने सोचा, “ये लोग तो कंगाल और 5 इसलिए मैं बड़े लोगों के पास जाकर उनको सुनाऊँगा; क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम नहीं जानते।”

6 इस कारण वन में से एक सिंह आकर उन्हें मार डालेगा, निर्जल देश का एक भेड़िया उनको नाश करेगा। और एक चीता उनके नगरों के पास घात लगाए रहेगा, और जो कोई उनमें से निकले वह फाड़ा जाएगा; क्योंकि उनके अपराध बहुत बढ़ गए हैं और वे मुझसे बहुत ही दूर हट गए हैं।

7 “मैं क्यों तेरा पाप क्षमा करूँ? तेरे लड़कों ने मुझ को छोड़कर उनकी शपथ खाई है जो परमेश्वर नहीं है। जब मैंने उनका पेट भर दिया, तब उन्होंने व्यभिचार किया और वेश्याओं के घरों में भीड़ की भीड़ जाते थे।

8 वे खिलाए-पिलाए बे-लगाम घोड़ों के समान हो गए, वे अपने-अपने पड़ोसी की स्त्री पर हिनहिनाने लगे।

9 क्या मैं ऐसे कामों का उन्हें दण्ड न दूँ? यहोवा की यह वाणी है; क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूँ?

† 4:27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000





24 इसका समाचार सुनते ही हमारे हाथ ढीले पड़ गए हैं; हम संकट में पड़े हैं; जच्चा की सी पीड़ा हमको उठी है।

25 मैदान में मत निकलो, मार्ग में भी न चलो; क्योंकि वहाँ शत्रु की तलवार और चारों ओर भय दिखाई पड़ता है।

26 हे मेरी प्रजा कमर में टाट बाँध, और राख में लोट; जैसा एकलौते पुत्र के लिये विलाप होता है वैसा ही बड़ा शोकमय विलाप कर; क्योंकि नाश करनेवाला हम पर अचानक आ पड़ेगा।

27 “मैंने इसलिए तुझे अपनी प्रजा के बीच गुम्मत और गढ़ ठहरा दिया कि तू उनकी चाल परखे और जान ले।

28 वे सब बहुत ही हठी हैं, वे लुतराई करते फिरते हैं; उन सभी की चाल बिगड़ी है, वे निरा तांबा और लोहा ही हैं।

29 धौंकनी जल गई, सीसा आग में जल गया; ढालनेवाले ने व्यर्थ ही ढाला है; क्योंकि बुरे लोग नहीं निकाले गए।

30 उनका नाम खोटी चाँदी पड़ेगा, क्योंकि यहोवा ने उनको खोटा पाया है।”

## 7

1 जो वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास पहुँचा वह यह है:

2 “यहोवा के भवन के फाटक में खड़ा हो, और यह वचन प्रचार कर, और कह, हे सब यहूदियों, तुम जो यहोवा को दण्डवत् करने के लिये इन फाटकों से प्रवेश करते हो, यहोवा का वचन सुनो।

3 सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, यह कहता है, [यिर्मयाह 7:1-2]”, तब मैं तुम को इस स्थान में बसे रहने दूँगा।

4 तुम लोग यह कहकर झूठी बातों पर भरोसा मत रखो, यही यहोवा का मन्दिर है; यही यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर।”

5 “यदि तुम सचमुच अपनी-अपनी चाल और काम सुधारो, और सचमुच मनुष्य-मनुष्य के बीच न्याय करो,

6 परदेशी और अनाथ और विधवा पर अंधेर न करो; इस स्थान में निर्दोष की हत्या न करो, और दूसरे

देवताओं के पीछे न चलो जिससे तुम्हारी हानि होती है,

7 तो मैं तुम को इस नगर में, और इस देश में जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, युग-युग के लिये रहने दूँगा।

8 “देखो, तुम झूठी बातों पर भरोसा रखते हो जिनसे कुछ लाभ नहीं हो सकता।

9 तुम जो चोरी, हत्या और व्यभिचार करते, झूठी शपथ खाते, बाल देवता के लिये धूप जलाते, और दूसरे देवताओं के पीछे जिन्हें तुम पहले नहीं जानते थे चलते हो,

10 तो क्या यह उचित है कि तुम इस भवन में आओ जो मेरा कहलाता है, और मेरे सामने खड़े होकर यह कहो ‘[यिर्मयाह 7:1-2]’ कि ये सब घृणित काम करें?

11 क्या यह भवन जो मेरा कहलाता है, तुम्हारी दृष्टि में डाकुओं की गुफा हो गया है? मैंने स्वयं यह देखा है, यहोवा की यह वाणी है। (यिर्मयाह 21:13, [यिर्मयाह 11:17, [यिर्मयाह 19:46)

[यिर्मयाह 7:1-2]

12 “मेरा जो स्थान शीलो में था, जहाँ मैंने पहले अपने नाम का निवास ठहराया था, वहाँ जाकर देखो कि मैंने अपनी प्रजा इस्राएल की बुराई के कारण उसकी क्या दशा कर दी है?

13 अब यहोवा की यह वाणी है, कि तुम जो ये सब काम करते आए हो, और यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से बातें करता रहा हूँ, तो भी तुम ने नहीं सुना, और तुम्हें बुलाता आया परन्तु तुम नहीं बोले,

14 इसलिए यह भवन जो मेरा कहलाता है, जिस पर तुम भरोसा रखते हो, और यह स्थान जो मैंने तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, इसकी दशा मैं शीलो की सी कर दूँगा।

15 और जैसा मैंने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सारे एप्रैमियों को अपने सामने से दूर कर दिया है, वैसा ही तुम को भी दूर कर दूँगा।

[यिर्मयाह 7:1-2]

16 “इस प्रजा के लिये तू प्रार्थना मत कर, न इन लोगों के लिये ऊँचे स्वर से पुकार न मुझसे विनती कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सुनूँगा।

17 क्या तू नहीं देखता कि ये लोग यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में क्या कर रहे हैं?

\* 7:3 [यिर्मयाह 7:1-2] यदि वे मन फिराएँगे तो वह गुलामी में नहीं जाएँगे परन्तु उनका राष्ट्रीय अस्तित्व बनाए रखेगा।

† 7:10 [यिर्मयाह 7:1-2] यिर्मयाह उन्हें पवित्र जीवन जीने की अपेक्षा मन्दिर के अनुष्ठानों में विश्वास करने के लिए दोष देता है।







4 अपने-अपने संगी से चौकस रहो, अपने भाई पर भी भरोसा न रखो; क्योंकि सब भाई निश्चय अडंगा मारेंगे, और हर एक पड़ोसी लुतराई करते फिरेंगे।

5 वे एक दूसरे को ठगेंगे और सच नहीं बोलेंगे; उन्होंने झूठ ही बोलना सीखा है; और कुटिलता ही में परिश्रम करते हैं।

6 तेरा निवास छल के बीच है; छल ही के कारण वे मेरा ज्ञान नहीं चाहते, यहोवा की यही वाणी है।

7 इसलिए सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “देख, मैं **22:22 22:22 22:22**\*, क्योंकि अपनी प्रजा के कारण मैं उनसे और क्या कर सकता हूँ?

8 उनकी जीभ काल के तीर के समान बेधनेवाली है, उससे छल की बातें निकलती हैं; वे मुँह से तो एक दूसरे से मेल की बात बोलते हैं पर मन ही मन एक दूसरे की घात में लगे रहते हैं।

9 क्या मैं ऐसी बातों का दण्ड न दूँ? यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूँ?

10 “मैं पहाड़ों के लिये रो उठूँगा और शोक का गीत गाऊँगा, और जंगल की चराइयों के लिये विलाप का गीत गाऊँगा, क्योंकि वे ऐसे जल गए हैं कि कोई उनमें से होकर नहीं चलता, और उनमें पशुओं का शब्द भी नहीं सुनाई पड़ता; पशु-पक्षी सब भाग गए हैं।

11 मैं यरूशलेम को खण्डहर बनाकर गीदड़ों का स्थान बनाऊँगा; और यहूदा के नगरों को ऐसा उजाड़ दूँगा कि उनमें कोई न बसेगा।” (**22:22. 25:2**)

12 जो बुद्धिमान पुरुष हो वह इसका भेद समझ ले, और जिसने यहोवा के मुख से इसका कारण सुना हो वह बता दे। देश का नाश क्यों हुआ? क्यों वह जंगल के समान ऐसा जल गया कि उसमें से होकर कोई नहीं चलता?

13 और यहोवा ने कहा, “क्योंकि उन्होंने मेरी व्यवस्था को जो मैंने उनके आगे रखी थी छोड़ दिया; और न मेरी बात मानी और न उसके अनुसार चले हैं,

14 वरन् वे अपने हठ पर बाल नामक देवताओं के पीछे चले, **22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22**।

15 इस कारण, सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है, सुन, मैं अपनी इस प्रजा को कड़वी वस्तु खिलाऊँगा और विष पिलाऊँगा। (**22:69:21, 22:23:15**)

16 मैं उन लोगों को ऐसी जातियों में तितर-बितर करूँगा जिन्हें न तो वे न उनके पुरखा जानते थे; और

जब तक उनका अन्त न हो जाए तब तक मेरी ओर से तलवार उनके पीछे पड़ी रहेगी।”

**22:22 22:22 22:22**

17 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “सोचो, और विलाप करनेवालियों को बुलाओ; बुद्धिमान स्त्रियों को बुलवा भेजो;

18 वे फुर्ती करके हम लोगों के लिये शोक का गीत गाएँ कि हमारी आँखों से आँसू बह चले और हमारी पलकें जल बहाए।

19 सिय्योन से शोक का यह गीत सुन पड़ता है, ‘हम कैसे नाश हो गए! हम क्यों लज्जा में पड़ गए हैं, क्योंकि हमको अपना देश छोड़ना पड़ा और हमारे घर गिरा दिए गए हैं।’”

20 इसलिए, हे स्त्रियों, यहोवा का यह वचन सुनो, और उसकी यह आज्ञा मानो; तुम अपनी-अपनी बेटियों को शोक का गीत, और अपनी-अपनी पड़ोसियों को विलाप का गीत सिखाओ।

21 क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों से होकर हमारे महलों में घुस आई है, कि हमारी सड़कों में बच्चों को और चौकों में जवानों को मिटा दे।

22 तू कह, “यहोवा यह कहता है, ‘मनुष्यों की लोथें ऐसी पड़ी रहेंगी जैसा खाद खेत के ऊपर, और पूलियाँ काटनेवाले के पीछे पड़ी रहती हैं, और उनका कोई उठानेवाला न होगा।’”

**22:22 22:22 22:22**

23 यहोवा यह कहता है, “बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे;

24 परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूँ, जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धार्मिकता के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूँ। (**1 22:22. 1:31, 2 22:22. 10:17**)

25 “देखो, यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आनेवाले हैं कि **22:22 22:22 22:22** हो, उनको खतनारहितों के समान दण्ड दूँगा, (**22:22. 2:25**)

26 अर्थात् मिस्रियों, यहूदियों, एदोमियों, अम्मोनियों, मोआबियों को, और उन रेगिस्तान के निवासियों के समान जो अपने गाल के बालों को मुँण्डा डालते हैं; क्योंकि ये सब जातियाँ तो खतनारहित हैं,

\* **9:7 22:22 22:22 22:22**: परमेश्वर उस राष्ट्र को क्लेशों की कसौटी पर रखेगा कि जो भी बुरा हो वह आग में जल जाए और उनकी भलाई शुद्ध होकर निकले। † **9:14 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22**: एक ही पीढ़ी के पाप के कारण नहीं था कि उन्हें दण्ड मिला उनका पाप पिढ़ियों से चला आ रहा था। ‡ **9:25 22:22 22:22 22:22**: उनका शारीरिक खतना तो हुआ था परन्तु उनके मन पवित्र नहीं थे।

और इस्राएल का सारा घराना भी मन में खतनारहित है।" (22222222. 7:51)

## 10

2222222222 22 222222222222

1 यहोवा यह कहता है, हे इस्राएल के घराने जो वचन यहोवा तुम से कहता है उसे सुनो।

2 "अन्यजातियों की चाल मत सीखो, न उनके समान 22222 22 2222222222\* से विस्मित हो, इसलिए कि अन्यजाति लोग उनसे विस्मित होते हैं।

3 क्योंकि देशों के लोगों की रीतियाँ तो निकम्मी हैं। मूरत तो वन में से किसी का काटा हुआ काठ है जिसे कारीगर ने बसूले से बनाया है।

4 लोग उसको सोने-चाँदी से सजाते और हथौड़े से कील ठोक-ठोककर दृढ़ करते हैं कि वह हिल-डुल न सके।

5 वे ककड़ी के खेत में खड़े पुतले के समान हैं, पर वे बोल नहीं सकतीं; उन्हें उठाए फिरना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकतीं। उनसे मत डरो, क्योंकि, न तो वे कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला।"

6 हे यहोवा, तेरे समान कोई नहीं है; तू महान है, और तेरा नाम पराक्रम में बड़ा है।

7 हे सब जातियों के राजा, तुझ से कौन न डरेगा? क्योंकि यह तेरे योग्य है; अन्यजातियों के सारे बुद्धिमानों में, और उनके सारे राज्यों में तेरे समान कोई नहीं है। (22222222. 15:4)

8 वे मूर्ख और निर्बुद्धि हैं; मूर्तियों से क्या शिक्षा? वे तो काठ ही हैं!

9 पत्तर बनाई हुई चाँदी तर्शीश से लाई जाती है, और ऊफाज से सोना। वे कारीगर और सुनार के हाथों की कारीगरी हैं; उनके पहरावे नीले और बैंगनी रंग के वस्त्र हैं; उनमें जो कुछ है वह निपुण कारीगरों की कारीगरी ही है।

10 परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथ्वी काँपती है, और जाति-जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते। (22222. 1:6)

11 तुम उनसे यह कहना, "ये देवता जिन्होंने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएँगे।"

22222222 22 2222

\* 10:2 22222 22 2222222222: असाधारण दृश्य जैसे- ग्रहण, धूमकेतु आदि जिन्हें अन्यजातियाँ आपदा का संकेतक मानती थीं। उन्हें महत्त्व देने का अर्थ था अन्यजाति के मार्गों को अपनाना। † 10:14 222222222222: उनकी अशक्त मूर्तियों की तुलना उष्ण कटिबन्धीय आँधी की भीषणता के साथ करके देखने पर, जो मनुष्य अब भी मूर्तियों की पूजा करता वह निर्बुद्धि ही है।

12 उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ्य से बनाया, उसने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है।

13 जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली चमकाता, और अपने भण्डार में से पवन चलाता है।

14 सब मनुष्य मूर्ख और 222222222222† हैं; अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण सब सुनारों की आशा टूटती है; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें झूठी हैं, और उनमें साँस ही नहीं है। (22222222. 51:17,18)

15 वे व्यर्थ और ठट्टे ही के योग्य हैं; जब उनके दण्ड का समय आएगा तब वे नाश हो जाएँगीं।

16 परन्तु याकूब का निज भाग उनके समान नहीं है, क्योंकि वह तो सब का सृजनहार है, और इस्राएल उसके निज भाग का गोत्र है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है।

2222222222 22222222

17 हे घेरे हुए नगर की रहनेवाली, अपनी गठरी भूमि पर से उठा!

18 क्योंकि यहोवा यह कहता है, "मैं अब की बार इस देश के रहनेवालों को मानो गोफन में रखकर फेंक दूँगा, और उन्हें ऐसे-ऐसे संकट में डालूँगा कि उनकी समझ में भी नहीं आएगा।"

19 मुझ पर हाय! मेरा घाव चंगा होने का नहीं। फिर मैंने सोचा, "यह तो रोग ही है, इसलिए मुझ को इसे सहना चाहिये।"

20 मेरा तम्बू लूटा गया, और सब रस्सियाँ टूट गई हैं; मेरे बच्चे मेरे पास से चले गए, और नहीं हैं; अब कोई नहीं रहा जो मेरे तम्बू को ताने और मेरी कनातें खड़ी करे।

21 क्योंकि चरवाहे पशु सरीखे हैं, और वे यहोवा को नहीं पुकारते; इसी कारण वे बुद्धि से नहीं चलते, और उनकी सब भेड़ें तितर-बितर हो गई हैं।

22 सुन, एक शब्द सुनाई देता है! देख, वह आ रहा है! उत्तर दिशा से बड़ा हुल्लड मच रहा है ताकि यहूदा के नगरों को उजाड़ कर गीदड़ों का स्थान बना दे।

23 हे यहोवा, मैं जान गया हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं।





## 13

???????? ? ? ?

1 यहोवा ने मुझसे यह कहा, “जाकर सनी की एक कमरबन्द मोल ले, उसे कमर में बाँध और जल में मत भीगने दे।”

2 तब मैंने एक कमरबन्द मोल लेकर यहोवा के वचन के अनुसार अपनी कमर में बाँध ली।

3 तब दूसरी बार यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

4 “जो कमरबन्द तूने मोल लेकर कमर में कस ली है, उसे फरात के तट पर ले जा और वहाँ उसे चट्टान की एक दरार में छिपा दे।”

5 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मैंने उसको फरात के तट पर ले जाकर छिपा दिया।

6 बहुत दिनों के बाद यहोवा ने मुझसे कहा, “उठ, फिर फरात के पास जा, और जिस कमरबन्द को मैंने तुझे वहाँ छिपाने की आज्ञा दी उसे वहाँ से ले ले।”

7 तब मैं फरात के पास गया और खोदकर जिस स्थान में मैंने कमरबन्द को छिपाया था, वहाँ से उसको निकाल लिया। और देखो, कमरबन्द बिगड़ गई थी; वह किसी काम की न रही।

8 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, “यहोवा यह कहता है,

9 इसी प्रकार से मैं यहूदियों का घमण्ड, और यरूशलेम का बड़ा गर्व नष्ट कर दूँगा।

10 इस दुष्ट जाति के लोग जो मेरे वचन सुनने से इन्कार करते हैं जो अपने मन के हठ पर चलते, दूसरे देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते और उनको दण्डवत् करते हैं, वे इस कमरबन्द के समान हो जाएँगे जो किसी काम की नहीं रही।

11 यहोवा की यह वाणी है कि जिस प्रकार से कमरबन्द मनुष्य की कमर में कसी जाती है, उसी प्रकार से मैंने इस्राएल के सारे घराने और यहूदा के सारे घराने को अपनी कमर में बाँध लिया था कि वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और कीर्ति और शोभा का कारण हों, परन्तु उन्होंने न माना।

???????? ? ? ?

12 “इसलिए तू उनसे यह वचन कह, ‘इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, दाखमधु के सब कुपे दाखमधु से भर दिए जाएँगे।’ तब वे तुझ से कहेंगे, ‘क्या हम नहीं जानते कि दाखमधु के सब कुपे दाखमधु से भर दिए जाएँगे?’”

\* 13:16 ?????????? : यहूदा सुरक्षित मार्ग पर नहीं, खतरनाक पहाड़ों पर चल रहा है और उनके चारों ओर अंधेरा छाने लगा है। जब तक प्रकाश है वे परमेश्वर के पास आ जायें।

13 तब तू उनसे कहना, ‘यहोवा यह कहता है, देखो, मैं इस देश के सब रहनेवालों को, विशेष करके दाऊदवंश की गद्दी पर विराजमान राजा और याजक और भविष्यद्वक्ता आदि यरूशलेम के सब निवासियों को अपनी कोपरूपी मदिरा पिलाकर अचेत कर दूँगा।

14 तब मैं उन्हें एक दूसरे से टकरा दूँगा; अर्थात् बाप को बेटे से, और बेटे को बाप से, यहोवा की यह वाणी है। मैं उन पर कोमलता नहीं दिखाऊँगा, न तरस खाऊँगा और न दया करके उनको नष्ट होने से बचाऊँगा।”

???????? ? ? ?

15 देखो, और कान लगाओ, गर्व मत करो, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।

16 अपने परमेश्वर यहोवा की बड़ाई करो, इससे पहले कि वह अंधकार लाए और तुम्हारे पाँव ?????????? पर ठोकर खाएँ, और जब तुम प्रकाश का आसरा देखो, तब वह उसको मृत्यु की छाया में बदल दे और उसे घोर अंधकार बना दे।

17 पर यदि तुम इसे न सुनो, तो मैं अकेले में तुम्हारे गर्व के कारण रोऊँगा, और मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की भेड़ें बँधुआ कर ली गई हैं।

18 राजा और राजमाता से कह, “नीचे बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारे सिरों के शोभायमान मुकुट उतार लिए गए हैं।

19 दक्षिण देश के नगर घेरे गए हैं, कोई उन्हें बचा न सकेगा; सम्पूर्ण यहूदी जाति बन्दी हो गई है, वह पूरी रीति से बँधुआई में चली गई है।

20 “अपनी आँखें उठाकर उनको देख जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं। वह सुन्दर झुण्ड जो तुझे सौंपा गया था कहाँ है?”

21 जब वह तेरे उन मित्रों को तेरे ऊपर प्रधान ठहराएगा जिन्हें तूने अपनी हानि करने की शिक्षा दी है, तब तू क्या कहेगी? क्या उस समय तुझे जच्चा की सी पीड़ाएँ न उठेंगी?

22 यदि तू अपने मन में सोचे कि ये बातें किस कारण मुझ पर पड़ी हैं, तो तेरे बड़े अधर्म के कारण तेरा आँचल उठाया गया है और तेरी एड़ियाँ बलपूर्वक नंगी की गई हैं।

23 क्या कूशी अपना चमड़ा, या चीता अपने धब्बे बदल सकता है? यदि वे ऐसा कर सके, तो तू भी, जो बुराई करना सीख गई है, भलाई कर सकेगी।

24 इस कारण मैं उनको ऐसा तितर-बितर करूँगा, जैसा भूसा जंगल के पवन से तितर-बितर किया जाता है।

25 यहोवा की यह वाणी है, तेरा हिस्सा और मुझसे ठहराया हुआ तेरा भाग यही है, क्योंकि तूने मुझे भूलकर झूठ पर भरोसा रखा है। (2:13)

26 इसलिए मैं भी तेरा आँचल तेरे मुँह तक उठाऊँगा, तब तेरी लज्जा जानी जाएगी।

27 व्यभिचार और चोचला और छिनालपन आदि जो तूने मैदान और टीलों पर किए हैं, वे सब मैंने देखे हैं। हे यरूशलेम, तुझ पर हाय! तू अपने आपको कब तक शुद्ध न करेगी? और कितने दिन तक तू बनी रहेगी?"

## 14

1 यहोवा का वचन जो यिर्मयाह के पास सूखा पड़ने के विषय में पहुँचा

1 यहोवा का वचन जो यिर्मयाह के पास सूखा पड़ने के विषय में पहुँचा

2 "यहोवा यहोवा यहोवा" और फाटकों में लोग शोक का पहरावा पहने हुए भूमि पर उदास बैठे हैं; और यरूशलेम की चिल्लाहट आकाश तक पहुँच गई है।

3 उनके बड़े लोग उनके छोटे लोगों को पानी के लिये भेजते हैं; वे गड्डों पर आकर पानी नहीं पाते, इसलिए खाली बर्तन लिए हुए घर लौट जाते हैं; वे लज्जित और निराश होकर सिर ढाँप लेते हैं।

4 देश में वर्षा न होने से भूमि में दरार पड़ गई है, इस कारण किसान लोग निराश होकर सिर ढाँप लेते हैं।

5 हिरनी भी मैदान में बच्चा जनकर छोड़ जाती है क्योंकि हरी घास नहीं मिलती।

6 जंगली गदहे भी मुँडे टीलों पर खड़े हुए गीदड़ों के समान हाँफते हैं; उनकी आँखें धुंधला जाती हैं क्योंकि हरियाली कुछ भी नहीं है।"

7 "हे यहोवा, हमारे अधर्म के काम हमारे विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं, हम तेरा संग छोड़कर बहुत दूर भटक गए हैं, और हमने तेरे विरुद्ध पाप किया है; तो भी, तू अपने नाम के निमित्त कुछ कर।

8 हे इस्राएल के आधार, संकट के समय उसका बचानेवाला तू ही है, तू क्यों इस देश में परदेशी के समान है? तू क्यों उस बटोही के समान है जो रात भर रहने के लिये कहीं टिकता हो?

9 तू क्यों एक विस्मित पुरुष या ऐसे वीर के समान है जो बचा न सके? तो भी हे यहोवा तू हमारे बीच में है, और हम तेरे कहलाते हैं; इसलिए हमको न तज।"

10 यहोवा ने इन लोगों के विषय यह कहा: "इनको ऐसा भटकना अच्छा लगता है; ये कुकर्म में चलने से नहीं रुके; इसलिए यहोवा इनसे प्रसन्न नहीं है, वह इनका अधर्म स्मरण करेगा और उनके पाप का दण्ड देगा।"

11 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, "इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर।

12 चाहे वे उपवास भी करें, तो भी मैं इनकी दुहाई न सुनूँगा, और चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाएँ, तो भी मैं उनसे प्रसन्न न होऊँगा; मैं के द्वारा इनका अन्त कर डालूँगा।" (8:18)

13 तब मैंने कहा, "हाय, प्रभु यहोवा, देख, भविष्यद्वक्ता इनसे कहते हैं 'न तो तुम पर तलवार चलेगी और न अकाल होगा, यहोवा तुम को इस स्थान में सदा की शान्ति देगा।'"

14 तब यहोवा ने मुझसे कहा, "ये भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यद्वानी करते हैं, मैंने उनको न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उनसे कोई भी बात कही। वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा दावा करके अपने ही मन से व्यर्थ और धोखे की भविष्यद्वानी करते हैं।" (13:6)

15 इस कारण जो भविष्यद्वक्ता मेरे बिना भेजे मेरा नाम लेकर भविष्यद्वानी करते हैं 'उस देश में न तो तलवार चलेगी और न अकाल होगा,' उनके विषय यहोवा यह कहता है, कि वे भविष्यद्वक्ता आप तलवार और अकाल के द्वारा नाश किए जाएँगे।

16 और जिन लोगों से वे भविष्यद्वानी कहते हैं, वे अकाल और तलवार के द्वारा मर जाने पर इस प्रकार यरूशलेम की सड़कों में फेंक दिए जाएँगे, कि न तो उनका, न उनकी स्त्रियों का और न उनके बेटे-बेटियों का कोई मिट्टी देनेवाला रहेगा। क्योंकि मैं उनकी बुराई उन्हीं के ऊपर उण्डेलूँगा।

13:27 यहोवा यहोवा यहोवा: भविष्यद्वक्ता यहूदा के तीन आरोपों का सारांश प्रस्तुत करता है- आत्मिक व्यभिचार, मूर्तिपूजा की अत्यधिक अधीरता और अन्यजातीय नाचगान एवं मद्यपान में निर्लज्ज सहभागिता। \* 14:2 यहोवा यहोवा यहोवा: मनुष्य फाटकों पर एकत्र हुए जो एकत्र होने का सामान्य स्थान है और वे गहन दुःख में थे तथा नम्र होकर भूमि पर बैठे थे। † 14:12 यहोवा यहोवा यहोवा: इनके द्वारा परमेश्वर उन्हें नष्ट करेगा परन्तु कुछ लोग बचे रहेंगे। जो मन को कठोर कर लेते हैं, दण्ड उनका दमन करके पश्चातापी मनुष्य को पवित्र बनाता है।

† 13:27 यहोवा यहोवा यहोवा: भविष्यद्वक्ता यहूदा के तीन आरोपों का सारांश प्रस्तुत करता है- आत्मिक व्यभिचार, मूर्तिपूजा की अत्यधिक अधीरता और अन्यजातीय नाचगान एवं मद्यपान में निर्लज्ज सहभागिता। \* 14:2 यहोवा यहोवा यहोवा: मनुष्य फाटकों पर एकत्र हुए जो एकत्र होने का सामान्य स्थान है और वे गहन दुःख में थे तथा नम्र होकर भूमि पर बैठे थे। † 14:12 यहोवा यहोवा यहोवा: इनके द्वारा परमेश्वर उन्हें नष्ट करेगा परन्तु कुछ लोग बचे रहेंगे। जो मन को कठोर कर लेते हैं, दण्ड उनका दमन करके पश्चातापी मनुष्य को पवित्र बनाता है।





14 मैं ऐसा करूँगा कि वह शत्रुओं के हाथ ऐसे देश में चला जाएगा जिसे तू नहीं जानती है, क्योंकि मेरे क्रोध की आग भड़क उठी है, और वह तुम को जलाएगी।”

15 हे यहोवा, तू तो जानता है; और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिए मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है।

16 जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैंने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ।

17 तेरी छाया मुझ पर हुई; मैं मन बहलानेवालों के बीच बैठकर प्रसन्न नहीं हुआ; तेरे हाथ के दबाव से मैं अकेला बैठा, क्योंकि तूने मुझे क्रोध से भर दिया था।

18 मेरी पीड़ा क्यों लगातार बनी रहती है? मेरी चोट की क्यों कोई औषधि नहीं है? क्या तू सचमुच मेरे लिये धोखा देनेवाली नदी और सूखनेवाले जल के समान होगा?

19 यह सुनकर यहोवा ने यह कहा, “यदि तू फिर, तो मैं फिर से तुझे अपने सामने खड़ा करूँगा। यदि तू अनमोल को कहे और निकम्मे को न कहे, तब तू मेरे मुख के समान होगा। वे लोग तेरी ओर फिरेंगे, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना।

20 मैं तुझको उन लोगों के सामने पीतल की दृढ़ शहरपनाह बनाऊँगा; वे तुझ से लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा उद्धार करने के लिये तेरे साथ हूँ, यहोवा की यह वाणी है। मैं तुझे दुष्ट लोगों के हाथ से बचाऊँगा,

21 और उपद्रवी लोगों के पंजे से छुड़ा लूँगा।”

## 16

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

2 “*हे यहोवा, तू तो जानता है; और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिए मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है।*”

‡ 15:15 *हे यहोवा, तू तो जानता है; और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिए मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है।* बहुत ही अधिक दुःखी मनुष्य की यह प्रार्थना है जिसका मानवीय स्वभाव इस समय परमेश्वर की इच्छा के अधीन नहीं होना चाहता है। \* 16:2 *हे यहोवा, तू तो जानता है; और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिए मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है।* विवाह यहूदियों में अनिवार्य था परन्तु यिर्मयाह को विवाह के लिए मना किया गया जो इस बात को दर्शाता था कि आनेवाली आपदा ऐसी विकट होगी कि सामान्य दायित्वों पर अभिभूत होगी।

† 16:12 *हे यहोवा, तू तो जानता है; और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिए मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है।* उनके लिए जो कठोर दण्ड, निर्धारित किया गया था वह मूर्ति-पूजा के कारण था। वे पीढ़ियों से मूर्ति-पूजा करते आ रहे थे और अन्ततः वह परमेश्वर के राष्ट्रव्यापी त्याग में बदल गई।

3 क्योंकि जो बेटे-बेटियाँ इस स्थान में उत्पन्न हों और जो माताएँ उन्हें जनें और जो पिता उन्हें इस देश में जन्माएँ,

4 उनके विषय यहोवा यह कहता है, वे बुरी-बुरी बीमारियों से मरेंगे। उनके लिये कोई छाती न पीटेगा, न उनको मिट्टी देगा; वे भूमि के ऊपर खाद के समान पड़े रहेंगे। वे तलवार और अकाल से मर मिटेंगे, और उनकी लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहार होंगी।

5 “यहोवा ने कहा: जिस घर में रोना पीटना हो उसमें न जाना, न छाती पीटने के लिये कहीं जाना और न इन लोगों के लिये शोक करना; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैंने अपनी शान्ति और करुणा और दया इन लोगों पर से उठा ली है।

6 इस कारण इस देश के छोटे-बड़े सब मरेंगे, न तो इनको मिट्टी दी जाएगी, न लोग छाती पीटेंगे, न अपना शरीर चीरेंगे, और न सिर मुँडाएँगे। इनके लिये कोई शोक करनेवालों को रोटी न बाटेंगे कि शोक में उन्हें शान्ति दें;

7 और न लोग पिता या माता के मरने पर किसी को शान्ति के लिये कटोरे में दाखमधु पिलाएँगे।

8 तू भोज के घर में इनके साथ खाने-पीने के लिये न जाना।

9 क्योंकि सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है: देख, तुम लोगों के देखते और तुम्हारे ही दिनों में मैं ऐसा करूँगा कि इस स्थान में न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, न दुल्हे और न दुल्हन का शब्द। (18:23)

10 “जब तू इन लोगों से ये सब बातें कहे, और वे तुझ से पूछें कि ‘यहोवा ने हमारे ऊपर यह सारी बड़ी विपत्ति डालने के लिये क्यों कहा है? हमारा अधर्म क्या है और हमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध कौन सा पाप किया है?’

11 तो तू इन लोगों से कहना, ‘यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि तुम्हारे पुरखा मुझे त्याग कर दूसरे देवताओं के पीछे चले, और उनकी उपासना करके उनको दण्डवत् की, और मुझ को त्याग दिया और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया,



**2:23, 20:12,13, 22:12)**

11 जो अन्याय से धन बटोरता है वह उस तीतर के समान होता है जो दूसरी चिड़िया के लिए हुए अण्डों को सेती है, उसकी आधी आयु में ही वह उस धन को छोड़ जाता है, और अन्त में वह मूर्ख ही ठहरता है।

12 हमारा पवित्र आराधनालय आदि से ऊँचे स्थान पर रखे हुए एक तेजोमय सिंहासन के समान है।

13 हे यहोवा, हे इस्राएल के आधार, जितने तुझे छोड़ देते हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे जाएँगे, क्योंकि उन्होंने जीवन के जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है।

**14**

14 हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊँगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊँगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

15 सुन, वे मुझसे कहते हैं, “यहोवा का वचन कहाँ रहा? वह अभी पूरा हो जाए!”

16 परन्तु तू मेरा हाल जानता है, मैंने तेरे पीछे चलते हुए उतावली करके चरवाहे का काम नहीं छोड़ा; न मैंने उस आनेवाली विपत्ति के दिन की लालसा की है; जो कुछ मैं बोला वह तुझ पर प्रगट था।

17 मुझे न घबरा; संकट के दिन तू ही मेरा शरणस्थान है।

18 हे यहोवा, मेरी आशा टूटने न दे, मेरे सतानेवालों ही की आशा टूटे; उन्हीं को विस्मित कर; परन्तु मुझे निराशा से बचा; उन पर विपत्ति डाल और उनको चकनाचूर कर दे!

**19**

19 यहोवा ने मुझसे यह कहा, “जाकर सदर फाटक में खड़ा हो जिससे यहूदा के राजा वरन् यरूशलेम के सब रहनेवाले भीतर-बाहर आया-जाया करते हैं;

20 और उनसे कह, हे यहूदा के राजाओं और सब यहूदियों, हे यरूशलेम के सब निवासियों, और सब लोगों जो इन फाटकों में से होकर भीतर जाते हो, यहोवा का वचन सुनो।

21 यहोवा यह कहता है, सावधान रहो, विश्राम के दिन कोई बोज़ मत उठाओ; और न कोई बोज़ यरूशलेम के फाटकों के भीतर ले आओ। **(2:22. 5:10)**

\* **17:22** ग्रामीण प्रजा विश्राम के दिन आराधना हेतु यरूशलेम आती थी कि मन्दिर की आराधना में सहभागी हो परन्तु वे अपनी उपासना के साथ अपनी फसलें भी ले आते थे कि शहर में बेच दें। \* **18:6** कोई पात्र टूट जाता था तो कुम्हार उसे फेंकता नहीं था। वह उसे पीसकर फिर से चाक पर रखता था और नये सिरे से उस पर काम करके मनोवाञ्छित रूप प्रदान करता था।

22 विश्राम के दिन अपने-अपने घर से भी कोई बोज़ बाहर मत ले जाओ और न किसी रीति का काम-काज करो, वरन् उस आज्ञा के अनुसार जो मैंने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, **(2:22. 20:12. 22:12)**।

23 परन्तु उन्होंने न सुना और न कान लगाया, परन्तु इसके विपरीत हठ किया कि न सुनें और ताड़ना से भी न मानें।

24 “परन्तु यदि तुम सचमुच मेरी सुनो, यहोवा की यह वाणी है, और विश्राम के दिन इस नगर के फाटकों के भीतर कोई बोज़ न ले आओ और विश्रामदिन को पवित्र मानो, और उसमें किसी रीति का काम-काज न करो,

25 तब तो दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा, रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए हाकिम और यहूदा के लोग और यरूशलेम के निवासी इस नगर के फाटकों से होकर प्रवेश किया करेंगे और यह नगर सर्वदा बसा रहेगा।

26 लोग होमबलि, मेलबलि अन्नबलि, लोबान और धन्यवाद-बलि लिए हुए यहूदा के नगरों से और यरूशलेम के आस-पास से, बिन्यामीन के क्षेत्र और नीचे के देश से, पहाड़ी देश और दक्षिण देश से, यहोवा के भवन में आया करेंगे।

27 परन्तु यदि तुम मेरी सुनकर विश्राम के दिन को पवित्र न मानो, और उस दिन यरूशलेम के फाटकों से बोज़ लिए हुए प्रवेश करते रहो, तो मैं यरूशलेम के फाटकों में आग लगाऊँगा; और उससे यरूशलेम के महल भी भस्म हो जाएँगे और वह आग फिर न बुझेगी।”

## 18

**1**

1 यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा, “उठकर कुम्हार के घर जा,

2 और वहाँ मैं तुझे अपने वचन सुनाऊँगा।”

3 इसलिए मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है!

4 जो मिट्टी का बर्तन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बर्तन अपनी समझ के अनुसार बना दिया।

5 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

6 “हे इस्राएल के घराने, यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार के समान तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती

है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, **9:21**

7 जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाड़ूँगा या ढा दूँगा अथवा नाश करूँगा,

8 तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैंने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैंने उन पर डालने को ठाना हो पछताऊँगा।

9 और जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि मैं उसे बनाऊँगा और रोपूँगा;

10 तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैंने उनके लिये करने को कहा हो, पछताऊँगा।

11 इसलिए अब तू यहूदा और यरूशलेम के निवासियों से यह कह, 'यहोवा यह कहता है, देखो, मैं तुम्हारी हानि की युक्ति और तुम्हारे विरुद्ध प्रबन्ध कर रहा हूँ। इसलिए तुम अपने-अपने बुरे मार्ग से फिरो और अपना-अपना चाल चलन और काम सुधारो।'

**9:21**

12 "परन्तु वे कहते हैं, 'ऐसा नहीं होने का, हम तो अपनी ही कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपने बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे।'

13 "इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है, जाति-जाति से पूछ कि ऐसी बातें क्या कभी किसी के सुनने में आई हैं? इस्राएल की कुमारी ने जो काम किया है उसके सुनने से रोम-रोम खड़े हो जाते हैं।

14 क्या लबानोन का हिम जो चट्टान पर से मैदान में बहता है बन्द हो सकता है? क्या वह ठंडा जल जो दूर से बहता है कभी सूख सकता है?

15 परन्तु मेरी प्रजा मुझे भूल गई है; वे निकम्मी मूर्तियों के लिये धूप जलाते हैं; उन्होंने अपने प्राचीनकाल के मार्गों में ठोकर खाई है, और राजमार्ग छोड़कर **9:21**।

16 इससे उनका देश ऐसा उजाड़ हो गया है कि लोग उस पर सदा ताली बजाते रहेंगे; और जो कोई उसके पास से चले वह चकित होगा और सिर हिलाएगा।

17 मैं उनको पुरवाई से उड़ाकर शत्रु के सामने से तितर-बितर कर दूँगा। उनकी विपत्ति के दिन मैं उनको मुँह नहीं परन्तु **9:21**।

**9:21**

18 तब वे कहने लगे, "चलो, यिर्मयाह के विरुद्ध युक्ति करें, क्योंकि न याजक से व्यवस्था, न ज्ञानी से सम्मति,

न भविष्यद्वक्ता से वचन दूर होंगे। आओ, हम उसकी कोई बात पकड़कर उसको नाश कराएँ और फिर उसकी किसी बात पर ध्यान न दें।"

19 हे यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे, और जो लोग मेरे साथ झगड़ते हैं उनकी बातें सुन।

20 क्या भलाई के बदले में बुराई का व्यवहार किया जाए? तू इस बात का स्मरण कर कि मैं उनकी भलाई के लिये तेरे सामने प्रार्थना करने को खड़ा हुआ जिससे तेरी जलजलाहट उन पर से उतर जाए, और अब उन्होंने मेरे प्राण लेने के लिये गड्ढा खोदा है।

21 इसलिए उनके बाल-बच्चों को भूख से मरने दे, वे तलवार से कट मरें, और उनकी स्त्रियाँ निर्वंश और विधवा हो जाएँ। उनके पुरुष मरी से मरें, और उनके जवान लड़ाई में तलवार से मारे जाएँ।

22 जब तू उन पर अचानक शत्रुदल चढ़ाए, तब उनके घरों से चिल्लाहट सुनाई दे! क्योंकि उन्होंने मेरे लिये गड्ढा खोदा और मुझे फँसाने को फंदे लगाए हैं।

23 हे यहोवा, तू उनकी सब युक्तियाँ जानता है जो वे मेरी मृत्यु के लिये करते हैं। इस कारण तू उनके इस अधर्म को न ढाँप, न उनके पाप को अपने सामने से मिटा। वे तेरे देखते ही ठोकर खाकर गिर जाएँ, अपने क्रोध में आकर उनसे इसी प्रकार का व्यवहार कर।

## 19

**9:21**

1 यहोवा ने यह कहा, "तू जाकर कुम्हार से मिट्टी की बनाई हुई एक सुराही मोल ले, और प्रजा के कुछ पुरनियों में से और याजकों में से भी कुछ प्राचीनों को साथ लेकर,

2 हिन्नोमियों की तराई की ओर उस फाटक के निकट चला जा जहाँ ठीकरे फेंक दिए जाते हैं; और जो वचन मैं कहूँ, उसे वहाँ प्रचार कर।

3 तू यह कहना, हे यहूदा के राजाओं और यरूशलेम के सब निवासियों, यहोवा का वचन सुनो। इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है, इस स्थान पर मैं ऐसी विपत्ति डालने पर हूँ कि जो कोई उसका समाचार सुने, उस पर सन्नाटा छा जाएगा।

4 क्योंकि यहाँ के लोगों ने मुझे त्याग दिया, और **9:21**

† 18:15 **9:21**: यहूदा के भविष्यद्वक्ता और पुरोहितों ही ने उन्हें पथभ्रष्ट किया था। मूर्तियाँ तो भलाई या बुराई में असमर्थ थीं। ‡ 18:17 **9:21**: परमेश्वर द्वारा चेहरा छिपाना अप्रसन्नता का एक निश्चित चिन्ह है।

११११११ ११ ११ १११११ ११११११ ११ १११११ ११\* और उन्होंने इस स्थान को निर्दोषों के लहू से भर दिया,

5 और बाल की पूजा के ऊँचे स्थानों को बनाकर अपने बाल-बच्चों को बाल के लिये होम कर दिया, यद्यपि मैंने कभी भी जिसकी आज्ञा नहीं दी, न उसकी चर्चा की और न वह कभी मेरे मन में आया।

6 इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि यह स्थान फिर तोपेत या हिन्नोमियों की तराई न कहलाएगा, वरन् घात ही की तराई कहलाएगा।

7 और मैं इस स्थान में यहूदा और यरूशलेम की युक्तियों को निष्फल कर दूँगा; और उन्हें उनके प्राणों के शत्रुओं के हाथ की तलवार चलवाकर गिरा दूँगा। उनकी लोथों को मैं आकाश के पक्षियों और भूमि के जीवजन्तुओं का आहार कर दूँगा।

8 मैं इस नगर को ऐसा उजाड़ दूँगा कि लोग इसे देखकर डरेंगे; जो कोई इसके पास से होकर जाए वह इसकी सब विपत्तियों के कारण चकित होगा और घबराएगा।

9 और घिर जाने और उस सकेती के समय जिसमें उनके प्राण के शत्रु उन्हें डाल देंगे, मैं उनके बेटे-बेटियों का माँस उन्हें खिलाऊँगा और एक दूसरे का भी माँस खिलाऊँगा।

10 “तब तू उस सुराही को उन मनुष्यों के सामने तोड़ देना जो तेरे संग जाएँगे,

11 और उनसे कहना, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि जिस प्रकार यह मिट्टी का बर्तन जो टूट गया कि फिर बनाया न जा सके, इसी प्रकार मैं इस देश के लोगों को और इस नगर को तोड़ डालूँगा। और तोपेत नामक तराई में इतनी कब्रें होंगी कि कब्र के लिये और स्थान न रहेगा।

12 यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस स्थान और इसके रहनेवालों के साथ ऐसा ही काम करूँगा, मैं इस नगर को तोपेत के समान बना दूँगा।

13 और यरूशलेम के घर और यहूदा के राजाओं के भवन, जिनकी छतों पर आकाश की सारी सेना के लिये धूप जलाया गया, और अन्य देवताओं के लिये तपावन दिया गया है, वे सब तोपेत के समान अशुद्ध हो जाएँगे।” (११११११११. 7:42)

14 तब यिर्मयाह तोपेत से लौटकर, जहाँ यहोवा ने उसे भविष्यद्वाणी करने को भेजा था, यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा हुआ, और सब लोगों से कहने लगा;

\* 19:4 ११ ११११११ १११ ११११११ १११११११११ ११ १११११ ... १११११ ११ १११११ ११: उन्होंने इस स्थान की पवित्रता को नहीं समझा परन्तु इसे एक अनजान स्थान बना दिया इसमें अन्य देवताओं की पूजा की। \* 20:7 १११ ११ १११११११ ११ १११११: परमेश्वर ने यिर्मयाह को ऐसा जकड़ा कि वह भविष्यद्वाणी की अनिवार्यता से बच नहीं पाया। वह तो विरोध करना चाहता था परन्तु परमेश्वर प्रबल हुआ।

15 “इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है, देखो, सब गाँवों समेत इस नगर पर वह सारी विपत्ति डालना चाहता हूँ जो मैंने इस पर लाने को कहा है, क्योंकि उन्होंने हठ करके मेरे वचन को नहीं माना है।”

## 20

११११११ १११११११ १११११११११ ११ ११११११ १११११

1 जब यिर्मयाह यह भविष्यद्वाणी कर रहा था, तब इम्मेर का पुत्र पशहूर ने जो याजक और यहोवा के भवन का प्रधान रखवाला था, वह सब सुना।

2 तब पशहूर ने यिर्मयाह भविष्यद्वाक्ता को मारा और उसे उस काठ में डाल दिया जो यहोवा के भवन के ऊपर बिन्यामीन के फाटक के पास है। (१११११११. 11:36)

3 सवेरे को जब पशहूर ने यिर्मयाह को काठ में से निकलवाया, तब यिर्मयाह ने उससे कहा, “यहोवा ने तेरा नाम पशहूर नहीं मागोर्मिस्साबीब रखा है।

4 क्योंकि यहोवा ने यह कहा है, देख, मैं तुझे तेरे लिये और तेरे सब मित्रों के लिये भी भय का कारण ठहराऊँगा। वे अपने शत्रुओं की तलवार से तेरे देखते ही वध किए जाएँगे। और मैं सब यहूदियों को बाबेल के राजा के वश में कर दूँगा; वह उनको बन्दी कर बाबेल में ले जाएगा, और तलवार से मार डालेगा।

5 फिर मैं इस नगर के सारे धन को और इसमें की कमाई और सब अनमोल वस्तुओं को और यहूदा के राजाओं का जितना रखा हुआ धन है, उस सब को उनके शत्रुओं के वश में कर दूँगा; और वे उसको लूटकर अपना कर लेंगे और बाबेल में ले जाएँगे।

6 और, हे पशहूर, तू उन सब समेत जो तेरे घर में रहते हैं बँधुआई में चला जाएगा; अपने उन मित्रों समेत जिनसे तूने झूठी भविष्यद्वाणी की, तू बाबेल में जाएगा और वहीं मरेगा, और वहीं तुझे और उन्हें भी मिट्टी दी जाएगी।”

११११११११११ ११ ११११११११

7 हे यहोवा, तूने मुझे धोखा दिया, और मैंने धोखा खाया; तू मुझसे बलवन्त है, इस कारण तू ११११ १११ १११११११ ११ ११११\*। दिन भर मेरी हँसी होती है; सब कोई मुझसे ठट्टा करते हैं।

8 क्योंकि जब मैं बातें करता हूँ, तब मैं जोर से पुकार पुकारकर ललकारता हूँ, “उपद्रव और उत्पात हुआ, हाँ

उत्पात!” क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और ठट्टा का कारण होता रहता है।

9 यदि मैं कहूँ, “मैं उसकी चर्चा न करूँगा न उसके नाम से बोलूँगा,” तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते-रोकते थक गया पर मुझसे रहा नहीं जाता। (1 22222 9:16)

10 मैंने बहुतों के मुँह से अपनी निन्दा सुनी है। चारों ओर भय ही भय है! मेरी जान-पहचान के सब जो मेरे ठोकर खाने की बाट जोहते हैं, वे कहते हैं, “उसके दोष बताओ, तब हम उनकी चर्चा फैला देंगे। कदाचित् वह धोखा खाए, तो हम उस पर प्रबल होकर, उससे बदला लेंगे।”

11 परन्तु यहोवा मेरे साथ है, वह भयंकर वीर के समान है; इस कारण मेरे सतानेवाले प्रबल न होंगे, वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए उन्हें बहुत लज्जित होना पड़ेगा। उनका अपमान सदैव बना रहेगा और कभी भूला न जाएगा।

12 हे सेनाओं के यहोवा, हे धर्मियों के परखनेवाले और हृदय और मन के ज्ञाता, जो बदला तू उनसे लेगा, उसे मैं देखूँ, क्योंकि मैंने अपना मुकद्दमा तेरे ऊपर छोड़ दिया है।

13 22222 22 2222 2222; यहोवा की स्तुति करो! क्योंकि वह दरिद्र जन के प्राण को कुकर्मियों के हाथ से बचाता है।

22222222 22 222 22 2222222

14 श्रापित हो वह दिन जिसमें मैं उत्पन्न हुआ! जिस दिन मेरी माता ने मुझ को जन्म दिया वह धन्य न हो!

15 श्रापित हो वह जन जिसने मेरे पिता को यह समाचार देकर उसको बहुत आनन्दित किया कि तेरे लड़का उत्पन्न हुआ है।

16 उस जन की दशा उन नगरों की सी हो जिन्हें यहोवा ने बिन दया ढा दिया; उसे सवेरे तो चिल्लाहट और दोपहर को युद्ध की ललकार सुनाई दिया करे,

17 क्योंकि उसने मुझे गर्भ ही में न मार डाला कि मेरी माता का गर्भाशय ही मेरी कब्र होती, और मैं उसी में सदा पड़ा रहता।

18 मैं क्यों उत्पात और शोक भोगने के लिये जन्मा और कि अपने जीवन में परिश्रम और दुःख देखूँ, और अपने दिन नामधराई में व्यतीत करूँ?

## 21

2222222222 22 222222 222222222

1 यह वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास उस समय पहुँचा जब सिदकिय्याह राजा ने उसके पास मल्किय्याह के पुत्र पशहूर और मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह के हाथ से यह कहला भेजा,

2 “हमारे लिये यहोवा से पूछ, क्योंकि बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहा है; कदाचित् यहोवा हम से 2222 22 222222222222222 22 22222222\* ऐसा व्यवहार करे कि वह हमारे पास से चला जाए।”

3 तब यिर्मयाह ने उनसे कहा, “तुम सिदकिय्याह से यह कहो,

4 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देखो, युद्ध के जो हथियार तुम्हारे हाथों में हैं, जिनसे तुम बाबेल के राजा और शहरपनाह के बाहर घेरनेवाले कसदियों से लड़ रहे हो, उनको मैं लौटाकर इस नगर के बीच में इकट्ठा करूँगा;

5 और मैं स्वयं हाथ बढ़ाकर और बलवन्त भुजा से, और क्रोध और जलजलाहट और बड़े क्रोध में आकर तुम्हारे विरुद्ध लड़ूँगा।

6 मैं इस नगर के रहनेवालों को क्या मनुष्य, क्या पशु सब को मार डालूँगा; वे बड़ी मरी से मरेँगे।

7 उसके बाद, यहोवा की यह वाणी है, हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, मैं तुझे, तेरे कर्मचारियों और लोगों को वरन् जो लोग इस नगर में मरी, तलवार और अकाल से बचे रहेंगे उनको बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर और उनके प्राण के शत्रुओं के वश में कर दूँगा। वह उनको तलवार से मार डालेगा; उन पर न तो वह तरस खाएगा, न कुछ कोमलता दिखाएगा और न कुछ दया करेगा। (2222 21:24)

8 “इस प्रजा के लोगों से कह कि यहोवा यह कहता है, देखो, मैं तुम्हारे सामने जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग भी बताता हूँ।

9 जो कोई इस नगर में रहे वह तलवार, अकाल और मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई निकलकर उन कसदियों के पास जो तुम को घेर रहे हैं भाग जाए वह जीवित रहेगा, और उसका प्राण बचेगा।

10 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैंने इस नगर की ओर अपना मुख भलाई के लिये नहीं, वरन् बुराई ही के लिये किया है; यह बाबेल के राजा के वश में पड़ जाएगा, और वह इसको फुँकवा देगा।

† 20:13 22222 22 2222 2222: यिर्मयाह की बाहरी परिस्थितियाँ अपरिवर्तनीय थीं परन्तु वह परमेश्वर में विश्वास में शान्ति पाता था। \* 21:2 2222 22 22222222222222 22 22222222: राजा और उसके दूत ऐसा उत्तर चाहते थे जैसा यिर्मयाह ने पूर्व स्थितियों में दिए थे।

११

“यहूदा के राजकुल के लोगों से कह, ‘यहोवा का वचन सुनो

१२ हे दाऊद के घराने! यहोवा यह कहता है, भोर को [१२:१२] [१२:१२], और लुटे हुए को अंधेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ, नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरे क्रोध की आग भड़केगी, और ऐसी जलती रहेगी कि कोई उसे बुझा न सकेगा।’

१३ “हे तराई में रहनेवाली और समथर देश की चट्टान; तुम जो कहते हो, ‘हम पर कौन चढ़ाई कर सकेगा, और हमारे वासस्थान में कौन प्रवेश कर सकेगा?’ यहोवा कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।

१४ और यहोवा की वाणी है कि मैं तुम्हें दण्ड देकर तुम्हारे कामों का फल तुम्हें भुगतवाऊँगा। मैं उसके वन में आग लगाऊँगा, और उसके चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा।”

## 22

१

यहोवा ने यह कहा, “यहूदा के राजा के भवन में उतरकर यह वचन कह,

२ हे दाऊद की गद्दी पर विराजमान यहूदा के राजा, तू अपने कर्मचारियों और अपनी प्रजा के लोगों समेत जो इन फाटकों से आया करते हैं, यहोवा का वचन सुन।

३ यहोवा यह कहता है, न्याय और धार्मिकता के काम करो; और लुटे हुए को अंधेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ। और परदेशी, अनाथ और विधवा पर अंधेर व उपद्रव मत करो, न इस स्थान में निर्दोषों का लहू बहाओ।

४ देखो, यदि तुम ऐसा करोगे, तो इस भवन के फाटकों से होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए अपने-अपने कर्मचारियों और प्रजा समेत प्रवेश किया करेंगे।

५ परन्तु, यदि तुम इन बातों को न मानो तो, मैं अपनी ही सौगन्ध खाकर कहता हूँ, यहोवा की यह वाणी है, कि यह भवन उजाड़ हो जाएगा। (१२:१२) 23:38, (१२:१२) 13:35)

६ क्योंकि यहोवा यहूदा के राजा के इस भवन के विषय में यह कहता है, तू मुझे गिलाद देश सा और लबानोन के शिखर सा दिखाई पड़ता है, परन्तु निश्चय मैं तुझे [१२:१२] [१२:१२] बनाऊँगा।

† 21:12 [१२:१२] [१२:१२]: जैसे पूर्वकाल में मनुष्यों में न्याय था। मनुष्यों का कल्याण राजा के व्यक्तिगत गुणों पर निर्भर करता था।

\* 22:6 [१२:१२] [१२:१२]: यदि दाऊद का घराना परमेश्वर का वचन नहीं सुनेगा तो वह वर्तमान में चाहे लबानोन का सा महान हो, तौभी परमेश्वर उसे जंगल बना देगा।

७ मैं नाश करनेवालों को हथियार देकर तेरे विरुद्ध भेजूँगा; वे तेरे सुन्दर देवदारों को काटकर आग में झोंक देंगे।

८ जाति-जाति के लोग जब इस नगर के पास से निकलेंगे तब एक दूसरे से पूछेंगे, ‘यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा क्यों की है?’

९ तब लोग कहेंगे, ‘इसका कारण यह है कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत् किया और उनकी उपासना भी की।’”

१०

मरे हुए के लिये मत रोओ, उसके लिये विलाप मत करो। उसी के लिये फूट फूटकर रोओ जो परदेश चला गया है, क्योंकि वह लौटकर अपनी जन्म-भूमि को फिर कभी देखने न पाएगा।

११ क्योंकि यहूदा के राजा योशिय्याह का पुत्र शल्लूम, जो अपने पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा था और इस स्थान से निकल गया, उसके विषय में यहोवा यह कहता है “वह फिर यहाँ लौटकर न आने पाएगा।

१२ वह जिस स्थान में बँधुआ होकर गया है उसी में मर जाएगा, और इस देश को फिर कभी देखने न पाएगा।”

१३

“उस पर हाथ जो अपने घर को अधर्म से और अपनी उपरौठी कोठरियों को अन्याय से बनवाता है; जो अपने पड़ोसी से बेगारी में काम कराता है और उसकी मजदूरी नहीं देता।

१४ वह कहता है, ‘मैं अपने लिये लम्बा-चौड़ा घर और हवादार ऊपरी कोठरी बना लूँगा,’ और वह खिड़कियाँ बनाकर उन्हें देवदार की लकड़ी से पाट लेता है, और सिन्दूर से रंग देता है।

१५ तू जो देवदार की लकड़ी का अभिलाषी है, क्या इस रीति से तेरा राज्य स्थिर रहेगा। देख, तेरा पिता न्याय और धार्मिकता के काम करता था, और वह खाता पीता और सुख से भी रहता था!

१६ वह इस कारण सुख से रहता था क्योंकि वह दीन और दरिद्र लोगों का न्याय चुकाता था। क्या यही मेरा ज्ञान रखना नहीं है? यहोवा की यह वाणी है।

१७ परन्तु तू केवल अपना ही लाभ देखता है, और निर्दोष की हत्या करने और अंधेर और उपद्रव करने में अपना मन और दृष्टि लगाता है।”

18 इसलिए योशियाह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यहोवा यह कहता है: “जैसे लोग इस रीति से कहकर रोते हैं, ‘हाय मेरे भाई, हाय मेरी बहन!’ इस प्रकार कोई ‘हाय मेरे प्रभु,’ या ‘हाय तेरा वैभव,’ कहकर उसके लिये विलाप न करेगा।

19 वरन् उसको गदहे के समान मिट्टी दी जाएगी, वह घसीट कर यरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा।”

20 “लबानोन पर चढ़कर हाय-हाय कर, तब बाशान जाकर ऊँचे स्वर से चिल्ला; फिर अबारीम पहाड़ पर जाकर हाय-हाय कर, क्योंकि तेरे सब मित्र नाश हो गए हैं।

21 तेरे सुख के समय मैंने तुझको चिताया था, परन्तु तूने कहा, ‘मैं तेरी न सुनूँगी।’ युवावस्था ही से तेरी चाल ऐसी है कि तू मेरी बात नहीं सुनती।

22 तेरे सब चरवाहे वायु से उड़ाए जाएँगे, और तेरे मित्र बंधुआई में चले जाएँगे; निश्चय तू उस समय अपनी सारी बुराइयों के कारण लज्जित होगी और तेरा मुँह काला हो जाएगा।

23 **हे देवदार में अपना घोंसला बनानेवाली, जब तुझको जच्चा की सी पीड़ाएँ उठें तब तू व्याकुल हो जाएगी!**”

**यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध,**

24 “यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध, चाहे यहोयाकीम का पुत्र यहूदा का राजा कोन्याह, मेरे दाहिने हाथ की मुहर वाली अंगूठी भी होता, तो भी मैं उसे उतार फेंकता।

25 मैं तुझे तेरे प्राण के खोजियों के हाथ, और जिनसे तू डरता है उनके अर्थात् बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर और कसदियों के हाथ में कर दूँगा।

26 मैं तुझे तेरी जननी समेत एक पराएँ देश में जो तुम्हारी जन्म-भूमि नहीं है फेंक दूँगा, और तुम वहीं मर जाओगे।

27 परन्तु जिस देश में वे लौटने की बड़ी लालसा करते हैं, वहाँ कभी लौटने न पाएँगे।”

28 क्या, यह पुरुष कोन्याह तुच्छ और टूटा हुआ बर्तन है? क्या यह निकम्मा बर्तन है? फिर वह वंश समेत अनजाने देश में क्यों निकालकर फेंक दिया जाएगा?

29 हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन!

30 यहोवा यह कहता है, “इस पुरुष को निर्वंश लिखो, उसका जीवनकाल कुशल से न बीतेगा; और न उसके वंश में से कोई समृद्ध होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान या यहूदियों पर प्रभुता करनेवाला होगा।”

## 23

**यहोवा की यह वाणी है: हे देवदार में अपना घोंसला बनानेवाली,**

1 “उन चरवाहों पर हाय जो **यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध,** को तितर-बितर करते और नाश करते हैं,” यहोवा यह कहता है।

2 इसलिए इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरवाहों से यह कहता है, “तुम ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, वरन् उनको तितर-बितर किया और जबरन निकाल दिया है, इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों का दण्ड दूँगा। **(यिर्मयाह 10:8,12,13)**

3 तब मेरी भेड़-बकरियाँ जो बची हैं, उनको मैं उन सब देशों में से जिनमें मैंने उन्हें जबरन भेज दिया है, स्वयं ही उन्हें लौटा लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठा करूँगा, और वे फिर फूलें-फलेंगी।

4 मैं उनके लिये ऐसे चरवाहे नियुक्त करूँगा जो उन्हें चराएँगे; और तब वे न तो फिर डरेंगी, न विस्मित होंगी और न उनमें से कोई खो जाएगी, यहोवा की यह वाणी है।

**यहोवा की यह वाणी है: देख ऐसे दिन आते**

5 “यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक **यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध,** उगाऊँगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धार्मिकता से प्रभुता करेगा।

6 उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे और यहोवा उसका नाम ‘यहोवा हमारी धार्मिकता’ रखेगा। **(यिर्मयाह 7:42, 1 यिर्मयाह 1:30)**

7 “इसलिए देख, यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आएँगे जिनमें लोग फिर न कहेंगे, ‘यहोवा जो हम इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध,’

8 परन्तु वे यह कहेंगे, ‘यहोवा जो इस्राएल के घराने को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी जहाँ उसने हमें

† 22:23 **यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध,** लबानोन किसी भी भव्य स्थान के लिए उपमा था। यहाँ वह यरूशलेम के लिए काम में ली गई है परन्तु इसका विशेष संदर्भ राजाओं से है जो देवदार की छत के राजमहलों में निवास करने पर घमण्ड करते थे। \* 23:1 **यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध,** मेरी चरागाह की, भेड़ों का मैं चरवाहा हूँ। वे लोग राजा के नहीं परमेश्वर के थे। † 23:5 **यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध,** अंकुर वह है जिसमें जड़ निकलकर बढ़ती है, यदि वह नष्ट कर दिया जाये तो जड़ भी नष्ट हो जाती है।





विरुद्ध हूँ।

31 फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो भविष्यद्वक्ता 'उसकी यह वाणी है', ऐसी झूठी वाणी कहकर अपनी-अपनी जीभ हिलाते हैं, मैं उनके भी विरुद्ध हूँ।

32 यहोवा की यह भी वाणी है कि जो बिना मेरे भेजे या बिना मेरी आज्ञा पाए स्वप्न देखने का झूठा दावा करके भविष्यद्वक्ता करते हैं, और उसका वर्णन करके मेरी प्रजा को झूठे घमण्ड में आकर भरमाते हैं, उनके भी मैं विरुद्ध हूँ; और उनसे मेरी प्रजा के लोगों का कुछ लाभ न होगा।

22:22 22:22 22:22 22:22

33 "यदि साधारण लोगों में से कोई जन या कोई भविष्यद्वक्ता या याजक तुम से पूछे, 'यहोवा ने क्या प्रभावशाली वचन कहा है?' तो उससे कहना, 'क्या प्रभावशाली वचन? यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम को त्याग दूँगा।'

34 और जो भविष्यद्वक्ता या याजक या साधारण मनुष्य 'यहोवा का कहा हुआ भारी वचन' ऐसा कहता रहे, उसको घराने समेत मैं दण्ड दूँगा।

35 तुम लोग एक दूसरे से और अपने-अपने भाई से यह पूछना, 'यहोवा ने क्या उत्तर दिया?' या 'यहोवा ने क्या कहा है?'

36 'यहोवा का कहा हुआ भारी वचन', इस प्रकार तुम भविष्य में न कहना नहीं तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का कारण हो जाएगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सेनाओं का यहोवा जो जीवित परमेश्वर है, तुम लोगों ने उसके वचन बिगाड़ दिए हैं।

37 तू भविष्यद्वक्ता से यह पूछ, 'यहोवा ने तुझे क्या उत्तर दिया?'

38 या 'यहोवा ने क्या कहा है?' यदि तुम 'यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन' इसी प्रकार कहोगे, तो यहोवा का यह वचन सुनो, 'मैंने तो तुम्हारे पास सन्देश भेजा है, भविष्य में ऐसा न कहना कि "यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन।" परन्तु तुम यह कहते ही रहते हो, "यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन।"'

39 इस कारण देखो, मैं तुम को बिलकुल भूल जाऊँगा और तुम को और इस नगर को जिसे मैंने तुम्हारे पुरखाओं को, और तुम को भी दिया है, त्याग कर अपने सामने से दूर कर दूँगा।

40 और मैं ऐसा करूँगा कि तुम्हारी नामधराई और अनादर सदा बना रहेगा; और कभी भूला न जाएगा।"

## 24

22:22 22:22 22:22 22:22

1 जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर, यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को, और यहूदा के हाकिमों और लोहारों और अन्य कारीगरों को बन्दी बनाकर यरूशलेम से बाबेल को ले गया, तो उसके बाद यहोवा ने मुझ को अपने मन्दिर के सामने रखे हुए अंजीरों के दो टोकरे दिखाए।

2 एक टोकरे में तो पहले से पके अच्छे-अच्छे 22:22\* थे, और दूसरे टोकरे में बहुत निकम्मे अंजीर थे, वरन् वे ऐसे निकम्मे थे कि खाने के योग्य भी न थे।

3 फिर यहोवा ने मुझसे पूछा, "हे यिर्मयाह, तुझे क्या देख पड़ता है?" मैंने कहा, "अंजीर; जो अंजीर अच्छे हैं वह तो बहुत ही अच्छे हैं, परन्तु जो निकम्मे हैं, वह बहुत ही निकम्मे हैं; वरन् ऐसे निकम्मे हैं कि खाने के योग्य भी नहीं हैं।"

4 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

5 "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जैसे अच्छे अंजीरों को, वैसे ही मैं यहूदी बन्दियों को जिन्हें मैंने इस स्थान से कसदियों के देश में भेज दिया है, देखकर प्रसन्न होऊँगा।

6 मैं उन पर कृपादृष्टि रखूँगा और उनको इस देश में लौटा ले आऊँगा; और उन्हें नाश न करूँगा, परन्तु बनाऊँगा; उन्हें उखाड़ न डालूँगा, परन्तु लगाए रखूँगा।

7 मैं उनका ऐसा मन कर दूँगा कि वे मुझे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, क्योंकि वे मेरी ओर सारे मन से फिरेंगे।

8 "परन्तु जैसे निकम्मे अंजीर, निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते, उसी प्रकार से मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके हाकिमों और बचे हुए यरूशलेमियों को, जो 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22, छोड़ दूँगा।

9 इस कारण वे पृथ्वी के राज्य-राज्य में मारे-मारे फिरते हुए दुःख भोगते रहेंगे; और जितने स्थानों में मैं उन्हें जबरन निकाल दूँगा, उन सभी में वे नामधराई और दृष्टांत और श्राप का विषय होंगे।

\* 24:2 22:22: अंजीर का वृक्ष तीन फसल देता है जिनमें से प्रथम फसल सबसे अधिक स्वादिष्ट मानी जाती है। † 24:8 22:22 22:22 22:22 22:22: न तो वे जो यहाँ आहाज के साथ बन्दी बनकर मिस्र में ले जाये गये हैं और न जो भागकर मिस्र गये हैं आशीषों में सहभागी होंगे। यहूदी राष्ट्र का नया जीवन केवल बाबेल में रहनेवाले निर्वासितों का काम होगा।

10 और मैं उनमें तलवार चलाऊँगा, और अकाल और मरी फैलाऊँगा, और अन्त में इस देश में से जिसे मैंने उनके पुरखाओं को और उनको दिया, वे मिट जाएँगे।”

## 25

यिर्मयाह 25:1-23

1 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में जो बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य का पहला वर्ष था, यहोवा का जो वचन यिर्मयाह नबी के पास पहुँचा,

2 उसे यिर्मयाह नबी ने सब यहूदियों और यरूशलेम के सब निवासियों को बताया, वह यह है:

3 “आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के राज्य के तेरहवें वर्ष से लेकर आज के दिन तक अर्थात् तेईस वर्ष से यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचता आया है; और मैं उसे बड़े यत्न के साथ तुम से कहता आया हूँ; परन्तु तुम ने उसे नहीं सुना।

4 यद्यपि यहोवा तुम्हारे पास अपने सारे दासों अथवा भविष्यद्वक्ताओं को भी यह कहने के लिये बड़े यत्न से भेजता आया है

5 कि ‘अपनी-अपनी बुरी चाल और अपने-अपने बुरे कामों से [यिर्मयाह 25:1-23](#)\*: तब जो देश यहोवा ने प्राचीनकाल में तुम्हारे पितरों को और तुम को भी सदा के लिये दिया है उस पर बसे रहने पाओगे; परन्तु तुम ने न तो सुना और न कान लगाया है।

6 और दूसरे देवताओं के पीछे होकर उनकी उपासना और उनको दण्डवत् मत करो, और न अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाओ; तब मैं तुम्हारी कुछ हानि न करूँगा।’

7 यह सुनने पर भी तुम ने मेरी नहीं मानी, वरन् अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाते आए हो जिससे तुम्हारी हानि ही हो सकती है, यहोवा की यही वाणी है।

8 “इसलिए सेनाओं का यहोवा यह कहता है: तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने,

9 इसलिए सुनो, मैं उत्तर में रहनेवाले सब कुलों को बुलाऊँगा, और अपने दास बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूँगा; और उन सभी को इस देश और इसके निवासियों के विरुद्ध और इसके आस-पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊँगा; और इन सब देशों का मैं सत्यानाश करके उन्हें ऐसा उजाड़ दूँगा कि लोग इन्हें

देखकर ताली बजाएँगे; वरन् ये सदा उजड़े ही रहेंगे, यहोवा की यही वाणी है।

10 और मैं ऐसा करूँगा कि इनमें न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, और न दुल्हे या दुल्हन का, और न चक्की का भी शब्द सुनाई पड़ेगा और न इनमें दिया जलेगा। ([यिर्मयाह 25:1-23](#). 18:22,23)

11 सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियाँ सत्तर वर्ष तक बाबेल के राजा के अधीन रहेंगी।

12 जब सत्तर वर्ष बीत चुकें, तब मैं बाबेल के राजा और उस जाति के लोगों और कसूदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म का दण्ड दूँगा, यहोवा की यह वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूँगा।

13 मैं उस देश में अपने वे सब वचन पूरे करूँगा जो मैंने उसके विषय में कहे हैं, और जितने वचन यिर्मयाह ने सारी जातियों के विरुद्ध भविष्यद्वक्ता करके पुस्तक में लिखे हैं।

14 क्योंकि बहुत सी जातियों के लोग और बड़े-बड़े राजा भी उनसे अपनी सेवा कराएँगे; और मैं उनको उनकी करनी का फल भुगतवाऊँगा।”

यिर्मयाह 25:1-23

15 इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह कहा, “मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब जातियों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ। ([यिर्मयाह 25:1-23](#). 14:10, [यिर्मयाह 25:1-23](#). 15:7 [यिर्मयाह 25:1-23](#). 16:19)

16 वे उसे पीकर उस तलवार के कारण जो मैं उनके बीच में चलाऊँगा लड़खड़ाएँगे और बावले हो जाएँगे।”

17 इसलिए मैंने यहोवा के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब जातियों को जिनके पास यहोवा ने मुझे भेजा, पिला दिया।

18 अर्थात् यरूशलेम और यहूदा के नगरों के निवासियों को, और उनके राजाओं और हाकिमों को पिलाया, ताकि उनका देश उजाड़ हो जाए और लोग ताली बजाएँ, और उसकी उपमा देकर श्राप दिया करें; जैसा आजकल होता है।

19 और मिस्र के राजा फ़िरौन और उसके कर्मचारियों, हाकिमों, और सारी प्रजा को;

20 और सब विदेशी मनुष्यों की जातियों को और ऊस देश के सब राजाओं को; और पलिश्तियों के देश के सब राजाओं को और अश्कलोन, गाज़ा और एक्रोन के और अश्दोद के बचे हुए लोगों को;

21 और एदोमियों, मोआबियों और अम्मोनियों के सारे राजाओं को;

\* 25:5 [यिर्मयाह 25:1-23](#): मन फिराओ। मनुष्यों के लिए यह हर समय परमेश्वर की पुकार है।

22 और सोर के और सीदोन के सब राजाओं को, और समुद्र पार के देशों के राजाओं को;

23 फिर ददानियों, तेमाइयों और बूजियों को और जितने अपने गाल के बालों को मुँण्डा डालते हैं, उन सभी को भी;

24 और अरब के सब राजाओं को और जंगल में रहनेवाले दोगले मनुष्यों के सब राजाओं को;

25 और जिम्मी, एलाम और मादै के सब राजाओं को;

26 और क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को एक संग पिलाया, इस प्रकार धरती भर में रहनेवाले जगत के राज्यों के सब लोगों को मैंने पिलाया। और इन सब के बाद शेशक के राजा को भी पीना पड़ेगा।

27 “तब तू उनसे यह कहना, ‘सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, यह कहता है, [22:22, 22:22] और उलटी करो, गिर पड़ो और फिर कभी न उठो, क्योंकि यह उस तलवार के कारण से होगा जो मैं तुम्हारे बीच में चलाऊँगा।’ (22:22, 18:3)

28 “यदि वे तेरे हाथ से यह कटोरा लेकर पीने से इन्कार करें तो उनसे कहना, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि तुम को निश्चय पीना पड़ेगा।

29 देखो, जो नगर मेरा कहलाता है, मैं पहले उसी में विपत्ति डालने लगूँगा, फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहरके बचोगे? तुम निर्दोष ठहरके न बचोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहनेवालों पर तलवार चलाने पर हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।’ (1 22:4:17)

[22:22, 22:22, 22:22]

30 “इतनी बातें भविष्यद्वाणी की रीति पर उनसे कहकर यह भी कहना, ‘[22:22, 22:22, 22:22], और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा; वह अपनी चराई के स्थान के विरुद्ध जोर से गरजेगा; वह पृथ्वी के सारे निवासियों के विरुद्ध भी दाख लताड़नेवालों के समान ललकारेगा। (22:22, 10:11)

31 पृथ्वी की छोर तक भी कोलाहल होगा, क्योंकि सब जातियों से यहोवा का मुकद्दमा है; वह सब मनुष्यों से वाद-विवाद करेगा, और दुष्टों को तलवार के वश में कर देगा।’

32 “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: देखो, विपत्ति एक जाति से दूसरी जाति में फैलेगी, और बड़ी आँधी पृथ्वी की छोर से उठेगी!

33 उस समय यहोवा के मारे हुआ की लोथें पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक पड़ी रहेंगी। उनके लिये

कोई रोने-पीटनेवाला न रहेगा, और उनकी लोथें न तो बटोरी जाएँगी और न कब्रों में रखी जाएँगी; वे भूमि के ऊपर खाद के समान पड़ी रहेंगी।

34 हे चरवाहों, हाय-हाय करो और चिल्लाओ, हे बलवन्त मेढों और बकरो, राख में लौटो, क्योंकि तुम्हारे वध होने के दिन आ पहुँचे हैं, और मैं मनोहर बर्तन के समान तुम्हारा सत्यानाश करूँगा। (22:22, 5:5)

35 उस समय न तो चरवाहों के भागने के लिये कोई स्थान रहेगा, और न बलवन्त मेढे और बकरे भागने पाएँगे।

36 चरवाहों की चिल्लाहट और बलवन्त मेढों और बकरो के मिमियाने का शब्द सुनाई पड़ता है! क्योंकि यहोवा उनकी चराई को नाश करेगा,

37 और यहोवा के क्रोध भड़कने के कारण शान्ति के स्थान नष्ट हो जाएँगे, जिन वासस्थानों में अब शान्ति है, वे नष्ट हो जाएँगे।

38 युवा सिंह के समान वह अपने ठौर को छोड़कर निकलता है, क्योंकि अंधेर करनेवाली तलवार और उसके भड़के हुए कोप के कारण उनका देश उजाड़ हो गया है।”

## 26

[22:22, 22:22, 22:22, 22:22]

1 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के आरम्भ में, यहोवा की ओर से यह वचन पहुँचा,

2 “यहोवा यह कहता है: यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा होकर, यहूदा के सब नगरों के लोगों के सामने जो यहोवा के भवन में दण्डवत् करने को आएँ, ये वचन जिनके विषय उनसे कहने की आज्ञा मैं तुझे देता हूँ कह दे; उनमें से कोई वचन मत रख छोड़।

3 सम्भव है कि वे सुनकर अपनी-अपनी बुरी चाल से फिरें और मैं उनकी हानि करने से पछताऊँ जो उनके बुरे कामों के कारण मैंने ठाना था।

4 इसलिए तू उनसे कह, ‘यहोवा यह कहता है: यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो मैंने तुम को सुनवा दी है न चलो,

5 और न मेरे दास भविष्यद्वाक्ताओं के वचनों पर कान लगाओ, (जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्न करके भेजता आया हूँ, परन्तु तुम ने उनकी नहीं सुनी),

6 तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ दूँगा, और इस नगर का ऐसा सत्यानाश कर दूँगा कि पृथ्वी

† 25:27 [22:22, 22:22, 22:22]: ये उपमाएँ उन देशों की पतित अवस्था को दर्शाती हैं। उन्होंने प्रकोप की मदिरा पी है। ‡ 25:30 [22:22, 22:22]: अपनी चारागाह-यहूदिया के विरुद्ध-तम्बुओं में रहनेवाली भयभीत भेड़ों को नाश करने के लिए यहोवा सिंह के समान आएगा।

की सारी जातियों के लोग उसकी उपमा दे देकर श्राप दिया करेंगे।”

७ जब यिर्मयाह ये वचन यहोवा के भवन में कह रहा

था, तब याजक और भविष्यद्वक्ता और सब साधारण लोग सुन रहे थे।

8 जब यिर्मयाह सब कुछ जिसे सारी प्रजा से कहने की आज्ञा यहोवा ने दी थी कह चुका, तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं और सब साधारण लोगों ने यह कहकर उसको पकड़ लिया, “निश्चय तुझे प्राणदण्ड मिलेगा!

9 तूने क्यों यहोवा के नाम से यह भविष्यद्वक्ता की ‘*७७७ ७७७७ ७७ ७७७७७ ७७ ७७७७७*’, और यह नगर ऐसा उजड़ेगा कि उसमें कोई न रह जाएगा?” इतना कहकर सब साधारण लोगों ने यहोवा के भवन में यिर्मयाह के विरुद्ध भीड़ लगाई।

10 यहूदा के हाकिम ये बातें सुनकर, राजा के भवन से यहोवा के भवन में चढ़ आए और उसके नये फाटक में बैठ गए।

11 तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं ने हाकिमों और सब लोगों से कहा, “यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि इसने इस नगर के विरुद्ध ऐसी भविष्यद्वक्ता की है जिसे तुम भी अपने कानों से सुन चुके हो।” **(७७७७७७७७. 6:11-14)**

१२ तब यिर्मयाह ने सब हाकिमों और सब लोगों

से कहा, “जो वचन तुम ने सुने हैं, उसे *७७७७७७ ७७ ७७७७७ ७७ ७७७७ ७७ ७७७७ ७७ ७७ ७७७७ ७७ ७७७७७७७७७ ७७ ७७७७७ ७७ ७७७७७ ७७ ७७७७७ ७७ ७७७७७ ७७ ७७७७७ ७७*।

13 इसलिए अब अपना चाल चलन और अपने काम सुधारो, और अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानो; तब यहोवा उस विपत्ति के विषय में जिसकी चर्चा उसने तुम से की है, पछताएगा।

14 देखो, मैं तुम्हारे वश में हूँ; जो कुछ तुम्हारी दृष्टि में भला और ठीक हो वही मेरे साथ करो।

15 पर यह निश्चय जानो, कि यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो अपने को और इस नगर को और इसके निवासियों को निर्दोष के हत्यारे बनाओगे; क्योंकि सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास यह सब वचन सुनाने के लिये भेजा है।”

१६ तब यहोवा ने यहोवा के भवन में

16 तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और नबियों से कहा, “यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य नहीं है क्योंकि उसने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से हम से कहा है।”

17 तब देश के पुरनियों में से कितनों ने उठकर प्रजा की सारी मण्डली से कहा,

18 “यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में मोरेशेतवासी मीका भविष्यद्वक्ता कहता था, उसने यहूदा के सारे लोगों से कहा: ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा और यरूशलेम खण्डहर हो जाएगा, और भवनवाला पर्वत जंगली स्थान हो जाएगा।’

19 क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने या किसी यहूदी ने उसको कहीं मरवा डाला? क्या उस राजा ने यहोवा का भय न माना और उससे विनती न की? तब यहोवा ने जो विपत्ति उन पर डालने के लिये कहा था, उसके विषय क्या वह न पछताया? ऐसा करके हम अपने प्राणों की बड़ी हानि करेंगे।”

२० फिर शमायाह का पुत्र ऊरिय्याह नामक

किर्यत्यारीम का एक पुरुष जो यहोवा के नाम से भविष्यद्वक्ता कहता था उसने भी इस नगर और इस देश के विरुद्ध ठीक ऐसी ही भविष्यद्वक्ता की जैसी यिर्मयाह ने अभी की है।

21 जब यहोयाकीम राजा और उसके सब वीरों और सब हाकिमों ने उसके वचन सुने, तब राजा ने उसे मरवा डालने का यत्न किया; और ऊरिय्याह यह सुनकर डर के मारे मिस्र को भाग गया।

22 तब यहोयाकीम राजा ने मिस्र को लोग भेजे अर्थात् अकबोर के पुत्र *७७७७७७७७* को कितने और पुरुषों के साथ मिस्र को भेजा।

23 वे ऊरिय्याह को मिस्र से निकालकर यहोयाकीम राजा के पास ले आए; और उसने उसे तलवार से मरवाकर उसकी लोथ को साधारण लोगों की कब्रों में फिकवा दिया।

24 परन्तु शापान का पुत्र अहीकाम यिर्मयाह की सहायता करने लगा और वह लोगों के वश में वध होने के लिये नहीं दिया गया।

## 27

२७ यिर्मयाह ने यहोवा के भवन में

२७ यिर्मयाह ने यहोवा के भवन में

\* 26:9 *७७ ७७७ ७७७७ ७७ ७७७७ ७७७७७ ७७ ७७७७७*: यिर्मयाह पर यह दोष लगाया गया था कि वह झूठी भविष्यद्वक्ता करता है जिसका दण्ड मृत्यु था। वे विश्वास करते थे कि यरूशलेम का शीलो के समान उजड़ जाना असंभव था। † 26:12 *७७७७७ ७७ ७७ ७७७७७ ... ७७७७ ७७ ७७७७७ ७७७ ७७७७७ ७७*: यिर्मयाह का उत्तर सीधा और स्पष्ट था। उसने पुष्टि करते हुए कहा, सच में यहोवा ने मुझे भेजा है परन्तु उसकी भविष्यद्वक्ता की एकमात्र उद्देश्य था कि वे मन फिरायें और आनेवाली बुराई टल जाए। ‡ 26:22 *७७७७७७७७*: सम्भवत राजा का ससुर

1 योशिय्याह के पुत्र, यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के आरम्भ में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा।

2 यहोवा ने मुझसे यह कहा, “बन्धन और जूए बनवाकर अपनी गर्दन पर रख।

3 तब उन्हें एदोम और मोआब और अम्मोन और सोर और सीदोन के राजाओं के पास, उन दूतों के हाथ भेजना जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास यरूशलेम में आए हैं।

4 उनको उनके स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना: ‘इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: अपने-अपने स्वामी से यह कहो कि

5 पृथ्वी को और पृथ्वी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मैंने बनाया, और जिस किसी को मैं चाहता हूँ उसी को मैं उन्हें दिया करता हूँ।

6 अब मैंने ये सब देश, अपने दास बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को आप ही दे दिए हैं; और मैदान के जीवजन्तुओं को भी मैंने उसे दिया है कि वे उसके अधीन रहें।

7 ये सब जातियाँ उसके और उसके बाद उसके बेटे और पोते के अधीन उस समय तक रहेंगी जब तक उसके भी देश का दिन न आए; तब बहुत सी जातियाँ और बड़े-बड़े राजा उससे भी अपनी सेवा करवाएँगे।

8 “पर जो जाति या राज्य बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन न हो और उसका जूआ अपनी गर्दन पर न ले ले, उस जाति को मैं तलवार, अकाल और मरी का दण्ड उस समय तक देता रहूँगा जब तक उसको उसके हाथ के द्वारा मिटा न दूँ, यहोवा की यही वाणी है।

9 इसलिए तुम लोग अपने भविष्यद्वक्ताओं और ~~????~~ ~~????????????????~~\* और टोनहों और तांत्रिकों की ओर चित्त मत लगाओ जो तुम से कहते हैं कि तुम को बाबेल के राजा के अधीन नहीं होना पड़ेगा।

10 क्योंकि वे तुम से झूठी भविष्यद्वक्ताणी करते हैं, जिससे तुम अपने-अपने देश से दूर हो जाओ और मैं आप तुम को दूर करके नष्ट कर दूँ।

11 परन्तु जो जाति बाबेल के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर लेकर उसके अधीन रहेगी उसको मैं उसी के देश में रहने दूँगा; और वह उसमें खेती करती हुई बसी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है।”

~~????????????????~~ ~~??~~ ~~????~~ ~~????????????~~

\* 27:9 ~~????~~ ~~????????????~~: जो लोग स्वप्न अपने विषय में देखते हैं। और उसका का अर्थ पूछने भावी कहनेवालों के पास जाते थे।

12 यहूदा के राजा सिदकिय्याह से भी मैंने ये बातें कहीं: “अपनी प्रजा समेत तू बाबेल के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर ले, और उसके और उसकी प्रजा के अधीन रहकर जीवित रह।

13 जब यहोवा ने उस जाति के विषय जो बाबेल के राजा के अधीन न हो, यह कहा है कि वह तलवार, अकाल और मरी से नाश होगी; तो फिर तू क्यों अपनी प्रजा समेत मरना चाहता है?

14 जो भविष्यद्वक्ता तुझ से कहते हैं, ‘तुझको बाबेल के राजा के अधीन न होना पड़ेगा,’ उनकी मत सुन; क्योंकि वे तुझ से झूठी भविष्यद्वक्ताणी करते हैं।

15 यहोवा की यह वाणी है कि मैंने उन्हें नहीं भेजा, वे मेरे नाम से झूठी भविष्यद्वक्ताणी करते हैं; और इसका फल यही होगा कि मैं तुझको देश से निकाल दूँगा, और तू उन नबियों समेत जो तुझ से भविष्यद्वक्ताणी करते हैं नष्ट हो जाएगा।”

16 तब याजकों और साधारण लोगों से भी मैंने कहा, “यहोवा यह कहता है, तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से यह भविष्यद्वक्ताणी करते हैं कि ‘यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबेल से लौटा दिए जाएँगे,’ उनके वचनों की ओर कान मत धरो, क्योंकि वे तुम से झूठी भविष्यद्वक्ताणी करते हैं।

17 उनकी मत सुनो, बाबेल के राजा के अधीन होकर और उसकी सेवा करके जीवित रहो।

18 यह नगर क्यों उजाड़ हो जाए? यदि वे भविष्यद्वक्ता भी हों, और यदि यहोवा का वचन उनके पास हो, तो वे सेनाओं के यहोवा से विनती करें कि जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गए हैं, वे बाबेल न जाने पाएँ।

19 क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि जो खम्भे और पीतल की नाँद, गंगाल और कुर्सियाँ और अन्य पात्र इस नगर में रह गए हैं,

20 जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर उस समय न ले गया जब वह यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को और यहूदा और यरूशलेम के सब कुलीनों को बन्दी बनाकर यरूशलेम से बाबेल को ले गया था,

21 जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गए हैं, उनके विषय में इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि वे भी बाबेल में पहुँचाए जाएँगे;

22 और जब तक मैं उनकी सुधि न लूँ तब तक वहीं रहेंगे, और तब मैं उन्हें लाकर इस स्थान में फिर रख

दूँगा, यहोवा की यही वाणी है।”

## 28

१ फिर उसी वर्ष, अर्थात् यहूदा के राजा सिदकिय्याह

के राज्य के चौथे वर्ष के पाँचवें महीने में, अज्जूर का पुत्र हनन्याह जो २१\* का एक भविष्यद्वक्ता था, उसने मुझसे यहोवा के भवन में, याजकों और सब लोगों के सामने कहा,

२ “इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है मैंने बाबेल के राजा के जूए को तोड़ डाला है।

३ यहोवा के भवन के जितने पात्र बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर इस स्थान से उठाकर बाबेल ले गया, उन्हें मैं दो वर्ष के भीतर फिर इसी स्थान में ले आऊँगा।

४ मैं यहूदा के राजा यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह और सब यहूदी बन्दियों को भी जो बाबेल को गए हैं, उनको भी इस स्थान में लौटा ले आऊँगा; क्योंकि मैंने बाबेल के राजा के जूए को तोड़ दिया है, यहोवा की यही वाणी है।”

५ तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से, याजकों और

उन सब लोगों के सामने जो यहोवा के भवन में खड़े हुए थे कहा,

६ “आमीन! यहोवा ऐसा ही करे; जो बातें तूने भविष्यद्वाणी करके कही हैं कि यहोवा के भवन के पात्र और सब बन्दी बाबेल से इस स्थान में फिर आएँगे, उन्हें यहोवा पूरा करे।

७ तो भी मेरा यह वचन सुन, जो मैं तुझे और सब लोगों को कह सुनाता हूँ।

८ जो भविष्यद्वक्ता प्राचीनकाल से मेरे और तेरे पहले होते आए थे, उन्होंने तो बहुत से देशों और बड़े-बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध और विपत्ति और मरी के विषय भविष्यद्वाणी की थी।

९ परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है।”

१० तब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने उस जूए को जो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर था, उतारकर तोड़ दिया।

\* 28:1 २१:१७ पुरोहितों का एक नगर (यहो. 21:17) हनन्याह सम्भवतः पुरोहित एवं भविष्यद्वक्ता था। † 28:16 २१:२२ परमेश्वर ने हनन्याह को भविष्यद्वाणी के लिए नहीं भेजा था, वह उसे मरने के लिए भेज रहा है।

११ और हनन्याह ने सब लोगों के सामने कहा, “यहोवा यह कहता है कि इसी प्रकार से मैं पूरे दो वर्ष के भीतर बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के जूए को सब जातियों की गर्दन पर से उतारकर तोड़ दूँगा।” तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता चला गया।

१२ जब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने यिर्मयाह

भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर से जूआ उतारकर तोड़ दिया, उसके बाद यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा;

१३ “जाकर हनन्याह से यह कह, ‘यहोवा यह कहता है कि तूने काठ का जूआ तो तोड़ दिया, परन्तु ऐसा करके तूने उसके बदले लोहे का जूआ बना लिया है।

१४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि मैं इन सब जातियों की गर्दन पर लोहे का जूआ रखता हूँ और वे बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन रहेंगे, और इनको उसके अधीन होना पड़ेगा, क्योंकि मैदान के जीवजन्तु भी मैं उसके वश में कर देता हूँ।”

१५ यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह भी कहा, “हे हनन्याह, देख यहोवा ने तुझे नहीं भेजा, तूने इन लोगों को झूठी आशा दिलाई है।

१६ इसलिए यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘देख, इसी वर्ष में तू मरेगा; क्योंकि तूने यहोवा की ओर से फिरने की बातें कही हैं।”

१७ इस वचन के अनुसार हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने में मर गया।

## 29

१ उसी वर्ष यिर्मयाह नबी ने इस आशय की पत्री, उन पुरनियों और भविष्यद्वक्ताओं और साधारण लोगों के पास भेजी जो बन्दियों में से बचे थे, जिनको नबूकदनेस्सर यरूशलेम से बाबेल को ले गया था।

२ यह पत्री उस समय भेजी गई, जब यकोन्याह राजा और राजमाता, खोजे, यहूदा और यरूशलेम के हाकिम, लोहार और अन्य कारीगर यरूशलेम से चले गए थे।

३ यह पत्री शापान के पुत्र एलासा और हिल्किय्याह के पुत्र गमर्याह के हाथ भेजी गई, जिन्हें यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के पास बाबेल को भेजा।

4 उसमें लिखा था: “जितने लोगों को मैंने [22222222 222 2222222 2222222 2222222 2222 222222222 22222 222]”, उन सभी से इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है।

5 घर बनाकर उनमें बस जाओ; बारियाँ लगाकर उनके फल खाओ।

6 ब्याह करके बेटे-बेटियाँ जन्माओ; और अपने बेटों के लिये स्त्रियाँ ब्याह लो और अपनी बेटियाँ पुरुषों को ब्याह दो, कि वे भी बेटे-बेटियाँ जन्माएँ; और वहाँ घटो नहीं वरन् बढ़ते जाओ।

7 परन्तु जिस नगर में मैंने तुम को बन्दी कराके भेज दिया है, उसके कुशल का यत्न किया करो, और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करो। क्योंकि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साथ रहोगे।

8 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा तुम से यह कहता है कि तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता और भावी कहनेवाले तुम्हारे बीच में हैं, वे तुम को बहकाने न पाएँ, और जो स्वप्न वे तुम्हारे निमित्त देखते हैं उनकी ओर कान मत लगाओ,

9 क्योंकि वे मेरे नाम से तुम को झूठी भविष्यद्वानी सुनाते हैं; मैंने उन्हें नहीं भेजा, मुझ यहोवा की यह वाणी है।

10 “यहोवा यह कहता है कि बाबेल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा।

11 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।

12 तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझसे प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा।

13 तुम मुझे ढूँढोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

14 मैं तुम्हें मिलूँगा, यहोवा की यह वाणी है, और बँधुआई से लौटा ले आऊँगा; और तुम को उन सब जातियों और स्थानों में से जिनमें मैंने तुम को जबरन निकाल दिया है, और तुम्हें इकट्ठा करके इस स्थान में लौटा ले आऊँगा जहाँ से मैंने तुम्हें बँधुआ करवाकर निकाल दिया था, यहोवा की यही वाणी है।

15 “तुम कहते तो हो कि यहोवा ने हमारे लिये बाबेल में भविष्यद्वक्ता प्रगट किए हैं।

16 परन्तु जो राजा दाऊद की गद्दी पर विराजमान है, और जो प्रजा इस नगर में रहती है, अर्थात् तुम्हारे जो भाई तुम्हारे संग बँधुआई में नहीं गए, उन सभी के विषय सेनाओं का यहोवा यह कहता है,

17 सुनो, मैं उनके बीच तलवार चलाऊँगा, अकाल, और मरी फैलाऊँगा; और उन्हें ऐसे घिनौने अंजीरों के समान करूँगा जो निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते।

18 मैं तलवार, अकाल और मरी लिए हुए उनका पीछा करूँगा, और ऐसा करूँगा कि वे पृथ्वी के राज्य-राज्य में मारे-मारे फिरेंगे, और उन सब जातियों में जिनके बीच मैं उन्हें जबरन कर दूँगा, उनकी ऐसी दशा करूँगा कि लोग उन्हें देखकर चकित होंगे और ताली बजाएँगे और उनका अपमान करेंगे, और उनकी उपमा देकर श्राप दिया करेंगे।

19 क्योंकि जो वचन मैंने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उनके पास बड़ा यत्न करके कहला भेजे हैं, उनको उन्होंने नहीं सुना, यहोवा की यही वाणी है।

20 “इसलिए हे सारे बन्दियों, जिन्हें मैंने यरूशलेम से बाबेल को भेजा है, तुम उसका यह वचन सुनो

21 “कोलायाह का पुत्र अहाब और मासेयाह का पुत्र सिदकिय्याह जो मेरे नाम से तुम को झूठी भविष्यद्वानी सुनाते हैं, उनके विषय इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि सुनो, मैं उनको बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दूँगा, और वह उनको तुम्हारे सामने मार डालेगा।

22 सब यहूदी बन्दी जो बाबेल में रहते हैं, उनकी उपमा देकर यह श्राप दिया करेंगे: यहोवा तुझे सिदकिय्याह और अहाब के समान करे, जिन्हें बाबेल के राजा ने आग में भून डाला,

23 क्योंकि उन्होंने इस्राएलियों में मूर्खता के काम किए, अर्थात् अपने पड़ोसियों की स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया, और बिना मेरी आज्ञा पाए मेरे नाम से झूठे वचन कहे। इसका जाननेवाला और गवाह मैं आप ही हूँ, यहोवा की यही वाणी है।”

[22222222 222 2222222 222 222222222]

24 नेहेलामी शमायाह से तू यह कह, “इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह कहा है:

25 इसलिए कि तूने यरूशलेम के सब रहनेवालों और सब याजकों को और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को अपने ही नाम की इस आशय की पत्री भेजी,

\* 29:4 [22222222 222 2222222 22222222 2222 222222222 22222 222]: उनका निर्वासन उन्हीं की भलाई के निमित्त परमेश्वर का काम था। उन्हें उसका पूरा लाभ उठाकर धनोपार्जन करना और अपना मान-सम्मान बनाना था।





15 तू अपने घाव के मारे क्यों चिल्लाती है? तेरी पीड़ा की कोई औषध नहीं। तेरे बड़े अधर्म और भारी पापों के कारण मैंने तुझ से ऐसा व्यवहार किया है।

16 परन्तु जितने तुझे अब खाए लेते हैं, वे आप ही खाए जाएंगे, और तेरे द्रोही आप सब के सब बंधुआई में जाएंगे; और तेरे लूटनेवाले आप लुटेंगे और जितने तेरा धन छीनते हैं, उनका धन मैं छिनवाऊंगा।

17 मैं तेरा इलाज करके तेरे घावों को चंगा करूंगा, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि तेरा नाम टुकराई हुई पड़ा है: वह तो सिय्योन है, उसकी चिन्ता कौन करता है?

18 “यहोवा कहता है: मैं याकूब के तम्बू को बंधुआई से लौटाता हूँ और उसके घरों पर दया करूंगा; और नगर अपने ही खण्डहर पर फिर बसेगा, और राजभवन पहले के अनुसार फिर बन जाएगा।

19 तब उनमें से धन्य कहने, और आनन्द करने का शब्द सुनाई पड़ेगा।

20 मैं उनका वैभव बढ़ाऊँगा, और वे थोड़े न होंगे। उनके बच्चे प्राचीनकाल के समान होंगे, और उनकी मण्डली मेरे सामने स्थिर रहेगी; और जितने उन पर अंधेर करते हैं उनको मैं दण्ड दूँगा।

21 उनका महापुरुष उन्हीं में से होगा, और जो उन पर प्रभुता करेगा, वह उन्हीं में से उत्पन्न होगा; मैं उसे अपने निकट बुलाऊँगा, और वह मेरे समीप आ भी जाएगा, क्योंकि कौन है जो अपने आप मेरे समीप आ सकता है? यहोवा की यही वाणी है।

22 **११ १११ १११ ११११ १११११ १११११११ ११११११११**, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा।”

23 देखो, यहोवा की जलजलाहट की आँधी चल रही है! वह अति प्रचण्ड आँधी है; दुष्टों के सिर पर वह जोर से लगेगी।

24 जब तक यहोवा अपना काम न कर चुके और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब तक उसका भड़का हुआ क्रोध शान्त न होगा। अन्त के दिनों में तुम इस बात को समझ सकोगे।

### 31

**१११११ ११११११ ११ १११ १११११११११ ११ ११११११११**

1 “उन दिनों में मैं सारे इस्राएली कुलों का परमेश्वर ठहरूँगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।”

‡ 30:22 **११ ११११ १११ १११११ १११११११ ११११११११**: मनुष्य परमेश्वर नहीं हो सकते जब तक कि उनमें से एक प्रगट न हो- एक पुरुष- जो परमेश्वर के निकट आए, परमेश्वर ही होकर नाशवान और अविनाशी के मध्य जो खाई है उसे पाट न दे। \* 31:9 **१११११११ १११११ १११११ ११**: यूसुफ का घराना उसकी पूर्वप्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करेगा।

2 यहोवा यह कहता है: “जो प्रजा तलवार से बच निकली, उन पर जंगल में अनुग्रह हुआ; मैं इस्राएल को विश्राम देने के लिये तैयार हुआ।”

3 “यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

4 हे इस्राएली कुमारी कन्या! मैं तुझे फिर बनाऊँगा; वहाँ तू फिर श्रृंगार करके डफ बजाने लगेगी, और आनन्द करनेवालों के बीच में नाचती हुई निकलेगी।

5 तू सामरिया के पहाड़ों पर अंगूर की बारियाँ फिर लगाएगी; और जो उन्हें लगाएँगे, वे उनके फल भी खाने पाएँगे।

6 क्योंकि ऐसा दिन आएगा, जिसमें एप्रेम के पहाड़ी देश के पहरूप पुकारेंगे: ‘उठो, हम अपने परमेश्वर यहोवा के पास सिय्योन को चले।’”

**११११११११११११११ ११ १११११११**

7 क्योंकि यहोवा यह कहता है: “याकूब के कारण आनन्द से जयजयकार करो: जातियों में जो श्रेष्ठ है उसके लिये ऊँचे शब्द से स्तुति करो, और कहो, ‘हे यहोवा, अपनी प्रजा इस्राएल के बचे हुए लोगों का भी उद्धार कर।’

8 देखो, मैं उनको उत्तर देश से ले आऊँगा, और पृथ्वी के कोने-कोने से इकट्ठे करूँगा, और उनके बीच अंधे, लंगड़े, गर्भवती, और जच्चा स्त्रियाँ भी आएँगी; एक बड़ी मण्डली यहाँ लौट आएगी।

9 वे आँसू बहाते हुए आएँगे और गिड़गिड़ाते हुए मेरे द्वारा पहुँचाए जाएँगे, मैं उन्हें नदियों के किनारे-किनारे से और ऐसे चौरस मार्ग से ले आऊँगा, जिससे वे ठोकर न खाने पाएँगे; क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूँ, और **११११११११ १११११ १११११ ११\***। (1 **१११११ 6:18**)

10 “हे जाति-जाति के लोगों, यहोवा का वचन सुनो, और दूर-दूर के द्वीपों में भी इसका प्रचार करो; कहो, ‘जिसने इस्राएलियों को तितर- बितर किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा, और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है।’

11 क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उससे अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया है।

12 इसलिए वे सिय्योन की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा से अनाज, नया

दाखमधु, टटका तेल, भेड-बकरियाँ और गाय-बैलों के बच्चे आदि उत्तम-उत्तम दान पाने के लिये ताँता बाँधकर चलेगे; और उनका प्राण सीची हुई बारी के समान होगा, और वे फिर कभी उदास न होंगे।

13 उस समय उनकी कुमारियाँ नाचती हुई हर्ष करेंगी, और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूँगा, मैं उन्हें शान्ति दूँगा, और दुःख के बदले आनन्द दूँगा।

14 मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूँगा, और मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी," यहोवा की यही वाणी है।

22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33

15 यहोवा यह भी कहता है: "सुन, रामाह नगर में विलाप और बिलक-बिलककर रोने का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने बालकों के लिये रो रही है; और अपने बालकों के कारण शान्त नहीं होती, क्योंकि वे नहीं रहे।" (2:18)

16 यहोवा यह कहता है: "रोने-पीटने और आँसू बहाने से रुक जा; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है, और वे शत्रुओं के देश से लौट आएँगे। (21:4, 1:11)

17 अन्त में तेरी आशा पूरी होगी, यहोवा की यह वाणी है, तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट आएँगे।

18 निश्चय मैंने एप्रैम को ये बातें कहकर विलाप करते सुना है, तूने मेरी ताड़ना की, और मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो निकाला न गया हो; परन्तु अब तू मुझे फेर, तब मैं फिरूँगा, क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है।

19 भटक जाने के बाद मैं पछताया; और सिखाए जाने के बाद मैंने छाती पीटी; 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 मैं लज्जित हुआ और मेरा मुँह काला हो गया।

20 क्या एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र नहीं है? क्या वह मेरा दुलारा लडका नहीं है? जब जब मैं उसके विरुद्ध बातें करता हूँ, तब-तब मुझे उसका स्मरण हो आता है। इसलिए मेरा मन उसके कारण भर आता है; और मैं निश्चय उस पर दया करूँगा, यहोवा की यही वाणी है।

22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33

21 "हे इस्राएली कुमारी, जिस राजमार्ग से तू गई थी, उसी में खम्भे और झण्डे खड़े कर; और अपने इन नगरों में लौट आने पर मन लगा।

22 हे भटकनेवाली कन्या, तू कब तक इधर-उधर फिरती रहेगी? यहोवा की एक नई सृष्टि पृथ्वी पर प्रगट होगी, अर्थात् 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33।"

23 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है "जब मैं यहूदी बन्दियों को उनके देश के नगरों में लौटाऊँगा, तब उनमें यह आशीर्वाद फिर दिया जाएगा: 'हे धर्मभरे वासस्थान, हे पवित्र पर्वत, यहोवा तुझे आशीष दे!'

24 यहूदा और उसके सब नगरों के लोग और किसान और चरवाहे भी उसमें इकट्ठे बसेंगे।

25 क्योंकि मैंने थके हुए लोगों का प्राण तृप्त किया, और उदास लोगों के प्राण को भर दिया है।" (11:28, 6:21)

26 इस पर मैं जाग उठा, और देखा, और मेरी नींद मुझे मीठी लगी।

27 "देख, यहोवा की यह वाणी है, कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जिनमें मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों के बाल-बच्चों और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊँगा।

28 जिस प्रकार से मैं सोच-सोचकर उनको गिराता और ढाता, नष्ट करता, काट डालता और सत्यानाश ही करता था, उसी प्रकार से मैं अब सोच-सोचकर उनको रोपूँगा और बढ़ाऊँगा, यहोवा की यही वाणी है।

29 उन दिनों में वे फिर न कहेंगे: 'पिताओं ने तो खट्टे अंगूर खाए, परन्तु उनके वंश के दाँत खट्टे हो गए हैं।'

30 क्योंकि जो कोई खट्टे अंगूर खाए उसी के दाँत खट्टे हो जाएँगे, और हर एक मनुष्य अपने ही अधर्म के कारण मारा जाएगा।

22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33

31 "फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से 22:20, 1 11:25,2 3:6, 8:8,9।

32 वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से उस समय बाँधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तो भी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली।

33 परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाँधूँगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके

† 31:19 22:20 23:20 24:20 25:20 26:20 27:20 28:20 29:20 30:20 31:20 32:20 33:20 अर्थात् अपनी युवावस्था के पापों की लज्जा। ‡ 31:22 22:22 23:22 24:22 25:22 26:22 27:22 28:22 29:22 30:22 31:22 32:22 33:22 एक स्त्री बलवन्त पुरुष की रक्षा करेगी। जो स्वभाव से दुर्बल है और आवश्यकता का पात्र है वह बलवन्त की सप्रेम सुधि लेगी। § 31:31 22:31 23:31 24:31 25:31 26:31 27:31 28:31 29:31 30:31 31:31 32:31 33:31 इस नई वाचा का आधार होगा पापों की क्षमा। अर्थात् यह पूर्णतः निर्माल प्रेम (जिसके लिए हमने परिश्रम नहीं किया) मन को ऐसा प्रभावित करेगा कि आज्ञाकारिता एक आन्तरिक आवश्यकता बन जाएगी।



16 “जब मैंने मोल लेने की वह दस्तावेज नेरिय्याह के पुत्र बारूक के हाथ में दी, तब मैंने यहोवा से यह प्रार्थना की,

17 हे प्रभु यहोवा, तूने बड़े सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है।

18 तू हजारों पर करुणा करता रहता परन्तु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंश के लोगों को भी देता है, हे महान और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है,

19 तू बड़ी युक्ति करनेवाला और सामर्थ्य के काम करनेवाला है; तेरी दृष्टि मनुष्यों के सारे चाल चलन पर लगी रहती है, और तू हर एक को उसके चाल चलन और कर्म का फल भुगताता है।

20 तूने मिस्र देश में चिन्ह और चमत्कार किए, और आज तक इस्राएलियों वरन् सब मनुष्यों के बीच वैसा करता आया है, और इस प्रकार तूने अपना ऐसा नाम किया है जो आज के दिन तक बना है।

21 तू अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र देश में से चिन्हों और चमत्कारों और सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा, और बड़े भयानक कामों के साथ निकाल लाया।

22 फिर तूने यह देश उन्हें दिया जिसके देने की शपथ तूने उनके पूर्वजों से खाई थी; जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और वे आकर इसके अधिकारी हुए।

23 तो भी उन्होंने तेरी नहीं मानी, और न तेरी व्यवस्था पर चले; वरन् जो कुछ तूने उनको करने की आज्ञा दी थी, उसमें से उन्होंने कुछ भी नहीं किया। इस कारण तूने उन पर यह सब विपत्ति डाली है।

24 अब इन दमदमों को देख, वे लोग इस नगर को ले लेने के लिये आ गए हैं, और यह नगर तलवार, अकाल और मरी के कारण इन चढ़े हुए कसदियों के वश में किया गया है। जो तूने कहा था वह अब पूरा हुआ है, और तू इसे देखता भी है।

25 तो भी, हे प्रभु यहोवा, तूने मुझसे कहा है कि गवाह बुलाकर उस खेत को मोल ले, यद्यपि कि यह नगर कसदियों के वश में कर दिया गया है।”

26 तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा,

27 “मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ; क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है?

28 इसलिए यहोवा यह कहता है, देख, मैं यह नगर कसदियों और बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के वश में कर देने पर हूँ, और वह इसको ले लेगा।

29 जो कसदी इस नगर से युद्ध कर रहे हैं, वे आकर इसमें आग लगाकर फूँक देंगे, और जिन घरों की छतों पर उन्होंने बाल के लिये धूप जलाकर और दूसरे देवताओं को अर्घ चढ़ाकर मुझे रिस दिलाई है, वे घर जला दिए जाएँगे।

30 क्योंकि इस्राएल और यहूदा, जो काम मुझे बुरा लगता है, वही इस्राएली अपनी बनाई हुई वस्तुओं से मुझ को रिस ही रिस दिलाते आए हैं, यहोवा की यह वाणी है।

31 यह नगर जब से बसा है तब से आज के दिन तक मेरे क्रोध और जलजलाहट के भड़कने का कारण हुआ है, इसलिए अब मैं इसको अपने सामने से इस कारण दूर करूँगा

32 क्योंकि इस्राएल और यहूदा अपने राजाओं हाकिमों, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं समेत, क्या यहूदा देश के, क्या यरूशलेम के निवासी, सब के सब बुराई पर बुराई करके मुझ को रिस दिलाते आए हैं।

33 उन्होंने मेरी ओर मुँह नहीं वरन् पीठ ही फेर दी है; यद्यपि मैं उन्हें बड़े यत्न से सिखाता आया हूँ, तो भी उन्होंने मेरी शिक्षा को नहीं माना।

34 वरन् जो भवन मेरा कहलाता है, उसमें भी उन्होंने अपनी घृणित वस्तुएँ स्थापित करके उसे अशुद्ध किया है।

35 उन्होंने हिन्नोमियों की तराई में बाल के ऊँचे-ऊँचे स्थान बनाकर अपने बेटे-बेटियों को मोलेक के लिये होम किया, जिसकी आज्ञा मैंने कभी नहीं दी, और न यह बात कभी मेरे मन में आई कि ऐसा घृणित काम किया जाए और जिससे यहूदी लोग पाप में फँसे।

36 “परन्तु अब इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के विषय में, जिसके लिये तुम लोग कहते हो, ‘वह तलवार, अकाल और मरी के द्वारा बाबेल के राजा के वश में पड़ा हुआ है’ यह कहता है:

37 देखो, मैं उनको उन सब देशों से जिनमें मैंने क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें जबरन निकाल दिया था, लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूँगा, और निडर करके बसा दूँगा।

38 और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा (2 **यिर्मयाह 6:16**)

\* 32:30 इस्राएल के लिए परमेश्वर के पराक्रमी काम मिस्र में आरम्भ हुए थे, (यिर्म 32:20) और साथ ही इस्राएल के पाप भी आरम्भ हो गए थे।



११११ ११ १११ ११११११११ ११ ११११

14 “यहोवा की यह भी वाणी है, देख, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि कल्याण का जो वचन मैंने इस्राएल और यहूदा के घरानों के विषय में कहा है, उसे पूरा करूँगा।

15 उन दिनों में और उन समयों में, मैं दाऊद के वंश में धार्मिकता की एक डाल लगाऊँगा; और वह इस देश में न्याय और धार्मिकता के काम करेगा। (११११. 7:42, ११११. 11:1-5)

16 उन दिनों में यहूदा बचा रहेगा और यरूशलेम निडर बसा रहेगा; और उसका नाम यह रखा जाएगा अर्थात् ‘यहोवा हमारी धार्मिकता।’

17 “यहोवा यह कहता है, दाऊद के कुल में इस्राएल के घराने की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे,

18 और लेवीय याजकों के कुलों में प्रतिदिन मेरे लिये होमबलि चढ़ानेवाले और अन्नबलि जलानेवाले और मेलबलि चढ़ानेवाले सदैव बने रहेंगे।”

19 फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा

20 “यहोवा यह कहता है: मैंने दिन और रात के विषय में जो वाचा बाँधी है, जब तुम उसको ऐसा तोड़ सको कि दिन और रात अपने-अपने समय में न हों,

21 तब ही जो वाचा मैंने अपने दास दाऊद के संग बाँधी है टूट सकेगी, कि तेरे वंश की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, और मेरी वाचा मेरी सेवा टहल करनेवाले लेवीय याजकों के संग बाँधी रहेगी।

22 जैसा आकाश की सेना की गिनती और समुद्र के रेतकणों का परिमाण नहीं हो सकता है उसी प्रकार मैं अपने दास दाऊद के वंश और अपने सेवक लेवियों को बढ़ाकर अनगिनत कर दूँगा।”

23 यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा

24 “क्या तूने नहीं देखा कि ये लोग क्या कहते हैं, ‘जो दो कुल यहोवा ने चुन लिए थे उन दोनों से उसने अब हाथ उठाया है’? यह कहकर कि ये मेरी प्रजा को तुच्छ जानते हैं और कि यह जाति उनकी दृष्टि में गिर गई है।

25 यहोवा यह कहता है, यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे, और यदि ११११ ११ १११११११ ११ १११११११ मेरे ठहराए हुए न रह जाँएँ,

26 तब ही मैं याकूब के वंश से हाथ उठाऊँगा। और अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिये अपने दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊँगा। परन्तु इसके विपरीत मैं उन पर दया करके उनको बाँधुआई से लौटा लाऊँगा।”

† 33:25 ११११ ११ १११११११ ११ ११११: अर्थात् प्रकृति की व्यवस्था। परमेश्वर के अनुग्रह के जो उद्देश्य हैं उसकी तुलना में प्रकृति अधिक दृढ़ता से स्थिर नहीं है। \* 34:8 १११११ ११ ११११११११ ११११ ११ १११११११ ११११ ११११: यह वाक्य जुबली वर्ष की घोषणा का है, जबकी जुबली वर्ष पर दासों को स्वतंत्र कर देने का नियम था।

## 34

११११११११११ ११ १११११११११ ११ ११११

1 जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना समेत और पृथ्वी के जितने राज्य उसके वश में थे, उन सभी के लोगों समेत यरूशलेम और उसके सब गाँवों से लड़ रहा था, तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा

2 “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जाकर यहूदा के राजा सिदकिय्याह से कह, ‘यहोवा यह कहता है: देख, मैं इस नगर को बाबेल के राजा के वश में कर देने पर हूँ, और वह इसे फुँकवा देगा।’

3 तू उसके हाथ से न बचेगा, निश्चय पकड़ा जाएगा और उसके वश में कर दिया जाएगा; और तेरी आँखें बाबेल के राजा को देखेंगी, और तुम आमने-सामने बातें करोगे; और तू बाबेल को जाएगा।’

4 तो भी हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, यहोवा का यह भी वचन सुन जिसे यहोवा तेरे विषय में कहता है: ‘तू तलवार से मारा न जाएगा।’

5 तू शान्ति के साथ मरेगा। और जैसा तेरे पितरों के लिये अर्थात् जो तुझ से पहले राजा थे, उनके लिये सुगन्ध-द्रव्य जलाया गया, वैसा ही तेरे लिये भी जलाया जाएगा; और लोग यह कहकर, “हाय मेरे प्रभु!” तेरे लिये छाती पीटेंगे, यहोवा की यही वाणी है।”

6 ये सब वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह से यरूशलेम में उस समय कहे,

7 जब बाबेल के राजा की सेना यरूशलेम से और यहूदा के जितने नगर बच गए थे, उनसे अर्थात् लाकीश और अजेका से लड़ रही थी; क्योंकि यहूदा के जो गढ़वाले नगर थे उनमें से केवल वे ही रह गए थे।

१११११ ११ १११११११११ ११११११११

8 यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास उस समय आया जब सिदकिय्याह राजा ने सारी प्रजा से जो यरूशलेम में थी यह वाचा बाँधाई कि ११११११ ११ ११११११११ ११११ ११११\* ,

9 कि सब लोग अपने-अपने दास-दासी को जो इब्री या इब्रिन हों, स्वाधीन करके जाने दें, और कोई अपने यहूदी भाई से फिर अपनी सेवा न कराए।

10 तब सब हाकिमों और सारी प्रजा ने यह प्रण किया कि हम अपने-अपने दास दासियों को स्वतंत्र कर देंगे और फिर उनसे अपनी सेवा न कराएँगे; इसलिए उस प्रण के अनुसार उनको स्वतंत्र कर दिया।





## 36

11 परन्तु जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर चढ़ाई की, तब हमने कहा, 'चलो, कसदियों और अरामियों के दलों के डर के मारे यरूशलेम में जाएँ।' इस कारण हम अब यरूशलेम में रहते हैं।"

12 तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा।

13 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: "जाकर यहूदा देश के लोगों और यरूशलेम नगर के निवासियों से कह, यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम शिक्षा मानकर मेरी न सुनोगे?"

14 देखो, रेकाब के पुत्र यहोनादाब ने जो आज्ञा अपने वंश को दी थी कि तुम दाखमधु न पीना वह तो मानी गई है यहाँ तक कि आज के दिन भी वे लोग कुछ नहीं पीते, वे अपने पुरखा की आज्ञा मानते हैं; पर यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से कहता आया हूँ, तो भी तुम ने मेरी नहीं सुनी।

15 मैं तुम्हारे पास अपने सारे दास नबियों को बड़ा यत्न करके यह कहने को भेजता आया हूँ, 'अपनी बुरी चाल से फिरो, और अपने काम सुधारो, और दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उनकी उपासना मत करो तब तुम इस देश में जो मैंने तुम्हारे पितरों को दिया था और तुम को भी दिया है, बसने पाओगे।' पर तुम ने मेरी ओर कान नहीं लगाया न मेरी सुनी है।

16 देखो, रेकाब के पुत्र यहोनादाब के वंश ने तो अपने पुरखा की आज्ञा को मान लिया पर तुम ने मेरी नहीं सुनी।

17 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, जो इस्राएल का परमेश्वर है, यह कहता है: देखो, यहूदा देश और यरूशलेम नगर के सारे निवासियों पर जितनी विपत्ति डालने की मैंने चर्चा की है वह उन पर अब डालता हूँ; क्योंकि मैंने उनको सुनाया पर उन्होंने नहीं सुना, मैंने उनको बुलाया पर उन्होंने उत्तर न दिया।"

18 पर रेकाबियों के घराने से यिर्मयाह ने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यह कहता है: इसलिए कि तुम ने जो अपने पुरखा यहोनादाब की आज्ञा मानी, वरन् उसकी सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उसने कहा उसके अनुसार काम किया है,

19 इसलिए इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश में सदा ऐसा जन पाया जाएगा जो मेरे सम्मुख खड़ा रहे।"

\* **36:2** [222222] (कुण्डली ग्रन्थ) यह अनेक चर्मपत्रों को मिलाकर, बराबर की चौड़ाई में काटकर एक लकड़ी पर लपेटा जाता था। यदि वे अधिक बड़े होते थे तो दोनों सिरों पर लकड़ी लगाई जाती थी। † **36:7** [222222222222 2222222222 222222] अर्थात् दीन बनें इसमें प्रार्थना सुने जाने का भाव भी है।

[222222] [222] [222222] [222222] [222222] [222222] [222222]

1 फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा

2 "एक [222222]\* लेकर जितने वचन मैंने तुझ से योशिय्याह के दिनों से लेकर अर्थात् जब मैं तुझ से बातें करने लगा उस समय से आज के दिन तक इस्राएल और यहूदा और सब जातियों के विषय में कहे हैं, सब को उसमें लिख।

3 क्या जाने यहूदा का घराना उस सारी विपत्ति का समाचार सुनकर जो मैं उन पर डालने की कल्पना कर रहा हूँ अपनी बुरी चाल से फिरो और मैं उनके अधर्म और पाप को क्षमा करूँ।"

4 अतः यिर्मयाह ने नेरिय्याह के पुत्र बारूक को बुलाया, और बारूक ने यहोवा के सब वचन जो उसने यिर्मयाह से कहे थे, उसके मुख से सुनकर पुस्तक में लिख दिए।

5 फिर यिर्मयाह ने बारूक को आज्ञा दी और कहा, "मैं तो बन्धा हुआ हूँ, मैं यहोवा के भवन में नहीं जा सकता।

6 इसलिए तू उपवास के दिन यहोवा के भवन में जाकर उसके जो वचन तूने मुझसे सुनकर लिखे हैं, पुस्तक में से लोगों को पढ़कर सुनाना, और जितने यहूदी लोग अपने-अपने नगरों से आएँगे, उनको भी पढ़कर सुनाना।

7 क्या जाने वे यहोवा से [222222222222] [222222] और अपनी-अपनी बुरी चाल से फिरो; क्योंकि जो क्रोध और जलजलाहट यहोवा ने अपनी इस प्रजा पर भड़काने को कहा है, वह बड़ी है।"

8 यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की इस आज्ञा के अनुसार नेरिय्याह के पुत्र बारूक ने, यहोवा के भवन में उस पुस्तक में से उसके वचन पढ़कर सुनाए।

9 योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के पाँचवें वर्ष के नौवें महीने में यरूशलेम में जितने लोग थे, और यहूदा के नगरों से जितने लोग यरूशलेम में आए थे, उन्होंने यहोवा के सामने उपवास करने का प्रचार किया।

10 तब बारूक ने यहोवा के भवन में सब लोगों को शापान के पुत्र गमर्याह जो प्रधान था, उसकी कोठरी में जो ऊपर के आँगन में यहोवा के भवन के नये फाटक के पास थी, यिर्मयाह के सब वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाए।

११ ११११११ १११ ११११११ ११ ११११ ११११

11 तब शापान के पुत्र गमर्याह के बेटे मीकायाह ने यहोवा के सारे वचन पुस्तक में से सुने।

12 और वह राजभवन के प्रधान की कोठरी में उतर गया, और क्या देखा कि वहाँ एलीशामा प्रधान और शमायाह का पुत्र दलायाह और अकबोर का पुत्र एलनातान और शापान का पुत्र गमर्याह और हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह और सब हाकिम बैठे हुए हैं।

13 मीकायाह ने जितने वचन उस समय सुने, जब बारूक ने पुस्तक में से लोगों को पढ़ सुनाए थे, उन सब का वर्णन किया।

14 उन्हें सुनकर सब हाकिमों ने यहूदी को जो नतन्याह का पुत्र ओर शेलेम्याह का पोता और कूशी का परपोता था, बारूक के पास यह कहने को भेजा, “जिस पुस्तक में से तूने सब लोगों को पढ़ सुनाया है, उसे अपने हाथ में लेता आ।” अतः नेरिय्याह का पुत्र बारूक वह पुस्तक हाथ में लिए हुए उनके पास आया।

15 तब उन्होंने उससे कहा, “अब बैठ जा और हमें यह पढ़कर सुना।” तब बारूक ने उनको पढ़कर सुना दिया।

16 जब वे उन सब वचनों को सुन चुके, तब थरथराते हुए एक दूसरे को देखने लगे; और उन्होंने बारूक से कहा, “हम निश्चय राजा से इन सब वचनों का वर्णन करेंगे।”

17 फिर उन्होंने बारूक से कहा, “हम से कह, क्या तूने ये सब वचन उसके मुख से सुनकर लिखे?”

18 बारूक ने उनसे कहा, “वह ये सब वचन अपने मुख से मुझे सुनाता गया और मैं इन्हें पुस्तक में स्याही से लिखता गया।”

19 तब हाकिमों ने बारूक से कहा, “जा, तू अपने आपको और यिर्मयाह को छिपा, और कोई न जानने पाए कि तुम कहाँ हो।”

२० २०२०२० २० २०२०२० २०२०

20 तब वे पुस्तक को एलीशामा प्रधान की कोठरी में रखकर राजा के पास आँगन में आए; और राजा को वे सब वचन कह सुनाए।

21 तब राजा ने यहूदी को पुस्तक ले आने के लिये भेजा, उसने उसे एलीशामा प्रधान की कोठरी में से लेकर राजा को और जो हाकिम राजा के आस-पास खड़े थे उनको भी पढ़ सुनाया।

22 राजा शीतकाल के भवन में बैठा हुआ था, क्योंकि नौवाँ महीना था और उसके सामने अँगीठी जल रही थी।

23 जब यहूदी तीन चार पृष्ठ पढ़ चुका, तब उसने उसे चाकू से काटा और जो आग अँगीठी में थी उसमें

फेंक दिया; इस प्रकार अँगीठी की आग में पूरी पुस्तक जलकर भस्म हो गई।

24 परन्तु न कोई डरा और न किसी ने अपने कपड़े फाड़े, अर्थात् न तो राजा ने और न उसके कर्मचारियों में से किसी ने ऐसा किया, जिन्होंने वे सब वचन सुने थे।

25 एलनातान, और दलायाह, और गमर्याह ने तो राजा से विनती भी की थी कि पुस्तक को न जलाए, परन्तु उसने उनकी एक न सुनी।

26 राजा ने राजपुत्र यरहमेल को और अज्रीएल के पुत्र सरायाह को और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को आज्ञा दी कि बारूक लेखक और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पकड़ लें, परन्तु यहोवा ने उनको छिपा रखा।

२७ २७२७२७२७ २७२७२७ २७२७२७ २७ २७२७ २७२७

27 जब राजा ने उन वचनों की पुस्तक को जो बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर लिखी थी, जला दिया, तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा

28 “फिर एक और पुस्तक लेकर उसमें यहूदा के राजा यहोयाकीम की जलाई हुई पहली पुस्तक के सब वचन लिख दे।

29 और यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में कह, ‘यहोवा यह कहता है: तूने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि तूने उसमें यह क्यों लिखा है कि बाबेल का राजा निश्चय आकर इस देश को नष्ट करेगा, और उसमें न तो मनुष्य को छोड़ेगा और न पशु को।

30 इसलिए यहोवा यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यह कहता है, कि उसका कोई दाऊद की गद्दी पर विराजमान न रहेगा; और उसकी लोथ ऐसी फेंक दी जाएगी कि दिन को धूप में और रात को पाले में पड़ी रहेगी।

31 मैं उसको और उसके वंश और कर्मचारियों को उनके अधर्म का दण्ड दूँगा; और जितनी विपत्ति मैंने उन पर और यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के सब लोगों पर डालने को कहा है, और जिसको उन्होंने सच नहीं माना, उन सब को मैं उन पर डालूँगा।”

32 तब यिर्मयाह ने दूसरी पुस्तक लेकर नेरिय्याह के पुत्र बारूक लेखक को दी, और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दी थी, उसमें के सब वचनों को बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर उसमें लिख दिए; और उन वचनों में उनके समान और भी बहुत सी बातें बढ़ा दी गई।

37

३७ ३७३७३७३७३७ ३७ ३७३७३७

1 यहोयाकीम के पुत्र कोन्याह के स्थान पर योशिय्याह का पुत्र सिदकिय्याह राज्य करने लगा, क्योंकि बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसी को यहूदा देश में राजा ठहराया था।

2 परन्तु न तो उसने, न उसके कर्मचारियों ने, और न साधारण लोगों ने यहोवा के वचनों को माना जो उसने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था।

3 सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के पुत्र यहूकल और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास यह कहला भेजा, “हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर।”

4 उस समय यिर्मयाह बन्दीगृह में न डाला गया था, और लोगों के बीच आया-जाया करता था।

5 उस समय फिरौन की सेना चढ़ाई के लिये मिस्र से निकली; तब कसदी जो यरूशलेम को घेरे हुए थे, उसका समाचार सुनकर यरूशलेम के पास से चले गए।

6 तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुँचा

7 “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: यहूदा के जिस राजा ने ~~यहूदा के राजा ने~~, उससे यह कहो, ‘देख, फिरौन की जो सेना तुम्हारी सहायता के लिये निकली है वह अपने देश मिस्र में लौट जाएगी।’

8 कसदी फिर वापिस आकर इस नगर से लड़ेंगे; वे इसको ले लेंगे और फूँक देंगे।

9 यहोवा यह कहता है: यह कहकर तुम अपने-अपने मन में धोखा न खाओ “कसदी हमारे पास से निश्चय चले गए हैं;” क्योंकि वे चले नहीं गए।

10 क्योंकि यदि तुम ने कसदियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ती है, ऐसा मार भी लिया होता कि उनमें से केवल घायल लोग रह जाते, तो भी वे अपने-अपने तम्बू में से उठकर इस नगर को फूँक देते।”

~~यहूदा के राजा ने~~

11 जब कसदियों की सेना फिरौन की सेना के डर के मारे यरूशलेम के पास से निकलकर गई,

12 तब यिर्मयाह यरूशलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की ओर इसलिए जा निकला कि वहाँ से और लोगों के संग अपना अंश ले।

13 जब वह बिन्यामीन क्षेत्र के फाटक में पहुँचा, तब यिरिय्याह नामक पहरुओं का एक सरदार वहाँ था जो शेलेम्याह का पुत्र और हनन्याह का पोता था, और उसने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को यह कहकर पकड़ लिया, “तू कसदियों के पास भागा जाता है।”

\* 37:7 ~~यहूदा के राजा ने~~: यहाँ यिर्मयाह का उत्तर यिर्म. 21:4-7 की तुलना में अधिक प्रतिकूल है।

14 तब यिर्मयाह ने कहा, “यह झूठ है; मैं कसदियों के पास नहीं भागा जाता हूँ।” परन्तु यिरिय्याह ने उसकी एक न मानी, और वह उसे पकड़कर हाकिमों के पास ले गया।

15 तब हाकिमों ने यिर्मयाह से क्रोधित होकर उसे पिटवाया, और योनातान प्रधान के घर में बन्दी बनाकर डलवा दिया; क्योंकि उन्होंने उसको साधारण बन्दीगृह बना दिया था। (21:36)

16 यिर्मयाह उस तलघर में जिसमें कई एक कोठरियाँ थीं, रहने लगा।

17 उसके बहुत दिन बीतने पर सिदकिय्याह राजा ने उसको बुलवा भेजा, और अपने भवन में उससे छिपकर यह प्रश्न किया, “क्या यहोवा की ओर से कोई वचन पहुँचा है?” यिर्मयाह ने कहा, “हाँ, पहुँचा है। वह यह है, कि तू बाबेल के राजा के वश में कर दिया जाएगा।”

18 फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा से कहा, “मैंने तेरा, तेरे कर्मचारियों का, व तेरी प्रजा का क्या अपराध किया है, कि तुम लोगों ने मुझे को बन्दीगृह में डलवाया है?”

19 तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से भविष्यद्वानी करके कहा करते थे कि बाबेल का राजा तुम पर और इस देश पर चढ़ाई नहीं करेगा, वे अब कहाँ हैं?

20 अब, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरी प्रार्थना ग्रहण कर कि मुझे योनातान प्रधान के घर में फिर न भेज, नहीं तो मैं वहाँ मर जाऊँगा।”

21 तब सिदकिय्याह राजा की आज्ञा से यिर्मयाह पहरों के आँगन में रखा गया, और जब तक नगर की सब रोटी न चुक गई, तब तक उसको रोटीवालों की दूकान में से प्रतिदिन एक रोटी दी जाती थी। यिर्मयाह पहरों के आँगन में रहने लगा।

## 38

~~यहूदा के राजा ने~~

1 फिर जो वचन यिर्मयाह सब लोगों से कहता था, उनको मत्तान के पुत्र शपत्याह, पशहूर के पुत्र गदल्याह, शेलेम्याह के पुत्र यूकल और मल्किय्याह के पुत्र पशहूर ने सुना,

2 “यहोवा यह कहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार, अकाल और मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई कसदियों के पास निकल भागे वह अपना प्राण बचाकर जीवित रहेगा।



तू ही होगा।”

24 तब सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, “इन बातों को कोई न जानने पाए, तो तू मारा न जाएगा।

25 यदि हाकिम लोग यह सुनकर कि मैंने तुझे से बातचीत की है तेरे पास आकर कहने लगें, ‘हमें बता कि तूने राजा से क्या कहा, हम से कोई बात न छिपा, और हम तुझे न मरवा डालेंगे; और यह भी बता, कि राजा ने तुझ से क्या कहा;’

26 तो तू उनसे कहना, ‘मैंने राजा से गिड़गिड़ाकर विनती की थी कि मुझे योनातान के घर में फिर वापिस न भेज नहीं तो वहाँ मर जाऊँगा।’”

27 फिर सब हाकिमों ने यिर्मयाह के पास आकर पूछा, और जैसा राजा ने उसको आज्ञा दी थी, ठीक वैसा ही उसने उनको उत्तर दिया। इसलिए वे उससे और कुछ न बोले और न वह भेद खुला।

28 इस प्रकार जिस दिन यरूशलेम ले लिया गया उस दिन तक वह पहरों के आँगन ही में रहा।

## 39

११११११११ ११ ११११

1 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने में, बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना समेत यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया।

2 और सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन को उस नगर की शहरपनाह तोड़ी गई।

3 जब यरूशलेम ले लिया गया, तब नेर्गलसरेसेर, और समगर्नबो, और खोजों का प्रधान सर्सकीम, और मगों का प्रधान नेर्गलसरेसेर आदि, बाबेल के राजा के सब हाकिम ११११ ११ ११११\* में प्रवेश करके बैठ गए।

4 जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह और सब योद्धाओं ने उन्हें देखा तब रात ही रात राजा की बारी के मार्ग से दोनों दीवारों के बीच के फाटक से होकर नगर से निकलकर भाग चले और अराबा का मार्ग लिया।

5 परन्तु कसदियों की सेना ने उनको खदेड़कर सिदकिय्याह को यरीहो के अराबा में जा लिया और उनको बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के पास हमात देश के रिबला में ले गए; और उसने वहाँ उसके दण्ड की आज्ञा दी।

6 तब बाबेल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसकी आँखों के सामने रिबला में घात किया; और सब कुलीन यहूदियों को भी घात किया।

7 उसने सिदकिय्याह की आँखों को निकाल डाला और उसको बाबेल ले जाने के लिये बेड़ियों से जकड़वा रखा।

8 कसदियों ने राजभवन और प्रजा के घरों को आग लगाकर फूँक दिया, और यरूशलेम की शहरपनाह को ढा दिया।

9 तब अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान प्रजा के बचे हुए लोगों को जो नगर में रह गए थे, और जो लोग उसके पास भाग आए थे उनको अर्थात् प्रजा में से जितने रह गए उन सब को बँधुआ करके बाबेल को ले गया।

10 परन्तु प्रजा में से जो ऐसे कंगाल थे जिनके पास कुछ न था, उनको अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान यहूदा देश में छोड़ गया, और जाते समय उनको दाख की बारियाँ और खेत दे दिए।

११११११११ ११ १११११ ११११

11 बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान को यिर्मयाह के विषय में यह आज्ञा दी,

12 “उसको लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाए रखना और उसकी कुछ हानि न करना; जैसा वह तुझ से कहे वैसा ही उससे व्यवहार करना।”

13 अतः अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान और खोजों के प्रधान नबूसजबान और मगों के प्रधान नेर्गलसरेसेर ज्योतिषियों के सरदार,

14 और बाबेल के राजा के सब प्रधानों ने, लोगों को भेजकर यिर्मयाह को पहरों के आँगन में से बुलवा लिया और गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था सौंप दिया कि वह उसे घर पहुँचाए। तब से वह लोगों के साथ रहने लगा।

१११११११११ ११ ११११ ११११

15 जब यिर्मयाह पहरों के आँगन में कैद था, तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा,

16 “जाकर एबेदमेलेक कूशी से कह, ‘इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुझ से यह कहता है: देख, मैं अपने वे वचन जो मैंने इस नगर के विषय में कहे हैं इस प्रकार पूरा करूँगा कि इसका कुशल न होगा, हानि ही होगी, और उस समय उनका पूरा होना तुझे दिखाई पड़ेगा।’

17 परन्तु यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तुझे बचाऊँगा, और जिन मनुष्यों से तू भय खाता है, तू उनके वश में नहीं किया जाएगा।

18 क्योंकि मैं १११११, ११११११११ ११११११११†, और तू तलवार से न मरेगा, तेरा प्राण बचा रहेगा, यहोवा

\* 39:3 ११११ ११ १११११: सम्भवतः सिय्योन नगर को निचले नगर से पृथक करनेवाला फाटक। † 39:18 १११११, ११११११११ १११११११११: अनापेक्षित एवं स्वार्थ रहित उसने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता को निर्भीकता पूर्वक बचाकर विश्वास का प्रमाण प्रस्तुत किया।

की यह वाणी है। यह इस कारण होगा, कि तूने मुझ पर भरोसा रखा है।”

## 40

१ २२२२२२२२ २२ २२२२२२ २२२ २२२२

1 जब अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को रामाह में उन सब यरूशलेमी और यहूदी बन्दियों के बीच हथकड़ियों से बन्धा हुआ पाकर जो बाबेल जाने को थे छुड़ा लिया, उसके बाद यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा।

2 अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को उस समय अपने पास बुला लिया, और कहा, “इस स्थान पर यह जो विपत्ति पड़ी है वह तेरे परमेश्वर यहोवा की कही हुई थी।

3 जैसा यहोवा ने कहा था वैसा ही उसने पूरा भी किया है। तुम लोगों ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया और उसकी आज्ञा नहीं मानी, इस कारण तुम्हारी यह दशा हुई है।

4 अब मैं तेरी इन हथकड़ियों को काट देता हूँ, और यदि मेरे संग बाबेल में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल, वहाँ मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा; और यदि मेरे संग बाबेल जाना तुझे न भाए, तो यहीं रह जा। देख, सारा देश तेरे सामने पड़ा है, जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक लगे उधर ही चला जा।”

5 वह वहीं था कि नबूजरदान ने फिर उससे कहा, “गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है, जिसको बाबेल के राजा ने यहूदा के नगरों पर अधिकारी ठहराया है, उसके पास लौट जा और उसके संग लोगों के बीच रह, या जहाँ कहीं तुझे जाना ठीक जान पड़े वहीं चला जा।” अतः अंगरक्षकों के प्रधान ने उसको भोजन-सामग्री और कुछ उपहार भी देकर विदा किया।

6 तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास मिस्पा को गया, और वहाँ उन लोगों के बीच जो देश में रह गए थे, रहने लगा।

१ २२२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२२२२ २२२२

7 योद्धाओं के जो दल दिहात में थे, जब उनके सब प्रधानों ने अपने जनों समेत सुना कि बाबेल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को देश का अधिकारी ठहराया है, और देश के जिन कंगाल लोगों को वह बाबेल को नहीं ले गया, २२२२२ २२२२२२२, २२२२२

२२२२२२२, २२२२२ २२२२-२२२२२२\*, उन सभी को उसे सौंप दिया है,

8 तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह के पुत्र योहानान, योनातान और तन्हूमेत का पुत्र सरायाह, एपै नतोपावासी के पुत्र और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह अपने जनों समेत गदल्याह के पास मिस्पा में आए।

9 गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, उसने उनसे और उनके जनों से शपथ खाकर कहा, “कसदियों के अधीन रहने से मत डरो। इसी देश में रहते हुए बाबेल के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा।

10 मैं तो इसलिए मिस्पा में रहता हूँ कि जो कसदी लोग हमारे यहाँ आएँ, उनके सामने हाजिर हुआ करूँ; परन्तु तुम दाखमधु और धूपकाल के फल और तेल को बटोरके अपने बरतनों में रखो और अपने लिए हुए नगरों में बसे रहो।”

11 फिर जब मोआबियों, अम्मोनियों, एदोमियों और अन्य सब जातियों के बीच रहनेवाले सब यहूदियों ने सुना कि बाबेल के राजा ने यहूदियों में से कुछ लोगों को बचा लिया और उन पर गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है अधिकारी नियुक्त किया है,

12 तब सब यहूदी जिन-जिन स्थानों में तितर-बितर हो गए थे, वहाँ से लौटकर यहूदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह के पास, और बहुत दाखमधु और धूपकाल के फल बटोरने लगे।

१ २२२२२२२२ २२ २२२२२२२

13 तब कारेह का पुत्र योहानान और मैदान में रहनेवाले योद्धाओं के सब दलों के प्रधान मिस्पा में गदल्याह के पास आकर कहने लगे,

14 “क्या तू जानता है कि अम्मोनियों के राजा बालीस ने नतन्याह के पुत्र इश्माएल को तुझे जान से मारने के लिये भेजा है?” परन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन पर विश्वास न किया।

15 फिर कारेह के पुत्र योहानान ने गदल्याह से मिस्पा में छिपकर कहा, “मुझे जाकर नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा। वह क्यों तुझे मार डाले, और जितने यहूदी लोग तेरे पास इकट्ठे हुए हैं वे क्यों तितर-बितर हो जाएँ और बचे हुए यहूदी क्यों नाश हों?”

\* 40:7 २२२२२ २२२२२२, २२२२२ २२२२२२२, २२२२२ २२२२-२२२२२२: जिन स्त्रियों के पति युद्ध में मारे गये थे। (यिर्म. 41:10) बाल-बच्चे अर्थात् कुटुम्ब के सब सदस्य।



2 यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के निकट आकर कहने लगे, “हमारी विनती ग्रहण करके अपने परमेश्वर यहोवा से हम सब बचे हुआ के लिये प्रार्थना कर, क्योंकि तू अपनी आँखों से देख रहा है कि हम जो पहले बहुत थे, अब थोड़े ही बच गए हैं।

3 इसलिए प्रार्थना कर कि तेरा परमेश्वर यहोवा हमको बताए कि हम किस मार्ग से चलें, और कौन सा काम करें?”

4 यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हारी सुनी है; देखो, मैं तुम्हारे वचनों के अनुसार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करूँगा और जो उत्तर यहोवा तुम्हारे लिये देगा मैं तुम को बताऊँगा; मैं तुम से कोई बात न छिपाऊँगा।”

5 तब उन्होंने यिर्मयाह से कहा, “यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुँचाए और यदि हम [2222 2222222 2 22222]\*, तो यहोवा हमारे बीच में सच्चा और विश्वासयोग्य साक्षी ठहरे।

6 चाहे वह भली बात हो, चाहे बुरी, तो भी हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा, जिसके पास हम तुझे भेजते हैं, मानेंगे, क्योंकि जब हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानें तब हमारा भला हो।”

[22222222 22 2222222222 22 222222]

7 दस दिन के बीतने पर यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा।

8 तब उसने कारेह के पुत्र योहानान को, उसके साथ के दलों के प्रधानों को, और छोटे से लेकर बड़े तक जितने लोग थे, उन सभी को बुलाकर उनसे कहा,

9 “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके पास तुम ने मुझ को इसलिए भेजा कि मैं तुम्हारी विनती उसके आगे कह सुनाऊँ, वह यह कहता है:

10 यदि तुम इसी देश में रह जाओ, तब तो मैं तुम को नाश नहीं करूँगा वरन् बनाए रखूँगा; और तुम्हें न उखाड़ूँगा, वरन् रोपे रखूँगा; क्योंकि तुम्हारी जो हानि मैंने की है उससे [222 2222222 2222]†।

11 तुम बाबेल के राजा से डरते हो, अतः उससे मत डरो; यहोवा की यह वाणी है, उससे मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा करने और तुम को उसके हाथ से बचाने के लिये तुम्हारे साथ हूँ।

12 मैं तुम पर दया करूँगा, कि वह भी तुम पर दया करके तुम को तुम्हारी भूमि पर फिर से बसा देगा।

13 परन्तु यदि तुम यह कहकर कि हम इस देश में न रहेंगे अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानो, और कहो कि हम तो मिस्र देश जाकर वहीं रहेंगे,

14 क्योंकि वहाँ न हम युद्ध देखेंगे, न नरसिंगे का शब्द सुनेंगे और न हमको भोजन की घटी होगी, तो, हे बचे हुए यहूदियों, यहोवा का यह वचन सुनो।

15 इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: यदि तुम सचमुच मिस्र की ओर जाने का मुँह करो, और वहाँ रहने के लिये जाओ,

16 तो ऐसा होगा कि जिस तलवार से तुम डरते हो, वही वहाँ मिस्र देश में तुम को जा लेगी, और जिस अकाल का भय तुम खाते हो, वह मिस्र में तुम्हारा पीछा न छोड़ेगी; और वहीं तुम मरोगे।

17 जितने मनुष्य मिस्र में रहने के लिये उसकी ओर मुँह करें, वे सब तलवार, अकाल और मरी से मरेंगे, और जो विपत्ति मैं उनके बीच डालूँगा, उससे कोई बचा न रहेगा।

18 “इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: जिस प्रकार से मेरा कोप और जलजलाहट यरूशलेम के निवासियों पर भड़क उठी थी, उसी प्रकार से यदि तुम मिस्र में जाओ, तो मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर ऐसी भड़क उठेगी कि लोग चकित होंगे, और तुम्हारी उपमा देकर श्राप दिया करेंगे और तुम्हारी निन्दा किया करेंगे। तुम उस स्थान को फिर न देखने पाओगे।

19 हे बचे हुए यहूदियों, यहोवा ने तुम्हारे विषय में कहा है: ‘मिस्र में मत जाओ।’ तुम निश्चय जानो कि मैंने आज तुम को चिताकर यह बात बता दी है।

20 क्योंकि जब तुम ने मुझ को यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा के पास भेज दिया, ‘हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसी के अनुसार हमको बता और हम वैसा ही करेंगे,’ तब [222 2222-222222 22222 22 22 22222 22222 222]‡।

21 देखो, मैं आज तुम को बता देता हूँ, परन्तु, और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से कहने के लिये मुझ को भेजा है, उसमें से तुम कोई बात नहीं मानते।

22 अब तुम निश्चय जानो, कि जिस स्थान में तुम परदेशी होकर रहने की इच्छा करते हो, उसमें तुम तलवार, अकाल और मरी से मर जाओगे।”

\* 42:5 [2222 2222222 2 22222]: उस सम्पूर्ण वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने यिर्मयाह के द्वारा उन तक पहुँचाया। † 42:10 [222 2222222 2222]: उन्हें दण्ड देकर परमेश्वर के न्याय की पूर्ति हुई थी। ‡ 42:20 [222 222-222222 22222 22 22 22222 22222 222]: अर्थात् मुझे परमेश्वर के पास भेजकर उसकी इच्छा जानना स्वयं को धोखा देना था। तुम ने तो ठान लिया था कि मिस्र पलायन करना परमेश्वर की इच्छा है परन्तु जब परमेश्वर ने इसके विपरीत अपनी इच्छा प्रगट की तो अब तुम्हें उसको स्वीकार करने में परेशानी हो रही है।



## 43

११११११११ ११ १११११ १११११११११

1 जब यिर्मयाह उनके परमेश्वर यहोवा के सब वचन कह चुका, जिनको कहने के लिये परमेश्वर ने यिर्मयाह को उन सब लोगों के पास भेजा था,

2 तब होशयाह के पुत्र अजर्याह और कारेह के पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषों ने यिर्मयाह से कहा, “तू झूठ बोलता है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे यह कहने के लिये नहीं भेजा कि ‘मिस्र में रहने के लिये मत जाओ;’

3 परन्तु नेरिय्याह का पुत्र बारूक तुझको हमारे विरुद्ध उकसाता है कि हम कसदियों के हाथ में पड़ें और वे हमको मार डालें या बन्दी बनाकर बाबेल को ले जाएँ।”

4 इसलिए कारेह का पुत्र योहानान और दलों के सब प्रधानों और ११ ११११११ ११\* यहोवा की यह आज्ञा न मानी कि वे यहूदा के देश में ही रहें।

5 पर कारेह का पुत्र योहानान और दलों के और सब प्रधान उन सब यहूदियों को जो अन्यजातियों के बीच तितर-बितर हो गए थे, और उनमें से लौटकर यहूदा देश में रहने लगे थे, वे उनको ले गए

6 पुरुष, स्त्री, बाल-बच्चे, राजकुमारियाँ, और जितने प्राणियों को अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान ने गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, सौंप दिया था, उनको और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता और नेरिय्याह के पुत्र बारूक को वे ले गए;

7 और यहोवा की आज्ञा न मानकर वे मिस्र देश में तहपन्हेस नगर तक आ गए।

११११११ १११ ११११११ ११ १११ ११११११११११ ११ ११११११

8 तब यहोवा का यह वचन तहपन्हेस में यिर्मयाह के पास पहुँचा

9 “अपने हाथ से बड़े पत्थर ले, और यहूदी पुरुषों के सामने उस ईंट के चबूतरे में जो तहपन्हेस में फ़िरौन के भवन के द्वार के पास है, चूना फेर के छिपा दे,

10 और उन पुरुषों से कह, ‘इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यह कहता है: देखो, मैं बाबेल के राजा अपने सेवक नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूँगा, और वह अपना सिंहासन इन पत्थरों के ऊपर जो मैंने छिपा रखे हैं, रखेगा; और अपना छत्र इनके ऊपर तनवाएगा।

11 वह आकर मिस्र देश को मारेगा, तब जो मरनेवाले हों वे १११११११ ११ ११ ११११, जो बन्दी होनेवाले हों

\* 43:4 ११ १११११ ११: अनेक यहूदी नहीं चाहते थे परन्तु उनके घनिष्ठ प्रधानों ने उन्हें मिस्र जाने के लिए विवश किया। † 43:11 ११११११ ११ ११ ११११: प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य के अनुसार या तो अकाल से मरेगा या महामारी से या युद्ध में या बन्दी बनाया जाएगा या हत्यारे द्वारा मारा जाएगा। \* 44:1 ११११११११: मिस्र की उत्तरी सीमा पर एक दृढ़ गढ़ था जो मिगदोलम कहलाता था।

वे बँधुआई में, और जो तलवार के लिये है वे तलवार के वश में कर दिए जाएँगे। (११११११. 13:10)

12 मैं मिस्र के देवालयों में आग लगाऊँगा; और वह उन्हें फुँकवा देगा और बँधुआई में ले जाएगा; और जैसा कोई चरवाहा अपना वस्त्र ओढ़ता है, वैसा ही वह मिस्र देश को समेट लेगा; और तब बेखटके चला जाएगा।

13 वह मिस्र देश के सूर्यगृह के खम्भों को तोड़ डालेगा; और मिस्र के देवालयों को आग लगाकर फुँकवा देगा।”

## 44

११११११ १११ १११११११११ ११ ११११११११ ११११११११११ ११ ११११११११

1 जितने यहूदी लोग मिस्र देश में ११११११११\* तहपन्हेस और नोप नगरों और पत्रोस देश में रहते थे, उनके विषय यिर्मयाह के पास यह वचन पहुँचा

2 “इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: जो विपत्ति मैं यरूशलेम और यहूदा के सब नगरों पर डाल चुका हूँ, वह सब तुम लोगों ने देखी है। देखो, वे आज के दिन कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं,

3 क्योंकि उनके निवासियों ने वह बुराई की जिससे उन्होंने मुझे रिस दिलाई थी वे जाकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाते थे और उनकी उपासना करते थे, जिन्हें न तो तुम और न तुम्हारे पुरखा जानते थे।

4 तो भी मैं अपने सब दास भविष्यद्वक्ताओं को बड़े यत्न से यह कहने के लिये तुम्हारे पास भेजता रहा कि यह घृणित काम मत करो, जिससे मैं घृणा रखता हूँ।

5 पर उन्होंने मेरी न सुनी और न मेरी ओर कान लगाया कि अपनी बुराई से फिरें और दूसरे देवताओं के लिये धूप न जलाएँ।

6 इस कारण मेरी जलजलाहट और कोप की आग यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर भड़क गई; और वे आज के दिन तक उजाड़ और सुनसान पड़े हैं।

7 अब यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है, यह कहता है: तुम लोग क्यों अपनी यह बड़ी हानि करते हो, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या दूध पीता बच्चा, तुम सब यहूदा के बीच से नाश किए जाओ, और कोई न रहे?

8 क्योंकि इस मिस्र देश में जहाँ तुम परदेशी होकर रहने के लिये आए हो, तुम अपने कामों के द्वारा, अर्थात् दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते









25 यहोवा की यह वाणी है, मोआब का सींग कट गया, और भुजा टूट गई है।

26 “उसको मतवाला करो, क्योंकि उसने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है; इसलिए मोआब अपनी छाँट में लोटेगा, और उपहास में उड़ाया जाएगा।

27 क्या तूने भी इस्राएल को उपहास में नहीं उड़ाया? क्या वह चोरों के बीच पकड़ा गया था कि जब तू उसकी चर्चा करता तब तू सिर हिलाता था?

28 “हे मोआब के रहनेवालों अपने-अपने नगर को छोड़कर चट्टान की दरार में बसो! उस पंडुकी के समान हो जो गुफा के मुँह की एक ओर घोंसला बनाती हो।

29 हमने मोआब के गर्व के विषय में सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी है; उसका गर्व, अभिमान और अहंकार, और उसका मन फूलना प्रसिद्ध है।

30 यहोवा की यह वाणी है, मैं उसके रोष को भी जानता हूँ कि वह व्यर्थ ही है, उसके बड़े बोल से कुछ बन न पड़ा।

31 इस कारण मैं मोआबियों के लिये हाय-हाय करूँगा; हाँ मैं सारे मोआबियों के लिये चिल्लाऊँगा; कीरहेरेस के लोगों के लिये विलाप किया जाएगा।

32 हे सिबमा की दाखलता, मैं तुम्हारे लिये याजेर से भी अधिक विलाप करूँगा! तेरी डालियाँ तो ताल के पार बढ़ गई, वरन् याजेर के ताल तक भी पहुँची थीं; पर नाश करनेवाला तेरे धूपकाल के फलों पर, और तोड़ी हुई दाखों पर भी टूट पड़ा है।

33 फलवाली बारियों से और मोआब के देश से आनन्द और मगन होना उठ गया है; मैंने ऐसा किया कि दाखरस के कुण्डों में कुछ दाखमधु न रहा; लोग फिर ललकारते हुए दाख न रौंदेंगे; जो ललकार होनेवाली है, वह अब नहीं होगी।

34 “हेशबोन की चिल्लाहट सुनकर लोग एलाले और यहस तक, और सोअर से होरोनैम और एग्लत-शलीशिया तक भी चिल्लाते हुए भागे चले गए हैं। क्योंकि निम्नीम का जल भी सूख गया है।

35 और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं ऊँचे स्थान पर चढ़ावा चढ़ाना, और देवताओं के लिये धूप जलाना, दोनों को मोआब में बन्द कर दूँगा।

36 इस कारण मेरा मन मोआब और कीरहेरेस के लोगों के लिये बाँसुरी सा रो रोकर अलापता है, क्योंकि जो कुछ उन्होंने कमाकर बचाया है, वह नाश हो गया है।

37 क्योंकि सब के सिर मुँड़े गए और सब की दाढ़ियाँ नोची गई; सब के हाथ चिरे हुए, और सब की कमर में

टाट बन्धा हुआ है।

38 मोआब के सब घरों की छतों पर और सब चौकों में रोना पीटना हो रहा है; क्योंकि मैंने मोआब को तुच्छ बर्तन के समान तोड़ डाला है यहोवा की यह वाणी है।

39 मोआब कैसे विस्मित हो गया! हाय, हाय, करो! क्योंकि उसने कैसे लज्जित होकर पीठ फेरी है! इस प्रकार मोआब के चारों ओर के सब रहनेवाले उसका टट्टा करेंगे और विस्मित हो जाएँगे।”

40 क्योंकि यहोवा यह कहता है, “देखो, ~~यहोवा~~ और मोआब के ऊपर अपने पंख फैलाएगा।

41 करिय्योत ले लिया गया, और गढ़वाले नगर दूसरों के वश में पड़ गए। उस दिन मोआबी वीरों के मन जच्चा स्त्री के से हो जाएँगे;

42 और मोआब ऐसा तितर-बितर हो जाएगा कि उसका दल टूट जाएगा, क्योंकि उसने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है।

43 यहोवा की यह वाणी है कि हे मोआब के रहनेवाले, तेरे लिये भय और गड्ढा और फंदे ठहराए गए हैं।

44 जो कोई भय से भागे वह गड्ढे में गिरेगा, और जो कोई गड्ढे में से निकले, वह फंदे में फँसेगा। क्योंकि मैं मोआब के दण्ड का दिन उस पर ले आऊँगा, यहोवा की यही वाणी है।

45 “जो भागे हुए हैं वह हेशबोन में शरण लेकर खड़े हो गए हैं; परन्तु हेशबोन से आग और सीहोन के बीच से लौ निकली, जिससे मोआब देश के कोने और बलवैयों के चोण्डे भस्म हो गए हैं।

46 हे मोआब तुझ पर हाय! कमोश की प्रजा नाश हो गई; क्योंकि तेरे स्त्री-पुरुष दोनों बँधुआई में गए हैं।

47 तो भी यहोवा की यह वाणी है कि अन्त के दिनों में मैं मोआब को बँधुआई से लौटा ले आऊँगा।” मोआब के दण्ड का वचन यही तक हुआ।

## 49

~~यहोवा~~

1 अम्मोनियों के विषय यहोवा यह कहता है: “क्या इस्राएल के पुत्र नहीं हैं? क्या उसका कोई वारिस नहीं रहा? फिर मल्काम क्यों गाद के देश का अधिकारी हुआ? और उसकी प्रजा क्यों उसके नगरों में बसने पाई है?

2 यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि मैं अम्मोनियों के रब्बाह नामक नगर के विरुद्ध युद्ध की ललकार सुनवाऊँगा, और वह उजड़कर खण्डहर हो

§ 48:40 ~~यहोवा~~ नबूकदनेस्सर का एकाएक होनेवाला अदम्य आक्रमण एक उकाब की नाई होगा जैसे वह अपने शिकार पर झपटता है। (व्यव. 28:49)

जाएगा, और उसकी बस्तियाँ फूँक दी जाएँगी; तब जिन लोगों ने इस्राएलियों के देश को अपना लिया है, उनके देश को इस्राएली अपना लेंगे, यहोवा का यही वचन है।

3 “हे हेशबोन हाय-हाय कर; क्योंकि आई नगर नाश हो गया। हे रब्बाह की बेटियों चिल्लाओ! और कमर में टाट बाँधो, छाती पीटती हुई बाड़ों में इधर-उधर दौड़ो! क्योंकि मल्काम अपने याजकों और हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा।

4 हे भटकनेवाली बेटे! तू अपने देश की तराइयों पर, विशेषकर अपने बहुत ही उपजाऊ तराई पर क्यों फूलती है? तू क्यों यह कहकर अपने रखे हुए धन पर भरोसा रखती है, भेरे विरुद्ध कौन चढ़ाई कर सकेगा?”

5 प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है: देख, मैं तेरे चारों ओर के सब रहनेवालों की ओर से तेरे मन में भय उपजाने पर हूँ, और तेरे लोग अपने-अपने सामने की ओर ढकेल दिए जाएँगे; और जब वे मारे-मारे फिरेंगे, तब कोई उन्हें इकट्ठा न करेगा।

6 परन्तु उसके बाद मैं अम्मोनियों को बंधुआई से लौटा लाऊँगा; यहोवा की यही वाणी है।”

????? ?? ?????????? ??????????????????

7 एदोम के विषय, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “क्या तेमान में अब कुछ बुद्धि नहीं रही? क्या वहाँ के ज्ञानियों की युक्ति निष्फल हो गई? क्या उनकी बुद्धि जाती रही है?”

8 हे ददान के रहनेवालों भागो, लौट जाओ, वहाँ छिपकर बसो! क्योंकि जब मैं एसाव को दण्ड देने लगूँगा, तब उस पर भारी विपत्ति पड़ेगी।

9 यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं-कहीं दाख न छोड़ जाते? और यदि चोर रात को आते तो क्या वे जितना चाहते उतना धन लूटकर न ले जाते?

10 क्योंकि मैंने एसाव को उघाड़ा है, मैंने उसके छिपने के स्थानों को प्रगट किया है; यहाँ तक कि वह छिप न सका। उसके वंश और भाई और पड़ोसी सब नाश हो गए हैं और उसका अन्त हो गया।

11 अपने अनाथ बालकों को छोड़ जाओ, मैं उनको जिलाऊँगा; और तुम्हारी विधवाएँ मुझ पर भरोसा रखें। (1 ?????? 5:5)

12 क्योंकि यहोवा यह कहता है, देखो, जो इसके योग्य न थे कि कटोरे में से पीएँ, उनको तो निश्चय पीना पड़ेगा, फिर क्या तू किसी प्रकार से निर्दोष ठहरकर बच जाएगा? तू निर्दोष ठहरकर न बचेगा, तुझे अवश्य ही पीना पड़ेगा।

13 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैंने अपनी सौगन्ध खाई है, कि बोस्रा ऐसा उजड़ जाएगा कि लोग चकित होंगे, और उसकी उपमा देकर निन्दा किया करेंगे और श्राप दिया करेंगे; और उसके सारे गाँव सदा के लिये उजाड़ हो जाएँगे।”

14 मैंने यहोवा की ओर से समाचार सुना है, वरन् जाति-जाति में यह कहने को एक दूत भी भेजा गया है, इकट्ठे होकर एदोम पर चढ़ाई करो; और उससे लड़ने के लिये उठो।

15 क्योंकि मैंने तुझे जातियों में छोटा, और मनुष्यों में तुच्छ कर दिया है।

16 हे चट्टान की दरारों में बसे हुए, हे पहाड़ी की चोटी पर किला बनानेवाले! तेरे भयानक रूप और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया है। चाहे तू उकाब के समान अपना बसेरा ऊँचे स्थान पर बनाए, तो भी मैं वहाँ से तुझे उतार लाऊँगा, यहोवा की यही वाणी है।

17 “एदोम यहाँ तक उजड़ जाएगा कि जो कोई उसके पास से चले वह चकित होगा, और उसके सारे दुःखों पर ताली बजाएगा।

18 यहोवा का यह वचन है, कि जैसी सदोम और गमोरा और उनके आस-पास के नगरों के उलट जाने से उनकी दशा हुई थी, वैसी ही उसकी दशा होगी, वहाँ न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी उसमें टिकेगा।

19 देखो, वह सिंह के समान यरदन के आस-पास के घने जंगलों से सदा की चराई पर चढ़ेगा, और मैं उनको उसके सामने से झट भगा दूँगा; तब जिसको मैं चुन लूँ, उसको उन पर अधिकारी ठहराऊँगा। मेरे तुल्य कौन है? और कौन मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा? वह चरवाहा कहाँ है जो मेरा सामना कर सकेगा?

20 देखो, यहोवा ने एदोम के विरुद्ध क्या युक्ति की है; और तेमान के रहनेवालों के विरुद्ध कैसी कल्पना की है? निश्चय वह भेड़-बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा; वह चराई को भेड़-बकरियों से निश्चय खाली कर देगा।

21 उनके गिरने के शब्द से पृथ्वी काँप उठेगी; और ऐसी चिल्लाहट मचेगी जो लाल समुद्र तक सुनाई पड़ेगी।

22 देखो, वह उकाब के समान निकलकर उड़ आएगा, और बोस्रा पर अपने पंख फैलाएगा, और उस दिन एदोमी शूरवीरों का मन जच्चा स्त्री का सा हो जाएगा।”

????????? ?? ?????????? ??????????????????

23 दमिश्क के विषय, “हमात और अर्पाद की आशा टूटी है, क्योंकि उन्होंने बुरा समाचार सुना है, वे गल गए हैं; समुद्र पर चिन्ता है, वह शान्त नहीं हो सकता।

24 दमिश्क बलहीन होकर भागने को फिरती है, परन्तु कैंपकंपी ने उसे पकड़ा है, जच्चा की सी पीड़ा उसे उठी है।

25 हाय, वह नगर, वह प्रशंसा योग्य नगर, जो मेरे हर्ष का कारण है, वह छोड़ा गया है!

26 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उसके जवान चौकों में गिराए जाएँगे, और सब योद्धाओं का बोलना बन्द हो जाएगा।

27 मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग लगाऊँगा जिससे बेन्हदद के राजभवन भस्म हो जाएँगे।”

२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२२२

28 “केदार और हासोर के राज्यों के विषय जिन्हें बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने मार लिया। यहोवा यह कहता है: उठकर केदार पर चढ़ाई करो! पूरब के लोगों का नाश करो!

29 वे उनके डेरे और भेड़-बकरियाँ ले जाएँगे, उनके तम्बू और सब बर्तन उठाकर ऊँटों को भी हाँक ले जाएँगे, और उन लोगों से पुकारकर कहेंगे, ‘चारों ओर भय ही भय है।’

30 यहोवा की यह वाणी है, हे हासोर के रहनेवालों भागो! दूर-दूर मारे-मारे फिरो, कहीं जाकर छिपके बसो। क्योंकि बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्ध युक्ति और कल्पना की है।

31 “यहोवा की यह वाणी है, उठकर उस चैन से रहनेवाली जाति के लोगों पर चढ़ाई करो, जो २२२२२ २२२२\* और बिना किवाड़ और बेंडे के ऐसे ही बसे हुए हैं।

32 उनके ऊँट और अनगिनत गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ लूट में जाएँगी, क्योंकि मैं उनके गाल के बाल मुँडानेवालों को उड़ाकर सब दिशाओं में तितर-बितर करूँगा; और चारों ओर से उन पर विपत्ति लाकर डालूँगा, यहोवा की यह वाणी है।

33 हासोर गीदडों का वासस्थान होगा और सदा के लिये उजाड़ हो जाएगा, वहाँ न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी उसमें टिकेगा।”

२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२२२२२२२२२२२

34 यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के आरम्भ में यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास एलाम के विषय पहुँचा।

\* 49:31 २२२२ २२२२ २२२२: वे स्वावलम्बी थे अर्थात् किसी भी अन्य देश से उनकी संधि नहीं थी और न ही व्यापारिक सम्बंध थे। † 49:39 २२२२२: एलाम बाबेल के अधीन था (दानि. 8:2) और उसकी राजधानी शोशन फारसी राजाओं का मनभावन स्थान था। \* 50:2 २२२२२२: यह बाबेल का संरक्षक देवता था और नबूकदनेस्सर अपने पुत्र को दुष्ट मरोदक कहता है तो वह विशेष करके इसी देवता को समर्पित सेवक प्रतीत होता है।

35 सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “मैं एलाम के धनुष को जो उनके पराक्रम का मुख्य कारण है, तोड़ूँगा;

36 और मैं आकाश के चारों ओर से वायु बहाकर उन्हें चारों दिशाओं की ओर यहाँ तक तितर-बितर करूँगा, कि ऐसी कोई जाति न रहेगी जिसमें एलाम भागते हुए न आएँ। (२२२२२२२ 7:1)

37 मैं एलाम को उनके शत्रुओं और उनके प्राण के खोजियों के सामने विस्मित करूँगा, और उन पर अपना कोप भडकाकर विपत्ति डालूँगा। और यहोवा की यह वाणी है, कि तलवार को उन पर चलवाते-चलवाते मैं उनका अन्त कर डालूँगा;

38 और मैं एलाम में अपना सिंहासन रखकर उनके राजा और हाकिमों को नाश करूँगा, यहोवा की यही वाणी है।

39 “परन्तु यहोवा की यह भी वाणी है, कि अन्त के दिनों में मैं २२२२२† को बँधुआई से लौटा ले आऊँगा।”

## 50

२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२२२२२२२२२२२

1 बाबेल और कसदियों के देश के विषय में यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह वचन कहा:

2 “जातियों में बताओ, सुनाओ और झण्डा खड़ा करो; सुनाओ, मत छिपाओ कि बाबेल ले लिया गया, बेल का मुँह काला हो गया, २२२२२\* विस्मित हो गया। बाबेल की प्रतिमाएँ लज्जित हुई और उसकी बेडौल मूरतें विस्मित हो गईं।

3 क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति उस पर चढ़ाई करके उसके देश को यहाँ तक उजाड़ कर देगी, कि क्या मनुष्य, क्या पशु, उसमें कोई भी न रहेगा; सब भाग जाएँगे।

4 “यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में इस्राएली और यहूदा एक संग आएँगे, वे रोते हुए अपने परमेश्वर यहोवा को ढूँढने के लिये चले आएँगे।

5 वे सिय्योन की ओर मुँह किए हुए उसका मार्ग पूछते और आपस में यह कहते आएँगे, ‘आओ हम यहोवा से मिल कर लें, उसके साथ ऐसी वाचा बाँधे जो कभी भूली न जाए, परन्तु सदा स्थिर रहे।’

6 “मेरी प्रजा खोई हुई भेड़ें हैं; उनके चरवाहों ने उनको भटका दिया और पहाड़ों पर भटकाया है; वे पहाड़-पहाड़ और पहाड़ी-पहाड़ी घूमते-घूमते अपने बैठने के स्थान को भूल गई हैं। (२२२२२२ 10:6)



7 जितनों ने उन्हें पाया वे उनको खा गए; और उनके सतानेवालों ने कहा, 'इसमें हमारा कुछ दोष नहीं, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है जो धर्म का आधार है, और उनके पूर्वजों का [?] था।'

8 "बाबेल के बीच में से भागो, कसदियों के देश से निकल आओ। जैसे बकरे अपने झुण्ड के अगुए होते हैं, वैसे ही बनो। ([?] 18:4)

9 क्योंकि देखो, मैं उत्तर के देश से बड़ी जातियों को उभारकर उनकी मण्डली बाबेल पर चढ़ा ले आऊँगा, और वे उसके विरुद्ध पाँति बाँधेंगे; और उसी दिशा से वह ले लिया जाएगा। उनके तीर चतुर वीर के से होंगे; उनमें से कोई अकारथ न जाएगा।

10 कसदियों का देश ऐसा लुटेगा कि सब लूटनेवालों का पेट भर जाएगा, यहोवा की यह वाणी है।

11 "हे मेरे भाग के लूटनेवालों, तुम जो मेरी प्रजा पर आनन्द करते और फुले नहीं समाते हो, और घास चरनेवाली बछिया के समान उछलते और बलवन्त घोड़ों के समान हिनहिनाते हो,

12 तुम्हारी माता अत्यन्त लज्जित होगी और तुम्हारी जननी का मुँह काला होगा। क्योंकि वह सब जातियों में नीच होगी, वह जंगल और मरु और निर्जल देश हो जाएगी।

13 यहोवा के क्रोध के कारण, वह देश निर्जन रहेगा, वह उजाड़ ही उजाड़ होगा; जो कोई बाबेल के पास से चलेगा वह चकित होगा, और उसके सब दुःख देखकर ताली बजाएगा।

14 हे सब धनुधारियों, बाबेल के चारों ओर उसके विरुद्ध पाँति बाँधो; उस पर तीर चलाओ, उन्हें मत रख छोड़ो, क्योंकि उसने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।

15 चारों ओर से उस पर ललकारो, उसने हार मानी; उसके कोट गिराए गए, उसकी शहरपनाह ढाई गई। क्योंकि यहोवा उससे अपना बदला लेने पर है; इसलिए तुम भी उससे अपना-अपना बदला लो, जैसा उसने किया है, वैसा ही तुम भी उससे करो। ([?] 18:6)

16 बाबेल में से बानेवाले और काटनेवाले दोनों को नाश करो, वे दुःखदाई तलवार के डर के मारे अपने-अपने लोगों की ओर फिरें, और अपने-अपने देश को भाग जाएँ।

[?] [?] [?]

17 "[?] [?] [?] [?] [?], सिंहों ने उसको भगा दिया है। पहले तो अशूर के राजा ने उसको

खा डाला, और तब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसकी हड्डियों को तोड़ दिया है।

18 इस कारण इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है, देखो, जैसे मैंने अशूर के राजा को दण्ड दिया था, वैसे ही अब देश समेत बाबेल के राजा को दण्ड दूँगा।

19 मैं इस्राएल को उसकी चराई में लौटा लाऊँगा, और वह कर्मेल और बाशान में फिर चरेगा, और एप्रैम के पहाड़ों पर और गिलाद में फिर भर पेट खाने पाएगा।

20 यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में इस्राएल का अधर्म ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा, और यहूदा के पाप खोजने पर भी नहीं मिलेंगे; क्योंकि जिन्हें मैं बचाऊँ, उनके पाप भी क्षमा कर दूँगा।

[?] [?] [?] [?] [?]

21 "तू मरातैम देश और पकोद नगर के निवासियों पर चढ़ाई कर। मनुष्यों को तो मार डाल, और धन का सत्यानाश कर; यहोवा की यह वाणी है, और जो-जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ, उन सभी के अनुसार कर।

22 सुनो, उस देश में युद्ध और सत्यानाश का सा शब्द हो रहा है।

23 जो हथौड़ा सारी पृथ्वी के लोगों को चूर-चूर करता था, वह कैसा काट डाला गया है! बाबेल सब जातियों के बीच में कैसा उजाड़ हो गया है!

24 हे बाबेल, मैंने तेरे लिये फंदा लगाया, और तू अनजाने उसमें फँस भी गया; तू ढूँढ़कर पकड़ा गया है, क्योंकि तू यहोवा का विरोध करता था।

25 प्रभु, सेनाओं के यहोवा ने अपने शस्त्रों का घर खोलकर, अपने क्रोध प्रगट करने का सामान निकाला है; क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा को कसदियों के देश में एक काम करना है। ([?] 9:22, [?] 13:5)

26 पृथ्वी की छोर से आओ, और उसकी बखरियों को खोलो; उसको ढेर ही ढेर बना दो; ऐसा सत्यानाश करो कि उसमें कुछ भी न बचा रहें।

27 उसके सब बैलों को नाश करो, वे घात होने के स्थान में उतर जाएँ। उन पर हाय! क्योंकि उनके दण्ड पाने का दिन आ पहुँचा है।

[?] [?] [?]

28 "सुनो, बाबेल के देश में से भागनेवालों का सा बोल सुनाई पड़ता है जो सिय्योन में यह समाचार देने को दौड़े आते हैं, कि हमारा परमेश्वर यहोवा अपने मन्दिर का बदला ले रहा है।

† 50:7 [?]: यिर्म.31:23 यरूशलेम के संदर्भ में है। जहाँ यहोवा ही उनका सच्चा शरणस्थान है। उसी में उसकी प्रजा की सुरक्षा, विश्राम और समृद्धि है। ‡ 50:17 [?] [?] [?] [?]: अर्थात् सिंहों द्वारा पीछा किए जाने के कारण भेड़ों के लिए तितर-बितर होने जैसा।

29 “सब धनुर्धारियों को बाबेल के विरुद्ध इकट्ठे करो, उसके चारों ओर छावनी डालो, कोई जन भागकर निकलने न पाए। उसके काम का बदला उसे दो, जैसा उसने किया है, ठीक वैसा ही उसके साथ करो; क्योंकि उसने यहोवा इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध अभिमान किया है। (22:22-24. 18:6)

30 इस कारण उसके जवान चौकों में गिराए जाएंगे, और सब योद्धाओं का बोल बन्द हो जाएगा, यहोवा की यही वाणी है।

31 “प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे अभिमानी, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; तेरे दण्ड पाने का दिन आ गया है।

32 अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा और कोई उसे फिर न उठाएगा; और मैं उसके नगरों में आग लगाऊँगा जिससे उसके चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा।

22:22-24 22 22:22-24

33 “सेनाओं का यहोवा यह कहता है, इस्राएल और यहूदा दोनों बराबर पिसे हुए हैं; और जितनों ने उनको बँधुआ किया वे उन्हें पकड़े रहते हैं, और जाने नहीं देते।

34 उनका छुड़ानेवाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा, यही उसका नाम है। वह उनका मुकद्दमा भली भाँति लड़ेगा कि पृथ्वी को चैन दे परन्तु बाबेल के निवासियों को व्याकुल करे। (22:22-24. 18:8)

35 “यहोवा की यह वाणी है, कसदियों और बाबेल के हाकिम, पंडित आदि सब निवासियों पर तलवार चलेगी!

36 बड़ा बोल बोलनेवालों पर तलवार चलेगी, और वे मूर्ख बनेंगे! उसके शूरवीरों पर भी तलवार चलेगी, और वे विस्मित हो जाएँगे!

37 उसके सवारों और रथियों पर और सब मिले जुले लोगों पर भी तलवार चलेगी, और वे स्त्रियाँ बन जाएँगे! उसके भण्डारों पर तलवार चलेगी, और वे लुट जाएँगे!

38 उसके जलाशयों पर सूखा पड़ेगा, और वे सूख जाएँगे! क्योंकि वह खुदी हुई मूरतों से भरा हुआ देश है, और वे अपनी भयानक प्रतिमाओं पर बावले हैं। (22:22-24. 16:12)

39 “इसलिए निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर वहाँ बसेंगे, और शत्रुमुर्ग उसमें वास करेंगे, और वह फिर सदा तक बसाया न जाएगा, न युग-युग उसमें कोई वास कर सकेगा। (22:22-24. 18:2)

40 यहोवा की यह वाणी है, कि सदोम और गमोरा और उनके आस-पास के नगरों की जैसी दशा उस समय हुई थी जब परमेश्वर ने उनको उलट दिया था, वैसी ही दशा

बाबेल की भी होगी, यहाँ तक कि कोई मनुष्य उसमें न रह सकेगा, और न कोई आदमी उसमें टिकेगा।

41 “सुनो, उत्तर दिशा से एक देश के लोग आते हैं, और पृथ्वी की छोर से एक बड़ी जाति और बहुत से राजा उठकर चढ़ाई करेंगे।

42 वे धनुष और बर्छी पकड़े हुए हैं; वे क्रूर और निर्दयी हैं; वे समुद्र के समान गरजेंगे; और घोड़ों पर चढ़े हुए तुझ बाबेल की बेटी के विरुद्ध पाँति बाँधे हुए युद्ध करनेवालों के समान आएँगे।

43 उनका समाचार सुनते ही बाबेल के राजा के हाथ पाँव ढीले पड़ गए, और उसको जच्चा की सी पीड़ाएँ उठी।

44 “सुनो, वह सिंह के समान आएगा जो यरदन के आस-पास के घने जंगल से निकलकर दृढ़ भेड़शालाएँ पर चढ़े, परन्तु मैं उनको उसके सामने से झट भगा दूँगा; तब जिसको मैं चुन लूँ, उसी को उन पर अधिकारी ठहराऊँगा। देखो, मेरे तुल्य कौन है? कौन मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा? वह चरवाहा कहाँ है जो मेरा सामना कर सकेगा?”

45 इसलिए सुनो कि यहोवा ने बाबेल के विरुद्ध क्या युक्ति की है और कसदियों के देश के विरुद्ध कौन सी कल्पना की है: निश्चय वह भेड़-बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा, निश्चय वह उनकी चराइयों को भेड़-बकरियों से खाली कर देगा।

46 बाबेल के लूट लिए जाने के शब्द से पृथ्वी काँप उठी है, और उसकी चिल्लाहट जातियों में सुनाई पड़ती है।

## 51

22:22-24 22 22:22-24

1 यहोवा यह कहता है, मैं बाबेल के और लेबकामै के रहनेवालों के विरुद्ध एक नाश करनेवाली वायु चलाऊँगा;

2 और मैं बाबेल के पास ऐसे लोगों को भेजूँगा जो उसको फटक-फटककर उड़ा देंगे, और इस रीति से उसके देश को सुनसान करेंगे; और विपत्ति के दिन चारों ओर से उसके विरुद्ध होंगे।

3 धनुर्धारी के विरुद्ध और जो अपना झिलम पहने हैं धनुर्धारी धनुष चढ़ाए हुए उठे; उसके जवानों से कुछ कोमलता न करना; उसकी सारी सेना को सत्यानाश करो।

4 कसदियों के देश में मरे हुए और उसकी सड़कों में 22:22-24 22:22 22:22 22:22-24\*

\* 51:4 22:22-24 22:22 22:22 22:22-24: वह उकाब सा उड़ेगा: अर्थात् जो युवक उनके सैनिक थे- (यिर्म.51:3) - वे उसकी सड़कों पर मरे हुए और छिड़े हुए मिलेंगे अर्थात् बाबेल की सड़कों पर।

5 क्योंकि, यद्यपि इस्राएल और यहूदा के देश, इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध किए हुए पापों से भरपूर हो गए हैं, तो भी उनके परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा ने उनको त्याग नहीं दिया।

6 “बाबेल में से भागो, अपना-अपना प्राण बचाओ! उसके अधर्म में भागी होकर तुम भी न मिट जाओ; क्योंकि यह यहोवा के बदला लेने का समय है, वह उसको बदला देने पर है। (22:22-24. 18:4)

7 बाबेल यहोवा के हाथ में सोने का कटोरा था, जिससे सारी पृथ्वी के लोग मतवाले होते थे; जाति-जाति के लोगों ने उसके दाखमधु में से पिया, इस कारण वे भी बावले हो गए। (22:22-24. 14:8, 22:22-24. 17:2-4, 22:22-24. 18:3)

8 बाबेल अचानक ले ली गई और नाश की गई है। उसके लिये हाय-हाय करो! उसके घावों के लिये बलसान औषधि लाओ; सम्भव है वह चंगी हो सके। (22:22-24. 14:8, 22:22-24. 18:2)

9 हम बाबेल का इलाज करते तो थे, परन्तु वह चंगी नहीं हुई। इसलिए आओ, हम उसको तजकर अपने-अपने देश को चले जाएँ; क्योंकि उस पर किए हुए न्याय का निर्णय आकाश वरन् स्वर्ग तक भी पहुँच गया है। (22:22-24. 18:5)

10 यहोवा ने हमारे धार्मिकता के काम प्रगट किए हैं; अतः आओ, हम सिय्योन में अपने परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें।

11 “तीरों को पैना करो! ढालें थामे रहो! क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है, उसने बाबेल को नाश करने की कल्पना की है, क्योंकि यहोवा अर्थात् उसके मन्दिर का यही बदला है

12 बाबेल की शहरपनाह के विरुद्ध झण्डा खड़ा करो; बहुत पहरुए बैठाओ; घात लगाने वालों को बैठाओ; क्योंकि यहोवा ने बाबेल के रहनेवालों के विरुद्ध जो कुछ कहा था, वह अब करने पर है वरन् किया भी है।

13 हे बहुत जलाशयों के बीच बसी हुई और बहुत भण्डार रखनेवाली, तेरा अन्त आ गया, तेरे लोभ की सीमा पहुँच गई है। (22:22-24. 17:1,15)

14 सेनाओं के यहोवा ने अपनी ही शपथ खाई है, कि निश्चय मैं तुझको टिड्डियों के समान अनगिनत मनुष्यों से भर दूँगा, और वे तेरे विरुद्ध ललकारेंगे।

22:22-24 22 22:22-24 22 22:22

15 “उसी ने पृथ्वी को अपने सामर्थ्य से बनाया, और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया; और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है।

16 जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, वह पृथ्वी की छोर से कुहरा उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली बनाता, और अपने भण्डार में से पवन निकाल ले आता है।

17 सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित है; सब सुनारों को अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण लज्जित होना पड़ेगा; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें धोखा देनेवाली हैं, और उनके कुछ भी साँस नहीं चलती।

18 वे तो व्यर्थ और ठट्टे ही के योग्य है; जब उनके नाश किए जाने का समय आएगा, तब वे नाश ही होंगी।

19 परन्तु जो याकूब का निज भाग है, वह उनके समान नहीं, वह तो सब का बनानेवाला है, और इस्राएल उसका निज भाग है; उसका नाम सेनाओं का यहोवा है।

22:22-24 22 22:22

20 “तू मेरा फरसा और युद्ध के लिये हथियार ठहराया गया है; तेरे द्वारा मैं जाति-जाति को तितर-बितर करूँगा; और तेरे ही द्वारा राज्य-राज्य को नाश करूँगा।

21 तेरे ही द्वारा मैं सवार समेत घोड़ों को टुकड़े-टुकड़े करूँगा;

22 तेरे ही द्वारा रथी समेत रथ को भी टुकड़े-टुकड़े करूँगा; तेरे ही द्वारा मैं स्त्री पुरुष दोनों को टुकड़े-टुकड़े करूँगा; तेरे ही द्वारा मैं बूढ़े और लड़के दोनों को टुकड़े-टुकड़े करूँगा, और जवान पुरुष और जवान स्त्री दोनों को मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े-टुकड़े करूँगा;

23 तेरे ही द्वारा मैं भेड़-बकरियों समेत चरवाहे को टुकड़े-टुकड़े करूँगा; तेरे ही द्वारा मैं किसान और उसके जोड़े बैलों को भी टुकड़े-टुकड़े करूँगा; अधिपतियों और हाकिमों को भी मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े-टुकड़े करूँगा।

22:22-24 22 22:22

24 “मैं बाबेल को और सारे कसदियों को भी उन सब बुराइयों का बदला दूँगा, जो उन्होंने तुम लोगों के सामने सिय्योन में की है; यहोवा की यही वाणी है।

25 “हे नाश करनेवाले पहाड़ जिसके द्वारा सारी पृथ्वी नाश हुई है, यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूँ और हाथ बढ़ाकर तुझे ढाँगों पर से लुढ़का दूँगा और जला हुआ पहाड़ बनाऊँगा। (22:22-24. 8:8)

26 लोग तुझ से न तो घर के कोने के लिये पत्थर लेंगे, और न नीव के लिये, क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा, यहोवा की यही वाणी है।

27 “देश में झण्डा खड़ा करो, जाति-जाति में नरसिंगा फूँको; उसके विरुद्ध जाति-जाति को तैयार करो; अरारात, मिन्नी और अश्कनज नामक राज्यों को उसके विरुद्ध बुलाओ, उसके विरुद्ध सेनापति भी ठहराओ;

घोड़ों को शिखरवाली टिड्डियों के समान अनगिनत चढ़ा ले आओ।

28 उसके विरुद्ध जातियों को तैयार करो; मादी राजाओं को उनके अधिपतियों सब हाकिमों सहित और उस राज्य के सारे देश को तैयार करो।

29 यहोवा ने विचारा है कि वह बाबेल के देश को ऐसा उजाड़ करे कि उसमें कोई भी न रहे; इसलिए पृथ्वी काँपती है और दुःखित होती है

30 बाबेल के शूरवीर गढ़ों में रहकर लड़ने से इन्कार करते हैं, उनकी वीरता जाती रही है; और यह देखकर कि उनके वासस्थानों में आग लग गई वे स्त्री बन गए हैं; उसके फाटकों के बेंडे तोड़े गए हैं।

31 एक हरकारा दूसरे हरकारे से और एक समाचार देनेवाला दूसरे समाचार देनेवाले से मिलने और बाबेल के राजा को यह समाचार देने के लिये दौड़ेगा कि तेरा नगर चारों ओर से ले लिया गया है;

32 और घाट शत्रुओं के वश में हो गए हैं, ताल भी सुखाए गए, और योद्धा घबरा उठे हैं।

33 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: बाबेल की बेटाँ दाँवते समय के खलिहान के समान है, थोड़े ही दिनों में उसकी कटनी का समय आएगा।

34 “बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने मुझ को खा लिया, मुझ को पीस डाला; उसने मुझे खाली बर्तन के समान कर दिया, उसने मगरमच्छ के समान मुझ को निगल लिया है; और मुझ को स्वादिष्ट भोजन जानकर अपना पेट मुझसे भर लिया है, उसने मुझ को जबरन निकाल दिया है।”

35 सिय्योन की रहनेवाली कहेगी, “जो उपद्रव मुझ पर और मेरे शरीर पर हुआ है, वह बाबेल पर पलट जाए।” और यरूशलेम कहेगी, “मुझ में की हुई हत्याओं का दोष कसदियों के देश के रहनेवालों पर लगे।”

2222 22 2222 222222 22 2222

36 इसलिए यहोवा कहता है, “मैं तेरा मुकद्दमा लड़ूँगा और तेरा बदला लूँगा। मैं उसके ताल को और उसके सोतों को सूखा दूँगा; (222222. 16:12)

37 और बाबेल खण्डहर, और गीदड़ों का वासस्थान होगा; और लोग उसे देखकर चकित होंगे और ताली बजाएँगे, और उसमें कोई न रहेगा।

38 “लोग एक संग ऐसे गरजेंगे और गुराँएँगे, जैसे युवा सिंह व सिंह के बच्चे आहेर पर करते हैं।

39 परन्तु जब जब वे उत्तेजित हों, तब मैं भोज तैयार करके उन्हें ऐसा मतवाला करूँगा, कि वे हुलसकर सदा

की नींद में पड़ेंगे और कभी न जागेंगे, यहोवा की यही वाणी है।

40 मैं उनको, भेड़ों के बच्चों, और मेढ़ों और बकरों के समान घात करा दूँगा।

2222 22 2222 222222 22 2222

41 “शेशक, जिसकी प्रशंसा सारे पृथ्वी पर होती थी कैसे ले लिया गया? वह कैसे पकड़ा गया? बाबेल जातियों के बीच कैसे सुनसान हो गया है?

42 बाबेल के ऊपर समुद्र चढ़ आया है, वह उसकी बहुत सी लहरों में डूब गया है।

43 उसके नगर उजड़ गए, उसका देश निर्जन और निर्जल हो गया है, उसमें कोई मनुष्य नहीं रहता, और उससे होकर कोई आदमी नहीं चलता।

44 मैं बाबेल में बेल को दण्ड दूँगा, और उसने जो कुछ निगल लिया है, वह उसके मुँह से उगलवाऊँगा। जातियों के लोग फिर उसकी ओर ताँता बाँधे हुए न चलेंगे; बाबेल की शहरपनाह गिराई जाएगी।

45 हे मेरी प्रजा, उसमें से निकल आओ! 22222-222222 222222 22 222222 22 222222 2222 2222 22 222222! (2 22222. 6:17)

46 जब उड़ती हुई बात उस देश में सुनी जाए, तब तुम्हारा मन न घबराए; और जो उड़ती हुई चर्चा पृथ्वी पर सुनी जाएगी तुम उससे न डरना: उसके एक वर्ष बाद एक और बात उड़ती हुई आएगी, तब उसके बाद दूसरे वर्ष में एक और बात उड़ती हुई आएगी, और उस देश में उपद्रव होगा, और एक हाकिम दूसरे के विरुद्ध होगा।

47 “इसलिए देख, वे दिन आते हैं जब मैं बाबेल की खुदी हुई मूरतों पर दण्ड की आज्ञा करूँगा; उस सारे देश के लोगों का मुँह काला हो जाएगा, और उसके सब मारे हुए लोग उसी में पड़े रहेंगे।

48 तब स्वर्ग और पृथ्वी के सारे निवासी बाबेल पर जयजयकार करेंगे; क्योंकि उत्तर दिशा से नाश करनेवाले उस पर चढ़ाई करेंगे, यहोवा की यही वाणी है। (222222. 18:20)

49 जैसे बाबेल ने इस्राएल के लोगों को मारा, वैसे ही सारे देश के लोग उसी में मार डाले जाएँगे। (222222. 18:24)

222222 2222222222 22 2222222222 22 22222222

50 “हे तलवार से बचे हुआ, भागो, खड़े मत रहो! यहोवा को दूर से स्मरण करो, और यरूशलेम की भी सुधि लो:

† 51:45 22222-222222 22222222 22 ... 222222: बाबेल से बचो। परमेश्वर के लोग भाग जायें कि बाबेल के कष्टों से बच पाएँ।





32 और उससे मधुर-मधुर वचन कहकर, जो राजा उसके साथ बाबेल में बँधुए थे, उनके सिंहासनों से उसके सिंहासन को अधिक ऊँचा किया।

33 उसके बन्दीगृह के वस्त्र बदल दिए; और वह जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन करता रहा;

34 और प्रतिदिन के खर्च के लिये बाबेल के राजा के यहाँ से उसको नित्य कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ। यह प्रबन्ध उसकी मृत्यु के दिन तक उसके जीवन भर लगातार बना रहा।







क्योंकि मैं बहुत ही कराहती हूँ,  
और मेरा हृदय रोग से निर्बल हो गया है।

## 2

1 यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को किस प्रकार अपने कोप

के बादलों से ढाँप दिया है!

उसने इस्राएल की शोभा को आकाश से धरती पर पटक दिया;

और कोप के दिन अपने पाँवों की चौकी को स्मरण नहीं किया।

2 यहोवा ने याकूब की सब बस्तियों को निष्ठुरता से नष्ट किया है;

उसने रोष में आकर यहूदा की पुत्री के दृढ़ गढ़ों को ढाकर मिट्टी में मिला दिया है;

उसने हाकिमों समेत राज्य को अपवित्र ठहराया है।

3 उसने क्रोध में आकर इस्राएल के <sup>1</sup> <sup>2</sup> <sup>3</sup> <sup>4</sup> <sup>5</sup> <sup>6</sup> <sup>7</sup> <sup>8</sup> <sup>9</sup> <sup>10</sup> <sup>11</sup> <sup>12</sup> <sup>13</sup> <sup>14</sup> <sup>15</sup> <sup>16</sup> <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> <sup>22</sup> <sup>23</sup> <sup>24</sup> <sup>25</sup> <sup>26</sup> <sup>27</sup> <sup>28</sup> <sup>29</sup> <sup>30</sup> <sup>31</sup> <sup>32</sup> <sup>33</sup> <sup>34</sup> <sup>35</sup> <sup>36</sup> <sup>37</sup> <sup>38</sup> <sup>39</sup> <sup>40</sup> <sup>41</sup> <sup>42</sup> <sup>43</sup> <sup>44</sup> <sup>45</sup> <sup>46</sup> <sup>47</sup> <sup>48</sup> <sup>49</sup> <sup>50</sup> <sup>51</sup> <sup>52</sup> <sup>53</sup> <sup>54</sup> <sup>55</sup> <sup>56</sup> <sup>57</sup> <sup>58</sup> <sup>59</sup> <sup>60</sup> <sup>61</sup> <sup>62</sup> <sup>63</sup> <sup>64</sup> <sup>65</sup> <sup>66</sup> <sup>67</sup> <sup>68</sup> <sup>69</sup> <sup>70</sup> <sup>71</sup> <sup>72</sup> <sup>73</sup> <sup>74</sup> <sup>75</sup> <sup>76</sup> <sup>77</sup> <sup>78</sup> <sup>79</sup> <sup>80</sup> <sup>81</sup> <sup>82</sup> <sup>83</sup> <sup>84</sup> <sup>85</sup> <sup>86</sup> <sup>87</sup> <sup>88</sup> <sup>89</sup> <sup>90</sup> <sup>91</sup> <sup>92</sup> <sup>93</sup> <sup>94</sup> <sup>95</sup> <sup>96</sup> <sup>97</sup> <sup>98</sup> <sup>99</sup> <sup>100</sup> <sup>101</sup> <sup>102</sup> <sup>103</sup> <sup>104</sup> <sup>105</sup> <sup>106</sup> <sup>107</sup> <sup>108</sup> <sup>109</sup> <sup>110</sup> <sup>111</sup> <sup>112</sup> <sup>113</sup> <sup>114</sup> <sup>115</sup> <sup>116</sup> <sup>117</sup> <sup>118</sup> <sup>119</sup> <sup>120</sup> <sup>121</sup> <sup>122</sup> <sup>123</sup> <sup>124</sup> <sup>125</sup> <sup>126</sup> <sup>127</sup> <sup>128</sup> <sup>129</sup> <sup>130</sup> <sup>131</sup> <sup>132</sup> <sup>133</sup> <sup>134</sup> <sup>135</sup> <sup>136</sup> <sup>137</sup> <sup>138</sup> <sup>139</sup> <sup>140</sup> <sup>141</sup> <sup>142</sup> <sup>143</sup> <sup>144</sup> <sup>145</sup> <sup>146</sup> <sup>147</sup> <sup>148</sup> <sup>149</sup> <sup>150</sup> <sup>151</sup> <sup>152</sup> <sup>153</sup> <sup>154</sup> <sup>155</sup> <sup>156</sup> <sup>157</sup> <sup>158</sup> <sup>159</sup> <sup>160</sup> <sup>161</sup> <sup>162</sup> <sup>163</sup> <sup>164</sup> <sup>165</sup> <sup>166</sup> <sup>167</sup> <sup>168</sup> <sup>169</sup> <sup>170</sup> <sup>171</sup> <sup>172</sup> <sup>173</sup> <sup>174</sup> <sup>175</sup> <sup>176</sup> <sup>177</sup> <sup>178</sup> <sup>179</sup> <sup>180</sup> <sup>181</sup> <sup>182</sup> <sup>183</sup> <sup>184</sup> <sup>185</sup> <sup>186</sup> <sup>187</sup> <sup>188</sup> <sup>189</sup> <sup>190</sup> <sup>191</sup> <sup>192</sup> <sup>193</sup> <sup>194</sup> <sup>195</sup> <sup>196</sup> <sup>197</sup> <sup>198</sup> <sup>199</sup> <sup>200</sup> <sup>201</sup> <sup>202</sup> <sup>203</sup> <sup>204</sup> <sup>205</sup> <sup>206</sup> <sup>207</sup> <sup>208</sup> <sup>209</sup> <sup>210</sup> <sup>211</sup> <sup>212</sup> <sup>213</sup> <sup>214</sup> <sup>215</sup> <sup>216</sup> <sup>217</sup> <sup>218</sup> <sup>219</sup> <sup>220</sup> <sup>221</sup> <sup>222</sup> <sup>223</sup> <sup>224</sup> <sup>225</sup> <sup>226</sup> <sup>227</sup> <sup>228</sup> <sup>229</sup> <sup>230</sup> <sup>231</sup> <sup>232</sup> <sup>233</sup> <sup>234</sup> <sup>235</sup> <sup>236</sup> <sup>237</sup> <sup>238</sup> <sup>239</sup> <sup>240</sup> <sup>241</sup> <sup>242</sup> <sup>243</sup> <sup>244</sup> <sup>245</sup> <sup>246</sup> <sup>247</sup> <sup>248</sup> <sup>249</sup> <sup>250</sup> <sup>251</sup> <sup>252</sup> <sup>253</sup> <sup>254</sup> <sup>255</sup> <sup>256</sup> <sup>257</sup> <sup>258</sup> <sup>259</sup> <sup>260</sup> <sup>261</sup> <sup>262</sup> <sup>263</sup> <sup>264</sup> <sup>265</sup> <sup>266</sup> <sup>267</sup> <sup>268</sup> <sup>269</sup> <sup>270</sup> <sup>271</sup> <sup>272</sup> <sup>273</sup> <sup>274</sup> <sup>275</sup> <sup>276</sup> <sup>277</sup> <sup>278</sup> <sup>279</sup> <sup>280</sup> <sup>281</sup> <sup>282</sup> <sup>283</sup> <sup>284</sup> <sup>285</sup> <sup>286</sup> <sup>287</sup> <sup>288</sup> <sup>289</sup> <sup>290</sup> <sup>291</sup> <sup>292</sup> <sup>293</sup> <sup>294</sup> <sup>295</sup> <sup>296</sup> <sup>297</sup> <sup>298</sup> <sup>299</sup> <sup>300</sup> <sup>301</sup> <sup>302</sup> <sup>303</sup> <sup>304</sup> <sup>305</sup> <sup>306</sup> <sup>307</sup> <sup>308</sup> <sup>309</sup> <sup>310</sup> <sup>311</sup> <sup>312</sup> <sup>313</sup> <sup>314</sup> <sup>315</sup> <sup>316</sup> <sup>317</sup> <sup>318</sup> <sup>319</sup> <sup>320</sup> <sup>321</sup> <sup>322</sup> <sup>323</sup> <sup>324</sup> <sup>325</sup> <sup>326</sup> <sup>327</sup> <sup>328</sup> <sup>329</sup> <sup>330</sup> <sup>331</sup> <sup>332</sup> <sup>333</sup> <sup>334</sup> <sup>335</sup> <sup>336</sup> <sup>337</sup> <sup>338</sup> <sup>339</sup> <sup>340</sup> <sup>341</sup> <sup>342</sup> <sup>343</sup> <sup>344</sup> <sup>345</sup> <sup>346</sup> <sup>347</sup> <sup>348</sup> <sup>349</sup> <sup>350</sup> <sup>351</sup> <sup>352</sup> <sup>353</sup> <sup>354</sup> <sup>355</sup> <sup>356</sup> <sup>357</sup> <sup>358</sup> <sup>359</sup> <sup>360</sup> <sup>361</sup> <sup>362</sup> <sup>363</sup> <sup>364</sup> <sup>365</sup> <sup>366</sup> <sup>367</sup> <sup>368</sup> <sup>369</sup> <sup>370</sup> <sup>371</sup> <sup>372</sup> <sup>373</sup> <sup>374</sup> <sup>375</sup> <sup>376</sup> <sup>377</sup> <sup>378</sup> <sup>379</sup> <sup>380</sup> <sup>381</sup> <sup>382</sup> <sup>383</sup> <sup>384</sup> <sup>385</sup> <sup>386</sup> <sup>387</sup> <sup>388</sup> <sup>389</sup> <sup>390</sup> <sup>391</sup> <sup>392</sup> <sup>393</sup> <sup>394</sup> <sup>395</sup> <sup>396</sup> <sup>397</sup> <sup>398</sup> <sup>399</sup> <sup>400</sup> <sup>401</sup> <sup>402</sup> <sup>403</sup> <sup>404</sup> <sup>405</sup> <sup>406</sup> <sup>407</sup> <sup>408</sup> <sup>409</sup> <sup>410</sup> <sup>411</sup> <sup>412</sup> <sup>413</sup> <sup>414</sup> <sup>415</sup> <sup>416</sup> <sup>417</sup> <sup>418</sup> <sup>419</sup> <sup>420</sup> <sup>421</sup> <sup>422</sup> <sup>423</sup> <sup>424</sup> <sup>425</sup> <sup>426</sup> <sup>427</sup> <sup>428</sup> <sup>429</sup> <sup>430</sup> <sup>431</sup> <sup>432</sup> <sup>433</sup> <sup>434</sup> <sup>435</sup> <sup>436</sup> <sup>437</sup> <sup>438</sup> <sup>439</sup> <sup>440</sup> <sup>441</sup> <sup>442</sup> <sup>443</sup> <sup>444</sup> <sup>445</sup> <sup>446</sup> <sup>447</sup> <sup>448</sup> <sup>449</sup> <sup>450</sup> <sup>451</sup> <sup>452</sup> <sup>453</sup> <sup>454</sup> <sup>455</sup> <sup>456</sup> <sup>457</sup> <sup>458</sup> <sup>459</sup> <sup>460</sup> <sup>461</sup> <sup>462</sup> <sup>463</sup> <sup>464</sup> <sup>465</sup> <sup>466</sup> <sup>467</sup> <sup>468</sup> <sup>469</sup> <sup>470</sup> <sup>471</sup> <sup>472</sup> <sup>473</sup> <sup>474</sup> <sup>475</sup> <sup>476</sup> <sup>477</sup> <sup>478</sup> <sup>479</sup> <sup>480</sup> <sup>481</sup> <sup>482</sup> <sup>483</sup> <sup>484</sup> <sup>485</sup> <sup>486</sup> <sup>487</sup> <sup>488</sup> <sup>489</sup> <sup>490</sup> <sup>491</sup> <sup>492</sup> <sup>493</sup> <sup>494</sup> <sup>495</sup> <sup>496</sup> <sup>497</sup> <sup>498</sup> <sup>499</sup> <sup>500</sup> <sup>501</sup> <sup>502</sup> <sup>503</sup> <sup>504</sup> <sup>505</sup> <sup>506</sup> <sup>507</sup> <sup>508</sup> <sup>509</sup> <sup>510</sup> <sup>511</sup> <sup>512</sup> <sup>513</sup> <sup>514</sup> <sup>515</sup> <sup>516</sup> <sup>517</sup> <sup>518</sup> <sup>519</sup> <sup>520</sup> <sup>521</sup> <sup>522</sup> <sup>523</sup> <sup>524</sup> <sup>525</sup> <sup>526</sup> <sup>527</sup> <sup>528</sup> <sup>529</sup> <sup>530</sup> <sup>531</sup> <sup>532</sup> <sup>533</sup> <sup>534</sup> <sup>535</sup> <sup>536</sup> <sup>537</sup> <sup>538</sup> <sup>539</sup> <sup>540</sup> <sup>541</sup> <sup>542</sup> <sup>543</sup> <sup>544</sup> <sup>545</sup> <sup>546</sup> <sup>547</sup> <sup>548</sup> <sup>549</sup> <sup>550</sup> <sup>551</sup> <sup>552</sup> <sup>553</sup> <sup>554</sup> <sup>555</sup> <sup>556</sup> <sup>557</sup> <sup>558</sup> <sup>559</sup> <sup>560</sup> <sup>561</sup> <sup>562</sup> <sup>563</sup> <sup>564</sup> <sup>565</sup> <sup>566</sup> <sup>567</sup> <sup>568</sup> <sup>569</sup> <sup>570</sup> <sup>571</sup> <sup>572</sup> <sup>573</sup> <sup>574</sup> <sup>575</sup> <sup>576</sup> <sup>577</sup> <sup>578</sup> <sup>579</sup> <sup>580</sup> <sup>581</sup> <sup>582</sup> <sup>583</sup> <sup>584</sup> <sup>585</sup> <sup>586</sup> <sup>587</sup> <sup>588</sup> <sup>589</sup> <sup>590</sup> <sup>591</sup> <sup>592</sup> <sup>593</sup> <sup>594</sup> <sup>595</sup> <sup>596</sup> <sup>597</sup> <sup>598</sup> <sup>599</sup> <sup>600</sup> <sup>601</sup> <sup>602</sup> <sup>603</sup> <sup>604</sup> <sup>605</sup> <sup>606</sup> <sup>607</sup> <sup>608</sup> <sup>609</sup> <sup>610</sup> <sup>611</sup> <sup>612</sup> <sup>613</sup> <sup>614</sup> <sup>615</sup> <sup>616</sup> <sup>617</sup> <sup>618</sup> <sup>619</sup> <sup>620</sup> <sup>621</sup> <sup>622</sup> <sup>623</sup> <sup>624</sup> <sup>625</sup> <sup>626</sup> <sup>627</sup> <sup>628</sup> <sup>629</sup> <sup>630</sup> <sup>631</sup> <sup>632</sup> <sup>633</sup> <sup>634</sup> <sup>635</sup> <sup>636</sup> <sup>637</sup> <sup>638</sup> <sup>639</sup> <sup>640</sup> <sup>641</sup> <sup>642</sup> <sup>643</sup> <sup>644</sup> <sup>645</sup> <sup>646</sup> <sup>647</sup> <sup>648</sup> <sup>649</sup> <sup>650</sup> <sup>651</sup> <sup>652</sup> <sup>653</sup> <sup>654</sup> <sup>655</sup> <sup>656</sup> <sup>657</sup> <sup>658</sup> <sup>659</sup> <sup>660</sup> <sup>661</sup> <sup>662</sup> <sup>663</sup> <sup>664</sup> <sup>665</sup> <sup>666</sup> <sup>667</sup> <sup>668</sup> <sup>669</sup> <sup>670</sup> <sup>671</sup> <sup>672</sup> <sup>673</sup> <sup>674</sup> <sup>675</sup> <sup>676</sup> <sup>677</sup> <sup>678</sup> <sup>679</sup> <sup>680</sup> <sup>681</sup> <sup>682</sup> <sup>683</sup> <sup>684</sup> <sup>685</sup> <sup>686</sup> <sup>687</sup> <sup>688</sup> <sup>689</sup> <sup>690</sup> <sup>691</sup> <sup>692</sup> <sup>693</sup> <sup>694</sup> <sup>695</sup> <sup>696</sup> <sup>697</sup> <sup>698</sup> <sup>699</sup> <sup>700</sup> <sup>701</sup> <sup>702</sup> <sup>703</sup> <sup>704</sup> <sup>705</sup> <sup>706</sup> <sup>707</sup> <sup>708</sup> <sup>709</sup> <sup>710</sup> <sup>711</sup> <sup>712</sup> <sup>713</sup> <sup>714</sup> <sup>715</sup> <sup>716</sup> <sup>717</sup> <sup>718</sup> <sup>719</sup> <sup>720</sup> <sup>721</sup> <sup>722</sup> <sup>723</sup> <sup>724</sup> <sup>725</sup> <sup>726</sup> <sup>727</sup> <sup>728</sup> <sup>729</sup> <sup>730</sup> <sup>731</sup> <sup>732</sup> <sup>733</sup> <sup>734</sup> <sup>735</sup> <sup>736</sup> <sup>737</sup> <sup>738</sup> <sup>739</sup> <sup>740</sup> <sup>741</sup> <sup>742</sup> <sup>743</sup> <sup>744</sup> <sup>745</sup> <sup>746</sup> <sup>747</sup> <sup>748</sup> <sup>749</sup> <sup>750</sup> <sup>751</sup> <sup>752</sup> <sup>753</sup> <sup>754</sup> <sup>755</sup> <sup>756</sup> <sup>757</sup> <sup>758</sup> <sup>759</sup> <sup>760</sup> <sup>761</sup> <sup>762</sup> <sup>763</sup> <sup>764</sup> <sup>765</sup> <sup>766</sup> <sup>767</sup> <sup>768</sup> <sup>769</sup> <sup>770</sup> <sup>771</sup> <sup>772</sup> <sup>773</sup> <sup>774</sup> <sup>775</sup> <sup>776</sup> <sup>777</sup> <sup>778</sup> <sup>779</sup> <sup>780</sup> <sup>781</sup> <sup>782</sup> <sup>783</sup> <sup>784</sup> <sup>785</sup> <sup>786</sup> <sup>787</sup> <sup>788</sup> <sup>789</sup> <sup>790</sup> <sup>791</sup> <sup>792</sup> <sup>793</sup> <sup>794</sup> <sup>795</sup> <sup>796</sup> <sup>797</sup> <sup>798</sup> <sup>799</sup> <sup>800</sup> <sup>801</sup> <sup>802</sup> <sup>803</sup> <sup>804</sup> <sup>805</sup> <sup>806</sup> <sup>807</sup> <sup>808</sup> <sup>809</sup> <sup>810</sup> <sup>811</sup> <sup>812</sup> <sup>813</sup> <sup>814</sup> <sup>815</sup> <sup>816</sup> <sup>817</sup> <sup>818</sup> <sup>819</sup> <sup>820</sup> <sup>821</sup> <sup>822</sup> <sup>823</sup> <sup>824</sup> <sup>825</sup> <sup>826</sup> <sup>827</sup> <sup>828</sup> <sup>829</sup> <sup>830</sup> <sup>831</sup> <sup>832</sup> <sup>833</sup> <sup>834</sup> <sup>835</sup> <sup>836</sup> <sup>837</sup> <sup>838</sup> <sup>839</sup> <sup>840</sup> <sup>841</sup> <sup>842</sup> <sup>843</sup> <sup>844</sup> <sup>845</sup> <sup>846</sup> <sup>847</sup> <sup>848</sup> <sup>849</sup> <sup>850</sup> <sup>851</sup> <sup>852</sup> <sup>853</sup> <sup>854</sup> <sup>855</sup> <sup>856</sup> <sup>857</sup> <sup>858</sup> <sup>859</sup> <sup>860</sup> <sup>861</sup> <sup>862</sup> <sup>863</sup> <sup>864</sup> <sup>865</sup> <sup>866</sup> <sup>867</sup> <sup>868</sup> <sup>869</sup> <sup>870</sup> <sup>871</sup> <sup>872</sup> <sup>873</sup> <sup>874</sup> <sup>875</sup> <sup>876</sup> <sup>877</sup> <sup>878</sup> <sup>879</sup> <sup>880</sup> <sup>881</sup> <sup>882</sup> <sup>883</sup> <sup>884</sup> <sup>885</sup> <sup>886</sup> <sup>887</sup> <sup>888</sup> <sup>889</sup> <sup>890</sup> <sup>891</sup> <sup>892</sup> <sup>893</sup> <sup>894</sup> <sup>895</sup> <sup>896</sup> <sup>897</sup> <sup>898</sup> <sup>899</sup> <sup>900</sup> <sup>901</sup> <sup>902</sup> <sup>903</sup> <sup>904</sup> <sup>905</sup> <sup>906</sup> <sup>907</sup> <sup>908</sup> <sup>909</sup> <sup>910</sup> <sup>911</sup> <sup>912</sup> <sup>913</sup> <sup>914</sup> <sup>915</sup> <sup>916</sup> <sup>917</sup> <sup>918</sup> <sup>919</sup> <sup>920</sup> <sup>921</sup> <sup>922</sup> <sup>923</sup> <sup>924</sup> <sup>925</sup> <sup>926</sup> <sup>927</sup> <sup>928</sup> <sup>929</sup> <sup>930</sup> <sup>931</sup> <sup>932</sup> <sup>933</sup> <sup>934</sup> <sup>935</sup> <sup>936</sup> <sup>937</sup> <sup>938</sup> <sup>939</sup> <sup>940</sup> <sup>941</sup> <sup>942</sup> <sup>943</sup> <sup>944</sup> <sup>945</sup> <sup>946</sup> <sup>947</sup> <sup>948</sup> <sup>949</sup> <sup>950</sup> <sup>951</sup> <sup>952</sup> <sup>953</sup> <sup>954</sup> <sup>955</sup> <sup>956</sup> <sup>957</sup> <sup>958</sup> <sup>959</sup> <sup>960</sup> <sup>961</sup> <sup>962</sup> <sup>963</sup> <sup>964</sup> <sup>965</sup> <sup>966</sup> <sup>967</sup> <sup>968</sup> <sup>969</sup> <sup>970</sup> <sup>971</sup> <sup>972</sup> <sup>973</sup> <sup>974</sup> <sup>975</sup> <sup>976</sup> <sup>977</sup> <sup>978</sup> <sup>979</sup> <sup>980</sup> <sup>981</sup> <sup>982</sup> <sup>983</sup> <sup>984</sup> <sup>985</sup> <sup>986</sup> <sup>987</sup> <sup>988</sup> <sup>989</sup> <sup>990</sup> <sup>991</sup> <sup>992</sup> <sup>993</sup> <sup>994</sup> <sup>995</sup> <sup>996</sup> <sup>997</sup> <sup>998</sup> <sup>999</sup> <sup>1000</sup> <sup>1001</sup> <sup>1002</sup> <sup>1003</sup> <sup>1004</sup> <sup>1005</sup> <sup>1006</sup> <sup>1007</sup> <sup>1008</sup> <sup>1009</sup> <sup>1010</sup> <sup>1011</sup> <sup>1012</sup> <sup>1013</sup> <sup>1014</sup> <sup>1015</sup> <sup>1016</sup> <sup>1017</sup> <sup>1018</sup> <sup>1019</sup> <sup>1020</sup> <sup>1021</sup> <sup>1022</sup> <sup>1023</sup> <sup>1024</sup> <sup>1025</sup> <sup>1026</sup> <sup>1027</sup> <sup>1028</sup> <sup>1029</sup> <sup>1030</sup> <sup>1031</sup> <sup>1032</sup> <sup>1033</sup> <sup>1034</sup> <sup>1035</sup> <sup>1036</sup> <sup>1037</sup> <sup>1038</sup> <sup>1039</sup> <sup>1040</sup> <sup>1041</sup> <sup>1042</sup> <sup>1043</sup> <sup>1044</sup> <sup>1045</sup> <sup>1046</sup> <sup>1047</sup> <sup>1048</sup> <sup>1049</sup> <sup>1050</sup> <sup>1051</sup> <sup>1052</sup> <sup>1053</sup> <sup>1054</sup> <sup>1055</sup> <sup>1056</sup> <sup>1057</sup> <sup>1058</sup> <sup>1059</sup> <sup>1060</sup> <sup>1061</sup> <sup>1062</sup> <sup>1063</sup> <sup>1064</sup> <sup>1065</sup> <sup>1066</sup> <sup>1067</sup> <sup>1068</sup> <sup>1069</sup> <sup>1070</sup> <sup>1071</sup> <sup>1072</sup> <sup>1073</sup> <sup>1074</sup> <sup>1075</sup> <sup>1076</sup> <sup>1077</sup> <sup>1078</sup> <sup>1079</sup> <sup>1080</sup> <sup>1081</sup> <sup>1082</sup> <sup>1083</sup> <sup>1084</sup> <sup>1085</sup> <sup>1086</sup> <sup>1087</sup> <sup>1088</sup> <sup>1089</sup> <sup>1090</sup> <sup>1091</sup> <sup>1092</sup> <sup>1093</sup> <sup>1094</sup> <sup>1095</sup> <sup>1096</sup> <sup>1097</sup> <sup>1098</sup> <sup>1099</sup> <sup>1100</sup> <sup>1101</sup> <sup>1102</sup> <sup>1103</sup> <sup>1104</sup> <sup>1105</sup> <sup>1106</sup> <sup>1107</sup> <sup>1108</sup> <sup>1109</sup> <sup>1110</sup> <sup>1111</sup> <sup>1112</sup> <sup>1113</sup> <sup>1114</sup> <sup>1115</sup> <sup>1116</sup> <sup>1117</sup> <sup>1118</sup> <sup>1119</sup> <sup>1120</sup> <sup>1121</sup> <sup>1122</sup> <sup>1123</sup> <sup>1124</sup> <sup>1125</sup> <sup>1126</sup> <sup>1127</sup> <sup>1128</sup> <sup>1129</sup> <sup>1130</sup> <sup>1131</sup> <sup>1132</sup> <sup>1133</sup> <sup>1134</sup> <sup>1135</sup> <sup>1136</sup> <sup>1137</sup> <sup>1138</sup> <sup>1139</sup> <sup>1140</sup> <sup>1141</sup> <sup>1142</sup> <sup>1143</sup> <sup>1144</sup> <sup>1145</sup> <sup>1146</sup> <sup>1147</sup> <sup>1148</sup> <sup>1149</sup> <sup>1150</sup> <sup>1151</sup> <sup>1152</sup> <sup>1153</sup> <sup>1154</sup> <sup>1155</sup> <sup>1156</sup> <sup>1157</sup> <sup>1158</sup> <sup>1159</sup> <sup>1160</sup> <sup>1161</sup> <sup>1162</sup> <sup>1163</sup> <sup>1164</sup> <sup>1165</sup> <sup>1166</sup> <sup>1167</sup> <sup>1168</sup> <sup>1169</sup> <sup>1170</sup> <sup>1171</sup> <sup>1172</sup> <sup>1173</sup> <sup>1174</sup> <sup>1175</sup> <sup>1176</sup> <sup>1177</sup> <sup>1178</sup> <sup>1179</sup> <sup>1180</sup> <sup>1181</sup> <sup>1182</sup> <sup>1183</sup> <sup>1184</sup> <sup>1185</sup> <sup>1186</sup> <sup>1187</sup> <sup>1188</sup> <sup>1189</sup> <sup>1190</sup> <sup>1191</sup> <sup>1192</sup> <sup>1193</sup> <sup>1194</sup> <sup>1195</sup> <sup>1196</sup> <sup>1197</sup> <sup>1198</sup> <sup>1199</sup> <sup>1200</sup> <sup>1201</sup> <sup>1202</sup> <sup>1203</sup> <sup>1204</sup> <sup>1205</sup> <sup>1206</sup> <sup>1207</sup> <sup>1208</sup> <sup>1209</sup> <sup>1210</sup> <sup>1211</sup> <sup>1212</sup> <sup>1213</sup> <sup>1214</sup> <sup>1215</sup> <sup>1216</sup> <sup>1217</sup> <sup>1218</sup> <sup>1219</sup> <sup>1220</sup> <sup>1221</sup> <sup>1222</sup> <sup>1223</sup> <sup>1224</sup> <sup>1225</sup> <sup>1226</sup> <sup>1227</sup> <sup>1228</sup> <sup>1229</sup> <sup>1230</sup> <sup>1231</sup> <sup>1232</sup> <sup>1233</sup> <sup>1234</sup> <sup>1235</sup> <sup>1236</sup> <sup>1237</sup> <sup>1238</sup> <sup>1239</sup> <sup>1240</sup> <sup>1241</sup> <sup>1242</sup> <sup>1243</sup> <sup>1244</sup> <sup>1245</sup> <sup>1246</sup> <sup>1247</sup> <sup>1248</sup> <sup>1249</sup> <sup>1250</sup> <sup>1251</sup> <sup>1252</sup> <sup>1253</sup> <sup>1254</sup> <sup>1255</sup> <sup>1256</sup> <sup>1257</sup> <sup>1258</sup> <sup>1259</sup> <sup>1260</sup> <sup>1261</sup> <sup>1262</sup> <sup>1263</sup> <sup>1264</sup> <sup>1265</sup> <sup>1266</sup> <sup>1267</sup> <sup>1268</sup> <sup>1269</sup> <sup>1270</sup> <sup>1271</sup> <sup>1272</sup> <sup>1273</sup> <sup>1274</sup> <sup>1275</sup> <sup>1276</sup> <sup>1277</sup> <sup>1278</sup> <sup>1279</sup> <sup>1280</sup> <sup>1281</sup> <



20 मैं उन्हीं पर सोचता रहता हूँ,  
इससे मेरा प्राण ढला जाता है।

21 [222222 222 22 222222 22222 2222], इसलिए  
मुझे आशा है:

22 हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल  
है, क्योंकि उसकी दया अमर है।

23 प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान  
है।

24 मेरे मन ने कहा, “यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं  
उसमें आशा रखूंगा।”

25 जो यहोवा की बात जोहते और उसके पास जाते हैं,  
उनके लिये यहोवा भला है।

26 यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना  
भला है।

27 पुरुष के लिये जवानी में जूआ उठाना भला है।

28 वह यह जानकर अकेला चुपचाप रहे, कि परमेश्वर  
ही ने उस पर यह बोझ डाला है;

29 वह अपना मुँह धूल में रखे, क्या जाने इसमें कुछ  
आशा हो;

30 वह अपना गाल अपने मारनेवाले की ओर फेरे, और  
नामधराई सहता रहे।

31 क्योंकि प्रभु मन से सर्वदा उतारे नहीं रहता,

32 चाहे वह दुःख भी दे, तो भी अपनी करुणा की  
बहुतायत के कारण वह दया भी करता है;

33 क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है  
और न दुःख देता है।

34 पृथ्वी भर के बन्दियों को पाँव के तले दलित करना,

35 किसी पुरुष का हक परमप्रधान के सामने मारना,

36 और किसी मनुष्य का मुकद्दमा बिगाड़ना,

इन तीन कामों को यहोवा देख नहीं सकता।

37 यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब कौन है  
कि वचन कहे और वह पूरा हो जाए?

38 विपत्ति और कल्याण, क्या दोनों परमप्रधान की  
आज्ञा से नहीं होते?

39 इसलिए [222222 22222222 222222 222222222222]?

और पुरुष अपने पाप के दण्ड को क्यों बुरा माने?

40 हम अपने चाल चलन को ध्यान से परखें,

और यहोवा की ओर फिरें!

41 हम स्वर्ग में वास करनेवाले परमेश्वर की ओर मन  
लगाएँ

और हाथ फैलाएँ और कहें:

42 “हमने तो अपराध और बलवा किया है,  
और तूने क्षमा नहीं किया।

43 तेरा कोप हम पर है, तू हमारे पीछे पड़ा है,  
तूने बिना तरस खाए घात किया है।

44 तूने अपने को मेघ से घेर लिया है कि तुझ तक प्रार्थना  
न पहुँच सके।

45 तूने हमको जाति-जाति के लोगों के बीच में कूड़ा-  
करकट सा ठहराया है। (1 [222222]. 4:13)

46 हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना-अपना मुँह  
फैलाया है;

47 भय और गड्ढा, उजाड़ और विनाश, हम पर आ पड़े  
हैं;

48 मेरी आँखों से मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के कारण  
जल की धाराएँ बह रही हैं।

49 मेरी आँख से लगातार आँसू बहते रहेंगे,

50 जब तक यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर न देखे;

51 अपनी नगरी की सब स्त्रियों का हाल देखने पर मेरा  
दुःख बढ़ता है।

52 जो व्यर्थ मेरे शत्रु बने हैं, उन्होंने निर्दयता से चिड़िया  
के समान मेरा आहर किया है; ([22]. 35:7)

53 उन्होंने मुझे गड्ढे में डालकर मेरे जीवन का अन्त करने  
के लिये मेरे ऊपर पत्थर लुढ़काए हैं;

54 मेरे सिर पर से जल बह गया, मैंने कहा, ‘मैं अब नाश  
हो गया।’

55 हे यहोवा, गहरे गड्ढे में से मैंने तुझ से प्रार्थना की;

56 तूने मेरी सुनी कि जो दुहाई देकर मैं चिल्लाता हूँ  
उससे कान न फेर ले!

57 जब मैंने तुझे पुकारा, तब तूने मुझसे कहा, ‘मत डर!’

58 हे यहोवा, तूने मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा प्राण बचा  
लिया है।

59 हे यहोवा, जो अन्याय मुझ पर हुआ है उसे तूने देखा  
है; तू मेरा न्याय चुका।

60 जो बदला उन्होंने मुझसे लिया, और जो कल्पनाएँ  
मेरे विरुद्ध की, उन्हें भी तूने देखा है।

61 हे यहोवा, जो कल्पनाएँ और निन्दा वे मेरे विरुद्ध  
करते हैं, वे भी तूने सुनी हैं।

62 मेरे विरोधियों के वचन, और जो कुछ भी वे मेरे विरुद्ध  
लगातार सोचते हैं, उन्हें तू जानता है।

63 उनका उठना-बैठना ध्यान से देख;

वे मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं।

† 3:21 [222222 222 22 222222 2222 222]: या मैं उस बात को स्मरण करके आशा लगाएँ हूँ। यह स्मरण करके कि परमेश्वर दूटे मन की प्रार्थना सुनता है, वह आशा बाँधता है। ‡ 3:39 [222222 22222222 222222 222222222222]: परमेश्वर से शिकायत करना कि उसने कष्ट क्यों दिया, उचित होगा कि जिन पापों के कारण दण्ड अवश्यभावी हुआ उनके लिए विवाद किया जाए।







जीवधारियों के बीच इधर-उधर चलती-फिरती हुई बड़ा प्रकाश देती रही; और उस आग से बिजली निकलती थी। (222222. 4:5, 222222. 11:1)

14 जीवधारियों का चलना फिरना बिजली का सा था।

15 जब मैं जीवधारियों को देख ही रहा था, तो क्या देखा कि भूमि पर उनके पास चारों मुखों की गिनती के अनुसार, एक-एक पहिया था।

16 पहियों का रूप और बनावट फीरोजे की सी थी, और चारों का एक ही रूप था; और उनका रूप और बनावट ऐसी थी जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो।

17 चलते समय 22 22222 222222 22 22 22222 22\*, और चलने में मुड़ते नहीं थे।

18 उन चारों पहियों के घेरे बहुत बड़े और डरावने थे, और उनके घेरों में चारों ओर आँखें ही आँखें भरी हुई थीं। (222222. 4:6)

19 जब जीवधारी चलते थे, तब पहिये भी उनके साथ चलते थे; और जब जीवधारी भूमि पर से उठते थे, तब पहिये भी उठते थे।

20 22222 222222 22222 222222 22\*, उधर ही वे जाते, और पहिये जीवधारियों के साथ उठते थे; क्योंकि उनकी आत्मा पहियों में थी।

21 जब वे चलते थे तब ये भी चलते थे; और जब जब वे खड़े होते थे तब ये भी खड़े होते थे; और जब वे भूमि पर से उठते थे तब पहिये भी उनके साथ उठते थे; क्योंकि जीवधारियों की आत्मा पहियों में थी।

### 222222 222222 22 222222

22 जीवधारियों के सिरों के ऊपर आकाशमण्डल सा कुछ था जो बर्फ के समान भयानक रीति से चमकता था, और वह उनके सिरों के ऊपर फैला हुआ था। (22222. 10:1)

23 आकाशमण्डल के नीचे, उनके पंख एक दूसरे की ओर सीधे फैले हुए थे; और हर एक जीवधारी के दो-दो और पंख थे जिनसे उनके शरीर ढँपे हुए थे।

24 उनके चलते समय उनके पंखों की फड़फड़ाहट की आहट मुझे बहुत से जल, या सर्वशक्तिमान की वाणी, या सेना के हलचल की सी सुनाई पड़ती थी; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे। (22222. 10:5)

\* 1:17 22 22222 222222 22 22 22222 22: अर्थात् जिस ओर उनका चेहरा था उसी ओर। क्योंकि चारों कोने चारों दिशाओं को दर्शाते थे। वे इस प्रकार थे कि प्रत्येक दिशा में एक जैसा चल सकते थे। † 1:20 22222 222222 22222 222222 22: चारों प्राणी जिनके पहिये थे यहाँ जीवित प्राणी कहे गये हैं क्योंकि वे चलते समय सर्वांग होते थे और उनकी इच्छा भी एक ही थी और आत्मा भी एक ही थी। ‡ 1:26 2222222 22 222222: इस प्रगटीकरण का रूप बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ कोई स्वर्गदूत परमेश्वर का सन्देश नहीं लाता है, यह तो परमेश्वर ही की महिमा का दर्शन है।

25 फिर उनके सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था, उसके ऊपर से एक शब्द सुनाई पड़ता था; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे।

26 जो आकाशमण्डल उनके सिरों के ऊपर था, उसके ऊपर मानो कुछ नीलम का बना हुआ सिंहासन था; इस सिंहासन के ऊपर 22222222 22 222222# कोई दिखाई देता था। (222222. 1:13)

27 उसकी मानो कमर से लेकर ऊपर की ओर मुझे झलकाया हुआ पीतल सा दिखाई पड़ा, और उसके भीतर और चारों ओर आग सी दिखाई देती थी; फिर उस मनुष्य की कमर से लेकर नीचे की ओर भी मुझे कुछ आग सी दिखाई देती थी; और उसके चारों ओर प्रकाश था।

28 जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था।

यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था। और उसे देखकर, मैं मुँह के बल गिरा, तब मैंने एक शब्द सुना जैसे कोई बातें करता है। (2222. 3:23)

## 2

### 22222222 22 22222222

1 उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, अपने पाँवों के बल खड़ा हो, और मैं तुझ से बातें करूँगा।” (22222222. 26:16)

2 जैसे ही उसने मुझसे यह कहा, वैसे ही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पाँवों के बल खड़ा कर दिया; और जो मुझसे बातें करता था मैंने उसकी सुनी।

3 उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात् बलवा करनेवाली जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने मेरे विरुद्ध बलवा किया है; उनके पुरखा और वे भी आज के दिन तक मेरे विरुद्ध अपराध करते चले आए हैं।

4 इस पीढ़ी के लोग जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, वे निर्लज्ज और हठीले हैं;

5 और तू उनसे कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है;’ इससे वे, जो बलवा करनेवाले घराने के हैं, चाहे वे सुनें या न सुनें, तो भी वे इतना जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है।

6 हे मनुष्य के सन्तान, तू उनसे न डरना; चाहे तुझे काँटों, ऊँटकटारों और बिच्छुओं के बीच भी रहना पड़े, तो भी उनके वचनों से न डरना; यद्यपि वे विद्रोही घराने



के हैं, तो भी न तो उनके वचनों से डरना, और न उनके मुँह देखकर तेरा मन कच्चा हो।

7 इसलिए चाहे वे सुनें या न सुनें; तो भी तू मेरे वचन उनसे कहना, वे तो बड़े विद्रोही हैं।

8 “परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूँ, उसे तू सुन ले, उस विद्रोही घराने के समान तू भी विद्रोही न बनना जो मैं तुझे देता हूँ, उसे मुँह खोलकर खा ले।” (222222. 15:16)

9 तब मैंने दृष्टि की और क्या देखा, कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा हुआ है और उसमें 22 22222222\* है।

10 उसको उसने मेरे सामने खोलकर फैलाया, और वह दोनों ओर लिखी हुई थी; और जो उसमें लिखा था, वे विलाप और शोक और दुःख भरे वचन थे। (222222. 5:1)

### 3

1 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, जो तुझे मिला है उसे खा ले; अर्थात् इस पुस्तक को खा, तब जाकर इस्राएल के घराने से बातें कर।” (222222. 10:9)

2 इसलिए मैंने मुँह खोला और उसने वह पुस्तक मुझे खिला दी।

3 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, यह पुस्तक जो मैं तुझे देता हूँ उसे पचा ले, और अपनी अंतड़ियाँ इससे भर ले।” अतः मैंने उसे खा लिया; और मेरे मुँह में वह मधु के तुल्य मीठी लगी।

4 फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने के पास जाकर उनको मेरे वचन सुना।

5 क्योंकि तू किसी अनोखी बोली या कठिन भाषावाली जाति के पास नहीं भेजा जाता है, परन्तु इस्राएल ही के घराने के पास भेजा जाता है।

6 अनोखी बोली या कठिन भाषावाली बहुत सी जातियों के पास जो तेरी बात समझ न सकें, तू नहीं भेजा जाता। निःसन्देह यदि मैं तुझे ऐसों के पास भेजता तो वे तेरी सुनते।

7 परन्तु इस्राएल के घरानेवाले तेरी सुनने से इन्कार करेंगे; वे मेरी भी सुनने से इन्कार करते हैं; क्योंकि इस्राएल का सारा घराना ढीठ और कठोर मन का है।

8 देख, मैं तेरे मुख को उनके मुख के सामने, और तेरे माथे को उनके माथे के सामने, ढीठ कर देता हूँ।

\* 2:9 22 22222222: प्राचीनकाल में लिखने के लिए प्रयोग किया जानेवाला चर्मपत्र का कुण्डली ग्रन्थ, आमतौर पर एक तरफ लिखा जाता था, लेकिन यहाँ इस सन्दर्भ में दोनों तरफ लिखा गया था। \* 3:9 2222 2222 22 2222 22 222222 2222 22 2222 2222: मैंने तुझे उनसे कहीं अधिक शक्ति दी है। † 3:17 222222: परमेश्वर के पुरोहितों एवं सेवकों को यही कहा जाता था। यहेजकेल को विशेष करके यही पदनाम से अलग दर्शाया गया है, यहे. 33:7 पहरूआ के दो मुख्य उत्तरदायित्व थे, परमेश्वर की आज्ञा की प्रतिष्ठा करना एवं आशा रखना और दूसरा अपने लोगों की चौकसी एवं देख-रेख करना।

9 मैं 2222 2222 22 2222 22 222222 2222 22 2222 2222\* जो चकमक पत्थर से भी कड़ा होता है; इसलिए तू उनसे न डरना, और न उनके मुँह देखकर तेरा मन कच्चा हो; क्योंकि वे विद्रोही घराने के हैं।”

10 फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, जितने वचन मैं तुझ से कहूँ, वे सब हृदय में रख और कानों से सुन।

11 और उन बन्दियों के पास जाकर, जो तेरे जाति भाई हैं, उनसे बातें करना और कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है;’ चाहे वे सुनें, या न सुनें।”

12 तब परमेश्वर के आत्मा ने मुझे उठाया, और मैंने अपने पीछे बड़ी घड़घड़ाहट के साथ एक शब्द सुना, “यहोवा के भवन से उसका तेज धन्य है।”

13 और उसके साथ ही उन जीवधारियों के पंखों का शब्द, जो एक दूसरे से लगते थे, और उनके संग के पहियों का शब्द और एक बड़ी ही घड़घड़ाहट सुन पड़ी।

14 तब आत्मा मुझे उठाकर ले गई, और मैं कठिन दुःख से भरा हुआ, और मन में जलता हुआ चला गया; और यहोवा की शक्ति मुझ में प्रबल थी;

15 और मैं उन बन्दियों के पास आया जो कबार नदी के तट पर तेलाबीब में रहते थे। और वहाँ मैं सात दिन तक उनके बीच व्याकुल होकर बैठा रहा।

222222 22 222 222 22222222 22 2222222222

16 सात दिन के व्यतीत होने पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

17 “हे मनुष्य के सन्तान मैंने तुझे इस्राएल के घराने के लिये 22222222\* नियुक्त किया है; तू मेरे मुँह की बात सुनकर, उन्हें मेरी ओर से चेतावनी देना। (2222. 33:7)

18 जब मैं दुष्ट से कहूँ, ‘तू निश्चय मरेगा,’ और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिससे कि वह सचेत हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फँसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूँगा।

19 पर यदि तू दुष्ट को चिताए, और वह अपनी दुष्टता और दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फँसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा।

20 फिर जब धर्मी जन अपने धार्मिकता से फिरकर कुटिल काम करने लगे, और मैं उसके सामने ठोकर

रखूँ, तो वह मर जाएगा, क्योंकि तूने जो उसको नहीं चिताया, इसलिए वह अपने पाप में फँसा हुआ मरेगा; और जो धार्मिकता के कर्म उसने किए हों, उनकी सुधि न ली जाएगी, पर उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूँगा।

21 परन्तु यदि तू धर्मी को ऐसा कहकर चेतावनी दे, कि वह पाप न करे, और वह पाप से बच जाए, तो वह चितौनी को ग्रहण करने के कारण निश्चय जीवित रहेगा, और तू अपने प्राण को बचाएगा।”

22 फिर यहोवा की शक्ति वहीं मुझ पर प्रगट हुई, और

उसने मुझसे कहा, “उठकर मैदान में जा; और वहाँ मैं तुझ से बातें करूँगा।”

23 तब मैं उठकर मैदान में गया, और वहाँ क्या देखा, कि यहोवा का प्रताप जैसा मुझे कबार नदी के तट पर, वैसा ही यहाँ भी दिखाई पड़ता है; और मैं मुँह के बल गिर पड़ा।

24 तब आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पाँवों के बल खड़ा कर दिया; फिर वह मुझसे कहने लगा, “जा अपने घर के भीतर द्वार बन्द करके बैठा रह।

25 हे मनुष्य के सन्तान, देख; वे लोग तुझे रस्सियों से जकड़कर बाँध रखेंगे, और तू निकलकर उनके बीच जाने नहीं पाएगा।

26 मैं तेरी जीभ तेरे तालू से लगाऊँगा; जिससे तू मौन रहकर उनका डाँटनेवाला न हो, क्योंकि वे विद्रोही घराने के हैं।

27 परन्तु जब जब मैं तुझ से बातें करूँ, तब-तब तेरे मुँह को खोलूँगा, और तू उनसे ऐसा कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है,’ जो सुनता है वह सुन ले और जो नहीं सुनता वह न सुने, वे तो विद्रोही घराने के हैं ही।”

## 4

1 “हे मनुष्य के सन्तान, तू एक ईट ले और उसे अपने

सामने रखकर उस पर एक नगर, अर्थात् यरूशलेम का चित्र खींच;

2 तब उसे घेर अर्थात् उसके विरुद्ध किला बना और उसके सामने दमदमा बाँध; और छावनी डाल, और उसके चारों ओर युद्ध के यन्त्र लगा।

3 तब तू लोहे की थाली लेकर उसको लोहे की शहरपनाह मानकर अपने और उस नगर के बीच खड़ा कर; तब अपना मुँह उसके सामने करके उसकी घेराबन्दी

कर, इस रीति से तू उसे घेरे रखना। यह इस्राएल के घराने के लिये चिन्ह ठहरेगा।

4 “फिर तू अपने बायीं करवट के बल लेटकर [22][22][22][22] [22] [22][22][22] [22] [22][22][22] [22][22] [22][22] [22][22]”; क्योंकि जितने दिन तू उस करवट के बल लेटा रहेगा, उतने दिन तक उन लोगों के अधर्म का भार सहता रहेगा।

5 मैंने उनके अधर्म के वर्षों के तुल्य तेरे लिये दिन ठहराए हैं, अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन; उतने दिन तक तू इस्राएल के घराने के अधर्म का भार सहता रह।

6 जब इतने दिन पूरे हो जाएँ, तब अपने दाहिनी करवट के बल लेटकर यहूदा के घराने के अधर्म का भार सह लेना; मैंने उसके लिये भी और तेरे लिये एक वर्ष के बदले एक दिन अर्थात् चालीस दिन ठहराए हैं।

7 तू यरूशलेम के घेरने के लिये बाँह उधाड़े हुए अपना मुँह उधर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करना।

8 देख, मैं तुझे रस्सियों से जकड़ूँगा, और जब तक उसके घेरने के दिन पूरे न हों, तब तक तू करवट न ले सकेगा।

9 “तू गेहूँ, जौ, सेम, मसूर, बाजरा, और कठिया गेहूँ,

लेकर एक [22][22][22] [22][22] [22][22] उनसे रोटी बनाया करना। जितने दिन तू अपने करवट के बल लेटा रहेगा, उतने अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन तक उसे खाया करना।

10 जो भोजन तू खाए, उसे तौल-तौलकर खाना, अर्थात् प्रतिदिन बीस-बीस शेकेल भर खाया करना, और उसे समय-समय पर खाना।

11 पानी भी तू मापकर पिया करना, अर्थात् प्रतिदिन हीन का छठवाँ अंश पीना; और उसको समय-समय पर पीना।

12 अपना भोजन जौ की रोटियों के समान बनाकर खाया करना, और उसको मनुष्य की विष्टा से उनके देखते बनाया करना।”

13 फिर यहोवा ने कहा, “इसी प्रकार से इस्राएल उन जातियों के बीच अपनी-अपनी रोटी अशुद्धता से खाया करेंगे, जहाँ में उन्हें जबरन पहुँचाऊँगा।”

14 तब मैंने कहा, “हाय, यहोवा परमेश्वर देख, मेरा मन कभी अशुद्ध नहीं हुआ, और न मैंने बचपन से लेकर अब तक अपनी मृत्यु से मरे हुए व फाड़े हुए पशु का माँस खाया, और न किसी प्रकार का [22][22][22][22] [22][22] मेरे मुँह में कभी गया है।” ([22][22][22][22]. 10:14)

\* 4:4 [22][22][22][22] [22] [22][22][22][22][22] [22] [22][22][22][22][22][22]: उपमा रूप में यहजकेल को एक निश्चित समय के लिए अपने लोगों के अधर्म का बोझ उठाना था जिसका अर्थ था कि कुछ समय बाद लोगों के पापों का बोझ हटा दिया जाएगा और उन्हें क्षमा किया जाएगा। † 4:9 [22][22][22] [22][22]: इन विभिन्न बीजों का मिश्रण इस बात का संकेत था कि लोग अब अपने देश में नहीं थे, जहाँ बीज के इस मिश्रण के विरुद्ध सावधानी बरतनी थी। ‡ 4:14 [22][22][22][22] [22][22]: जो माँस पुराना होकर अशुद्ध हो गया।



मुझ यहोवा ने यह कहा है।” (222222. 6:8)

## 6

22222222 22 22222222 22 22222222  
2222222222222222

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा

2 “हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख इस्राएल के पहाड़ों की ओर करके उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर,

3 और कह, हे इस्राएल के पहाड़ों, प्रभु यहोवा का वचन सुनो! प्रभु यहोवा पहाड़ों और पहाड़ियों से, और नालों और तराइयों से यह कहता है: देखो, मैं तुम पर तलवार चलवाऊँगा, और तुम्हारे पूजा के ऊँचे स्थानों को नाश करूँगा।

4 तुम्हारी वेदियाँ उजड़ेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएँ तोड़ी जाएँगी; और मैं तुम में से मारे हुएों को तुम्हारी मूरतों के आगे फेंक दूँगा।

5 मैं इस्राएलियों के शवों को उनकी मूरतों के सामने रखूँगा, और उनकी हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के आस-पास छितरा दूँगा

6 तुम्हारे जितने बसाए हुए नगर हैं, वे सब ऐसे उजड़ जाएँगे, कि तुम्हारे पूजा के ऊँचे स्थान भी उजाड़ हो जाएँगे, तुम्हारी वेदियाँ उजड़ेंगी और ढाई जाएँगी, तुम्हारी मूरतें जाती रहेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएँ काटी जाएँगी; और तुम्हारी सारी कारीगरी मिटाई जाएगी।

7 तुम्हारे बीच मारे हुए गिरेंगे, और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

8 “तो भी मैं कितनों को बचा रखूँगा। इसलिए जब तुम देश-देश में तितर-बितर होंगे, तब अन्यजातियों के बीच तुम्हारे कुछ लोग तलवार से बच जाएँगे।

9 वे बचे हुए लोग, उन जातियों के बीच, जिनमें वे बँधुए होकर जाएँगे, मुझे स्मरण करेंगे; और यह भी कि हमारा व्यभिचारी हृदय यहोवा से कैसे हट गया है और व्यभिचारिणी की सी हमारी आँखें मूरतों पर कैसी लगी हैं, जिससे यहोवा का मन टूटा है। इस रीति से उन बुराइयों के कारण, जो उन्होंने अपने सारे घिनौने काम करके की हैं, वे अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरेंगे।

10 तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ, और उनकी सारी हानि करने को मैंने जो यह कहा है, उसे व्यर्थ नहीं कहा।”

11 प्रभु यहोवा यह कहता है: “अपना हाथ मारकर और अपना पाँव पटककर कह, इस्राएल के घराने के सारे

घिनौने कामों पर हाय, हाय, क्योंकि वे तलवार, भूख, और मरी से 2222 22 22222222\*।

12 जो दूर हो वह मरी से मरेगा, और जो निकट हो वह तलवार से मार डाला जाएगा; और जो बचकर नगर में रहते हुए घेरा जाए, वह भूख से मरेगा। इस भाँति मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से उतारूँगा।

13 जब हर एक ऊँची पहाड़ी और पहाड़ों की हर एक चोटी पर, और हर एक हरे पेड़ के नीचे, और हर एक घने बांज वृक्ष की छाया में, जहाँ-जहाँ वे अपनी सब मूरतों को सुखदायक सुगन्ध-द्रव्य चढ़ाते हैं, वहाँ उनके मारे हुए लोग अपनी वेदियों के आस-पास अपनी मूरतों के बीच में पड़े रहेंगे; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

14 मैं अपना हाथ उनके विरुद्ध बढ़ाकर उस देश को सारे घरों समेत जंगल से ले दिबला की ओर तक उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

## 7

22222 22 2222

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा

2 “हे मनुष्य के सन्तान, प्रभु यहोवा इस्राएल की भूमि के विषय में यह कहता है, कि अन्त हुआ; चारों कोनों समेत देश का अन्त आ गया है। (2222. 7:5)

3 तेरा अन्त भी आ गया, और मैं अपना क्रोध तुझ पर भड़काकर तेरे चाल चलन के अनुसार तुझे दण्ड दूँगा; और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे दूँगा।

4 मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी, और न मैं कोमलता करूँगा; और जब तक तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तक मैं तेरे चाल-चलन का फल तुझे दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।

5 “प्रभु यहोवा यह कहता है: विपत्ति है, एक बड़ी विपत्ति है! देखो, वह आती है।

6 अन्त आ गया है, सब का अन्त आया है; वह तेरे विरुद्ध जागा है। देखो, वह आता है।

7 हे देश के निवासी, तेरे लिये चक्र घूम चुका, समय आ गया, दिन निकट है; पहाड़ों पर आनन्द के शब्द का दिन नहीं, हुल्लड ही का होगा।

8 अब थोड़े दिनों में मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर भड़काऊँगा, और तुझ पर पूरा कोप उण्डेलूँगा और तेरे चाल चलन के अनुसार तुझे दण्ड दूँगा। और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे भुगताऊँगा।

\* 6:11 2222 22 22222222: आशा की किरण क्षणिक है। अंधकार फिर छा जाता है क्योंकि भविष्यद्वक्ता अब भी दण्ड की भविष्यद्वाणी कर रहा है।

9 मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी और न मैं तुझ पर कोमलता करूँगा। मैं तेरी चाल चलन का फल तुझे भुगताऊँगा, और तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा दण्ड देनेवाला हूँ।

10 “देखो, उस दिन को देखो, वह आता है! चक्र घूम चुका, छड़ी फूल चुकी, अभिमान फूला है।

11 उपद्रव बढ़ते-बढ़ते दुष्टता का दण्ड बन गया; उनमें से कोई न बचेगा, और न उनकी भीड़-भाड़, न उनके धन में से कुछ रहेगा; और न उनमें से किसी के लिये विलाप सुन पड़ेगा।

12 समय आ गया, दिन निकट आ गया है; न तो मोल लेनेवाला आनन्द करे और न बेचनेवाला शोक करे, क्योंकि उनकी सारी भीड़ पर कोप भड़क उठा है।

13 चाहे वे जीवित रहें, तो भी बेचनेवाला बेची हुई वस्तु के पास कभी **222222 2 222222\***; क्योंकि दर्शन की यह बात देश की सारी भीड़ पर घटेगी; कोई न लौटेगा; कोई भी मनुष्य, जो अधर्म में जीवित रहता है, बल न पकड़ सकेगा।

14 “उन्होंने नरसिंगा फूँका और सब कुछ तैयार कर दिया; परन्तु युद्ध में कोई नहीं जाता क्योंकि देश की सारी भीड़ पर मेरा कोप भड़का हुआ है।

**22222222 22 2222222222**

15 “बाहर तलवार और भीतर अकाल और मरी हैं; जो मैदान में हो वह तलवार से मरेगा, और जो नगर में हो वह भूख और मरी से मारा जाएगा।

16 और उनमें से जो बच निकलेंगे वे बचेंगे तो सही परन्तु अपने-अपने अधर्म में फँसे रहकर तराइयों में रहनेवाले कबूतरों के समान पहाड़ों के ऊपर विलाप करते रहेंगे।

17 सब के हाथ ढीले और सब के घुटने अति निर्बल हो जाएँगे।

18 वे कमर में टाट कसेंगे, और उनके रोएँ खड़े होंगे; सब के मुँह सूख जाएँगे और सब के सिर मुँड़े जाएँगे।

19 वे अपनी चाँदी सड़कों में फेंक देंगे, और उनका सोना अशुद्ध वस्तु ठहरेगा; यहोवा की जलन के दिन उनका सोना चाँदी उनको बचा न सकेगी, न उससे उनका जी सन्तुष्ट होगा, न उनके पेट भरेंगे। क्योंकि वह उनके अधर्म के ठोकर का कारण हुआ है।

20 उनका देश जो शोभायमान और शिरोमणि था, उसके विषय में उन्होंने गर्व ही गर्व करके उसमें अपनी

घृणित वस्तुओं की मूरतें, और घृणित वस्तुएँ बना रखीं, इस कारण मैंने उसे उनके लिये अशुद्ध वस्तु ठहराया है।

21 मैं उसे लूटने के लिये परदेशियों के हाथ, और धन छीनने के लिये पृथ्वी के दुष्ट लोगों के वश में कर दूँगा; और वे उसे अपवित्र कर डालेंगे।

22 मैं उनसे मुँह फेर लूँगा, तब वे **222222 222222222222 22222222 222\*** अपवित्र करेंगे; डाकू उसमें घुसकर उसे अपवित्र करेंगे।

23 “एक साँकल बना दे, क्योंकि देश अन्याय की हत्या से, और नगर उपद्रव से भरा हुआ है।

24 मैं अन्यजातियों के बुरे से बुरे लोगों को लाऊँगा, जो उनके घरों के स्वामी हो जाएँगे; और मैं सामर्थियों का गर्व तोड़ दूँगा और उनके पवित्रस्थान अपवित्र किए जाएँगे।

25 सत्यानाश होने पर है तब ढूँढ़ने पर भी उन्हें शान्ति न मिलेगी।

26 विपत्ति पर विपत्ति आएगी और उड़ती हुई चर्चा पर चर्चा सुनाई पड़ेगी; और लोग भविष्यद्वक्ता से दर्शन की बात पूछेंगे, परन्तु याजक के पास से व्यवस्था, और पुरनिये के पास से सम्मति देने की शक्ति जाती रहेगी।

27 राजा तो शोक करेगा, और रईस उदासीरूपी वस्त्र पहनेंगे, और देश के लोगों के हाथ ढीले पड़ेंगे। मैं उनके चलन के अनुसार उनसे बर्ताव करूँगा, और उनकी कमाई के समान उनको दण्ड दूँगा; तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

## 8

**22222222 2222 222222 2222**

1 फिर छठवें वर्ष के छठवें महीने के पाँचवें दिन को जब मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदियों के पुरनिये मेरे सामने बैठे थे, तब प्रभु यहोवा की शक्ति वहीं मुझ पर प्रगट हुई।

2 तब मैंने देखा कि आग का सा एक रूप दिखाई देता है; उसकी कमर से नीचे की ओर आग है, और उसकी कमर से ऊपर की ओर झलकाए हुए पीतल की झलक-सी कुछ है।

3 उसने हाथ-सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल पकड़े; तब **222222 22 222222 22222222 22 222222 22 2222 222222\*** परमेश्वर के दिखाए हुए दर्शनों में यरूशलम के मन्दिर के भीतर, आँगन के उस फाटक के पास पहुँचा दिया जिसका मुँह उत्तर की ओर है; और

\* 7:13 **222222 2 222222**: वह (विक्रेता) लौटकर नहीं आएगा और प्रत्येक मनुष्य जो अपने अपराधों में जी रहा है, अशक्त ही रहेगा। निर्वासन पाप का छड़ था। निर्वासितों के लिए कहा गया है कि वे पापों में जी रहे थे। † 7:22 **2222 2222222222 222222 22**: मनुष्यों से छिपा हुआ पवित्रस्थान जिसकी केवल सर्वोच्च परमेश्वर रक्षा करता है। \* 8:3 **222222 22 222222 ... 222222**: यहजकेल शरीर में नहीं वरन् आत्मा में उठा लिया गया था जबकि वह यहूदा के बुजुर्गों के बीच बैठा हुआ था।

जिसमें उस जलन उपजानेवाली प्रतिमा का स्थान था जिसके कारण द्वेष उपजता है।

4 फिर वहाँ इस्राएल के परमेश्वर का तेज वैसा ही था जैसा मैंने मैदान में देखा था।

5 उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाकर देख।” अतः मैंने अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक के उत्तर की ओर उसके प्रवेशस्थान ही में वह डह उपजानेवाली प्रतिमा है।

6 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं? इस्राएल का घराना क्या ही बड़े घृणित काम यहाँ करता है, ताकि मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊँ; परन्तु तू इनसे भी अधिक घृणित काम देखेगा।”

7 तब वह मुझे आँगन के द्वार पर ले गया, और मैंने देखा, कि दीवार में एक छेद है।

8 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, दीवार को फोड़;” इसलिए मैंने दीवार को फोड़कर क्या देखा कि एक द्वार है।

9 उसने मुझसे कहा, “भीतर जाकर देख कि ये लोग यहाँ कैसे-कैसे और अति घृणित काम कर रहे हैं।”

10 अतः मैंने भीतर जाकर देखा कि चारों ओर की दीवार पर जाति-जाति के रेंगनेवाले जन्तुओं और घृणित पशुओं और इस्राएल के घराने की सब मूरतों के चित्र खींचे हुए हैं।

11 इस्राएल के घराने के पुरनियों में से सत्तर पुरुष जिनके बीच में शापान का पुत्र याजन्याह भी है, वे उन चित्रों के सामने खड़े हैं, और हर एक पुरुष अपने हाथ में धूपदान लिए हुए है; और धूप के धुएँ के बादल की सुगन्ध उठ रही है।

12 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने देखा है कि इस्राएल के घराने के पुरनिये अपनी-अपनी नक्काशीवाली कोठरियों के भीतर अर्थात् अंधियारे में क्या कर रहे हैं? वे कहते हैं कि यहोवा हमको नहीं देखता; यहोवा ने देश को त्याग दिया है।”

13 फिर उसने मुझसे कहा, “तू इनसे और भी अति घृणित काम देखेगा जो वे करते हैं।”

14 तब वह मुझे यहोवा के भवन के उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर की ओर था और वहाँ स्त्रियाँ बैठी हुई तम्मूज के लिये रो रही थीं।

15 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने यह देखा है? फिर इनसे भी बड़े घृणित काम तू

देखेगा।”

16 तब वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आँगन में ले गया; और वहाँ यहोवा के भवन के द्वार के पास ओसारे और वेदी के बीच कोई पच्चीस पुरुष अपनी पीठ यहोवा के भवन की ओर और अपने मुख पूर्व की ओर किए हुए थे; और वे पूर्व दिशा की ओर सूर्य को दण्डवत् कर रहे थे।

17 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने यह देखा? क्या यहूदा के घराने के लिये घृणित कामों का करना जो वे यहाँ करते हैं छोटी बात है? उन्होंने अपने देश को उपद्रव से भर दिया, और फिर यहाँ आकर मुझे रिस दिलाते हैं। वरन् वे डाली को अपनी नाक के आगे लिए रहते हैं।

18 इसलिए मैं भी जलजलाहट के साथ काम करूँगा, न मैं दया करूँगा और न मैं कोमलता करूँगा; और चाहे वे मेरे कानों में ऊँचे शब्द से पुकारें, तो भी मैं उनकी बात न सुनूँगा।”

## 9

?????????? ?? ?????

1 फिर उसने मेरे कानों में ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “नगर के अधिकारियों को अपने-अपने हाथ में नाश करने का हथियार लिए हुए निकट लाओ।”

2 इस पर छः पुरुष, उत्तर की ओर ऊपरी फाटक के मार्ग से अपने-अपने हाथ में घात करने का हथियार लिए हुए आए; और उनके बीच सन का वस्त्र पहने, कमर में लिखने की दवात बाँधे हुए एक और पुरुष था; और वे सब भवन के भीतर जाकर पीतल की वेदी के पास खड़े हुए।

3 तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज करूबों पर से, जिनके ऊपर वह रहा करता था, भवन की डेवढी पर उठ आया था; और उसने उस सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष को जो कमर में दवात बाँधे हुए था, पुकारा।

4 और यहोवा ने उससे कहा, “इस यरूशलेम नगर के भीतर इधर-उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कामों के कारण जो उसमें किए जाते हैं, साँसें भरते और दुःख के मारे चिल्लाते हैं, उनके माथों पर चिन्ह लगा दे।”

5 तब उसने मेरे सुनते हुए दूसरों से कहा, “नगर में उनके पीछे-पीछे चलकर मारते जाओ; किसी पर दया न करना और न कोमलता से काम करना।

6 ?????????, ??????, ??????????, ?????-?????, ?????????????, ?? ?? ????????? ?????????, ?????????????????, ?? ?? ????????? ?????????, परन्तु

\* 9:6 ??????, ?????, ?????????, ?????-?????, ?????????????, ?? ?? ????????? ?????????: सबसे पहले बूढ़े थे जिन्होंने मूर्तियों को पवित्रस्थान के निकट रखा था।

जिस किसी मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो, उसके निकट न जाना। और मेरे पवित्रस्थान ही से आरम्भ करो।” और उन्होंने उन पुरनियों से आरम्भ किया जो भवन के सामने थे।

7 फिर उसने उनसे कहा, “भवन को अशुद्ध करो, और आँगनों को शवों से भर दो। चलो, बाहर निकलो।” तब वे निकलकर नगर में मारने लगे।

8 जब वे मार रहे थे, और मैं [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2], तब मैं मुँह के बल गिरा और चिल्लाकर कहा, “हाय प्रभु यहोवा! क्या तू अपनी जलजलाहट यरूशलेम पर भड़काकर इस्राएल के सब बचे हुआँ को भी नाश करेगा?”

9 तब उसने मुझसे कहा, “इस्राएल और यहूदा के घरानों का अधर्म अत्यन्त ही अधिक है, यहाँ तक कि देश हत्या से और नगर अन्याय से भर गया है; क्योंकि वे कहते हैं, ‘यहोवा ने पृथ्वी को त्याग दिया और यहोवा कुछ नहीं देखता।’

10 इसलिए उन पर दया न होगी, न मैं कोमलता करूँगा, वरन् उनकी चाल उन्हीं के सिर लौटा दूँगा।”

11 तब मैंने क्या देखा, कि जो पुरुष सन का वस्त्र पहने हुए और कमर में दवात बाँधे था, उसने यह कहकर समाचार दिया, “जैसे तूने आज्ञा दी, मैंने वैसे ही किया है।” ([2][2][2][2]. 1:13)

## 10

[2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2] [2][2]  
[2][2][2] [2][2][2]

1 इसके बाद मैंने देखा कि करूबों के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल है, उसमें नीलमणि का सिंहासन सा कुछ दिखाई देता है।

2 तब यहोवा ने उस सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष से कहा, “धूमनेवाले पहियों के बीच करूबों के नीचे जा और अपनी दोनों मुट्टियों को करूबों के बीच के अंगारों से भरकर नगर पर बिखेर दे।” अतः वह मेरे देखते-देखते उनके बीच में गया।

3 जब वह पुरुष भीतर गया, तब वे करूब भवन के दक्षिण की ओर खड़े थे; और बादल भीतरवाले आँगन में भरा हुआ था।

4 तब यहोवा का तेज करूबों के ऊपर से उठकर भवन की डेवढी पर आ गया; और बादल भवन में भर गया; और वह आँगन यहोवा के तेज के प्रकाश से भर गया।

5 करूबों के पंखों का शब्द बाहरी आँगन तक सुनाई देता था, वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बोलने का सा शब्द था।

6 जब उसने सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष को धूमनेवाले पहियों के भीतर करूबों के बीच में से आग लेने की आज्ञा दी, तब वह उनके बीच में जाकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ।

7 तब करूबों के बीच से एक करूब ने अपना हाथ बढ़ाकर, उस आग में से जो करूबों के बीच में थी, कुछ उठाकर सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष की मुट्टी में दे दी; और वह उसे लेकर बाहर चला गया।

8 करूबों के पंखों के नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ दिखाई देता था।

9 तब मैंने देखा, कि करूबों के पास चार पहिये हैं; अर्थात् एक-एक करूब के पास एक-एक पहिया है, और पहियों का रूप फीरोजा का सा है।

10 उनका ऐसा रूप है, कि चारों एक से दिखाई देते हैं, जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो।

11 चलने के समय वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते हैं; और चलते समय मुड़ते नहीं, वरन् जिधर उनका सिर रहता है वे उधर ही उसके पीछे चलते हैं और चलते समय वे मुड़ते नहीं।

12 और पीठ हाथ और पंखों समेत करूबों का सारा शरीर और जो पहिये उनके हैं, वे भी सब के सब चारों ओर आँखों से भरे हुए हैं। ([2][2][2][2]. 4:8)

13 मेरे सुनते हुए इन पहियों को चक्कर कहा गया, अर्थात् धूमनेवाले पहिये।

14 एक-एक के चार-चार मुख थे; एक मुख तो करूब का सा, दूसरा मनुष्य का सा, तीसरा सिंह का सा, और चौथा उकाब पक्षी का सा। ([2][2][2][2]. 4:7)

15 करूब भूमि पर से उठ गए। ये वे ही जीवधारी हैं, जो मैंने कबार नदी के पास देखे थे।

16 जब जब वे करूब चलते थे तब-तब वे पहिये उनके पास-पास चलते थे; और जब जब करूब पृथ्वी पर से उठने के लिये अपने पंख उठाते तब-तब पहिये उनके पास से नहीं मुड़ते थे।

17 जब वे खड़े होते तब ये भी खड़े होते थे; और जब वे उठते तब ये भी उनके संग उठते थे; क्योंकि जीवधारियों की आत्मा इनमें भी रहती थी।

18 यहोवा का तेज भवन की डेवढी पर से उठकर करूबों के ऊपर ठहर गया।

19 तब करूब अपने पंख उठाकर मेरे देखते-देखते पृथ्वी पर से उठकर निकल गए; और पहिये भी [2][2][2][2] [2][2]-[2][2][2] [2][2]\*, और वे सब यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक में खड़े हो गए; और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर ठहरा रहा।

† 9:8 [2][2][2][2] [2][2] [2][2]: सब मारे गये, केवल यहजेकल अकेला रह गया था।

\* 10:19 [2][2][2] [2][2]-[2][2][2] [2][2]: करूब और पहिये एक ही जीवित प्राणी थे











10 वे सब लोग अपने-अपने अधर्म का बोझ उठाएँगे, अर्थात् जैसा भविष्यद्वक्ता से पूछनेवाले का अधर्म ठहरेगा, वैसा ही भविष्यद्वक्ता का भी अधर्म ठहरेगा।

11 ताकि इस्राएल का घराना आगे को मेरे पीछे हो लेना न छोड़े और न अपने भाँति-भाँति के अपराधों के द्वारा आगे को अशुद्ध बने; वरन् वे मेरी प्रजा बनें और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

१११, १११११११११, ११ ११११११

12 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

13 “हे मनुष्य के सन्तान, जब किसी देश के लोग मुझसे विश्वासघात करके पापी हो जाएँ, और मैं अपना हाथ उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर उसका अन्नरूपी आधार दूर करूँ, और उसमें अकाल डालकर उसमें से मनुष्य और पशु दोनों को नाश करूँ,

14 तब चाहे उसमें १११, १११११११११ ११ १११११११११; ये तीनों पुरुष हों, तो भी वे अपने धार्मिकता के द्वारा केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे; प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

15 यदि मैं किसी देश में दुष्ट जन्तु भेजूँ जो उसको निर्जन करके उजाड़ कर डालें, और जन्तुओं के कारण कोई उसमें होकर न जाएँ,

16 तो चाहे उसमें वे तीन पुरुष हों, तो भी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न वे पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे; वे ही अकेले बचेंगे; परन्तु देश उजाड़ हो जाएगा।

17 यदि मैं उस देश पर तलवार खींचकर कहूँ, हे तलवार उस देश में चल; और इस रीति मैं उसमें से मनुष्य और पशु नाश करूँ,

18 तब चाहे उसमें वे तीन पुरुष भी हों, तो भी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न तो वे पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, वे ही अकेले बचेंगे।

19 यदि मैं उस देश में मरी फैलाऊँ और उस पर अपनी जलजलाहट भड़काकर उसका लहू ऐसा बहाऊँ कि वहाँ के मनुष्य और पशु दोनों नाश हों,

20 तो चाहे नूह, दानिय्येल और अय्यूब भी उसमें हों, तो भी, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, वे न पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, अपने धार्मिकता के द्वारा वे केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे।

21 “क्योंकि प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं यरूशलेम पर अपने चारों दण्ड पहुँचाऊँगा, अर्थात् तलवार, अकाल, दुष्ट जन्तु और मरी, जिनसे मनुष्य और पशु सब उसमें से नाश हों। (१११११११ 6:8)

22 तो भी उसमें थोड़े से पुत्र-पुत्रियाँ बचेंगी जो वहाँ से निकालकर तुम्हारे पास पहुँचाई जाएँगी, और तुम उनके चाल चलन और कामों को देखकर उस विपत्ति के विषय में जो मैं यरूशलेम पर डालूँगा, वरन् जितनी विपत्ति मैं उस पर डालूँगा, उस सब के विषय में शान्ति पाओगे।

23 जब तुम उनका चाल चलन और काम देखो, तब वे तुम्हारी शान्ति के कारण होंगे; और तुम जान लोगे कि मैंने यरूशलेम में जो कुछ किया, वह बिना कारण नहीं किया, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

## 15

१११११ १११११ ११ १११ ११ १११११११११

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

2 “हे मनुष्य के सन्तान, सब वृक्षों में ११११११ ११ १११११\* की क्या श्रेष्ठता है? अंगूर की शाखा जो जंगल के पेड़ों के बीच उत्पन्न होती है, उसमें क्या गुण है?

3 क्या कोई वस्तु बनाने के लिये उसमें से लकड़ी ली जाती, या कोई बर्तन टाँगने के लिये उसमें से खूँटी बन सकती है?

4 वह तो ईंधन बनाकर आग में झोंकी जाती है; उसके दोनों सिरे आग से जल जाते, और उसके बीच का भाग भस्म हो जाता है, क्या वह किसी भी काम की है?

5 देख, जब वह बनी थी, तब भी वह किसी काम की न थी, फिर जब वह आग का ईंधन होकर भस्म हो गई है, तब किस काम की हो सकती है?

6 इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है, जैसे जंगल के पेड़ों में से मैं अंगूर की लता को आग का ईंधन कर देता हूँ, वैसे ही मैं यरूशलेम के निवासियों को नाश कर दूँगा।

7 मैं उनके विरुद्ध होऊँगा, और वे एक आग में से निकलकर फिर दूसरी ११ ११ ११११ ११ ११११११११; और जब मैं उनसे विमुख होऊँगा, तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

8 मैं उनका देश उजाड़ दूँगा, क्योंकि उन्होंने मुझसे विश्वासघात किया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

## 16

११११११११११११ ११११११ ११ ११११११११११

‡ 14:14 १११, १११११११११ ११ १११११११११: ये तीन मनुष्य असाधारण उदाहरण हैं जो अपनी स्वामी-भक्ति के कारण मनुष्यों पर आनेवाले विनाश से बचाए गये थे। \* 15:2 १११११ ११ ११११: यहाँ तुलना वास्तव में दाखलता और वृक्षों की नहीं उनकी लकड़ियों में है। † 15:7 ११ ११ ११११ ११ १११११११११: वे आग में से निकले हैं तौभी आग उन्हें भस्म कर देगी। यहाँ उनकी दशा दर्शाई गई है।

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,  
 2 "हे मनुष्य के सन्तान, यरूशलेम को उसके सब घृणित काम जता दे,  
 3 और उससे कह, हे यरूशलेम, प्रभु यहोवा तुझ से यह कहता है: तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियों के देश से हुई; तेरा पिता तो एमोरी और तेरी माता हित्तिन थी।  
 4 तेरा जन्म ऐसे हुआ कि जिस दिन तू जन्मी, उस दिन न तेरा नाल काटा गया, न तू शुद्ध होने के लिये धोई गई, न तुझ पर नमक मला गया और न तू कुछ कपड़ों में लपेटी गई।  
 5 किसी की दयादृष्टि तुझ पर नहीं हुई कि इन कामों में से तेरे लिये एक भी काम किया जाता; वरन् अपने जन्म के दिन तू घृणित होने के कारण खुले मैदान में फेंक दी गई थी।  
 6 "जब मैं तेरे पास से होकर निकला, और तुझे लहू में लोटते हुए देखा, तब मैंने तुझ से कहा, 'हे लहू में लोटती हुई जीवित रह;' हाँ, तुझ ही से मैंने कहा, 'हे लहू में लोटती हुई, जीवित रह।'  
 7 फिर मैंने तुझे खेत के पौधे के समान बढ़ाया, और तू बढ़ते-बढ़ते बड़ी हो गई और अति सुन्दर हो गई; तेरी छत्रियाँ सुडौल हुई, और तेरे बाल बढ़े; तो भी तू नंगी थी।  
 8 "मैंने फिर तेरे पास से होकर जाते हुए तुझे देखा, और अब तू पूरी स्त्री हो गई थी; इसलिए मैंने तुझे अपना वस्त्र ओढ़ाकर तेरा तन ढाँप दिया; और सौगन्ध खाकर तुझ से वाचा बाँधी और तू मेरी हो गई, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।  
 9 तब मैंने तुझे जल से नहलाकर तुझ पर से लहू धो दिया, और तेरी देह पर तेल मला।  
 10 फिर मैंने तुझे बूटेदार वस्त्र और सुइसों के चमड़े की जूतियाँ पहनाई; और तेरी कमर में सूक्ष्म सन बाँधा, और तुझे रेशमी कपड़ा ओढ़ाया।  
 11 तब मैंने तेरा श्रृंगार किया, और तेरे हाथों में चूड़ियाँ और गले में हार पहनाया।  
 12 फिर मैंने तेरी नाक में नत्थ और तेरे कानों में बालियाँ पहनाई, और तेरे सिर पर शोभायमान मुकुट धरा।  
 13 तेरे आभूषण सोने चाँदी के और तेरे वस्त्र सूक्ष्म सन, रेशम और बूटेदार कपड़े के बने; फिर तेरा भोजन

मैदा, मधु और तेल हुआ; और तू अत्यन्त सुन्दर, वरन् रानी होने के योग्य हो गई।

14 तेरी सुन्दरता की कीर्ति अन्यजातियों में फैल गई, क्योंकि उस प्रताप के कारण, जो मैंने अपनी ओर से तुझे दिया था, तू अत्यन्त सुन्दर थी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

15 "परन्तु तू अपनी सुन्दरता पर भरोसा करके अपनी नामवरी के कारण व्यभिचार करने लगी, और सब यात्रियों के संग बहुत कुकर्म किया, और जो कोई तुझे चाहता था तू उसी से मिलती थी।

16 ~~तूने अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिए हुए सोने-चाँदी के थे, उनसे पुरुषों की मूर्तें बना ली, और उनसे भी व्यभिचार करने लगी;~~  
 17 और अपने बूटेदार वस्त्र लेकर उनको पहनाए, और ~~उनके सामने चढ़ाया।~~

18 जो भोजन मैंने तुझे दिया था, अर्थात् जो मैदा, तेल और मधु मैं तुझे खिलाता था, वह सब तूने उनके सामने सुखदायक सुगन्ध करके रखा; प्रभु यहोवा की यही वाणी है कि ऐसा ही हुआ।

19 फिर तूने अपने पुत्र-पुत्रियाँ लेकर जिन्हें तूने मेरे लिये जन्म दिया, उन मूर्तियों को बलिदान करके चढ़ाई। क्या तेरा व्यभिचार ऐसी छोटी बात थी;

20 कि तूने मेरे बाल-बच्चे उन मूर्तियों के आगे आग में चढ़ाकर घात किए हैं?  
 21 तूने अपने सब घृणित कामों में और व्यभिचार करते हुए, अपने बचपन के दिनों की कभी सुधि न ली, जबकि तू नंगी अपने लहू में लोटती थी।

~~तूने एक गुम्मट बनवा लिया, और हर एक चौक में एक ऊँचा स्थान बनवा लिया;~~

22 और एक-एक सड़क के सिरे पर भी तूने अपना ऊँचा स्थान बनवाकर अपनी सुन्दरता घृणित करा दी, और हर एक यात्री को कुकर्म के लिये बुलाकर महाव्यभिचारिणी हो गई।

\* 16:16 ~~तूने अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिए हुए सोने-चाँदी के थे, उनसे पुरुषों की मूर्तें बना ली, और उनसे भी व्यभिचार करने लगी;~~ पवित्र देश में मूर्तियों के मन्दिर की ऐसी साज-सज्जा दर्शाती है कि ये कृतघ्न मनुष्य परमेश्वर प्रदत्त धन और शक्ति को उन झूठे देवताओं की सेवा में कैसे निवेश कर रहे थे। † 16:18 ~~तूने अपने बाल-बच्चे उन मूर्तियों के आगे आग में चढ़ाकर घात किए हैं?~~ तेल उस देश का उत्पाद था और धूप तेल के बदले आयात की जाती थी। दोनों ही परमेश्वर की आशीष थे वरन् उसी के थे तथापि तेल और धूप जो परमेश्वर की आराधना के लिए तैयार किया जाता था, मूर्तिपूजा के काम में लिया जा रहा था।



खाती और सुख चैन से रहती थी; और दीन दरिद्र को न सम्भालती थी।

50 अतः वह गर्व करके मेरे सामने घृणित काम करने लगी, और यह देखकर मैंने उन्हें दूर कर दिया।

51 फिर सामरिया ने तेरे पापों के आधे भी पाप नहीं किए, तूने तो उससे बढ़कर घृणित काम किए, और अपने घोर घृणित कामों के द्वारा अपनी बहनों से जीत गई।

52 इसलिए तूने जो अपनी बहनों का न्याय किया, इस कारण लज्जित हो, क्योंकि तूने उनसे बढ़कर घृणित पाप किए हैं; इस कारण वे तुझ से कम दोषी ठहरी हैं। इसलिए तू इस बात से लज्जा कर और लजाती रह, क्योंकि तूने अपनी बहनों को कम दोषी ठहराया है।

यहजकेल 17:10-17

53 “जब मैं उनको अर्थात् पुत्रियों सहित सदोम और सामरिया को बंधुआई से लौटा लाऊँगा, तब उनके बीच ही तेरे बन्दियों को भी लौटा लाऊँगा,

54 जिससे तू लजाती रहे, और अपने सब कामों को देखकर लजाए, क्योंकि तू उनकी शान्ति ही का कारण हुई है।

55 तेरी बहनें सदोम और सामरिया अपनी-अपनी पुत्रियों समेत अपनी पहली दशा को फिर पहुँचेंगी, और तू भी अपनी पुत्रियों सहित अपनी पहली दशा को फिर पहुँचेंगी।

56 जब तक तेरी बुराई प्रगट न हुई थी, अर्थात् जिस समय तक तू आस-पास के लोगों समेत अरामी और पलिशती स्त्रियों की जो अब चारों ओर से तुझे तुच्छ जानती हैं, नामधराई करती थी,

57 उन अपने घमण्ड के दिनों में तो तू अपनी बहन सदोम का नाम भी न लेती थी।

58 परन्तु अब तुझको अपने महापाप और घृणित कामों का भार आप ही उठाना पड़ा है, यहोवा की यही वाणी है।

यहजकेल 17:18-22

59 “प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं तेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करूँगा, जैसा तूने किया है, क्योंकि तूने तो वाचा तोड़कर शपथ तुच्छ जानी है,

60 तो भी मैं तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूँगा, और तेरे साथ सदा की वाचा बाँधूँगा।

61 जब तू अपनी बहनों को अर्थात् अपनी बड़ी और छोटी बहनों को ग्रहण करे, तब तू अपना चाल चलन स्मरण करके लज्जित होगी; और मैं उन्हें तेरी पुत्रियाँ

ठहरा दूँगा; परन्तु यह तेरी वाचा के अनुसार न करूँगा। (यहजकेल 17:21-22) 6:21

62 मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर करूँगा, और तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ, (यहजकेल 17:23-26) 37:26

63 जिससे तू स्मरण करके लज्जित हो, और लज्जा के मारे फिर कभी मुँह न खोले। यह उस समय होगा, जब मैं तेरे सब कामों को ढाँपूँगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।” (यहजकेल 17:27-28) 78:38

## 17

यहजकेल 17:18-22

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

2 “हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह; प्रभु यहोवा यह कहता है,

3 एक लम्बे पंखवाले, परों से भरे और रंग-बिरंगे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी नोच ली।

4 तब उसने उस फुनगी की सबसे ऊपर की पतली टहनी को तोड़ लिया, और उसे लेन-देन करनेवालों के देश में ले जाकर व्यापारियों के एक नगर में लगाया।

5 तब उसने देश का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत में बोया, और उसे बहुत जलभरे स्थान में मजनु के समान लगाया।

6 वह उगकर छोटी फैलनेवाली अंगूर की लता हो गई जिसकी डालियाँ उसकी ओर झुकी, और उसकी जड़ उसके नीचे फैली; इस प्रकार से वह अंगूर की लता होकर कनखा फोड़ने और पत्तों से भरने लगी।

7 “फिर एक और लम्बे पंखवाला और परों से भरा हुआ यहजकेल 17:18-22\* था; और वह अंगूर की लता उस स्थान से जहाँ वह लगाई गई थी, उस दूसरे उकाब की ओर अपनी जड़ फैलाने और अपनी डालियाँ झुकाने लगी कि वह उसे खींचा करे।

8 परन्तु वह तो इसलिए अच्छी भूमि में बहुत जल के पास लगाई गई थी, कि कनखाएँ फोड़े, और फले, और उत्तम अंगूर की लता बने।

9 इसलिए तू यह कह, कि प्रभु यहोवा यह पूछता है: क्या वह फूले फलेगी? क्या वह उसको जड़ से न उखाड़ेगा, और उसके फलों को न झाड़ डालेगा कि वह अपनी सब हरी नई पत्तियों समेत सूख जाए? इसे जड़ से उखाड़ने के लिये अधिक बल और बहुत से मनुष्यों की आवश्यकता न होगी।

10 चाहे, वह लगी भी रहे, तो भी क्या वह फूले फलेगी? जब पुरवाई उसे लगे, तब क्या वह बिलकुल

\* 17:7 यहजकेल 17:18-22: यह मिस्र का राजा था जो शक्तिमान तो था परन्तु पहले वाले के तुल्य नहीं।





8 न ब्याज पर रुपया दिया हो, न रुपये की बढ़ती ली हो, और अपना हाथ कुटिल काम से रोका हो, मनुष्य के बीच सच्चाई से न्याय किया हो,

9 और मेरी विधियों पर चलता और मेरे नियमों को मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो, ऐसा मनुष्य धर्मी है, वह निश्चय जीवित रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

10 “परन्तु यदि उसका पुत्र डाकू, हत्यारा, या ऊपर कहे हुए पापों में से किसी का करनेवाला हो,

11 और ऊपर कहे हुए उचित कामों का करनेवाला न हो, और पहाड़ों के पूजा स्थलों पर भोजन किया हो, पराई स्त्री को बिगाड़ा हो,

12 दीन दरिद्र पर अंधेर किया हो, औरों को लूटा हो, बन्धक न लौटाई हो, मूरतों की ओर आँख उठाई हो, घृणित काम किया हो,

13 ब्याज पर रुपया दिया हो, और बढ़ती ली हो, तो क्या वह जीवित रहेगा? वह जीवित न रहेगा; इसलिए कि उसने ये सब धिनौने काम किए हैं वह निश्चय मरेगा और उसका खून उसी के सिर पड़ेगा।

14 “फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र हों और वह अपने पिता के ये सब पाप देखकर भय के मारे उनके समान न करता हो।

15 अर्थात् न तो पहाड़ों के पूजा स्थलों पर भोजन किया हो, न इस्राएल के घराने की मूरतों की ओर आँख उठाई हो, न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो,

16 न किसी पर अंधेर किया हो, न कुछ बन्धक लिया हो, न किसी को लूटा हो, वरन् अपनी रोटी भूखे को दी हो, नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो,

17 दीन जन की हानि करने से हाथ रोका हो, ब्याज और बढ़ती न ली हो, मेरे नियमों को माना हो, और मेरी विधियों पर चला हो, तो वह अपने पिता के अधर्म के कारण न मरेगा, वरन् जीवित ही रहेगा।

18 उसका पिता, जिसने अंधेर किया और लूटा, और अपने भाइयों के बीच अनुचित काम किया है, वही अपने अधर्म के कारण मर जाएगा।

19 तो भी तुम लोग कहते हो, क्यों? क्या पुत्र पिता के अधर्म का भार नहीं उठाता? जब पुत्र ने न्याय और धर्म के काम किए हों, और मेरी सब विधियों का पालन कर उन पर चला हो, तो वह जीवित ही रहेगा।

20 जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धार्मिकता का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा। (22:22. 26:16)

21 परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा; वरन् जीवित ही रहेगा।

22 उसने जितने अपराध किए हों, उनमें से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा; जो धार्मिकता का काम उसने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा।

23 प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे? (12:22. 2:4)

24 परन्तु जब धर्मी अपने धार्मिकता से फिरकर टेढ़े काम, वरन् दुष्ट के सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धार्मिकता के काम उसने किए हों, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उसने किया हो, उसके कारण वह मर जाएगा।

25 “तो भी तुम लोग कहते हो, ‘प्रभु की गति एक सी नहीं।’ हे इस्राएल के घराने, देख, क्या मेरी गति एक सी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं है?

26 जब धर्मी अपने धार्मिकता से फिरकर, टेढ़े काम करने लगे, तो वह उनके कारण मरेगा, अर्थात् वह अपने टेढ़े काम ही के कारण मर जाएगा।

27 फिर जब दुष्ट अपने दुष्ट कामों से फिरकर, न्याय और धर्म के काम करने लगे, तो वह अपना प्राण बचाएगा।

28 वह जो सोच विचार कर अपने सब अपराधों से फिरा, इस कारण न मरेगा, जीवित ही रहेगा।

29 तो भी इस्राएल का घराना कहता है कि प्रभु की गति एक सी नहीं। हे इस्राएल के घराने, क्या मेरी गति एक सी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं?

30 “प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, मैं तुम में से हर एक मनुष्य का न्याय उसकी चाल चलन के अनुसार ही करूँगा। पश्चाताप करो और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा।

31 अपने सब अपराधों को जो तुम ने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो! हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरो?

32 क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चाताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे।”

## 19

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22



9 तो भी [REDACTED] ऐसा किया कि जिनके बीच वे थे, और जिनके देखते हुए मैंने उनको मिस्र देश से निकलने के लिये अपने को उन पर प्रगट किया था उन जातियों के सामने वे अपवित्र न ठहरे।

10 मैं उनको मिस्र देश से निकालकर जंगल में ले आया।

11 वहाँ उनको मैंने अपनी विधियाँ बताई और अपने नियम भी बताए कि जो मनुष्य उनको माने, वह उनके कारण जीवित रहेगा।

12 फिर मैंने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें; कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करनेवाला हूँ।

13 तो भी इस्राएल के घराने ने जंगल में मुझसे बलवा किया; वे मेरी विधियों पर न चले, और मेरे नियमों को तुच्छ जाना, जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा; और [REDACTED] को अति अपवित्र किया।

“तब मैंने कहा, मैं जंगल में इन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर इनका अन्त कर डालूँगा।

14 परन्तु मैंने अपने नाम के निमित्त ऐसा किया कि वे उन जातियों के सामने, जिनके देखते मैं उनको निकाल लाया था, अपवित्र न ठहरे।

15 फिर मैंने जंगल में उनसे शपथ खाई कि जो देश मैंने उनको दे दिया, और जो सब देशों का शिरोमणि है, जिसमें दूध और मधु की धराएँ बहती हैं, उसमें उन्हें न पहुँचाऊँगा,

16 क्योंकि उन्होंने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर न चले, और मेरे विश्रामदिन अपवित्र किए थे; इसलिए कि उनका मन उनकी मूरतों की ओर लगा रहा।

17 तो भी मैंने उन पर कृपा की दृष्टि की, और उन्हें नाश न किया, और न जंगल में पूरी रीति से उनका अन्त कर डाला।

18 “फिर मैंने जंगल में उनकी सन्तान से कहा, अपने पुरखाओं की विधियों पर न चलो, न उनकी रीतियों को मानो और न उनकी मूरतें पूजकर अपने को अशुद्ध करो।

19 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, मेरी विधियों पर चलो, और मेरे नियमों के मानने में चौकसी करो,

20 और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें, और जिससे तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

21 परन्तु उनकी सन्तान ने भी मुझसे बलवा किया; वे मेरी विधियों पर न चले, न मेरे नियमों के मानने में

चौकसी की; जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा; मेरे विश्रामदिनों को उन्होंने अपवित्र किया।

“तब मैंने कहा, मैं जंगल में उन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर अपना कोप दिखलाऊँगा।

22 तो भी मैंने हाथ खींच लिया, और अपने नाम के निमित्त ऐसा किया, कि उन जातियों के सामने जिनके देखते हुए मैं उन्हें निकाल लाया था, वे अपवित्र न ठहरे।

23 फिर मैंने जंगल में उनसे शपथ खाई, कि मैं तुम्हें जाति-जाति में तितर-बितर करूँगा, और देश-देश में छितरा दूँगा,

24 क्योंकि उन्होंने मेरे नियम न माने, मेरी विधियों को तुच्छ जाना, मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया, और अपने पुरखाओं की मूरतों की ओर उनकी आँखें लगी रहीं।

25 फिर मैंने उनके लिये ऐसी-ऐसी विधियाँ ठहराई जो अच्छी न थी और ऐसी-ऐसी रीतियाँ जिनके कारण वे जीवित न रह सके;

26 अर्थात् वे अपने सब पहिलौटों को आग में होम करने लगे; इस रीति मैंने उन्हें उन्हीं की भेंटों के द्वारा अशुद्ध किया जिससे उन्हें निर्वंश कर डालूँ; और तब वे जान लें कि मैं यहोवा हूँ।

27 “हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: तुम्हारे पुरखाओं ने इसमें भी मेरी निन्दा की कि उन्होंने मेरा विश्वासघात किया।

28 क्योंकि जब मैंने उनको उस देश में पहुँचाया, जिसे उन्हें देने की शपथ मैंने उनसे खाई थी, तब वे हर एक ऊँचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि करके वहीं अपने मेलबलि करने लगे; और वहीं रिस दिलानेवाली अपनी भेंटें चढ़ाने लगे और वहीं अपना सुखदायक सुगन्ध-द्रव्य जलाने लगे, और वहीं अपने तपावन देने लगे।

29 तब मैंने उनसे पूछा, जिस ऊँचे स्थान को तुम लोग जाते हो, उससे क्या प्रयोजन है? इसी से उसका नाम आज तक बामा कहलाता है।

30 इसलिए इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है: क्या तुम भी अपने पुरखाओं की रीति पर चलकर अशुद्ध होकर, और उनके धिनौने कामों के अनुसार व्यभिचारिणी के समान काम करते हो?

31 आज तक जब जब तुम अपनी भेंटें चढ़ाते और अपने बाल-बच्चों को होम करके आग में चढ़ाते हो, तब-तब तुम अपनी मूरतों के कारण अशुद्ध ठहरते हो। हे

‡ 20:13 [REDACTED]: दिवस को अति अपवित्र किया। जंगल में विश्राम दिवस न रखने के कारण नहीं अपितु उस दिन को कामों एवं नाम से पवित्र करने में चूक - सत्यनिष्ठ उपासना एवं सच्चे दिल से सेवा के बिना।

इस्राएल के घराने, क्या तुम मुझसे पूछने पाओगे? प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की शपथ तुम मुझसे पूछने न पाओगे।

32 “जो बात तुम्हारे मन में आती है, हम काठ और पत्थर के उपासक होकर अन्यजातियों और देश-देश के कुलों के समान हो जाएंगे, वह किसी भाँति पूरी नहीं होने की।

33 “प्रभु यहोवा यह कहता है, मेरे जीवन की शपथ मैं निश्चय बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई हुई जलजलाहट के साथ तुम्हारे ऊपर राज्य करूँगा। (21:6)

34 मैं बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई हुई जलजलाहट के साथ तुम्हें देश-देश के लोगों में से अलग करूँगा, और उन देशों से जिनमें तुम तितर-बितर हो गए थे, इकट्ठा करूँगा;

35 और मैं तुम्हें देश-देश के लोगों के जंगल में ले जाकर, वहाँ आमने-सामने तुम से मुकद्दमा लड़ूँगा।

36 जिस प्रकार मैं तुम्हारे पूर्वजों से मिस्र देशरूपी जंगल में मुकद्दमा लड़ता था, उसी प्रकार तुम से मुकद्दमा लड़ूँगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

37 “मैं तुम्हें लाठी के तले चलाऊँगा। और तुम्हें वाचा के बन्धन में डालूँगा।

38 मैं तुम में से सब विद्रोहियों को निकालकर जो मेरा अपराध करते हैं; तुम्हें शुद्ध करूँगा; और जिस देश में वे टिकते हैं उसमें से मैं उन्हें निकाल दूँगा; परन्तु इस्राएल के देश में घुसने न दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

39 “हे इस्राएल के घराने तुम से तो प्रभु यहोवा यह कहता है: जाकर अपनी-अपनी मूरतों की उपासना करो; और यदि तुम मेरी न सुनोगे, तो आगे को भी यही किया करो; परन्तु मेरे पवित्र नाम को अपनी भेंटों और मूरतों के द्वारा फिर अपवित्र न करना।

40 “क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल का सारा घराना अपने देश में मेरे पवित्र पर्वत पर, इस्राएल के ऊँचे पर्वत पर, सब का सब मेरी उपासना करेगा; वही मैं उनसे प्रसन्न होऊँगा, और वहीं मैं तुम्हारी उठाई हुई भेंटें और चढ़ाई हुई उत्तम-उत्तम वस्तुएँ, और तुम्हारी सब पवित्र की हुई वस्तुएँ तुम से लिया करूँगा।

41 जब मैं तुम्हें देश-देश के लोगों में से अलग करूँ और उन देशों से जिनमें तुम तितर-बितर हुए हो, इकट्ठा करूँ, तब तुम को सुखदायक सुगन्ध जानकर ग्रहण

करूँगा, और अन्यजातियों के सामने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊँगा। (21:25)

42 जब मैं तुम्हें इस्राएल के देश में पहुँचाऊँ, जिसके देने की शपथ मैंने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

43 वहाँ तुम अपनी चाल चलन और अपने सब कामों को जिनके करने से तुम अशुद्ध हुए हो स्मरण करोगे, और अपने सब बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में धिनौने ठहरोगे।

44 हे इस्राएल के घराने, जब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बुरे चाल चलन और बिगड़े हुए कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही नाम के निमित्त बर्ताव करूँ, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

45 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

46 “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख दक्षिण की ओर कर, दक्षिण की ओर वचन सुना, और दक्षिण देश के वन के विषय में भविष्यद्वाणी कर;

47 और दक्षिण देश के वन से कह, यहोवा का यह वचन सुन, प्रभु यहोवा यह कहता है, मैं तुझ में आग लगाऊँगा, और तुझ में क्या हरे, क्या सूखे, जितने पेड़ हैं, सब को वह भस्म करेगी; उसकी धधकती ज्वाला न बुझेगी, और उसके कारण दक्षिण से उत्तर तक सब के मुख झुलस जाएँगे।

48 तब सब प्राणियों को सूझ पड़ेगा कि यह आग यहोवा की लगाई हुई है; और वह कभी न बुझेगी।”

49 तब मैंने कहा, “हाय परमेश्वर यहोवा! लोग तो मेरे विषय में कहा करते हैं कि क्या वह दृष्टान्त ही का कहनेवाला नहीं है?”

## 21

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा

2 “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख यरूशलेम की ओर कर और पवित्रस्थानों की ओर वचन सुना; इस्राएल देश के विषय में भविष्यद्वाणी कर और उससे कह,

3 प्रभु यहोवा यह कहता है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, और अपनी तलवार म्यान में से खींचकर तुझ में से धर्मी और अधर्मी दोनों को नाश करूँगा।

4 इसलिए कि मैं तुझ में से धर्मी और अधर्मी सब को नाश करनेवाला हूँ, इस कारण मेरी तलवार म्यान से

निकलकर दक्षिण से उत्तर तक सब प्राणियों के विरुद्ध चलेगी;

5 तब सब प्राणी जान लेंगे कि यहोवा ने म्यान में से अपनी तलवार खींची है; और वह उसमें फिर रखी न जाएगी।

6 इसलिए हे मनुष्य के सन्तान, तू आह मार, भारी खेद कर, और टूटी कमर लेकर लोगों के सामने आह मार।

7 जब वे तुझ से पूछें, 'तू क्यों आह मारता है,' तब कहना, 'समाचार के कारण। क्योंकि ऐसी बात आनेवाली है कि सब के मन टूट जाएँगे और सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, सब की आत्मा बेबस और सब के घुटने निर्बल हो जाएँगे। देखो, ऐसी ही बात आनेवाली है, और वह अवश्य पूरी होगी;' परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

8 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

9 "हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देख, सान चढ़ाई हुई तलवार, और झलकाई हुई तलवार!

10 वह इसलिए सान चढ़ाई गई कि उससे घात किया जाए, और इसलिए झलकाई गई कि बिजली के समान चमके! तो क्या हम हर्षित हो? वह तो यहोवा के पुत्र का राजदण्ड है और सब पेड़ों को तुच्छ जाननेवाला है।

11 वह झलकाने को इसलिए दी गई कि हाथ में ली जाए; वह इसलिए सान चढ़ाई और झलकाई गई कि घात करनेवालों के हाथ में दी जाए।

12 हे मनुष्य के सन्तान चिल्ला, और हाय, हाय, कर! क्योंकि वह मेरी प्रजा पर चलने वाली है, वह इस्राएल के सारे प्रधानों पर चलने वाली है; मेरी प्रजा के संग वे भी तलवार के वश में आ गए। इस कारण तू अपनी छाती पीट।

13 क्योंकि सचमुच उसकी जाँच हुई है, और यदि उसे तुच्छ जाननेवाला राजदण्ड भी न रहे, तो क्या? परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

14 "इसलिए हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी कर, और हाथ पर हाथ दे मार, और तीन बार तलवार का बल दुगना किया जाए; वह तो घात करने की तलवार वरन् बड़े से बड़े के घात करने की तलवार है, जिससे कोठरियों में भी कोई नहीं बच सकता।

15 मैंने घात करनेवाली तलवार को उनके सब फाटकों के विरुद्ध इसलिए चलाया है कि लोगों के मन टूट जाएँ, और वे ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~\* हाय, हाय! वह तो

बिजली के समान बनाई गई, और घात करने को सान चढ़ाई गई है।

16 सिकुड़कर दाहिनी ओर जा, फिर तैयार होकर बाईं ओर मुड़, जिधर भी तेरा मुख हो।

17 मैं भी ताली बजाऊँगा और अपनी जलजलाहट को ठंडा करूँगा, मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है।"

~~...~~ ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~

18 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

19 "हे मनुष्य के सन्तान, दो मार्ग ठहरा ले कि बाबेल के राजा की तलवार आए; दोनों मार्ग एक ही देश से निकलें! फिर एक चिन्ह कर, अर्थात् नगर के मार्ग के सिर पर एक चिन्ह कर;

20 एक मार्ग ठहरा कि तलवार अम्मोनियों के रब्बाह नगर पर, और यहूदा देश के गढ़वाले नगर यरूशलेम पर भी चले।

21 क्योंकि बाबेल का राजा चौराहे अर्थात् दोनों मार्गों के निकलने के स्थान पर भावी बूझने को खड़ा हुआ है, उसने तीरों को हिला दिया, और गृहदेवताओं से प्रश्न किया, और कलेजे को भी देखा।

22 उसके दाहिनी हाथ में यरूशलेम का नाम है कि वह उसकी ओर युद्ध के यन्त्र लगाए, और गला फाड़कर घात करने की आज्ञा दे और ऊँचे शब्द से ललकारे, फाटकों की ओर युद्ध के यन्त्र लगाए और दमदमा बाँधे और कोट बनाए।

23 परन्तु लोग तो उस भावी कहने को मिथ्या ~~...~~ ~~...~~; उन्होंने जो उनकी शपथ खाई है; इस कारण वह उनके अधर्म का स्मरण कराकर उन्हें पकड़ लेगा।

24 "इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: इसलिए कि तुम्हारा अधर्म जो स्मरण किया गया है, और तुम्हारे अपराध जो खुल गए हैं, क्योंकि तुम्हारे सब कामों में पाप ही पाप दिखाई पड़ा है, और तुम स्मरण में आए हो, इसलिए तुम उन्हीं से पकड़े जाओगे।

25 हे इस्राएल दुष्ट प्रधान, तेरा दिन आ गया है; अधर्म के अन्त का समय पहुँच गया है।

26 तेरे विषय में परमेश्वर यहोवा यह कहता है: पगड़ी उतार, और मुकुट भी उतार दे; वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का; जो नीचा है उसे ऊँचा कर और जो ऊँचा है उसे नीचा कर। (~~...~~ 75:7)

27 मैं इसको उलट दूँगा और उलट-पुलट कर दूँगा; हाँ उलट दूँगा और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दूँगा।

\* 21:15 ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~: अर्थात् उनके गिरने के कारण अधिक असंख्य हो सकें। † 21:23 ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~: यहूदी अपने व्यर्थ के आत्म-विश्वास बाबेल के भावी कहनेवालों की झूठी और निराधार आशा पर निर्भर करेंगे।

28

“फिर हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह कि प्रभु यहोवा अम्मोनियों और उनकी की हुई नामधराई के विषय में यह कहता है; तू कह, खींची हुई तलवार है, वह तलवार घात के लिये झलकाई हुई है कि नाश करे और बिजली के समान हो

29 जब तक कि वे तेरे विषय में झूठे दर्शन पाते, और झूठे भावी तुझको बताते हैं कि तू उन दुष्ट असाध्य घायलों की गर्दनों पर पड़े जिनका दिन आ गया, और जिनके अधर्म के अन्त का समय आ पहुँचा है।

30 उसको म्यान में फिर रख। जिस स्थान में तू सिरजी गई और जिस देश में तेरी उत्पत्ति हुई, उसी में मैं तेरा न्याय करूँगा।

31 मैं तुझ पर अपना क्रोध भड़काऊँगा और तुझ पर अपनी जलजलाहट की आग फूँक दूँगा; और तुझे पशु सरीखे मनुष्य के हाथ कर दूँगा जो नाश करने में निपुण हैं।

32 तू आग का कौर होगी; तेरा खून देश में बना रहेगा; तू स्मरण में न रहेगी क्योंकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है।”

## 22

1

यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू उस हत्यारे नगर का न्याय न करेगा? क्या तू उसका न्याय न करेगा? उसको उसके सब घिनौने काम बता दे,

3 और कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे नगर तू अपने बीच में हत्या करता है जिससे तेरा समय आए, और अपनी ही हानि करने और अशुद्ध होने के लिये मूरतें बनाता है।

4 जो हत्या तूने की है, उससे तू दोषी ठहरी, और जो मूरतें तूने बनाई है, उनके कारण तू अशुद्ध हो गई है; तूने अपने अन्त के दिन को समीप कर लिया, और अपने पिछले वर्षों तक पहुँच गई है। इस कारण मैंने तुझे जाति-जाति के लोगों की ओर से नामधराई का और सब देशों के ठट्टे का कारण कर दिया है।

5 हे बदनाम, हे हुल्लड से भरे हुए नगर, जो निकट और जो दूर है, वे सब तुझे उपहास में उड़ाएँगे।

6 “देख, इस्राएल के प्रधान लोग अपने-अपने बल के अनुसार तुझ में हत्या करनेवाले हुए हैं।

7 तुझ में माता-पिता तुच्छ जाने गए हैं; तेरे बीच परदेशी पर अंधेर किया गया; और अनाथ और विधवा तुझ में पीसी गई हैं।

8 तूने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ जाना, और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया है।

9 तुझ में लुच्चे लोग हत्या करने को तत्पर हुए, और तेरे लोगों ने पहाड़ों पर भोजन किया है; तेरे बीच महापाप किया गया है।

10 तुझ में पिता की देह उघाड़ी गई; तुझ में ऋतुमती स्त्री से भी भोग किया गया है।

11 किसी ने तुझ में पड़ोसी की स्त्री के साथ घिनौना काम किया; और किसी ने अपनी बहू को बिगाड़कर महापाप किया है, और किसी ने अपनी बहन अर्थात् अपने पिता की बेटी को भ्रष्ट किया है।

12 तुझ में हत्या करने के लिये उन्होंने घूस ली है, तूने ब्याज और सूद लिया और अपने पड़ोसियों को पीस-पीसकर अन्याय से लाभ उठाया; और मुझ को तूने भुला दिया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

13 “इसलिए देख, जो लाभ तूने अन्याय से उठाया और अपने बीच हत्या की है, उससे मैंने हाथ पर हाथ दे मारा है।

14 अतः जिन दिनों में तेरा न्याय करूँगा, क्या उनमें तेरा हृदय दृढ़ और तेरे हाथ स्थिर रह सकेंगे? मुझ यहोवा ने यह कहा है, और ऐसा ही करूँगा।

15 मैं तेरे लोगों को जाति-जाति में तितर-बितर करूँगा, और देश-देश में छितरा दूँगा, और तेरी अशुद्धता को तुझ में से नाश करूँगा।

16 तू जाति-जाति के देखते हुए अपनी ही दृष्टि में अपवित्र ठहरेगी; तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ।”

17

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

18 “हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल का घराना मेरी दृष्टि में <sup>\*</sup> हो गया है; वे सब के सब भट्टी के बीच के पीतल और राँगे और लोहे और शीशे के समान बन गए; वे चाँदी के मैल के समान हो गए हैं।

19 इस कारण प्रभु यहोवा उनसे यह कहता है: इसलिए कि तुम सब के सब धातु के मैल के समान बन गए हो, अतः देखो, मैं तुम को यरूशलेम के भीतर इकट्ठा करने पर हूँ।

20 जैसे लोग चाँदी, पीतल, लोहा, शीशा, और राँगा इसलिए भट्टी के भीतर बटोरकर रखते हैं कि उन्हें आग

\* 22:18 यह एक ऐसी उपमा है जिसे बार बार काम में लिया गया है और मनुष्यों की पतित अवस्था का बोध करवाती है, वे एक तुच्छ धातु के सदृश्य हो गये हैं, दूसरी ओर यह भावी शोधन का भी संकेत करती है जब मैल जला दिया जाएगा और परिशुद्ध धातु बचेगी।

फूँककर पिघलाएँ, वैसे ही मैं तुम को अपने कोप और जलजलाहट से इकट्ठा करके वहीं रखकर पिघला दूँगा।

21 मैं तुम को वहाँ बटोरकर अपने रोष की आग से फूँकूँगा, और तुम उसके बीच पिघलाए जाओगे।

22 जैसे चाँदी भट्टी के बीच में पिघलाई जाती है, वैसे ही तुम उसके बीच में पिघलाए जाओगे; तब तुम जान लोगे कि जिसने हम पर अपनी जलजलाहट भड़काई है, वह यहोवा है।”

22:22-23 22 22:22-23 22 22:22

23 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

24 “हे मनुष्य के सन्तान, उस देश से कह, तू ऐसा देश है जो शुद्ध नहीं हुआ, और जलजलाहट के दिन में तुझ पर वर्षा नहीं हुई;

25 तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने तुझ में राजद्रोह की गोष्ठी की, उन्होंने गरजनेवाले सिंह के समान अहेर पकड़ा और प्राणियों को खा डाला है; वे रखे हुए अनमोल धन को छीन लेते हैं, और तुझ में बहुत स्त्रियों को विधवा कर दिया है।

26 उसके याजकों ने 22:26 22:26-22:26 22 22:26 22:26-22:26 22 22:26 22:26-22:26 22 22:26 है, और मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है; उन्होंने पवित्र-अपवित्र का कुछ भेद नहीं माना, और न औरों को शुद्ध-अशुद्ध का भेद सिखाया है, और वे मेरे विश्रामदिनों के विषय में निश्चिन्त रहते हैं, जिससे मैं उनके बीच अपवित्र ठहरता हूँ।

27 उसके प्रधान भेड़ियों के समान अहेर पकड़ते, और अन्याय से लाभ उठाने के लिये हत्या करते हैं और प्राण घात करने को तत्पर रहते हैं। (22:3 3:3)

28 उसके भविष्यद्वक्ता उनके लिये कच्ची पुताई करते हैं, उनका दर्शन पाना मिथ्या है; यहोवा के बिना कुछ कहे भी वे यह कहकर झूठी भावी बताते हैं कि ‘प्रभु यहोवा यह कहता है।’

29 देश के साधारण लोग भी अंधेर करते और पराया धन छीनते हैं, वे दीन दरिद्र को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अंधेर करते हैं।

30 मैंने उनमें ऐसा मनुष्य ढूँढना चाहा जो बाड़े को सुधारें और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला।

31 इस कारण मैंने उन पर अपना रोष भड़काया और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया है; मैंने उनकी चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर

यहोवा की यही वाणी है।” (22:22 11:21, 22:22 9:10)

## 23

23 23:1-23:23 23:1-23:23

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, दो स्त्रियाँ थी, जो एक ही माँ की बेटी थी।

3 वे अपने बचपन ही में वेश्या का काम मिस्र में करने लगी; उनकी छातियाँ कुँवारेपन में पहले वहीं मींजी गई और उनका मरदन भी हुआ।

4 उन लड़कियों में से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था। वे मेरी हो गई, और उनके पुत्र पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं। उनके नामों में से ओहोला तो सामरिया, और ओहोलीबा यरूशलेम है।

23:4-23:5 23:4 23:4-23:5

5 “ओहोला जब मेरी थी, तब ही व्यभिचारिणी होकर अपने मित्रों पर मोहित होने लगी जो उसके पड़ोसी अशशूरी थे।

6 वे तो सब के सब नीले वस्त्र पहननेवाले मनभावने जवान, अधिपति और प्रधान थे, और घोड़ों पर सवार थे।

7 इसलिए उसने उन्हीं के साथ व्यभिचार किया जो सब के सब सर्वोत्तम अशशूरी थे; और जिस किसी पर वह मोहित हुई, उसी की मूरतों से वह अशुद्ध हुई।

8 जो व्यभिचार उसने मिस्र में सीखा था, उसको भी उसने न छोड़ा; क्योंकि बचपन में मनुष्यों ने उसके साथ कुकर्म किया, और उसकी छातियाँ मींजी, और तन-मन से उसके साथ व्यभिचार किया गया था।

9 इस कारण मैंने उसको उन्हीं अशशूरी मित्रों के हाथ कर दिया जिन पर वह मोहित हुई थी।

10 उन्हींने उसको नंगी किया; उसके पुत्र-पुत्रियाँ छीनकर उसको तलवार से घात किया; इस प्रकार उनके हाथ से दण्ड पाकर वह स्त्रियों में प्रसिद्ध हो गई।

23:10-23:11 23:10 23:10-23:11

11 “उसकी बहन ओहोलीबा ने यह देखा, तो भी वह मोहित होकर व्यभिचार करने में अपनी बहन से भी अधिक बढ़ गई।

12 वह अपने अशशूरी पड़ोसियों पर मोहित होती थी, जो सब के सब अति सुन्दर वस्त्र पहननेवाले और घोड़ों के सवार मनभावने, जवान अधिपति और सब प्रकार के प्रधान थे।

† 22:26 22:26 22:26-22:26 22 22:26 22:26-22:26 22 22:26 22:26-22:26 22 22:26 अर्थात् व्यवस्था का गलत व्याख्या करना है। पुरोहितों का एक विशेष उत्तरदायित्व था कि पवित्र और अपवित्र, शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर स्पष्ट प्रगट करें।

13 तब मैंने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई; उन दोनों बहनों की एक ही चाल थी।

14 परन्तु ओहोलीबा अधिक व्यभिचार करती गई; अतः जब उसने दीवार पर सेंदूर से खींचे हुए ऐसे कसदी पुरुषों के चित्र देखे,

15 जो कमर में फेंटे बाँधे हुए, सिर में छोर लटकती हुई रंगीली पगड़ियाँ पहने हुए, और सब के सब अपनी कसदी जन्म-भूमि अर्थात् बाबेल के लोगों की रीति पर प्रधानों का रूप धरे हुए थे,

16 तब उनको देखते ही वह उन पर मोहित हुई और उनके पास कसदियों के देश में दूत भेजे।

17 इसलिए बाबेली उसके पास पलंग पर आए, और उसके साथ व्यभिचार करके उसे अशुद्ध किया; और जब वह उनसे अशुद्ध हो गई, तब उसका मन उनसे फिर गया।

18 तो भी जब वह तन उघाड़ती और व्यभिचार करती गई, तब मेरा मन जैसे उसकी बहन से फिर गया था, वैसे ही उससे भी फिर गया।

19 इस पर भी वह मिस्र देश के अपने बचपन के दिन स्मरण करके जब वह वेश्या का काम करती थी, और अधिक व्यभिचार करती गई;

20 और ऐसे मित्रों पर मोहित हुई, जिनका अंग गदहों का सा, और वीर्य घोड़ों का सा था।

21 तू इस प्रकार से अपने बचपन के उस समय के महापाप का स्मरण कराती है जब मिस्री लोग तेरी छातियाँ मींजते थे।”

???????? ? ? ?

22 इस कारण हे ओहोलीबा, परमेश्वर यहोवा तुझ से यह कहता है: “देख, मैं तेरे मित्रों को उभारकर जिनसे तेरा मन फिर गया चारों ओर से तेरे विरुद्ध ले आऊँगा।

23 अर्थात् बाबेली और सब कसदियों को, और पकोद, शोया और कोआ के लोगों को; और उनके साथ सब अशूरियों को लाऊँगा जो सब के सब घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति, और कई प्रकार के प्रतिनिधि, प्रधान और नामी पुरुष हैं।

24 वे लोग हथियार, रथ, छकड़े और देश-देश के लोगों का दल लिए हुए तुझ पर चढ़ाई करेंगे; और ढाल और फरी और टोप धारण किए हुए तेरे विरुद्ध चारों ओर पाँति बाँधेंगे; और मैं उन्हीं के हाथ न्याय का काम सौंपूँगा, और वे अपने-अपने नियम के अनुसार तेरा न्याय करेंगे।

25 मैं तुझ पर जलूँगा, जिससे वे जलजलाहट के साथ तुझ से बर्ताव करेंगे। वे तेरी नाक और कान काट लेंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा वह तलवार से मारा

जाएगा। वे तेरे पुत्र-पुत्रियों को छीन ले जाएँगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा, वह आग से भस्म हो जाएगा।

26 वे तेरे वस्त्र भी उतारकर तेरे सुन्दर-सुन्दर गहने छीन ले जाएँगे।

27 इस रीति से मैं तेरा महापाप और जो वेश्या का काम तूने मिस्र देश में सीखा था, उसे भी तुझ से छुड़ाऊँगा, यहाँ तक कि तू फिर अपनी आँख उनकी ओर न लगाएगी और न मिस्र देश को फिर स्मरण करेगी।

28 क्योंकि प्रभु यहोवा तुझ से यह कहता है: देख, मैं तुझे उनके हाथ सौंपूँगा जिनसे तू बैर रखती है और जिनसे तेरा मन फिर गया है;

29 और वे तुझ से बैर के साथ बर्ताव करेंगे, और तेरी सारी कमाई को उठा लेंगे, और तुझे नंगा करके छोड़ देंगे, और तेरे तन के उघाड़े जाने से तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट हो जाएगा।

30 ये काम तुझ से इस कारण किए जाएँगे क्योंकि तू अन्यजातियों के पीछे व्यभिचारिणी के समान हो गई, और उनकी मूर्तियों को पूजकर अशुद्ध हो गई है।

31 तू अपनी बहन की लीक पर चली है; इस कारण मैं तेरे हाथ में उसका सा कटोरा दूँगा।

32 प्रभु यहोवा यह कहता है, अपनी बहन के कटोरे से तुझे पीना पड़ेगा जो गहरा और चौड़ा है; तू हँसी और उपहास में उड़ाई जाएगी, क्योंकि उस कटोरे में बहुत कुछ समाता है।

33 तू मतवालेपन और दुःख से छक जाएगी। तू अपनी बहन सामरिया के कटोरे को, अर्थात् विस्मय और उजाड़ को पीकर छक जाएगी।

34 उसमें से तू गार-गारकर पीएगी, और उसके ठीकरों को भी चबाएगी और अपनी छातियाँ घायल करेगी; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

35 तूने जो मुझे भुला दिया है और अपना मुँह मुझसे फेर लिया है, इसलिए तू आप ही अपने महापाप और व्यभिचार का भार उठा, परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।”

???????? ? ? ?

36 यहोवा ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करेगा? तो फिर उनके घिनौने काम उन्हें जता दे।

37 क्योंकि उन्होंने व्यभिचार किया है, और उनके हाथों में खून लगा है; उन्होंने अपनी मूरतों के साथ व्यभिचार किया, और अपने बच्चों को जो मुझसे उत्पन्न हुए थे, उन मूरतों के आगे भस्म होने के लिये चढ़ाए हैं।





जब तक मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर शान्त न कर लूँ, तब तक तू फिर शुद्ध न की जाएगी।

14 मुझ यहोवा ही ने यह कहा है; और वह हो जाएगा, मैं ऐसा ही करूँगा, मैं तुझे न छोड़ूँगा, न तुझ पर तरस खाऊँगा, न पछताऊँगा; तेरे चाल चलन और कामों ही के अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

15 यहोवा का यह भी वचन मेरे पास पहुँचा:

16 “हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

17 लम्बी साँसें ले तो ले, परन्तु वे सुनाई न पड़ें; मेरे हुओं के लिये भी विलाप न करना। सिर पर पगड़ी बाँधे और पाँवों में जूती पहने रहना; और न तो अपने होंठ को ढाँपना न शोक के योग्य रोटी खाना।”

18 तब मैं सवेरे लोगों से बोला, और साँझ को मेरी स्त्री मर गई। तब सवेरे मैंने आज्ञा के अनुसार किया।

19 तब लोग मुझसे कहने लगे, “क्या तू हमें न बताएगा कि यह जो तू करता है, इसका हम लोगों के लिये क्या अर्थ है?”

20 मैंने उनको उत्तर दिया, “यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

21 ‘तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: देखो, मैं अपने पवित्रस्थान को जिसके गढ़ होने पर तुम फूलते हो, और जो तुम्हारी आँखों का चाहा हुआ है, और जिसको तुम्हारा मन चाहता है, उसे मैं अपवित्र करने पर हूँ; और अपने जिन बेटे-बेटियों को तुम वहाँ छोड़ आए हो, वे तलवार से मारे जाएँगे।

22 जैसा मैंने किया है वैसा ही तुम लोग करोगे, तुम भी अपने होंठ न ढाँपोगे, न शोक के योग्य रोटी खाओगे।

23 तुम सिर पर पगड़ी बाँधे और पाँवों में जूती पहने रहोगे, न तुम रोओगे, न छाती पीटोगे, वरन् अपने अधर्म के कामों में फँसे हुए गलते जाओगे और एक दूसरे की ओर कराहते रहोगे।

24 इस रीति यहजेकल तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरेगा; जैसा उसने किया, ठीक वैसा ही तुम भी करोगे। और जब यह हो जाए, तब तुम जान लोगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।”

† 24:16 24:17 24:18 24:19 24:20 24:21 24:22 24:23 24:24 24:25 24:26 24:27 24:28 24:29 24:30 24:31 24:32 24:33 24:34 24:35 24:36 24:37 24:38 24:39 24:40 24:41 24:42 24:43 24:44 24:45 24:46 24:47 24:48 24:49 24:50 24:51 24:52 24:53 24:54 24:55 24:56 24:57 24:58 24:59 24:60 24:61 24:62 24:63 24:64 24:65 24:66 24:67 24:68 24:69 24:70 24:71 24:72 24:73 24:74 24:75 24:76 24:77 24:78 24:79 24:80 24:81 24:82 24:83 24:84 24:85 24:86 24:87 24:88 24:89 24:90 24:91 24:92 24:93 24:94 24:95 24:96 24:97 24:98 24:99 24:100 24:101 24:102 24:103 24:104 24:105 24:106 24:107 24:108 24:109 24:110 24:111 24:112 24:113 24:114 24:115 24:116 24:117 24:118 24:119 24:120 24:121 24:122 24:123 24:124 24:125 24:126 24:127 24:128 24:129 24:130 24:131 24:132 24:133 24:134 24:135 24:136 24:137 24:138 24:139 24:140 24:141 24:142 24:143 24:144 24:145 24:146 24:147 24:148 24:149 24:150 24:151 24:152 24:153 24:154 24:155 24:156 24:157 24:158 24:159 24:160 24:161 24:162 24:163 24:164 24:165 24:166 24:167 24:168 24:169 24:170 24:171 24:172 24:173 24:174 24:175 24:176 24:177 24:178 24:179 24:180 24:181 24:182 24:183 24:184 24:185 24:186 24:187 24:188 24:189 24:190 24:191 24:192 24:193 24:194 24:195 24:196 24:197 24:198 24:199 24:200 24:201 24:202 24:203 24:204 24:205 24:206 24:207 24:208 24:209 24:210 24:211 24:212 24:213 24:214 24:215 24:216 24:217 24:218 24:219 24:220 24:221 24:222 24:223 24:224 24:225 24:226 24:227 24:228 24:229 24:230 24:231 24:232 24:233 24:234 24:235 24:236 24:237 24:238 24:239 24:240 24:241 24:242 24:243 24:244 24:245 24:246 24:247 24:248 24:249 24:250 24:251 24:252 24:253 24:254 24:255 24:256 24:257 24:258 24:259 24:260 24:261 24:262 24:263 24:264 24:265 24:266 24:267 24:268 24:269 24:270 24:271 24:272 24:273 24:274 24:275 24:276 24:277 24:278 24:279 24:280 24:281 24:282 24:283 24:284 24:285 24:286 24:287 24:288 24:289 24:290 24:291 24:292 24:293 24:294 24:295 24:296 24:297 24:298 24:299 24:300 24:301 24:302 24:303 24:304 24:305 24:306 24:307 24:308 24:309 24:310 24:311 24:312 24:313 24:314 24:315 24:316 24:317 24:318 24:319 24:320 24:321 24:322 24:323 24:324 24:325 24:326 24:327 24:328 24:329 24:330 24:331 24:332 24:333 24:334 24:335 24:336 24:337 24:338 24:339 24:340 24:341 24:342 24:343 24:344 24:345 24:346 24:347 24:348 24:349 24:350 24:351 24:352 24:353 24:354 24:355 24:356 24:357 24:358 24:359 24:360 24:361 24:362 24:363 24:364 24:365 24:366 24:367 24:368 24:369 24:370 24:371 24:372 24:373 24:374 24:375 24:376 24:377 24:378 24:379 24:380 24:381 24:382 24:383 24:384 24:385 24:386 24:387 24:388 24:389 24:390 24:391 24:392 24:393 24:394 24:395 24:396 24:397 24:398 24:399 24:400 24:401 24:402 24:403 24:404 24:405 24:406 24:407 24:408 24:409 24:410 24:411 24:412 24:413 24:414 24:415 24:416 24:417 24:418 24:419 24:420 24:421 24:422 24:423 24:424 24:425 24:426 24:427 24:428 24:429 24:430 24:431 24:432 24:433 24:434 24:435 24:436 24:437 24:438 24:439 24:440 24:441 24:442 24:443 24:444 24:445 24:446 24:447 24:448 24:449 24:450 24:451 24:452 24:453 24:454 24:455 24:456 24:457 24:458 24:459 24:460 24:461 24:462 24:463 24:464 24:465 24:466 24:467 24:468 24:469 24:470 24:471 24:472 24:473 24:474 24:475 24:476 24:477 24:478 24:479 24:480 24:481 24:482 24:483 24:484 24:485 24:486 24:487 24:488 24:489 24:490 24:491 24:492 24:493 24:494 24:495 24:496 24:497 24:498 24:499 24:500 24:501 24:502 24:503 24:504 24:505 24:506 24:507 24:508 24:509 24:510 24:511 24:512 24:513 24:514 24:515 24:516 24:517 24:518 24:519 24:520 24:521 24:522 24:523 24:524 24:525 24:526 24:527 24:528 24:529 24:530 24:531 24:532 24:533 24:534 24:535 24:536 24:537 24:538 24:539 24:540 24:541 24:542 24:543 24:544 24:545 24:546 24:547 24:548 24:549 24:550 24:551 24:552 24:553 24:554 24:555 24:556 24:557 24:558 24:559 24:560 24:561 24:562 24:563 24:564 24:565 24:566 24:567 24:568 24:569 24:570 24:571 24:572 24:573 24:574 24:575 24:576 24:577 24:578 24:579 24:580 24:581 24:582 24:583 24:584 24:585 24:586 24:587 24:588 24:589 24:590 24:591 24:592 24:593 24:594 24:595 24:596 24:597 24:598 24:599 24:600 24:601 24:602 24:603 24:604 24:605 24:606 24:607 24:608 24:609 24:610 24:611 24:612 24:613 24:614 24:615 24:616 24:617 24:618 24:619 24:620 24:621 24:622 24:623 24:624 24:625 24:626 24:627 24:628 24:629 24:630 24:631 24:632 24:633 24:634 24:635 24:636 24:637 24:638 24:639 24:640 24:641 24:642 24:643 24:644 24:645 24:646 24:647 24:648 24:649 24:650 24:651 24:652 24:653 24:654 24:655 24:656 24:657 24:658 24:659 24:660 24:661 24:662 24:663 24:664 24:665 24:666 24:667 24:668 24:669 24:670 24:671 24:672 24:673 24:674 24:675 24:676 24:677 24:678 24:679 24:680 24:681 24:682 24:683 24:684 24:685 24:686 24:687 24:688 24:689 24:690 24:691 24:692 24:693 24:694 24:695 24:696 24:697 24:698 24:699 24:700 24:701 24:702 24:703 24:704 24:705 24:706 24:707 24:708 24:709 24:710 24:711 24:712 24:713 24:714 24:715 24:716 24:717 24:718 24:719 24:720 24:721 24:722 24:723 24:724 24:725 24:726 24:727 24:728 24:729 24:730 24:731 24:732 24:733 24:734 24:735 24:736 24:737 24:738 24:739 24:740 24:741 24:742 24:743 24:744 24:745 24:746 24:747 24:748 24:749 24:750 24:751 24:752 24:753 24:754 24:755 24:756 24:757 24:758 24:759 24:760 24:761 24:762 24:763 24:764 24:765 24:766 24:767 24:768 24:769 24:770 24:771 24:772 24:773 24:774 24:775 24:776 24:777 24:778 24:779 24:780 24:781 24:782 24:783 24:784 24:785 24:786 24:787 24:788 24:789 24:790 24:791 24:792 24:793 24:794 24:795 24:796 24:797 24:798 24:799 24:800 24:801 24:802 24:803 24:804 24:805 24:806 24:807 24:808 24:809 24:810 24:811 24:812 24:813 24:814 24:815 24:816 24:817 24:818 24:819 24:820 24:821 24:822 24:823 24:824 24:825 24:826 24:827 24:828 24:829 24:830 24:831 24:832 24:833 24:834 24:835 24:836 24:837 24:838 24:839 24:840 24:841 24:842 24:843 24:844 24:845 24:846 24:847 24:848 24:849 24:850 24:851 24:852 24:853 24:854 24:855 24:856 24:857 24:858 24:859 24:860 24:861 24:862 24:863 24:864 24:865 24:866 24:867 24:868 24:869 24:870 24:871 24:872 24:873 24:874 24:875 24:876 24:877 24:878 24:879 24:880 24:881 24:882 24:883 24:884 24:885 24:886 24:887 24:888 24:889 24:890 24:891 24:892 24:893 24:894 24:895 24:896 24:897 24:898 24:899 24:900 24:901 24:902 24:903 24:904 24:905 24:906 24:907 24:908 24:909 24:910 24:911 24:912 24:913 24:914 24:915 24:916 24:917 24:918 24:919 24:920 24:921 24:922 24:923 24:924 24:925 24:926 24:927 24:928 24:929 24:930 24:931 24:932 24:933 24:934 24:935 24:936 24:937 24:938 24:939 24:940 24:941 24:942 24:943 24:944 24:945 24:946 24:947 24:948 24:949 24:950 24:951 24:952 24:953 24:954 24:955 24:956 24:957 24:958 24:959 24:960 24:961 24:962 24:963 24:964 24:965 24:966 24:967 24:968 24:969 24:970 24:971 24:972 24:973 24:974 24:975 24:976 24:977 24:978 24:979 24:980 24:981 24:982 24:983 24:984 24:985 24:986 24:987 24:988 24:989 24:990 24:991 24:992 24:993 24:994 24:995 24:996 24:997 24:998 24:999 25:000

25 “हे मनुष्य के सन्तान, क्या यह सच नहीं, कि जिस दिन मैं उनका दृढ़ गढ़, उनकी शोभा, और हर्ष का कारण, और उनके बेटे-बेटियाँ जो उनकी शोभा, उनकी आँखों का आनन्द, और मन की चाह हैं, उनको मैं उनसे ले लूँगा,

26 उसी दिन जो भागकर बचेगा, वह तेरे पास आकर तुझे समाचार सुनाएगा।

27 उसी दिन तेरा मुँह खुलेगा, और तू फिर चुप न रहेगा परन्तु उस बचे हुए के साथ बातें करेगा। इस प्रकार तू इन लोगों के लिये चिन्ह ठहरेगा; और ये जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

## 25

22 23 24 25 26 27



वस्त्र उतारकर [2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]\*  
और भूमि पर बैठकर क्षण-क्षण में काँपेंगे; और तेरे कारण  
विस्मित रहेंगे।

17 वे तेरे विषय में विलाप का गीत बनाकर तुझ से  
कहेंगे,

‘हाय! मल्लाहों की बसाई हुई हाय!

सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच निवासियों समेत  
सामर्थी रही

और सब टिकनेवालों की डरानेवाली नगरी थी,

तू कैसी नाश हुई है? ([2][2][2][2]. 18:9, [2][2][2][2].

18:10)

18 तेरे गिरने के दिन टापू काँप उठेंगे,

और तेरे जाते रहने के कारण समुद्र से सब टापू घबरा  
जाएँगे।’

19 “क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जब मैं  
तुझे निर्जन नगरों के समान उजाड़ करूँगा और तेरे ऊपर  
महासागर चढ़ाऊँगा, और तू गहरे जल में डूब जाएगा,  
([2][2][2][2]. 18:19)

20 तब गड्ढे में और गिरनेवालों के संग मैं तुझे भी  
प्राचीन लोगों में उतार दूँगा; और गड्ढे में और गिरनेवालों  
के संग तुझे भी नीचे के लोक में रखकर प्राचीनकाल के  
उजड़े हुए स्थानों के समान कर दूँगा; यहाँ तक कि तू  
फिर न बसेगा और न [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2]\* में कोई स्थान  
पाएगा।

21 मैं तुझे घबराने का कारण करूँगा, और तू भविष्य  
में फिर न रहेगा, वरन् दूँढने पर भी तेरा पता न लगेगा,  
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।” ([2][2][2]. 27:36,  
[2][2]. 37:36)

## 27

[2][2][2] [2][2] [2][2][2] [2][2][2][2][2]

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, सौर के विषय एक विलाप का  
गीत बनाकर उससे यह कह,

3 हे समुद्र के प्रवेश-द्वार पर रहनेवाली, हे बहुत  
से द्वीपों के लिये देश-देश के लोगों के साथ व्यापार  
करनेवाली, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे सौर तूने  
कहा है कि मैं सर्वांग सुन्दर हूँ।

4 तेरी सीमा समुद्र के बीच हैं; तेरे बनानेवाले ने तुझे  
सर्वांग सुन्दर बनाया।

5 तेरी सब पटरियाँ सनीर पर्वत के सनोवर की लकड़ी  
की बनी हैं; तेरे मस्तूल के लिये लबानोन के देवदार लिए  
गए हैं।

6 तेरे डाँड़ बाशान के बांजवृक्षों के बने; तेरे जहाजों  
का पटाव कित्तियों के द्वीपों से लाए हुए सीधे सनोवर  
की हाथी दाँत जड़ी हुई लकड़ी का बना।

7 तेरे जहाजों के पाल मिस्र से लाए हुए बूटेदार सन के  
कपड़े के बने कि तेरे लिये झण्डे का काम दें; तेरी चाँदनी  
एलीशा के द्वीपों से लाए हुए नीले और बैंगनी रंग के  
कपड़ों की बनी।

8 तेरे खेनेवाले सीदोन और अर्वद के रहनेवाले थे; हे  
सौर, तेरे ही बीच के बुद्धिमान लोग तेरे माँझी थे।

9 तेरे कारीगर जोड़ाई करनेवाले गबल नगर के  
पुरनिये और बुद्धिमान लोग थे; तुझ में व्यापार करने के  
लिये मल्लाहों समेत समुद्र पर के सब जहाज तुझ में आ  
गए थे। ([2][2][2][2]. 18:19)

10 तेरी सेना में फारसी, लूदी, और पूती लोग भरती  
हुए थे; उन्होंने तुझ में ढाल, और टोपी टाँगी; और उन्हीं  
के कारण तेरा प्रताप बढ़ा था।

11 तेरी शहरपनाह पर तेरी सेना के साथ अर्वद के  
लोग चारों ओर थे, और तेरे गुम्मतों में गम्मद नगर के  
निवासी खड़े थे; उन्होंने अपनी ढालें तेरी चारों ओर की  
शहरपनाह पर टाँगी थी; तेरी सुन्दरता उनके द्वारा पूरी  
हुई थी।

12 “अपनी सब प्रकार की सम्पत्ति की बहुतायत के  
कारण तर्शीशी लोग तेरे व्यापारी थे; उन्होंने चाँदी,  
लोहा, राँगा और सीसा देकर तेरा माल मोल लिया।

13 यावान, तूबल, और मेशोक के लोग तेरे माल के  
बदले दास-दासी और पीतल के पात्र तुझ से व्यापार  
करते थे।

14 तोगर्मा के घराने के लोगों ने तेरी सम्पत्ति लेकर  
घोड़े, सवारी के घोड़े और खच्चर दिए।

15 ददानी तेरे व्यापारी थे; बहुत से द्वीप तेरे हाट बने  
थे; वे तेरे पास हाथी दाँत की सींग और आबनूस की  
लकड़ी व्यापार में लाते थे।

16 तेरी बहुत कारीगरी के कारण अराम तेरा व्यापारी  
था; मरकत, बैंगनी रंग का और बूटेदार वस्त्र, सन, मूगा,  
और लालड़ी देकर वे तेरा माल लेते थे।

17 यहूदा और इस्राएल भी तेरे व्यापारी थे; उन्होंने  
मिन्नीत का गेहूँ, पन्नग, और मधु, तेल, और बलसान  
देकर तेरा माल लिया।

18 तुझ में बहुत कारीगरी हुई और सब प्रकार का धन  
इकट्ठा हुआ, इससे दमिश्क तेरा व्यापारी हुआ; तेरे पास  
हेलबोन का दाखमधु और उजला ऊन पहुँचाया गया।

\* 26:16 [2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2]: विलाप करनेवाले अपने कीमती वस्त्र उतार कर विलाप के वस्त्र धारण करेंगे। † 26:20 [2][2][2]  
[2][2] [2][2]: सच्चे परमेश्वर की भूमि, जो मृत्युलोक से विपरीत है, जहाँ सांसारिक महिमा का अन्त होता है।

19 दान और यावान ने तेरे माल के बदले में सूत दिया; और उनके कारण फौलाद, तज और अगर में भी तेरा व्यापार हुआ।

20 सवारी के चार-जामे के लिये ददान तेरा व्यापारी हुआ।

21 अरब और केदार के सब प्रधान तेरे व्यापारी ठहरे; उन्होंने मेम्ने, मेढे, और बकरे लाकर तेरे साथ लेन-देन किया।

22 [27:22]\* और रामाह के व्यापारी तेरे व्यापारी ठहरे; उन्होंने उत्तम-उत्तम जाति का सब भाँति का मसाला, सर्व भाँति के मणि, और सोना देकर तेरा माल लिया।

23 हारान, कन्ने, एदेन, शेबा के व्यापारी, और अश्शूर और कलमद, ये सब तेरे व्यापारी ठहरे।

24 इन्होंने उत्तम-उत्तम वस्तुएँ अर्थात् ओढने के नीले और बूटेदार वस्त्र और डोरियों से बंधी और देवदार की बनी हुई चित्र विचित्र कपड़ों की पेटियाँ लाकर तेरे साथ लेन-देन किया।

25 तर्शाश के जहाज तेरे व्यापार के माल के ढोनेवाले हुए।

“उनके द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर बहुत धनवान और प्रतापी हो गई थी।

26 तेरे खिवैयों ने तुझे गहरे जल में पहुँचा दिया है, और पुरवाई ने तुझे समुद्र के बीच तोड़ दिया है।

27 जिस दिन तू डूबेगी, उसी दिन तेरा धन-सम्पत्ति, व्यापार का माल, मल्लाह, माँझी, जुड़ाई का काम करनेवाले, व्यापारी लोग, और तुझ में जितने सिपाही हैं, और तेरी सारी भीड़-भाड़ समुद्र के बीच गिर जाएगी।

28 तेरे माँझियों की चिल्लाहट के शब्द के मारे तेरे आस-पास के स्थान काँप उठेंगे।

29 सब खेनेवाले और मल्लाह, और समुद्र में जितने माँझी रहते हैं, वे अपने-अपने जहाज पर से उतरेंगे, ([27:29]. 18:17)

30 और वे भूमि पर खड़े होकर तेरे विषय में ऊँचे शब्द से बिलख-बिलख कर रोएँगे। वे अपने-अपने सिर पर धूलि उड़ाकर राख में लोटेंगे; ([27:30]. 18:19)

31 और तेरे शोक में अपने सिर मुँडवा देंगे, और कमर में टाट बाँधकर अपने मन के कडे दुःख के साथ तेरे विषय में रोएँगे और छाती पीटेंगे।

32 वे विलाप करते हुए तेरे विषय में विलाप का यह गीत बनाकर गाएँगे, ‘सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप पड़ी है, उसके तुल्य कौन नगरी है?’ ([27:32]. 18:15, [27:32]. 18:18)

33 जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता था, तब बहुत सी जातियों के लोग तृप्त होते थे; तेरे धन और

व्यापार के माल की बहुतायत से पृथ्वी के राजा धनी होते थे। ([27:33]. 18:9, [27:33]. 18:15, [27:33]. 18:19)

34 जिस समय तू अथाह जल में लहरों से टूटी, उस समय तेरे व्यापार का माल, और तेरे सब निवासी भी तेरे भीतर रहकर नाश हो गए।

35 समुद्र-तटीय देशों के सब रहनेवाले तेरे कारण विस्मित हुए; और उनके सब राजाओं के रोएँ खड़े हो गए, और उनके मुँह उदास देख पड़े हैं।

36 देश-देश के व्यापारी तेरे विरुद्ध ताना मार रहे हैं; तू भय का कारण हो गई है और फिर स्थिर न रह सकेगी।” ([27:36]. 26:21, [27:36]. 18:16)

## 28

[28:1] [28:2] [28:3] [28:4] [28:5] [28:6] [28:7] [28:8]

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, सोर के प्रधान से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि तूने मन में फूलकर यह कहा है, ‘मैं ईश्वर हूँ, मैं समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूँ,’ परन्तु, यद्यपि तू अपने आपको परमेश्वर सा दिखाता है, तो भी तू ईश्वर नहीं, मनुष्य ही है। ([28:2]. 28:9)

3 तू दानिय्येल से अधिक बुद्धिमान तो है; कोई भेद तुझ से छिपा न होगा;

4 तूने अपनी बुद्धि और समझ के द्वारा धन प्राप्त किया, और अपने भण्डारों में सोना-चाँदी रखा है;

5 तूने बड़ी बुद्धि से लेन-देन किया जिससे तेरा धन बढ़ा, और धन के कारण तेरा मन फूल उठा है।

6 इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है, तू जो अपना मन परमेश्वर सा दिखाता है,

7 इसलिए देख, मैं तुझ पर ऐसे परदेशियों से चढाई कराऊँगा, जो सब जातियों से अधिक क्रूर हैं; वे अपनी तलवारों तेरी बुद्धि की शोभा पर चलाएँगे और तेरी चमक-दमक को बिगाड़ेंगे।

8 वे तुझे कब्र में उतारेंगे, और तू समुद्र के बीच के मारे हुआओं की रीति पर मर जाएगा।

9 तब, क्या तू अपने घात करनेवाले के सामने कहता रहेगा, ‘मैं परमेश्वर हूँ?’ तू अपने घायल करनेवाले के हाथ में ईश्वर नहीं, मनुष्य ही ठहरेगा।

10 तू परदेशियों के हाथ से खतनाहीन लोगों के समान मारा जाएगा; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है।”

\* 27:22 [27:22]: अरब का सबसे अधिक धनवान देश शेबा जो आज यमन कहलाता है।

२२२२ २२ २२२२ २२ २२२

11 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

12 “हे मनुष्य के सन्तान, सौर के राजा के विषय में विलाप का गीत बनाकर उससे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: तू तो उत्तम से भी उत्तम है; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है।

13 तू परमेश्वर की अदन नामक बारी में था; तेरे पास आभूषण, माणिक्य, पुखराज, हीरा, फीरोजा, सुलैमानी मणि, यशब, नीलमणि, मरकत, और लाल २२ २२२२२२ २२ २२२२\* और सोने के पहरावे थे; तेरे डफ और बाँसुलियाँ तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन तू सिरजा गया था; उस दिन वे भी तैयार की गई थीं। (२२२२२२: 2:7)

14 तू सुरक्षा करनेवाला अभिषिक्त करूब था, मैंने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था; तू २२ २२२२२२ २२२२२२२२२२ २२२२२२२ के बीच चलता फिरता था।

15 जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चाल चलन में निर्दोष रहा।

16 परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया; इसी से मैंने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे सुरक्षा करनेवाले करूब मैंने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच से नाश किया है।

17 सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी। मैंने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के सामने तुझे रखा कि वे तुझको देखें।

18 तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गए; इसलिए मैंने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिससे तू भस्म हुआ, और मैंने तुझे सब देखनेवालों के सामने भूमि पर भस्म कर डाला है।

19 देश-देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा।”

२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२२

20 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

21 “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख सीदोन की ओर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर,

22 और कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: हे सीदोन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; मैं तेरे बीच अपनी महिमा कराऊँगा। जब मैं उसके बीच दण्ड दूँगा और उसमें अपने को पवित्र ठहराऊँगा, तब लोग जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

23 मैं उसमें मरी फैलाऊँगा, और उसकी सड़कों में लहू बहाऊँगा; और उसके चारों ओर तलवार चलेगी; तब उसके बीच घायल लोग गिरेंगे, और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

२२२२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२२२

24 “इस्राएल के घराने के चारों ओर की जितनी जातियाँ उनके साथ अभिमान का बर्ताव करती हैं, उनमें से कोई उनका चुभनेवाला काँटा या बेधनेवाला शूल फिर न ठहरेगी; तब वे जान लेंगी कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।

25 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जब मैं इस्राएल के घराने को उन सब लोगों में से इकट्ठा करूँगा, जिनके बीच वे तितर-बितर हुए हैं, और देश-देश के लोगों के सामने उनके द्वारा पवित्र ठहरूँगा, तब वे उस देश में वास करेंगे जो मैंने अपने दास याकूब को दिया था।

26 वे उसमें निडर बसे रहेंगे; वे घर बनाकर और दाख की बारियाँ लगाकर निडर रहेंगे; तब मैं उनके चारों ओर के सब लोगों को दण्ड दूँगा जो उनसे अभिमान का बर्ताव करते हैं, तब वे जान लेंगे कि उनका परमेश्वर यहोवा ही है।”

## 29

२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२२

1 २२२२२२ २२२२२\* के दसवें महीने के बारहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

2 “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख मिस्र के राजा फ़िरौन की ओर करके उसके और सारे मिस्र के विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर;

3 यह कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे मिस्र के राजा फ़िरौन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, हे बड़े नगर, तू जो अपनी नदियों के बीच पड़ा रहता है, जिसने कहा है, ‘मेरी नदी मेरी निज की है, और मैं ही ने उसको अपने लिये बनाया है।’

4 मैं तेरे जबड़ों में नकेल डालूँगा, और तेरी नदियों की मछलियों को तेरी खाल में चिपटाऊँगा, और तेरी

\* 28:13 २२ २२२२२ २२ २२२: यहाँ जितने भी मणियों का नाम है, सब प्रधान पुरोहित के वस्त्र में लगे हुए थे। † 28:14 २२ २२२२२

२२२२२२२२२ २२२२२२: उज्ज्वल और चमकता। उज्ज्वल गहने से सजाए गए, राजकुमार खूबसूरत महिमा में गहनों के बीच चला। \* 29:1

२२२२२ २२२२२: यरूशलेम इस समय घेराव में था, उसका पतन नहीं हुआ था। यिर्मयाह ने मिस्र के लिए भविष्यद्वाणी की थी।







शाखाएँ लम्बी हो गई, क्योंकि जब वे निकलीं, तब उनको बहुत जल मिला।

6 उसकी टहनियों में आकाश के सब प्रकार के पक्षी बसेरा करते थे, और उसकी शाखाओं के नीचे मैदान के सब भाँति के जीवजन्तु जन्म लेते थे; और उसकी छाया में सब बड़ी जातियाँ रहती थीं। (27:27-28) 4:12)

7 वह अपनी बड़ाई और अपनी डालियों की लम्बाई के कारण सुन्दर हुआ; क्योंकि उसकी जड़ बहुत जल के निकट थी।

8 परमेश्वर की बारी के देवदार भी उसको न छिपा सकते थे, सनोवर उसकी टहनियों के समान भी न थे, और न अर्मोन वृक्ष उसकी शाखाओं के तुल्य थे; परमेश्वर की बारी का भी कोई वृक्ष सुन्दरता में उसके बराबर न था।

9 मैंने उसे डालियों की बहुतायत से सुन्दर बनाया था, यहाँ तक कि अदन के सब वृक्ष जो परमेश्वर की बारी में थे, उससे डाह करते थे।

10 “इस कारण परमेश्वर यहोवा ने यह कहा है, उसकी ऊँचाई जो बढ़ गई, और उसकी फुनगी जो बादलों तक पहुँची है, और अपनी ऊँचाई के कारण उसका मन जो फूल उठा है,

11 इसलिए जातियों में जो सामर्थी है, मैं उसी के हाथ उसको कर दूँगा, और वह निश्चय उससे बुरा व्यवहार करेगा। उसकी दुष्टता के कारण मैंने उसको निकाल दिया है।

12 परदेशी, जो जातियों में भयानक लोग हैं, वे उसको काटकर छोड़ देंगे, उसकी डालियाँ पहाड़ों पर, और सब तराइयों में गिराई जाएँगी, और उसकी शाखाएँ देश के सब नालों में टूटी पड़ी रहेंगी, और जाति-जाति के सब लोग उसकी छाया को छोड़कर चले जाएँगे।

13 उस गिरे हुए वृक्ष पर आकाश के सब पक्षी बसेरा करते हैं, और उसकी शाखाओं के ऊपर मैदान के सब जीवजन्तु चढ़ने पाते हैं।

14 यह इसलिए हुआ है कि जल के पास के सब वृक्षों में से कोई अपनी ऊँचाई न बढ़ाए, न अपनी फुनगी को बादलों तक पहुँचाए, और उनमें से जितने जल पाकर दृढ़ हो गए हैं वे ऊँचे होने के कारण सिर न उठाए; क्योंकि वे भी सब के सब कब्र में गड़े हुए मनुष्यों के समान मृत्यु के वश करके अधोलोक में डाल दिए जाएँगे।

15 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया, उस दिन मैंने विलाप कराया और 27:27 27:27 27:27 27:27\*, और नदियों

का बहुत जल रुक गया; और उसके कारण मैंने लबानोन पर उदासी छा दी, और मैदान के सब वृक्ष मूर्च्छित हुए।

16 जब मैंने उसको कब्र में गड़े हुआओं के पास अधोलोक में फेंक दिया, तब उसके गिरने के शब्द से जाति-जाति थरथरा गई, और अदन के सब वृक्ष अर्थात् लबानोन के उत्तम-उत्तम वृक्षों ने, जितने उससे जल पाते हैं, उन सभी ने अधोलोक में शान्ति पाई।

17 वे भी उसके संग तलवार से मारे हुआओं के पास अधोलोक में उतर गए; अर्थात् वे जो उसकी भुजा थे, और जाति-जाति के बीच उसकी छाया में रहते थे।

18 “इसलिए महिमा और बड़ाई के विषय में अदन के वृक्षों में से तू किसके समान है? तू तो अदन के और वृक्षों के साथ अधोलोक में उतारा जाएगा, और खतनारहित लोगों के बीच तलवार से मारे हुआओं के संग पड़ा रहेगा। फिरौन अपनी सारी भीड़-भाड़ समेत ऐसे ही होगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

## 32

27:27 27:27 27:27 27:27

1 बारहवें वर्ष के बारहवें महीने के पहले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन के विषय विलाप का गीत बनाकर उसको सुना: जाति-जाति में तेरी उपमा जवान सिंह से दी गई थी, परन्तु तू समुद्र के मगर के समान है; तू अपनी नदियों में टूट पड़ा, और उनके जल को पाँवों से मथकर गंदला कर दिया।

3 परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैं बहुत सी जातियों की सभा के द्वारा तुझ पर अपना जाल फैलाऊँगा, और वे तुझे मेरे महाजाल में खींच लेंगे।

4 तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूँगा, और मैदान में फेंककर आकाश के सब पक्षियों को तुझ पर बैठाऊँगा; और तेरे माँस से सारी पृथ्वी के जीवजन्तुओं को तृप्त करूँगा।

5 मैं तेरे माँस को पहाड़ों पर रखूँगा, और तराइयों को तेरी ऊँचाई से भर दूँगा।

6 जिस देश में तू तैरता है, उसको पहाड़ों तक मैं तेरे लहू से सींचूँगा; और उसके नाले तुझ से भर जाएँगे।

7 जिस समय मैं तुझे मिटाने लगूँ, उस समय मैं आकाश को ढाँपूँगा और तारों को धुन्धला कर दूँगा; मैं सूर्य को बादल से छिपाऊँगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। (27:27 24:29, 27:27) 2:31)

8 आकाश में जितनी प्रकाशमान ज्योतियाँ हैं, उन सब को मैं तेरे कारण धुन्धला कर दूँगा, और तेरे देश

\* 31:15 27:27 27:27 27:27 27:27: अशूर देश की समृद्धि का स्रोत गहरा समुद्र था, वह विलाप के लिए विवश हुआ, जल देने की हर्षित समृद्धि देने की अपेक्षा सूख गया।

में अंधकार कर दूँगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

9 “~~जाति-जाति~~” जाति-जाति में और तेरे अनजाने देशों में फैलाऊँगा, तब बड़े-बड़े देशों के लोगों के मन में रिस उपजाऊँगा।

10 मैं बहुत सी जातियों को तेरे कारण विस्मित कर दूँगा, और जब मैं उनके राजाओं के सामने अपनी तलवार भेजूँगा, तब तेरे कारण उनके रोएँ खड़े हो जाएँगे, और तेरे गिरने के दिन वे अपने-अपने प्राण के लिये काँपते रहेंगे।

11 क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है: बाबेल के राजा की तलवार तुझ पर चलेगी।

12 मैं तेरी भीड़ को ऐसे शूरवीरों की तलवारों के द्वारा गिराऊँगा जो सब जातियों में भयानक हैं।

“वे मिस्र के घमण्ड को तोड़ेंगे, और उसकी सारी भीड़ का सत्यानाश होगा।

13 मैं उसके सब पशुओं को उसके बहुत से जलाशयों के तट पर से नाश करूँगा; और भविष्य में वे न तो मनुष्य के पाँव से और न पशुओं के खुरों से गंदले किए जाएँगे।

14 तब मैं उनका जल निर्मल कर दूँगा, और उनकी नदियाँ तेल के समान बहेंगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

15 जब मैं मिस्र देश को उजाड़ दूँगा और जिससे वह भरपूर है, उसको छूछा कर दूँगा, और जब मैं उसके सब रहनेवालों को मारूँगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

16 “लोगों के विलाप करने के लिये विलाप का गीत यही है; जाति-जाति की स्त्रियाँ इसे गाएँगी; मिस्र और उसकी सारी भीड़ के विषय वे यही विलापगीत गाएँगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

~~फिर बारहवें वर्ष के पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:~~

17 फिर बारहवें वर्ष के पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

18 “हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र की भीड़ के लिये हाय-हाय कर, और उसको प्रतापी जातियों की बेटियों समेत कब्र में गड़े हुआँ के पास अधोलोक में उतार।

19 तू किस से मनोहर है? तू उतरकर खतनाहीनों के संग पड़ा रह।

20 “वे तलवार से मरे हुआँ के बीच गिरेंगे, उनके लिये ~~इसलिए मिस्र को उसकी सारी भीड़ समेत घसीट ले जाओ।~~”

\* 32:9 ~~इसलिए मिस्र को उसकी सारी भीड़ समेत घसीट ले जाओ।~~ जिन घटनाओं का यहाँ उल्लेख किया गया है वे प्रभु के दिन या न्याय के दिन से सुसंगत हैं। फ़िरौन के पतन का अर्थ है परमेश्वर की प्रभुता के समक्ष विश्व-शक्ति का पतन जैसे किसी के मृत्युदण्ड के लिए खींचा जाता है।

21 सामर्थी शूरवीर उससे और उसके सहायकों से अधोलोक में बातें करेंगे; वे खतनाहीन लोग वहाँ तलवार से मरे पड़े हैं।

22 “अपनी सारी सभा समेत अशूर भी वहाँ है, उसकी कब्रें उसके चारों ओर हैं; सब के सब तलवार से मारे गए हैं।

23 उसकी कब्रें गड्ढे के कोनों में बनी हुई हैं, और उसकी कब्र के चारों ओर उसकी सभा है; वे सब के सब जो जीवनलोक में भय उपजाते थे, अब तलवार से मरे पड़े हैं।

24 “वहाँ एलाम है, और उसकी कब्र की चारों ओर उसकी सारी भीड़ है; वे सब के सब तलवार से मारे गए हैं, वे खतनारहित अधोलोक में उतर गए हैं; वे जीवनलोक में भय उपजाते थे, परन्तु अब कब्र में और गड़े हुआँ के संग उनके मुँह पर भी उदासी छाई हुई है।

25 उसकी सारी भीड़ समेत उसे मारे हुआँ के बीच सेज मिली, उसकी कब्रें उसी के चारों ओर हैं, वे सब के सब खतनारहित तलवार से मारे गए; उन्होंने जीवनलोक में भय उपजाया था, परन्तु अब कब्र में और गड़े हुआँ के संग उनके मुँह पर उदासी छाई हुई है; और वे मरे हुआँ के बीच रखे गए हैं।

26 “वहाँ सारी भीड़ समेत मेशेक और तूबल हैं, उनके चारों ओर कब्रें हैं; वे सब के सब खतनारहित तलवार से मारे गए, क्योंकि जीवनलोक में वे भय उपजाते थे।

27 उन गिरे हुए खतनारहित शूरवीरों के संग वे पड़े न रहेंगे जो अपने-अपने युद्ध के हथियार लिए हुए अधोलोक में उतर गए हैं, वहाँ उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रखी हुई हैं, और उनके अधर्म के काम उनकी हड्डियों में व्याप्त हैं; क्योंकि जीवनलोक में उनसे शूरवीरों को भी भय उपजता था।

28 इसलिए तू भी खतनाहीनों के संग अंग-भंग होकर तलवार से मरे हुआँ के संग पड़ा रहेगा।

29 “वहाँ एदोम और उसके राजा और उसके सारे प्रधान हैं, जो पराक्रमी होने पर भी तलवार से मरे हुआँ के संग रखे हैं; गड्ढे में गड़े हुए खतनारहित लोगों के संग वे भी पड़े रहेंगे।

30 “वहाँ उत्तर दिशा के सारे प्रधान और सारे सीदोनी भी हैं जो मरे हुआँ के संग उतर गए; उन्होंने अपने पराक्रम से भय उपजाया था, परन्तु अब वे लज्जित हुए और तलवार से और मरे हुआँ के साथ वे भी खतनारहित

पडे हुए हैं, और कब्र में अन्य गडे हुओं के संग उनके मुँह पर भी उदासी छाई हुई है।

31 “इन्हें देखकर फिरौन भी अपनी सारी भीड़ के विषय में [22222222 22222222], हाँ फिरौन और उसकी सारी सेना जो तलवार से मारी गई है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

32 क्योंकि मैंने उसके कारण जीवनलोक में भय उपजाया था; इसलिए वह सारी भीड़ समेत तलवार से और मरे हुओं के सहित खतनारहित के बीच लिटाया जाएगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

### 33

[222222 22 222222 22222222]

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से कह, जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूँ, और उस देश के लोग किसी को अपना पहरुआ करके ठहराएँ,

3 तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार चलने वाली है, नरसिंगा फूँककर लोगों को चिता दे,

4 तो जो कोई नरसिंगे का शब्द सुनने पर न चेतें और तलवार के चलने से मर जाए, उसका खून उसी के सिर पड़ेगा।

5 उसने नरसिंगे का शब्द सुना, परन्तु न चेतता; इसलिए उसका खून उसी को लगेगा। परन्तु, यदि वह चेत जाता, तो अपना प्राण बचा लेता। (22222222 27:25)

6 परन्तु यदि पहरुआ यह देखने पर कि तलवार चलने वाली है नरसिंगा फूँककर लोगों को न चिताए, और तलवार के चलने से उनमें से कोई मर जाए, तो वह तो अपने अधर्म में फँसा हुआ मर जाएगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं पहरुए ही से लूँगा।

7 “इसलिए, हे मनुष्य के सन्तान, मैंने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा दिया है; तू मेरे मुँह से वचन सुन-सुनकर उन्हें मेरी ओर से चिता दे।

8 यदि मैं दुष्ट से कहूँ, ‘हे दुष्ट, तू निश्चय मरेगा,’ तब यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय न चिताए, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फँसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूँगा।

9 परन्तु यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय चिताए कि वह अपने मार्ग से फिरे और वह अपने मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फँसा हुआ मरेगा, परन्तु तू अपना प्राण बचा लेगा।

[2222222222 222222 22 22222 22222 22222 22222222]

10 “फिर हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने से यह कह, तुम लोग कहते हो: ‘हमारे अपराधों और पापों का भार हमारे ऊपर लदा हुआ है और हम उसके कारण नाश हुए जाते हैं; हम कैसे जीवित रहें?’

11 इसलिए तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने-अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो?

12 हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से यह कह, जब धर्मी जन अपराध करे तब उसकी धार्मिकता उसे बचा न सकेगी; और दुष्ट की दुष्टता भी जो हो, जब वह उससे फिर जाए, तो उसके कारण वह न गिरेगा; और धर्मी जन जब वह पाप करे, तब अपनी धार्मिकता के कारण जीवित न रहेगा।

13 यदि मैं धर्मी से कहूँ कि तू निश्चय जीवित रहेगा, और वह अपने धार्मिकता पर भरोसा करके कुटिल काम करने लगे, तब उसके धार्मिकता के कामों में से किसी का स्मरण न किया जाएगा; जो कुटिल काम उसने किए हों वह उन्हीं में फँसा हुआ मरेगा।

14 फिर जब मैं दुष्ट से कहूँ, तू निश्चय मरेगा, और वह अपने पाप से फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे,

15 अर्थात् यदि दुष्ट जन बन्धक लौटा दे, अपनी लूटी हुई वस्तुएँ भर दे, और बिना कुटिल काम किए जीवनदायक विधियों पर चलने लगे, तो वह न मरेगा; वह निश्चय जीवित रहेगा।

16 जितने पाप उसने किए हों, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा; उसने न्याय और धर्म के काम किए और वह निश्चय जीवित रहेगा।

17 “तो भी तुम्हारे लोग कहते हैं, प्रभु की चाल ठीक नहीं; परन्तु उन्हीं की चाल ठीक नहीं है।

18 जब धर्मी अपने धार्मिकता से फिरकर कुटिल काम करने लगे, तब निश्चय वह उनमें फँसा हुआ मर जाएगा।

19 जब दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, तब वह उनके कारण जीवित रहेगा।

20 तो भी तुम कहते हो कि प्रभु की चाल ठीक नहीं? हे इस्राएल के घराने, मैं हर एक व्यक्ति का न्याय उसकी चाल ही के अनुसार करूँगा।”

[2222222222 22 22222]

21 फिर हमारी बाँधुआई के ग्यारहवें वर्ष के दसवें महीने के पाँचवें दिन को, एक व्यक्ति जो यरूशलेम से भागकर बच गया था, वह मेरे पास आकर कहने लगा, “नगर ले लिया गया।”

22 उस भागे हुए के आने से पहले साँझ को यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई थी; और भोर तक अर्थात् उस मनुष्य के आने तक उसने मेरा मुँह खोल दिया; अतः मेरा मुँह खुला ही रहा, और मैं फिर गूँगा न रहा।

22222 22 222

23 तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

24 “हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल की भूमि के उन खण्डहरों के रहनेवाले यह कहते हैं, 22222222 22 22 2222222 22\*†, तो भी देश का अधिकारी हुआ; परन्तु हम लोग बहुत से हैं, इसलिए देश निश्चय हमारे ही अधिकार में दिया गया है।

25 इस कारण तू उनसे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, 222 222 22 2222 222 2222 2222† और अपनी मूरतों की ओर दृष्टि करते, और हत्या करते हो; फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे?

26 तुम अपनी-अपनी तलवार पर भरोसा करते और धिनौने काम करते, और अपने-अपने पड़ोसी की स्त्री को अशुद्ध करते हो; फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे?

27 तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मेरे जीवन की सौगन्ध, निःसन्देह जो लोग खण्डहरों में रहते हैं, वे तलवार से गिरेंगे, और जो खुले मैदान में रहता है, उसे मैं जीवजन्तुओं का आहार कर दूँगा, और जो गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं, वे मरी से मरेंगे। (22222. 42:22)

28 मैं उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा; और उसके बल का घमण्ड जाता रहेगा; और इस्राएल के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि उन पर होकर कोई न चलेगा।

29 इसलिए जब मैं उन लोगों के किए हुए सब धिनौने कामों के कारण उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

222 22222 22 22 22 2222 2222

30 “हे मनुष्य के सन्तान, तेरे लोग दीवारों के पास और घरों के द्वारों में तेरे विषय में बातें करते और एक दूसरे से कहते हैं, ‘आओ, सुनो, यहोवा की ओर से कौन सा वचन निकलता है।’

\* 33:24 2222222 22 22 222222 22: अब्राहम एक ही मनुष्य था जिससे उस देश की प्रतिज्ञा की गई थी परन्तु उसने तुरन्त ही उस पर अधिकार प्राप्त नहीं किया। अतः हम अब्राहम के वंशज जो असंख्य हैं इस प्रतिज्ञा के आधार पर अब्राहम की प्रतिज्ञा के कहीं अधिक वारिस होंगे यद्यपि कुछ समय के लिए हम निराश हैं और अधीनता में हैं। † 33:25 222 222 22 2222 222 2222 2222: लहू के साथ माँस खाना उनके लिए वर्जित था। यह कनान की मूर्तिपूजा से जुड़ा प्रतीत होता है।

31 वे प्रजा के समान तेरे पास आते और मेरी प्रजा बनकर तेरे सामने बैठकर तेरे वचन सुनते हैं, परन्तु वे उन पर चलते नहीं; मुँह से तो वे बहुत प्रेम दिखाते हैं, परन्तु उनका मन लालच ही में लगा रहता है।

32 तू उनकी दृष्टि में प्रेम के मधुर गीत गानेवाले और अच्छे बजानेवाले का सा ठहरा है, क्योंकि वे तेरे वचन सुनते तो है, परन्तु उन पर चलते नहीं।

33 इसलिए जब यह बात घटेगी, और वह निश्चय घटेगी! तब वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता आया था।”

## 34

22222222 2222222

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के चरवाहों के विरुद्ध भविष्यद्वानी करके उन चरवाहों से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हाय इस्राएल के चरवाहों पर जो अपने-अपने पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को भेड़-बकरियों का पेट न भरना चाहिए?

3 तुम लोग चर्बी खाते, ऊन पहनते और मोटे-मोटे पशुओं को काटते हो; परन्तु भेड़-बकरियों को तुम नहीं चराते। (22. 11:16)

4 तुम ने बीमारों को बलवान न किया, न रोगियों को चंगा किया, न घायलों के घावों को बाँधा, न निकाली हुई को लौटा लाए, न खोई हुई को खोजा, परन्तु तुम ने बल और जबरदस्ती से अधिकार चलाया है।

5 वे चरवाहे के न होने के कारण तितर-बितर हुई; और सब वन-पशुओं का आहार हो गई।

6 मेरी भेड़-बकरियाँ तितर-बितर हुई हैं; वे सारे पहाड़ों और ऊँचे-ऊँचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़-बकरियाँ सारी पृथ्वी के ऊपर तितर-बितर हुई; और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उनको ढूँढ़ता था। (2222. 34:8)

7 “इस कारण, हे चरवाहों, यहोवा का वचन सुनो:

8 परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मेरी भेड़-बकरियाँ जो लुट गई, और मेरी भेड़-बकरियाँ जो चरवाहे के न होने के कारण सब वन-पशुओं का आहार हो गई; और इसलिए कि मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़-बकरियों का पेट नहीं, अपना ही अपना पेट भरा;

9 इस कारण हे चरवाहों, यहोवा का वचन सुनो,



११११ ११ ११११११११ ११ ११११

1 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुँह सेईर पहाड़ की ओर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर,

3 और उससे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे सेईर पहाड़, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; और अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर तुझे उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा।

4 मैं तेरे नगरों को खण्डहर कर दूँगा, और तू उजाड़ हो जाएगा; तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।

5 क्योंकि तू इस्राएलियों से युग-युग की शत्रुता रखता था, और उनकी विपत्ति के समय जब १११११ १११११११ ११ १११११ ११ ११११ ११११११११\*, तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया।

6 इसलिए परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं तुझे हत्या किए जाने के लिये तैयार करूँगा और खून तेरा पीछा करेगा; तू तो खून से न घिनाता था, इस कारण खून तेरा पीछा करेगा।

7 इस रीति मैं सेईर पहाड़ को उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा, और जो उसमें आता-जाता हो, मैं उसको नाश करूँगा।

8 मैं उसके पहाड़ों को मारे हुआँ से भर दूँगा; तेरे टीलों, तराइयों और सब नालों में तलवार से मारे हुए गिरेंगे!

9 मैं तुझे युग-युग के लिये उजाड़ कर दूँगा, और तेरे नगर फिर न बसेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।

10 “क्योंकि तूने कहा है, ‘११ ११११११ ११११११११† और ये दोनों देश मेरे होंगे; और हम ही उनके स्वामी हो जाएँगे,’ यद्यपि यहोवा वहाँ था।

11 इस कारण, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरे कोप के अनुसार, और जो जलजलाहट तूने उन पर अपने बैर के कारण की है, उसी के अनुसार मैं तुझ से बर्ताव करूँगा, और जब मैं तेरा न्याय करूँ, तब तुम में अपने को प्रगट करूँगा।

12 तू जानेगा, कि मुझ यहोवा ने तेरी सब तिरस्कार की बातें सुनी हैं, जो तूने इस्राएल के पहाड़ों के विषय में कहीं, ‘वे तो उजाड़ गए, वे हम ही को दिए गए हैं कि हम उन्हें खा डालें।’

13 तुम ने अपने मुँह से मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी, और मेरे विरुद्ध बहुत बातें कही हैं; इसे मैंने सुना है।

14 परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जब पृथ्वी भर में आनन्द होगा, तब मैं तुझे उजाड़ दूँगा

15 तू इस्राएल के घराने के निज भाग के उजड़ जाने के कारण आनन्दित हुआ, इसलिए मैं भी तुझ से वैसा ही करूँगा; हे सेईर पहाड़, हे एदोम के सारे देश, तू उजाड़ हो जाएगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

## 36

११११११११ ११ १११११११११ ११ १११११

1 “फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के पहाड़ों से भविष्यद्वाणी करके कह, हे इस्राएल के पहाड़ों, यहोवा का वचन सुनो।

2 परमेश्वर यहोवा यह कहता है: शत्रु ने तो तुम्हारे विषय में कहा है, ‘आहा! प्राचीनकाल के ऊँचे स्थान अब हमारे अधिकार में आ गए।’

3 इस कारण भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: लोगों ने जो तुम्हें उजाड़ा और चारों ओर से तुम्हें ऐसा निगल लिया कि तुम ११११ ११११ ११११११११\* का अधिकार हो जाओ, और बकवादी तुम्हारी चर्चा करते और साधारण लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं;

4 इस कारण, हे इस्राएल के पहाड़ों, परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा तुम से यह कहता है, अर्थात् पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों से, और उजड़े हुए खण्डहरों और निर्जन नगरों से जो चारों ओर की बची हुई जातियों से लुट गए और उनके हँसने के कारण हो गए हैं;

5 परमेश्वर यहोवा यह कहता है, निश्चय मैंने अपनी जलन की आग में बची हुई जातियों के और सारे एदोम के विरुद्ध में कहा है कि जिन्होंने मेरे देश को अपने मन के पूरे आनन्द और अभिमान से अपने अधिकार में किया है कि वह पराया होकर लूटा जाए।

6 इस कारण इस्राएल के देश के विषय में भविष्यद्वाणी करके पहाड़ों, पहाड़ियों, नालों, और तराइयों से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देखो, ११११ ११ ११११११११ ११ १११११११ ११११ ११†, इस कारण मैं अपनी बड़ी जलजलाहट से बोला हूँ।

7 परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैंने यह शपथ खाई है कि निःसन्देह तुम्हारे चारों ओर जो जातियाँ हैं, उनको अपनी निन्दा आप ही सहनी पड़ेगी।

\* 35:5 ११११ १११११ ११ ११११ ११ ११११ ११११११११: अर्थात् उस समय जब शहर के कब्जे से इस्राएल का अधर्म खत्म हो गया (यहे.21:29)

† 35:10 ११ १११११ १११११११११: इस्राएल और यहूदिया \* 36:3 १११ १११ ११११११११११: आस-पास की जातियाँ जो यरूशलेम के पतन के बाद रह गई थी और उन्होंने उससे लाभ उठाया होगा। † 36:6 १११ ११ ११११११११ ११ १११११११ ११११ ११: अन्यजातियों ने उनकी निन्दा की थी।



31 तब तुम अपने बुरे चाल चलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे, स्मरण करके अपने अधर्म और घिनौने कामों के कारण अपने आप से घृणा करोगे।

32 परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, तुम जान लो कि मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं करता। हे इस्राएल के घराने अपने चाल चलन के विषय में लज्जित हो और तुम्हारा मुख काला हो जाए।

33 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जब मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म के कामों से शुद्ध करूँगा, तब तुम्हारे नगरों को बसाऊँगा; और तुम्हारे खण्डहर फिर बनाए जाएँगे।

34 तुम्हारा देश जो सब आने जानेवालों के सामने उजाड़ है, वह उजाड़ होने के बदले जोता बोया जाएगा।

35 और लोग कहा करेंगे, ‘यह देश जो उजाड़ था, वह अदन की बारी-सा हो गया, और जो नगर खण्डहर और उजाड़ हो गए और ढाए गए थे, वे गढ़वाले हुए, और बसाए गए हैं।’

36 तब जो जातियाँ तुम्हारे आस-पास बची रहेंगी, वे जान लेंगी कि मुझ यहोवा ने ढाए हुए को फिर बनाया, और उजाड़ में पेड़ रोपे हैं, मुझ यहोवा ने यह कहा, और ऐसा ही करूँगा।

37 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, इस्राएल के घराने में फिर मुझसे विनती की जाएगी कि मैं उनके लिये यह करूँ; अर्थात् मैं उनमें मनुष्यों की गिनती भेड़-बकरियों के समान बढ़ाऊँ।

38 जैसे पवित्र समयों की भेड़-बकरियाँ, अर्थात् नियत पर्वों के समय यरूशलेम में की भेड़-बकरियाँ अनगिनत होती हैं वैसे ही जो नगर अब खण्डहर हैं वे अनगिनत मनुष्यों के झुण्डों से भर जाएँगे। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

## 37

यहजेकेल 37:1-28

1 यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और वह मुझ में अपना आत्मा समवाकर बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया; वह तराई हड्डियों से भरी हुई थी।

2 तब उसने मुझे उनके चारों ओर घुमाया, और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियाँ थीं; और वे बहुत सूखी थीं।

3 तब उसने मुझसे पूछा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियाँ जी सकती हैं?” मैंने कहा, “हे परमेश्वर यहोवा, तू ही जानता है।”

4 तब उसने मुझसे कहा, “इन हड्डियों से ~~यहजेकेल 37:1-28~~\* करके कह, हे सूखी हड्डियों, यहोवा का वचन सुनो।

5 परमेश्वर यहोवा तुम हड्डियों से यह कहता है: देखो, मैं आप तुम में साँस समवाऊँगा, और तुम जी उठोगी।

6 मैं तुम्हारी नसें उपजाकर माँस चढाऊँगा, और तुम को चमड़े से ढाँपूँगा; और तुम में साँस समवाऊँगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ।”

7 इस आज्ञा के अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा; और मैं भविष्यद्वाणी कर ही रहा था, कि एक आहत आई, और भूकम्प हुआ, और वे हड्डियाँ इकट्ठी होकर हड्डी से हड्डी जुड़ गई।

8 मैं देखता रहा, कि उनमें नसें उत्पन्न हुई और माँस चढा, और वे ऊपर चमड़े से ढँप गई; परन्तु उनमें साँस कुछ न थी।

9 तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान साँस से भविष्यद्वाणी कर, और साँस से भविष्यद्वाणी करके कह, हे साँस, परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि चारों दिशाओं से आकर इन ~~यहजेकेल 37:1-28~~† कि ये जी उठें।”

10 उसकी इस आज्ञा के अनुसार मैंने भविष्यद्वाणी की, तब साँस उनमें आ गई, और वे जीकर अपने-अपने पाँवों के बल खड़े हो गए; और एक बहुत बड़ी सेना हो गई।

11 फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, ये हड्डियाँ इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गई, और हमारी आशा जाती रही; हम पूरी रीति से कट चूके हैं।

12 इस कारण भविष्यद्वाणी करके उनसे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे मेरी प्रजा के लोगों, देखो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलकर तुम को उनसे निकालूँगा, और इस्राएल के देश में पहुँचा दूँगा। (यहजेकेल 37:19)

13 इसलिए जब मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँ, और तुम को उनसे निकालूँ, तब हे मेरी प्रजा के लोगों, तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

14 मैं तुम में अपना आत्मा समवाऊँगा, और तुम जीओगे, और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊँगा; तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा, और किया भी है, यहोवा की यही वाणी है।” (यहजेकेल 37:27)

यहजेकेल 37:28-36

15 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

\* 37:4 यहजेकेल 37:1-28: भविष्य के विषय बताना नहीं परन्तु मात्र परमेश्वर की प्रेरणा से कहना। † 37:9 यहजेकेल 37:1-28: वे हड्डियाँ घात हुआँ की हड्डियाँ थी। ऐसा दृश्य कसदियों के आक्रमण के समय होगा।



16 “हे मनुष्य के सन्तान, एक लकड़ी लेकर उस पर लिख, ‘यहूदा की और उसके संगी इस्राएलियों की;’ तब दूसरी लकड़ी लेकर उस पर लिख, ‘यूसुफ की अर्थात् एप्रैम की, और उसके संगी इस्राएलियों की लकड़ी।’

17 फिर उन लकड़ियों को एक दूसरी से जोड़कर एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ में एक ही लकड़ी बन जाएँ।

18 जब तेरे लोग तुझ से पूछें, ‘क्या तू हमें न बताएगा कि इनसे तेरा क्या अभिप्राय है?’

19 तब उनसे कहना, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देखो, मैं यूसुफ की लकड़ी को जो एप्रैम के हाथ में है, और इस्राएल के जो गोत्र उसके संगी हैं, उनको लेकर यहूदा की लकड़ी से जोड़कर उसके साथ एक ही लकड़ी कर दूँगा; और दोनों मेरे हाथ में एक ही लकड़ी बनेंगी।

20 जिन लकड़ियों पर तू ऐसा लिखेगा, वे उनके सामने तेरे हाथ में रहें।

21 तब तू उन लोगों से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देखो, मैं इस्राएलियों को उन जातियों में से लेकर जिनमें वे चले गए हैं, चारों ओर से इकट्ठा करूँगा; और उनके निज देश में पहुँचाऊँगा।

22 मैं उनको उस देश अर्थात् इस्राएल के पहाड़ों पर एक ही जाति कर दूँगा; और उन सभी का **22 22 22 22 22 22 22 22**; और वे फिर दो न रहेंगे और न दो राज्यों में कभी बंटेंगे।

23 वे फिर अपनी मूरतों, और घिनौने कामों या अपने किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपने को अशुद्ध न करेंगे; परन्तु मैं उनको उन सब बस्तियों से, जहाँ वे पाप करते थे, निकालकर शुद्ध करूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। **(22 22 36:25)**

24 “मेरा दास दाऊद उनका राजा होगा; और उन सभी का एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों को मानकर उनके अनुसार चलेंगे। **(22 22 34:23)**

25 वे उस देश में रहेंगे जिसे मैंने अपने दास याकूब को दिया था; और जिसमें तुम्हारे पुरखा रहते थे, उसी में वे और उनके बेटे-पोते सदा बसे रहेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा उनका प्रधान रहेगा।

26 मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बाँधूँगा; वह सदा की वाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊँगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाए रखूँगा। **(22 22 89:3,4)**

27 मेरे निवास का तम्बू उनके ऊपर तना रहेगा; और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे।

**(22 22 21:3)**

28 जब मेरा पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये रहेगा, तब सब जातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल का पवित्र करनेवाला हूँ।”

## 38

**22 22 22 22 22 22 22 22**

1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:

2 “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुँह मागोग देश के **22 22**\* की ओर करके, जो रोश, मेशेक और तूबल का प्रधान है, उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर। **(22 22 39:1)**

3 और यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक, और तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ।

4 मैं तुझे घुमा ले आऊँगा, और तेरे जबड़ों में नकेल डालकर तुझे निकालूँगा; और तेरी सारी सेना को भी अर्थात् घोड़ों और सवारों को जो सब के सब कवच पहने हुए एक बड़ी भीड़ हैं, जो फरी और ढाल लिए हुए सब के सब तलवार चलानेवाले होंगे;

5 और उनके संग फारस, कूश और पूत को, जो सब के सब ढाल लिए और टोप लगाए होंगे;

6 और गोमेर और उसके सारे दलों को, और उत्तर दिशा के दूर-दूर देशों के तोगर्मा के घराने, और उसके सारे दलों को निकालूँगा; तेरे संग बहुत से देशों के लोग होंगे।

7 “इसलिए तू तैयार हो जा; तू और जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हों, तैयार रहना, और तू उनका अगुआ बनना।

8 बहुत दिनों के बीतने पर तेरी सुधि ली जाएगी; और अन्त के वर्षों में तू उस देश में आएगा, जो तलवार के वश से छूटा हुआ होगा, और जिसके निवासी बहुत सी जातियों में से इकट्ठे होंगे; अर्थात् तू इस्राएल के पहाड़ों पर आएगा जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं; परन्तु वे देश-देश के लोगों के वश से छुड़ाए जाकर सब के सब निडर रहेंगे।

9 तू चढ़ाई करेगा, और आँधी के समान आएगा, और अपने सारे दलों और बहुत देशों के लोगों समेत मेघ के समान देश पर छा जाएगा।

10 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, उस दिन तेरे मन में ऐसी-ऐसी बातें आएँगी कि तू एक बुरी युक्ति भी निकालेगा;

‡ **37:22 22 22 22 22 22 22 22**: इस्राएल का अपने स्वदेश में पुनर्वास, आनेवाले राजा के लिए मार्ग तैयार करेगा। वह दाऊद की सन्तान होगा जो अपने राज्य में सच्चे इस्राएल को एकत्र करेगा। \* **38:2 22 22**: यहाँ मगोग देश के एक प्रधान का नाम गोग है।

11 और तू कहेगा कि मैं बिन शहरपनाह के गाँवों के देश पर चढ़ाई करूँगा; मैं उन लोगों के पास जाऊँगा जो चैन से निडर रहते हैं; जो सब के सब बिना शहरपनाह और बिना बेड़ों और पल्लों के बसे हुए हैं;

12 ताकि छीनकर तू उन्हें लूटे और अपना हाथ उन खण्डहरो पर बढ़ाए जो फिर बसाए गए, और उन लोगों के विरुद्ध जाए जो जातियों में से इकट्ठे हुए थे और पृथ्वी की नाभि पर बसे हुए पशु और अन्य सम्पत्ति रखते हैं।

13 शेबा और ददान के लोग और तर्शाश के व्यापारी अपने देश के सब जवान सिंहों समेत तुझ से कहेंगे, 'क्या तू लूटने को आता है? क्या तूने धन छीनने, सोना-चाँदी उठाने, पशु और सम्पत्ति ले जाने, और बड़ी लूट अपना लेने को अपनी भीड़ इकट्ठी की है?'

14 "इस कारण, हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके गोग से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जिस समय मेरी प्रजा इस्राएल निडर बसी रहेगी, क्या तुझे इसका समाचार न मिलेगा?

15 तू उत्तर दिशा के दूर-दूर स्थानों से आएगा; तू और तेरे साथ बहुत सी जातियों के लोग, जो सब के सब घोड़ों पर चढ़े हुए होंगे, अर्थात् एक बड़ी भीड़ और बलवन्त सेना।

16 जैसे बादल भूमि पर छा जाता है, वैसे ही तू मेरी प्रजा इस्राएल के देश पर ऐसे चढ़ाई करेगा। इसलिए हे गोग, अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा, कि मैं तुझ से अपने देश पर इसलिए चढ़ाई कराऊँगा, कि जब मैं जातियों के देखते [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22]†, तब वे मुझे पहचान लेंगे।

17 "परमेश्वर यहोवा यह कहता है, क्या तू वही नहीं जिसकी चर्चा मैंने प्राचीनकाल में अपने दासों के, अर्थात् इस्राएल के उन भविष्यद्वाक्ताओं द्वारा की थी, जो उन दिनों में वर्षों तक यह भविष्यद्वाणी करते गए, कि यहोवा गोग से इस्राएलियों पर चढ़ाई कराएगा?

18 जिस दिन इस्राएल के देश पर गोग चढ़ाई करेगा, उसी दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख से प्रगट होगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

19 मैंने जलजलाहट और क्रोध की आग में कहा कि निःसन्देह उस दिन इस्राएल के देश में बड़ा भूकम्प होगा।

20 और मेरे दर्शन से समुद्र की मछलियाँ और आकाश के पक्षी, मैदान के पशु और भूमि पर जितने जीव-जन्तु रंगते हैं, और भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते हैं, सब

काँप उठेंगे; और पहाड़ गिराए जाएँगे; और चढ़ाइयाँ नाश होंगी, और सब दीवारें गिरकर मिट्टी में मिल जाएँगी। (22:22 4:3)

21 परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसके विरुद्ध तलवार चलाने के लिये अपने सब पहाड़ों को पुकारूँगा और हर एक की तलवार उसके भाई के विरुद्ध उठेगी।

22 मैं मरी और खून के द्वारा उससे मुकद्दमा लड़ूँगा; और उस पर और उसके दलों पर, और उन बहुत सी जातियों पर जो उसके पास होंगी, मैं बड़ी झड़ी लगाऊँगा, और ओले और आग और गन्धक बरसाऊँगा। (22:22 66:16)

23 इस प्रकार मैं अपने को महान और पवित्र ठहराऊँगा और बहुत सी जातियों के सामने अपने को प्रगट करूँगा। तब वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ।"

## 39

[22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22]

1 "फिर हे मनुष्य के सन्तान, गोग के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक और तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैं तेरे विरुद्ध हूँ।

2 मैं तुझे घुमा ले आऊँगा, और उत्तर दिशा के दूर-दूर देशों से चढ़ा ले आऊँगा, और इस्राएल के पहाड़ों पर पहुँचाऊँगा।

3 वहाँ मैं तेरा धनुष तेरे बाएँ हाथ से गिराऊँगा, और तेरे तीरों को तेरे दाहिनी हाथ से गिरा दूँगा।

4 तू अपने सारे दलों और अपने साथ की सारी जातियों समेत इस्राएल के पहाड़ों पर मार डाला जाएगा; मैं तुझे भाँति-भाँति के माँसाहारी पक्षियों और वन-पशुओं का आहार कर दूँगा।

5 तू खेत में गिरेगा, क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

6 मैं मागोग में और [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] के बीच आग लगाऊँगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। (22:22 1:10)

7 "मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच अपना नाम प्रगट करूँगा; और अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र न होने दूँगा; तब जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा, इस्राएल का पवित्र हूँ।

† 38:16 [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] मैं अपने बैरियों से बदला लेकर पवित्र और न्याय-सम्मत प्रगट होऊँगा। \* 39:6 [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] दण्ड तटीय प्रदेशों तक यह दिखाने के लिए बढ़ाया गया कि यह न केवल गोग और उसकी भूमि पर पड़ना चाहिए, बल्कि उन लोगों पर जो परमेश्वर के राज्य के प्रति घृणा और विरोध में गोग के सहभागी हैं।

8 यह घटना होनेवाली है और वह हो जाएगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। यह वही दिन है जिसकी चर्चा मैंने की है।

9 “तब इस्राएल के नगरों के रहनेवाले निकलेंगे और हथियारों में आग लगाकर जला देंगे, ढाल, और फरी, धनुष, और तीर, लाठी, बर्छे, सब को वे सात वर्ष तक जलाते रहेंगे।

10 इस कारण वे मैदान में लकड़ी न बीनेंगे, न जंगल में काटेंगे, क्योंकि वे हथियारों ही को जलाया करेंगे; वे अपने लूटनेवाले को लूटेंगे, और अपने छीननेवालों से छीनेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

11 “उस समय मैं गोग को इस्राएल के देश में कब्रिस्तान दूँगा, वह ताल की पूर्व ओर होगा; वह आने जानेवालों की तराई कहलाएगी, और आने जानेवालों को वहाँ रुकना पड़ेगा; वहाँ सब भीड़ समेत गोग को मिट्टी दी जाएगी और उस स्थान का नाम गोग की भीड़ की तराई पड़ेगा।

12 इस्राएल का घराना उनको सात महीने तक मिट्टी देता रहेगा ताकि अपने देश को शुद्ध करे।

13 देश के सब लोग मिलकर उनको मिट्टी देंगे; और जिस समय मेरी महिमा होगी, उस समय उनका भी नाम बड़ा होगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

14 तब वे मनुष्यों को नियुक्त करेंगे, जो निरन्तर इसी काम में लगे रहेंगे, अर्थात् देश में घूम-घामकर आने जानेवालों के संग होकर देश को शुद्ध करने के लिये उनको जो भूमि के ऊपर पड़े हों, मिट्टी देंगे; और सात महीने के बीतने तक वे ढूँढ़ ढूँढ़कर यह काम करते रहेंगे।

15 देश में आने जानेवालों में से जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब उसके पास एक चिन्ह खड़ा करेगा, यह उस समय तक बना रहेगा जब तक मिट्टी देनेवाले उसे गोग की भीड़ की तराई में गाड़ न दें।

16 वहाँ के नगर का नाम भी ‘हमोना’ है। इस प्रकार देश शुद्ध किया जाएगा।

?? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

17 “फिर हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: भाँति-भाँति के सब पक्षियों और सब वन-पशुओं को आज्ञा दे, ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?, मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिये इस्राएल के पहाड़ों पर करता हूँ, हर एक दिशा से इकट्ठे हो कि तुम माँस खाओ और लहू पीओ।

18 तुम शूरवीरों का माँस खाओगे, और पृथ्वी के प्रधानों का लहू पीओगे और मेढों, मेम्नों, बकरों और बैलों का भी जो सब के सब बाशान के तैयार किए हुए होंगे।

19 मेरे उस भोज की चर्बी से जो मैं तुम्हारे लिये करता हूँ, तुम खाते-खाते अघा जाओगे, और उसका लहू पीते-पीते छक जाओगे।

20 तुम मेरी मेज पर घोड़ों, सवारों, शूरवीरों, और सब प्रकार के योद्धाओं से तृप्त होंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

???????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

21 “मैं जाति-जाति के बीच अपनी महिमा प्रगट करूँगा, और जाति-जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो मैं करूँगा, और मेरा हाथ जो उन पर पड़ेगा, देख लेंगे।

22 उस दिन से आगे इस्राएल का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है।

23 जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि इस्राएल का घराना अपने अधर्म के कारण बँधुआई में गया था; क्योंकि उन्होंने मुझसे ऐसा विश्वासघात किया कि मैंने अपना मुँह उनसे मोड़ लिया और उनको उनके बैरियों के वश कर दिया, और वे सब तलवार से मारे गए।

24 मैंने उनकी अशुद्धता और अपराधों के अनुसार उनसे बर्ताव करके उनसे अपना मुँह मोड़ लिया था।

25 “इसलिए परमेश्वर यहोवा यह कहता है: अब मैं याकूब को बँधुआई से लौटा लाऊँगा, और इस्राएल के सारे घराने पर दया करूँगा; और अपने पवित्र नाम के लिये मुझे जलन होगी।

26 तब उस सारे विश्वासघात के कारण जो उन्होंने मेरे विरुद्ध किया वे लज्जित होंगे; और अपने देश में निडर रहेंगे; और कोई उनको न डराएगा।

27 जब मैं उनको जाति-जाति के बीच से लौटा लाऊँगा, और उन शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करूँगा, तब बहुत जातियों की दृष्टि में उनके द्वारा पवित्र ठहरूँगा।

28 तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है, क्योंकि मैंने उनको जाति-जाति में बँधुआ करके फिर उनके निज देश में इकट्ठा किया है। मैं उनमें से किसी को फिर परदेश में न छोड़ूँगा,

29 और उनसे अपना मुँह फिर कभी न मोड़ लूँगा, क्योंकि मैंने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

† 39:17 ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? : विगत विधान का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों वरन् अन्यजातियों पर भी स्पष्ट प्रगट होगा। परमेश्वर का दण्ड उनके पापों का परिणाम था और एक बार ये पाप त्याग दिए गए तो परमेश्वर का अनुग्रह अधिक बहुतायत से बरसेगा।

## 40

11:1, 11:2, 11:3, 11:4, 11:5, 11:6, 11:7, 11:8, 11:9, 11:10, 11:11, 11:12, 11:13, 11:14, 11:15, 11:16, 11:17, 11:18, 11:19, 11:20, 11:21, 11:22, 11:23, 11:24, 11:25, 11:26, 11:27, 11:28, 11:29, 11:30, 11:31, 11:32, 11:33, 11:34, 11:35, 11:36, 11:37, 11:38, 11:39, 11:40, 11:41, 11:42, 11:43, 11:44, 11:45, 11:46, 11:47, 11:48, 11:49, 11:50, 11:51, 11:52, 11:53, 11:54, 11:55, 11:56, 11:57, 11:58, 11:59, 11:60, 11:61, 11:62, 11:63, 11:64, 11:65, 11:66, 11:67, 11:68, 11:69, 11:70, 11:71, 11:72, 11:73, 11:74, 11:75, 11:76, 11:77, 11:78, 11:79, 11:80, 11:81, 11:82, 11:83, 11:84, 11:85, 11:86, 11:87, 11:88, 11:89, 11:90, 11:91, 11:92, 11:93, 11:94, 11:95, 11:96, 11:97, 11:98, 11:99, 11:100

1 हमारी बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष अर्थात् यरूशलेम नगर के ले लिए जाने के बाद चौदहवें वर्ष के पहले महीने के दसवें दिन को, यहोवा की शक्ति मुझे पर हुई, और उसने मुझे वहाँ पहुँचाया।

2 अपने दर्शनों में परमेश्वर ने मुझे इस्राएल के देश में पहुँचाया और वहाँ एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर खड़ा किया, जिस पर दक्षिण ओर मानो किसी नगर का आकार था।

3 जब वह मुझे वहाँ ले गया, तो मैंने क्या देखा कि पीतल का रूप धरे हुए और हाथ में सन का फीता और मापने का बाँस लिए हुए एक पुरुष फाटक में खड़ा है।  
(**11:1, 21:15**)

4 उस पुरुष ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आँखों से देख, और अपने कानों से सुन; और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँगा उस सब पर ध्यान दे, क्योंकि तू इसलिए यहाँ पहुँचाया गया है कि मैं तुझे ये बातें दिखाऊँ; और जो कुछ तू देखे वह इस्राएल के घराने को बताए।”

11:1, 11:2, 11:3, 11:4, 11:5, 11:6, 11:7, 11:8, 11:9, 11:10, 11:11, 11:12, 11:13, 11:14, 11:15, 11:16, 11:17, 11:18, 11:19, 11:20, 11:21, 11:22, 11:23, 11:24, 11:25, 11:26, 11:27, 11:28, 11:29, 11:30, 11:31, 11:32, 11:33, 11:34, 11:35, 11:36, 11:37, 11:38, 11:39, 11:40, 11:41, 11:42, 11:43, 11:44, 11:45, 11:46, 11:47, 11:48, 11:49, 11:50, 11:51, 11:52, 11:53, 11:54, 11:55, 11:56, 11:57, 11:58, 11:59, 11:60, 11:61, 11:62, 11:63, 11:64, 11:65, 11:66, 11:67, 11:68, 11:69, 11:70, 11:71, 11:72, 11:73, 11:74, 11:75, 11:76, 11:77, 11:78, 11:79, 11:80, 11:81, 11:82, 11:83, 11:84, 11:85, 11:86, 11:87, 11:88, 11:89, 11:90, 11:91, 11:92, 11:93, 11:94, 11:95, 11:96, 11:97, 11:98, 11:99, 11:100

5 और देखो, भवन के बाहर चारों ओर एक दीवार थी, और उस पुरुष के हाथ में मापने का बाँस था, जिसकी लम्बाई ऐसे छः हाथ की थी जो साधारण हाथों से चार अंगुल भर अधिक है; अतः उसने दीवार की मोटाई मापकर बाँस भर की पाई, फिर उसकी ऊँचाई भी मापकर बाँस भर की पाई। (**21:15**)

6 तब वह उस फाटक के पास आया जिसका मुँह पूर्व की ओर था, और उसकी सीढ़ी पर चढ़कर फाटक की दोनों डेवढ़ियों की चौड़ाई मापकर एक-एक बाँस भर की पाई।

7 पहरेवाली कोठरियाँ बाँस भर लम्बी और बाँस भर चौड़ी थीं; और दो-दो कोठरियों का अन्तर पाँच हाथ का था; और फाटक की डेवढ़ी जो फाटक के ओसारे के पास भवन की ओर थी, वह भी बाँस भर की थी।

8 तब उसने फाटक का वह ओसारा जो भवन के सामने था, मापकर बाँस भर का पाया।

9 उसने फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ का पाया, और उसके खम्भे दो-दो हाथ के पाए, और फाटक का ओसारा भवन के सामने था।

10 पूर्वी फाटक के दोनों ओर तीन-तीन पहरेवाली कोठरियाँ थीं जो सब एक ही माप की थीं, और दोनों ओर के खम्भे भी एक ही माप के थे।

11 फिर उसने फाटक के द्वार की चौड़ाई मापकर दस हाथ की पाई; और फाटक की लम्बाई मापकर तेरह हाथ की पाई।

12 दोनों ओर की पहरेवाली कोठरियों के आगे हाथ भर का स्थान था और दोनों ओर कोठरियाँ छः छः हाथ की थीं।

13 फिर उसने फाटक को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली कोठरी की छत तक मापकर पच्चीस हाथ की दूरी पाई, और द्वार आमने-सामने थे।

14 फिर उसने साठ हाथ के खम्भे मापे, और आँगन, फाटक के आस-पास, खम्भों तक था।

15 फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर उसके भीतरी ओसारे के आगे तक पचास हाथ का अन्तर था।

16 पहरेवाली कोठरियों में, और फाटक के भीतर चारों ओर कोठरियों के बीच के खम्भे के बीच-बीच में झिलमिलीदार खिड़कियाँ थी, और खम्भों के ओसारे में भी वैसी ही थी; और फाटक के भीतर के चारों ओर खिड़कियाँ थी; और हर एक खम्भे पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे।

11:1, 11:2, 11:3, 11:4, 11:5, 11:6, 11:7, 11:8, 11:9, 11:10, 11:11, 11:12, 11:13, 11:14, 11:15, 11:16, 11:17, 11:18, 11:19, 11:20, 11:21, 11:22, 11:23, 11:24, 11:25, 11:26, 11:27, 11:28, 11:29, 11:30, 11:31, 11:32, 11:33, 11:34, 11:35, 11:36, 11:37, 11:38, 11:39, 11:40, 11:41, 11:42, 11:43, 11:44, 11:45, 11:46, 11:47, 11:48, 11:49, 11:50, 11:51, 11:52, 11:53, 11:54, 11:55, 11:56, 11:57, 11:58, 11:59, 11:60, 11:61, 11:62, 11:63, 11:64, 11:65, 11:66, 11:67, 11:68, 11:69, 11:70, 11:71, 11:72, 11:73, 11:74, 11:75, 11:76, 11:77, 11:78, 11:79, 11:80, 11:81, 11:82, 11:83, 11:84, 11:85, 11:86, 11:87, 11:88, 11:89, 11:90, 11:91, 11:92, 11:93, 11:94, 11:95, 11:96, 11:97, 11:98, 11:99, 11:100

17 तब वह मुझे बाहरी आँगन में ले गया; और उस आँगन के चारों ओर कोठरियाँ थीं; और एक फर्श बना हुआ था; जिस पर तीस कोठरियाँ बनी थीं।

18 यह फर्श अर्थात् निचला फर्श फाटकों से लगा हुआ था और उनकी लम्बाई के अनुसार था।

19 फिर उसने निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी आँगन के बाहर के आगे तक मापकर सौ हाथ पाए; वह पूर्व और उत्तर दोनों ओर ऐसा ही था।

11:1, 11:2, 11:3, 11:4, 11:5, 11:6, 11:7, 11:8, 11:9, 11:10, 11:11, 11:12, 11:13, 11:14, 11:15, 11:16, 11:17, 11:18, 11:19, 11:20, 11:21, 11:22, 11:23, 11:24, 11:25, 11:26, 11:27, 11:28, 11:29, 11:30, 11:31, 11:32, 11:33, 11:34, 11:35, 11:36, 11:37, 11:38, 11:39, 11:40, 11:41, 11:42, 11:43, 11:44, 11:45, 11:46, 11:47, 11:48, 11:49, 11:50, 11:51, 11:52, 11:53, 11:54, 11:55, 11:56, 11:57, 11:58, 11:59, 11:60, 11:61, 11:62, 11:63, 11:64, 11:65, 11:66, 11:67, 11:68, 11:69, 11:70, 11:71, 11:72, 11:73, 11:74, 11:75, 11:76, 11:77, 11:78, 11:79, 11:80, 11:81, 11:82, 11:83, 11:84, 11:85, 11:86, 11:87, 11:88, 11:89, 11:90, 11:91, 11:92, 11:93, 11:94, 11:95, 11:96, 11:97, 11:98, 11:99, 11:100

20 तब बाहरी आँगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और चौड़ाई उसने मापी।

21 उसके दोनों ओर तीन-तीन पहरेवाली कोठरियाँ थीं, और इसके भी खम्भों के ओसारे की माप पहले फाटक के अनुसार थी; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी।

22 इसकी भी खिड़कियों और खम्भों के ओसारे और खजूरों की माप पूर्वमुखी फाटक की सी थी; और इस पर चढ़ने को सात सीढ़ियाँ थीं; और उनके सामने इसका ओसारा था।

23 भीतरी आँगन की उत्तर और पूर्व की ओर दूसरे फाटकों के सामने फाटक थे और उसने फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ की पाई।

11:1, 11:2, 11:3, 11:4, 11:5, 11:6, 11:7, 11:8, 11:9, 11:10, 11:11, 11:12, 11:13, 11:14, 11:15, 11:16, 11:17, 11:18, 11:19, 11:20, 11:21, 11:22, 11:23, 11:24, 11:25, 11:26, 11:27, 11:28, 11:29, 11:30, 11:31, 11:32, 11:33, 11:34, 11:35, 11:36, 11:37, 11:38, 11:39, 11:40, 11:41, 11:42, 11:43, 11:44, 11:45, 11:46, 11:47, 11:48, 11:49, 11:50, 11:51, 11:52, 11:53, 11:54, 11:55, 11:56, 11:57, 11:58, 11:59, 11:60, 11:61, 11:62, 11:63, 11:64, 11:65, 11:66, 11:67, 11:68, 11:69, 11:70, 11:71, 11:72, 11:73, 11:74, 11:75, 11:76, 11:77, 11:78, 11:79, 11:80, 11:81, 11:82, 11:83, 11:84, 11:85, 11:86, 11:87, 11:88, 11:89, 11:90, 11:91, 11:92, 11:93, 11:94, 11:95, 11:96, 11:97, 11:98, 11:99, 11:100

24 फिर वह मुझे दक्षिण की ओर ले गया, और दक्षिण ओर एक फाटक था; और उसने इसके खम्भे और खम्भों का ओसारा मापकर इनकी वैसी ही माप पाई।

25 उन खिड़कियों के समान इसके और इसके खम्भों के ओसारों के चारों ओर भी खिड़कियाँ थीं; इसकी भी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी।

26 इसमें भी चढ़ने के लिये सात सीढ़ियाँ थीं और उनके सामने खम्भों का ओसारा था; और उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे।

27 दक्षिण की ओर भी भीतरी आँगन का एक फाटक था, और उसने दक्षिण ओर के दोनों फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ की पाई।

२२२२२२ २२२२२: २२२२२२२ २२२२२२-२२२२२

28 तब वह दक्षिणी फाटक से होकर मुझे भीतरी आँगन में ले गया, और उसने दक्षिणी फाटक को मापकर वैसा ही पाया।

29 अर्थात् इसकी भी पहरेवाली कोठरियाँ, और खम्भे, और खम्भों का ओसारा, सब वैसे ही थे; और इसके और इसके खम्भों के ओसारे के भी चारों ओर भी खिड़कियाँ थीं; और इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी।

30 इसके चारों ओर के खम्भों का ओसारा भी पच्चीस हाथ लम्बा, और पचास हाथ चौड़ा था।

31 इसका खम्भों का ओसारा बाहरी आँगन की ओर था, और इसके खम्भों पर भी खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, और इस पर चढ़ने को आठ सीढ़ियाँ थीं।

२२२२२२ २२२२२: २२२२२२२ २२२२२२-२२२२२

32 फिर वह पुरुष मुझे पूर्व की ओर भीतरी आँगन में ले गया, और उस ओर के फाटक को मापकर वैसा ही पाया।

33 इसकी भी पहरेवाली कोठरियाँ और खम्भे और खम्भों का ओसारा, सब वैसे ही थे; और इसके और इसके खम्भों के ओसारे के चारों ओर भी खिड़कियाँ थीं; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी।

34 इसका ओसारा भी बाहरी आँगन की ओर था, और उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; और इस पर भी चढ़ने को आठ सीढ़ियाँ थीं।

२२२२२२ २२२२२: २२२२२२२ २२२२२२-२२२२२

35 फिर उस पुरुष ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे मापा, और उसकी भी माप वैसी ही पाई।

36 उसके भी पहरेवाली कोठरियाँ और खम्भे और उनका ओसारा था; और उसके भी चारों ओर खिड़कियाँ थीं; उसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी।

37 उसके खम्भे बाहरी आँगन की ओर थे, और उन पर भी दोनों ओर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; और उसमें चढ़ने को आठ सीढ़ियाँ थीं।

२२२२२२२ २२२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२२२२

38 फिर फाटकों के पास के खम्भों के निकट द्वार समेत कोठरी थी, जहाँ होमबलि धोया जाता था।

39 होमबलि, पापबलि, और दोषबलि के पशुओं के वध करने के लिये फाटक के ओसारे के पास उसके दोनों ओर दो-दो मेजें थीं।

40 फाटक की एक बाहरी ओर पर अर्थात् उत्तरी फाटक के द्वार की चढ़ाई पर दो मेजें थीं; और उसकी दूसरी बाहरी ओर पर भी, जो फाटक के ओसारे के पास थी, दो मेजें थीं।

41 फाटक के दोनों ओर चार-चार मेजें थीं, सब मिलकर आठ मेजें थीं, जो बलिपशु वध करने के लिये थीं।

42 फिर होमबलि के लिये तराशे हुए पत्थर की चार मेजें थीं, जो डेढ़ हाथ लम्बी, डेढ़ हाथ चौड़ी, और हाथ भर ऊँची थीं; उन पर होमबलि और मेलबलि के पशुओं को वध करने के हथियार रखे जाते थे।

43 भीतर चारों ओर चार अंगुल भर की आंकडियाँ लगी थीं, और मेजों पर चढ़ावे का माँस रखा हुआ था।

२२२२२२२ २२ २२२२२२२२२

44 भीतरी आँगन के उत्तरी फाटक के बाहर गानेवालों की कोठरियाँ थीं जिनके द्वार दक्षिण ओर थे; और पूर्वी फाटक की ओर एक कोठरी थी, जिसका द्वार उत्तर ओर था।

45 उसने मुझसे कहा, “यह कोठरी, जिसका द्वार दक्षिण की ओर है, उन याजकों के लिये है जो भवन की चौकसी करते हैं,

46 और जिस कोठरी का द्वार उत्तर की ओर है, वह उन याजकों के लिये है जो वेदी की चौकसी करते हैं; ये सादोक की सन्तान हैं; और लेवियों में से यहोवा की सेवा टहल करने को केवल ये ही उसके समीप जाते हैं।”

२२२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२

47 फिर उसने आँगन को मापकर उसे चौकोर अर्थात् सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा पाया; और भवन के सामने वेदी थी।

48 फिर वह मुझे भवन के ओसारे में ले गया, और ओसारे के दोनों ओर के खम्भों को मापकर पाँच-पाँच हाथ का पाया; और दोनों ओर फाटक की चौड़ाई तीन-तीन हाथ की थी।

49 ओसारे की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की थी; और उस पर चढ़ने को सीढ़ियाँ थीं; और दोनों ओर के खम्भों के पास लाटें थीं।

## 41

२२२२२२२ २२ २२२२२२२-२२२२२२२

1 फिर वह पुरुष मुझे मन्दिर के पास ले गया, और उसके दोनों ओर के खम्भों को मापकर छः छः हाथ चौड़े पाया, यह तो तम्बू की चौड़ाई थी।

2 द्वार की चौड़ाई दस हाथ की थी, और द्वार की दोनों ओर की दीवारें पाँच-पाँच हाथ की थीं; और उसने मन्दिर की लम्बाई मापकर चालीस हाथ की, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की पाई।

3 **११ ११११ ११११ ११११\*** द्वार के खम्भों को मापा, और दो-दो हाथ का पाया; और द्वार छः हाथ का था; और द्वार की चौड़ाई सात हाथ की थी।

4 तब उसने भीतर के भवन की लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर के सामने मापकर बीस-बीस हाथ की पाई; और उसने मुझसे कहा, “यह तो परमपवित्र स्थान है।”

**११११११ ११ ११११११११**

5 फिर उसने भवन की दीवार को मापकर छः हाथ की पाया, और भवन के आस-पास चार-चार हाथ चौड़ी बाहरी कोठरियाँ थीं।

6 ये बाहरी कोठरियाँ तीन मंजिला थीं; और एक-एक महल में तीस-तीस कोठरियाँ थीं। भवन के आस-पास की दीवार इसलिए थी कि बाहरी कोठरियाँ उसके सहारे में हो; और उसी में कोठरियों की कड़ियाँ बैठाई हुई थीं और भवन की दीवार के सहारे में न थीं।

7 भवन के आस-पास जो कोठरियाँ बाहर थीं, उनमें से जो ऊपर थीं, वे अधिक चौड़ी थीं; अर्थात् भवन के आस-पास जो कुछ बना था, वह **११११-११११ ११११ ११ ११ १११११ ११११†**, वैसे-वैसे चौड़ा होता गया; इस रीति, इस घर की चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुई थी, और लोग निचली मंजिल के बीच से ऊपरी मंजिल को चढ़ सकते थे।

8 फिर मैंने भवन के आस-पास ऊँची भूमि देखी, और बाहरी कोठरियों की ऊँचाई जोड़ तक छः हाथ के बाँस की थी।

9 बाहरी कोठरियों के लिये जो दीवार थी, वह पाँच हाथ मोटी थी, और जो स्थान खाली रह गया था, वह भवन की बाहरी कोठरियों का स्थान था।

10 बाहरी कोठरियों के बीच-बीच भवन के आस-पास बीस हाथ का अन्तर था।

11 बाहरी कोठरियों के द्वार उस स्थान की ओर थे, जो खाली था, अर्थात् एक द्वार उत्तर की ओर और दूसरा दक्षिण की ओर था; और जो स्थान रह गया, उसकी चौड़ाई चारों ओर पाँच-पाँच हाथ की थी।

\* **41:3** **११ ११११ ११११ ११११**: परमपवित्र स्थान में, यहाँ वह यह नहीं कहता है कि वह मुझे भीतर लाया परन्तु 'वह भीतर गया', क्योंकि उस परमपवित्र स्थान में पुरोहित भी नहीं जा सकते थे, यहजेकेल भी नहीं। केवल प्रधान पुरोहित वर्ष में एक बार ही वहाँ प्रवेश कर सकता था। † **41:7** **११११-११११ १११ ११ ११११११ ११११**: निम्नतम तल ऐसा था कि मध्य तल से होकर ऊपर जाना पड़ता था। ये घुमावदार सीढ़ियाँ बाहर से दिखाई नहीं देती थी अतः मध्य तल से होकर जाये बिना ऊपर जाना सम्भव नहीं था।

**११११११ ११ ११ ११ १११**

12 फिर जो भवन मन्दिर के पश्चिमी आँगन के सामने था, वह सत्तर हाथ चौड़ा था; और भवन के आस-पास की दीवार पाँच हाथ मोटी थी, और उसकी लम्बाई नब्बे हाथ की थी। मन्दिर की सम्पूर्ण माप

13 तब उसने भवन की लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई; और दीवारों समेत आँगन की भी लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई।

14 भवन का पूर्वी सामना और उसका आँगन सौ हाथ चौड़ा था।

15 फिर उसने पीछे के आँगन के सामने की दीवार की लम्बाई जिसके दोनों ओर छज्जे थे, मापकर सौ हाथ की पाई; और भीतरी भवन और आँगन के ओसारों को भी मापा।

**११११११ ११ ११११११**

16 तब उसने डेवद्वियों और झिलमिलीदार खिड़कियों, और आस-पास की तीनों मंजिल के छज्जों को मापा जो डेवद्वी के सामने थे, और चारों ओर उनकी तख्ता बन्दी हुई थी; और भूमि से खिड़कियों तक और खिड़कियों के आस-पास सब कहीं तख्ताबन्दी हुई थी।

17 फिर उसने द्वार के ऊपर का स्थान भीतरी भवन तक और उसके बाहर भी और आस-पास की सारी दीवार के भीतर और बाहर भी मापा।

18 उसमें करूब और खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो-दो करूबों के बीच एक-एक खजूर का पेड़ था; और करूबों के दो-दो मुख थे।

19 इस प्रकार से एक-एक खजूर की एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ था, और दूसरी ओर जवान सिंह का मुख बनाया हुआ था। इसी रीति सारे भवन के चारों ओर बना था।

20 भूमि से लेकर द्वार के ऊपर तक करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, मन्दिर की दीवार इसी भाँति बनी हुई थी।

**१११११ ११ ११११**

21 भवन के द्वारों के खम्भे चौकोर थे, और पवित्रस्थान के सामने का रूप मन्दिर का सा था।

22 वेदी काठ की बनी थी, और उसकी ऊँचाई तीन हाथ, और लम्बाई दो हाथ की थी; और उसके कोने और उसका सारा पाट और अलंगें भी काठ की थीं। और उसने मुझसे कहा, “यह तो यहोवा के सम्मुख की मेज है।”

**११११११११११११ ११ ११११११**



के समान, जो मैंने कबार नदी के तट पर देखा था; और मैं मुँह के बल गिर पड़ा।

4 तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूर्वमुखी था, भवन में आ गया।

5 तब परमेश्वर के आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आँगन में पहुँचाया; और यहोवा का तेज भवन में भरा था।

6 तब मैंने एक जन का शब्द सुना, जो भवन में से मुझसे बोल रहा था, और वह पुरुष मेरे पास खड़ा था।

7 उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा की यह वाणी है, यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पाँव रखने की जगह है, जहाँ मैं इस्राएल के बीच सदा वास किए रहूँगा। और न तो इस्राएल का घराना, और न उसके राजा अपने व्यभिचार से, या अपने ऊँचे स्थानों में अपने <sup>†</sup> के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएँगे।

8 वे अपनी डेवढ़ी मेरी डेवढ़ी के पास, और अपने द्वार के खम्भे मेरे द्वार के खम्भों के निकट बनाते थे, और मेरे और उनके बीच केवल दीवार ही थी, और उन्होंने अपने घिनौने कामों से मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया था; इसलिए मैंने कोप करके उन्हें नाश किया।

9 अब वे अपना व्यभिचार और अपने राजाओं के शव मेरे सम्मुख से दूर कर दें, तब मैं उनके बीच सदा वास किए रहूँगा।

10 “हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने को इस भवन का नमूना दिखा कि वे अपने अधर्म के कामों से लज्जित होकर उस नमूने को मापें।

11 यदि वे अपने सारे कामों से लज्जित हों, तो उन्हें इस भवन का आकार और स्वरूप, और इसके बाहर भीतर आने-जाने के मार्ग, और इसके सब आकार और विधियाँ, और नियम बतलाना, और उनके सामने लिख रखना; जिससे वे इसका सब आकार और इसकी सब विधियाँ स्मरण करके उनके अनुसार करें।

12 भवन का नियम यह है कि पहाड़ की चोटी के चारों ओर का सम्पूर्ण भाग परमपवित्र है। देख भवन का नियम यही है।

<sup>†</sup>

13 “ऐसे हाथ के माप से जो साधारण हाथ से चौवा भर अधिक हो, वेदी की माप यह है, अर्थात् उसका आधार एक हाथ का, और उसकी चौड़ाई एक हाथ की, और उसके चारों ओर की छोर पर की पटरी एक चौवे की। और वेदी की ऊँचाई यह है:

14 भूमि पर धरे हुए आधार से लेकर निचली कुर्सी तक दो हाथ की ऊँचाई रहे, और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो; और छोटी कुर्सी से लेकर बड़ी कुर्सी तक चार हाथ हों और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो;

15 और ऊपरी भाग चार हाथ ऊँचा हो; और वेदी पर जलाने के स्थान के चार सींग ऊपर की ओर निकले हों।

16 वेदी पर जलाने का स्थान चौकोर अर्थात् बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा हो। (यहे. 27:1)

17 निचली कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी, और उसके चारों ओर की पटरी आधे हाथ की हो, और उसका आधार चारों ओर हाथ भर का हो। उसकी सीढ़ी उसके पूर्व ओर हो।”

<sup>†</sup>

18 फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जिस दिन होमबलि चढ़ाने और लहू छिड़कने के लिये वेदी बनाई जाए, उस दिन की विधियाँ ये ठहरें।

19 “अर्थात् लेवीय याजक लोग, जो सादोक की सन्तान हैं, और मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप रहते हैं, उन्हें तू पापबलि के लिये एक बछड़ा देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

20 तब तू उसके लहू में से कुछ लेकर वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के चारों कोनों और चारों ओर की पटरी पर लगाना; इस प्रकार से उसके लिये प्रायश्चित्त करने के द्वारा उसको पवित्र करना।

21 तब पापबलि के बछड़े को लेकर, भवन के पवित्रस्थान के बाहर ठहराए हुए स्थान में जला देना।

22 दूसरे दिन एक निर्दोष बकरा पापबलि करके चढ़ाना; और जैसे बछड़े के द्वारा वेदी पवित्र की जाए, वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा भी <sup>†</sup>।

23 जब तू उसे पवित्र कर चुके, तब एक निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढा चढ़ाना।

24 तू उन्हें यहोवा के सामने ले आना, और याजक लोग उन पर नमक डालकर उन्हें यहोवा को होमबलि करके चढ़ाएँ।

25 सात दिन तक तू प्रतिदिन पापबलि के लिये एक बकरा तैयार करना, और निर्दोष बछड़ा और भेड़ों में से निर्दोष मेढा भी तैयार किया जाए।

26 सात दिन तक याजक लोग वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध करते रहें; इसी भाँति उसका संस्कार हो।

† 43:7 <sup>†</sup> यहूदिया के मूर्तिपूजक राजाओं ने ही वास्तव में मन्दिर के परिसर में मूर्तिपूजा आरम्भ करवाई थी। † 43:22 <sup>†</sup> लहू के छिड़काव के द्वारा यह। 43:18 वह पुरोहित के सदृश्य कार्य का निर्धारण करता है। पुरोहितों के अभिषेक से पूर्व मूसा ने यह भूमिका निभाई थी।



27 जब वे दिन समाप्त हों, तब आठवें दिन के बाद से याजक लोग तुम्हारे होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाया करें; तब मैं तुम से प्रसन्न होऊँगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

## 44

यहोवा का आदेश

1 फिर वह पुरुष मुझे पवित्रस्थान के उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया, जो पूर्वमुखी है; और वह बन्द था।

2 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए; कोई इससे होकर भीतर जाने न पाए; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इससे होकर भीतर आया है; इस कारण यह बन्द रहे।

3 केवल यहोवा ही, प्रधान होने के कारण, मेरे सामने भोजन करने को वहाँ बैटेगा; वह फाटक के ओसारे से होकर भीतर जाए, और इसी से होकर निकले।”

यहोवा का आदेश

4 फिर वह उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के सामने ले गया; तब मैंने देखा कि यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है; और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। (यहेजकेल 15:8)

5 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, ध्यान देकर अपनी आँखों से देख, और जो कुछ मैं तुझ से अपने भवन की सब विधियों और नियमों के विषय में कहूँ, वह सब अपने कानों से सुन; और भवन के प्रवेश और पवित्रस्थान के सब निकासों पर ध्यान दे।

6 और उन विरोधियों अर्थात् इस्राएल के घराने से कहना, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे इस्राएल के घराने, अपने सब घृणित कामों से अब हाथ उठा।

7 जब तुम मेरा भोजन अर्थात् चर्बी और लहू चढ़ाते थे, तब तुम यहोवा को जो मन और तन दोनों के खतनारहित थे, मेरे पवित्रस्थान में आने देते थे कि वे मेरा भवन अपवित्र करें; और उन्होंने मेरी वाचा को तोड़ दिया जिससे तुम्हारे सब घृणित काम बढ़ गए। (यहेजकेल 1:28)

8 तुम ने मेरी पवित्र वस्तुओं की रक्षा न की, परन्तु तुम ने अपने ही मन से अन्य लोगों को मेरे पवित्रस्थान में मेरी वस्तुओं की रक्षा करनेवाले ठहराया।

9 “इसलिए परमेश्वर यहोवा यह कहता है: इस्राएलियों के बीच जितने अन्य लोग हों, जो मन और तन दोनों के खतनारहित हैं, उनमें से कोई मेरे पवित्रस्थान में न आने पाए।

यहोवा का आदेश

10 “परन्तु लेवीय लोग जो उस समय मुझसे दूर हो गए थे, जब इस्राएली लोग मुझे छोड़कर अपनी मूरतों के पीछे भटक गए थे, वे अपने अधर्म का भार उठाएँगे।

11 परन्तु वे मेरे पवित्रस्थान में टहलुए होकर भवन के फाटकों का पहरा देनेवाले और भवन के टहलुए रहें; वे होमबलि और मेलबलि के पशु लोगों के लिये वध करें, और उनकी सेवा टहल करने को उनके सामने खड़े हुआ करें।

12 क्योंकि इस्राएल के घराने की सेवा टहल वे उनकी मूरतों के सामने करते थे, और उनके ठोकर खाने और अधर्म में फँसने का कारण हो गए थे; इस कारण मैंने उनके विषय में शपथ खाई है कि वे अपने अधर्म का भार उठाए, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

13 वे मेरे समीप न आएँ, और न मेरे लिये याजक का काम करें; और न मेरी किसी पवित्र वस्तु, या किसी परमपवित्र वस्तु को छूने पाएँ; वे अपनी लज्जा का और जो घृणित काम उन्होंने किए, उनका भी भार उठाए।

14 तो भी मैं उन्हें भवन में की सौंपी हुई वस्तुओं का रक्षक ठहराऊँगा; उसमें सेवा का जितना काम हो, और जो कुछ उसमें करना हो, उसके करनेवाले वे ही हों।

यहोवा का आदेश

15 “फिर लेवीय याजक जो सादोक की सन्तान हैं, और जिन्होंने उस समय मेरे पवित्रस्थान की रक्षा की जब इस्राएली मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप आया करें, और मुझे चर्बी और लहू चढ़ाने को मेरे सम्मुख खड़े हुआ करें, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

16 वे मेरे पवित्रस्थान में आया करें, और मेरी मेज के पास मेरी सेवा टहल करने को आएँ और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें।

17 जब वे भीतरी आँगन के फाटकों से होकर जाया करें, तब सन के वस्त्र पहने हुए जाएँ, और जब वे भीतरी आँगन के फाटकों में या उसके भीतर सेवा टहल करते हों, तब कुछ ऊन के वस्त्र न पहनें।

18 वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियाँ पहनें और कमर में सन की जाँघिया बाँधें हों; किसी ऐसे कपड़े से वे कमर न बाँधें जिससे पसीना होता है।

19 जब वे बाहरी आँगन में लोगों के पास निकलें, तब जो वस्त्र पहने हुए वे सेवा टहल करते थे, उन्हें उतारकर

\* 44:3 यहोवा का आदेश: दाऊद के नाम में पूर्व वाणी की गई (यहे.34:24) रब्बी समझते थे के वह मसीह है। † 44:7 यहोवा का आदेश: ये वे लोग हैं जो मन्दिर की सेवा तो करने लगे परन्तु अनाधिकृत एवं अनिष्ट पुरोहित थे और उन्हीं के पापों के संदर्भ में है।

और पवित्र कोठरियों में रखकर दूसरे वस्त्र पहनें, जिससे लोग उनके वस्त्रों के कारण [2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]।

20 न तो वे सिर मुँडाएँ, और न बाल लम्बे होने दें; वे केवल अपने बाल कटाएँ।

21 भीतरी आँगन में जाने के समय कोई याजक दाखमधु न पीए।

22 वे विधवा या छोड़ी हुई स्त्री को ब्याह न लें; केवल इस्राएल के घराने के वंश में से कुंवारी या ऐसी विधवा ब्याह लें जो किसी याजक की स्त्री हुई हो।

23 वे मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें, और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें।

24 और जब कोई मुकद्दमा हो तब न्याय करने को भी वे ही बैठे, और मेरे नियमों के अनुसार न्याय करें। मेरे सब नियत पर्वों के विषय भी वे मेरी व्यवस्था और विधियाँ पालन करें, और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानें।

25 वे किसी मनुष्य के शव के पास न जाएँ कि अशुद्ध हो जाएँ; केवल माता-पिता, बेटे-बेटी; भाई, और ऐसी बहन के शव के कारण जिसका विवाह न हुआ हो वे अपने को अशुद्ध कर सकते हैं।

26 जब वे अशुद्ध हो जाएँ, तब उनके लिये सात दिन गिने जाएँ और तब वे शुद्ध ठहरें,

27 और जिस दिन वे पवित्रस्थान अर्थात् भीतरी आँगन में सेवा टहल करने को फिर प्रवेश करें, उस दिन अपने लिये पापबलि चढाएँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

28 “उनका एक ही निज भाग होगा, अर्थात् उनका भाग मैं ही हूँ; तुम उन्हें इस्राएल के बीच कुछ ऐसी भूमि न देना जो उनकी निज हो; उनकी निज भूमि मैं ही हूँ।

29 वे अन्नबलि, पापबलि और दोषबलि खाया करें; और इस्राएल में जो वस्तु अर्पण की जाए, वह उनको मिला करे।

30 और सब प्रकार की सबसे पहली उपज और सब प्रकार की उठाई हुई वस्तु जो तुम उठाकर चढाओ, याजकों को मिला करे; और नये अन्न का पहला गूँधा हुआ आटा भी याजक को दिया करना, जिससे तुम लोगों के घर में आशीष हो। (2[2][2][2][2]. 26:10)

31 जो कुछ अपने आप मरे या फाड़ा गया हो, चाहे पक्षी हो या पशु उसका माँस याजक न खाए।

## 45

[2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]

1 “जब तुम चिट्ठी डालकर देश को बाँटो, तब देश में से एक भाग पवित्र जानकर यहोवा को अर्पण करना;

उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बाँस की और चौड़ाई दस हजार बाँस की हो; वह भाग अपने चारों ओर के सीमा तक पवित्र ठहरे।

2 उसमें से पवित्रस्थान के लिये पाँच सौ बाँस लम्बी और पाँच सौ बाँस चौड़ी चौकोनी भूमि हो, और उसकी चारों ओर पचास-पचास हाथ चौड़ी भूमि छूटी पड़ी रहे।

3 उस पवित्र भाग में तुम पच्चीस हजार बाँस लम्बी और दस हजार बाँस चौड़ी भूमि को मापना, और उसी में पवित्रस्थान बनाना, जो परमपवित्र ठहरे।

4 जो याजक पवित्रस्थान की सेवा टहल करें और यहोवा की सेवा टहल करने को समीप आएँ, वह उन्हीं के लिये हो; वहाँ उनके घरों के लिये स्थान हो और पवित्रस्थान के लिये पवित्र ठहरे।

5 फिर पच्चीस हजार बाँस लम्बा, और दस हजार बाँस चौड़ा एक भाग, भवन की सेवा टहल करनेवाले लेवियों की बीस कोठरियों के लिये हो।

6 “फिर नगर के लिये, अर्पण किए हुए पवित्र भाग के पास, तुम पाँच हजार बाँस चौड़ी और पच्चीस हजार बाँस लम्बी, विशेष भूमि ठहराना; वह इस्राएल के सारे घराने के लिये हो।

[2]

7 “प्रधान का निज भाग पवित्र अर्पण किए हुए भाग और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् दोनों की पश्चिम और पूर्व दिशाओं में दोनों भागों के सामने हों; और उसकी लम्बाई पश्चिम से लेकर पूर्व तक उन दो भागों में से किसी भी एक के तुल्य हो।

8 इस्राएल के देश में प्रधान की यही निज भूमि हो। और मेरे ठहराए हुए प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अंधेर न करें; परन्तु इस्राएल के घराने को उसके गोत्रों के अनुसार देश मिले।

[2]

9 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे इस्राएल के प्रधानों! बस करो, उपद्रव और उत्पात को दूर करो, और न्याय और धर्म के काम किया करो; मेरी प्रजा के लोगों को निकाल देना छोड़ दो, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

10 “तुम्हारे पास सच्चा तराजू, सच्चा एपा, और सच्चा बत रहे।

11 एपा और बत दोनों एक ही नाप के हों, अर्थात् दोनों में होमेर का दसवाँ अंश समाए; दोनों की नाप होमेर के हिसाब से हो।

‡ 44:19 [2]: वे अपने पवित्र वस्त्रों द्वारा आम जनता का स्पर्श न करें। यह पवित्र ठहरना उक्ति का उपयोग किया गया है क्योंकि स्पर्श का प्रभाव मनुष्यों और वस्तुओं को पवित्र रूप से अलग करने के लिए था।

12 शेकेल बीस गेरा का हो; और तुम्हारा माना बीस, पच्चीस, या पन्द्रह शेकेल का हो।

13 “तुम्हारी उठाई हुई भेंट यह हो, अर्थात् गेहूँ के होमेर से एपा का छठवाँ अंश, और जौ के होमेर में से एपा का छठवाँ अंश देना।

14 तेल का नियत अंश कोर में से बत का दसवाँ अंश हो; कोर तो दस बत अर्थात् एक होमेर के तुल्य है, क्योंकि होमेर दस बत का होता है।

15 इस्राएल की उत्तम-उत्तम चराइयों से दो-दो सौ भेड़-बकरियों में से एक भेड़ या बकरी दी जाए। ये सब वस्तुएँ अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि के लिये दी जाएँ जिससे उनके लिये प्रायश्चित्त किया जाए, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

16 इस्राएल के प्रधान के लिये देश के सब लोग यह भेंट दें।

17 पर्वों, नये चाँद के दिनों, विश्रामदिनों और इस्राएल के घराने के सब नियत समयों में होमबलि, अन्नबलि, और अर्घ देना [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2]\* हो। इस्राएल के घराने के लिये प्रायश्चित्त करने को वह पापबलि, अन्नबलि, होमबलि, और मेलबलि तैयार करे।

[2][2][2][2]

18 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: पहले महीने के पहले दिन को तू एक निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को पवित्र करना।

19 इस पापबलि के लहू में से याजक कुछ लेकर भवन के चौखट के खम्भों, और वेदी की कुर्सी के चारों कोनों, और भीतरी आँगन के फाटक के खम्भों पर लगाए।

20 फिर महीने के सातवें दिन को सब भूल में पड़े हुए और भोलों के लिये भी यह ही करना; इसी प्रकार से भवन के लिये प्रायश्चित्त करना।

21 “पहले महीने के चौदहवें दिन को तुम्हारा फसह हुआ करे, वह सात दिन का पर्व हो और उसमें अखमीरी रोटी खाई जाए।

22 उस दिन प्रधान अपने और प्रजा के सब लोगों के निमित्त एक बछड़ा पापबलि के लिये तैयार करे।

23 पर्व के सातों दिन वह यहोवा के लिये होमबलि तैयार करे, अर्थात् हर एक दिन सात-सात निर्दोष बछड़े और सात-सात निर्दोष मेढे और प्रतिदिन एक-एक बकरा पापबलि के लिये तैयार करे।

24 हर एक बछड़े और मेढे के साथ वह एपा भर अन्नबलि, और एपा पीछे हीन भर तेल तैयार करे।

25 सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन तक अर्थात् पर्व के दिनों में वह पापबलि, होमबलि, अन्नबलि, और तेल इसी विधि के अनुसार किया करे।

## 46

[2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2]

1 “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: भीतरी आँगन का पूर्वमुखी फाटक काम-काज के छः दिन बन्द रहे, परन्तु विश्रामदिन को खुला रहे। और नये चाँद के दिन भी खुला रहे।

2 प्रधान बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से आकर फाटक के एक खम्भे के पास खड़ा हो जाए, और याजक उसका होमबलि और मेलबलि तैयार करें; और वह फाटक की डेवढी पर दण्डवत् करे; तब वह बाहर जाए, और फाटक साँझ से पहले बन्द न किया जाए।

3 लोग विश्राम और नये चाँद के दिनों में [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]\* में यहोवा के सामने दण्डवत् करें।

4 विश्रामदिन में जो होमबलि प्रधान यहोवा के लिये चढ़ाए, वह भेड़ के छः निर्दोष बच्चे और एक निर्दोष मेढे का हो।

5 अन्नबलि यह हो: अर्थात् मेढे के साथ एपा भर अन्न और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल।

6 नये चाँद के दिन वह एक निर्दोष बछड़ा और भेड़ के छः बच्चे और एक मेढा चढ़ाए; ये सब निर्दोष हों।

7 बछड़े और मेढे दोनों के साथ वह एक-एक एपा अन्नबलि तैयार करे, और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न, और एपा पीछे हीन भर तेल।

8 जब प्रधान भीतर जाए तब वह [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]† जाए, और उसी मार्ग से निकल जाए।

9 “जब साधारण लोग नियत समयों में यहोवा के सामने दण्डवत् करने आएँ, तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत् करने को भीतर आए, वह दक्षिणी फाटक से होकर निकले, और जो दक्षिणी फाटक से होकर भीतर आए, वह उत्तरी फाटक से होकर निकले, अर्थात् जो जिस फाटक से भीतर आया हो, वह उसी फाटक से न लौटे, अपने सामने ही निकल जाए।

10 जब वे भीतर आएँ तब प्रधान उनके बीच होकर आएँ, और जब वे निकलें, तब वे एक साथ निकलें।

11 “पर्वों और अन्य नियत समयों का अन्नबलि बछड़े पीछे एपा भर, और मेढे पीछे एपा भर का हो; और भेड़

\* 45:17 [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2]: लोगों की भेंट प्रधानों के हाथों में देनी होती थी कि एक सर्वनिष्ठ सामग्री हो जाए जिसमें से प्रधान प्रत्येक बलिदान के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाए। \* 46:3 [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]: हेरोदेस के मन्दिर में प्रभु के समक्ष आराधना का स्थान इस्राएल का प्रांगण था जो स्त्रियों के प्रांगण के पश्चिम में था और भीतरी प्रांगण से एक छोटी दीवार द्वारा पृथक किया हुआ था। † 46:8 [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]

[2][2] [2][2][2][2]: भीतरी प्रांगण का पूर्वी द्वार



9 जहाँ-जहाँ यह नदी बहे, वहाँ-वहाँ सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएँगे और मछलियाँ भी बहुत हो जाएँगी; क्योंकि इस सोते का जल वहाँ पहुँचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; और जहाँ कहीं यह नदी पहुँचेगी वहाँ सब जन्तु जीएँगे।

10 ताल के तट पर मछुए खड़े रहेंगे, और [22222222] से लेकर एनएगलैम तक वे जाल फैलाए जाएँगे, और उन्हें महासागर की सी भाँति-भाँति की अनगिनत मछलियाँ मिलेंगी।

11 परन्तु ताल के पास जो दलदल और गड्ढे हैं, उनका जल मीठा न होगा; वे खारे ही रहेंगे।

12 नदी के दोनों किनारों पर भाँति-भाँति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुझाएँगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्रस्थान से निकला है। उनमें महीने-महीने, नये-नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, और पत्ते औषधि के काम आएँगे।" ([222222]. 22:2)

### [222 22 2222222]

13 परमेश्वर यहोवा यह कहता है: "जिस सीमा के भीतर तुम को यह देश अपने बारहों गोत्रों के अनुसार बाँटना पड़ेगा, वह यह है: यूसुफ को दो भाग मिलें।

14 उसे तुम एक दूसरे के समान निज भाग में पाओगे, क्योंकि मैंने शपथ खाई कि उसे तुम्हारे पितरों को दूँगा, इसलिए यह देश तुम्हारा निज भाग ठहरेगा।

15 "देश की सीमा यह हो, अर्थात् उत्तर ओर की सीमा महासागर से लेकर हेतलोन के पास से सदाद की घाटी तक पहुँचे,

16 और उस सीमा के पास हमात बेरोता, और सिब्रैम जो दमिश्क और हमात की सीमाओं के बीच में है, और हसर्हत्तीकोन तक, जो हौरान की सीमा पर है।

17 यह सीमा समुद्र से लेकर दमिश्क की सीमा के पास के हसरेनोन तक पहुँचे, और उसकी उत्तरी ओर हमात हो। उत्तर की सीमा यही हो।

18 पूर्वी सीमा जिसकी एक ओर हौरान दमिश्क; और यरदन की ओर गिलाद और इस्राएल का देश हो; उत्तरी सीमा से लेकर पूर्वी ताल तक उसे मापना। पूर्वी सीमा तो यही हो।

19 दक्षिणी सीमा तामार से लेकर मरीबा-कादेश नामक सोते तक अर्थात् मिस्र के नाले तक, और महासागर तक पहुँचे। दक्षिणी सीमा यही हो।

20 पश्चिमी सीमा दक्षिणी सीमा से लेकर हमात की घाटी के सामने तक का महासागर हो। पश्चिमी सीमा यही हो।

21 "इस प्रकार देश को इस्राएल के गोत्रों के अनुसार आपस में बाँट लेना।

22 इसको आपस में और उन परदेशियों के साथ बाँट लेना, जो तुम्हारे बीच रहते हुए बालकों को जन्माएँ। वे तुम्हारी दृष्टि में देशी इस्राएलियों के समान ठहरें, और तुम्हारे गोत्रों के बीच अपना-अपना भाग पाएँ।

23 जो परदेशी जिस गोत्र के देश में रहता हो, उसको वहीं भाग देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

## 48

### [22222222 2222 22222-222222]

1 "गोत्रों के भाग ये हों: उत्तरी सीमा से लगा हुआ हेतलोन के मार्ग के पास से हमात की घाटी तक, और दमिश्क की सीमा के पास के हसरेनान से उत्तर की ओर हमात के पास तक एक भाग दान का हो; और उसके पूर्वी ओर पश्चिमी सीमा भी हों।

2 दान की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक आशेर का एक भाग हो।

3 आशेर की सीमा से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक नप्ताली का एक भाग हो।

4 नप्ताली की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक मनश्शे का एक भाग।

5 मनश्शे की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक एप्रैम का एक भाग हो।

6 एप्रैम की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक रूबेन का एक भाग हो।

7 और रूबेन की सीमा से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक यहूदा का एक भाग हो।

### [222 22 22222 2222 22222 22 222222 2222]

8 "यहूदा की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक वह [2222222 222222 2222 2222]\* हो, जिसे तुम्हें अर्पण करना होगा, वह पच्चीस हजार बाँस चौड़ा और पूर्व से पश्चिम तक किसी एक गोत्र के भाग के तुल्य लम्बा हो, और उसके बीच में पवित्रस्थान हो।

9 जो भाग तुम्हें यहोवा को अर्पण करना होगा, उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बाँस और चौड़ाई दस हजार बाँस की हो।

† 47:10 [222222]: यह मृत सागर के पश्चिमी तट के मध्य स्थित था।

\* 48:8 [222222 222222 2222 2222]: यहाँ अर्पण किया हुआ भाग पुरोहितों, लेवियों, नगरों और प्रधानों को दिया गया भूभाग था। इन सब को पश्चिम से पूर्व तक वैसे ही फैला हुआ होना था जैसे अन्य गोत्रों का भाग था।



35 नगर के चारों ओर का घेरा अठारह हजार बाँस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम 'यहोवा शाम्मा' रहेगा।”









समान हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा; और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया।

36 “यह स्वप्न है; और अब हम उसका अर्थ राजा को समझा देते हैं।

37 हे राजा, तू तो महाराजाधिराज है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझको राज्य, सामर्थ्य, शक्ति और महिमा दी है,

38 और जहाँ कहीं मनुष्य पाए जाते हैं, वहाँ उसने उन सभी को, और मैदान के जीव-जन्तु, और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिए हैं; और तुझको उन सब का अधिकारी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है।

39 तेरे बाद एक राज्य उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिसमें सारी पृथ्वी आ जाएगी।

40 और चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा; लोहे से तो सब वस्तुएँ चूर-चूर हो जाती और पिस जाती हैं; इसलिए जिस भाँति लोहे से वे सब कुचली जाती हैं, उसी भाँति, उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर-चूर होकर पिस जाएगा।

41 और तूने जो मूर्ति के पाँवों और उनकी उँगलियों को देखा, जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं, इससे वह चौथा राज्य बटा हुआ होगा; तो भी उसमें लोहे का सा कड़ापन रहेगा, जैसे कि तूने कुम्हार की मिट्टी के संग लोहा भी मिला हुआ देखा था।

42 और जैसे पाँवों की उँगलियाँ कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं, इसका अर्थ यह है, कि वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल होगा।

43 और तूने जो लोहे को कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा, इसका अर्थ यह है, कि उस राज्य के लोग एक दूसरे मनुष्यों से मिले-जुले तो रहेंगे, परन्तु जैसे लोहा मिट्टी के साथ मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे।

44 और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा; (2:11:15)

45 जैसा तूने देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उखड़ा, और उसने लोहे, पीतल,

मिट्टी, चाँदी, और सोने को चूर-चूर किया, इसी रीति महान परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या-क्या होनेवाला है। न स्वप्न में और न उसके अर्थ में कुछ सन्देह है।”

46 इतना सुनकर नबूकदनेस्सर राजा ने मुँह के बल गिरकर दानिय्येल को दण्डवत् किया, और आज्ञा दी कि उसको भेंट चढ़ाओ, और उसके सामने सुगन्ध वस्तु जलाओ।

47 फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, “सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का परमेश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलनेवाला है, इसलिए तू यह भेद प्रगट कर पाया।” (2:10:17)

2:10:17 2:10:17 2:10:17 2:10:17 2:10:17

48 2:10:17 2:10:17 2:10:17 2:10:17 2:10:17 2:10:17, और उसको बहुत से बड़े-बड़े दान दिए; और यह आज्ञा दी कि वह बाबेल के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबेल के सब पंडितों पर मुख्य प्रधान बने।

49 तब दानिय्येल के विनती करने से राजा ने शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को बाबेल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त कर दिया; परन्तु दानिय्येल आप ही राजा के दरबार में रहा करता था।

### 3

2:3:1 2:3:1 2:3:1 2:3:1 2:3:1

1 नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिसकी ऊँचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छः हाथ की थी। और उसने उसको बाबेल के प्रान्त के दूरा नामक मैदान में खड़ा कराया।

2 तब नबूकदनेस्सर राजा ने अधिपतियों, हाकिमों, राज्यपालों, सलाहकारों, खजांचियों, न्यायियों, शास्त्रियों, आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारियों को बुलवा भेजा कि वे उस मूरत की प्रतिष्ठा में आएँ जो उसने खड़ी कराई थी।

3 तब अधिपति, हाकिम, राज्यपाल, सलाहकार, खजांची, न्यायी, शास्त्री आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारी नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूरत की प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए, और उस मूरत के सामने खड़े हुए।

4 तब ढिंढोरिये ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “हे देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालो, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि,

§ 2:48 2:48 2:48 2:48 2:48 2:48: अर्थात् राजा ने उसे सम्मानित पद दिया कि वह एक महान व्यक्ति कहलाए। वह परमेश्वर के अनुग्रह ही से बड़ा हुआ था। परमेश्वर ने उस पर असाधारण अनुग्रह प्रगट किया।













4 तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरुद्ध दोष ढूँढने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य था, और उसके काम में कोई भूल या दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध या दोष न पा सके।

5 तब वे लोग कहने लगे, “हम उस दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ और किसी विषय में उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे।”

6 तब वे अध्यक्ष और अधिपति राजा के पास उतावली से आए, और उससे कहा, “हे राजा दारा, तू युग-युग जीवित रहे।

7 राज्य के सारे अध्यक्षों ने, और हाकिमों, अधिपतियों, न्यायियों, और राज्यपालों ने आपस में सम्मति की है, कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि तीस दिन तक जो कोई, हे राजा, ~~२२२२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२\*~~, वह सिंहों की माँद में डाल दिया जाए।

8 इसलिए अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर, जिससे यह बात मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार अदल-बदल न हो सके।”

9 तब दारा राजा ने उस आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिया।

~~२२२२२२ २२ २२२२२ २२२ २२२२२२२२२२~~

10 जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी ऊपरी कोठरी की खिड़कियाँ यरूशलेम की ओर खुली रहती थीं, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा।

11 तब उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर के सामने विनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया।

12 तब वे राजा के पास जाकर, उसकी राजआज्ञा के विषय में उससे कहने लगे, “हे राजा, क्या तूने ऐसे आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया कि तीस दिन तक जो कोई तुझे छोड़ किसी मनुष्य या देवता से विनती करेगा, वह सिंहों की माँद में डाल दिया जाएगा?” राजा ने उत्तर दिया, “हाँ, मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार यह बात स्थिर है।”

\* 6:7 ~~२२२२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२ २२२२~~: कोई भी चाहे वह किसी भी बड़े पद पर हो, यहाँ मुख्य उद्देश्य दानिय्येल को अपमानित करना था परन्तु उसके लिए एक सार्वभौमिक निषेध की आवश्यकता थी। † 6:17 ~~२२ २२ २२२२२२ २२२२२~~: सम्भवतः एक बड़ा समतल पत्थर शेर की गुफा को ढाँप सकता था और बच निकलने के लिए उसे हटाना दानिय्येल के लिए असंभव था। ‡ 6:23 ~~२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२२ २२२२२२~~: दानिय्येल को पूर्णतः सुरक्षित देखकर राजा आनन्द से भर गया, उसे अपने स्थान पर पुनः प्रतिष्ठित किया जा सकता है, और राज्य में फिर से उपयोगी हो सकता है।

13 तब उन्होंने राजा से कहा, “यहूदी बंधुओं में से जो दानिय्येल है, उसने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और न तेरे हस्ताक्षर किए हुए आज्ञापत्र की ओर; वह दिन में तीन बार विनती किया करता है।”

14 यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानिय्येल को बचाने के उपाय सोचने लगा; और सूर्य के अस्त होने तक उसके बचाने का यत्न करता रहा।

15 तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, “हे राजा, यह जान रख, कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो-जो मनाही या आज्ञा राजा ठहराए, वह नहीं बदल सकती।”

16 तब राजा ने आज्ञा दी, और दानिय्येल लाकर सिंहों की माँद में डाल दिया गया। उस समय राजा ने दानिय्येल से कहा, “तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाए!”

17 ~~२२ २२ २२२२२२ २२२२२~~ उस माँद के मुँह पर रखा गया, और राजा ने उस पर अपनी अंगूठी से, और अपने प्रधानों की अँगूठियों से मुहर लगा दी कि दानिय्येल के विषय में कुछ बदलने न पाए।

~~२२२२२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२२~~

18 तब राजा अपने महल में चला गया, और उस रात को बिना भोजन पड़ा रहा; और उसके पास सुख-विलास की कोई वस्तु नहीं पहुँचाई गई, और उसे नींद भी नहीं आई।

19 भोर को पौ फटते ही राजा उठा, और सिंहों के माँद की ओर फुर्ती से चला गया।

20 जब राजा माँद के निकट आया, तब शोकभरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्येल से कहा, “हे दानिय्येल, हे जीविते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है?”

21 तब दानिय्येल ने राजा से कहा, “हे राजा, तू युग-युग जीवित रहे!

22 मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुँह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की; इसका कारण यह है, कि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैंने कोई भूल नहीं की।” (~~२२२२~~. 63:9, ~~२२२~~. 34:7)

23 तब ~~२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२२२२२ २२२२२२~~, दानिय्येल को माँद में से निकालने की आज्ञा दी। अतः

दानिय्येल माँद में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था।

24 तब राजा ने आज्ञा दी कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल की चुगली की थी, वे अपने-अपने बाल-बच्चों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों की माँद में डाल दिए जाएँ; और वे माँद की पेंदी तक भी न पहुँचे कि सिंहों ने उन पर झपटकर सब हड्डियों समेत उनको चबा डाला।

25 तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी के रहनेवाले देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों के पास यह लिखा, “तुम्हारा बहुत कुशल हो!

26 मैं यह आज्ञा देता हूँ कि जहाँ-जहाँ मेरे राज्य का अधिकार है, वहाँ के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सम्मुख काँपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीविता और युगानुयुग तक रहनेवाला परमेश्वर वही है; उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी।

(**2:27, 99:1-3**)

27 जिसने दानिय्येल को सिंहों से बचाया है, वही बचाने और छुड़ानेवाला है; और स्वर्ग में और पृथ्वी पर चिन्हों और चमत्कारों का प्रगट करनेवाला है।”

28 और दानिय्येल, दारा और कुसू फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में सुख-चैन से रहा।

## 7

1 बाबेल के राजा बेलशस्सर के राज्य के पहले वर्ष में, दानिय्येल ने पलंग पर स्वप्न देखा। तब उसने वह स्वप्न लिखा, और बातों का सारांश भी वर्णन किया।

2 दानिय्येल ने यह कहा, “मैंने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी आँधी चलने लगी।

(**7:1**)

3 तब समुद्र में से चार बड़े-बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए।

4 पहला जन्तु **2:22\*** के समान था और **2:22** के **2:22** के पर नीचे गए और वह भूमि पर से उठाकर, मनुष्य के समान पाँवों के बल खड़ा किया गया; और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया।

5 फिर मैंने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था, और एक पाँजर के बल उठा हुआ था, और उसके मुँह में

दाँतों के बीच तीन पसलियाँ थीं; और लोग उससे कह रहे थे, ‘उठकर बहुत माँस खा।’

6 इसके बाद मैंने दृष्टि की और देखा कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसको अधिकार दिया गया।

7 फिर इसके बाद मैंने स्वप्न में दृष्टि की और देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े-बड़े लोहे के दाँत हैं; वह सब कुछ खा डालता है और चूर-चूर करता है, और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है। और वह सब पहले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दस सींग हैं।

8 मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकला, और उसके बल से उन पहले सींगों में से तीन उखाड़े गए; फिर मैंने देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आँखें, और बड़ा बोल बोलनेवाला मुँह भी है।

9 “मैंने देखते-देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम-सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन के समान थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे।

(**2:14**)

10 उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों-लाख लोग उसके सामने हाजिर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं।

(**20:11, 12**)

11 उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते-देखते अन्त में देखा कि **2:22** के **2:22**, और उसका शरीर धधकती हुई आग में भस्म किया गया।

12 और बचे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया, परन्तु उनका प्राण कुछ समय के लिये बचाया गया।

13 मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए।

(**14:14**)

\* **7:4** **2:22**: पशुओं का राजा, नबूकदनेस्सर राजा का प्रतीक था। † **7:4** **2:22** **2:22** **2:22** **2:22** **2:22** **2:22**: उकाब के पंख सटीक रूप से उस राज्य की तीव्र विजय को दर्शाते हैं। ‡ **7:11** **2:22** **2:22** **2:22** **2:22** **2:22** **2:22**: अर्थात् यहाँ पर यह दर्शाया गया है कि राज्य का विनाश वैसे होगा जैसा उस जन्तु का शरीर नष्ट हो गया था।

14 तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा। (2/2/2/2/2. 11:15)

2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2

15 “और मुझ दानिय्येल का मन विकल हो गया, और जो कुछ मैंने देखा था उसके कारण मैं घबरा गया।

16 तब जो लोग पास खड़े थे, उनमें से एक के पास जाकर मैंने उन सारी बातों का भेद पूछा, उसने यह कहकर मुझे उन बातों का अर्थ बताया,

17 ‘उन चार बड़े-बड़े जन्तुओं का अर्थ चार राज्य हैं, जो पृथ्वी पर उदय होंगे।

18 परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएँगे और युगानुयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।’ (2/2/2/2/2. 7:27)

19 “तब मेरे मन में यह इच्छा हुई कि उस चौथे जन्तु का भेद भी जान लूँ जो और तीनों से भिन्न और अति भयंकर था और जिसके दाँत लोहे के और नख पीतल के थे; वह सब कुछ खा डालता, और चूर-चूर करता, और बचे हुए को पैरों से रौंद डालता था।

20 फिर उसके सिर में के दस सींगों का भेद, और जिस नये सींग के निकलने से तीन सींग गिर गए, अर्थात् जिस सींग की आँखें और बड़ा बोल बोलनेवाला मुँह और सब और सींगों से अधिक भयंकर था, उसका भी भेद जानने की मुझे इच्छा हुई। (2/2/2/2/2. 7:8)

21 “और मैंने देखा था कि वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर उस समय तक प्रबल भी हो गया,

22 जब तक 2/2 2/2/2 2/2/2/2/2/2/2/2 न आया, और परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे, और उन पवित्र लोगों के राज्याधिकारी होने का समय न आ पहुँचा। (2/2/2/2/2 19:28)

23 “उसने कहा, ‘उस चौथे जन्तु का अर्थ, एक चौथा राज्य है, जो पृथ्वी पर होकर और सब राज्यों से भिन्न होगा, और सारी पृथ्वी को नाश करेगा, और दाँवकर चूर-चूर करेगा।

24 और उन दस सींगों का अर्थ यह है, कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे, और उनके बाद उन पहलों से भिन्न एक और राजा उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा।

25 और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा, और समयों

और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन् 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2\* तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएँगे। (2/2/2/2/2. 13:6, 7)

26 परन्तु, तब न्यायी बैठेंगे, और उसकी प्रभुता छीनकर मिटाई और नाश की जाएगी; यहाँ तक कि उसका अन्त ही हो जाएगा।

27 तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।’ (2/2/2/2/2. 11:15)

28 “इस बात का वर्णन मैं अब कर चुका, परन्तु मुझ दानिय्येल के मन में बड़ी घबराहट बनी रही, और मैं भयभीत हो गया; और इस बात को मैं अपने मन में रखे रहा।”

## 8

2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2

1 बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे वर्ष में उस पहले दर्शन के बाद एक और बात मुझ दानिय्येल को दर्शन के द्वारा दिखाई गई।

2 जब मैं एलाम नामक प्रान्त में, शूशन नाम राजगढ़ में रहता था, तब मैंने दर्शन में देखा कि मैं ऊलै नदी के किनारे पर हूँ।

3 फिर मैंने आँख उठाकर देखा, कि उस नदी के सामने दो सींगवाला एक मेढा खड़ा है, उसके दोनों सींग बड़े हैं, परन्तु उनमें से एक अधिक बड़ा है, और जो बड़ा है, वह दूसरे के बाद निकला।

4 मैंने उस मेढे को देखा कि वह पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर सींग मारता है, और कोई जन्तु उसके सामने खड़ा नहीं रह सकता, और न उसके हाथ से कोई किसी को बचा सकता है; और वह अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता जाता था।

5 मैं सोच ही रहा था, तो फिर क्या देखा कि एक बकरा पश्चिम दिशा से निकलकर सारी पृथ्वी के ऊपर ऐसा फिरा कि चलते समय भूमि पर पाँव न छुआया और उस बकरे की आँखों के बीच एक देखने योग्य सींग था।

6 वह उस दो सींगवाले मेढे के पास जाकर, जिसको मैंने नदी के सामने खड़ा देखा था, उस पर जलकर अपने पूरे बल से लपका।

7 मैंने देखा कि वह मेढे के निकट आकर उस पर झुंझलाया; और मेढे को मारकर उसके दोनों सींगों को तोड़ दिया; और उसका सामना करने को मेढे का कुछ भी

§ 7:22 2/2 2/2/2 2/2/2/2/2/2/2/2: सींग के पूर्ण आकार में बढ़ने के बाद यह होना था जब संतों के साथ युद्ध के बाद उन पर प्रबल भी हो गए। \* 7:25 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2: अर्थात् साढ़े तीन वर्ष



1 मादी क्षयर्य का पुत्र दारा, जो कसदियों के देश पर राजा ठहराया गया था,

2 उसके राज्य के पहले वर्ष में, मुझ दानिय्येल ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि यरूशलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार, जो यिर्मयाह नबी के पास पहुँचा था, कुछ वर्षों के बीतने पर अर्थात् सत्तर वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी।

3 तब [222] [2222] [222] [22222] [222222222] [22] [22] [2222]\* गिडगिडाहट के साथ प्रार्थना करने लगा, और उपवास कर, टाट पहन, राख में बैठकर विनती करने लगा।

4 मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार प्रार्थना की और पाप का अंगीकार किया, “हे प्रभु, तू महान और भययोग्य परमेश्वर है, जो अपने प्रेम रखने और आज्ञा माननेवालों के साथ अपनी वाचा को पूरा करता और करुणा करता रहता है,

5 [22] [22222] [22] [22] [222], [22222222], [22222222] [22] [2222] [2222] [22], और तेरी आज्ञाओं और नियमों को तोड़ दिया है।

6 और तेरे जो दास नबी लोग, हमारे राजाओं, हाकिमों, पूर्वजों और सब साधारण लोगों से तेरे नाम से बातें करते थे, उनकी हमने नहीं सुनी। ([222] 9:34)

7 हे प्रभु, तू धर्मी है, परन्तु हम लोगों को आज के दिन लज्जित होना पड़ता है, अर्थात् यरूशलेम के निवासी आदि सब यहूदी, क्या समीप क्या दूर के सब इस्राएली लोग जिन्हें तूने उस विश्वासघात के कारण जो उन्होंने तेरे साथ किया था, देश-देश में तितर-बितर कर दिया है, उन सभी को लज्जित होना पड़ता है।

8 हे यहोवा, हम लोगों ने अपने राजाओं, हाकिमों और पूर्वजों समेत तेरे विरुद्ध पाप किया है, इस कारण हमको लज्जित होना पड़ता है।

9 परन्तु, यद्यपि हम अपने परमेश्वर प्रभु से फिर गए, तो भी तू दया का सागर और क्षमा की खान है।

10 हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की शिक्षा सुनने पर भी उस पर नहीं चले जो उसने अपने दास नबियों से हमको सुनाई। (2 [222] 18:12)

11 वरन् सब इस्राएलियों ने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया, और ऐसे हट गए कि तेरी नहीं सुनी। इस कारण जिस श्राप की चर्चा परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है, वह श्राप हम पर घट गया,

क्योंकि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है।

12 इसलिए उसने हमारे और हमारे न्यायियों के विषय जो वचन कहे थे, उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा किया है; यहाँ तक कि जैसी विपत्ति यरूशलेम पर पड़ी है, वैसी सारी धरती पर और कहीं नहीं पड़ी।

13 जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है, तो भी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिये न तो अपने अधर्म के कामों से फिरे, और न तेरी सत्य बातों पर ध्यान दिया।

14 इस कारण यहोवा ने सोच विचार कर हम पर विपत्ति डाली है; क्योंकि [22222] [222222222] [222222] [222222] [222] [2222] [22] [22] [222] [222] [222222] [22222] [22]; परन्तु हमने उसकी नहीं सुनी।

15 और अब, हे हमारे परमेश्वर, हे प्रभु, तूने अपनी प्रजा को मिस्र देश से, बलवन्त हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जो आज तक प्रसिद्ध है, परन्तु हमने पाप किया है और दुष्टता ही की है।

16 हे प्रभु, हमारे पापों और हमारे पूर्वजों के अधर्म के कामों के कारण यरूशलेम की और तेरी प्रजा की, और हमारे आस-पास के सब लोगों की ओर से नामधराई हो रही है; तो भी तू अपने सब धार्मिकता के कामों के कारण अपना क्रोध और जलजलाहट अपने नगर यरूशलेम पर से उतार दे, जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है।

17 हे हमारे परमेश्वर, अपने दास की प्रार्थना और गिडगिडाहट सुनकर, अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका; हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त यह कर।

18 हे मेरे परमेश्वर, कान लगाकर सुन, आँख खोलकर हमारी उजड़ी हुई दशा और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है; क्योंकि हम जो तेरे सामने गिडगिडाकर प्रार्थना करते हैं, इसलिए अपने धार्मिकता के कामों पर नहीं, वरन् तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रखकर करते हैं।

19 हे प्रभु, सुन ले; हे प्रभु, पाप क्षमा कर; हे प्रभु, ध्यान देकर जो करना है उसे कर, विलम्ब न कर; हे मेरे परमेश्वर, तेरा नगर और तेरी प्रजा तेरी ही कहलाती है; इसलिए अपने नाम के निमित्त ऐसा ही कर।”

[22222] [222222222] [22] [22222222222222]

\* 9:3 [222] [2222] [222] [22222] [222222222] [22] [22] [2222]: अर्थात् यरूशलेम की ओर करके जहाँ परमेश्वर निवास करता था, पृथ्वी पर उसका पवित्र निवास-स्थान। † 9:5 [22] [22222] [22] [22] [222], [22222222], [22222222] [22] [22222] [22222] [22]: यद्यपि दानिय्येल इस समय अकेला था, वह सब की ओर से प्रार्थना कर रहा था, निःसन्देह वह बन्धुवाई से पूर्ण उस राष्ट्र के अपराधों को स्मरण कर रहा था जिनके कारण वह नगर और परमेश्वर का मन्दिर नष्ट हुए थे। ‡ 9:14 [22222] [222222222] [222222] [22222] [222] [2222] [22] [22] [222] [222] [222222] [222222] [22]: परमेश्वर को उसके नियमों तथा उसके व्यवहार में न्यायनिष्ठ माना गया है और हमारे कष्टों का कारण हमारे पाप हैं।

20 इस प्रकार मैं प्रार्थना करता, और अपने और अपने इस्राएली जातिभाइयों के पाप का अंगीकार करता हुआ, अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख उसके पवित्र पर्वत के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करता ही था,

21 तब वह पुरुष गब्रिएल जिसे मैंने उस समय देखा जब मुझे पहले दर्शन हुआ था, उसने वेग से उड़ने की आज्ञा पाकर, साँझ के अन्नबलि के समय मुझ को छू लिया; और मुझे समझाकर मेरे साथ बातें करने लगा। (22:19)

22 उसने मुझसे कहा, “हे दानियेल, मैं तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को अभी निकल आया हूँ।

23 जब तू गिड़गिड़ाकर विनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिए मैं तुझे बताने आया हूँ, क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है; इसलिए उस विषय को समझ ले और दर्शन की बात का अर्थ जान ले।

24 “तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युग-युग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र स्थान का अभिषेक किया जाए।

25 इसलिए यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।

26 और उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा: और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नाश तो करेगी, परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तो भी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठाना गया है।

27 और वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग 22:22 22:22 22:22 22:22, परन्तु आधे सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी और निश्चय से ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।”

## 10

22:22 22:22 22:22 22:22

1 फारस देश के राजा कुसू के राज्य के तीसरे वर्ष में दानियेल पर, जो बेलतशस्सर भी कहलाता है, एक बात प्रगट की गई। और वह बात सच थी कि बड़ा युद्ध होगा। उसने इस बात को जान लिया, और उसको इस देखी हुई बात की समझ आ गई।

2 उन दिनों, मैं 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22\*।

3 उन तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, मैंने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न माँस या दाखमधु अपने मुँह में रखा, और न अपनी देह में कुछ भी तेल लगाया।

4 फिर पहले महीने के चौबीसवें दिन को जब मैं हिद्केल नाम नदी के तट पर था,

5 तब मैंने आँखें उठाकर देखा, कि सन का वस्त्र पहने हुए, और ऊफाज देश के कुन्दन से कमर बाँधे हुए एक पुरुष खड़ा है। (22:22: 1:13)

6 उसका शरीर फीरोजा के समान, उसका मुख बिजली के समान, उसकी आँखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बाहें और पाँव चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनों के शब्द भीड़ों के शब्द का सा था। (22:22: 1:14)

7 उसको केवल मुझ दानियेल ही ने देखा, और मेरे संगी मनुष्यों को उसका कुछ भी दर्शन न हुआ; परन्तु वे बहुत ही थरथराने लगे, और छिपने के लिये भाग गए।

8 तब मैं अकेला रहकर यह अद्भुत दर्शन देखता रहा, इससे मेरा बल जाता रहा; मैं भयातुर हो गया, और मुझ में कुछ भी बल न रहा।

9 तो भी मैंने उस पुरुष के वचनों का शब्द सुना, और जब वह मुझे सुन पड़ा तब मैं मुँह के बल गिर गया और गहरी नींद में भूमि पर आँधे मुँह पड़ा रहा।

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

10 फिर किसी ने अपने हाथ से मेरी देह को छुआ, और मुझे उठाकर घुटनों और हथेलियों के बल थरथराते हुए बैठा दिया।

11 तब उसने मुझसे कहा, “हे दानियेल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूँ।” जब उसने मुझसे यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा।

§ 9:27 22:22 22:22 22:22 22:22: “वह सद्बद्ध करेगा” यहाँ भाव यह है कि वह बल देगा, या स्थिरता प्रदान करेगा या दृढ़ एवं निश्चित करेगा।

\* 10:2 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22: मैं स्वयं को पीड़ित कर रहा था। अर्थात् उसने इस समय को एक असामान्य उपवास का समय रखा, वह दुःखी और व्याकुल था।

12 फिर उसने मुझसे कहा, “हे दानियेल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तूने समझने-बुझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। (2:12-13) 12:1)

13 फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिए मैं फारस के राजाओं के पास रहा,

14 और अब मैं तुझे समझाने आया हूँ, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन तूने देखा है, वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा।”

15 जब वह पुरुष मुझसे ऐसी बातें कह चुका, तब मैंने भूमि की ओर मुँह किया और चुप रह गया।

16 तब मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे होंठ छुए, और मैं मुँह खोलकर बोलने लगा। और जो मेरे सामने खड़ा था, उससे मैंने कहा, “हे मेरे प्रभु, दर्शन की बातों के कारण मुझ को पीड़ा-सी उठी, और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। (2:12-13) 1:9)

17 इसलिए प्रभु का दास, अपने प्रभु के साथ कैसे बातें कर सकता है? क्योंकि मेरी देह में न तो कुछ बल रहा, और 2:12-13 2:12 2:12 2:12†”

18 तब मनुष्य के समान किसी ने मुझे छूकर फिर मेरा हियाव बन्धाया।

19 और उसने कहा, “हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे।” जब उसने यह कहा, तब मैंने हियाव बाँधकर कहा, “हे मेरे प्रभु, अब कह, क्योंकि तूने मेरा हियाव बन्धाया है।” (2:12) 41:10)

20 तब उसने कहा, “क्या तू जानता है कि मैं किस कारण तेरे पास आया हूँ? अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूँगा; और जब मैं निकलूँगा, तब यूनान का प्रधान आएगा।

21 और जो कुछ सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है, वह मैं तुझे बताता हूँ; उन प्रधानों के विरुद्ध, तुम्हारे प्रधान मीकाएल को छोड़, मेरे संग स्थिर रहनेवाला और कोई भी नहीं है।

## 11

1 “दारा नामक मादी राजा के राज्य के पहले वर्ष में उसको हियाव दिलाने और बल देने के लिये मैं खड़ा हो गया।

2 “और अब मैं तुझको सच्ची बात बताता हूँ। देख, फारस के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे; और चौथा राजा उन सभी से अधिक धनी होगा; और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा, तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभारेगा।

3 उसके बाद एक पराक्रमी राजा उठकर अपना राज्य बहुत बढ़ाएगा, और अपनी इच्छा के अनुसार ही काम किया करेगा।

4 और जब वह बड़ा होगा, तब उसका राज्य टूटेगा और चारों दिशाओं में बटकर अलग-अलग हो जाएगा; और न तो उसके राज्य की शक्ति ज्यों की त्यों रहेगी और न उसके वंश को कुछ मिलेगा; क्योंकि उसका राज्य उखड़कर, उनकी अपेक्षा और लोगों को प्राप्त होगा।

2:12 2:12 2:12-13 2:12 2:12-13 2:12 2:12-13 2:12

5 “तब 2:12-13 2:12 2:12-13” बल पकड़ेगा; परन्तु उसका एक हाकिम उससे अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा; यहाँ तक कि उसकी प्रभुता बड़ी हो जाएगी।

6 कई वर्षों के बीतने पर, वे दोनों आपस में मिलेंगे, और दक्षिण देश के राजा की बेटी उत्तर देश के राजा के पास शान्ति की वाचा बाँधने को आएगी; परन्तु 2:12-13 2:12-13 2:12-13†, और न वह राजा और न उसका नाम रहेगा; परन्तु वह स्त्री अपने पहुँचानेवालों और अपने पिता और अपने सम्भालनेवालों समेत अलग कर दी जाएगी।

7 “फिर उसकी जड़ों में से एक डाल उत्पन्न होकर उसके स्थान में बढ़ेगी; वह सेना समेत उत्तर के राजा के गढ़ में प्रवेश करेगा, और उनसे युद्ध करके प्रबल होगा।

8 तब वह उसके देवताओं की ढली हुई मूर्तों, और सोने-चाँदी के बहुमूल्य पात्रों को छीनकर मिस्र में ले जाएगा; इसके बाद वह कुछ वर्ष तक उत्तर देश के राजा के विरुद्ध हाथ रोके रहेगा।

9 तब वह राजा दक्षिण देश के राजा के देश में आएगा, परन्तु फिर अपने देश में लौट जाएगा।

10 “उसके पुत्र झगड़ा मचाकर बहुत से बड़े-बड़े दल इकट्ठे करेंगे, और उमड़नेवाली नदी के समान आकर देश के बीच होकर जाएँगे, फिर लौटते हुए उसके गढ़ तक झगड़ा मचाते जाएँगे।

11 तब दक्षिण देश का राजा चिढ़ेगा, और निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध करेगा, और वह राजा

† 10:17 2:12-13 2:12 2:12-13 2:12 2:12-13: अर्थात् वह पूर्णतः अभिभूत होकर धराशायी था। वह परमेश्वर के पास से आनेवाले के समक्ष बोलने योग्य न था। \* 11:5 2:12-13 2:12 2:12-13: अर्थात् मिस्र का राजा † 11:6 2:12-13 2:12-13 2:12 2:12-13: अर्थात् वह सीरिया को इस शादी के गठबंधन द्वारा, अपने नियंत्रण में लाने के महत्वाकांक्षी उद्देश्य में समृद्ध नहीं होगा।







दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपथ खाकर कहा, “यह दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी; और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते-टूटते समाप्त हो जाएगी, तब ये बातें पूरी होंगी।” (१२:१२-१३, 10:5-7)

8 यह बात मैं सुनता तो था परन्तु कुछ न समझा। तब मैंने कहा, “हे मेरे प्रभु, इन बातों का अन्तफल क्या होगा?”

9 उसने कहा, “हे दानिय्येल चला जा; क्योंकि ये बातें अन्त समय के लिये बन्द हैं और इन पर मुहर दी हुई है।

10 १२:१२-१३, और स्वच्छ हो जाएँगे; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा; परन्तु जो बुद्धिमान है वे ही समझेंगे।

11 जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी, और वह धिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्थापित की जाएगी, तब से बारह सौ नब्बे दिन बीतेंगे।

12 क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन के अन्त तक भी पहुँचे।

13 अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और तू विश्राम करता रहेगा; और उन दिनों के अन्त में तू अपने निज भाग पर खड़ा होगा।”

† 12:10 १२:१२-१३, और स्वच्छ हो जाएँगे; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा; परन्तु जो बुद्धिमान है वे ही समझेंगे। भविष्य में अर्थात् वहाँ एक प्रणाली शुरू की जाएगी जिसके द्वारा कई शुद्ध हो जाएँगे, और पवित्र बनाये जाएँगे।

## होशे

22222

होशे की पुस्तक के अधिकांश सन्देश होशे द्वारा कहे गए थे। हम नहीं जानते कि होशे ने स्वयं ही ये वचन लिखे थे। अति सम्भव है कि उसके अनुयायियों ने विश्वास करके कि होशे के वचन परमेश्वर प्रदत्त हैं, उन्हें लिख लिया था। होशे का अर्थ है, “उद्धार।” अन्य किसी भी भविष्यद्वक्ता से अधिक होशे ने अपने सन्देशों को अपने व्यक्तिगत जीवन से संयोजित किया था। विश्वासघाती स्त्री से जान बूझकर विवाह करना, अपनी सन्तान को ऐसे नाम देना जो इस्राएल के दण्ड के प्रतीक थे। होशे की भविष्यद्वक्ता के वचन उसके पारिवारिक जीवन से प्रस्फुटित थे।

2222 2222 222 222222

लगभग 750 - 710 ई. पू.

होशे के सन्देश एकत्र करके संपादित किए गए और उनकी प्रतिलिपि तैयार की गई थी। यह तो स्पष्ट नहीं है कि यह प्रक्रिया कब पूरी हुई परन्तु सम्भावना यह है कि यरूशलेम के पतन से पूर्व यह संकलन कार्य पूरा हो गया था।

22222222

होशे के सन्देश को सुननेवाले मूल श्रोतागण उत्तरी राज्य इस्राएल था। जब उनका पतन हुआ तब उसकी भविष्यद्वक्ताओं को दण्ड की चेतावनी स्वरूप सुरक्षित रखा गया- मन फिराव की पुकार और पुनरुद्धार की प्रतिज्ञा।

2222222222

होशे की पुस्तक का उद्देश्य था कि इस्राएलियों को वरन् हमें भी चिंताया जाए कि परमेश्वर स्वामिभक्ति चाहता है। यहोवा ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और वह अखण्ड स्वामिभक्ति चाहता है। पाप का दण्ड मिलता है। होशे ने पीडादायक परिणामों- आक्रमण एवं दासत्व- की भविष्यद्वक्ता की थी। परमेश्वर मनुष्य नहीं कि निष्ठा निभाने की प्रतिज्ञा करके तोड़ दे। इस्राएल के विश्वासघात के उपरान्त भी परमेश्वर उनसे प्रेम निभाता रहा- उनके पुनरुद्धार का उपाय किया। होशे और गोमेर का विवाह जो एक महत्वपूर्ण उपमा है, उसके द्वारा मूर्तिपूजक देश इस्राएल के लिए परमेश्वर का प्रेम दर्शाया गया है। इस पुस्तक के विषय हैं, पाप, दण्ड और क्षमाशील प्रेम।

2222 22222

अविश्वासयोग्य  
रूपरेखा

1. होशे की विश्वासघाती पत्नी — 1:1-11
2. इस्राएल के लिए परमेश्वर का दण्ड एवं न्याय — 2:1-23
3. परमेश्वर अपने लोगों का उद्धारक है — 3:1-5
4. इस्राएल का विश्वासघात एवं दण्ड — 4:1-10:15
5. इस्राएल के प्रति परमेश्वर का प्रेम और पुनरुद्धार — 11:1-14:9

1 यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के दिनों में और इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों में, यहोवा का वचन बेरी के पुत्र 222222\* के पास पहुँचा।

22222 22 22222222

2 जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहले-पहल बातें की, तब उसने होशे से यह कहा, “जाकर एक वेश्या को अपनी पत्नी बना ले, और उसके कुकर्म के बच्चों को अपने बच्चे कर ले, क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे चलना छोड़कर वेश्या का सा बहुत काम करता है।”

3 अतः उसने जाकर दिबलैम की बेटी गोमेर को अपनी पत्नी कर लिया, और वह उससे गर्भवती हुई और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ।

4 तब यहोवा ने उससे कहा, “22222 2222 2222222222 2222; क्योंकि थोड़े ही काल में मैं यहू के घराने को यिज्जेल की हत्या का दण्ड दूँगा, और मैं इस्राएल के घराने के राज्य का अन्त कर दूँगा।

5 उस समय मैं यिज्जेल की तराई में इस्राएल के धनुष को तोड़ डालूँगा।”

6 वह स्त्री फिर गर्भवती हुई और उसके एक बेटी उत्पन्न हुई। तब यहोवा ने होशे से कहा, “उसका नाम 22222222222222 रख; क्योंकि मैं इस्राएल के घराने पर फिर कभी दया करके उनका अपराध किसी प्रकार से क्षमा न करूँगा। (1 222. 2:10)

7 परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया करूँगा, और उनका उद्धार करूँगा; उनका उद्धार मैं धनुष या तलवार या युद्ध या घोड़ों या सवारों के द्वारा नहीं, परन्तु उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा करूँगा।” (222222. 3:4,5)

8 जब उस स्त्री ने लोरुहामा का दूध छुड़ाया, तब वह गर्भवती हुई और उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

\* 1:1 22222: अर्थात् उद्धार या परमेश्वर बचाता है। इस भविष्यद्वक्ता का नाम वही है जो हमारे प्रभु यीशु का है † 1:4 22222 2222 2222222222  
222: इसका मुख्य अर्थ है, परमेश्वर छितराएगा ‡ 1:6 22222222222: इस नाम का अर्थ है “करुणा के बिना”

9 तब यहोवा ने कहा, “**2:22 2:23 2:24 2:25 2:26**”; क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो, और न मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।”

**2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**

10 तो भी इस्राएलियों की गिनती समुद्र की रेत की सी हो जाएगी, जिनका मापना-गिनना अनहोना है; और जिस स्थान में उनसे यह कहा जाता था, “तुम मेरी प्रजा नहीं हो,” उसी स्थान में वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। (**2:27 9:26-28, 1 2:2 2:10**)

11 तब यहूदी और इस्राएली दोनों इकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएँगे; क्योंकि यिज्जेल का दिन प्रसिद्ध होगा।

## 2

1 इसलिए तुम लोग अपने भाइयों से अम्मी और अपनी बहनों से रुहामा कहो। (**1 2:2 2:10**)

**2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**

2 “अपनी माता से विवाद करो, विवाद क्योंकि वह मेरी स्त्री नहीं, और न मैं उसका पति हूँ। वह अपने मुँह पर से अपने छिनालपन को और अपनी छातियों के बीच से व्यभिचारों को अलग करे;

3 नहीं तो मैं उसके वस्त्र उतारकर उसको जन्म के दिन के समान नंगी कर दूँगा, और उसको मरुस्थल के समान और मरुभूमि सरीखी बनाऊँगा, और उसे प्यास से मार डालूँगा।

4 उसके बच्चों पर भी मैं कुछ दया न करूँगा, क्योंकि वे कुकर्म के बच्चे हैं।

5 उनकी माता ने छिनाला किया है; जिसके गर्भ में वे पड़े, उसने लज्जा के योग्य काम किया है। उसने कहा, ‘मेरे यार जो मुझे रोटी-पानी, ऊन, सन, तेल और मद्य देते हैं, मैं उन्हीं के पीछे चलूँगी।’

6 इसलिए देखो, मैं उसके मार्ग को काँटों से घेरूँगा, और ऐसा बाड़ा खड़ा करूँगा कि वह राह न पा सकेगी।

7 वह अपने यारों के पीछे चलने से भी उन्हें न पाएगी; और उन्हें ढूँढने से भी न पाएगी। तब वह कहेगी, ‘मैं अपने पहले पति के पास फिर लौट जाऊँगी, क्योंकि मेरी पहली दशा इस समय की दशा से अच्छी थी।’

8 वह यह नहीं जानती थी, कि अन्न, नया दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता था, और उसके लिये वह चाँदी

सोना जिसको वे बाल देवता के काम में ले आते हैं, मैं ही बढ़ाता था।

9 इस कारण मैं अन्न की ऋतु में अपने अन्न को, और नये दाखमधु के होने के समय में अपने नये दाखमधु को हर लूँगा; और अपना ऊन और सन भी जिनसे वह अपना तन ढाँपती है, मैं छीन लूँगा।

10 अब मैं उसके यारों के सामने उसके तन को उघाड़ूँगा, और मेरे हाथ से कोई उसे छुड़ा न सकेगा।

11 और मैं उसके पर्व, नये चाँद और विश्रामदिन आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूँगा।

12 **2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**, जिनके विषय वह कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति है जिसे मेरे यारों ने मुझे दी है, उन्हें ऐसा उजाड़ूँगा कि वे जंगल से हो जाएँगे, और वन-पशु उन्हें चर डालेंगे।

13 वे दिन जिनमें वह बाल देवताओं के लिये धूप जलाती, और नत्थ और हार पहने अपने यारों के पीछे जाती और मुझ को भूले रहती थी, उन दिनों का दण्ड मैं उसे दूँगा, यहोवा की यही वाणी है।

**2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**

14 “इसलिए देखो, मैं उसे मोहित करके जंगल में ले जाऊँगा, और वहाँ उससे शान्ति की बातें कहूँगा।

15 वहीं मैं उसको दाख की बारियाँ दूँगा, और आकोर की तराई को आशा का द्वार कर दूँगा और वहाँ वह मुझसे ऐसी बातें कहेगी जैसी अपनी जवानी के दिनों में अर्थात् मिस्र देश से चले आने के समय कहती थी।

16 और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे पति कहेगी और फिर बाली न कहेगी।

17 क्योंकि भविष्य में मैं उसे बाल देवताओं के नाम न लेने दूँगा; और न उनके नाम फिर स्मरण में रहेंगे।

18 और उस समय मैं उनके लिये वन-पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेंगनेवाले जन्तुओं के साथ वाचा बाँधूँगा, और धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उनके देश से दूर कर दूँगा; और ऐसा करूँगा कि वे लोग निडर सोया करेंगे।

19 मैं सदा के लिये तुझे अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूँगा, और यह प्रतिज्ञा धार्मिकता, और न्याय, और करुणा, और दया के साथ करूँगा।

20 यह सच्चाई के साथ की जाएगी, और **2:2 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**।

§ 1:9 **2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**: अर्थात् मेरे लोग नहीं। इस तीसरे पुत्र का नाम अन्तिम दण्ड की प्रबलता व्यक्त करता है। \* 2:12 **2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**: इससे पहले परमेश्वर ने उनके मौसमी फलों को उजाड़ने की चेतावनी दी थी, अब वह कहता है कि वह उनके भविष्य की सम्पूर्ण आशा समाप्त कर देगा, फलों की ही नहीं परन्तु उनके वृक्षों को भी नष्ट कर देगा। † 2:20 **2:2 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32**: परमेश्वर को इस प्रकार जानना, परमेश्वर के सदाचार एवं प्रेम के कारण ही होगा। हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं क्योंकि उसने पहले हम से प्रेम किया। और परमेश्वर के सच्चे ज्ञान में उसका प्रेम शामिल है।

21 “यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं आकाश की सुनकर उसको उत्तर दूँगा, और वह पृथ्वी की सुनकर उसे उत्तर देगा;

22 और पृथ्वी अन्न, नये दाखमधु, और ताजे तेल की सुनकर उनको उत्तर देगी, और वे यिज्जेल को उत्तर देंगे।

23 मैं अपने लिये उसे देश में बोऊँगा, और लोरुहामा पर दया करूँगा, और लोअम्मी से कहूँगा, तू मेरी प्रजा है, और वह कहेगा, ‘हे मेरे परमेश्वर!’” (2/2/2. 9:25, 1 2/2. 2:10)

### 3

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2 2/2/2/2/2

1 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “अब जाकर एक ऐसी स्त्री से प्रीति कर, जो व्यभिचारिणी होने पर भी अपने प्रिय की प्यारी हो; क्योंकि उसी भाँति यद्यपि इस्राएली पराए देवताओं की ओर फिरे, और किशमिश की टिकियों से प्रीति रखते हैं, तो भी यहोवा उनसे प्रीति रखता है।”

2 तब मैंने एक स्त्री को चाँदी के पन्द्रह टुकड़े और डेढ़ होमेर जौ देकर मोल लिया।

3 मैंने उससे कहा, “तू बहुत दिन तक मेरे लिये बैठी रहना; और न तो छिनाला करना, और न किसी पुरुष की स्त्री हो जाना; और मैं भी तेरे लिये ऐसा ही रहूँगा।”

4 क्योंकि इस्राएली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना स्तम्भ, और बिना एपोद या गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे।

5 उसके बाद 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2\*, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएँगे।

### 4

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2

1 हे इस्राएलियों, यहोवा का वचन सुनो; इस देश के निवासियों के साथ यहोवा का मुकद्दमा है। इस देश में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करुणा और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है। (2/2/2/2/2. 6:10)

2 यहाँ श्राप देने, झूठ बोलने, वध करने, चुराने, और व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता; वे व्यवस्था की सीमा को लाँघकर कुकर्म करते हैं और खून ही खून होता रहता है।

\* 3:5 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 ... 2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2: इब्रानी में इस शब्द ढूँढ़ने का अर्थ है यत्न के साथ खोजना जैसे परमेश्वर को, यह धार्मिक खोज का बोध करवाता है। \* 4:13 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2: पहाड़ों की चोटियाँ स्वर्ग के अधिक निकट प्रतीत होती हैं, वहाँ की हवा अधिक स्वस्थ होती है, वहाँ अदृश्य परमेश्वर की उपासना करना प्राकृतिक भावना एवं निष्कपट भक्ति का सुझाव देता है।

3 इस कारण यह देश विलाप करेगा, और मैदान के जीव-जन्तुओं, और आकाश के पक्षियों समेत उसके सब निवासी कुम्हला जाएँगे; और समुद्र की मछलियाँ भी नाश हो जाएँगी।

4 देखो, कोई वाद-विवाद न करे, न कोई उलाहना दे, क्योंकि तेरे लोग तो याजकों से वाद-विवाद करनेवालों के समान हैं।

5 तू दिन दुपहरी ठोकर खाएगा, और रात को भविष्यद्वक्ता भी तेरे साथ ठोकर खाएगा; और मैं तेरी माता का नाश करूँगा।

6 मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तूने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिए मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊँगा। इसलिए कि तूने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को त्याग दिया है, मैं भी तेरे बाल-बच्चों को छोड़ दूँगा।

7 जैसे याजक बढ़ते गए, वैसे ही वे मेरे विरुद्ध पाप करते गए; मैं उनके वैभव के बदले उनका अनादर करूँगा।

8 वे मेरी प्रजा के पापबलियों को खाते हैं, और प्रजा के पापी होने की लालसा करते हैं।

9 इसलिए जो प्रजा की दशा होगी, वही याजक की भी होगी; मैं उनके चाल चलन का दण्ड दूँगा, और उनके कामों के अनुकूल उन्हें बदला दूँगा।

10 वे खाएँगे तो सही, परन्तु तृप्त न होंगे, और वेश्यागमन तो करेंगे, परन्तु न बढ़ेंगे; क्योंकि उन्होंने यहोवा की ओर मन लगाना छोड़ दिया है।

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2/2/2

11 वेश्यागमन और दाखमधु और ताजा दाखमधु, ये तीनों बुद्धि को भ्रष्ट करते हैं।

12 मेरी प्रजा के लोग काठ के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि छिनाला करानेवाली आत्मा ने उन्हें बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं।

13 बांज, चिनार और छोटे बांजवृक्षों की छाया अच्छी होती है, इसलिए 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2\*, और टीलों पर धूप जलाते हैं। इस कारण तुम्हारी बेटियाँ छिनाल और तुम्हारी बहुएँ व्यभिचारिणी हो गई हैं।

14 जब तुम्हारी बेटियाँ छिनाला और तुम्हारी बहुएँ व्यभिचार करें, तब मैं उनको दण्ड न दूँगा; क्योंकि





15 मैं उनको शिक्षा देता रहा और उनकी भुजाओं को बलवन्त करता आया हूँ, तो भी वे मेरे विरुद्ध बुरी कल्पना करते हैं।

16 वे फिरते तो हैं, परन्तु परमप्रधान की ओर नहीं; वे धोखा देनेवाले धनुष के समान हैं; इसलिए उनके हाकिम अपनी क्रोधभरी बातों के कारण तलवार से मारे जाएँगे। मिस्र देश में उनको उपहास में उड़ाए जाने का यही कारण होगा।

## 8

११११११११ ११ १११११-११११११

1 अपने मुँह में नरसिंगा लगा। वह उकाब के समान यहोवा के घर पर झपटेगा, क्योंकि मेरे घर के लोगों ने मेरी वाचा तोड़ी, और मेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है।

2 वे मुझसे पुकारकर कहेंगे, “हे हमारे परमेश्वर, हम इस्राएली लोग तुझे जानते हैं।”

3 परन्तु इस्राएल ने भलाई को मन से उतार दिया है; शत्रु उसके पीछे पड़ेगा।

4 वे राजाओं को ठहराते रहे, परन्तु मेरी इच्छा से नहीं। वे हाकिमों को भी ठहराते रहे, परन्तु मेरे अनजाने में। उन्होंने अपना सोना-चाँदी लेकर मूरतें बना लीं जिससे वे ही नाश हो जाएँ।

5 हे सामरिया, उसने तेरे बछड़े को मन से उतार दिया है, मेरा क्रोध उन पर भड़का है। वे निर्दोष होने में कब तक विलम्ब करेंगे?

6 यह इस्राएल से हुआ है। एक कारीगर ने उसे बनाया; वह परमेश्वर नहीं है। इस कारण सामरिया का वह बछड़ा टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

7 ११ १११११ १११११ ११११, ११ ११ १११११११ १११११११\*। उनके लिये कुछ खेत रहेगा नहीं न उनकी उपज से कुछ आटा होगा; और यदि हो भी तो परदेशी उसको खा डालेंगे।

8 इस्राएल निगला गया; अब वे अन्यजातियों में ऐसे निकम्मे ठहरे जैसे तुच्छ बर्तन ठहरता है।

9 क्योंकि वे अशुद्ध को ऐसे चले गए, जैसा जंगली गदहा झुण्ड से बिच्छू के रहता है; एप्रैम ने यारों को मजदूरी पर रखा है।

10 यद्यपि वे अन्यजातियों में से मजदूर बनाकर रखें, तो भी मैं उनको इकट्ठा करूँगा। और वे हाकिमों और राजा के बोझ के कारण घटने लगेंगे।

\* 8:7 ११ १११११ १११११ ११११, ११ ११ १११११११ १११११११: वे काटेंगे, “जैसे उन्होंने बोया है”, लेकिन एक भयानक वृद्धि के साथ। उन्होंने मूर्खता और व्यर्थता बोया, और केवल खालीपन और निराशा ही नहीं, बल्कि अचानक, अनूठा विनाश काटेंगे। † 8:14 ११११११११ ११ १११११ १११११ ११ १११११ ११: परमेश्वर उनका रचयिता था, सब वस्तुओं का सृजनहार होने के कारण ही नहीं, उनके एक जाति रूप के अस्तित्व का भी कर्ता था।

\* 9:4 १ १११११ १११११११ १११११ ११११११११: क्योंकि उनके पास परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप के लिए निर्धारित साधन नहीं रहे होंगे।

11 एप्रैम ने पाप करने को बहुत सी वेदियाँ बनाई हैं, वे ही वेदियाँ उसके पापी ठहरने का कारण भी ठहरीं।

12 मैं तो उनके लिये अपनी व्यवस्था की लाखों बातें लिखकर दिए, परन्तु वे उन्हें पराया समझते हैं।

13 वे मेरे लिये बलिदान तो करते हैं, और पशुबलि भी करते हैं, परन्तु उसका फल माँस ही है; वे आप ही उसे खाते हैं; परन्तु यहोवा उनसे प्रसन्न नहीं होता। अब वह उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा; वे मिस्र में लौट जाएँगे।

14 क्योंकि ११११११११ ११ १११११ ११११११ ११ १११११ ११† महल बनाए, और यहूदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है; परन्तु मैं उनके नगरों में आग लगाऊँगा, और उससे उनके गढ़ भस्म हो जाएँगे।

## 9

११११११११ ११ ११११ ११ ११११११

1 हे इस्राएल, तू देश-देश के लोगों के समान आनन्द में मगन मत हो! क्योंकि तू अपने परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी। तूने अन्न के हर एक खलिहान पर छिनाले की कमाई आनन्द से ली है।

2 वे न तो खलिहान के अन्न से तृप्त होंगे, और न कुण्ड के दाखमधु से; और नये दाखमधु के घटने से वे धोखा खाएँगे।

3 वे यहोवा के देश में रहने न पाएँगे; परन्तु एप्रैम मिस्र में लौट जाएगा, और वे अशुद्ध में अशुद्ध वस्तुएँ खाएँगे।

4 वे यहोवा के लिये दाखमधु का अर्घ न देंगे, और ११ १११११ ११११११११ १११११ ११११११११\*। उनकी रोटी शुक करनेवालों का सा भोजन ठहरेगी; जितने उसे खाएँगे सब अशुद्ध हो जाएँगे; क्योंकि उनकी भोजनवस्तु उनकी भूख बुझाने ही के लिये होगी; वह यहोवा के भवन में न आ सकेगी।

5 नियत समय के पर्व और यहोवा के उत्सव के दिन तुम क्या करोगे?

6 देखो, वे सत्यानाश होने के डर के मारे चले गए; परन्तु वहाँ मर जाएँगे और मिस्री उनके शव इकट्ठा करेंगे; और मोप के निवासी उनको मिट्टी देंगे। उनकी मनभावनी चाँदी की वस्तुएँ बिच्छू पेटों के बीच में पड़ेंगी, और उनके तम्बुओं में काँटे उगेंगे।



7 दण्ड के दिन आए हैं; बदला लेने के दिन आए हैं; और इस्राएल यह जान लेगा। उनके बहुत से अधर्म और बड़े द्वेष के कारण भविष्यद्वक्ता तो मूर्ख, और जिस पुरुष पर आत्मा उतरता है, वह बावला ठहरेगा। (21:22)

8 एप्रैम का पहरोआ मेरे परमेश्वर के साथ था; पर भविष्यद्वक्ता सब मार्गों में बहेलिये का फंदा है, और वह अपने परमेश्वर के घर में बैरी हुआ है।

9 वे गिबा के दिनों की भाँति अत्यन्त बिगड़े हैं; इसलिए परमेश्वर उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा।

10 मैंने 21:22-23 जैसे कोई जंगल में दाख पाए; और तुम्हारे पुरखाओं पर ऐसे दृष्टि की जैसे अंजीर के पहले फलों पर दृष्टि की जाती है। परन्तु उन्होंने बालपोर के पास जाकर अपने को लज्जा का कारण होने के लिये अर्पण कर दिया, और जिस पर मोहित हो गए थे, वे उसी के समान घिनौने हो गए।

11 एप्रैम का वैभव पक्षी के समान उड़ जाएगा; न तो किसी का जन्म होगा, न किसी को गर्भ रहेगा, और न कोई स्त्री गर्भवती होगी!

12 चाहे वे अपने बच्चों का पालन-पोषण कर बड़े भी करें, तो भी मैं उन्हें यहाँ तक निर्वंश करूँगा कि कोई भी न बचेगा। जब मैं उनसे दूर हो जाऊँगा, तब उन पर हाय!

13 जैसा मैंने सोर को देखा, वैसा एप्रैम को भी मनभाऊ स्थान में बसा हुआ देखा; तो भी उसे अपने बच्चों को घातक के सामने ले जाना पड़ेगा।

14 हे यहोवा, उनको दण्ड दे! तू क्या देगा? यह, कि उनकी स्त्रियों के गर्भ गिर जाएँ, और स्तन सूखे रहें।

15 उनकी सारी बुराई गिलगाल में है; वहीं मैंने उनसे घृणा की। उनके बुरे कामों के कारण मैं उनको अपने घर से निकाल दूँगा। और उनसे फिर प्रीति न रखूँगा, क्योंकि उनके सब हाकिम बलवा करनेवाले हैं।

16 एप्रैम मारा हुआ है, उनकी जड़ सूख गई, उनमें फल न लगेगा। चाहे उनकी स्त्रियाँ बच्चे भी जनें तो भी मैं उनके जन्मे हुए दुलारों को मार डालूँगा।

17 मेरा परमेश्वर उनको निकम्मा ठहराएगा, क्योंकि उन्होंने उसकी नहीं सुनी। वे अन्यजातियों के बीच मारे-मारे फिरेंगे।

## 10

21:22-23 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

† 9:10 21:22-23 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31: परमेश्वर द्वारा पाने का अर्थ यह नहीं कि उससे कुछ खो गया हो या वह जानता न हो कि वह कहाँ था और अकस्मात् ही उसे दिख गया हो जिसकी उसे आशा न थी। उसके सम्बंध के परिप्रेक्ष्य में इस्राएल भटक गया था जब परमेश्वर ने उन्हें पाया। जैसे प्रभु यीशु ने उडाऊ पुत्र की कहानी में बताया है नए नियम में। \* 10:7 21:22-23 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 मिट जाएगा। बुलबुला या असंख्य तिनके जो पानी पर तैरते हैं। वे नगण्यता तित्स्वार्ता, महत्त्वहीनता के रूपक हैं जो पानी में गहरे नहीं उतरते हैं।

1 इस्राएल एक लहलहाती हुई दाखलता सी है, जिसमें बहुत से फल भी लगे, परन्तु ज्यों-ज्यों उसके फल बढ़े, त्यों-त्यों उसने अधिक वेदियाँ बनाई जैसे-जैसे उसकी भूमि सुधरी, वैसे ही वे सुन्दर खम्भे बनाते गये।

2 उनका मन बटा हुआ है; अब वे दोषी ठहरेंगे। वह उनकी वेदियों को तोड़ डालेगा, और उनकी लाटों को टुकड़े-टुकड़े करेगा।

3 अब वे कहेंगे, “हमारे कोई राजा नहीं है, क्योंकि हमने यहोवा का भय नहीं माना; इसलिए राजा हमारा क्या कर सकता है?”

4 वे बातें बनाते और झूठी शपथ खाकर वाचा बाँधते हैं; इस कारण खेत की रेघारियों में धतूरे के समान दण्ड फूले फलेगा।

5 सामरिया के निवासी बेतावेन के बछड़े के लिये डरते रहेंगे, और उसके लोग उसके लिये विलाप करेंगे; और उसके पुजारी जो उसके कारण मगन होते थे उसके प्रताप के लिये इस कारण विलाप करेंगे क्योंकि वह उनमें से उठ गया है।

6 वह यारेब राजा की भेंट ठहरने के लिये अशशूर देश में पहुँचाया जाएगा। एप्रैम लज्जित होगा, और इस्राएल भी अपनी युक्ति से लजाएगा।

7 21:22-23 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

8 आवेन के ऊँचे स्थान जो इस्राएल के पाप हैं, वे नाश होंगे। उनकी वेदियों पर झड़बेरी, पेड़ और ऊँटकटारे उगेंगे; और उस समय लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, हमको छिपा लो, और टीलों से कि हम पर गिर पड़ो। (23:30, 24:9:6)

9 हे इस्राएल, तू गिबा के दिनों से पाप करता आया है; वे उसी में बने रहें; क्या वे गिबा में कुटिल मनुष्यों के संग लड़ाई में न फँसें?

10 जब मेरी इच्छा होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूँगा, और देश-देश के लोग उनके विरुद्ध इकट्ठे हो जाएँगे; क्योंकि वे अपने दोनों अधर्मों में फँसे हुए हैं।

11 एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो अन्न दाँवने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैंने उसकी सुन्दर गर्दन पर जूआ रखा है; मैं एप्रैम पर सवार चढ़ाऊँगा; यहूदा हल, और याकूब हँगा खीचेगा।

12 अपने लिये धार्मिकता का बीज बोओ, तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि

को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाएँ।  
(**2/2/2/2/2/2 4:3**)

13 तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है। और यह इसलिए हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था।

14 इस कारण तुम्हारे लोगों में हुल्लड़ उठेगा, और तुम्हारे सब गढ़ ऐसे नाश किए जाएँगे जैसा बेतर्बेल नगर युद्ध के समय शल्मन के द्वारा नाश किया गया; उस समय माताएँ अपने बच्चों समेत पटक दी गई थी।

15 तुम्हारी अत्यन्त बुराई के कारण बेतेल से भी इसी प्रकार का व्यवहार किया जाएगा। भोर होते ही इस्राएल का राजा पूरी रीति से मिट जाएगा।

## 11

**2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2**

1 जब इस्राएल बालक था, तब मैंने उससे प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। (**2/2/2/2/2 2:15**)

2 परन्तु जितना मैं उनको बुलाता था, उतना ही वे मुझसे भागते जाते थे; वे बाल देवताओं के लिये बलिदान करते, और खुदी हुई मूर्तों के लिये धूप जलाते गए।

3 मैं ही एप्रैम को पाँव-पाँव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था, परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करनेवाला मैं हूँ।

4 मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके सामने आहार रख दे, वैसा ही मैंने उनसे किया।

5 वह मिस्र देश में लौटने न पाएगा; अशशूर ही उसका राजा होगा, क्योंकि उसने मेरी ओर फिरने से इन्कार कर दिया है।

6 **2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2\***, और उनके बेटों को पूरा नाश करेगी; और यह उनकी युक्तियों के कारण होगा।

7 मेरी प्रजा मुझसे फिर जाने में लगी रहती है; यद्यपि वे उनको परमप्रधान की ओर बुलाते हैं, तो भी उनमें से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता।

8 हे एप्रैम, मैं तुझे क्यों छोड़ दूँ? हे इस्राएल, मैं कैसे तुझे शत्रु के वश में कर दूँ? मैं कैसे तुझे अदमा के समान छोड़ दूँ, और सबोयीम के समान कर दूँ? मेरा हृदय तो

उलट-पुलट हो गया, मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है।

9 मैं अपने क्रोध को भड़कने न दूँगा, और न मैं फिर एप्रैम को नाश करूँगा; क्योंकि मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूँ, मैं तेरे बीच में रहनेवाला पवित्र हूँ; मैं क्रोध करके न आऊँगा।

10 वे यहोवा के पीछे-पीछे चलेंगे; वह तो सिंह के समान गरजेगा; और तेरे लड़के पश्चिम दिशा से थरथराते हुए आएँगे।

11 वे मिस्र से चिड़ियों के समान और अशशूर के देश से पंडुकी की भाँति थरथराते हुए आएँगे; और मैं उनको उन्हीं के घरों में बसा दूँगा, यहोवा की यही वाणी है।

12 एप्रैम ने मिथ्या से, और इस्राएल के घराने ने छल से मुझे घेर रखा है; और यहूदा अब तक पवित्र और विश्वासयोग्य परमेश्वर की ओर चंचल बना रहता है।

## 12

**2/2/2/2/2 2/2 2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2**

1 एप्रैम वायु चराता और पुरवाई का पीछा करता रहता है; वह लगातार झूठ और उत्पात को बढ़ाता रहता है; वे अशशूर के साथ वाचा बाँधते और मिस्र में तेल भेजते हैं।

2 यहूदा के साथ भी यहोवा का मुकद्दमा है, और वह याकूब को उसके चाल चलन के अनुसार दण्ड देगा; उसके कामों के अनुसार वह उसको बदला देगा।

3 अपनी माता की कोख ही में उसने अपने भाई को अडंगा मारा, और बड़ा होकर वह परमेश्वर के साथ लड़ा।

4 वह दूत से लड़ा, और जीत भी गया, वह रोया और उसने गिड़गिड़ाकर विनती की। बेतेल में वह उसको मिला, और वहीं उसने हम से बातें की।

5 यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जिसका स्मरण यहोवा नाम से होता है।

6 इसलिए तू अपने परमेश्वर की ओर फिर; कृपा और न्याय के काम करता रह, और अपने परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह।

7 वह व्यापारी है, और उसके हाथ में छल का तराजू है; अंधेर करना ही उसको भाता है।

8 एप्रैम कहता है, "मैं धनी हो गया, मैंने सम्पत्ति प्राप्त की है; मेरे किसी काम में ऐसा अधर्म नहीं पाया गया जिससे पाप लगे।" (**2/2/2/2/2 3:17**)

\* 11:6 **2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2**: वह उन पर बल के साथ घूमते हुए हिंसा के साथ आ जाएगा, और उनके विनाश के लिए ठहरेगा।





## योएल

११११

पुस्तक में व्यक्त है कि इसका लेखक भविष्यद्वक्ता योएल था (योए. 1:1)। इस पुस्तक में निहित कुछ व्यक्तिगत विवरणों से परे हम योएल भविष्यद्वक्ता के बारे में कुछ अधिक नहीं जानते हैं। वह स्वयं को पतूएल का पुत्र कहता है और उसने यहूदा की प्रजा के लिए भविष्यद्वक्ता की थी। यरूशलेम के लिए उसकी गहन चिन्ता इस पुस्तक में व्यक्त है। योएल ने मन्दिर के पुरोहितों पर अनेक टिप्पणियाँ की हैं जो यहूदा में आराधना के केन्द्र के बारे में उसकी जानकारी को दर्शाती हैं (योए. 1:13-14; 2:14,17)।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 835 - 600 ई. पू.

योएल सम्भवतः पुराने नियम के इतिहास में फारसी युग का है। उस युग में फारसी राजा ने कुछ यहूदियों को स्वदेश लौटने की अनुमति दे दी थी और मन्दिर का पुनः निर्माण हो गया था। योएल मन्दिर का जानकार था, अतः उसे उसके पुनः निर्माण के बाद दिनांकित किया जाना चाहिए।

१११११११

इस्राएल की प्रजा एवं बाइबल के भावी पाठक

११११११११११

परमेश्वर दयालु है और मन फिराने वालों को क्षमा करता है। इस पुस्तक के मुख्य विषय दो घटनाएँ हैं। टिड्डियों का आक्रमण और आत्मा का अवतरण। इसकी आरम्भिक पूर्ति का संदर्भ पतरस ने दिया है- प्रेरितों के काम 2 में- पिन्तेकुस्त के दिन यह भविष्यद्वक्ता पूरी हुई थी।

११११ १११११

प्रभु का दिन

रूपरेखा

1. इस्राएल में टिड्डियों का आक्रमण — 1:1-20
2. परमेश्वर का दण्ड — 2:1-17
3. इस्राएल का पुनरुद्धार — 2:18-32
4. उसकी प्रजा में वास करनेवाली अन्यजातियों को दण्ड — 3:1-21

1 यहोवा का वचन जो पतूएल के पुत्र योएल के पास पहुँचा, वह यह है:

\* 1:5 ११ १११११११११, ११११ ११११: पापों के कारण पापी मूर्ख बन जाता है यह सब विवेक को निष्क्रिय बना देता है, आत्मा को अंधा कर देता है और अपनी ही बुराइयों के प्रति भावनारहित बनाता है। † 1:6 ११ ११११११: अर्थात् टिड्डियों की विशाल सेना

११११११११११ १११११११ ११११११

2 हे पुरनियों, सुनो, हे देश के सब रहनेवालों, कान लगाकर सुनो! क्या ऐसी बात तुम्हारे दिनों में, या तुम्हारे पुरखाओं के दिनों में कभी हुई है?

3 अपने बच्चों से इसका वर्णन करो और वे अपने बच्चों से, और फिर उनके बच्चे आनेवाली पीढ़ी के लोगों से।

4 जो कुछ गाजाम नामक टिड्डी से बचा; उसे अर्बे नामक टिड्डी ने खा लिया। और जो कुछ अर्बे नामक टिड्डी से बचा, उसे येलेक नामक टिड्डी ने खा लिया, और जो कुछ येलेक नामक टिड्डी से बचा, उसे हासील नामक टिड्डी ने खा लिया है।

5 १११ १११११११११, ११११ ११११\*, और रोओ; और हे सब दाखमधु पीनेवालों, नये दाखमधु के कारण हाय, हाय, करो; क्योंकि वह तुम को अब न मिलेगा।

6 देखो, मेरे देश पर १११ ११११११ ने चढाई की है, वह सामर्थी है, और उसके लोग अनगिनत हैं; उसके दाँत सिंह के से, और डाढ़ें सिंहनी की सी हैं। (१११११११. 9:7-10)

7 उसने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया, और मेरे अंजीर के वृक्ष को तोड़ डाला है; उसने उसकी सब छाल छीलकर उसे गिरा दिया है, और उसकी डालियाँ छिलने से सफेद हो गई हैं।

8 जैसे युवती अपने पति के लिये कमर में टाट बाँधे हुए विलाप करती है, वैसे ही तुम भी विलाप करो।

9 यहोवा के भवन में न तो अन्नबलि और न अर्घ आता है। उसके टहलुए जो याजक हैं, वे विलाप कर रहे हैं।

10 खेती मारी गई, भूमि विलाप करती है; क्योंकि अन्न नाश हो गया, नया दाखमधु सूख गया, तेल भी सूख गया है।

11 हे किसानों, लज्जित हो, हे दाख की बारी के मालियों, गेहूँ और जौ के लिये हाय, हाय करो; क्योंकि खेती मारी गई है

12 दाखलता सूख गई, और अंजीर का वृक्ष कुम्हला गया है अनार, खजूर, सेब, वरन्, मैदान के सब वृक्ष सूख गए हैं; और मनुष्य का हर्ष जाता रहा है।

13 हे याजकों, कमर में टाट बाँधकर छाती पीट-पीट के रोओ! हे वेदी के टहलुओ, हाय, हाय, करो। हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ, आओ, टाट ओढ़े हुए रात बिताओ! क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्घ अब नहीं आते।



















5 तब मैंने कहा, “हे परमेश्वर यहोवा, रुक जा! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कैसा निर्बल है।”

6 इसके विषय में भी यहोवा पछताया; और परमेश्वर यहोवा ने कहा, “ऐसी बात फिर न होगी।”

□□□□□

7 उसने मुझे यह भी दिखाया: मैंने देखा कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई किसी दीवार पर खड़ा है, और उसके हाथ में साहुल है।

8 और यहोवा ने मुझसे कहा, “हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है?” मैंने कहा, “एक साहुल।” तब परमेश्वर ने कहा, “देख, मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच में साहुल लगाऊँगा।”

9 मैं अब उनको न छोड़ूँगा। इसहाक के ऊँचे स्थान उजाड़, और इस्राएल के पवित्रस्थान सुनसान हो जाएँगे, और मैं यारोबाम के घराने पर तलवार खींचे हुए चढ़ाई करूँगा।”

□□□□ □□ □□□□□□□□

10 तब बेतेल के □□□□ □□□□□□□□\* ने इस्राएल के राजा यारोबाम के पास कहला भेजा, “आमोस ने इस्राएल के घराने के बीच में तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी की है; उसके सारे वचनों को देश नहीं सह सकता।

11 क्योंकि आमोस यह कहता है, ‘यारोबाम तलवार से मारा जाएगा, और इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बँधुआई में जाएगा।’”

12 तब अमस्याह ने आमोस से कहा, “हे दर्शी, यहाँ से निकलकर यहूदा देश में भाग जा, और वहीं रोटी खाया कर, और वहीं भविष्यद्वाणी किया कर;

13 परन्तु बेतेल में फिर कभी भविष्यद्वाणी न करना, क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और □□□□-□□□□ है।”

14 आमोस ने उत्तर देकर अमस्याह से कहा, “मैं न तो भविष्यद्वाक्ता था, और न भविष्यद्वाक्ता का बेटा; मैं तो गाय-बैल का चरवाहा, और गूलर के वृक्षों का छाँटनेवाला था,

15 और यहोवा ने मुझे भेड़-बकरियों के पीछे-पीछे फिरने से बुलाकर कहा, ‘जा, मेरी प्रजा इस्राएल से भविष्यद्वाणी कर।’

16 इसलिए अब तू यहोवा का वचन सुन, तू कहता है, ‘इस्राएल के विरुद्ध भविष्यद्वाणी मत कर; और इसहाक के घराने के विरुद्ध बार बार वचन मत सुना।’

17 इस कारण यहोवा यह कहता है: तेरी स्त्री नगर में वेश्या हो जाएगी, और तेरे बेटे-बेटियाँ तलवार से मारे जाएँगे, और तेरी भूमि डोरी डालकर बाँट ली जाएगी; और तू आप अशुद्ध देश में मरेगा, और इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बँधुआई में जाएगा।”

## 8

□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□

1 परमेश्वर यहोवा ने मुझ को यह दिखाया: कि, □□□□□□□□ □□ □□□□□□\* से भरी हुई एक टोकरी है।

2 और उसने कहा, “हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है?” मैंने कहा, “धूपकाल के फलों से भरी एक टोकरी।” तब यहोवा ने मुझसे कहा, “मेरी प्रजा इस्राएल का अन्त आ गया है; मैं अब उसको और न छोड़ूँगा।”

3 परमेश्वर यहोवा की वाणी है, “□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□, और शवों का बड़ा ढेर लगेगा; और सब स्थानों में वे चुपचाप फेंक दिए जाएँगे।”

4 यह सुनो, तुम जो दरिद्रों को निगलना और देश के नम्र लोगों को नष्ट करना चाहते हो,

5 जो कहते हो, “नया चाँद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें? और विश्रामदिन कब बीतेगा, कि हम अन्न के खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल को भारी कर दें, छल के तराजू से धोखा दे,

6 कि हम कंगालों को रुपया देकर, और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियाँ देकर मोल लें, और निकम्मा अन्न बेचें?”

7 यहोवा, जिस पर याकूब को घमण्ड करना उचित है, वही अपनी शपथ खाकर कहता है, “मैं तुम्हारे किसी काम को कभी न भूलूँगा।

8 क्या इस कारण भूमि न काँपेगी? क्या उन पर के सब रहनेवाले विलाप न करेंगे? यह देश सब का सब मिस्र की नील नदी के समान होगा, जो बढ़ती है, फिर लहरें मारती, और घट जाती है।”

9 परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, “□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□, और इस देश को दिन दुपहरी अंधियारा कर दूँगा। (□□□□□□□□ 27:45, □□. 15:33, □□□□□□ 23:44, 45)

10 मैं तुम्हारे पर्वों के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊँगा, और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके विलाप के गीत गवाऊँगा; मैं तुम सब की कमर में टाट बँधाऊँगा, और तुम सब के सिरों को मुँडाऊँगा; और ऐसा विलाप

\* 7:10 □□□□ □□□□□□□□: वह सम्भवतः प्रधान पुरोहित था हारून के क्रम में और परमेश्वर द्वारा नियुक्त † 7:13 □□□□-□□□□: अर्थात् परमेश्वर का मन्दिर \* 8:1 □□□□□□□□ □□ □□□□□□: अर्थात् अंजीर † 8:3 □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□: आनन्द का स्वर विलाप में बदल जाएगा, सब कुछ पूर्ण विशाद में बदल जाएगा। ‡ 8:9 □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□□: तीव्र प्रकाश के विपरीत अंधकार गहन और काला होगा।







ऊपर आनन्द करता, और उनके संकट के दिन बड़ा बोल बोलता।

13 तुझे उचित नहीं था कि मेरी प्रजा की विपत्ति के दिन तू उसके फाटक में घुसता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी दुर्दशा को देखता रहता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी धन-सम्पत्ति पर हाथ लगाता।

14 तुझे उचित नहीं था कि चौराहों पर उसके भागनेवालों को मार डालने के लिये खड़ा होता, और संकट के दिन उसके बचे हुएों को पकड़ाता।

15 क्योंकि ~~तूने~~ ~~जैसा~~ ~~तूने~~ ~~किया~~ ~~है~~, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा।

~~तूने~~ ~~जैसा~~ ~~तूने~~ ~~किया~~ ~~है~~

16 जिस प्रकार तूने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, उसी प्रकार से सारी जातियाँ लगातार पीती रहेंगी, वे पीएँगे और वे निगल जाएँगे, और ऐसी हो जाएँगी जैसी कभी हुई ही नहीं।

17 परन्तु उस समय सिव्योन पर्वत पर बचे हुए लोग रहेंगे, ओर वह पवित्रस्थान ठहरेगा; और याकूब का घराना अपने निज भागों का अधिकारी होगा।

18 तब याकूब का घराना आग, और यूसुफ का घराना लौ, और एसाव का घराना खूँटी बनेगा; और वे उनमें आग लगाकर उनको भस्म करेंगे, और एसाव के घराने का कोई न बचेगा; क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा है।

19 दक्षिण देश के लोग एसाव के पहाड़ के अधिकारी हो जाएँगे, और नीचे के देश के लोग पलिश्तियों के अधिकारी होंगे; और यहूदी, एप्रैम और सामरिया के देश को अपने भाग में कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद का अधिकारी होगा।

20 इस्राएलियों के उस दल में से जो लोग बँधुआई में जाकर कनानियों के बीच सारफत तक रहते हैं, और यरूशलेमियों में से जो लोग बँधुआई में जाकर सपाराद में रहते हैं, वे सब दक्षिण देश के नगरों के अधिकारी हो जाएँगे।

21 उद्धार करनेवाले एसाव के पहाड़ का न्याय करने के लिये सिव्योन पर्वत पर चढ़ आएँगे, और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा। **(~~22:28~~, ~~22:14:9~~)**

‡ 1:15 ~~तूने~~ ~~जैसा~~ ~~तूने~~ ~~किया~~ ~~है~~: भविष्यद्वक्ता दण्ड के आगमन का प्रचार करके अपनी चेतावनी को प्रबलता प्रदान करता है यहोवा के दिन की चर्चा तो पहले ही से की जा रही थी (यो.1:15; यो.2:1; यो.2:31), सब जातियों के लिए दण्ड है जिस दिन प्रभु उनका न्याय करेगा।



12 उसने उनसे कहा, “मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा; क्योंकि मैं जानता हूँ, कि यह भारी आँधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है।”

13 तो भी वे बड़े यत्न से खेते रहे कि उसको किनारे पर लगाएँ, परन्तु पहुँच न सके, क्योंकि समुद्र की लहरें उनके विरुद्ध बढ़ती ही जाती थीं।

14 तब उन्होंने यहोवा को पुकारकर कहा, “हे यहोवा हम विनती करते हैं, कि इस पुरुष के प्राण के बदले हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की हत्या का दोषी ठहरा; क्योंकि हे यहोवा, जो कुछ तेरी इच्छा थी वही तूने किया है।”

15 तब उन्होंने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया; और समुद्र की भयानक लहरें थम गईं।

16 तब उन मनुष्यों ने यहोवा का बहुत ही भय माना, और **2:2** और मन्नतें मानीं।

17 यहोवा ने एक महा मच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उस महा मच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा। (**2:1** **12:40**)

## 2

**2:1** **2:2** **2:3** **2:4** **2:5** **2:6** **2:7** **2:8** **2:9** **2:10** **2:11** **2:12** **2:13** **2:14** **2:15** **2:16** **2:17** **2:18** **2:19** **2:20** **2:21** **2:22** **2:23** **2:24** **2:25** **2:26** **2:27** **2:28** **2:29** **2:30** **2:31** **2:32** **2:33** **2:34** **2:35** **2:36** **2:37** **2:38** **2:39** **2:40** **2:41** **2:42** **2:43** **2:44** **2:45** **2:46** **2:47** **2:48** **2:49** **2:50** **2:51** **2:52** **2:53** **2:54** **2:55** **2:56** **2:57** **2:58** **2:59** **2:60** **2:61** **2:62** **2:63** **2:64** **2:65** **2:66** **2:67** **2:68** **2:69** **2:70** **2:71** **2:72** **2:73** **2:74** **2:75** **2:76** **2:77** **2:78** **2:79** **2:80** **2:81** **2:82** **2:83** **2:84** **2:85** **2:86** **2:87** **2:88** **2:89** **2:90** **2:91** **2:92** **2:93** **2:94** **2:95** **2:96** **2:97** **2:98** **2:99** **2:100**

1 तब योना ने महा मच्छ के पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कहा,

2 “मैंने संकट में पड़े हुए यहोवा की दुहाई दी, और उसने मेरी सुन ली है;

**2:1** **2:2** **2:3** **2:4** **2:5** **2:6** **2:7** **2:8** **2:9** **2:10** **2:11** **2:12** **2:13** **2:14** **2:15** **2:16** **2:17** **2:18** **2:19** **2:20** **2:21** **2:22** **2:23** **2:24** **2:25** **2:26** **2:27** **2:28** **2:29** **2:30** **2:31** **2:32** **2:33** **2:34** **2:35** **2:36** **2:37** **2:38** **2:39** **2:40** **2:41** **2:42** **2:43** **2:44** **2:45** **2:46** **2:47** **2:48** **2:49** **2:50** **2:51** **2:52** **2:53** **2:54** **2:55** **2:56** **2:57** **2:58** **2:59** **2:60** **2:61** **2:62** **2:63** **2:64** **2:65** **2:66** **2:67** **2:68** **2:69** **2:70** **2:71** **2:72** **2:73** **2:74** **2:75** **2:76** **2:77** **2:78** **2:79** **2:80** **2:81** **2:82** **2:83** **2:84** **2:85** **2:86** **2:87** **2:88** **2:89** **2:90** **2:91** **2:92** **2:93** **2:94** **2:95** **2:96** **2:97** **2:98** **2:99** **2:100** मैं चिल्ला उठा, और तूने मेरी सुन ली।

3 तूने मुझे गहरे सागर में समुद्र की थाह तक डाल दिया; और मैं धाराओं के बीच में पड़ा था, तेरी सब तरंग और लहरें मेरे ऊपर से बह गईं।

4 तब मैंने कहा, ‘मैं तेरे सामने से निकाल दिया गया हूँ; कैसे मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूँगा?’

5 मैं जल से यहाँ तक घिरा हुआ था कि मेरे प्राण निकले जाते थे;

गहरा सागर मेरे चारों ओर था, और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था।

6 मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुँच गया था;

मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो गया था;

तो भी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने मेरे प्राणों को गड्ढे में से उठाया है।

7 जब मैं मूर्च्छा खाने लगा, तब मैंने यहोवा को स्मरण किया;

और मेरी प्रार्थना तेरे पास वरन् तेरे पवित्र मन्दिर में पहुँच गई।

8 जो लोग धोखे की **2:1** **2:2** **2:3** **2:4** **2:5** **2:6** **2:7** **2:8** **2:9** **2:10** **2:11** **2:12** **2:13** **2:14** **2:15** **2:16** **2:17** **2:18** **2:19** **2:20** **2:21** **2:22** **2:23** **2:24** **2:25** **2:26** **2:27** **2:28** **2:29** **2:30** **2:31** **2:32** **2:33** **2:34** **2:35** **2:36** **2:37** **2:38** **2:39** **2:40** **2:41** **2:42** **2:43** **2:44** **2:45** **2:46** **2:47** **2:48** **2:49** **2:50** **2:51** **2:52** **2:53** **2:54** **2:55** **2:56** **2:57** **2:58** **2:59** **2:60** **2:61** **2:62** **2:63** **2:64** **2:65** **2:66** **2:67** **2:68** **2:69** **2:70** **2:71** **2:72** **2:73** **2:74** **2:75** **2:76** **2:77** **2:78** **2:79** **2:80** **2:81** **2:82** **2:83** **2:84** **2:85** **2:86** **2:87** **2:88** **2:89** **2:90** **2:91** **2:92** **2:93** **2:94** **2:95** **2:96** **2:97** **2:98** **2:99** **2:100** पर मन लगाते हैं,

वे अपने करुणानिधान को छोड़ देते हैं।

9 परन्तु मैं ऊँचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलिदान चढ़ाऊँगा;

जो मन्नत मैंने मानी, उसको पूरी करूँगा।

उद्धार यहोवा ही से होता है।”

10 और यहोवा ने महा मच्छ को आज्ञा दी, और उसने योना को स्थल पर उगल दिया।

## 3

**3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100**

1 तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुँचा,

2 “उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहूँगा, उसका उसमें प्रचार कर।”

3 **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100** **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100** **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100** **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100** **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100** **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36** **3:37** **3:38** **3:39** **3:40** **3:41** **3:42** **3:43** **3:44** **3:45** **3:46** **3:47** **3:48** **3:49** **3:50** **3:51** **3:52** **3:53** **3:54** **3:55** **3:56** **3:57** **3:58** **3:59** **3:60** **3:61** **3:62** **3:63** **3:64** **3:65** **3:66** **3:67** **3:68** **3:69** **3:70** **3:71** **3:72** **3:73** **3:74** **3:75** **3:76** **3:77** **3:78** **3:79** **3:80** **3:81** **3:82** **3:83** **3:84** **3:85** **3:86** **3:87** **3:88** **3:89** **3:90** **3:91** **3:92** **3:93** **3:94** **3:95** **3:96** **3:97** **3:98** **3:99** **3:100** **3:1** **3:2** **3:3** **3:4** **3:5** **3:6** **3:7** **3:8** **3:9** **3:10** **3:11** **3:12** **3:13** **3:14** **3:15** **3:16** **3:17** **3:18** **3:19** **3:20** **3:21** **3:22** **3:23** **3:24** **3:25** **3:26** **3:27** **3:28** **3:29** **3:30** **3:31** **3:32** **3:33** **3:34** **3:35** **3:36</**

9 सम्भव है, परमेश्वर दया करे और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नाश होने से बच जाएँ।”

10 जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और [2222] [22] [2222] [2222] [22] [2222] [22], [2222] [2222]†।

## 4

[2222] [22] [2222] [22] [22222222] [22] [2222]

1 यह बात योना को बहुत ही बुरी लगी, और उसका क्रोध भड़का।

2 और [2222] [2222] [22] [22] [2222] [22222222] [22]\*, “हे यहोवा जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैंने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शाश को भाग जाने के लिये फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दुःख देने से प्रसन्न नहीं होता।

3 सो अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही भला है।”

4 यहोवा ने कहा, “[2222] [22] [2222] [2222] [22], [2222] [22] [2222] [22]?”†

5 इस पर योना उस नगर से निकलकर, उसकी पूरब ओर बैठ गया; और वहाँ एक छप्पर बनाकर उसकी छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर का क्या होगा?

6 तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड का पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो, जिससे उसका दुःख दूर हो। योना उस रेंड के पेड़ के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ।

7 सवेरे जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, जिसने रेंड का पेड़ ऐसा काटा कि वह सूख गया।

8 जब सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, और धूप योना के सिर पर ऐसे लगी कि वह मूर्छा खाने लगा; और उसने यह कहकर मृत्यु माँगी, “मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही अच्छा है।”

9 परमेश्वर ने योना से कहा, “तेरा क्रोध, जो रेंड के पेड़ के कारण भड़का है, क्या वह उचित है?” उसने कहा, “हाँ, मेरा जो क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है, वरन् क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता।”

† 3:10 [2222] [22] [2222] [2222] [22] [2222] [22], [2222] [22] [2222]: यहाँ पर यहोवा की चेतावनी का उद्देश्य था कि वह जो चेतावनी दे रहा है उसे करना न पड़े। \* 4:2 [2222] [2222] [22] [22] [2222] [22222222] [22]: की योना कम से कम यहोवा पर कुड़कुड़ाया तो भी उसने परमेश्वर से अपने ही बारे में कहा

† 4:4 [2222] [22] [2222] [2222] [22], [2222] [22] [2222] [22]: परमेश्वर योना को गुप्त में समझाता है कि उसका क्रोध उचित नहीं है।

3. दोषारोपण का सन्देश — 6:1-7:10  
4. परिशिष्ट — 7:11-20

## मीका

११११

मीका की पुस्तक का लेखक भविष्यद्वक्ता मीका था (मीका 1:1) मीका एक ग्रामीण भविष्यद्वक्ता था जिसे शहर में भेजा गया कि वह परमेश्वर के आनेवाले दण्ड का सन्देश सुनाए जिसका कारण था सामाजिक एवं आत्मिक अन्याय एवं मूर्तिपूजा। देश के कृषि क्षेत्र में निवास करने के कारण मीका अपने देश के सरकारी केन्द्रों के प्रशासन की सीमा के बाहर था इस कारण वह समाज के दलित एवं वंचित मनुष्यों - लँगड़े, समाज से बहिष्कृत एवं कष्टिन जनों के प्रति अत्यधिक चिन्तित था (मीका 4:6)। मीका की पुस्तक सभी पुराने नियमों में यीशु मसीह के जन्म की सबसे महत्वपूर्ण भविष्यद्वानियों को प्रदान करती है जो सैंकड़ों वर्ष पूर्व मसीह के जन्म, उसके जन्म स्थान, बैतलहम और उसकी दिव्य प्रकृति का वर्णन करती है (मीका 5:2)।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 730 - 650 ई. पू.

मीका के आरम्भिक वचन उत्तरी राज्य इस्राएल के पतन के कुछ ही पूर्वकाल के हैं (1:2-7)। मीका की पुस्तक के अन्य अंश बाबेल की बन्धुआई में लिखे गये प्रतीत होते हैं और बाद में जब कुछ निर्वासित जन स्वदेश लौटे तब के हैं।

१११११११

इस्राएल के उत्तरी राज्य तथा दक्षिण राज्य यहूदा के निवासियों के लिए यह पुस्तक लक्षित थी।

१११११११११

मीका की पुस्तक में दो महत्वपूर्ण भविष्यद्वानियाँ हैं। एक, इस्राएल और यहूदा को दण्ड की (1:1-3:12) और दूसरी, प्रभु के सहस्र वर्षीय राज में परमेश्वर के लोगों के पुनर्वास की (4:1-5:15)। परमेश्वर उन्हें अपने भले कामों का स्मरण करवाता है कि वह उनकी कैसी सुधि लेता है जबकि वे केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

१११ ११११

परमेश्वर का न्याय  
रूपरेखा

1. परमेश्वर दण्ड देने आ रहा है — 1:1-2:13
2. विनाश का सन्देश — 3:1-5:15

\* 1:2 ११११११११ ११११ १११११११ ११११११ ११११: यह या तो यरूशलेम में जहाँ परमेश्वर ने अपने आपको प्रगट किया या स्वर्ग में जिसका प्रतिरूप है। † 1:7 ११११ ११ १११११११११ ११: जिन मूर्तियों में वे विश्वास करते थे वे उन्हें क्या बचाएँगे स्वयं ही बन्धुवाई में जाएँगे जिस सोने-चाँदी से वे बनी थी उसी के लिए उन्हें तोड़ दिया जाएगा। ‡ 1:8 १११ ११११ ११११११: अध्याय के 1-7 वचन तक मुख्य वक्ता परमेश्वर है, परन्तु वचन 8 से मीका मुख्य वक्ता है। § 1:8 ११११ ११११: इसका अन्य अर्थ 'नंगे पैर' भी हो सकता है।

1 यहोवा का वचन, जो यहूदा के राजा योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में मोरेशेतवासी मीका को पहुँचा, जिसको उसने सामरिया और यरूशलेम के विषय में पाया।

2 हे जाति-जाति के सब लोगों, सुनो! हे पृथ्वी तू उस सब समेत जो तुझ में है, ध्यान दे! और प्रभु यहोवा तुम्हारे विरुद्ध, वरन् ११११११११११ १११११ ११११११११ ११११११११ ११११\* से तुम पर साक्षी दे।

3 क्योंकि देख, यहोवा अपने पवित्रस्थान से बाहर निकल रहा है, और वह उतरकर पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलेगा।

4 पहाड़ उसके नीचे गल जाएँगे, और तराई ऐसे फटेंगी, जैसे मोम आग की आँच से, और पानी जो घाट से नीचे बहता है।

5 यह सब याकूब के अपराध, और इस्राएल के घराने के पाप के कारण से होता है। याकूब का अपराध क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहूदा के ऊँचे स्थान क्या हैं? क्या यरूशलेम नहीं?

6 इस कारण मैं सामरिया को मैदान के खेत का ढेर कर दूँगा, और दाख का बगीचा बनाऊँगा; और मैं उसके पत्थरों को खड्ड में लुढ़का दूँगा, और उसकी नींव उखाड़ दूँगा।

7 उसकी सब खुदी हुई मूर्तें टुकड़े-टुकड़े की जाएँगी; और जो कुछ उसने छिनाला करके कमाया है वह आग से भस्म किया जाएगा, और १११११ ११ ११११११११११११ १११† मैं चकनाचूर करूँगा; क्योंकि छिनाले ही की कमाई से उसने उसको इकट्ठा किया है, और वह फिर छिनाले की सी कमाई हो जाएगी।

8 इस कारण ११११ ११११११ १११११११‡ हाय-हाय, करूँगा; मैं १११११ ११११§ सा और नंगा चला फिरा करूँगा; मैं गीदड़ों के समान चिल्लाऊँगा, और शत्रुमुर्गों के समान रोऊँगा।

9 क्योंकि उसका घाव असाध्य है; और विपत्ति यहूदा पर भी आ पड़ी, वरन् वह मेरे जातिभाइयों पर पड़कर यरूशलेम के फाटक तक पहुँच गई है।

10 गत नगर में इसकी चर्चा मत करो, और मत रोओ; बेतआप्रा में धूलि में लोटपोट करो।

11 हे शापीर की रहनेवाली नंगी होकर निर्लज्ज चली जा; सानान की रहनेवाली नहीं निकल सकती; बेतसेल के रोने पीटने के कारण उसका शरणस्थान तुम से ले लिया जाएगा।

12 क्योंकि मारोत की रहनेवाली तो कुशल की बात जोहते-जोहते तड़प गई है, क्योंकि यहोवा की ओर से यरूशलेम के फाटक तक विपत्ति आ पहुँची है।

13 हे लाकीश की रहनेवाली अपने रथों में वेग चलनेवाले घोड़े जोत; तुझी से सिय्योन की प्रजा के पाप का आरम्भ हुआ, क्योंकि इस्राएल के अपराध तुझी में पाए गए।

14 इस कारण तू गत के मोरेशेत को दान देकर दूर कर देगा; अकजीब के घर से इस्राएल के राजा धोखा ही खाएँगे।

15 हे मारेशा की रहनेवाली मैं फिर तुझ पर एक अधिकारी ठहराऊँगा, और इस्राएल के प्रतिष्ठित लोगों को अदुल्लाम में आना पड़ेगा।

16 अपने दुलारे लड़कों के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुण्डा, वरन् अपना पूरा सिर गिद्ध के समान गंजा कर दे, क्योंकि वे बँधुए होकर तेरे पास से चले गए हैं।

## 2

1 हाय उन पर, जो बिछौनों पर पड़े हुए बुराइयों की कल्पना करते और दुष्ट कर्म की इच्छा करते हैं, और बलवन्त होने के कारण भोर को दिन निकलते ही वे उसको पूरा करते हैं।

2 वे खेतों का लालच करके उन्हें छीन लेते हैं, और घरों का लालच करके उन्हें भी ले लेते हैं; और उसके घराने समेत पुरुष पर, और उसके निज भाग समेत किसी पुरुष पर अंधेर और अत्याचार करते हैं।

3 इस कारण, यहोवा यह कहता है, मैं इस कुल पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूँ, जिसके नीचे से तुम अपनी गर्दन हटा न सकोगे; न अपने सिर ऊँचे किए हुए चल सकोगे; क्योंकि वह विपत्ति का समय होगा।

4 उस समय यह अत्यन्त शोक का गीत दृष्टान्त की रीति पर गाया जाएगा: “हमारा तो सर्वनाश हो गया; वह मेरे लोगों के भाग को बिगाड़ता है; हाय, वह उसे मुझसे कितनी दूर कर देता है! वह हमारे खेत बलवा करनेवाले को दे देता है।”

5 इस कारण तेरा ऐसा कोई न होगा, जो यहोवा की मण्डली में चिट्ठी डालकर नापने की डोरी डाले।

\* 2:9 [REDACTED] सम्भवतः जिन्हें उन्होंने लूटा था वे विधवाएँ थी

\* 3:2 [REDACTED] अर्थात् वे भलाई से घृणा करते हैं और बुराई में मन लगाते हैं। यहाँ भविष्यद्वक्ता भले मनुष्य से घृणा और बुरे मनुष्य से स्नेह के विषय में बात नहीं कर रहा है अपितु भलाई से घृणा करने और बुराई से लगाव रखने की चर्चा कर रहा है।

6 बकवासी कहा करते हैं, “बकवास न करो। इन बातों के लिये न कहा करो!” ऐसे लोगों में से अपमान न मिटेगा।

7 हे याकूब के घराने, क्या यह कहा जाए कि यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है? क्या ये काम उसी के किए हुए हैं? क्या मेरे वचनों से उसका भला नहीं होता जो सिधाई से चलता है?

8 परन्तु कल की बात है कि मेरी प्रजा शत्रु बनकर मेरे विरुद्ध उठी है; तुम शान्त और भोले-भाले राहियों के तन पर से वस्त्र छीन लेते हो जो लड़ाई का विचार न करके निधडक चले जाते हैं।

9 [REDACTED] और उनके नन्हें बच्चों से तुम मेरी दी हुई उत्तम वस्तुएँ सर्वदा के लिये छीन लेते हो।

10 उठो, चले जाओ! क्योंकि यह तुम्हारा विश्रामस्थान नहीं है; इसका कारण वह अशुद्धता है जो कठिन दुःख के साथ तुम्हारा नाश करेगी।

11 यदि कोई झूठी आत्मा में चलता हुआ झूठी और व्यर्थ बातें कहे और कहे कि मैं तुम्हें नित्य दाखमधु और मदिरा के लिये प्रचार सुनाता रहूँगा, तो वही इन लोगों का भविष्यद्वक्ता ठहरेगा।

12 हे याकूब, मैं निश्चय तुम सभी को इकट्ठा करूँगा; मैं इस्राएल के बचे हुआओं को निश्चय इकट्ठा करूँगा; और बोस्रा की भेड़-बकरियों के समान एक संग रखूँगा। उस झुण्ड के समान जो अच्छी चराई में हो, वे मनुष्यों की बहुतायत के मारे कोलाहल मचाएँगे।

13 उनके आगे-आगे बाड़े का तोड़नेवाला गया है, इसलिए वे भी उसे तोड़ रहे हैं, और फाटक से होकर निकले जा रहे हैं; उनका राजा उनके आगे-आगे गया अर्थात् यहोवा उनका सरदार और अगुआ है।

## 3

1 मैंने कहा: हे याकूब के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के न्यायियों, सुनो! क्या न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम नहीं?

2 [REDACTED] मानो, तुम, लोगों पर से उनकी खाल उधेड़ लेते, और उनकी हड्डियों पर से उनका माँस नोच लेते हो;

3 वरन् तुम मेरे लोगों का माँस खा भी लेते, और उनकी खाल उधेड़ते हो; तुम उनकी हड्डियों को हाण्डी में पकाने के लिये तोड़ डालते और उनका माँस हँडे में पकाने के लिये टुकड़े-टुकड़े करते हो।

4 वे उस समय यहोवा की दुहाई देंगे, परन्तु वह उनकी न सुनेगा, वरन् उस समय वह उनके बुरे कामों के कारण उनसे मुँह मोड़ लेगा।

5 यहोवा का यह वचन है कि जो भविष्यद्वक्ता मेरी प्रजा को भटका देते हैं, और जब उन्हें खाने को मिलता है तब “शान्ति-शान्ति,” पुकारते हैं, और यदि कोई उनके मुँह में कुछ न दे, तो उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं।

6 इस कारण तुम पर ऐसी रात आएगी, कि तुम को दर्शन न मिलेगा, और तुम ऐसे अंधकार में पड़ोगे कि भावी न कह सकोगे। भविष्यद्वक्ताओं के लिये सूर्य अस्त होगा, और दिन रहते उन पर अंधियारा छा जाएगा।

7 दर्शी लज्जित होंगे, और भावी कहनेवालों के मुँह काले होंगे; और वे सब के सब ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ कि परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।

8 परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूँ कि मैं याकूब को उसका अपराध और इस्राएल को उसका पाप जता सकूँ।

9 हे याकूब के घराने के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के न्यायियों, हे न्याय से घृणा करनेवालों और सब सीधी बातों को टेढ़ी-मेढ़ी करनेवालों, यह बात सुनो।

10 तुम सिय्योन को हत्या करके और यरूशलेम को कुटिलता करके दृढ़ करते हो।

11 उसके प्रधान घूस ले लेकर विचार करते, और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते हैं, और भविष्यद्वक्ता रुपये के लिये भावी कहते हैं; तो भी वे यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, “यहोवा हमारे बीच में है, इसलिए कोई विपत्ति हम पर न आएगी।”

12 इसलिए तुम्हारे कारण सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा, और यरूशलेम खण्डहरों का ढेर हो जाएगा, और जिस पर्वत पर परमेश्वर का भवन बना है, वह वन के ऊँचे स्थान सा हो जाएगा।

## 4

~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~

† 3:7 ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ उन्होंने होठों से झूठ बोला था इसलिए अब वह अपने होठ ढाँपेंगे जैसे एक मनुष्य गुँगा और लज्जित है, क्योंकि परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिला था जैसा इन पाखण्डियों ने भविष्यद्वक्ता की थी। \* 4:3 ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ हर एक ने अपना मार्ग लिया था, अब वे परमेश्वर के विधियों की शिक्षा लेने आएँगे।

1 अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे।

2 और बहुत जातियों के लोग जाएँगे, और आपस में कहेंगे, “आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।” क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।

3 ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ और दूर-दूर तक की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा; इसलिए वे अपनी तलवारों पीटकर हल के फाल, और अपने भालों से हँसिया बनाएँगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी;

4 और लोग आगे को युद्ध विद्या न सीखेंगे। परन्तु वे अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे, और कोई उनको न डराएगा; सेनाओं के यहोवा ने यही वचन दिया है। (1 ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ 4:25, ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ 3:10)

5 सब राज्यों के लोग तो अपने-अपने देवता का नाम लेकर चलते हैं, परन्तु हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे।

6 यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं प्रजा के लँगडों को, और जबरन निकाले हुए लोगों को, और जिनको मैंने दुःख दिया है उन सब को इकट्ठे करूँगा।

7 और लँगडों को मैं बचा रखूँगा, और दूर किए हुए लोगों को एक सामर्थी जाति कर दूँगा; और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा।

8 और हे एदेर के गुम्मट, हे सिय्योन की पहाड़ी, पहली प्रभुता अर्थात् यरूशलेम का राज्य तुझे मिलेगा।

9 अब तू क्यों चिल्लाती है? क्या तुझ में कोई राजा नहीं रहा? क्या तेरा युक्ति करनेवाला नष्ट हो गया, जिससे जच्चा स्त्री के समान तुझे पीड़ा उठती है? (~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ 8:19, ~~परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता।~~ 13:8)

10 हे सिय्योन की बेटी, जच्चा स्त्री के समान पीड़ा उठाकर उत्पन्न कर; क्योंकि अब तू गद्दी में से निकलकर मैदान में बसेगी, वरन् बाबेल तक जाएगी; वहीं तू छुड़ाई जाएगी, अर्थात् वहीं यहोवा तुझे तेरे शत्रुओं के वश में से छुड़ा लेगा।

11 अब बहुत सी जातियाँ तेरे विरुद्ध इकट्ठी होकर तेरे विषय में कहेंगी, “सिय्योन अपवित्र की जाए, और हम अपनी आँखों से उसको निहारें।”

12 परन्तु <sup>†</sup> न उसकी युक्ति समझते हैं, कि वह उन्हें ऐसा बटोर लेगा जैसे खलिहान में पूले बटोरे जाते हैं।

13 हे सिय्योन, उठ और दाँवनी कर, मैं तेरे सींगों को लोहे के, और तेरे खुरों को पीतल के बना दूँगा; और तू बहुत सी जातियों को चूर-चूर करेगी, और उनकी कमाई यहोवा को और उनकी धन-सम्पत्ति पृथ्वी के प्रभु के लिये अर्पण करेगी।

## 5

1 अब हे बहुत दलों के नगर, दल बाँध बाँधकर इकट्ठे हो, क्योंकि उसने हम लोगों को घेर लिया है; वे इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे। (2:22, 18:22, 19:3, 2:30)

2 हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तो भी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादिकाल से होता आया है। (2:6, 7:42)

3 इस कारण वह उनको उस समय तक त्यागे रहेगा, जब तक जच्चा उत्पन्न न करे; तब इस्राएलियों के पास उसके बचे हुए भाई लौटकर उनसे मिल जाएँगे।

4 और <sup>\*</sup> यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। और वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि अब वह पृथ्वी की छोर तक महान ठहरेगा।

5 और वह शान्ति का मूल होगा,

जब अशशूरी हमारे देश पर चढ़ाई करें, और हमारे राजभवनों में पाँव रखें, तब हम उनके विरुद्ध सात चरवाहे वरन् आठ प्रधान मनुष्य खड़े करेंगे।

6 और वे अशशूर के देश को वरन् प्रवेश के स्थानों तक निम्नोद के देश को तलवार चलाकर मार लेंगे; और जब अशशूरी लोग हमारे देश में आएँ, और उसकी सीमा के भीतर पाँव रखें, तब वही पुरुष हमको उनसे बचाएगा।

7 और याकूब के बचे हुए लोग बहुत राज्यों के बीच ऐसा काम देंगे, जैसा यहोवा की ओर से पड़नेवाली

ओस, और घास पर की वर्षा, जो किसी के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों की बाट नहीं जोहती।

8 और याकूब के बचे हुए लोग जातियों में और देश-देश के लोगों के बीच ऐसे होंगे जैसे वन-पशुओं में सिंह, या भेड़-बकरियों के झुण्डों में जवान सिंह होता है, क्योंकि जब वह उनके बीच में से जाए, तो लताडता और फाड़ता जाएगा, और कोई बचा न सकेगा।

9 तेरा हाथ तेरे द्रोहियों पर पड़े, और तेरे सब शत्रु नष्ट हो जाएँ।

10 यहोवा की यही वाणी है, उस समय मैं तेरे घोड़ों का तेरे बीच में से नाश करूँगा; और तेरे रथों का विनाश करूँगा।

11 मैं तेरे देश के नगरों को भी नष्ट करूँगा, और तेरे किलों को ढा दूँगा।

12 और मैं तेरे तंत्र-मंत्र नाश करूँगा, और तुझ में टोन्हे आगे को न रहेंगे।

13 और मैं तेरी खुदी हुई मूरतें, और तेरी लाठें, तेरे बीच में से नष्ट करूँगा; और तू आगे को अपने हाथ की बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् न करेगा।

14 और मैं तेरी अशेरा नामक मूरतों को तेरी भूमि में से उखाड़ डालूँगा, और तेरे नगरों का विनाश करूँगा।

15 और मैं अन्यजातियों से जो मेरा कहा नहीं मानतीं, क्रोध और जलजलाहट के साथ बदला लूँगा।

## 6

<sup>†</sup>

1 जो बात यहोवा कहता है, उसे सुनो उठकर, पहाड़ों के सामने वाद विवाद कर, और टीले भी तेरी सुनने पाएँ।

2 हे पहाड़ों, और हे पृथ्वी की अटल नींव, यहोवा का वाद विवाद सुनो, क्योंकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ मुकद्दमा है, और वह इस्राएल से वाद-विवाद करता है।

3 “हे मेरी प्रजा, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? क्या करके मैंने तुझे थका दिया है?”

4 मेरे विरुद्ध साक्षी दे! मैं तो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आया, और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया; और तेरी अगुआई करने को मूसा, हारून और मिर्याम को भेज दिया।

5 हे मेरी प्रजा, स्मरण कर, कि मोआब के राजा बालाक ने तेरे विरुद्ध कौन सी युक्ति की? और बोर के

† 4:12 <sup>†</sup> परमेश्वर की इच्छा थी कि उसके लोग दण्ड पाएँ परन्तु भविष्य की भलाई से वे अनभिज्ञ थे (जो उनके मन फिराव पर आधारित थी) कि परमेश्वर उन्हें क्षमा करना चाहता था परन्तु उनके घमण्ड का दण्ड भी देना चाहता था। \* 5:4 <sup>†</sup> भविष्यद्वक्ता इस जन्म लेनेवाले राजा के व्यक्तिगत कामों की चर्चा करता जाता है। उसका अन्त नहीं होगा वह किसी पर अपना राज निर्भर नहीं करेगा परन्तु उसे स्वयं सम्भालेगा।



पुत्र बिलाम ने उसको क्या सम्मति दी? और शिन्नीम से गिलगाल तक की बातों का स्मरण कर, जिससे तू यहोवा के धार्मिकता के काम समझ सके।”

6 “मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख आऊँ, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के सामने झुकूँ? क्या मैं होमबलि के लिये एक-एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्मुख आऊँ?”

7 क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, या तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित में अपने पहलौटे को या अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूँ?”

8 हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले? **([2][2][2][2] 23:23, [2][2][2][2] 1:17)**

9 यहोवा की वाणी इस नगर को पुकार रही है, और सम्पूर्ण ज्ञान, तेरे नाम का भय मानना है: **[2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]\***

10 क्या अब तक दुष्ट के घर में दुष्टता से पाया हुआ धन और छोटा एपा घृणित नहीं है?

11 क्या मैं कपट का तराजू और घटबद्ध के बटखरों की थैली लेकर पवित्र ठहर सकता हूँ?

12 यहाँ के धनवान लोग उपद्रव का काम देखा करते हैं; और यहाँ के सब रहनेवाले झूठ बोलते हैं और उनके मुँह से छल की बातें निकलती हैं।

13 इस कारण मैं तुझे मारते-मारते बहुत ही घायल करता हूँ, और तेरे पापों के कारण तुझको उजाड़ डालता हूँ।

14 **[2][2] [2][2][2][2][2][2], [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]\***, तेरा पेट जलता ही रहेगा; और तू अपनी सम्पत्ति लेकर चलेगा, परन्तु न बचा सकेगा, और जो कुछ तू बचा भी ले, उसको मैं तलवार चलाकर लुटवा दूँगा।

15 तू बोएगा, परन्तु लवने न पाएगा; तू जैतून का तेल निकालेगा, परन्तु लगाने न पाएगा; और दाख रौंदेगा, परन्तु दाखमधु पीने न पाएगा। **([2][2][2][2] 4:37, [2][2][2][2] 5:11, [2][2][2][2] 28:38,40)**

16 क्योंकि वे ओम्नी की विधियों पर, और अहाब के घराने के सब कामों पर चलते हैं; और तुम उनकी युक्तियों के अनुसार चलते हो; इसलिए मैं तुझे उजाड़

दूँगा, और इस नगर के रहनेवालों पर ताली बजवाऊँगा, और तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे।

## 7

**[2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]**

1 हाय मुझ पर! क्योंकि मैं उस जन के समान हो गया हूँ जो धूपकाल के फल तोड़ने पर, या रही हुई दाख बीनने के समय के अन्त में आ जाए, मुझे तो पक्की अंजीरों की लालसा थी, परन्तु खाने के लिये कोई गुच्छा नहीं रहा।

2 भक्त लोग पृथ्वी पर से नाश हो गए हैं, और मनुष्यों में एक भी सीधा जन नहीं रहा; वे सब के सब हत्या के लिये घात लगाते, और जाल लगाकर अपने-अपने भाई का आहेर करते हैं।

3 वे अपने दोनों हाथों से मन लगाकर बुराई करते हैं; हाकिम घूस माँगता, और न्यायी घूस लेने को तैयार रहता है, और रईस अपने मन की दुष्टता वर्णन करता है; इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी करते हैं।

4 उनमें से जो सबसे उत्तम है, वह कँटीली झाड़ी के समान दुःखदाई है, जो सबसे सीधा है, वह काँटेवाले बाड़े से भी बुरा है। तेरे पहरुओं का कहा हुआ दिन, अर्थात् तेरे दण्ड का दिन आ गया है। अब वे शीघ्र भ्रमित हो जाएँगे।

5 मित्र पर विश्वास मत करो, परम मित्र पर भी भरोसा मत रखो; वरन् अपनी अर्धांगिनी से भी सम्भलकर बोलना।

6 क्योंकि पुत्र पिता का अपमान करता, और बेटी माता के, और बहू सास के विरुद्ध उठती है; मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होते हैं। **([2][2][2][2][2][2] 10:21-35, [2][2][2][2] 13:12, [2][2][2][2] 12:53)**

7 परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूँगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूँगा; मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।

8 हे मेरी बैरिन, मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि ज्यों ही मैं गिरूँगा त्यों ही उठूँगा; और ज्यों ही मैं अंधकार में पड़ूँगा त्यों ही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा।

9 मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, इस कारण मैं उस समय तक उसके क्रोध को सहता रहूँगा जब तक कि वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा। उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले आएगा, और मैं उसकी धार्मिकता देखूँगा।

\* **6:9 [2][2][2][2][2][2] [2][2], [2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]**: अर्थात् परमेश्वर के क्रोध की ताड़ना को सुनो † **6:14 [2][2] [2][2][2][2][2][2], [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2]**: पाप और दण्ड के मेल से प्रकट होता है कि वह संयोगवश नहीं था परन्तु परमेश्वर के उचित न्याय के कारण था। परमेश्वर का श्राप उनके खाने-पीने पर भी होगा। उससे उनका पोषण नहीं होगा।

10 तब मेरी बैरिन जो मुझसे यह कहती है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहाँ रहा, वह भी उसे देखेगी और लज्जा से मुँह ढाँपेगी। मैं अपनी आँखों से उसे देखूँगा; तब वह सड़कों की कीच के समान लताड़ी जाएगी।

11 तेरे बाड़ों के बाँधने के दिन उसकी सीमा बढ़ाई जाएगी।

12 उस दिन अश्शूर से, और मिस्र के नगरों से और मिस्र और महानद के बीच के, और समुद्र-समुद्र और पहाड़-पहाड़ के बीच के देशों से लोग तेरे पास आएँगे।

13 तो भी यह देश अपने रहनेवालों के कामों के कारण उजाड़ ही रहेगा।

14 **११ ११११ ११११ १११ ११११ ११११११ ११ १११११११ १११११११ १११\***, अर्थात् अपने निज भाग की भेड़-बकरियों की, जो कर्मेल के वन में अलग बैठती हैं; वे पूर्वकाल के समान बाशान और गिलाद में चरा करें।

15 जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल आने के दिनों में, वैसी ही अब मैं उसको अदभुत काम दिखाऊँगा।

16 अन्यजातियाँ देखकर अपने सारे पराक्रम के विषय में लजाएँगी; वे अपने मुँह को हाथ से छिपाएँगी, और उनके कान बहरे हो जाएँगे।

17 **११ १११११ ११ १११११ ११११११११ १११११११११†**, और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं की भाँति अपने बिलों में से काँपती हुई निकलेंगी; वे हमारे परमेश्वर यहोवा के पास थरथराती हुई आएँगी, और वे तुझ से डरेंगी।

18 तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहाँ है जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुएों के अपराध को ढाँप दे? वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता, क्योंकि वह करुणा से प्रीति रखता है।

19 वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहरे समुद्र में डाल देगा।

20 तू याकूब के विषय में वह सच्चाई, और अब्राहम के विषय में वह करुणा पूरी करेगा, जिसकी शपथ तू प्राचीनकाल के दिनों से लेकर अब तक हमारे पितरों से खाता आया है। **(१११११ 1:54,55, ११११. 15:8,9)**

\* **7:14 ११ १११११ ११११ ११११ ११११११ ११ १११११११ १११**: अब भविष्यद्वक्ता एक हार्दिक प्रार्थना के साथ समापन करता है जिसका उसे संक्षिप्त उत्तर मिलता है कि परमेश्वर अपने सामर्थ्य को नए सिरे से प्रगट करेगा जैसा उस समय प्रगट किया था जब उसने उन्हें अपनी प्रजा बनाया था। † **7:17 ११ १११११ ११ १११११ ११११११११ १११११११११**: मिट्टी चाटना मनुष्य की दीन-हीन दशा को व्यक्त करता है जो स्वयं को भूमि पर गिरा देने है।

## नहूम

॥॥॥॥

नहूम की पुस्तक का लेखक अपना नाम नहूम बताता है। (इब्रानी में इसका अर्थ है, “शान्तिदाता”) वह एल्कोशवासी था (1:1)। भविष्यद्वक्ता के रूप में नहूम अश्शूर में विशेष करके उनकी राजधानी नीनवे में मन फिराव का प्रचार करने भेजा गया था। यह योना से 150 वर्ष बाद की घटना है। अतः स्पष्ट है कि उन्होंने उस समय मन फिराया परन्तु पुनः मूर्तिपूजा करने लगे थे।

॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥

लगभग 620 - 612 ई. पू.

नहूम का लेखन समय स्पष्ट ज्ञात किया जा सकता है क्योंकि उसकी भविष्यद्वानी दो चिरपरिचित घटनाओं के मध्य की है- तेबेस का पतन और नीनवे का पतन

॥॥॥॥॥॥

नहूम की भविष्यद्वानी उत्तरी राज्य के दस गोत्रों को बन्धुआई में ले जानेवाले अश्शूरों तथा दक्षिणी राज्य यहूदिया दोनों के लिए थी। यहूदिया को भय था कि उसका भी वही हाल होगा जो इस्राएल का होगा।

॥॥॥॥॥॥॥॥

परमेश्वर का न्याय सही एवं निश्चित होता है। परमेश्वर ने 150 वर्ष पूर्व भविष्यद्वक्ता योना को उनके पास भेजा था और उनसे प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे अपनी दुष्टता में रहेंगे तो क्या होगा। उस समय तो उन्होंने मन फिराया परन्तु अब वे और भी अधिक बुराई में थे। अश्शूर अपनी विजय में पूर्णतः पाशविक हो गए थे। नहूम यहूदिया की प्रजा से कह रहा था कि वे निराश न हों क्योंकि परमेश्वर ने न्याय की घोषणा कर दी है और अश्शूरों को उनके योग्य दण्ड मिलेगा।

॥॥॥ ॥॥॥॥

सात्वना  
रूपरेखा

1. परमेश्वर की प्रभुसत्ता — 1:1-14
2. नीनवे को परमेश्वर का दण्ड — 1:15-3:19

॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

1 ॥॥॥॥॥॥\* के विषय में भारी वचन। एल्कोशवासी नहूम के दर्शन की पुस्तक।

\* 1:1 ॥॥॥॥॥॥: नहूम की भविष्यद्वानी भी बहुत कठोर एवं भयानक है योना की चेतावनी सुनकर नीनवेवासियों ने मन फिराया था परन्तु वे फिर पाप में गिर गये थे † 1:3 ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥: दिव्य शक्ति के साथ दैवीय सहनशीलता भी जाती है परमेश्वर धीरजवन्त है उसका धीरज दुर्बलता का नहीं उसके सामर्थ्य का प्रतीक है ‡ 1:12 ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥: अर्थात् वे अनेक हों कि तोड़े न जा सके तो भी वे काट डाले जाएंगे और उनका प्रधान और उनका राजा नष्ट हो जाएगा।

2 यहोवा जलन रखनेवाला और बदला लेनेवाला परमेश्वर है; यहोवा बदला लेनेवाला और जलजलाहट करनेवाला है; यहोवा अपने द्रोहियों से बदला लेता है, और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता।

3 यहोवा विलम्ब से क्रोध करनेवाला और ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥; वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा। यहोवा बवंडर और आँधी में होकर चलता है, और बादल उसके पाँवों की धूल हैं।

4 उसके घुड़कने से महानद सूख जाते हैं, वह सब नदियों को सूखा देता है; बाशान और कर्मेल कुम्हलाते और लबानोन की हरियाली जाती रहती है।

5 उसके स्पर्श से पहाड़ काँप उठते हैं और पहाड़ियाँ गल जाती हैं; उसके प्रताप से पृथ्वी वरन् सारा संसार अपने सब रहनेवालों समेत थरथरा उठता है।

6 उसके क्रोध का सामना कौन कर सकता है? और जब उसका क्रोध भड़कता है, तब कौन ठहर सकता है? उसकी जलजलाहट आग के समान भड़क जाती है, और चट्टानें उसकी शक्ति से फट फटकर गिरती हैं। (॥॥॥॥॥॥ 6:17)

7 यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधि रखता है।

8 परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त कर देगा, और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अंधकार में भगा देगा।

9 तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह तुम्हारा अन्त कर देगा; विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी।

10 क्योंकि चाहे वे काँटों से उलझे हुए हों, और मदिरा के नशे में चूर भी हों, तो भी वे सूखी खूँटी की समान भस्म किए जाएँगे।

11 तुझ में से एक निकला है, जो यहोवा के विरुद्ध कल्पना करता और नीचता की युक्ति बाँधता है।

12 यहोवा यह कहता है, “॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥”, और बहुत भी हों, तो भी पूरी रीति से काटे जाएँगे और शून्य हो जाएँगे। मैंने तुझे दुःख दिया है, परन्तु फिर न दूँगा।

13 क्योंकि अब मैं उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा, और तेरा बन्धन फाड़ डालूँगा।”

14 यहोवा ने तेरे विषय में यह आज्ञा दी है “आगे को तेरा वंश न चले; मैं तेरे देवालयों में से ढली और गद्दी

हुई मूरतों को काट डालूँगा, मैं तेरे लिये कब्र खोदूँगा, क्योंकि तू नीच है।”

15 देखो, पहाड़ों पर शुभ समाचार का सुनानेवाला और शान्ति का प्रचार करनेवाला आ रहा है! अब हे यहूदा, अपने पर्व मान, और अपनी मन्त्रों पूरी कर, क्योंकि वह दुष्ट फिर कभी तेरे बीच में होकर न चलेगा, वह पूरी रीति से नष्ट हुआ है। (2:22-23, 10:36, 2:22, 10:15, 2:22, 6:15)

## 2

2:22-23, 2:22-23

1 सत्यानाश करनेवाला तेरे विरुद्ध चढ़ आया है। गढ़ को दृढ़ कर; मार्ग देखता हुआ चौकस रह; अपनी कमर कस; अपना बल बढ़ा दे।

2 यहोवा याकूब की बड़ाई इस्राएल की बड़ाई के समान ज्यों की त्यों कर रहा है, क्योंकि उजाड़नेवालों ने उनको उजाड़ दिया है और दाख की डालियों का नाश किया है।

3 उसके शूरवीरों की ढालें लाल रंग से रंगी गईं, और उसके योद्धा लाल रंग के वस्त्र पहने हुए हैं। तैयारी के दिन रथों का लोहा आग के समान चमकता है, और भाले हिलाए जाते हैं।

4 रथ सड़कों में बहुत वेग से हाँके जाते और चौकों में इधर-उधर चलाए जाते हैं; वे मशालों के समान दिखाई देते हैं, और उनका वेग बिजली का सा है।

5 वह अपने शूरवीरों को स्मरण करता है; वे चलते-चलते ठोकर खाते हैं, वे शहरपनाह की ओर फुर्ती से जाते हैं, और सुरक्षात्मक ढाल तैयार किया जाता है।

6 नहरों के द्वार खुल जाते हैं, और राजभवन गलकर बैठा जाता है।

7 हुसेब नंगी करके बँधुआई में ले ली जाएगी, और उसकी दासियाँ छाती पीटती हुई पिण्डुकों के समान विलाप करेंगी।

8 नीनवे जब से बनी है, तब से तालाब के समान है, तो भी वे भागे जाते हैं, और “खड़े हो; खड़े हो”, ऐसा पुकारे जाने पर भी कोई मुँह नहीं मोड़ता।

9 चाँदी को लूटो, सोने को लूटो, उसके रखे हुए धन की बहुतायत, और वैभव की सब प्रकार की मनभावनी सामग्री का कुछ परिमाण नहीं।

\* 2:13 2:22 2:22-23 2:22-23 2:22-23 परमेश्वर अपने धीरज के कारण उन्हें अनदेखा कर रहा था परन्तु अब उनकी ओर देखता है और उसकी दृष्टि में कोई भी दुष्ट खड़ा नहीं रह सकता है। \* 3:8 2:22-23 2:22-23 मिस्र देश की राजधानी

10 वह खाली, छूछी और सूनी हो गई है! मन कच्चा हो गया, और पाँव काँपते हैं; और उन सभी की कमर में बड़ी पीड़ा उठी, और सभी के मुख का रंग उड़ गया है!

11 सिंहों की वह माँद, और जवान सिंह के आखेट का वह स्थान कहाँ रहा जिसमें सिंह और सिंहनी अपने बच्चों समेत बेखटके फिरते थे?

12 सिंह तो अपने बच्चों के लिये बहुत आहेर को फाड़ता था, और अपनी सिंहनियों के लिये आहेर का गला घोट घोटकर ले जाता था, और अपनी गुफाओं और माँदों को आहेर से भर लेता था।

13 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, 2:22 2:22-23 2:22-23 2:22-23\*, और उसके रथों को भस्म करके धुएँ में उड़ा दूँगा, और उसके जवान सिंह सरीखे वीर तलवार से मारे जाएँगे; मैं तेरे आहेर को पृथ्वी पर से नष्ट करूँगा, और तेरे दूतों का बोल फिर सुना न जाएगा।

## 3

2:22-23 2:22 2:22-23

1 हाय उस हत्यारी नगरी पर, वह तो छल और लूट के धन से भरी हुई है; लूट कम नहीं होती है।

2 कोड़ों की फटकार और पहियों की घड़घड़ाहट हो रही है; घोड़े कूदते-फाँदते और रथ उछलते चलते हैं।

3 सवार चढ़ाई करते, तलवारें और भाले बिजली के समान चमकते हैं, मारे हुएों की बहुतायत और शवों का बड़ा ढेर है; मुर्दों की कुछ गिनती नहीं, लोग मुर्दों से ठोकर खा खाकर चलते हैं!

4 यह सब उस अति सुन्दर वेश्या, और निपुण टोनहिन के छिनाले की बहुतायत के कारण हुआ, जो छिनाले के द्वारा जाति-जाति के लोगों को, और टोने के द्वारा कुल-कुल के लोगों को बेच डालती है।

5 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, और तेरे वस्त्र को उठाकर, तुझे जाति-जाति के सामने नंगी और राज्य-राज्य के सामने नीचा दिखाऊँगा।

6 मैं तुझ पर घिनौनी वस्तुएँ फेंककर तुझे तुच्छ कर दूँगा, और सबसे तेरी हँसी कराऊँगा।

7 और जितने तुझे देखेंगे, सब तेरे पास से भागकर कहेंगे, नीनवे नाश हो गई; कौन उसके कारण विलाप करे? हम उसके लिये शान्ति देनेवाला कहाँ से ढूँढ़कर ले आएँ?

8 क्या तू 2:22 2:22-23\* से बढ़कर है, जो नहरों के बीच बसी थी, और उसके चारों ओर जल था, और

महानद उसके लिये किला और शहरपनाह का काम देता था?

9 कूश और मिस्री उसको अनगिनत बल देते थे, पूत और लूबी तेरे सहायक थे।

10 तो भी लोग उसको बँधुवाई में ले गए, और उसके नन्हें बच्चे सड़कों के सिरे पर पटक दिए गए; और उसके प्रतिष्ठित पुरुषों के लिये उन्होंने चिट्ठी डाली, और उसके सब रईस बेड़ियों से जकड़े गए।

11 तू भी मतवाली होगी, तू घबरा जाएगी; तू भी शत्रु के डर के मारे शरण का स्थान ढूँढ़ेगी।

12 तेरे सब गढ़ ऐसे अंजीर के वृक्षों के समान होंगे जिनमें पहले पक्के अंजीर लगे हों, यदि वे हिलाए जाएँ तो फल खानेवाले के मुँह में गिरेंगे।

13 देख, तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं, वे स्त्रियाँ बन गये हैं। तेरे देश में प्रवेश करने के मार्ग तेरे शत्रुओं के लिये बिलकुल खुले पड़े हैं; और रुकावट की छड़ें आग का कौर हो गई हैं।

14 घिर जाने के दिनों के लिये पानी भर ले, और गढ़ों को अधिक दृढ़ कर; कीचड़ में आकर गारा लताड़, और भट्टे को सजा!

15 ~~तू नष्ट हो जाएगी। वह येलेक नाम टिड्डी के समान तुझे निगल जाएगी। यद्यपि तू अर्बे नामक टिड्डी के समान अनगिनत भी हो जाए!~~

16 तेरे व्यापारी आकाश के तारागण से भी अधिक अनगिनत हुए। टिड्डी चट करके उड़ जाती है।

17 तेरे मुकुटधारी लोग टिड्डियों के समान, और तेरे सेनापति टिड्डियों के दलों सरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन में बाड़ों पर टिकते हैं, परन्तु जब सूर्य दिखाई देता है तब भाग जाते हैं; और कोई नहीं जानता कि वे कहाँ गए।

18 हे अशशूर के राजा, तेरे ठहराए हुए चरवाहे ऊँघते हैं; तेरे शूरवीर भारी नींद में पड़ गए हैं। तेरी प्रजा पहाड़ों पर तितर-बितर हो गई है, और कोई उनको फिर इकट्ठा नहीं करता।

19 तेरा घाव न भर सकेगा, तेरा रोग असाध्य है। जितने तेरा समाचार सुनेंगे, वे तेरे ऊपर ताली बजाएँगे। क्योंकि ऐसा कौन है जिस पर तेरी लगातार दुष्टता का प्रभाव न पड़ा हो?

† 3:15 ~~तू नष्ट हो जाएगी। वह येलेक नाम टिड्डी के समान तुझे निगल जाएगी। यद्यपि तू अर्बे नामक टिड्डी के समान अनगिनत भी हो जाए!~~ परमेश्वर के क्रोध की अग्नि तुरन्त भस्म कर देती है

## हबक्कूक

११११

हब. 1:1 भविष्यद्वक्ता हबक्कूक के वचन के रूप में इस पुस्तक की पहचान करता है। उनके नाम के अतिरिक्त हम हबक्कूक के विषय में और कुछ नहीं जानते हैं। यह तथ्य है कि उसे “हबक्कूक नबी” कहा गया है दर्शाता है कि वह एक चिरपरिचित मनुष्य था और उसकी पहचान की आवश्यकता नहीं थी।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 612 - 605 ई. पू.

हबक्कूक ने यह पुस्तक सम्भवतः दक्षिणी राज्य, यहूदा के पतन से पूर्व, बहुत ही कम समय पहले लिखी थी।

१११११११

दक्षिणी राज्य, यहूदा की प्रजा तथा सर्वत्र परमेश्वर के लोगों के लिए एक पत्र।

१११११११११

हबक्कूक सोच रहा था कि परमेश्वर अपने चुने हुएों को उनके बैरियों के हाथों कष्ट क्यों भोगने दे रहा है। परमेश्वर उसे उत्तर देता है और उसका विश्वास दृढ़ होता है। इस पुस्तक का उद्देश्य है कि यहोवा, उसके लोगों का रक्षक, विश्वास करनेवालों को सुरक्षित रखेगा और यह घोषणा करना कि यहोवा, यहूदा का परमप्रधान योद्धा एक दिन अन्यायी बाबेल को दण्ड देगा। हबक्कूक की पुस्तक हमें घमण्डियों को विनम्र बनाने का चित्रण प्रस्तुत करती है जबकि धर्मनिष्ठ मनुष्य परमेश्वर में विश्वास के द्वारा जीवित रहते हैं (2:4)।

१११ ११११

प्रभु परमेश्वर पर भरोसा करना  
रूपरेखा

1. हबक्कूक की शिकायत — 1:1-2:20
2. हबक्कूक की प्रार्थना — 3:1-19

1 भारी वचन जिसको हबक्कूक नबी ने दर्शन में पाया।

2 हे यहोवा १११ ११ ११ ११११ ११११११ १११११, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख “उपद्रव”, “उपद्रव” चिल्लाता रहूँगा? क्या तू उद्धार नहीं करेगा?

\* 1:2 १११ ११ ११ ११११ १११११ ११११ १११११११: भविष्यद्वक्ता यहाँ व्यक्त करता है कि पहले से ही बहुत लम्बा समय हो चुका है और उस लम्बे समय के दौरान वह परमेश्वर को पुकारता है परन्तु कोई परिवर्तन नहीं हुआ। † 1:4 १११ ११ ११११ १११: अर्थात् विगड़ रहा है या बदल रहा है।

3 तू मुझे अनर्थ काम क्यों दिखाता है? और क्या कारण है कि तू उत्पात को देखता ही रहता है? मेरे सामने लूट-पाट और उपद्रव होते रहते हैं; और झगडा हुआ करता है और वाद-विवाद बढ़ता जाता है।

4 इसलिए व्यवस्था ढीली हो गई और न्याय कभी नहीं प्रगट होता। दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं; इसलिए न्याय का १११ ११ १११ ११†।

5 जाति-जाति की ओर चित्त लगाकर देखो, और बहुत ही चकित हो। क्योंकि मैं तुम्हारे ही दिनों में ऐसा काम करने पर हूँ कि जब वह तुम को बताया जाए तो तुम उस पर विश्वास न करोगे। (१११११११. 13:41)

6 देखो, मैं कसदियों को उभारने पर हूँ, वे क्रूर और उतावली करनेवाली जाति हैं, जो पराएँ वासस्थानों के अधिकारी होने के लिये पृथ्वी भर में फैल गए हैं। (११११११. 20:9)

7 वे भयानक और डरावने हैं, वे आप ही अपने न्याय की बड़ाई और प्रशंसा का कारण हैं।

8 उनके घोड़े चीतों से भी अधिक वेग से चलनेवाले हैं, और साँझ को आहेर करनेवाले भेड़ियों से भी अधिक क्रूर हैं; उनके सवार दूर-दूर कूदते-फाँदते आते हैं। हाँ, वे दूर से चले आते हैं; और आहेर पर झपटनेवाले उकाब के समान झपट्टा मारते हैं।

9 वे सब के सब उपद्रव करने के लिये आते हैं; सामने की ओर मुख किए हुए वे सीधे बढ़े चले जाते हैं, और बंधुओं को रेत के किनकों के समान बटोरते हैं।

10 राजाओं को वे उपहास में उड़ाते और हाकिमों का उपहास करते हैं; वे सब दृढ़ गद्दों को तुच्छ जानते हैं, क्योंकि वे दमदमा बाँधकर उनको जीत लेते हैं।

11 तब वे वायु के समान चलते और मर्यादा छोड़कर दोषी ठहरते हैं, क्योंकि उनका बल ही उनका देवता है।

12 हे मेरे प्रभु यहोवा, हे मेरे पवित्र परमेश्वर, क्या तू अनादिकाल से नहीं है? इस कारण हम लोग नहीं मरने के। हे यहोवा, तूने उनको न्याय करने के लिये ठहराया है; हे चट्टान, तूने उलाहना देने के लिये उनको बैठाया है।

13 तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता है?







18 तो भी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन  
रहूँगा,  
और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न  
रहूँगा

19 यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है,  
वह मेरे पाँव हिरनों के समान बना देता है,  
वह मुझ को मेरे ऊँचे स्थानों पर चलाता है।

## सपन्याह

११११

सप. 1:1 में लेखक अपना परिचय देता है, “सपन्याह... हिजकिय्याह का पुत्र, अमर्याह का परपोता और गदल्याह का पोता और कूशी का पुत्र था।” सपन्याह का अर्थ है, “परमेश्वर का रक्षित” वह यिर्म. (21:1; 29:25,29; 37:3; 52:24) में एक पुरोहित दर्शाया गया है परन्तु उपरिलेख में चर्चित सपन्याह से उसका कोई सम्बंध नहीं है। प्रायः कहा जाता है कि वंशावली के आधार पर सपन्याह राजसी परिवार से था। सपन्याह लेखक भविष्यद्वक्ताओं में सर्वप्रथम था जिसने यशायाह और मीका के समय के यहूदा के लिए भविष्यद्वक्ता की थी।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 640 - 607 ई. पू.

पुस्तक से हमें विदित होता है कि सपन्याह योशिय्याह के राज्यकाल में भविष्यद्वक्ता कर रहा था। (सप. 1:1)

१११११११

यहूदिया की प्रजा (दक्षिण राज्य) तथा सर्वत्र उपस्थित परमेश्वर के लोगों के लिए पत्र।

१११११११११

सपन्याह के दण्ड और प्रोत्साहन के सन्देश में तीन शिक्षाएँ हैं: परमेश्वर सब जातियों पर परमप्रधान है, दुष्ट को दण्ड दिया जाएगा और धर्मनिष्ठ को न्याय के दिन प्रतिफल मिलेगा, मन फिराकर परमेश्वर में विश्वास करनेवाले को वह आशीष देता है।

१११ १११११

यहोवा का महान दिन  
रूपरेखा

1. प्रभु के दिन का अवश्यभावी दण्ड — 1:1-18
2. आशा का अन्तराल — 2:1-3
3. अन्यजातियों का विनाश — 2:4-15
4. यरूशलेम का विनाश — 3:1-7
5. आशा का पुनः उदय — 3:8-20

1 आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में, सपन्याह के पास जो हिजकिय्याह के पुत्र अमर्याह का परपोता और गदल्याह का पोता और कूशी का पुत्र था, यहोवा का यह वचन पहुँचा

\* 1:3 १११११११ ११११ ११११ १११ १११ १११११११ ११ ११११११११: यही नहीं कि दुष्ट का अन्त किया जाएगा वरन् टोकर के सब कारणों को भी, हर एक कारण जिससे मनुष्य टोकर खा सकता है नाश किए जाएँगे। † 1:5 ११११११११११: यह अम्मोनियों का देवता है।

2 “मैं धरती के ऊपर से सब का अन्त कर दूँगा,” यहोवा की यही वाणी है।

3 “मैं मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूँगा; मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों का, और १११११११११ १११११ १११११ ११११ ११११ ११११११११ १११ १११११११११” का भी अन्त कर दूँगा; मैं मनुष्यजाति को भी धरती पर से नाश कर डालूँगा,” यहोवा की यही वाणी है। (१११११११ 13:41)

4 “मैं यहूदा पर और यरूशलेम के सब रहनेवालों पर हाथ उठाऊँगा, और इस स्थान में बाल के बचे हुआँ को और याजकों समेत देवताओं के पुजारियों के नाम को नाश कर दूँगा।

5 जो लोग अपने-अपने घर की छत पर आकाश के गण को दण्डवत् करते हैं, और जो लोग दण्डवत् करते और यहोवा की शपथ खाते हैं और ११११११११११ की भी शपथ खाते हैं;

6 और जो यहोवा के पीछे चलने से लौट गए हैं, और जिन्होंने न तो यहोवा को ढूँढा, और न उसकी खोज में लगे, उनको भी मैं सत्यानाश कर डालूँगा।”

7 परमेश्वर यहोवा के सामने शान्त रहो! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है; यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया है, और अपने पाहुनों को पवित्र किया है।

8 और यहोवा के यज्ञ के दिन, “मैं हाकिमों और राजकुमारों को और जितने परदेश के वस्त्र पहना करते हैं, उनको भी दण्ड दूँगा।

9 उस दिन मैं उन सभी को दण्ड दूँगा जो डेवढी को लाँघते, और अपने स्वामी के घर को उपद्रव और छल से भर देते हैं।”

10 यहोवा की यह वाणी है, “उस दिन मछली फाटक के पास चिल्लाहट का और नये टोले मिशनाह में हाहाकार का और टीलों पर बड़े धमाके का शब्द होगा।

11 हे मक्तेश के रहनेवालों, हाय, हाय, करो! क्योंकि सब व्यापारी मिट गए; जितने चाँदी से लदे थे, उन सब का नाश हो गया है।

12 उस समय मैं दीपक लिए हुए यरूशलेम में ढूँढ-ढाँढ करूँगा, और जो लोग दाखमधु के तलछट तथा मैल के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो भला करेगा और न बुरा, उनको मैं दण्ड दूँगा।

13 तब उनकी धन-सम्पत्ति लूटी जाएगी, और उनके घर उजाड़ होंगे; वे घर तो बनाएँगे, परन्तु उनमें रहने न पाएँगे; और वे दाख की बारियाँ लगाएँगे, परन्तु उनसे दाखमधु न पीने पाएँगे।”





## हाग्वै

११११

हाग्वै 1:1 में इस पुस्तक के लेखक की पहचान है, कि वह भविष्यद्वक्ता हाग्वै है। भविष्यद्वक्ता हाग्वै ने अपने चार सन्देश यरूशलेम के यहूदियों के लिए लिखे हैं। हाग्वै 2:3 से विदित होता है कि भविष्यद्वक्ता हाग्वै ने मन्दिर के विनाश और निर्वासन से पूर्व यरूशलेम को देखा था अर्थात् वह एक वृद्ध व्यक्ति था जो अपने देश की महिमा को स्मरण कर रहा था। वह एक ऐसा भविष्यद्वक्ता था जिसमें अपने लोगों को बन्धुआई की राख से उठकर संसार के लिए परमेश्वर की ज्योति के अधिकृत स्थान पर पुनः दावा करते देखने की तीव्र लालसा थी।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 520 ई. पू.

यह पुस्तक बेबीलोन की बन्धुआई से लौटने के बाद लिखी गई थी।

११११११

यरूशलेमवासी तथा बन्धुआई से स्वदेश आनेवाले लोग

११११११११११

स्वदेश लौटनेवाले यहूदियों को प्रोत्साहित करना कि स्वदेश लौटने का सन्तोष ही पर्याप्त नहीं है; राष्ट्र के प्रमुख लक्ष्य के निमित्त मन्दिर और आराधना के पुनःस्थापन के प्रयास के द्वारा विश्वास को अभिव्यक्त करना है, और उन्हें प्रोत्साहन देना कि ऐसा करने से यहोवा उन्हें और उनकी भूमि को आशीष देगा, और स्वदेश लौटनेवालों को प्रोत्साहित करना कि उनके पूर्वकालिक विद्रोह के उपरान्त भी यहोवा ने उनके लिए भविष्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखा है।

१११ ११११

यहोवा के भवन का पुनर्निर्माण

रूपरेखा

1. मन्दिर के निर्माण की पुकार — 1:1-15
2. परमेश्वर में साहस रखें — 2:1-9
3. पवित्र जीवन की पुकार — 2:10-19
4. भविष्य में विश्वास की पुकार — 2:20-23

११११११११११ ११ ११११ ११११११ ११ ११११११

1 दारा राजा के राज्य के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के पहले दिन, यहोवा का यह वचन, हाग्वै भविष्यद्वक्ता

\* 1:9 १११११ ११११, ११ ११११ १११ ११११११ ११११ ११: वे अपनी भौतिक रूचियों में व्यस्त थे, उनके पास परमेश्वर की बातों के लिए समय नहीं था

के द्वारा, शालतीएल के पुत्र जरुब्बबेल के पास, जो यहूदा का अधिपति था, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के पास पहुँचा

2 “सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ये लोग कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है।”

3 फिर यहोवा का यह वचन हाग्वै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुँचा,

4 “क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है?

5 इसलिए अब सेनाओं का यहोवा यह कहता है, अपने-अपने चाल-चलन पर ध्यान करो।

6 तुम ने बहुत बोया परन्तु थोड़ा काटा; तुम खाते हो, परन्तु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं बुझती; तुम कपड़े पहनते हो, परन्तु गरमाते नहीं; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपनी मजदूरी की कमाई को छेदवाली थैली में रखता है।

7 “सेनाओं का यहोवा तुम से यह कहता है, अपने-अपने चाल चलन पर सोचो।

8 पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ; और मैं उसको देखकर प्रसन्न होऊँगा, और मेरी महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है।

9 तुम ने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो थोड़ी ही है; और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैंने उसको उड़ा दिया। सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्यों हुआ? क्या ११११११ ११११, ११ १११११ १११ ११११११ १११११ १११\* और तुम में से प्रत्येक अपने-अपने घर को दौड़ा चला जाता है?

10 इस कारण आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं।

11 और मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ों पर, और अन्न और नये दाखमधु पर और ताजे तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यों और घरेलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है।”

११११११ ११ ११११११११११११

12 तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बबेल और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक ने सब बचे हुए लोगों समेत अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानी; और जो वचन उनके परमेश्वर यहोवा ने उनसे कहने के लिये हाग्वै भविष्यद्वक्ता को भेज दिया था, उसे उन्होंने मान लिया; और लोगों ने यहोवा का भय माना।



19 क्या अब तक बीज खत्ते में है? अब तक दाखलता और अंजीर और अनार और जैतून के वृक्ष नहीं फले, परन्तु आज के दिन से मैं तुम को आशीष देता रहूँगा।”

20 उसी महीने के चौबीसवें दिन को दूसरी बार यहोवा का यह वचन हाग्वै के पास पहुँचा,

21 “यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल से यह कह: मैं आकाश और पृथ्वी दोनों को हिलाऊँगा, (**21:29, 21:26**)

22 और मैं राज्य- राज्य की गद्दी को उलट दूँगा; मैं अन्यजातियों के राज्य-राज्य का बल तोड़ूँगा, और रथों को चढवैयों समेत उलट दूँगा; और घोड़ों समेत सवार हर एक अपने भाई† की तलवार से गिरेंगे।

23 सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, उस दिन, हे शालतीएल के पुत्र मेरे दास जरुब्बाबेल, मैं तुझे लेकर मुहर वाली अंगूठी के समान रखूँगा, यहोवा की यही वाणी है; क्योंकि मैंने तुझी को चुन लिया है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।”

## जकर्याह

१११११

जक. 1:1 में पुस्तक के लेखक का नाम बेरेक्याह का पुत्र, और इद्दो का पोता भविष्यद्वक्ता जकर्याह दिया गया है। इद्दो स्वदेश लौटनेवाले निर्वासितों में पुरोहित परिवारों में से एक का मुखिया था (नहे. 12:14,16)। सम्भवतः स्वदेश लौटने के समय जकर्याह एक बालक ही था। पारिवारिक पृष्ठभूमि से जकर्याह भविष्यद्वक्ता होने के साथ-साथ पुरोहित भी था। अतः वह यहूदियों की आराधना विधि को घनिष्ठता से जानता था, यद्यपि उसने मन्दिर में सेवा नहीं की थी।

१११११ १११११ ११११ १११११११

लगभग 520 - 480 ई. पू.

यह पुस्तक बाबेल की बन्धुआई से लौटने के बाद लिखी गई थी। जकर्याह ने अध्याय 1-8 मन्दिर निर्माण के पूरा होने के पूर्व तथा अध्याय 9-14 मन्दिर निर्माण के बाद लिखे थे।

११११११११

यरूशलेमवासी तथा स्वदेश लौटे निर्वासित यहूदी।

११११११११११

इस पुस्तक का उद्देश्य था कि स्वदेश लौटनेवालों को आशा बंधाई जाए और समझ प्रदान की जाए और वे आनेवाले मसीह यीशु की प्रतीक्षा के लिए प्रेरित हो जाएँ। जकर्याह ने बल देकर कहा कि परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं को शिक्षा देने, चेतावनी देने और उसके लोगों का सुधार करने के लिए काम में लेता है। दुर्भाग्य से उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया। उनके पाप का दण्ड परमेश्वर ने उन्हें दिया। इस पुस्तक में यह प्रमाण है कि भविष्यद्वक्ता भी भ्रष्ट हो सकती है।

११११ ११११११

परमेश्वर का उद्धार

रूपरेखा

1. मन-फिराव की पुकार — 1:1-6
2. जकर्याह का दर्शन — 1:7-6:15
3. उपवास से सम्बंधित प्रश्न — 7:1-8:23
4. भविष्य के बोझ — 9:1-14:21

११११११११११ १११ १११११११११

1 दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में जकर्याह भविष्यद्वक्ता के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और

इद्दो का पोता था, यहोवा का यह वचन पहुँचा (११११११११ 4:24, 5:1)

2 “यहोवा तुम लोगों के पुरखाओं से बहुत ही क्रोधित हुआ था।

3 इसलिए तू इन लोगों से कह, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी ओर फिरूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (१११११११ 4:8, १११११११ 6:1)

4 अपने पुरखाओं के समान न बनो, उनसे तो पूर्वकाल के भविष्यद्वक्ता यह पुकार पुकारकर कहते थे, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है, अपने बुरे मार्गों से, और अपने बुरे कामों से फिरो;’ परन्तु उन्होंने न तो सुना, और न मेरी ओर ध्यान दिया, यहोवा की यही वाणी है।

5 तुम्हारे पुरखा कहाँ रहे? भविष्यद्वक्ता क्या सदा जीवित रहते हैं?

6 परन्तु मेरे वचन और मेरी आज्ञाएँ जिनको मैंने अपने दास नबियों को दिया था, क्या वे तुम्हारे पुरखाओं पर पूरी न हुई? तब उन्होंने मन फिराया और कहा, सेनाओं के यहोवा ने हमारे चाल चलन और कामों के अनुसार हम से जैसा व्यवहार करने का निश्चय किया था, वैसा ही उसने हमको बदला दिया है।” (१११११११ 2:17)

१११११११११ १११ १११११११११

7 दारा के दूसरे वर्ष के शबात नामक ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को जकर्याह नबी के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता था, यहोवा का वचन इस प्रकार पहुँचा

8 “मैंने रात को स्वप्न में क्या देखा कि एक पुरुष लाल घोड़े पर चढ़ा हुआ उन मेंहदियों के बीच खड़ा है जो नीचे स्थान में हैं, और उसके पीछे लाल और भूरे और श्वेत घोड़े भी खड़े हैं। (१११११११११ 6:4)

9 तब मैंने कहा, ‘हे मेरे प्रभु ये कौन हैं?’ तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझसे कहा, ‘मैं तुझे दिखाऊँगा कि ये कौन हैं।’

10 फिर जो पुरुष मेंहदियों के बीच खड़ा था, उसने कहा, ‘यह वे हैं जिनको यहोवा ने पृथ्वी पर सैर अर्थात् घूमने के लिये भेजा है।’

11 तब उन्होंने यहोवा के उस दूत से जो मेंहदियों के बीच खड़ा था, कहा, ‘हमने पृथ्वी पर सैर किया है, और क्या देखा कि ११११११ १११११११११ ११११ १११११११११ ११११ ११११\*।’

१११११११ १११११११११११ १११ १११११११११११ १११११११११११

\* 1:11 १११११ १११११११११११ ११११ १११११११११११ १११ १११११ १११: जैसा कि शब्द व्यक्त करता है, अपनी आक्रामकता और युद्ध के आदी अवस्था से शान्ति



12 “तब यहोवा के दूत ने कहा, हे सेनाओं के यहोवा, तू जो यरूशलेम और यहूदा के नगरों पर सत्तर वर्ष से क्रोधित है, इसलिए तू उन पर कब तक दया न करेगा?” (27:10. 6:10)

13 और यहोवा ने उत्तर में उस दूत से जो मुझसे बातें करता था, अच्छी-अच्छी और शान्ति की बातें कहीं।

14 तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझसे कहा, ‘तू पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, मुझे यरूशलेम और सिय्योन के लिये बड़ी जलन हुई है।’

15 जो अन्यजातियाँ सुख से रहती हैं, उनसे 27:10; क्योंकि मैंने तो थोड़ा सा क्रोध किया था, परन्तु उन्होंने विपत्ति को बढ़ा दिया।

16 इस कारण यहोवा यह कहता है, अब मैं दया करके यरूशलेम को लौट आया हूँ; मेरा भवन उसमें बनेगा, और यरूशलेम पर नापने की डोरी डाली जाएगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

27:10 27 27:10

17 “फिर यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओं से भर जाएँगे, और यहोवा फिर सिय्योन को शान्ति देगा; और यरूशलेम को फिर अपना ठहराएगा।”

18 27:10 27:10 27 27:10 27:10, तो क्या देखा कि चार सींग हैं।

19 तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उससे मैंने पूछा, “ये क्या हैं?” उसने मुझसे कहा, “ये वे ही सींग हैं, जिन्होंने यहूदा और इस्राएल और यरूशलेम को तितर-बितर किया है।”

20 फिर यहोवा ने मुझे चार लोहार दिखाए।

21 तब मैंने पूछा, “ये क्या करने को आए हैं?” उसने कहा, “ये वे ही सींग हैं, जिन्होंने यहूदा को ऐसा तितर-बितर किया कि कोई सिर न उठा सका; परन्तु ये लोग उन्हें भगाने के लिये और उन जातियों के सींगों को काट डालने के लिये आए हैं जिन्होंने यहूदा के देश को तितर-बितर करने के लिये उनके विरुद्ध अपने-अपने सींग उठाए थे।”

## 2

27:10 27 27:10 27 27:10

† 1:15 27:10 27:10 27:10: इन शब्दों की रचना से प्रगट होता है कि परमेश्वर उसकी प्रजा को सतानेवालों से बहुत क्रोधित है। ‡ 1:18 27:10 27:10 27 27:10 27:10: शारीरिक आँखें नहीं (शारीरिक आँखें इन दर्शनों को नहीं देख सकती) परन्तु मन और बुद्धि कि आन्तरिक आँखें।

\* 2:10 27 27:10 27 27:10, 27:10 27:10 27 27 27 27:10 27:10: यह आनन्द का उत्सव है जिसमें सिय्योन को आमन्त्रित किया गया है इसके अतिरिक्त वह तीन बार और इसी शब्द द्वारा आमन्त्रित किया गया है परमेश्वर के नवीकृत उपस्थिति के लिए।

1 फिर मैंने अपनी आँखें उठाई तो क्या देखा, कि हाथ में नापने की डोरी लिए हुए एक पुरुष है।

2 तब मैंने उससे पूछा, “तू कहाँ जाता है?” उसने मुझसे कहा, “यरूशलेम को नापने जाता हूँ कि देखूँ उसकी चौड़ाई कितनी, और लम्बाई कितनी है।” (27:10. 21:15)

3 तब मैंने क्या देखा, कि जो दूत मुझसे बातें करता था वह चला गया, और दूसरा दूत उससे मिलने के लिये आकर,

4 उससे कहता है, “दौड़कर उस जवान से कह, ‘यरूशलेम मनुष्यों और घरेलू पशुओं की बहुतायत के मारे शहरपनाह के बाहर-बाहर भी बसेगी।’

5 और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर आग के समान शहरपनाह ठहरूँगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूँगा।”

27:10 27 27:10 27:10 27:10 27 27:10 27:10

6 यहोवा की यह वाणी है, “देखो, सुनो उत्तर के देश में से भाग जाओ, क्योंकि मैंने तुम को आकाश की चारों वायुओं के समान तितर-बितर किया है। (27:10. 48:20, 27:10. 28:64, 27:10. 24:31)

7 हे बाबेल जाति के संग रहनेवाली, सिय्योन को बचकर निकल भाग!

8 क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, उस तेज के प्रगट होने के बाद उसने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती थीं, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आँख की पुतली ही को छूता है।

9 देखो, मैं अपना हाथ उन पर उठाऊँगा, तब वे उन्हीं से लूटे जाएँगे जो उनके दास हुए थे। तब तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा है।

10 27 27:10 27:10 27 27:10, 27:10 27:10 27 27 27 27:10 27:10\*, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे बीच में निवास करूँगा, यहोवा की यही वाणी है।

11 उस समय बहुत सी जातियाँ यहोवा से मिल जाएँगी, और मेरी प्रजा हो जाएँगी; और मैं तेरे बीच में वास करूँगा,

12 और तू जानेगी कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेज दिया है। और यहोवा यहूदा को पवित्र देश में अपना भागकर लेगा, और यरूशलेम को फिर अपना ठहराएगा।











होने के कारण दुर्दशा में पड़े हैं। (222222 9:36, 222 2:18,19)

3 “मेरा क्रोध चरवाहों पर भड़का है, और मैं उन बकरों को दण्ड दूँगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा अपने झुण्ड अर्थात् यहूदा के घराने का हाल देखने को आएगा, और लड़ाई में उनको अपना हष्ट-पुष्ट घोड़ा सा बनाएगा।

4 उसी में से कोने का पत्थर, उसी में से खूँटी, उसी में से युद्ध का धनुष, उसी में से सब प्रधान प्रगट होंगे।

5 वे ऐसे वीरों के समान होंगे जो लड़ाई में अपने बैरियों को सड़कों की कीच के समान रौंदते हों; वे लड़ेंगे, क्योंकि यहोवा उनके संग रहेगा, इस कारण वे वीरता से लड़ेंगे और सवारों की आशा टूटेगी।

6 “मैं यहूदा के घराने को पराक्रमी करूँगा, और यूसुफ के घराने का उद्धार करूँगा। मुझे उन पर दया आई है, इस कारण मैं उन्हें लौटा लाकर उन्हीं के देश में बसाऊँगा, और 22 222 222222, 2222 222222 2222 22 22 2222 222222; मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ, इसलिए उनकी सुन लूँगा।

7 एप्रैमी लोग वीर के समान होंगे, और उनका मन ऐसा आनन्दित होगा जैसे दाखमधु से होता है। यह देखकर उनके बच्चे आनन्द करेंगे और उनका मन यहोवा के कारण मगन होगा।

8 “मैं सीटी बजाकर उनको इकट्ठा करूँगा, क्योंकि मैं उनका छुड़ानेवाला हूँ, और वे ऐसे बढ़ेंगे जैसे पहले बढ़े थे।

9 यद्यपि मैं उन्हें जाति-जाति के लोगों के बीच बिखेर दूँगा तो भी वे दूर-दूर देशों में मुझे स्मरण करेंगे, और अपने बालकों समेत जीवित लौट आएँगे।

10 मैं उन्हें मिस्र देश से लौटा लाऊँगा, और अश्शूर से इकट्ठा करूँगा, और गिलाद और लबानोन के देशों में ले आकर इतना बढ़ाऊँगा कि वहाँ वे समा न सकेंगे।

11 वह उस कष्टदायक समुद्र में से होकर उसकी लहरें दबाता हुआ जाएगा और नील नदी का सब गहरा जल सूख जाएगा। अश्शूर का घमण्ड तोड़ा जाएगा और मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा।

12 मैं उन्हें यहोवा द्वारा पराक्रमी करूँगा, और वे उसके नाम से चले फिरेंगे,” यहोवा की यही वाणी है।

## 11

22222222 22 2222222222

† 10:6 22 222 22222, 2222 22222 2222 22 22 2222 22222: परमेश्वर सदैव वर्तमान का परमेश्वर है वह आधी क्षमा नहीं देता है। परमेश्वर उनके अपराध और पाप कभी स्मरण नहीं रखेगा। वह पश्चातापी मनुष्य को उसका खोया हुआ अनुग्रह पुनः प्रदान करता है जैसे कि वह उससे कभी वंचित न हुआ हो, और उन्हें नए अनुग्रह से भर देता है। \* 11:6 222 222 2 2222222: इसलिए वे घात होनेवाला झुण्ड थे क्योंकि परमेश्वर उन पर फिर दया न करेगा जो निर्दयी चरवाहे के पीछे गए थे जिन्होंने उनका केवल पथ-भ्रष्ट ही किया था। † 11:9 222 222 22 2 22222222: परमेश्वर विद्रोहियों को उन्हीं के हाल पर छोड़ देता है।

1 हे लबानोन, आग को रास्ता दे कि वह आकर तेरे देवदारों को भस्म करे!

2 हे सनोवर वृक्षों, हाय, हाय, करो! क्योंकि देवदार गिर गया है और बड़े से बड़े वृक्ष नष्ट हो गए हैं! हे बाशान के बांजवृक्षों, हाय, हाय, करो! क्योंकि अगम्य वन काटा गया है!

3 चरवाहों के हाहाकार का शब्द हो रहा है, क्योंकि उनका वैभव नष्ट हो गया है! जवान सिंहों का गरजना सुनाई देता है, क्योंकि यरदन के किनारे का घना वन नाश किया गया है!

22222222 22 22222222222222

4 मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दी: “घात होनेवाली भेड़-बकरियों का चरवाहा हो जा।

5 उनके मोल लेनेवाले उन्हें घात करने पर भी अपने को दोषी नहीं जानते, और उनके बेचनेवाले कहते हैं, ‘यहोवा धन्य है, हम धनी हो गए हैं;’ और उनके चरवाहे उन पर कुछ दया नहीं करते।

6 यहोवा की यह वाणी है, मैं इस देश के रहनेवालों पर 2222 2222 2 22222222\*। देखो, मैं मनुष्यों को एक दूसरे के हाथ में, और उनके राजा के हाथ में पकड़वा दूँगा; और वे इस देश को नाश करेंगे, और मैं उसके रहनेवालों को उनके वश से न छोड़ाऊँगा।”

7 इसलिए मैं घात होनेवाली भेड़-बकरियों को और विशेष करके उनमें से जो दीन थीं उनको चराने लगा। और मैंने दो लाठियाँ लीं; एक का नाम मैंने अनुग्रह रखा, और दूसरी का नाम एकता। इनको लिये हुए मैं उन भेड़-बकरियों को चराने लगा।

8 मैंने उनके तीनों चरवाहों को एक महीने में नष्ट कर दिया, परन्तु मैं उनके कारण अधीर था, और वे मुझसे घृणा करती थीं।

9 तब मैंने उनसे कहा, “222 2222 22 2 2222222222। तुम में से जो मरे वह मरे, और जो नष्ट हो वह नष्ट हो, और जो बची रहें वे एक दूसरे का माँस खाएँ।”

10 और मैंने अपनी वह लाठी तोड़ डाली, जिसका नाम अनुग्रह था, कि जो वाचा मैंने सब अन्यजातियों के साथ बाँधी थी उसे तोड़ूँ।

11 वह उसी दिन तोड़ी गई, और इससे दीन भेड़-बकरियाँ जो मुझे ताकती थीं, उन्होंने जान लिया कि यह यहोवा का वचन है।

12 तब मैंने उनसे कहा, “यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो।” तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चाँदी के तीस टुकड़े तौल दिए। (22:22:22 26:15)

13 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे,” यह क्या ही भारी दाम है जो उन्होंने मेरा ठहराया है? तब मैंने चाँदी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया। (22:22:22 27:9,10)

14 तब मैंने अपनी दूसरी लाठी जिसका नाम एकता था, इसलिए तोड़ डाली कि मैं उस भाईचारे के नाते को तोड़ डालूँ जो यहूदा और इस्राएल के बीच में है।

15 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “अब तू मूर्ख चरवाहे के हथियार ले ले।

16 क्योंकि 22:22 22 22:22 22:22: एक ऐसा चरवाहा ठहराऊँगा, जो खोई हुई को न ढूँढेगा, न तितर-बितर को इकट्ठी करेगा, न घायलों को चंगा करेगा, न जो भली चंगी हैं उनका पालन-पोषण करेगा, वरन् मोटियों का माँस खाएगा और उनके खुरों को फाड़ डालेगा।

17 हाय उस निकम्मे चरवाहे पर जो भेड़-बकरियों को छोड़ जाता है! उसकी बाँह और दाहिनी आँख दोनों पर तलवार लगेगी, तब उसकी बाँह सूख जाएगी और उसकी दाहिनी आँख फूट जाएगी।”

## 12

22:22:22 22 22:22:22:22 22:22:22

1 इस्राएल के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन: यहोवा जो आकाश का ताननेवाला, पृथ्वी की नींव डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का रचनेवाला है, यहोवा की यह वाणी है,

2 “देखो, मैं यरूशलेम को चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के नशा का कटोरा ठहरा दूँगा; और जब यरूशलेम घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा भी ऐसी ही होगी।

3 और उस समय पृथ्वी की सारी जातियाँ यरूशलेम के विरुद्ध इकट्ठी होंगी, तब मैं उसको इतना भारी पत्थर बनाऊँगा, कि जो उसको उठाएँगे वे बहुत ही घायल होंगे। (22:22:22 21:24, 22:22:22 21:44)

4 यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं हर एक घोड़े को घबरा दूँगा, और उसके सवार को घायल करूँगा। परन्तु 22:22 22:22:22 22 22:22:22 22 22:22:22:22:22

‡ 11:16 22:22 22 22:22 22:22: परमेश्वर बल और बुद्धि देता है परन्तु मनुष्य पाप में उसका दुरुपयोग करते हैं। \* 12:4 22:22 22:22:22 22 22:22:22 दया, प्रेम और मार्गदर्शन भी

22:22:22\*, जब मैं अन्यजातियों के सब घोड़ों को अंधा कर डालूँगा।

5 तब यहूदा के अधिपति सोचेंगे, ‘यरूशलेम के निवासी अपने परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा की सहायता से मेरे सहायक बनेंगे।’

6 “उस समय मैं यहूदा के अधिपतियों को ऐसा कर दूँगा, जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अँगूठी या पूले में जलती हुई मशाल होती है, अर्थात् वे दाएँ-बाएँ चारों ओर के सब लोगों को भस्म कर डालेंगे; और यरूशलेम जहाँ अब बसी है, वहीं बसी रहेगी, यरूशलेम में ही।

7 “और यहोवा पहले यहूदा के तम्बुओं का उद्धार करेगा, कहीं ऐसा न हो कि दाऊद का घराना और यरूशलेम के निवासी अपने-अपने वैभव के कारण यहूदा के विरुद्ध बड़ाई मारें।

8 उस दिन यहोवा यरूशलेम के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा, और उस समय उनमें से जो ठोकर खानेवाला हो वह दाऊद के समान होगा; और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा, अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान जो उनके आगे-आगे चलता था।

9 उस दिन मैं उन सब जातियों का नाश करने का यत्न करूँगा जो यरूशलेम पर चढ़ाई करेंगी।

22:22 22:22 22 22:22 22:22:22

10 “मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूँगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहलौटे के लिये करते हैं। (22:22 19:37, 22:22:22 24:30, 22:22:22 1:7)

11 उस समय यरूशलेम में इतना रोना-पीटना होगा जैसा मगिदोन की तराई में हदद्विम्मोन में हुआ था। (22:22:22 16:16)

12 सारे देश में विलाप होगा, हर एक परिवार में अलग-अलग; अर्थात् दाऊद के घराने का परिवार अलग, और उनकी स्त्रियाँ अलग; नातान के घराने का परिवार अलग, और उनकी स्त्रियाँ अलग;

13 लेवी के घराने का परिवार अलग और उनकी स्त्रियाँ अलग; शिमियों का परिवार अलग; और उनकी स्त्रियाँ अलग;

14 और जितने परिवार रह गए हों हर एक परिवार अलग - अलग और उनकी स्त्रियाँ भी अलग-अलग।





9 तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा। (११:१५) 11:15

10 गेबा से लेकर यरूशलेम के दक्षिण की ओर के रिम्मोन तक सब भूमि अराबा के समान हो जाएगी। परन्तु वह ऊँची होकर बिन्यामीन के फाटक से लेकर पहले फाटक के स्थान तक, और कोनेवाले फाटक तक, और हननेल के गुम्मत से लेकर राजा के दाखरस कुण्डों तक अपने स्थान में बसेगी।

11 लोग उसमें बसेंगे क्योंकि फिर सत्यानाश का श्राप न होगा; और यरूशलेम बेखटके बसी रहेगी। (१२:३) 22:3

12 और जितनी जातियों ने यरूशलेम से युद्ध किया है उन सभी को यहोवा ऐसी मार से मारेगा, कि खड़े-खड़े उनका माँस सड़ जाएगा, और उनकी आँखें अपने गोलकों में सड़ जाएँगी, और उनकी जीभ उनके मुँह में सड़ जाएगी।

13 और उस दिन यहोवा की ओर से उनमें बड़ी घबराहट पैटेगी, और वे एक दूसरे के हाथ को पकड़ेंगे, और एक दूसरे पर अपने-अपने हाथ उठाएँगे।

14 यहूदा भी यरूशलेम में लड़ेगा, और सोना, चाँदी, वस्त्र आदि चारों ओर की सब जातियों की धन-सम्पत्ति उसमें बटोरी जाएगी।

15 और घोड़े, खच्चर, ऊँट और गदहे वरन् जितने पशु उनकी छावणियों में होंगे वे भी ऐसी ही महामारी से मारे जाएँगे।

११:१५ १२:३ १३:१५ १४:१५ १५:१५ १६:१५ १७:१५ १८:१५ १९:१५ २०:१५ २१:१५ २२:३

16 तब जितने लोग यरूशलेम पर चढ़नेवाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रतिवर्ष राजा को अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने, और झोपड़ियों का पर्व मानने के लिये यरूशलेम को जाया करेंगे।

17 और पृथ्वी के कुलों में से जो लोग यरूशलेम में राजा, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिये न जाएँगे, ११:१५ १२:३ १३:१५ १४:१५ १५:१५ १६:१५ १७:१५ १८:१५ १९:१५ २०:१५ २१:१५ २२:३।

18 और यदि मिस्र का कुल वहाँ न आए, तो क्या उन पर वह मरी न पड़ेगी जिससे यहोवा उन जातियों को मारेगा जो झोपड़ियों का पर्व मानने के लिये न जाएँगे?

19 यह मिस्र का और उन सब जातियों का पाप ठहरेगा, जो झोपड़ियों का पर्व मानने के लिये न जाएँगे।

20 उस समय घोड़ों की घंटियों पर भी यह लिखा रहेगा, “यहोवा के लिये पवित्र।” और यहोवा के भवन कि हाँडियाँ उन कटोरों के तुल्य पवित्र ठहरेगी, जो वेदी के सामने रहते हैं।

‡ 14:17 ११:१५ १२:३ १३:१५ १४:१५ १५:१५ १६:१५ १७:१५ १८:१५ १९:१५ २०:१५ २१:१५ २२:३: वर्षा परमेश्वर की सांसारिक आशीषों में सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी जो मनुष्यों के सांसारिक कल्याण के लिए होती थी।

## मलाकी

११११

मला. 1:1 इस पुस्तक के लेखक भविष्यद्वक्ता मलाकी के रूप में पहचान कराता है। इब्रानी भाषा में इस शब्द का अर्थ है, “सन्देशवाहक” जिससे मलाकी की भविष्यद्वक्ता की भूमिका प्रगट होती है। परमेश्वर की प्रजा को परमेश्वर का सन्देश सुनाना। इसके दो अभिप्राय हैं, एक तो यह कि मलाकी हम तक पुस्तक पहुँचानेवाला सन्देशवाहक है और उसका सन्देश यह है कि परमेश्वर भविष्य में एक और सन्देशवाहक भेजेगा - महान भविष्यद्वक्ता एलिय्याह प्रभु के दिन से पूर्व आएगा।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग 430 ई. पू.

यह पुस्तक बाबेल की बन्धुआई से लौटने के बाद लिखी गई थी।

११११११

यरूशलेमवासियों को पत्र और सर्वत्र परमेश्वर के लोगों को एक पत्र।

११११११११

लोगों को यह स्मरण कराना कि परमेश्वर अपने लोगों की सहायता हेतु यथासंभव सब कुछ करेगा और जब वह न्याय करने आएगा तब उनसे लेखा लेगा, और उनसे आग्रह करना कि वाचा की आशीषें प्राप्त करने के लिए बुराई से मन फिराएँ। परमेश्वर ने मलाकी के द्वारा उन्हें चेतावनी दी कि वे परमेश्वर की ओर उन्मुख हो जाएँ। पुराने नियम की इस अन्तिम पुस्तक के अंत में परमेश्वर के न्याय की घोषणा की गई है और आनेवाले मसीह के द्वारा पुनः स्थापना की प्रतिज्ञा इस्राएलियों के कानों में गूँज रही है।

१११ ११११

औपचारिकता को धिक्कार दिया  
रूपरेखा

1. पुरोहितों से परमेश्वर के सम्मान का आग्रह — 1:1-2:9
2. यहूदा को निष्ठा का उपदेश — 2:10-3:6
3. यहूदा को परमेश्वर के निकट आने का उपदेश — 3:7-4:6

1 मलाकी के द्वारा इस्राएल के लिए कहा हुआ यहोवा का भारी वचन।

११११११११ १११११११११ ११ १११ ११११११

2 यहोवा यह कहता है, “मैंने तुम से प्रेम किया है, परन्तु तुम पूछते हो, ‘तूने हमें कैसे प्रेम किया है?’” यहोवा की यह वाणी है, “क्या एसाव याकूब का भाई न था?”

3 तो भी मैंने याकूब से प्रेम किया परन्तु एसाव को अप्रिय जानकर उसके पहाड़ों को उजाड़ डाला, और उसकी पैतृक भूमि को जंगल के गीदड़ों का कर दिया है।” (११११. 9:13)

4 एदोम कहता है, “हमारा देश उजड़ गया है, परन्तु हम खण्डहरों को फिर बनाएँगे;” सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “यदि वे बनाएँ भी, परन्तु मैं ढा दूँगा; उनका नाम दुष्ट जाति पड़ेगा, और वे ऐसे लोग कहलाएँगे जिन पर यहोवा सदैव क्रोधित रहे।”

5 तुम्हारी आँखें इसे देखेंगी, और तुम कहोगे, “यहोवा का प्रताप इस्राएल की सीमा से आगे भी बढ़ता जाए।”

१११११११११ ११११

6 “पुत्र पिता का, और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूँ, तो मेरा आदर मानना कहाँ है? और यदि मैं स्वामी हूँ, तो मेरा भय मानना कहाँ? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकों से भी जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो, ‘हमने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है?’

7 तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो। तो भी तुम पूछते हो, ‘हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठहराते हैं?’ इस बात में भी, कि तुम कहते हो, ‘यहोवा की मेज तुच्छ है।’

8 जब तुम अंधे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? और जब तुम लँगड़े या रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ; क्या वह तुम से प्रसन्न होगा या तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

9 “अब मैं तुम से कहता हूँ, परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह हम लोगों पर अनुग्रह करे। यह तुम्हारे हाथ से हुआ है; तब क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

10 भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग जलाने न पाते! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है, मैं तुम से कदापि प्रसन्न नहीं हूँ, और न तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण करूँगा।

11 क्योंकि उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक अन्यजातियों में मेरा नाम महान है, और हर कहीं मेरे





थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।

17 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “जो दिन मैंने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन् मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं उनसे ऐसी कोमलता करूँगा जैसी कोई अपने सेवा करनेवाले पुत्र से करे।

18 तब तुम फिरकर धर्मी और दुष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों का भेद पहचान सकोगे।

## 4

1 **2** **3** **4** **5** **6** **7** **8** **9** **10** **11** **12** **13** **14** **15** **16** **17** **18** **19** **20** **21** **22** **23** **24** **25** **26** **27** **28** **29** **30** **31**

1 “देखो, वह धधकते भट्टे के समान दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूँटी बन जाएँगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि न उनकी जड़ बचेगी और न उनकी शाखा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (2 **3** **4** **5** **6** **7** **8**)

2 परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धार्मिकता का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों के समान कूदोगे और फाँदोगे।

3 तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पाँवों के नीचे की राख बन जाएँगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

4 “मेरे दास मूसा की व्यवस्था अर्थात् जो-जो विधि और नियम मैंने सारे इस्राएलियों के लिये उसको होरेब में दिए थे, उनको स्मरण रखो।

5 “देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा। (**2** **3** **4** **5** **6** **7** **8** **9** **10** **11** **12** **13** **14** **15** **16** **17** **18** **19** **20** **21** **22** **23** **24** **25** **26** **27** **28** **29** **30** **31**)

6 और **2** **3** **4** **5** **6** **7** **8** **9** **10** **11** **12** **13** **14** **15** **16** **17** **18** **19** **20** **21** **22** **23** **24** **25** **26** **27** **28** **29** **30** **31**”; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूँ।”

\* **4:6** **2** **3** **4** **5** **6** **7** **8** **9** **10** **11** **12** **13** **14** **15** **16** **17** **18** **19** **20** **21** **22** **23** **24** **25** **26** **27** **28** **29** **30** **31**: इस समय वे एक मन नहीं हैं और उस भिन्नता के कारण एक दूसरे से दूर हैं।

## मत्ती रचित सुसमाचार

११११

इस पुस्तक का लेखक मत्ती, चुंगी लेनेवाला मनुष्य था, जिसने यीशु के अनुसरण हेतु अपना यह व्यवसाय त्याग दिया था (9:9-13)। मरकुस और लूका उसे अपनी पुस्तकों में लेवी नाम से पुकारते हैं। उसके नाम का अर्थ है, “परमेश्वर का वरदान”।

आरम्भिक कलीसिया के प्राचीन, मत्ती को जो बारह शिष्यों में से एक था, इस पुस्तक का एकमत होकर लेखक मानते थे। मत्ती यीशु की सेवा की सब घटनाओं का आँखों देखा गवाह था। अन्य शुभ सन्देश वृत्तान्तों के साथ मत्ती की पुस्तक की तुलना करने पर स्पष्ट प्रकट होता है कि प्रेरितों द्वारा दी गई मसीह की गवाही, अखण्ड एवं सत्य है।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग ई.स. 50 - 70

मत्ती की पुस्तक का यहूदी स्वरूप देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक पलिशतीन या सीरिया में लिखी गई थी। परन्तु अनेकों के विचार में इसकी रचना अन्ताकिया में की गई थी।

११११११

इस पुस्तक की भाषा यूनानी है, इसलिए मत्ती का अभिप्राय सम्भवतः यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के लिए सुसमाचार लिखने का रहा होगा। इस कारण पुस्तक की सामग्री के अधिकांश भाग यहूदी पाठकों की ओर संकेत करते हैं। मत्ती के विषय हैं: पुराने नियम की पूर्ति, यीशु की वंशावली का अब्राहम से आरम्भ (1:1-17), उसके द्वारा यहूदियों की शब्दावली का उपयोग (उदाहरणार्थ, “स्वर्ग का राज्य”, जहाँ स्वर्ग शब्द का उपयोग परमेश्वर के नाम के उपयोग में संकोच को प्रकट करता है और यीशु को “दाऊद का पुत्र” कहना- 1:1, 9:27; 12:23; 15:22; 20:30-31; 21:9,15; 22:41-45) आदि बातों से प्रकट होता है कि मत्ती के ध्यान में यहूदी समुदाय अधिक था।

१११११११११

अपनी पुस्तक में शुभ सन्देश लिखने का मत्ती का अभिप्राय यह था कि यहूदी पाठक यीशु को मसीह स्वीकार करें। यहाँ मत्ती का मुख्य उद्देश्य है कि परमेश्वर के राज्य को मानवजाति के मध्य लाने पर बल दिया जाए। वह बल देता है कि यीशु एक राजा है जो पुराने

नियम की भविष्यद्वाणियों और आशाओं को पूरा करता है (मत्ती 1:1; 6:16; 20:28)।

११११ ११११

यीशु—यहूदियों का राजा

रूपरेखा

1. यीशु का जन्म — 1:1-2:23
2. यीशु की गलील क्षेत्र में सेवा — 3:1-18:35
3. यीशु की यहूदिया में सेवा — 19:1-20:34
4. यहूदिया में यीशु के अन्तिम दिन — 21:1-27:66
5. अन्तिम घटनाएँ — 28:1-20

१११११ १११११ ११ १११११११११

1 अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, १११११ १११११\* की १११११११११†।

2 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए।

3 यहूदा और तामार से पेरेस व जेरह उत्पन्न हुए, और पेरेस से हेस्रोन उत्पन्न हुआ, और हेस्रोन से एराम उत्पन्न हुआ।

4 एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ, और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। (११११ 4:19,20)

5 सलमोन और राहाब से बोअज उत्पन्न हुआ, और बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ, और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ।

6 और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ।

और दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहले ऊरिय्याह की पत्नी थी। (2 ११११. 12:24)

7 सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ, और रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ, और अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ।

8 आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ, और यहोशाफात से योराम उत्पन्न हुआ, और योराम से उज्जियाह उत्पन्न हुआ।

9 उज्जियाह से योताम उत्पन्न हुआ, योताम से आहाज उत्पन्न हुआ, और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ।

10 हिजकिय्याह से मनश्शे उत्पन्न हुआ, मनश्शे से आमोन उत्पन्न हुआ, और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ।

\* 1:1 ११११ ११११: यीशु शब्द का अर्थ है “प्रभु उद्धारकर्ता” (मसीह, इब्रानी शब्द) है, जिसका अर्थ है “अभिषिक्त” † 1:1 ११११११११: अर्थात् पीढ़ियाँ-वंशजों का पारिवारिक अभिलेख।





10 उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए।  
([मत्ती 2:20](#))

11 और उस घर में पहुँचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और दण्डवत् होकर [मत्ती 2:21](#) की आराधना की, और अपना-अपना थैला खोलकर उसे सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।

12 और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए।

[मत्ती 2:22](#) [मत्ती 2:23](#) [मत्ती 2:24](#)

13 उनके चले जाने के बाद, परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट होकर यूसुफ से कहा, “उठ! उस बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूँ, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूँढने पर है कि इसे मरवा डाले।”

14 तब वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया।

15 और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा। इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो “मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।” ([मत्ती 11:1](#))

[मत्ती 2:25](#) [मत्ती 2:26](#) [मत्ती 2:27](#) [मत्ती 2:28](#) [मत्ती 2:29](#)

16 जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह क्रोध से भर गया, और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक-ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस-पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे, मरवा डाला।

17 तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ

18 “रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया,  
रोना और बड़ा विलाप,  
राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी;  
और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे अब नहीं रहे।”  
([मत्ती 31:15](#))

[मत्ती 2:30](#) [मत्ती 2:31](#) [मत्ती 2:32](#)

‡ 2:11 [मत्ती 2:11](#): इसका मतलब “बालक” है न कि एक “शिशु” जैसा लूका 2:16 वर्णन करता है, ज्योतिषियों के आगमन के समय यीशु चरनी में नहीं था, अति सम्भव है कि वह कई महीनों का या एक वर्ष से भी अधिक आयु का हो चुका था। (देखें पद 7, 16) § 2:22 [मत्ती 2:22](#): हेरोदेस महान का पुत्र-यहूदा और सामरिया का शासक।

\* 2:23 [मत्ती 2:23](#): सम्भवतः प्रथम शताब्दी के शास्त्रियों तथा “तिरस्कार या वृणा” को दर्शाने वाला एक शब्द होता था (यूह. 1:46) नासरत से मसीह का आना किसी प्रकार भी एक सम्भावित स्थान नहीं था (तुलना करे यशा.53: 3; भजन 22:6)

\* 3:1 [मत्ती 3:1](#) [मत्ती 3:2](#) [मत्ती 3:3](#): मृत सागर के पश्चिमी तट तक एक विस्तृत अनुपजाऊ, बंजर भूमि। † 3:7 [मत्ती 3:7](#): यीशु के दिनों में सबसे प्रभावशाली यहूदी सम्प्रदाय। मूसा की व्यवस्था यानी रूढ़िवादी दृष्टिकोण अर्थात् मूसा की व्यवस्था का कठोरता से पालन करनेवाले फरीसी।

‡ 3:7 [मत्ती 3:7](#): यह भी पुरोहितों और उच्च वर्ग से सम्बंधित एक यहूदी के संप्रदाय था। यीशु के दिनों में वे आत्मिक संसार में विश्वास नहीं करते थे।

19 हेरोदेस के मरने के बाद, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में प्रकट होकर कहा,

20 “उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए।” ([मत्ती 4:19](#))

21 वह उठा, और बालक और उसकी माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया।

22 परन्तु यह सुनकर कि [मत्ती 2:22](#) अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा है, वहाँ जाने से डरा; और स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर गलील प्रदेश में चला गया।

23 और नासरत नामक नगर में जा बसा, ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था: “वह [मत्ती 18:7](#)\* कहलाएगा।” ([मत्ती 18:7](#))

### 3

[मत्ती 3:1](#) [मत्ती 3:2](#) [मत्ती 3:3](#) [मत्ती 3:4](#)

1 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के [मत्ती 3:1](#)\* में यह प्रचार करने लगा:

2 “मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।”

3 यह वही है जिसके बारे में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था:

“जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो,

उसकी सड़कें सीधी करो।” ([मत्ती 40:3](#))

4 यह यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहने था, और अपनी कमर में चमड़े का कमरबन्द बाँधे हुए था, और उसका भोजन टिड्डियाँ और वनमधु था। (2 [मत्ती 1:8](#))

5 तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस-पास के सारे क्षेत्र के लोग उसके पास निकल आए।

6 और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।

7 जब उसने बहुत से [मत्ती 3:1](#) और [मत्ती 3:2](#) को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते

देखा, तो उनसे कहा, “हे साँप के बच्चों, तुम्हें किसने चेतानेवाली दी कि आनेवाले क्रोध से भागो?”

8 मन फिराव के योग्य फल लाओ;

9 और अपने-अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।

10 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।

11 “मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

12 उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।”

13 उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया।

14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, “मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?”

15 यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, “अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।” तब उसने उसकी बात मान ली।

16 “तब यीशु ने उससे कहा, ‘‘अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।’’ तब उसने उसकी बात मान ली।

17 “तब यीशु ने उससे कहा, ‘‘अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।’’ तब उसने उसकी बात मान ली।” (मत्ती 2:7)

## 4

1 “तब यीशु ने उससे कहा, ‘‘अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।’’ तब उसने उसकी बात मान ली।”

§ 3:17 त्रिपक्ष परमेश्वर की अवधारणा की प्रथम और स्पष्ट अभिव्यक्ति है। \* 4:1 यीशु की परीक्षा लेने में शैतान की मंशा थी कि मसीह को विवश करके उससे पाप करवाए जिससे की वह उद्धारकर्ता के रूप में अयोग्य ठहरे और मनुष्य की मुक्ति, परमेश्वर की योजना में नाकाम हो जाए। † 4:6 शैतान भी बाइबल का उदाहरण देता है, लेकिन गलत ढंग से जिसमें वह बाइबल अंश (इस सन्दर्भ में, भजन 91:11-12) छोड़ दिया क्योंकि वह यहाँ उपयुक्त नहीं था। ‡ 4:9 यीशु ने शैतान, इस जगत का राजकुमार, अधिकार रखता था कि यीशु के सामने यह प्रस्ताव रखे। (यूह 12: 31)

2 वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लगी। (मत्ती 4:2)

3 तब परखनेवाले ने पास आकर उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।”

4 यीशु ने उत्तर दिया, “लिखा है, ‘मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।’”

5 तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। (मत्ती 4:9)

6 “तब यीशु ने उससे कहा, ‘‘अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।’’ तब उसने उसकी बात मान ली।” (मत्ती 91:11,12)

7 यीशु ने उससे कहा, “यह भी लिखा है, ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।’” (मत्ती 6:16)

8 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर

9 उससे कहा, “यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं तेरा सब कुछ दे दूँ।”

10 तब यीशु ने उससे कहा, “हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।’” (मत्ती 6:13)

11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

12 जब उसने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया।

13 और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नप्ताली के क्षेत्र में है जाकर रहने लगा।

14 ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।

15 “जबूलून और नप्ताली के क्षेत्र, झील के मार्ग से यरदन के पास अन्यजातियों का गलील-

16 जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के क्षेत्र और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।”



18 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

19 इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।

21 “तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि ‘हत्या न करना’, और ‘जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।’ (20:13)

22 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई को **†**कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे ‘अरे मूर्ख’ वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।

23 इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है,

24 तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर, और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

25 जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग में है, उससे झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायाधीश को सौंपे, और न्यायाधीश तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए।

26 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक तू पाई-पाई चुका न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा।

27 “तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ‘व्यभिचार न करना।’ (5:18, 20:14)

28 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।

29 यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

30 और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

31 “यह भी कहा गया था, ‘जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे, तो उसे त्यागपत्र दे।’ (24:1-14)

32 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।

33 “फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, ‘झूठी शपथ न खाना, परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी शपथ को पूरी करना।’ (23:21)

34 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। (66:1)

35 न धरती की, क्योंकि वह उसके पाँवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। (66:1)

36 अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है।

37 परन्तु तुम्हारी बात हाँ की हाँ, या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है।

38 “तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, कि आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत। (19:21)

39 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।

40 और यदि कोई तुझ पर मुकद्दमा करके तेरा **‡**लेना चाहे, तो उसे **‡**भी ले लेने दे।

41 और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा।

† 5:22 **‡** इसका मतलब “खाली सिर” है, यह दूसरे व्यक्ति के तिरस्कार के लिए इस्तेमाल में आनेवाला एक अपमान जनक उपनाम था।

‡ 5:40 **‡** यह लम्बी बाँह का घुटनों तक का अधोवस्त्र होता था, जैसे आज के समय में पहनी जानेवाली कमीज़। **§** 5:40 **‡** अर्थात् ऊपरी परिधान, एक बड़ा वर्गाकार ऊनी बागा। गरीब लोग केवल कुर्ता पहनते थे। अमीरों में कई लोग ऊपरी परिधान के अलावा दो कुर्ते पहनते थे।

42 जो कोई तुझ से माँगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मुँह न मोड़।

43 “तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। (22:22-23) 19:18)

44 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो। (22:22-23) 12:14)

45 जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी पर मेंह बरसाता है।

46 क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या लाभ होगा? क्या चुंगी लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते?

47 “और यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते?

48 इसलिए चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (22:22-23) 19:2)

## 6

22:22-23 22:22-23 22:22-23

1 “सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धार्मिकता के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।

2 “इसलिए जब तू दान करे, तो अपना ढिंढोरा न पिटवा, जैसे 22:22\*, आराधनालयों और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

3 परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए।

4 ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

22:22-23 22:22-23 22:22-23

5 “और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये आराधनालयों में और सड़कों के चौराहों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना

\* 6:2 22:22: ऐसा व्यक्ति जो नैतिक सद्गुण या धर्म का झूठा दिखावा करता है। † 6:9 22:22-23: इसका मतलब सम्मान देने या भय मानने से है परन्तु इसके साथ आराधना और महिमा करना भी है ‡ 6:10 22:22-23 22:22-23: यह परमेश्वर के राज्य की अंतिम और सिद्ध स्थापना को व्यक्त करता है।

कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

7 प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के समान बक-बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बार बार बोलने से उनकी सुनी जाएगी।

8 इसलिए तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकताएँ हैं।

9 “अतः तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो: हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम 22:22-23 †माना जाए। (22:22-23) 11:2)

10 22:22 22:22-23 22:22-23 तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।

12 “और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।

13 “और हमें परीक्षा में न ला,

परन्तु बुराई से बचा; [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।] आमीन।]

14 “इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।

15 और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

22:22-23 22:22-23 22:22-23

16 “जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुँह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुँह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

17 परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुँह धो।

18 ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

22:22-23 22:22-23 22:22-23 22:22

19 “अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर संध लगाते और चुराते हैं।

20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न संध लगाते और न चुराते हैं।

21 क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।

???? ??

22 “शरीर का दीया आँख है: इसलिए यदि तेरी आँख अच्छी हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।

23 परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा!

???? ???? ??

24 “कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से निष्ठावान रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

25 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएँगे, और क्या पीएँगे, और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहनेंगे, क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?

26 आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तो भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?

27 तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?

28 “और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? सोसनों के फूलों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते हैं, न काटते हैं।

29 तो भी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहने हुए न था।

30 इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह क्यों न पहनाएगा?

31 “इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएँगे, या क्या पीएँगे, या क्या पहनेंगे?

32 क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ चाहिए।

33 इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी। (???? 12:31)

34 अतः कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुःख बहुत है।

## 7

???? ??

1 “दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।

2 क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।

3 “तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लट्टा तुझे नहीं सूझता?

4 जब तेरी ही आँख में लट्टा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, ‘ला मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ?’

5 हे कपटी, पहले अपनी आँख में से लट्टा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा।

6 “पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।

???????? ??

7 “माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।

8 क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।

9 “तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो वह उसे पत्थर दे?

10 या मछली माँगे, तो उसे साँप दे?

11 अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा? (???? 11:13)

12 इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।

???? ??

13 “सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है; और बहुत सारे लोग हैं जो उससे प्रवेश करते हैं।

14 क्योंकि संकरा है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞

15 “झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं।” (☞☞☞☞. 22:27)

16 उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?

17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।

18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।

19 जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है।

20 अतः उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।

21 “जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु” कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।

22 उस दिन बहुत लोग मुझसे कहेंगे; ‘हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वक्ता नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए?’

23 तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, ‘मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।’ (☞☞☞☞ 13:27)

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

24 “इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।

25 और बारिश और बाढ़ें आईं, और आँधियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।

26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया।

27 और बारिश, और बाढ़ें आईं, और आँधियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।”

28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई।

\* 8:2 ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: कोढ़ एक संक्रामक रोग है जो त्वचा, श्लेष्मा झिल्ली, और तंत्रिकाओं को ग्रसित करता है, इस्राएल में कोढ़ी को समाज से बहिष्कृत और अशुद्ध माना जाता था। † 8:5 ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: यह गलील सागर के उत्तरी सिरे पर स्थित एक शहर है। ‡ 8:12 ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: यहूदी सोचते थे कि उनकी परंपरा और धर्म का पालन उन्हें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करवाएगा

29 क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देता था।

## 8

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

1 जब यीशु उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

2 और, एक ☞☞☞☞☞☞☞\* ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, “हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”

3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ, और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा” और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।

4 यीशु ने उससे कहा, “देख, किसी से न कहना, परन्तु जाकर अपने आपको याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उनके लिये गवाही हो।” (☞☞☞☞☞☞. 14:2,32)

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

5 और जब वह ☞☞☞☞☞☞☞\* में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उससे विनती की,

6 “हे प्रभु, मेरा सेवक घर में लकवे का मारा बहुत दुःखी पड़ा है।”

7 उसने उससे कहा, “मैं आकर उसे चंगा करूँगा।”

8 सूबेदार ने उत्तर दिया, “हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुँह से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।

9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूँ, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूँ, कि यह कर, तो वह करता है।”

10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।

11 और मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत सारे पूर्व और पश्चिम से आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।

12 परन्तु ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: बाहर अंधकार में डाल दिए जाएँगे: वहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा।”





6 परन्तु इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।<sup>†</sup> उसने लकवे के मारे हुए से कहा, “उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।”

7 वह उठकर अपने घर चला गया।

8 लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है।

9 वहाँ से आगे बढ़कर यीशु ने नामक एक मनुष्य को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” वह उठकर उसके पीछे हो लिया।

10 और जब वह घर में भोजन करने के लिये बैठा तो बहुत सारे चुंगी लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे।

11 यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा, “तुम्हारा गुरु चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?”

12 यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, “वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है।

13 इसलिए तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ; क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।”

6:6)

14 तब यूहन्ना के चेलों ने उसके पास आकर कहा, “क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?”

15 यीशु ने उनसे कहा, “क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएँगे कि दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।

16 नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द वस्त्र से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है।

17 और लोग नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं, परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और वह दोनों बची रहती है।”

18

18 वह उनसे ये बातें कह ही रहा था, कि एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, “मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।”

19 यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।

20 और देखो, एक स्त्री ने जिसके बारह वर्ष से लहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के कोने को छू लिया। (14:36)

21 क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, “यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी तो चंगी हो जाऊँगी।”

22 यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “पुत्री धैर्य रख; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।” अतः वह स्त्री उसी समय चंगी हो गई।

23 जब यीशु उस सरदार के घर में पहुँचा और बाँसुरी बजानेवालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा,

24 तब कहा, “हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है।” इस पर वे उसकी हँसी उड़ाने लगे।

25 परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उसने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी।

26 और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई।

27

27 जब यीशु वहाँ से आगे बढ़ा, तो दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, “हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।”

28 जब वह घर में पहुँचा, तो वे अंधे उसके पास आए, और यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ?” उन्होंने उससे कहा, “हाँ प्रभु।”

29 तब उसने उनकी आँखें छूकर कहा, “तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।”

30 और उनकी आँखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें सख्ती के साथ सचेत किया और कहा, “सावधान, कोई इस बात को न जाने।”

31 पर उन्होंने निकलकर सारे क्षेत्र में उसका यश फैला दिया।

32

32 जब वे बाहर जा रहे थे, तब, लोग एक गूँगे को जिसमें दुष्टात्मा थी उसके पास लाए।

33 और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूँगा बोलने लगा। और भीड़ ने अचम्भा करके कहा, “इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।”

† 9:9 मत्तलब “यहोवा का उपहार”, वह एक लेवी एवं पेशे से चुंगी लेनेवाला था, वह उठा और यीशु के पीछे हो लिया



आने से पहले इस्राएल के सब नगरों में से गए भी न होंगे।

32 33 34 35 36 37

24 “चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं; और न ही दास अपने स्वामी से।

25 चले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है; जब उन्होंने घर के स्वामी को 32 कहा तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे?

32 33 34 35 36 37

26 “इसलिए उनसे मत डरना, क्योंकि कुछ ढँका नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।

27 जो मैं तुम से अंधियारे में कहता हूँ, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे छतों पर से प्रचार करो।

28 जो शरीर को मार सकते हैं, पर आत्मा को मार नहीं सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।

29 क्या एक पैसे में दो गौरैये नहीं बिकती? फिर भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती।

30 तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। (32 33 34 35 36 37)

31 इसलिए, डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर मूल्यवान हो।

32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

32 “जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा।

33 पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा।

34 “यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ।

35 मैं तो आया हूँ, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी माँ से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूँ।

36 मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।

37 “जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। (32 33 34 35 36 37 14:26)

38 और जो 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।

39 जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।

40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

40 “जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।

41 जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा।

42 जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह अपना पुरस्कार कभी नहीं खोएगा।”

## 11

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 जब यीशु अपने बारह चेलों को निर्देश दे चुका, तो वह उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहाँ से चला गया।

2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उससे यह पूछने भेजा,

3 “क्या आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की प्रतीक्षा करें?”

4 यीशु ने उत्तर दिया, “जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो।

5 कि अंधे देखते हैं और लँगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, और गरीबों को सुसमाचार सुनाया जाता है।

6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।”

7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

7 जब वे वहाँ से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा, “तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को?

8 फिर तुम क्या देखने गए थे? जो कोमल वस्त्र पहनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं।

9 तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को देखने को? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, वरन् भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को।

10 यह वही है, जिसके विषय में लिखा है, कि ‘देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ,

‡ 10:25 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 “दुष्टात्माओं का राजकुमार” (मत्ती 12:24)। उसे बाल-जबूल भी कहा गया है- एक्रोनियों का मक्खी देवता। § 10:38 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 “कूस उठाना” एक मुहावरा है जिसका अभिप्राय है, किसी बोझिल काम को करना या उसका यत्न करना या मसीह के अनुसरण में अपमान जनक माना जाता है।

जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा। (2222. 3:1)

11 “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है 2222 2222\* है।

12 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं।

13 यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वक्ता करते रहे।

14 और चाहो तो मानो, 2222222222 22 2222222222 22, 22 2222 22† (2222. 4:5)

15 जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।

16 “मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूँ? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं,

17 कि हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजाई, और तुम न नाचे; हमने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी।

18 क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न ही पीता, और वे कहते हैं कि उसमें दुष्टात्मा है।

19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों और पापियों का मित्र! पर ज्ञान अपने कामों में सच्चा ठहराया गया है।”

22 222222 22222222 222222 22 2222

20 तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिनमें उसने बहुत सारे सामर्थ्य के काम किए थे; क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था।

21 “हाय, 2222222222 ‡ हाय, बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सोर और सीदोन में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते।

22 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा अधिक सहने योग्य होगी।

23 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो

सामर्थ्य के काम तुझ में किए गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।

24 पर मैं तुम से कहता हूँ, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के नगर की दशा अधिक सहने योग्य होगी।”

22222 22 2222 2222222222

25 उसी समय यीशु ने कहा, “हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तूने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।

26 हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।

27 “मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।

28 “हे सब 2222222222 222222222222 22 2222 22 2222S लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।

29 मेरा 2222\* अपने ऊपर उठा लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।

30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।”

## 12

22222 22222 22 22222222

1 उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेलों को भूख लगी, और वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे।

2 फरीसियों ने यह देखकर उससे कहा, “देख, तेरे चले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।”

3 उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया?

4 वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और 22222 22 2222222222\* खाई, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को, पर केवल याजकों को उचित था?

5 या क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं? (2222. 28:9,10, 2222. 7:22,23)

\* 11:11 22 22222 22222: स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा इस जगत के सबसे बड़े की तुलना में उससे बड़ा है (मत्ती 18:4) † 11:14 2222222222 22 2222222222 22, 22 2222 22: भविष्यद्वक्ता मलाकी ने (मला 4:5-6) भविष्यद्वक्ता की थी कि मसीह के आने से पहले मार्ग तैयार करने के लिए “एलिय्याह” भेजा जाएगा। ‡ 11:21 2222222222: यह शहर तीन प्रमुख शहरों में से एक के रूप में याद किया जाता है जिसमें यीशु ने अपनी सेवकाई का अधिक समय बिताया था। § 11:28 2222222222 222222222222 22 2222 22 2222: जीवन की चिंताओं, पापों या धार्मिक संस्कारों की अनिवार्यता के कारण थके-हारे हुए। \* 11:29 2222: उचित रेखा में हल चलाने के लिए बैलों की गर्दन पर रखा जानेवाला लकड़ी का साधन (गिनती 19:2; व्यवस्था 21:3) \* 12:4 22222 22 2222222222: अशुद्धता से पृथक समर्पित की गई।

6 पर मैं तुम से कहता हूँ, कि यहाँ वह है, जो मन्दिर से भी महान है।

7 यदि तुम इसका अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। (2:17 6:6)

8 मनुष्य का पुत्र तो सब्ब के दिन का भी प्रभु है। (2:28 2:28)

2:28 2:28 2:28 2:28 2:28

9 वहाँ से चलकर वह उनके आराधनालय में आया।

10 वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूखा हुआ था; और उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिए उससे पूछा, “क्या 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28 उचित है?”

11 उसने उनसे कहा, “तुम में ऐसा कौन है, जिसकी एक भेड़ हो, और वह सब्ब के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले?”

12 भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़कर है! इसलिए सब्ब के दिन भलाई करना उचित है।”

13 तब यीशु ने उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उसने बढ़ाया, और वह फिर दूसरे हाथ के समान अच्छा हो गया।

14 तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार मार डाले?

2:28 2:28 2:28 2:28 2:28

15 यह जानकर यीशु वहाँ से चला गया। और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये, और उसने सब को चंगा किया।

16 और उन्हें चेतावनी दी, कि मुझे प्रगट न करना।

17 कि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो:

18 “देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है;

मेरा प्रिय, जिससे मेरा मन प्रसन्न है:

मैं अपना आत्मा उस पर डालूँगा;

और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा।

19 वह न झगड़ा करेगा, और न चिल्लाएगा;

और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा।

20 वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा;

और धुआँ देती हुई बत्ती को न बुझाएगा,

जब तक न्याय को प्रबल न कराए।

21 और अन्यजातियाँ उसके नाम पर आशा रखेंगी।”

2:28 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28

22 तब लोग एक अंधे-गूँगे को जिसमें दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उसने उसे अच्छा किया; और वह गूँगा बोलने और देखने लगा।

23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, “यह क्या दाऊद की सन्तान है?”

24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, “यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।”

25 उसने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा, “जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा।

26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा?

27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे वंश किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे।

28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।

29 या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बाँध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा।

30 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है।

31 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी।

32 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में और न ही आनेवाले युग में क्षमा किया जाएगा।

2:28 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28

33 “यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है।

† 12:10 2:28 2:28 2:28 2:28 2:28: सब्ब का दिन यहूदियों के लिए सप्ताह का सातवाँ दिन था उस दिन उन्हें किसी भी प्रकार का काम नहीं करना था केवल विश्राम करना था अतः उनके धर्मगुरुओं और फरीसियों द्वारा उपचार कार्य वर्जित था।

34 हे साँप के बच्चों, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है।

35 भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।

36 और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो-जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।

37 क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।”

¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶

38 इस पर कुछ शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, “हे गुरु, हम तुझ से एक ¶¶¶¶¶¶¶ देखना चाहते हैं।”

39 उसने उन्हें उत्तर दिया, “इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढते हैं; परन्तु योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उनको न दिया जाएगा।

40 योना तीन रात-दिन महा मच्छ के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।

41 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएँगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर, मन फिराया और यहाँ वह है जो ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶S है।

42 ¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶\*न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएँगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी के छोर से आई, और यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।

¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶

43 “जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढती फिरती है, और पाती नहीं।

44 तब कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी, और आकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है।

45 तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहाँ वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले

से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।”

¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶

46 जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तो उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बातें करना चाहते थे।

47 किसी ने उससे कहा, “देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं।”

48 यह सुन उसने कहनेवाले को उत्तर दिया, “कौन हैं मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?”

49 और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा, “मेरी माता और मेरे भाई ये हैं।

50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहन, और माता है।”

## 13

¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶

1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा।

2 और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही।

3 और उसने उनसे ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶\* में बहुत सी बातें कहीं “एक बोनेवाला बीज बोने निकला।

4 बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया।

5 कुछ बीज पत्थरीली भूमि पर गिरे, जहाँ उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और नरम मिट्टी न मिलने के कारण वे जल्द उग आए।

6 पर सूरज निकलने पर वे जल गए, और जड़ न पकड़ने से सूख गए।

7 कुछ बीज झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला।

8 पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।

9 जिसके कान हों वह सुन ले।”

¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶

10 और चेलों ने पास आकर उससे कहा, “तू उनसे दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?”

‡ 12:38 ¶¶¶¶¶: किसी अलौकिक शक्ति द्वारा किया गया कार्य या किसी कार्य में अलौकिक शक्ति का साथ होना फरीसियों ने यीशु के अनेक आश्चर्यकर्मों पर विश्वास नहीं किया वे यीशु से और भी अधिक स्वर्गीय चिन्ह की माँग करते थे। § 12:41 ¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶: योना ने नीनवे जाकर वहाँ के निवासियों को परमेश्वर के आनेवाले दण्ड की चेतावनी दी, परिणामस्वरूप उन्होंने अपने सांसारिक जीवन से मन फिराया और पश्चाताप किया। यहाँ यीशु के कहने का अर्थ है कि क्रूस पर उसकी मृत्यु और तीसरे दिन फिर जी उठने के बाद मनुष्य जानेंगे कि वह वास्तव में मसीह है (यूह 3:5) \* 12:42 ¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶: शिवा की रानी (1 राजा 10:1,2 इतिहास 9:1) \* 13:3 ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶: मतलब सरल कहानी जो नैतिक या आध्यात्मिक पाठ सिखाता है।

11 उसने उत्तर दिया, “तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं।

12 क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।

13 मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिए बातें करता हूँ, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते।

14 और उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है:

‘तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आँखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा।

15 क्योंकि इन लोगों के मन सुस्त हो गए हैं, और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं

और उन्होंने अपनी आँखें मूँद लीं हैं;

कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें,

और कानों से सुनें और मन से समझें,

और फिर जाएँ, और मैं उन्हें चंगा करूँ।’

16 “पर धन्य है तुम्हारी आँखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे सुनते हैं।

17 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वाक्ताओं और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं।

१३:११ १३:१२ १३:१३ १३:१४ १३:१५ १३:१६ १३:१७ १३:१८

18 “अब तुम बोलनेवाले का दृष्टान्त सुनो

19 जो कोई राज्य का १३:१२ सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।

20 और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है।

21 पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन रह पाता है, और जब वचन के कारण क्लेश या उत्पीड़न होता है, तो तुरन्त टोकर खाता है।

22 जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।

23 जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।”

१३:१९ १३:२० १३:२१ १३:२२ १३:२३ १३:२४ १३:२५ १३:२६ १३:२७ १३:२८ १३:२९ १३:३० १३:३१ १३:३२ १३:३३ १३:३४ १३:३५ १३:३६ १३:३७ १३:३८ १३:३९ १३:४० १३:४१ १३:४२ १३:४३ १३:४४ १३:४५ १३:४६ १३:४७ १३:४८ १३:४९ १३:५० १३:५१ १३:५२ १३:५३ १३:५४ १३:५५ १३:५६ १३:५७ १३:५८ १३:५९ १३:६० १३:६१ १३:६२ १३:६३ १३:६४ १३:६५ १३:६६ १३:६७ १३:६८ १३:६९ १३:७० १३:७१ १३:७२ १३:७३ १३:७४ १३:७५ १३:७६ १३:७७ १३:७८ १३:७९ १३:८० १३:८१ १३:८२ १३:८३ १३:८४ १३:८५ १३:८६ १३:८७ १३:८८ १३:८९ १३:९० १३:९१ १३:९२ १३:९३ १३:९४ १३:९५ १३:९६ १३:९७ १३:९८ १३:९९ १३:१००

24 यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, “स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।

25 पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूँ के बीच जंगली बीज बोकर चला गया।

26 जब अंकुर निकले और बालें लगी, तो जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए।

27 इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उससे कहा, ‘हे स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उसमें कहाँ से आए?’

28 उसने उनसे कहा, ‘यह किसी शत्रु का काम है।’ दासों ने उससे कहा, ‘क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उनको बटोर लें?’

29 उसने कहा, ‘नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो।

30 कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूँगा; पहले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उनके गट्टे बाँध लो, और गेहूँ को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।”

१३:३६ १३:३७ १३:३८ १३:३९ १३:४० १३:४१ १३:४२ १३:४३ १३:४४ १३:४५ १३:४६ १३:४७ १३:४८ १३:४९ १३:५० १३:५१ १३:५२ १३:५३ १३:५४ १३:५५ १३:५६ १३:५७ १३:५८ १३:५९ १३:६० १३:६१ १३:६२ १३:६३ १३:६४ १३:६५ १३:६६ १३:६७ १३:६८ १३:६९ १३:७० १३:७१ १३:७२ १३:७३ १३:७४ १३:७५ १३:७६ १३:७७ १३:७८ १३:७९ १३:८० १३:८१ १३:८२ १३:८३ १३:८४ १३:८५ १३:८६ १३:८७ १३:८८ १३:८९ १३:९० १३:९१ १३:९२ १३:९३ १३:९४ १३:९५ १३:९६ १३:९७ १३:९८ १३:९९ १३:१००

31 उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, “स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया।

32 वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।”

१३:५६ १३:५७ १३:५८ १३:५९ १३:६० १३:६१ १३:६२ १३:६३ १३:६४ १३:६५ १३:६६ १३:६७ १३:६८ १३:६९ १३:७० १३:७१ १३:७२ १३:७३ १३:७४ १३:७५ १३:७६ १३:७७ १३:७८ १३:७९ १३:८० १३:८१ १३:८२ १३:८३ १३:८४ १३:८५ १३:८६ १३:८७ १३:८८ १३:८९ १३:९० १३:९१ १३:९२ १३:९३ १३:९४ १३:९५ १३:९६ १३:९७ १३:९८ १३:९९ १३:१००

33 उसने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया, “स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीर हो गया।”

१३:९६ १३:९७ १३:९८ १३:९९ १३:१००

34 ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था।

35 कि जो वचन भविष्यद्वाक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो: “मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुँह खोलूँगा

† 13:19 १३:१९ का अर्थ है “सुसमाचार या परमेश्वर का वचन” (मर 4:15, लूका 8:12)

मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रगट करूँगा।”

36 तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके

चेलों ने उसके पास आकर कहा, “खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे।”

37 उसने उनको उत्तर दिया, “अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है।

38 खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं।

39 जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है: और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं।

40 अतः जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसे ही जगत के अन्त में होगा।

41 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे।

42 और उन्हें [ ] में डालेंगे, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

43 उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।

[ ]

44 “स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और आनन्द के मारे जाकर अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया।

[ ]

45 “फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था।

46 जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया।

[ ]

47 “फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया।

48 और जब जाल भर गया, तो मछुए किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी-अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा कीं और बेकार-बेकार फेंक दीं।

49 जगत के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे,

‡ 13:42 [ ] यह परमेश्वर के प्रकोप को व्यक्त करता है, जो दुष्ट लोगों पर आ पड़ेगा, और अनन्तकाल तक के लिये होगा, यह नरक की आग के रूप में भी जाना जाता है। (मत्ती 8:12; 22:13) \* 14:1 [ ] का अर्थ है एक राजकुमार या शासक जो एक प्रदेश या राज्य के एक चौथाई भाग को नियंत्रित करता है।

50 और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

[ ]

51 “क्या तुम ये सब बातें समझ गए?” चेलों ने उत्तर दिया, “हाँ।”

52 फिर यीशु ने उनसे कहा, “इसलिए हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता है।”

[ ]

53 जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका, तो वहाँ से चला गया।

54 और अपने नगर में आकर उनके आराधनालय में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा; कि वे चकित होकर कहने लगे, “इसको यह ज्ञान और सामर्थ्य के काम कहाँ से मिले?”

55 क्या यह बढई का बेटा नहीं? और क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं?

56 और क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच में नहीं रहती? फिर इसको यह सब कहाँ से मिला?”

57 इस प्रकार उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु ने उनसे कहा, “भविष्यद्वक्ता का अपने नगर और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।”

58 और उसने वहाँ उनके अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ्य के काम नहीं किए।

## 14

[ ]

1 उस समय [ ] हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी।

2 और अपने सेवकों से कहा, “यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है: वह मरे हुआँ में से जी उठा है, इसलिए उससे सामर्थ्य के काम प्रगट होते हैं।”

[ ]

3 क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बाँधा, और जेलखाने में डाल दिया था।

4 क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था, कि इसको रखना तुझे उचित नहीं है।

5 और वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता मानते थे।



6 पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखाकर हेरोदेस को खुश किया।

7 इसलिए उसने शपथ खाकर वचन दिया, “जो कुछ तू माँगेगी, मैं तुझे दूँगा।”

8 वह अपनी माता के उकसाने से बोली, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाल में यहीं मुझे मँगवा दे।”

9 राजा दुःखित हुआ, पर अपनी शपथ के, और साथ बैठनेवालों के कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए।

10 और उसने जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया।

11 और उसका सिर थाल में लाया गया, और लड़की को दिया गया; और वह उसको अपनी माँ के पास ले गई।

12 और उसके चेलों ने आकर उसके शव को ले जाकर गाड़ दिया और जाकर यीशु को समाचार दिया।

१३:१३-१५

13 जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहाँ से किसी सुनसान जगह को, एकान्त में चला गया; और लोग यह सुनकर नगर-नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए।

14 उसने निकलकर एक बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, और उसने उनके बीमारों को चंगा किया।

15 जब साँझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, “यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है, लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें।”

16 यीशु ने उनसे कहा, “**उनका जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो।**”

17 उन्होंने उससे कहा, “यहाँ हमारे पास पाँच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।”

18 उसने कहा, “**उनको यहाँ मेरे पास ले आओ।**”

19 तब उसने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़-तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को।

20 और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाईं।

21 और खानेवाले १५००० पाँच हजार पुरुषों के लगभग थे।

† 14:21 १५०००: यहूदी संस्कृति के अनुसार पुरुष और महिला सार्वजनिक रूप से अलग-अलग खाया करते थे और बच्चे महिलाओं के साथ खाया करते थे यही कारण है कि मत्ती ने पुरुषों की संख्या के बारे में उल्लेख किया है। ‡ 14:25 १५०००: यहूदी, साथ ही साथ रोमी, आमतौर पर रात को चार पहर में प्रत्येक पहर को तीन घंटे में विभाजित करते हैं पहला पहर शाम छः बजे से शुरू होता है और चौथा पहर रात तीन बजे से शुरू होता है।

१५:१६-१८

22 और उसने तुरन्त अपने चेलों को नाव पर चढ़ाया, कि वे उससे पहले पार चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को विदा करे।

23 वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और साँझ को वह वहाँ अकेला था।

24 उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी।

25 और वह रात के ११:३० झील पर चलते हुए उनके पास आया।

26 चले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए, और कहने लगे, “वह भूत है,” और डर के मारे चिल्ला उठे।

27 यीशु ने तुरन्त उनसे बातें की, और कहा, “**धैर्य रखो, मैं हूँ; डरो मत।**”

28 पतरस ने उसको उत्तर दिया, “हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।”

29 उसने कहा, “**आ!**” तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।

30 पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा, “हे प्रभु, मुझे बचा।”

31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, “**हे अल्प विश्वासी, तूने क्यों सन्देह किया?**”

32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई।

33 इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसकी आराधना करके कहा, “सचमुच, तू परमेश्वर का पुत्र है।”

१५:३४-३६

34 वे पार उतरकर गन्नेसरत प्रदेश में पहुँचे।

35 और वहाँ के लोगों ने उसे पहचानकर आस-पास के सारे क्षेत्र में कहला भेजा, और सब बीमारों को उसके पास लाए।

36 और उससे विनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के कोने ही को छूने दे; और जितनों ने उसे छुआ, वे चंगे हो गए।

## 15

१५:३७-४१

1 तब यरूशलेम से कुछ फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे,

2 “तेरे चेले [REDACTED] [REDACTED] को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?”

3 उसने उनको उत्तर दिया, “तुम भी अपनी परम्पराओं के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?”

4 क्योंकि परमेश्वर ने कहा, ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर करना’, और ‘जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए।’

5 पर तुम कहते हो, कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, ‘जो कुछ तुझे मुझसे लाभ पहुँच सकता था, वह परमेश्वर को भेंट चढ़ाया जा चुका’

6 तो वह अपने पिता का आदर न करे, इस प्रकार तुम ने अपनी परम्परा के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया।

7 हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है:

8 ‘ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।

9 और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,

क्योंकि मनुष्य की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।”

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

10 और उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “सुनो, और समझो।

11 जो मुँह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुँह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।”

12 तब चेलों ने आकर उससे कहा, “क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई?”

13 उसने उत्तर दिया, “हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा।

14 उनको जाने दो; वे अंधे मार्ग दिखानेवाले हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड्ढे में गिर पड़ेंगे।”

15 यह सुनकर पतरस ने उससे कहा, “यह दृष्टान्त हमें समझा दे।”

16 उसने कहा, “क्या तुम भी अब तक नासमझ हो?”

17 क्या तुम नहीं समझते, कि जो कुछ मुँह में जाता, वह पेट में पड़ता है, और शौच से निकल जाता है?

18 पर जो कुछ मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।

19 क्योंकि बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है।

20 यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।”

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

21 यीशु वहाँ से निकलकर, [REDACTED] और सीदोन के देशों की ओर चला गया।

22 और देखो, उस प्रदेश से एक [REDACTED] स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी, “हे प्रभु! दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है।”

23 पर उसने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलों ने आकर उससे विनती करके कहा, “इसे विदा कर; क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है।”

24 उसने उत्तर दिया, “इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया।”

25 पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी, “हे प्रभु, मेरी सहायता कर।”

26 उसने उत्तर दिया, “[REDACTED] [REDACTED] रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।”

27 उसने कहा, “सत्य है प्रभु, पर कुत्ते भी वह चूर चार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं।”

28 इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, “हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है; जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो” और उसकी बेटी उसी समय चंगी हो गई।

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

29 यीशु वहाँ से चलकर, गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहाँ बैठ गया।

30 और भीड़ पर भीड़ उसके पास आई, वे अपने साथ लँगडों, अंधों, गूँगों, टुण्डों, और बहुतों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उसके पाँवों पर डाल दिया, और उसने उन्हें चंगा किया।

31 अतः जब लोगों ने देखा, कि गूँगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लँगडे चलते और अंधे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की।

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

32 यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा

\* 15:2 [REDACTED] [REDACTED]: परम्परा सामान्य तौर पर पूर्वजों द्वारा दी गई विधियों को सिखाते हैं। परम्पराओं के साथ परमेश्वर के वचन (पत्र और उसकी भावना) के सही अर्थ को बदलने के लिए वहाँ एक वास्तविक खतरा है। † 15:21 [REDACTED]: यह यूनानी/लैटिन नाम है प्रसिद्ध सुरुफिनीकी शहर के लिये अक्सर सीदोन के साथ उल्लेख हैं। (यहोशू 10:29) यह आज भी, लवानोन के दक्षिण तट पर, ठीक इस्राएल के उत्तरी दिशा में मौजूद है। ‡ 15:22 [REDACTED]: का अर्थ है सामी लोगों के एक समूह का सदस्य जो प्रागैतिहासिक काल से कनान में निवास करते हैं इसमें इस्राएली और सुरुफिनीकी भी शामिल हैं। § 15:26 [REDACTED] [REDACTED]: इस्राएलियों से संदर्भित

विदा करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थककर गिर जाएँ।”

33 चेलों ने उससे कहा, “हमें इस निर्जन स्थान में कहाँ से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें?”

34 यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ।”

35 तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी।

36 और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया, और चले लोगों को।

37 इस प्रकार सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात टोकरे उठाए।

38 और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार पुरुष थे।

39 तब वह भीड़ को विदा करके नाव पर चढ़ गया, और **22:22\*** क्षेत्र में आया।

## 16

**22:22-23** **24:12-13** **24:14-15** **24:16-17** **24:18-19**

1 और फरीसियों और **22:22-23\*** ने यीशु के पास आकर उसे परखने के लिये उससे कहा, “हमें स्वर्ग का कोई चिन्ह दिखा।”

2 उसने उनको उत्तर दिया, “साँझ को तुम कहते हो, कि मौसम अच्छा रहेगा, क्योंकि आकाश लाल है।

3 और भोर को कहते हो, कि आज आँधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है; तुम आकाश का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो, पर समय के चिन्हों का भेद क्यों नहीं बता सकते?

4 इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढते हैं पर योना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।” और वह उन्हें छोड़कर चला गया।

**22:22-23** **24:12-13** **24:14-15** **24:16-17**

5 और चले झील के उस पार जाते समय रोटी लेना भूल गए थे।

6 यीशु ने उनसे कहा, “देखो, फरीसियों और सद्कियों के खमीर से सावधान रहना।”

7 वे आपस में विचार करने लगे, “हम तो रोटी नहीं लाए। इसलिए वह ऐसा कहता है।”

\* **15:39** **22:22**: एक मीनार, मगदला संशोधित किया गया एक नाम है।

8 यह जानकर, यीशु ने उनसे कहा, “हे अल्पविश्वासियों, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं?”

9 क्या तुम अब तक नहीं समझे? और उन पाँच हजार की पाँच रोटी स्मरण नहीं करते, और न यह कि कितनी टोकरियाँ उठाई थीं?

10 और न उन चार हजार की सात रोटियाँ, और न यह कि कितने टोकरे उठाए गए थे?

11 तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा? परन्तु फरीसियों और सद्कियों के खमीर से सावधान रहना।”

12 तब उनको समझ में आया, कि उसने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सद्कियों की शिक्षा से सावधान रहने को कहा था।

**22:22** **24:12** **24:13** **24:14** **24:15** **24:16** **24:17**

13 यीशु **22:22-23** **24:12-13\*** के प्रदेश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, “लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?”

14 उन्होंने कहा, “कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।”

15 उसने उनसे कहा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?”

16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।”

17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि माँस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।

18 और मैं भी तुझ से कहता हूँ, कि तू **22:22** † है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

19 मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुँजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बाँधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।”

20 तब उसने चेलों को चेतावनी दी, “किसी से न कहना! कि मैं मसीह हूँ।”

**22:22** **24:12** **24:13** **24:14** **24:15** **24:16** **24:17**

21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, “मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊँ, और प्राचीनों

† **16:13** **22:22-23** **24:12-13**: गलील के सागर के उत्तर में 25 मील और हेर्मोन पर्वत के आधार पर स्थित। ‡ **16:18** **22:22**: यूनानी में, चट्टान के एक टुकड़े के लिये पेत्रोस शब्द का इस्तेमाल होता है। पतरस 12 प्रेरितों में प्रमुख था।

और प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊँ; और मार डाला जाऊँ; और तीसरे दिन जी उठूँ।”

22 इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर डाँटने लगा, “हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तुझ पर ऐसा कभी न होगा।”

23 उसने फिरकर पतरस से कहा, “हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।”

2222 22 2222 2222 22 2222

24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, “यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपका इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।

25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।

26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?

27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

28 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कितने ऐसे हैं, कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।”

## 17

2222 22 22222222

1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया।

2 और वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तरण हुआ और उसका मुँह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया।

3 और 2222 22 22222222\* उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।

4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहाँ तीन तम्बू बनाऊँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।”

5 वह बोल ही रहा था, कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ: इसकी सुनो।”

6 चले यह सुनकर मुँह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए।

7 यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, “उठो, डरो मत।”

8 तब उन्होंने अपनी आँखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।

9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह निर्देश दिया, “जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुआँ में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।”

10 और उसके चेलों ने उससे पूछा, “फिर शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?”

11 उसने उत्तर दिया, “एलिय्याह तो अवश्य आएगा और सब कुछ सुधरेगा।

12 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि 22222222 22 22222222† और उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया। 2222 22222222 2222‡ मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।”

13 तब चेलों ने समझा कि उसने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है।

222222 22 222222 2222 22 222222

14 जब वे भीड़ के पास पहुँचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेककर कहने लगा।

15 “हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर! क्योंकि उसको मिर्गी आती है, और वह बहुत दुःख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।

16 और मैं उसको तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।”

17 यीशु ने उत्तर दिया, “हे अविश्वासी और हठीले लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।”

18 तब यीशु ने उसे डाँटा, और दुष्टात्मा उसमें से निकला; और लड़का उसी समय अच्छा हो गया।

19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, “हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?”

20 उसने उनसे कहा, “अपने विश्वास की कमी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा

\* 17:3 2222 22 22222222: मूसा इज़्राएल के महान अगुओं में से एक था जिसने इज़्राएलियों को मित्र देश से बाहर निकालने की अगुआई की थी। एलिय्याह पुराने नियम में एक भविष्यद्वक्ता था जिसने मूर्तियों की पूजा का विरोध किया। † 17:12 22222222 2 2222: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में चर्चा करते हुए जो एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में आया था ‡ 17:12 2222 222222 22: जिस तरह से वे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को अस्वीकार और अन्त में मार डालने के द्वारा उसके साथ व्यवहार किया, उसी रीति से मसीह भी अस्वीकार और मार डाला जाएगा

विश्वास भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, 'यहाँ से सरककर वहाँ चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अनहोनी न होगी।

21 [पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।]

22 जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।

23 और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।" इस पर वे बहुत उदास हुए।

24 जब वे कफरनहूम में पहुँचे, तो मन्दिर के लिये कर लेनेवालों ने पत्रस के पास आकर पूछा, "क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?"

25 उसने कहा, "हाँ, देता है।" जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहले उससे कहा, "हे शमौन तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा चुंगी या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?"

26 पत्रस ने उनसे कहा, "परायों से।" यीशु ने उससे कहा, "तो पुत्र बच गए।

27 फिर भी हम उन्हें ठोकर न खिलाएँ, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहले निकले, उसे ले; तो तुझे उसका मुँह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना।"

## 18

1 उसी समय चले यीशु के पास आकर पूछने लगे, "स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?"

2 इस पर उसने एक बालक को पास बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया,

3 और कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे।

4 जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।

5 और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।

17:20 उनका कहने का मतलब है कि यदि आपको वास्तविक छोटे से छोटा या मन्द विश्वास हैं तो आप सब कुछ कर सकते हैं। सभी जड़ी बूटियों से सबसे बड़ा सरसों का बीज उत्पादन करता है।

6 "पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता।

7 ठोकरोँ के कारण संसार पर हाय! ठोकरोँ का लगना अवश्य है; पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है।

8 "यदि तेरा हाथ या तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर फेंक दे; टुण्डा या लँगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो हाथ या दो पाँव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए।

9 और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आँख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।

10 "देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुँह सदा देखते हैं।

11 [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को बचाने आया है।]

12 "तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या निन्यानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूँढेगा?

13 और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह उन निन्यानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा।

14 ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो।

15 "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।

16 और यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से ठहराई जाए।

17 यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और चुंगी लेनेवाले के जैसा जान।

११११११ ११ १११११ १११११

18 “मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग पर बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।

19 फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे माँगे, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिये हो जाएगी।

20 क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।”

११११११ १ ११११११११११ ११११ ११ ११११११११११११

21 तब पतरस ने पास आकर, उससे कहा, “हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ, क्या सात बार तक?”

22 यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन् ११११ ११११ ११ १११११११ ११११११\* तक।

23 “इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।

24 जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया जो दस हजार तोड़े का कर्जदार था।

25 जबकि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इसकी पत्नी और बाल-बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।

26 इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा, हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूँगा।”

27 तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज क्षमा किया।

28 “परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जो उसके १११ १११११११ का कर्जदार था; उसने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा और कहा, ‘जो कुछ तुझ पर कर्ज है भर दे।’

29 इस पर उसका संगी दास गिरकर, उससे विनती करने लगा; कि धीरज धर मैं सब भर दूँगा।

30 उसने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे।

31 उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया।

\* 18:22 ११११ ११११ ११ १११११११ ११११११: अर्थात् जब तक क्षमा माँगने की आवश्यकता हो, आपको ऐसी स्थिति में कभी नहीं होना है कि सत्यनिष्ठा में जो क्षमा माँगी जा रही है उससे विमुख हों। (लूका. 17:3, 4) † 18:28 ११ ११११११११: एक दीनार (या “पैसा”) जो कि एक कृषि कार्यकर्ता को आमतौर पर एक दिन के श्रम के लिए भुगतान किया गया था।

32 तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उससे कहा, हे दुष्ट दास, तूने जो मुझसे विनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया।

33 इसलिए जैसा मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?”

34 और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे।

35 “इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।”

## 19

१११११ ११ ११११११११

1 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहूदिया के प्रदेश में यरदन के पार आया।

2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उसने उन्हें वहाँ चंगा किया।

3 तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, “क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?”

4 उसने उत्तर दिया, “क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा,

5 ‘इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?’

6 अतः वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।”

7 उन्होंने यीशु से कहा, “फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?”

8 उसने उनसे कहा, “मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नी को छोड़ देने की अनुमति दी, परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था।

9 और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्याग कर, दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई से विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है।”

10 चेलों ने उससे कहा, “यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बंध है, तो विवाह करना अच्छा नहीं।”



10 जो पहले आए, उन्होंने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला।

11 जब मिला, तो वह गृह स्वामी पर कुड़कुड़ा के कहने लगे,

12 'इन पिछ्लों ने एक ही घंटा काम किया, और तूने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और धूप सही?'

13 उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, 'हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तूने मुझसे एक दीनार न ठहराया?'

14 जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछ्ले को भी दूँ।

15 क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ वैसा करूँ? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है?'

16 इस प्रकार ~~?? ?~~ और जो प्रथम हैं वे अन्तिम हो जाएँगे।"

~~?? ?~~

17 यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उनसे कहने लगा।

18 "देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे।

19 और उसको अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे उपहास में उडाएँ, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएँ, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।"

~~?? ?~~

20 तब जब्दी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के साथ उसके पास आकर प्रणाम किया, और उससे कुछ माँगने लगी।

21 उसने उससे कहा, "तू क्या चाहती है?" वह उससे बोली, "यह कह, कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएँ बैठे।"

22 यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो। जो ~~?? ?~~ पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो?" उन्होंने उससे कहा, "पी सकते हैं।"

23 उसने उससे कहा, "तुम मेरा कटोरा तो पीओगे पर अपने दाहिने बाएँ किसी को बैठाना मेरा काम नहीं, पर जिनके लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिये है।"

24 यह सुनकर, दसों चले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए।

25 यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो, कि अन्यजातियों के अधिपति उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं।

26 परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने;

27 और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने;

28 जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परन्तु इसलिए आया कि सेवा करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राण दे।"

~~?? ?~~

29 जब वे ~~?? ?~~ से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

30 और दो अंधे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

31 लोगों ने उन्हें डाँटा, कि चुप रहें, पर वे और भी चिल्लाकर बोले, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

32 तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?"

33 उन्होंने उससे कहा, "हे प्रभु, यह कि हमारी आँखें खुल जाएँ।"

34 यीशु ने तरस खाकर उनकी आँखें छूई, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए।

## 21

~~?? ?~~

1 जब वे यरूशलेम के निकट पहुँचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा,

2 "अपने सामने के गाँव में जाओ, वहाँ पहुँचते ही एक गदही बंधी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ।

3 यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इनका प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा।"

4 यह इसलिए हुआ, कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो:

5 "सिय्योन की बेटी से कहो,

† 20:16 ~~?? ?~~: यह इस दृष्टान्त की नैतिक या व्यापकता है। बहुत से लोग समय के क्रमा अनुसार, स्वर्ग राज्य में अन्त में लाए गये, पुरस्कार में प्रथम होंगे। दूसरों की तुलना में उन्हें उच्चतम आनुपातिक पुरस्कार दिया जाएगा § 20:22 ~~?? ?~~ ~~?? ?~~: मसीह की पीड़ा का उल्लेख करता है (यिर्म. 25:15, यहजेकेल 23: 31-32) § 20:29 ~~?? ?~~: पश्चिमी तट पर यरदन नदी के निकट स्थित एक शहर है









## 23

1 तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा,

2 “शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं;

3 इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना, परन्तु उनके जैसा काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।

4 वे एक ऐसे **23:4** **23:5** **23:6** **23:7** **23:8** **23:9** **23:10** **23:11** **23:12** **23:13** **23:14** **23:15** **23:16** **23:17** **23:18** **23:19** **23:20** **23:21** **23:22** **23:23** **23:24** **23:25** **23:26** **23:27** **23:28** **23:29** **23:30** **23:31** **23:32** **23:33** **23:34** **23:35** **23:36** **23:37** **23:38** **23:39** **23:40** **23:41** **23:42** **23:43** **23:44** **23:45** **23:46** **23:47** **23:48** **23:49** **23:50** **23:51** **23:52** **23:53** **23:54** **23:55** **23:56** **23:57** **23:58** **23:59** **23:60** **23:61** **23:62** **23:63** **23:64** **23:65** **23:66** **23:67** **23:68** **23:69** **23:70** **23:71** **23:72** **23:73** **23:74** **23:75** **23:76** **23:77** **23:78** **23:79** **23:80** **23:81** **23:82** **23:83** **23:84** **23:85** **23:86** **23:87** **23:88** **23:89** **23:90** **23:91** **23:92** **23:93** **23:94** **23:95** **23:96** **23:97** **23:98** **23:99** **23:100** **23:101** **23:102** **23:103** **23:104** **23:105** **23:106** **23:107** **23:108** **23:109** **23:110** **23:111** **23:112** **23:113** **23:114** **23:115** **23:116** **23:117** **23:118** **23:119** **23:120** **23:121** **23:122** **23:123** **23:124** **23:125** **23:126** **23:127** **23:128** **23:129** **23:130** **23:131** **23:132** **23:133** **23:134** **23:135** **23:136** **23:137** **23:138** **23:139** **23:140** **23:141** **23:142** **23:143** **23:144** **23:145** **23:146** **23:147** **23:148** **23:149** **23:150** **23:151** **23:152** **23:153** **23:154** **23:155** **23:156** **23:157** **23:158** **23:159** **23:160** **23:161** **23:162** **23:163** **23:164** **23:165** **23:166** **23:167** **23:168** **23:169** **23:170** **23:171** **23:172** **23:173** **23:174** **23:175** **23:176** **23:177** **23:178** **23:179** **23:180** **23:181** **23:182** **23:183** **23:184** **23:185** **23:186** **23:187** **23:188** **23:189** **23:190** **23:191** **23:192** **23:193** **23:194** **23:195** **23:196** **23:197** **23:198** **23:199** **23:200** **23:201** **23:202** **23:203** **23:204** **23:205** **23:206** **23:207** **23:208** **23:209** **23:210** **23:211** **23:212** **23:213** **23:214** **23:215** **23:216** **23:217** **23:218** **23:219** **23:220** **23:221** **23:222** **23:223** **23:224** **23:225** **23:226** **23:227** **23:228** **23:229** **23:230** **23:231** **23:232** **23:233** **23:234** **23:235** **23:236** **23:237** **23:238** **23:239** **23:240** **23:241** **23:242** **23:243** **23:244** **23:245** **23:246** **23:247** **23:248** **23:249** **23:250** **23:251** **23:252** **23:253** **23:254** **23:255** **23:256** **23:257** **23:258** **23:259** **23:260** **23:261** **23:262** **23:263** **23:264** **23:265** **23:266** **23:267** **23:268** **23:269** **23:270** **23:271** **23:272** **23:273** **23:274** **23:275** **23:276** **23:277** **23:278** **23:279** **23:280** **23:281** **23:282** **23:283** **23:284** **23:285** **23:286** **23:287** **23:288** **23:289** **23:290** **23:291** **23:292** **23:293** **23:294** **23:295** **23:296** **23:297** **23:298** **23:299** **23:300** **23:301** **23:302** **23:303** **23:304** **23:305** **23:306** **23:307** **23:308** **23:309** **23:310** **23:311** **23:312** **23:313** **23:314** **23:315** **23:316** **23:317** **23:318** **23:319** **23:320** **23:321** **23:322** **23:323** **23:324** **23:325** **23:326** **23:327** **23:328** **23:329** **23:330** **23:331** **23:332** **23:333** **23:334** **23:335** **23:336** **23:337** **23:338** **23:339** **23:340** **23:341** **23:342** **23:343** **23:344** **23:345** **23:346** **23:347** **23:348** **23:349** **23:350** **23:351** **23:352** **23:353** **23:354** **23:355** **23:356** **23:357** **23:358** **23:359** **23:360** **23:361** **23:362** **23:363** **23:364** **23:365** **23:366** **23:367** **23:368** **23:369** **23:370** **23:371** **23:372** **23:373** **23:374** **23:375** **23:376** **23:377** **23:378** **23:379** **23:380** **23:381** **23:382** **23:383** **23:384** **23:385** **23:386** **23:387** **23:388** **23:389** **23:390** **23:391** **23:392** **23:393** **23:394** **23:395** **23:396** **23:397** **23:398** **23:399** **23:400** **23:401** **23:402** **23:403** **23:404** **23:405** **23:406** **23:407** **23:408** **23:409** **23:410** **23:411** **23:412** **23:413** **23:414** **23:415** **23:416** **23:417** **23:418** **23:419** **23:420** **23:421** **23:422** **23:423** **23:424** **23:425** **23:426** **23:427** **23:428** **23:429** **23:430** **23:431** **23:432** **23:433** **23:434** **23:435** **23:436** **23:437** **23:438** **23:439** **23:440** **23:441** **23:442** **23:443** **23:444** **23:445** **23:446** **23:447** **23:448** **23:449** **23:450** **23:451** **23:452** **23:453** **23:454** **23:455** **23:456** **23:457** **23:458** **23:459** **23:460** **23:461** **23:462** **23:463** **23:464** **23:465** **23:466** **23:467** **23:468** **23:469** **23:470** **23:471** **23:472** **23:473** **23:474** **23:475** **23:476** **23:477** **23:478** **23:479** **23:480** **23:481** **23:482** **23:483** **23:484** **23:485** **23:486** **23:487** **23:488** **23:489** **23:490** **23:491** **23:492** **23:493** **23:494** **23:495** **23:496** **23:497** **23:498** **23:499** **23:500** **23:501** **23:502** **23:503** **23:504** **23:505** **23:506** **23:507** **23:508** **23:509** **23:510** **23:511** **23:512** **23:513** **23:514** **23:515** **23:516** **23:517** **23:518** **23:519** **23:520** **23:521** **23:522** **23:523** **23:524** **23:525** **23:526** **23:527** **23:528** **23:529** **23:530** **23:531** **23:532** **23:533** **23:534** **23:535** **23:536** **23:537** **23:538** **23:539** **23:540** **23:541** **23:542** **23:543** **23:544** **23:545** **23:546** **23:547** **23:548** **23:549** **23:550** **23:551** **23:552** **23:553** **23:554** **23:555** **23:556** **23:557** **23:558** **23:559** **23:560** **23:561** **23:562** **23:563** **23:564** **23:565** **23:566** **23:567** **23:568** **23:569** **23:570** **23:571** **23:572** **23:573** **23:574** **23:575** **23:576** **23:577** **23:578** **23:579** **23:580** **23:581** **23:582** **23:583** **23:584** **23:585** **23:586** **23:587** **23:588** **23:589** **23:590** **23:591** **23:592** **23:593** **23:594** **23:595** **23:596** **23:597** **23:598** **23:599** **23:600** **23:601** **23:602** **23:603** **23:604** **23:605** **23:606** **23:607** **23:608** **23:609** **23:610** **23:611** **23:612** **23:613** **23:614** **23:615** **23:616** **23:617** **23:618** **23:619** **23:620** **23:621** **23:622** **23:623** **23:624** **23:625** **23:626** **23:627** **23:628** **23:629** **23:630** **23:631** **23:632** **23:633** **23:634** **23:635** **23:636** **23:637** **23:638** **23:639** **23:640** **23:641** **23:642** **23:643** **23:644** **23:645** **23:646** **23:647** **23:648** **23:649** **23:650** **23:651** **23:652** **23:653** **23:654** **23:655** **23:656** **23:657** **23:658** **23:659** **23:660** **23:661** **23:662** **23:663** **23:664** **23:665** **23:666** **23:667** **23:668** **23:669** **23:670** **23:671** **23:672** **23:673** **23:674** **23:675** **23:676** **23:677** **23:678** **23:679** **23:680** **23:681** **23:682** **23:683** **23:684** **23:685** **23:686** **23:687** **23:688** **23:689** **23:690** **23:691** **23:692** **23:693** **23:694** **23:695** **23:696** **23:697** **23:698** **23:699** **23:700** **23:701** **23:702** **23:703** **23:704** **23:705** **23:706** **23:707** **23:708** **23:709** **23:710** **23:711** **23:712** **23:713** **23:714** **23:715** **23:716** **23:717** **23:718** **23:719** **23:720** **23:721** **23:722** **23:723** **23:724** **23:725** **23:726** **23:727** **23:728** **23:729** **23:730** **23:731** **23:732** **23:733** **23:734** **23:735** **23:736** **23:737** **23:738** **23:739** **23:740** **23:741** **23:742** **23:743** **23:744** **23:745** **23:746** **23:747** **23:748** **23:749** **23:750** **23:751** **23:752** **23:753** **23:754** **23:755** **23:756** **23:757** **23:758** **23:759** **23:760** **23:761** **23:762** **23:763** **23:764** **23:765** **23:766** **23:767** **23:768** **23:769** **23:770** **23:771** **23:772** **23:773** **23:774** **23:775** **23:776** **23:777** **23:778** **23:779** **23:780** **23:781** **23:782** **23:783** **23:784** **23:785** **23:786** **23:787** **23:788** **23:789** **23:790** **23:791** **23:792** **23:793** **23:794** **23:795** **23:796** **23:797** **23:798** **23:799** **23:800** **23:801** **23:802** **23:803** **23:804** **23:805** **23:806** **23:807** **23:808** **23:809** **23:810** **23:811** **23:812** **23:813** **23:814** **23:815** **23:816** **23:817** **23:818** **23:819** **23:820** **23:821** **23:822** **23:823** **23:824** **23:825** **23:826** **23:827** **23:828** **23:829** **23:830** **23:831** **23:832** **23:833** **23:834** **23:835** **23:836** **23:837** **23:838** **23:839** **23:840** **23:841** **23:842** **23:843** **23:844** **23:845** **23:846** **23:847** **23:848** **23:849** **23:850** **23:851** **23:852** **23:853** **23:854** **23:855** **23:856** **23:857** **23:858** **23:859** **23:860** **23:861** **23:862** **23:863** **23:864** **23:865** **23:866** **23:867** **23:868** **23:869** **23:870** **23:871** **23:872** **23:873** **23:874** **23:875** **23:876** **23:877** **23:878** **23:879** **23:880** **23:881** **23:882** **23:883** **23:884** **23:885** **23:886** **23:887** **23:888** **23:889** **23:890** **23:891** **23:892** **23:893** **23:894** **23:895** **23:896** **23:897** **23:898** **23:899** **23:900** **23:901** **23:902** **23:903** **23:904** **23:905** **23:906** **23:907** **23:908** **23:909** **23:910** **23:911** **23:912** **23:913** **23:914** **23:915** **23:916** **23:917** **23:918** **23:919** **23:920** **23:921** **23:922** **23:923** **23:924** **23:925** **23:926** **23:927** **23:928** **23:929** **23:930** **23:931** **23:932** **23:933** **23:934** **23:935** **23:936** **23:937** **23:938** **23:939** **23:940** **23:941** **23:942** **23:943** **23:944** **23:945** **23:946** **23:947** **23:948** **23:949** **23:950** **23:951** **23:952** **23:953** **23:954** **23:955** **23:956** **23:957** **23:958** **23:959** **23:960** **23:961** **23:962** **23:963** **23:964** **23:965** **23:966** **23:967** **23:968** **23:969** **23:970** **23:971** **23:972** **23:973** **23:974** **23:975** **23:976** **23:977** **23:978** **23:979** **23:980** **23:981** **23:982** **23:983** **23:984** **23:985** **23:986** **23:987** **23:988** **23:989** **23:990** **23:991** **23:992** **23:993** **23:994** **23:995** **23:996** **23:997** **23:998** **23:999** **23:1000**

5 वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं वे अपने **23:4** **23:5** **23:6** **23:7** **23:8** **23:9** **23:10** **23:11** **23:12** **2**

हो।

29 “हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो।

30 और कहते हो, ‘यदि हम अपने पूर्वजों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उनके सहभागी न होते।’

31 इससे तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के हत्यारों की सन्तान हो।

32 अतः तुम अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भर दो।

33 हे साँपों, हे कर्तों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?

34 इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूँ; और तुम उनमें से कुछ को मार डालोगे, और कूस पर चढ़ाओगे; और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे।

35 जिससे धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा।

36 मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब बातें इस पीढ़ी के लोगों पर आ पड़ेंगी।

हे यरूशलेम, हे यरूशलेम!

37 “हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पथराव करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुम ने न चाहा।

38 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।

39 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, ‘धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है’ तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।”

## 24

जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए।

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए।

\* 24:3 यरूशलेम के पुराने शहर के पूर्व में इस पहाड़ की चोटी है। इसे जैतून के पेड़ों के लिये नामित किया गया कि जैतून के पेड़ों से एक बार उसकी ढलानों को ढक दिया था। † 24:8 महान दुःख की शुरुआत ‡ 24:14 सभी (यहूदियों और अन्यजातियों दोनों) के साथ सुसमाचार बाँटना

2 उसने उनसे कहा, “क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।”

और जब वह

3 और जब वह पर बैठा था, तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, “हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का, और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?”

4 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “सावधान रहो! कोई तुम्हें न बहकाने पाए।

5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, ‘मैं मसीह हूँ’, और बहुतों को बहका देंगे।

6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।

7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे।

8 ये सब बातें होंगी।

9 तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएँगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे।

10 तब बहुत सारे टोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे और एक दूसरे से बैर रखेंगे।

11 बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को बहकाएँगे।

12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा।

13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।

14 और राज्य का यह सुसमाचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

इसलिए जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु

15 “इसलिए जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)।

16 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ।

17 जो छत पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे।

18 और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।

19 “उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय, हाय।

20 और प्रार्थना करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।

21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा।

22 और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुएों के कारण वे दिन घटाए जाएँगे।

23 उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहाँ हैं! या वहाँ है! तो विश्वास न करना।

24 “क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएँगे, कि यदि हो सके तो चुने हुएों को भी बहका दें।

25 देखो, मैंने पहले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।

26 इसलिए यदि वे तुम से कहें, ‘देखो, वह जंगल में है’, तो बाहर न निकल जाना; ‘देखो, वह कोठरियों में है’, तो विश्वास न करना।

27 “क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।

28 जहाँ लाश हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

29 “उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अंधियारा हो जाएगा, और चाँद का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी।

30 तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।

31 और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुएों को इकट्ठा करेंगे।

☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

32 “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है।

33 इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, वरन् द्वार पर है।

34 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।

35 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरे शब्द कभी न टलेंगे।

☞☞☞☞☞ ☞☞☞

36 “उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।

37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

38 क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह-शादी होती थी।

39 और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

40 उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।

41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी।

42 इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।

43 परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में चोरी नहीं होने देता।

44 इसलिए तुम भी ☞☞☞☞☞ ☞☞☞, क्योंकि जिस समय के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी समय मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

45 “अतः वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे?

46 धन्य है, वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।

47 मैं तुम से सच कहता हूँ; वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा।

48 परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है।

49 और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाए-पीए।

50 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा होगा, और ऐसी घड़ी कि जिसे वह न जानता हो,

§ 24:44 ☞☞☞☞☞ ☞☞☞: इसका मतलब हर समय तैयार रहना क्योंकि मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है।

51 और उसे कठोर दण्ड देकर, उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

## 25

?????? ?? ?????????? ????? ??  
?????????????? ?? ?????????????

1 “तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुँवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं।

2 उनमें पाँच मूर्ख और पाँच समझदार थीं।

3 मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया।

4 परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया।

5 जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब उँघने लगीं, और सो गईं।

6 “आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे भेंट करने के लिये चलो।

7 तब वे सब कुँवारियाँ उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं।

8 और मूर्खों ने समझदारों से कहा, ‘अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझ रही हैं।’

9 परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कही हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।

10 जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चलीं गईं और द्वार बन्द किया गया।

11 इसके बाद वे दूसरी कुँवारियाँ भी आकर कहने लगीं, ‘हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे।’

12 उसने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।

13 इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस समय को।

???? ??????? ?? ?????????????

14 “क्योंकि यह उस मनुष्य के समान दशा है जिसने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी।

15 उसने एक को पाँच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ्य के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया।

16 तब, जिसको पाँच तोड़े मिले थे, उसने तुरन्त जाकर उनसे लेन-देन किया, और पाँच तोड़े और कमाए।

17 इसी रीति से जिसको दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए।

18 परन्तु जिसको एक मिला था, उसने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी का धन छिपा दिया।

19 “बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उनसे लेखा लेने लगा।

20 जिसको पाँच तोड़े मिले थे, उसने पाँच तोड़े और लाकर कहा, ‘हे स्वामी, तूने मुझे पाँच तोड़े सौंपे थे, देख मैंने पाँच तोड़े और कमाए हैं।’

21 उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।’

22 “और जिसको दो तोड़े मिले थे, उसने भी आकर कहा, ‘हे स्वामी तूने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैंने दो तोड़े और कमाए।’

23 उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।’

24 “तब जिसको एक तोड़ा मिला था, उसने आकर कहा, ‘हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: तू जहाँ कहीं नहीं बोता वहाँ काटता है, और जहाँ नहीं छींटता वहाँ से बटोरता है।’

25 इसलिए मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, ‘जो तेरा है, वह यह है।’

26 उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब तू यह जानता था, कि जहाँ मैंने नहीं बोया वहाँ से काटता हूँ; और जहाँ मैंने नहीं छींटा वहाँ से बटोरता हूँ।

27 तो तुझे चाहिए था, कि मेरा धन सर्तफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।

28 इसलिए वह तोड़ा उससे ले लो, और जिसके पास दस तोड़े हैं, उसको दे दो।

29 क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।

30 और इस निकम्मे दास को बाहर के अंधेरे में डाल दो, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

?????????????? ?? ??????????

31 “जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।





14 तब यहूदा इस्करियोती ने, जो बारह चेलों में से एक था, प्रधान याजकों के पास जाकर कहा,

15 “यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ, तो मुझे क्या दोगे?” उन्होंने उसे तीस चाँदी के सिक्के तौलकर दे दिए।

16 और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूँढने लगा।

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

17 अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, चले यीशु के पास आकर पूछने लगे, “तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?”

18 उसने कहा, “नगर में फलाने के पास जाकर उससे कहो, कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहाँ फसह मनाऊँगा।”

19 अतः चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।

20 जब साँझ हुई, तो वह बारह चेलों के साथ भोजन करने के लिये बैठा।

21 जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।”

22 इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उससे पूछने लगा, “हे गुरु, क्या वह मैं हूँ?”

23 उसने उत्तर दिया, “जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।

24 मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता।”

25 तब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा, “हे रब्बी, क्या वह मैं हूँ?” उसने उससे कहा, “तू कह चुका।”

????? ? ? ? ?

26 जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, “लो, खाओ; यह मेरी देह है।”

27 फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पीओ,

28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है।

29 मैं तुम से कहता हूँ, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँ।”

30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए।

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

31 तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, मैं चरवाहे को मारूँगा; और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।”

32 “परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।”

33 इस पर पतरस ने उससे कहा, “यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएँ तो खाएँ, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊँगा।”

34 यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही रात को मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझसे मुकर जाएगा।”

35 पतरस ने उससे कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तो भी, मैं तुझ से कभी न मुकरूँगा।” और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा।

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

36 तब यीशु ने अपने चेलों के साथ ???? नामक एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा “यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।”

37 और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा।

38 तब उसने उनसे कहा, “मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।”

39 फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, “हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह ???? मुझसे टल जाए, फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।”

40 फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा, “क्या तुम मेरे साथ एक घण्टे भर न जाग सके?”

41 जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो! आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।”

42 फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, “हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।”

43 तब उसने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं।

‡ 26:36 ???? : इब्रानी में गतसमनी का मतलब एक जैतून से दबाया हुआ है। वह जगह जहाँ यीशु ने अपनी कलवरी क्रूस की परीक्षा से पहले प्रार्थना की थी § 26:39 ???? : परिक्षण के नजदीक, कठिन दुःख के रूप में संदर्भित।





26 इस पर उसने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

27 तब राज्यपाल के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारे सैनिक उसके चारों ओर इकट्ठा किए।

28 और उसके कपड़े उतारकर उसे लाल चोगा पहनाया।

29 और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा; और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे उपहास में उड़ाने लगे, “हे यहूदियों के राजा नमस्कार!”

30 और उस पर थूका; और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।

31 जब वे उसका उपहास कर चुके, तो वह चोगा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

32 बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले।

33 और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है पहुँचकर

34 उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उसने चखकर पीना न चाहा।

35 तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए।

36 और वहाँ बैठकर उसका पहरा देने लगे।

37 और उसका दोषपत्र, उसके सिर के ऊपर लगाया, कि “यह यहूदियों का राजा यीशु है।”

38 तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएँ क्रूसों पर चढ़ाए गए।

39 और आने-जानेवाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे।

40 और यह कहते थे, “हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आपको तो बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।”

41 इसी रीति से प्रधान याजक भी शास्त्रियों और प्राचीनों समेत उपहास कर करके कहते थे,

42 “इसने दूसरों को बचाया, और अपने आपको नहीं बचा सकता। यह तो ‘इस्राएल का राजा’ है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें।”

43 उसने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छोड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, कि ‘मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।’”

44 इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उसकी निन्दा करते थे।

45 दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा।

46 तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “~~27:46~~, ~~27:46~~, ~~27:46~~ ~~27:46~~?” अर्थात् “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

47 जो वहाँ खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, “वह तो एलिय्याह को पुकारता है।”

48 उनमें से एक तुरन्त दौड़ा, और पनसोख्ता लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया।

49 औरों ने कहा, “रह जाओ, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।”

50 तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।

51 तब, मन्दिर का ~~27:51~~ ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चट्टानें फट गईं।

52 और कब्रें खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों के बहुत शव जी उठे।

53 और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए।

54 तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भूकम्प और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, “सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!”

55 वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं, दूर से देख रही थीं।

56 उनमें मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम और जब्दी के पुत्रों की माता थीं।

57 जब साँझ हुई तो यूसुफ नामक अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था, आया।

58 उसने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव माँगा। इस पर पिलातुस ने दे देने की आज्ञा दी।

59 यूसुफ ने शव को लेकर उसे साफ चादर में लपेटा।

† 27:46 ~~27:46~~, ~~27:46~~, ~~27:46~~ ~~27:46~~: इसका अर्थ है “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया” ‡ 27:51 ~~27:51~~: मन्दिर में जो पवित्रस्थान को महापवित्र स्थान से अलग करता है, मन्दिर को दो भागों में बाँटता है (निर्गमन. 26:31-33)।

60 और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।

61 और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं।

२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२

62 दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, प्रधान याजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा।

63 “हे स्वामी, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूँगा।

64 अतः आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चले आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुआओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहले से भी बुरा होगा।”

65 पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम्हारे पास पहरेदार तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो।”

66 अतः वे पहरेदारों को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।

## 28

२२२२ २२ २२ २२२२

1 सप्त के दिन के बाद सप्ताह के पहले दिन पौ फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं।

2 तब एक बड़ा भूकम्प हुआ, क्योंकि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।

3 उसका रूप बिजली के समान और उसका वस्त्र हिम के समान उज्ज्वल था।

4 उसके भय से पहरेदार काँप उठे, और मृतक समान हो गए।

5 स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, “मत डरो, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को जो कूस पर चढ़ाया गया था ढूँढती हो।

6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु २२२२ २२२ २२ २२२२२२\* जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहाँ प्रभु रखा गया था।

\* 28:6 २२२२ २२२ २२ २२२२२२: यीशु अक्सर यह भविष्यद्वाणी करते थे कि वह जी उठेंगे, परन्तु उनके शिष्य नहीं समझे (मत्ती 16:21; 20:19)

† 28:17 २२२२ २२२२: चले उसके जी उठने की उम्मीद नहीं करते थे; वे इसलिए कि विश्वास करने में कमजोर थे, उदाहरण के लिए थोमा। (यूह 20:25) ‡ 28:18 २२२२२२: स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु को दिया गया है, “परमेश्वर का पुत्र” “सृष्टिकर्ता” के रूप में, उन्हें सब कुछ को नियंत्रण और समाप्त करने का मूल अधिकार है। देखिए योना 1:3; कुलुस्सियों 1:16-17; इब्रानियों 1:8 § 28:20 २२२२२२२२ २२२२: यीशु हम से प्रतिज्ञा करते हैं कि वह हमें मजबूत बनाने, सहायता करने, और हमारी अगुआई करने के लिये, हमारे संग हर समय रहेंगे।

7 और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैंने तुम से कह दिया।”

8 और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गईं।

२२२२२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२२

9 तब, यीशु उन्हें मिला और कहा; “सुखी रहो” और उन्होंने पास आकर और उसके पाँव पकड़कर उसको दण्डवत् किया।

10 तब यीशु ने उनसे कहा, “मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि गलील को चले जाएँ वहाँ मुझे देखेंगे।”

२२२२२२२२२२ २२ २२२२२२

11 वे जा ही रही थी, कि पहरेदारों में से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल प्रधान याजकों से कह सुनाया।

12 तब उन्होंने प्राचीनों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चाँदी देकर कहा।

13 “यह कहना कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चले आकर उसे चुरा ले गए।

14 और यदि यह बात राज्यपाल के कान तक पहुँचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे।”

15 अतः उन्होंने रुपये लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है।

२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२२२

16 और ग्यारह चले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था।

17 और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर २२२२२ २२२२२† को सन्देह हुआ।

18 यीशु ने उनके पास आकर कहा, “स्वर्ग और पृथ्वी का सारा २२२२२२२‡ मुझे दिया गया है।

19 इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

20 और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव २२२२२२२२२ २२२२§ हूँ।”





40 एक कोढ़ी ने उसके पास आकर, उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर, उससे कहा, “यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”

41 उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, “मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।”

42 और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।

43 तब उसने उसे कड़ी चेतावनी देकर तुरन्त विदा किया,

44 और उससे कहा, “देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आपको याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेंट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो।” (2:14-32)

45 परन्तु वह बाहर जाकर इस बात को बहुत प्रचार करने और यहाँ तक फैलाने लगा, कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे।

## 2

1 कई दिन के बाद यीशु फिर कफरनहूम में आया और सुना गया, कि वह घर में है।

2 फिर इतने लोग इकट्ठे हुए, कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली; और वह उन्हें वचन सुना रहा था।

3 और लोग एक लकवे के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए।

4 परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुँच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था, खोल दिया और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर लकवे का मारा हुआ पड़ा था, लटका दिया।

5 यीशु ने, उनका विश्वास देखकर, उस लकवे के मारे हुए से कहा, “हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।”

6 तब कई एक शास्त्री जो वहाँ बैठे थे, अपने-अपने मन में विचार करने लगे,

7 “यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है! परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?” (2:43:25)

8 यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने-अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे

कहा, “तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो?”

9 सहज क्या है? क्या लकवे के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर?

10 परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।” उसने उस लकवे के मारे हुए से कहा,

11 “मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।”

12 वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर सब के सामने से निकलकर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, “हमने ऐसा कभी नहीं देखा।”

13 वह फिर निकलकर झील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई, और वह उन्हें उपदेश देने लगा।

14 जाते हुए यीशु ने हलफर्डस के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और वह उठकर, उसके पीछे हो लिया।

15 और वह उसके घर में भोजन करने बैठा; और बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी भी उसके और चेलों के साथ भोजन करने बैठे, क्योंकि वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिये थे।

16 और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा, “वह तो चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!”

17 यीशु ने यह सुनकर, उनसे कहा, “भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है: (2:22:17-22:22)\*।”

18 यूहन्ना के चले, और फरीसी उपवास करते थे; अतः उन्होंने आकर उससे यह कहा; “यूहन्ना के चले और फरीसियों के चले क्यों उपवास रखते हैं, परन्तु तेरे चले उपवास नहीं रखते?”

19 यीशु ने उनसे कहा, “जब तक दूल्हा बारातियों के साथ रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं? अतः जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते।

\* 2:17 2:22 2:22:17-22:22, ... 2:22 2:22: यहाँ पर यीशु अपने आने के उद्देश्य को दर्शाता है, वह पापियों, बीमारों और नाश होती हुई दुनिया को बचाने के लिए आया था। † 2:20 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22: यीशु अपने आपके बारे में बात कर रहा था



20 परन्तु वे दिन आएँगे, कि [2:20-22] [2:20-22] [2:20-22] [2:20-22] [2:20-22]; उस समय वे उपवास करेंगे।

21 “नये कपडे का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैबन्द उसमें से कुछ खींच लेगा, अर्थात् नया, पुराने से, और अधिक फट जाएगा।

22 नये दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मशकों को फाड़ देगा, और दाखरस और मशकें दोनों नष्ट हो जाएँगी; परन्तु दाख का नया रस नई मशकों में भरा जाता है।”

[2:23-25] [2:23-25] [2:23-25]

23 और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था; और उसके चले चलते हुए बालें तोड़ने लगे। ([2:23-25]. 23:25)

24 तब फरीसियों ने उससे कहा, “देख, ये सब्त के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं?”

25 उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा, कि जब दाऊद को आवश्यकता हुई और जब वह और उसके साथी भूखे हुए, तब उसने क्या किया था?

26 उसने क्यों अबियातार महायाजक के समय, परमेश्वर के भवन में जाकर, भेंट की रोटियाँ खाईं, जिसका खाना याजकों को छोड़ और किसी को भी उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दीं?”

27 और उसने उनसे कहा, “सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य [2:27-29] [2:27-29] [2:27-29] [2:27-29] [2:27-29]।

28 इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।”

### 3

[2:31-33] [2:31-33] [2:31-33] [2:31-33] [2:31-33]

1 और वह फिर आराधनालय में गया; और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूख गया था।

2 और वे उस पर दोष लगाने के लिये उसकी घात में लगे हुए थे, कि देख, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं।

3 उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, “बीच में खड़ा हो।”

4 और उनसे कहा, “क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?” पर वे चुप रहे।

5 और उसने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा,

“अपना हाथ बढ़ा।” उसने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया।

6 तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें।

[2:41-43] [2:41-43] [2:41-43] [2:41-43]

7 और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया: और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

8 और यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया से, और यरदन के पार, और सोर और सीदोन के आस-पास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई।

9 और उसने अपने चेलों से कहा, “भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें।”

10 क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था; इसलिए जितने लोग रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे।

11 और अशुद्ध आत्माएँ भी, जब उसे देखती थीं, तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्लाकर कहती थीं कि तू परमेश्वर का पुत्र है।

12 और उसने उन्हें कड़ी चेतावनी दी कि, मुझे प्रगट न करना।

[2:47-49] [2:47-49] [2:47-49] [2:47-49] [2:47-49]

13 फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुलाया; और वे उसके पास चले आए।

14 तब उसने बारह को नियुक्त किया, कि वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें।

15 और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें।

16 और वे ये हैं शमौन जिसका नाम उसने पतरस रखा।

17 और जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना, जिनका नाम उसने [2:47-49] [2:47-49] [2:47-49] [2:47-49] [2:47-49]\*, अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा।

18 और अन्द्रियास, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, और मत्ती, और थोमा, और हलफर्डस का पुत्र याकूब; और तद्दै, और शमौन कनानी।

19 और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

[2:51-53] [2:51-53] [2:51-53] [2:51-53]

‡ 2:27 [2:27-29] [2:27-29] [2:27-29]: कठिन परिश्रम से, देख-भाल और चिन्ताओं से विश्राम करने के लिये बनाया गया था इस तरह का मनुष्यों के लिये प्रावधान था कि वह अपने शरीर को ताजा कर सके। \* 3:17 [2:47-49] [2:47-49] [2:47-49]: यह शब्द दो इब्रानी शब्दों से बना है जो “गर्जन के पुत्र” को दर्शाता है।

## 4

20 और वह घर में आया और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी भी न खा सके।

21 जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिये निकले; क्योंकि कहते थे, कि उसकी सुध-बुध ठिकाने पर नहीं है।

22 और शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे, “उसमें शैतान है,” और यह भी, “वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।”

23 और वह उन्हें पास बुलाकर, उनसे **22222222222222** में कहने लगा, “शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है?”

24 और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है?

25 और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर क्या स्थिर रह सकेगा?

26 और यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो वह क्या बना रह सकता है? उसका तो अन्त ही हो जाता है।

27 “किन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को न बाँध ले; और तब उसके घर को लूट लेगा।

28 “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मनुष्यों के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं, क्षमा की जाएगी।

29 परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा: वरन् वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है।”

30 क्योंकि वे यह कहते थे, कि उसमें अशुद्ध आत्मा है।

**2222 22 2222 22 2222**

31 और उसकी माता और उसके भाई आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा।

32 और भीड़ उसके आस-पास बैठी थी, और उन्होंने उससे कहा, “देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूँढ़ते हैं।”

33 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?”

34 और उन पर जो उसके आस-पास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, “देखो, मेरी माता और मेरे भाई यह हैं।

35 **क्योंकि जो 2222 2222222222 22 222222 22 2222, वही मेरा भाई, और बहन और माता है।**”

† **3:23 222222222222**: मत्ती 13:3 की टिप्पणी देखिए ‡ **3:35 222 2222222222 22 222222 22 2222**: यीशु सम्बंधों के क्रम में परिवर्तन करता है और दिखाता है कि सच्ची रिश्तेदारी सिर्फ माँस और रक्त का मामला नहीं है। जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है वह परमेश्वर का एक दोस्त और उसके परिवार का एक सदस्य है। \* **4:14 2222**: परमेश्वर के वचन को दर्शाता है। जिस तरह से परमेश्वर अपने वचन का उपयोग करता है वह मनुष्य के प्रयासों से पूरी तरह से स्वतंत्र है।

**2222 222222222222 22 222222222222**

1 यीशु फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा: और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई, कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया, और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही।

2 और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सारी बातें सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उनसे कहा,

3 “सुनो! देखो, एक बोनेवाला, बीज बोने के लिये निकला।

4 और बोते समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया।

5 और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहाँ उसको बहुत मिट्टी न मिली, और नरम मिट्टी मिलने के कारण जल्द उग आया।

6 और जब सूर्य निकला, तो जल गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया।

7 और कुछ तो झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा दिया, और वह फल न लाया।

8 परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा; और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया।”

9 और उसने कहा, “जिसके पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले।”

**22222222222222 22 222222222222**

10 जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा।

11 उसने उनसे कहा, “तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिये सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं।

12 इसलिए कि वे देखते हुए देखें और उन्हें दिखाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें;

ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएँ।” **(2222. 6:9,10, 222222. 5:21)**

**2222 222222222222 222222222222 22 222222222222**

13 फिर उसने उनसे कहा, “क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?

14 बोनेवाला **2222**\* बोता है।

15 जो मार्ग के किनारे के हैं जहाँ वचन बोया जाता है, ये वे हैं, कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।

16 और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं, कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं।

17 परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।

18 और जो झाड़ियों में बोए गए ये वे हैं जिन्होंने वचन सुना,

19 और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है और वह निष्फल रह जाता है।

20 और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।”

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

21 और उसने उनसे कहा, “क्या दीये को इसलिए लाते हैं कि पैमाने या खाट के नीचे रखा जाए? क्या इसलिए नहीं, कि दीवट पर रखा जाए?”

22 क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिए कि प्रगट हो जाए; और न कुछ गुप्त है, पर इसलिए कि प्रगट हो जाए।

23 यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले।”

24 फिर उसने उनसे कहा, “चौकस रहो, कि क्या सुनते हो? जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा।

25 क्योंकि जिसके पास है, उसको दिया जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है उससे वह भी जो उसके पास है; ले लिया जाएगा।”

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

26 फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छीटे,

27 और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगें और बढ़े कि वह न जाने।

28 पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहले अंकुर, तब बालें, और तब बालों में तैयार दाना।

29 परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हँसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुँची है।” (222)

3:13)

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

30 फिर उसने कहा, “हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें?”

31 वह राई के दाने के समान हैं; कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है।

32 परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब साग-पात से बड़ा हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियाँ निकलती हैं, कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।”

33 और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्टान्त दे देकर उनकी समझ के अनुसार वचन सुनाता था।

34 और बिना दृष्टान्त कहे उनसे कुछ भी नहीं कहता था; परन्तु एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था।

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

35 उसी दिन जब साँझ हुई, तो उसने चेलों से कहा, “आओ, हम पार चलें।”

36 और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ, और भी नावें थीं।

37 तब बड़ी आँधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी।

38 और वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था; तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, “हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं?”

39 तब उसने उठकर आँधी को डाँटा, और पानी से कहा, “शान्त रह, थम जा!” और आँधी थम गई और बड़ा चैन हो गया।

40 और उनसे कहा, “तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?” (22. 107:29)

41 और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले, “यह कौन है, कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?”

## 5

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे,

2 और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे मिला।

3 वह कब्रों में रहा करता था और कोई उसे जंजीरों से भी न बाँध सकता था,

4 क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और जंजीरों से बाँधा गया था, पर उसने जंजीरों को तोड़ दिया, और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था।

5 वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था।

6 वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया।

7 और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, “हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ, कि मुझे पीड़ा न दे।”  
([2/2/2/2/2](#) 8:29, 1 [2/2/2/2](#). 17:18)

8 क्योंकि उसने उससे कहा था, “हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।”

9 यीशु ने उससे पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने उससे कहा, “[2/2/2/2](#) [2/2/2](#) [2/2/2/2](#) [2/2](#)”; क्योंकि हम बहुत हैं।”

10 और उसने उससे बहुत विनती की, “हमें इस देश से बाहर न भेज।”

11 वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।

12 और उन्होंने उससे विनती करके कहा, “हमें उन सूअरों में भेज दे, कि हम उनके भीतर जाएँ।”

13 अतः उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर घुस गई और झुण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा, और डूब मरा।

14 और उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गाँवों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए।

15 यीशु के पास आकर, वे उसको जिसमें दुष्टात्माएँ समाई थीं, कपड़े पहने और सचेत बैठे देखकर, डर गए।

16 और देखनेवालों ने उसका जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, और सूअरों का पूरा हाल, उनको कह सुनाया।

17 और वे उससे विनती करके कहने लगे, कि हमारी सीमा से चला जा।

18 और जब वह नाव पर चढ़ने लगा, तो वह जिसमें पहले दुष्टात्माएँ थीं, उससे विनती करने लगा, “मुझे अपने साथ रहने दे।”

19 परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा, “अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।”

20 वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब अचम्भा करते थे।

[2/2/2/2](#) [2/2](#) [2/2/2](#) [2/2/2/2/2/2](#) [2/2](#) [2/2](#) [2/2/2/2](#)  
[2/2/2/2/2/2](#)

\* 5:9 [2/2/2/2](#) [2/2/2](#) [2/2/2/2](#) [2/2](#): सेना का अर्थ “गिनती में बहुत अधिक” की देख-भाल करने में प्रतिबद्ध था, आराधनालय का अर्थ है एक यहूदी  
‡ 5:30 [2/2/2/2/2](#) [2/2/2/2/2/2/2](#) [2/2/2/2/2](#) [2/2](#): चंगाई करने की सामर्थ्य।

21 जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई; और वह झील के किनारे था।

22 और याईर नामक [2/2/2/2/2/2/2/2](#) [2/2](#) [2/2/2/2/2/2/2/2](#) में से एक आया, और उसे देखकर, उसके पाँवों पर गिरा।

23 और उसने यह कहकर बहुत विनती की, “मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे।”

24 तब वह उसके साथ चला; और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, यहाँ तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे।

25 और एक स्त्री, जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था।

26 और जिसने बहुत वैद्यों से बड़ा दुःख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी।

27 यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया,

28 क्योंकि वह कहती थी, “यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।”

29 और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया; और उसने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ।

30 यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि [2/2/2/2/2](#) [2/2/2/2/2/2/2/2](#) [2/2/2/2/2/2](#) [2/2/2](#), और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, “मेरा वस्त्र किसने छुआ?”

31 उसके चेलों ने उससे कहा, “तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि किसने मुझे छुआ?”

32 तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की।

33 तब वह स्त्री यह जानकर, कि उसके साथ क्या हुआ है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर, उससे सब हाल सच-सच कह दिया।

34 उसने उससे कहा, “पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।” ([2/2/2/2/2](#) 8:48)

35 वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, “तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरु को क्यों दुःख देता है?”

36 जो बात वे कह रहे थे, उसको यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा, “मत डर; केवल विश्वास रख।”

† 5:22 [2/2/2/2/2/2/2/2](#) [2/2](#) [2/2/2/2/2/2/2/2](#): प्राचीनों में से एक जो आराधनालय आराधना घर, जिसमें अक्सर धार्मिक निर्देश के लिए सुविधाएँ होती हैं।।



22 और उसी हेरोदियास की बेटी भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस को और उसके साथ बैठनेवालों को प्रसन्न किया; तब राजा ने लड़की से कहा, “तू जो चाहे मुझसे माँग मैं तुझे दूँगा।”

23 और उसने शपथ खाई, “मैं अपने आधे राज्य तक जो कुछ तू मुझसे माँगेगी मैं तुझे दूँगा।” (22:22-23, 5:3,6, 22:22-23, 7:2)

24 उसने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा, “मैं क्या माँगू?” वह बोली, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।”

25 वह तुरन्त राजा के पास भीतर आई, और उससे विनती की, “मैं चाहती हूँ, कि तू अभी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे मँगवा दे।”

26 तब राजा बहुत उदास हुआ, परन्तु अपनी शपथ के कारण और साथ बैठनेवालों के कारण उसे टालना न चाहा।

27 और राजा ने तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा, कि उसका सिर काट लाए।

28 उसने जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा, और एक थाल में रखकर लाया और लड़की को दिया, और लड़की ने अपनी माँ को दिया।

29 यह सुनकर उसके चले आए, और उसके शव को उठाकर कब्र में रखा।

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

30 प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर, जो कुछ उन्होंने किया, और सिखाया था, सब उसको बता दिया।

31 उसने उनसे कहा, “**तुम आप अलग किसी एकान्त स्थान में आकर थोड़ा विश्राम करो।**” क्योंकि बहुत लोग आते-जाते थे, और उन्हें खाने का अवसर भी नहीं मिलता था।

32 इसलिए वे नाव पर चढ़कर, सुनसान जगह में अलग चले गए।

33 और बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहचान लिया, और सब नगरों से इकट्ठे होकर वहाँ पैदल दौड़े और उनसे पहले जा पहुँचे।

34 उसने उतरकर बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिनका कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। (2 22:22, 18:16, 1 22:22, 22:17)

35 जब दिन बहुत ढल गया, तो उसके चले उसके पास आकर कहने लगे, “यह सुनसान जगह है, और दिन बहुत ढल गया है।

36 उन्हें विदा कर, कि चारों ओर के गाँवों और बस्तियों में जाकर, अपने लिये कुछ खाने को मोल लें।”

37 उसने उन्हें उत्तर दिया, “**तुम ही उन्हें खाने को दो।**” उन्होंने उससे कहा, “क्या हम दो सौ दीनार की रोटियाँ मोल लें, और उन्हें खिलाएँ?”

38 उसने उनसे कहा, “**जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?**” उन्होंने मालूम करके कहा, “पाँच रोटी और दो मछली भी।”

39 तब उसने उन्हें आज्ञा दी, कि सब को हरी घास पर समूह में बैठा दो।

40 वे सौ-सौ और पचास-पचास करके समूह में बैठ गए।

41 और उसने उन पाँच रोटियों को और दो मछलियों को लिया, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया, कि वे लोगों को परोसें, और वे दो मछलियाँ भी उन सब में बाँट दीं।

42 और सब खाकर तृप्त हो गए,

43 और उन्होंने टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाई, और कुछ मछलियों से भी।

44 जिन्होंने रोटियाँ खाई, वे पाँच हजार पुरुष थे।

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

45 तब उसने तुरन्त अपने चेलों को विवश किया कि वे नाव पर चढ़कर उससे पहले उस पार बैतसैदा को चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को विदा करे।

46 और उन्हें विदा करके पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया।

47 और जब साँझ हुई, तो नाव झील के बीच में थी, और वह अकेला भूमि पर था।

48 और जब उसने देखा, कि वे खेते-खेते घबरा गए हैं, क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी, तो रात के चौथे पहर के निकट वह झील पर चलते हुए उनके पास आया; और उनसे आगे निकल जाना चाहता था।

49 परन्तु उन्होंने उसे झील पर चलते देखकर समझा, कि भूत है, और चिल्ला उठे,

50 क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गए थे। पर उसने तुरन्त उनसे बातें की और कहा, “**धैर्य रखो: मैं हूँ; डरो मत।**”

51 तब वह उनके पास नाव पर आया, और हवा थम गई: वे बहुत ही आश्चर्य करने लगे।

52 क्योंकि वे उन रोटियों के विषय में न समझे थे परन्तु उनके मन कठोर हो गए थे।

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

53 और वे पार उतरकर गन्नेसरत में पहुँचे, और नाव घाट पर लगाई।

54 और जब वे नाव पर से उतरे, तो लोग तुरन्त उसको पहचानकर,

55 आस-पास के सारे देश में दौड़े, और बीमारों को खाटों पर डालकर, जहाँ-जहाँ समाचार पाया कि वह है, वहाँ-वहाँ लिए फिर।

56 और जहाँ कहीं वह गाँवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उससे विनती करते थे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आँचल ही को छू लेने दे: और जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे।

## 7

22222222 22 22222

1 तब फरीसी और कुछ शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठे हुए,

2 और उन्होंने उसके कई चेलों को अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा।

3 (क्योंकि फरीसी और सब यहूदी, प्राचीन परम्परा का पालन करते हैं और जब तक भली भाँति हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते;

4 और बाजार से आकर, जब तक स्नान नहीं कर लेते, तब तक नहीं खाते; और बहुत सी अन्य बातें हैं, जो उनके पास मानने के लिये पहुँचाई गई हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और तांबे के बरतनों को धोना-माँजना।)

5 इसलिए उन फरीसियों और शास्त्रियों ने उससे पूछा, “तेरे चले क्यों पूर्वजों की परम्पराओं पर नहीं चलते, और बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?”

6 उसने उनसे कहा, “यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में बहुत ठीक भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है:

ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं,  
पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।(222. 29:13)

7 और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,  
क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके  
सिखाते हैं।(222. 29:13)

8 क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।”

9 और उसने उनसे कहा, “तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो!

10 क्योंकि मूसा ने कहा है, ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर कर;’ और ‘जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह अवश्य मार डाला जाए।’(222222. 20:12, 22222. 5:16)

\* 7:11 2222222: यह इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ “वह जो पास लाया गया” “परमेश्वर के लिए एक उपहार या भेंट।”

11 परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, ‘जो कुछ तुझे मुझसे लाभ पहुँच सकता था, वह 22222222\* अर्थात् संकल्प हो चुका।’

12 “तो तुम उसको उसके पिता या उसकी माता की कुछ सेवा करने नहीं देते।

13 इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे-ऐसे बहुत से काम करते हो।”

22222222 22 2222222 2222222222 222222

14 और उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम सब मेरी सुनो, और समझो।

15 ऐसी तो कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं।

16 यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।”

17 जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उससे पूछा।

18 उसने उनसे कहा, “क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती?”

19 क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और शौच में निकल जाती है?” यह कहकर उसने सब भोजनवस्तुओं को शुद्ध ठहराया।

20 फिर उसने कहा, “जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।

21 क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरे-बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन,

22 लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं।

23 ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।”

22222222222222 22222 22 22222222 22 22222222

24 फिर वह वहाँ से उठकर सोर और सीदोन के देशों में आया; और एक घर में गया, और चाहता था, कि कोई न जाने; परन्तु वह छिप न सका।

25 और तुरन्त एक स्त्री जिसकी छोटी बेटा में अशुद्ध आत्मा थी, उसकी चर्चा सुनकर आई, और उसके पाँवों पर गिरी।

26 यह यूनानी और सुरूफिनीकी जाति की थी; और उसने उससे विनती की, कि मेरी बेटा में से दुष्टात्मा निकाल दे।

27 उसने उससे कहा, “पहले लडकों को तृप्त होने दे, क्योंकि लडकों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं है।”

28 उसने उसको उत्तर दिया; “सच है प्रभु; फिर भी कुत्ते भी तो मेज के नीचे बालकों की रोटी के चूर चार खा लेते हैं।”

29 उसने उससे कहा, “इस बात के कारण चली जा; दुष्टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है।”

30 और उसने अपने घर आकर देखा कि लडकी खाट पर पडी है, और दुष्टात्मा निकल गई है।

31 फिर वह सोर और सीदोन के देशों से निकलकर दिकापुलिस देश से होता हुआ गलील की झील पर पहुँचा।

32 और लोगों ने एक बहरे को जो हक्ला भी था, उसके पास लाकर उससे विनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे।

33 तब वह उसको भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डाली, और थूककर उसकी जीभ को छुआ।

34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उससे कहा, “इप्फत्तह!” अर्थात् “खुल जा!”

35 और उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की गाँठ भी खुल गई, और वह साफ-साफ बोलने लगा।

36 तब उसने उन्हें चेतावनी दी कि किसी से न कहना; परन्तु जितना उसने उन्हें चिताया उतना ही वे और प्रचार करने लगे।

37 और वे बहुत ही आश्चर्य में होकर कहने लगे, “उसने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहरों को सुनने की, और गूँगों को बोलने की शक्ति देता है।”

## 8

1 उन दिनों में, जब फिर बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा,

2 “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं, और उनके पास कुछ भी खाने को नहीं।

3 यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूँ, तो मार्ग में थककर रह जाएँगे; क्योंकि इनमें से कोई-कोई दूर से आए हैं।”

4 उसके चेलों ने उसको उत्तर दिया, “यहाँ जंगल में इतनी रोटी कोई कहाँ से लाए कि ये तृप्त हों?”

5 उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।”

6 तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने चेलों को देता गया कि उनके आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे परोस दिया।

7 उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ भी थीं; और उसने धन्यवाद करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा दी।

8 अतः वे खाकर तृप्त हो गए और शेष टुकड़ों के सात टोकरे भरकर उठाए।

9 और लोग चार हजार के लगभग थे, और उसने उनको विदा किया।

10 और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़कर दलमनूता देश को चला गया।

11 फिर फरीसी आकर उससे वाद-विवाद करने लगे, और उसे जाँचने के लिये उससे कोई स्वर्गीय चिन्ह माँगा।

12 उसने अपनी आत्मा में भरकर कहा, “इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूँढते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।”

13 और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया, और पार चला गया।

14 और वे रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उनके पास एक ही रोटी थी।

15 और उसने उन्हें चेतावनी दी, “देखो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से सावधान रहो।”

16 वे आपस में विचार करके कहने लगे, “हमारे पास तो रोटी नहीं है।”

17 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, “तुम क्यों आपस में विचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते? क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है?”

18 क्या आँखें रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और तुम्हें स्मरण नहीं?

19 कि जब मैंने पाँच हजार के लिये पाँच रोटी तोड़ी थीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियाँ भरकर उठाईं?” उन्होंने उससे कहा, “बारह टोकरियाँ।”

20 उसने उनसे कहा, “और जब चार हजार के लिए सात रोटियाँ थीं तो तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे?” उन्होंने उससे कहा, “सात टोकरे।”

21 उसने उनसे कहा, “क्या तुम अब तक नहीं समझते?”



22 और वे बैतसैदा में आए; और लोग एक अंधे को

उसके पास ले आए और उससे विनती की कि उसको छुए।

23 वह उस अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव के बाहर ले गया। और उसकी आँखों में थूककर उस पर हाथ रखे, और उससे पूछा, “क्या तू कुछ देखता है?”

24 उसने आँख उठाकर कहा, “मैं मनुष्यों को देखता हूँ; क्योंकि वे मुझे चलते हुए दिखाई देते हैं, जैसे पेड़।”

25 तब उसने फिर दोबारा उसकी आँखों पर हाथ रखे, और उसने ध्यान से देखा। और चंगा हो गया, और सब कुछ साफ-साफ देखने लगा।

26 और उसने उसे यह कहकर घर भेजा, “इस गाँव के भीतर पाँव भी न रखना।”

27 यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गाँवों में चले गए; और मार्ग में उसने अपने चेलों से पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?”

28 उन्होंने उत्तर दिया, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई-कोई, एलिय्याह; और कोई-कोई, भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी कहते हैं।”

29 उसने उनसे पूछा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने उसको उत्तर दिया, “तू मसीह है।”

30 तब उसने उन्हें चिताकर कहा कि “मेरे विषय में यह किसी से न कहना।”

31 और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे।

32 उसने यह बात उनसे साफ-साफ कह दी। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर डाँटने लगा।

33 परन्तु उसने फिरकर, और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को डाँटकर कहा, “हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।”

34 उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर

उसके कहा, “जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने

\* 8:38 ... परमेश्वर से अपनी निजी उपस्थिति और कमी के कारण और उनके वचनों, सिद्धान्तों और निर्देशों से लजाना। \* 9:4 मत्ती 17: 3 की टिप्पणी देखें।

आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।

35 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।

36 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?

37 और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?

38 \* , मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उससे भी लजाएगा।”

## 9

1 और उसने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ,

कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आता हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।”

2 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया; और उनके सामने उसका रूप बदल गया।

3 और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक अति उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता।

4 और उन्हें \* दिखाई दिया; और वे यीशु के साथ बातें करते थे।

5 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, “हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है: इसलिए हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।”

6 क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिए कि वे बहुत डर गए थे।

7 तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो।” (2 1:17, 2:7)

8 तब उन्होंने एकाएक चारों ओर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा।

9 पहाड़ से उतरते हुए, उसने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुआओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना।

10 उन्होंने इस बात को स्मरण रखा; और आपस में वाद-विवाद करने लगे, “मरे हुआँ में से जी उठने का क्या अर्थ है?”

11 और उन्होंने उससे पूछा, “शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?”

12 उसने उन्हें उत्तर दिया, “एलिय्याह सचमुच पहले आकर सब कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है, कि वह बहुत दुःख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा?”

13 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।”

?????????? ?? ????????

14 और जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे हैं।

15 और उसे देखते ही सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उसकी ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया।

16 उसने उनसे पूछा, “तुम इनसे क्या विवाद कर रहे हो?”

17 भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, “हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूँगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था।

18 जहाँ कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है; और वह मुँह में फेन भर लाता, और दाँत पीसता, और सूखता जाता है। और मैंने तेरे चेलों से कहा, कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके।”

19 यह सुनकर उसने उनसे उत्तर देके कहा, “हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।”

20 तब वे उसे उसके पास ले आए। और जब उसने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा, और वह भूमि पर गिरा, और मुँह से फेन बहाते हुए लोटने लगा।

21 उसने उसके पिता से पूछा, “इसकी यह दशा कब से है?” और उसने कहा, “बचपन से।

22 उसने इसे नाश करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया; परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।”

23 यीशु ने उससे कहा, “यदि तू कर सकता है! यह क्या बात है? विश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है।”

24 बालक के पिता ने तुरन्त पुकारकर कहा, “हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ; मेरे अविश्वास का उपाय कर।”

25 जब यीशु ने देखा, कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डाँटा, कि “हे गूँगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।”

26 तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत मरोड़कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहाँ तक कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर गया।

27 परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया।

28 जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उससे पूछा, “हम उसे क्यों न निकाल सके?”

29 उसने उनसे कहा, “यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती।”

????? ?? ?????? ??????? ?? ?????? ????

30 फिर वे वहाँ से चले, और गलील में होकर जा रहे थे, वह नहीं चाहता था कि कोई जाने,

31 क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उनसे कहता था, “मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा।”

32 पर यह बात उनकी समझ में नहीं आई, और वे उससे पूछने से डरते थे।

?????? ??? ?????? ?????? ??? ??????

33 फिर वे कफरनहूम में आए; और घर में आकर उसने उनसे पूछा, “रास्ते में तुम किस बात पर विवाद कर रहे थे?”

34 वे चुप रहे क्योंकि, मार्ग में उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद किया था, कि हम में से बड़ा कौन है?

35 तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया, और उनसे कहा, “यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने।”

36 और उसने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसको गोद में लेकर उनसे कहा,

37 “जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।”

38 तब यूहन्ना ने उससे कहा, “हे गुरु, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।”

39 यीशु ने कहा, “उसको मना मत करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य का काम करे, और आगे मेरी निन्दा करे,

40 क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है।

41 जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिए पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी तरह से न खोएगा।”

22:22 22 22:22:22 22 22:22 22:22  
22:22:22

42 “जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिये भला यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए।

43 यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं।

44 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।

45 और यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लँगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाए।

46 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती

47 और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।

48 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। (22:22. 66:24)

49 क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा।

50 नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो उसे किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।”

## 10

22:22:22 22 22:22:22 22 22:22:22 22 22:22:22

1 फिर वह वहाँ से उठकर यहूदिया के सीमा-क्षेत्र और यरदन के पार आया, और भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा।

2 तब 22:22:22:22:22\* ने उसके पास आकर उसकी परीक्षा करने को उससे पूछा, “क्या यह उचित है, कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे?”

3 उसने उनको उत्तर दिया, “मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?”

4 उन्होंने कहा, “मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।” (22:22:22. 24:1-3)

5 यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी।

6 पर सृष्टि के आरम्भ से, परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है। (22:22:22. 1:27, 22:22:22. 5:2)

7 इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा,

8 और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं, पर एक तन हैं। (22:22:22. 2:24)

9 इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।”

10 और घर में चेलों ने इसके विषय में उससे फिर पूछा।

11 उसने उनसे कहा, “जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है।

12 और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे, तो वह व्यभिचार करती है।”

22:22:22 22 22:22:22:22 22 22:22:22

13 फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; पर चेलों ने उनको डाँटा।

14 यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उनसे कहा, “बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।

15 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की तरह ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।”

16 और उसने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी।

22:22 22:22:22 22 22:22:22:22:22 22 22:22:22

17 और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, “हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?”

18 यीशु ने उससे कहा, “तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर।

19 तू आज्ञाओं को तो जानता है: ‘हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, 22 2 22:22:22,† अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।’” (22:22:22:22. 20:12-16, 22:22. 13:9)

\* 10:2 22:22:22:22:22: मत्ती 3:7 की टिप्पणी देखें। † 10:19 22 2 22:22:22: “भोखा देना”, जैसे पड़ोसी की सम्पत्ति का लालच करना।

20 उसने उससे कहा, “हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।”

21 यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, “तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर गरीबों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।”

22 इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

23 यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा, “धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!”

24 चले उसकी बातों से अचम्भित हुए। इस पर यीशु ने फिर उनसे कहा, “हे बालकों, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!”

25 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!”

26 वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे, “तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?”

27 यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।” (मरकुस 42:2, लुकास 1:37)

28 पतरस उससे कहने लगा, “देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।”

29 यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो,

30 और अब सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन।

31 पर बहुत सारे जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।”

मरकुस 10:20-22

32 और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उनके आगे-आगे जा रहा था: और चले अचम्भा करने लगे और जो उसके पीछे-पीछे चलते थे वे डरे हुए थे, तब वह फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो उस पर आनेवाली थीं।

‡ 10:30 मरकुस 10:20-22: इस जीवन में। समय के भीतर।

33 “देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको मृत्यु के योग्य ठहराएँगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेगे।

34 और वे उसका उपहास करेंगे, उस पर धूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे, और उसे मार डालेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

मरकुस 10:23-25

35 तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, “हे गुरु, हम चाहते हैं, कि जो कुछ हम तुझ से माँगे, वही तू हमारे लिये करे।”

36 उसने उनसे कहा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?”

37 उन्होंने उससे कहा, “हमें यह दे, कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे।”

38 यीशु ने उनसे कहा, “तुम नहीं जानते, कि क्या माँगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?”

39 उन्होंने उससे कहा, “हम से हो सकता है।” यीशु ने उनसे कहा, “जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगे।

40 पर जिनके लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दाहिने और अपने बाएँ बैठाना मेरा काम नहीं।”

41 यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे।

42 तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि जो अन्यजातियों के अधिपति समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं।

43 पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने;

44 और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने।

45 क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे।”

मरकुस 10:26-28

46 वे यरीहो में आए, और जब वह और उसके चले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तब तिमाई

का पुत्र बरतिमाई एक अंधा भिखारी, सड़क के किनारे बैठा था।

47 वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकारकर कहने लगा “हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर।”

48 बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, “हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।”

49 तब यीशु ने ठहरकर कहा, “उसे बुलाओ।” और लोगों ने उस अंधे को बुलाकर उससे कहा, “धैर्य रख, उठ, वह तुझे बुलाता है।”

50 वह अपना बाहरी वस्त्र फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया।

51 इस पर यीशु ने उससे कहा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?” अंधे ने उससे कहा, “हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ।”

52 यीशु ने उससे कहा, “चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।” और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया।

## 11

1 जब वे यरूशलेम के निकट, जैतून पहाड़ पर

11:1\* और बैतनिय्याह के पास आए, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा,

2 “सामने के गाँव में जाओ, और उसमें पहुँचते ही एक गदही का बच्चा, जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा, बंधा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोल लाओ।

3 यदि तुम से कोई पूछे, ‘यह क्यों करते हो?’ तो कहना, ‘प्रभु को इसका प्रयोजन है,’ और वह शीघ्र उसे यहाँ भेज देगा।”

4 उन्होंने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास चौक में बंधा हुआ पाया, और खोलने लगे।

5 उनमें से जो वहाँ खड़े थे, कोई-कोई कहने लगे “यह क्या करते हो, गदही के बच्चे को क्यों खोलते हो?”

6 चेलों ने जैसा यीशु ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया; तब उन्होंने उन्हें जाने दिया।

7 और उन्होंने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया।

8 और बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियाँ काट-काटकर कर फैला दीं।

9 और जो उसके आगे-आगे जाते और पीछे-पीछे चले आते थे, पुकार पुकारकर कहते जाते थे, “11:9†;”

\* 11:1 11:1: वह स्थान जहाँ से यीशु ने अपने चेलों को वह गदही और उसका बच्चा लाने के लिए कहा था। † 11:9 11:9: जिसका अर्थ है “बचाना, छुटकारा देना, उद्धारकर्ता” ‡ 11:21 11:21: मत्ती 23:7 की टिप्पणी देखें।

धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। (11:21:118:26)

10 हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है! आकाश में होशाना।” (11:21:23:39)

11 और वह यरूशलेम पहुँचकर मन्दिर में आया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह गया, क्योंकि साँझ हो गई थी।

12 दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उसको भूख लगी।

13 और वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया, कि क्या जाने उसमें कुछ पाए: पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न था।

14 इस पर उसने उससे कहा, “अब से कोई तेरा फल कभी न खाए।” और उसके चले सुन रहे थे।

15 फिर वे यरूशलेम में आए, और वह मन्दिर में गया; और वहाँ जो लेन-देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा, और सर्गियों की मेजें और कबूतर के बेचनेवालों की चौकियाँ उलट दीं।

16 और मन्दिर में से होकर किसी को बर्तन लेकर आने-जाने न दिया।

17 और उपदेश करके उनसे कहा,

“क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा? पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना दी है।” (19:46, 7:11)

18 यह सुनकर प्रधान याजक और शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूँढने लगे; क्योंकि उससे डरते थे, इसलिए कि सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे।

19 और साँझ होते ही वे नगर से बाहर चले गए।

20 फिर भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा।

21 पतरस को वह बात स्मरण आई, और उसने उससे कहा, “हे 11:9†, देख! यह अंजीर का पेड़ जिसे तूने श्राप दिया था सूख गया है।”

22 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “परमेश्वर पर विश्वास रखो।”

23 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, ‘तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,’ और अपने मन



१२१२१२१२१२१ २१ १२१२१ १२१ १२१२१२१

18 फिर १२१२१२१२१२१ ने भी, जो कहते हैं कि मरे हुआ का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उससे पूछा,

19 “हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए, और उसकी पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह कर ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। (१२१२१. 38:8, १२१२१. 25:5)

20 सात भाई थे। पहला भाई विवाह करके बिना सन्तान मर गया।

21 तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह कर लिया और बिना सन्तान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी।

22 और सातों से सन्तान न हुई। सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।

23 अतः जी उठने पर वह उनमें से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।”

24 यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ्य को?”

25 क्योंकि जब वे मरे हुआओं में से जी उठेंगे, तो उनमें विवाह-शादी न होगी; पर स्वर्ग में दूतों के समान होंगे।

26 मरे हुआओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने १२१२१ १२ १२१२१२१२१ में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने उससे कहा: ‘मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ?’

27 परमेश्वर मरे हुआओं का नहीं, वरन् जीवितों का परमेश्वर है, तुम बड़ी भूल में पड़े हो।”

१२१२१ १२१२१२

28 और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया, उससे पूछा, “सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?”

29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, “सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।

30 और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।”

31 और दूसरी यह है, ‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।’ इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।”

† 12:18 १२१२१२१२१२१: मत्ती 16:1 की टिप्पणी देखें ‡ 12:26 १२१२१ १२ १२१२१२१२१: पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तक पंचग्रंथ के रूप में जानी जाती हैं।

32 शास्त्री ने उससे कहा, “हे गुरु, बहुत ठीक! तूने सच कहा कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। (१२१२१. 45:18, १२१२१. 4:35)

33 “और उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना; और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबलियों और बलिदानों से बढ़कर है।” (१२१२१. 6:4,5, १२१२११२. 19:18, १२१२१ 6:6)

34 जब यीशु ने देखा कि उसने समझ से उत्तर दिया, तो उससे कहा, “तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं।” और किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ।

१२१२१ १२ १२१२१२१२१

35 फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यह कहा, “शास्त्री क्यों कहते हैं, कि मसीह दाऊद का पुत्र है?

36 दाऊद ने आप ही पवित्र आत्मा में होकर कहा है: ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों की चौकी न कर दूँ।”’ (१२१. 110:1)

37 “दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहाँ से ठहरा?” और भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे।

१२१२१ १२ १२१२१२१२१ १२१२१२१२१

38 उसने अपने उपदेश में उनसे कहा, “शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना और बाजारों में नमस्कार,

39 और आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन और भोज में मुख्य-मुख्य स्थान भी चाहते हैं।

40 वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएँगे।”

१२१२१२१ १२ १२१२१

41 और वह मन्दिर के भण्डार के सामने बैठकर देख रहा था कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं, और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला।

42 इतने में एक गरीब विधवा ने आकर दो दमडियाँ, जो एक अधेले के बराबर होती है, डाली।

43 तब उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस गरीब विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है;

44 क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।”

## 13

1 जब वह मन्दिर से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, देख, कैसे-कैसे पत्थर और कैसे-कैसे भवन हैं!”

2 यीशु ने उससे कहा, “क्या तुम ये बड़े-बड़े भवन देखते हो: यहाँ पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया न जाएगा।”

3 जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा,

4 “हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिन्ह होगा?”

5 यीशु उनसे कहने लगा, “**कि कोई तुम्हें न भ्रमाए।**

6 बहुत सारे मेरे नाम से आकर कहेंगे, ‘मैं वही हूँ’ और बहुतों को भ्रमाएँगे।

7 और जब तुम लडाइयाँ, और लडाइयों की चर्चा सुनो, तो न घबराना; क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।

8 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। और हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल पड़ेंगे। यह तो पीडाओं का आरम्भ ही होगा। **(6:24)**

9 “परन्तु तुम अपने विषय में सावधान रहो, क्योंकि लोग तुम्हें सभाओं में सौंपेंगे और तुम आराधनालयों में पीटे जाओगे, और मेरे कारण राज्यपालों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो।

10 पर अवश्य है कि पहले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए।

11 जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे। पर जो कुछ तुम्हें उसी समय बताया जाए, वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है।

12 और भाई को भाई, और पिता को पुत्र मरने के लिये सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। **(21:16, 7:6)**

13 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।

14 “अतः जब तुम उस **को** जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। **(9:27, 12:11)**

15 जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए।

16 और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।

17 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय! हाय!

18 और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो।

19 क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने रची है अब तक न तो हुए, और न कभी फिर होंगे। **(24:21)**

20 और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुएों के कारण जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया।

21 उस समय यदि कोई तुम से कहे, ‘देखो, मसीह यहाँ है!’ या ‘देखो, वहाँ है!’ तो विश्वास न करना।

22 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुएों को भी भ्रमा दें। **(24:24)**

23 पर तुम सावधान रहो देखो, मैंने तुम्हें सब बातें पहले ही से कह दी हैं।

24 “उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अंधेरा हो जाएगा, और चाँद प्रकाश न देगा;

25 और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। **(6:13, 34:4)**

26 “तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। **(7:13, 1:17)**

27 उस समय वह अपने **को** भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा। **(30:4, 24:31)**

\* 13:5 **मतलब चौकसी करना या सावधान रहना।** † 13:14 **यूनानी में “घृणा” शब्द का अर्थ है कोई बात जो घिनौनी है और “उजाड़” शब्द का अर्थ है इस हालत में निर्जन और तबाह हो जाना।** ‡ 13:27 **दैविक या स्वर्गीय प्राणी जो परमेश्वर के दूत के रूप में कार्य करते हैं।**



28 “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो जब उसकी डाली कोमल हो जाती; और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है।

29 इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है वरन् द्वार ही पर है।

30 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह लोग जाते न रहेंगे।

31 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। (22:2, 40:8, 22:22 21:33)

22:2 22:22 22:22

32 “उस दिन या उस समय के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।

33 देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।

34 यह उस मनुष्य के समान दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे: और हर एक को उसका काम जता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे।

35 इसलिए जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्गे के बाँग देने के समय या भोर को।

36 ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए।

37 और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ: जागते रहो।”

## 14

22:22 22 22:22 22 22:22 22:22 22:22

1 दो दिन के बाद 22:22\* और अखमीरी रोटी का पर्व होनेवाला था। और प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे छल से पकड़कर मार डालें।

2 परन्तु कहते थे, “पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा मचे।”

22:22 22 22:22 22:22

3 जब वह 22:22 22:22† में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामासी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला।

4 परन्तु कुछ लोग अपने मन में झुंझलाकर कहने लगे, “इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया?”

5 क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचकर गरीबों को बाँटा जा सकता था।” और वे उसको झिड़कने लगे।

\* 14:1 22:2 मत्ती 26:2 की टिप्पणी देखें। † 14:3 22:22 22:22: मत्ती 21:17 की टिप्पणी देखें।

6 यीशु ने कहा, “उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई की है।

7 गरीब तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा। (22:22. 15:11)

8 जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इत्र मला है।

9 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।”

22:22 22 22:22 22 22:22 22:22 22:22 22:22

10 तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया, कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे।

11 वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उसको रुपये देना स्वीकार किया, और यह अवसर ढूँढने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे।

22:22 22 22:22

12 अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे, उसके चेलों ने उससे पूछा, “तू कहाँ चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?” (22:22. 12:6, 22:22. 12:15)

13 उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, “नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना।

14 और वह जिस घर में जाए उस घर के स्वामी से कहना: ‘शुरु कहता है, कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है?’

15 वह तुम्हें एक सजी-सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहाँ हमारे लिये तैयारी करो।”

16 तब चले निकलकर नगर में आए और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया।

17 जब साँझ हुई, तो वह बारहों के साथ आया।

18 और जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।” (22. 41:9)

19 उन पर उदासी छा गई और वे एक-एक करके उससे कहने लगे, “क्या वह मैं हूँ?”

20 उसने उनसे कहा, “वह बारहों में से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है।

21 क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाथ जिसके

द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता तो उसके लिये भला होता।”

22 और जब वे खा ही रहे थे तो उसने रोटी ली, और आशीर्ष माँगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, “लो, यह मेरी देह है।”

23 फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उसमें से पीया।

24 और उसने उनसे कहा, “यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। (22:8, 9:11)

25 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ।”

26 फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए।

27 तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है:

मैं चरवाहे को मारूँगा,  
और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।”

28 “परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।”

29 पतरस ने उससे कहा, “यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा।”

30 यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही इसी रात को मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझसे मुकर जाएगा।”

31 पर उसने और भी जोर देकर कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े फिर भी तेरा इन्कार कभी न करूँगा।” इसी प्रकार और सब ने भी कहा।

32 फिर वे गतसमनी नामक एक जगह में आए; और उसने अपने चेलों से कहा, “यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूँ।”

33 और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया; और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा,

34 और उनसे कहा, “मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ: तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो।” (22:42:5)

35 और वह थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि यदि हो सके तो यह समय मुझ पर से टल जाए।

36 और कहा, “तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।”

37 फिर वह आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा, “हे शमौन, तू सो रहा है? क्या तू एक घंटे भी न जाग सका?”

38 जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।”

39 और वह फिर चला गया, और वही बात कहकर प्रार्थना की।

40 और फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं; और नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें।

41 फिर तीसरी बार आकर उनसे कहा, “अब सोते रहो और विश्राम करो, बस, घड़ी आ पहुँची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।

42 उठो, चलें! देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है!”

43 वह यह कह ही रहा था, कि यहूदा जो बारहों में से था, अपने साथ प्रधान याजकों और शास्त्रियों और प्राचीनों की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारों और लाठियाँ लिए हुए तुरन्त आ पहुँची।

44 और उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था, कि जिसको मैं चूमूँ वही है, उसे पकड़कर सावधानी से ले जाना।

45 और वह आया, और तुरन्त उसके पास जाकर कहा, “हे रब्बी!” और उसको बहुत चूमा।

46 तब उन्होंने उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया।

47 उनमें से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खींचकर महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया।

48 यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम डाकू जानकर मुझे पकड़ने के लिये तलवारों और लाठियाँ लेकर निकले हो?”

49 मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था, और तब तुम ने मुझे न पकड़ा: परन्तु यह इसलिए हुआ है कि पवित्रशास्त्र की बातें पूरी हों।”

50 इस पर सब चले उसे छोड़कर भाग गए। (22:88:18)

51 और एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया; और लोगों ने उसे पकड़ा।

52 पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया।

‡ 14:36 22:22:22, 22:22:22: सीरिया की भाषा में इस शब्द, “अब्बा” का अर्थ है पिता।

११११ ११११११ ११ १११११

53 फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब प्रधान याजक और पुरनिए और शास्त्री उसके यहाँ इकट्ठे हो गए।

54 पतरस दूर ही दूर से उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक गया, और प्यादों के साथ बैठकर आग तापने लगा।

55 प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, पर न मिली।

56 क्योंकि बहुत से उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उनकी गवाही एक सी न थी।

57 तब कितनों ने उठकर उस पर यह झूठी गवाही दी,

58 “हमने इसे यह कहते सुना है ‘मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा, जो हाथ से न बना हो।’”

59 इस पर भी उनकी गवाही एक सी न निकली।

60 तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा; “तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?”

61 परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, “क्या तू उस परमधन्य का पुत्र मसीह है?”

62 यीशु ने कहा, “हाँ मैं हूँ:

और तुम मनुष्य के पुत्र को

सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे,

और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।” (१११११. 7:13, ११. 110:1)

63 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, “अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन है? (११११११ 26:65)

64 तुम ने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी क्या राय है?” उन सब ने कहा यह मृत्युदण्ड के योग्य है। (११११११. 24:16)

65 तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई उसका मुँह ढाँपने और उसे धूँसे मारने, और उससे कहने लगे, “भविष्यद्वाणी कर!” और पहरेदारों ने उसे पकड़कर थप्पड़ मारे।

११११ ११ १११११ १११११ ११ १११११

66 जब पतरस नीचे आँगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहाँ आई।

67 और पतरस को आग तापते देखकर उस पर टकटकी लगाकर देखा और कहने लगी, “तू भी तो उस नासरी यीशु के साथ था।”

68 वह मुकर गया, और कहा, “मैं तो नहीं जानता और नहीं समझता कि तू क्या कह रही है।” फिर वह बाहर डेवढी में गया; और मुर्गे ने बाँग दी।

69 वह दासी उसे देखकर उनसे जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी, कि “यह उनमें से एक है।”

70 परन्तु वह फिर मुकर गया। और थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे फिर पतरस से कहा, “निश्चय तू उनमें से एक है; क्योंकि तू गलीली भी है।”

71 तब वह स्वयं को कोसने और शपथ खाने लगा, “मैं उस मनुष्य को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता।”

72 तब तुरन्त दूसरी बार मुर्गे ने बाँग दी पतरस को यह बात जो यीशु ने उससे कही थी याद आई, “मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” वह इस बात को सोचकर फूट फूटकर रोने लगा।

## 15

११११११११ ११ १११११ ११ ११११११११

1 और भोर होते ही तुरन्त प्रधान याजकों, प्राचीनों, और शास्त्रियों ने वरन् सारी महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पिलातुस के हाथ सौंप दिया।

2 और पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” उसने उसको उत्तर दिया, “तू स्वयं ही कह रहा है।”

3 और प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे।

4 पिलातुस ने उससे फिर पूछा, “क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं?”

5 यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहाँ तक कि पिलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।

१११११ ११ ११११११११११११ ११ १११११११

6 वह उस पर्व में किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया करता था।

7 और बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी।

8 और भीड़ ऊपर जाकर उससे विनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये करता आया है वैसा ही कर।

9 पिलातुस ने उनको यह उत्तर दिया, “क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?”

10 क्योंकि वह जानता था, कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था।

11 परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे।

12 यह सुन पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, “तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?”

13 वे फिर चिल्लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा दे!”

14 पिलातुस ने उनसे कहा, “क्यों, इसने क्या बुराई की है?” परन्तु वे और भी चिल्लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा दे।”

15 तब पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

22:22 22 22:22:22

16 सिपाही उसे किले के भीतर आँगन में ले गए जो प्रीटोरियुम कहलाता है, और सारे सैनिक दल को बुला लाए।

17 और उन्होंने उसे बैंगनी वस्त्र पहनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा,

18 और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, “हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!”

19 वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे।

20 जब वे उसका उपहास कर चुके, तो उस पर से बैंगनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए।

22:22 22 22:22:22 22 22:22:22

21 सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य, जो गाँव से आ रहा था उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले।

22 और वे उसे 22:22:22 नामक जगह पर, जिसका अर्थ खोपड़ी का स्थान है, लाए।

23 और उसे गन्धरस मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उसने नहीं लिया।

24 तब उन्होंने उसको 22:22:22 और उसके कपड़ों पर चिट्टियाँ डालकर, कि किसको क्या मिले, उन्हें बाँट लिया। (22:22:22)

25 और एक पहर दिन चढ़ा था, जब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया।

26 और उसका दोषपत्र लिखकर उसके ऊपर लगा दिया गया कि “यहूदियों का राजा।”

27 उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए।

28 तब पवित्रशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ। (22:22:22: 53:12)

29 और मार्ग में जानेवाले सिर हिला-हिलाकर और यह कहकर उसकी निन्दा करते थे, “वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! (22:22:22: 22:7, 22:22:22: 109:25)

30 क्रूस पर से उतरकर अपने आपको बचा ले।”

31 इसी तरह से प्रधान याजक भी, शास्त्रियों समेत, आपस में उपहास करके कहते थे; “इसने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता।

32 इस्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें।” और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे।

22:22 22 22:22:22

33 और दोपहर होने पर सारे देश में अंधियारा छा गया, और तीसरे पहर तक रहा।

34 तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी?” जिसका अर्थ है, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

35 जो पास खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, “देखो, यह एलिय्याह को पुकारता है।”

36 और एक ने दौड़कर पनसोस्ता को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया, और कहा, “ठहर जाओ; देखें, एलिय्याह उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं।” (22:22:22: 69:21)

37 तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये।

38 और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।

39 जो सूबेदार उसके सामने खड़ा था, जब उसे यूँ चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उसने कहा, “सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था!”

40 कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं: उनमें मरियम मगदलीनी, और छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी थीं।

41 जब वह गलील में था तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवा-टहल किया करती थीं; और भी बहुत सी स्त्रियाँ थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं।

22:22 22 22:22:22 22:22 22:22:22 22 22:22:22

42 और जब संध्या हो गई, क्योंकि तैयारी का दिन था, जो सब्ब के एक दिन पहले होता है,

\* 15:22 22:22:22: मत्ती 27:33 की टिप्पणी को देखें। † 15:24 22:22:22 22 22:22:22: कील ठोक कर या बाँधकर किसी को मृत्यु के लिये क्रूस पर चढ़ाया जाना, विशेष रूप से प्राचीनकाल में सजा के रूप में दिया जाता था।

43 अरिमतियाह का रहनेवाला [REDACTED] आया, जो प्रतिष्ठित मंत्री और आप भी परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा में था। वह साहस करके पिलातुस के पास गया और यीशु का शव माँगा।

44 पिलातुस ने आश्चर्य किया, कि वह इतना शीघ्र मर गया; और उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि “क्या उसको मरे हुए देर हुई?”

45 जब उसने सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो शव यूसुफ को दिला दिया।

46 तब उसने एक मलमल की चादर मोल ली, और शव को उतारकर उस चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो चट्टान में खोदी गई थी रखा, और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया।

47 और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहाँ रखा गया है।

## 16

[REDACTED]

1 जब सब्ब का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं, कि आकर उस पर मलें।

2 सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर, जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं,

3 और आपस में कहती थीं, “हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?”

4 जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है! वह बहुत ही बड़ा था।

5 और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं।

6 उसने उनसे कहा, “चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढती हो। वह जी उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था।

7 परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा; जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।”

8 और वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कँपकँपी और घबराहट उन पर छा गई थी। और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं।

[REDACTED]

‡ 15:43 [REDACTED]: एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो सम्भवतः यहूदियों के बीच एक उच्च पद पर, उनके महान परिषद में से एक, या एक यहूदी प्रवक्ता के रूप में था। \* 16:16 [REDACTED]: जो उसे सत्य मानता है और ऐसा व्यवहार करता है कि वो सत्य ही है।

9 सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठकर पहले-पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया।

10 उसने जाकर उसके साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया।

11 और उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, विश्वास नहीं किया।

[REDACTED]

12 इसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया।

13 उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनका भी विश्वास न किया।

[REDACTED]

14 पीछे वह उन ग्यारह चेलों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उसका विश्वास न किया था।

15 और उसने उनसे कहा, “तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।

16 [REDACTED]\* और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे; नई-नई भाषा बोलेंगे;

18 साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तो भी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।”

[REDACTED]

19 तब प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। (1 [REDACTED] 3:22)

20 और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।

## लूका रचित सुसमाचार

?????

प्राचीन लेखकों का एकमत से मानना है कि, इस पुस्तक का लेखक वैद्य लूका है, और अपनी इस पुस्तक के आधार पर वह द्वितीय पीढ़ी का मसीही विश्वासी प्रतीत होता है। परम्परा के अनुसार वह एक अन्यजाति विश्वासी था। मुख्यतः वह एक सुसमाचार प्रचारक था। उसने मसीह के शुभ सन्देश का वृत्तान्त एवं प्रेरितों के काम की पुस्तकें लिखी थीं। वह मसीही प्रचार कार्य में पौलुस का सहकर्मी भी रहा था (कुलु. 4:14, 2 तीमु. 4:11; 11:1)।

????? ????? ???? ????????

लगभग ई.स. 60 - 80

लूका ने इस पुस्तक को कैसरिया में लिखना आरम्भ किया और रोम में आकर उसे पूरा किया। लिखने के मुख्य स्थान बैतलहम, गलील, यहूदिया और यरूशलेम रहे होंगे।

????????

लूका द्वारा मसीह के शुभ सन्देश की यह पुस्तक थियुफिलुस को समर्पित है। थियुफिलुस का अर्थ है “परमेश्वर से प्रेम करनेवाला”। यह स्पष्ट नहीं है कि वह मसीही विश्वासी था या विश्वासी बनना चाहता था। यह तथ्य कि लूका उसे “अत्युत्तम” कहकर संबोधित करता है 1:3, यह सुझाव देता है कि वह एक रोमी उच्च पद का अधिकारी रहा होगा। अनेक प्रमाण अन्यजाति पाठकों की ओर संकेत करते हैं। उसकी प्रमुख अभिव्यक्तियाँ थीं, “मनुष्य का पुत्र” और “परमेश्वर का राज्य” (लूका 5:24; 19:10; 17:20-21; 13:18)।

????????????

यीशु के जीवन का वृत्तान्त लिखते हुए, लूका यीशु को “मनुष्य का पुत्र” कहता है। उसने थियुफिलुस को लिखा कि, जिन बातों की शिक्षा उसे दी गई है उनकी उचित समझ उसे प्राप्त हो (लूका 1:4)। लूका सताव के समय अपने लेखों द्वारा मसीही विश्वास की रक्षा कर रहा था कि थियुफिलुस को समझ प्राप्त हो कि यीशु के अनुयायियों में अनिष्ट या बुराई वाली कोई बात नहीं है।

???? ?????

यीशु- एक उत्तम व्यक्ति  
रूपरेखा

1. यीशु का जन्म एवं आरम्भिक जीवन — 1:5-2:52

2. यीशु की सेवा का आरम्भ — 3:1 - 4:13

3. उद्धार का कर्ता यीशु — 4:14-9:50

4. यीशु का क्रूस की ओर बढ़ना — 9:51-19:27

5. यरूशलेम में यीशु का विजय प्रवेश, क्रूसीकरण और पुनरुत्थान — 19:28-24:53

????? ?? ????????????

1 बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है।

2 जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुँचाया।

3 इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूँ,

4 कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं।

?????????? ?? ????????????

5 यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल में जकर्याह नाम का एक याजक था, और उसकी पत्नी हारून के वंश की थी, जिसका नाम एलीशिबा था।

6 और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलनेवाले थे।

7 उनके कोई सन्तान न थी, क्योंकि एलीशिबा बाँझ थी, और वे दोनों बूढ़े थे।

?????????????? ?????????? ?????????? ?? ??????

8 जब वह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के सामने याजक का काम करता था।

9 तो याजकों की रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए।

(????????? 30:7)

10 और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी।

11 कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया।

12 और जकर्याह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया।

13 परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, “हे जकर्याह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी एलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।

14 और तुझे आनन्द और हर्ष होगा और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे।



44 और देख जैसे ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा वैसे ही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा।

45 और धन्य है, वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गईं, वे पूरी होंगी।”

लूका 1:44-45

46 तब मरियम ने कहा,

“मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है।

47 और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। (1 लूका 2:1)

48 क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है;

इसलिए देखो, अब से सब युग-युग

के लोग मुझे धन्य कहेंगे। (1 लूका 1:11, लूका 1:42, लूका 3:12)

49 क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े-बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है।

50 और उसकी दया उन पर, जो उससे डरते हैं,

पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। (लूका 103:17)

51 उसने अपना भुजबल दिखाया, और जो अपने मन में घमण्ड करते थे, उन्हें तितर-बितर किया। (2 लूका 22:28, लूका 89:10)

52 उसने शासकों को सिंहासनों से गिरा दिया;

और दीनों को ऊँचा किया। (1 लूका 2:7, लूका 5:11, लूका 113:7,8)

53 उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया,

और धनवानों को खाली हाथ निकाल दिया। (1 लूका 2:5, लूका 107:9)

54 उसने अपने सेवक इस्राएल को सम्भाल लिया कि अपनी उस दया को स्मरण करे, (लूका 98:3, लूका 41:8,9)

55 जो अब्राहम और उसके वंश पर सदा रहेगी, जैसा उसने हमारे पूर्वजों से कहा था।” (लूका 22:17, लूका 7:20)

56 मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रहकर अपने घर लौट गई।

लूका 1:46-56

57 तब एलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ, और वह पुत्र जनी।

58 उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुनकर, कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, उसके साथ आनन्दित हुए।

‡ 1:69 लूका 1:69: सींग सामर्थ्य, महिमा, और शक्ति का एक प्रतीक है।

59 और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकर्याह रखने लगे। (लूका 17:12, लूका 12:3)

60 और उसकी माता ने उत्तर दिया, “नहीं; वरन् उसका नाम यूहन्ना रखा जाए।”

61 और उन्होंने उससे कहा, “तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं।”

62 तब उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पूछा कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है?

63 और उसने लिखने की पट्टी मँगवाकर लिख दिया, “उसका नाम यूहन्ना है,” और सभी ने अचम्भा किया।

64 तब उसका मुँह और जीभ तुरन्त खुल गई; और वह बोलने और परमेश्वर की स्तुति करने लगा।

65 और उसके आस-पास के सब रहनेवालों पर भय छा गया; और उन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई।

66 और सब सुननेवालों ने अपने-अपने मन में विचार करके कहा, “यह बालक कैसा होगा?” क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साथ था।

लूका 1:57-66

67 और उसका पिता जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्वानी करने लगा।

68 “प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की और उनका छुटकारा किया है, (लूका 111:9, लूका 41:13)

69 और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का लूका 132:17, लूका 30:9) निकाला, (लूका 132:17, लूका 30:9)

70 जैसे उसने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था,

71 अर्थात् हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है; (लूका 106:10)

72 कि हमारे पूर्वजों पर दया करके अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे,

73 और वह शपथ जो उसने हमारे पिता अब्राहम से खाई थी, (लूका 17:7, लूका 105:8,9)

74 कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छूटकर,

75 उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उसकी सेवा करते रहें।



76 और तू हे बालक, [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#),  
क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने  
के लिये उसके आगे-आगे चलेगा, [\(2:23. 3:1, 2:23. 40:3\)](#)

77 कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे,  
जो उनके पापों की क्षमा से प्राप्त होता है।

78 यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा;  
जिसके कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय  
होगा।

79 कि अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को  
ज्योति दे,  
और हमारे पाँवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।”  
[\(2:23. 58:8, 2:23. 60:1,2, 2:23. 9:2\)](#)

80 और वह बालक यूहन्ना, बढ़ता और आत्मा में  
बलवन्त होता गया और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन  
तक जंगलों में रहा।

## 2

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

1 उन दिनों में औगुस्तस कैसर की ओर से आज्ञा  
निकली, कि सारे रोमी साम्राज्य के लोगों के नाम लिखे  
जाएँ।

2 यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई, जब  
[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)\* सीरिया का राज्यपाल था।

3 और सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने-अपने  
नगर को गए।

4 अतः यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने  
और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में  
दाऊद के नगर बैतलहम को गया।

5 कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी  
नाम लिखवाए।

6 उनके वहाँ रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए।

7 और वह अपना पहलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े  
में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिये सराय में  
जगह न थी।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

8 और उस देश में कितने गडेरिये थे, जो रात को  
मैदानों में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे।

9 और परमेश्वर का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ;  
और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत  
डर गए।

10 तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, “मत डरो; क्योंकि  
देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ; जो  
सब लोगों के लिये होगा,

11 कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक  
उद्धारकर्ता जन्मा है, और वही मसीह प्रभु है।

12 और इसका तुम्हारे लिये यह चिन्ह है, कि तुम  
एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा  
पाओगे।”

13 तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का  
दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई  
दिया,

14 “आकाश में परमेश्वर की महिमा और  
पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।”

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

15 जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो  
गडेरियों ने आपस में कहा, “आओ, हम बैतलहम जाकर  
यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है,  
देखें।”

16 और उन्होंने तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को  
और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा।

17 इन्हें देखकर उन्होंने वह बात जो इस बालक के  
विषय में उनसे कही गई थी, प्रगट की।

18 और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो गडेरियों  
ने उनसे कहीं आश्चर्य किया।

19 परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर  
सोचती रही।

20 और गडेरिये जैसा उनसे कहा गया था, वैसा ही  
सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति  
करते हुए लौट गए।

[\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#)

21 जब आठ दिन पूरे हुए, और उसके खतने का  
समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, यह नाम  
स्वर्गदूत द्वारा, उसके गर्भ में आने से पहले दिया गया  
था। [\(2:23. 17:12, 2:23. 12:3\)](#)

22 और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार मरियम  
के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो यूसुफ और मरियम उसे  
यरूशलेम में ले गए, कि प्रभु के सामने लाएँ। [\(2:23. 2:23. 12:6\)](#)

23 जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है: “हर  
एक पहलौठा प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा।” [\(2:23. 2:23. 13:2,12\)](#)

§ 1:76 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#) [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#): वह मसीह और सुसमाचार का प्रचारक ही नहीं था, उसने मसीह के आने की भविष्यवाणी  
भी की थी \* 2:2 [\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]\[2\]](#): वह सीरिया का राज्यपाल था।

24 और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार, “पण्डुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे लाकर बलिदान करें।” (2:24)

25 उस समय यरूशलेम में शमौन नामक एक मनुष्य

था, और वह मनुष्य धर्मी और भक्त था; और इस्राएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था।

26 और पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट हुआ, कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न लेगा, तब तक मृत्यु को न देखेगा।

27 और वह आत्मा के सिखाने से मन्दिर में आया; और जब माता-पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए, कि उसके लिये व्यवस्था की रीति के अनुसार करें,

28 तो उसने उसे अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा:

29 “हे प्रभु, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा कर दे;

30 क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है।

31 जिसे तूने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है। (2:24)

32 कि वह अन्यजातियों को सत्य प्रकट करने के लिए एक ज्योति होगा,

और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो।” (2:24)

42:6, 2:24)

33 और उसका पिता और उसकी माता इन बातों से जो उसके विषय में कही जाती थीं, आश्चर्य करते थे।

34 तब शमौन ने उनको आशीष देकर, उसकी माता मरियम से कहा, “देख, वह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने, और उठने के लिये, और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया है, जिसके विरोध में बातें की जाएँगी (2:24)

35 (वरन् तेरा प्राण भी तलवार से आर-पार छिद जाएगा) इससे बहुत हृदयों के विचार प्रगट होंगे।”

2:24)

36 और आशेर के गोत्र में से हन्नाह नामक फनूएल की बेटा एक 2:24 थी: वह बहुत बूढ़ी थी, और विवाह होने के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह पाई थी।

37 वह चौरासी वर्ष की विधवा थी: और मन्दिर को नहीं छोड़ती थी पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी।

38 और वह उस घड़ी वहाँ आकर परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी, और उन सभी से, जो यरूशलेम के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके विषय में बातें करने लगी। (2:24)

2:24)

39 और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ निपटा चुके तो गलील में अपने नगर नासरत को फिर चले गए।

40 और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

2:24)

41 उसके माता-पिता प्रतिवर्ष फसह के पर्व में यरूशलेम को जाया करते थे। (2:24)

42 जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए।

43 और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे, तो वह बालक यीशु यरूशलेम में रह गया; और यह उसके माता-पिता नहीं जानते थे।

44 वे यह समझकर, कि वह और यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए: और उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचान वालों में ढूँढने लगे।

45 पर जब नहीं मिला, तो ढूँढते-ढूँढते यरूशलेम को फिर लौट गए।

46 और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया।

47 और जितने उसकी सुन रहे थे, वे सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे।

48 तब वे उसे देखकर चकित हुए और उसकी माता ने उससे कहा, “हे पुत्र, तूने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूँढते थे।”

49 उसने उनसे कहा, “तुम मुझे क्यों ढूँढते थे? क्या नहीं जानते थे, कि 2:24 होना अवश्य है?”

50 परन्तु जो बात उसने उनसे कही, उन्होंने उसे नहीं समझा।

51 तब वह उनके साथ गया, और नासरत में आया, और उनके वश में रहा; और उसकी माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं।

† 2:36 2:24: स्त्री भविष्यद्वक्ता को दर्शाता है। ‡ 2:49 2:24 2:24 2:24 2:24 2:24: यीशु यहाँ पर उन लोगों को यह याद दिलाता है कि वह स्वर्ग से नीचे आया; और उसके सांसारिक माता-पिता से, एक उच्चतम पिता है।

52 और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया। (1 [2][2][2]. 2:26, [2][2][2]. 3:4)

### 3

[2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]

1 तिबिरियुस कैसर के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था, और गलील में हेरोदेस इतुरैया, और त्रखोनीतिस में, उसका भाई फिलिप्पुस, और अबिलेने में लिसानियास चौथाई के राजा थे।

2 और जब [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]\* थे, उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकर्याह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुँचा।

3 और वह यरदन के आस-पास के सारे प्रदेश में आकर, पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा।

4 जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है:

“जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि, ‘प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़के सीधी करो।

5 हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा।

6 और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।” ([2][2][2]. 40:3-5)

7 जो बड़ी भीड़ उससे बपतिस्मा लेने को निकलकर आती थी, उनसे वह कहता था, “हे साँप के बच्चों, तुम्हें किसने चेतावनी दी, कि आनेवाले क्रोध से भागो?

8 अतः मन फिराव के योग्य फल लाओ: और अपने-अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।

9 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।”

10 और लोगों ने उससे पूछा, “तो हम क्या करें?”

11 उसने उन्हें उतर दिया, “जिसके पास दो कुर्ते हों? वह उसके साथ जिसके पास नहीं हैं बाँट ले और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे।”

12 और चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उससे पूछा, “हे गुरु, हम क्या करें?”

13 उसने उनसे कहा, “जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उससे अधिक न लेना।”

14 और सिपाहियों ने भी उससे यह पूछा, “हम क्या करें?” उसने उनसे कहा, “किसी पर उपद्रव न करना, और न झूठा दोष लगाना, और अपनी मजदूरी पर सन्तोष करना।”

15 जब लोग आस लगाए हुए थे, और सब अपने-अपने मन में यूहन्ना के विषय में विचार कर रहे थे, कि क्या यही मसीह तो नहीं है।

16 तो यूहन्ना ने उन सब के उत्तर में कहा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है, जो मुझसे शक्तिशाली है; मैं तो इस योग्य भी नहीं, कि उसके जूतों का फीता खोल सकूँ, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

17 उसका सूप, उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; और गेहूँ को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा।”

18 अतः वह बहुत सी शिक्षा दे देकर लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा।

[2][2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2] [2][2][2][2][2]

19 परन्तु उसने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के विषय, और सब कुकर्मों के विषय में जो उसने किए थे, उलाहना दिया।

20 इसलिए हेरोदेस ने उन सबसे बढ़कर यह कुकर्म भी किया, कि यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया।

[2][2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2]

21 जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया, और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया।

22 और पवित्र आत्मा [2][2][2][2][2] [2][2][2] [2][2][2]† कबूतर के समान उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई “तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।”

[2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2]

23 जब यीशु आप उपदेश करने लगा, तो लगभग तीस वर्ष की आयु का था और (जैसा समझा जाता था) यूसुफ का पुत्र था; और वह एली का,

24 और वह मत्तात का, और वह लेवी का, और वह मलकी का, और वह यन्ना का, और वह यूसुफ का,

\* 3:2 [2][2][2] [2][2] [2][2][2] [2][2][2][2][2]: कैफा, हन्ना या हनन्याह का दामाद था और यह माना जाता है कि वे बारी-बारी से महायाजकीय कार्यभार को देखते थे। † 3:22 [2][2][2][2][2] [2][2] [2][2]: यह एक वास्तविक दिखाई देनेवाली उपस्थिति थी, और निःसंदेह लोगों द्वारा देखा गया था।





## 5

१११११ ११ ११११११ १११११

1 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह १११११११११ ११ ११११\* के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ।

2 कि उसने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखीं, और मछुए उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे।

3 उन नावों में से एक पर, जो शमौन की थी, चढ़कर, उसने उससे विनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा।

4 जब वह बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, **“गहरे में ले चल, और मछलियाँ पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।”**

5 शमौन ने उसको उत्तर दिया, “हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तो भी तेरे कहने से जाल डालूंगा।”

6 जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछलियाँ घेर लाए, और उनके जाल फटने लगे।

7 इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि आकर हमारी सहायता करो: और उन्होंने आकर, दोनों नाव यहाँ तक भर लीं कि वे डूबने लगीं।

8 यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पाँवों पर गिरा, और कहा, “हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ!”

9 क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उसके साथियों को बहुत अचम्भा हुआ;

10 और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ तब यीशु ने शमौन से कहा, **“मत डर, अब से तू मनुष्यों को जीविता पकड़ा करेगा।”**

11 और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

११११११ ११ ११११११ १११११ १११११

12 जब वह किसी नगर में था, तो वहाँ कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य आया, और वह यीशु को देखकर मुँह के बल गिरा, और विनती की, “हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”

13 उसने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, **“मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।”** और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा।

14 तब उसने उसे चिताया, **“किसी से न कह, परन्तु जा के अपने आपको याजक को दिखा, और अपने शुद्ध**

होने के विषय में जो कुछ मूसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो।” (११११११११. 14:2-32)

15 परन्तु उसकी चर्चा और भी फैलती गई, और बड़ी भीड़ उसकी सुनने के लिये और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिये इकट्ठी हुई।

16 परन्तु वह निर्जन स्थानों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था।

१११११ १११११११ १११११ ११ १११११ ११ १११११ ११ १११११

17 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहाँ बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गाँव से, और यरूशलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ्य उसके साथ थी।

18 और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो लकवे का रोगी था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के सामने रखने का उपाय ढूँढ़ रहे थे।

19 और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने छत पर चढ़कर और खपरैल हटाकर, उसे खाट समेत बीच में यीशु के सामने उतार दिया।

20 उसने उनका विश्वास देखकर उससे कहा, **“हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।”**

21 तब शास्त्री और फरीसी विवाद करने लगे, “यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड़ कौन पापों की क्षमा कर सकता है?”

22 यीशु ने उनके मन की बातें जानकर, उनसे कहा, **“तुम अपने मनों में क्या विवाद कर रहे हो?”**

23 सहज क्या है? क्या यह कहना, कि ‘तेरे पाप क्षमा हुए,’ या यह कहना कि ‘उठ और चल फिर?’

24 परन्तु इसलिए कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।” उसने उस लकवे के रोगी से कहा, **“मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।”**

25 वह तुरन्त उनके सामने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उस उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया।

26 तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, “आज हमने अनोखी बातें देखी हैं।”

११११११ ११ १११११११ १११११

27 और इसके बाद वह बाहर गया, और लेवी नाम एक चुंगी लेनेवाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, **“मेरे पीछे हो ले।”**

\* 5:1 १११११११११ ११ १११११: इसे गलील की झील, और तिबिरियास की झील भी कहा जाता है।

28 तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।

29 और लेवी ने अपने घर में उसके लिये एक

दिया; और चुंगी लेनेवालों की और अन्य लोगों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे एक बड़ी भीड़ थी।

30 और फरीसी और उनके शास्त्री उसके चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, “तुम चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?”

31 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “वैद्य भले चंगों के लिये

नहीं, परन्तु बीमारों के लिये अवश्य है।

32 मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूँ।”

33 और उन्होंने उससे कहा, “यूहन्ना के चेले तो बराबर उपवास रखते और प्रार्थना किया करते हैं, और वैसे ही फरीसियों के भी, परन्तु तेरे चेले तो खाते-पीते हैं।”

34 यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम बारातियों से जब तक दूल्हा उनके साथ रहे, उपवास करवा सकते हो?”

35 परन्तु वे दिन आएँगे, जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे।”

36 उसने एक और भी उनसे कहा: “कोई मनुष्य नये वस्त्र में से फाड़कर पुराने वस्त्र में पैबन्द नहीं लगाता, नहीं तो नया फट जाएगा और वह पैबन्द पुराने में मेल भी नहीं खाएगा।

37 और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएँगी।

38 परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिये।

39 कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।”

## 6

1 फिर सब्त के दिन वह खेतों में से होकर जा रहा था,

और उसके चेले बालें तोड़-तोड़कर, और खाते जाते थे। (23:25)

2 तब फरीसियों में से कुछ कहने लगे, “तुम वह काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं?”

3 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब वह और उसके साथी भूखे थे तो क्या किया?”

4 वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियाँ लेकर खाई, जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दी?” (24:5-9, 1 21:6)

5 और उसने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।”

6 और ऐसा हुआ कि किसी और सब्त के दिन को वह

आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा; और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका दाहिना हाथ सूखा था।

7 शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उसकी ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं।

8 परन्तु वह उनके विचार जानता था; इसलिए उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, “उठ, बीच में खड़ा हो।” वह उठ खड़ा हुआ।

9 यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से यह पूछता हूँ कि सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना; प्राण को बचाना या नाश करना?”

10 और उसने चारों ओर उन सभी को देखकर उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उसने ऐसा ही किया, और उसका हाथ फिर चंगा हो गया।

11 परन्तु वे आपे से बाहर होकर आपस में विवाद करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?

12 और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को

निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।

13 जब दिन हुआ, तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उनमें से बारह चुन लिए, और उनको प्रेरित कहा।

14 और वे ये हैं: शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा; और उसका भाई अन्द्रियास, और याकूब, और यूहन्ना, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै,

15 और मत्ती, और थोमा, और हलफर्डिस का पुत्र याकूब, और शमौन जो जेलोतेस कहलाता है,

16 और याकूब का बेटा यहूदा, और यहूदा इस्करियोती, जो उसका पकड़वानेवाला बना।

† 5:29 स्पष्ट रूप से यह भोज यीशु के लिए किया गया था और बहुत से कर वसूल करनेवालों के द्वारा भाग लिया गया था, मत्ती उन्हें प्रभु के साथ मिलाने और उन्हें अच्छा करने के उद्देश्य से एक साथ लाया था। ‡ 5:36 मत्ती 13:3 की टिप्पणी देखें। \* 6:1 वे भूसी से अनाज को अलग करने के लिए इसे अपने हाथों से मलते थे।

† 5:29 स्पष्ट रूप से यह भोज यीशु के लिए किया गया था और बहुत से कर वसूल करनेवालों के द्वारा भाग लिया गया था, मत्ती उन्हें प्रभु के साथ मिलाने और उन्हें अच्छा करने के उद्देश्य से एक साथ लाया था। ‡ 5:36 मत्ती 13:3 की टिप्पणी देखें। \* 6:1 वे भूसी से अनाज को अलग करने के लिए इसे अपने हाथों से मलते थे।

17 तब वह उनके साथ उतरकर चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उसके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया, और यरूशलेम, और सोर और सीदोन के समुद्र के किनारे से बहुत लोग,

18 जो उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये उसके पास आए थे, वहाँ थे। और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किए जाते थे।

19 और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर सब को चंगा करती थी।

¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶

20 तब उसने अपने चेलों की ओर देखकर कहा, “धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।

21 “धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो;

क्योंकि तृप्त किए जाओगे।

“धन्य हो तुम, जो अब रोते हो,

क्योंकि हँसोगे। (¶¶¶¶¶ 5:4,5, ¶¶. 126:5,6)

22 “धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के

कारण लोग तुम से बैर करेंगे,

और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे,

और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे।

23 “उस दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है। उनके पूर्वज भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी वैसा ही किया करते थे।

¶¶¶¶ ¶¶¶¶

24 “परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके।

25 “हाय तुम पर जो अब तृप्त हो,

क्योंकि भूखे होंगे।

“हाय, तुम पर; जो अब हँसते हो,

क्योंकि शोक करोगे और रोओगे।

26 “हाय, तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें,

क्योंकि उनके पूर्वज झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।

¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶

27 “परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूँ, कि ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶; ¶¶ ¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶ ¶¶¶¶, ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶ ¶¶¶¶†।

28 जो तुम्हें श्राप दे, उनको आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिये प्रार्थना करो।

29 जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे; और जो तेरी दोहर छीन ले, उसको कुर्ता लेने से भी न रोक।

30 जो कोई तुझ से माँगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उससे न माँग।

31 और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।

32 “यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं।

33 और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं।

34 और यदि तुम उसे उधार दो, जिनसे फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही फिर पाएँ।

35 वरन् अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो, और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। (¶¶¶¶¶. 25:35,36, ¶¶¶¶¶ 5:44,45)

36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।

¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶

37 “दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा।

38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा-दबाकर और हिला-हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।”

39 फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा: “क्या अंधा, अंधे को मार्ग बता सकता है? क्या दोनों गड्ढे में नहीं गिरेंगे?

40 चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

41 तू अपने भाई की आँख के तिनके को क्यों देखता है, और अपनी ही आँख का लट्टा तुझे नहीं सूझता?

42 और जब तू अपनी ही आँख का लट्टा नहीं देखता, तो अपने भाई से कैसे कह सकता है, हे भाई, ठहर जा

† 6:27 ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶; ... ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶; जो लोग तुम से नफरत करते हैं, उनसे नफरत नहीं लेकिन इसके विपरीत हमें उनसे सब प्रकार की भलाई करनी चाहिए। ‡ 6:42 ¶¶¶¶¶: मत्ती 6:2 की टिप्पणी देखें





18 और यूहन्ना को उसके चेलों ने इन सब बातों का समाचार दिया।

19 तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने के लिये भेजा, “क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की प्रतीक्षा करें?”

20 उन्होंने उसके पास आकर कहा, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की प्रतीक्षा करें?”

21 उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और पीडाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अंधों को आँखें दी।

22 और उसने उनसे कहा, “जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अंधे देखते हैं, लँगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, और मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। (2/2/2. 35:5,6, 2/2/2. 61:1)

23 धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।”

24 जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा, “तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को?”

25 तो तुम फिर क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहने हुए मनुष्य को? देखो, जो भडकीला वस्त्र पहनते, और सुख-विलास से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं।

26 तो फिर क्या देखने गए थे? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, वरन् भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को।

27 यह वही है, जिसके विषय में लिखा है:

देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे-आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा। (2/2/2. 3:1, 2/2/2. 40:3)

28 “मैं तुम से कहता हूँ, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उससे भी बड़ा है।”

29 और सब साधारण लोगों ने सुनकर और चुंगी लेनेवालों ने भी यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया।

30 पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उससे बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया।

31 “अतः मैं इस युग के लोगों की उपमा किस से दूँ कि वे किसके समान हैं?”

32 वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं, ‘हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजाई, और तुम न नाचे, हमने विलाप किया, और तुम न रोए!’

33 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता आया, और तुम कहते हो, उसमें दुष्टात्मा है।

34 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है; और तुम कहते हो, ‘देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों का और पापियों का मित्र।’

35 पर ज्ञान अपनी सब सन्तानों से सच्चा ठहराया गया है।”

2/2/2 2/2/2 2/2 2/2 2/2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2

36 फिर किसी फरीसी ने उससे विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; अतः वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।

37 वहाँ उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई।

38 और उसके पाँवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पाँवों को आँसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पाँव बार बार चूमकर उन पर इत्र मला।

39 यह देखकर, वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, “यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिन है।”

40 यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा, “हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।” वह बोला, “हे गुरु, कह।”

41 “किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पाँच सौ, और दूसरा पचास दीनार देनदार था।

42 जबकि उनके पास वापस लौटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। अतः उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?”

43 शमौन ने उत्तर दिया, “मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।” उसने उससे कहा, “तूने ठीक विचार किया है।”

44 और उस स्त्री की ओर फिरकर उसने शमौन से कहा, “क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तूने मेरे पाँव धोने के लिये पानी न दिया, पर इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगाए, और अपने बालों से पोंछा।” (2/2/2. 18:4)

45 तूने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूँ तब से इसने मेरे पाँवों का चूमना न छोड़ा।

46 तूने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र मला है। (23:5)

47 “इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ; कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।”

48 और उसने स्त्री से कहा, “तेरे पाप क्षमा हुए।”

49 तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?”

50 पर उसने स्त्री से कहा, “तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।”

## 8

23:27-28 23:29-30

1 इसके बाद वह नगर-नगर और गाँव-गाँव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा, और वे बारह उसके साथ थे,

2 और कुछ स्त्रियाँ भी जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं, और वे यह हैं 23:31-32 23:33-34\*, जिसमें से सात दुष्टात्माएँ निकली थीं,

3 और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह और बहुत सी और स्त्रियाँ, ये तो अपनी सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं।

23:35 23:36-37 23:38-39

4 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और नगर-नगर के लोग उसके पास चले आते थे, तो उसने दृष्टान्त में कहा:

5 “एक बोनेवाला बीज बोने निकला: बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा, और रौंदा गया, और आकाश के पक्षियों ने उसे चुग लिया।

6 और कुछ चट्टान पर गिरा, और उपजा, परन्तु नमी न मिलने से सूख गया।

7 कुछ झाड़ियों के बीच में गिरा, और झाड़ियों ने साथ-साथ बढ़कर उसे दबा लिया।

8 और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुणा फल लाया।” यह कहकर उसने ऊँचे शब्द से कहा, “जिसके सुनने के कान हों वह सुन लें।”

23:40-41 23:42-43

9 उसके चेलों ने उससे पूछा, “इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है?”

\* 8:2 23:44-45 23:46-47 23:48-49: उसके निवास के स्थान “मगदुला” के कारण ऐसे बुलाया जाता था। यह दक्षिण कफरनहूम के, गलील की झील पर स्थित था। † 8:16 23:50-51: यीशु ने लोगों को यह समझाने के लिए बताया; मेरा दृष्टान्त सच्चाई को छिपाने के लिए नहीं है, लेकिन यह और सही से प्रकट करने के लिए है।

10 उसने कहा, “तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है, इसलिए कि

वे देखते हुए भी न देखें,

और सुनते हुए भी न समझें।” (4:11, 23:52)

6:9,10

23:53 23:54-55 23:56-57 23:58-59

11 “दृष्टान्त का अर्थ यह है: बीज तो परमेश्वर का वचन है।

12 मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएँ।

13 चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं।

14 जो झाड़ियों में गिरा, यह वे हैं, जो सुनते हैं, पर आगे चलकर चिन्ता और धन और जीवन के सुख-विलास में फँस जाते हैं, और उनका फल नहीं पकता।

15 पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।

23:60 23:61-62

16 “कोई 23:63 23:64\* बर्तन से नहीं ढाँकता, और न खाट के नीचे रखता है, परन्तु दीवट पर रखता है, कि भीतर आनेवाले प्रकाश पाएँ।

17 कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो; और न कुछ गुप्त है, जो जाना न जाए, और प्रगट न हो।

18 इसलिए सावधान रहो, कि तुम किस रीति से सुनते हो? क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जिसे वह अपना समझता है।”

23:65 23:66-67 23:68-69

19 उसकी माता और उसके भाई पास आए, पर भीड़ के कारण उससे भेंट न कर सके।

20 और उससे कहा गया, “तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए तुझ से मिलना चाहते हैं।”

21 उसने उसके उत्तर में उनसे कहा, “मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।”

23:70 23:71-72 23:73-74 23:75-76

22 फिर एक दिन वह और उसके चले नाव पर चढ़े, और उसने उनसे कहा, **“आओ, झील के पार चलें।”** अतः उन्होंने नाव खोल दी।

23 पर जब नाव चल रही थी, तो वह सो गया: और झील पर आँधी आई, और नाव पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे।

24 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, **“स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैं।”** तब उसने उठकर आँधी को और पानी की लहरों को डाँटा और वे थम गए, और शान्त हो गया।

25 और उसने उनसे कहा, **“तुम्हारा विश्वास कहाँ था?”** पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, **“यह कौन है, जो आँधी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं?”**

?????????????????? ?? ?????? ?????????? ??????

26 फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुँचे, जो उस पार गलील के सामने है।

27 जब वह किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिसमें दुष्टात्माएँ थीं। और बहुत दिनों से न कपड़े पहनता था और न घर में रहता था वरन् कब्रों में रहा करता था।

28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके सामने गिरकर ऊँचे शब्द से कहा, **“हे परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु! मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दे।”**

29 क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिए कि वह उस पर बार बार प्रबल होती थी। और यद्यपि लोग उसे जंजीरों और बेड़ियों से बाँधते थे, तो भी वह बन्धनों को तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाएँ फिरती थी।

30 यीशु ने उससे पूछा, **“तेरा क्या नाम है?”** उसने कहा, **“सेना,”** क्योंकि बहुत दुष्टात्माएँ उसमें समा गई थीं।

31 और उन्होंने उससे विनती की, **“हमें अथाह गढ़े में जाने की आज्ञा न दे।”**

32 वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, अतः उन्होंने उससे विनती की, **“हमें उनमें समाने दे।”** अतः उसने उन्हें जाने दिया।

33 तब दुष्टात्माएँ उस मनुष्य से निकलकर सूअरों में समा गईं और वह झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब मरा।

34 चरवाहे यह जो हुआ था देखकर भागे, और नगर में, और गाँवों में जाकर उसका समाचार कहा।

35 और लोग यह जो हुआ था उसको देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ निकली थीं, उसे यीशु के पाँवों के पास कपड़े पहने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए।

36 और देखनेवालों ने उनको बताया, कि वह दुष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य किस प्रकार अच्छा हुआ।

37 तब गिरासेनियों के आस-पास के सब लोगों ने यीशु से विनती की, कि हमारे यहाँ से चला जा; क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया था। अतः वह नाव पर चढ़कर लौट गया।

38 जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ निकली थीं वह उससे विनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा।

39 **“अपने घर में लौट जा और लोगों से कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं।”** वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए।

???????? ?????????? ?? ?????? ?????????? ??

40 जब यीशु लौट रहा था, तो लोग उससे आनन्द के साथ मिले; क्योंकि वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

41 और देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया, और यीशु के पाँवों पर गिरकर उससे विनती करने लगा, **“मेरे घर चल।”**

42 क्योंकि उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी, और वह मरने पर थी। जब वह जा रहा था, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे।

43 और एक स्त्री ने जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था, और जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे व्यय कर चुकी थी और फिर भी किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी,

44 पीछे से आकर उसके वस्त्र के आँचल को छुआ, और तुरन्त उसका लहू बहना थम गया।

45 इस पर यीशु ने कहा, **“मुझे किसने छुआ?”** जब सब मुकरने लगे, तो पतरस और उसके साथियों ने कहा, **“हे स्वामी, तुझे तो भीड़ दबा रही है और तुझ पर गिरी पड़ती है।”**

46 परन्तु यीशु ने कहा, **“किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि मैंने जान लिया है कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है।”**

47 जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर सब लोगों के सामने बताया, कि मैंने किस कारण से तुझे छुआ, और कैसे तुरन्त चंगी हो गई।

48 उसने उससे कहा, **“पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से चली जा।”**

49 वह यह कह ही रहा था, कि किसी ने आराधनालय के सरदार के यहाँ से आकर कहा, **“तेरी बेटी मर गई: गुरु को दुःख न दे।”**

50 यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, **“मत डर; केवल विश्वास रख; तो वह [22 222222]‡”**

51 घर में आकर उसने पतरस, और यूहन्ना, और याकूब, और लड़की के माता-पिता को छोड़ और किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया।

52 और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उसने कहा, **“रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है।”**

53 वे यह जानकर, कि मर गई है, उसकी हँसी करने लगे।

54 परन्तु उसने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, **“हे लड़की उठ!”**

55 तब उसके प्राण लौट आए और वह तुरन्त उठी; फिर उसने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।

56 उसके माता-पिता चकित हुए, परन्तु उसने उन्हें चेतावनी दी, कि यह जो हुआ है, किसी से न कहना।

## 9

[2222 22222222 22 2222 2222]

1 फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया।

2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बीमारों को अच्छा करने के लिये भेजा।

3 और उसने उनसे कहा, **“मार्ग के लिये कुछ न लेना: न तो लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपये और न दो-दो कुर्ते।”**

4 और जिस किसी घर में तुम उतरो, वहीं रहो; और वहीं से विदा हो।

5 जो कोई तुम्हें ग्रहण न करेगा उस नगर से निकलते हुए अपने पाँवों की धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो।”

6 अतः वे निकलकर गाँव-गाँव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे।

[22222222 22 22222222]

7 और देश की चौथाई का राजा हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया, क्योंकि कितनों ने कहा, कि यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है।

‡ 8:50 [22 222222]: वह पहले से ही चंगी हो गई थी: लेकिन उसे प्रोत्साहन के लिये एक आवश्यक वादा, शामिल है कि उनके उपद्रव से उसे और अधिक दुःख नहीं होना चाहिए। \* 9:10 [22222222]: यरदन नदी के पूर्वी तट पर एक नगर, जहाँ से नदी तिबिरियास के झील में प्रवेश करती है।

† 9:20 [2222222222 22 2222]: परमेश्वर का “अभिषिक्त”। परमेश्वर की ओर से नियुक्त “मसीह”।

8 और कितनों ने यह, कि एलिय्याह दिखाई दिया है: औरों ने यह, कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।

9 परन्तु हेरोदेस ने कहा, **“यूहन्ना का तो मैंने सिर कटवाया अब यह कौन है, जिसके विषय में ऐसी बातें सुनता हूँ?”** और उसने उसे देखने की इच्छा की।

[22222 22222 222222 22 22222222]

10 फिर प्रेरितों ने लौटकर जो कुछ उन्होंने किया था, उसको बता दिया, और वह उन्हें अलग करके [2222222222]\* नामक एक नगर को ले गया।

11 यह जानकर भीड़ उसके पीछे हो ली, और वह आनन्द के साथ उनसे मिला, और उनसे परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा, और जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया।

12 जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने आकर उससे कहा, **“भीड़ को विदा कर, कि चारों ओर के गाँवों और बस्तियों में जाकर अपने लिए रहने को स्थान, और भोजन का उपाय करें, क्योंकि हम यहाँ सुनसान जगह में हैं।”**

13 उसने उनसे कहा, **“तुम ही उन्हें खाने को दो।”** उन्होंने कहा, **“हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं; परन्तु हाँ, यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लें, तो हो सकता है।”**

14 (क्योंकि वहाँ पर लगभग पाँच हजार पुरुष थे।) और उसने अपने चेलों से कहा, **“उन्हें पचास-पचास करके पाँति में बैठा दो।”**

15 उन्होंने ऐसा ही किया, और सब को बैठा दिया।

16 तब उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों को परोसें।

17 अतः सब खाकर तृप्त हुए, और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाई। (2 [222222] 4:44)

[22222 22 22222 22 22222 2222222222]

18 जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था, और चले उसके साथ थे, तो उसने उनसे पूछा, **“लोग मुझे क्या कहते हैं?”**

19 उन्होंने उत्तर दिया, **“यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, और कोई-कोई एलिय्याह, और कोई यह कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।”**

20 उसने उनसे पूछा, **“परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?”** पतरस ने उत्तर दिया, **“[2222222222] [22 222222]”**

21 तब उसने उन्हें चेतावनी देकर कहा, “यह किसी से न कहना।”

22 और उसने कहा, “मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे।”

23 उसने सबसे कहा, “यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।

24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।

25 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या उसकी हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?

26 जो कोई मुझसे और मेरी बातों से लजाएगा; मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र स्वर्गदूतों की, महिमा सहित आएगा, तो उससे लजाएगा।

27 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।”

28 इन बातों के कोई आठ दिन बाद वह पतरस, और यूहन्ना, और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर गया।

29 जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा।

30 तब, मूसा और ~~एलिय्याह~~, ये दो पुरुष उसके साथ बातें कर रहे थे।

31 ये महिमा सहित दिखाई दिए, और उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था।

32 पतरस और उसके साथी नींद से भरे थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उसकी महिमा; और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे, देखा।

33 जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीशु से कहा, “हे स्वामी, हमारा यहाँ रहना भला है: अतः हम तीन मण्डप बनाएँ, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।” वह जानता न था, कि क्या कह रहा है।

‡ 9:30 ~~एलिय्याह~~: मत्ती 17:3 की टिप्पणी देखें।

34 वह यह कह ही रहा था, कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया, और जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर गए।

35 और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा पुत्र और मेरा चुना हुआ है, इसकी सुनो।” (21:22. 42:1)

36 यह शब्द होते ही यीशु अकेला पाया गया; और वे चुप रहे, और जो कुछ देखा था, उसकी कोई बात उन दिनों में किसी से न कही।

37 और दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उससे आ मिली।

38 तब, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्लाकर कहा, “हे गुरु, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर; क्योंकि वह मेरा एकलौता है।

39 और देख, एक दुष्टात्मा उसे पकड़ती है, और वह एकाएक चिल्ला उठता है; और वह उसे ऐसा मरोड़ती है, कि वह मुँह में फेन भर लाता है; और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ती है।

40 और मैंने तेरे चेलों से विनती की, कि उसे निकालें; परन्तु वे न निकाल सके।”

41 यीशु ने उत्तर दिया, “हे अविश्वासी और हठीले लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा, और तुम्हारी सहूँगा? अपने पुत्र को यहाँ ले आ।”

42 वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ा, परन्तु यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डाँटा और लड़के को अच्छा करके उसके पिता को सौंप दिया।

43 तब सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ्य से चकित हुए। परन्तु जब सब लोग उन सब कामों से जो वह करता था, अचम्भा कर रहे थे, तो उसने अपने चेलों से कहा,

44 “ये बातें तुम्हारे कानों में पड़ी रहें, क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाने को है।”

45 परन्तु वे इस बात को न समझते थे, और यह उनसे छिपी रही; कि वे उसे जानने न पाएँ, और वे इस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे।

46 फिर उनमें यह विवाद होने लगा, कि हम में से बड़ा कौन है?

47 पर यीशु ने उनके मन का विचार जान लिया, और एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया,

48 और उनसे कहा, “जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो

कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है, क्योंकि जो तुम में सबसे छोटे से छोटा है, वही बड़ा है।”

११ ११११११ १११ १११११, ११ १११११ १११ ११

49 तब यूहन्ना ने कहा, “हे स्वामी, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे पीछे नहीं हो लेता।”

50 यीशु ने उससे कहा, “उसे मना मत करो; क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।”

११११११११ ११ ११११११११

51 जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे, तो उसने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया।

52 और उसने अपने आगे दूत भेजे: वे सामरियों के एक गाँव में गए, कि उसके लिये जगह तैयार करें।

53 परन्तु १११ १११११११ १११ ११११ १११११११ १ १११११११, क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था।

54 यह देखकर उसके चले याकूब और यूहन्ना ने कहा, “हे प्रभु; क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे?”

55 परन्तु उसने फिरकर उन्हें डाँटा [और कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिये आया है।”]

56 और वे किसी और गाँव में चले गए।

११११११ ११ ११११११ ११११११ ११ ११११११

57 जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो किसी ने उससे कहा, “जहाँ-जहाँ तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूँगा।”

58 यीशु ने उससे कहा, “लोमडियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर रखने की भी जगह नहीं।”

59 उसने दूसरे से कहा, “मेरे पीछे हो ले।” उसने कहा, “हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ।”

60 उसने उससे कहा, “मेरे हुआँ को अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।”

61 एक और ने भी कहा, “हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा; पर पहले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊँ।” (1 ११११११. 19:20)

62 यीशु ने उससे कहा, “जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।”

## 10

११११११ ११११११ ११ १११११ १११११

1 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस-जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहाँ उन्हें दो-दो करके अपने आगे भेजा।

2 और उसने उनसे कहा, “पके खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे।

3 जाओ; देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ।

4 इसलिए न बटुआ, न झोली, न जूते लो; और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो। (१११११११ 10:9, 2 ११११११. 4:29)

5 जिस किसी घर में जाओ, पहले कहो, ‘इस घर पर कल्याण हो।’

6 यदि वहाँ कोई कल्याण के योग्य होगा; तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगा।

7 उसी घर में रहो, और जो कुछ उनसे मिले, वही खाओ-पीओ, क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए; घर-घर न फिरना।

8 और जिस नगर में जाओ, और वहाँ के लोग तुम्हें उतारें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ।

9 वहाँ के बीमारों को चंगा करो: और उनसे कहो, ‘परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।’

10 परन्तु जिस नगर में जाओ, और वहाँ के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसके बाजारों में जाकर कहो,

11 ‘तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पाँवों में लगी है, हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं, फिर भी यह जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।’

12 मैं तुम से कहता हूँ, कि उस दिन उस नगर की दशा से सदोम की दशा अधिक सहने योग्य होगी। (११११११. 19:24,25)

११ १११११ ११११११११ १११११११ ११ १११११

13 “हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सोर और सीदोन में किए जाते, तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते।

14 परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा अधिक सहने योग्य होगी। (१११११. 3:4-8, ११. 9:2-4)

§ 9:53 ११ ११११११ ११ ११११ ११११११ १ १११११: उन्होंने उसका स्वागत नहीं किया—उसके सत्कार करने पर विचार नहीं किया, या दयालुता के साथ उससे नहीं मिले।











२२२२ २२२ २२ २२२२२२ २२ २२२

22 फिर उसने अपने चेलों से कहा, “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, अपने जीवन की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएँगे; न अपने शरीर की, कि क्या पहनेंगे।

23 क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है।

24 कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उनके भण्डार और न खत्ता होता है; फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है (२२: 147:9)

25 तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?

26 इसलिए यदि तुम सबसे छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो?

27 सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न काटते हैं; फिर भी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में, उनमें से किसी एक के समान वस्त्र पहने हुए न था।

28 इसलिए यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भट्टी में झोंकी जाएगी, ऐसा पहनाता है; तो हे अल्पविश्वासियों, वह तुम्हें अधिक क्यों न पहनाएगा?

29 और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएँगे और क्या पीएँगे, और न सन्देह करो।

30 क्योंकि संसार की जातियाँ इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।

31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।

२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२२२?

32 “हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

33 २२२२ २२२२२२२२ २२२२२२‡दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं, जिसके निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नाश नहीं करता।

34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

२२२ २२२२२ २२२

35 “तुम्हारी कमर बंधी रहें, और तुम्हारे दीये जलते रहें (२२:२२२. 12:11, 2 २२२२. 4:29, २२२. 6:14, २२२२२ 5:16)

36 और तुम उन मनुष्यों के समान बनो, जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा कर रहे हों, कि वह विवाह से कब लौटेगा; कि जब वह आकर द्वार खटखटाएँ तो तुरन्त उसके लिए खोल दें।

37 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह कमर बाँधकर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उनकी सेवा करेगा।

38 यदि वह रात के दूसरे पहर या तीसरे पहर में आकर उन्हें जागते पाए, तो वे दास धन्य हैं।

39 परन्तु तुम यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता, कि चोर किस घड़ी आएगा, तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने न देता।

40 तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उस घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।”

२२२२२२२२२२२२ २२२२ २२२?

41 तब पतरस ने कहा, “हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या सबसे कहता है।”

42 प्रभु ने कहा, “वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन सामग्री दे।

43 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।

44 मैं तुम से सच कहता हूँ; वह उसे अपनी सब सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा।

45 परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने-पीटने और खाने-पीने और पियक्कड़ होने लगे।

46 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन, जब वह उसकी प्रतीक्षा न कर रहा हो, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो, आएगा और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग विश्वासघाती के साथ ठहराएगा।

47 और २२ २२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२ २२‡, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा।

48 परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा।

† 12:33 २२२२ २२२२२२२२ २२२२२२: अपनी सम्पत्ति बेचकर ऐसी वस्तु में बदल लें, जो दान वितरण में इस्तेमाल किया जा सके। ‡ 12:47 २२ २२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२ २२: वह परमेश्वर की आज्ञाओं और आवश्यकताओं को जानता है कि क्या हैं, को संदर्भित करता है



15 यह सुनकर प्रभु ने उत्तर देकर कहा, “हे कपटियों, क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?”

16 और क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है, जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बाँध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?”

17 जब उसने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था, आनन्दित हुई।

2222 22 2222 22 22222 22 2222222222

18 फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य किसके समान है? और मैं उसकी उपमा किस से दूँ?”

19 वह राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपनी बारी में बोया: और वह बढ़कर पेड़ हो गया; और आकाश के पक्षियों ने उसकी डालियों पर बसेरा किया।” (222222 13:31,32, 2222. 31:6, 22222. 4:21)

20 उसने फिर कहा, “मैं परमेश्वर के राज्य कि उपमा किस से दूँ?”

21 वह खमीर के समान है, जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया, और होते-होते सब आटा खमीर हो गया।”

2222 222222

22 वह नगर-नगर, और गाँव-गाँव होकर उपदेश देता हुआ यरूशलेम की ओर जा रहा था।

23 और किसी ने उससे पूछा, “हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं?” उसने उनसे कहा,

24 “सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।

25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, ‘हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे,’ और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहाँ के हो?”

26 तब तुम कहने लगोगे, ‘कि हमने तेरे सामने खाया-पीया और तूने हमारे बजारों में उपदेश दिया।’

27 परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूँ, मैं नहीं जानता तुम कहाँ से हो। हे कुकर्म करनेवालों, तुम सब मुझसे दूर हो।” (2222. 6:8)

28 वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा, जब तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आपको बाहर निकाले हुए देखोगे।

29 और पूर्व और पश्चिम; उत्तर और दक्षिण से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। (2222. 66:18, 222222. 7:9, 22. 107:3, 2222. 1:11)

30 यह जान लो, कितने पिछले हैं वे प्रथम होंगे, और कितने जो प्रथम हैं, वे पिछले होंगे।”

22222222 22 22222222

31 उसी घड़ी कितने फरीसियों ने आकर उससे कहा, “यहाँ से निकलकर चला जा; क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है।”

32 उसने उनसे कहा, “जाकर उस लोमड़ी से कह दो, कि देख मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बीमारों को चंगा करता हूँ और तीसरे दिन अपना कार्य पूरा करूँगा।

33 तो भी मुझे आज और कल और परसों चलना अवश्य है, क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर मारा जाए।

22222222 22 22222 222222

34 “हे यरूशलेम! हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पथराव करता है; कितनी ही बार मैंने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूँ, पर तुम ने यह न चाहा।

35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूँ; जब तक तुम न कहोगे, ‘धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है,’ तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।” (2222. 118:26, 2222222. 12:7)

## 14

22222 22 2222 2222222

1 फिर वह सब्त के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया: और वे उसकी घात में थे।

2 वहाँ एक मनुष्य उसके सामने था, जिसे 2222222 22 22222\* था।

3 इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा, “क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं?”

4 परन्तु वे चुपचाप रहे। तब उसने उसे हाथ लगाकर चंगा किया, और जाने दिया।

\* 14:2 222222 22 2222: शरीर के विभिन्न भागों में पानी के संचय के द्वारा उत्पादित एक रोग; बहुत ही चिंताजनक, और आमतौर पर असाध्य है।

5 और उनसे कहा, “तुम में से ऐसा कौन है, जिसका पुत्र या बैल कुएँ में गिर जाए और वह सप्ताह के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले?”

6 वे इन बातों का कुछ उत्तर न दे सके।

7

7 जब उसने देखा, कि आमन्त्रित लोग कैसे मुख्य-मुख्य जगह चुन लेते हैं तो एक दृष्टान्त देकर उनसे कहा,

8 “जब कोई तुझे विवाह में बुलाए, तो मुख्य जगह में न बैठना, कहीं ऐसा न हो, कि उसने तुझ से भी किसी बड़े को नेवता दिया हो।

9 और जिसने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है, आकर तुझ से कहे, ‘इसको जगह दे,’ और तब तुझे लज्जित होकर सबसे नीची जगह में बैठना पड़े।

10 पर जब तू बुलाया जाए, तो सबसे नीची जगह जा बैठ, कि जब वह, जिसने तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे ‘हे मित्र, आगे बढ़कर बैठ,’ तब तेरे साथ बैठनेवालों के सामने तेरी बड़ाई होगी। (लूका 25:6,7)

11 क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।”

12

12 तब उसने अपने नेवता देनेवाले से भी कहा, “जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो, कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला हो जाए।

13 परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लँगडों और अंधों को बुला।

14 तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे पर इसका प्रतिफल मिलेगा।”

15

15 उसके साथ भोजन करनेवालों में से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा, “धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा।”

16 उसने उससे कहा, “किसी मनुष्य ने बड़ा भोज दिया और बहुतों को बुलाया।

17 जब भोजन तैयार हो गया, तो उसने अपने दास के हाथ आमन्त्रित लोगों को कहला भेजा, ‘आओ; अब भोजन तैयार है।’

18 पर वे सब के सब क्षमा माँगने लगे, पहले ने उससे कहा, ‘मैंने खेत मोल लिया है, और अवश्य है कि उसे देखूँ; मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे क्षमा कर दे।’

19 दूसरे ने कहा, ‘मैंने पाँच जोड़े बैल मोल लिए हैं, और उन्हें परखने जा रहा हूँ; मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे क्षमा कर दे।’

20 एक और ने कहा, ‘मैंने विवाह किया है, इसलिए मैं नहीं आ सकता।’

21 उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें कह सुनाईं। तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा, ‘नगर के बाजारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लँगडों और अंधों को यहाँ ले आओ।’

22 दास ने फिर कहा, ‘हे स्वामी, जैसे तूने कहा था, वैसे ही किया गया है; फिर भी जगह है।’

23 स्वामी ने दास से कहा, ‘सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए।’

24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि

10:37, 12:25, 13:9

25 और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उसने पीछे फिरकर उनसे कहा।

26 “यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता; (लूका 10:37, 12:25, 13:9)

27 और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।

28 “तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं?

29 कहीं ऐसा न हो, कि जब नींव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसका उपहास करेंगे,

30 ‘यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका?’

31 या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, कि नहीं?

32 नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूत को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।

† 14:14 लूका 14:14: जब धर्मी या पवित्र मरे हुएों में से जी उठाया जाएगा। ‡ 14:24 लूका 14:24: जिसने जान बूझकर सुसमाचार को अस्वीकार किया उनमें से कोई भी उद्धार नहीं पाएगा।





२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२

25 “परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था। और जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तो उसने गाने-बजाने और नाचने का शब्द सुना।

26 और उसने एक दास को बुलाकर पूछा, ‘यह क्या हो रहा है?’

27 उसने उससे कहा, ‘तेरा भाई आया है, और तेरे पिता ने बड़ा भोज तैयार कराया है, क्योंकि उसे भला चंगा पाया है।’

28 “यह सुनकर वह क्रोध से भर गया और भीतर जाना न चाहा: परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा।

29 उसने पिता को उत्तर दिया, ‘देख; मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूँ, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, फिर भी तूने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।

30 परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तूने बड़ा भोज तैयार कराया।’

31 उसने उससे कहा, ‘पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और २२ २२२ २२२२ २२ २२ २२ २२२२ २२ २२#।

32 परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है।”

## 16

२२२२२ २२२२२२२२

1 फिर उसने चेलों से भी कहा, “किसी धनवान का एक भण्डारी था, और लोगों ने उसके सामने भण्डारी पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब सम्पत्ति उड़ाए देता है।

2 अतः धनवान ने उसे बुलाकर कहा, ‘यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूँ? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।’

3 तब भण्डारी सोचने लगा, ‘अब मैं क्या करूँ? क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम मुझसे छीन रहा है: मिट्टी तो मुझसे खोदी नहीं जाती; और भीख माँगने से मुझे लज्जा आती है।

4 मैं समझ गया, कि क्या करूँगा: ताकि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊँ तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें।’

5 और उसने अपने स्वामी के देनदारों में से एक-एक को बुलाकर पहले से पूछा, कि तुझ पर मेरे स्वामी का कितना कर्ज है?

6 उसने कहा, ‘सौ मन जैतून का तेल,’ तब उसने उससे कहा, कि अपनी खाता-बही ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे।

7 फिर दूसरे से पूछा, ‘तुझ पर कितना कर्ज है?’ उसने कहा, ‘सौ मन गेहूँ,’ तब उसने उससे कहा, ‘अपनी खाता-बही लेकर अस्सी लिख दे।’

8 “स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा, कि उसने चतुराई से काम किया है; क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति-व्यवहारों में २२२२२२ २२ २२२२२\* से अधिक चतुर हैं।

9 और मैं तुम से कहता हूँ, कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।

10 जो थोड़े से थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।

11 इसलिए जब तुम सांसारिक धन में विश्वासयोग्य न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौपेगा?

12 और यदि तुम पराए धन में विश्वासयोग्य न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?

13 “कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।”

२२२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२

14 फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसका उपहास करने लगे।

15 उसने उनसे कहा, “तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आपको धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।

16 “जब तक यूहन्ना आया, तब तक व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता प्रभाव में थे। उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उसमें प्रबलता से प्रवेश करता है।

17 आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है।

18 “जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी त्यागी हुई स्त्री से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।

‡ 15:31 २२ २२२ २२२२ २२ २२ २२ २२२२ २२ २२: सम्पत्ति का बँटवारा किया गया था, बड़े बेटे के लिये क्या वास्तविकता थी, वह सब कुछ का वारिस था और उसे इस्तेमाल करने का अधिकार था। \* 16:8 २२२२२२ २२ २२२२२: वे लोग जिन्हें स्वर्ग से ज्ञान प्रकाशन प्रदान किया गया है।

१९

“एक धनवान मनुष्य था जो बैंगनी कपड़े और मलमल पहनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था।

२० और [१६:१९] नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था।

२१ और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन् कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे।

२२ और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया,

२३ और [१६:२२] में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाई, और दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा।

२४ और उसने पुकारकर कहा, ‘हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।’

२५ परन्तु अब्राहम ने कहा, ‘हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवनकाल में अच्छी वस्तुएँ पा चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएँ परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।’

२६ और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।’

२७ उसने कहा, ‘तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज,

२८ क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उनके सामने इन बातों की चेतावनी दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।’

२९ अब्राहम ने उससे कहा, ‘उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।’

३० उसने कहा, ‘नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुआओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।’

३१ उसने उससे कहा, ‘जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुआओं में से कोई भी जी उठे तो भी उसकी नहीं मानेंगे।’ ”

## 17

[१७:१-१७]

† 16:20 [१६:२०]: लाज़र इब्रानी शब्द है, और इसका मतलब मदद के लिये बेसहारा आदमी, एक जरूरतमन्द, गरीब आदमी से हैं। ‡ 16:23 [१६:२३]: यहाँ अधोलोक का मतलब है अंधेरा, अस्पष्ट, और दुःखी जगह, स्वर्ग से बहुत दूर, जहाँ पर दुष्ट को हमेशा हमेशा के लिये दण्ड दिया जाएगा।

१ फिर उसने अपने चेलों से कहा, “यह निश्चित है कि वे बातें जो पाप का कारण हैं, आएँगे परन्तु हाय, उस मनुष्य पर जिसके कारण वे आती हैं!

२ जो इन छोटों में से किसी एक को ठोकर खिलाता है, उसके लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह समुद्र में डाल दिया जाता।

३ सचेत रहो; यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे डाँट, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर।

४ यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हूँ, तो उसे क्षमा कर।”

[१७:११-१७:१७]

५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, “हमारा विश्वास बढ़ा।”

६ प्रभु ने कहा, “यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी मान लेता।

[१७:१८-१७:२०]

७ “पर तुम में से ऐसा कौन है, जिसका दास हल जोतता, या भेड़ें चराता हो, और जब वह खेत से आए, तो उससे कहे, ‘तुरन्त आकर भोजन करने बैठ’?”

८ क्या वह उनसे न कहेगा, कि मेरा खाना तैयार कर: और जब तक मैं खाऊँ-पीऊँ तब तक कमर बाँधकर मेरी सेवा कर; इसके बाद तू भी खा पी लेना?

९ क्या वह उस दास का एहसान मानेगा, कि उसने वे ही काम किए जिसकी आज्ञा दी गई थी?

१० इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुके हो जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, ‘हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है।’ ”

[१७:२१-१७:२३]

११ और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील प्रदेश की सीमा से होकर जा रहा था।

१२ और किसी गाँव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले। [१७:२३]. 13:46

१३ और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊँचे शब्द से कहा, “हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर!”

१४ उसने उन्हें देखकर कहा, “जाओ; और अपने आपको याजकों को दिखाओ।” और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए। [१७:२३]. 14:2,3

15 तब उनमें से एक यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूँ, ऊँचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा;

16 और यीशु के पाँवों पर मुँह के बल गिरकर उसका धन्यवाद करने लगा; और वह सामरी था।

17 इस पर यीशु ने कहा, “क्या दसों शुद्ध न हुए, तो फिर वे नौ कहाँ हैं?”

18 क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता?”

19 तब उसने उससे कहा, “उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।”

?????????? ?? ?????????? ?? ?????????? ?????

20 जब फरीसियों ने उससे पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उसने उनको उत्तर दिया, “परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप में नहीं आता।

21 और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहाँ है, या वहाँ है। क्योंकि, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।”

22 और उसने चेलों से कहा, “वे दिन आएँगे, जिनमें तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहोगे, और नहीं देखने पाओगे।

23 लोग तुम से कहेंगे, ‘देखो, वहाँ है!’ या ‘देखो यहाँ है!’ परन्तु तुम चले न जाना और न उनके पीछे हो लेना।

24 क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक छोर से कौंधकर आकाश की दूसरी छोर तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा।

25 परन्तु पहले अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएँ।

26 जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। (????????? 4:7, ?????????? 24:37-39, ?????????? 6:5-12)

27 जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह-शादी होती थी; तब जल-प्रलय ने आकर उन सब को नाश किया।

28 और जैसा लूत के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते-पीते लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे;

29 परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश कर दिया। (2 ????? 2:6, ????? 1:7, ????? 19:24)

30 मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।

31 “उस दिन जो छत पर हो; और उसका सामान घर में हो, वह उसे लेने को न उतरे, और वैसे ही जो खेत में हो वह पीछे न लौटे।

32 लूत की पत्नी को स्मरण रखो! (????????? 19:26, ?????????? 19:17)

33 जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई उसे खोए वह उसे बचाएगा।

34 मैं तुम से कहता हूँ, उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।

35 दो स्त्रियाँ एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी।

36 [दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा।]”

37 यह सुन उन्होंने उससे पूछा, “हे प्रभु यह कहाँ होगा?” उसने उनसे कहा, “जहाँ लाश हैं, वहाँ गिद्ध इकट्ठे होंगे।” (????????? 39:30)

## 18

????????? ?? ?????????? ?????????????????

1 फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और साहस नहीं छोड़ना चाहिए उनसे यह दृष्टान्त कहा:

2 “किसी नगर में एक न्यायी रहता था; जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था।

3 और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, ‘मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा।’

4 उसने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में विचार कर कहा, ‘यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूँ;

5 फिर भी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिए मैं उसका न्याय चुकाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि घड़ी-घड़ी आकर अन्त को मेरी नाक में दम करे।’”

6 प्रभु ने कहा, “सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है?

7 अतः क्या परमेश्वर अपने चुने हुएों का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उसकी दुहाई देते रहते; और क्या वह उनके विषय में देर करेगा?

8 मैं तुम से कहता हूँ; वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा; पर मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?”

????? ?????????? ?????????????????

9 और उसने उनसे जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा:

10 “दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला।

11 फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यह प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि मैं और मनुष्यों के समान दुष्टता करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ।'

12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ; मैं अपनी सब कमाई का दसवाँ अंश भी देता हूँ।'

13 "परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँख उठाना भी न चाहा, वरन् अपनी ~~दुष्टता~~ ~~अन्यायी~~ ~~व्यभिचारी~~ ~~नहीं~~ ~~है~~ ~~और~~ ~~न~~ ~~इस~~ ~~चुंगी~~ ~~लेनेवाले~~ ~~के~~ ~~समान~~ ~~हूँ~~।" ~~कहा~~, 'हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर!' (लू. 51:1)

14 मैं तुम से कहता हूँ, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य ~~दुष्टता~~ ~~अन्यायी~~ ~~व्यभिचारी~~ ~~नहीं~~ ~~है~~ और अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

~~लूका 18:11-12~~ ~~लूका 18:13-14~~ ~~लूका 18:15-16~~ ~~लूका 18:17-18~~ ~~लूका 18:19-20~~

15 फिर लोग अपने बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; और चेलों ने देखकर उन्हें डाँटा।

16 यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो: क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।"

17 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।"

~~लूका 18:21~~ ~~लूका 18:22~~ ~~लूका 18:23~~ ~~लूका 18:24~~ ~~लूका 18:25~~

18 किसी सरदार ने उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?"

19 यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर।"

20 तू आज्ञाओं को तो जानता है: 'व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।' "

21 उसने कहा, "मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूँ।"

22 यह सुन, "यीशु ने उससे कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बाँट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।"

23 वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।

24 यीशु ने उसे देखकर कहा, "धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!"

25 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।"

26 और सुननेवालों ने कहा, "तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?"

27 उसने कहा, "जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।"

28 पतरस ने कहा, "देख, हम तो घर-बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।"

29 उसने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जिसने परमेश्वर के राज्य के लिये घर, या पत्नी, या भाइयों, या माता-पिता, या बाल-बच्चों को छोड़ दिया हो।"

30 और इस समय कई गुणा अधिक न पाए; और परलोक में अनन्त जीवन।"

~~लूका 18:26-27~~ ~~लूका 18:28-29~~ ~~लूका 18:30-31~~ ~~लूका 18:32-33~~ ~~लूका 18:34-35~~

31 फिर उसने बारहों को साथ लेकर उनसे कहा, "हम यरूशलेम को जाते हैं, और ~~लूका 18:36-37~~ ~~लूका 18:38-39~~ ~~लूका 18:40-41~~ ~~लूका 18:42-43~~ ~~लूका 18:44-45~~ ~~लूका 18:46-47~~ ~~लूका 18:48-49~~ ~~लूका 18:50-51~~ ~~लूका 18:52-53~~ ~~लूका 18:54-55~~ ~~लूका 18:56-57~~ ~~लूका 18:58-59~~ ~~लूका 18:60-61~~ ~~लूका 18:62-63~~ ~~लूका 18:64-65~~ ~~लूका 18:66-67~~ ~~लूका 18:68-69~~ ~~लूका 18:70-71~~ ~~लूका 18:72-73~~ ~~लूका 18:74-75~~ ~~लूका 18:76-77~~ ~~लूका 18:78-79~~ ~~लूका 18:80-81~~ ~~लूका 18:82-83~~ ~~लूका 18:84-85~~ ~~लूका 18:86-87~~ ~~लूका 18:88-89~~ ~~लूका 18:90-91~~ ~~लूका 18:92-93~~ ~~लूका 18:94-95~~ ~~लूका 18:96-97~~ ~~लूका 18:98-99~~ ~~लूका 18:100-101~~ ~~लूका 18:102-103~~ ~~लूका 18:104-105~~ ~~लूका 18:106-107~~ ~~लूका 18:108-109~~ ~~लूका 18:110-111~~ ~~लूका 18:112-113~~ ~~लूका 18:114-115~~ ~~लूका 18:116-117~~ ~~लूका 18:118-119~~ ~~लूका 18:120-121~~ ~~लूका 18:122-123~~ ~~लूका 18:124-125~~ ~~लूका 18:126-127~~ ~~लूका 18:128-129~~ ~~लूका 18:130-131~~ ~~लूका 18:132-133~~ ~~लूका 18:134-135~~ ~~लूका 18:136-137~~ ~~लूका 18:138-139~~ ~~लूका 18:140-141~~ ~~लूका 18:142-143~~ ~~लूका 18:144-145~~ ~~लूका 18:146-147~~ ~~लूका 18:148-149~~ ~~लूका 18:150-151~~ ~~लूका 18:152-153~~ ~~लूका 18:154-155~~ ~~लूका 18:156-157~~ ~~लूका 18:158-159~~ ~~लूका 18:160-161~~ ~~लूका 18:162-163~~ ~~लूका 18:164-165~~ ~~लूका 18:166-167~~ ~~लूका 18:168-169~~ ~~लूका 18:170-171~~ ~~लूका 18:172-173~~ ~~लूका 18:174-175~~ ~~लूका 18:176-177~~ ~~लूका 18:178-179~~ ~~लूका 18:180-181~~ ~~लूका 18:182-183~~ ~~लूका 18:184-185~~ ~~लूका 18:186-187~~ ~~लूका 18:188-189~~ ~~लूका 18:190-191~~ ~~लूका 18:192-193~~ ~~लूका 18:194-195~~ ~~लूका 18:196-197~~ ~~लूका 18:198-199~~ ~~लूका 18:200-201~~ ~~लूका 18:202-203~~ ~~लूका 18:204-205~~ ~~लूका 18:206-207~~ ~~लूका 18:208-209~~ ~~लूका 18:210-211~~ ~~लूका 18:212-213~~ ~~लूका 18:214-215~~ ~~लूका 18:216-217~~ ~~लूका 18:218-219~~ ~~लूका 18:220-221~~ ~~लूका 18:222-223~~ ~~लूका 18:224-225~~ ~~लूका 18:226-227~~ ~~लूका 18:228-229~~ ~~लूका 18:230-231~~ ~~लूका 18:232-233~~ ~~लूका 18:234-235~~ ~~लूका 18:236-237~~ ~~लूका 18:238-239~~ ~~लूका 18:240-241~~ ~~लूका 18:242-243~~ ~~लूका 18:244-245~~ ~~लूका 18:246-247~~ ~~लूका 18:248-249~~ ~~लूका 18:250-251~~ ~~लूका 18:252-253~~ ~~लूका 18:254-255~~ ~~लूका 18:256-257~~ ~~लूका 18:258-259~~ ~~लूका 18:260-261~~ ~~लूका 18:262-263~~ ~~लूका 18:264-265~~ ~~लूका 18:266-267~~ ~~लूका 18:268-269~~ ~~लूका 18:270-271~~ ~~लूका 18:272-273~~ ~~लूका 18:274-275~~ ~~लूका 18:276-277~~ ~~लूका 18:278-279~~ ~~लूका 18:280-281~~ ~~लूका 18:282-283~~ ~~लूका 18:284-285~~ ~~लूका 18:286-287~~ ~~लूका 18:288-289~~ ~~लूका 18:290-291~~ ~~लूका 18:292-293~~ ~~लूका 18:294-295~~ ~~लूका 18:296-297~~ ~~लूका 18:298-299~~ ~~लूका 18:300-301~~ ~~लूका 18:302-303~~ ~~लूका 18:304-305~~ ~~लूका 18:306-307~~ ~~लूका 18:308-309~~ ~~लूका 18:310-311~~ ~~लूका 18:312-313~~ ~~लूका 18:314-315~~ ~~लूका 18:316-317~~ ~~लूका 18:318-319~~ ~~लूका 18:320-321~~ ~~लूका 18:322-323~~ ~~लूका 18:324-325~~ ~~लूका 18:326-327~~ ~~लूका 18:328-329~~ ~~लूका 18:330-331~~ ~~लूका 18:332-333~~ ~~लूका 18:334-335~~ ~~लूका 18:336-337~~ ~~लूका 18:338-339~~ ~~लूका 18:340-341~~ ~~लूका 18:342-343~~ ~~लूका 18:344-345~~ ~~लूका 18:346-347~~ ~~लूका 18:348-349~~ ~~लूका 18:350-351~~ ~~लूका 18:352-353~~ ~~लूका 18:354-355~~ ~~लूका 18:356-357~~ ~~लूका 18:358-359~~ ~~लूका 18:360-361~~ ~~लूका 18:362-363~~ ~~लूका 18:364-365~~ ~~लूका 18:366-367~~ ~~लूका 18:368-369~~ ~~लूका 18:370-371~~ ~~लूका 18:372-373~~ ~~लूका 18:374-375~~ ~~लूका 18:376-377~~ ~~लूका 18:378-379~~ ~~लूका 18:380-381~~ ~~लूका 18:382-383~~ ~~लूका 18:384-385~~ ~~लूका 18:386-387~~ ~~लूका 18:388-389~~ ~~लूका 18:390-391~~ ~~लूका 18:392-393~~ ~~लूका 18:394-395~~ ~~लूका 18:396-397~~ ~~लूका 18:398-399~~ ~~लूका 18:400-401~~ ~~लूका 18:402-403~~ ~~लूका 18:404-405~~ ~~लूका 18:406-407~~ ~~लूका 18:408-409~~ ~~लूका 18:410-411~~ ~~लूका 18:412-413~~ ~~लूका 18:414-415~~ ~~लूका 18:416-417~~ ~~लूका 18:418-419~~ ~~लूका 18:420-421~~ ~~लूका 18:422-423~~ ~~लूका 18:424-425~~ ~~लूका 18:426-427~~ ~~लूका 18:428-429~~ ~~लूका 18:430-431~~ ~~लूका 18:432-433~~ ~~लूका 18:434-435~~ ~~लूका 18:436-437~~ ~~लूका 18:438-439~~ ~~लूका 18:440-441~~ ~~लूका 18:442-443~~ ~~लूका 18:444-445~~ ~~लूका 18:446-447~~ ~~लूका 18:448-449~~ ~~लूका 18:450-451~~ ~~लूका 18:452-453~~ ~~लूका 18:454-455~~ ~~लूका 18:456-457~~ ~~लूका 18:458-459~~ ~~लूका 18:460-461~~ ~~लूका 18:462-463~~ ~~लूका 18:464-465~~ ~~लूका 18:466-467~~ ~~लूका 18:468-469~~ ~~लूका 18:470-471~~ ~~लूका 18:472-473~~ ~~लूका 18:474-475~~ ~~लूका 18:476-477~~ ~~लूका 18:478-479~~ ~~लूका 18:480-481~~ ~~लूका 18:482-483~~ ~~लूका 18:484-485~~ ~~लूका 18:486-487~~ ~~लूका 18:488-489~~ ~~लूका 18:490-491~~ ~~लूका 18:492-493~~ ~~लूका 18:494-495~~ ~~लूका 18:496-497~~ ~~लूका 18:498-499~~ ~~लूका 18:500-501~~ ~~लूका 18:502-503~~ ~~लूका 18:504-505~~ ~~लूका 18:506-507~~ ~~लूका 18:508-509~~ ~~लूका 18:510-511~~ ~~लूका 18:512-513~~ ~~लूका 18:514-515~~ ~~लूका 18:516-517~~ ~~लूका 18:518-519~~ ~~लूका 18:520-521~~ ~~लूका 18:522-523~~ ~~लूका 18:524-525~~ ~~लूका 18:526-527~~ ~~लूका 18:528-529~~ ~~लूका 18:530-531~~ ~~लूका 18:532-533~~ ~~लूका 18:534-535~~ ~~लूका 18:536-537~~ ~~लूका 18:538-539~~ ~~लूका 18:540-541~~ ~~लूका 18:542-543~~ ~~लूका 18:544-545~~ ~~लूका 18:546-547~~ ~~लूका 18:548-549~~ ~~लूका 18:550-551~~ ~~लूका 18:552-553~~ ~~लूका 18:554-555~~ ~~लूका 18:556-557~~ ~~लूका 18:558-559~~ ~~लूका 18:560-561~~ ~~लूका 18:562-563~~ ~~लूका 18:564-565~~ ~~लूका 18:566-567~~ ~~लूका 18:568-569~~ ~~लूका 18:570-571~~ ~~लूका 18:572-573~~ ~~लूका 18:574-575~~ ~~लूका 18:576-577~~ ~~लूका 18:578-579~~ ~~लूका 18:580-581~~ ~~लूका 18:582-583~~ ~~लूका 18:584-585~~ ~~लूका 18:586-587~~ ~~लूका 18:588-589~~ ~~लूका 18:590-591~~ ~~लूका 18:592-593~~ ~~लूका 18:594-595~~ ~~लूका 18:596-597~~ ~~लूका 18:598-599~~ ~~लूका 18:600-601~~ ~~लूका 18:602-603~~ ~~लूका 18:604-605~~ ~~लूका 18:606-607~~ ~~लूका 18:608-609~~ ~~लूका 18:610-611~~ ~~लूका 18:612-613~~ ~~लूका 18:614-615~~ ~~लूका 18:616-617~~ ~~लूका 18:618-619~~ ~~लूका 18:620-621~~ ~~लूका 18:622-623~~ ~~लूका 18:624-625~~ ~~लूका 18:626-627~~ ~~लूका 18:628-629~~ ~~लूका 18:630-631~~ ~~लूका 18:632-633~~ ~~लूका 18:634-635~~ ~~लूका 18:636-637~~ ~~लूका 18:638-639~~ ~~लूका 18:640-641~~ ~~लूका 18:642-643~~ ~~लूका 18:644-645~~ ~~लूका 18:646-647~~ ~~लूका 18:648-649~~ ~~लूका 18:650-651~~ ~~लूका 18:652-653~~ ~~लूका 18:654-655~~ ~~लूका 18:656-657~~ ~~लूका 18:658-659~~ ~~लूका 18:660-661~~ ~~लूका 18:662-663~~ ~~लूका 18:664-665~~ ~~लूका 18:666-667~~ ~~लूका 18:668-669~~ ~~लूका 18:670-671~~ ~~लूका 18:672-673~~ ~~लूका 18:674-675~~ ~~लूका 18:676-677~~ ~~लूका 18:678-679~~ ~~लूका 18:680-681~~ ~~लूका 18:682-683~~ ~~लूका 18:684-685~~ ~~लूका 18:686-687~~ ~~लूका 18:688-689~~ ~~लूका 18:690-691~~ ~~लूका 18:692-693~~ ~~लूका 18:694-695~~ ~~लूका 18:696-697~~ ~~लूका 18:698-699~~ ~~लूका 18:700-701~~ ~~लूका 18:702-703~~ ~~लूका 18:704-705~~ ~~लूका 18:706-707~~ ~~लूका 18:708-709~~ ~~लूका 18:710-711~~ ~~लूका 18:712-713~~ ~~लूका 18:714-715~~ ~~लूका 18:716-717~~ ~~लूका 18:718-719~~ ~~लूका 18:720-721~~ ~~लूका 18:722-723~~ ~~लूका 18:724-725~~ ~~लूका 18:726-727~~ ~~लूका 18:728-729~~ ~~लूका 18:730-731~~ ~~लूका 18:732-733~~ ~~लूका 18:734-735~~ ~~लूका 18:736-737~~ ~~लूका 18:738-739~~ ~~लूका 18:740-741~~ ~~लूका 18:742-743~~ ~~लूका 18:744-745~~ ~~लूका 18:746-747~~ ~~लूका 18:748-749~~ ~~लूका 18:750-751~~ ~~लूका 18:752-753~~ ~~लूका 18:754-755~~ ~~लूका 18:756-757~~ ~~लूका 18:758-759~~ ~~लूका 18:760-761~~ ~~लूका 18:762-763~~ ~~लूका 18:764-765~~ ~~लूका 18:766-767~~ ~~लूका 18:768-769~~ ~~लूका 18:770-771~~ ~~लूका 18:772-773~~ ~~लूका 18:774-775~~ ~~लूका 18:776-777~~ ~~लूका 18:778-779~~ ~~लूका 18:780-781~~ ~~लूका 18:782-783~~ ~~लूका 18:784-785~~ ~~लूका 18:786-787~~ ~~लूका 18:788-789~~ ~~लूका 18:790-791~~ ~~लूका 18:792-793~~ ~~लूका 18:794-795~~ ~~लूका 18:796-797~~ ~~लूका 18:798-799~~ ~~लूका 18:800-801~~ ~~लूका 18:802-803~~ ~~लूका 18:804-805~~ ~~लूका 18:806-807~~ ~~लूका 18:808-809~~ ~~लूका 18:810-811~~ ~~लूका 18:812-813~~ ~~लूका 18:814-815~~ ~~लूका 18:816-817~~ ~~लूका 18:818-819~~ ~~लूका 18:820-821~~ ~~लूका 18:822-823~~ ~~लूका 18:824-825~~ ~~लूका 18:826-827~~ ~~लूका 18:828-829~~ ~~लूका 18:830-831~~ ~~लूका 18:832-833~~ ~~लूका 18:834-835~~ ~~लूका 18:836-837~~ ~~लूका 18:838-839~~ ~~लूका 18:840-841~~ ~~लूका 18:842-843~~ ~~लूका 18:844-845~~ ~~लूका 18:846-847~~ ~~लूका 18:848-849~~ ~~लूका 18:850-851~~ ~~लूका 18:852-853~~ ~~लूका 18:854-855~~ ~~लूका 18:856-857~~ ~~लूका 18:858-859~~ ~~लूका 18:860-861~~ ~~लूका 18:862-863~~ ~~लूका 18:864-865~~ ~~लूका 18:866-867~~ ~~लूका 18:868-869~~ ~~लूका 18:870-871~~ ~~लूका 18:872-873~~ ~~लूका 18:874-875~~ ~~लूका 18:876-877~~ ~~लूका 18:878-879~~ ~~लूका 18:880-881~~ ~~लूका 18:882-883~~ ~~लूका 18:884-885~~ ~~लूका 18:886-887~~ ~~लूका 18:888-889~~ ~~लूका 18:890-891~~ ~~लूका 18:892-893~~ ~~लूका 18:894-895~~ ~~लूका 18:896-897~~ ~~लूका 18:898-899~~ ~~लूका 18:900-901~~ ~~लूका 18:902-903~~ ~~लूका 18:904-905~~ ~~लूका 18:906-907~~ ~~लूका 18:908-909~~ ~~लूका 18:910-911~~ ~~लूका 18:912-913~~ ~~लूका 18:914-915~~ ~~लूका 18:916-917~~ ~~लूका 18:918-919~~ ~~लूका 18:920-921~~ ~~लूका 18:922-923~~ ~~लूका 18:924-925~~ ~~लूका 18:926-927~~ ~~लूका 18:928-929~~ ~~लूका 18:930-931~~ ~~लूका 18:932-933~~ ~~लूका 18:934-935~~ ~~लूका 18:936-937~~ ~~लूका 18:938-939~~ ~~लूका 18:940-941~~ ~~लूका 18:942-943~~ ~~लूका 18:944-945~~ ~~लूका 18:946-947~~ ~~लूका 18:948-949~~ ~~लूका 18:950-951~~ ~~लूका 18:952-953~~ ~~लूका 18:954-955~~ ~~लूका 18:956-957~~ ~~लूका 18:958-959~~ ~~लूका 18:960-961~~ ~~लूका 18:962-963~~ ~~लूका 18:964-965~~ ~~लूका 18:966-967~~ ~~लूका 18:968-969~~ ~~लूका 18:970-971~~ ~~लूका 18:972-973~~ ~~लूका 18:974-975~~ ~~लूका 18:976-977~~ ~~लूका 18:978-979~~ ~~लूका 18:980-981~~ ~~लूका 18:982-983~~ ~~लूका 18:984-985~~ ~~लूका 18:986-987~~ ~~लूका 18:988-989~~ ~~लूका 18:990-991~~ ~~लूका 18:992-993~~ ~~लूका 18:994-995~~ ~~लूका 18:996-997~~ ~~लूका 18:998-999~~ ~~लूका 19:1-2~~ ~~लूका 19:3-4~~ ~~लूका 19:5-6~~ ~~लूका 19:7-8~~ ~~लूका 19:9-10~~ ~~लूका 19:11-12~~ ~~लूका 19:13-14~~ ~~लूका 19:15-16~~ ~~लूका 19:17-18~~ ~~लूका 19:19-20~~ ~~लूका 19:21-22~~ ~~लूका 19:23-24~~ ~~लूका 19:25-26~~ ~~लूका 19:27-28~~ ~~लूका 19:29-30~~ ~~लूका 19:31-32~~ ~~लूका 19:33-34~~ ~~लूका 19:35-36~~ ~~लूका 19:37-38~~ ~~लूका 19:39-40~~ ~~लूका 19:41-42~~ ~~लूका 19:43-44~~ ~~लूका 19:45-46~~ ~~लूका 19:47-48~~ ~~लूका 19:49-50~~ ~~लूका 19:51-52~~

40 तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा दी कि उसे मेरे पास लाओ, और जब वह निकट आया, तो उसने उससे यह पूछा,

41 तू क्या चाहता है, “मैं तेरे लिये करूँ?” उसने कहा, “हे प्रभु, यह कि मैं देखने लगूँ।”

42 यीशु ने उससे कहा, “देखने लग, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।”

43 और वह तुरन्त देखने लगा; और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ, उसके पीछे हो लिया, और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की।

## 19

????? ?? ??

1 वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था।

2 वहाँ **??????\*** नामक एक मनुष्य था, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और धनी था।

3 वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है? परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था।

4 तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जानेवाला था।

5 जब यीशु उस जगह पहुँचा, तो ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, “हे जक्कई, झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।”

6 वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया।

7 यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, “वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ गया है।”

8 जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, “हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।” (**????? 22:1**)

9 तब यीशु ने उससे कहा, “आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिए कि यह भी **???????? ?? ??** **??????†** है।

10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को ढूँढने और उनका उद्धार करने आया है।” (**????? 15:24, ????? 34:16**)

?? ???????

11 जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो उसने एक दृष्टान्त कहा, इसलिए कि वह यरूशलेम के निकट था, और वे

\* 19:2 **?????**: यह इब्रानी नाम है और इसका अर्थ “शुद्ध” है। † 19:9 **???????? ?? ??**: यद्यपि एक यहूदी, अभी तक वह एक पापी है वह अब्राहम का पुत्र कहलाने के योग्य नहीं था ‡ 19:22 **???? ??**: तेरे स्वयं के शब्दों से, या मेरे चरित्र के विषय तेरे स्वयं के विचार से।

समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट होनेवाला है।

12 अतः उसने कहा, “एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए।

13 और उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं, और उनसे कहा, ‘मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।’

14 परन्तु उसके नगर के रहनेवाले उससे बैर रखते थे, और उसके पीछे दूतों के द्वारा कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य करे।

15 “जब वह राजपद पाकर लौट आया, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने पास बुलवाया ताकि मालूम करे कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या कमाया।

16 तब पहले ने आकर कहा, ‘हे स्वामी, तेरे मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं।’

17 उसने उससे कहा, ‘हे उत्तम दास, तू धन्य है, तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों का अधिकार रख।’

18 दूसरे ने आकर कहा, ‘हे स्वामी, तेरी मुहर से पाँच और मुहरें कमाई हैं।’

19 उसने उससे कहा, ‘तू भी पाँच नगरों पर अधिकार रख।’

20 तीसरे ने आकर कहा, ‘हे स्वामी, देख, तेरी मुहर यह है, जिसे मैंने अँगोछे में बाँध रखा था।

21 क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिए कि तू कठोर मनुष्य है: जो तूने नहीं रखा उसे उठा लेता है, और जो तूने नहीं बोया, उसे काटता है।’

22 उसने उससे कहा, ‘हे दुष्ट दास, मैं **??????** **????** **??????** **????** तुझे दोषी ठहराता हूँ। तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूँ, जो मैंने नहीं रखा उसे उठा लेता, और जो मैंने नहीं बोया, उसे काटता हूँ;

23 तो तूने मेरे रुपये सर्राफों को क्यों नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता?’

24 और जो लोग निकट खड़े थे, उसने उनसे कहा, ‘वह मुहर उससे ले लो, और जिसके पास दस मुहरें हैं उसे दे दो।’

25 उन्होंने उससे कहा, ‘हे स्वामी, उसके पास दस मुहरें तो हैं।’

26 मैं तुम से कहता हूँ, कि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।



9 तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा, “किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और किसानों को उसका ठेका दे दिया और बहुत दिनों के लिये परदेश चला गया। (लूका 12:1-12, लूका 21:33-46)

10 नियुक्त समय पर उसने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वे दाख की बारी के कुछ फलों का भाग उसे दें, पर किसानों ने उसे पीटकर खाली हाथ लौटा दिया।

11 फिर उसने एक और दास को भेजा, और उन्होंने उसे भी पीटकर और उसका अपमान करके खाली हाथ लौटा दिया।

12 फिर उसने तीसरा भेजा, और उन्होंने उसे भी घायल करके निकाल दिया।

13 तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा, ‘मैं क्या करूँ? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा, क्या जाने वे उसका आदर करें।’

14 जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे, ‘यह तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, कि विरासत हमारी हो जाए।’

15 और उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला: इसलिए दाख की बारी का स्वामी उनके साथ क्या करेगा?

16 “वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी दूसरों को सौंपेगा।” यह सुनकर उन्होंने कहा, “परमेश्वर ऐसा न करे।”

17 उसने उनकी ओर देखकर कहा, “फिर यह क्या लिखा है:

‘जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया।’ (लूका 118:22,23)

18 “जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह लूका 21:22\*<sup>†</sup>, और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।” (लूका 2:34,35)

लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup>

19 उसी घड़ी शास्त्रियों और प्रधान याजकों ने उसे पकड़ना चाहा, क्योंकि समझ गए थे, कि उसने उनके विरुद्ध दृष्टान्त कहा, परन्तु वे लोगों से डरे।

20 और वे उसकी ताक में लगे और भेदिए भेजे, कि धर्मी का भेष धरकर उसकी कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे राज्यपाल के हाथ और अधिकार में सौंप दें।

21 उन्होंने उससे यह पूछा, “हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ठीक कहता, और सिखाता भी है, और किसी का पक्षपात नहीं करता; वरन् परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है।

22 क्या हमें कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं?”

23 उसने उनकी चतुराई को ताड़कर उनसे कहा,

24 “एक दीनार मुझे दिखाओ। इस पर किसकी छाप और नाम है?” उन्होंने कहा, “कैसर का।”

25 उसने उनसे कहा, “तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।”

26 वे लोगों के सामने उस बात को पकड़ न सके, वरन् उसके उत्तर से अचम्भित होकर चुप रह गए।

लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup>

27 फिर सद्की जो कहते हैं, कि मरे हुआ का जी उठना है ही नहीं, उनमें से कुछ ने उसके पास आकर पूछा।

28 “हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये यह लिखा है, ‘यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह कर ले, और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे।’ (लूका 38:8, लूका 25:5)

29 अतः सात भाई थे, पहला भाई विवाह करके बिना सन्तान मर गया।

30 फिर दूसरे,

31 और तीसरे ने भी उस स्त्री से विवाह कर लिया। इसी रीति से सातों बिना सन्तान मर गए।

32 सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।

33 अतः जी उठने पर वह उनमें से किसकी पत्नी होगी, क्योंकि वह सातों की पत्नी रह चुकी थी।”

34 यीशु ने उनसे कहा, “इस युग के सन्तानों में तो विवाह-शादी होती है,

35 पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे, की उस युग को और मरे हुआ में से जी उठना प्राप्त करें, उनमें विवाह-शादी न होगी।

36 वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और पुनरुत्थान की सन्तान होने से परमेश्वर के भी सन्तान होंगे।

37 परन्तु इस बात को कि मरे हुए जी उठते हैं, मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट की है, वह प्रभु को ‘अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर’ कहता है। (लूका 3:2, लूका 3:6)

38 परमेश्वर तो मुर्दों का नहीं परन्तु जीवितों का परमेश्वर है: क्योंकि उसके निकट सब जीवित हैं।”

39 तब यह सुनकर शास्त्रियों में से कितनों ने कहा, “हे गुरु, तूने अच्छा कहा।”

40 और उन्हें फिर उससे कुछ और लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup>।

\* **20:18** लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup>: वे सभी जो ठोकर और अविश्वास और मन की कठोरता द्वारा गिर जाते हैं और उसे अपमानित करते हैं। † **20:40** लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup> लूका 21:22\*<sup>†</sup>: या, कोई भी अन्य प्रश्न पूछने के लिए उद्यम नहीं किया, फिर से चकित न होने के डर से, जैसा कि वे पहले से ही किया गया था।

41 फिर उसने उनसे पूछा, “मसीह को दाऊद की सन्तान कैसे कहते हैं?”

42 दाऊद आप भजन संहिता की पुस्तक में कहता है: ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,

मेरे दाहिने बैठ,  
43 जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।’

44 दाऊद तो उसे प्रभु कहता है; तो फिर वह उसकी सन्तान कैसे ठहरा?”

45 जब सब लोग सुन रहे थे, तो उसने अपने चेलों से कहा।

46 “जिनको लम्बे-लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना अच्छा लगता है, और जिन्हें बाजारों में नमस्कार, और आराधनालयों में मुख्य आसन और भोज में मुख्य स्थान प्रिय लगते हैं।

47 वे विधवाओं के घर खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये बहुत ही दण्ड पाएँगे।”

## 21

1 फिर उसने आँख उठाकर धनवानों को अपना-अपना दान भण्डार में डालते हुए देखा।

2 और उसने एक कंगाल विधवा को भी उसमें दो दमडियाँ डालते हुए देखा।

3 तब उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है।

4 क्योंकि उन सब ने अपनी-अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है।”

5 जब कितने लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों और की वस्तुओं से संवारा गया है, तो उसने कहा,

6 “वे दिन आएँगे, जिनमें यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।”

7 उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, यह सब कब होगा? और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिन्ह होगा?”

8 उसने कहा, “सावधान रहो, कि भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूँ; और यह भी कि समय निकट आ पहुँचा है: तुम उनके पीछे न चले जाना। (1 4:1, 13:21,23)

9 और जब तुम लड़ाइयों और बलवाँ की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इनका पहले होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा।”

10 तब उसने उनसे कहा, “जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। (2 15:5,6, 19:2)

11 और बड़े-बड़े भूकम्प होंगे, और जगह-जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश में भयंकर बातें और बड़े-बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।

12 परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएँगे, और आराधनालयों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएँगे, और राजाओं और राज्यपालों के सामने ले जाएँगे।

13 पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा।

14 इसलिए अपने-अपने मन में ठान रखो कि हम पहले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे।

15 क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूँगा, कि तुम्हारे सब विरोधी सामना या खण्डन न कर सकेंगे।

16 और तुम्हारे माता-पिता और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएँगे; यहाँ तक कि तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे।

17 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे।

18 परन्तु (10:30, 12:7)

19 अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।

20 “जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।

21 तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएँ, और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएँ; और जो गाँवों में हो वे उसमें न जाएँ।

‡ 20:46 जो उद्धार के मार्ग को दिखाना चाहता है उनके द्वारा लोगों को आकर्षित नहीं होने के लिए चेतावनी दी गई है। \* 21:5 इस शब्द का ठीक अर्थ परमेश्वर के लिए कुछ भी समर्पित या अर्पित † 21:18 मतलब यह है कि वे किसी भी चोट से ग्रस्त नहीं होंगे, परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा।





11 और उस घर के स्वामी से कहो, 'गुरु तुझ से कहता है; कि वह पाहुनशाला कहाँ है जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ?'

12 वह तुम्हें एक सजी-सजाई बड़ी अटारी दिखा देगा; वहाँ तैयारी करना।"

13 उन्होंने जाकर, जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया।

????? ?? ??????? ???

14 जब घड़ी पहुँची, तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा।

15 और उसने उनसे कहा, "मुझे बड़ी लालसा थी, कि दुःख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊँ।

16 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊँगा।"

17 तब उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और कहा, "इसको लो और आपस में बाँट लो।

18 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाखरस अब से कभी न पीऊँगा।"

19 फिर उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको यह कहते हुए दी, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"

20 इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, "यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। (?????. 24:8, 1 ?????. 11:25, ????? 26:28, ???. 9:11)

21 पर देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। (????. 41:9)

22 क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया, जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर, जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है!"

23 तब वे आपस में पूछताछ करने लगे, "हम में से कौन है, जो यह काम करेगा?"

???? ?????? ?????? ????????

24 उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है?

25 उसने उनसे कहा, "अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे ?????? कहलाते हैं।

† 22:25 ??????: यह शब्द वह जो दूसरों को "उपकार" प्रदान करता है को संबोधित करता है। ‡ 22:31 ?????? ?? ?????? ??????: अनाज हवा में हिलाया या छलनी में फटका जाता था।

26 परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन् जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने।

27 क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।

28 "परन्तु तुम वह हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे;

29 और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूँ।

30 ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पीओ; वरन् सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो।

????? ?? ??????? ?? ???????????????

31 "शमौन, हे शमौन, शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है कि ?????? ?? ?????? ??????।

32 परन्तु मैंने तेरे लिये विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना।"

33 उसने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन् मरने को भी तैयार हूँ।"

34 उसने कहा, "हे पतरस मैं तुझ से कहता हूँ, कि आज मुर्गा बाँग देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता।"

?????? ?????? ?? ??????? ???

35 और उसने उनसे कहा, "जब मैंने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई थी?" उन्होंने कहा, "किसी वस्तु की नहीं।"

36 उसने उनसे कहा, "परन्तु अब जिसके पास बटुआ हो वह उसे ले, और वैसे ही झोली भी, और जिसके पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले।

37 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यह जो लिखा है, 'वह अपराधी के साथ गिना गया,' उसका मुझ में पूरा होना अवश्य है; क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी होने पर हैं।" (????. 3:13, 2 ?????. 5:21, ?????. 53:12)

38 उन्होंने कहा, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।" उसने उनसे कहा, "बहुत हैं।"

?????? ?? ??????? ?? ?????? ?? ?????? ?? ???????????????

39 तब वह बाहर निकलकर अपनी रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर गया, और चले उसके पीछे हो लिए।



## 23

1 तब सारी सभा उठकर यीशु को पिलातुस के पास ले गई।

2 और वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे, “हमने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आपको मसीह, राजा कहते हुए सुना है।”

3 पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” उसने उसे उत्तर दिया, “तू आप ही कह रहा है।”

4 तब पिलातुस ने प्रधान याजकों और लोगों से कहा, “मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता।”

5 पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, “यह गलील से लेकर यहाँ तक सारे यहूदिया में उपदेश दे देकर लोगों को भड़काता है।”

6 यह सुनकर पिलातुस ने पूछा, “क्या यह मनुष्य गलीली है?”

7 और यह जानकर कि वह **यहूदा** का है, उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनों में वह भी यरूशलेम में था।

8 हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उसको देखना चाहता था: इसलिए कि उसके विषय में सुना था, और उसका कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था।

9 वह उससे बहुत सारी बातें पूछता रहा, पर उसने उसको कुछ भी उत्तर न दिया।

10 और प्रधान याजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते रहे।

11 तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके उपहास किया, और भड़कीला वस्त्र पहनाकर उसे पिलातुस के पास लौटा दिया।

12 उसी दिन पिलातुस और हेरोदेस मित्र हो गए। इसके पहले वे एक दूसरे के बैरी थे।

13 पिलातुस ने प्रधान याजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर उनसे कहा,

14 “तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैंने तुम्हारे सामने उसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैंने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया है;

15 न हेरोदेस ने, क्योंकि उसने उसे हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उससे ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए।

16 इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूँ।”

17 पिलातुस पर्व के समय उनके लिए एक बन्दी को छोड़ने पर विवश था।

18 तब सब मिलकर चिल्ला उठे, “इसका काम तमाम कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।”

19 वह किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था, और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था।

20 पर पिलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया।

21 परन्तु उन्होंने चिल्लाकर कहा, “उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!”

22 उसने तीसरी बार उनसे कहा, “क्यों उसने कौन सी बुराई की है? मैंने उसमें मृत्युदण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई! इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूँ।”

23 परन्तु वे चिल्ला चिल्लाकर पीछे पड़ गए, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उनका चिल्लाना प्रबल हुआ।

24 अतः पिलातुस ने आज्ञा दी, कि उनकी विनती के अनुसार किया जाए।

25 और उसने उस मनुष्य को जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, और जिसे वे माँगते थे, छोड़ दिया; और यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार सौंप दिया।

26 जब वे उसे लिए जा रहे थे, तो उन्होंने शमौन नाम एक कुरेनी को जो गाँव से आ रहा था, पकड़कर उस पर क्रूस को लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे-पीछे ले चले।

27 और लोगों की बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली: और बहुत सारी स्त्रियाँ भी, जो उसके लिये छाती-पीटती और विलाप करती थीं।

28 यीशु ने उनकी ओर फिरकर कहा, “हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ।

29 क्योंकि वे दिन आते हैं, जिनमें लोग कहेंगे, ‘धन्य हैं वे जो बाँझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया।’

30 उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, कि हम पर गिरो, और टीलों से कि हमें ढाँप लो।”

\* 23:7 **यहूदा**: हेरोदेस अरखिलास, हेरोदेस महान का बेटा है। यह वही हेरोदेस है जिसने यहूदा वपतिस्मा देनेवाले को मृत्यु दी थी।



5 जब वे डर गईं, और धरती की ओर मुँह झुकाए रहीं; तो उन्होंने उनसे कहा, “तुम जीविते को मरे हुआओं में क्यों ढूँढती हो? (लूका 1:18, लूका 16:5,6)

6 वह यहाँ नहीं, परन्तु जी उठा है। स्मरण करो कि उसने गलील में रहते हुए तुम से कहा था,

7 ‘अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन जी उठे।’”

8 तब उसकी बातें उनको स्मरण आईं,

9 और कब्र से लौटकर उन्होंने उन ग्यारहों को, और अन्य सब को, ये सब बातें कह सुनाई।

10 जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरियम और उनके साथ की अन्य स्त्रियाँ भी थीं।

11 परन्तु उनकी बातें उन्हें कहानी के समान लगी और उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया।

12 तब पतरस उठकर कब्र पर दौड़ा गया, और झुककर केवल कपड़े पड़े देखे, और जो हुआ था, उससे अचम्भा करता हुआ, अपने घर चला गया।

लूका 24:5-12

13 उसी दिन उनमें से दो जन इम्माऊस नामक एक गाँव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था।

14 और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं, आपस में बातचीत करते जा रहे थे।

15 और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उनके साथ हो लिया।

16 परन्तु उनकी आँखें ऐसी बन्द कर दी गई थी, कि लूका 24:16-17\*।

17 उसने उनसे पूछा, “ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते-चलते आपस में करते हो?” वे उदास से खड़े रह गए।

18 यह सुनकर, उनमें से क्लियुपास नामक एक व्यक्ति ने कहा, “क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है; जो नहीं जानता, कि इन दिनों में उसमें क्या-क्या हुआ है?”

19 उसने उनसे पूछा, “कौन सी बातें?” उन्होंने उससे कहा, “यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थ्य लूका 24:19-24† था।

20 और प्रधान याजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए; और उसे क्रूस पर चढ़वाया।

21 परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा, और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है।

22 और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है, जो भोर को कब्र पर गई थीं।

23 और जब उसका शव न पाया, तो यह कहती हुई आई, कि हमने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है।

24 तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियों ने कहा था, वैसा ही पाया; परन्तु उसको न देखा।”

25 तब उसने उनसे कहा, “हे निबुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों!

26 क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुःख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?”

27 तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया। (लूका 1:45, लूका 24:44, लूका 18:15)

28 इतने में वे उस गाँव के पास पहुँचे, जहाँ वे जा रहे थे, और उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा, कि वह आगे बढ़ना चाहता है।

29 परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, “हमारे साथ रह; क्योंकि संध्या हो चली है और दिन अब बहुत ढल गया है।” तब वह उनके साथ रहने के लिये भीतर गया।

30 जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उनको देने लगा।

31 लूका 24:31-34; और उन्होंने उसे पहचान लिया, और वह उनकी आँखों से छिप गया।

32 उन्होंने आपस में कहा, “जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्रशास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?”

33 वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौट गए, और उन ग्यारहों और उनके साथियों को इकट्ठे पाया।

34 वे कहते थे, “प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को दिखाई दिया है।”

\* 24:16 लूका 24:16-17: यह अभिव्यक्ति केवल इसलिए प्रयोग किया जाता है कि वे नहीं “जानते” थे कि वह कौन था। † 24:19 लूका 24:19-24: परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक शिक्षक। ‡ 24:31 लूका 24:31-34: अंधकार हटा दिया गया था। उन्होंने उसे मसीह के रूप में देखा। उनके संदेह समाप्त हो गए 24:49 वादा यह था कि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा सहायता प्राप्त करना।

35 तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय कैसे पहचाना।

53 और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे।

????? ?? ?????? ?????? ?? ?????? ??????

36 वे ये बातें कह ही रहे थे, कि वह आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ; और उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।”

37 परन्तु वे घबरा गए, और डर गए, और समझे, कि हम किसी भूत को देख रहे हैं।

38 उसने उनसे कहा, “क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह उठते हैं?”

39 मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो, कि मैं वहीं हूँ; मुझे छूकर देखो; क्योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो।”

40 यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ पाँव दिखाए।

41 जब आनन्द के मारे उनको विश्वास नहीं हो रहा था, और आश्चर्य करते थे, तो उसने उनसे पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कुछ भोजन है?”

42 उन्होंने उसे भुनी मछली का टुकड़ा दिया।

43 उसने लेकर उनके सामने खाया।

44 फिर उसने उनसे कहा, “ये मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।”

45 तब उसने पवित्रशास्त्र समझने के लिये उनकी समझ खोल दी।

46 और उनसे कहा, “यह लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुएों में से जी उठेगा, (????? 53:5, ?????? 24:7)

47 और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।

48 तुम इन सब बातों के गवाह हो।

49 और जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।”

????? ?? ?????? ?????? ?? ?????? ??????

50 तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी;

51 और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। (????? 1:9, ?????? 47:5)

52 और वे उसको दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।

## यूहन्ना रचित सुसमाचार

११११

जब्दी का पुत्र यूहन्ना इस पुस्तक का लेखक है। जैसा कि यूह. 21:20,24 से स्पष्ट होता है कि यह वृत्तान्त उस चेले ने लिखा “जिस शिष्य को यीशु प्यार करता था” और यूहन्ना स्वयं अपने लिए लिखता है, “चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था।” वह और उसका भाई याकूब “गर्जन के पुत्र” कहलाते थे (मर. 3:17)। उन्हें यीशु के जीवन की घटनाओं का आँखों देखा गवाह बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

११११ ११११ ११११ ११११११

लगभग ई.स. 50 - 90

यूहन्ना का यह शुभ सन्देश वृत्तान्त सम्भवतः इफिसस से लिखा गया था, लेखन के मुख्य स्थान यहूदिया का ग्रामीण क्षेत्र, सामरिया, गलील, बैतनिय्याह और यरूशलेम रहे होंगे।

१११११११

यूहन्ना रचित शुभ सन्देश वृत्तान्त यहूदियों के लिए लिखा गया था। उसने यहूदियों को यह प्रमाणित करने के लिए यह वृत्तान्त लिखा था कि यीशु ही मसीह है उसने जानकारियाँ इसलिए दीं कि वे “विश्वास करें कि यीशु ही मसीह है और विश्वास करके उसके नाम में जीवन पाएँ।”

१११११११११

यूहन्ना के शुभ सन्देश वृत्तान्त का उद्देश्य है कि, “मसीही विश्वासियों को विश्वास में दृढ़ करके सुरक्षित किया जाये।” जैसा कि यूहन्ना 20:31 में स्पष्ट व्यक्त किया गया है, “ये इसलिए लिखे गये हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।” यूहन्ना प्रकट रूप से घोषणा करता है कि यीशु परमेश्वर है (यूह. 1:1), जिसने सब वस्तुओं को सृजा (यूह. 1:3)। वह ज्योति है (यूह. 1:4; 8:12) और जीवन है (यूह. 1:4; 5:26, 14:6)। यह वृत्तान्त यूहन्ना ने मसीह को परमेश्वर पुत्र सिद्ध करने के लिए भी लिखा था।

११११ १११११

यीशु—परमेश्वर का पुत्र  
रूपरेखा

1. यीशु जीवन का कर्ता है — 1:1-18
2. प्रथम शिष्य को बुलाना — 1:19-51
3. यीशु की सार्वजनिक सेवा — 2:1-16:33
4. प्रधान पुरोहित स्वरूप प्रार्थना — 17:1-26
5. मसीह का कूसीकरण एवं पुनरूत्थान — 18:1-20:10
6. यीशु की पुनरूत्थान सेवा — 20:11-21:25

११११ ११११ ११११ ११

1 ११११ ११११\* वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

4 १११११११ ११११११ १११; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

5 और ज्योति अंधकार में चमकती है; और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया।

6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ, जिसका नाम यूहन्ना था।

7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ।

8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।

9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।

10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना।

11 वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं

13 वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (1 ११११. 4:9)

15 यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, “यह वही है, जिसका मैंने वर्णन किया, कि जो मेरे

\* 1:1 ११११ ११११: इसका अर्थ यह है कि संसार की सृष्टि के पहले से ही “वचन” का अस्तित्व था। वचन यूनानी में यह ‘लोगोस’ के रूप में जाना जाता है, एक ‘वचन’ जिसके द्वारा हम दूसरों से बातचीत करते हैं। † 1:4 ११११११ १११११ ११: परमेश्वर “जीवन” है या “जीवित” परमेश्वर है, घोषित किया गया है, क्योंकि वह स्रोत या जीवन का सोता है







22 फिर जब वह मुर्दों में से जी उठा फिर उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था; और उन्होंने पवित्रशास्त्र और उस वचन का जो यीशु ने कहा था, विश्वास किया।

23 जब वह यरूशलेम में फसह के समय, पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।

24 परन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था,

25 और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है?

### 3

1 फरीसियों में से

2 उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, “हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।”

3 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।”

4 नीकुदेमुस ने उससे कहा, “मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?”

5 यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।

7 अचम्भा न कर, कि मैंने तुझ से कहा, ‘तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।’

8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसकी आवाज सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।”

9 नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, “ये बातें कैसे हो सकती हैं?”

10 यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, “तू इस्राएलियों का गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?

11 मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हमने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।

12 जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ, तो फिर क्यों विश्वास करोगे?

13 कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।

14 और जिस तरह से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।

15 ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।

16 “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

19 और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे।

20 क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।

21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।”

22 इसके बाद यीशु और उसके चले यहूदिया देश में आए; और वह वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।

\* 3:1 राष्ट्र के महान परिषद या “महासभा,” का एक सदस्य। † 3:3 वह क्या कहना चाहता था उसकी निश्चितता और उसके महत्त्व को मजबूत अभिपुष्टि की अभिव्यक्ति को संकेत करता है। ‡ 3:5 “जल” यहाँ स्पष्ट रूप से “बपतिस्मा” को प्रकट करता है।

23 और यूहन्ना भी सालेम के निकट [2][2][2][2] में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।

24 क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।

25 वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ।

26 और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उससे कहा, “हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिसकी तूने गवाही दी है; देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।”

27 यूहन्ना ने उत्तर दिया, “जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।

28 तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ।’ ([2][2][2]. 1:20, [2][2][2]. 3:1)

29 जिसकी दूल्हन है, वही दूल्हा है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है।

30 अवश्य है कि वह बढे और मैं घटूँ।

31 “जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है। ([2][2][2]. 8:23)

32 जो कुछ उसने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता।

33 जिसने उसकी गवाही ग्रहण कर ली उसने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है।

34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।

35 पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं।

36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।”

## 4

[2][2][2] [2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]

§ 3:23 [2][2][2]: “इनोन” या “ऐनोन” शब्द का अर्थ “एक सोता” है।

उत्तर-पूर्व में, एबाल पर्वत और गिरिज्जीम पर्वत के बीच में स्थित हैं। \* 4:5 [2][2][2][2]: यह नगर करीब आठ मील दूर सामरिया नामक नगर से \* 4:10 [2][2][2] [2] [2]: मृत और स्थिर जल के बदले यहूदी लोग जीवन के जल को सोता या चलती धाराओं के रूप में निरूपित अभिव्यक्ति के लिए इस्तेमाल करते हैं। † 4:14 [2] [2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2]: यीशु ने यहाँ पर बिना सन्देह के अपनी ही शिक्षा, अपना “अनुग्रह,” अपनी “आत्मा” और उसके सुसमाचार को गले लगाने से जो लाभ आत्मा में आते हैं, को संदर्भित किया।

1 फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है।

2 (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन् उसके चले बपतिस्मा देते थे),

3 तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया,

4 और उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था।

5 इसलिए वह [2][2][2][2]\* नामक सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।

6 और याकूब का कुआँ भी वहीं था। यीशु मार्ग का थका हुआ उस कुएँ पर ऐसे ही बैठ गया। और यह बात दोपहर के समय हुई।

7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई। यीशु ने उससे कहा, “मुझे पानी पिला।”

8 क्योंकि उसके चले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे।

9 उस सामरी स्त्री ने उससे कहा, “तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?” क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते। ([2][2][2][2]. 108:28)

10 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है, ‘मुझे पानी पिला,’ तो तू उससे माँगती, और वह तुझे [2][2][2] [2] [2]\* देता।”

11 स्त्री ने उससे कहा, “हे स्वामी, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कुआँ गहरा है; तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया?”

12 क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिसने हमें यह कुआँ दिया; और आप ही अपनी सन्तान, और अपने पशुओं समेत उसमें से पीया?”

13 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा,

14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन् [2][2] [2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2]; वह उसमें एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।”

15 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।”

16 यीशु ने उससे कहा, “जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।”

17 स्त्री ने उत्तर दिया, “मैं बिना पति की हूँ।” यीशु ने उससे कहा, “तू ठीक कहती है, मैं बिना पति की हूँ।”

18 क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तूने सच कहा है।”

19 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।

20 हमारे पूर्वजों ने इसी पहाड़ पर भजन किया, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।” (2:22-29)

21 यीशु ने उससे कहा, “हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे, न यरूशलेम में।

22 तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं, उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। (2:22-29)

23 परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है।

24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।”

25 स्त्री ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।”

26 यीशु ने उससे कहा, “मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।”

27 इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; फिर भी किसी ने न पूछा, “तू क्या चाहता है?” या “किस लिये उससे बातें करता है?”

28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी,  
29 “आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?”

30 तब वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।  
31 इतने में उसके चेले यीशु से यह विनती करने लगे, “हे रब्बी, कुछ खा ले।”

32 परन्तु उसने उनसे कहा, “मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।”

33 तब चेलों ने आपस में कहा, “क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?”

34 यीशु ने उनसे कहा, “मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ।

35 क्या तुम नहीं कहते, ‘कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?’ देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।

36 और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है, ताकि बोनवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।

37 क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है: ‘बोनवाला और है और काटनेवाला और।’ (6:15)

38 मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा जिसमें तुम ने परिश्रम नहीं किया औरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।”

39 और उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; जिसने यह गवाही दी थी, कि उसने सब कुछ जो मैंने किया है, मुझे बता दिया।

40 तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उससे विनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह, और वह वहाँ दो दिन तक रहा।

41 और उसके वचन के कारण और भी बहुतों ने विश्वास किया।

42 और उस स्त्री से कहा, “अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।”

43 फिर उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से निकलकर गलील को गया।  
44 क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।

45 जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उससे मिले; क्योंकि जितने काम उसने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्होंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे।

46 तब वह फिर गलील के काना में आया, जहाँ उसने पानी को दाखरस बनाया था। वहाँ राजा का एक कर्मचारी था जिसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था।

47 वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उससे विनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे: क्योंकि वह मरने पर था।

48 यीशु ने उससे कहा, “जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे।” (22:22. 4:2)

49 राजा के कर्मचारी ने उससे कहा, “हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहले चल।”

50 यीशु ने उससे कहा, “जा, तेरा पुत्र जीवित है।” उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात पर विश्वास किया और चला गया।

51 वह मार्ग में जा ही रहा था, कि उसके दास उससे आ मिले और कहने लगे, “तेरा लड़का जीवित है।”

52 उसने उनसे पूछा, “किस घड़ी वह अच्छा होने लगा?” उन्होंने उससे कहा, “कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया।”

53 तब पिता जान गया कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उससे कहा, “तेरा पुत्र जीवित है,” और उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

54 यह दूसरा चिन्ह था जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

## 5

1 इन बातों के पश्चात् यहूदियों का एक पर्व हुआ,

और यीशु यरूशलेम को गया।

2 यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में 22\* कहलाता है, और उसके पाँच ओसारे हैं।

3 इनमें बहुत से बीमार, अंधे, लँगड़े और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे।

4 क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता, वह चंगा हो जाता था, चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।

5 वहाँ एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था।

6 यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, “क्या तू चंगा होना चाहता है?”

7 उस बीमार ने उसको उत्तर दिया, “हे स्वामी, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो

मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुँचते-पहुँचते दूसरा मुझसे पहले उतर जाता है।”

8 यीशु ने उससे कहा, “उठ, अपनी खाट उठा और चल फिर।”

9 वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।

10 वह सब्त का दिन था। इसलिए यहूदी उससे जो चंगा हुआ था, कहने लगे, “आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठानी उचित नहीं।” (22:22. 17:21)

11 उसने उन्हें उत्तर दिया, “जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझसे कहा, ‘अपनी खाट उठाकर चल फिर।’”

12 उन्होंने उससे पूछा, “वह कौन मनुष्य है, जिसने तुझ से कहा, ‘खाट उठा और, चल फिर?’”

13 परन्तु जो चंगा हो गया था, वह नहीं जानता था कि वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहाँ से हट गया था।

14 इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उसने उससे कहा, “देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।”

15 उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया, कि जिसने मुझे चंगा किया, वह यीशु है।

16 इस कारण यहूदी यीशु को 22†, क्योंकि वह ऐसे-ऐसे काम सब्त के दिन करता था।

17 इस पर यीशु ने उनसे कहा, “मेरा पिता परमेश्वर अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।”

18 इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कहकर, अपने आपको परमेश्वर के तुल्य ठहराता था।

22\* 22 222222

19 इस पर यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।

20 क्योंकि 22‡ और जो-जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।

\* 5:2 22: दया का घर। इसे अपनी मजबूत चिकित्सा गुणों के कारण कहा जाता था। † 5:16 22: उन लोगों ने उनका विरोध किया; उनकी लोकप्रियता को नष्ट करने के लिए; उनके चरित्र को खराब करने का प्रयास किया; ‡ 5:20 22: विशेष, अवर्णनीय, असीमित प्रेम जो परमेश्वर को अपने एकलौते पुत्र के लिए है।

21 क्योंकि जैसा पिता मरे हुआ को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है।

22 पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है,

23 इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें; जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।

24 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

25 “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगे।

26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे;

27 वरन् उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है।

28 इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।

29 जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है, वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (22:22-23. 12:2)

22:22-23 22:24-25 22:26-27 22:28-29

30 “मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।

31 यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूँ; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।

32 एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी जो गवाही वह देता है, वह सच्ची है।

33 तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उसने सच्चाई की गवाही दी है।

34 22:30-31 22:32-33 22:34-35 22:36-37 22:38-39 22:40-41 22:42-43 22:44-45 22:46-47 22:48-49 22:50-51 22:52-53 22:54-55 22:56-57 22:58-59 22:60-61 22:62-63 22:64-65 22:66-67 22:68-69 22:70-71 22:72-73 22:74-75 22:76-77 22:78-79 22:80-81 22:82-83 22:84-85 22:86-87 22:88-89 22:90-91 22:92-93 22:94-95 22:96-97 22:98-99 22:100-101 22:102-103 22:104-105 22:106-107 22:108-109 22:110-111 22:112-113 22:114-115 22:116-117 22:118-119 22:120-121 22:122-123 22:124-125 22:126-127 22:128-129 22:130-131 22:132-133 22:134-135 22:136-137 22:138-139 22:140-141 22:142-143 22:144-145 22:146-147 22:148-149 22:150-151 22:152-153 22:154-155 22:156-157 22:158-159 22:160-161 22:162-163 22:164-165 22:166-167 22:168-169 22:170-171 22:172-173 22:174-175 22:176-177 22:178-179 22:180-181 22:182-183 22:184-185 22:186-187 22:188-189 22:190-191 22:192-193 22:194-195 22:196-197 22:198-199 22:200-201 22:202-203 22:204-205 22:206-207 22:208-209 22:210-211 22:212-213 22:214-215 22:216-217 22:218-219 22:220-221 22:222-223 22:224-225 22:226-227 22:228-229 22:230-231 22:232-233 22:234-235 22:236-237 22:238-239 22:240-241 22:242-243 22:244-245 22:246-247 22:248-249 22:250-251 22:252-253 22:254-255 22:256-257 22:258-259 22:260-261 22:262-263 22:264-265 22:266-267 22:268-269 22:270-271 22:272-273 22:274-275 22:276-277 22:278-279 22:280-281 22:282-283 22:284-285 22:286-287 22:288-289 22:290-291 22:292-293 22:294-295 22:296-297 22:298-299 22:300-301 22:302-303 22:304-305 22:306-307 22:308-309 22:310-311 22:312-313 22:314-315 22:316-317 22:318-319 22:320-321 22:322-323 22:324-325 22:326-327 22:328-329 22:330-331 22:332-333 22:334-335 22:336-337 22:338-339 22:340-341 22:342-343 22:344-345 22:346-347 22:348-349 22:350-351 22:352-353 22:354-355 22:356-357 22:358-359 22:360-361 22:362-363 22:364-365 22:366-367 22:368-369 22:370-371 22:372-373 22:374-375 22:376-377 22:378-379 22:380-381 22:382-383 22:384-385 22:386-387 22:388-389 22:390-391 22:392-393 22:394-395 22:396-397 22:398-399 22:400-401 22:402-403 22:404-405 22:406-407 22:408-409 22:410-411 22:412-413 22:414-415 22:416-417 22:418-419 22:420-421 22:422-423 22:424-425 22:426-427 22:428-429 22:430-431 22:432-433 22:434-435 22:436-437 22:438-439 22:440-441 22:442-443 22:444-445 22:446-447 22:448-449 22:450-451 22:452-453 22:454-455 22:456-457 22:458-459 22:460-461 22:462-463 22:464-465 22:466-467 22:468-469 22:470-471 22:472-473 22:474-475 22:476-477 22:478-479 22:480-481 22:482-483 22:484-485 22:486-487 22:488-489 22:490-491 22:492-493 22:494-495 22:496-497 22:498-499 22:500-501 22:502-503 22:504-505 22:506-507 22:508-509 22:510-511 22:512-513 22:514-515 22:516-517 22:518-519 22:520-521 22:522-523 22:524-525 22:526-527 22:528-529 22:530-531 22:532-533 22:534-535 22:536-537 22:538-539 22:540-541 22:542-543 22:544-545 22:546-547 22:548-549 22:550-551 22:552-553 22:554-555 22:556-557 22:558-559 22:560-561 22:562-563 22:564-565 22:566-567 22:568-569 22:570-571 22:572-573 22:574-575 22:576-577 22:578-579 22:580-581 22:582-583 22:584-585 22:586-587 22:588-589 22:590-591 22:592-593 22:594-595 22:596-597 22:598-599 22:600-601 22:602-603 22:604-605 22:606-607 22:608-609 22:610-611 22:612-613 22:614-615 22:616-617 22:618-619 22:620-621 22:622-623 22:624-625 22:626-627 22:628-629 22:630-631 22:632-633 22:634-635 22:636-637 22:638-639 22:640-641 22:642-643 22:644-645 22:646-647 22:648-649 22:650-651 22:652-653 22:654-655 22:656-657 22:658-659 22:660-661 22:662-663 22:664-665 22:666-667 22:668-669 22:670-671 22:672-673 22:674-675 22:676-677 22:678-679 22:680-681 22:682-683 22:684-685 22:686-687 22:688-689 22:690-691 22:692-693 22:694-695 22:696-697 22:698-699 22:700-701 22:702-703 22:704-705 22:706-707 22:708-709 22:710-711 22:712-713 22:714-715 22:716-717 22:718-719 22:720-721 22:722-723 22:724-725 22:726-727 22:728-729 22:730-731 22:732-733 22:734-735 22:736-737 22:738-739 22:740-741 22:742-743 22:744-745 22:746-747 22:748-749 22:750-751 22:752-753 22:754-755 22:756-757 22:758-759 22:760-761 22:762-763 22:764-765 22:766-767 22:768-769 22:770-771 22:772-773 22:774-775 22:776-777 22:778-779 22:780-781 22:782-783 22:784-785 22:786-787 22:788-789 22:790-791 22:792-793 22:794-795 22:796-797 22:798-799 22:800-801 22:802-803 22:804-805 22:806-807 22:808-809 22:810-811 22:812-813 22:814-815 22:816-817 22:818-819 22:820-821 22:822-823 22:824-825 22:826-827 22:828-829 22:830-831 22:832-833 22:834-835 22:836-837 22:838-839 22:840-841 22:842-843 22:844-845 22:846-847 22:848-849 22:850-851 22:852-853 22:854-855 22:856-857 22:858-859 22:860-861 22:862-863 22:864-865 22:866-867 22:868-869 22:870-871 22:872-873 22:874-875 22:876-877 22:878-879 22:880-881 22:882-883 22:884-885 22:886-887 22:888-889 22:890-891 22:892-893 22:894-895 22:896-897 22:898-899 22:900-901 22:902-903 22:904-905 22:906-907 22:908-909 22:910-911 22:912-913 22:914-915 22:916-917 22:918-919 22:920-921 22:922-923 22:924-925 22:926-927 22:928-929 22:930-931 22:932-933 22:934-935 22:936-937 22:938-939 22:940-941 22:942-943 22:944-945 22:946-947 22:948-949 22:950-951 22:952-953 22:954-955 22:956-957 22:958-959 22:960-961 22:962-963 22:964-965 22:966-967 22:968-969 22:970-971 22:972-973 22:974-975 22:976-977 22:978-979 22:980-981 22:982-983 22:984-985 22:986-987 22:988-989 22:990-991 22:992-993 22:994-995 22:996-997 22:998-999 22:1000-1001 22:1002-1003 22:1004-1005 22:1006-1007 22:1008-1009 22:1010-1011 22:1012-1013 22:1014-1015 22:1016-1017 22:1018-1019 22:1020-1021 22:1022-1023 22:1024-1025 22:1026-1027 22:1028-1029 22:1030-1031 22:1032-1033 22:1034-1035 22:1036-1037 22:1038-1039 22:1040-1041 22:1042-1043 22:1044-1045 22:1046-1047 22:1048-1049 22:1050-1051 22:1052-1053 22:1054-1055 22:1056-1057 22:1058-1059 22:1060-1061 22:1062-1063 22:1064-1065 22:1066-1067 22:1068-1069 22:1070-1071 22:1072-1073 22:1074-1075 22:1076-1077 22:1078-1079 22:1080-1081 22:1082-1083 22:1084-1085 22:1086-1087 22:1088-1089 22:1090-1091 22:1092-1093 22:1094-1095 22:1096-1097 22:1098-1099 22:1100-1101 22:1102-1103 22:1104-1105 22:1106-1107 22:1108-1109 22:1110-1111 22:1112-1113 22:1114-1115 22:1116-1117 22:1118-1119 22:1120-1121 22:1122-1123 22:1124-1125 22:1126-1127 22:1128-1129 22:1130-1131 22:1132-1133 22:1134-1135 22:1136-1137 22:1138-1139 22:1140-1141 22:1142-1143 22:1144-1145 22:1146-1147 22:1148-1149 22:1150-1151 22:1152-1153 22:1154-1155 22:1156-1157 22:1158-1159 22:1160-1161 22:1162-1163 22:1164-1165 22:1166-1167 22:1168-1169 22:1170-1171 22:1172-1173 22:1174-1175 22:1176-1177 22:1178-1179 22:1180-1181 22:1182-1183 22:1184-1185 22:1186-1187 22:1188-1189 22:1190-1191 22:1192-1193 22:1194-1195 22:1196-1197 22:1198-1199 22:1200-1201 22:1202-1203 22:1204-1205 22:1206-1207 22:1208-1209 22:1210-1211 22:1212-1213 22:1214-1215 22:1216-1217 22:1218-1219 22:1220-1221 22:1222-1223 22:1224-1225 22:1226-1227 22:1228-1229 22:1230-1231 22:1232-1233 22:1234-1235 22:1236-1237 22:1238-1239 22:1240-1241 22:1242-1243 22:1244-1245 22:1246-1247 22:1248-1249 22:1250-1251 22:1252-1253 22:1254-1255 22:1256-1257 22:1258-1259 22:1260-1261 22:1262-1263 22:1264-1265 22:1266-1267 22:1268-1269 22:1270-1271 22:1272-1273 22:1274-1275 22:1276-1277 22:1278-1279 22:1280-1281 22:1282-1283 22:1284-1285 22:1286-1287 22:1288-1289 22:1290-1291 22:1292-1293 22:1294-1295 22:1296-1297 22:1298-1299 22:1300-1301 22:1302-1303 22:1304-1305 22:1306-1307 22:1308-1309 22:1310-1311 22:1312-1313 22:1314-1315 22:1316-1317 22:1318-1319 22:1320-1321 22:1322-1323 22:1324-1325 22:1326-1327 22:1328-1329 22:1330-1331 22:1332-1333 22:1334-1335 22:1336-1337 22:1338-1339 22:1340-1341 22:1342-1343 22:1344-1345 22:1346-1347 22:1348-1349 22:1350-1351 22:1352-1353 22:1354-1355 22:1356-1357 22:1358-1359 22:1360-1361 22:1362-1363 22:1364-1365 22:1366-1367 22:1368-1369 22:1370-1371 22:1372-1373 22:1374-1375 22:1376-1377 22:1378-1379 22:1380-1381 22:1382-1383 22:1384-1385 22:1386-1387 22:1388-1389 22:1390-1391 22:1392-1393 22:1394-1395 22:1396-1397 22:1398-1399 22:1400-1401 22:1402-1403 22:1404-1405 22:1406-1407 22:1408-1409 22:1410-1411 22:1412-1413 22:1414-1415 22:1416-1417 22:1418-1419 22:1420-1421 22:1422-1423 22:1424-1425 22:1426-1427 22:1428-1429 22:1430-1431 22:1432-1433 22:1434-1435 22:1436-1437 22:1438-1439 22:1440-1441 22:1442-1443 22:1444-1445 22:1446-1447 22:1448-1449 22:1450-1451 22:1452-1453 22:1454-1455 22:1456-1457 22:1458-1459 22:1460-1461 22:1462-1463 22:1464-1465 22:1466-1467 22:1468-1469 22:1470-1471 22:1472-1473 22:1474-1475 22:1476-1477 22:1478-1479 22:1480-1481 22:1482-1483 22:1484-1485 22:1486-1487 22:1488-1489 22:1490-1491 22:1492-1493 22:1494-1495 22:1496-1497 22:1498-1499 22:1500-1501 22:1502-1503 22:1504-1505 22:1506-1507 22:1508-1509 22:1510-1511 22:1512-1513 22:1514-1515 22:1516-1517 22:1518-1519 22:1520-1521 22:1522-1523 22:1524-1525 22:1526-1527 22:1528-1529 22:1530-1531 22:1532-1533 22:1534-1535 22:1536-1537 22:1538-1539 22:1540-1541 22:1542-1543 22:1544-1545 22:1546-1547 22:1548-1549 22:1550-1551 22:1552-1553 22:1554-1555 22:1556-1557 22:1558-1559 22:1560-1561 22:1562-1563 22:1564-1565 22:1566-1567 22:1568-1569 22:1570-1571 22:1572-1573 22:1574-1575 22:1576-1577 22:1578-1579 22:1580-1581 22:1582-1583 22:1584-1585 22:1586-1587 22:1588-1589 22:1590-1591 22:1592-1593 22:1594-1595 22:1596-1597 22:1598-1599 22:1600-1601 22:1602-1603 22:1604-1605 22:1606-1607 22:1608-1609 22:1610-1611 22:1612-1613 22:1614-1615 22:1616-1617 22:1618-1619 22:1620-1621 22:1622-1623 22:1624-1625 22:1626-1627 22:1628-1629 22:1630-1631 22:1632-1633 22:1634-1635 22:1636-1637 22:1638-1639 22:1640-1641 22:1642-1643 22:1644-1645 22:1646-1647 22:1648-1649 22:1650-1651 22:1652-1653 22:1654-1655 22:1656-1657 22:1658-1659 22:1660-1661 22:1662-1663 22:1664-1665 22:1666-1667 22:1668-1669 22:1670-1671 22:1672-1673 22:1674-1675 22:1676-1677 22:1678-1679 22:1680-1681 22:1682-1683 22:1684-1685 22:1686-1687 22:1688-1689 22:1690-1691 22:1692-1693 22:1694-1695 22:1696-1697 22:1698-1699 22:1700-1701 22:1702-1703 22:1704-1705 22:1706-1707 22:1708-1709 22:1710-1711 22:1712-1713 22:1714-1715 22:1716-1717 22:1718-1719 22:1720-1721 22:1722-1723 22:1724-1725 22:1726-1727 22:1728-1729 22:1730-1731 22:1732-1733 22:1734-1735 22:1736-1737 22:1738-1739 22:1740-1741 22:1742-1743 22:1744-1745 22:1746-1747 22:1748-1749 22:1750-1751 22:1752-1753 22:1754-1755 22:1756-1757 22:1758-1759 22:1760-1761 22:1762-1763 22:1764-1765 22:1766-1767 22:1768-1769 22:1770-1771 22:1772-1773 22:1774-1775 22:1776-1777 22:1778-1779 22:1780-1781 22:1782-1783 22:1784-1785 22:1786-1787 22:1788-1789 22:1790-1791 22:1792-1793 22:1794-1795 22:1796-1797 22:1798-1799 22:1800-1801 22:1802-1803 22:1804-1805 22:1806-1807 22:1808-1809 22:1810-1811 22:1812-1813 22:1814-1815 22:1816-1817 22:1818-1819 22:1820-1821 22:1822-1823 22:1824-1825 22:1826-1827 22:1828-1829 22:1830-1831 22:1832-1833 22:1834-1835 22:1836-1837 22:1838-1839 22:1840-1841 22:1842-1843 22:1844-1845 22:1846-1847 22:1848-1849 22:1850-1851 22:1852-1853 22:1854-1855 22:1856-1857 22:1858-1859 22:1860-1861 22:1862-1863 22:1864-1865 22:1866-1867 22:1868-1869 22:1870-1871 22:1872-1873 22:1874-1875 22:1876-1877 22:1878-1879 22:1880-1881 22:1882-1883 22:1884-1885 22:1886-1887 22:1888-1889 22:1890-1891 22:18







63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।

64 परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।" क्योंकि यीशु तो पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं; और कौन मुझे पकड़वाएगा।

65 और उसने कहा, "इसलिए मैंने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।"

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

66 इस पर उसके चेहों में से बहुत सारे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।

67 तब यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?"

68 शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।"

69 और हमने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।"

70 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तो भी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।"

71 यह उसने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा, क्योंकि यही जो उन बारहों में से था, उसे पकड़वाने को था।

## 7

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

1 इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिए वह यहूदिया में फिरना न चाहता था।

2 और यहूदियों का झोपड़ियों का पर्व निकट था। (॥॥॥॥॥॥. 23:34)

3 इसलिए उसके भाइयों ने उससे कहा, "यहाँ से कूच करके यहूदिया में चला जा, कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चले भी देखें।"

4 क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे: यदि तू यह काम करता है, तो अपने आपको जगत पर प्रगट कर।"

5 क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।

6 तब यीशु ने उनसे कहा, "मेरा समय अभी नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिये सब समय है।

7 ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥\*, परन्तु वह मुझसे बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ, कि उसके काम बुरे हैं।

8 तुम पर्व में जाओ; मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।"

9 वह उनसे ये बातें कहकर गलील ही में रह गया।

॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥

10 परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त होकर गया।

11 यहूदी पर्व में उसे यह कहकर ढूँढने लगे कि "वह कहाँ है?"

12 और लोगों में उसके विषय चुपके-चुपके बहुत सी बातें हुई: कितने कहते थे, "वह भला मनुष्य है।" और कितने कहते थे, "नहीं, वह लोगों को भरमाता है।"

13 तो भी यहूदियों के भय के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था।

॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

14 और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा।

15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, "इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?"

16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।

17 ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।

18 जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।

19 क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तो भी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?"

20 लोगों ने उत्तर दिया; "तुझ में दुष्टात्मा है! कौन तुझे मार डालना चाहता है?"

21 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैंने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो।

22 इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है, यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु पूर्वजों से चली

\* 7:7 ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥: तुम संसार के विरोध में कोई सिद्धान्त के दावे पेश नहीं करते। † 7:17 ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥: वस्तुतः यदि कोई मनुष्य इच्छा करता है या परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार है।

आई है, और तुम सब के दिन को मनुष्य का खतना करते हो। (2222. 17:10-13, 222222. 12:3)

23 जब सब के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिए क्रोध करते हो, कि मैंने सब के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया।

24 मुँह देखकर न्याय न करो, परन्तु ठीक-ठीक न्याय करो। (2222. 11:3, 2222. 8:15)

2222 2222 22 222222 222

25 तब कितने यरूशलेमवासी कहने लगे, “क्या यह वह नहीं, जिसके मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है?”

26 परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उससे कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच-सच जान लिया है; कि यही मसीह है?

27 इसको तो हम जानते हैं, कि यह कहाँ का है; परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है।”

28 तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकारके कहा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते।

29 मैं उसे जानता हूँ; क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।”

30 इस पर उन्होंने उसे पकड़ना चाहा तो भी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था।

31 और भीड़ में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, “मसीह जब आएगा, तो क्या इससे अधिक चिन्हों को दिखाएगा जो इसने दिखाए?”

22222 22 2222222 22 2222222

32 फरीसियों ने लोगों को उसके विषय में ये बातें चुपके-चुपके करते सुना; और प्रधान याजकों और फरीसियों ने उसे पकड़ने को सिपाही भेजे।

33 इस पर यीशु ने कहा, “मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ; तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा।

34 तुम मुझे ढूँढोगे, परन्तु नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

35 यहूदियों ने आपस में कहा, “यह कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या वह उन यहूदियों के पास जाएगा जो यूनानियों में तितर-बितर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा?”

36 यह क्या बात है जो उसने कही, कि ‘तुम मुझे ढूँढोगे, परन्तु न पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते?’”

22222-22 22 2222222

37 फिर पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकारकर कहा, “यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। (2222. 55:1)

38 22 2222 22 22222222 222222, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, ‘उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।’”

39 उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। (2222. 44:3)

40 तब भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुनकर कहा, “सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है।” (2222222 21:11)

41 औरों ने कहा, “यह मसीह है,” परन्तु किसी ने कहा, “क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा?”

42 क्या पवित्रशास्त्र में नहीं लिखा कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गाँव से आएगा, जहाँ दाऊद रहता था?” (2222. 11:1, 222222 5:2)

43 अतः उसके कारण लोगों में फूट पड़ी।

44 उनमें से कितने उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला।

45 तब सिपाही प्रधान याजकों और फरीसियों के पास आए, और उन्होंने उनसे कहा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”

222222 222222 22 2222222222

46 सिपाहियों ने उत्तर दिया, “किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की।”

47 फरीसियों ने उनको उत्तर दिया, “क्या तुम भी भरमाए गए हो?”

48 क्या शासकों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है?

49 परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, श्रापित हैं।”

50 नीकुदेमुस ने, (जो पहले उसके पास आया था और उनमें से एक था), उनसे कहा,

51 “क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वह क्या करता है; दोषी ठहराती है?”

‡ 7:38 22 2222 22 22222222 222222: वह जो मुझे मसीह के रूप में स्वीकार करता है और उद्धार के लिए मुझ में विश्वास करता है।

52 उन्होंने उसे उत्तर दिया, “क्या तू भी गलील का है? ढूँढ़ और देख, कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का।”

53 तब सब कोई अपने-अपने घर चले गए।

## 8

११११११११११११ ११ ११११११

1 यीशु ११११११ ११ ११११११\* पर गया।

2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।

3 तब शास्त्रियों और फरीसियों ने एक स्त्री को लाकर जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसको बीच में खड़ा करके यीशु से कहा,

4 “हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई है।

5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पथराव करें; अतः तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?” (१११११११. 20:10)

6 उन्होंने उसको परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएँ, परन्तु यीशु झुककर उँगली से भूमि पर लिखने लगा।

7 जब वे उससे पूछते रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, “तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।” (१११११. 2:1)

8 और फिर झुककर भूमि पर उँगली से लिखने लगा।

9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक-एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।

10 यीशु ने सीधे होकर उससे कहा, “हे नारी, वे कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?”

11 उसने कहा, “हे प्रभु, किसी ने नहीं।” यीशु ने कहा, “मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।”

१११११ ११११ ११ ११११११११

12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, “जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।” (१११११. 12:46)

13 फरीसियों ने उससे कहा; “तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।”

14 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तो भी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि १११११ १११११ ११११ ११११ ११११ ११ ११११ ११११ और

कहाँ को जाता हूँ? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ।

15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।

16 और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं पिता के साथ हूँ, जिसने मुझे भेजा है।

17 और तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है।

18 एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा।” (११११११. 19:15)

19 उन्होंने उससे कहा, “तेरा पिता कहाँ है?” यीशु ने उत्तर दिया, “न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को, यदि मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।”

20 ये बातें उसने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।

१११११ १११११ १११११ ११ ११११

21 उसने फिर उनसे कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे; जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

22 इस पर यहूदियों ने कहा, “क्या वह अपने आपको मार डालेगा, जो कहता है, ‘जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते?’”

23 उसने उनसे कहा, “तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं।

24 इसलिए मैंने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो अपने पापों में मरोगे।”

25 उन्होंने उससे कहा, “तू कौन है?” यीशु ने उनसे कहा, “वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ।

26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैंने उससे सुना है, वही जगत से कहता हूँ।”

27 वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है।

28 तब यीशु ने कहा, “जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता परमेश्वर ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।

\* 8:1 ११११११ ११ ११११११११: यरूशलेम के पूर्व से सीधे करीब एक मील की दूरी पर यह पहाड़ हैं † 8:14 ११११ १११११११ ११११, ११ ११११ ११११११११: मैं जानता हूँ किस अधिकार के द्वारा मैं यह करता हूँ; मैं जानता हूँ किसके द्वारा मैं भेजा गया हूँ

29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिससे वह प्रसन्न होता है।”

30 वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया।

2222 22222222 22222222 222222

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, “यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चले ठहरोगे।

32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।”

33 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “हम तो अब्राहम के वंश से हैं, और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्यों कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?”

34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।

35 और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है। (27:22. 4:30)

36 इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

37 मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंश से हो; तो भी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिए तुम मुझे मार डालना चाहते हो।

38 मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता के यहाँ देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुम ने अपने पिता से सुना है।”

39 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “हमारा पिता तो अब्राहम है।” यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अब्राहम के सन्तान होते, तो अब्राहम के समान काम करते।

40 परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिसने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो अब्राहम ने नहीं किया था।

41 तुम अपने पिता के समान काम करते हो” उन्होंने उससे कहा, “हम व्यभिचार से नहीं जन्मे, हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर।”

42 यीशु ने उनसे कहा, “यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकलकर आया हूँ; मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।

43 तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि मेरा वचन सुन नहीं सकते।

44 2222 22222 22222 222222 22 22, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं; जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है। (27:22/22. 13:10)

45 परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसलिए तुम मेरा विश्वास नहीं करते।

46 तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते?

47 22 222222222 22 22222 22S, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिए नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।”

2222 22 22222222

48 यह सुन यहूदियों ने उससे कहा, “क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है?”

49 यीशु ने उत्तर दिया, “मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो।

50 परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, हाँ, एक है जो चाहता है, और न्याय करता है।

51 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा।”

52 लोगों ने उससे कहा, “अब हमने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है: अब्राहम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं और तू कहता है, यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा।”

53 हमारा पिता अब्राहम तो मर गया, क्या तू उससे बड़ा है? और भविष्यद्वक्ता भी मर गए, तू अपने आपको क्या ठहराता है?”

54 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।

55 और तुम ने तो उसे नहीं जाना: परन्तु मैं उसे जानता हूँ; और यदि कहुँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो

‡ 8:44 2222 22222 22222 22222 22 22: यही कारण है, तुम्हारे पास गुस्सा, शैतान का स्वभाव, या शैतान की आत्मा है। § 8:47 22 22222222 22 22222 22: वह जो परमेश्वर से प्रेम, भय, और सम्मान करता है।



25 उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।”

26 उन्होंने उससे फिर कहा, “उसने तेरे साथ क्या किया? और किस तरह तेरी आँखें खोली?”

27 उसने उनसे कहा, “मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने न सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चले होना चाहते हो?”

28 तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, “तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चले हैं।

29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते की कहाँ का है।”

30 उसने उनको उत्तर दिया, “यह तो अचम्बे की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है तो भी उसने मेरी आँखें खोल दीं।

31 हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है। (22:22-29)

32 जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अंधे की आँखें खोली हों।

33 यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।”

34 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है?” और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

22:22-29

35 यीशु ने सुना, कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उससे भेंट हुई तो कहा, “क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?”

36 उसने उत्तर दिया, “हे प्रभु, वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूँ?”

37 यीशु ने उससे कहा, “तूने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है।”

38 उसने कहा, “हे प्रभु, 22:22-29 22:22 22:22:” और उसे दण्डवत् किया।

39 तब यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ।”

40 जो फरीसी उसके साथ थे, उन्होंने ये बातें सुनकर उससे कहा, “क्या हम भी अंधे हैं?”

41 यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।

## 10

22:22-29 22 22:22-29 22 22:22-29-29

1 “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, 22 22:22 22 22:22 22\*।

2 परन्तु 22 22:22-29 22 22:22 22:22-29 22:22 22: वह भेड़ों का चरवाहा है।

3 उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।

4 और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।

5 परन्तु वे पराए के पीछे नहीं जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं।”

6 यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है।

22:22 22:22-29 22:22-29

7 तब यीशु ने उनसे फिर कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि भेड़ों का द्वार मैं हूँ।

8 जितने मुझसे पहले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी। (22:22-29. 23:1, 22:2. 10:27)

9 द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया-जाया करेगा और चारा पाएगा। (22:2. 118:20)

10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और हत्या करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।

11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। (22:2. 23:1, 22:2. 40:11, 22:2. 34:15)

12 मजदूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़ों को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग

‡ 9:38 22:22 22:22-29 22:22 22:22: यह आभार प्रकट करने की और विश्वास की उमड़ रही अभिव्यक्ति थी। \* 10:1 22 22:22 22 22:22

22: वह जो चुपचाप और गुप्त रूप से दूसरों की सम्पत्ति दूर ले जाता है। † 10:2 22 22:22-29 22 22:22 22:22-29 22:22 22: यह एक तरीका था जिसमें एक चरवाहा अपने झुण्ड के बीच में प्रवेश करता था।





## 11

११:१-११:११

1 मरियम और उसकी बहन मार्था के गाँव बैतनिय्याह का लाज़र नामक एक मनुष्य बीमार था।

2 यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था, इसी का भाई लाज़र बीमार था।

3 तब उसकी बहनों ने उसे कहला भेजा, “हे प्रभु, देख, **११:११-११:११**\*, वह बीमार है।”

4 यह सुनकर यीशु ने कहा, **“यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।”**

5 और यीशु मार्था और उसकी बहन और लाज़र से प्रेम रखता था।

6 जब उसने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया।

7 फिर इसके बाद उसने चेलों से कहा, **“आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।”**

8 चेलों ने उससे कहा, “हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे पथराव करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है?”

9 यीशु ने उत्तर दिया, **“क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है।”**

10 परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं।”

11 उसने ये बातें कहीं, और इसके बाद उनसे कहने लगा, **“हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।”**

12 तब चेलों ने उससे कहा, “हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।”

13 यीशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उसने नींद से सो जाने के विषय में कहा।

14 तब यीशु ने उनसे साफ कह दिया, **“लाज़र मर गया है।”**

15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम विश्वास करो। परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।”

16 तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपने साथ के चेलों से कहा, **“आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।”**

११:१२-११:१२

17 फिर यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।

18 बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था।

19 और बहुत से यहूदी मार्था और मरियम के पास उनके भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए थे।

20 जब मार्था यीशु के आने का समाचार सुनकर उससे भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।

21 मार्था ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।

22 और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।”

23 यीशु ने उससे कहा, **“तेरा भाई जी उठेगा।”**

24 मार्था ने उससे कहा, **“मैं जानती हूँ, अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।” (११:१२-११:१२)**

25 यीशु ने उससे कहा, **“११:१२-११:१२ †, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तो भी जीएगा।”**

26 और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?”

27 उसने उससे कहा, “हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।”

११:१३-११:१३

28 यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, “गुरु यहीं है, और तुझे बुलाता है।”

29 वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके पास आई।

30 (यीशु अभी गाँव में नहीं पहुँचा था, परन्तु उसी स्थान में था जहाँ मार्था ने उससे भेंट की थी।)

31 तब जो यहूदी उसके साथ घर में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरन्त उठकर बाहर गई है और यह समझकर कि वह कब्र पर रोने को जाती है, उसके पीछे हो लिये।

32 जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पाँवों पर गिरकर कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।”

\* 11:3 ११:१२-११:१२ †: इस परिवार के सदस्य कुछ विशेष लोगों में और हमारे प्रभु के अन्तरंग मित्रों में से एक थे † 11:25 ११:२५-११:२५ †: अर्थात् वह पुनरुत्थान का कर्ता है या उसके होने का कारण है।



4 परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती नामक एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा,

5 “यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर गरीबों को क्यों न दिया गया?”

6 उसने यह बात इसलिए न कही, कि उसे गरीबों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिए कि वह चोर था और उसके पास उनकी थैली रहती थी, और उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था।

7 यीशु ने कहा, “उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रहने दे।

8 क्योंकि गरीब तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा।” (22. 14:7)

22. 14:7

9 यहूदियों में से साधारण लोग जान गए, कि वह वहाँ है, और वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिए भी कि लाज़र को देखें, जिसे उसने मरे हुआ में से जिलाया था।

10 तब प्रधान याजकों ने लाज़र को भी मार डालने की सम्मति की।

11 क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए, और यीशु पर विश्वास किया।

22. 14:7-22. 14:7

12 दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है।

13 उन्होंने खज़ूर की डालियाँ लीं, और उससे भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे, “होशाना! धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।” (22. 118:25,26)

14 जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला, तो वह उस पर बैठा, जैसा लिखा है,

15 “हे सिख्योन की बेटी, मत डर;

देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है।”

16 उसके चले, ये बातें पहले न समझे थे; परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई, तो उनको स्मरण आया, कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं; और लोगों ने उससे इस प्रकार का व्यवहार किया था।

17 तब भीड़ के लोगों ने जो उस समय उसके साथ थे यह गवाही दी कि उसने लाज़र को कब्र में से बुलाकर, मरे हुआ में से जिलाया था।

18 इसी कारण लोग उससे भेंट करने को आए थे क्योंकि उन्होंने सुना था, कि उसने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है।

19 तब फरीसियों ने आपस में कहा, “सोचो, तुम लोग कुछ नहीं कर पा रहे हो; देखो, संसार उसके पीछे हो चला है।”

22. 14:7-22. 14:7

20 जो लोग उस पर्व में आराधना करने आए थे उनमें से कई यूनानी थे।

21 उन्होंने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उससे विनती की, “श्रीमान हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।”

22 फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से कहा; तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु से कहा।

23 इस पर यीशु ने उनसे कहा, “22. 14:7-22. 14:7\* , कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो।

24 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

25 जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उसकी रक्षा करेगा।

26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।

22. 14:7-22. 14:7

27 “22. 14:7-22. 14:7\* । इसलिए अब मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?” परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ।

28 हे पिता अपने नाम की महिमा करा।” तब यह आकाशवाणी हुई, “मैंने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूँगा।”

29 तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्होंने कहा; कि बादल गरजा, औरों ने कहा, “कोई स्वर्गदूत उससे बोला।”

30 इस पर यीशु ने कहा, “यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये आया है।

31 अब इस जगत का न्याय होता है, 22. 14:7-22. 14:7\* निकाल दिया जाएगा।

32 और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा।”

\* 12:23 22. 14:7-22. 14:7: यह एक संक्षिप्त अवधि, और एक स्थिर, निश्चित, निर्धारित समय निरूपित करने के लिए उपयोग किया गया है।

† 12:27 22. 14:7-22. 14:7: उनकी उल्लेखित मृत्यु से पहले उनके पास अपने अत्यन्त भय, अपने दर्द और अपने अंधेरे को लाया। ‡ 12:31 22. 14:7-22. 14:7: शैतान, या दुष्ट, वह इस संसार का सरदार भी कहा जाता है। (यूह 14:30, यूहन्ना 16:11)

33 ऐसा कहकर उसने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा।

34 इस पर लोगों ने उससे कहा, “हमने व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?” (12:14)

35 यीशु ने उनसे कहा, “ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे; जो अंधकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है।

36 जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान बनो।” ये बातें कहकर यीशु चला गया और उनसे छिपा रहा।

12:14-15 12:16-17 12:18-19 12:20-21 12:22-23 12:24-25

37 और उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तो भी उन्होंने उस पर विश्वास न किया;

38 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उसने कहा:

“हे प्रभु, हमारे समाचार पर किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?” (12:1)

53:1

39 इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है:

40 “उसने उनकी आँखें अंधी, और उनका मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि आँखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।” (12:4) 6:10

41 यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं, कि उसने उसकी महिमा देखी; और उसने उसके विषय में बातें की।

42 तो भी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएँ।

43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।

12:26-27 12:28 12:29

44 यीशु ने पुकारकर कहा, “जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।

45 और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है।

46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे।

47 यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ।

48 12:22 12:23 12:24 12:25 12:26 और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वह अन्तिम दिन में उसे दोषी ठहराएगा।

49 क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या-क्या कहूँ और क्या-क्या बोलूँ?

50 और मैं जानता हूँ, कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिए मैं जो बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसा ही बोलता हूँ।”

## 13

12:31 12:32

1 फसह के पर्व से पहले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरा वह समय आ पहुँचा है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।

2 और जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो भोजन के समय

3 यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उसके हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ, और परमेश्वर के पास जाता हूँ।

4 भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अँगोछा लेकर अपनी कमर बाँधी।

12:33 12:34 12:35 12:36 12:37 12:38

5 तब बर्तन में पानी भरकर 12:33 12:34 12:35 और जिस अँगोछे से उसकी कमर बाँधी थी उसी से पोंछने लगा।

6 जब वह शमौन पतरस के पास आया तब उसने उससे कहा, “हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धोता है?”

7 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “जो मैं करता हूँ, तू अभी नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा।”

§ 12:48 12:49 12:50 12:51 12:52 “तुच्छ” शब्द का मतलब तिरस्कार करना, या उसे ग्रहण करने के लिए अस्वीकार करना है। \* 13:5 13:6 13:7 यह दासों के लिए अतिथियों के पाँव धोने का एक रिवाज था।



मेरे पीछे आ नहीं सकता; परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आएगा।”

37 पतरस ने उससे कहा, “हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपना प्राण दूँगा।”

38 यीशु ने उत्तर दिया, “क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि मुर्गा बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा।

## 14

1 “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**”

1 “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**” तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।

2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।

3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।

4 “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**”

4 “और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।”

5 थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है; तो मार्ग कैसे जानें?”

6 यीशु ने उससे कहा, “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**” बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।

7 यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।”

8 फिलिप्पुस ने उससे कहा, “हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।”

9 यीशु ने उससे कहा, “हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा? ”

10 क्या तू विश्वास नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

11 मेरा ही विश्वास करो, कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।

12 “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**”

12 “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझसे मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।

15 “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**”

15 “यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

16 और **यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।** और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

17 अर्थात् सत्य की आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

18 “मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास वापस आता हूँ।

19 और थोड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिए कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।

20 उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।

21 जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।”

22 उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उससे कहा, “हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आपको हम पर प्रगट करना चाहता है, और संसार पर नहीं?”

23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।

\* 14:1 **यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।** † 14:6 **यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।** उनके कहने का मतलब यह है कि, वे और अन्य सभी केवल उन्हीं के माध्यम से परमेश्वर के पास पहुँच सकते हैं। ‡ 14:16 **यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।** यह उनकी मृत्यु और स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद उनके द्वारा मध्यस्थता करने को संदर्भित करता है



18 “**१५:१५ १५:१६ १५:१७ १५:१८ १५:१९ १५:२० १५:२१\***, तो तुम जानते हो, कि उसने तुम से पहले मुझसे भी बैर रखा।

19 यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं वरन् मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है; इसलिए संसार तुम से बैर रखता है।

20 जो बात मैंने तुम से कही थी, ‘दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता,’ उसको याद रखो यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।

21 परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।

22 यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब उन्हें उनके पाप के लिये कोई बहाना नहीं।

23 जो मुझसे बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है।

24 यदि मैं उनमें वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया।

25 और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उनकी व्यवस्था में लिखा है, ‘उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर किया।’ **(१५:२५, १५:२६)**

26 परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।

27 और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।

## 16

1 “ये बातें मैंने तुम से इसलिए कहीं कि तुम ठोकर न खाओ।

2 वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन् वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा यह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ।

3 और यह वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं।

4 परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुम से कहीं, कि जब उनके पूरे होने का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुम से पहले ही कह दिया था,

**१६:१ १६:२ १६:३ १६:४ १६:५ १६:६ १६:७ १६:८ १६:९ १६:१० १६:११ १६:१२ १६:१३ १६:१४ १६:१५ १६:१६ १६:१७ १६:१८ १६:१९ १६:२० १६:२१ १६:२२ १६:२३ १६:२४ १६:२५ १६:२६ १६:२७ १६:२८ १६:२९ १६:३० १६:३१**

“मैंने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

5 अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ और तुम में से कोई मुझसे नहीं पूछता, ‘तू कहाँ जाता है?’

6 परन्तु मैंने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिए तुम्हारा मन शोक से भर गया।

7 फिर भी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।

8 और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।

9 पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते;

10 और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर न देखोगे;

11 न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। **(१५:२०, १५:२१)**

12 “मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।

13 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

15 जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

**१६:१ १६:२ १६:३ १६:४ १६:५ १६:६ १६:७ १६:८ १६:९ १६:१० १६:११ १६:१२ १६:१३ १६:१४ १६:१५ १६:१६ १६:१७ १६:१८ १६:१९ १६:२० १६:२१ १६:२२ १६:२३ १६:२४ १६:२५ १६:२६ १६:२७ १६:२८ १६:२९ १६:३० १६:३१**

16 “थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।”

17 तब उसके कितने चेलों ने आपस में कहा, “यह क्या है, जो वह हम से कहता है, ‘थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?’ और यह इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ?”

18 तब उन्होंने कहा, “यह ‘थोड़ी देर’ जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते, कि क्या कहता है।”

19 यीशु ने यह जानकर, कि वे मुझसे पूछना चाहते हैं, उनसे कहा, “क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछताछ करते हो, ‘थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?’





उस नाम से जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर, कि वे हमारे समान एक हों।

12 जब मैं उनके साथ था, तो मैंने तेरे उस नाम से, जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की, मैंने उनकी देख-रेख की और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो। (22:22)

### 18:9)

13 परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएँ।

14 मैंने तेरा वचन उन्हें पहुँचा दिया है, और संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।

15 मैं यह विनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।

16 जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।

17 सत्य के द्वारा 22:22 22:22 22:22: तेरा वचन सत्य है।

18 जैसे तूने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा।

19 और उनके लिये मैं अपने आपको पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएँ।

20 “मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे,

21 कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत विश्वास करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।

22 और वह महिमा जो तूने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।

23 मैं उनमें और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा, वैसे ही उनसे प्रेम रखा।

24 हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम रखा। (22:22. 14:3)

25 हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैंने तुझे जाना और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा।

26 और मैंने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझको मुझसे था, वह उनमें रहे और 22:22 22:22 22:22: 1”

## 18

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

1 यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों के साथ किद्रोन के नाले के पार गया, वहाँ एक बारी थी, जिसमें वह और उसके चले गए।

2 और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता था।

3 तब यहूदा सैन्य-दल को और प्रधान याजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और मशालों और हथियारों को लिए हुए वहाँ आया।

4 तब यीशु उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं, जानकर निकला, और उनसे कहने लगा, “किसे ढूँढते हो?”

5 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “यीशु नासरी को।” यीशु ने उनसे कहा, “मैं हूँ।” और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था।

6 उसके यह कहते ही, “मैं हूँ,” वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।

7 तब उसने फिर उनसे पूछा, “तुम किसको ढूँढते हो।” वे बोले, “यीशु नासरी को।”

8 यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ, यदि मुझे ढूँढते हो 22:22 22:22 22:22 22:22\* 1”

9 यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उसने कहा था: “जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया।”

10 शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर, उसका दाहिना कान काट दिया, उस दास का नाम मलखुस था।

11 तब यीशु ने पतरस से कहा, “अपनी तलवार काठी में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊँ?”

22:22 22:22 22:22 22:22

12 तब सिपाहियों और उनके सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया,

† 17:17 22:22 22:22 22:22: इस शब्द का मतलब है पवित्र बनाना या पापों से शुद्ध करना। ‡ 17:26 22:22 22:22 22:22: मेरी शिक्षाओं और मेरी आत्मा के प्रभावों के द्वारा। \* 18:8 22:22 22:22 22:22 22:22: ये सभी प्रेरित थे। यह मुसीबत की घड़ी में भी उनकी देख-भाल और प्रेम को दर्शाता है।



2222 22 2222222

39 “पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूँ। तो क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?”

40 तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, “इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।” और बरअब्बा डाकू था।

## 19

22222 2222222 22 2222 2222222

1 इस पर पिलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए।

2 और सिपाहियों ने काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंगनी ऊपरी वस्त्र पहनाया,

3 और उसके पास आ आकर कहने लगे, “हे यहूदियों के राजा, प्रणाम!” और उसे थप्पड़ मारे।

4 तब पिलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, “देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूँ; ताकि तुम जानो कि मैं उसमें कुछ भी दोष नहीं पाता।”

22222 22 2222222 22 2222 2222222

5 तब यीशु काँटों का मुकुट और बैंगनी वस्त्र पहने हुए बाहर निकला और पिलातुस ने उनसे कहा, “देखो, यह पुरुष।”

6 जब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, “उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!” पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता।”

7 यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, “हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उसने अपने आपको 222222222 22 2222222\* बताया।” (222222. 24:16)

8 जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया।

9 और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, “तू कहाँ का है?” परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।

10 पिलातुस ने उससे कहा, “मुझसे क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।”

11 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझे पर कुछ अधिकार न होता; इसलिए जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।”

12 इससे 2222222 22 222 2222 2222 22222, परन्तु यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, “यदि तू इसको छोड़ देगा तो तू कैसर का मित्र नहीं; जो कोई अपने आपको राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।”

13 ये बातें सुनकर पिलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था, जो इब्रानी में ‘22222222’ कहलाता है, और वहाँ न्याय आसन पर बैठा।

14 यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घंटे के लगभग था: तब उसने यहूदियों से कहा, “देखो, यही है, तुम्हारा राजा!”

15 परन्तु वे चिल्लाए, “ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा!” पिलातुस ने उनसे कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ?” प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, “कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।”

16 तब उसने उसे उनके हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।

22222 22 2222222 22222

17 तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो ‘खोपड़ी का स्थान’ कहलाता है और इब्रानी में ‘गुलगुता’।

18 वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।

19 और पिलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उसमें यह लिखा हुआ था, “यीशु नासरी यहूदियों का राजा।”

20 यह दोष-पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था नगर के पास था और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था।

21 तब यहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलातुस से कहा, “यहूदियों का राजा” मत लिख परन्तु यह कि ‘उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ।’”

22 पिलातुस ने उत्तर दिया, “मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।”

23 जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुर्ता भी लिया, परन्तु कुर्ता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था;

\* 19:7 2222222 22 222222: व्यवस्था में ऐसा कहना वर्जित नहीं था, परन्तु परमेश्वर की निन्दा करना निश्चय ही वर्जित था, अतः अपने लिए इस शीर्षक का उपयोग उनकी समझ में परमेश्वर की निन्दा करना था † 19:12 2222222 22 222 2222 2222 2222: वह उसकी निर्दोषता के प्रति अधिक से अधिक आश्वस्त था। ‡ 19:13 2222222: यह एक इब्रानी भाषा का शब्द है, यह ऊँचा होने के वाचक शब्द से आता है।

24 इसलिए उन्होंने आपस में कहा, “हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा।” यह इसलिए हुआ, कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, “उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।” (22: 22:18)

25 अतः सिपाहियों ने ऐसा ही किया। परन्तु यीशु के क्रूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थी।

26 यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा, “हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।”

27 तब उस चेले से कहा, “देख, यह तेरी माता है।” और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया।

28 इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा, “मैं प्यासा हूँ।”

29 वहाँ एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था, इसलिए उन्होंने सिरके के भिगाए हुए पनसोख्ता को जूफे पर रखकर उसके मुँह से लगाया। (22: 69:21)

30 जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, “पूरा हुआ”; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए। (22: 23:46, 22: 15:37)

31 और इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से विनती की, कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और वे उतारे जाएँ ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था। (22: 15: 42, 21:22,23)

32 इसलिए सिपाहियों ने आकर पहले की टाँगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे।

33 परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टाँगें न तोड़ीं।

34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।

35 जिसने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।

36 ये बातें इसलिए हुई कि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो, “उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।” (22: 12:46, 22: 9:12, 22: 34:20)

37 फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, “जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।” (22: 12:10)

38 इन बातों के बाद अरिमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पिलातुस से विनती की, कि मैं यीशु के शव को ले जाऊँ, और पिलातुस ने उसकी विनती सुनी, और वह आकर उसका शव ले गया।

39 नीकुदेमुस भी जो पहले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया।

40 तब उन्होंने यीशु के शव को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध-द्रव्य के साथ कफन में लपेटा।

41 उस स्थान पर जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिसमें कभी कोई न रखा गया था।

42 अतः यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।

## 20

1 सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।

2 तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, “वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहाँ रख दिया है।”

3 तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले।

4 और दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुँचा।

5 और झुककर कपड़े पड़े देखे: तो भी वह भीतर न गया।

6 तब शमौन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुँचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे।

7 और वह अँगोछा जो उसके सिर पर बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा।

8 तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया।

9 वे तो अब तक पवित्रशास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुआओं में से जी उठना होगा। (20:16:10)

10 तब ये चले अपने घर लौट गए।

20:11 20:12 20:13 20:14 20:15 20:16 20:17 20:18 20:19 20:20 20:21 20:22 20:23 20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते-रोते कब्र की ओर झुककर,

12 दो स्वर्गादूतों को उज्ज्वल कपड़े पहने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहाँ यीशु का शव पड़ा था।

13 उन्होंने उससे कहा, “हे नारी, तू क्यों रोती है?” उसने उनसे कहा, “वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है।”

14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और 20:15 20:16 20:17 20:18 20:19 20:20 20:21 20:22 20:23 20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

15 यीशु ने उससे कहा, “हे नारी तू क्यों रोती है? किसको ढूँढती है?” उसने माली समझकर उससे कहा, “हे श्रीमान, यदि तूने उसे उठा लिया है तो मुझसे कह कि उसे कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊँगी।”

16 यीशु ने उससे कहा, “मरियम!” उसने पीछे फिरकर उससे इब्रानी में कहा, “20:17 20:18 20:19 20:20 20:21 20:22 20:23 20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

17 यीशु ने उससे कहा, “मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।”

18 मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, “मैंने प्रभु को देखा और उसने मुझसे बातें कहीं।”

20:19 20:20 20:21 20:22 20:23 20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

19 उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, संध्या के समय जब वहाँ के द्वार जहाँ चले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।”

20 और यह कहकर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए: तब चले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।

21 यीशु ने फिर उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।”

22 यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, “पवित्र आत्मा लो।”

\* 20:14 20:15 20:16 20:17 20:18 20:19 20:20 20:21 20:22 20:23 20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

23 20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

20:24 20:25 20:26 20:27 20:28 20:29 20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

24 परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था।

25 जब और चले उससे कहने लगे, “हमने प्रभु को देखा है,” तब उसने उनसे कहा, “जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ, और कीलों के छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।”

26 आठ दिन के बाद उसके चले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।”

27 तब उसने थोमा से कहा, “अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।”

28 यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!”

29 यीशु ने उससे कहा, “तूने तो मुझे देखकर विश्वास किया है? धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।”

20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

30 यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए।

31 परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

## 21

20:30 20:31 20:32 20:33 20:34 20:35 20:36 20:37 20:38 20:39 20:40 20:41 20:42 20:43 20:44 20:45 20:46 20:47 20:48 20:49 20:50 20:51 20:52 20:53 20:54 20:55 20:56 20:57 20:58 20:59 20:60 20:61 20:62 20:63 20:64 20:65 20:66 20:67 20:68 20:69 20:70 20:71 20:72 20:73 20:74 20:75 20:76 20:77 20:78 20:79 20:80 20:81 20:82 20:83 20:84 20:85 20:86 20:87 20:88 20:89 20:90 20:91 20:92 20:93 20:94 20:95 20:96 20:97 20:98 20:99 20:100

1 इन बातों के बाद यीशु ने अपने आपको तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया।

2 शमौन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे।

3 शमौन पतरस ने उनसे कहा, “मैं मछली पकड़ने जाता हूँ।” उन्होंने उससे कहा, “हम भी तेरे साथ चलते हैं।” इसलिए वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा।







13 और जब वहाँ पहुँचे तो वे उस अटारी पर गए, जहाँ पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बरतुल्मै, मत्ती, हलफईस का पुत्र याकूब, शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा रहते थे।

14 ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ [22] [222222] [222222]† प्रार्थना में लगे रहे।

[22] [222] [22222222] [22] [222222]

15 और [2222222] [222222] [2222]‡ पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा होकर कहने लगा।

16 “हे भाइयों, अवश्य था कि पवित्रशास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने वालों का अगुआ था, पहले से कहा था। ([22]. 41:9)

17 क्योंकि वह तो हम में गिना गया, और इस सेवकाई में भी सहभागी हुआ।”

18 (उसने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अंतड़ियाँ निकल गई।

19 और इस बात को यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए, यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में ‘हकलदमा’ अर्थात् ‘लहू का खेत’ पड़ गया।)

20 क्योंकि भजन संहिता में लिखा है, ‘उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई न बसे’ और ‘उसका पद कोई दूसरा ले ले।’ ([22]. 69:25, [22]. 109:8)

21 इसलिए जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता-जाता रहा, अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साथ रहे,

22 उचित है कि उनमें से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए।

23 तब उन्होंने दो को खड़ा किया, एक यूसुफ को, जो बरसब्बास कहलाता है, जिसका उपनाम यूस्तुस है, दूसरा मत्तियाह को।

24 और यह कहकर प्रार्थना की, “हे प्रभु, तू जो सब के मन को जानता है, यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तूने किसको चुना है,

25 कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले, जिसे यहूदा छोड़कर अपने स्थान को गया।”

26 तब उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियाँ डाली, और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली, अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

## 2

[2222222] [222222] [22] [22222]

1 जब [22222222222222] [22] [2222]‡ आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। ([222222]. 23:15-21, [222222]. 16:9-11)

2 और अचानक आकाश से बड़ी आँधी के समान सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।

3 और उन्हें आग के समान जीभें फटती हुई दिखाई दी और उनमें से हर एक पर आ ठहरी।

4 और [22] [22] [22222222] [2222222] [22] [22] [2222]‡, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।

5 और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त-यहूदी यरूशलेम में रहते थे।

6 जब वह शब्द सुनाई दिया, तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।

7 और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, “देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं?”

8 तो फिर क्यों हम में से; हर एक अपनी-अपनी जन्म-भूमि की भाषा सुनता है?

9 हम जो पारथी, मेदी, एलाम लोग, मेसोपोटामिया, यहूदिया, कप्पदूकिया, पुन्तुस और आसिया,

10 और फ्रूगिया और पंफूलिया और मिस्र और लीबिया देश जो कुरेने के आस-पास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी,

11 अर्थात् क्या यहूदी, और क्या यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।”

12 और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, “यह क्या हो रहा है?”

13 परन्तु दूसरों ने उपहास करके कहा, “वे तो नई मदिरा के नशे में हैं।”

† 1:14 [222222] [222222]: एक मन के साथ। ‡ 1:15 [22222222] [222222] [2222]: यीशु के उठाए जाने और पिन्तेकुस्त के दिनों में से बीच का कोई एक दिन है। \* 2:1 [22222222222222] [22] [2222]: “पिन्तेकुस्त” एक यूनानी शब्द है फसह के विश्रामदिन से पचासवाँ दिन है। † 2:4 [22] [22] [22222222] [22222222] [22] [22] [22]: पूरी तरह से उसके पवित्र प्रभाव और सामर्थ्य के अधीन थे।

14 पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे

शब्द से कहने लगा, “हे यहूदियों, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।

15 जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो तीसरा पहर ही दिन चढ़ा है।

16 परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है:

17 ‘परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि

मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे वृद्ध पुरुष स्वप्न देखेंगे।

18 वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों

में अपनी आत्मा उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

19 और मैं ऊपर आकाश में

और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात्

लहू, और आग और धुएँ का बादल दिखाऊँगा।

20 के आने से पहले

सूर्य अंधेरा

और चाँद लहू सा हो जाएगा।

21 और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।’

(2:28-32)

22 “हे इस्राएलियों, ये बातें सुनो कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।

23 उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला।

24 परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वंश में रहता। (2:22:6, 2:18:4, 2:116:3)

25 क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊँ।

26 इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई;

वरन् मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा।

27 क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा;

और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा!

28 तूने मुझे जीवन का मार्ग बताया है;

तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।’ (2:16:8-11)

16:8-11)

29 “हे भाइयों, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ वर्तमान है। (1:2:10)

30 वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाई है, मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा। (2:7:12,13, 2:132:11)

31 उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की,

कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई। (2:16:10)

32 “इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं।

33 इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।

34 क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है,

‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ,

35 जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।’ (2:110:1)

36 “अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।”

37 तब सुननेवालों के हृदय छिद्र गए, और वे पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, “हे भाइयों, हम क्या करें?”

38 पतरस ने उनसे कहा, “मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

‡ 2:19: मैं परमेश्वर द्वारा निष्पादित चिन्ह या चमत्कार दूँगा। § 2:20: उन दिनों में अन्य दिनों की तुलना से परमेश्वर असाधारण रूप से अधिक प्रभावशाली और सामर्थ्य के साथ प्रकट होगा।

39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।” (2222. 2:32)

40 उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। (2222. 32:5, 22. 78:8)

41 अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।

222222222222 22 22222 22222

42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

43 और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।

44 और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं।

45 और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे।

46 और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे।

47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे; और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

### 3

22222222 22222222 22 222222

1 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।

2 और लोग एक जन्म के लँगड़े को ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो ‘सुन्दर’ कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख माँगे।

3 जब उसने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उनसे भीख माँगी।

4 पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा, “हमारी ओर देख!”

5 अतः वह उनसे कुछ पाने की आशा रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा।

6 तब पतरस ने कहा, “चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूँ; यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।”

\* 3:13 22222222 22 222222 22 222222 22 2222222222: वह अब्राहम का परमेश्वर कहा जाता है क्योंकि अब्राहम ने उन्हें परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया। † 3:14 22 22222222 22 222222: वह एक जो व्यवस्था की दृष्टिकोण से न्यायोचित है या जिस पर अपराध का दोष नहीं लगाया जा सकता है।

7 और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया; और तुरन्त उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया।

8 और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा; और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया।

9 सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर,

10 उसको पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के ‘सुन्दर’ फाटक पर बैठकर भीख माँगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी; वे बहुत अचम्भित और चकित हुए।

2222222222 22 222222 2222 22222 22 22222222

11 जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए।

12 यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा, “हे इस्राएलियों, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हमने अपनी सामर्थ्य या भक्ति से इसे चलने फिरने योग्य बना दिया।

13 2222222222 22 222222 22 222222 22 2222222222\*, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके सामने यीशु का तिरस्कार किया।

14 तुम ने 22 22222222 22 222222† का तिरस्कार किया, और चाहा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए।

15 और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुआओं में से जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं।

16 और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो यीशु के द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

17 “और अब हे भाइयों, मैं जानता हूँ कि यह काम तुम ने अज्ञानता से किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी किया।

18 परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहले ही बताया था, कि

उसका मसीह दुःख उठाएगा; उन्हें उसने इस रीति से पूरा किया।

19 इसलिए, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएँ जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएँ।

20 और वह उस यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है।

21 अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह **22 22:22-22 22 22:22-22** न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीनकाल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है।

22 जैसा कि मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ जैसा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उसकी सुनना।' **(22:18:15-18)**

23 परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा। **(22:23:29, 22:18:19)**

24 और शमूएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बात कही उन सब ने इन दिनों का सन्देश दिया है।

25 तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों से बाँधी, जब उसने अब्राहम से कहा, 'तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएँगे।' **(22:12:3, 22:18:18, 22:22:18, 22:26:4)**

26 परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उसकी बुराइयों से फेरकर आशीष दे।"

## 4

**22:22 22 22:22-22 22 22:22-22**

1 जब पतरस और यूहन्ना लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए।

2 वे बहुत क्रोधित हुए कि पतरस और यूहन्ना यीशु के विषय में सिखाते थे और उसके मरे हुआँ में से जी उठने का प्रचार करते थे।

3 और उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि संध्या हो गई थी।

4 परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पाँच हजार पुरुषों के लगभग हो गई।

**22:22 22 22:22-22 22 22:22-22**

5 दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके सरदार और पुरनिए और शास्त्री।

6 और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे, सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए।

7 और पतरस और यूहन्ना को बीच में खड़ा करके पूछने लगे, "तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से और किस नाम से किया है?"

8 तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा,

9 "हे लोगों के **22:22:22 22 22:22-22 22 22:22-22**", इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछताछ की जाती है, कि वह कैसे अच्छा हुआ।

10 तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुआँ में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है।

11 **22 22:22 22:22-22 22 22:22 22:22 22:22-22 22:22-22 22 22:22-22 22:22** और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया। **(22:118:22,23, 22:2:34,35)**

12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके।"

**22:22 22 22:22 22 22:22 22:22-22 22 22:22**

13 जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।

14 परन्तु उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, यहूदी उनके विरोध में कुछ न कह सके।

15 परन्तु उन्हें महासभा के बाहर जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे,

16 "हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है, कि इनके द्वारा

‡ 3:21 **22 22:22-22 22 22:22-22**: किसी वस्तु को उसकी पूर्व स्थिति में पुनर्स्थापित करना \* 4:9 **22:22-22 22 22:22-22 22 22:22-22**: पतरस ने सही सम्मान के साथ महासभा को संबोधित किया। † 4:11 **22 22:22 22:22-22 22 22:22 22:22-22 22 22:22-22 22:22**: यह वही है जिसे लोगों ने अस्वीकार किया परन्तु परमेश्वर ने उसे अपनी योजना का आधार बना दिया।





34 परन्तु [REDACTED] नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, महासभा में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की आज्ञा दी।

35 तब उसने कहा, “हे इस्राएलियों, जो कुछ इन मनुष्यों से करना चाहते हो, सोच समझ के करना।

36 क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ हूँ; और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हुए और मिट गए।

37 उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपनी ओर कर लिए; वह भी नाश हो गया, और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हो गए।

38 इसलिए अब मैं तुम से कहता हूँ, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और उनसे कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह योजना या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा;

39 परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।”

40 तब उन्होंने उसकी बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना।

41 वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे।

42 इसके बाद हर दिन, मन्दिर में और घर-घर में, वे लगातार सिखाते और प्रचार करते थे कि यीशु ही मसीह है।

## 6

[REDACTED]

1 उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानियों पर कुडकुडाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।

2 तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, “यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें।

‡ 5:34 [REDACTED]: पहली शताब्दी के आरम्भ में महासभा में एक प्रकार से न्यायमूर्ति था और वह महान यहूदी शिक्षक हिल्लेल का पोता भी था

\* 6:5 [REDACTED]: यह नगर सीरिया में, ओरेंटस नदी पर स्थित था, और पूर्वकाल में इसे रिब्लाथ कहा जाता था। † 6:7 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: यही कारण है, सुसमाचार अधिक से अधिक सफल रहा। ‡ 6:11 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: मूसा

अत्यधिक सम्मान के साथ माना जाता था, परमेश्वर को यहूदियों ने केवल व्यवस्था का दाता माना था। § 6:15 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: इस अभिव्यक्ति से जाहिर है कि वह ईमानदारी, निर्भयता और परमेश्वर में विश्वास के सबूत को प्रकट करता है, को दर्शाता है।

3 इसलिए हे भाइयों, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।

4 परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।”

5 यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, फिलिप्पुस, प्रुखुरुस, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और [REDACTED]\* वासी निकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।

6 और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।

7 और [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया।

[REDACTED]

8 स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।

9 तब उस आराधनालय में से जो दासत्व-मुक्त कहलाती थी, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और आसिया के लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे।

10 परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिससे वह बातें करता था, वे सामना न कर सके।

11 इस पर उन्होंने कई लोगों को उकसाया जो कहने लगे, “हमने इसे [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] की बातें कहते सुना है।”

12 और लोगों और प्राचीनों और शास्त्रियों को भडकाकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए।

13 और झूठे गवाह खड़े किए, जिन्होंने कहा, “यह मनुष्य इस पवित्रस्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता। ([REDACTED] 26:11)

14 क्योंकि हमने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।”





24 और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे बचाया, और मिस्री को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। (2:12)

25 उसने सोचा, कि उसके भाई समझेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा।

26 दूसरे दिन जब इस्राएली आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहाँ जा पहुँचा; और यह कहकर उन्हें मेल करने के लिये समझाया, कि हे पुरुषों, 'तुम तो भाई-भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?'

27 परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर धक्का दिया, 'तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?'

28 क्या जिस रीति से तूने कल मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है?' (2:13,14)

29 यह बात सुनकर, मूसा भागा और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा: और वहाँ उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। (2:15-22, 18:3,4)

30 "जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्गदूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया। (3:1)

31 मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा किया, और जब देखने के लिये पास गया, तो प्रभु की यह वाणी सुनाई दी, (3:2,3)

32 'मैं तेरे पूर्वज, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ।' तब तो मूसा काँप उठा, यहाँ तक कि उसे देखने का साहस न रहा।

33 तब प्रभु ने उससे कहा, 'अपने पाँवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। (3:5)

34 मैंने सचमुच अपने लोगों की दुर्दशा को जो मिस्र में है, देखी है; और उनकी आहें और उनका रोना सुन लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिये उतरा हूँ। अब आ, मैं तुझे मिस्र में भेजूँगा। (2:24, 3:7-10)

35 "जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था, 'तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?' उसी को परमेश्वर ने अधिपति और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा। (2:14, 3:2)

36 यही व्यक्ति मिस्र और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा दिखाकर उन्हें निकाल लाया। (7:3, 14:21, 14:33)

37 यह वही मूसा है, जिसने इस्राएलियों से कहा, 'परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मेरे जैसा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा।' (18:15-18)

38 यह वही है, जिसने जंगल में मण्डली के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें की, और हमारे पूर्वजों के साथ था, उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुँचाए। (19:1-6, 20:1-17, 5:4-22, 9:10,11)

39 परन्तु हमारे पूर्वजों ने उसकी मानना न चाहा; वरन् उसे ठुकराकर अपने मन मिस्र की ओर फेरे, (23:20,21, 14:3,4)

40 और हारून से कहा, 'हमारे लिये ऐसा देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चलें; क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ?' (32:1, 32:23)

41 उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाकर, उसकी मूरत के आगे बलि चढ़ाया; और अपने हाथों के कामों में मगन होने लगे। (32:4,6)

42 अतः <sup>†</sup> कि आकाशगण पूजें, जैसा भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा है,

'हे इस्राएल के घराने,  
क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे? (7:18, 8:2, 19:13)

43 और तुम <sup>‡</sup> के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिए फिरते थे, अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुम ने दण्डवत् करने के लिये बनाया था।  
अतः मैं तुम्हें बाबेल के परे ले जाकर बसाऊँगा।' (5:25,26)

44 "साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे पूर्वजों के बीच में था; जैसा उसने ठहराया, जिसने मूसा से कहा, 'जो आकार तूने देखा है, उसके अनुसार इसे बना।' (25:1-40, 25:40, 1:50)

45 उसी तम्बू को हमारे पूर्वजों ने पूर्वकाल से पाकर यहोशू के साथ यहाँ ले आए; जिस समय कि उन्होंने

† 7:42 <sup>†</sup> यही कारण है, उन लोगों से मुँह मोड़कर उन्हें दूर कर दिया; उन्हें अपनी इच्छाओं से जीने के लिए छोड़ दिया। ‡ 7:43 <sup>‡</sup> यह शब्द इब्रानी से आता है जो "राजा" शब्द का वाचक है, यह अम्मोनियों का एक देवता था।

उन अन्यजातियों पर अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के सामने से निकाल दिया, और वह दाऊद के समय तक रहा। (2 222. 3:14-17, 222. 18:1, 222. 23:9, 222. 24:18)

46 उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया; अतः उसने विनती की कि वह याकूब के परमेश्वर के लिये निवास-स्थान बनाए। (2 222. 7:2-16, 1 222. 8:17,18, 1 222. 17:1-14, 2 222. 6:7,8, 222. 132:5)

47 परन्तु सुलैमान ने उसके लिये घर बनाया। (1 222. 6:1,2, 1 222. 6:14, 1 222. 8:19,20, 2 222. 3:1, 2 222. 5:1, 2 222. 6:2, 2 222. 6:10)

48 परन्तु परमप्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा,

49 'प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पाँवों तले की चौकी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा?

50 क्या ये सब वस्तुएँ मेरे हाथ की बनाई नहीं?' (222. 66:1,2)

51 'हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे पूर्वज करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। (222. 32:9, 222. 26:41, 222. 27:14, 222. 63:10, 222. 6:10, 222. 9:26)

52 भविष्यद्वक्ताओं में से किसको तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए (2 222. 36:16)

53 तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।"

222.222.22 22 222.22

54 ये बातें सुनकर वे क्रोधित हुए और उस पर दाँत पीसने लगे। (222. 16:9, 22. 35:16, 22. 37:12, 22. 112:10)

55 परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और 222.222.22 22 222.22 22S और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर

56 कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।"

§ 7:55 222.222.22 22 222.22 22: इसका मतलब है, कुछ शानदार प्रतिनिधित्व; एक वैभव, या प्रकाश, जो परमेश्वर की उपस्थिति का उचित प्रदर्शनी है। \* 8:5 222.222.22: सात सेवकों में से एक, प्रेरित 6:5; वह उसके बाद "सुसमाचार प्रचारक" कहा गया, प्रेरित 21:8। † 8:9 222.22: वह जादूगर की कला जानता था, अतः उसका नाम शमौन जादूगर था।

57 तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक चित्त होकर उस पर झपटे।

58 और उसे नगर के बाहर निकालकर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पाँवों के पास उतार कर रखे।

59 और वे स्तिफनुस को पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" (22. 31:5)

60 फिर घुटने टेककर ऊँचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर सो गया।

## 8

222.22 22 222.222.222.222.22 22 222.222.222.22

1 शाऊल उसकी मृत्यु के साथ सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए।

2 और भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप किया।

3 पर शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालता था।

222.222.22 222 222.222.222.22

4 मगर जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिर।

5 और 222.222.222.222\* सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।

6 जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।

7 क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लँगड़े भी अच्छे किए गए।

8 और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

222.22 222.222.22

9 इससे पहले उस नगर में 222.22† नामक एक मनुष्य था, जो जादू-टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आपको एक बड़ा पुरुष बताता था।

10 और सब छोटे से लेकर बड़े तक उसका सम्मान कर कहते थे, "यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है।"







11 और उसने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक बड़ी चादर, पात्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है।

12 जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।

13 और उसे एक ऐसी वाणी सुनाई दी, **“हे पतरस उठ, मार और खा।”**

14 परन्तु पतरस ने कहा, “नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।” **([1][2][3][4]. 11:1-47, [5][6]. 4:14)**

15 फिर दूसरी बार उसे वाणी सुनाई दी, **“[7][8] [9][10] [11][12][13][14] [15] [16][17][18] [19][20][21] [22], उसे तू अशुद्ध मत कह।”**

16 तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह चादर आकाश पर उठा लिया गया।

**[23][24][25][26][27][28] [29] [30] [31][32]**

17 जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैंने देखा क्या है, तब वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए।

18 और पुकारकर पूछने लगे, “क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहाँ पर अतिथि है?”

19 पतरस जो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, “देख, तीन मनुष्य तुझे खोज रहे हैं।”

20 अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।”

21 तब पतरस ने नीचे उतरकर उन मनुष्यों से कहा, “देखो, जिसको तुम खोज रहे हो, वह मैं ही हूँ; तुम्हारे आने का क्या कारण है?”

22 उन्होंने कहा, “कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से उपदेश सुने।”

23 तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनको रहने की जगह दी। और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया; और याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए।

24 दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुँचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

25 जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की, और उसके पाँवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया।

26 परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, “खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य ही हूँ।”

27 और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर

28 उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहाँ जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ।

29 इसलिए मैं जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया है?”

30 कुरनेलियुस ने कहा, “चार दिन पहले, इसी समय, मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ।

31 और कहने लगा, ‘हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं।’

32 इसलिए किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला। वह समुद्र के किनारे शमौन जो, चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में अतिथि है।’

33 तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तूने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें।”

**[34][35][36][37][38][39] [40] [41] [42][43] [44] [45][46]**

34 तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा, अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, **([47][48]. 10:17, 2 [49]. 19:7)**

35 वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धार्मिक काम करता है, वह उसे भाता है।

36 जो वचन उसने इस्राएलियों के पास भेजा, जबकि उसने यीशु मसीह के द्वारा जो सब का प्रभु है, शान्ति का सुसमाचार सुनाया। **([50]. 107:20, [51]. 147:18, [52]. 52:7, [53]. 1:15)**

37 वह वचन तुम जानते हो, जो यहून्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया में फैल गया:

38 परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई

‡ 10:15 [54] [55] [56][57][58][59] [60] [61][62][63] [64] [65]: वह जो कुछ जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा या शुद्ध घोषित किया है।



और साइप्रस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे।

20 परन्तु उनमें से कुछ साइप्रस वासी और [22222222]\* थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार की बातें सुनाने लगे।

21 और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।

22 तब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में आई, और उन्होंने [22222222] को अन्ताकिया भेजा।

23 वह वहाँ पहुँचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ; और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहें।

24 क्योंकि वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था; और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।

25 तब वह शाऊल को ढूँढने के लिये तरसुस को चला गया।

26 और जब उनसे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत से लोगों को उपदेश देते रहे, और चले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।

27 उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए।

28 उनमें से [22222222] ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा।

29 तब चेलों ने निर्णय किया कि हर एक अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ भेजे।

30 और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

## 12

[22222222] [22222222]

1 उस समय [22222222] [22222222]\* ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुःख देने के लिये उन पर हाथ डाले।

2 उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला।

3 जब उसने देखा, कि यहूदी लोग इससे आनन्दित होते हैं, तो उसने पतरस को भी पकड़ लिया। वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे।

\* 11:20 [22222222]: अफ्रीका में एक प्रांत और लीबिया का शहर था। † 11:22 [22222222]: वह साइप्रस का एक निवासी था, और सम्भवतः अन्ताकिया से अच्छी तरह से परिचित था। ‡ 11:28 [22222222]: वह भविष्यद्वक्ता के रूप में संदर्भित किया गया है कि पौलुस अन्यजातियों के हाथों में सौंपा जाएगा। \* 12:1 [22222222] [22222222]: यह हेरोदेस अग्रिप्पा था, वह हेरोदेस महान का पोता था। † 12:13 [22222222]: यह एक यूनानी नाम है जो गुलाब को दर्शाता है।

4 और उसने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिये, चार-चार सिपाहियों के चार पहरो में रखा, इस मनसा से कि फसह के बाद उसे लोगों के सामने लाए।

[22222222] [22222222] [22222222]

5 बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।

6 और जब हेरोदेस उसे उनके सामने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था; और पहरेदार द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे।

7 तब प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मारकर उसे जगाया, और कहा, “उठ, जल्दी कर।” और उसके हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।

8 तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, “कमर बाँध, और अपने जूते पहन ले।” उसने वैसा ही किया, फिर उसने उससे कहा, “अपना वस्त्र पहनकर मेरे पीछे हो ले।”

9 वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सच है, बल्कि यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूँ।

10 तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो नगर की ओर है। वह उनके लिये आप से आप खुल गया, और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, इतने में स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया।

11 तब पतरस ने सचेत होकर कहा, “अब मैंने सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी।”

12 और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है। वहाँ बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे।

13 जब उसने फाटक की खिड़की खटखटाई तो [22222222] नामक एक दासी सुनने को आई।

14 और पतरस का शब्द पहचानकर, उसने आनन्द के मारे फाटक न खोला; परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया कि पतरस द्वार पर खड़ा है।

15 उन्होंने उससे कहा, “तू पागल है।” परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है; तब उन्होंने कहा, “उसका स्वर्गदूत होगा।”





14 और पिरगा से आगे बढ़कर पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुँचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए।

15 व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा, “हे भाइयों, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो।”

16 तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से इशारा करके कहा, “हे इस्राएलियों, और परमेश्वर से डरनेवालों, सुनो

17 इन इस्राएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुन लिया, और जब ये मिस्र देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उनकी उन्नति की; और बलवन्त भुजा से निकाल लाया। (2/2/2/2. 6:1, 2/2/2/2. 12:51)

18 और वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा, (2/2/2/2. 16:35, 2/2/2. 14:34, 2/2/2/2. 1:31)

19 और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उनका देश लगभग साढ़े चार सौ वर्ष में इनकी विरासत में कर दिया। (2/2/2/2. 7:1, 2/2/2. 14:1)

20 इसके बाद उसने शमूएल भविष्यद्वक्ता तक उनमें न्यायी ठहराए। (2/2/2/2. 2:16, 1 2/2/2. 2:16)

21 उसके बाद उन्होंने एक राजा माँगा; तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये बिन्यामीन के गोत्र में से एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया। (1 2/2/2. 8:5, 1 2/2/2. 8:19, 1 2/2/2. 10:24, 1 2/2/2. 11:15)

22 फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी, ‘मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।’ (1 2/2/2. 13:14, 1 2/2/2. 16:12,13, 2/2. 89:20, 2/2/2. 44:28)

23 उसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा। (2 2/2/2. 7:12,13, 2/2/2. 11:1)

24 जिसके आने से पहले यूहन्ना ने सब इस्राएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया।

25 और जब यूहन्ना अपनी सेवा पूरी करने पर था, तो उसने कहा, ‘तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! वरन् देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिसके पाँवों की जूती के बन्ध भी मैं खोलने के योग्य नहीं।’

26 “हे भाइयों, तुम जो अब्राहम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है।

27 क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालों और उनके सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझी; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिए उसे दोषी ठहराकर उनको पूरा किया।

28 उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उसमें न पाया, फिर भी पिलातुस से विनती की, कि वह मार डाला जाए।

29 और जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी की, तो उसे क्रूस पर से उतार कर कब्र में रखा।

30 परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुएों में से जिलाया,

31 और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के सामने अब वे ही उसके गवाह हैं।

32 और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो पूर्वजों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं,

33 कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की; जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है,

‘तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।’ (2/2. 2:7)

34 और उसके इस रीति से मरे हुएों में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उसने यह कहा है,

‘मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल कृपा तुम पर करूँगा।’ (2/2/2. 55:3)

35 इसलिए उसने एक और भजन में भी कहा है,

‘तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।’ (2/2. 16:10)

36 “क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया, और अपने पूर्वजों में जा मिला, और सड़ भी गया। (2/2/2/2. 2:10, 1 2/2/2/2. 2:10)

37 परन्तु जिसको परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया।

38 इसलिए, हे भाइयों; तुम जान लो कि यीशु के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है।

39 और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सबसे हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।

40 इसलिए चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखित है, तुम पर भी आ पड़े:

41 हे निन्दा करनेवालों, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ;

क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूँ;

ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी विश्वास न करोगे।” (27. 1:5)

27. 1:5 27. 1:5 27. 1:5 27. 1:5

42 उनके बाहर निकलते समय लोग उनसे विनती करने लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएँ।

43 और जब आराधनालय उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो।

44 अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए।

45 परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर ईर्ष्या से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे।

46 तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, “अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो अब, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं।

47 क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, मैंने तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।” (27. 49:6)

48 यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे, और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया।

49 तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा।

50 परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के प्रमुख लोगों को भड़काया, और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपनी सीमा से बाहर निकाल दिया।

51 तब वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए।

52 और चले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

## 14

27. 1:5 27. 1:5 27. 1:5 27. 1:5

1 इकुनियुम में ऐसा हुआ कि पौलुस और बरनबास यहूदियों की आराधनालय में साथ-साथ गए, और ऐसी

बातें की, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया।

2 परन्तु विश्वास न करनेवाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में भड़काए, और कटुता उत्पन्न कर दी।

3 और वे बहुत दिन तक वहाँ रहे, और प्रभु के भरोसे पर साहस के साथ बातें करते थे: और वह उनके हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।

4 परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी; इससे कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए।

5 परन्तु जब अन्यजाति और यहूदी उनका अपमान और उन्हें पथराव करने के लिये अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े।

6 तो वे इस बात को जान गए, और 27. 1:5\* के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आस-पास के प्रदेशों में भाग गए।

7 और वहाँ सुसमाचार सुनाने लगे।

27. 1:5 27. 1:5 27. 1:5 27. 1:5

8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लँगड़ा था, और कभी न चला था।

9 वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है।

10 और ऊँचे शब्द से कहा, “अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो।” तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।

11 लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।”

12 और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिर्मेस कहा क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था।

13 और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उनके नगर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था।

14 परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाड़े, और भीड़ की ओर लपक गए, और पुकारकर कहने लगे,

15 “हे लोगों, तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीविते परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी

\* 14:6 27. 1:5: लुकाउनिया आसिया माइनर के प्रान्तों में से एक था।





41 और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

## 16

1 फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और वहाँ तीमुथियुस नामक एक चेला था। उसकी माँ यहूदी विश्वासी थी, परन्तु उसका पिता यूनानी था।

2 वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था।  
3 पौलुस की इच्छा थी कि वह उसके साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे लेकर उसका खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था।

4 और नगर-नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिये उन्हें पहुँचाते जाते थे।  
5 इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गईं और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गईं।

6 और वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने से मना किया।

7 और उन्होंने **2:22**\* के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।

8 अतः वे मूसिया से होकर **2:22**† में आए।  
9 वहाँ पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे विनती करके कहता है, “पार उतरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर।”

10 उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।

11 इसलिए त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके और दूसरे दिन नियापुलिस में आए।  
12 वहाँ से हम **2:22**‡ में पहुँचे, जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ती है; और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे।

13 सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए कि वहाँ प्रार्थना करने का

स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे।

14 और लुदिया नाम थुआतीरा नगर की बैंगनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर ध्यान लगाए।

15 और जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने विनती की, “यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो,” और वह हमें मनाकर ले गई।

16 जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली, जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी।

17 वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, “ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।”  
18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस परेशान हुआ, और मुड़कर उस आत्मा से कहा, “मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ, कि उसमें से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई।”

19 जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़कर चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए।  
20 और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर कहा, “ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं; **(1:22. 18:17)**

21 और ऐसी रीतियाँ बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिये ठीक नहीं।”

22 तब भीड़ के लोग उनके विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेंत मारने की आज्ञा दी।

23 और बहुत बेंत लगवाकर उन्होंने उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया और दरोगा को आज्ञा दी कि उन्हें सावधानी से रखे।  
24 उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उनके पाँव काठ में ठोक दिए।

\* **16:7** **2:22**: यह आसिया माइनर का एक प्रांत था, जिसके उत्तर में प्रोपोतिस था। † **16:8** **2:22**: द्रोजन्स के पूरे देश को दर्शाने के लिए उपयोग किया गया है, जहाँ ट्रॉय का प्राचीन नगर खड़ा था। ‡ **16:12** **2:22**: इस नगर का भूतपूर्व नाम दाथोस था। सिकंदर महान के पिता, फिलिप के द्वारा इसकी मरम्मत और विभूषित हुई थी।

\* **16:7** **2:22**: यह आसिया माइनर का एक प्रांत था, जिसके उत्तर में प्रोपोतिस था। † **16:8** **2:22**: द्रोजन्स के पूरे देश को दर्शाने के लिए उपयोग किया गया है, जहाँ ट्रॉय का प्राचीन नगर खड़ा था। ‡ **16:12** **2:22**: इस नगर का भूतपूर्व नाम दाथोस था। सिकंदर महान के पिता, फिलिप के द्वारा इसकी मरम्मत और विभूषित हुई थी।

25 आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे।

26 कि इतने में अचानक एक बड़ा भूकम्प हुआ, यहाँ तक कि बन्दीगृह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल गए।

27 और दरोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि कैदी भाग गए, अतः उसने तलवार खींचकर अपने आपको मार डालना चाहा।

28 परन्तु पौलुस ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “अपने आपको कुछ हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहीं हैं।”

29 तब वह दिया मँगवाकर भीतर आया और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा;

30 और उन्हें बाहर लाकर कहा, “हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ?”

31 उन्होंने कहा, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।”

32 और उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया।

33 और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।

34 और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।

35 जब दिन हुआ तब हाकिमों ने सिपाहियों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो।

36 दरोगा ने ये बातें पौलुस से कह सुनाई, “हाकिमों ने तुम्हें छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है, इसलिए अब निकलकर कुशल से चले जाओ।”

37 परन्तु पौलुस ने उससे कहा, “उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहराए बिना लोगों के सामने मारा और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएँ।”

38 सिपाहियों ने ये बातें हाकिमों से कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं, डर गए,

39 और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर विनती की, कि नगर से चले जाएँ।

40 वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया के यहाँ गए, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

## 17

1 फिर वे <sup>1</sup> और अपुल्लोनिया

होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था।

2 और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सप्ताह के दिन पवित्रशास्त्रों से उनके साथ वाद-विवाद किया;

3 और उनका अर्थ खोल-खोलकर समझाता था कि मसीह का दुःख उठाना, और मरे हुआओं में से जी उठाना, अवश्य था; “यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।”

4 उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने और बहुत सारी प्रमुख स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए।

5 परन्तु यहूदियों ने ईर्ष्या से भरकर बाजार से लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा।

6 और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, “ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आए हैं।”

7 और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ ठहराया है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।”

8 जब भीड़ और नगर के हाकिमों ने ये बातें सुनीं, तो वे परेशान हो गये।

9 और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों को जमानत पर छोड़ दिया।

10 भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया, और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए।

11 ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं।

12 इसलिए उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतों ने विश्वास किया।

\* 17:1 यह मकिदुनिया के पूर्वी प्रांत की राजधानी थी।







27 और जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें, और उसने पहुँचकर वहाँ उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।

28 अपुल्लोस ने अपनी शक्ति और कौशल के साथ यहूदियों को सार्वजनिक रूप से अभिभूत किया, पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है।

## 19

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

1 जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया और वहाँ कुछ चले मिले।

2 उसने कहा, “क्या तुम ने विश्वास करते समय *2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100*?” उन्होंने उससे कहा, “हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।”

3 उसने उनसे कहा, “तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?” उन्होंने कहा, “यूहन्ना का बपतिस्मा।”

4 पौलुस ने कहा, “यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।”

5 यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।

6 और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।

7 ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

8 और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।

9 परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी वरन् लोगों के सामने इस पंथ को बुरा कहने लगे, तो उसने उनको छोड़कर चेलों को अलग कर लिया, और प्रतिदिन तुरन्तुस की पाठशाला में वाद-विवाद किया करता था।

10 दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

11 और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अद्भुत काम दिखाता था।

\* 19:2 *1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100*: यह पूछना पौलुस के लिए स्वाभाविक था कि यह आत्मिक वरदान उन्हें मिला है या नहीं। † 19:14 *1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100*: यह एक यूनानी नाम है, परन्तु इसके बारे में कुछ ज्यादा ज्ञात नहीं है। ‡ 19:21 *1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100*: इन स्थानों में उन्होंने उत्कर्षित कलीसियाओं की स्थापना की थी।

12 यहाँ तक कि रूमाल और अँगोछे उसकी देह से स्पर्श कराकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ दूर हो जाती थी; और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाया करती थीं।

13 परन्तु कुछ यहूदी जो झाड़ा फूँकी करते फिरते थे, यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूँकने लगे, “जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ।”

14 और *1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100* नाम के एक यहूदी प्रधान याजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे।

15 पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, “यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलुस को भी पहचानती हूँ; परन्तु तुम कौन हो?”

16 और उस मनुष्य ने जिसमें दुष्ट आत्मा थी; उन पर लपककर, और उन्हें काबू में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।

17 और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई।

18 और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतों ने आकर अपने-अपने बुरे कामों को मान लिया और प्रगट किया।

19 और जादू-टोना करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं; और जब उनका दाम जोड़ा गया, जो पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला।

20 इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्यपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।

21 जब ये बातें हो चुकी तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि *1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100* से होकर यरूशलेम को जाऊँ, और कहा, “वहाँ जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।”

22 इसलिए अपनी सेवा करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन आसिया में रह गया।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

23 उस समय उस पन्थ के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ।

24 क्योंकि दिमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर बनवाकर, कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था।

25 उसने उनको और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठे करके कहा, “हे मनुष्यों, तुम जानते हो कि इस काम से हमें कितना धन मिलता है।

26 और तुम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन् प्रायः सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी है, वे ईश्वर नहीं।

27 और अब केवल इसी एक बात का ही डर नहीं कि हमारे इस धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी; वरन् यह कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्त्व भी जाता रहेगा।”

28 वे यह सुनकर क्रोध से भर गए और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, “इफिसियों की अरतिमिस, महान है!”

29 और सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया और लोगों ने गयुस और अरिस्तर्खुस, मकिदुनियों को जो पौलुस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया, और एक साथ होकर रंगशाला में दौड़ गए।

30 जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने न दिया।

31 आसिया के हाकिमों में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा और विनती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना।

32 वहाँ कोई कुछ चिल्लाता था, और कोई कुछ; क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि वे किस लिये इकट्ठे हुए हैं।

33 तब उन्होंने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया, और सिकन्दर हाथ से संकेत करके लोगों के सामने उत्तर देना चाहता था।

34 परन्तु जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक स्वर से कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे, “इफिसियों की अरतिमिस, महान है।”

35 तब नगर के मंत्री ने लोगों को शान्त करके कहा, “हे इफिसियों, कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का नगर महान देवी अरतिमिस के मन्दिर, और आकाश से गिरी हुई मूर्त का रखवाला है।

36 अतः जबकि इन बातों का खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उचित है, कि तुम शान्त रहो; और बिना सोचे-विचारे कुछ न करो।

37 क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो, जो न मन्दिर के लूटनेवाले हैं, और न हमारी देवी के निन्दक हैं।

38 यदि दिमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को

किसी से विवाद हो तो कचहरी खुली है, और हाकिम भी हैं; वे एक दूसरे पर आरोप लगाए।

39 परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा।

40 क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिए कि इसका कोई कारण नहीं, अतः हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे।”

41 और यह कह के उसने सभा को विदा किया।

## 20

?????????, ?????? ?? ??????? ???  
???????

1 जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उनसे विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया।

2 उस सारे प्रदेश में से होकर और चेलों को बहुत उत्साहित कर वह यूनान में आया।

3 जब तीन महीने रहकर वह वहाँ से जहाज पर सीरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उसकी घात में लगे, इसलिए उसने यह निश्चय किया कि मकिदुनिया होकर लौट जाए।

4 बिरीया के पुरूस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साथ हो लिए।

5 पर वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा करते रहे।

6 और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पाँच दिन में त्रोआस में उनके पास पहुँचे, और सात दिन तक वहीं रहे।

?????????? ?? ??????? ??????

7 सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की, और आधी रात तक उपदेश देता रहा।

8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उसमें बहुत दीये जल रहे थे।

9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।

10 परन्तु पौलुस उतरकर उससे [2222] [2222]\*, और गले लगाकर कहा, “घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।” (1 [2222]. 17:21)

11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उनसे बातें करता रहा कि पौ फट गई; फिर वह चला गया।

12 और वे उस जवान को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई।

[222222] [22] [22222222] [22] [222222]

13 हम पहले से जहाज पर चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि वहाँ से हम पौलुस को चढ़ा लें क्योंकि उसने यह इसलिए ठहराया था, कि आप ही पैदल जानेवाला था।

14 जब वह अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ाकर [2222222222] में आए।

15 और वहाँ से जहाज खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के सामने पहुँचे, और अगले दिन सामुस में जा पहुँचे, फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए।

16 क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के पास से होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर लगे; क्योंकि वह जल्दी में था, कि यदि हो सके, तो वह पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में रहे।

[222222] [22] [2222222222] [22] [222222]

17 और उसने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया।

18 जब वे उसके पास आए, तो उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा।

19 अर्थात् बड़ी दीनता से, और आँसू बहा-बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड्यंत्र के कारण जो मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

20 और जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर-घर सिखाने से कभी न झिझका।

21 वरन् यहूदियों और यूनानियों को चेतावनी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराए, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करे।

22 और अब, मैं [222222] [2222] [22222] [2222]‡ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा,

23 केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे-देकर मुझसे कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार है।

24 परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।

25 और अब मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे।

26 इसलिए मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ।

27 क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका।

28 इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की देख-रेख करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। ([222]. 74:2)

29 मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।

30 तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।

31 इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।

32 और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्र किए गये लोगों में सहभागी होकर विरासत दे सकता है।

33 मैंने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। (1 [2222]. 12:3)

34 तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी की।

35 मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना, और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना अवश्य है, कि उसने आप ही कहा है: **‘लेने से देना धन्य है।’**”

36 यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की।

\* 20:10 [2222] [2222]: सम्भवतः एलीशा के समान जैसा उसने शूनेमवासी स्त्री के बेटे के साथ किया था उसी तरह से पौलुस ने अपने आपको उस पर लिटा दिया। † 20:14 [2222222222]: यह लेसबोस के द्वीप की राजधानी थी। ‡ 20:22 [222222] [2222] [222222] [2222]: पवित्र आत्मा के प्रभाव के द्वारा दृढ़तापूर्वक आग्रह या विवश किया हुआ।

37 तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लिपटकर उसे चूमने लगे।

38 वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उसने कही थी, कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे। और उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।

## 21

☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

1 जब हमने उनसे अलग होकर समुद्री यात्रा प्रारम्भ किया, तो सीधे मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन रुदुस में, और वहाँ से पतरा में;

2 और एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला, और हमने उस पर चढ़कर, उसे खोल दिया।

3 जब साइप्रस दिखाई दिया, तो हमने उसे बाएँ हाथ छोड़ा, और सीरिया को चलकर सोर में उतरे; क्योंकि वहाँ जहाज का बोझ उतारना था।

4 और चेलों को पाकर हम वहाँ सात दिन तक रहे। उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पाँव न रखना।

5 जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम वहाँ से चल दिए; और सब स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक पहुँचाया और हमने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की।

6 तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहाज पर चढ़े, और वे अपने-अपने घर लौट गए।

7 जब हम सोर से जलयाना पूरी करके *☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞*\* में पहुँचे, और भाइयों को नमस्कार करके उनके साथ एक दिन रहे।

8 दूसरे दिन हम वहाँ से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था, जाकर उसके यहाँ रहे।

9 उसकी चार कुंवारी पुत्रियाँ थीं; जो भविष्यद्वाणी करती थीं। **(☞☞☞☞. 2:28)**

10 जब हम वहाँ बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नामक एक भविष्यद्वाक्ता यहूदिया से आया।

11 उसने हमारे पास आकर पौलुस का कमरबन्द लिया, और अपने हाथ पाँव बाँधकर कहा, “पवित्र आत्मा यह कहता है, कि जिस मनुष्य का यह कमरबन्द है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बाँधेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे।”

12 जब हमने ये बातें सुनी, तो हम और वहाँ के लोगों ने उससे विनती की, कि यरूशलेम को न जाए।

13 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, “तुम क्या करते हो, कि रो-रोकर मेरा मन तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बाँधे जाने ही के लिये वरन् मरने के लिये भी तैयार हूँ।”

14 जब उसने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए, “प्रभु की इच्छा पूरी हो।”

15 उन दिनों के बाद हमने तैयारी की और यरूशलेम को चल दिए।

16 कैसरिया के भी कुछ चले हमारे साथ हो लिए, और मनासोन नामक साइप्रस के एक पुराने चले को साथ ले आए, कि हम उसके यहाँ टिकें।

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

17 जब हम यरूशलेम में पहुँचे, तब भाइयों ने बड़े आनन्द के साथ हमारा स्वागत किया।

18 दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहाँ सब प्राचीन इकट्ठे थे।

19 तब उसने उन्हें नमस्कार करके, जो-जो काम परमेश्वर ने उसकी सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक-एक करके सब बताया।

20 उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की, फिर उससे कहा, “हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियों में से कई हजार ने विश्वास किया है; और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं।

21 और उनको तेरे विषय में सिखाया गया है, कि तू अन्यजातियों में रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है, और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न रीतियों पर चलो।

22 तो फिर क्या किया जाए? लोग अवश्य सुनेंगे कि तू यहाँ आया है।

23 इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर। हमारे यहाँ चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है।

24 उन्हें लेकर उसके साथ अपने आपको शुद्ध कर; और उनके लिये खर्चा दे, कि वे सिर मुँडाएँ। तब सब जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उनकी कुछ जड़ नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है। **(☞☞☞☞. 6:5, ☞☞☞☞. 6:13-18, ☞☞☞☞. 6:21)**

25 परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में जिन्होंने विश्वास किया है, हमने यह निर्णय करके लिख भेजा है कि वे मूर्तियों के सामने बलि किए हुए माँस से, और लहू से, और गला घोंटे हुआ माँस से, और व्यभिचार से, बचे रहें।”

\* 21:7 *☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞*: यह भूमध्य सागर के तट पर स्थित एक नगर था।

26 तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर, और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया, और वहाँ बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उनमें से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पूरे होंगे। (21:27. 6:13-21)

27 जब वे सात दिन पूरे होने पर थे, तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देखकर सब लोगों को भड़काया, और यह चिल्ला चिल्लाकर उसको पकड़ लिया,

28 “हे इस्राएलियों, सहायता करो; यह वही मनुष्य है, जो लोगों के, और व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है, यहाँ तक कि यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर उसने इस पवित्रस्थान को अपवित्र किया है।”

29 उन्होंने तो इससे पहले इफिसुस वासी 22:28 को उसके साथ नगर में देखा था, और समझते थे कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया है।

30 तब सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए, और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द किए गए।

31 जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो सैन्य-दल के सरदार को सन्देश पहुँचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच रहा है।

32 तब वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उनके पास नीचे दौड़ आया; और उन्होंने सैन्य-दल के सरदार को और सिपाहियों को देखकर पौलुस को मारना-पीटना रोक दिया।

33 तब सैन्य-दल के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया; और दो जंजीरों से बाँधने की आज्ञा देकर पृच्छने लगा, “यह कौन है, और इसने क्या किया है?”

34 परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाते रहे और जब हुल्लड के मारे ठीक सच्चाई न जान सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी।

35 जब वह सीढ़ी पर पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाव के मारे सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा।

36 क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी, “उसका अन्त कर दो।”

37 जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर थे, तो उसने सैन्य-दल के सरदार से कहा, “क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ से कुछ कहूँ?” उसने कहा, “क्या तू यूनानी जानता है?”

38 क्या तू वह मिस्री नहीं, जो इन दिनों से पहले बलवाई बनाकर चार हजार हथियार-बन्द लोगों को जंगल में ले गया?”

39 पौलुस ने कहा, “मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूँ! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूँ। और मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि मुझे लोगों से बातें करने दे।”

40 जब उसने आज्ञा दी, तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से संकेत किया। जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा:

## 22

1 “हे भाइयों और पिताओं, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे सामने कहता हूँ।”

2 वे यह सुनकर कि वह उनसे इब्रानी भाषा में बोलता है, वे चुप रहे। तब उसने कहा:

3 “मैं तो यहूदी हूँ, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में 22:28 के पाँवों के पास बैठकर शिक्षा प्राप्त की, और पूर्वजों की व्यवस्था भी ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो।

4 मैंने पुरुष और स्त्री दोनों को बाँधकर, और बन्दीगृह में डालकर, इस पंथ को यहाँ तक सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला।

5 स्वयं महायाजक और सब पुरनिए गवाह हैं; कि उनमें से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियाँ लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहाँ हों उन्हें दण्ड दिलाने के लिये बाँधकर यरूशलेम में लाऊँ।

6 “जब मैं यात्रा करके दमिश्क के निकट पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग अचानक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी।

7 और मैं भूमि पर गिर पड़ा: और यह वाणी सुनी, **‘हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’**

8 मैंने उत्तर दिया, **‘हे प्रभु, तू कौन है?’** उसने मुझसे कहा, **‘मैं यीशु नासरी हूँ, जिसे तू सताता है।’**

9 और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझसे बोलता था उसकी वाणी न सुनी।

10 तब मैंने कहा, **‘हे प्रभु, मैं क्या करूँ?’** प्रभु ने मुझसे कहा, **‘उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहाँ तुझे सब बता दिया जाएगा।’**

† 21:29 22:28: वह पौलुस के साथ उनके इफिसुस से आने के मार्ग में हो लिया था, प्रेरित 20:4। \* 22:3 22:28: प्रेरित 5:34 की टिप्पणी देखिए।

11 जब उस ज्योति के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया।

12 “तब हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहाँ के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम था, मेरे पास आया,

13 और खड़ा होकर मुझसे कहा, ‘हे भाई शाऊल, फिर देखने लग।’ उसी घड़ी मेरी आँखें खुल गईं और मैंने उसे देखा।

14 तब उसने कहा, ‘हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुँह से बातें सुने।

15 क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं।

16 अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और [22:22] अपने पापों को धो डाल।’ (22:22, 2:32)

17 “जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेसुध हो गया।

18 और उसको देखा कि मुझसे कहता है, ‘जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे।’

19 मैंने कहा, ‘हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटाता था।

20 और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लहू बहाया जा रहा था तब भी मैं वहाँ खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके हत्यारों के कपड़ों की रखवाली करता था।’

21 और उसने मुझसे कहा, ‘चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर भेजूँगा।’”

22 वे इस बात तक उसकी सुनते रहे; तब ऊँचे शब्द से चिल्लाए, “ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहना उचित नहीं!”

23 जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और [22:22] [22:22];

24 तो सैन्य-दल के सूबेदार ने कहा, “इसे गढ़ में ले जाओ; और कोड़े मारकर जाँचो, कि मैं जानूँ कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं।”

25 जब उन्होंने उसे तसमों से बाँधा तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो उसके पास खड़ा था कहा, “क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े मारो?”

26 सूबेदार ने यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार के पास जाकर कहा, “तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है।”

27 तब सैन्य-दल के सरदार ने उसके पास आकर कहा, “मुझे बता, क्या तू रोमी है?” उसने कहा, “हाँ।”

28 यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार ने कहा, “मैंने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है।” पौलुस ने कहा, “मैं तो जन्म से रोमी हूँ।”

29 तब जो लोग उसे जाँचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से हट गए; और सैन्य-दल का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और उसने उसे बाँधा है, डर गया।

[22:22] [22:22] [22:22]

30 दूसरे दिन वह ठीक-ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं, इसलिए उसके बन्धन खोल दिए; और प्रधान याजकों और सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा दी, और पौलुस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

## 23

1 पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, “हे भाइयों, मैंने आज तक परमेश्वर के लिये बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।”

2 हनन्याह महायाजक ने, उनको जो उसके पास खड़े थे, उसके मुँह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी।

3 तब पौलुस ने उससे कहा, “हे चूना फिरी हुई दीवार, परमेश्वर तुझे मारेगा। तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है?” (22:22, 19:15, 22:13-15)

4 जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, “क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा-भला कहता है?”

5 पौलुस ने कहा, “हे भाइयों, मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है,

‘अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह।’” (22:22, 22:28)

6 तब पौलुस ने यह जानकर, कि एक दल सद्कियों और दूसरा फरीसियों का है, महासभा में पुकारकर कहा, “हे भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूँ, मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा है।”

† 22:16 [22:22] [22:22] [22:22]: क्षमा और पवित्रीकरण के लिए। ‡ 22:23 [22:22] [22:22] [22:22] [22:22] [22:22]: उनमें से सार्थक रूप में घृणा और आक्रोश।

7 जब उसने यह बात कही तो फरीसियों और सद्कियों में झगडा होने लगा; और सभा में फूट पड गई।

8 क्योंकि सद्की तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी इन सब को मानते हैं।

9 तब बडा हल्ला मचा और कुछ शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर यह कहकर झगडने लगे, “हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उससे बोला है तो फिर क्या?”

10 जब बहुत झगडा हुआ, तो सैन्य-दल के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें, सैन्य-दल को आज्ञा दी कि उतरकर उसको उनके बीच में से जबरदस्ती निकालो, और गढ में ले आओ।

11 उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खडे होकर कहा, “हे पौलुस, धैर्य रख; क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।”

22:22-24 22 22:22-24 22 22:22-24 22

12 जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने एका किया, और शपथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, यदि हम खाएँ या पीएँ तो हम पर धिक्कार।

13 जिन्होंने यह शपथ खाई थी, वे चालीस जन से अधिक थे।

14 उन्होंने प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास आकर कहा, “हमने यह ठाना है कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ भी खाएँ, तो हम पर धिक्कार है।

15 इसलिए अब महासभा समेत सैन्य-दल के सरदार को समझाओ, कि उसे तुम्हारे पास ले आएँ, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक से जाँच करना चाहते हो, और हम उसके पहुँचने से पहले ही उसे मार डालने के लिये तैयार रहेंगे।”

16 और पौलुस के भांजे ने सुना कि वे उसकी घात में हैं, तो गढ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया।

17 पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा, “इस जवान को सैन्य-दल के सरदार के पास ले जाओ, यह उससे कुछ कहना चाहता है।”

18 अतः उसने उसको सैन्य-दल के सरदार के पास ले जाकर कहा, “बन्दी पौलुस ने मुझे बुलाकर विनती की, कि यह जवान सैन्य-दल के सरदार से कुछ कहना चाहता है; इसे उसके पास ले जा।”

19 सैन्य-दल के सरदार ने उसका हाथ पकडकर, और उसे अलग ले जाकर पूछा, “तू मुझसे क्या कहना चाहता है?”

20 उसने कहा, “यहूदियों ने एका किया है, कि तुझ से विनती करें कि कल पौलुस को महासभा में लाएँ, मानो तू और ठीक से उसकी जाँच करना चाहता है।

21 परन्तु उनकी मत मानना, क्योंकि उनमें से चालीस के ऊपर मनुष्य उसकी घात में हैं, जिन्होंने यह ठान लिया है कि जब तक वे पौलुस को मार न डालें, तब तक न खाएँगे और न पीएँगे, और अब वे तैयार हैं और तेरे वचन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

22 तब सैन्य-दल के सरदार ने जवान को यह निर्देश देकर विदा किया, “किसी से न कहना कि तूने मुझ को ये बातें बताई हैं।”

22:22-24 22 22:22-24 22 22:22-24 22

23 उसने तब दो सूबेदारों को बुलाकर कहा, “दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालैत को कैसरिया जाने के लिये तैयार कर रख, तू रात के तीसरे पहर को निकलना।

24 और पौलुस की सवारी के लिये घोडे तैयार रखो कि उसे 22:22-24 22:22-24\* के पास सुरक्षित पहुँचा दें।”

25 उसने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी:

26 “महाप्रतापी फेलिक्स राज्यपाल को क्लौदियुस लूसियास को नमस्कार;

27 इस मनुष्य को यहूदियों ने पकडकर मार डालना चाहा, परन्तु जब मैंने जाना कि वो रोमी है, तो सैन्य-दल लेकर छोडा लाया।

28 और मैं जानना चाहता था, कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिए उसे उनकी महासभा में ले गया।

29 तब मैंने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले जाने या बाँधे जाने के योग्य उसमें कोई दोष नहीं।

30 और जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो मैंने तुरन्त उसको तेरे पास भेज दिया; और मुद्दयों को भी आज्ञा दी, कि तेरे सामने उस पर आरोप लगाएँ।”

31 अतः जैसे सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी, वैसे ही पौलुस को लेकर रातों-रात अन्तिपत्रिस में लाएँ।

32 दूसरे दिन वे सवारों को उसके साथ जाने के लिये छोडकर आप गढ को लौटे।

\* 23:24 22:22-24 22:22-24: यहूदिया का हाकिम, उसका नाम अनतोलियाई फेलिक्स था।





24 कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी ~~????????????~~ को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उससे सुना।

25 जब वह धार्मिकता और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया, “अभी तो जा; अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा।”

26 उसे पौलुस से कुछ धन मिलने की भी आशा थी; इसलिए और भी बुला-बुलाकर उससे बातें किया करता था।

27 परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो पुरकियुस फेस्तुस, फेलिक्स की जगह पर आया, और फेलिक्स यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को बन्दी ही छोड़ गया।

## 25

~~????????????~~ ~~??~~ ~~????????~~

1 फेस्तुस उस प्रान्त में पहुँचकर तीन दिन के बाद कैसरिया से यरूशलेम को गया।

2 तब प्रधान याजकों ने, और यहूदियों के प्रमुख लोगों ने, उसके सामने पौलुस पर दोषारोपण की;

3 और उससे विनती करके उसके विरोध में यह चाहा कि वह उसे यरूशलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की ~~????~~\* लगाए हुए थे।

4 फेस्तुस ने उत्तर दिया, “पौलुस कैसरिया में कैदी है, और मैं स्वयं जल्द वहाँ जाऊँगा।”

5 फिर कहा, “तुम से जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएँ।”

6 उनके बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया गया: और दूसरे दिन न्याय आसन पर बैठकर पौलुस को लाने की आज्ञा दी।

7 जब वह आया, तो जो यहूदी यरूशलेम से आए थे, उन्होंने आस-पास खड़े होकर उस पर बहुत से गम्भीर दोष लगाए, जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे।

8 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, “मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था के और न मन्दिर के, और न कैसर के विरुद्ध कोई अपराध किया है।”

9 तब फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर दिया, “क्या तू चाहता है कि यरूशलेम

को जाए; और वहाँ मेरे सामने तेरा यह मुकद्दमा तय किया जाए?”

~~??????~~ ~~??~~ ~~????~~ ~~??~~ ~~??????~~ ~~????~~

10 पौलुस ने कहा, “मैं कैसर के न्याय आसन के सामने खड़ा हूँ; मेरे मुकद्दमे का यहीं फैसला होना चाहिए। जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहूदियों का मैंने कुछ अपराध नहीं किया।

11 यदि अपराधी हूँ और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है, तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उनमें से कोई बात सच न ठहरे, तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दुहाई देता हूँ।”

12 तब फेस्तुस ने मंत्रियों की सभा के साथ विचार करके उत्तर दिया, “तूने कैसर की दुहाई दी है, तो तू कैसर के पास ही जाएगा।”

~~????????????~~ ~~??~~ ~~????????~~ ~~????~~

13 कुछ दिन बीतने के बाद ~~????????????~~ ~~????~~ और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की।

14 उनके बहुत दिन वहाँ रहने के बाद फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा को बताया, “एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स बन्दी छोड़ गया है।

15 जब मैं यरूशलेम में था, तो प्रधान याजकों और यहूदियों के प्राचीनों ने उस पर दोषारोपण किया और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी जाए।

16 परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप दें, जब तक आरोपी को अपने दोष लगाने वालों के सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले।

17 अतः जब वे वहाँ उपस्थित हुए, तो मैंने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी।

18 जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था।

19 परन्तु अपने मत के, और यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उसको जीवित बताता था, विवाद करते थे।

20 और मैं उलझन में था, कि इन बातों का पता कैसे लगाऊँ? इसलिए मैंने उससे पूछा, ‘क्या तू यरूशलेम जाएगा, कि वहाँ इन बातों का फैसला हो?’

21 परन्तु जब पौलुस ने दुहाई दी, कि मेरे मुकद्दमे का फैसला महाराजाधिराज के यहाँ हो; तो मैंने आज्ञा दी,

\* 25:3 ~~????~~: यह वही है, वे मार्ग में प्रतिक्षा करेगा, या यात्रा में उनकी जान लेने के लिए वे हत्यारों के जत्थों के साथ होगा। † 25:13 ~~????????????~~ ~~????~~: यह अग्रिप्पा हेरोदेस अग्रिप्पा का पुत्र था प्रेरित 12:1, और हेरोदेस महान का प्रपौत्र था।



हूँ। (1 222. 16:35)

18 कि तू उनकी आँखें खोले, कि 222 222222 22 222222 22 222, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिर; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, विरासत पाएँ। (2222. 33:3,4, 222. 35:5,6, 222. 42:7, 222. 42:16, 222. 61:1)

19 अतः हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली,

20 परन्तु पहले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के रहनेवालों को, तब यहूदिया के सारे देश में और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरकर मन फिराव के योग्य काम करो।

21 इन बातों के कारण यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़कर मार डालने का यत्न करते थे।

22 परन्तु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूँ और छोटे बड़े सभी के सामने गवाही देता हूँ, और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं,

23 कि मसीह को दुःख उठाना होगा, और वही सबसे पहले मरे हुआँ में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा। (222. 42:6, 222. 49:6)

24 जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था, तो फेस्तुस ने ऊँचे शब्द से कहा, “हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।”

25 परन्तु उसने कहा, “हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ।

26 राजा भी जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है, और मुझे विश्वास है, कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि वह घटना तो कोने में नहीं हुई।

27 हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास करता है? हाँ, मैं जानता हूँ, कि तू विश्वास करता है।”

28 अब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “क्या तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?”

29 पौलुस ने कहा, “परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु

जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरे इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएँ।”

30 तब राजा और राज्यपाल और बिरनीके और उनके साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए;

31 और अलग जाकर आपस में कहने लगे, “यह मनुष्य 222 22 222 2222 2222, 22 222222-2222 22 22222222 222 2222 2222 22 22222 2222।

32 अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, “यदि यह मनुष्य कैसर की दुहाई न देता, तो छूट सकता था।”

## 27

22222 22 222 2222 2222

1 जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज द्वारा इतालिया जाएँ, तो उन्होंने पौलुस और कुछ अन्य बन्दियों को भी यूलियुस नामक औगुस्तुस की सैन्य-दल के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया।

2 2222222222222222\* के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हमने उसे खोल दिया, और अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदुनी हमारे साथ था।

3 दूसरे दिन हमने सीदोन में लंगर डाला और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहाँ जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए।

4 वहाँ से जहाज खोलकर हवा विरुद्ध होने के कारण हम साइप्रस की आड़ में होकर चले;

5 और किलिकिया और पंफुलिया के निकट के समुद्र में होकर 2222222222 के मूरा में उतरे।

6 वहाँ सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।

7 जब हम बहुत दिनों तक धीरे धीरे चलकर कठिनता से कनिदुस के सामने पहुँचे, तो इसलिए कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी, हम सलमोने के सामने से होकर क्रेते की आड़ में चले;

8 और उसके किनारे-किनारे कठिनता से चलकर ‘शुभलंगरबारी’ नामक एक जगह पहुँचे, जहाँ से लसया नगर निकट था।

22222 22 2222 222222222222

9 जब बहुत दिन बीत गए, और जलयात्रा में जोखिम इसलिए होती थी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर चेतावनी दी,

‡ 26:18 22 222222 22 222222 22 22: मूर्तिपूजा और पाप के अंधेरे से ज्योति और सुसमाचार की पवित्रता में। § 26:31 222 22 222 2222 2222, ... 22222 22: यह निष्कर्ष था जो यहूदियों के द्वारा उसके विरुद्ध लगाए गए आरोप को सुनने के बाद आया था। \* 27:2 2222222222222222: आसिया माइनर में मुसिया का एक समुद्री नगर। † 27:5 22222222: लूसिया आसिया माइनर के पश्चिमी हिस्से में एक प्रांत था।

10 “हे सज्जनों, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस यात्रा में विपत्ति और बहुत हानि, न केवल माल और जहाज की वरन् हमारे प्राणों की भी होनेवाली है।”

11 परन्तु सूबेदार ने कप्तान और जहाज के स्वामी की बातों को पौलुस की बातों से बढ़कर माना।

12 वह बन्दरगाह जाड़ा काटने के लिये अच्छा न था; इसलिए बहुतों का विचार हुआ कि वहाँ से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके तो [27:12] में पहुँचकर जाड़ा काटें। यह तो क्रेते का एक बन्दरगाह है जो दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता है।

[27:13] [27:13]

13 जब दक्षिणी हवा बहने लगी, तो उन्होंने सोचा कि उन्हें जिसकी जरूरत थी वह उनके पास थी, इसलिए लंगर उठाया और किनारे के किनारे, समुद्र तट के पास चल दिए।

14 परन्तु थोड़ी देर में जमीन की ओर से एक बड़ी आँधी उठी, जो ‘यूरकुलीन’ कहलाती है।

15 जब आँधी जहाज पर लगी, तब वह हवा के सामने ठहर न सका, अतः हमने उसे बहने दिया, और इसी तरह बहते हुए चले गए।

16 तब [27:16] नामक एक छोटे से टापू की आड़ में बहते-बहते हम कठिनता से डोंगी को वश में कर सके।

17 फिर मल्लाहों ने उसे उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बाँधा, और सुरतिस के रेत पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार कर बहते हुए चले गए।

18 और जब हमने आँधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे;

19 और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज का साज-सामान भी फेंक दिया।

20 और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आँधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।

21 जब वे बहुत दिन तक भूखे रह चुके, तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा, “हे लोगों, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह विपत्ति आती और न यह हानि उठाते।

22 परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूँ कि ढाढ़स बाँधो, क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, पर केवल जहाज की।

23 क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूँ, और जिसकी सेवा करता हूँ, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा,

24 “हे पौलुस, मत डर! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।”

25 इसलिए, हे सज्जनों, ढाढ़स बाँधो; क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, कि जैसा मुझसे कहा गया है, वैसा ही होगा।

26 परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।”

[27:27] [27:27]

27 जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया समुद्र में भटक रहे थे, तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अनुमान से जाना कि हम किसी देश के निकट पहुँच रहे हैं।

28 थाह लेकर उन्होंने बीस पुरसा गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा पाया।

29 तब पत्थरीली जगहों पर पड़ने के डर से उन्होंने जहाज के पीछे चार लंगर डाले, और भोर होने की कामना करते रहे।

30 परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी;

31 तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा, “यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम भी नहीं बच सकते।”

32 तब सिपाहियों ने रस्से काटकर डोंगी गिरा दी।

33 जब भोर होने पर था, तो पौलुस ने यह कहकर, सब को भोजन करने को समझाया, “आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते-देखते भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया।

34 इसलिए तुम्हें समझाता हूँ कि कुछ खा लो, जिससे तुम्हारा बचाव हो; क्योंकि तुम में से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा।”

35 और यह कहकर उसने रोटी लेकर सब के सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया और तोड़कर खाने लगा।

36 तब वे सब भी ढाढ़स बाँधकर भोजन करने लगे।

37 हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छिहत्तर जन थे।

38 जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेहूँ को समुद्र में फेंककर जहाज हलका करने लगे।

39 जब दिन निकला, तो उन्होंने उस देश को नहीं पहचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी जिसका चौरस किनारा

‡ 27:12 [27:12]: यह एक बन्दरगाह या क्रेते के दक्षिण की ओर टिकने का एक स्थान था § 27:16 [27:16]: यह एक छोटा सा द्वीप करीब 20 मील क्रेते के दक्षिण-पश्चिम में है।

था, और विचार किया कि यदि हो सके तो इसी पर जहाज को टिकाएँ।

40 तब उन्होंने लंगरों को खोलकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिए, और हवा के सामने अगला पाल चढ़ाकर किनारे की ओर चले।

41 परन्तु दो समुद्र के संगम की जगह पड़कर उन्होंने जहाज को टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर गड़ गई, और टल न सकी; परन्तु जहाज का पीछला भाग लहरों के बल से टूटने लगा।

42 तब सिपाहियों का यह विचार हुआ कि बन्दियों को मार डालें; ऐसा न हो कि कोई तैर कर निकल भागे।

43 परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका, और यह कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहले कूदकर किनारे पर निकल जाएँ।

44 और बाकी कोई पटरों पर, और कोई जहाज की अन्य वस्तुओं के सहारे निकल जाएँ, इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले।

## 28

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ

1 जब हम बच निकले, तो पता चला कि यह टापू ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ\* कहलाता है।

2 और वहाँ के निवासियों ने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंहू के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण, उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया।

3 जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्टा बटोरकर आग पर रखा, तो ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂ† आँच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया।

4 जब उन निवासियों ने साँप को उसके हाथ में लटके हुए देखा, तो आपस में कहा, “सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि समुद्र से बच गया, तो भी न्याय ने जीवित रहने न दिया।”

5 तब उसने साँप को आग में झटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुँची।

6 परन्तु वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरकर मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक देखते रहे और देखा कि उसका कुछ भी नहीं बिगडा, तो और ही विचार कर कहा, “यह तो कोई देवता है।”

7 उस जगह के आस-पास पुबलियुस नामक उस टापू के प्रधान की भूमि थी: उसने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से पहुँचाई की।

8 पुबलियुस के पिता तेज बुखार और पेचिश से रोगी पड़ा था। अतः पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।

9 जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के बाकी बीमार आए, और चंगे किए गए।

10 उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमारे लिये आवश्यक था, जहाज पर रख दिया।

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂⓂ ⓂⓂ ⓂⓂ

11 तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू में जाड़े काट रहा था, और जिसका चिन्ह दियुसकूरी था।

12 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ‡ में लंगर डाल करके हम तीन दिन टिके रहे।

13 वहाँ से हम घूमकर ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ§ में आए; और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली, तब दूसरे दिन पुतियुली में आए।

14 वहाँ हमको कुछ भाई मिले, और उनके कहने से हम उनके यहाँ सात दिन तक रहे; और इस रीति से हम रोम को चले।

15 वहाँ से वे भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन-सराय तक हमारी भेंट करने को निकल आए, जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बाँधा।

16 जब हम रोम में पहुँचे, तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा हुई।

ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ ⓂⓂⓂ

17 तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए तो उनसे कहा, “हे भाइयों, मैंने अपने लोगों के या पूर्वजों की प्रथाओं के विरोध में कुछ भी नहीं किया, फिर भी बन्दी बनाकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया।

18 उन्होंने मुझे जाँचकर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न था।

19 परन्तु जब यहूदी इसके विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दुहाई देनी पड़ी; यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था।

20 इसलिए मैंने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूँ और बातचीत करूँ; क्योंकि इस्राएल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूँ।”

\* 28:1 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: यह सिसिली के तट से लगभग 60 मील की दूरी पर है। † 28:3 ⓂⓂ ⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: एक ज़हरीला साँप। ‡ 28:12 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: यह पूर्वी तट पर सिसिली के द्वीप की राजधानी था। § 28:13 ⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂⓂ: यह नेपल्स के राज्य में इतालिया का एक नगर था।







11 क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ, कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ,

12 अर्थात् यह, कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुम में है, शान्ति पाऊँ।

13 और हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रुका रहा।

14 मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ।

15 इसलिए मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ।

☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞

16 क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। (2 ☞☞☞☞. 1:8)

17 क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, “विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।” (☞☞. 2:4, ☞☞☞. 3:11)

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞☞☞☞☞

18 परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।

19 इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है।

20 क्योंकि उसके ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं। (☞☞☞☞☞☞. 12:7-9, ☞☞. 19:1)

21 इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया।

22 वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, (☞☞☞☞☞☞. 10:14)

23 और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। (☞☞☞☞☞☞. 4:15-19, ☞☞. 106:20)

24 इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें।

25 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन। (☞☞☞☞☞☞. 13:25, ☞☞☞☞☞☞. 16:19)

26 इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहाँ तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला।

27 वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया। (☞☞☞☞☞☞. 18:22, ☞☞☞☞☞☞. 20:13)

28 जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें।

29 वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैर-भाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर,

30 गपशप करनेवाले, निन्दा करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, हिंसक, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा का उल्लंघन करनेवाले,

31 निर्बुद्धि, विश्वासघाती, स्वाभाविक व्यवहार रहित, कठोर और निर्दयी हो गए।

32 वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तो भी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।

## 2

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

1 अतः हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, तू निरुत्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आपको भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि तू जो दोष लगाता है, स्वयं ही वही काम करता है।

2 और हम जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से सच्चे दण्ड की आज्ञा होती है।

‡ 1:20 ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: यह उन चीजों को दर्शाता है जो इंद्रियों के द्वारा समझा नहीं जा सकता है।



1 फिर यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ?  
2 हर प्रकार से बहुत कुछ। पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन उनको सौंपे गए। (2/2/2. 9:4)

3 यदि कुछ विश्वासघाती निकले भी तो क्या हुआ? क्या उनके विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी?

4 कदापि नहीं! वरन् परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे, जैसा लिखा है,  
“जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए।” (2/2. 51:4, 2/2. 116:11)

5 पर यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है, तो हम क्या कहें? क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है? (यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूँ)।

6 कदापि नहीं! नहीं तो परमेश्वर कैसे जगत का न्याय करेगा?

7 यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उसकी महिमा के लिये अधिक करके प्रगट हुई, तो फिर क्यों पापी के समान मैं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूँ?

8 “2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2 2/2/2 2/2 2/2/2 2/2/2/2?” जैसा हम पर यही दोष लगाया भी जाता है, और कुछ कहते हैं कि इनका यही कहना है। परन्तु ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है।

2/2 2/2 2/2/2 2/2/2/2

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं।

10 जैसा लिखा है:

“कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। (2/2/2. 7:20)

11 कोई समझदार नहीं;

कोई परमेश्वर को खोजनेवाला नहीं।

12 सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए;

कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। (2/2. 14:3, 2/2. 53:1)

13 उनका गला खुली हुई कब्र है:

उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है:

उनके होठों में साँपों का विष है। (2/2. 5:9, 2/2. 140:3)

14 और उनका मुँह श्राप और कड़वाहट से भरा है। (2/2. 10:7)

15 उनके पाँव लहू बहाने को फुर्तीले हैं।

16 उनके मार्गों में नाश और क्लेश है।

17 उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। (2/2/2. 59:8)

18 उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।” (2/2. 36:1)

19 हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन हैं इसलिए कि हर एक मुँह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे।

20 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है। (2/2. 143:2)

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2

21 पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं,

22 अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है। क्योंकि कुछ भेद नहीं;

23 इसलिए कि सब ने पाप किया है और 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2 से रहित हैं,

24 परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, संत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।

25 उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए, और जिन पर परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से ध्यान नहीं दिया; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।

26 वरन् इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।

27 तो घमण्ड करना कहाँ रहा? उसकी तो जगह ही नहीं। कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, वरन् विश्वास की व्यवस्था के कारण।

28 इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

29 क्या परमेश्वर केवल यहूदियों का है? क्या अन्यजातियों का नहीं? हाँ, अन्यजातियों का भी है।

\* 3:8 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2 2 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2: जबकि बुराई, परमेश्वर की महिमा को बढ़ावा देने के लिए हैं जितना सम्भव है हम उतना करें। † 3:20 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2: कामों के द्वारा या इस तरह के काम जो व्यवस्था की माँग है। ‡ 3:23 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2: परमेश्वर की स्तुति या प्रशंसा।



विश्वास करते हैं, जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया।

<sup>25</sup> वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया। (2222. 53:5, 2222. 53:12)

## 5

222222222 22 2222

1 क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें,

2 जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी 222222\* भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।

3 केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज,

4 और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है;

5 और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

6 क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।

7 किसी 222222 222 के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का धैर्य दिखाए।

8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

9 तो जबकि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?

10 क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?

11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं।

2222 2222 22222222, 22222 2222 22222

12 इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से

\* 5:2 222222: इसका मतलब है, "जिसके द्वारा हमें परमेश्वर का अनुग्रह पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें हम आनन्दित होंगे जब हम धर्मी ठहराए जाएँगे।" † 5:7 222222 22: एक धर्मी मनुष्य; आचरण की अखण्डता के लिए प्रतिष्ठित एक मनुष्य। ‡ 5:14 22222222 22 222 222222 22 22 222222 222222: मृत्यु के प्रभुत्व के अधीन उन लोगों की मृत्यु हो गई। § 5:20 2222222222: यह शब्द यहाँ पर सभी नियम जो पुराने नियम में दिए गए थे, को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया है।

मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया। (1 222222. 15:21,22)

13 क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप गिना नहीं जाता।

14 तो भी आदम से लेकर मूसा तक 22222222 222 222 2222222 222 222 2222222 2222222, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिन्ह है, के अपराध के समान पाप न किया।

15 पर जैसी अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के वरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ।

16 और जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ, वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुत से अपराधों से ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे।

17 क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

18 इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धार्मिकता का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।

19 क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।

20 2222222222228 बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ,

21 कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।

## 6

2222 22 2222 2222, 2222222222 22 2222 2222222



4 तो हे मेरे भाइयों, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुआओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएँ।

5 क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएँ जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये हमारे अंगों में काम करती थीं।

6 परन्तु जिसके बन्धन में हम थे उसके लिये मरकर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन् आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।

?????????? ?? ???? ?

7 तो हम क्या कहें? ?????? ?????????????? ?????? ????\*? कदापि नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहचानता व्यवस्था यदि न कहती, “लालच मत कर” तो मैं लालच को न जानता। (????? 3:20)

8 परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था के पाप मुर्दा है।

9 मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया।

10 और वही आज्ञा जो ?????? ?? ?????? ????\*, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी। (????? 18:5)

11 क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला। (????? 7:8)

12 इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा पवित्र, धर्मी, और अच्छी है।

????? ?? ?????????? ?????? ?????????????? ???????????

13 तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।

14 क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक हूँ और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।

15 और जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा आती है, वही करता हूँ।

\* 7:7 ?????? ?????????????? ?????? ??: क्या पापमय इच्छा “व्यवस्था के द्वारा” थी, यह स्वाभाविक रूप से पूछा जाता था कि व्यवस्था स्वयं बुरी बात नहीं थी? † 7:10 ?????? ?? ?????? ??: जिसका लक्ष्य जीवन या खुशी देने का था। ‡ 7:24 ?????? ??????????????: मन की परिस्थिति गम्भीर पीड़ा में, और उसका विवेक स्वयं की कमजोरी में, और मदद की तलाश में देख रहे हैं। \* 8:1 ?????? ?? ?????????? ??????: सुसमाचार व्यवस्था की तरह दण्ड की आज्ञा नहीं सुनाता है। † 8:3 ?? ?????? ?????????????? ??????.... ‡ ???? ?????: परमेश्वर की व्यवस्था, नैतिक व्यवस्था। यह पाप और दण्ड से मुक्त नहीं कर सकी।

16 और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है।

17 तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो मुझे में बसा हुआ है।

18 क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझे में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझे में है, परन्तु भले काम मुझेसे बन नहीं पड़ते। (????? 6:5)

19 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ।

20 परन्तु यदि मैं वही करता हूँ जिसकी इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझे में बसा हुआ है।

21 तो मैं यह व्यवस्था पाता हूँ कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है।

22 क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ।

23 परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।

24 मैं कैसा अभाग मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से ?????? ?????????????? ??:

25 हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिए मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूँ।

## 8

????????????? ?????????? ?? ??????????? ???????

1 इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर ?????? ?????? ?????????? ?????????\*।

2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

3 क्योंकि ?? ?????? ?????????????? ?????????? ?? ?????? ?????????? ?????????? ? ???? ????\*, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की

समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।

4 इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

5 क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।

6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है।

8 और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9 परन्तु जबकि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

10 यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है।

11 और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुआओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

????? ?? ??????? ?????? ?? ???????

12 तो हे भाइयों, हम शरीर के कर्जदार नहीं, कि शरीर के अनुसार दिन काटें।

13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

14 इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही ?????????? ?? ?????? हैं।

15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

16 पवित्र आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब हम उसके साथ दुःख उठाए तो उसके साथ महिमा भी पाएँ।

????? ?? ??????? ??

18 क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।

19 क्योंकि सृष्टि बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की प्रतीक्षा कर रही है।

20 क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई।

21 कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।

22 क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।

23 और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की प्रतीक्षा करते हैं।

24 आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहाँ रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा?

25 परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी प्रतीक्षा भी करते हैं।

26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है।

27 और मनो का जाँचनेवाला जानता है, कि पवित्र आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है।

28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

29 क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे।

30 फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।

?????????????? ?? ??????? ???????

‡ 8:14 ?????????? ?? ???????: परमेश्वर के पुत्र है और उनके परिवार में गोद लिए गए उनके बच्चे है।



31 तो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? (११:११. 118:6)

32 जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?

33 परमेश्वर के चुने हुएों पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है।

34 फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

35 कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?

36 जैसा लिखा है, “तेरे लिये हम दिन भर मार डाले जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।” (११:११. 44:22)

37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, विजेता से भी बढ़कर हैं।

38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई,

39 न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

## 9

११:११-१२ १२:१-२ १३:१-२ १४:१-२

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है।

2 कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है।

3 क्योंकि मैं यहाँ तक चाहता था, कि अपने भाइयों, के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से श्रापित और अलग हो जाता। (११:११. 32:32)

4 वे इस्राएली हैं, लेपालकपन का हक, महिमा, वाचाएँ, व्यवस्था का उपहार, परमेश्वर की उपासना, और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं। (११:११. 147:19)

5 पूर्वज भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन।

११:११-१२ १२:१-२ १३:१-२ १४:१-२

6 परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिए कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं;

7 और न अब्राहम के वंश होने के कारण सब उसकी सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) “इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा।” (११:११. 11:18)

8 अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं।

9 क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है, “मैं इस समय के अनुसार आऊँगा, और सारा का एक पुत्र होगा।” (११:११. 18:10, 21:2)

10 और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी। (११:११. 25:21)

11 और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था, इसलिए कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलानेवाले पर बनी रहे।

12 उसने कहा, “जेठा छोटे का दास होगा।” (११:११. 25:23)

13 जैसा लिखा है, “मैंने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना।” (११:११. 1:2,3)

११:११-१२ १२:१-२ १३:१-२ १४:१-२

14 तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के यहाँ अन्याय है? कदापि नहीं!

15 क्योंकि वह मूसा से कहता है, “मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उस पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा।” (११:११. 33:19)

16 इसलिए यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।

17 क्योंकि पवित्रशास्त्र में फिरौन से कहा गया, “मैंने तुझे इसलिए खड़ा किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ्य दिखाऊँ, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो।” (११:११. 9:16)

18 तो फिर, वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है।

19 फिर तू मुझसे कहेगा, “वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उसकी इच्छा का सामना करता है?”

20 हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है? क्या गद्दी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है, “तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?”



14 फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्यों लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्यों विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्यों सुनें?

15 और यदि भेजे न जाएँ, तो क्यों प्रचार करें? जैसा लिखा है, “उनके पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!” (2/2/2. 52:7, 2/2/2. 1:15)

16 परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया। यशायाह कहता है, “हे प्रभु, किसने हमारे समाचार पर विश्वास किया है?” (2/2/2. 53:1)

17 इसलिए विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

18 परन्तु मैं कहता हूँ, “क्या उन्होंने नहीं सुना?” सुना तो सही क्योंकि लिखा है, “उनके स्वर सारी पृथ्वी पर, और उनके वचन जगत के छोर तक पहुँच गए हैं।” (2/2/2. 19:4)

19 फिर मैं कहता हूँ। क्या इस्राएली नहीं जानते थे? पहले तो मूसा कहता है, “मैं उनके द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे मन में जलन उपजाऊँगा, मैं एक मूर्ख जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलाऊँगा।” (2/2/2. 32:21)

20 फिर यशायाह बड़े साहस के साथ कहता है, “जो मुझे नहीं ढूँढते थे, उन्होंने मुझे पा लिया; और जो मुझे पूछते भी न थे, उन पर मैं प्रगट हो गया।”

21 परन्तु इस्राएल के विषय में वह यह कहता है “मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न माननेवाली और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा।” (2/2/2. 65:1,2)

## 11

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2

1 इसलिए मैं कहता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया? कदापि नहीं! मैं भी तो इस्राएली हूँ; अब्राहम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र में से हूँ।

2 परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उसने पहले ही से जाना: क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्रशास्त्र एलिय्याह की कथा में क्या कहता है; कि वह इस्राएल के विरोध में परमेश्वर से विनती करता है। (2/2/2. 94:14)

\* 11:5 2/2/2 2/2/2 2/2/2/2 2/2/2: वह जो बाकी या अलग करके रखे हुए हैं † 11:8 2/2 2/2 2/2/2 2/2: यहूदियों का चरित्र जिस तरह से यशायाह के समय में था। उसी तरह से पौलुस के समय में भी था। ‡ 11:15 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2: यदि उनकी अस्वीकृति परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में होती है।

3 “हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला, और तेरी वेदियों को ढा दिया है; और मैं ही अकेला बच रहा हूँ, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं।” (1 2/2/2/2. 19:10, 1 2/2/2/2. 19:14)

4 परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उत्तर मिला “मैंने अपने लिये सात हजार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके हैं।” (1 2/2/2/2. 19:18)

5 इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए 2/2/2 2/2/2 2/2/2/2 2/2/2\* ।

6 यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं, नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।

7 फिर परिणाम क्या हुआ? यह कि इस्राएली जिसकी खोज में हैं, वह उनको नहीं मिला; परन्तु चुने हुए लोगों को मिला और शेष लोग कटोर किए गए हैं।

8 जैसा लिखा है, “परमेश्वर ने उन्हें 2/2 2/2 2/2/2 2/2/2\* मंदता की आत्मा दे रखी है और ऐसी आँखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।” (2/2/2/2. 29:4, 2/2/2. 6:9,10, 2/2/2. 29:10, 2/2/2. 12:2)

9 और दाऊद कहता है, “उनका भोजन उनके लिये जाल, और फंदा, और ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए। 10 उनकी आँखों पर अंधेरा छा जाए ताकि न देखें, और तू सदा उनकी पीठ को झुकाए रख।” (2/2. 69:23)

2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2

11 तो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिए ठोकर खाई, कि गिर पड़ें? कदापि नहीं परन्तु उनके गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो। (2/2/2/2. 32:21)

12 अब यदि उनका गिरना जगत के लिये धन और उनकी घटी अन्यजातियों के लिये सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उनकी भरपूरी से कितना न होगा।

13 मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूँ। जबकि मैं अन्यजातियों के लिये प्रेरित हूँ, तो मैं अपनी सेवा की बड़ाई करता हूँ,

14 ताकि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों से जलन करवाकर उनमें से कई एक का उद्धार कराऊँ।

15 क्योंकि जबकि 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2: जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उनका ग्रहण किया जाना मरे हुए लोगों में से जी उठने के बराबर न होगा?



6 और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

7 यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे;

8 जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे।

**22:22-23**

9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो। **(22:22. 5:15)**

10 **22:22-23** से एक दूसरे पर स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

11 प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।

12 **22:22** **22:23** **22:24**; क्लेश के विषय में, धैर्य रखें; प्रार्थना के विषय में, स्थिर रहें।

13 पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उसमें उनकी सहायता करो; पहुनाई करने में लगे रहो।

14 अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो।

15 आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ। **(22:22. 35:13)**

16 आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। **(22:22. 3:7, 22:22. 5:21)**

17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो।

18 जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ **22:22** **22:23** **22:24**।

19 हे प्रियों अपना बदला न लेना; परन्तु परमेश्वर को क्रोध का अवसर दो, क्योंकि लिखा है, “बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।” **(22:22. 32:35)**

20 परन्तु “यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला;

क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।” **(22:22. 25:21,22)**

21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

## 13

**22:22** **22:23** **22:24**

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। **(22:22. 3:1)**

2 इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का विरोध करता है, और विरोध करनेवाले दण्ड पाएँगे।

3 क्योंकि अधिपति अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण है; क्या तू अधिपति से निडर रहना चाहता है, **22:22** **22:23** **22:24**\* और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी;

4 क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं और **22:22** **22:23** **22:24**; कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे।

5 इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन् विवेक भी यही गवाही देता है।

6 इसलिए कर भी दो, क्योंकि शासन करनेवाले परमेश्वर के सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं।

7 इसलिए हर एक का हक चुकाया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे चुंगी चाहिए, उसे चुंगी दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो।

**22:22** **22:23** **22:24**

8 आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।

9 क्योंकि यह कि “व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, लालच न करना,” और इनको छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, “अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” **(22:22. 20:13-16, 22:22. 19:18)**

10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।

**22:22** **22:23** **22:24**

† 12:10 **22:22** **22:23**: यह शब्द भाइयों के बीच रहने के स्नेह को दर्शाता है। ‡ 12:12 **22:22** **22:23** **22:24**: वह यह है, अनन्त जीवन की आशा में और सुसमाचार में जिससे महिमा होती है। § 12:18 **22:22** **22:23** **22:24**: इस अभिव्यक्ति का यह तात्पर्य है कि यह हमेशा नहीं किया जा सकता है। \* 13:3 **22:22** **22:23** **22:24**: एक धार्मिक और शान्तिप्रिय नागरिक बनें।

† 13:4 **22:22** **22:23** **22:24**: परमेश्वर का “सेवक” वह परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया गया है उनकी इच्छाओं को पूरी करने के लिए।

11 और समय को पहचानकर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है; क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय की तुलना से अब हमारा उद्धार निकट है।

12 ~~2/2/2/2~~ बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिए हम अंधकार के कामों को तजकर ज्योति के हथियार बाँध लें।

13 जैसे दिन में, वैसे ही हमें उचित रूप से चलना चाहिए; न कि लीलाक्रीडा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और ईर्ष्या में।

14 वरन् ~~2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2 2/2~~, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

## 14

~~2/2/2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2~~

1 ~~2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2\*~~, उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं।

2 क्योंकि एक को विश्वास है, कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग-पात ही खाता है।

3 और खानेवाला न-खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है।

4 तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बंध रखता है, वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।

5 कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर मानता है, और कोई सब दिन एक सा मानता है: हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले।

6 जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिये मानता है: जो खाता है, वह प्रभु के लिये खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जो नहीं खाता, वह प्रभु के लिये नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है।

7 क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है, और न कोई अपने लिये मरता है।

8 क्योंकि ~~2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2, 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2~~; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं; फिर हम जीएँ या मरें, हम प्रभु ही के हैं।

9 क्योंकि मसीह इसलिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुआँ और जीवितों, दोनों का प्रभु हो।

10 तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

11 क्योंकि लिखा है,  
“प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा,  
और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी।”  
(~~2/2/2. 45:23, 2/2/2. 49:18~~)

12 तो फिर, हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा।

13 इसलिए आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएँ पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे।

~~2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2~~

14 मैं जानता हूँ, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है, कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है, उसके लिये अशुद्ध है।

15 यदि तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता; जिसके लिये मसीह मरा उसको तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर।

16 अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए।

17 क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धार्मिकता और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है।

18 जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है।

19 इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।

20 भोजन के लिये ~~2/2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2~~ न बिगाड़; सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है, जिसको उसके भोजन करने से ठोकर लगती है।

‡ 13:12 ~~2/2/2~~: यह “नज़रअंदाज़” और “अपराध” को दर्शाता है और यह शब्द “अंधकार” का पर्यायवाची है। § 13:14 ~~2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2~~ ~~2/2 2/2/2 2/2~~: मतलब एक आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में, उनके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए, उनके उपदेशों का पालन करने के लिए, उनके जैसा बनने के लिए उन्हें पकड़ लो। \* 14:1 ~~2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2~~: मसीहियों को उनकी संगति स्वीकार करने के लिए जिनको कुछ चीजों की शुद्धता के बारे में सन्देह था, को संदर्भित करता है † 14:8 ~~2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2, 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2~~: हम उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए और उसकी महिमा को बढ़ावा देने के लिए जीये ‡ 14:20 ~~2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2~~: वह काम जो परमेश्वर करता है और यहाँ विशेष रूप से उनके काम “अपनी कलीसिया” में पालन-पोषण करने के लिए दर्शाता है।



21 परन्तु जैसा लिखा है, वैसा ही हो,  
“जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुँचा, वे ही देखेंगे  
और जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे।” (22:15)

22 इसलिए मैं तुम्हारे पास आने से बार बार रोका गया।

23 परन्तु अब इन देशों में मेरे कार्य के लिए जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है।

24 इसलिए जब इसपानिया को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूँ, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुँचा दो।

25 परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यरूशलेम को जाता हूँ।

26 क्योंकि 22:15 के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें।

27 उन्हें अच्छा तो लगा, परन्तु वे उनके कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उनकी आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उनकी सेवा करें।

28 इसलिए मैं यह काम पूरा करके और उनको यह चन्दा सौंपकर तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊँगा।

29 और मैं जानता हूँ, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊँगा।

30 और हे भाइयों; मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिलाकर, तुम से विनती करता हूँ, कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।

31 कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूँ, और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिये है, पवित्र लोगों को स्वीकार्य हो।

32 और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊँ।

33 शान्ति का परमेश्वर तुम सब के साथ रहे। आमीन।

## 16

22:15 के लोगों को

§ 15:26 22:15 के लोगों को मकिदुनिया यूनान का एक देश था और अखाया यूनान को के अधीन एक प्रांत था। \* 16:3 22:15 के लोगों को प्रिस्का अक्विला की पत्नी थी। † 16:12 22:15 के लोगों को सम्भवतः ये दो पवित्र महिलाएँ थीं, जिन्होंने स्त्री डीकन की भूमिका निभाई थी।

1 मैं तुम से फीबे के लिए, जो हमारी बहन और किंखिया की कलीसिया की सेविका है, विनती करता हूँ।

2 कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उसको तुम से प्रयोजन हो, उसकी सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की वरन् मेरी भी उपकारिणी हुई है।

22:15 के लोगों को

3 22:15 के लोगों को\* और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार।

4 उन्होंने मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, वरन् अन्यजातियों की सारी कलीसियाएँ भी उनका धन्यवाद करती हैं।

5 और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है। मेरे प्रिय इपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहला फल है, नमस्कार।

6 मरियम को जिसने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।

7 अन्दुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझसे पहले मसीही हुए थे, नमस्कार।

8 अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार।

9 उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार।

10 अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार।

11 मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उनको नमस्कार।

12 22:15 के लोगों को 22:15 के लोगों को† को जो प्रभु में परिश्रम करती हैं, नमस्कार। प्रिय पिरसिस को जिसने प्रभु में बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।

13 रूफुस को जो प्रभु में

चुना हुआ है, और उसकी माता को जो मेरी भी है, दोनों को नमस्कार।

14 असुक्रितुस और फिलगोन और हिर्मेस, पत्रुबास, हर्मास और उनके साथ के भाइयों को नमस्कार।

15 फिलुलुगुस और यूलिया और नेर्युस और उसकी बहन, और उलुम्पास और उनके साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार।



16 आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो: तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।

§§§§§§§§§§ §§§§§§§§§§ §§ §§§§§§

17 अब हे भाइयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उनसे सावधान रहो; और उनसे दूर रहो।

18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।

19 तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है; इसलिए मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूँ; परन्तु मैं यह चाहता हूँ, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो।

20 §§§§§§§§ §§ §§§§§§§§§§: शैतान को तुम्हारे पाँवों के नीचे शीघ्र कुचल देगा।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।  
(§§§§§. 3:15)

§§§§§§ §§ §§§§§§§§§§ §§ §§§§§§§§§§

21 तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुम को नमस्कार।

22 मुझ पत्नी के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु मैं तुम को नमस्कार।

23 गयुस का जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई करनेवाला है उसका तुम्हें नमस्कार: इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है, और भाई क्वारतुस का, तुम को नमस्कार।

24 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। आमीन।

§§§§§§§§§§

25 अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात् यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस §§§§§ के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा।

26 परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएँ।

27 उसी एकमात्र अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।

‡ 16:20 §§§§§§§§ §§ §§§§§§§§§§: परमेश्वर जो शान्ति को बढ़ावा देता है; (रोम 15:33) § 16:25 §§§§: “भेद” शब्द का सही अर्थ वह जो “छिपा हुआ” या “गुप्त” हैं, और इस तरह से शिक्षाओं के लिए लागू किया जाता है जो पहले से ज्ञात नहीं था।

## कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहली पत्र

1:1-2

पौलुस को इस पुस्तक का लेखक स्वीकार किया गया (1 कुरि. 1:1-2; 16:21)। इसे पौलुस का पत्र भी कहा जाता है। पौलुस जब इफिसुस नगर में था या वहाँ पहुँचने से पूर्व पौलुस ने यह पत्र कुरिन्थ नगर की कलीसिया को लिखा था। यह पत्र उसके प्रथम पत्र के बाद लिखा गया था (5:10-11)। उस पत्र को कुरिन्थ की कलीसिया ने गलत समझा था। दुर्भाग्य से वह पत्र खो गया है। इस प्रथम पत्र की विषयवस्तु अज्ञात है। यह पत्र पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया द्वारा उसे लिखे गये पत्र के उत्तर में लिखा था। अति सम्भव है कि उन्होंने उस प्रथम पत्र के उत्तर में पौलुस को एक पत्र लिखा था।

1:1-2 2:1-2 2:14-17 2:18-20

लगभग ई.स. 55 - 56

यह पत्र इफिसुस नगर से लिखा गया था। (1 कुरि. 16:8)

2:1-2 2:14-17

पौलुस के इस पत्र के अपेक्षित पाठक थे, कुरिन्थ नगर में परमेश्वर की कलीसिया के सदस्य (1 कुरि. 1:2)। परन्तु पौलुस यह भी लिखता है, “और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।” (1:2)

2:1-2 2:14-17 2:18-20

पौलुस को कुरिन्थ की कलीसिया की वर्तमान परिस्थितियों की जानकारी अनेक स्रोतों से प्राप्त हुई थी। इस पत्र को लिखने के पीछे पौलुस का उद्देश्य था कि कलीसिया की दुर्बलताओं के बारे में उन्हें निर्देश दे और उसका पुनरुद्धार करे और उनके अनुचित अभ्यास जैसे कलीसिया में विभाजन आदि की प्रवृत्ति को दूर करे (1 कुरि. 1:10-4:21)। पुनरुत्थान के बारे में उनमें जो भ्रम उपजाया गया था उसे भी दूर करे। (1 कुरि. 15) तथा अनैतिकता के विरुद्ध अपना निर्णय दे (1 कुरि. 5, 6:12-20)। प्रभु भोज के अपमान को भी सुधारे (1 कुरि. 11:17-34)। कुरिन्थ की कलीसिया को वरदान प्राप्त थे (1:4-7)। परन्तु उनमें परिपक्वता एवं आत्मिकता की कमी थी (3:1-4)। अतः पौलुस ने एक महत्त्वपूर्ण आदर्श स्थापित किया कि कलीसिया में पाप के साथ क्या

किया जाये। कलीसिया में विभाजनों तथा अनैतिकता को अनदेखा करने की अपेक्षा पौलुस ने सीधा उसका समाधान किया।

2:1-2 2:14-17

विश्वासियों का चरित्र रूपरेखा

1. प्रस्तावना — 1:1-9
2. कुरिन्थुस की कलीसिया में विभाजन — 1:10-4:21
3. नैतिकता एवं सदाचार सम्बंधित फूट — 5:1-6:20
4. विवाह के सिद्धान्त — 7:1-40
5. प्रेरितों से सम्बंधित — 8:1-11:1
6. आराधना के निर्देश — 11:2-34
7. आत्मिक उपहार — 12:1-14:40
8. पुनरुत्थान की धर्मशिक्षा — 15:1-16:24

2:1-2 2:14-17 2:18-20

1 पौलुस की ओर से जो 2:1-2 2:14-17 2:18-20\* से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से।

2 परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।

3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

2:1-2 2:14-17 2:18-20

4 मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूँ, इसलिए कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ,

5 कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए।

6 कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली।

7 यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की प्रतीक्षा करते रहते हो।

8 वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।

9 2:1-2 2:14-17 2:18-20; जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है। (2:1-2. 7:9)

2:1-2 2:14-17 2:18-20

\* 1:1 2:1-2 2:14-17 2:18-20: से मनुष्य के द्वारा नियुक्ति, या प्राधिकारी नहीं। † 1:9 2:1-2 2:14-17 2:18-20: अर्थात्, परमेश्वर विश्वासयोग्य और स्थिर है और अपने वादों का पालन करता है।



4 और मेरे वचन, और **2:9-11**; परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था,

5 इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।

**2:12-13**

6 फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं;

7 परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया।

8 जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। **(2:13-14. 13:27)**

9 परन्तु जैसा लिखा है, “**2:15-16**”, और कान ने नहीं सुनी,

और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।” **(2:14. 64:4)**

10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है।

11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। **(2:15. 20:27)**

12 परन्तु हमने **2:16-17** नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।

13 जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मा, आत्मिक ज्ञान से आत्मिक बातों की व्याख्या करती है।

14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।

15 **2:18** † जन सब कुछ जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से जाँचा नहीं जाता।

† 2:9 **2:9-11** इसका मतलब कोई भी कभी भी पूरी तरह से न महसूस किया और न समझा था उसकी कीमत और सौन्दर्य जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए तैयार की हैं। ‡ 2:12 **2:12-13** वह बुद्धि और ज्ञान नहीं जो यह संसार दे सकता है। § 2:15 **2:15-16** वह मनुष्य जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रबुद्ध है \* 3:2 **2:16-17** पौलुस यहाँ पर निरन्तर रूपक देकर बता रहे है, जो शिशुओं को सबसे हल्के भोजन खिलाने के रिवाज से लिया गया है।

16 “क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है, कि उसे सिखाए?”

परन्तु हम में मसीह का मन है। **(2:14. 40:13)**

### 3

**3:1-2**

1 हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं।

2 मैंने **3:1-2**, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको न खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो,

3 क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिए, कि जब तुम में ईर्ष्या और झगडा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?

4 इसलिए कि जब एक कहता है, “मैं पौलुस का हूँ,” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस का हूँ,” तो क्या तुम मनुष्य नहीं?

**3:3-4**

5 अपुल्लोस कौन है? और पौलुस कौन है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम लोगों ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।

6 मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।

7 इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है।

8 लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।

9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर के भवन हो।

10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

11 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। **(3:11. 28:16)**

12 और यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे,

13 तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।

14 जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।

15 और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते।

16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

17 यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

22222222 222222 22 2222

18 कोई अपने आपको धोखा न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आपको ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए।

19 क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है,

“वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फँसा देता है;”  
(22222222. 5:13)

20 और फिर, “प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है, कि व्यर्थ हैं।” (2222. 94:11)

21 इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है।

22 क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है,

23 और 2222 222222 22 2222, और मसीह परमेश्वर का है।

## 4

22222 22 222222222222222 222222222

1 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।

2 फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वासयोग्य निकले।

3 परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है, कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं आप ही अपने आपको नहीं परखता।

† 3:23 2222 22222 22 222: तुम उसके हो; इसलिए, आपको यह महसूस नहीं होना चाहिए कि आप किसी सांसारिक अगुओं के प्रति समर्पित हैं।

\* 4:5 2222 22 22222222 22 22222 22222222: मन की छिपी या गुप्त बात जो अंधकार में छिपे हुए के रूप में थी। † 4:10 22 22222 22 22222 222222 2222: यह जाहिर विडंबना ही है। “निःसंदेह हम मूर्ख लोग हैं, परन्तु हम मसीह में बुद्धिमान हैं।”

4 क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखनेवाला प्रभु है। (222. 19:12)

5 इसलिए जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो: 2222 22 22222222 22 22222 22222222\* ज्योति में दिखाएगा, और मनो के उद्देश्यों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।

22222 22 22222 2222222

6 हे भाइयों, मैंने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिए कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो, कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना,

और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना।

7 क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तूने (दूसरे से) नहीं पाया और जबकि तूने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया?

8 तुम तो तृप्त हो चुके; तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया; परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते।

9 मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं।

10 222 22222 22 22222 2222222 2222; परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं।

11 हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और नंगे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे-मारे फिरते हैं;

12 और अपने ही हाथों के काम करके परिश्रम करते हैं। लोग बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं।

13 वे बदनाम करते हैं, हम विनती करते हैं हम आज तक जगत के कूड़े और सब वस्तुओं की खुरचन के समान ठहरे हैं। (222222. 3:45)

22222 22 22222222 22222 22 222222 22 22222

14 मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर तुम्हें चिताता हूँ।





12 दूसरों से प्रभु नहीं, परन्तु मैं ही कहता हूँ, यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो, तो वह उसे न छोड़े।

13 और जिस स्त्री का पति विश्वास न रखता हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो; वह पति को न छोड़े।

14 क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र हैं।

15 परन्तु जो पुरुष विश्वास नहीं रखता, यदि वह अलग हो, तो अलग होने दो, ऐसी दशा में कोई भाई या बहन बन्धन में नहीं; परन्तु परमेश्वर ने तो हमें मेल-मिलाप के लिये बुलाया है।

16 क्योंकि हे स्त्री, तू क्या जानती है, कि तू अपने पति का उद्धार करा लेगी? और हे पुरुष, तू क्या जानता है कि तू अपनी पत्नी का उद्धार करा लेगा?

¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶

17 पर जैसा प्रभु ने हर एक को बाँटा है, और जैसा ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶; वैसा ही वह चले: और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही ठहराता हूँ।

18 जो खतना किया हुआ बुलाया गया हो, वह खतनारहित न बने: जो खतनारहित बुलाया गया हो, वह खतना न कराए।

19 न खतना कुछ है, और न खतनारहित परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है।

20 हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया हो, उसी में रहे।

21 यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि तू स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर।

22 क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है और वैसे ही जो स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है।

23 तुम दाम देकर मोल लिये गए हो, मनुष्यों के दास न बनो।

24 हे भाइयों, जो कोई जिस दशा में बुलाया गया हो, वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे।

¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶

25 कुँवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली, परन्तु विश्वासयोग्य होने के लिये जैसी दया प्रभु ने मुझ पर की है, उसी के अनुसार सम्मति देता हूँ।

26 इसलिए मेरी समझ में यह अच्छा है, कि आजकल क्लेश के कारण मनुष्य जैसा है, वैसा ही रहे।

27 यदि तेरे पत्नी है, तो उससे अलग होने का यत्न न कर: और यदि तेरे पत्नी नहीं, तो पत्नी की खोज न कर:

28 परन्तु यदि तू विवाह भी करे, तो पाप नहीं; और यदि कुँवारी ब्याही जाए तो कोई पाप नहीं; परन्तु ऐसों को शारीरिक दुःख होगा, और मैं बचाना चाहता हूँ।

29 हे भाइयों, मैं यह कहता हूँ, कि समय कम किया गया है, इसलिए चाहिए कि जिनके पत्नी हों, वे ऐसे हों मानो उनके पत्नी नहीं।

30 और रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते नहीं; और आनन्द करनेवाले ऐसे हों, मानो आनन्द नहीं करते; और मोल लेनेवाले ऐसे हों, कि मानो उनके पास कुछ है नहीं।

31 और इस संसार के साथ व्यवहार करनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न हो लें; क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं।

32 मैं यह चाहता हूँ, कि तुम्हें चिन्ता न हो। अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता में रहता है, कि प्रभु को कैसे प्रसन्न रखे।

33 परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातों की चिन्ता में रहता है, कि अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे।

34 विवाहिता और अविवाहिता में भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है, कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो, परन्तु विवाहिता संसार की चिन्ता में रहती है, कि अपने पति को प्रसन्न रखे।

35 यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूँ, न कि तुम्हें फँसाने के लिये, वरन् इसलिए कि जैसा उचित है; ताकि तुम एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में लगे रहो।

36 और यदि कोई यह समझे, कि मैं अपनी उस कुँवारी का हक मार रहा हूँ, जिसकी जवानी ढल रही है, और प्रयोजन भी हो, तो जैसा चाहे, वैसा करे, इसमें पाप नहीं, वह उसका विवाह होने दे।

37 परन्तु यदि वह मन में फैसला करता है, और कोई अत्यावश्यकता नहीं है, और वह अपनी अभिलाषाओं को नियंत्रित कर सकता है, तो वह विवाह न करके अच्छा करता है।

¶ 7:17 ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶: विश्वासियों को उनके जीवन की परिस्थिति या बुलाहट को बदलने के लिए कोशिश नहीं करनी चाहिए, परन्तु उन परिस्थितियों में बने रहना चाहिए जिनमें वे जब विश्वासी बने थे।





आशा से जोते, और दाँवनेवाला भागी होने की आशा से दाँवनी करे।

11 यदि हमने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएँ बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें।

12 जब औरों का तुम पर यह अधिकार है, तो क्या हमारा इससे अधिक न होगा? परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक न हो।

13 क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं; वे वेदी के साथ भागी होते हैं? (1कोरिन्थियों 6:16, 1कोरिन्थियों 6:26, 1कोरिन्थियों 18:1-3)

14 इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो।

15 परन्तु मैं इनमें से कोई भी बात काम में न लाया, और मैंने तो ये बातें इसलिए नहीं लिखीं, कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि इससे तो मेरा मरना ही भला है; कि कोई मेरा घमण्ड व्यर्थ ठहराए।

16 यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!

17 क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तो भी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।

18 तो फिर मेरी कौन सी मजदूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार संत-मेंत कर दूँ; यहाँ तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उसको मैं पूरी रीति से काम में लाऊँ।

1कोरिन्थियों 9:11

19 क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी 1कोरिन्थियों 9:11 है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ।

20 मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ।

21 व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ।

22 मैं 1कोरिन्थियों 9:11 निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊँ, मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।

23 और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ।

1कोरिन्थियों 9:11

24 क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो।

25 और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुझाने का नहीं।

26 इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।

27 परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूँ; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।

## 10

1कोरिन्थियों 10:1

1 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे सब पूर्वज बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए। (1कोरिन्थियों 10:1-29)

2 और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया।

3 और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया। (1कोरिन्थियों 10:35, 1कोरिन्थियों 8:3)

4 और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था। (1कोरिन्थियों 10:6, 1कोरिन्थियों 10:11)

5 परन्तु परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न ना था, इसलिए वे जंगल में ढेर हो गए। (1कोरिन्थियों 10:17)

6 ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरिं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें।

7 और न तुम मूरत पूजनेवाले बनो; जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, “लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।”

† 9:19 1कोरिन्थियों 9:11-11:1: मैंने अपने आपको सब का दास बना दिया हूँ, मैं उनके या उनकी सेवा के लिए परिश्रम, और उनकी भलाई के लिए बढ़ावा देता हूँ। ‡ 9:22 1कोरिन्थियों 9:11-11:1: विश्वास में कमजोर लोगों के लिए, जिसका विवेक कोमल और अज्ञात था।

8 और न हम व्यभिचार करें; जैसा उनमें से कितनों ने किया और एक दिन में तेईस हजार मर गये। (12:12. 25:1, 25:9)

9 और न हम प्रभु को परखें; जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के द्वारा नाश किए गए। (12:12. 21:5-6)

10 और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए।

11 परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं।

12 इसलिए जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े।

13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने के बाहर है: और परमेश्वर विश्वासयोग्य है: वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको। (2 12: 2:9)

14 इस कारण, हे मेरे प्यारों

14 इस कारण, हे मेरे प्यारों

15 मैं बुद्धिमान जानकर, तुम से कहता हूँ: जो मैं कहता हूँ, उसे तुम परखो।

16 वह, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या वह मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या मसीह की देह की सहभागिता नहीं?

17 इसलिए, कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।

18 जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखो: क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं?

19 फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह कि मूर्ति का बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है?

20 नहीं, बस यह, कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिये नहीं, परन्तु करते हैं और मैं नहीं चाहता, कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो। (32:17)

21 तुम प्रभु के कटोरे, और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं

की मेज दोनों के सहभागी नहीं हो सकते। (6:24)

22 क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं? क्या हम उससे शक्तिमान हैं? (32:21)

23 सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब लाभ की नहीं। सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं।

24 कोई अपनी ही भलाई को न ढूँढे वरन् औरों की।

25 जो कुछ कसाइयों के यहाँ बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो।

26 "क्योंकि पृथ्वी और उसकी भरपूरी प्रभु की है।" (24:1)

27 और यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ: और विवेक के कारण कुछ न पूछो।

28 परन्तु यदि कोई तुम से कहे, "यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है," तो उसी बतानेवाले के कारण, और विवेक के कारण न खाओ।

29 मेरा मतलब, तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए?

30 यदि मैं धन्यवाद करके सहभागी होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूँ, उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है?

31 इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।

32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये बनो।

33 जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढता हूँ, कि वे उद्धार पाएँ।

## 11

1 तुम मेरी जैसी चाल चलो जैसा मैं मसीह के समान चाल चलता हूँ।

2 मैं तुम्हें सराहता हूँ, कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो; और जो व्यवहार मैंने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें धारण करते हो।

\* 10:14 मंदिरों से, जहाँ मूर्तियों की पूजा होती है, उनकी सेवा करने से बचो। † 10:16 प्रभु भोज में भाग लेने के द्वारा, वे उन्हें अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं, और वे अपने आपको उन्हें समर्पित करते हैं। ‡ 10:20 यह आमतौर पर आत्माओं को संदर्भित करता है कि सर्वोच्च परमेश्वर को नीचा दिखाएँ। § 10:32 निरापराध रहो, वह यह है कि पाप में दूसरों का नेतृत्व करने के जैसा काम मत करो।

3 पर मैं चाहता हूँ, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरुष है: और मसीह का सिर परमेश्वर है।

4 जो पुरुष सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है।

5 परन्तु जो स्त्री बिना सिर ढके प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुँण्डी होने के बराबर है।

6 यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिये बाल कटाना या मुण्डाना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े।

7 हाँ पुरुष को अपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की शोभा है। (1 2222. 11:3)

8 क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। (2222. 2:21-23)

9 और 222222 22222222 22 22222 22222 222222 22222\*, परन्तु स्त्री पुरुष के लिये सिरजी गई है। (22222. 2:18)

10 इसलिए स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है, कि अधिकार अपने सिर पर रखे।

11 तो भी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष और न पुरुष बिना स्त्री के है।

12 क्योंकि जैसे 22222222 22222222 22 2222, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएँ परमेश्वर से हैं।

13 तुम स्वयं ही विचार करो, क्या स्त्री को बिना सिर ढके परमेश्वर से प्रार्थना करना उचित है?

14 क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिये अपमान है।

15 परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे; तो उसके लिये शोभा है क्योंकि बाल उसको ओढ़नी के लिये दिए गए हैं।

16 परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।

222222 2222 22 22222 2222

17 परन्तु यह निर्देश देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है।

\* 11:9 222222 22222222 22 22222 22222 222222 2222: स्त्री को पुरुष के आराम और खुशी के लिये बनाया गया था। एक दास होने के लिये नहीं। † 11:12 22222222 22222222 22 2222: मूल रचना में, वह पुरुष से बनाई गई थी। ‡ 11:20 22 2222 22 2222 2222 22222222 222222 2222: यह सम्भव है कि इस शुरुआती समय में कुरिन्थुस के सब विश्वासी एक ही स्थान पर मिलने के आदी थे। § 11:27 22222222 222222 2222: इसका ठीक मतलब यह है, उद्देश्यों के लिए अनुपयुक्त तरीके से जिस काम के लिये यह रूपांकित किया गया था।

18 क्योंकि पहले तो मैं यह सुनता हूँ, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो तुम में फूट होती है और मैं कुछ कुछ विश्वास भी करता हूँ।

19 क्योंकि विधर्म भी तुम में अवश्य होंगे, इसलिए कि जो लोग तुम में खरे निकले हैं, वे प्रगट हो जाएँ।

20 222 2222 222 2222 2222 22222222 22222 2222: तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं।

21 क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, तब कोई भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है।

22 क्या खाने-पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूँ? मैं प्रशंसा नहीं करता।

23 क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुँची, और मैंने तुम्हें भी पहुँचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात पकड़वाया गया रोटी ली,

24 और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"

25 इसी रीति से उसने बियारी के बाद कटोरा भी लिया, और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" (22222 22:20)

26 क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।

27 इसलिए जो कोई 22222222 222222 2222 प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा।

28 इसलिए मनुष्य अपने आपको जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।

29 क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।

30 इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।

31 यदि हम अपने आपको जाँचते, तो दण्ड न पाते।

32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

33 इसलिए, हे मेरे भाइयों, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो।

34 यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूँगा।

## 12

12:1-12:27

1 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम 12:1-12:27 के विषय में अज्ञात रहो।

2 तुम जानते हो, कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूँगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। (12:2. 4:8)

3 इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु श्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।

4 वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।

5 और सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है।

6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

7 किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें।

9 और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।

10 फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।

11 परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।

12:1-12:27

\* 12:1 12:1-12:27: कुछ भी वह जो एक आत्मिक स्वभाव का है। † 12:13 12:13 12:13-12:27: यह वह है, एक ही आत्मा, पवित्र आत्मा के द्वारा हम एक ही शरीर में संयुक्त हैं। ‡ 12:22 12:22-12:27: बाकी की तुलना में निर्बल; जो थकान को सहन करने और कठिनाइयों का सामना करने के लिए कम सक्षम लगते हैं।

12 क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है।

13 क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र 12:13 12:13-12:27 एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।

14 इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं।

15 यदि पाँव कहे: कि मैं हाथ नहीं, इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं?

16 और यदि कान कहे, "मैं आँख नहीं, इसलिए देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं?

17 यदि सारी देह आँख ही होती तो सुनना कहाँ से होता? यदि सारी देह कान ही होती तो सूँघना कहाँ होता?

18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक करके देह में रखा है।

19 यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहाँ होती?

20 परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरा प्रयोजन नहीं," और न सिर पाँवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं।"

22 परन्तु देह के वे अंग जो औरों से 12:22 12:22-12:27 देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं।

23 और देह के जिन अंगों को हम कम आदरणीय समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं,

24 फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसका प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो।

25 ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें।

26 इसलिए यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।

27 इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।

28 और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।

29 क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ्य के काम करनेवाले हैं?

30 क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं?

31 क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो!

परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।

## 13

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 यदि मैं मनुष्यों, और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ।

2 और यदि मैं भविष्यद्वक्ता कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।

4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।

5 अशोभनीय व्यवहार नहीं करता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।

6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।

7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों पर विश्वास करता है, 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

8 प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वक्ता हों, तो समाप्त हो जाएँगी, भाषाएँ मौन हो जाएँगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।

\* 13:2 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 इन सभी का कोई मूल्य नहीं होगा। यह मुझे उद्धार नहीं देगा। † 13:7 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 आशा जो सब बातों को अच्छाई में बदल देगा। ‡ 13:10 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 इसका मतलब यह है कि जब कोई वह चीज जो उत्तम दिखती है या आनन्द लिया जाता है, तब वह जो उत्तम नहीं है भूला दिया जाता है। § 13:13 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 यह "नित्यता" को दर्शाता है, जब अन्य सब बातें समाप्त हो जाएँगी, विश्वास, आशा, और प्रेम "स्थायी" रहेंगे। \* 14:1 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 अर्थात्, उत्सुकता से उसकी लालसा करो; उसको धारण करने के लिए प्रयास करो। † 14:2 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 यदि वह इस तरह से परमेश्वर से बात करता हो। कोई भी उसे समझ नहीं सकता परन्तु परमेश्वर समझता है।

9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वक्ता अधूरी।

10 परन्तु जब 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।

11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों के समान मन था बालकों सी समझ थी; परन्तु सयाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं।

12 अब हमें दर्पण में धुँधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूँगा, जैसा मैं पहचाना गया हूँ।

13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 हैं, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

## 14

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो विशेष करके यह, कि भविष्यद्वक्ता करो।

2 क्योंकि जो 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 में बातें करता है; वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी बातें कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

3 परन्तु जो भविष्यद्वक्ता करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है।

4 जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वक्ता करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है।

5 मैं चाहता हूँ, कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वक्ता करो: क्योंकि यदि अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्वक्ता करनेवाला उससे बढ़कर है।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

6 इसलिए हे भाइयों, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषा में बातें करूँ, और प्रकाश, या ज्ञान, या भविष्यद्वक्ता, या उपदेश की बातें तुम से न कहूँ, तो मुझसे तुम्हें क्या लाभ होगा?



34 स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की अनुमति नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है।

35 और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।

36 क्यों परमेश्वर का वचन तुम में से निकला? या केवल तुम ही तक पहुँचा है?

37 यदि कोई मनुष्य अपने आपको भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं।

38 परन्तु यदि कोई न माने, तो न माने।

39 अतः हे भाइयों, भविष्यद्व्याणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो।

40 पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएँ।

## 15

1 हे भाइयों, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो।

2 उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ।

3 इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी, कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार **1 कोरिन्थियों 15:2-8**।

4 और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। **(1 कोरिन्थियों 6:2)**

5 और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया।

6 फिर पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुत सारे अब तक वर्तमान हैं पर कितने सो गए।

7 फिर याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया।

8 और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ।

9 क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था।

10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया तो भी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

11 इसलिए चाहे मैं हूँ, चाहे वे हों, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास भी किया।

**1 कोरिन्थियों 15:2-8**

12 अतः जबकि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुएों में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्यों कहते हैं, कि मरे हुएों का पुनरुत्थान है ही नहीं?

13 यदि मरे हुएों का पुनरुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा।

14 और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।

15 वरन् हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया यद्यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते।

16 और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा।

17 और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो।

18 वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए।

19 यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।

20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें पहला फल हुआ।

21 क्योंकि जब **1 कोरिन्थियों 15:2-8**; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुएों का पुनरुत्थान भी आया।

22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे।

23 परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से; पहला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग।

24 इसके बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। **(1 कोरिन्थियों 2:44)**

\* **15:3** **1 कोरिन्थियों 15:2-8**: यीशु मसीह हमारे पापों के लिए एक प्रायश्चित के रूप में मरा। † **15:21** **1 कोरिन्थियों 15:2-8**: आदम के द्वारा, या उनके अपराध के माध्यम से।



25 क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। (110:1)

26 सबसे 110:1-110:11

27 क्योंकि “परमेश्वर ने सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया है,” परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया गया है तो स्पष्ट है, कि जिसने सब कुछ मसीह के अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। (8:6)

28 और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।

29 नहीं तो जो लोग मरे हुआँ के लिये बपतिस्मा लेते हैं, वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उनके लिये बपतिस्मा लेते हैं?

30 और हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में पड़े रहते हैं?

31 हे भाइयों, मुझे उस घमण्ड की शपथ जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूँ, कि मैं प्रतिदिन मरता हूँ।

32 यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसस में वन-पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएँगे, “तो आओ, खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।” (22:13)

33 धोखा न खाना, “बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।”

34 धार्मिकता के लिये जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते, मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ।

110:12-110:11

35 अब कोई यह कहेगा, “मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और किस देह के साथ आते हैं?”

36 हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता।

37 और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु केवल दाना है, चाहे गेहूँ का, चाहे किसी और अनाज का।

38 परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसको देह देता है; और हर एक बीज को उसकी विशेष देह। (1:11)

39 सब शरीर एक समान नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछलियों का शरीर और है।

40 स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह भी है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और।

41 सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है।

42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है।

43 वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ्य के साथ जी उठता है।

44 स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जबकि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है।

45 ऐसा ही लिखा भी है, “प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना” और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।

46 परन्तु पहले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक हुआ।

47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात् मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। (3:31)

48 जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही वे भी हैं जो मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी स्वर्गीय हैं।

49 और जैसे हमने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे। (3:2)

50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूँ कि माँस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।

51 देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: कि हम सब तो नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे।

52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे।

53 क्योंकि अवश्य है, कि वह नाशवान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले।

54 और जब यह नाशवान अविनाश को पहन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहन लेगा, तब वह वचन

‡ 15:26 110:12-110:11: क्योंकि मृत्यु के राज्य का अन्त हो जाएगा। और फिर कभी कोई नहीं मरेगा।

जो लिखा है, पूरा हो जाएगा,  
“जय ने मृत्यु को निगल लिया। (12:25:8)

55 हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही?

हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा? (13:14)

56 मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है।

57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

58 इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयों, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। (6:9)

## 16

1 अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसा निर्देश मैंने गलातिया की कलीसियाओं को दिया, वैसा ही तुम भी करो।

2 सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।

3 और जब मैं आऊँगा, तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियाँ देकर भेज दूँगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुँचा दें।

4 और यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साथ जाएँगे।

5 और मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा, क्योंकि मुझे मकिदुनिया होकर जाना ही है।

6 परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहाँ ही ठहर जाऊँ और शरद ऋतु तुम्हारे यहाँ काटूँ, तब जिस ओर मेरा जाना हो, उस ओर तुम मुझे पहुँचा दो।

7 क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है, कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा।

8 परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहूँगा।

9 क्योंकि मेरे लिये एक खुला है, और विरोधी बहुत से हैं।

10 यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना, कि वह तुम्हारे यहाँ निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।

\* 16:9 “द्वार” शब्द का स्पष्ट रूप से एक मौका या कुछ भी करने के लिए एक अवसर को निरूपित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। † 16:18 उनकी मौजूदगी और बातचीत के द्वारा। ‡ 16:24 मसीह यीशु के माध्यम से; या यीशु मसीह में तुम्हारे प्रेम के सम्बंध के द्वारा।

11 इसलिए कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुँचा देना, कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा हूँ, कि वह भाइयों के साथ आए।

12 और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत विनती की है कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; परन्तु उसने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर पाएगा, तब आ जाएगा।

13 जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त हो। (6:10)

14 जो कुछ करते हो प्रेम से करो।

15 हे भाइयों, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो, कि वे अखाया के पहले फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिये तैयार रहते हैं।

16 इसलिए मैं तुम से विनती करता हूँ कि ऐसों के अधीन रहो, वरन् हर एक के जो इस काम में परिश्रमी और सहकर्मी हैं।

17 और मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से आनन्दित हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी घटी को पूरी की है।

18 और इसलिए ऐसों को मानो।

19 आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया का भी तुम को प्रभु में बहुत-बहुत नमस्कार।

20 सब भाइयों का तुम को नमस्कार: पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो।

21 मुझ पौलुस का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार:

22 यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह शापित हो। हे हमारे प्रभु, आ!

23 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।

24 मेरा प्रेम तुम सब के साथ रहे। आमीन।







18 परन्तु जब हम सब के [222222] [222222] से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।

## 4

[22222222] [22] [22222222]

1 इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम साहस नहीं छोड़ते।

2 परन्तु [22222] [222222] [22] [222222] [222222] [22] [222222] [222222]\*, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।

3 परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है।

4 और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि [22] [222222] [22] [22222222] ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।

5 क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और उसके विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।

6 इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, “अंधकार में से ज्योति चमके,” और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। ([2222]. 9:2)

[22222222] [22] [2222222222] [2222] [22]

7 परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते।

9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।

10 [22] [22222] [22] [22222222] [22] [22222] [2222] [2222] [2222] [22] [2222] [222222] [2222]; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।

† 3:18 [22222222] [22222222]: पौलुस कहता है कि मसीही सुसमाचार में परमेश्वर की महिमा को एक घूँघट के बिना, किसी भी अस्पष्ट हस्तक्षेप के माध्यम के बिना देखने में सक्षम हैं। \* 4:2 [2222] [222222] [22] [222222] [222222] [22] [222222] [222222]: लज्जा की छिपी बातों का मतलब यहाँ पर अपमान जनक आचरण हैं। † 4:4 [22] [222222] [22] [22222222]: “ईश्वर” नाम यहाँ पर शैतान को दिया गया है, इसलिए नहीं कि उसमें कोई दिव्य गुण हैं, परन्तु क्योंकि वास्तव में उसे इस संसार के लोगों में उसके प्रति ईश्वर के जैसे सम्मान है। ‡ 4:10 [22] [222222] [22] [22222222] [22] [222222] [2222]: यह परीक्षणों की कठिनाता को निरूपित करता है जिसे पौलुस ने अवगत कराया था। \* 5:1 [22222222] [22] [22] [222222] [22222222] [22]: पृथ्वी पर का इस शब्द का ठीक अर्थ है जो पृथ्वी से सम्बंधित है, यहाँ पर “डैरा” शब्द शरीर को दर्शाता है।

11 क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो।

12 इस कारण मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर।

13 और इसलिए कि हम में वही विश्वास की आत्मा है, “जिसके विषय में लिखा है, कि मैंने विश्वास किया, इसलिए मैं बोला।” अतः हम भी विश्वास करते हैं, इसलिए बोलते हैं। ([22]. 116:10)

14 क्योंकि हम जानते हैं, जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा।

15 क्योंकि सब वस्तुएँ तुम्हारे लिये हैं, ताकि अनुग्रह बहुता के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद भी बढ़ाए।

16 इसलिए हम साहस नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।

17 क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।

18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।

## 5

[222222] [222222222222] [22]

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा [22222222] [22] [22] [22222] [22222222] [22]\* गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है। ([222222]. 9:11, [222222]. 4:19)

2 इसमें तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहन लें।

3 कि इसके पहनने से हम नंगे न पाए जाएँ।

4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन् और पहनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।

5 और जिसने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।

6 इसलिए हम सदा ढाढस बाँधे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।

7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।

8 इसलिए हम ढाढस बाँधे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहे।

10 क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए। (☞☞☞☞ 6:8, ☞☞☞☞☞☞ 16:27, ☞☞☞☞ 12:14)

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

11 इसलिए प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है; और मेरी आशा यह है, कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट हुआ होगा।

12 हम फिर भी अपनी बड़ाई तुम्हारे सामने नहीं करते वरन् हम अपने विषय में तुम्हें घमण्ड करने का अवसर देते हैं, कि तुम उन्हें उत्तर दे सको, जो मन पर नहीं, वरन् दिखावटी बातों पर घमण्ड करते हैं।

13 यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिये; और यदि चैतन्य हैं, तो तुम्हारे लिये हैं।

14 क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए।

15 और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।

☞☞☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞

16 इस कारण अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हमने मसीह को भी शरीर के

अनुसार जाना था, तो भी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे।

17 इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई। (☞☞☞☞ 43:18,19)

18 और ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।

19 अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।

20 इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। (☞☞☞☞ 6:10, ☞☞☞☞ 2:7)

21 जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

## 6

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

1 हम जो परमेश्वर के सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।

2 क्योंकि वह तो कहता है, “अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली, और ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞\* मैंने तेरी, सहायता की।” देखो; अभी प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी उद्धार का दिन है। (☞☞☞☞ 49:8)

☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞

3 हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, कि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

4 परन्तु हर बात में परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से,

5 कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लडों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से,

6 पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।

† 5:18 ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: पौलुस विश्वास करता है कि केवल ये सब बातें परमेश्वर की ओर से तैयार किया गया हैं, परन्तु यह सब बातें उसकी दिशा के तहत किया गया है, और उसके नियंत्रण के अधीन है। \* 6:2 ☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞☞: उस समय जब मैं उद्धार दिखाने के लिए निपटारा कर रहा होऊँगा। अभी वह प्रसन्नता का समय है अब यह वह समय है जब परमेश्वर मानवजाति पर सहानुभूति दिखाने के लिए, प्रार्थना सुनने के लिए, और उन पर दया करने के लिये तैयार है।

7 सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ्य से; धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने, बाएँ हैं,

8 आदर और निरादर से, दुर्नाम और सुनाम से, यद्यपि भरमानेवालों के जैसे मालूम होते हैं तो भी सच्चे हैं।

9 अनजानों के सदृश्य हैं; तो भी प्रसिद्ध हैं; मरते हुआओं के समान हैं और देखो जीवित हैं; मार खानेवालों के सदृश्य हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते। (1 2:11, 4:9, 7:118:18)

10 शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं, कंगालों के समान हैं, परन्तु 2:11, 7:118:18; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं फिर भी सब कुछ रखते हैं।

11 हे कुरिन्थियों, हमने खुलकर तुम से बातें की हैं, हमारा हृदय तुम्हारी ओर खुला हुआ है।

12 तुम्हारे लिये हमारे मन में कुछ संकोच नहीं, पर तुम्हारे ही मनों में संकोच है।

13 पर अपने बच्चे जानकर तुम से कहता हूँ, कि तुम भी उसके बदले में अपना हृदय खोल दो।

22 2:11, 7:118:18

14 2:11, 7:118:18; क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति?

15 और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?

16 और मूर्तों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बंध? क्योंकि हम तो जीविते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है

“मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा;

और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा,

और वे मेरे लोग होंगे।” (2:11, 26:11, 12,

7:118:18, 32:38, 37:27)

17 इसलिए प्रभु कहता है,

“उनके बीच में से निकलो

और अलग रहो;

और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ,

तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा; (2:11, 52:11, 7:118:18,

51:45)

18 और तुम्हारा पिता होऊँगा,

और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होंगे;

यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।” (2 2:11, 7:14, 7:118:18, 43:6, 7:118:18 1:10)

## 7

1 हे प्यारों जबकि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।

2:11, 7:118:18

2 हमें अपने हृदय में जगह दो: हमने न किसी से अन्याय किया, न किसी को बिगाड़ा, और न किसी को टगा।

3 मैं 2:11, 7:118:18; क्योंकि मैं पहले ही कह चुका हूँ, कि तुम हमारे हृदय में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने जीने के लिये तैयार हैं।

4 मैं तुम से बहुत साहस के साथ बोल रहा हूँ, मुझे तुम पर बड़ा घमण्ड है: मैं शान्ति से भर गया हूँ; अपने सारे क्लेश में मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूँ।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला, परन्तु हम चारों ओर से क्लेश पाते थे; बाहर लड़ाइयाँ थीं, भीतर भयंकर बातें थी।

6 तो भी दीनों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हमको शान्ति दी।

7 और न केवल उसके आने से परन्तु उसकी उस शान्ति से भी, जो उसको तुम्हारी ओर से मिली थी; और उसने तुम्हारी लालसा, और तुम्हारे दुःख और मेरे लिये तुम्हारी धुन का समाचार हमें सुनाया, जिससे मुझे और भी आनन्द हुआ।

8 क्योंकि यद्यपि मैंने अपनी पत्नी से तुम्हें शोकित किया, परन्तु उससे पछताता नहीं जैसा कि पहले पछताता था क्योंकि मैं देखता हूँ, कि उस पत्नी से तुम्हें शोक तो हुआ परन्तु वह थोड़ी देर के लिये था।

9 अब मैं आनन्दित हूँ पर इसलिए नहीं कि तुम को शोक पहुँचा वरन् इसलिए कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया, क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुम्हें किसी बात में हानि न पहुँचे।

10 क्योंकि 2:11, 7:118:18; ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है; जिसका परिणाम उद्धार है

† 6:10 2:11, 7:118:18; उन्होंने जिनके लिए वे सेवा किया करते थे वे उस खजाने के भागी बन गये जहाँ पर कीड़े नहीं होते हैं, और जहाँ चोर नहीं तोड़ते और न ही चोरी करते हैं। ‡ 6:14 2:11, 7:118:18; यह प्रतीत होता है कि

वहाँ पर विश्वासियों और अविश्वासियों में बहुत बड़ी असमानता है और इसलिए उनका आपस में मिलना अनुचित है। \* 7:3 2:11, 7:118:18

2:11, 7:118:18; मैं तुम्हें दोषी ठहराने के उद्देश्य से शिकायत नहीं की है। † 7:10 2:11, 7:118:18; इस प्रकार का शोक परमेश्वर के सम्मान के रूप में या उनकी इच्छा के अनुसार से किया जाता है।







14 और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिए कि [2222] [22] [22222222] [22] [2222] [22] [22222222] [22], तुम्हारी लालसा करते रहते हैं।

15 परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।

## 10

[222222] [222222]

1 मैं वही पौलुस जो तुम्हारे सामने दीन हूँ, परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूँ; तुम को [2222] [22] [22222222], [22] [22222222]\* के कारण समझाता हूँ।

2 मैं यह विनती करता हूँ, कि तुम्हारे सामने मुझे निर्भय होकर साहस करना न पड़े; जैसा मैं कितनों पर जो हमको शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं, वीरता दिखाने का विचार करता हूँ।

3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तो भी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।

4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गद्दों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

5 हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

6 और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार की आज्ञा न मानने का पलटा लें।

[222222] [22] [22222222]

7 तुम इन्हीं बातों को देखते हो, जो आँखों के सामने हैं, यदि किसी का अपने पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह का हूँ, तो वह यह भी जान ले, कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं।

8 क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के विषय में और भी घमण्ड दिखाऊँ, जो प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये हमें दिया है, तो लज्जित न होऊँगा।

9 यह मैं इसलिए कहता हूँ, कि पत्रियों के द्वारा तुम्हें डरानेवाला न ठहरूँ।

10 क्योंकि वे कहते हैं, “उसकी पत्रियाँ तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं; परन्तु जब देखते हैं, तो कहते हैं वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हलका जान पड़ता है।”

11 इसलिए जो ऐसा कहता है, कि वह यह समझ रखे, कि जैसे पीठ पीछे पत्रियों में हमारे वचन हैं, वैसे ही तुम्हारे सामने हमारे काम भी होंगे।

[222222] [22] [22222222] [22] [22222222]

12 क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि हम अपने आपको उनके साथ गिनें, या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी प्रशंसा करते हैं, और अपने आपको आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से तुलना करके मूर्ख ठहरते हैं।

13 हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी है, और उसमें तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे।

14 क्योंकि हम अपनी सीमा से बाहर अपने आपको बढ़ाना नहीं चाहते, जैसे कि तुम तक न पहुँचने की दशा में होता, वरन् मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुँच चुके हैं।

15 और हम सीमा से बाहर औरों के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते; परन्तु हमें आशा है, कि ज्यों-ज्यों तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा त्यों-त्यों हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएँगे।

16 कि हम तुम्हारी सीमा से आगे बढ़कर सुसमाचार सुनाएँ, और यह नहीं, कि हम औरों की सीमा के भीतर बने बनाए कामों पर घमण्ड करें।

17 परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर घमण्ड करे। (1 [222222]. 1:31, [222222]. 9:24)

18 क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है, वह नहीं, परन्तु जिसकी बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है।

## 11

[222222] [222222222222222222] [22] [222222] [2222222222]

1 यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता; हाँ, मेरी सह भी लेते हो।

2 क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूँ, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ।

3 परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हवा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ। (1 [22222222]. 3:5, [222222]. 3:13)

4 यदि कोई तुम्हारे पास आकर, किसी दूसरे यीशु का प्रचार करे, जिसका प्रचार हमने नहीं किया या कोई और आत्मा तुम्हें मिले; जो पहले न मिला था; या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता।

\* 10:1 [222222] [22] [22222222], [22] [22222222]: नम्रता और उद्धारकर्ता की दयालुता; या उसकी नम्रता और सौम्यता की अनुसरण करने की इच्छा।

22222 22 22222 22222222

5 मैं तो समझता हूँ, कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूँ।

6 यदि मैं वक्तव्य में अनाड़ी हूँ, तो भी ज्ञान में नहीं; वरन् हमने इसको हर बात में सब पर तुम्हारे लिये प्रगट किया है।

7 क्या इसमें मैंने कुछ पाप किया; कि मैंने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार संत-मेंत सुनाया; और अपने आपको नीचा किया, कि तुम ऊँचे हो जाओ?

8 मैंने और कलीसियाओं को लूटा अर्थात् मैंने उनसे मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करूँ।

9 और जब तुम्हारे साथ था, और मुझे घटी हुई, तो मैंने किसी पर भार नहीं डाला, क्योंकि भाइयों ने, मकिदुनिया से आकर मेरी घटी को पूरी की: और मैंने हर बात में अपने आपको तुम पर भार बनने से रोका, और रोके रहूँगा।

10 मसीह की सच्चाई मुझ में है, तो अखाया देश में कोई मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा।

11 किस लिये? क्या इसलिए कि मैं तुम से प्रेम नहीं रखता? परमेश्वर यह जानता है।

12 परन्तु जो मैं करता हूँ, वही करता रहूँगा; कि जो लोग दाँव ढूँढते हैं, उन्हें मैं दाँव पाने न दूँ, ताकि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं, उसमें वे हमारे ही समान ठहरें।

13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं।

14 और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।

15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवकों जैसा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।

22222 22 22222 22222 222222

16 मैं फिर कहता हूँ, कोई मुझे मूर्ख न समझे; नहीं तो मूर्ख ही समझकर मेरी सह लो, ताकि थोड़ा सा मैं भी घमण्ड कर सकूँ।

17 इस बेधड़क में जो कुछ मैं कहता हूँ वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं पर मानो मूर्खता से ही कहता हूँ।

18 जबकि बहुत लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते हैं, तो मैं भी घमण्ड करूँगा।

19 तुम तो समझदार होकर आनन्द से मूर्खों की सह लेते हो।

20 क्योंकि जब तुम्हें 2222 2222 2222 22222 222\*, या खा जाता है, या फँसा लेता है, या अपने आपको बड़ा बनाता है, या तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ मारता है, तो तुम सह लेते हो।

21 मेरा कहना अनादर की रीति पर है, मानो कि हम निर्बल से थे;

परन्तु जिस किसी बात में कोई साहस करता है, मैं मूर्खता से कहता हूँ तो मैं भी साहस करता हूँ।

22 क्या वे ही इब्रानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वे ही इस्राएली हैं? मैं भी हूँ; क्या वे ही अब्राहम के वंश के हैं? मैं भी हूँ।

23 क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? (मैं पागल के समान कहता हूँ) मैं उनसे बढ़कर हूँ! अधिक परिश्रम करने में; बार बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार बार मृत्यु के जोखिमों में।

24 पाँच बार मैंने यहूदियों के हाथ से उनतालीस कोड़े खाए।

25 तीन बार मैंने बेंते खाई; एक बार पथराव किया गया; तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात दिन मैंने समुद्र में काटा।

26 मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में रहा;

27 परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में।

28 और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है।

29 किसकी निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता? किसके पाप में गिरने से मेरा जी नहीं दुखता?

30 यदि घमण्ड करना अवश्य है, तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूँगा।

31 प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता जो सदा धन्य है, जानता है, कि मैं झूठ नहीं बोलता।

32 दमिश्क में अरितास राजा की ओर से जो राज्यपाल था, उसने मेरे पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर पहरा बैठा रखा था।

33 और मैं टोकरे में खिड़की से होकर दीवार पर से उतारा गया, और उसके हाथ से बच निकला।

12

\* 11:20 2222 2222 2222 22222 222: झूठे शिक्षक उनके विवेक पर अपना प्रभुत्व कर लेता है; उनके विचारों की स्वतंत्रता को नष्ट कर देता है।



1 अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता हूँ: दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात ठहराई जाएगी। (19:15)

2 जैसे मैं जब दूसरी बार तुम्हारे साथ था, वैसे ही अब दूर रहते हुए उन लोगों से जिन्होंने पहले पाप किया, और अन्य सब लोगों से अब पहले से कह देता हूँ, कि यदि मैं फिर आऊँगा, तो नहीं छोड़ूँगा।

3 तुम तो इसका प्रमाण चाहते हो, कि मसीह मुझ में बोलता है, जो तुम्हारे लिये निर्बल नहीं; परन्तु तुम में सामर्थी है।

4 वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया, फिर भी परमेश्वर की सामर्थ्य से जीवित है, हम भी तो उसमें निर्बल हैं; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से जो तुम्हारे लिये है, उसके साथ जीएँगे।

5 अपने आपको परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं; 22:22 22:22 22:22\*, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो।

6 पर मेरी आशा है, कि तुम जान लोगे, कि हम निकम्मे नहीं।

7 और हम अपने 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22; इसलिए नहीं, कि हम खरे देख पड़ें, पर इसलिए कि तुम भलाई करो, चाहे हम निकम्मे ही ठहरें।

8 क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिये ही कर सकते हैं।

9 जब हम निर्बल हैं, और तुम बलवन्त हो, तो हम आनन्दित होते हैं, और यह प्रार्थना भी करते हैं, कि तुम सिद्ध हो जाओ।

10 इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूँ, कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े।

22:22 22:22 22:22 22:22 22:22

11 अतः हे भाइयों, आनन्दित रहो; सिद्ध बनते जाओ; धैर्य रखो; एक ही मन रखो; 22:22 22:22; और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।

12 एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।

13 सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

\* 13:5 22:22 22:22 22:22: पौलुस अपने आपको परखने के लिए कहता है, क्योंकि वहाँ डर का अवसर था कि उनमें से बहुत से धोखा दिए गए थे। † 13:7 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22, 22:22 22:22 22:22 22:22: उत्सुकता से भलाई और केवल भलाई करने की इच्छा। ‡ 13:11 22:22 22:22 22:22: एक दूसरे के साथ। विवाद और कलह का अन्त हो जाए।

14 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

## गलातियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

११११

इस पत्र का लेखक पौलुस है। आरम्भिक कलीसिया का यही एकमत विश्वास था। पौलुस ने दक्षिणी गलातिया क्षेत्र की कलीसियाओं को यह पत्र लिखा था। एशिया माइनर की प्रचार-यात्रा के समय इन कलीसियाओं की स्थापना में पौलुस का भी हाथ था। गलातिया रोम या कुरिन्थ के जैसा एक सम्पूर्ण नगर नहीं था। वह एक रोमी प्रान्त था जिसमें अनेक नगर थे और वहाँ अनेक कलीसियाएँ स्थापित हो गई थीं। ये गलातियावासी जिन्हें पौलुस ने पत्र लिखा पौलुस द्वारा मसीही विश्वास में लाए गये थे।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग ई.स. 48

सम्भव है कि पौलुस ने यह पत्र अन्ताकिया से लिखा था क्योंकि यह नगर उसका मुख्य निवास था।

११११११

यह पत्र गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं के सदस्यों को लिखा गया था (गला. 1:1-2)।

१११११११११

इस पत्र के पीछे का उद्देश्य यह था कि यहूदी पृष्ठभूमि के मसीही विश्वासियों की भ्रमित शिक्षा का खण्डन करे क्योंकि उनकी शिक्षा के अनुसार उद्धार पाने के लिए खतना करवाना आवश्यक था। वह गलातिया के विश्वासियों को उद्धार का वास्तविक आधार समझाना चाहता था। पौलुस अपने प्रेरित अधिकार की पुष्टि करके अपने द्वारा प्रचार किए गये शुभ सन्देश का सत्यापन करता है। मनुष्य अनुग्रह के द्वारा विश्वास ही से धर्मनिष्ठ माना जाता है और उन्हें केवल अपने विश्वास से आत्मा की स्वतंत्रता के इस जीवन में जीना सीखना है।

१११ ११११

मसीह में स्वतंत्रता

रूपरेखा

1. प्रस्तावना — 1:1-10
2. शुभ सन्देश का प्रमाणीकरण — 1:11-2:21
3. विश्वास के द्वारा धार्मिकता होना — 3:1-4:31
4. विश्वास के जीवन का आचरण एवं स्वतंत्रता — 5:1-6:18

११११११ ११ ११ ११ ११११११११

1 पौलुस की, जो न मनुष्यों की ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, वरन् यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उसको मरे हुआओं में से जिलाया, प्रेरित है।

2 और सारे भाइयों की ओर से, जो मेरे साथ हैं; गलातिया की कलीसियाओं के नाम।

3 परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

4 उसी ने अपने आपको हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।

5 उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

१११११ ११ ११ १११११११११

6 मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे।

7 परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं।

8 परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो।

9 जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो।

10 अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूँ या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक ११११११११११ ११ ११ १११११११११ १११११ १११११\*, तो मसीह का दास न होता।

१११११११११११ ११ १११११ ११११११११

11 हे भाइयों, मैं तुम्हें जताए देता हूँ, कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं।

12 क्योंकि वह १११११ १११११११११ ११ ११ ११ ११११११ ११११११११†, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला।

13 यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल-चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था।

\* 1:10 ११११११११११ ११ ११ १११११११११ १११११ १११११: यदि यह उसके जीवन का उद्देश्य होता, तो वह "अब मसीह का दास" नहीं होता। † 1:12 १११११ ११११११११ ११ ११ ११ १११११ १११११११११: सम्भवतः यह अपने विरोधियों के उत्तर में कहा है, जो उल्लेख करता था कि पौलुस के पास अन्य लोगों से सुसमाचार का ज्ञान आया था।

14 और मैं यहूदी धर्म में अपने साथी यहूदियों से अधिक आगे बढ़ रहा था और अपने पूर्वजों की परम्पराओं में बहुत ही उत्तेजित था।

15 परन्तु परमेश्वर की जब इच्छा हुई, [REDACTED] और अपने अनुग्रह से बुला लिया, ([REDACTED]. 49:1,5, [REDACTED]. 1:5)

16 कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ; तो न मैंने माँस और लहू से सलाह ली;

17 और न यरूशलेम को उनके पास गया जो मुझसे पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहाँ से दमिश्क को लौट आया।

18 फिर तीन वर्षों के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम को गया, और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा।

19 परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला।

20 जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूँ, कि वे झूठी नहीं।

21 इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के देशों में आया।

22 परन्तु यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं, मेरा मुँह तो कभी नहीं देखा था।

23 परन्तु यही सुना करती थीं, कि जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहले नाश करता था।

24 और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं।

## 2

[REDACTED]

1 चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ यरूशलेम को गया और तीतुस को भी साथ ले गया।

2 और [REDACTED] और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूँ, उसको मैंने उन्हें बता दिया, पर एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी इस समय की, या पिछली भाग-दौड़ व्यर्थ ठहरे।

3 परन्तु तीतुस भी जो मेरे साथ था और जो यूनानी है; खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया।

‡ 1:15 [REDACTED] अर्थ हैं कि परमेश्वर अपने गुप्त उद्देश्यों के लिए प्रेरित होने के लिए पौलुस को अलग किया था। \* 2:2 [REDACTED] पौलुस सचेत रूप से बताता है कि वह परमेश्वर के व्यक्ति आदेश के अनुसार चला। † 2:7 [REDACTED] संसार के खतनारहितों को अर्थात् अन्यजातीय लोगों के लिए सुसमाचार प्रचार का कर्त्तव्य।

4 और यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ, जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद कर, हमें दास बनाएँ।

5 उनके अधीन होना हमने एक घड़ी भर न माना, इसलिए कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे।

6 फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे वे चाहे कैसे भी थे, मुझे इससे कुछ काम नहीं, परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता उनसे मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। (2 [REDACTED]. 11:5, [REDACTED]. 10:17)

7 परन्तु इसके विपरीत उन्होंने देखा, कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिये सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही [REDACTED]।

8 क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुआओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझसे भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया।

9 और जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ देकर संग कर लिया, कि हम अन्यजातियों के पास जाएँ, और वे खतना किए हुआओं के पास।

10 केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम को करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था।

[REDACTED]

11 पर जब कैफा अन्ताकिया में आया तो मैंने उसके मुँह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। ([REDACTED]. 2:14)

12 इसलिए कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए, तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे उनसे हट गया और किनारा करने लगा। ([REDACTED]. 10:28, [REDACTED]. 11:2-3)

13 और उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहाँ तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया।

14 पर जब मैंने देखा, कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैंने सब के सामने कैफा से कहा, “जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है, और यहूदियों के समान नहीं तो तू





विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि “तेरे वंश को” और वह मसीह है। (१:१) 1:1)

17 पर मैं यह कहता हूँ कि जो वाचा परमेश्वर ने पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्षों के बाद आकर नहीं टाल सकती, कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे। (१२:४०)

18 क्योंकि यदि विरासत व्यवस्था से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है।

११:११ ११ ११:११ ११:११

19 तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी, और व्यवस्था स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई।

20 मध्यस्थ तो एक का नहीं होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है।

21 तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि नहीं! क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती।

22 परन्तु पवित्रशास्त्र ने सब को पाप के अधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए।

23 पर विश्वास के आने से पहले व्यवस्था की अधीनता में हम कैद थे, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे।

24 इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।

25 परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे।

११:११ ११ ११:११ ११:११

26 क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।

27 और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है।

28 अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

29 और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

## 4

११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११

1 मैं यह कहता हूँ, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तो भी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं।

2 परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है।

3 वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे।

4 परन्तु जब ११:११ ११:११ ११:११\*, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।

5 ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले।

6 और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने ११:११ ११:११ ११:११† को, जो ‘हे अब्बा, हे पिता’ कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।

7 इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११ ११:११

8 फिर पहले, तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव में देवता नहीं। (११:११. 37:19, ११:११. 2:11)

9 पर अब जो तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया वरन् परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा दास होना चाहते हो?

10 तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो।

11 मैं तुम्हारे विषय में डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे लिये किया है वह व्यर्थ ठहरे।

12 हे भाइयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, तुम मेरे समान हो जाओ: क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूँ; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।

13 पर तुम जानते हो, कि पहले-पहल मैंने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया।

14 और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना; न उससे घृणा की; और परमेश्वर के दूत वरन् मसीह के समान मुझे ग्रहण किया।

\* 4:4 ११:११ ११:११ ११:११: मसीहा के आने के लिए नियुक्त समय। † नजदीक उन्हें उनके पुत्र के रूप में आने के लिये योग्य बनाता है।

4:6 ११:११ ११:११ ११:११ ११:११: प्रभु यीशु का आत्मा जो परमेश्वर के

15 तो वह तुम्हारा आनन्द कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ, कि यदि हो सकता, तो तुम अपनी आँखें भी निकालकर मुझे दे देते।

16 तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी हो गया हूँ। (2222. 5:10)

17 वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भली मनसा से नहीं; वरन् तुम्हें मुझसे अलग करना चाहते हैं, कि तुम उन्हीं के साथ हो जाओ।

18 पर उत्साही होना अच्छा है, कि भली बात में हर समय यत्न किया जाए, न केवल उसी समय, कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ।

19 हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा के समान पीड़ाएँ सहता हूँ।

20 इच्छा तो यह होती है, कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलूँ, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं विकल हूँ।

22 22222222: 22222 22 222222

21 तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, मुझसे कहो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते?

22 यह लिखा है, कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। (22222. 16:5, 22222. 21:2)

23 परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।

24 इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियाँ मानो दो वाचाएँ हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हागार है।

25 और हागार मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है।

26 पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।

27 क्योंकि लिखा है,  
“हे बाँझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर,  
तू जिसको पीड़ाएँ नहीं उठती; गला खोलकर  
जयजयकार कर,  
क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से  
भी अधिक है।” (22222. 54:1)

28 हे भाइयों, हम इसहाक के समान 222222222222 22 222222222222 हैं।

29 और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। (222222. 21:9)

30 परन्तु पवित्रशास्त्र क्या कहता है? “दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।” (222222. 21:10)

31 इसलिए हे भाइयों, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं।

## 5

22222 2222 22222222222222

1 मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; इसलिए इसमें स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।

2 मैं पौलुस तुम से कहता हूँ, कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा।

3 फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूँ, कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी।

4 तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।

5 क्योंकि आत्मा के कारण, हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की प्रतीक्षा करते हैं।

6 और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।

222222 22222222 222222222222 22 222222 222222

7 तुम तो भली भाँति दौड़ रहे थे, अब किसने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो।

8 ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं।

9 थोड़ा सा खमीर सारे गुँधे हुए आटे को खमीर कर डालता है।

10 मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूँ, कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा।

11 हे भाइयों, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूँ, तो क्यों अब तक सताया जाता हूँ; फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही।

‡ 4:28 222222222222 22 22222222: हम इसहाक के समान हैं क्योंकि हमारे लिए महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञा बनाई गई है। \* 5:13 2222222222 22222 22 22222 22222222 22 22: पाप की दासत्व से स्वतंत्र, और महंगा और कष्टदायक संस्कार और रीति-रिवाजों की अधीनता से स्वतंत्र।

12 भला होता, कि जो तुम्हें डाँवाडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते!

13 हे भाइयों, तुम **22:39,40, 19:18**\*; परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।

14 क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” **(22:39,40, 19:18)**

15 पर यदि तुम एक दूसरे को दाँत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो।

**22:39,40, 19:18**

16 पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।

17 क्योंकि **22:39,40, 19:18**\* और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।

18 और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।

19 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन,

20 मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगडा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,

21 डाह, मतवालापन, लीलाक्रीडा, और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम को पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और दया, भलाई, विश्वास,

23 नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।

24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

26 हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।

## 6

**22:39,40, 19:18**

1 हे भाइयों, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालो, और अपनी भी देख-रेख करो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

2 **22:39,40, 19:18**\* , और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।

3 क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आपको कुछ समझता है, तो अपने आपको धोखा देता है।

4 पर **22:39,40, 19:18**\* , और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा।

5 क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा।

**22:39,40, 19:18**

6 जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे।

7 धोखा न खाओ, परमेश्वर उपहास में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।

8 क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

9 हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।

10 इसलिए जहाँ तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

**22:39,40, 19:18**

11 देखो, मैंने कैसे बड़े-बड़े अक्षरों में तुम को अपने हाथ से लिखा है।

12 जितने लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये दबाव देते हैं, केवल इसलिए कि वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएँ।

13 क्योंकि खतना करानेवाले आप तो, व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुम्हारा खतना कराना इसलिए चाहते हैं, कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें।

14 पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।

15 क्योंकि न खतना, और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि महत्त्वपूर्ण है।

† 5:17 **22:39,40, 19:18**: शरीर की अभिलाषा और हठ आत्मा के विरोध में होती हैं। \* 6:2 **22:39,40, 19:18**: एक दूसरे के साथ रहें; आत्मिक जीवन में एक दूसरे की मदद करें। † 6:4 **22:39,40, 19:18**: अपने आपको परमेश्वर के वचन से तुलना करें, जिसके द्वारा हमें अन्त के महान दिन में न्याय किया जाएगा।

16 और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे।

17 आगे को कोई मुझे दुःख न दे, क्योंकि मैं ~~???~~ ~~??~~ ~~????~~ ~~??~~ ~~????~~ ~~??~~ ~~????~~ ~~????~~ ~~????~~ ~~???~~।

18 हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। अमीन।

---

‡ 6:17 ~~????~~ ~~??~~ ~~??????~~ ~~??~~ ~~????~~ ~~????~~ ~~????~~ ~~??????~~ ~~????~~: मतलब है वह दाग जो शरीर में चुभाया गया या शरीर के ऊपर जलाया गया।





15 और [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नई जाति उत्पन्न करके मेल करा दे,

16 और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।

17 और उसने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। **([2][2][2][2]. 2:13, [2][2][2][2]. 2:39)**

18 क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है।

[2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]

19 इसलिए तुम अब परदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।

20 और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही हैं, बनाए गए हो। **([2][2][2][2]. 28:16, 1 [2][2][2][2]. 12:28)**

21 जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है,

22 जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का [2][2][2][2]-[2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] बनाए जाते हो।

### 3

[2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2]

1 [2][2][2][2] [2][2][2][2]\* मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का बन्दी हूँ

2 यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया।

3 अर्थात् यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहले संक्षेप में लिख चुका हूँ।

4 जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ।

5 जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है।

6 अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग विरासत में सहभागी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं।

7 और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो सामर्थ्य के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना।

[2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2][2][2]

8 मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से [2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2] हूँ, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊँ,

9 और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था।

10 ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए।

11 उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।

12 जिसमें हमको उस पर विश्वास रखने से साहस और भरोसे से निकट आने का अधिकार है।

13 इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो क्लेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे हैं, उनके कारण साहस न छोड़ो, क्योंकि उनमें तुम्हारी महिमा है।

[2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2][2][2]

14 मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ,

15 जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है,

16 कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ,

17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर,

18 सब पवित्र लोगों के साथ भली भाँति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है।

19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2] तक परिपूर्ण हो जाओ।

§ 2:22 [2][2][2][2]-[2][2][2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2]: आप केवल इससे जोड़े नहीं गए, परन्तु आप इमारत गठन का एक हिस्सा हो। \* 3:1 [2][2][2][2] [2][2][2][2]: इस सिद्धान्त के उपदेश के कारण; अर्थात् वह सिद्धान्त सुसमाचार था जो अन्यजातियों में प्रचार किया जाना है। † 3:8 [2][2][2][2] [2][2] [2][2] [2][2][2][2]: यहाँ पर इस शब्द का मतलब है, मैं सभी संतों की तुलना में सबसे छोटा हूँ; या मैं संतों के बीच में गिने जाने के योग्य भी नहीं हूँ। ‡ 3:19 [2][2][2][2][2][2][2][2] [2][2] [2][2][2][2] [2][2][2][2][2][2]: यहाँ इसका मतलब है कि आपके पास दैवीय उपस्थिति प्रचुर मात्रा में हो सके कि आप पर्याप्त मात्रा में परमेश्वर के सभी आनन्द के भागी हो सके।



20 अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है,

21 कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

## 4

□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□

1 इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो,

2 अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो,

3 और मेल के बन्धन में आत्मा की □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□\*।

4 एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

5 एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा,

6 और □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□†, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में, और सब में है।

□□□□□□ □□□□□□

7 पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।

8 इसलिए वह कहता है,

“वह ऊँचे पर चढ़ा,  
और बन्दियों को बाँध ले गया,  
और मनुष्यों को दान दिए।”

9 (उसके चढ़ने से, और क्या अर्थ पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। (□□□□□□. 2:9, □□□□. 3:13)

10 और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे।)

11 और उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। (2 □□□□□□. 12:28,29)

12 जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।

13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक

सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ।

14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक वायु से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।

15 वरन् प्रेम में सच बोलें और सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ,

16 जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उसमें होता है, अपने आपको बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

□□□□ □□□□□□□□

17 इसलिए मैं यह कहता हूँ और प्रभु में जताए देता हूँ कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।

18 क्योंकि उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं;

19 और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं कि सब प्रकार के गंदे काम लालसा से किया करें।

20 पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई।

21 वरन् तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए।

22 कि तुम अपने चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।

23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ,

24 और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है। (□□□□□□. 3:10, 2 □□□□□□. 5:17)

□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□

25 इस कारण झूठ बोलना छोड़कर, हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। (□□□□□□. 3:9, □□□□. 12:5, □□□□. 8:16)

26 क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। (□□□□. 4:4)

27 □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□†।

\* 4:3 □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□: यह प्यार की, भरोसे की, स्नेह की एकता को दर्शाता है। † 4:6 □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□: एक परमेश्वर जो सब का पिता हैं, अर्थात्, वह जो उस पर विश्वास करते हैं, वह उन सभी का पिता हैं। ‡ 4:27 □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□: शैतान के सुझावों और लालचों को मत मानो, जो निर्दयी और गुस्से की भावनाओं को संजोने के लिए हर एक मौके का इस्तेमाल करेगा।



25 हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया,

26 कि उसको **2:22 22 2222222 22 22 2222222S** से शुद्ध करके पवित्र बनाए,

27 और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुरी, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो।

28 इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।

29 क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।

30 इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं।

31 “इस कारण पुरुष माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।” **(2:24)**

32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।

33 पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

## 6

**2:22-2222 22 222222**

1 हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।

2 “अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है, जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है),

3 कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।” **(2:22, 20:12, 2:16)**

4 और हे पिताओं, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो। **(6:7, 3:11,12 2:18, 22:6, 3:2)**

**222222 22 222**

5 हे दासों, जो लोग संसार के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सिधार्थ से डरते, और काँपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो।

**S 5:26 222 22 222222 22 22 222222**: यह बाहरी समारोहों के द्वारा नहीं किया गया था, और न हृदय पर कोई चमत्कारी शक्ति के द्वारा किया गया था, परन्तु मन पर सच्चाई की विश्वासयोग्यता से प्रयोग के द्वारा किया गया। \* **6:10 22222 222 ... 222222 222**: पौलुस गलातियों को यह याद दिलाता है कि केवल प्रभु की सामर्थ्य के द्वारा वे विजय की आशा कर सकते हैं। † **6:11 22222222 22 2222 2222222 2222**: यह पूरा विवरण यहाँ पर प्राचीन सैनिक के हथियारों से लिया गया है, जिसका मतलब “पूरा कवच” आक्रामक और रक्षात्मक होता है। ‡ **6:18 222222 222 222222222222**: पवित्र आत्मा की सहायता से।

6 और मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह के दासों के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो,

7 और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो।

8 क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा।

9 और हे स्वामियों, तुम भी धमकियाँ छोड़कर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उनका और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता। **(2:22 6:31, 2:22. 10:17, 2 2:22. 19:7)**

**2222222 222222 22 2222222**

10 इसलिए **222222 222 22 22222 222222 22 22222222 222 22222222 222**।

11 **2222222222 22 22222 22222222 22222 222** कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।

12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

13 इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।

14 इसलिए सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहनकर, **(2:22. 11:5, 2:22. 59:17)**

15 और पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहनकर; **(2:22. 52:7, 2:22. 1:15)**

16 और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।

17 और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। **(2:22. 49:2, 2:22222. 4:12, 2:22. 59:17)**

18 और हर समय और हर प्रकार से **2222222 2222 22222222222222**, और विनती करते रहो, और जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो,

19 और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बता सकूँ,

20 जिसके लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। और यह भी कि मैं उसके विषय में जैसा मुझे चाहिए साहस से बोलूँ।

???????? ??????????

21 तुखिकुस जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब बातें बताएगा कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूँ।

22 उसे मैंने तुम्हारे पास इसलिए भेजा है, कि तुम हमारी दशा जानो, और वह तुम्हारे मनो को शान्ति दे।

23 परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले।

24 जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमर प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता रहे।

## फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

११११

पौलुस स्वयं दावा करता है कि उसने यह पत्र लिखा है (1:1) तथा भाषा, शैली, ऐतिहासिक तथ्य इसकी पुष्टि करते हैं। आरम्भिक कलीसिया भी विषमता रहित पौलुस के लेखक होने और अधिकार की चर्चा करती है। फिलिप्पी की कलीसिया को लिखा गया यह पत्र मसीह का मन प्रकट करता है (2:1-11)। इस पत्र को लिखते समय पौलुस कारागार में था परन्तु वह आनन्दित था। यह पत्र हमें सिखाता है कि कठिनाइयों और कष्टों में भी मसीह के विश्वासी आनन्द का अनुभव कर सकते हैं। हमारे आनन्द का कारण मसीह में हमारी आशा है।

११११ ११११ ११११ ११११११

लगभग ई.स. 61

पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को यह पत्र रोम के कारागार से लिखा था (पेरि. 28:30)। इस पत्र का वाहक इपफ्रुदीतुस था। वह फिलिप्पी की कलीसिया की ओर से पौलुस के लिए आर्थिक भेंट लेकर रोम आया था (फिलि. 2:25, 4:18)। वहाँ आकर इपफ्रुदीतुस बहुत बीमार हो गया था और इस कारण वह शीघ्र घर नहीं लौट पाया था। यही कारण था कि पत्र भी विलम्ब से पहुँचा (2:26,27)।

११११११

फिलिप्पी की कलीसिया, फिलिप्पी मकिदुनिया का एक प्रमुख नगर था।

११११११११

पौलुस कलीसिया को अपने कारावास की परिस्थितियों से (1:12-26) और वहाँ से मुक्त हो जाने पर उसकी क्या योजना है उससे अवगत कराना चाहता था (2:23-24)। ऐसा प्रतीत होता है कि उस कलीसिया में कलह और विभाजन थे। अतः पौलुस दीनता के द्वारा एकता के विषय में लिखता है (2:1-18; 4:2-3)। पास्तरीय धर्मशास्त्री, पौलुस नकारात्मक शिक्षा और कुछ झूठे शिक्षकों के परिणामों के बारे में सीधा प्रतिवादी पत्र लिखता है (3:2,3)। पौलुस ने तीमुथियुस को कलीसिया की देख-रेख को सौंपना तथा इपफ्रुदीतुस के स्वास्थ्य एवं अपनी योजनाओं के बारे में चर्चा की है (2:19-30)। पौलुस उनकी आर्थिक भेंट एवं उसके

प्रति उनकी चिन्ता के लिए भी आभार व्यक्त करता है (4:10-20)।

११११ ११११

आनन्द भरा जीवन  
रूपरेखा

1. नमस्कार — 1:1, 2
2. पौलुस की परिस्थिति एवं कलीसिया को प्रोत्साहन — 1:3-2:30
3. झूठे शिष्यों के विरुद्ध चेतावनी — 3:1-4:1
4. अन्तिम प्रबोधन — 4:2-9
5. आभारोक्ति — 4:10-20
6. अन्तिम नमस्कार — 4:21-23

११११११११

1 मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षां और सेवकों समेत,  
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११

3 मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूँ, तब-तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ,

4 और जब कभी तुम सब के लिये विनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के साथ विनती करता हूँ

5 इसलिए कि तुम पहले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो।

6 ११११११ ११ ११११ ११ १११११११ ११\* कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।

7 उचित है कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूँ, क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो, और मेरी कैद में और सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में तुम सब मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी हो।

8 इसमें परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं मसीह यीशु के समान प्रेम करके तुम सब की लालसा करता हूँ।

9 और मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए,

10 यहाँ तक कि तुम उत्तम से ११११११ १११११११ ११ १११११११ १११११११, और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो, और टोकर न खाओ;

\* 1:6 १११११ ११ ११११ ११ ११११११ ११: इसका मतलब यह है पौलुस ने जो कुछ कहा उसका सच पूरी तरह से आश्वस्त था। † 1:10 ११११११ १११११११ ११ १११११११ १११११११: सही और गलत क्या था, अच्छाई और बुराई क्या थी, इसकी समझ होना।

11 और उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे। (2:8)

2:9

12 हे भाइयों, मैं चाहता हूँ, कि तुम यह जान लो कि मुझ पर जो बीता है, उससे सुसमाचार ही की उन्नति हुई है। (2:9)

13 यहाँ तक कि कैसर के राजभवन की सारे सैन्य-दल और शेष सब लोगों में यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के लिये कैद हूँ,

14 और प्रभु में जो भाई हैं, उनमें से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण, साहस बाँधकर, परमेश्वर का वचन बेधड़क सुनाने का और भी साहस करते हैं।

15 कुछ तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कुछ भली मनसा से। (2:3)

16 कई एक तो यह जानकर कि मैं सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया हूँ प्रेम से प्रचार करते हैं।

17 और कई एक तो सिधार्थ से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझकर कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें।

18 तो क्या हुआ? केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इससे आनन्दित हूँ, और आनन्दित रहूँगा भी।

19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी विनती के द्वारा, और 2:22 के दान के द्वारा, इसका प्रतिफल, मेरा उद्धार होगा। (2:28)

2:22

20 मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ।

21 2:22 के दान के द्वारा, और मर जाना लाभ है।

22 पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो मैं नहीं जानता कि किसको चुनूँ।

23 क्योंकि मैं दोनों के बीच असमंजस में हूँ; जी तो चाहता है कि देह-त्याग के मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है,

24 परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है।

25 और इसलिए कि मुझे इसका भरोसा है। अतः मैं जानता हूँ कि मैं जीवित रहूँगा, वरन् तुम सब के साथ रहूँगा, जिससे तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ और उसमें आनन्दित रहो;

26 और जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए।

2:26

27 केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ, चाहे न भी आऊँ, तुम्हारे विषय में यह सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो।

28 और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते। यह उनके लिये विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है।

29 क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुःख भी उठाओ,

30 और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो कि मैं वैसा ही करता हूँ।

## 2

2:22

1 अतः यदि मसीह में कुछ प्रोत्साहन और प्रेम से ढाढस और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया हो,

2 तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि 2:22\* और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।

3 स्वार्थ या मिथ्यागर्व के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।

4 हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

2:22

5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो;

6 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में

‡ 1:19 2:22 के दान के द्वारा, और मर जाना लाभ है। § 1:21 2:22 के दान के द्वारा, और मर जाना लाभ है। \* 2:2 2:22 के दान के द्वारा, और मर जाना लाभ है।



2 कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम करनेवालों से चौकस रहो, उन काट-कूट करनेवालों से चौकस रहो। (2 [?][?][?] 11:13)

3 क्योंकि यथार्थ खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।

4 पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूँ। यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उससे भी बढ़कर रख सकता हूँ।

5 आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूँ; इब्रानियों का इब्रानी हूँ; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूँ।

6 उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था।

7 [?][?][?] [?]-[?] [?][?][?] [?][?][?] [?][?] [?] [?][?],  
उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।

8 वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूँ।

9 और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है,

10 ताकि मैं उसको और उसके पुनरुत्थान की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ।

11 ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुए में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।

[?][?][?] [?] [?] [?][?][?] [?][?][?]

12 यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ; पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।

13 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ,

† 3:7 [?][?][?] [?]-[?] [?][?][?] [?][?] [?] [?] [?]: जन्म का, शिक्षा का, और व्यवस्था के लिए बाहरी अनुपालन के लाभ का मसीह के कारण हानि समझ लिया है अब पौलुस उन सब बातों को प्राप्त करने या फायदे के रूप में नहीं देखता है परन्तु अपने उद्धार के लिये उसे एक बाधा के रूप में देखता है। ‡ 3:19 [?][?][?] [?] [?][?][?] [?] [?] [?] [?] [?]: जिनका मन पृथ्वी की वस्तुओं पर लगा रहता है या जो उन्हें प्राप्त करने के लिए जीते हैं।

14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

15 अतः हम में से जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा।

16 इसलिए जहाँ तक हम पहुँचे हैं, उसी के अनुसार चलें।

[?][?][?] [?] [?] [?][?][?] [?][?][?] [?][?][?]

17 हे भाइयों, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन्हें पहचानो, जो इस रीति पर चलते हैं जिसका उदाहरण तुम हम में पाते हो।

18 क्योंकि अनेक लोग ऐसी चाल चलते हैं, जिनकी चर्चा मैंने तुम से बार बार की है और अब भी रो-रोकर कहता हूँ, कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के कूस के बैरी हैं,

19 उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और [?][?][?] [?] [?][?][?] [?] [?] [?] [?] [?][?] [?][?];

20 पर हमारा स्वदेश स्वर्ग में है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की प्रतीक्षा करते हैं।

21 वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।

## 4

[?][?][?] [?] [?][?][?]

1 इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयों, जिनमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयों, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो।

2 मैं यूओदिया से निवेदन करता हूँ, और सुन्तुखे से भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें।

3 हे सच्चे सहकर्मी, मैं तुझ से भी विनती करता हूँ, कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे अन्य सहकर्मियों समेत परिश्रम किया, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

[?] [?][?][?] [?] [?][?][?]







10 ताकि [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED], और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ,

11 और उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाओ, यहाँ तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।

12 और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ विरासत में सहभागी हों।

13 उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,

14 जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

15 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] और सारी सृष्टि में पहलौठा है।

16 क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।

17 और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। ([REDACTED] 1:8)

18 वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुएों में से जी उठनेवालों में पहलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

19 क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे।

20 और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग की।

21 तुम जो पहले पराए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे।

22 उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

23 यदि तुम विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न

छोड़ो, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया; और जिसका मैं पौलुस सेवक बना।

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

24 अब मैं उन दुःखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ,

25 जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूँ।

26 अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है।

27 जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

28 जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।

29 और इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।

## 2

1 मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उनके जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्होंने मेरा शारीरिक मुँह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूँ।

2 ताकि उनके मनों को प्रोत्साहन मिले और [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]\*, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें।

3 जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं।

4 यह मैं इसलिए कहता हूँ, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे।

5 यद्यपि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूँ, तो भी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूँ।

[REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

‡ 1:15 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: अर्थ है कि वह मानवजाति के लिए परमेश्वर की पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है।

\* 2:2 [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]: इसका मतलब, एक साथ आने के लिए, और इसलिए, दर्शाता है कि एकता में स्थिर रहें।

6 इसलिए, जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।

7 और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो।

8 चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं।

9 क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।

10 और तुम मसीह में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।

11 ~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~, परन्तु मसीह का खतना हुआ, जिससे पापमय शारीरिक देह उतार दी जाती है।

12 और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुए में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।

13 और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।

14 और ~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~ और सहायक नियम जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।

15 और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय जयकार की ध्वनि सुनाई।

16 इसलिए खाने-पीने या पर्व या नये चाँद, या सब के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे।

17 क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं।

18 कोई मनुष्य दीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है।

19 और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्टों के द्वारा पालन-पोषण पाकर

और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।

~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~

20 जबकि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर क्यों उनके समान जो संसार में जीवन बिताते हैं और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो?

21 कि 'यह न छूना,' 'उसे न चखना,' और 'उसे हाथ न लगाना'?,

22 क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते-लाते नाश हो जाएँगी क्योंकि ये मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार है।

23 इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गद्दी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक अभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इनसे कुछ भी लाभ नहीं होता।

### 3

~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~

1 तो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है। (~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~ 6:20)

2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

3 क्योंकि ~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।

4 जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।

5 इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है।

6 इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है।

7 और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे।

8 पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैर-भाव, निन्दा, और मुँह से गालियाँ बकना ये सब बातें छोड़ दो। (~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~ 4:23,24)

9 एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है।

† 2:11 ~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~: सभी पापों का त्याग करने के द्वारा हृदय में बनाया गया।

‡ 2:14 ~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~: मूसा की व्यवस्था की कष्टदायक माँग को समाप्त कर दिया। \* 3:3 ~~2:11 2:12 2:13 2:14 2:15 2:16 2:17 2:18 2:19 2:20 2:21 2:22 2:23 2:24 2:25 2:26 2:27 2:28 2:29 2:30 2:31 2:32 2:33 2:34 2:35 2:36 2:37 2:38 2:39 2:40 2:41 2:42 2:43 2:44 2:45 2:46 2:47 2:48 2:49 2:50 2:51 2:52 2:53 2:54 2:55 2:56 2:57 2:58 2:59 2:60 2:61 2:62 2:63 2:64 2:65 2:66 2:67 2:68 2:69 2:70 2:71 2:72 2:73 2:74 2:75 2:76 2:77 2:78 2:79 2:80 2:81 2:82 2:83 2:84 2:85 2:86 2:87 2:88 2:89 2:90 2:91 2:92 2:93 2:94 2:95 2:96 2:97 2:98 2:99 2:100~~: संसार के लिए मर गए, पाप के लिए मर गए, सांसारिक भोग-विलास के लिए मर गए।



निर्देश पाया था कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे अच्छी तरह व्यवहार करना।)

11 और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्मी और मेरे लिए सांत्वना ठहरे हैं।

12 इपफ्रास जो तुम में से है, और मसीह यीशु का दास है, तुम्हें नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो।

13 मैं उसका गवाह हूँ, कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया और हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यत्न करता रहता है।

14 प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार।

15 लौदीकिया के भाइयों को और नुमफास और उसकी घर की कलीसिया को नमस्कार कहना।

16 और जब यह पत्र तुम्हारे यहाँ पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना।

17 फिर अरखिप्युस से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना।

18 मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जंजीरों को स्मरण रखना; तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।









16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और **११:११-१२**, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।

17 तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

18 इसलिए इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

## 5

**१:११-१२** के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए।

1 पर हे भाइयों, इसका प्रयोजन नहीं, कि **१:११-१२** के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए।

2 क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है।

3 जब लोग कहते होंगे, “कुशल है, और कुछ भय नहीं,” तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे। **(१:११-१२ 24:37-39)**

4 पर हे भाइयों, तुम तो अंधकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े।

5 क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अंधकार के हैं।

6 इसलिए हम औरों की समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें।

7 क्योंकि जो सोते हैं, वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं, वे रात ही को मतवाले होते हैं।

8 पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहनकर और उद्धार की आशा का टोप पहनकर सावधान रहें। **(१:११ 59:17)**

9 क्योंकि **१:११-१२**, परन्तु इसलिए ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।

10 वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।

11 इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

**१:११-१२**

§ 4:16 **१:११-१२**: मतलब एक प्रमुख स्वर्गदूत; वह जो प्रथम है, या वह जो दूसरों के ऊपर है। \* 5:1 **१:११-१२**: यहाँ पर प्रभु यीशु के आगमन को दर्शाता है। † 5:9 **१:११-१२**: परमेश्वर की इच्छा हमें उद्धार देने की है, और इसलिए हमें सचेत और शान्त होना चाहिए।

12 हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुएँ हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो।

13 और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो आपस में मेल-मिलाप से रहो।

14 और हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उनको समझाओ, निरुत्साहित को प्रोत्साहित करो, निर्बलों को सम्भालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।

15 देखो की कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस में और सबसे भी भलाई ही की चेष्टा करो। **(१:११ 3:9)**

16 सदा आनन्दित रहो।

17 निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।

18 हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।

19 आत्मा को न बुझाओ।

20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।

21 सब बातों को परखो जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

22 सब प्रकार की बुराई से बचे रहो। **(१:११ 4:8)**

**१:११-१२**

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

24 तुम्हारा बुलानेवाला विश्वासयोग्य है, और वह ऐसा ही करेगा।

25 हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना करो।

26 सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।

27 मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूँ, कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए।

28 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।

## 6. अन्तिम नमस्कार — 3:16-18

## थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

११११

प्रथम पत्र के सदृश्य यह पत्र भी पौलुस, तीमुथियुस एवं सीलास की ओर से था। लेखक ने इस पत्र में भी वही लेखन शैली का इस्तेमाल किया है जो पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों और अन्य पत्रों में किए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मुख्य लेखक पौलुस ही था। सीलास और तीमुथियुस का नाम अभिवादन में जोड़ा गया है (1:1)। अनेक पदों में “हम” लिखने का अर्थ है कि इस पत्र के लेखन में तीनों एक मन हैं। क्योंकि पौलुस ने अन्तिम नमस्कार एवं प्रार्थना अपने हाथों से लिखी थी, इस कारण पत्र लेखन कार्य पौलुस का नहीं है (3:17)। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने तीमुथियुस या सीलास के हाथों यह पत्र लिखवाया था।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग ई.स. 51 - 52

पौलुस ने यह दूसरा पत्र कुरिन्थ नगर से लिखा था, जब वह प्रथम पत्र लिखते समय वहाँ उपस्थित था।

११११११

2 थिस्स. 1:1 पाठकों की पहचान कराता है कि वे “थिस्सलुनीके की कलीसिया” के सदस्य थे।

१११११११११

इस पत्री का उद्देश्य था कि प्रभु के दिन के विषय में भ्रमित शिक्षा का खण्डन किया जाए। विश्वास में बने रहने के लिए उन्होंने जो यत्न किया उसके लिए उनकी प्रशंसा करे और उन्हें प्रोत्साहित करे और अन्त समय से सम्बंधित शिक्षा में भ्रम में पड़नेवालों को झिड़के क्योंकि उनकी शिक्षा के अनुसार प्रभु का दिन आ चुका था और प्रभु का आगमन अति निकट है। इस प्रकार वे इस शिक्षा के माध्यम से अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे थे।

१११ ११११

आशा में जीना  
रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1, 2
2. कष्टों में ढाढ़स बाँधना — 1:3-12
3. प्रभु के दिनों के बारे में त्रुटि सुधार — 2:1-12
4. उनकी नियति के विषय स्मरण करवाना — 2:13-17
5. व्यावहारिक विषयों में प्रबोधन — 3:1-15

१११११११११११

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है:

2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

११११११ ११ ११११

3 हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है इसलिए कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और आपस में तुम सब में प्रेम बहुत ही बढ़ता जाता है।

4 यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं, कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है।

5 यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है; कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, ११११११ ११११११ ११११ ११११११ ११ १११११११ ११\*।

6 क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे।

7 और तुम जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। (११११. 1:14,15, ११११११. 14:13)

8 और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। (११. 79:6, १११. 66:15, ११११११. 10:25)

9 वे प्रभु के सामने से, और १११११ १११११११ १११ ११११ ११ ११११ १११११११ अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। (११११११. 21:8, ११११११ 25:41,46, ११११. 2:19,21)

10 यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया। (1 ११११११. 2:13, 1 १११११. 1:6, ११. 89:7, ११११. 49:3)

11 इसलिए हम सदा तुम्हारे निमित्त प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे,

\* 1:5 ११११११ १११११ १११ ११११११ ११ ११११११ ११: अब जो यह कष्ट तुम सहन करते हो वह इसलिए है क्योंकि तुम स्वर्ग राज्य के आत्मस्वीकृत वारिस हो। † 1:9 ११११ ११११११ ११ ११११ ११ ११११ ११११११: इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि, जब वह प्रकट होंगे तो वे उसकी शक्ति और महिमा की अभिव्यक्ति सहन करने में सक्षम नहीं होंगे।



आलस्य में रहता है, और जो शिक्षा तुम ने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता।

<sup>7</sup> क्योंकि तुम आप जानते हो, कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में आलसी तरीके से न चले।

<sup>8</sup> और किसी की रोटी मुफ्त में न खाई; पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से किसी पर भार न हो।

<sup>9</sup> यह नहीं, कि हमें अधिकार नहीं; पर इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ, कि तुम हमारी सी चाल चलो।

<sup>10</sup> और जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए।

<sup>11</sup> हम सुनते हैं, कि कितने लोग तुम्हारे बीच में आलसी चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, पर ~~२२२२ २२ २२२ २२२ २२२ २२२२ २२२२ २२२~~।

<sup>12</sup> ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।

<sup>13</sup> और तुम, हे भाइयों, भलाई करने में साहस न छोड़ो।

<sup>14</sup> यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो; और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो;

<sup>15</sup> तो भी उसे बैरी मत समझो पर भाई जानकर चिताओ।

~~२२२२२२ २२२२२२२२२२~~

<sup>16</sup> अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे: प्रभु तुम सब के साथ रहे।

<sup>17</sup> मैं पौलुस ~~२२२२ २२२ २२~~ नमस्कार लिखता हूँ। हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है: मैं इसी प्रकार से लिखता हूँ।

<sup>18</sup> हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।

† 3:11 ~~२२२२ २२ २२२ २२२ २२२ २२२२ २२२२ २२२~~: अर्थात् वे दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करते हैं, उनका स्वयं का ऐसा कोई काम नहीं होता जिसमें वे अपने आपको व्यस्त रख सकें। ‡ 3:17 ~~२२२२ २२२ २२~~: अर्थात्, यह हस्ताक्षर इस पत्री की सत्यता का चिन्ह या प्रमाण है।

## तीमुथियुस के नाम प्रेरित पौलुस की पहली पत्री

?????

इसका लेखक पौलुस है। पत्र की विषयवस्तु स्पष्ट व्यक्त करती है कि यह पत्र प्रेरित पौलुस के द्वारा ही लिखा गया था, “पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का प्रेरित है” (1:1)। आरम्भिक कलीसिया इसे पौलुस का प्रामाणिक पत्र मानती थी।

????? ????? ???? ??????

लगभग ई.स. 62 - 64

पौलुस तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़कर मकिदुनिया चला गया था। वहाँ से उसने उसे यह पत्र लिखा था (1 तीमु. 1:3; 3:14,15)।

????????

जैसा नाम प्रकट करता है यह पत्र तीमुथियुस को जो प्रचार कार्य में उसका सहकर्मी एवं सहयोगी था, लिखा गया था। तीमुथियुस एवं सम्पूर्ण कलीसिया इसके लक्षित पाठक हैं।

????????????

इस पत्र का उद्देश्य यह था कि, तीमुथियुस को निर्देश देना कि परमेश्वर के परिवार का आचरण कैसा होना चाहिये (3:14-15)। और तीमुथियुस का इन निर्देशों पर स्थिर रहना। ये दो पद इस प्रथम पत्र में पौलुस के अभिप्रेत अर्थ को व्यक्त करते हैं। वह कहता है कि उसके लिखने का उद्देश्य है, तू जान ले कि लोगों को स्वयं का संचालन किस तरह करना चाहिए परमेश्वर के घराने में, जो जीविते परमेश्वर की कलीसिया है, स्तम्भ और सच्चाई की नींव है, इस गद्यांश में प्रकट है कि पौलुस अपने सहकर्मियों को पत्र लिख रहा था और निर्देशन दे रहा था कि वे कलीसियाओं को कैसे दृढ़ एवं स्थिर करें।

????? ?????

एक युवा शिष्य के लिए निर्देश  
रूपरेखा

1. सेवकाई के आचरण — 1:1-20
2. सेवकाई के सिद्धान्त — 2:1-3:16
3. सेवकाई की जिम्मेदारियाँ — 4:1-6:21

????????????????

\* 1:4 ?? ?????????? ?? ?????? ?????????????? ?? ?? ? ?????? : अर्थात्, उन्हें अपना ध्यान बनावटी बातों पर नहीं लगाना चाहिए या इस तरह की तुच्छ बातों के सम्बंध में महत्त्व नहीं देना चाहिए।

1 पौलुस की ओर से जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, और हमारी आशा के आधार मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है,

2 तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से, तुझे अनुग्रह और दया, और शान्ति मिलती रहे।

????? ?????????????? ?? ?????????? ??????????

3 जैसा मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कुछ लोगों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें,

4 और ?? ?????????????? ?? ?????????? ?????????????????? ?? ?? ? ??????????\*, जिनसे विवाद होते हैं; और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास से सम्बंध रखता है; वैसे ही फिर भी कहता हूँ।

5 आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और निष्कपट विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।

6 इनको छोड़कर कितने लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए हैं,

7 और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं।

8 पर हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए तो वह भली है।

9 यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, माँ-बाप के मारनेवाले, हत्यारों,

10 व्यभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के बेचनेवालों, झूठ बोलनेवालों, और झूठी शपथ खानेवालों, और इनको छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है।

11 यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है।

????????? ?? ?????????

12 और मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ्य दी है, धन्यवाद करता हूँ; कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।

13 मैं तो पहले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अंधेर करनेवाला था; तो भी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किए थे।

14 और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ।

15 यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।

16 पर मुझ पर इसलिए दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे, उनके लिये मैं एक आदर्श बनूँ।

17 अब सनातन राजा अर्थात् <sup>2:13</sup> अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

<sup>2:15</sup>

18 हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ, कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रह।

19 और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया।

20 उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया कि वे निन्दा करना न सीखें।

## 2

<sup>2:1</sup>

1 अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ, कि विनती, प्रार्थना, निवेदन, धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ।

2 राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गरिमा में जीवन बिताएँ।

3 यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है,

4 जो यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें। **(2:22, 18:23)**

5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और <sup>2:16</sup> अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है,

6 जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए।

7 मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।

<sup>2:23</sup>

8 इसलिए मैं चाहता हूँ, कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।

9 वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ <sup>2:24</sup> वस्त्रों से अपने आपको संवारे; न कि बाल गूँथने, सोने, मोतियों, और बहुमूल्य कपड़ों से,

10 पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।

11 और स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता में सीखना चाहिए।

12 मैं कहता हूँ, कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर अधिकार चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।

13 क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। **(1:27, 11:8)**

14 और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई। **(2:24, 3:6)**

15 तो भी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

## 3

<sup>3:1</sup>

1 यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है।

2 यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो।

3 पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; वरन् कोमल हो, और न झगडालू, और न धन का लोभी हो।

4 अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो।

5 जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?

6 फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान के समान दण्ड पाए।

7 और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फँस जाए।

<sup>3:2</sup>

† 1:17 <sup>2:17</sup>: यह स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है, इसका मतलब है कि वह मरता नहीं है। \* 2:5 <sup>2:5</sup>: वह "परमेश्वर और मनुष्यों" के बीच मध्यस्थता करानेवाला है, जिसका अर्थ है, वह सम्पूर्ण मानवजाति के उद्धार की इच्छा करता है। † 2:9 <sup>2:9</sup>: यहाँ पर इसका मतलब है, उनका ध्यान उनके पहरावे पर होना चाहिए कि यह किसी भी वर्ग के व्यक्तियों के लिए अपमान का कारण न हो, इस तरह की बातों से यह दिखता है कि उनका मन उच्च और महत्त्वपूर्ण बातों पर लगा है।





1 किसी बूढ़े को न डाँट; पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; (2/2/2/2/2. 19:32)

2 बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर; और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहन जानकर, समझा दे।

2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2

3 उन विधवाओं का 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2\*।

4 और यदि किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही घराने के साथ आदर का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उनका हक देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है।

5 जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं; वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात-दिन विनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है। (2/2/2/2/2. 49:11)

6 पर जो भोग-विलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है।

7 इन बातों की भी आज्ञा दिया कर ताकि वे निर्दोष रहें।

8 पर यदि कोई अपने रिश्तेदारों की, विशेष रूप से अपने परिवार की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।

9 उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो,

10 और भले काम में सुनाम रही हो, जिसने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; अतिथि की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पाँव धोए हों, दुःखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो।

11 पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह का विरोध करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं, तो विवाह करना चाहती हैं,

12 और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी पहली प्रतिज्ञा को छोड़ दिया है।

13 और इसके साथ ही साथ वे घर-घर फिरकर आलसी होना सीखती हैं, और केवल आलसी नहीं, पर बक-बक करती रहतीं और दूसरों के काम में हाथ भी डालती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं।

14 इसलिए मैं यह चाहता हूँ, कि जवान विधवाएँ विवाह करें; और बच्चे जनें और घरबार सम्भालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।

15 क्योंकि कई एक तो बहक कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं।

16 यदि किसी विश्वासिनी के यहाँ विधवाएँ हों, तो वही उनकी सहायता करे कि कलीसिया पर भार न हो ताकि वह उनकी सहायता कर सके, जो सचमुच में विधवाएँ हैं।

2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2

17 जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ।

18 क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, “दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना,” क्योंकि “मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।” (2/2/2/2/2. 19:13, 2/2/2/2. 25:4)

19 कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको स्वीकार न करना। (2/2/2/2. 17:6, 2/2/2/2. 19:15)

20 पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।

21 परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूँ कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।

22 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2 2/2/2/2/2† और दूसरों के पापों में भागी न होना; अपने आपको पवित्र बनाए रख।

23 भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण 2/2/2/2/2-2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2†।

24 कुछ मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते हैं, और न्याय के लिये पहले से पहुँच जाते हैं, लेकिन दूसरों के पाप बाद में दिखाई देते हैं।

25 वैसे ही कुछ भले काम भी प्रगट होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते।

## 6

2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2

1 जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने-अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो।

2 और जिनके स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें; वरन् उनकी और भी सेवा करें, क्योंकि इससे लाभ उठानेवाले विश्वासी और प्रेमी हैं। इन बातों का उपदेश किया कर और समझाता रह।

\* 5:3 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2: विशेष ध्यान और सम्मान देना जो यहाँ दिया गया है, यह गरीब विधवाओं को दर्शाता है जो आश्रित हालत में थी। † 5:22 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2 2 2/2/2/2/2: यह अभिषेक करने के अर्थ में उल्लेख किया गया है। सामान्य तौर पर सिर के ऊपर हाथ उसके रखा जाता था जो पवित्र सेवा के लिये अभिषिक्त या महत्त्वपूर्ण काम के लिये नियुक्त किया गया हो। ‡ 5:23 2/2/2/2-2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2: यहाँ पर दाखरस के उपयोग से प्राप्त होनेवाली खुशी के लिए नहीं था, परन्तु यह एक औषधि के रूप में, स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए उसका उपयोग किया जाता था।



## तीमुथियुस के नाम प्रेरित पौलुस की दूसरी पत्री

११११

रोम के कारागार से मुक्त होकर और उसकी चौथी प्रचार-यात्रा के बाद पौलुस फिर से सम्राट नीरो के अधीन बन्दी बनाया गया था। इस चौथी प्रचार-यात्रा ही में पौलुस ने तीमुथियुस को पहला पत्र लिखा था। तीमुथियुस को दूसरा पत्र लिखते समय वह फिर से कारागार में था। पहली बार जब पौलुस बन्दी बनाया गया था वह तब एक किराये के मकान में नजरबन्द था (पेरि. 28:30)। परन्तु इस समय वह कालकोठरी में था (4:13)। एक साधारण बन्दी के जैसा वह जंजीरों में जकड़ा हुआ था (1:16, 2:9)। पौलुस जानता था कि उसका कार्य पूरा हो गया है और उसका अन्त समय आ गया है (4:6-8)।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग ई.स. 66 - 67

पौलुस दूसरी बार बन्दीगृह में था जब उसने यह पत्र लिखा। अब उसे बस अपने शहीद होने की प्रतीक्षा थी।

१११११११

इस पत्र का मुख्य पाठक तीमुथियुस तो था ही परन्तु उसने निश्चय ही यह पत्र कलीसिया को भी पढ़ाया था।

११११११११११

इस पत्र के लिखने में पौलुस का यह उद्देश्य था कि, तीमुथियुस को अन्तिम बार प्रोत्साहित करना और प्रबोधित करना के जो कार्य पौलुस ने उसे सौंपा है उसे वह निर्भीक होकर (1:3-14) ध्यान केन्द्रित होकर (2:1-26), और लगन से करे (3:14-17; 4:1-8)।

११११ १११११

विश्वासयोग्य सेवकाई करने का प्रभार  
रूपरेखा

1. सेवकाई के लिए प्रोत्साहन — 1:1-18
2. सेवकाई के आदर्श — 2:1-26
3. झूठी शिक्षा के खिलाफ चेतावनी — 3:1-17
4. अन्तिम प्रबोधन एवं आशीर्वाद — 4:1-22

११११११११११११

1 पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, ११११११११११ ११११११११११\* मसीह यीशु का प्रेरित है,

\* 1:1 ११११११११११ ११ ११११११ ११: ईश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के अनुसार प्रेरित होने के लिए बुलाया जाना। † 1:7 ११ ११ १११११: एक डरपोक और दासत्व की आत्मा नहीं दी।

2 प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।

११११११११११११११११ ११ १११११ ११११११११११११११

3 जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने पूर्वजों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूँ, उसका धन्यवाद हो कि अपनी प्रार्थनाओं में रात दिन तुझे लगातार स्मरण करता हूँ,

4 और तेरे आँसुओं की सुधि कर करके तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूँ, कि आनन्द से भर जाऊँ।

5 और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहले तेरी नानी लोइस, और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय हुआ है, कि तुझ में भी है।

6 इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे।

7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें ११ ११ १११११† पर सामर्थ्य, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

११११११११११ ११ १११११ ११११११११ १ ११

8 इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझसे जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुःख उठा।

9 जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है; जो मसीह यीशु में अनादिकाल से हम पर हुआ है।

10 पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।

11 जिसके लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।

12 इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास रखा है, जानता हूँ; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।

१११११११११ ११ ११११११ १११११११११

13 जो खरी बातें तूने मुझसे सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।

14 और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।

15 तू जानता है, कि आसियावाले सब मुझसे फिर गए हैं, जिनमें फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं।

16 उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ।

17 पर जब वह रोम में आया, तो बड़े यत्न से ढूँढकर मुझसे भेंट की।

18 (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)। और जो-जो सेवा उसने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भाँति जानता है।

## 2

११११११ ११११११

1 इसलिए हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा।

2 और जो बातें तूने बहुत गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

3 मसीह यीशु के ११११११ ११११११ ११ १११११ १११११ १११ १११११ १११११\*।

4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने वरिष्ठ अधिकारी को प्रसन्न करे, अपने आपको संसार के कामों में नहीं फँसाता

5 फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।

6 जो किसान परिश्रम करता है, फल का अंश पहले उसे मिलना चाहिए।

7 जो मैं कहता हूँ, उस पर ध्यान दे और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा।

8 यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुआओं में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है।

9 जिसके लिये मैं कुकर्मों के समान दुःख उठाता हूँ, यहाँ तक कि कैद भी हूँ; परन्तु १११११११११ ११ ११११ ११११ ११११११†।

10 इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में हैं अनन्त महिमा के साथ पाएँ।

11 यह बात सच है, कि

यदि हम उसके साथ मर गए हैं तो उसके साथ जीएँगे भी।

12 यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे;

यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह भी हमारा इन्कार करेगा।

13 यदि हम विश्वासघाती भी हों तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता। (११११११ 5:24)

११११११ १११११११

14 इन बातों की सुधि उन्हें दिला, और प्रभु के सामने चिता दे, कि शब्दों पर तर्क-वितर्क न किया करें, जिनसे कुछ लाभ नहीं होता; वरन् सुननेवाले बिगड़ जाते हैं।

15 अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

16 पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह; क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते जाएँगे।

17 और उनका वचन सड़े-घाव की तरह फैलता जाएगा: हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं,

18 जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट-पुलट कर देते हैं।

19 तो भी परमेश्वर की पक्की नींव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है: “प्रभु अपनों को पहचानता है,” और “जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।” (११११ 1:7)

20 बड़े घर में न केवल सोने-चाँदी ही के, पर काठ और मिट्टी के बर्तन भी होते हैं; कोई-कोई आदर, और कोई-कोई अनादर के लिये।

21 यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का पात्र, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

22 जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उनके साथ धार्मिकता, और विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप का पीछा कर।

23 पर मूर्खता, और अविद्या के विवादों से अलग रह; क्योंकि तू जानता है, कि इनसे झगड़े होते हैं।

\* 2:3 ११११११ १११११११ ११ ११११ ११११ १११ ११११ ११११: प्रेरित मानते हैं कि सुसमाचार के सेवक दुःख उठाने के लिये बुलाए गए हैं, और यही कारण है कि उसे एक अच्छे सिपाही की तरह दुःख उठाने के लिये तैयार रहना चाहिए। † 2:9 ११११११११ ११ ११११ १११ १११११: सुसमाचार समृद्ध किया गया था और वह लिखित और कैद नहीं किया जा सका।



8 भविष्य में मेरे लिये **११:११-११:११** **११** **११** **११:११**† रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन् उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।

**११:११** **११:११**

9 मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर।

10 क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेंस गलातिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है।

11 केवल लूका मेरे साथ है मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है।

12 तुखिकुस को मैंने इफिसुस को भेजा है।

13 जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना।

14 सिकन्दर ठठेरे ने मुझसे बहुत बुराइयाँ की हैं प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा। **(११:११. 28:4, ११:११. 12:19)**

15 तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया।

16 मेरे पहले प्रत्युत्तर करने के समय में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था भला हो, कि इसका उनको लेखा देना न पड़े।

17 परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ्य दी; **११:११** **११:११** **११:११** **११:११-११:११** **११:११** **११:११**, और सब अन्यजाति सुन लें; और मैं तो सिंह के मुँह से छुड़ाया गया। **(११:११. 22:21, ११:११. 6:21)**

18 और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके पहुँचाएगा उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

**११:११** **११:११**

19 प्रिस्का और अक्विला को, और उनेसिफुरूस के घराने को नमस्कार।

20 इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और त्रुफिमुस को मैंने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है।

21 जाड़े से पहले चले आने का प्रयत्न कर: यूबूलुस, और पूदेंस, और लीनुस और क्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार।

22 प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे, तुम पर अनुग्रह होता रहे।

† 4:8 **११:११** **११:११** **११:११**: अर्थात् वह एक मुकुट धार्मिकता के कारण जीता और उसके संघर्ष और प्रयास पवित्रता के कारण इनाम के रूप में सम्मानित किया गया। ‡ 4:17 **११:११** **११:११** **११:११** **११:११-११:११** **११:११** **११:११**: अर्थात्, पूरी तरह से पुष्टि की जा सके, ताकि दूसरे लोग इसकी सच्चाई में आश्वस्त रहें।



14 यहूदियों की कथा कहानियों और उन मनुष्यों की आज्ञाओं पर मन न लगाएँ, जो सत्य से भटक जाते हैं।

15 शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तुएँ शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं वरन् उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।

16 वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं [22 2222 222222 22 222222 222222 2222 2222], क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न माननेवाले हैं और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं।

## 2

[222222 22222222 22 22222222]

1 परतू, ऐसी बातें कहा कर जो खरे सिद्धान्त के योग्य हैं।

2 अर्थात् वृद्ध पुरुष सचेत और गम्भीर और संयमी हों, और उनका विश्वास और प्रेम और धीरज पक्का हो।

3 इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल चलन भक्तियुक्त लोगों के समान हो, वे दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों।

4 [22222 22 22222 222222222222 22 222222222 22222 22222]\*, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रेम रखें;

5 और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।

6 ऐसे ही जवान पुरुषों को भी समझाया कर, कि संयमी हों।

7 सब बातों में अपने आपको भले कामों का नमूना बना; तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता

8 और ऐसी खराई पाई जाए, कि कोई उसे बुरा न कह सके; जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।

9 दासों को समझा, कि अपने-अपने स्वामी के अधीन रहें, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब न दें;

10 चोरी चालाकी न करें; पर सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें, कि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ा दें।

‡ 1:16 [22 22222 222222 22 22222 22222222 22222 2222]: उनका आचरण इस तरह का दिखता है कि उन्हें उनके साथ कोई वास्तविक रिश्ता नहीं है। \* 2:4 [2222 22 2222 2222222222 22 2222222 2222 2222]: इसका मतलब है, उन्हें उनको निर्देश देना चाहिए कि उनकी इच्छा और भावना अच्छी तरह से नियमित होनी चाहिए। † 2:11 [22222222 22 22222222 22222 22, 22 22 222222222 222 2222222 22222 2222222 22]: इसका मतलब है कि उद्धार की योजना सभी जातियों पर प्रकट की गई है कि वे उद्धार पा सके। ‡ 2:12 [2222222 22 2222222222 2222222222 22 22 2222222]: इस जीवन की अनुचित इच्छा, धन, भोग-विलास, सम्मान की चाह को दर्शाता है। \* 3:2 [2222 22 222222 2 22222]: हम किसी से किसी और के बारे में कुछ न कहें, जो उन्हें चोट पहुँचाए। † 3:5 [22 222222222 222222 22 22222 22222, 22 22222 22 22222]: यह सुसमाचार का एक महान और मौलिक सिद्धान्त है कि मनुष्यों के अच्छे काम आत्मा के धार्मिकता में कोई हिस्सेदारी नहीं होती है। ‡ 3:7 [22 22222 222222222 22 2222222 2222222]: हम अपने कामों के द्वारा नहीं, परन्तु उनके अनुग्रह और दया के द्वारा।

11 क्योंकि [222222222 22 222222222 222222 22, 22 22 22 2222222222 2222 22222222 22222 2222 2222 2222 2222 2222 2222]।

12 और हमें चिताता है, कि हम [2222222 22 2222222222 222222222222 22 22 22222222] इस युग में संयम और धार्मिकता से और भक्ति से जीवन बिताएँ;

13 और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की प्रतीक्षा करते रहें।

14 जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो। ([222222. 19:5, 22222. 4:20, 22222. 7:6, 22222. 14:2, 22. 72:14, 22. 130:8, 2222. 37:23])

15 पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह और समझा और सिखाता रह। कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए।

## 3

[222222 2222-2222]

1 लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के अधीन रहें, और उनकी आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें,

2 [22222 22 2222222 2 2222222]\*; झगड़ालू न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें।

3 क्योंकि हम भी पहले, निर्बुद्धि और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए, और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुख-विलास के दासत्व में थे, और बैर-भाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे।

4 पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की भलाई, और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रकट हुआ

5 तो उसने हमारा उद्धार किया और [22 2222222222 2222222 22 22222 22222, 22 22222 22 22222]\*, पर अपनी दया के अनुसार, नये जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।



6 जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकार से उण्डेला। (2:28)

7 जिससे 22 2222 2222222 22 22222 222222, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।

8 यह बात सच है, और मैं चाहता हूँ, कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले इसलिए कि जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया है, वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें। ये बातें भली, और मनुष्यों के लाभ की हैं।

222 22 2222

9 पर मूर्खता के विवादों, और वंशावलियों, और बैर विरोध, और उन झगड़ों से, जो व्यवस्था के विषय में हों बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं।

10 किसी पाखण्डी को एक दो बार समझा बुझाकर उससे अलग रह।

11 यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आपको दोषी ठहराकर पाप करता रहता है।

2222222 2222222

12 जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूँ, तो मेरे पास निकुपुलिस आने का यत्न करना: क्योंकि मैंने वहीं जाड़ा काटने का निश्चय किया है।

13 जेनास व्यवस्थापक और अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुँचा दे, और देख, कि उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए।

14 हमारे लोग भी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अच्छे कामों में लगे रहना सीखें ताकि निष्फल न रहें।

22222222222222

15 मेरे सब साथियों का तुझे नमस्कार और जो विश्वास के कारण हम से प्रेम रखते हैं, उनको नमस्कार। तुम सब पर अनुग्रह होता रहे।

## फिलेमोन के नाम प्रेरित पौलुस की पत्री

☞☞☞

इस पत्र का लेखक पौलुस था (फिले. 1:1)। इस पत्र में पौलुस फिलेमोन से कहता है कि वह उनेसिमुस को उसके पास फिर से भेज रहा है तथा कुलु. 4:9 में उनेसिमुस तुखिकुस के साथ कुलुस्से जा रहा था कि तुखिकुस फिलेमोन को पौलुस का पत्र दे। यह एक रोचक बात है कि पौलुस ने यह पत्र अपने हाथ से लिखा है कि इसका महत्त्व प्रकट हो।

☞☞☞ ☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞

लगभग ई.स. 60

फिलेमोन को यह पत्र लिखते समय पौलुस रोम के कारागार में बन्दी था।

☞☞☞☞☞

पौलुस ने यह पत्र फिलेमोन की तथा अरखिप्पुस की आवासीय कलीसिया को तथा बहन अफफिया को लिखा था। पत्र की विषयवस्तु से प्रकट होता है कि यह पत्र मुख्यतः फिलेमोन के लिए था।

☞☞☞☞☞☞☞

इस पत्र को लिखने में पौलुस का उद्देश्य यह था कि उनेसिमुस को उसका स्वामी फिर से अपना ले (उनेसिमुस फिलेमोन का दास था जो उसके पास से चोरी करके भाग गया था) और उसे दण्ड न दे। (10-12,17)। इसके अतिरिक्त पौलुस चाहता था कि फिलेमोन उसे दास के रूप में नहीं “एक प्रिय भाई” के रूप में अपना ले। (15-16)। उनेसिमुस अब भी फिलेमोन की सम्पदा था और पौलुस उसके लिए मार्ग बनाना चाहता था कि फिलेमोन उसे सहर्ष ग्रहण कर ले। पौलुस के प्रचार द्वारा उनेसिमुस ने मसीह को ग्रहण कर लिया था (फिले.10)।

☞☞☞ ☞☞☞

छुटकारा

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1-3
2. आभारोक्ति — 1:4-7
3. उनेसिमुस के लिए मध्यस्थता — 1:8-22
4. अन्तिम वचन — 1:23-25

☞☞☞☞☞☞☞☞☞

1 पौलुस की ओर से जो ☞☞☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞\* है, और भाई तीमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन,

2 और बहन ☞☞☞☞☞☞☞, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम।

3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞☞☞☞☞☞

4 मैं सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ; और अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूँ।

5 क्योंकि मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनकर, जो प्रभु यीशु पर और सब पवित्र लोगों के साथ है।

6 मैं प्रार्थना करता हूँ कि, विश्वास में तुम्हारी सहभागिता हर अच्छी बात के ज्ञान के लिए प्रभावी हो जो मसीह में हमारे पास है।

7 क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली है, इसलिए, कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं।

☞☞☞☞☞☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞☞☞

8 इसलिए यद्यपि मुझे मसीह में बड़ा साहस है, कि जो बात ठीक है, उसकी आज्ञा तुझे दूँ।

9 तो भी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिये कैदी हूँ, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूँ।

10 मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझसे मेरी कैद में जन्मा है तुझ से विनती करता हूँ।

11 वह तो पहले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े काम का है।

12 उसी को अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैंने उसे तेरे पास लौटा दिया है।

13 उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था कि वह तेरी ओर से इस कैद में जो सुसमाचार के कारण है, मेरी सेवा करे।

14 पर मैंने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरा यह उपकार दबाव से नहीं पर आनन्द से हो।

15 क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ दिन तक के लिये इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे।

16 परन्तु अब से दास के समान नहीं, वरन् दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे जो मेरा तो विशेष प्रिय है ही, पर अब शरीर में और प्रभु में भी, तेरा भी विशेष प्रिय हो।

\* 1:1 ☞☞☞☞ ☞☞☞☞ ☞☞ ☞☞☞☞: यीशु मसीह के कारण में रोम में एक कैदी के रूप में। † 1:2 ☞☞☞☞☞☞☞: सम्भवतः फिलेमोन की पत्नी थी।

११११११११ ११ ११११११११११११ ११  
११११११११११

17 यदि तू मुझे अपना सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।

18 और ११११ १११११ १११११ ११११ १११११ ११ १११; या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।

19 मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ, कि मैं आप भर दूँगा; और इसके कहने की कुछ आवश्यकता नहीं, कि मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है।

20 हे भाई, यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से मिले, मसीह में मेरे जी को हरा भरा कर दे।

21 मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर, तुझे लिखता हूँ और यह जानता हूँ, कि जो कुछ मैं कहता हूँ, तू उससे कहीं बढ़कर करेगा।

22 और यह भी, कि मेरे लिये ठहरने की जगह तैयार रख; मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊँगा।

११११११११ ११११११११११११११

23 इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है

24 और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं; इनका तुझे नमस्कार।

25 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन।

‡ 1:18 ११११ १११११ १११११ ११११ १११११ ११ १११: चाहे तुम्हारे पास से भागने के द्वारा, या जिस काम को वह करने के लिए तैयार हुआ था उस काम से मिली असफलता के द्वारा।





विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे।

18 क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुःख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।

### 3

इसलिए, हे पवित्र भाइयों, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।

1 इसलिए, हे पवित्र भाइयों, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।

2 जो अपने नियुक्त करनेवाले के लिये विश्वासयोग्य था, जैसा मूसा भी परमेश्वर के सारे घर में था।

3 क्योंकि यीशु मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है।

4 क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, *इसलिए* *जैसा* *पवित्र* *आत्मा* *कहता है,* *“यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,*

5 मूसा तो परमेश्वर के सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था, उनकी गवाही दे। *(इब्रानियों 12:7)*

6 *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*

*इसलिए* *जैसा* *पवित्र* *आत्मा* *कहता है,*

7 इसलिए जैसा पवित्र आत्मा कहता है, “यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,

8 तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था। *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*

9 जहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे जाँचकर परखा और चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे।

10 इस कारण मैं उस समय के लोगों से क्रोधित रहा, और कहा, ‘इनके मन सदा भटकते रहते हैं, और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना।’

11 तब मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई,

\* 3:4 *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*  
 † 3:6 *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*  
 ‡ 3:14 *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*  
 § 4:1 *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*  
 ¶ परमेश्वर का विश्राम, संसार का विश्राम जहाँ वह निवास करता है। इसे “उसका” विश्राम कहा जाता है, क्योंकि यह वही है जो वह आनन्द लेता है।

‘वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएँगे।’” *(इब्रानियों 14:21-23, 22:22. 1:34,35)*

12 हे भाइयों, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीविते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए।

13 वरन् जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।

14 क्योंकि हम *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*

15 जैसा कहा जाता है, “यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था।”

16 भला किन लोगों ने सुनकर भी क्रोध दिलाया? क्या उन सब ने नहीं जो मूसा के द्वारा मिस्र से निकले थे?

17 और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों से क्रोधित रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने पाप किया, और उनके शव जंगल में पड़े रहे? *(इब्रानियों 14:29)*

18 और उसने किन से शपथ खाई, कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे: केवल उनसे जिन्होंने आज्ञा न मानी? *(इब्रानियों 106:24-26)*

19 इस प्रकार हम देखते हैं, कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके।

### 4

*इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)*

1 इसलिए जबकि *इसलिए* *जबकि* *जिस* *दिन* *तुम* *उसका* *शब्द* *सुनो,* *तो* *अपने* *मन* *को* *कठोर* *न* *करो,* *जैसा* *कि* *क्रोध* *दिलाने* *के* *समय* *और* *परीक्षा* *के* *दिन* *जंगल* *में* *किया* *था।* *(इब्रानियों 17:7, 20:2,5,13)* अब तक है, तो हमें डरना चाहिए; ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन उससे वंचित रह जाए।

2 क्योंकि हमें उन्हीं के समान सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।

3 और हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं; जैसा उसने कहा, “मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएँगे।”



११११११ १११११११११११

11 इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है; इसलिए कि तुम ऊँचा सुनने लगे हो।

12 समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तो भी यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? तुम तो ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।

13 क्योंकि ११११ ११११११११११\* को तो धार्मिकता के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बच्चा है।

14 पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।

## 6

११११११ ११ ११११११११

1 इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने,

2 और बपतिस्मा और हाथ रखने, और मरे हुएओं के जी उठने, और अनन्त न्याय की शिक्षारूपी नींव, फिर से न डालें।

3 और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे।

4 क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं,

5 और ११११११११११ ११ ११११११ ११११ ११ ११ ११११११११११ ११११ ११ ११११११११११ ११ १११११११ ११ १११११११ ११ १११११११ ११\*।

6 यदि वे भटक जाएँ; तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर कूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं।

7 क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती-बोई जाती है, उनके काम का साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है।

\* 5:13 ११११ ११११११११११: बच्चों के भोजन का जिक्र करते हैं जिसका अर्थ है कि वे अन्न को बड़े लोगों की तरह ठोस भोजन ग्रहण करने में सक्षम नहीं हैं। \* 6:5 ११११११११११ ११ ११११११ ११११ ... ११११११ ११ १११११ ११११: यहाँ पर अर्थ है कि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई का महामहिम अनुभव किया था; उन्होंने देखा और उसकी अच्छाई का आनन्द लिया था। † 6:13 ११११११११११ ११ ११११११११११ ११ १११११११११११ १११११ ११११: कि वह उसे आशीष देगा, और उसके वंश को आकाश के तारे के रूप में बढ़ाएगा। (उत्प 22: 16-17) ‡ 6:19 ११ ११११ ११११११ ११११११ ११ १११११ ११११ ११११ ११ ११११११११११ ११ ११११११११११ ११: जो काम लंगर जहाज के लिये करता है वही काम आशा आत्मा के लिये पूरा करती है। यह इसे स्थिर और सुरक्षित बनाता है।

8 पर यदि वह झाड़ी और ऊँटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और श्रापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है। (११११. 15:6)

9 पर हे प्रियों यद्यपि हम ये बातें कहते हैं तो भी तुम्हारे विषय में हम इससे अच्छी और उद्धारवाली बातों का भरोसा करते हैं।

10 क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो।

11 पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे।

12 ताकि तुम आलसी न हो जाओ; वरन् उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

११११११११११ ११११११११११

13 और ११११११११११ ११ १११११११११ ११ ११११११११११११११ ११११११ ११११\* जबकि शपथ खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा,

14 "मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूँगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊँगा।" (११११११. 22:17)

15 और इस रीति से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की।

16 मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं और उनके हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। (११११११. 22:11)

17 इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया।

18 ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। (११११. 23:19, 1 ११११. 15:29)

19 ११ ११११ ११११११ ११११११ ११ १११११ ११११ १११११ ११ ११ ११११११ ११ ११११११ ११‡, और परदे के भीतर तक पहुँचता है। (११११. 23:19, 1 ११११११. 2:13)













वास किया। (22:22. 26:3, 22:22. 35:12, 22:22. 35:27)

10 क्योंकि वह उस स्थिर नींव वाले नगर की प्रतीक्षा करता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।

11 विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ्य पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था। (22:22. 17:19, 22:22. 18:11-14, 22:22. 21:2)

12 इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र तट के रेत के समान, अनगिनत वंश उत्पन्न हुआ। (22:22. 15:5, 22:22. 2:12)

13 ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। (22:22. 23:4, 1 22:22. 29:15)

14 जो ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं।

15 और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उसकी सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था।

16 पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है। (22:22. 3:6, 22:22. 3:15)

17 विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। (22:22. 22:1-10)

18 और जिससे यह कहा गया था, “इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा,” वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। (22:22. 21:12)

19 क्योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि उसे मरे हुआओं में से जिलाए, इस प्रकार उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।

20 विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में आशीष दी। (22:22. 27:27-40)

21 विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों में से एक-एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत् किया। (22:22. 47:31, 22:22. 48:15,16)

22 विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की,

और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी। (22:22. 50:24,25, 22:22. 13:19)

23 विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उसको, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। (22:22. 1:22, 22:22. 2:2)

24 विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। (22:22. 2:11)

25 इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना और भी उत्तम लगा।

26 और 22:22 22 22:22† निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं। (1 22. 4:14, 22:22. 5:12)

27 विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उसने मिस्र को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा। (22:22. 2:15, 22:22. 10:28,29)

28 विश्वास ही से उसने फसह और लहू छिड़कने की विधि मानी, कि पहिलौटों का नाश करनेवाला इस्राएलियों पर हाथ न डाले। (22:22. 12:21-29)

29 विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे। (22:22. 14:21-31)

30 विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी। (22. 106:9-11, 22. 6:12-21)

31 विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न माननेवालों के साथ नाश नहीं हुई; इसलिए कि उसने भेदियों को कुशल से रखा था। (22:22. 2:25, 22:22. 2:11,12, 22:22. 6:21-25)

32 अब और क्या कहूँ? क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का, और बाराक और शिमशोन का, और यिफतह का, और दाऊद का और शमूएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूँ।

33 इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धार्मिकता के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं, सिंहों के मुँह बन्द किए,

34 आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया।

35 स्त्रियों ने अपने मरे हुआओं को फिर जीविते पाया; कितने तो मार खाते-खाते मर गए; और छुटकारा न

† 11:26 22:22 22 22:22: इसका मतलब यह है कि या तो वह अपने विश्वास के लिए निन्दा सहने को तैयार था कि मसीह आएगा।

चाहा; इसलिए कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों।

36 दूसरे लोग तो उपहास में उड़ाए जाने; और कोड़े खाने; वरन् बाँधे जाने; और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए।

37 पथराव किए गए; आरे से चीरे गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुःख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर-उधर मारे-मारे फिरे।

38 और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं में, और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे। संसार उनके योग्य न था।

39 विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तो भी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली।

40 क्योंकि **22:22-23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40**, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचें।

## 12

**12:1-5**

1 इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।

2 और **12:1-5**\* यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुःख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। **(1 2:23,24, 2:13,14)**

**12:6-10**

3 इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।

4 तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा हो।

5 और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो:

“हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़।

‡ **11:40** **22:22-23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40**: कुछ उत्तम बात देने के लिये पहले से ही निर्धारित की हैं अर्थात्, परमेश्वर ने उन्हें जिसका उन्हें किसी को एहसास नहीं था। \* **12:2** **12:1-5**: वह विश्वास का या परमेश्वर में भरोसा का प्रथम और अन्तिम उदाहरण है। † **12:14** **22:22-23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40**: अपनी अभिलाषाओं से संघर्ष और युद्ध की भावना को मानने के बजाय, पवित्र होने के लिये अपना उद्देश्य बनाओ।

6 क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसको अनुशासित भी करता है;

और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको ताड़ना भी देता है।”

7 तुम दुःख को अनुशासन समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? **(22:22. 3:11,12, 22:22. 8:5, 2 22:22. 7:14)**

8 यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!

9 फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें।

10 वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ।

**12:11-15**

11 और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तो भी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धार्मिकता का प्रतिफल मिलता है।

12 इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। **(22:22. 35:3)**

13 और अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लँगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए। **(22:22. 4:26)**

14 सबसे मेल मिलाप रखो, और उस **22:22-23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40**। **(1 2:23, 2:13, 2:14)**

15 और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। **(2 22:22. 1:8, 22:22. 29:18)**

16 ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो, जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहलौटे होने का पद बेच डाला। **(22:22. 3:5, 22:22. 25:31-34)**

17 तुम जानते तो हो, कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आँसू बहा





13 इसलिए, आओ उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चले। (22:22-23 6:22)

14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं।

15 इसलिए हम उसके द्वारा 22:22-23, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। (22: 50:14, 22: 50:23, 22:22 14:2)

16 पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।

22:22-23 22 22:22-23

17 अपने अगुओं की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं। (1 22:22-23. 5:12,13, 22:22-23. 20:28)

18 हमारे लिये प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक शुद्ध है; और हम सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं।

19 प्रार्थना करने के लिये मैं तुम्हें और भी उत्साहित करता हूँ, ताकि मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूँ।

22:22-23 22

20 अब 22:22-23 22:22-23 जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लहू के गुण से मरे हुआओं में से जिलाकर ले आया, (22:22. 10:11, 22:22-23. 2:24, 22:22. 15:33)

21 तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में पूरा करे, उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

22 हे भाइयों मैं तुम से विनती करता हूँ, कि इन उपदेश की बातों को सह लो; क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है।

23 तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूँगा।

24 अपने सब अगुओं और सब पवित्र लोगों को नमस्कार कहो। इतालियावाले तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

25 तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।

† 13:15 22:22-23 22:22-23: पापों से मुक्ति के सभी दया के लिए। ‡ 13:20 22:22-23 22:22-23: “शान्ति” शब्द हर प्रकार की आशीष या प्रसन्नता को दर्शाता है, यह शान्ति उन सभी का विरोध करता है जो मन में परेशानी या मुसीबत डालता है।

## याकूब की पत्री

?????

इस पत्र का लेखक याकूब है (1:1)। वह मसीह यीशु का भाई और यरूशलेम की कलीसिया का एक प्रमुख अगुआ था। याकूब के अतिरिक्त मसीह यीशु के और भी भाई थे। याकूब सम्भवतः सबसे बड़ा था क्योंकि मत्ती 13:55 की सूची में उसका नाम सबसे पहले आता है। आरम्भ में वह यीशु में विश्वास नहीं करता था। उसने उसे चुनौती भी दी थी और उसके सेवाकार्य को गलत समझा था (यूह. 7:2-5)। बाद में वह कलीसिया में एक श्रेष्ठ अगुआ हुआ।

वह उन विशिष्ट वर्गों में था जिन्हें यीशु ने अपने पुनरूत्थान के बाद दर्शन दिया था (1 कुरि. 15:7)। पौलुस उसे कलीसिया का “खम्भा” कहता है (गला. 2:9)।

????? ????? ???? ??????

लगभग ई.स. 40 - 50

सन् 50 की यरूशलेम सभा से और सन् 70 में मन्दिर के ध्वंस होने से पूर्व।

????????

सम्भवतः यहूदिया और सामरिया में तितर-बितर यहूदी जिन्होंने मसीह को ग्रहण कर लिया था तथापि, याकूब के अभिवादन के अनुसार, “उन बारह गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते थे” इन वाक्यों से याकूब के मूल श्रोतागण की प्रबल सम्भावना व्यक्त होती है।

????????????

याकूब का प्रधान उद्देश्य याकू. 1:2-4 से विदित होता है। आरम्भिक शब्दों में याकूब अपने पाठकों से कहता है, “जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।” इससे स्पष्ट होता है कि याकूब का लक्षित समुदाय अनेक प्रकार के कष्टों में था। याकूब ने इस पत्र के प्राप्तिकर्ताओं से आग्रह किया कि वे परमेश्वर से बुद्धि माँगे (1:5) कि परीक्षाओं में भी उन्हें आनन्द प्राप्त हो। याकूब के पत्र के प्राप्तिकर्ताओं में से कुछ विश्वास से भटक गये थे। याकूब ने उन्हें चेतावनी दी कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बैर रखना है (4:4)। याकूब

ने उन्हें परामर्श दिया कि वे दीन बनें जिससे कि परमेश्वर उन्हें प्रतिष्ठित करे। उसकी शिक्षा थी कि परमेश्वर के समक्ष दीन होना बुद्धि का मार्ग है (4:8-10)।

????? ??????

सच्चा विश्वास  
रूपरेखा

1. सच्चे धर्म के विषय याकूब के निर्देश — 1:1-27
2. सच्चा विश्वास भले कामों से प्रकट होता है — 2:1-3:12
3. सच्चा बुद्धि परमेश्वर से प्राप्त होता है — 3:13-5:20

????????????????

1 परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं नमस्कार पहुँचे।

???????????????? ???? ?????????????

2 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो ?????? ?????? ?????????? ?????? ??????\*,  
3 यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।

4 पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

5 पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी।

6 पर विश्वास से माँगे, और कुछ ?????? ?????? ?????? ?????? ?????? ?????? ?????? ?????? जो हवा से बहती और उछलती है।

7 ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा,

8 वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है।

????? ?????? ?????????

9 दीन भाई अपने ऊँचे पद पर घमण्ड करे।

10 और धनवान अपनी नीच दशा पर; क्योंकि वह घास के फूल की तरह मिट जाएगा।

11 क्योंकि सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा देती है, और उसका फूल झड़ जाता है, और उसकी शोभा मिटती जाती है; उसी प्रकार धनवान

\* 1:2 ?????? ?????? ?????????? ?????? ?????? ?????? : इसे आनन्द की एक बात के रूप में समझो, एक ऐसी बात जिससे आपको खुशी मिलनी चाहिए।

† 1:6 ?????????? ?????? ?????? ?????????? ?????????????? ?????????????? ?????? ?????? ?????? ?????? : समुद्र की लहर में कोई स्थिरता नहीं होती है। वह हवा की हर एक दिशा पर निर्भर है, और वह किसी भी तरफ झोंक या फेंक दी जाती है।







समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है। (27:1)

15 इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, “यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे।”

16 पर अब तुम अपनी डींग मारने पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है।

17 इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।

## 5

22:22-23 22 22:22

1 हे धनवानों सुन तो लो; तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला चिल्लाकर रोओ।

2 तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए।

3 तुम्हारे सोने-चाँदी में काई लग गई है; और 22 22:22 22:22 22 22:22 22:22\*, और आग के समान तुम्हारा माँस खा जाएगा: तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है।

4 देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उनकी मजदूरी जो तुम ने उन्हें नहीं दी; चिल्ला रही है, और लवनेवालों की दुहाई, सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुँच गई है। (22:22: 19:13)

5 तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा; तुम ने इस वध के दिन के लिये अपने हृदय का पालन-पोषण करके मोटा ताजा किया।

6 तुम ने धर्मी को दोषी ठहराकर मार डाला; वह तुम्हारा सामना नहीं करता।

22:22 22:22

7 इसलिए हे भाइयों, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, जैसे, किसान पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। (22:22: 11:14)

8 तुम भी 22:22 22:22†, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है।

9 हे भाइयों, एक दूसरे पर दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो, देखो, न्यायाधीश द्वार पर खड़ा है।

10 हे भाइयों, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उन्हें दुःख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो।

11 देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुम ने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है।

12 पर हे मेरे भाइयों, सबसे श्रेष्ठ बात यह है, कि शपथ न खाना; न स्वर्ग की न पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की, पर तुम्हारी बातचीत हाँ की हाँ, और नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो।

22:22-23 22:22 22 22:22

13 यदि तुम में कोई दुःखी हो तो वह प्रार्थना करे; यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए।

14 यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिये प्रार्थना करें।

15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; यदि उसने पाप भी किए हों, तो परमेश्वर उसको क्षमा करेगा।

16 इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

17 22:22-23 22 22 22:22 22:22 22:22-23 22:22 22:22 22; 22 22:22 22:22 22:22 22:22 22:22; कि बारिश न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर बारिश नहीं हुई। (1 22:22: 17:1)

18 फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई। (1 22:22: 18:42-45)

19 हे मेरे भाइयों, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उसको फेर लाए।

20 तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा डालेगा। (22:22: 10:12)

\* 5:3 22 22:22 22:22 22 22:22 22:22: अर्थात्, जंग या मलिनीकरण तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगी कि धन जिस तरह से इस्तेमाल होना चाहिए था उस तरह से इस्तेमाल नहीं किया गया। † 5:8 22:22 22:22: जैसे किसान धीरज रखते हैं। जैसे वह उचित समय में बारिश आने की उम्मीद करते हैं, इस प्रकार आप भी परीक्षणों से छुटकारे की आशा रख सकते हो। ‡ 5:17 22:22 22:22 ... 22:22 22:22 22:22: प्रेरित कहते हैं कि वह अन्य मनुष्यों की तरह एक ही प्रकृतिक झुकाव और निर्बलताओं के साथ वह एकमात्र मनुष्य ही था, और वह इसलिए उनके मामले एक है इसलिए प्रार्थना करने के लिये सभी को प्रोत्साहित करना चाहिए।



उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी।

11 उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दुःखों की और उनके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। (2 [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#))

12 उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।

[1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#)

13 इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है।

14 और आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य न बनो।

15 पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो।

16 क्योंकि लिखा है, “[1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#)” (2 [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#))

17 और जबकि तुम, ‘हे पिता’ कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बित्ताओ। (2 [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#))

18 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो पूर्वजों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, ([49:7-8](#), [1:4](#), [52:3](#))

19 पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।

20 मसीह को जगत की सृष्टि से पहले चुना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ।

21 जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुए में से जिलाया, और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।

22 अतः जबकि तुम ने भाईचारे के निष्कपट प्रेम के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।

23 क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीविते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।

24 क्योंकि “हर एक प्राणी घास के समान है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है: घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है।

25 परन्तु [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#)”

और यह ही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था। ([16:17](#), [1:1](#), [40:8](#))

## 2

[1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#)

1 इसलिए सब प्रकार का बैर-भाव, छल, कपट, डाह और बदनामी को दूर करके,

2 नये जन्मे हुए बच्चों के समान [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#)”, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ,

3 क्योंकि तुम ने प्रभु की भलाई का स्वाद चख लिया है। ([34:8](#))

4 उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीविता पत्थर है।

5 तुम भी आप जीविते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो।

6 इस कारण पवित्रशास्त्र में भी लिखा है, “देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूँ:

और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।” (यशा. 28:16)

7 अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये, “जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया,” ([118:22](#), [2:34,35](#))

8 और,

‡ [1:16](#) [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#): आज्ञा की नींव यह है कि वे परमेश्वर ने कहा कि वे उनके लोगों के रूप में हैं, और क्योंकि वे परमेश्वर की प्रजा हैं इसलिए उन्हें परमेश्वर के जैसे पवित्र बनना चाहिए। § [1:25](#) [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#): संसार की सभी क्रांतियों और प्राकृतिक वस्तुओं की लुप्त होती गौरव और मनुष्यों की नाश होती सामर्थ्य के बीच, परमेश्वर की सच्चाई, बिना किसी प्रभाव के सदा स्थिर रहता है। \* [2:2](#) [1:21](#), [1:22](#), [52:13-14](#), [24:25-27](#): वचन का निर्मल दूध, जो बिना झूठ और चापलूसी के हैं।



“**2:22 2:22 2:22 2:22**”

और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है,”  
क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे। **(1 2:22. 1:23, 2:22. 8:14,15)**

**9** पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। **(2:22. 19:5,6, 2:22. 7:6, 2:22. 14:2, 2:22. 9:2)**

**10** तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है। **(2:22. 1:10, 2:22. 2:23)**

**2:22 2:22 2:22 2:22**

**11** हे प्रियों मैं तुम से विनती करता हूँ कि तुम अपने आपको परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। **(2:22. 5:24, 1 2:22. 4:2)**

**12** अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; इसलिए कि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपादृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें। **(2:22. 5:16, 2:22. 2:7-8)**

**2:22 2:22 2:22 2:22**

**13** प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो, राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान है,

**14** और राज्यपालों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं।

**15** क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो।

**16** **2:22 2:22 2:22 2:22 2:22** पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर चलो।

**17** सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो। **(2:22. 24:21, 2:22. 12:10)**

† **2:16** **2:22 2:22 2:22 2:22**: अर्थात्, वे अपने आपको स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में समझते थे, जैसे स्वतंत्रता का अधिकार हो। ‡ **2:24** **2:22 2:22 2:22 2:22 2:22**: प्रभु यीशु से इस तरह से व्यवहार किया गया जैसे कि वह एक पापी था, ताकि हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया जाए जैसे कि हमने पाप नहीं किया हो जैसे कि हम धर्मी हैं। \* **3:3** **2:22 2:22 2:22 2:22 2:22**: यह उनके लिए

**2:22 2:22 2:22 2:22**

**18** हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी।

**19** क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है।

**20** क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो उसमें क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुःख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।

**21** और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुःख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्ह पर चलो।

**22** न तो उसने पाप किया, और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। **(2:22. 53:9, 2 2:22. 5:21)**

**23** वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। **(2:22. 53:7, 1 2:22. 4:19)**

**24** **2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22 2:22** क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ। उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। **(2:22. 53:4-5,12, 2:22. 3:13)**

**25** क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और चरवाहे के पास फिर लौट आ गए हो। **(2:22. 53:6, 2:22. 34:5-6)**

### 3

**2:22 2:22 2:22 2:22**

**1** हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिए कि यदि इनमें से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों,

**2** तो भी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएँ।

**3** और **2:22 2:22 2:22 2:22 2:22** **2:22**, अर्थात् बाल गूँथने, और सोने के गहने, या भाँति-भाँति के कपड़े पहनना।

4 वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।

5 और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियाँ भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं।

6 जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा मानती थी और उसे स्वामी कहती थी। अतः तुम भी यदि भलाई करो और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उसकी बेटियाँ ठहरोगी।

7

वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।

8

अतः सब के सब एक मन और दयालु और भाईचारे के प्रेम रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो।

9 बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।

10

क्योंकि “जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होठों को छल की बातें करने से रोके रहे।

11 वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके यत्न में रहे।

12 क्योंकि प्रभु की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।”

**34:15,16, 9:31, 15:29**

13

यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है?

14 यदि तुम धार्मिकता के कारण दुःख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उनके डराने से मत डरो, और न घबराओ,

15 पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के

विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ;

16 और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे, जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों।

17 क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुःख उठाने से उत्तम है।

18

इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए; वह शरीर के भाव से तो मारा गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।

19 उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया।

20 जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर कुछ लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए।

21 और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।

22 वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है; और स्वर्गदूतों, अधिकारियों और शक्तियों को उसके अधीन किया गया है। **(1:20,21, 110:1)**

## 4

23

इसलिए जबकि मसीह ने शरीर में होकर दुःख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को हथियार के समान धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुःख उठाया, वह पाप से छूट गया,

2 ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन् परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करो।

3 क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीडा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा में जहाँ तक हमने पहले से समय गँवाया, वही बहुत हुआ।

† 3:7 यह इसलिए किया जाता है क्योंकि यह शरीर मिट्टी के जैसा निर्बल और कमजोर पात्र है जो आसानी से टूट जाता है।

‡ 3:12 वह उनकी प्रार्थनाएँ सुनाता है। क्योंकि परमेश्वर प्रार्थना सुननेवाला है, इसलिए हम उसके पास जाने के लिए और अपनी इच्छाओं को बताने के लिए हर समय स्वतंत्र हैं।

4 इससे वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते, और इसलिए वे बुरा-भला कहते हैं।

5 पर वे उसको जो जीवितों और मरे हुएों का न्याय करने को तैयार हैं, [22222 22222222]\* । (2 [22222]. 4:1)

6 क्योंकि मरे हुएों को भी सुसमाचार इसलिए सुनाया गया, कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हुआ, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।

[2222222222 22 2222222 22 22222 22222]

7 सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिए संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो। ([22222]. 5:8, [22222]. 6:18)

8 सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि [222222 22222 222222 22 22222 22222 22]† । ([22222]. 10:12)

9 बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो।

10 जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।

11 यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग उसी की है। आमीन।

[2222222222 22 2222222 22 22222 22222 222222]

12 हे प्रियों, जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इससे यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है।

13 पर जैसे-जैसे [22222 22 2222222 2222 2222222 22222 22, 2222222 2222]‡, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।

14 फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा की आत्मा, जो परमेश्वर की आत्मा है, तुम पर छाया करती है। ([2222222] 5:11-12)

15 तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए।

\* 4:5 [22222 222222]: अर्थात्, वे यह काम दण्ड से मुक्ति के लिए न करें। वे इस छोटी सी गलती के लिए दोषी हैं और उन्हें इसके लिए परमेश्वर को उत्तर देना होगा। † 4:8 [222222 22222 2222222 22 22222 22222 22]: दूसरों से प्रेम करना कई सारी बुराइयों को उनमें ढोंप देता या छिपा देता है, जिसे आप ध्यान नहीं देंगे। ‡ 4:13 [22222 22 2222222 2222 2222222 22222 22, 2222222 2222]: अर्थात्, एक ही कारण के लिए वह दुःख को सह रहे हैं और दण्डित किए जाते हैं। \* 5:6 [2222222 22 22222]: एक छोटा स्थान या पद लेने के लिए तैयार रहो, इस प्रकार, जैसे वह स्थान आपके लिए है। जो आप से सम्बंधित नहीं है उसके लिए अहंकार मत करो।

16 पर यदि मसीही होने के कारण दुःख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।

17 क्योंकि वह समय आ पहुँचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जबकि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? ([22222222]. 12:24,25, [22222222]. 25:29, [22222]. 9:6)

18 और

“यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?” ([22222222]. 11:31)

19 इसलिए जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।

## 5

[2222222 22 222222222]

1 तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूँ।

2 कि परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगाकर।

3 जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुण्ड के लिये आदर्श बनो।

4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुझाने का नहीं।

[2222222222 22 222222222 22222 22 2222222 22 2222222 22222]

5 हे नवयुवकों, तुम भी वृद्ध पुरुषों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि

“परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।”

6 इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे [22222222] [22 22222]\*, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

7 अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

8 **¶**, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।

9 विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुःख भुगत रहे हैं।

10 अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और **¶**।

11 उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।

**¶**

12 मैंने सिलवानुस के हाथ, जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूँ, संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है, और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो।

13 जो बाबेल में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

14 प्रेम से चुम्बन लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो। तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे।

† 5:8 **¶**: इसका मतलब है कि शैतान के चाल और शक्ति के विरुद्ध हम अपने आपकी रखवाली करें। ‡ 5:10 **¶**: परीक्षाओं के माध्यम से, दुःख की प्रवृत्ति हमें मजबूत बनाने के लिए है।

## पतरस की दूसरी पत्री

११११

इस पत्र का लेखक भी प्रेरित पतरस है 2 पतरस 1:1 और 3:1 में वह इसका स्पष्टीकरण भी करता है और इस पत्र का लेखक यीशु के रूपान्तरण का गवाह होने का दावा करता था (1:16-18)। शुभ सन्देश वृत्तान्तों के अनुसार पतरस उन तीन शिष्यों में एक था जो रूपान्तरण के समय यीशु के साथ थे। (अन्य दो शिष्य, याकूब और यूहन्ना थे।) इस पत्र का लेखक यह भी कहता है कि वह शहीद होनेवाला है (1:14)। यूह. 21:18-19 में यीशु ने भविष्यद्वाणी कर दी थी कि पतरस बन्दी बनाये जाने के बाद शहीद होगा।

११११ ११११ १११ ११११११

लगभग ई.स. 65 - 68

सम्भवतः रोम से लिखा गया था जहाँ प्रेरित अपने अन्तिम दिन गिन रहा था।

११११११

उसके पाठक सम्भवतः वे ही थे जिन्हें उसने प्रथम पत्र लिखा था- उत्तरी एशिया माइनर के विश्वासी।

११११११११

पतरस ने मसीही विश्वास का आधार स्मरण करवाने के लिए यह पत्र लिखा था (1:12-13, 16-21)। और प्रेरितिय परम्परा की पुष्टि हेतु विश्वासियों की भावी पीढ़ी के निर्देशन हेतु भी (1:15)। पतरस ने यह पत्र इसलिए लिखा कि वह जानता था कि समय कम है और परमेश्वर के लोग अनेक संकटों में हैं (1:13-14, 2:1-3)। पतरस ने आगामी झूठे शिक्षकों के विरुद्ध अपने पाठकों को चेतावनी दी थी (2:1-22) क्योंकि वे प्रभु के शीघ्र पुनः आगमन का इन्कार करते थे (3:3-4)।

१११ ११११

झूठे शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1, 2
2. मसीही सद्गुणों का विकास — 1:3-11
3. पतरस के सन्देश का उद्देश्य — 1:12-21
4. झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी — 2:1-22
5. मसीह का पुनः आगमन — 3:1-16
6. उपसंहार — 3:17, 18

\* 1:2 ११११११११ ११ .... ११११११११ ११ ११११११११: अनुग्रह और शान्ति हमारे लिए भरपूर मात्रा में हैं या बहुतायत से हम पर प्रदत्त होने की उम्मीद की जा सकती है, यदि हमें परमेश्वर की और उद्धारकर्ता का सच्चा ज्ञान है। † 1:9 ११ १११११ ११, ११ ११११११११ ११११११ ११: मतलब आँखें बन्द करना, जैसे वह एक जो स्पष्ट नहीं देख सकता और "पास दृष्टिवाला" है।

११११११११११

1 शमौन पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता से हमारे जैसा बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है।

2 ११११११११११ ११ ११ ११११११ ११११११ १११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११ १११११११११ ११ ११११११११\* तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।

११११११११ १११ १११११११

3 क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।

4 जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ।

5 और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ,

6 और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति,

7 और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।

8 क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।

9 क्योंकि जिसमें ये बातें नहीं, ११ १११११ ११, ११ ११११११११ १११११११ ११\*, और अपने पूर्वकाली पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है।

10 इस कारण हे भाइयों, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भाँति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे;

11 वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।

११११ ११ १११११११ १११

12 इसलिए यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है, उसमें बने रहते हो, तो भी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा।

13 और मैं यह अपने लिये उचित समझता हूँ, कि जब तक मैं इस डेरे में हूँ, तब तक तुम्हें सुधि दिलाकर उभारता हूँ।

14 क्योंकि यह जानता हूँ, कि मसीह के वचन के अनुसार मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र आनेवाला है, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझ पर प्रकट किया है।

15 इसलिए मैं ऐसा यत्न करूँगा, कि मेरे संसार से जाने के बाद तुम इन सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको।

**2:13-15**

16 क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था वरन् हमने आप ही उसके प्रताप को देखा था।

17 कि उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।” (2:7, 2:22. 42:1)

18 और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी।

19 और हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा है और तुम यह अच्छा करते हो, कि जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अंधियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।

20 पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।

21 क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

## 2

**2:16-21**

1 जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे और उस प्रभु का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आपको शीघ्र विनाश में डाल देंगे।

\* 2:4 **2:16-21**: यदि परमेश्वर ने उन्हें इतने गम्भीर रूप से दण्ड दिया हों, तो झूठे शिक्षक इससे भागने की आशा नहीं रख सकते।

2 और बहुत सारे उनके समान लुचपन करेंगे, जिनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी। (2:22. 2:24, 2:27. 36:22)

3 और वे लोभ के लिये बातें गढ़कर तुम्हें अपने लाभ का कारण बनाएँगे, और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहले से हो चुकी है, उसके आने में कुछ भी देर नहीं, और उनका विनाश उँघता नहीं।

**2:22-27**

4 क्योंकि जब **2:22-27**, पर नरक में भेजकर अंधेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहे।

5 और प्राचीन युग के संसार को भी न छोड़ा, वरन् भक्तिहीन संसार पर महा जल-प्रलय भेजकर धार्मिकता के प्रचारक नूह समेत आठ व्यक्तियों को बचा लिया; (2:22. 6:5-8, 2:27. 7:23)

6 और सदोम और गमोरा के नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया, कि उन्हें भस्म करके राख में मिला दिया ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये एक दृष्टान्त बनें (2:22. 1:7, 2:27. 19:24)

7 और धर्मी लूत को जो अधर्मियों के अशुद्ध चाल-चलन से बहुत दुःखी था छुटकारा दिया। (2:22. 19:12-15)

8 (क्योंकि वह धर्मी उनके बीच में रहते हुए, और उनके अधर्म के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था)।

9 तो प्रभु के भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है।

10 विशेष करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं वे ढीठ, और हठी हैं, और ऊँचे पदवालों को बुरा-भला कहने से नहीं डरते।

11 तो भी स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में उनसे बड़े हैं, प्रभु के सामने उन्हें बुरा-भला कहकर दोष नहीं लगाते।

**2:22-27**

12 पर ये लोग निबुद्धि पशुओं ही के तुल्य हैं, जो पकड़े जाने और नाश होने के लिये उत्पन्न हुए हैं; और जिन बातों को जानते ही नहीं, उनके विषय में औरों को बुरा-भला कहते हैं, वे अपनी सड़ाहट में आप ही सड़ जाएँगे।

13 औरों का बुरा करने के बदले उन्हीं का बुरा होगा; उन्हें दिन दोपहर सुख-विलास करना भला लगता है;

यह कलंक और दोष है जब वे तुम्हारे साथ खाते पीते हैं, तो अपनी ओर से प्रेम भोज करके भोग-विलास करते हैं।

14 उनकी [22222] [222] [222222222] [222] [222] [222], और वे पाप किए बिना रुक नहीं सकते; वे चंचल मनवालों को फुसला लेते हैं; उनके मन को लोभ करने का अभ्यास हो गया है, वे सन्ताप की सन्तान हैं।

15 वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए हैं, और बओर के पुत्र विलाम के मार्ग पर हो लिए हैं; जिसने अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना; ([222]. 22:5-7)

16 पर उसके अपराध के विषय में उलाहना दिया गया, यहाँ तक कि अबोल गदही ने मनुष्य की बोली से उस भविष्यद्वक्ता को उसके बावलेपन से रोका। ([222]. 22:26-31)

17 ये लोग सूखे कुएँ, और आँधी के उड़ाए हुए बादल हैं, उनके लिये अनन्त अंधकार ठहराया गया है।

[2222] [222222222] [2] [2222]

18 वे व्यर्थ घमण्ड की बातें कर करके लुचपन के कामों के द्वारा, उन लोगों को शारीरिक अभिलाषाओं में फँसा लेते हैं, जो भटके हुआँ में से अभी निकल ही रहे हैं।

19 वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा तो देते हैं, पर आप ही सड़ाहट के दास हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिससे हार गया है, वह उसका दास बन जाता है।

20 और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फँसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है।

21 क्योंकि धार्मिकता के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी।

22 उन पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि कुत्ता अपनी छाँट की ओर और नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है। ([222]. 26:11)

### 3

[22222] [2] [2222] [2] [222]

1 हे प्रियों, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूँ, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ,

2 कि तुम उन बातों को, जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से कही हैं और प्रभु, और उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो, जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी।

3 और यह पहले जान लो, कि अन्तिम दिनों में हँसी-उपहास करनेवाले आएँगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे।

4 और कहेंगे, “उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से पूर्वज सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से था।”

5 वे तो जान बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा से आकाश प्राचीनकाल से विद्यमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है ([222]. 1:6-9)

6 इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूबकर नाश हो गया। ([222]. 7:11-21)

7 पर वर्तमानकाल के आकाश और पृथ्वी [222] [222] [22] [2222222] इसलिए रखे हैं, कि जलाए जाएँ; और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।

8 हे प्रियों, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं। ([22]. 90:4)

9 [222222] [22222] [222222222222] [22] [22222] [2222] [2222] [222222], जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। ([22]. 2:3-4)

10 परन्तु [222222] [22] [22222]: चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़े शोर के साथ जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी और उसके कामों का न्याय होगा।

11 तो जबकि ये सब वस्तुएँ, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए,

12 और परमेश्वर के उस दिन की प्रतीक्षा किस रीति से करनी चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। ([222]. 34:4)

† 2:14 [22222] [222] [2222222222] [222] [222] [22]: “बसा हुआ” यह शब्द गलत अभिलाषा से भरे होने को दर्शाने के लिए उपयोग्य किया है, जिसने उनके मन पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया है। \* 3:7 [222] [222] [22] [222222222]: केवल परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर होना। उन्हें सिर्फ आज्ञा देना है और सभी नष्ट हो जाएँगा। † 3:9 [22222] [22222] [22222222222] [22] [22222] [222] [222] [22222] [22222]: अर्थात्, यह अनुमान नहीं लगाया जाना चाहिए कि वह असफल हो जाएँगा क्योंकि उनकी प्रतिज्ञा पूरी होने में अधिक समय के लिये देर हो गई है। ‡ 3:10 [222222] [22] [2222]: अर्थात्, वह दिन जिसमें वह प्रकट हो जाएँगा, वह उनका दिन कहा जाता है, क्योंकि तब वह सभी के न्यायाधीश के रूप में भव्य और प्रमुख उद्देश्य होगा।

13 पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नये आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। (222. 60:21, 222. 65:17, 222. 66:22, 22222. 21:1,27)

22222 22 22222 222

14 इसलिए, हे प्रियों, जबकि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो।

15 और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है।

16 वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिनमें कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों के समान खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।

17 इसलिए हे प्रियों तुम लोग पहले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं खो न दो।

18 पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।





## 2

११११ १११११ १११११

1 मेरे प्रिय बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह।

2 और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी।

११११११११ ११ ११११११११

3 यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।

4 जो कोई यह कहता है, "मैं उसे जान गया हूँ," और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं।

5 पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच १११११११११ ११ ११११११ ११११११ ११११ ११\*। हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं।

6 जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि वह स्वयं भी वैसे ही चले जैसे यीशु मसीह चलता था।

११११ १११११ १११

7 हे प्रियों, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है।

8 फिर भी मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूँ; और यह तो उसमें और तुम में सच्ची ठहरती है; क्योंकि अंधकार मिटता जा रहा है और सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है।

9 जो कोई यह कहता है, कि मैं ज्योति में हूँ; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अंधकार ही में है।

10 जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता।

11 पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अंधकार में है, और १११११११ ११११ १११११ १११; और नहीं जानता, कि कहाँ जाता है, क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखें अंधी कर दी हैं।

११११११ ११११११ ११ १११११

12 हे बालकों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। (११. 25:11)

\* 2:5 १११११११११ ११ ११११११ ११११११ ११११ ११: यदि सच्चा प्रेम हृदय में है, तो यह जीवन में हमारे साथ चलेगा या यह कि प्रेम और आज्ञाकारिता उसी का भाग है। † 2:11 १११११११ ११११ १११११ १११: वह उनके जैसा है जो अंधकार में चलता है, और वह जो साफ तौर पर कोई आपत्ति नहीं देखता।

13 हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है: हे बालकों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो।

14 हे पिताओं, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो। हे जवानों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि तुम बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है।

११११११ ११ १११११ ११११ १११११११११

15 तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है।

16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। (११११. 13:14, ११११११. 27:20)

17 संसार और उसकी अभिलाषाएँ दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।

११११११११ ११११ ११ १११११

18 हे लडकों, यह अन्तिम समय है, और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इससे हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है।

19 वे निकले तो हम में से ही, परन्तु हम में से न थे; क्योंकि यदि वे हम में से होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिए गए ताकि यह प्रगट हो कि वे सब हम में से नहीं हैं।

20 और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब सत्य जानते हो।

21 मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिए, कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं।

22 झूठा कौन है? वह, जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है।

23 जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं: जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है।

24 जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे; जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे।

????? ???? ?? ?????????

25 और जिसकी उसने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है।

26 मैंने ये बातें तुम्हें उनके विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं।

27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो। (???? 14:26)

????????? ?? ????????

28 अतः हे बालकों, उसमें बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें साहस हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।

29 यदि तुम जानते हो, कि वह धर्मी है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धार्मिकता का काम करता है, वह उससे जन्मा है।

### 3

1 देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।

2 हे प्रियों, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब यीशु मसीह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि हम उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

???? ?? ?????????? ?? ????????

4 जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।

5 और तुम जानते हो, कि यीशु मसीह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसमें कोई पाप नहीं। (यूह. 1:29)

6 जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उसको जाना है।

7 प्रिय बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धार्मिकता का काम करता है, वही उसके समान धर्मी है।

8 जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

9 जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।

10 इसी से परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धार्मिकता नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।

????????? ???? ?? ???? ??

11 क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।

12 और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई की हत्या की। और उसकी हत्या किस कारण की? इसलिए कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धार्मिक थे। (???? 38: 20)

13 हे भाइयों, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना।

14 हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है।

15 जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।

16 हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।

17 पर जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को जरूरत में देखकर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? (???? 15:7,8)

18 हे मेरे प्रिय बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

????????????? ?? ?????????? ??????

19 इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उस विषय में हम उसके सामने अपने मन को आश्वस्त कर सकेंगे।



20 यदि कोई कहे, “मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ,” और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।

21 और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।

## 5

1 **1:1-2**

1 **1:1-2** और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है।

2 जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम यह जान लेते हैं, कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं।

3 क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएँ बोझदायक नहीं। **(1:10-11:30)**

4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।

5 संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिसका विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।

6 **1:12-13**

6 यह वही है, जो पानी और लहू के द्वारा आया था; अर्थात् यीशु मसीह: वह न केवल पानी के द्वारा, वरन् पानी और लहू दोनों के द्वारा आया था।

7 और यह आत्मा है जो गवाही देता है, क्योंकि आत्मा सत्य है।

8 और गवाही देनेवाले तीन हैं; आत्मा, पानी, और लहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं।

9 जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उससे बढ़कर है; और **1:14-15** यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है।

10 जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, उसने उसे झूठा ठहराया; क्योंकि

उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।

11 **1:16-17**

11 और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है।

12 जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।

13 मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

14 **1:18-19**

14 और हमें उसके सामने जो साहस होता है, वह यह है; कि **1:18-19** तो हमारी सुनता है।

15 और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम माँगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे माँगा, वह पाया है।

16 यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु न हो, तो विनती करे, और परमेश्वर उसे उनके लिये, जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन देगा। पाप ऐसा भी होता है जिसका फल मृत्यु है इसके विषय में मैं विनती करने के लिये नहीं कहता।

17 सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिसका फल मृत्यु नहीं।

18 **1:20-21**

18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

19 हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।

20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं। सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

21 हे बालकों, अपने आपको मूरतों से बचाए रखो।

\* 5:1 **1:1-2** यह संदर्भित करता है कि “यीशु ही मसीह हैं” विश्वास या सच्चाई से ग्रहण और उचित अर्थों में करना चाहिए, प्रमाण प्रस्तुत करने के क्रम में कि कोई भी परमेश्वर से जन्मा है। † 5:9 **1:14-15** बहुत अधिक विश्वासयोग्य हैं; परमेश्वर मनुष्यों की तुलना में अधिक सत्य और बुद्धिमान और अच्छा है। ‡ 5:14 **1:14-15** यह सभी प्रार्थना में उचित और आवश्यक सीमित हैं, परमेश्वर ने ऐसा कुछ भी देने की प्रतिज्ञा उसकी इच्छा के विपरीत नहीं किया है।

## यूहन्ना की दूसरी पत्री

22222

इस पत्र का लेखक प्रेरित यूहन्ना है। 2 यूहन्ना में वह स्वयं को एक “प्राचीन” कहता है। इस पत्र का शीर्षक “यूहन्ना का दूसरा पत्र” है। यह पत्र तीन की श्रृंखला में दूसरा है जो यूहन्ना के नाम से है। इस दूसरे पत्र का लक्ष्य वे झूठे शिक्षक हैं जो यूहन्ना की कलीसियाओं में भ्रमण करते हुए प्रचार कर रहे थे। उनका लक्ष्य था अपने अनुयायी बनाकर अपने उद्देश्य के निमित्त मसीही अतिथि-सत्कार का अनुचित लाभ उठाएँ।

22222 22222 2222 222222

लगभग ई.स. 85 - 95  
लेखन स्थान सम्भवतः इफिसुस था।

22222222

यह पत्र जिस कलीसिया को लिखा गया था उसे यूहन्ना “चुनी हुई महिला और उसके बच्चों के नाम” कहता है।

2222222222

यूहन्ना ने यह पत्र लिखकर “उस महिला एवं उसके बच्चों” के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाई है और उसे प्रोत्साहित किया है कि प्रेम में रहते हुए वे प्रभु की आज्ञाओं को मानें। वह उन्हें झूठे शिक्षकों से सावधान करता है और उन्हें बताता है कि वह अति शीघ्र उनसे भेंट करेगा। यूहन्ना उसकी “बहन” को भी नमस्कार कहता है।

2222 22222

विश्वासियों का विवेक  
रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1-3
2. प्रेम में सत्य का निर्वाहन करना — 1:4-11
3. अन्तिम नमस्कार — 1:12,13

2222222222 22 22 22 22222 22222 22  
2222222222

1 मुझे प्राचीन की ओर से उस चुनी हुई महिला और उसके बच्चों के नाम जिनसे मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ, और केवल मैं ही नहीं, वरन् वह सब भी प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं।

2 वह सत्य 22 22 2222 222222 22222 22\*, और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगा;

\* 1:2 22 22 2222 222222 22222 22: सुसमाचार की सच्चाई जिसे हमने अपना लिया है। सत्य कहा जा सकता है कि विश्वास रखनेवालों के हृदय में एक स्थायी निवास के लिये ले लिया गया है। † 1:9 22222 2222 2222222222 22222: उसके पास परमेश्वर के सत्य का ज्ञान या मसीह के सम्मानीय सत्य की शिक्षा नहीं हैं।

3 परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया, और शान्ति हमारे साथ सत्य और प्रेम सहित रहेंगे।

22222 22 2222222222 2222 22222

4 मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैंने तेरे कुछ बच्चों को उस आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी, सत्य पर चलते हुए पाया।

5 अब हे महिला, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूँ; और तुझ से विनती करता हूँ, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।

6 और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वही आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।

22222 22222222 22 22222 22 22222222

7 क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया; भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है।

8 अपने विषय में चौकस रहो; कि जो परिश्रम हम सब ने किया है, उसको तुम न खोना, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ।

9 जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, 22222 2222 22222222222 22222†। जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।

10 यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो।

11 क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में सहभागी होता है।

22222222 2222222222

12 मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और स्याही से लिखना नहीं चाहता; पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊँ, और सम्मुख होकर बातचीत करूँ: जिससे हमारा आनन्द पूरा हो। (1 2222. 1:4, 3 2222. 1:13)

13 तेरी चुनी हुई बहन के बच्चे तुझे नमस्कार करते हैं।



15 तुझे शान्ति मिलती रहे। यहाँ के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं वहाँ के मित्रों के नाम ले लेकर नमस्कार कह देना। **(2 १११. 1:12)**





के समान स्वभाव ही से जानते हैं, उनमें अपने आपको नाश करते हैं।

11 उन पर हाय! कि वे कैन के समान चाल चले, और मजदूरी के लिये बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं और कोरह के समान विरोध करके नाश हुए हैं। (2:12-14, 4:3-8, 16:19-35, 22:7, 2:15, 1 2:12, 3:12, 24:12-14)

12 यह तुम्हारे प्रेम-भोजों में तुम्हारे साथ खाते-पीते, समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं, और बेधड़क अपना ही पेट भरनेवाले रखवाले हैं; वे निर्जल बादल हैं; जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है; पतझड़ के निष्फल पेड़ हैं, जो दो बार मर चुके हैं; और जड़ से उखड़ गए हैं; (2:17, 4:14, 15:4-6)

13 ये समुद्र के प्रचण्ड हिलकोरे हैं, जो अपनी लज्जा का फेन उछालते हैं। ये डाँवाडोल तारे हैं, जिनके लिये सदाकाल तक घोर अंधकार रखा गया है। (57:20)

14 और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इनके विषय में यह भविष्यद्वाणी की, “देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया। (33:2, 2:1:7,8)

15 कि सब का न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के सब कामों के विषय में जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किए हैं, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही हैं, दोषी ठहराए।”

16 ये तो असंतुष्ट, कुड़कुड़ानेवाले, और अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलनेवाले हैं; और अपने मुँह से घमण्ड की बातें बोलते हैं; और वे लाभ के लिये मुँह देखी बड़ाई किया करते हैं।

21 22 23 24 25

17 पर हे प्रियों, तुम उन बातों को स्मरण रखो; जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहले कह चुके हैं।

18 वे तुम से कहा करते थे, “पिछले दिनों में ऐसे उपहास करनेवाले होंगे, जो अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे।”

19 ये तो वे हैं, जो फूट डालते हैं; ये शारीरिक लोग हैं, जिनमें आत्मा नहीं।

20 पर हे प्रियों तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए,

21 अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो।

22 और उन पर जो शंका में हैं दया करो।

23 और बहुतों को आग में से झपटकर निकालो, और बहुतों पर भय के साथ दया करो; वरन् उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है।

24 अब 25

24 अब 25, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है।

25 उस एकमात्र परमेश्वर के लिए, हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, गौरव, पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।

‡ 1:24 22 23 24 25: “ठोकर खाने से बचा सकता है” इस वाक्यांश का अर्थ है पाप में गिरने से रक्षा करना, प्रलोभन में फँसने से बचना।



9 मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई, और यीशु के क्लेश, और राज्य, और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूँ, परमेश्वर के वचन, और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था।

10 **2:1-2**, **2:3-4**, **2:5-6**, **2:7-8**, **2:9-10**, **2:11-12**, **2:13-14**, **2:15-16**, **2:17-18**, **2:19-20**, **2:21-22**, **2:23-24**, **2:25-26**, **2:27-28**, **2:29-30**, **2:31-32**, **2:33-34**, **2:35-36**, **2:37-38**, **2:39-40**, **2:41-42**, **2:43-44**, **2:45-46**, **2:47-48**, **2:49-50**, **2:51-52**, **2:53-54**, **2:55-56**, **2:57-58**, **2:59-60**, **2:61-62**, **2:63-64**, **2:65-66**, **2:67-68**, **2:69-70**, **2:71-72**, **2:73-74**, **2:75-76**, **2:77-78**, **2:79-80**, **2:81-82**, **2:83-84**, **2:85-86**, **2:87-88**, **2:89-90**, **2:91-92**, **2:93-94**, **2:95-96**, **2:97-98**, **2:99-100**, **2:101-102**, **2:103-104**, **2:105-106**, **2:107-108**, **2:109-110**, **2:111-112**, **2:113-114**, **2:115-116**, **2:117-118**, **2:119-120**, **2:121-122**, **2:123-124**, **2:125-126**, **2:127-128**, **2:129-130**, **2:131-132**, **2:133-134**, **2:135-136**, **2:137-138**, **2:139-140**, **2:141-142**, **2:143-144**, **2:145-146**, **2:147-148**, **2:149-150**, **2:151-152**, **2:153-154**, **2:155-156**, **2:157-158**, **2:159-160**, **2:161-162**, **2:163-164**, **2:165-166**, **2:167-168**, **2:169-170**, **2:171-172**, **2:173-174**, **2:175-176**, **2:177-178**, **2:179-180**, **2:181-182**, **2:183-184**, **2:185-186**, **2:187-188**, **2:189-190**, **2:191-192**, **2:193-194**, **2:195-196**, **2:197-198**, **2:199-200**, **2:201-202**, **2:203-204**, **2:205-206**, **2:207-208**, **2:209-210**, **2:211-212**, **2:213-214**, **2:215-216**, **2:217-218**, **2:219-220**, **2:221-222**, **2:223-224**, **2:225-226**, **2:227-228**, **2:229-230**, **2:231-232**, **2:233-234**, **2:235-236**, **2:237-238**, **2:239-240**, **2:241-242**, **2:243-244**, **2:245-246**, **2:247-248**, **2:249-250**, **2:251-252**, **2:253-254**, **2:255-256**, **2:257-258**, **2:259-260**, **2:261-262**, **2:263-264**, **2:265-266**, **2:267-268**, **2:269-270**, **2:271-272**, **2:273-274**, **2:275-276**, **2:277-278**, **2:279-280**, **2:281-282**, **2:283-284**, **2:285-286**, **2:287-288**, **2:289-290**, **2:291-292**, **2:293-294**, **2:295-296**, **2:297-298**, **2:299-300**, **2:301-302**, **2:303-304**, **2:305-306**, **2:307-308**, **2:309-310**, **2:311-312**, **2:313-314**, **2:315-316**, **2:317-318**, **2:319-320**, **2:321-322**, **2:323-324**, **2:325-326**, **2:327-328**, **2:329-330**, **2:331-332**, **2:333-334**, **2:335-336**, **2:337-338**, **2:339-340**, **2:341-342**, **2:343-344**, **2:345-346**, **2:347-348**, **2:349-350**, **2:351-352**, **2:353-354**, **2:355-356**, **2:357-358**, **2:359-360**, **2:361-362**, **2:363-364**, **2:365-366**, **2:367-368**, **2:369-370**, **2:371-372**, **2:373-374**, **2:375-376**, **2:377-378**, **2:379-380**, **2:381-382**, **2:383-384**, **2:385-386**, **2:387-388**, **2:389-390**, **2:391-392**, **2:393-394**, **2:395-396**, **2:397-398**, **2:399-400**, **2:401-402**, **2:403-404**, **2:405-406**, **2:407-408**, **2:409-410**, **2:411-412**, **2:413-414**, **2:415-416**, **2:417-418**, **2:419-420**, **2:421-422**, **2:423-424**, **2:425-426**, **2:427-428**, **2:429-430**, **2:431-432**, **2:433-434**, **2:435-436**, **2:437-438**, **2:439-440**, **2:441-442**, **2:443-444**, **2:445-446**, **2:447-448**, **2:449-450**, **2:451-452**, **2:453-454**, **2:455-456**, **2:457-458**, **2:459-460**, **2:461-462**, **2:463-464**, **2:465-466**, **2:467-468**, **2:469-470**, **2:471-472**, **2:473-474**, **2:475-476**, **2:477-478**, **2:479-480**, **2:481-482**, **2:483-484**, **2:485-486**, **2:487-488**, **2:489-490**, **2:491-492**, **2:493-494**, **2:495-496**, **2:497-498**, **2:499-500**, **2:501-502**, **2:503-504**, **2:505-506**, **2:507-508**, **2:509-510**, **2:511-512**, **2:513-514**, **2:515-516**, **2:517-518**, **2:519-520**, **2:521-522**, **2:523-524**, **2:525-526**, **2:527-528**, **2:529-530**, **2:531-532**, **2:533-534**, **2:535-536**, **2:537-538**, **2:539-540**, **2:541-542**, **2:543-544**, **2:545-546**, **2:547-548**, **2:549-550**, **2:551-552**, **2:553-554**, **2:555-556**, **2:557-558**, **2:559-560**, **2:561-562**, **2:563-564**, **2:565-566**, **2:567-568**, **2:569-570**, **2:571-572**, **2:573-574**, **2:575-576**, **2:577-578**, **2:579-580**, **2:581-582**, **2:583-584**, **2:585-586**, **2:587-588**, **2:589-590**, **2:591-592**, **2:593-594**, **2:595-596**, **2:597-598**, **2:599-600**, **2:601-602**, **2:603-604**, **2:605-606**, **2:607-608**, **2:609-610**, **2:611-612**, **2:613-614**, **2:615-616**, **2:617-618**, **2:619-620**, **2:621-622**, **2:623-624**, **2:625-626**, **2:627-628**, **2:629-630**, **2:631-632**, **2:633-634**, **2:635-636**, **2:637-638**, **2:639-640**, **2:641-642**, **2:643-644**, **2:645-646**, **2:647-648**, **2:649-650**, **2:651-652**, **2:653-654**, **2:655-656**, **2:657-658**, **2:659-660**, **2:661-662**, **2:663-664**, **2:665-666**, **2:667-668**, **2:669-670**, **2:671-672**, **2:673-674**, **2:675-676**, **2:677-678**, **2:679-680**, **2:681-682**, **2:683-684**, **2:685-686**, **2:687-688**, **2:689-690**, **2:691-692**, **2:693-694**, **2:695-696**, **2:697-698**, **2:699-700**, **2:701-702**, **2:703-704**, **2:705-706**, **2:707-708**, **2:709-710**, **2:711-712**, **2:713-714**, **2:715-716**, **2:717-718**, **2:719-720**, **2:721-722**, **2:723-724**, **2:725-726**, **2:727-728**, **2:729-730**, **2:731-732**, **2:733-734**, **2:735-736**, **2:737-738**, **2:739-740**, **2:741-742**, **2:743-744**, **2:745-746**, **2:747-748**, **2:749-750**, **2:751-752**, **2:753-754**, **2:755-756**, **2:757-758**, **2:759-760**, **2:761-762**, **2:763-764**, **2:765-766**, **2:767-768**, **2:769-770**, **2:771-772**, **2:773-774**, **2:775-776**, **2:777-778**, **2:779-780**, **2:781-782**, **2:783-784**, **2:785-786**, **2:787-788**, **2:789-790**, **2:791-792**, **2:793-794**, **2:795-796**, **2:797-798**, **2:799-800**, **2:801-802**, **2:803-804**, **2:805-806**, **2:807-808**, **2:809-810**, **2:811-812**, **2:813-814**, **2:815-816**, **2:817-818**, **2:819-820**, **2:821-822**, **2:823-824**, **2:825-826**, **2:827-828**, **2:829-830**, **2:831-832**, **2:833-834**, **2:835-836**, **2:837-838**, **2:839-840**, **2:841-842**, **2:843-844**, **2:845-846**, **2:847-848**, **2:849-850**, **2:851-852**, **2:853-854**, **2:855-856**, **2:857-858**, **2:859-860**, **2:861-862**, **2:863-864**, **2:865-866**, **2:867-868**, **2:869-870**, **2:871-872**, **2:873-874**, **2:875-876**, **2:877-878**, **2:879-880**, **2:881-882**, **2:883-884**, **2:885-886**, **2:887-888**, **2:889-890**, **2:891-892**, **2:893-894**, **2:895-896**, **2:897-898**, **2:899-900**, **2:901-902**, **2:903-904**, **2:905-906**, **2:907-908**, **2:909-910**, **2:911-912**, **2:913-914**, **2:915-916**, **2:917-918**, **2:919-920**, **2:921-922**, **2:923-924**, **2:925-926**, **2:927-928**, **2:929-930**, **2:931-932**, **2:933-934**, **2:935-936**, **2:937-938**, **2:939-940**, **2:941-942**, **2:943-944**, **2:945-946**, **2:947-948**, **2:949-950**, **2:951-952**, **2:953-954**, **2:955-956**, **2:957-958**, **2:959-960**, **2:961-962**, **2:963-964**, **2:965-966**, **2:967-968**, **2:969-970**, **2:971-972**, **2:973-974**, **2:975-976**, **2:977-978**, **2:979-980**, **2:981-982**, **2:983-984**, **2:985-986**, **2:987-988**, **2:989-990**, **2:991-992**, **2:993-994**, **2:995-996**, **2:997-998**, **2:999-1000**, **2:1001-1002**, **2:1003-1004**, **2:1005-1006**, **2:1007-1008**, **2:1009-1010**, **2:1011-1012**, **2:1013-1014**, **2:1015-1016**, **2:1017-1018**, **2:1019-1020**, **2:1021-1022**, **2:1023-1024**, **2:1025-1026**, **2:1027-1028**, **2:1029-1030**, **2:1031-1032**, **2:1033-1034**, **2:1035-1036**, **2:1037-1038**, **2:1039-1040**, **2:1041-1042**, **2:1043-1044**, **2:1045-1046**, **2:1047-1048**, **2:1049-1050**, **2:1051-1052**, **2:1053-1054**, **2:1055-1056**, **2:1057-1058**, **2:1059-1060**, **2:1061-1062**, **2:1063-1064**, **2:1065-1066**, **2:1067-1068**, **2:1069-1070**, **2:1071-1072**, **2:1073-1074**, **2:1075-1076**, **2:1077-1078**, **2:1079-1080**, **2:1081-1082**, **2:1083-1084**, **2:1085-1086**, **2:1087-1088**, **2:1089-1090**, **2:1091-1092**, **2:1093-1094**, **2:1095-1096**, **2:1097-1098**, **2:1099-1100**, **2:1101-1102**, **2:1103-1104**, **2:1105-1106**, **2:1107-1108**, **2:1109-1110**, **2:1111-1112**, **2:1113-1114**, **2:1115-1116**, **2:1117-1118**, **2:1119-1120**, **2:1121-1122**, **2:1123-1124**, **2:1125-1126**, **2:1127-1128**, **2:1129-1130**, **2:1131-1132**, **2:1133-1134**, **2:1135-1136**, **2:1137-1138**, **2:1139-1140**, **2:1141-1142**, **2:1143-1144**, **2:1145-1146**, **2:1147-1148**, **2:1149-1150**, **2:1151-1152**, **2:1153-1154**, **2:1155-1156**, **2:1157-1158**, **2:1159-1160**, **2:1161-1162**, **2:1163-1164**, **2:1165-1166**, **2:1167-1168**, **2:1169-1170**, **2:1171-1172**, **2:1173-1174**, **2:1175-1176**, **2:1177-1178**, **2:1179-1180**, **2:1181-1182**, **2:1183-1184**, **2:1185-1186**, **2:1187-1188**, **2:1189-1190**, **2:1191-1192**, **2:1193-1194**, **2:1195-1196**, **2:1197-1198**, **2:1199-1200**, **2:1201-1202**, **2:1203-1204**, **2:1205-1206**, **2:1207-1208**, **2:1209-1210**, **2:1211-1212**, **2:1213-1214**, **2:1215-1216**, **2:1217-1218**, **2:1219-1220**, **2:1221-1222**, **2:1223-1224**, **2:1225-1226**, **2:1227-1228**, **2:1229-1230**, **2:1231-1232**, **2:1233-1234**, **2:1235-1236**, **2:1237-1238**, **2:1239-1240**, **2:1241-1242**, **2:1243-1244**, **2:1245-1246**, **2:1247-1248**, **2:1249-1250**, **2:1251-1252**, **2:1253-1254**, **2:1255-1256**, **2:1257-1258**, **2:1259-1260**, **2:1261-1262**, **2:1263-1264**, **2:1265-1266**, **2:1267-1268**, **2:1269-1270**, **2:1271-1272**, **2:1273-1274**, **2:1275-1276**, **2:1277-1278**, **2:1279-1280**, **2:1281-1282**, **2:1283-1284**, **2:1285-1286**, **2:1287-1288**, **2:1289-1290**, **2:1291-1292**, **2:1293-1294**, **2:1295-1296**, **2:1297-1298**, **2:1299-1300**, **2:1301-1302**, **2:1303-1304**, **2:1305-1306**, **2:1307-1308**, **2:1309-1310**, **2:1311-1312**, **2:1313-1314**, **2:1315-1316**, **2:1317-1318**, **2:1319-1320**, **2:1321-1322**, **2:1323-1324**, **2:1325-1326**, **2:1327-1328**, **2:1329-1330**, **2:1331-1332**, **2:1333-1334**, **2:1335-1336**, **2:1337-1338**, **2:1339-1340**, **2:1341-1342**, **2:1343-1344**, **2:1345-1346**, **2:1347-1348**, **2:1349-1350**, **2:1351-1352**, **2:1353-1354**, **2:1355-1356**, **2:1357-1358**, **2:1359-1360**, **2:1361-1362**, **2:1363-1364**, **2:1365-1366**, **2:1367-1368**, **2:1369-1370**, **2:1371-1372**, **2:1373-1374**, **2:1375-1376**, **2:1377-1378**, **2:1379-1380**, **2:1381-1382**, **2:1383-1384**, **2:1385-1386**, **2:1387-1388**, **2:1389-1390**, **2:1391-1392**, **2:1393-1394**, **2:1395-1396**, **2:1397-1398**, **2:1399-1400**, **2:1401-1402**, **2:1403-1404**, **2:1405-1406**, **2:1407-1408**, **2:1409-1410**, **2:1411-1412**, **2:1413-1414**, **2:1415-1416**, **2:1417-1418**, **2:1419-1420**, **2:1421-1422**, **2:1423-1424**, **2:1425-1426**, **2:1427-1428**, **2:1429-1430**, **2:1431-1432**, **2:1433-1434**, **2:1435-1436**, **2:1437-1438**, **2:1439-1440**, **2:1441-1442**, **2:1443-1444**, **2:1445-1446**, **2:1447-1448**, **2:1449-1450**, **2:1451-1452**, **2:1453-1454**, **2:1455-1456**, **2:1457-1458**, **2:1459-1460**, **2:1461-1462**, **2:1463-1464**, **2:1465-1466**, **2:1467-1468**, **2:1469-1470**, **2:1471-1472**, **2:1473-1474**, **2:1475-1476**, **2:1477-1478**, **2:1479-1480**, **2:1481-1482**, **2:1483-1484**, **2:1485-1486**, **2:1487-1488**, **2:1489-1490**, **2:1491-1492**, **2:1493-1494**, **2:1495-1496**, **2:1497-1498**, **2:1499-1500**, **2:1501-1502**, **2:1503-1504**, **2:1505-1506**, **2:1507-1508**, **2:1509-1510**, **2:1511-1512**, **2:1513-1514**, **2:1515-1516**, **2:1517-1518**, **2:1519-1520**, **2:1521-1522**, **2:1523-1524**, **2:1525-1526**, **2:1527-1528**, **2:1529-1530**, **2:1531-1532**, **2:1533-1534**, **2:1535-1536**, **2:1537-1538**, **2:1539-1540**, **2:1541-1542**, **2:1543-1544**, **2:1545-1546**, **2:1547-1548**, **2:1549-1550**, **2:1551-1552**, **2:1553-1554**, **2:1555-1556**

क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासयोग्य रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा। (2:12)

11 जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, उसको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।

2:12 - 2:13

12 “पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:

“जिसके पास तेज दोधारी तलवार है, वह यह कहता है:

13 “मैं यह तो जानता हूँ, कि तू वहाँ रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्थिर रहता है; और मुझ पर विश्वास करने से उन दिनों में भी पीछे नहीं हटा जिनमें मेरा विश्वासयोग्य साक्षी अन्तिपास, तुम्हारे बीच उस स्थान पर मारा गया जहाँ शैतान रहता है।

14 पर मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तेरे यहाँ कुछ तो ऐसे हैं, जो 2:13 को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया, कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई गई वस्तुएँ खाएँ, और व्यभिचार करें। (2:15, 2:16)

15 वैसे ही तेरे यहाँ कुछ तो ऐसे हैं, जो नीकुलडियों की शिक्षा को मानते हैं।

16 अतः मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा। (2:5)

17 जिसके कान हों, वह सुन ले कि पवित्र आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पानेवाले के सिवाय और कोई न जानेगा। (2:7)

2:17 - 2:18

18 “थुआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:

“परमेश्वर का पुत्र जिसकी आँखें आग की ज्वाला के समान, और जिसके पाँव उत्तम पीतल के समान हैं, वह यह कहता है: (10:6)

19 मैं तेरे कामों, और प्रेम, और विश्वास, और सेवा, और धीरज को जानता हूँ, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहले से बढ़कर हैं।

20 पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है, कि तू उस स्त्री ईजेबेल को रहने देता है जो अपने आपको भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने, और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएँ खाना सिखाकर भरमाती है। (2:14)

21 मैंने उसको मन फिराने के लिये अवसर दिया, पर वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती।

22 देख, मैं उसे रोगशैय्या पर डालता हूँ; और जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं यदि वे भी उसके से कामों से मन न फिराएँगे तो उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा।

23 मैं उसके बच्चों को मार डालूँगा; और तब सब कलीसियाएँ जान लेंगी कि हृदय और मन का परखनेवाला मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूँगा। (7:9)

24 पर तुम थुआतीरा के बाकी लोगों से, जितने इस शिक्षा को नहीं मानते, और उन बातों को जिन्हें 2:13 नहीं जानते, यह कहता हूँ, कि मैं तुम पर और बोझ न डालूँगा।

25 पर हाँ, जो तुम्हारे पास है उसको मेरे आने तक थामे रहो।

26 जो जय पाए, और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति-जाति के लोगों पर अधिकार दूँगा।

27 और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं: मैंने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है।

28 और मैं उसे भोर का तारा दूँगा।

29 जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

### 3

2:18 - 2:19

1 “सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख:

“जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ और सात तारे हैं, यह कहता है कि मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ।

2 जागृत हो, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं, और जो मिटने को हैं, उन्हें दृढ़ कर; क्योंकि मैंने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया।

‡ 2:14 2:17 2:18: अर्थात् वही शिक्षाएँ बिलाम ने दी थी अतः वे बिलाम के साथ रखने योग्य थे। § 2:24 2:17 2:18: शैतान की रहस्यमय युक्ति और योजना। गहरी बातें जो उन लोगों की दृष्टि से छिपी हैं – वे बातों जो अब तक प्रकट नहीं हुई हैं।





ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ हैं। (222222. 5:14, 222222. 19:4)

9 और वे यह नया गीत गाने लगे,  
“तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य  
हूँ;

क्योंकि तूने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और  
भाषा, और लोग, और जाति में से  
परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। (222222.  
5:12)

10 “और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और  
याजक बनाया;  
और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।” (222222. 1:6)

222222222222 222222 222222 22  
22222222

11 जब मैंने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों  
और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का  
शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी।  
(222222. 7:10)

12 और वे ऊँचे शब्द से कहते थे, “वध किया हुआ  
मेम्ना ही सामर्थ्य, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और  
आदर, और महिमा, और 22222222 22 222222 22†।”  
(222222. 5:9)

13 फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के  
नीचे, और समुद्र की सब रची हुई वस्तुओं को, और सब  
कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना, “जो सिंहासन पर  
बैठा है, उसकी, और मेम्ने की स्तुति, और आदर, और  
महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।”

14 और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों  
ने गिरकर दण्डवत् किया।

## 6

222222 22222—22222 222222 22 22222

1 फिर मैंने देखा कि 2222222 22 22 2222  
2222222 2222 22 22 22 22222\*<sup>†</sup>; और उन चारों  
प्राणियों में से एक का गर्जन के समान शब्द सुना, “आ।”

2 मैंने दृष्टि की, और एक श्वेत घोड़ा है, और उसका  
सवार धनुष लिए हुए है: और उसे एक मुकुट दिया गया,  
और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त  
करे।

222222 22222—222222

3 जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो मैंने दूसरे प्राणी  
को यह कहते सुना, “आ।”

4 फिर एक और घोड़ा निकला, जो लाल रंग का था;  
उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर  
से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे का वध करें; और  
उसे एक बड़ी तलवार दी गई।

222222 22222—22222

5 जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे प्राणी  
को यह कहते सुना, “आ।” और मैंने दृष्टि की, और एक  
काला घोड़ा है; और उसके सवार के हाथ में एक तराजू  
है। (222. 6:2,3 222. 6:6)

6 और मैंने उन चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द  
यह कहते सुना, “दीनार का सेर भर गेहूँ, और दीनार का  
तीन सेर जौ, पर तेल, और दाखरस की हानि न करना।”

22222 22222—22222222

7 और जब उसने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे  
प्राणी का शब्द यह कहते सुना, “आ।”

8 मैंने दृष्टि की, और एक पीला घोड़ा है; और उसके  
सवार का नाम मृत्यु है; और अधोलोक उसके पीछे-पीछे  
है और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया  
गया, कि तलवार, और अकाल, और मरी, और पृथ्वी  
के वन-पशुओं के द्वारा लोगों को मार डालें। (2222222.  
15:2,3)

22222222 22222—22222

9 जब उसने पाँचवी मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे  
उनके प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण,  
और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए  
गए थे।

10 और उन्होंने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “हे प्रभु,  
हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और  
पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लहू का पलटा कब तक न  
लेगा?” (222222. 16:5,6)

11 और उनमें से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया,  
और उनसे कहा गया, कि और थोड़ी देर तक विश्राम  
करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दास और भाई जो तुम्हारे  
समान वध होनेवाले हैं, उनकी भी गिनती पूरी न हो ले।

222222 22222—22222

12 जब उसने छठवी मुहर खोली, तो मैंने देखा कि  
एक बड़ा 22222222 2222†; और सूर्य कम्बल के समान  
काला, और पूरा चन्द्रमा लहू के समान हो गया। (22222.  
2:10)

‡ 5:12 22222222 22 222222 22: यहाँ अर्थ है कि वह योग्य था कि उसे इन सब बातों का श्रेय प्राप्त हो। \* 6:1 22222222 22 22 2222 22222222  
2222 22 22 22 222222: यह प्रथम या बाहरी मुहर थी, और उसके खोले जाने से पुस्तक का कुछ भाग खुला की पड़ा जाए। † 6:12 22222222  
2222: भूकम्प, बहुत बड़ी उथल-पुथल या पृथ्वी पर परिवर्तनों को दर्शाता है।



13 और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आँधी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं। (22:22. 8:10, 22:22 24:29)

14 आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने-अपने स्थान से टल गया। (22:22. 16:20, 22:22 34:4)

15 पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतंत्र, पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में जा छिपे; (22:22. 2:10, 22:22. 2:19)

16 और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, “हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुँह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो; (22:22 23:30)

17 क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुँचा है, अब कौन ठहर सकता है?” (22:22. 3:2, 22:22. 2:11, 22:22. 1:6, 22:22. 1:14,15, 22:22. 3:2)

## 7

22 22:22:22

1 इसके बाद मैंने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले। (22:22. 7:2, 22:22. 6:5)

2 फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को जीविते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा,

3 “जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना।” (22:22. 9:4)

22:22:22 22 1,44,000 22:22

4 और जिन पर मुहर दी गई, मैंने उनकी गिनती सुनी, कि इस्राएल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौवालीस हजार पर मुहर दी गई:

5 यहूदा के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई, रूबेन के गोत्र में से बारह हजार पर, गाद के गोत्र में से बारह हजार पर,

6 आशेर के गोत्र में से बारह हजार पर, नफ्ताली के गोत्र में से बारह हजार पर; मनश्शे के गोत्र में से बारह हजार पर,

7 शमौन के गोत्र में से बारह हजार पर, लेवी के गोत्र में से बारह हजार पर, इस्साकार के गोत्र में से बारह हजार पर,

8 जबूलून के गोत्र में से बारह हजार पर, यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर, और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई।

22:22:22 22 22 22:22 22:22

9 इसके बाद मैंने दृष्टि की, और हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है;

10 और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, “22:22:22 22 22:22 22:22:22 22:22:22:22 22”, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय जयकार हो।” (22:22:22. 19:1, 22:22. 3:8)

11 और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के सामने मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को दण्डवत् करके कहा,

12 “22:22:22, हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, आदर, सामर्थ्य, और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन।”

13 इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, “ये श्वेत वस्त्र पहने हुए कौन हैं? और कहाँ से आए हैं?”

14 मैंने उससे कहा, “हे स्वामी, तू ही जानता है।” उसने मुझसे कहा, “ये वे हैं, जो उस महाक्लेश में से निकलकर आए हैं; इन्होंने अपने-अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं। (22:22:22. 22:14)

15 “इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी सेवा करते हैं; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उनके ऊपर अपना तम्बू तानेगा। (22:22:22. 22:3, 22:22. 134:1,2)

16 “वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे; और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी।

17 क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा; और उन्हें जीवनरूपी जल के स्रोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा।” (22:22. 23:1, 22:22. 23:2, 22:22. 25:8)

\* 7:10 22:22:22 22 22:22 22:22:22 22:22:22:22 22: जिसका अर्थ है, पाप और मृत्यु से उद्धार, अनन्तकाल की आग के दण्ड से बचाव, पवित्र स्वर्ग में प्रवेश - उस शब्द से जो भी अभिप्राय व्यक्त होता है उस पर विजय परमेश्वर से है। † 7:12 22:22:22: “आमीन” शब्द जो कुछ कहा गया है उसकी सच्चाई की पुष्टि करता है।

## 8

११११११ १११११—१११११११११ ११ १११११ ११  
११११११११

1 जब उसने सातवीं मुहर खोली, तो १११११११ ११११  
११११ १११११११ ११ १११११११११ ११ ११११\* ।

2 और मैंने उन सातों स्वर्गदूतों को जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, देखा, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं।

3 फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिये हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है चढ़ाएँ। (१११११११. 5:8)

4 और उस धूप का धुआँ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच गया। (१११. 141:2)

5 तब स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उसमें वेदी की आग भरी, और पृथ्वी पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और बिजलियाँ और भूकम्प होने लगे। (१११११११. 4:5)

6 और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सात तुरहियां थीं, फूँकने को तैयार हुए।

११११११ ११११११

7 पहले स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और लहू से मिले हुए ओले और आग उत्पन्न हुई, और पृथ्वी पर डाली गई; और एक तिहाई पृथ्वी जल गई, और एक तिहाई पेड़ जल गई, और सब हरी घास भी जल गई। (११११. 38:22)

११११११ ११११११

8 दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, तो मानो आग के समान जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में डाला गया; और १११११११ ११ ११ १११११११ ११११ ११ ११११†, (११११११. 7:17, ११११११. 51:25)

9 और समुद्र की एक तिहाई सूजी हुई वस्तुएँ जो सजीव थीं मर गईं, और एक तिहाई जहाज नाश हो गए।

११११११ ११११११

10 तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और एक बड़ा तारा जो मशाल के समान जलता था, स्वर्ग से टूटा, और नदियों की एक तिहाई पर, और पानी के सोतों पर आ पड़ा। (११११११. 6:13)

\* 8:1 १११११११ १११ १११ ११११११ ११ १११११११११ ११ ११११: इसका अर्थ है, इस मुहर के खुलते समय, आवाज, गर्जन, आँधी के बजाय, जैसा की उम्मीद थी वहाँ पर भयंकर सन्नाटा था। † 8:8 १११११११ ११ ११ १११११११ ११११ ११ ११११: लहू के सदृश्य, लहू के जैसा लाल हो गया। ‡ 8:13

११११, ११११, ११११: अर्थात्, वहाँ महान शोक होगा, यह बहुत बड़ा और भयंकर आपदाओं का संकेत करता है। \* 9:6 ११११११११ ११ ११११११११११११, ११ १ १११११११११†: यह ऐसी अवस्था है जिसमें विपत्ति ऐसी होगी कि लोग मृत्यु माँगेंगे कि उन्हें राहत मिले, और जहाँ वे उत्सुकता से उस समय की बाट देखेंगे जब वे मृत्यु के द्वारा कष्टों से स्वतंत्र हो सकते हैं।

11 उस तारे का नाम नागदौना है, और एक तिहाई पानी नागदौना जैसा कड़वा हो गया, और बहुत से मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गए। (१११११११. 9:15)

१११११ १११११११

12 चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और सूर्य की एक तिहाई, और चाँद की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई पर आपत्ति आई, यहाँ तक कि उनका एक तिहाई अंग अंधेरा हो गया और दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा, और वैसे ही रात में भी। (११११. 13:10, ११११. 2:10)

13 जब मैंने फिर देखा, तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, “उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिनका फूँकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहनेवालों पर ११११, ११११‡!”

## 9

१११११११ १११११११

1 जब पाँचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा, और उसे अथाह कुण्ड की कुँजी दी गई।

2 उसने अथाह कुण्ड को खोला, और कुण्ड में से बड़ी भट्टी के समान धुआँ उठा, और कुण्ड के धुएँ से सूर्य और वायु अंधकारमय हो गए। (११११. 2:10, ११११. 2:30)

3 उस धुएँ में से पृथ्वी पर टिट्टियाँ निकली, और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं के समान शक्ति दी गई। (१११११११. 9:5)

4 उनसे कहा गया कि न पृथ्वी की घास को, न किसी हरियाली को, न किसी पेड़ को हानि पहुँचाए, केवल उन मनुष्यों को हानि पहुँचाए जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। (११११. 9:4)

5 और उन्हें लोगों को मार डालने का तो नहीं, पर पाँच महीने तक लोगों को पीड़ा देने का अधिकार दिया गया; और उनकी पीड़ा ऐसी थी, जैसे बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को होती है।

6 उन दिनों में मनुष्य ११११११११ ११ ११११११११११११, १११ १ १११११११११†; और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उनसे भागेगी। (१११११११. 3:21, १११११११. 8:3)

7 उन टिड्डियों के आकार लडाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के जैसे थे, और उनके सिरों पर मानो सोने के मुकुट थे; और उनके मुँह मनुष्यों के जैसे थे। (2:4)

8 उनके बाल 2:4 जैसे, और दाँत सिंहों के दाँत जैसे थे।

9 वे लोहे की जैसी झिलम पहने थे, और उनके पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का जो लडाई में दौड़ते हों। (2:1:6)

10 उनकी पूँछ बिच्छुओं की जैसी थीं, और उनमें डंक थे, और उन्हें पाँच महीने तक मनुष्यों को दुःख पहुँचाने की जो शक्ति मिली थी, वह उनकी पूँछों में थी।

11 अथाह कुण्ड का दूत उन पर राजा था, उसका नाम इब्रानी में अबदोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है।

12 पहली विपत्ति बीत चुकी, अब इसके बाद दो विपत्तियाँ और आनेवाली हैं।

2:12

13 जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो जो सोने की वेदी परमेश्वर के सामने है उसके सींगों में से मैंने ऐसा शब्द सुना,

14 मानो कोई छठवें स्वर्गदूत से, जिसके पास तुरही थी कह रहा है, “उन चार स्वर्गदूतों को जो बड़ी नदी फरात के पास बंधे हुए हैं, खोल दे।”

15 और वे चारों दूत खोल दिए गए जो उस घड़ी, और दिन, और महीने, और वर्ष के लिये मनुष्यों की एक तिहाई के मार डालने को तैयार किए गए थे।

16 उनकी फौज के सवारों की गिनती बीस करोड़ थी; मैंने उनकी गिनती सुनी।

17 और मुझे इस दर्शन में घोड़े और उनके ऐसे सवार दिखाई दिए, जिनकी झिलम में आग, धूम्रकान्त, और गन्धक की जैसी थीं, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के समान थे: और उनके मुँह से आग, धुआँ, और गन्धक निकलते थे।

18 इन तीनों महामारियों; अर्थात् आग, धुआँ, गन्धक से, जो उसके मुँह से निकलते थे, मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई।

19 क्योंकि उन 2:19; इसलिए कि

† 9:8 2:19 लम्बे बाल; आमतौर पर इस तरह के बाल पुरुष नहीं रखते, परन्तु स्त्रियाँ रखती हैं। ‡ 9:19 2:19

2:19, ... 2:19 अर्थात्, आग, धुआँ, और गन्धक जो उनके मुँह से बाहर निकलती हैं। \* 10:1 2:19

2:19 उसने सात स्वर्गदूतों को पहले देखा था जिन्होंने तुरहियाँ फूँकी थीं प्रका. 8:2, उसने छः स्वर्गदूतों को सफलता पूर्वक तुरही फूँकते हुए देखा था, अब वह एक और स्वर्गदूत को देखता है, जो उन सबसे अलग है। † 10:4 2:19 अर्थ यहाँ है, वह उन बातों को न लिखे, परन्तु उन्होंने जो सुना है वह अपने मन में ही रखें, जैसे की मानो उस पर मुहर लगा दी गई है जिसे तोड़ना मना है। ‡ 10:7 2:19

2:19 इसका मतलब यहाँ है, परमेश्वर का उद्देश्य या सच्चाई जो छुपा हुआ था, और इससे पहले मनुष्यों को नहीं बताया गया था।

उनकी पूँछ साँपों की जैसी थीं, और उन पूँछों के सिर भी थे, और इन्हीं से वे पीड़ा पहुँचाते थे।

20 बाकी मनुष्यों ने जो उन महामारियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर, और काठ की मूर्तियों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं। (1 2:19. 34:25)

21 और जो खून, और टोना, और व्यभिचार, और चोरियाँ, उन्होंने की थीं, उनसे मन न फिराया।

## 10

2:19

1 फिर मैंने एक और 2:19 को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा; और उसके सिर पर मेघधनुष था, और उसका मुँह सूर्य के समान और उसके पाँव आग के खम्भे के समान थे;

2 और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी। उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर, और बायाँ पृथ्वी पर रखा;

3 और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है; और जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए।

4 जब सातों गर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर था, और मैंने स्वर्ग से यह शब्द सुना, “जो बातें गर्जन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें 2:19, और मत लिख।” (2:19. 8:26, 2:19. 12:4)

5 जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़े देखा था; उसने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया (2:19. 32:40)

6 और उसकी शपथ खाकर जो युगानुयुग जीवित है, और जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उसमें है सृजा है उसी की शपथ खाकर कहा कि “अब और देर न होगी।” (2:19. 4:11)

7 वरन् सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में, जब वह तुरही फूँकने पर होगा, तो 2:19, जिसका सुसमाचार उसने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को दिया था। (2:19. 3:7, 2:19. 3:3)

8 जिस शब्द करनेवाले को मैंने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा, “जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले।”

9 और मैंने स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, “यह छोटी पुस्तक मुझे दे।” और उसने मुझसे कहा, “ले, इसे खा ले; यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुँह में मधु जैसी मीठी लगेगी।” (22:3:1-3)

10 अतः मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया। वह मेरे मुँह में मधु जैसी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया।

11 तब मुझसे यह कहा गया, “तुझे बहुत से लोगों, जातियों, भाषाओं, और राजाओं के विषय में फिर भविष्यद्वाणी करनी होगी।”

## 11

22 22222

1 फिर मुझे नापने के लिये एक 22222222\* दिया गया, और किसी ने कहा, “उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें भजन करनेवालों को नाप ले। (22:2:1)

2 पर मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।

3 और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दूँगा कि टाट ओढ़े हुए एक हजार दो सौ साठ दिन तक भविष्यद्वाणी करें।”

4 ये वे ही जैतून के दो पेड़ और दो दीवट हैं 22 222222 22 222222 22 222222 2222 2222 2222\*। (22:4:3)

5 और यदि कोई उनको हानि पहुँचाना चाहता है, तो उनके मुँह से आग निकलकर उनके बैरियों को भस्म करती है, और यदि कोई उनको हानि पहुँचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति से मार डाला जाएगा। (22:22:2:5:14)

6 उन्हें अधिकार है कि आकाश को बन्द करें, कि उनकी भविष्यद्वाणी के दिनों में मेंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लहू बनाएँ, और जब जब चाहें तब-तब पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति लाएँ।

\* 11:1 22222222: यह घास के सदृश्य जोड़ों वाली डण्डी का एक पौधा होता था जो गीली भूमि में उगता था। † 11:4 22 22222222 22 222222 22 222222 2222 2222 2222: ये वे दो अभिषिक्त प्राणी हो सकते हैं जो सम्पूर्ण पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े रहते हैं। उनका उत्तरदायित्व था कि वे परमेश्वर की उपस्थिति में, उसकी आँखों के सामने सेवा करते रहते थे। ‡ 11:17 22 22 22 22 22 22: पृथ्वी पर जितनी भी घटनाएँ होती हैं, वह हमेशा एक ही जैसा रहता है। वह पिछले समय में जैसा था अब भी वह वैसे ही है; वह अभी जैसा है वह हमेशा ऐसे ही रहेगा।

7 जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उनसे लड़कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। (22:22:22:13:7)

8 और उनके शव उस बड़े नगर के चौक में पड़े रहेंगे, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिस्र कहलाता है, जहाँ उनका प्रभु भी कूस पर चढ़ाया गया था।

9 और सब लोगों, कुलों, भाषाओं, और जातियों में से लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनके शवों को कब्र में रखने न देंगे।

10 और पृथ्वी के रहनेवाले उनके मरने से आनन्दित और मगन होंगे, और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वाक्ताओं ने पृथ्वी के रहनेवालों को सताया था।

11 परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन का श्वास उनमें पैठ गया; और वे अपने पाँवों के बल खड़े हो गए, और उनके देखनेवालों पर बड़ा भय छा गया।

12 और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया, “यहाँ ऊपर आओ!” यह सुन वे बादल पर सवार होकर अपने बैरियों के देखते-देखते स्वर्ग पर चढ़ गए।

13 फिर उसी घड़ी एक बड़ा भूकम्प हुआ, और नगर का दसवाँ भाग गिर पड़ा; और उस भूकम्प से सात हजार मनुष्य मर गए और शेष डर गए, और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की। (22:22:22:14:7)

14 दूसरी विपत्ति बीत चुकी; तब, तीसरी विपत्ति शीघ्र आनेवाली है।

22 222222 222222

15 जब सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े-बड़े शब्द होने लगे: “जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया और वह युगानुयुग राज्य करेगा।” (22:22:22:7:27, 22:14:9)

16 और चौबीसों प्राचीन जो परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करके,

17 यह कहने लगे,

“हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, 22 22 22 22 22\*  
हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि  
तूने अपनी बड़ी सामर्थ्य को काम में लाकर राज्य किया  
है। (22:22:22:1:8)

18 अन्यजातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा

और वह समय आ पहुँचा है कि मरे हुआओं का न्याय किया जाए,

और तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे-बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए,

और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए जाएँ।”  
(**12:19:5**)

19 और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है, वह खोला गया, और उसके मन्दिर में उसकी वाचा का सन्दूक दिखाई दिया, बिजलियाँ, शब्द, गर्जन और भूकम्प हुए, और बड़े ओले पड़े। (**12:15:5**)

## 12

**12:11:11** **12:11:11** **12:11:11**

1 फिर स्वर्ग पर एक बड़ा **12:11:11**\* दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था;

2 वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती थी; क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी; क्योंकि वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी।

3 एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया, एक बड़ा लाल अजगर था जिसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे।

4 और उसकी पूँछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया, और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।

5 और वह बेटा जनी जो लोहे का राजदण्ड लिए हुए, सब जातियों पर राज्य करने पर था, और उसका बच्चा परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।

6 और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई, जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके लिये एक जगह तैयार की गई थी कि वहाँ वह एक हजार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए। (प्रका. 12:14)

**12:16:16** **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16**

7 फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

\* **12:1** **12:11:11**: इस प्रकार अनावृत स्वर्गिक संसार में उसने परमेश्वर की उपस्थिति में एक प्रभावशाली एवं अद्भुत चिन्ह देखा जिसकी वह अब व्याख्या करना आरम्भ करते हैं। † **12:9** **12:11:11** **12:11:11**: यह बिना सन्देह उस साँप को दर्शाता है जिसने हवा को धोखा दिया था। ‡ **12:16** **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16**: पृथ्वी स्त्री के साथ उसके संकटकाल में सहानुभूति रखती हुई प्रतीत होती है, और उसे बचाने के लिए हस्तक्षेप करती है।

8 परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। (**12:11:11**. **12:11**)

9 और वह बड़ा अजगर अर्थात् **12:11** **12:11:11** **12:11:11**, जो शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। (**12:11**. **12:31**)

10 फिर मैंने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, “अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, सामर्थ्य, राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया। (**12:11:11**. **11:15**)

11 और वे मेम्ने के लहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, क्योंकि उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।

12 इस कारण, हे स्वर्गों, और उनमें रहनेवालों मगन हो; हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।”  
(**12:11:11**. **8:13**)

**12:11:11** **12:11:11** **12:11:11**

13 जब अजगर ने देखा, कि मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हूँ, तो उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया।

14 पर उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, कि साँप के सामने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुँच जाए, जहाँ वह एक समय, और समयों, और आधे समय तक पाली जाए।

15 और साँप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुँह से नदी के समान पानी बहाया कि उसे इस नदी से बहा दे।

16 परन्तु **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16** **12:16:16**, और अपना मुँह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने अपने मुँह से बहाई थी, पी लिया।

17 तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।

18 और वह समुद्र के रेत पर जा खड़ा हुआ।

## 13

**13:1:1** **13:1:1** **13:1:1** **13:1:1**

1 मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस राजमुकुट, और उसके सिरों पर परमेश्वर की निन्दा के नाम लिखे हुए थे। (2/2/2/2. 7:3, 2/2/2/2. 12:3)

2 जो पशु मैंने देखा, वह चीते के समान था; और उसके पाँव भालू के समान, और मुँह सिंह के समान था। और उस अजगर ने अपनी सामर्थ्य, और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार, उसे दे दिया।

3 मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा, मानो वह मरने पर है; फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले।

4 उन्होंने अजगर की पूजा की, क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दे दिया था, और यह कहकर पशु की पूजा की, “इस पशु के समान कौन है? कौन इससे लड़ सकता है?”

5 बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।

6 और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुँह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे।

7 उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, लोग, भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। (2/2/2/2. 7:21)

8 पृथ्वी के वे सब रहनेवाले जिनके नाम उस मेम्ने की 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2\* में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।

9 जिसके कान हों वह सुने।

10 जिसको कैद में पड़ना है, वह कैद में पड़ेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा।

पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है। (2/2/2/2. 14:12)

2/2/2/2/2 2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2

11 फिर मैंने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उसके मेम्ने के समान दो सींग थे; और वह अजगर के समान बोलता था।

\* 13:8 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2: कहने का अभिप्राय यह है कि प्रभु यीशु अपने पास एक पुस्तक रखता हैं जिसमें उन सभी का नाम दर्ज हैं जो अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। † 13:17 2/2/2-2/2/2: इसका अर्थ है कि उसकी अनुमति बिना के कोई भी “लेन-देन” नहीं कर सकता हैं; और यह स्पष्ट हैं कि “लेन-देन” निर्धारण करने का यह अधिकार किसके के हाथ में है कि किसे लेन-देन करने दे अर्थात् उसे संसार की धन-सम्पत्ति पर सम्पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हैं। \* 14:2 2/2 2/2 2/2/2/2 .... 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2: सागर या एक शक्तिशाली जल-प्रताप के तुल्य। अर्थात्, वह इतना तीव्र था कि स्वर्ग से पृथ्वी पर सुना जा सकता था।

12 यह उस पहले पशु का सारा अधिकार उसके सामने काम में लाता था, और पृथ्वी और उसके रहनेवालों से उस पहले पशु की, जिसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था।

13 वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाता था, यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। (1 2/2/2/2. 18:24-29)

14 उन चिन्हों के कारण जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था; वह पृथ्वी के रहनेवालों को इस प्रकार भ्रमाता था, कि पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था कि जिस पशु को तलवार लगी थी, वह जी गया है, उसकी मूर्ति बनाओ।

15 और उसे उस पशु की मूर्ति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूर्ति बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु की मूर्ति की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। (2/2/2/2. 3:5,6)

16 और उसने छोटे-बड़े, धनी-कंगाल, स्वतंत्र-दास सब के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक-एक छाप करा दी,

17 कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और अन्य कोई 2/2/2-2/2/2† न कर सके।

18 ज्ञान इसी में है: जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छः सौ छियासठ है।

## 14

2/2/2/2/2/2 2/2 1,44,000 2/2/2

1 फिर मैंने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हजार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।

2 और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो 2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2\*, और जो शब्द मैंने सुना वह ऐसा था, मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजाते हों। (2/2/2. 43:2)

3 और वे सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के सामने मानो, एक नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौवालीस हजार जनों को छोड़, जो पृथ्वी



“हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,  
तेरे कार्य महान, और अद्भुत हैं,  
हे युग-युग के राजा,  
तेरी चाल ठीक और सच्ची है।” (22. 111:2, 22.  
139:14, 22. 145:17)

4 “हे प्रभु,  
कौन तुझ से न डरेगा? और तेरे नाम की महिमा न  
करेगा?  
क्योंकि केवल तू ही पवित्र है,  
और सारी जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी,  
क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं।” (22.  
86:9, 22. 10:7, 22. 1:11)

5 इसके बाद मैंने देखा, कि स्वर्ग में 22. 22. 22. 22. 22. 22. का मन्दिर खोला गया,

6 और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सातों विपत्तियाँ थीं, मलमल के शुद्ध और चमकदार वस्त्र पहने और छाती पर सोने की पट्टियाँ बाँधे हुए मन्दिर से निकले।

7 तब उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के, जो युगानुयुग जीविता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए।

8 और परमेश्वर की महिमा, और उसकी सामर्थ्य के कारण मन्दिर 22. 22. 22. 22. 22. 22. और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की सातों विपत्तियाँ समाप्त न हुईं, तब तक कोई मन्दिर में न जा सका। (22. 6:4)

## 16

22. 22. 22. 22. 22. 22.

1 फिर मैंने मन्दिर में किसी को ऊँचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना, “जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उण्डेल दो।”

2 अतः पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल दिया। और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुःखदाई फोड़ा निकला। (22. 16:11)

22. 22. 22. 22. 22. 22.

3 दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उण्डेल दिया और वह मरे हुए के लहू जैसा बन गया, और समुद्र में का हर एक जीवधारी मर गया। (22. 8:8)

22. 22. 22. 22. 22. 22.

† 15:5 22. 22. 22. 22. 22. 22. उसे “साक्षी का तम्बू” कहा जाता था, क्योंकि वह लोगों के बीच परमेश्वर की उपस्थिति का एक प्रमाण या साक्षी था, अर्थात्, वह परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण करता था। ‡ 15:8 22. 22. 22. 22. 22. 22. मन्दिर में परमेश्वर की उपस्थिति का सामान्य प्रतीक था।

\* 16:6 22. 22. 22. 22. 22. 22. नदियों और झरनों को लहू में बदलकर, प्रका. 16:4. लहू इतनी बहुतायत से बहाया गया कि उनके पीनेवाले पानी के साथ मिल गया। † 16:9 22. 22. 22. 22. 22. 22. पाप से मन फिराकर आज्ञाकारिता के जीवन द्वारा उसे सम्मानित करना। ‡ 16:14 22. 22. 22. 22. 22. 22. उनके कार्य चमत्कार प्रतीत होंगे; अर्थात्, ऐसे आश्चर्य के काम जिन्हें संसार देखकर भ्रमित होगा की वे चमत्कार हैं।

4 तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों, और पानी के सोतों पर उण्डेल दिया, और वे लहू बन गए।

5 और मैंने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, “हे पवित्र, जो है, और जो था, तू न्यायी है और तूने यह न्याय किया। (22. 11:17)

6 क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों, और भविष्यद्वक्ताओं का लहू बहाया था,

और तूने 22. 22. 22. 22. 22. 22.\*;

क्योंकि वे इसी योग्य हैं।”

7 फिर मैंने वेदी से यह शब्द सुना,

“हाँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,  
तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं।” (22. 119:137, 22.  
19:9)

22. 22. 22. 22. 22. 22.

8 चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उण्डेल दिया, और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का अधिकार दिया गया।

9 मनुष्य बड़ी तपन से झुलस गए, और परमेश्वर के नाम की जिसे इन विपत्तियों पर अधिकार है, निन्दा की और उन्होंने न मन फिराया और न 22. 22. 22. 22. की।

22. 22. 22. 22. 22. 22.

10 पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा उस पशु के सिंहासन पर उण्डेल दिया और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया; और लोग पीड़ा के मारे अपनी-अपनी जीभ चबाने लगे, (22. 13:42)

11 और अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की; पर अपने-अपने कामों से मन न फिराया।

22. 22. 22. 22. 22. 22.

12 छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महानदी फरात पर उण्डेल दिया और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए। (22. 44:27)

13 और मैंने उस अजगर के मुँह से, और उस पशु के मुँह से और उस झूठे भविष्यद्वक्ता के मुँह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा।

14 ये 22. 22. 22. 22. 22. 22. दुष्टात्माएँ हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिए जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें।



15 “देख, मैं चोर के समान आता हूँ; धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र कि सावधानी करता है कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें।”

16 और उन्होंने राजाओं को उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है।

17 और सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा हवा पर उण्डेल दिया, और मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, “हो चुका।”

18 फिर बिजलियाँ, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भूकम्प कभी न हुआ था। (24:21)

19 इससे उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए, और जाति-जाति के नगर गिर पड़े, और बड़े बाबेल का स्मरण परमेश्वर के यहाँ हुआ, कि वह अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए।

20 और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया, और पहाड़ों का पता न लगा।

21 और आकाश से मनुष्यों पर मन-मन भर के बड़े ओले गिरे, और इसलिए कि यह विपत्ति बहुत ही भारी थी, लोगों ने ओलों की विपत्ति के कारण परमेश्वर की निन्दा की।

## 17

1 जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर मुझसे यह कहा, “इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊँ, जो बहुत से पानी पर बैठी है।

2 जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया, और पृथ्वी के रहनेवाले उसके व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए थे।”

3 तब वह मुझे पवित्र आत्मा में जंगल को ले गया, और मैंने लाल रंग के पशु पर जो निन्दा के नामों से भरा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सींग थे, एक स्त्री को बैठा हुआ देखा।

4 यह स्त्री बैंगनी, और लाल रंग के कपड़े पहने थी, और सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी हुई थी, और उसके हाथ में एक सोने का कटोरा था

जो घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था।

5 और उसके माथे पर यह नाम लिखा था, “भेद - बड़ा बाबेल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता।” (19:2)

6 और मैंने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लहू और यीशु के गवाहों के लहू पीने से मतवाली देखा; और उसे देखकर मैं चकित हो गया।

7 उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “तू क्यों चकित हुआ? मैं इस स्त्री, और उस पशु का, जिस पर वह सवार है, और जिसके सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद बताता हूँ।

8 जो पशु तूने देखा है, यह पहले तो था, पर अब नहीं है, और अथाह कुण्ड से निकलकर विनाश में पड़ेगा, और पृथ्वी के रहनेवाले जिनके नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, इस पशु की यह दशा देखकर कि पहले था, और अब नहीं; और फिर आ जाएगा, अचम्भा करेंगे। (17:11)

9 यह समझने के लिए एक ज्ञानी मन आवश्यक है: वे सातों सिर हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है।

10 और वे सात राजा भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक अभी है; और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है।

11 जो पशु पहले था, वह आप आठवाँ है; और उन सातों में से एक है, और वह विनाश में पड़ेगा।

12 जो दस सींग तूने देखे वे दस राजा हैं; जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया; पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं के समान अधिकार पाएँगे। (7:24)

13 ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी-अपनी सामर्थ्य और अधिकार उस पशु को देंगे।

14 “ये मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि और जो बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासयोग्य हैं, उसके साथ हैं, वे भी जय पाएँगे।”

15 फिर उसने मुझसे कहा, “जो पानी तूने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे लोग, भीड़, जातियाँ, और भाषाएँ हैं।

\* 17:9 सात पहाड़ वाले नगर रोम को दर्शाता है। † 17:11 अर्थात्, एक शक्ति जो पहले महा शक्ति थी और अब समाप्त हो गई है अतः उसके लिए कहा जा सकता है कि वह विलोप हो गई है। ‡ 17:14 उसे सम्पूर्ण पृथ्वी पर सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है और सब राजा तथा प्रभु उसके नियंत्रण में हैं।

16 और जो दस सींग तूने देखे, वे और पशु उस वेश्या से बैर रखेंगे, और उसे लाचार और नंगी कर देंगे; और उसका मांस खा जाएँगे, और उसे आग में जला देंगे।

17 क्योंकि परमेश्वर उनके मन में यह डालेगा कि वे उसकी मनसा पूरी करें; और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो लें, तब तक एक मन होकर अपना-अपना राज्य पशु को दे दें।

18 और वह स्त्री, जिसे तूने देखा है वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है।\*

## 18

1

इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसको बड़ा अधिकार प्राप्त था; और पृथ्वी उसके तेज से प्रकाशित हो उठी।

2 उसने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा,

“गिर गया, बड़ा बाबेल गिर गया है! और दुष्टात्माओं का निवास,

और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया। (17:18)

13:21, 17:18, 50:39, 51:37)

3 क्योंकि उसके व्यभिचार के भयानक मदिरा के कारण सब जातियाँ गिर गई हैं,

और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है; और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख-विलास की बहुतायत के कारण धनवान हुए हैं।” (17:18, 51:7)

4 फिर मैंने स्वर्ग से एक और शब्द सुना,

“हे मेरे लोगों, 17:18, 17:18, 17:18\* कि तुम उसके पापों में भागी न हो,

और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े; (17:18, 52:11, 50:8, 51:45)

5 क्योंकि उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुँच गया है, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं।

6 जैसा उसने तुम्हें दिया है, वैसा ही उसको दो, और उसके कामों के अनुसार उसे 17:18, 17:18, 17:18, जिस कटोरे में उसने भर दिया था उसी में उसके लिये दो गुणा भर दो। (17:18, 137:8)

7 जितनी उसने अपनी बड़ाई की और सुख-विलास किया;

उतनी उसको पीड़ा, और शोक दो;

क्योंकि वह अपने मन में कहती है, ‘मैं रानी हो बैठी हूँ, विधवा नहीं; और शोक में कभी न पड़ूँगी।’

8 इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगी, अर्थात् मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्म कर दी जाएगी,

क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है।

(17:18, 50:31)

17:18, 17:18, 17:18, 17:18

9 “और पृथ्वी के राजा जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार, और सुख-विलास किया, जब उसके जलने का धुआँ देखेंगे, तो उसके लिये रोएँगे, और छाती पीटेंगे।

(17:18, 50:46)

10 और उसकी पीड़ा के डर के मारे वे बड़ी दूर खड़े होकर कहेंगे,

‘हे बड़े नगर, बाबेल! हे दृढ़ नगर, हाय! हाय!

घड़ी ही भर में तुझे दण्ड मिल गया है।’ (17:18, 51:8-9)

11 “और पृथ्वी के व्यापारी उसके लिये रोएँगे और विलाप करेंगे, क्योंकि अब कोई उनका माल मोल न लेगा

12 अर्थात् सोना, चाँदी, रत्न, मोती, मलमल, बैंगनी, रेशमी, लाल रंग के कपड़े, हर प्रकार का सुगन्धित काठ, हाथी दाँत की हर प्रकार की वस्तुएँ, बहुमूल्य काठ, पीतल, लोहे और संगमरमर की सब भाँति के पात्र,

13 और दालचीनी, मसाले, धूप, गन्धरस, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहूँ, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ, घोड़े, रथ, और दास, और मनुष्यों के प्राण।

14 अब तेरे मनभावने फल तेरे पास से जाते रहे; और सुख-विलास और वैभव की वस्तुएँ तुझ से दूर हुई हैं, और वे फिर कदापि न मिलेंगी।

15 इन वस्तुओं के व्यापारी जो उसके द्वारा धनवान हो गए थे, उसकी पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे, और रोते और विलाप करते हुए कहेंगे,

16 ‘हाय! हाय! यह बड़ा नगर जो मलमल, बैंगनी, लाल रंग के कपड़े पहने था,

और सोने, रत्नों और मोतियों से सजा था;

17 घड़ी ही भर में उसका ऐसा भारी धन नाश हो गया।’

“और हर एक माँझी, और जलयात्री, और मल्लाह, और जितने समुद्र से कमाते हैं, सब दूर खड़े हुए,

18 और उसके जलने का धुआँ देखते हुए पुकारकर कहेंगे, ‘कौन सा नगर इस बड़े नगर के समान है?’

(17:18, 51:37)

\* 18:4 17:18, 17:18, 17:18: ताकि वे उसके पापों में भाग न ले और उसके आनेवाले विनाश में भागी होने से बच जाएँ। † 18:6 17:18, 17:18, 17:18: अर्थात् उसने मनुष्यों को जो कष्ट दिए हैं उसका दो गुना बदला उसे दिया जाएगा। ‡ 18:19 17:18-17:18, 17:18, 17:18: शोक और विलाप की एक सामान्य अभिव्यक्ति।





भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे। (22:25:46)

22:25:46 22:25:46 22:25:46 22:25:46 22:25:46 22:25:46

11 फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। (22:25:31, 22:47:8)

12 फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुआओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् 22:25:31 22:25:31; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुआओं का न्याय किया गया। (22:7:10)

13 और समुद्र ने उन मरे हुआओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुआओं को जो उनमें थे दे दिया; और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया।

14 और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है।

15 और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। (22:3:36, 1 22:5:11,12)

## 21

21:1 21:1 21:1 21:1 21:1 21:1

1 फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। (21:66:22)

2 फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने दुल्हे के लिये श्रृंगार किए हो।

3 फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। (21:26:11,12, 21:37:27)

4 और 21:22:22 21:22:22 21:22:22 21:22:22 21:22:22 21:22:22; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।” (21:25:8)

5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, “21:22:22 21:22:22 21:22:22 21:22:22 21:22:22 21:22:22” फिर उसने कहा, “लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वासयोग्य और सत्य हैं।” (21:42:9)

6 फिर उसने मुझसे कहा, “ये बातें पूरी हो गई हैं। मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त हूँ। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से संत-मेंत पिलाऊँगा।

7 जो जय पाए, वही उन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

8 परन्तु डरपोकों, अविश्वासियों, घिनौनों, हत्यारों, व्यभिचारियों, टोन्हों, मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।” (21:5:5, 1 21:6:9,10)

21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10

9 फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात अन्तिम विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उनमें से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा, “इधर आ, मैं तुझे दुल्हन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊँगा।”

21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10 21:6:9,10

10 और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया।

11 परमेश्वर की महिमा उसमें थी, और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की तरह स्वच्छ थी।

12 और उसकी शहरपनाह बड़ी ऊँची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन फाटकों पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे।

13 पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्षिण की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे।

14 और नगर की शहरपनाह की बारह नीवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे।

15 जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर और उसके फाटकों और उसकी शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज था। (21:2:1)

16 वह नगर वर्गाकार बसा हुआ था और उसकी लम्बाई, चौड़ाई के बराबर थी, और उसने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला: उसकी लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊँचाई बराबर थी।

‡ 20:12 20:12 20:12 20:12 20:12 20:12: अध्याय 13:8 की टिप्पणी देखें \* 21:4 21:4 21:4 21:4 21:4 21:4: यह उस धन्य अवस्था की एक विशेषता है कि वहाँ एक भी आँसू न बहेगा। † 21:5 21:5 21:5 21:5 21:5 21:5: पाप और मृत्यु के राज्य करने की जो अवस्था थी तब बदल जाएगी।

\* 21:4 21:4 21:4 21:4 21:4 21:4: यह उस धन्य अवस्था की एक विशेषता है कि वहाँ एक भी आँसू न बहेगा। † 21:5 21:5 21:5 21:5 21:5 21:5: पाप और मृत्यु के राज्य करने की जो अवस्था थी तब बदल जाएगी।

17 और उसने उसकी शहरपनाह को मनुष्य के, अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से नापा, तो एक सौ चौवालीस हाथ निकली।

18 उसकी शहरपनाह यशब की बनी थी, और नगर ऐसे शुद्ध सोने का था, जो स्वच्छ काँच के समान हो।

19 उस नगर की नीवें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई थीं, पहली नीव यशब की, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौथी मरकत की, (22:54:11,12)

20 पाँचवी गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नौवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की थी।

21 और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे; एक-एक फाटक, एक-एक मोती का बना था। और नगर की सड़क स्वच्छ काँच के समान शुद्ध सोने की थी।

22 मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर हैं।

23 और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजियाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है। (22:60:19)

24 जाति-जाति के लोग उसकी ज्योति में चले-फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने-अपने तेज का सामान उसमें लाएँगे।

25 उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहाँ न होगी। (22:60:11, 22:14:7)

26 और लोग जाति-जाति के तेज और वैभव का सामान उसमें लाएँगे।

27 और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं। (22:52:1)

## 22

28 मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर हैं।

29 और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजियाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है। (22:60:19)

\* 22:1 22:11 22:12 22:13 22:14 22:15 22:16 22:17 22:18 22:19 22:20 22:21 22:22 22:23 22:24 22:25 22:26 22:27 22:28 22:29 22:30 22:31 22:32 22:33 22:34 22:35 22:36 22:37 22:38 22:39 22:40 22:41 22:42 22:43 22:44 22:45 22:46 22:47 22:48 22:49 22:50 22:51 22:52 22:53 22:54 22:55 22:56 22:57 22:58 22:59 22:60 22:61 22:62 22:63 22:64 22:65 22:66 22:67 22:68 22:69 22:70 22:71 22:72 22:73 22:74 22:75 22:76 22:77 22:78 22:79 22:80 22:81 22:82 22:83 22:84 22:85 22:86 22:87 22:88 22:89 22:90 22:91 22:92 22:93 22:94 22:95 22:96 22:97 22:98 22:99 22:100 22:101 22:102 22:103 22:104 22:105 22:106 22:107 22:108 22:109 22:110 22:111 22:112 22:113 22:114 22:115 22:116 22:117 22:118 22:119 22:120 22:121 22:122 22:123 22:124 22:125 22:126 22:127 22:128 22:129 22:130 22:131 22:132 22:133 22:134 22:135 22:136 22:137 22:138 22:139 22:140 22:141 22:142 22:143 22:144 22:145 22:146 22:147 22:148 22:149 22:150 22:151 22:152 22:153 22:154 22:155 22:156 22:157 22:158 22:159 22:160 22:161 22:162 22:163 22:164 22:165 22:166 22:167 22:168 22:169 22:170 22:171 22:172 22:173 22:174 22:175 22:176 22:177 22:178 22:179 22:180 22:181 22:182 22:183 22:184 22:185 22:186 22:187 22:188 22:189 22:190 22:191 22:192 22:193 22:194 22:195 22:196 22:197 22:198 22:199 22:200 22:201 22:202 22:203 22:204 22:205 22:206 22:207 22:208 22:209 22:210 22:211 22:212 22:213 22:214 22:215 22:216 22:217 22:218 22:219 22:220 22:221 22:222 22:223 22:224 22:225 22:226 22:227 22:228 22:229 22:230 22:231 22:232 22:233 22:234 22:235 22:236 22:237 22:238 22:239 22:240 22:241 22:242 22:243 22:244 22:245 22:246 22:247 22:248 22:249 22:250 22:251 22:252 22:253 22:254 22:255 22:256 22:257 22:258 22:259 22:260 22:261 22:262 22:263 22:264 22:265 22:266 22:267 22:268 22:269 22:270 22:271 22:272 22:273 22:274 22:275 22:276 22:277 22:278 22:279 22:280 22:281 22:282 22:283 22:284 22:285 22:286 22:287 22:288 22:289 22:290 22:291 22:292 22:293 22:294 22:295 22:296 22:297 22:298 22:299 22:300 22:301 22:302 22:303 22:304 22:305 22:306 22:307 22:308 22:309 22:310 22:311 22:312 22:313 22:314 22:315 22:316 22:317 22:318 22:319 22:320 22:321 22:322 22:323 22:324 22:325 22:326 22:327 22:328 22:329 22:330 22:331 22:332 22:333 22:334 22:335 22:336 22:337 22:338 22:339 22:340 22:341 22:342 22:343 22:344 22:345 22:346 22:347 22:348 22:349 22:350 22:351 22:352 22:353 22:354 22:355 22:356 22:357 22:358 22:359 22:360 22:361 22:362 22:363 22:364 22:365 22:366 22:367 22:368 22:369 22:370 22:371 22:372 22:373 22:374 22:375 22:376 22:377 22:378 22:379 22:380 22:381 22:382 22:383 22:384 22:385 22:386 22:387 22:388 22:389 22:390 22:391 22:392 22:393 22:394 22:395 22:396 22:397 22:398 22:399 22:400 22:401 22:402 22:403 22:404 22:405 22:406 22:407 22:408 22:409 22:410 22:411 22:412 22:413 22:414 22:415 22:416 22:417 22:418 22:419 22:420 22:421 22:422 22:423 22:424 22:425 22:426 22:427 22:428 22:429 22:430 22:431 22:432 22:433 22:434 22:435 22:436 22:437 22:438 22:439 22:440 22:441 22:442 22:443 22:444 22:445 22:446 22:447 22:448 22:449 22:450 22:451 22:452 22:453 22:454 22:455 22:456 22:457 22:458 22:459 22:460 22:461 22:462 22:463 22:464 22:465 22:466 22:467 22:468 22:469 22:470 22:471 22:472 22:473 22:474 22:475 22:476 22:477 22:478 22:479 22:480 22:481 22:482 22:483 22:484 22:485 22:486 22:487 22:488 22:489 22:490 22:491 22:492 22:493 22:494 22:495 22:496 22:497 22:498 22:499 22:500 22:501 22:502 22:503 22:504 22:505 22:506 22:507 22:508 22:509 22:510 22:511 22:512 22:513 22:514 22:515 22:516 22:517 22:518 22:519 22:520 22:521 22:522 22:523 22:524 22:525 22:526 22:527 22:528 22:529 22:530 22:531 22:532 22:533 22:534 22:535 22:536 22:537 22:538 22:539 22:540 22:541 22:542 22:543 22:544 22:545 22:546 22:547 22:548 22:549 22:550 22:551 22:552 22:553 22:554 22:555 22:556 22:557 22:558 22:559 22:560 22:561 22:562 22:563 22:564 22:565 22:566 22:567 22:568 22:569 22:570 22:571 22:572 22:573 22:574 22:575 22:576 22:577 22:578 22:579 22:580 22:581 22:582 22:583 22:584 22:585 22:586 22:587 22:588 22:589 22:590 22:591 22:592 22:593 22:594 22:595 22:596 22:597 22:598 22:599 22:600 22:601 22:602 22:603 22:604 22:605 22:606 22:607 22:608 22:609 22:610 22:611 22:612 22:613 22:614 22:615 22:616 22:617 22:618 22:619 22:620 22:621 22:622 22:623 22:624 22:625 22:626 22:627 22:628 22:629 22:630 22:631 22:632 22:633 22:634 22:635 22:636 22:637 22:638 22:639 22:640 22:641 22:642 22:643 22:644 22:645 22:646 22:647 22:648 22:649 22:650 22:651 22:652 22:653 22:654 22:655 22:656 22:657 22:658 22:659 22:660 22:661 22:662 22:663 22:664 22:665 22:666 22:667 22:668 22:669 22:670 22:671 22:672 22:673 22:674 22:675 22:676 22:677 22:678 22:679 22:680 22:681 22:682 22:683 22:684 22:685 22:686 22:687 22:688 22:689 22:690 22:691 22:692 22:693 22:694 22:695 22:696 22:697 22:698 22:699 22:700 22:701 22:702 22:703 22:704 22:705 22:706 22:707 22:708 22:709 22:710 22:711 22:712 22:713 22:714 22:715 22:716 22:717 22:718 22:719 22:720 22:721 22:722 22:723 22:724 22:725 22:726 22:727 22:728 22:729 22:730 22:731 22:732 22:733 22:734 22:735 22:736 22:737 22:738 22:739 22:740 22:741 22:742 22:743 22:744 22:745 22:746 22:747 22:748 22:749 22:750 22:751 22:752 22:753 22:754 22:755 22:756 22:757 22:758 22:759 22:760 22:761 22:762 22:763 22:764 22:765 22:766 22:767 22:768 22:769 22:770 22:771 22:772 22:773 22:774 22:775 22:776 22:777 22:778 22:779 22:780 22:781 22:782 22:783 22:784 22:785 22:786 22:787 22:788 22:789 22:790 22:791 22:792 22:793 22:794 22:795 22:796 22:797 22:798 22:799 22:800 22:801 22:802 22:803 22:804 22:805 22:806 22:807 22:808 22:809 22:810 22:811 22:812 22:813 22:814 22:815 22:816 22:817 22:818 22:819 22:820 22:821 22:822 22:823 22:824 22:825 22:826 22:827 22:828 22:829 22:830 22:831 22:832 22:833 22:834 22:835 22:836 22:837 22:838 22:839 22:840 22:841 22:842 22:843 22:844 22:845 22:846 22:847 22:848 22:849 22:850 22:851 22:852 22:853 22:854 22:855 22:856 22:857 22:858 22:859 22:860 22:861 22:862 22:863 22:864 22:865 22:866 22:867 22:868 22:869 22:870 22:871 22:872 22:873 22:874 22:875 22:876 22:877 22:878 22:879 22:880 22:881 22:882 22:883 22:884 22:885 22:886 22:887 22:888 22:889 22:890 22:891 22:892 22:893 22:894 22:895 22:896 22:897 22:898 22:899 22:900 22:901 22:902 22:903 22:904 22:905 22:906 22:907 22:908 22:909 22:910 22:911 22:912 22:913 22:914 22:915 22:916 22:917 22:918 22:919 22:920 22:921 22:922 22:923 22:924 22:925 22:926 22:927 22:928 22:929 22:930 22:931 22:932 22:933 22:934 22:935 22:936 22:937 22:938 22:939 22:940 22:941 22:942 22:943 22:944 22:945 22:946 22:947 22:948 22:949 22:950 22:951 22:952 22:953 22:954 22:955 22:956 22:957 22:958 22:959 22:960 22:961 22:962 22:963 22:964 22:965 22:966 22:967 22:968 22:969 22:970 22:971 22:972 22:973 22:974 22:975 22:976 22:977 22:978 22:979 22:980 22:981 22:982 22:983 22:984 22:985 22:986 22:987 22:988 22:989 22:990 22:991 22:992 22:993 22:994 22:995 22:996 22:997 22:998 22:999 23:1 23:2 23:3 23:4 23:5 23:6 23:7 23:8 23:9 23:10 23:11 23:12 23:13 23:14 23:15 23:16 23:17 23:18 23:19 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26 23:27 23:28 23:29 23:30 23:31 23:32 23:33 23:34 23:35 23:36 23:37 23:38 23:39 23:40 23:41 23:42 23:43 23:44 23:45 23:46 23:47 23:48 23:49 23:50 23:51 23:52 23:53 23:54 23:55 23:56 23:57 23:58 23:59 23:60 23:61 23:62 23:63 23:64 23:65 23:66 23:67 23:68 23:69 23:70 23:71 23:72 23:73 23:74 23:75 23:76 23:77 23:78 23:79 23:80 23:81 23:82 23:83 23:84 23:85 23:86 23:87 23:88 23:89 23:90 23:91 23:92 23:93 23:94 23:95 23:96 23:97 23:98 23:99 24:1 24:2 24:3 24:4 24:5 24:6 24:7 24:8 24:9 24:10 24:11 24:12 24:13 24:14 24:15 24:16 24:17 24:18 24:19 24:20 24:21 24:22 24:23 24:24 24:25 24:26 24:27 24:28 24:29 24:30 24:31 24:32 24:33 24:34 24:35 24:36 24:37 24:38 24:39 24:40 24:41 24:42 24:43 24:44 24:45 24:46 24:47 24:48 24:49 24:50 24:51 24:52 24:53 24:54 24:55 24:56 24:57 24:58 24:59 24:60 24:61 24:62 24:63 24:64 24:65 24:66 24:67 24:68 24:69 24:70 24:71 24:72 24:73 24:74 24:75 24:76 24:77 24:78 24:79 24:80 24:81 24:82 24:83 24:84 24:85 24:86 24:87 24:88 24:89 24:90 24:91 24:92 24:93 24:94 24:95 24:96 24:97 24:98 24:99 25:1 25:2 25:3 25:4 25:5 25:6 25:7 25:8 25:9 25:10 25:11 25:12 25:13 25:14 25:15 25:16 25:17 25:18 25:19 25:20 25:21 25:22 25:23 25:24 25:25 25:26 25:27 25:28 25:29 25:30 25:31 25:32 25:33 25:34 25:35 25:36 25:37 25:38 25:39 25:40 25:41 25:42 25:43 25:44 25:45 25:46 25:47 25:48 25:49 25:50 25:51 25:52 25:53 25:54 25:55 25:56 25:57 25:58 25:59 25:60 25:61 25:62 25:63 25:64 25:65 25:66 25:67 25:68 25:69 25:70 25:71 25:72 25:73 25:74 25:75 25:76 25:77 25:78 25:79 25:80 25:81 25:82 25:83 25:84 25:85 25:86 25:87 25:88 25:89 25:90 25:91 25:92 25:93 25:94 25:95 25:96 25:97 25:98 25:99 26:1 26:2 26:3 26:4 26:5 26:6 26:7 26:8 26:9 26:10 26:11 26:12 26:13 26:14 26:15 26:16 26:17 26:18 26:19 26:20 26:21 26:22 26:23 26:24 26:25 26:26 26:27 26:28 26:29 26:30 26:31 26:32 26:33 26:34 26:35 26:36 26:37 26:38 26:39 26:40 26:41 26:42 26:43 26:44 26:45 26:46 26:47 26:48 26:49 26:50 26:51 26:52 26:53 26:54 26:55 26:56 26:57 26:58 26:59 26:60 26:61 26:62 26:63 26:64 26:65 26:66 26:67 26:68 26:69 26:70 26:71 26:72 26:73 26:74 26:75 26:76 26:77 26:78 26:79 26:80 26:81 26:82 26:83 26:84 26:85 26:86 26:87 26:88 26:89 26:90 26:91 26:92 26:93 26:94 26:95 26:96 26:97 26:98 26:99 27:1 27:2 27:3 27:4 27:5 27:6 27:7 27:8 27:9 27:10 27:11 27:12 27:13 27:14 27:15 27:16 27:17 27:18 27:19 27:20 27:21 27:22 27:23 27:24 27:25 27:26 27:27 27:28 27:29 27:30 27:31 27:32 27:33 27:34 27:35 27:36 27:37 27:38 27:39 27:40 27:41 27:42 27:43 27:44 27:45 27:46 27:47 27:48 27:49 27:50 27:51 27:52 27:53 27:54 27:55 27:56 27:57 27:58 27:59 27:60 27:61 27:62 27:63 27:64 27:65 27:66 27:67 27:68 27:69 27:70 27:71 27:72 27:73 27:74 27:75 27:76 27:77 27:78 27:79 27:80 27:81 27:82 27:83 27:84 27:85 27:86 27:87 27:88 27:89 27:90 27:91 27:92 27:93 27:94 27:95 27:96 27:97 27:98 27:99 28:1 28:2 28:3 28:4 28:5 28:6 28:7 28:8 28:9 28:10 28:11 28:12 28:13 28:14 28:15 28:16 28:17 28:18 28:19 28:20 28:21 28:22 28:23 28:24 28:25 28:26 28:27 28:28 28:29 28:30 28:31 28:32 28:33 28:34 28:35 28:36 28:37 28:38 28:39 28:40 28:41 28:42 28:43 28:44 28:45 28:46 28:47 28:48 28:49 28:50 28:51 28:52 28:53 28:54 28:55 28:56 28:57 28:58 28:59 28:60 28:61 28:62 28:63 28:64 28:65 28:66 28:67 28:68 28:69 28:70 28:71 28:72 28:73 28:74 28:75 28:76 28:77 28:78 28:79 28:80 28:81 28:82 28:83 28:84 28:85 28:86 28:87 28:88 28:89 28:90 28:91 28:92 28:93 28:94 28:95 28:96 28:97 28:98 28:99 29:1 29:2 29:3 29:4 29:5 29:6 29:7 29:8 29:9 29:10 29:11 29:12 29:13 29:14 29:15 29:16 29:17 29:18 29:19 29:20 29:21 29:22 29:23 29:24 29:25 29:26 29:27 29:28 29:29 29:30 29:31 29:32 29:33 29:34 29:35 29:36 29:37 29:38 29:39 29:40 29:41 29:42 29:43 29:44 29:45 29:46 29:47 29:48 29:49 29:50 29:51 29:52 29:53 29:54 29:55 29:56 29:57 29:58 29:59 29:60 29:61 29:62 29:63 29:64 29:65 29:66 29:67 29:68 29:69 29:70 29:71 29:72 29:73 29:74 29:75 29:76 29:77 29:78 29:79 29:80 29:81 29:82 29:83 29:84 29:85 29:86 29:87 29:88 29:89 29:90 29:91 29:92 29:93 29:94 29:95 29:96 29:9

14 “धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।

15 **22 22222222**‡, टोन्हें, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक, हर एक झूठ का चाहनेवाला और गढ़नेवाला बाहर रहेगा।

16 “मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिए भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद का मूल और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूँ।” **(2222. 11:1)**

17 और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, “आ!” और सुननेवाला भी कहे, “आ!” और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंट-मेंत ले। **(2222. 55:1)**

**22222222**

18 मैं हर एक को, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ: यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। **(222222. 12:32)**

19 और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा। **(222. 69:28, 222222. 4:2)**

20 जो इन बातों की गवाही देता है, वह यह कहता है, “हाँ, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।” आमीन। हे प्रभु यीशु आ!

21 प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे। आमीन।

‡ 22:15 **22 22222222**: दुष्ट, भ्रष्ट, धिनौना, इस तरह के स्वभाव के लिये कुत्ता शब्द का प्रयोग होता है, यहूदियों के बीच इसे एक अशुद्ध पशु माना जाता है।